

कन्नड-हिन्दी शब्द कोश

सम्पादक

डॉ० एन० एस० दक्षिणामूर्ति
एवं

अनूप अम्सेना



शकाब्द १८९३ : सन् १९७१ ई०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

UNIVERSITY OF JODHPUR LIBRARY
A 811 AC. NO. 107999 SUB. Hindi
7/3/71 CALL NO. 552111

प्रकाशक

सुरेन्द्रनारायण द्विवेदी

प्रधान मंत्री

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

●

प्रथम संस्करण : शक १८९३ : सन् १९७१,

●

मूल्य : चालीस रुपए

●

मुद्रक

⊙ जी० एच० रामाराव

मैसूर प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाउस, मैसूर

⊙ सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ अन्यान्य क्षेत्रीय भाषाओं के विकास और समन्वय का उद्देश्य रख कर अन्तरप्रान्तीयभाषा शब्दकोश की एक योजना बनायी है। इस योजना के अन्तर्गत सर्वप्रथम चारों द्राविड भाषाओं को प्राथमिकता देकर तेलुगु-हिन्दी-कोश, कन्नड़-हिन्दी कोश, मलयालम हिन्दी कोश और तमिल हिन्दी कोश का निर्माण कराना निश्चित किया गया। तेलुगु हिन्दी कोश प्रकाशित हो गया है, तमिल-हिन्दी कोश छप रहा है और यह कन्नड़-हिन्दी कोश छप कर तैयार है।

इस द्विभाषी कोश के सम्पादक प्राच्य भाषाविद् श्री एन० एस० दक्षिणामूर्ति हिन्दी, संस्कृत तथा द्राविड भाषाओं के उत्कृष्ट विद्वान् है। विद्वान् संपादक ने इस कोश के संपादन में अपने वैदुष्य और परिचय-चाखता का परिचय दिया है।

इस कोश में मूल कन्नड़ भाषा के शब्दों को कन्नड़ और नांगरी दोनों लिपियों में प्रस्तुत कर शब्दार्थ लिखे गए हैं। प्रत्येक शब्द की प्रकृति और उसके अर्थतात्विक विकास को बड़ी सावधानी से प्रस्तुत किया गया है। जहाँ तक हमारी जानकारी है, इससे पूर्व कन्नड़ में इस विधा का कोई द्विभाषी कोश प्रकाशित नहीं हुआ है। इस कोश में व्यावहारिक शब्दावली पर पूर्ण ध्यान देते हुए कन्नड़ भाषा के मुहावरों, लोकोक्तियों, कन्नड़ हिन्दी की साधारण शब्दावली और व्यावहारिक प्रक्रियाओं का विशिष्ट रूप से परिचय दिया गया है। आशा है यह कोश कन्नड़ भाषा और हिन्दी भाषा का तादात्म्य संबंध जोड़ने में सफल होगा।

—सुरेन्द्रनारायण द्विवेदी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रधानमंत्री

भूमिका

कन्नड-हिन्दी कोश की भूमिका लिखते हुए मैं अतीव प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। मैसूर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. एस. एन. दक्षिणामूर्ति जी द्वारा रचित यह कोश हिन्दी के माध्यम से कन्नड सीखनेवालों के लिए अधिक उपयोगी है और भारत की भावात्मक एकता के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय कार्य है। जब इसकी छपाई शुरू हुई थी तभी मुझे इसके अवलोकन का अवसर प्राप्त हुआ था। इसमें कन्नड-शब्द कन्नड और देवनागरी दोनों लिपियों में दिया गए हैं। शब्दार्थ हिन्दी में दिए गए हैं, आवश्यक स्थानों में विवरण दिया गया है। इस ढंग का कोश अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है, ऐसा कोश सर्वथा उपादेय है। हिन्दी भाषा-भाषियों को इससे पूरा लाभ उठाना चाहिए। डॉ० एस. एन. दक्षिणामूर्ति जी ने “हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन” “हिन्दी और तेलुगु के कृष्ण काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन” आदि रचनाएँ हिन्दी-साहित्य को इसके पहले दी हैं। इनकी “पंपरामायण की कथा” केन्द्र सरकार से पुरस्कृत हुई है। “कर्नाटक और उसका साहित्य” और “कन्नड-हिन्दी-कोश” की रचना के द्वारा इन्होंने कन्नड और हिन्दी को परस्पर निकट लाने का प्रयत्न किया है। मैं इनको हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि ये हिन्दी-साहित्य को और भी अनेक साहित्यिक कृतियाँ प्रदान करेंगे। शुभम्।

कालू लाल श्रीमाली

निवेदन

वर्तमान मैसूर राज्य (कर्नाटक) की भाषा कन्नड है। भारत की चौदह प्रमुख भाषाओं में कन्नड भी एक है। यह एक समृद्धशाली भाषा है जिसकी एक स्वस्थ साहित्य-परंपरा है। विशाल वटवृक्ष की शाखोपशाखाओं की भाँति इसके साहित्य की व्याप्ति है।

कन्नड भाषा के स्वरूप की चर्चा करते हुए विद्वानों ने इसके तीन रूप बतलाये हैं—(१) इळगन्नड अर्थात् प्राचीन कन्नड, (२) नडुगन्नड अर्थात् मध्यकालीन कन्नड तथा (३) होसकन्नड अर्थात् आधुनिक कन्नड। इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग तीन करोड़ है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि साहित्य के अंगों में कोश का विशेष महत्व है। साहित्य के अध्येता के लिए ही नहीं भषातत्त्वविदों के लिए भी कोश-ग्रंथ सर्वाधिक उपयोगी वस्तु हैं। कन्नड में काव्य, नाटक, उपन्यास आदि साहित्य-विधाओं के समान ही कोश-ग्रंथों की भी सुन्दर परंपरा है। कन्नड-कोश-ग्रंथों में 'रत्नकंद' का नाम प्रथमतः उल्लेखनीय है। 'शब्दसार', 'कर्नाटक निघंटु', 'चतुरास्य निघंटु', 'कर्नाटक शब्दमंजरी', 'कन्नडगर कैपिडि' [कवियों की (सहायक) पुस्तक], 'कविकंठहार', 'कर्नाटक-संजीवन' आदि प्राचीन कन्नड-कोश हैं। 'वस्तुकोश', 'मंगाभिधान', 'नानार्थ रत्नाकर' जैसे ग्रंथों में संस्कृत के शब्दों के कन्नड-अर्थ मिलते हैं। आधुनिक युग में स्वर्गीय रेवरेंड एफ. किड्डल साहब ने कन्नड-अंग्रेज़ी-कोश की रचना कर कन्नड भाषा की अकथनीय सेवा की है। मैसूर विश्वविद्यालय ने अंग्रेज़ी-कन्नड-शब्दकोश का प्रकाशन किया है। कन्नड-साहित्य परिषद् (बेंगलूर) ने बृहदाकार कन्नड-कन्नड-शब्दकोश (चार भागों में) प्रकाशित करने की योजना बनायी है। यह अत्यंत स्तुत्य कार्य है। तीन-चार हिन्दी-कन्नड-कोश ग्रंथ भी अब तक प्रकाशित हुए हैं।

पाश्चात्य विद्वानों तथा आधुनिक काल के भारतीय पण्डितों ने कन्नड को द्राविड परिवार की भाषाओं के अंतर्गत माना है। परन्तु, यह ध्यान देने की बात है कि कन्नड में ६०—६५ प्रतिशत से भी अधिक संस्कृत शब्द प्रयुक्त होते हैं तथा ऐसे बहुत से शब्द मिलते हैं जिनका मूल संस्कृत ही है। इस कोश में ऐसे शब्दों का पर्याप्त संग्रह किया गया है। शब्द भाण्डार की दृष्टि से विचार करें तो कोई भी भाषा विशुद्ध नहीं कही जा सकती है। अन्य भाषाओं के सदृश्य ही कन्नड में भी अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के बहुत-से शब्द प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्दों के स्वरूप अथवा लिखने के विधान में कन्नड और हिन्दी में यत्र तत्र भेद दृष्टिगत होता है। उदाहरणार्थ—ತಾಸೀಲು तासील (तहसील), ಗಲೀಜು गलीज (गलीज़) ಹಲ್ಲುಕು ತಾಲ್ಲುಕು (ताल्लुक), ಸುವೇದಾರ ಸುವೇದಾರ (सूवेदार) आदि शब्द देखे जा सकते हैं। कहीं-कहीं अन्य भाषाओं से आये हुए शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। उदाहरण के लिए ಹಲ್ಕಾ 'हल्का' शब्द लीजिए। कन्नड में यह शब्द 'तुच्छता' और 'नीचता' का ही अर्थ-द्योतक है।

यहाँ कुछ संस्कृत शब्दों के संबंध में भी बतलाना आवश्यक है। संस्कृत ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द कन्नड में प्रायः इकारान्त हो जाते हैं। सरस्वति, गौरि, पार्वति आदि इसके उदाहरण हैं। आकारांत स्त्रीलिंग शब्द कन्नड में प्रायः ह्रस्व एकारांत हो जाते हैं। उदाहरण—अंगने (अंगना), घंटे (घंटा), भिक्षे (भिक्षा), लते (लता), विद्ये (विद्या) आदि।

इस कोश में प्रयुक्त चिह्नों का विवरण अन्यत्र दिया गया है। विरामचिह्न के बाद जहाँ '—' लगाया गया है वहाँ यह समझना चाहिए कि मूल शब्द के साथ आगे के शब्द को जोड़कर उसका अर्थ किया गया है। उदाहरण के लिए 'केंने' शब्द को लीजिए। विरामचिह्न के बाद '—' चिह्न लगाकर 'केंनेहालु' लिखा गया है। इसे 'केंनेहालु' पढ़ना चाहिए। जहाँ पूरा शब्द ही लिखना अधिक उपयोगी माना गया है, वहाँ वैसा ही लिखा गया है। उदाहरण — 'केंने' के अंतर्गत 'केंनेदने', 'केंनेदले', 'केंनेदवरे' आदि शब्द पूर्णतः लिखे गये हैं। उपयोगी मुहावरों और कहावतों का उल्लेख भी इस कोश में स्थान-स्थान पर किया गया है और उनका अर्थ भी स्पष्ट किया गया है।

इसमें लगभग २४००० शब्द संगृहीत हैं। इस संग्रह-कार्य में मुझे निम्नलिखित कोशों से अधिक सहायता मिली है।

- (१) कन्नड-अंग्रेजी-कोश (रेवरेंड एफ़ किट्टल)।
- (२) कन्नड-कन्नड-कस्तूरि-कोश (पं० चे. ए. कवल्लि)।
- (३) संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ (चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा)।
- (४) बृहद्-हिन्दी-कोश (कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुंदीबाल श्रीवस्तव)।
- (५) Bhargava's Standard Dictionary Anglo-Hindi (Prof. R. C. Pathak).
- (६) कन्नड-कन्नड-हिन्दी-शब्दकोश (गुरुनाथ जोशी और वी. अश्वत्थनारायण)।

इन कोशों के संग्रह कर्त्ताओं के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। भारत की भावात्मक एकता को सुदृढ़ और सुस्थित करने में तत्पर प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रति भी, जो इस ग्रंथ का प्रकाशन-कार्य कर रहा है, अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। जिन लोगों से मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता प्राप्त हुई है, उनका भी मैं अभारी हूँ। आशा है, सज्जनों से मुझे समुचित प्रोत्साहन मिलेगा।

अंत में मुद्रणकालीन परिस्थितियों का भी स्मरण करता हूँ। परमात्मा की कृपा से, दीर्घ काल के उपरांत यह कोश प्रकाश में आ रहा है, यही संतोष का विषय है। मैसूर प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाउस के मालिक श्री जी. एच. रामराव को, जिन्होंने सुंदर ढंग से कोश को छापा है, धन्यवाद देता हूँ।

एन. एस. दक्षिणामूर्ति

अक्षर-संकेत.

२—ए (ह्रस्व)

२—ए (दीर्घ)

ॢ—ओ (ह्रस्व)

ॢ—ओ (दीर्घ)

ॣ—र (शकटरेफ)

।—ळ

॥—ळ

ह्रस्व ध्वनि सूचित करने के लिए अन्य स्थानों में अक्षर के नीचे बिन्दु का प्रयोग किया गया है. जैसे—अंच् (अ०अंच्), अंजिक् (अ०अंजिक्), अंजिकलु (अ०अंजिकलु) कोलिमे (को०लिमे), कोल्लु (को०ल्लु) आदि ।

शब्द-संकेत

अ —अव्यय ।

अ. क्रि.— अव्यय क्रिया ।

अ. दे.—अन्य देशी ।

अकृ. क्रि.—अकर्मक क्रिया ।

उदा.—उदाहरण ।

ए. व.— एकवचन ।

क.— कन्नड शब्द ।

कह.—कहावत ।

कृ.—कृदंत ।

क्रि.— क्रिया ।

क्रि. रू.—क्रिया रूप ।

क्रि. वि.—क्रिया विशेषण ।

ग्रा.—ग्राम्य प्रयोग ।

तत्—तत्सम ।

तद्—तद्भव ।

द. क.—दक्षिण कन्नड ।

दे.—देखो ।

धा. प्रा.—धारवाड प्रयोग ।

न. लिं.—नपुंसक लिंग ।

पु. लिं.—पुल्लिंग ।

प्र.—प्रत्यय ।

प्रे.—प्रेरणार्थक ।

ब. व.—बहुवचन ।

म.—मराठी ।

मुह.—मुहावरा ।

मै. प्र.—मैसूर प्रयोग ।

लाक्ष —लाक्षणिक ।

वि.—विशेषण ।

वि. वो —विस्मयादिवोधक ।

व्या. भा.—व्यावहारिक भाषा ।

सं.—संज्ञा ।

संयो.—संयोजक ।

सम्.—संस्कृत शब्द ।

सर्व.—सर्वनाम ।

सा. भा.—साहित्यिक भाषा ।

स्त्री. लिं.—स्त्री लिंग ।

ह. क.—हळगन्नड (प्राचीन कन्नड) ।

हि.—हिन्दी शब्द ।

कन्नड-हिन्दी कोश

अ अ

अ अ—कन्नड-वर्णमाला का प्रथम अक्षर। (क) प्र०—षष्ठी विभक्ति प्रत्यय।

अ अ (सम्) सं.—1. विष्णु—‘अकारो विष्णु रूद्रिष्ट’ 2. ब्रह्मा, विष्णु और शिव का नाम 3. वायु 4. कछुवा 5. आँगन 6. अंतःपुर 7. युद्ध, लड़ाई।

अ अ (सम्) उप.—नहीं, न, मत अर्थ सूचक उपसर्ग जो संज्ञा, विशेषण और धातुओं के पीछे लगता है। [संस्कृत में न, अ, अन् प्रायः सादृश्य, अभाव, भेद, अल्पता, अप्राशस्त्य और विरोध अर्थ-द्योतक हैं, जैसे—अब्राह्मण (ब्राह्मण के जैसे जनेऊ पहननेवाला-क्षत्रिय, वैश्य आदि), अकलंक, अपट (जो पट नहीं अर्थात् अन्य कोई वस्तु), असुदार, अकाल, अपक्व इत्यादि।]

अं अं (क) प्र.—बहुत, अधिक, अति। ह.क. में अकारांत संज्ञा शब्दों के भागे लगता है।

अंक अंक (सम्) सं.—1. अंक, संख्या 2. गोद 3. संकेत, निशान 4. दोष, कलंक 5. टेढ़ा, टुष्ट 6. भारी, बोझा 7. कष्ट, तकलीफ 8. नाटक का एक भाग 9. युद्ध, कलह 10. बिंदी अंकड़ी।

अंककार अंककार (सम्) सं.—1. प्रभाव-शाली मनुष्य 2. हार-जीत का निर्णय करनेवाला 3. नायक 4. प्रमुख सेवक।

अंककार्त अंककार्त (सम्) सं.—1. नायिका 2. प्रमुख सेविका।

अंकगणित अंकगणित (सम्) सं.—अंकगणित, संख्याओं से किया जानेवाला गणित।

अंकण अंकण (क) सं.—दो खंभों के बीच का स्थान; दो रेखाओं के बीच का स्थान।

अंकत्रिणेत्र अंकत्रिणेत्र (सम्) सं.—

1. योद्धा, शूर 2. शिवजी।

अंकन अंकन (सम्) सं.—चिह्न, निशान।

क्रि.—निशान कर, छाप लगा।

अंकपालि अंकपालि (सम्) सं.—आलिंगन, मिलन।

अंकपाश अंकपाश (सम्) सं.—गणित में संख्या-चमत्कार का एक विधान।

अंकमाले अंकमाले (सम्) सं.—1. संख्याओं का समूह 2. उपाधि, बिरुद 3. उपाधियों की माला या हार।

अंकपीठ अंकपीठ (सम्) सं.—गोद, अंक।

अंकमुख अंकमुख (सम्) सं.—नाटक के अंकों का प्रारंभ, आगे की घटनाओं की सूचना।

अंकलि अंकलि (तद्) सं.—अंकोलः (तत्); पिश्टे का पेड़।

अंकलिपि अंकलिपि (सम्) सं.—मूलाक्षर चिह्न।

अंकवणि, अंकवणे (क) सं.—अलंकृत पीढा, पीड़ा।

अंकवरे (क) सं.—रणवाद्य, रणभेरी।

अंकवातु अंकवातु (क) सं.—सुंदर वात, मधुर वचन, मधुर बोली, सद्बचन।

अंकित अंकित (सम्) वि.—1. अंकित, वह जिसमें निशान या चिह्न लगाया गया हो

2. अधीन, जो वश में हो। सं.—चिह्न;

शब्द; अर्पण; छाप, हस्ताक्षर। (प्रायः भक्त

कवियों की कविताओं में उनके इष्टदेव के

नामों की छाप देखी जाती है, इसको कन्नड

में ‘अङ्कित’ कहते हैं; जैसे—बसवेश्वर के

वचनों में ‘कूडल संगमदेव’ और पुरंदरदास

के पदों में ‘पुरंदर विठल’ की छाप मिलती

है। हिन्दी के कवि कबीर, सूर, तुलसी आदि

की कविताओं में उनके नामों की छाप मिलती है।)

अंकितनाम अंकितनाम (सम्) सं.—अंकित नाम, रखा गया नाम।

अंकिसु अंकिसु (सम्) क्रि.—1. अंकित कर, निशान लगा, चिह्न लगा 2. ध्यानपूर्वक देख 3. आदर कर, आदर से देख।

अंकुर अंकुर (सम्) सं.—1. अंकुर, पल्लव 2. शरीर पर के रोम 3. रक्त 4. जल, पानी 5. नौक, अग्रभाग 6. फोड़ा।

अंकुरित अंकुरित (सम्) वि.—अंकुरित, जिसका अंकुर निकला हो, उत्पन्न, उद्भूत।

अंकुरिसु अंकुरिसु (सम्) क्रि.—(अंकुर + इसु—‘इसु, कन्नड’ प्रत्यय) अंकुरित हो, उत्पन्न हो, जन्म लो, पैदा हो, बढ़।

अंकुशचारण अंकुशचारण (सम्) सं.—अंकुश से हाथी को चलाने की क्रिया।

अंकुशचारिणि अंकुशचारिणि (सम्) सं.—महावत, अंकुश से हाथी को चलानेवाला।

अंकुशधारि अंकुशधारि (सम्) सं.—महावत।

अंकुस अंकुस (तद्) सं.—अंकुशः (तत्); काँटा विशेष जिससे हाथी को हँका जाता है; रोकथाम।

अंके (क) सं.—1. आज्ञा 2. वश, अधिकार; प्रभुत्व 3. सहारा, सहायक, टेकने की लाठी 4. उम्मीद, भरोसा, विश्वास।

अंके (तद्) सं.—अंक, संख्या।

अंकोट, अंकोट (सम्) सं.—

पिश्टे का पेड़।

अंकोणि अंकोणि (क) सं.—रक्षात्र, पेर रखने का स्थान।

అంకంజాలికా అంకాలికా (సమ్) సం. —
 అంగులము

అంకంజాలికా అంకాలికా (సమ్) సం. —
 అంగులము

(1) అంగం అంగ (క) సం. — సుందరతా, మన-
 మోహకతా; రీతి, మార్గం

(2) అంగం అంగ (సమ్) సం. — 1. భాగ, హిస్సా
 2. దేహ, శరీర 3. కవితా కి పంక్తి
 4. నాటక కి గౌణ పాత్ర 5. మన 6. అంగ-
 దేశ, బంగాల

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. ఇచ్ఛిత
 వస్తు, మన కి కామనా 2. భేద, ఉపహార

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దేహ-చాలన,
 అంగ-సంచాలన; అక్షే మారనా ఆది

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. దేహ కి ఉత్పన్న
 2. పుత్ర, సంతాన 3. కేశ, బాల, రోమ
 4. ప్రేమ 5. కామదేవ 6. రోగ, వీమారి
 7. రక్త, రుక్ 8. పంచ ఇంద్రియా 9. జల,
 పానీ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — కామదేవ
 కి పితా, విష్ణు

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. కామ
 2. పుత్ర, 3. రక్త, రుక్

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. —
 జిసనె కామ కి భస్మ కియా, శివజీ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — కామ కి
 శక్తి, శివ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — పుత్రీ, బ్రేదీ,
 కన్యా

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. పుత్ర
 మన్మథ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దే.
 అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దుకాన, క్రయ-విక్రయ
 కా స్థాన (తెలుగు కి మి యిది శబ్దం కి)

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దుకానదార,
 దుకాన కా మాలిక

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దే.
 అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — అంగం, అంగం
 (సమ్); అంగం, అంగం కి సామనె కా కులా
 స్థాన

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — జిసనె కి పీఠ జమీన
 కి లగి దుకై కి

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దే. అంగం.

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. అంగం, అంగం
 విశేష 2. వాలి కి వేదె కా నామ 3. లక్ష్మణ
 కి వేదె కా నామ, తమిళా-పుత్ర

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — శరీర-
 బల, దేహ కి శక్తి

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — స్త్రీ, నారి,
 సుందర దేహవాలి; పత్నీ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — స్త్రీ
 కి కమాదై కి జీనెవాలి

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — అంగం, స్త్రీ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — హావ-భావ,
 శరీర కా సంచాలన; మంత్రోచ్చారణ కి సమయ
 అంగస్పర్శ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — కామదేవ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దేహ కా భాగ,
 శరీర కి అంగ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — కన్యా కి
 వివాహ-కాల అథవా ప్రథమ గర్భ ధారణ కి సమయ
 ది జానెవాలి భేద యా ఉపహార

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — అంగం, అంగం
 కి అంగం

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — అంగం, అంగం
 కి అంగం

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — పతలా
 శరీర; శరీర, దేహ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — మిల, హిల-
 మిల, టోలీ బనా, ఒకత్ర కి

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — అంగం, అంగం,
 రాజ; భాగ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. సేవక,
 అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 2. దేహ కా రక్షక,
 పహరెదార, అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దేహ కి మలనె కి యోగ్య
 సుగంధిత పదార్థ,
 అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — అంగంజాలికా అంగులము
 రాజా, కర్ణ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — రోమ,
 శరీర కి అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. శోక కర,
 దుఃఖ కర, విలాప కర, రో, దీనతా ప్రకట
 కర, యాచనా కర

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — శోక; రుదన

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — మృదుతా కి సేవ
 కర, సూక్ష్మ రూప కి వ్యాస

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — మౌగ,
 యాచనా కర, దీనతా కి యాచనా కర,
 గిడగిడ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — లోమి;
 దుఃఖి

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దేహ సౌఖ్య,
 శరీర-రచనా

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దే. అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. శక్తి, బల;
 అధికార, సామర్థ్య 2. ఇచ్ఛా, అభిలాషా,
 అభిప్రాయ, మతలవ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. నహనె కి
 వాద పొడనె కి కామ కి లాభా జానెవాలి
 వస్త్ర, తొలియా 2. ఉత్తరీయ

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — వికలాంగ,
 జిసనె శరీర కి అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — శరీర
 కి వికార, మూర్ఖా, సంజాహీనతా, అచేతనతా

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — ఒక
 ప్రకార కా నాచ, హావ-భావ, అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — దే.
 అంగంజాలికా అంగులము

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — శరీర
 కి కిసీ భాగ కి కురుపతా యా ఉనతా

అంగంజాలికా అంగులము (సమ్) సం. — 1. దేహ-సంపర్క
 2. మిలన, మేథున

ಅಂಗಸಂಯೋಗ ಅಂಗಸಂಯೋಗ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಅಂಗों का सटीक मेल; देहों का मेल, मिलन ।
 ಅಂಗಸಂವೃಠ ಅಂಗಸಂವೃಠ (ಸಮ್) ಸಂ. — शरीर का अलंकार, अनुलेपन आदि ।
 ಅಂಗನಾಥಕ ಅಂಗನಾಥಕ (ಸಮ್) ಸಂ. — व्यायाम-साधक, कसरत करनेवाला ।
 ಅಂಗಹೀನ ಅಂಗಹೀನ (ಸಮ್) ವಿ. — दे. अंग-रहित. सं. — जिसकी देह न हो, कामदेव ।
 ಅಂಗಹೀನತೆ ಅಂಗಹೀನತೆ (ಸಮ್) ಸಂ. — अंगों की कमी या ऊनता, अंगहीनता ।
 (1) ಅಂಗಧ ಅಂಗಧ (ಕ) ಸಂ. — मुँह के अंदर का ऊपरी भाग, तालु ।
 (2) ಅಂಗಧ ಅಂಗಧ (ತದ್) ಸಂ. — अंगनं (तत्); आँगन, घर के सामने का खुला स्थान, गाँव के चारों ओर का मैदान ।
 ಅಂಗಘ ಅಂಗಘ (ಕ) ಸಂ. — दे. अंगघ (1).
 ಅಂಗಾಠ ಅಂಗಾಠ (ಕ) ವಿ. — दे. अंगठ.
 ಅಂಗಾಧಿವ ಅಂಗಾಧಿವ (ಸಮ್) ಸಂ. — दे. अंग-आध.
 ಅಂಗಾರ ಅಂಗಾರ (ಸಮ್) ಸಂ. — आग का कण; कोयला; भस्म ।
 ಅಂಗಾರಕ ಅಂಗಾರಕ (ಸಮ್) ಸಂ. — मंगलग्रह, अंगार के समान लाल ग्रह ।
 ಅಂಗಾರಕವಾರ ಅಂಗಾರಕವಾರ (ಸಮ್) ಸಂ. — मंगलवार ।
 ಅಂಗಾರಧಾನಿಕೆ ಅಂಗಾರಧಾನಿಕೆ (ಸಮ್) ಸಂ. — अंगीठी ।
 ಅಂಗಾರವಲ್ಲಿ ಅಂಗಾರವಲ್ಲಿ (ಸಮ್) ಸಂ. — गुंजा, एक लता ।
 ಅಂಗಾರವಾಯು ಅಂಗಾರವಾಯು (ಸಮ್) ಸಂ. — लकड़ी, कोयला आदि के जलने के बाद आनेवाला धुआँ ।
 ಅಂಗಾಲ್ ಅಂಗಾಲ್, ಅಂಗಾಲ್ ಅಂಗಾಲ್ (ಕ) ಸಂ. — चरण का निचला भाग, तलुवा ।
 (1) ಅಂಗಿ ಅಂಗಿ (ಸಮ್) ಸಂ. — अंगी, शरीर, जिसके अंग हों ।
 (2) ಅಂಗಿ ಅಂಗಿ (ಕ) ಸಂ. — कुरता, पहनने का कपडा ।

ಅಂಗಿರಸ ಅಂಗಿರಸ (ಸಮ್) ಸಂ. — एक ऋषि का नाम ।
 ಅಂಗೀಕರಣ ಅಂಗೀಕರಣ (ಸಮ್) ಸಂ. — 1. स्वीकृति, मान्यता, ग्रहण 2. वचन देना ।
 ಅಂಗೀಕರಿಸು ಅಂಗೀಕರಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ. — मान, स्वीकार कर, ग्रहण कर ।
 ಅಂಗೀಕಾರ ಅಂಗೀಕಾರ (ಸಮ್) ಸಂ. — स्वीकृति, अंगीकरण ।
 ಅಂಗೀಕೃತ ಅಂಗೀಕೃತ (ಸಮ್) ವಿ. — स्वीकृत, मान्य, गृहीत ।
 ಅಂಗು ಅಂಗು (ಕ) ಸಂ. = अंगु हंगु—एइसान, कृतज्ञता ।
 ಅಂಗುಟ ಅಂಗುಟ (ತದ್) ಸಂ. — अंगुठ: (तत्); अंगूठा ।
 ಅಂಗುಲ ಅಂಗುಲ (ಸಮ್) ಸಂ. — 1. अंगुली, उंगली 2. अंगूठा 3. उंगलियों के माप की चौड़ाई, 12 अंगुल = 1 इंच 5. चाणक्य ऋषि का नाम ।
 ಅಂಗುಲಿ ಅಂಗುಲಿ (ಸಮ್) ಸಂ. — 1. अंगुली उँगली 2. अंगूठा 3. हाथी की सूँड का वह अंतिम भाग जो उँगली-जैसा होता है 4. हाथी के कानों में पहनाने का एक आभूषण 5. अंगूठी (मै. प्र.)
 ಅಂಗುಲಿಕ್ರಿಯೆ ಅಂಗುಲಿಕ್ರಿಯೆ (ಸಮ್) ಸಂ. — उँगली से नोच, कुरेद; नखखनन ।
 ಅಂಗುಲಿನನ ಅಂಗುಲಿನನ (ಸಮ್) ಸಂ. — उँगली से नोच; नखखनन ।
 ಅಂಗುಲಿವೃಣ ಅಂಗುಲಿವೃಣ (ಸಮ್) ಸಂ. — अंगुली-रक्षक, उँगली की रक्षा के लिए धनुषधारियों द्वारा पहने जाने का कवच जिसे पहनने से उगली को चोट नहीं लगती ।
 ಅಂಗುಲಿ ದರ್ಶನ ಅಂಗುಲಿ ದರ್ಶನ (ಸಮ್) ಸಂ. — निर्देश, इशारा ।
 ಅಂಗುಲಿ ಪ್ರಹರಣ ಅಂಗುಲಿ ಪ್ರಹರಣ (ಸಮ್) ಸಂ. — उँगली से मारना; नोचना, इशारा करना आदि ।
 ಅಂಗುಲಿ ಮುದ್ರೆ ಅಂಗುಲಿ ಮುದ್ರೆ (ಸಮ್) ಸಂ. — 1. उगली का इशारा 2. मुहरवाली अंगूठी या मुंदरी ।

ಅಂಗುಲಿ ಮೋಟನ ಅಂಗುಲಿ ಮೋಟನ (ಸಮ್) ಸಂ. — उंगली मरोड़ने की क्रिया ।
 ಅಂಗುಲಿ ಸಂವೇಶ ಅಂಗುಲಿ ಸಂವೇಶ (ಸಮ್) ಸಂ. — उंगली से इशारा या निर्देश. दे. अंगुल-दर्थन.
 ಅಂಗುಲೀಯ ಅಂಗುಲೀಯ, ಅಂಗುಲೀಯಕ ಅಂಗುಲೀಯಕ (ಸಮ್) ಸಂ. — अंगूठी । दे. अंगुल (मै. प्र.)
 ಅಂಗುಷ್ಠ ಅಂಗುಷ್ಠ (ಸಮ್) ಸಂ. — दे. अंगुष्ठ. अंगुष्ठ धातु पर संज्ञादिभेद अंगुष्ठ वातरे पर्वतवादीते?—अंगूठा फूले तो पर्वत होगा क्या ? (कह.)
 ಅಂಗುಸ ಅಂಗುಸ (ತದ್) ಸಂ. — अंकुश: (तत्) ।
 ಅಂಗುಳ ಅಂಗುಳ (ಕ) ಸಂ. — दे. अंगुल; एक इंच (मै. प्र.) ।
 ಅಂಗುಳಿ ಅಂಗುಳಿ (ಕ) ಸಂ. — 1. उंगली 2. एक प्रकार का रोग ।
 ಅಂಗುಳೀಯಕ ಅಂಗುಳೀಯಕ (ತದ್) ಸಂ. — अंगुलीयक (तत्) दे. अंगुल-एय.
 ಅಂಗುಳೆ ಅಂಗುಳೆ (ಕ) ಸಂ. — दे. अंगुल 'अंगुलिय मुळ' नामक रोग ।
 ಅಂಗೂರ ಅಂಗೂರ (ತದ್) ಸಂ. — अंगूर (हि.), द्राक्षा, दाख ।
 ಅಂಗೂಷ ಅಂಗೂಷ (ಸಮ್) ಸಂ. — 1. वेगामी 2. तीर, वाण 3. न्योला ।
 ಅಂಗೈಯ ಅಂಗೈಯ, ಅಂಗೈಯ (ಕ), ಸಂ. — हथेली ।
 ಅಂಗೈಯು ಅಂಗೈಯು (ಕ) ಕ್ರಿ. — दे. अंगयु, अंगैयुन अंगोन्नव (सम्) सं. — देह में उत्पन्न होनेवाला, काम, मदन ।
 ಅಂಗೋಪಾಂಗ ಅಂಗೋಪಾಂಗ (ಸಮ್) ಸಂ. — देह और उसके भाग ।
 ಅಂಗೋಸ್ತ್ರ ಅಂಗೋಸ್ತ್ರ (ತದ್) ಸಂ. — अंगवस्त्र (तत्), उत्तरीय ।
 ಅಂಗೋರ ಅಂಗೋರ (ಅ. ದೆ.) ಸಂ. — एक प्रकार का बकरा (जो एशिया मैदान में रहता है) ।
 ಅಂಗಾಣ್ಣೆ ಅಂಗಾಣ್ಣೆ (ಕ) ಸಂ. — 1. निन्दा, दूषण 2. शिकायत । अंगरु अंगरणे (मै. प्र.) ।

अंशुवर्ण अंधवणे (क) सं.— इच्छा, कामना, चाह, अपेक्षा ।

अंशु अंग्रि (सम्) सं.— 1. अंग्रि, चरण; पाद, 2. चौथा हिस्सा 3. वृक्षों की जड़ ।

अंशु अंग्रिज (सम्) सं.— अंग्रि से उत्पन्न, शब्द ।

अंशु अंग्रिजाण (सम्) सं.— चप्पल, जूता (A shoe) ।

अंशु अंग्रिप (सम्) सं.— अंग्रि से (जल) पीनेवाला, वृक्ष ।

अंशु अंग्रिपर्णिके, अंशु अंग्रिवल्लिके (तद्)— एक वृक्ष (The plant Hedysarum togopodioides).

अंशु अंग्रिवलय (सम्) सं.— चरण अथवा खुर की परिधि ।

अंशु अंच (सम्) क्रि.— मोड़ना, उमैठना 2. जाना, हिलना-डुलना, मिलना ।

उदा.— रोमांच रोमांच ।

अंशु अंचडि (क) सं.— उत्तरीय, ऊपर ओढ़ने का कपड़ा, दुपट्टा ।

अंशु अंचन (सम्) सं.— 1. जाना 2. झुकना, तिरछा होना । उदा.— अंचन उदंचन, रोमांचन ।

अंशु अंचल (सम्) सं.— अंचल, आंचल ; कपड़े का किनारा या छोर ।

अंशु अंचित (सम्) वि.— 1. मुड़ा हुआ, झुका हुआ 2. सम्मानित, प्रतिष्ठित 3. सिला हुआ, बुना हुआ 4. स्पष्ट 5. स्वच्छ, 6. चमकदार 7. पृष्ट, पूछा हुआ, प्रार्थित ।

अंशु अंचु (क) क्रि.— 1. ताक में रहना, अवसर की प्रतीक्षा करना 2. बाँटना— सं.— खपरा, टाइल (Tile) ।

अंशु अंचु (तद्) सं.— अंचु (तत्)— 1. किनारा, छोर 2. धारा 3. बर्तनों का मुँह 4. सीमा, परिधि ।

अंशु अंचुवट्टे (क) सं.— लहंगा, घाघरा आदि के किनारे या छोर का रिबबन-जैसा कपड़ा ।

अंशु अंचे (क) सं.— 1. डाक 2. डाक का

मार्ग 3. पत्र— अंचेय मेले होगुवुदु - डाक से जाना (To go by Post) । अंचे कागद मुंचे बंदरे लंच याके ? — डाक का पत्र पहले ही मिले तो फिर रिश्वत काहे ? (कह.)

अंशु अंचे (तद्) सं.— हंस (तत्)— अंचे तुपल—हंस के मुलायम बाल । — गमने गमने—हंसगमना, स्त्री । — अंचे तेर—हंसवाहन, ब्रह्मा ।

अंशु अंचेकचेरि, अंचेकट्टे (क) सं.— डाक घर, डाक खाना ।

अंशु अंचे (क) अ.— उस तरफ, दूर, बाहर ।

अंशु अंचेदार (क) सं.— डाकखाने का मुख्याधिकारी (Post Master) ।

अंशु अंचेयव, अंचे अंचे अव (क) सं.— डाक ले जानेवाला (A post runner) (मै. प्र.) ।

अंशु अंचेयालु (क) सं.— डाकिया ।

अंशु अंचक (क ?) वि.— स्पष्ट करनेवाला, व्यंजक, भाव आदि का सूचक—नाटकादि में भावाभिव्यंजक ।

अंशु अंचन (सम्) सं.— 1. अंचन, काजल, कज्जल 2. सौवीर 3. स्याही 4. अग्नि 5. रात्रि 6. दिग्गज विशेष (पश्चिम अथवा दक्षिण-पश्चिम का दिग्गज) 7. एक प्रकार की घरेलु छिपकली 8. एक वृक्ष (संभवतः अर्जुन वृक्ष) ।

अंशु अंचनकेशि (सम्) सं.— वनस्पति-सुगंधि विशेष का नाम ।

अंशु अंचनक्रिये (सम्) सं.— • अंचनक्रिया, लेपन-क्रिया, विलेपन ।

अंशु अंचनाद्रि (सम्) सं.— एक पश्चिमी पर्वत ; तिरुपति का एक पहाड़ ।

अंशु अंचनावति (सम्) सं.— 1. उत्तर-पश्चिम की हथिनी 2. हनुमान जी की माता (मै. प्र.) ।

अंशु अंचनि (तद्) सं.— काजल की रिक्त नली । (A hollow tube for black collyrium).

अंशु अंचने, अंचना (सम्) सं.— हनुमान जी की माता ।

अंशु अंचलि (सम्), अंचुलि (तद्) सं.— 1. अंचलि, जुड़े हुए दोनों हाथ ; हथेलियों को जोड़ने से बीच में जो गड्ढा-सा बनता है, उसे अंचलि कहते हैं । 2. इस अंचलि में जितना आवे उतना एक नाप, परिमाण विशेष ।

अंशु अंचलिकारिके (सम्) सं.— अंचलिकारिका, मिट्टी की गुड़िया ।

अंशु अंचलिपुट (सम्) सं.— दे. अंचलि 1.

अंशु अंचलिबंध (सम्) सं.— अंचलि सिर लगाकर किया जानेवाला नमस्कार ।

अंशु अंचस (सम्) वि.— ठीक, उचित, सरल, सीधा, सच्चा, ईमानदार । उदा.— समंजस समंजस— बहुत ठीक, उचित ।

अंशु अंचि (क) सं.— 1. पीपल ; अश्वत्थ 2. रूई ।

अंशु अंचिके (क) सं.— डर, भय, भीति ।

अंशु अंचिसु (क) क्रि.— डरा, भय-भीत कर ।

अंशु अंचीर (सम्), अंचोर अंचूर (क) सं.— अंचीर, फल विशेष ।

अंशु अंचु (क) क्रि.— डर जा, भयभीत हो । सं.— डर, भय । अंचन मेले कपड़े हाकिम हागे— डरनेवाले के ऊपर मेंढक डालने के जैसे (कह.) ।

अंशु अंचुकुलि, अंचुगुलि अंचुगुलि (क) वि.— धैर्यहीन, डरपोक, भीरु ।

अंशु अंचुलि, अंचुलि (तद्) सं.— अंचलि (तत्) ।

अंशु अंचुलि (क) सं.— छोटे मुँहवाली लुटिया, जिसमें एक नली लगी रहती है, उसका रंध ।

अंशु अंचे (क) सं.— धोती, कपड़ा ।

अ०ड० अंतप्य (क) वि. — वैसा (सी), उस प्रकार का (की)।

अ०ड० अंतप्रास (क) सं.—अन्यानुप्रास (अलंकार)।

अ०ड० अंतर (सम्) सं. — 1. अंदर का, भीतरी 2. समीप 3. प्रिय 4. फरक, अंतर, भिन्न।

अ०ड० अंतरंग (सम्) सं.— 1. भीतरी, गूढ, रहस्य 2. हृदय, मन।

अ०ड० अंतरात्म (सम्) सं. — मन, जीवात्मा।

अ०ड० अंतराय (सम्) सं. — अड़चन, रुकावट, बाधा, रोक।

अ०ड० अंतराल (सम्) सं.— अर्धतर, मध्य, बीच।

अ०ड० अंतरिक्ष (सम्) सं.— स्वर्ग और भूमि के बीच का भाग, तारापथ अथवा गगन।

अ०ड० अंतरित (सम्) वि.— 1. बीच में गया हुआ, बीच में पड़ा हुआ 2. अंदर घुसा हुआ, छिपा हुआ, ढका हुआ 3. रुद्ध, पृथक किया हुआ 4. लुप्त, नष्ट, गायब 5. छूटा हुआ, चूका हुआ।

अ०ड० अंतरि (क) अ. — इसलिए, अतः।

अ०ड० अंतरिद्रिय (सम्) सं.— मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त ; भीतरी इंद्रिय।

अ०ड० अंतरिसु (क) क्रि. — 1. दूर हो, पृथक हो, अंतर्धान हो, 2. विलंब कर।

अ०ड० अंतरीप (सम्) सं.— अंतरीप (हि) द्वीप, भूमि का वह टुकड़ा जिसके चारों ओर जल हो।

अ०ड० अंतरीय (सम्) सं. — कुर्त्ता, नीमा, धोती आदि।

अ०ड० अंतर्गत (सम्) वि. — 1. अंतर्भूत, भीतर गया हुआ 2. विस्मृत, छिपा हुआ, 3. अदृष्ट, गायब।

अ०ड० अंतर्गृह (सम्) सं.— भीतरी घर।

अ०ड० अंतर्जट (सम्) सं. — पेट।

अ०ड० अंतर्दाहक (सम्) वि. — अंदर या भीतर ही जलानेवाला, मन को पीड़ा देनेवाला (ली)। सं.— मात्सर्य।

अ०ड० अंतर्धान (सम्)—अंतर्धान (हि), छिप जाना, अदृश्य होना, गायब-होना।

अ०ड० अंतर्भाव (सम्) सं.— अंतर्निवेश, सहज प्रवृत्ति, निगूढ प्रवृत्ति।

अ०ड० अंतर्भूत (सम्) सं.— अंतर्भूत, अंतर्गत, भीतर का, मिला हुआ।

अ०ड० अंतर्मुख (सम्) वि.— 1. ध्यान, में लीन 2. मुँह में जाना।

अ०ड० अंतर्य (सम्) सं.— भीतर का भाग, गुप्त, रहस्य।

अ०ड० अंत्यामी (सम्) सं.— 1. आत्मा 2. परमात्मा 3. एक प्रकार की भीतरी हवा।

अ०ड० अंतर्वति, अ०ड० अंतर्वि (सम्) सं.— गर्भिणी स्त्री।

अ०ड० अंतर्वास, अ०ड० अंतर्वासन (सम्) सं.— 1. भीतरी घर 2. भीतरी पोशाक।

अ०ड० अंतर्हित (सम्) वि.— 1. छिपा हुआ, मध्यस्थ 2. पृथक किया हुआ 3. अदृष्ट गायब।

अ०ड० अंतवर (ह. क.) अ.— अंत तक।

अ०ड० अंतवुर (तद्) — अंतःपुर (तत्), रनिवास।

अ०ड० अंतस्ताप (सम्) सं.— 1. निग्रह 2. ईर्ष्या, डाह।

अ०ड० अंतस्तु (तद्) सं.— अंतःस्थ (तत्) 1. मध्य का, बीचों बीच 2. मकान का खण्ड, मंज़िल (story) 3. योग्यता, श्रेणी, वर्ग, पद, स्तर। उदा.— *अनन्य मानद अंतस्तु हेचिचतु*—उसके गौरव का स्तर ऊँचा हुआ। (मै. प्र.)।

अ०ड० अंतस्थ (सम्) सं.— दे. *अंतस्थ*, पवित्र विचार।

अ०ड० अंतह, अ०ड० अंता, अ०ड० अंथ, अ०ड० अंथा (क) वि.—वैसा, उस प्रकार, उस प्रकार का ; उस तरह का। दे. *अंतस्थ*।

अ०ड० अंताने (क) क्रि. रू.— (ए. व.)

कहता है (व्या. भा.)। *अनुत्ताने*, *अनुत्ताने* (सा. भा.)।

अ०ड० अंतारे (क) क्रि. रू.— (व. व) कहते हैं (व्या. भा.) *अनुत्तारे*, *अनुत्तारे* (सा. भा.)।

अ०ड० अंतारै (क) क्रि. रू. (ए. व.)—कहती है (व्या. भा.)। *अनुत्तारै*, *अनुत्तारै* (सा. भा.)।

अ०ड० अंति (क) क्रि. रू.— (तू) कहती है (व्या. भा.)। *अनुत्ति*, *अनुत्ति* (सा. भा.)।

अ०ड० अंति (क) सं.— बड़ी बहन। (तमिल शब्द 'अंति')।

अ०ड० अंतिक (सम्) अ.—समीप।

अ०ड० अंतिम (सम्) वि.— अंतिम, आखिरी।

अ०ड० अंतिके (क) अ.—वैसे, उस प्रकार।

अ०ड० अंतिके (क) सं.— 1. चूल्हा 2. बड़ी बहन दे. अ०ड०।

अ०ड० अंतितु, अ०ड० अंतु (क) अ.— दे. अ०ड०।

अ०ड० अंतु (क) वि.— सारा, पूरा, कुल। क्रि. रू.—उसने कहा *It said* (व्या. भा.)। अ०ड०। (सा. भा.)।

अ०ड० अंतुदु (क) वि.— उतना। अ.— वैसा, उस प्रकार।

अ०ड० अंते (क) क्रि. रू.—कहा जाता है।

अ०ड० अंतैवोल, अ०ड० अंतैवोल (क) अ.—वैसा, उस प्रकार।

अ०ड० अंतैवासि (सम्) सं.— 1. शिष्य 2. चाण्डाल।

अ०ड० अंत्य (सम्) वि.— अंतिम, नीचा। सं.—मृत्यु।

अ०ड० अंत्यज (सम्) सं.— चाण्डाल, हरिजन।

अ०ड० अत्र (सम्) सं.— अंतड़ी।

अ०ड० अत्र (तद्)—अंतर (तत्)। उदा.— *अत्र देशांतर*।

७०३ अंत्रि (क) सं— एक पौधा (Ipomea pes caprae Roth or convolvulus argenteus.)

७०४ अंद (क) सं. — सौंदर्य, रूप । —
 ७०४ अरु (सुह.)— सुन्दर हो, अच्छा हो ।
 — ७०४ गार— सुन्दर पुरुष । — ७०४ गार्ति— सुन्दरी ।

७०५ अंदण, ७०६ अंदल (क) सं. — पालकी ।

७०७ अंदिगे, ७०८ अंदुगे (क) सं.—
 १. जंजीर २. पायल, नूपुर, घुंघुरू । अंदु (तत्) ।

७०९ अंदुक (सम्) सं.— पायल, नूपुर ।
 ७१० अंध (सम्) सं.— १. अंधा २. अंध-कार ३. जल ४. मूर्ख । — ७१० अंध परंपरे (सम्) सं.— अंध-परंपरा, अंधानुकरण, मूढ-विश्वास ।

७११ अंधक (सम्) सं.— १. अंधा २. एक राक्षस का नाम । — ७११ अंध जित (सम्) सं.— शिव ।

७१२ अंधकार (सम्) सं.— अंधकार, रात्रि ।

७१३ अंधकाराति (सम्) सं.— शिव ।

७१४ अंधतमस (सम्) सं.— अत्यधिक अंधकार ।

७१५ अंधस (सम्) सं.— १. अंधा २. भोजन ३. उवाला गया चावल ।

७१६ अंधु (सम्) सं.— कुआ, कूप ।

७१७ अंध्र (सम्) सं.— १. आंध्र प्रदेश २. तेलुगु भाषी ।

७१८ अंपक (क) सं.— १. विदाई, बंधु-मित्रों की विदाई का समारोह २. भेजना, प्रेषित करना । (तेलुगु — अंपु, अंपु पंपु (क्रि.) — भेज ; तमिल — अंपु, अंपु (क्रि.)—भेज) ।

७१९ अंव (सम्) सं.— १. पिता २. आँख । (क) अ.— कहा जानेवाला 'अंव ऐव' भी इसी अर्थ का धौतक है ।

७२० अंवक (सम्) सं.— १. आँख २. पिता ३. ताम्र ४. संख्या '२' ।

७२१ अंवकल, ७२२ अंवलि ७२३ अंवलि, ७२४ अंवलि (क) सं.— छाछ या भट्टे में मिलाया गया आनाज का आटा जो आहार के रूप में पिया जाता है ।

७२५ अंवाग, ७२६ अंवागि, ७२७ अंवागि (क?) सं.— मल्लाह. कर्णधार, नाविक ।

७२८ अंवट (तद्) सं.— अंबट (तत्) नाई । [७२८ नाविद (क) और ७२९ अंबटन् (तमिल)]

७३० अंबट, ७३१ अंबटे (तद्) सं.— आम्नातः (तत्), आमड़ा ।

७३२ अंबर (सम्) सं.— १. कपड़ा, वस्त्र २. गगन, आकाश, नभ, वातावरण ३. शून्य '०' का चिह्न ४. कपास, रूई ५. एक प्रकार की सुगंधि ६. अन्नक । — ७३२ अंबर (सम्) सं.— गगनचर, पक्षी, देवता । — ७३२ अंबरि (सम्) सं.— सूर्य ।

७३३ अंबरीष (सम्) सं.— १. सूर्य २. सूर्यवंश का राजा अंबरीष ३. कढ़ाई ४. नरकों में एक ५. शिव, विष्णु ६. युद्ध लड़ाई ।

७३४ अंबल (क) सं.— सार्वजनिक स्थान, बड़ा आंगन जहाँ आम जनता एकत्रित होकर ग्राम संबंधी वार्तालाप करती है ।

७३५ अंबष्ट (सम्) सं.— १. ब्राह्मण पिता और वैश्य माता का पुत्र २. वैद्य ३. नाई । दे. ७०३४.

७३६ अंबष्टे (सम्) सं.— जुही, पाठा, पहाड़मूल, चुका, आमड़ा आदि पौधों का नाम ।

७३७ अंबा (सम्) सं.— १. माता २. दुर्गा ३. काशी राजा की कन्या ४. गाय का रंभाना (अंबा अंहा, अंबे अंबे, अंबा, अंब्या शब्द भी इसी अर्थ के सूचक हैं) ।

७३८ अंबाकांत (सम्) सं.— दुर्गा के पति, शिव ।

७३९ अंबाडे (तद्) — दे. ७०३४. ७४० अंबापति, ७४१ अंबारमण (सम्) सं.— उमापति, शिव ।

७४२ अंबारि (क) सं.— हौदा, हाथी पर बांधा जानेवाला आसन ।

७४३ अंबारे (क) सं.— एक प्रकार का कीड़ा जो सूखी लकड़ी में होता है ।

७४४ अंबावर (सम्) सं.— उमापति ।

७४५ अंबि (क) सं.— नाव । — ७४५ अंबि (क) सं.— मल्लाह, नाविक ।

७४६ अंबिगार (क) सं.— नाविक, कर्णधार ।

७४७ अंबिल (तद्) सं.— दे. ७०३४, अम्ल (तत्) ।

७४८ अंबु (सम्) सं.— १. जल २. बाण, शर ३. सूखना, शोषण । — ७४८ अंबर (सम्) वि.— जल में रहनेवाले जीवजंतु । — ७४८ वाह (सम्) सं.— मेघ, बादल ।

७४९ अंबुगार (क) सं.— धनुर्धारी शिकारी, किरात ।

७५० अंबुज (सम्) सं.— कमल, जल में उत्पन्न । — ७५० अंबुज (सम्) सं.— ब्रह्मा । — ७५० अंबुज (सम्) सं.— सूर्य ।

७५१ अंबुजानने (सम्) सं.— कमलनेत्रा स्त्री ।

७५२ अंबुजांबक, ७५३ अंबुजायताक्ष (सम्) सं.— कमल जैसे नेत्र वाले, विष्णु ।

७५४ अंबुजासन (सम्) सं.— कमलासन, ब्रह्मा ।

७५५ अंबुजोद्भव (स) सं.— ब्रह्मा ।

७५६ अंबुद (सम्) सं.— जल देनेवाला, मेघ, बादल । — ७५६ अंबुद (सम्) सं.— ओले ।

७५७ अंबुधर (सम्)— बादल, मेघ ।

७५८ अंबुधि, ७५९ अंबुनिधि (सम्) सं.— जल-समूह, समुद्र ।

अंशुह अंबुरुह (सम्) सं. — जल में उत्पन्न, कमल । — अंशु आसन, अंशु पीठ, अंशु गर्भ (सम्) सं.—ब्रह्मा ।
 अंशुह अंबुरुहगर्भांड (सम्) सं.—जगत्, ब्रह्माण्ड ।
 अंशुह अंबुरुहनयने (सम्) सं.—कमलनेत्रा स्त्री ।
 अंशुह अंबुवाह (सम्) सं.—बादल ।
 अंशुह अंबुवेतस (सम्) सं.—एक प्रकार का रत्न ।
 अंशुह अंबुवीडु (क) सं.— (अंशु + अंबु) —तरकस, बाण-कोश ।
 अंशु अंबे, अंशु अंबा (सम्) सं. — 1. माता 2. पार्वती 3. नानी ।
 अंशु अंबेकालु, अंशु अंबेगालु (व) सं.—(बच्चों का) घुटनों के बल चलना, घुटन ।
 अंशु अंबेरु (क) सं.— वाणाघात से उत्पन्न घाव, चोट ।
 अंशु अंभ, अंशु अंभस् (सम्) सं.— पानी, जल ।
 अंशु अंभोज, अंशु अंभोजे, अंशु अंभोजेचन (सम्) सं.— कमल के समान नेत्रवाले, विष्णु । संभव (सम्) सं.—ब्रह्मा ।
 अंशु अंभोद (सम्) सं.— जल देनेवाला, सेव, बादल ।
 अंशु अंभोधि, अंशु अंभोधिनिधि, (सम्) सं.—समुद्र ।
 अंशु अंभोभृत (सम्) सं.— जलधर, बादल ।
 अंशु अंभोराशि (सम्) सं.— जल की राशि, समुद्र ।
 अंशु अंशु (सम्) क्रि.— बाँट, विभक्त कर ।
 अंशु अंश (सम्) सं.— 1. भाग, हिस्सा, टुकड़ा 2. गणित का एक संकेत 'भाग'

3. अक्षांश, रेखांश भाग । — अंशु अवतरण, अंशु अवतार (सम्) सं.— देवी-शक्ति के एक भाग से युक्त (अवतार) पुरुष ।— अंशु भाक्, अंशु हर, अंशु हारि (सम्) सं.— उत्तराधिकारी, वारिस ।
 अंशु अंशक (सम्) सं.— 1. जिसका भाग या हिस्सा हो, हिस्सेदार 2. हिस्सा, भाग, टुकड़ा 3. सौरमान का एक दिन ।
 अंशु अंशमापक (सम्) सं.— द्रव पदार्थों को मापने का एक साधन, एक उपकरण ।
 अंशु अंशांश (सम्) सं.— अंश का अंश, हिस्से का हिस्सा ।
 अंशु अंशि (सम्) सं.— जिसका अंश हो, अंशी, भागी ।
 अंशु अंशु (सम्) सं.— 1. किरण, रश्मि, प्रकाश की रेखा 2. कांति, छवि, चमक, दमक 3. बिंदु, छोर 4. अत्यंत छोटा भाग 5. गहना, आभरण, अलंकार, पोशाक ।— अंशु चंड (सम्) सं.—सूर्य, सूरज ।— अंशु शीत (सम्) सं.— चंद्रमा ।— अंशु जाल, अंशु धर, अंशु पति, अंशु मालि (सम्) सं.— सूरज, सूर्य ।— अंशु पट्ट (सम्) सं.— एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।— अंशु माले (सम्) सं.— प्रभावली, तेजो-मंडल ।
 अंशु अंशुक (सम्) सं.— 1. ललित वस्त्र (fine cloth), महीन कपड़ा, मलमल, रेशमी वस्त्र 2. प्रकाश की मृदु रश्मि ।
 अंशु अंशुमत्, अंशु अंशुमंत (सम्) वि.— 1. चमकदार, कांतियुक्त, तेजस्वी 2. तेज, नोकदार । सं.— सूर्यवंश के राजा दिलीप के पिता का नाम ।
 अंशु अंशुमति (सम्) सं.— यमुना ।
 अंशु अंशुमत्फला (सम्) सं.— केले का पेड़ । — अंशु फल (सम्) सं.— केला (फल) ।
 अंशु अंशुल (सम्) वि.— चमकदार, प्रकाशमान, तेजस्वी । सं.— चाणक्य का नाम ।

अंशु अंस (सम्) सं.— 1. कंधा, भुजा 2. टुकड़ा, भाग, हिस्सा । क्रि.— टुकड़ा कर ।— अंशु कूट (सम्) सं.— सौंड के कंधों के बीच का ऊपर को उठा हुआ भाग, कूबड, कुब्ज ।— अंशु त्र (सम्) सं.— कंधों का कवच विशेष ।— अंशु फलक (सम्) सं.— मेरुदंड का ऊपरी भाग ।— अंशु भारि, अंशु भारक (सम्) वि.— कंधे पर बोझा उठानेवाला ।
 अंशु अंसल (सम्) वि.— मजबूत कंधों-वाला, बलवान ।
 अंशु अंह, अंशु अंहस (सम्) क्रि.— 1. जाना, समीप जाना 2. आरंभ करना 3. भेजना 4. बोलना 5. स्पर्श करना 6. चमकना । सं.— पाप, ताप, कष्ट, चिंता ।
 अंशु अंहति (सम्) सं.— 1. भेंट, उपहार, दान, खैरात 2. रोग, वीमारी ।
 अंशु अंहिति (सम्) सं.— दे. अंशु ।
 अंशु अः, अंशु अह् (क) अ.— विसर्ग अक्षर ; आश्चर्य-आनंद सूचक अव्यय ।
 अंशु अक् (क) क्रि.— 'अंगु' 'हो' क्रिया का रूप जिसके साथ भविष्यत् काल में अंशु कु और अंशु कुं प्रत्यय लगते हैं, जैसे— अंशु + अंशु = अंशुकु (अंकु), अंशु + अंशु = अंशुकुं (अंकुं) ; तथा आज्ञार्थ (Imperative) में 'अंशु' के प्रत्यय लगता है, जैसे— अंशु + अंशु = अंशुकु (अंकु) ।
 अंशु अक (सम्) सं.— 1. हर्ष का अभाव, दुःख, पीडा, कष्ट, 2. पाप ।
 अंशु अक (क) वि. बो.— 1. अरे ! देखो ! अन्य शब्द— अंशु अकक, अंशु अकला, अंशु अको, अंशु अले । 2. 'अक' का तद्भव । 3. कृत-तद्धित प्रत्यय ।
 अंशु अक (सम्) सं.— कृत-तद्धित प्रत्यय । उदा.— अंशु बोध + अंशु अक = अंशु बोधक ।
 अंशु अकच (सम्) वि.— 1. गंजा, जिसके सिर पर बाल न हों ! 2. केतु का नाम ।

अक्षर अक्षर (तद्) सं.— अगति (तत्). एक
वृक्ष Grandiflora poir.

अक्षर अक्षर, अक्षर अक्षर (क) वि. बो.—
हाय ! हाय ! हा ! हा !

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — कंटक रहित,
जिसमें कोंटा न हो, निर्विघ्न, विना खतरे के,
ईर्ष्या रहित ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — 1. कर हीन, जिसका
हाथ न हो, कटा हुआ 2. बेकार, बेकाम,
कार्य से विरत 3. कर (tax) से रहित ।

अक्षर अक्षर (सम्) सं.—बेकारी, काम न
करना 2. अवयवहीनता ।

अक्षर अक्षर अक्षर (सम्) सं.— 1. वह
कार्य जो नहीं करना चाहिए, अनुचित या
बुरा काम 2. जुर्म, अपराध ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — 1. जिसके पास
करने के लिए कुछ काम न हो, सुस्त
2. अयोग्य 3. पतित, दुष्ट । सं.—
1. अपराध, बुरा काम, अनुचित कार्य । क
— अक्षर क्रिया । कर्म (सम्) वि.—
क्रिया से रहित, अनुचित काम करनेवाला ।
— भोग (सम्) सं.— निष्काम कर्म ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — पूरा, सारा,
संपूर्ण । सं.— 1. समुद्र का जल-समूह
2. दैवी शक्ति ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — शुद्ध, पवित्र ।—
एका (सम्) सं.— चंद्रिका, चाँदनी ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि.— दोष रहित,
कलंक रहित, विशुद्ध, पवित्र ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — जिसकी पत्नी
न हो, विधुर, अविवाहित ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि.— अनियंत्रित, अशक्त,
अतुलनीय ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — कलमप रहित
दोष रहित, शुद्ध ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — हठात्,
सहसा, अकस्मात् उत्पन्न ; स्वाभाविक ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि.— अस्वस्थ, बीमार ।
अक्षर अक्षर (सम्) वि.— संयोगवश,

आकस्मिक, सहसा, तत्क्षण. हठात्, दैव
योग से, आप से आप, अकारण ।

अक्षर अक्षर (तद्) वि. — अकलंक
(तद्) दे. अक्षर.

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — 1. औचक,
सहसा, इत्तफाकिया । 2. जिसमें डाली या
शाखा न हो ।— अक्षर तांडव (सम्) सं.—
असंबद्ध आचरण, अर्थहीन कार्य, असमय
का बखेड़ा ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि.— कारण रहित.
जिसका कारण ज्ञात न हो, बेकार, व्यर्थ ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि.— अनुचित । सं.—
बुरा काम । कर्त्तव्य (सम्) वि.— बुरा
काम करनेवाला ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — 1. अनुपयुक्त
समय, अनवसर, कुसमय 2. कच्चा ।—
अक्षर (सम्) सं.— असमय में मिलने-
वाला फल । अक्षर मरण (सम्) सं.—
असमय में मृत्यु ।— अक्षर (सम्) सं.—
असमय में आनेवाली वर्षा ।

अक्षर अक्षर (सम्) सं.— जिसके पास
कुछ न हो, निपट निर्धन, दरिद्र, कंगाल,
गरीब ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. —
1. असमर्थ, अशक्त 2. तुच्छ ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि.— जो कुटिल या
वक्र न हो, सीधा, सरल, ईमानदार, कपट
रहित ।

अक्षर अक्षर (सम्) क्रि.वि.— जो कहीं से न
हो ।— अक्षर भय (सम्) वि. — जिसको
कहीं से भय न हो, निर्भीक ।

अक्षर अक्षर (सम्) सं.— 1. सुवर्ण, सोना
2. चाँदी 3. कम कीमती धातु नहीं ।

अक्षर अक्षर (सम्) सं.— 1. मूर्ख, मूढ़,
अनाडी 2. अशुभ, अभाग ।

अक्षर अक्षर (सम्) सं.— 1. कच्चा
2. भूमि को ढोनेवाला कूर्मराज 3. सूर्य
4. समुद्र ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि.— 1. जो न किया

गया हो, जो ठीक-ठीक न किया गया हो,
जिसके करने में भूल की गई हो 2. अपूर्ण
अधूरा 3. अपक्व, कच्चा, जो तैयार न हो
4. स्वाभाविक 5. सच्चा ।— अक्षर अर्थ
(सम्) वि.— असफल, अनुत्तीर्ण ।— अक्षर
आत्मन (सम्) वि.— मूर्ख, मूढ़, बुद्धिहीन ।
— क (सम्) वि.— सहज, स्वाभाविक,
सच्चा ।— अक्षर (सम्) वि.— जो कृतज्ञ
न हो, कृतघ्न ।

अक्षर अक्षर (सम्) सं.— 1. बुरा काम,
2. अपराध ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि. — 1. जो
कुल्लिम न हो, स्वाभाविक 2. जो धोखे का
न हो, सच्चा ।

अक्षर अक्षर (सम्) वि.— अनजुती हुई, जो न
जोती गई हो ।— अक्षर पच्य, अक्षर रोहि
(सम्) सं.— जो अनजुती ज़मीन में उत्पन्न
हुआ हो ।

अक्षर अक्षर — अक्षर का (सम्) सं.— माता ।
(क) सं.— बड़ी बहन ।

अक्षर अक्षर (क) सं.— 1. आश्चर्य,
विस्मय 2. आश्चर्यकर पदार्थ 3. मात्सर्य,
असंतोष ।

अक्षर अक्षर (क) सं.— 1. दो मुख्य उपज
प्राप्त करने के लिए बीच में खींची गई हल
की रेखा 2. तंगी, संकट 3. नाप-तोला में
धोखेवाजी 4. बोली की ठगई 5. मूँग,
उडद, अरहर आदि अनाज (pulses) .

अक्षर अक्षर (क) सं.— दे. अक्षर.

अक्षर अक्षर (तद्) सं.— अक्षर
(तद्) । जपमाला, अक्षरमाला ।

अक्षर अक्षर (तद्) सं.— 1. अक्षर (तद्) ।
2. प्रेम, प्रीति ।— अक्षर (क) सं.— प्रीति,
अक्षरत्व ।

अक्षर अक्षर (क) सं.— 1. प्रीति, प्रेम
2. एक वनस्पति ।

अक्षर अक्षर (क) सं.— अक्षरों को
जाननेवाला, पंडित, विद्वान ।— अक्षर
(क) सं.— मूर्ख ।

अच्छु अक्कर, अच्छु अक्करते, अच्छु अक्करे, अच्छु अक्करे, अच्छु अक्करे (क) सं.—प्रेम, प्रीति, स्नेह। उदा.—
अनरु ननु ननु अक्षु अक्करते-
यिद नोडुत्तारे— वे तुमको कैसे (कितने)
प्रेम से देखते हैं।

अच्छु अक्करते (क) सं.— प्रीति, प्रेम (मै. प्र.)।

अच्छु अक्कल, अच्छु अक्कले (क) सं.—एक पौधा (The plant Anthe-
mis pyrethrum.

अच्छु अक्कल (क) सं.— 1. अनुराग, प्रेम दे. अच्छु 2. ईर्ष्या, मात्सर्य।

अच्छु अक्कल (क) वि.— प्रेम करने-
वाला।

अच्छु अक्कल (क) वि.— प्रेम करनेवाली।

अच्छु अक्कल, अच्छु अक्कले, अच्छु अक्कल, अच्छु अक्कल (क) सं.—सोना, सुना।

अच्छु अक्कल (क) सं.— सुनारिन, सुनार जाति की स्त्री।

अच्छु अक्कले (क) सं.— दूसरों को हँसाने के लिए उनके शरीर पर उंगली फेरना, कचोटनी काटना।

अच्छु अक्कले (क) क्रि.— 1. जंभाई लेना 2. भूख के कारण पेट के अंदर अंतडी का सिमटना 3. दूसरों को हँसाने के लिए उनके शरीर पर उंगली फेरना (Tickling).

अच्छु अक्कले (क) सं.— एक कीड़ा (Cockroach) (द. क.)।

अच्छु अक्कले (क) सं.— जैन सन्यासिनी।

अच्छु अक्कले (क) क्रि.— 1. बहना, बर्तन से पानी आदि का बाहर आना, धारा 2. कांतिहीन होना, शक्तिहीन होना।

अच्छु अक्कले (क) क्रि.— रोने के कारण गला सूखना।

अच्छु अक्कले (क) सं.— 1. चावल, तंडुल 2. चावल जैसे अन्य अनाज। — अच्छु कच्छु (क) सं.—चावल को साफ किया हुआ अथवा उबालकर निकाला गया पानी, मॉड।

अच्छु अक्कले (क) सं.— चिड़िया, पक्षी (ग्रा.) अच्छु अक्कले (तद्) सं.— अक्षि (तत्), दृष्टि की शक्ति, बीनाई।

अच्छु अक्कले (तद्) सं.— अक्षर (तत्)।

अच्छु अक्कले (क) क्रि.— पिघला, पचा, हजम कर।

अच्छु अक्कले (क) अ. क्रि.— होना। क्रि.— वश में कर, नियंत्रण में रख 2. पकड़, आलिंगन कर 3. ठीक प्रकार से पचा, हजम कर। — अच्छु आडु (क) क्रि.— कांति - बलहीन हो। 4. प्राचीन कन्नड में 'अच्छु अक्कले' संशयार्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे— अच्छु अक्कले बंदनक्कु— आया हो। 5. प्र.—होगा, होता है आदि अगु आगु धातु से।

अच्छु अक्कले (क) सं.— उत्साही, बलवान, सत्वशाली पुरुष 2. विश्वासपात्र 3. उतावला मनुष्य।

अच्छु अक्कले (क) क्रि.— 1. जंभाई ले, संकोच कर 2. छोटा होना, निम्न होना, क्षय होना।

अच्छु अक्कले (क) क्रि.— 1. दे. अच्छु 2. पीछे हट, भीत हो, संकोच कर।

अच्छु अक्कले (क) सं.— डर, भय।

अच्छु अक्कले (क) अ.— जी हाँ, हाँ। सं.— विलाप, रुलाई, क्रंदन।

अच्छु अक्कले (सम्) वि.— 1. रंग लगा हुआ, लेपन किया हुआ 2. तैलादि की मालिश किया हुआ 3. जोड़ा हुआ 4. गया हुआ 5. बाहर तक फैला हुआ।

अच्छु अक्कले (सम्) वि.— गड़बड़, अडबड़। सं.— 1. अनियमितता, अव्यवस्था, औचित्य-भंग 2. अन्याय 3. एक अलंकार, एक प्रकार का वाक्य-दोष।

अच्छु अक्कले (सम्) वि.— जो क्रूर या कठोर न हो, सौम्य। सं.— एक यादव का नाम, जो श्रीकृष्ण के चाचा और हितैषी थे।

अच्छु अक्कले, अच्छु अक्कले, अच्छु अक्कले, अच्छु अक्कले (तद्) सं.— अक्षोटः (तत्), अखरोट (हि) Aleurites triloba.

अच्छु अक्कले (सम्) सं — क्रोधराहित्य, शांति।

अच्छु अक्कले (सम्) सं.— जो क्लीब न हो, पौरुष युक्त मनुष्य, पुरुष।

अच्छु अक्कले (सम्) वि.— 1. दुःख रहित, ताप रहित, पीडा रहित। 2. विघ्न-विनाश, पीडा-निवारण।

अच्छु अक्ष (सम्) सं.— 1. धुरी 2. गाड़ी, छकड़ा 3. पहिया 4. तराजू की डांढी 5. अक्षरेखा, एक कल्पित स्थिर रेखा जो पृथिवी के भीतरी केंद्र से होती हुई उसके आर-पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिसपर पृथिवी घूमती हुई मानी जाती है, गर्भसूत्र 6. चौंसर, चौंसर का पाँसा 7. रुद्राक्ष 8. तौल विशेष जो 16 मासे की होती है जिसे कर्ष भी कहते हैं 9. बहेड़ा 10. सर्प 11. गरुड 12. आत्मा 13. ज्ञान 14. सुकहमा, व्यवहार, मामला 15 जन्मान्ध 16. सैंधव (लवण)—अच्छु आवळि (सम्) सं.— जपमाला। — अच्छु क्रीडा (सम्) सं.— जुआ। अच्छु कुशल, अच्छु धूत, अच्छु शौंड, अच्छु ज (सम्) वि.— जुआ खेलने में प्रवीण। — अच्छु दर्शक (सम्) सं.— जुए का निर्णायक, न्यायाधीश। — अच्छु पाद (सम्) सं.— गौतम ऋषि का नाम। — अच्छु दाम, अच्छु माला, अच्छु सूत्र (सम्) सं.— जपमाला, रुद्राक्षमाला। — अच्छु हृदय (सम्) सं.— जुए के खेल में पूर्ण निपुणता।

अच्छु अक्षणिक (सम्) वि.— स्थिर, दृढ, जो क्षणिक न हो।

अक्षर (सम्), अक्षर अक्षर, अक्षर
अक्षर, अक्षर अक्षर, अक्षर अक्षर (तद्)
सं. — 1. बिना दूटे चावल जो पूजा के काम
में आते हैं 2. बिना दूटा, साजा 3. पुरुष के
संपर्क से दूर (स्त्री)। — अक्षर
आरोपण (सम्) सं. — जिनको आशीर्वाद
दिया जाता है, उनके सिर पर अक्षर डालने
की क्रिया।

अक्षर (सम्) वि.—अयोग्य, असमर्थ।
सं. — 1. तिरस्कार, घृणा 2. अस्या,
हैर्या 3. क्षमारहित 4. अधीर।

अक्षर (सम्) सं.— 1. जपमाला
की मणि 2. अ से क्ष तक के अक्षरों को
गिनने की मणि-माला।

अक्षर, अक्षर (सम्) वि.—
1. जिसका नाश न हो, अविनाशी, अनश्वर,
सदा बना रहनेवाला, कभी जो न चुके
2. कल्पांतरायायी 3. साठ वर्षों में एक
वर्ष का नाम— अंतिम वर्ष। — अक्षर
वृत्तीय (सम्) सं.— त्रैशख शुक्र वृत्तिया तिथि,
जो एक वर्ष दिन है। — अक्षर पात्रे
(सम्) सं— वह वर्तन जो कभी खाली नहीं
होता। महाभारत के अनुसार पांडवों के
पास ऐसा वर्तन था।

अक्षर (सम्) वि. — 1. अच्युत, स्थिर,
नित्य, अविनाशी। 2. विषम, असंगत।
सं.— 1. परब्रह्म 2. लिखावट का चिह्न,
अ से ह तक के सभी अक्षर। 3. मधुमक्खी
4. सफेदी 5. जल 6. आकाश 7. धर्म।
— अक्षर अर्थ (सम्) सं.— शब्दार्थ। —
अक्षर चण (सम्) वि.— लिखनेवाला, पढ़ा-
लिखा। — अक्षर जीवि, अक्षर जीवक (सम्)
वि.— लेखन-कार्य से आजीविका पानेवाला।
अक्षर (सम्) वि.— पढ़ा-लिखा। — अक्षर
जननी, अक्षर तूलिका (सम्) सं.— नरकुल
या सौंटे की कलम, लेखनी। — अक्षर माले
(तद्) सं.— वर्णमाला, अक्षरों का समूह।
— अक्षर मुख (सम्) सं.— छात्र, विद्यार्थी।
— अक्षर संस्थान (सम्) सं.— 1. लेख
2. वर्णमाला। — अक्षर स्थ (सम्) वि.—
पढ़-लिखा।

अक्षरशः (सम्) अ.— एक-एक अक्षर,
शब्दानुसार।

अक्षरालम्ब (सम्) वि.— अक्षररूप,
जो अक्षरों के द्वारा प्रकट किया जाता है।

अक्षराम्यास (सम्) सं— अक्षरों
का अभ्यास, एक त्योहार का दिन— उस दिन
बच्चे को अक्षर सिखाया जाता है।

अक्षान्ति (सम्) सं.— असहनशीलता,
सहनशीलता का अभाव, तिरस्कार, घृणा,
मात्सर्य।

अक्षान्श (सम्) सं.— अक्षान्श रेखा। दे.
अक्ष 5.

अक्षर (सम्) वि.— अकृत्रिम, स्वाभा-
विक। सं.— 1. नमक 2. 'अक्षर' का
दूसरा रूप।

अक्षि (सम्) सं.— 1. आँख 2. दो
की संख्या। — अक्ष गत (सम्) वि.—
1. दृष्टिगोचर, उपस्थित, वर्तमान 2. आँख
में पड़ी हुई (किरकिरी) 3. घणित। —
अक्ष पक्ष, अक्ष रोम, अक्ष लोम
(सम्) सं.— पलक, पलकों के किनारे
के ऊपरी वाल। अक्ष विकृणित, (सम्)
सं.— तिरछी नज़र. कनखियों की दृष्टि।

अक्षिकर्ण, अक्षिकर्ण (सम्) सं.— सांप।

अक्षिव, अक्षिव (सम्) सं.—
समुद्री लवण, पौधा विशेष।

अक्षिण (सम्) वि.— जो क्षीण न हो,
जो कम न हो, पूर्ण।

अक्षिव (सम्) वि.— दे. अक्षिव.

अक्षुण्ण (सम्) वि.— 1. अभय,
अनदूटा, समृचा 2. अनाडी, अकुशल
3. जो परास्त न हुआ हो, जो जीता न गया
हो. सफल मनोरथ 4. जो कुचला, कूटा
या पीटा गया हो 5. असाधारण।

अक्षुद्र (सम्) वि.— जो छोटा या हेय
न हो, बड़ा, ऊँचा।

अक्षुभित (सम्) वि.— अचल. जो
उद्वेग में न आया हो।

अक्षुण्ण (सम्) वि.— दे. अक्षुण्ण.

अक्षेत्र (सम्) सं.— 1. बुरा या
खराब खेत 2. कुशिय 3. अयोग्य पात्र।
वि.— बिना खेतवाला, बिना जोता-बोया
हुआ। — अक्ष (सम्) वि.— जिसको
आध्यात्मिक ज्ञान न हो।

अक्षोट (सम्) सं.— अखरोट दे.
अक्षुष्य.

अक्षोभ्य (सम्) वि.— अचल,
उद्वेगरहित, दृढ़, स्थावर।

अक्षौहिणि (सम्) सं— सेना का
परिमाण. पूरी चतुरगिनी सेना। एक
अक्षौहिणी में 21,870 रथ, 21,870 गज
65,610 अश्व और 1,09,350 पैदल
सिपाही होते हैं।

अखंड (सम्) वि.— 1. जो टूटा न
हो, संपूर्ण, अभय, समृचा. अदूटा
अविच्छिन्न, लगातार।

अखंडनं (सम्) सं.— जिसको कोई
काट न सके, संपूर्ण 2. समय।

अखंडभाग्य (सम्) सं.— संपूर्ण
संपन्नता. पूरी अमीरी।

अखंडमंडल (सम्) सं.—
साम्राज्य, पूरे राज्य का स्वामित्व।

अखंडसौभाग्य (सम्) सं.—
1. दे. अखंडभाग्य 2. चिर सुहाग
3. वैश्यावृत्ति।

अखंडित (सम्) वि.— जिसके टुकड़े
न हो, विभाग रहित, अविच्छिन्न. अनिश्चिता।
अखंड अखंड (सम्) वि.— जो छोटा न हो,
बड़ा।

अखल्य (सम्) वि.— डरपोक. कापुरुष
युद्ध के लिए अयोग्य।

अखाड (अ. दे.)— 1. अखाड़ा (हि)
2. कुश्ती लड़ने का स्थान, रंगभूमि।

अखात (सम्) वि.— 1. बिना खोदा
हुआ या स्वाभाविक जलाशय, झील या
खाड़ी 2. किसी मंदिर के नामने की
पुष्करिणी।

अखाद्य (सम्) वि.— जो खाने योग्य
न हो, जो नहीं खाया जा सकता।

अंष्ट अखिल (सम्) वि.—पूरा, सारा, संपूर्ण, समग्र, सब, समूचा ।— ७०८ अंक (सम्) सं—अनेक नामवाले परमेश्वर ।— ७०९ अंड (सम्) सं— संपूर्ण विश्व ।— ७१० अद्वैत (सम्) सं— केवलाद्वैत ।— ७११ अशांत (सम्) सं— दिगंत, सभी दिशाओं का अंत ।

अंष्ट अग (सम्) वि.—अचल । सं— पत्थर, पहाड़, पेड़ ।

अंष्ट अगचाटलु (क) सं— तकलीफ, कष्ट, बाधा, अडचन ।

अंष्ट अगचु (क) क्रि.— दबाना, कुचलना, बल देकर पकड़ना, ठीक प्रकार से संभालना ।

अंष्ट अगचे (क) सं— 1. नगरद्वार 2. किले का द्वार, फाटक । अंष्ट अगजा, अंष्ट अगजाते (सम्) सं— पार्वती ।

अंष्ट अगजारमण, अंष्ट अगजे यरस, अंष्ट अगजेंद्र, अंष्ट अगजेश (सम्) सं— पार्वती के पति, शंकर ।

अंष्ट अगड (क) अ.— दे. अंष्ट ।

अंष्ट अगडु (क) वि.— दुष्ट, क्रूर, क्षुद्र, हीन, नीच ।— ७१२ तन (क) सं— 1. क्रूरता 2. नटखटपन 3. मूर्खता । ७१३ मोरे (क) सं— 1. क्रूर मुख 2. बद-सूरत ।

अंष्ट अगणि, अंष्ट अगळि (तद्) सं— अर्गला (तत्) । किह्नी, सिटकनी, किवाड़ बंद करने का काठ का यंत्र ।

अंष्ट अगणित (सम्) वि.— अनगिनत, अनेक, बहुत ।

अंष्ट अगण्य (सम्) वि.— जो गिना न जा सके, जो मुख्य न हो, अमुख्य ।

अंष्ट अगत (क) सं— खुदाई, भूमि को खोदने की क्रिया ।

अंष्ट अगति (सम्) सं— 1. उपाय रहित, बिना उपाय का 2. अनवबोध ।

अंष्ट अगते (क) सं— दे. अंष्ट ।

अंष्ट अगत्य (सम्) वि.— आवश्यक । सं— आवश्यकता ।

अंष्ट अगद (सम्) सं— 1. औषध, दवा 2. स्वास्थ्य । वि.— नीरोग, रोगरहित, स्वस्थ ।

अंष्ट अगदंकार (सम्) सं— रोग दूर करनेवाला, वैद्य, चिकित्सक, डाक्टर ।

अंष्ट अगदि (अ. दे.) अ.— पूरा, कुल, बिलकुल ।

अंष्ट अगदु, अंष्ट अगदु (क) क.— खोदकर (अंष्ट=खोद क्रि.)

अंष्ट अगधर (सम्) सं— गिरिधारी, श्रीकृष्ण ।

अंष्ट अगपडु (क) क्रि.— 1. वन में हो 2. पा, मिल ।

अंष्ट अगपे (क) सं— काठ या नारियल की खोली (cocoanut shell) से बनाया गया उपकरण, दारुहस्तक ।

अंष्ट अगभेदि (सम्) सं— 1. पर्वतों को विच्छिन्न करनेवाला, इंद्र, वज्र 2. पेड़ काटनेवाला, कुल्हाड़ी ।

अंष्ट अगम (सम्) सं— जो नहीं चल सकता, पेड़, पर्वत ।

अंष्ट अगम्य (सम्) वि.— 1. गमन के अयोग्य, जहाँ कोई न पहुँच सके 2. अज्ञेय 3. विकट, कठिन 4. अपार, बहुत अत्यंत 5. अथाह, बहुत गहरा ।

अंष्ट अगम्यागमन (सम्) सं— न गमन करने योग्य स्त्री के साथ गमन करना, व्यभिचार ।— ७१४ गामि (सम्) वि.— व्यभिचारी ।

अंष्ट अगर (क) सं— जहाज़ या नौका का पिछला भाग ।

अंष्ट अगरणे (क) सं— निंदा, दोषारोपण, गालियाँ ।

अंष्ट अगरिपु (सम्) सं— पर्वतारि, इंद्र ।

अंष्ट अगरु (क) सं— सिर की रूसी, चाँई ।

अंष्ट अगरु (सम्) सं— ऊद, अगर लकड़ी ।

अंष्ट अगळ (क) क्रि.— 1. चौड़ा हो, विस्तृत हो 2. अलग हो, पृथक हो, भिन्न हो, दूर हट 3. नष्ट हो, मर ।

अंष्ट अगळ (क) वि.— काफ़ी चौड़ा । सं— चौड़ाई ।

अंष्ट अगळिके (क) सं— 1. पृथकता, भिन्नता 2. विदाई 3. वियोग ।

अंष्ट अगळित्तु (क) क्रि.— दूर कर, पृथक कर, अलग कर ।

अंष्ट अगळित्तु (क) वि.— चौड़ा, विशाल विस्तृत ।

अंष्ट अगळिसु (क) क्रि.— दे. अंष्ट ।

अंष्ट अगळविके (क) सं— वियोग, विप्रयोग ।

अंष्ट अगळके (क) सं— दे. अंष्ट ।

अंष्ट अगळचु (क) क्रि.— दे. अंष्ट ।

अंष्ट अगळते, अंष्ट अगळते (क) सं— खाई, गार, नाला ।

अंष्ट अगवडु (क) क्रि.— पकड़ा जा, फँस जा (अंष्ट अगवडु — तमिल) ।

अंष्ट अगवैरि (सम्) सं— पर्वतारि, इंद्र ।

अंष्ट अगस (क) सं— धोबी ।

अंष्ट अगसगिति, अंष्ट अगसति, अंष्ट अगसिति (क) सं— धोबन, धोबिन ।

अंष्ट अगसाल, अंष्ट अगसाले (क) सं— सोनार ।

अंष्ट अगसिग (क) सं— धोबी ।

अंष्ट अगसुते (सम्) सं— पर्वत की पुत्री, पार्वती ।— ७१५ ईश (सम्) सं— शिव ।

अंष्ट अगसे (क) सं— दे. अंष्ट ।

अंष्ट अगसे (तद्) सं— अगस्ति (तद्), एक प्रकार तिलहन (sesbana) ।

अंष्ट अगस्ति (सम्) सं— 1. एक वृक्ष 2. एक ऋषि का नाम 3. एक नक्षत्र ।

अंष्ट अगस्त्य (सम्) सं— दे. अंष्ट ।— ७१६ तीर्थ (सम्) सं— दक्षिण समुद्र के पास एक तीर्थस्थान ।— ७१७ अ्रात (सम्) सं— एक ज्ञानी मुनि ।

अंष्ट अगळ (क) क्रि.— 1. हिल-डुल, डोलायमान हो 2. खोद, भूमि को खोद ।

अंष्ट अगळ (क) वि.— चौड़ा । सं— खुदा हुआ, खाई, किले के बाहर की चारों ओर की खाई ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— दे. अग्नि.

अग्नि अगलि(क) सं.— पका चावल का दाना, भात का दाना ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— 1. खोद 2. दाँत से काट ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— किले के बाहर की खाई ।

अग्नि अगलि (अ. दे.) अ.— सामने, आगे, पहले ।

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जो घना न हो, सुगम, हल्का ।

अग्नि अगलि (सम्) वि.— 1. अथाह, बहुत गहरा, तलस्पर्शी । 2. असीम, अपार, बहुत, अधिक 3. दुर्बोध । — अथ जल (सम्) सं.— अत्यंत गहरा सरोवर ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— पर्वतों का राजा, मेरु पर्वत ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— घर, मकान ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— 1. खोद, रंध्र कर 2. दाँतों से चूर-चूर कर 3. हिल-डुल, काँप 4. आनंदित हो, प्रसन्न हो 5. डर, भीत हो । सं.— अंकुर, छोटा वृक्ष ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (तद्) सं.— अंगीठा, अंगीठी ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— जल, पानी । ये शब्द प्रायः लिंगायतों के मठों में पढ़े-लिखे लोगों द्वारा प्रयुक्त होते हैं ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— अग्नि (तद्), आग ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— स्वर्ग, आकाश ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— सौरभ, सुगंधित वस्तु ।

अग्नि अगलि (क) वि.— सुगंधरहित, सौरभहीन ।

अग्नि अगलि (क) सं.— दे. अग्नि.

अग्नि अगलि (क) क्रि.— हो, उत्पन्न हो ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— दे. अग्नि.

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जिसमें गुण न हो, गुणहीन, हीन, नीच । सं.— दोष ।

अग्नि अगलि (क) सं.— 1. विस्तार 2. बड़प्पन, महनता 3. व्यापकता ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— खोद, गड्ढा बना ।

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जो बड़ा न हो, छोटा, हल्का, लघु ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— 1. डर, भय, घबराहट 2. भयंकराकृति ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— डरा, भयंकराकार का हो ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— हिल, डुल ।

अग्नि अगलि (क) सं.— एहसान ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— 1. दे. अग्नि. 2. छाती से लगा ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— 1. खोद 2. गड्ढा बना 2. पानी में डूब ।

अग्नि अगलि (क) सं.— दे. अग्नि.

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— 1. पका चावल का दाना, भात की गोलाकृति 2. एक पौधा Zingiber Zerumbet Roscoe.

अग्नि अगलि (क) क्रि.— खुदा (प्रेरणार्थक), गड्ढा बनवा ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— डुबा (प्रेरणार्थक) ।

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जो गुप्त न हो, स्पष्ट ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (सम्) सं.— जिसका मकान न हो, संन्यासी ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— दे. अग्नि. सं.— पौधा ।

अग्नि अगलि (क) प्र.— क्रि. वि. प्र. ।

अग्नि अगलि (क) सं.— अंकुर या पौधों को लगाने का स्थान (द. क.) ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— पर्वतों का अधिपति, भारत के सात मुख्य पर्वतों में एक ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— पार्वती ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) अ.— विस्मयादि बोधक शब्द, दूर की वस्तुओं की ओर संकेत ; देखो ! देखो !

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जो आँखों को न दीखे, अदृष्ट, गुप्त । सं.— 1. इन्द्रियों के अनुभव से दूर 2. परब्रह्म ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— त्रेड्जती, अपमान ।

अग्नि अगलि (क) वि.— सस्ता, आधा मूल्य, मूल्यहीन ।

अग्नि अगलि (तद्) वि.— अग्र (तद्) — सबसे आगे, प्रथम, सर्वप्रथम । अर्घ (तद्) — उत्तम, श्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट ।

अग्नि अगलि (क) सं.— 'अग्नि अगलि' का अन्य रूप— रस्सी (आ.) ।

अग्नि अगलि (क) सं.— 1. छोंक 2. रस्सी, धागा ।

अग्नि अगलि (क) सं.— अधिकता, वृद्धि, बढ़ाई ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— अधिक हो, वृद्धि पा, ऊँचा हो ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— 1. बड़ा आदमी, बलशाली 2. कन्नड के एक कवि का नाम ।

अग्नि अगलि (क) सं.— महानता, बल, बड़प्पन ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— अर्गला (तद्) । 1. बौंदा, किल्ली, सिटकनी 2. गर्व, महानता ।

अग्नि अगलि (क) सं.— गर्व, महानता, आधिक्य ।

अग्नि अगलि (क) सं.— निर्लज्ज स्त्री ।— अग्नि अगलि (क) वि.— 1. धोखेबाज 2. जादूगर ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— अग्नि (तद्), आग । ('अग्नि'—तेलुगु) ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— [अग्र संस्कृत शब्द+ 'अग' कन्नड प्रत्यय=अग्रिग→अग्निग] 1. अगुआ, राजा, नेता 2. वेकार आदमी ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— अंगीठा, अंगीठी ।

अग्नि अग्नि (क) क्रि.— 1. विनष्ट करा
 2. पतला कर (प्रेरणार्थक) ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— 1. अग्नि की
 पत्नी स्वाहा 2. त्रेतायुग ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— 1. आग 2. अग्निदेव
 3. दक्षिण-पूर्व के देवता 4. पाचन शक्ति
 5. सोना 6. एक वृटी । — अग्नि अस्त्र
 (सम्) सं.— अनलास्त्र, तोप । — अग्नि कण
 (सम्) सं.— आग का कण । — अग्नि कार्य
 (सम्) सं.— अग्नि का पूजन । — अग्नि
 काष्ठ (सम्) सं.— अगार का वृक्ष, लकड़ी ।
 — अग्नि कुंड (सम्) सं.— हवन करने के
 लिए बनाया जानेवाला विशेष प्रकार का
 गड्ढा । — अग्नि कोण (सम्) सं.—
 दक्षिण-पूर्व दिशा । — अग्नि कुमार, अग्नि
 तनय, अग्नि सुत (सम्) सं.— 1. षडानन,
 कार्तिकेय 2. आयुर्वेद के अनुसार एक रस
 विशेष । — अग्नि ज (सम्) सं.— अग्नि में
 उत्पन्न, षण्मुख । अग्नि ज्ञे (सम्) सं.—
 द्रौपदी । — अग्नि ज्वाले (सम्) सं.— 1. आग
 की लपट 2. लाल फूलोंवाला एक पौधा ।
 — अग्नि तारे (सम्) सं.— कृत्तिका नक्षत्र ।
 — अग्नि दीपन (सम्) सं.— पाचन शक्ति-
 प्रचोदक । अग्नि देवे (सम्) सं.— कृत्तिका
 नक्षत्र । — अग्नि नयन (सम्) सं.— शिव ।
 — अग्नि नेत्र (सम्) सं.— शिव । — अग्नि
 परीक्षे (सम्) सं.— जलती हुई आग में
 कूदकर परीक्षा देना, कठिन परीक्षा । — अग्नि
 फल (सम्) सं.— वज्र, माणिक्य । —
 अग्नि बाण (सम्) सं.— जलनेवाला बाण,
 राकेट । अग्नि बाध (सम्) सं.— लूट ॥ —
 अग्नि भू (सम्) सं.— षण्मुख । अग्नि मथन
 (सम्) सं.— लकड़ियों को रगड़कर आग
 निकालने की क्रिया । — अग्नि मित्र (सम्)
 सं.— अग्नि का मित्र, हवा 2. एक राजा
 का नाम । — अग्नि मुख (सम्) सं.—
 1. एक देवता 2. ब्रह्मा । — अग्नि वर्ण
 (सम्) सं.— सूर्यवंश का अंतिम राजा । —
 अग्नि वीर्य (सम्) सं.— शिव । — अग्नि
 शिखे (सम्) सं.— 1. आग की ज्वाला

2 मुर्गा । — अग्नि घोम (सम्) सं.—
 1. वसंत ऋतु में किया जानेवाला एक यज्ञ
 2. अग्नि का स्तोत्र । — अग्नि संस्कार
 (सम्) सं.— 1. आग से शुद्ध करना
 2. शव को जलाने की क्रिया । — अग्नि सख
 (सम्) सं.— हवा । — अग्नि साक्षिक
 (सम्) वि.— अग्नि के सम्मुख हुआ कार्य,
 विवाह । — अग्नि होत्र (सम्) सं.— एक
 यज्ञ, सायं प्रातः नियम से किया जानेवाला
 वैदिक कर्म विशेष । — अग्नि होत्रि (सम्)
 वि.— अग्निहोत्र करनेवाला ।
 अग्नि अग्नि अग्नि (सम्) सं.— अग्नि
 नक्षत्र, धूमकेतु ।
 अग्नि अग्नि (क) सं.— मुँह के अंदर होनेवाले
 छोटे-छोटे फोड़े ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— 1. छोर, शिखर,
 प्रारंभ, अग्रभाग, गाँव का आगे का भाग
 2. मुख्य, उत्तम, श्रेष्ठ 3. स्तुति 4. प्रथम,
 पहला ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— नेता, अगुआ ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— सर्वश्रेष्ठ,
 पहले गिना जाने योग्य ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— आगे चलने-
 वाला, अगुआ, नेता ।
 अग्नि अग्नि, अग्नि अग्नि (सम्) सं.—
 1. पहले उत्पन्न, बड़ा भाई 2. ब्राह्मण
 3. विष्णु ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— 1. बड़ी
 बहन 2. पार्वती ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— 1. बड़ी बहन
 का पति, बहनोई 2. पार्वती के पति, शिव ।
 अग्नि अग्नि, अग्नि अग्नि (सम्) सं.—
 1. सर्व श्रेष्ठ 2. नेता, नायक ।
 अग्नि अग्नि (सम्) वि.— आगे जाने-
 वाला । सं.— नेता, अगुआ ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— पहला
 बेटा, बड़ा भाई ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— सभा
 समारोह में सब से पहले तंबूल पाने योग्य,
 गौरव या मर्यादा पाने योग्य ।

अग्नि अग्नि (सम्) सं.— सर्वप्रथम
 सेवक, विश्वासपात्र सेवक ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— अग्निपूजा,
 सभा-समारोह में प्राप्त सर्वाधिक गौरव ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— पहली उपज
 या फसल ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— सर्वप्रथम जाने-
 वाली सेना, मुख्य सेना ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— हृदय ।
 अग्नि अग्नि (क) अ.— अंत तक ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— मंदिर का
 रसोई घर ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— नेता, सभापति,
 अध्यक्ष ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— 1. हाथ की
 उंगलियाँ 2. हाथी की सूंड का अंतिम भाग
 जो उंगली जैसा होता है ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— ब्राह्मणों के
 निवास के लिए निर्मित ग्राम अथवा ग्राम का
 भाग ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— 'अग्निहार'
 का निवासी ।
 अग्नि अग्नि (सम्) वि.— जो ग्राम्य न
 हो, शुद्ध ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— मुख्य आसन,
 गद्दी ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— मुख्य
 आसन पर बैठा व्यक्ति, सभापति, अध्यक्ष ।
 अग्नि अग्नि (सम्) वि.— अस्वीकार्य,
 जो ग्रहण न किया जा सके ।
 अग्नि अग्नि (सम्) वि.— पहला, मुख्य,
 उत्तम, श्रेष्ठ ।
 अग्नि अग्नि (सम्) वि.— पहला, बड़ा ।
 सं.— बड़ा भाई ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— सबसे बड़ा,
 महाप्रभु, महानायक ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— नायक, प्रथम
 व्यक्ति, सर्वोत्तम ।
 अग्नि अग्नि (सम्) सं.— भगवान
 की पूजा के लिए नियत जल ।

अ० अत्रय (सम्) वि. — उत्तम, प्रथम, लक्ष्यपूर्वक ।

अ० अघ (सम्) सं.—1. पाप, दोष 2. अपराध 3. दुःख, व्यथा 4. दुष्कर्म 5. अशौच, सूतक, अपवित्रता ।

अ० अघट (सम्) वि.—1. बहुत, अतिशय 2. संभावित 3. विस्मयकर ।

अ० अघटन (सम्) सं.— असंभावित घटना, कठिन या अशक्य कार्य ।

अ० अघटित (सम्) वि.— असंभावित । सं.— जो कभी संभव न हो, ऐसी घटना ; आश्चर्यजनक घटना ।

अ० अघन (सम्) वि.— जो बड़ा न हो, छोटा ।

अ० अघमर्षण (सम्) वि.— पापहर सं.— पापनाशक मंत्र विशेष, इस वेद-मंत्र के रचयिता का नाम ।

अ० अघरिपु (सम्) सं.— अघासुर के शत्रु, श्रीकृष्ण ।

अ० अघाति (सम्) वि.— जिससे हानि न हो, हानिरहित ।

अ० अघारि (सम्) सं.— भाषों के शत्रु, पाप विनाशक, परमेश्वर ।

अ० अघासुर (सम्) सं.— एक राक्षस जो बकासुर का भाई और कंस का सेनापति था ।

अ० अघोर (सम्) वि.— जो भयानक न हो । सं.—1. शिव, महादेव 2. वर्ग के परुष व्यंजन और श, प, स, ह वर्ण ।

अ० अघ्नये (सम्) वि.— मारने के अयोग्य सं.— 1. प्रजापति 2. पर्वत 3. वैल गाय ।

अ० अचक्षु (सम्) सं.— निरुपयोगी नेत्र, खराब आँखें, अंधा ।

अ० अचंचल (सम्) वि.— स्थिर, अचल, जो विचलित न हो ।

अ० अचंड (सम्) वि.— जो क्रोधी स्वभाव का न हो, मृदु, शांत ।

अ० अचंडि (सम्) सं.— सीधी गौ, सरल प्रकृति की गाय, शांत स्त्री ।

अ० अचतुर (सम्) वि.— 1. चार संख्या से शून्य 2. अनिपुण, अनाडी ।

अ० अचपल (सम्) वि.— अचंचल, दृढ़ । — डंते (सम्) सं.— स्थिरता ।

अ० अचर (सम्) वि.— जो नहीं हिलता हों, जड़, स्थावर ।

अ० अचल (सम्) सं.— विचलित, स्थिर । सं.—1. पर्वत, भूमि 2. मुक्ति 3. महायोगी 4. वनमानुष । — डंते, डं. त्व (सम्) सं.— अचलता, स्थिरता ।

अ० अचलरिपु (सम्) सं.— पर्वतों के शत्रु, इंद्र ।

अ० अचलि (सम्) सं.— भूमि ।

अ० अचलित (सम्) वि.— स्थिर, दृढ़ ।

अ० अचलेंद्र (सम्) सं.— पर्वतों का राजा, हिमालय, मेरु पर्वत ।

अ० अचातुर्य (सम्) सं.— मूर्खता, बेवकूफी, चतुरता की कमी ।

अ० अचि (सम्) सं.— अपवित्रता (मे.प्र.) ।

अ० अचिंत (सम्) वि.— चिंतारहित ।

अ० अचित्य (सम्) वि.— मन और बुद्धि के परे । सं.— ब्रह्मा, शिव ।

अ० अचिक्कण (क) सं.— जो चिकना न हो, रूक्ष, कठोर ।

अ० अचिर (सम्) वि.— अल्प, थोड़ा, थोड़ी देर रहने या ठहरनेवाला, शीघ्र, जल्दी ।

अ० अचिरद्युति, अचिरांशु, अचिरप्रभे (सम्) सं.— विजली, विद्युलता, चपला ।

अ० अचुंबित (सम्) वि.—1. जो नहीं चूमा गया हो 2. संबंध-रहित ।

अ० अचेत (सम्) वि.— 1. निपट दरिद्र 2. संज्ञाशून्य, मूर्च्छित 3. ज्ञानरहित ।

अ० अचेतन (सम्) वि.— 1. चेतना रहित, जड़ 2. संज्ञाशून्य, मूर्च्छित 3. ज्ञानहीन ।

अ० अचेतन्य (सम्) सं.— चेतना का अभाव, शक्तिहीन, अज्ञान ।

अ० अचोद्य (सम्) वि.— अविस्मयकर सामान्य ।

अ० अच्च (क) वि.— शुद्ध, निर्मल, साफ-सुथरा, दृढ़, श्रेष्ठ, टेढ़ ।

अ० अच्च (तद्) वि.— अच्च (तत्) । निश्चित, स्वच्छ, साफ-सुथरा, सुंदर ।

अ० अच्चक (क) सं.— 1. कर (Tax) 2. दोस्ती, मित्रता 3. अति परिचय ।

अ० अच्चकि (क) सं.— बढ़िया चावल, साफ किया हुआ चावल ।

अ० अच्च (क) सं.— गड़बड़ी, मन की अशांतता ।

अ० अच्चगन्नड (क) सं.— शुद्ध कन्नड, टकसाली कन्नड, टेढ़ कन्नड ।

अ० अच्चड (तद्) सं.— प्रच्छद (तत्) । 1. आच्छादन, उत्तरीय 2. चादर, पलंगपोश पलंग की चादर 3. परदा ।

अ० अच्चते (तद्) सं.— अक्षत (तत्) दे. अक्षत ।

अ० अच्चने (तद्) सं.— अर्चना (तत्) ।

अ० अच्चय (तद्) वि.— अक्षय (तत्) ; जिसका नाश न हो । — अक्षय कोल् (तद्) सं.— अक्षय-बाण, वे बाण जो कभी समाप्त नहीं होते ।

अ० अच्चर (तद्) सं.— 1. अक्षर (तत्) 2. अप्सरा (तत्) ।

अ० अच्चरसि (तद्) सं.— अप्सर स्त्री (तत्) ; अप्सरा, देव-कन्या ।

अ० अच्चरि (तद्) सं.— आश्चर्य (तत्) ; अचरज, विस्मय 2. अप्सरी (तत्) ; अप्सरा ।

अ० अच्चर्य (तद्) सं.— आश्चर्य (तत्) ।

अ० अच्चलि, (क) क्रि.— नष्ट हो, वरबाद हो ।

अ० अच्चालि, अच्चालु (क) सं.— 1. शूर 2. हटा कटा आदमी, दृढ़काय मनुष्य ।

अ० अच्चालिके (क) सं.— 1. दृढ़ता 2. शारीरिक बल ।

अ० अच्चि (क) सं.— 1. रोटी (छोटे बच्चों द्वारा प्रयुक्त शब्द) 2. माता 3. स्त्री, महिला, मलयाली स्त्री 4. चुचुक ।

अक्षु अक्षि (तद्) सं.— अक्षि (तत्); अक्ष, दृष्टि ।— गोक्षु गोक्षि (क) क्रि. रु.— चमक; सुंदर रह (मुहा०) ।

अक्षु अक्षिके (क) सं.— 1. अति परिचय, स्नेह, प्रेम, प्रीति 2. संपदा 3. कर (Tax) लगान ।

अक्षु अक्षिग (क) सं.— 1. गड़बड़ी, मन की अशांति 2. प्रियतर वस्तु 2. पीडा, व्यथा ।

अक्षु अक्षिग (तद्) सं.— अर्चक (तत्); पूजारी ।

अक्षु अक्षु (क) सं.— 1. दृढ़पूर्वक दबाने की क्रिया 2. दृढ़ता 3. निर्दिष्ट वस्तु 4. छाप, मृदा, मुहर 5. छपाई 6. सौंचा ।

अक्षु अक्षु (क) सं.— 1. बेकार भूमि के लिए दिया जानेवाला कर 2. व्यर्थ व्यय 3. उचित न होने पर भी पैसा देना ।

अक्षु अक्षु, अक्षु अक्षु अक्षुमेक्षु (क) सं.— डुलार, प्यार, प्रेम, अति परिचय ।

अक्षु अक्षु (क) क्रि.— 1. लगा 2. प्रेम से रह 3. मैत्री से रह ।

अक्षु अक्षु (तद्) सं.— अक्ष (तत्) 1. धुरी 2. गाड़ी, छकड़ा 3. चौंसर, चौंसर का पाँसा ।

अक्षु अक्षुक (क) सं.— प्रेम, प्रीति, मैत्री, निकट परिचय, आकृति, रूप ।

अक्षु अक्षुक (क) सं.— 1. सफ़ाई 2. अच्छी व्यवस्था ।

अक्षु अक्षुक (क) सं.— सुद्रणालय, प्रेस (Press) ।

अक्षु अक्षु (क) वि.— प्रिय, उपयुक्त मन को लगानेवाला ।

अक्षु अक्षु (तद्) सं.— अक्षुत (तत्); विष्णु ।

अक्षु अक्षु (क) सं.— सौंचे में ढाला गुड़ ।

अक्षु अक्षु अक्षुमेक्षु (क) सं.— 1. अत्यंत प्रीतिपात्र 2. बहुत स्नेह ।

अक्षु अक्षु (क) सं.— मैत्री, स्नेह ।

अक्षु अक्षु अक्षुवणिग, अक्षु अक्षु अक्षुवणिग (क) सं.— वह जमीनदार जो बहुत अधिक कर देता है ।

अक्षु अक्षु अक्षुवणिग, अक्षु अक्षु अक्षुवणिग (क) सं.— सेवक, चारक, पहरेदार, दरवान ।

अक्षु अक्षु (क) सं.— 1. मछली विशेष 2. मैत्री, प्रीति 3. बाँस की तीलियाँ (मै. प्र.) ।

अक्षु अक्षु (क) सं.— थाधा सेर ।

अक्षु अक्षु (सम्) वि.— साफ़, पवित्र, विशुद्ध सं.— 1. स्फटिक 2. रीठ, भालू । अ.— ओर, तरफ़ ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— सफ़ेद भालू ।

अक्षु अक्षु अक्षुमक्षु, अक्षु अक्षु अक्षुमक्षु (सम्) सं.— सच्ची मल्लिका, जुही (A true Jasminum zumbac)

अक्षु अक्षु अक्षुमक्षु (सम्) सं.— स्फटिक, पारदर्शक ।

अक्षु अक्षु (सम्) वि.— 1. जिस में छेद न हो 2. दोपरहित 3. अटूटा, अभिन्न 4. नया ।

अक्षु अक्षु (सम्) वि.— 1. जो खंडित न हो 2. अविरत, सतत 3. अविभक्त ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— शिकार, आखेट ।

अक्षु अक्षु (सम्) वि.— निर्मल जलवाला सरोवर, निर्मल जल ।

अक्षु अक्षु (सम्) वि.— जो कभी न गिरे, स्थिर, दृढ़ । सं.— 1. विष्णु 2. एक वृक्ष का नाम ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— एक वृक्ष का नाम ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— 1. कृष्ण के बड़े भाई बलराम 2. इंद्र ।

अक्षु अक्षु (सम्) वि.— जन्मरहित, अनंतकाल से वर्तमान । सं.— 1. अनादि पुरुष 2. विष्णु, शिव और ब्रह्मा का नाम 3. जीव 4. मेढ़ा, बकरा 5. मेघराशि 6. अन्न विशेष 7. काम 8. चंद्रमा 9. सप्तर्षियों

में एक 10. सूर्य 11. वर्षा 12. कामिनी स्त्री 13. पुराना धान 14. दशरथ के पिता का नाम 15. नायक ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— ब्रह्मा की एक काल-गणना ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— शिव-धनुष, पिनाक ।

अक्षु अक्षु (क) क्रि.— डर, भयभीत हो ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— 1. सर्प विशेष 2. एक कवि का नाम 3. एक भक्त ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— बकरी और हार्थी के बीच का अंतर ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— द्राविड छंदों में प्रयुक्त ब्रह्मगण ।

अक्षु अक्षु (क) सं.— 1. शिव, महादेव 2. एक भक्त का नाम ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— तुलसी का पौधा ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— एक बड़ा भारी सर्प, अक्षु ।— अक्षु वृत्ति सं.— बेकार बैठे रहना ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— वक्रे के गले का स्तन ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— शिव-धनुष, पिनाक ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— शिव, पिनाकी ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— 1. जटधारी 2. सुगंधित पत्तों वाला एक पौधा The flower Artemisa Indica.

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— जो जड़ या मूर्ख न ही ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— ब्रह्मा की स्थिति ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— बकरी के समान चिल्लाने की क्रिया ।

अक्षु अक्षु (सम्) वि.— निर्जन, जनशून्य । सं.— 1. जनशून्य प्रदेश 2. अशुभ मनुष्य ।

अक्षु अक्षु (सम्) सं.— 1. जिसकी माता न हो 2. अनाथ ।

अजनि (सम्) सं.—रास्ता, मार्ग, पथ।
अजनि (क) क्रि.—घृणा कर, तिरस्कार कर, नीचा दिखाना, हेय दृष्टि से देख।

अजन्य (सम्) वि.—उत्पन्न होने या किये जाने के अयोग्य, मनुष्य जाति के प्रतिकूल, अशुभकर। सं.—देवी उत्पात, उपद्रव, भूकंप, आदि।

अजप (सम्) सं.—वह ब्राह्मण जो मंत्रों का ठीक प्रकार से उच्चारण नहीं करता।

अजपे (सम्) सं.—1. अजपा। देवता विशेष, गायत्री। मनुष्य स्वाभाविक श्वासोच्छ्वास।

अजप्रास (सम्) सं.—तुक का एक प्रकार जो छंद-रचना के लिए आवश्यक है।

अजमायिसु (अ. दे.) क्रि.—[‘अजमाना’ (हि.) से इसका संबंध प्रतीत होता है] 1. कल्पना कर 2. समझ ले।

अजमासु (अ. दे.) अ.—लगभग, करीब। सं.—औसत गणना।

अजमीड (सम्) सं.—1. अजमीर का नाम 2. राजा अजामिल 3. धर्मराज का दूसरा नाम।

अजमेद, अजमेदिका, अजमेद, अजमेद, अजमेद, अजामुल, अजमेद (सम्) सं.—एक औषधि, लोमककट।

अजंभ (सम्) वि.—दंतहीन। सं.—1. मेंढक 2. सूर्य 3. वह शिशु जिसके दाँत न हो।

अजय (सम्) वि.—जो जीता न जा सके। सं.—अपजय, हार।

अजय्य (सम्) वि.—अजेय, जो जीता न जा सके। सं.—विष्णु।

अजर (क) सं.—पौधा विशेष, नील का पौधा The Indigo plant.

अजर (सम्) वि.—1. जो बूढ़ा न हो, सदैव युवा 2. अविनाशी। सं.—देवता।

अजामर (सम्) वि.—जिसको बुढ़ापा और मृत्यु नहीं आती। सं.—देवता, परमेश्वर।

अजर्य (सम्) वि.—1. जो जीर्ण या हज़म नहीं होता 2. जो नहीं सड़ता। सं.—मेंत्री, दोस्ती।

अजशुंगि (सम्) सं.—1. मेढासिंगी 2. पौधा विशेष The shrut odina wodier.

अजस्त (सम्) वि.—निरंतर, सन्तत, सदा, अनंत।

अजहे (सम्) सं.—1. कपि कच्छुक 2. कँवाँछ 3. शूकशिंवी नामक औषध।

अजागर (सम्) वि.—अजागृत, सोता हुआ।

अजागरुक (सम्) सं.—जो जागरुक न हो, आगे न बढ़नेवाला मनुष्य।

अजागरुक्ते (सम्) सं.—अजागृति, लापरवाही।

अजागरस्तन (सम्) सं.—बकरी के गले के थन, निरूपयोगी वस्तु।

अजाग्रते (सम्) सं.—दे. अजाग्रत उड.

अजाजीव (सम्) सं.—बकरियों से अजीविका पानेवाला, गढरिया।

अजाड्य (सम्) सं.—रोगहीनता, स्वास्थ्य।

अजाण (तद्) सं.—अज्ञान (तत्) ; जो ज्ञानी न हो, मूर्ख, बेवकूफ।

अजांड (सम्) सं.—ब्रह्माण्ड, भूमि, जगत, विश्व।

अजात (सम्) वि.—अनुत्पन्न, जो पैदा न हुआ हो। सं.—भगवान।—उड.

अजानु (सम्) सं.—जिसका कोई शत्रु न हो 2. युधिष्ठिर की उपाधि, शिवजी आदि अनेकों की उपाधि 3. दयालु।

अजानेय (सम्) सं.—अच्छी जाति का घोड़ा। वि.—कुलीन, उत्तम या उच्च कुल का।

अजामिल, (तद्) सं.—अजमीड (तत्) ; दे. अजामिल.

अजार (क) सं.—अजार हज़ार—आँगन, हॉल (Hall) (मे. प्र.)।

अजि (क) वि.—गड़बड़, हड़बड़, झंझट का।—अजि (क) सं.—पिसा हुआ चूर्ण, पुडिया।

अजिव्य (सम्) वि.—अजेय।

अजित (सम्) सं.—1. जिसको नहीं जीता जा सकता, अजेय पुरुष 2. विष्णु, शिव 3. एक जैन-तीर्थंकर का नाम।

अजितृ (सम्) सं.—चलानेवाला, चालक, नायक, नेता।

अजिन (सम्) सं.—1. चीता, सिंह, हाथी आदि का और विशेषकर काले हिरन का रोएंदार चमड़ा, जो आसन अथवा तपस्वियों के पहनने के काम में आता है।

2. एक प्रकार का चमड़े का थैला।—अजि पत्र (सम्) सं.—चिमगीदड़।

अजिर (सम्) वि.—शीघ्र, जल्दी, तेज, फुर्तीला। सं.—1. ज्ञानेंद्रिय 2. हवा 3. शरीर, देह 4. मेंढक 5. आँगन।

अजिहा (सम्) वि.—जो टेढ़ा न हो, सीधा, सरल।

अजिहाग (सम्) सं.—जो टेढ़ा नहीं है, बाण, तीर।

अजिह्व (सम्) सं.—मेंढक।

अजिगत (सम्) सं.—एक वैदिक ऋषि।

अजिर्ण (सम्) सं.—1. जो खराब या जीर्ण न हुआ हो 2. बदहज़मी, अपच 3. वीर्य, शक्ति, पराक्रम, ओजस्विता।

वि.—न पचा हुआ।—अंश (सम्) सं.—थोड़ी बदहज़मी, हज़म न होने के कारण वचा भाग।

अजिव (सम्) वि.—जीव या प्राण रहित, अस्तित्व रहित। सं.—मृत्यु, मरण।

अजिवन (सम्) सं.—गरीबी, निर्धनता।

अध्यात्मिक अजीवनि

अध्यात्मिक अजीवनि (सम्) सं.— मृत्यु, मरण का शाप ।

अध्यात्मिक अजुर (क) सं.— पौधा विशेष, नील का पौधा ।

अध्यात्मिक अजे (सम्) सं.— 1. मूल प्रकृति 2. माया, भ्रम 3. बकरी ।

अध्यात्मिक अजेय, अध्यात्मिक अजेय्य (सम्) वि.— जो जीता न जा सके, जीतने के अयोग्य ।

अध्यात्मिक अज्ज, अध्यात्मिक अज्जु (क) सं.— उचित समय, ठीक समय ।

अध्यात्मिक अज्ज (क) सं.— अत्यंत हल्का पदार्थ (अर्क वृक्ष का रुई-सा पदार्थ, जो हवा में उड़ जाता है) ।

अध्यात्मिक अज्ज (तद्) सं.— आर्य (तत्) ; बूढ़ा आदमी, दादा, नाना ।

अध्यात्मिक अज्जग (तद्) सं.— अर्जक (तत्) ; अर्जन, कमाई, प्राप्ति ।

अध्यात्मिक अज्जि (तद्) सं.— आर्या (तत्) ; बूढ़ी औरत, दादी, नानी ।

अध्यात्मिक अज्जिगे (तद्) सं.— अर्जिका (तत्) ; बावुई वृक्ष, एक प्रकार की जुही ।

अध्यात्मिक अज्जिगे (तद्) सं.— अर्जिका (तत्) — उपार्जन, कमाई, प्राप्ति, अपने अधीन में लेने की क्रिया ।

अध्यात्मिक अज्जु (क) सं.— दे. अध्यात्मिक.

अध्यात्मिक अज्जु (क) वि.— टूटा-फूटा, विच्छिन्न, पका-पका । — अध्यात्मिक गुज्जु (क) सं.— दुबला-पतला ।

अध्यात्मिक अज्जु (क) क्रि.— डुबा, भिगा, तरल पदार्थ में डुबा या रख (प्रे०) ।

अध्यात्मिक अज्जुके (क) सं.— वेश्या ।

अध्यात्मिक अज्जुगे (तद्) सं.— अर्जक (तत्) ; वृक्ष विशेष, एक प्रकार की जुही । (A double Jasmine.)

अध्यात्मिक अज्ज (सम्) वि.— जड़, अनपढ़, अविवेकी, मूर्ख, बेवकूफ ।

अध्यात्मिक अज्जते (सम्) सं.— मूर्खता, बेवकूफी विवेकहीनता ।

अध्यात्मिक अज्ञात (सम्) वि.— अविदित, अनजाना हुआ, अप्रकट, अपरिचित । — अध्यात्मिक वास (सम्) सं.— किसी को प्रकट न हो, इस प्रकार रहना ; अप्रकट स्थान में रहना । (पाण्डवों ने एक वर्ष अज्ञातवास किया था) ।

अध्यात्मिक अज्ञान (सम्) सं.— ज्ञानहीनता विवेकहीनता । वि.— ज्ञानशून्य, गँवार, मूर्ख । — अध्यात्मिक कृत (सम्) वि.— मूर्खता या ज्ञान के अभाव के कारण किया हुआ ।

अध्यात्मिक अज्ञानि (सम्) वि. और सं.— दे. अध्यात्मिक.

अध्यात्मिक अज्ञेय (सम्) वि.— जो जाना न जा सके, समझ के बाहर, ज्ञानातीत ।

अध्यात्मिक अट (क) सं.— 1. धोकेबाज़ी, उपाय, ठगई 2. बाधा, अड़चन 3. गति 4. क्रीडा, खेल 5. हँसी, मजाक 6. भाषण, ध्वनि, गर्जन (जैसे अध्यात्मिक आर्भट = गर्जन) ।

अध्यात्मिक अट, अध्यात्मिक अट्ट, अध्यात्मिक अट्ट, अध्यात्मिक अट्ट (क) अ.— उतना, उतना-सा ।

अध्यात्मिक अट (सम्) सं.— गमन, भ्रमण ।

अध्यात्मिक अट (क) सं.— ढं हट— हट (भे. प्र०) ।

अध्यात्मिक अट्टायिसु अट्टायिसु (क) क्रि.— विघ्न डाल, अड़चन उत्पन्न कर ।

अध्यात्मिक अट्टकिसु (क) क्रि.— दे. अध्यात्मिक.

अध्यात्मिक अट्टतट (क) सं.— अड़चन, विघ्न, बाधा ।

अध्यात्मिक अट्टन (सम्) सं.— घुमकड़ी, गमन, भ्रमण ।

अध्यात्मिक अट्टनि (सम्) सं.— धनुष का अग्र भाग ।

अध्यात्मिक अट्टमट (क) सं.— ठगई, कपट, धोकेबाज़ी । — अध्यात्मिक इसु (क) क्रि.— ठग, धोखा दे ।

अध्यात्मिक अट्टरुष, अध्यात्मिक अट्टरुष (सम्) सं.— अड़सा, वृक्षविशेष The Shrub Justicia adhtoda.

अध्यात्मिक अट्टरुषक (सम्) सं.— दे. अध्यात्मिक.

अध्यात्मिक अट्टवट (क) सं.— दे. अध्यात्मिक.

अध्यात्मिक अट्टवणे (अ. दे.) सं.— 1. स्मृति, याददाश्त 2. गणित 3. कर (Tax).

अध्यात्मिक अट्टवि, अध्यात्मिक अट्टवी (सम्?) सं.— वन, जंगल ।

अध्यात्मिक अट्टविक (क) सं.— धोकेबाज़ मनुष्य, कपट वेशधारी, ठग ।

अध्यात्मिक अट्टवीचर (सम्) सं.— वनचर, जंगल में विचरण करनेवाला मनुष्य, शिकारी, जंगली ।

अध्यात्मिक अट्टव्यवि (सम्) सं.— जंगली बकरी ।

अध्यात्मिक अट्टाण (क) सं.— एक कर्नाटक राग जिसे 'अठाण' भी कहते हैं ।

अध्यात्मिक अट्टिग, अध्यात्मिक अट्टिग (क) सं.— खिलाड़ी, क्रीडा करनेवाला । प्र.— प्रत्यय के रूप में जैसे -- अध्यात्मिक मावटिग — महावत, हाथीवान ।

अध्यात्मिक अट्टिसु (क) क्रि.— 'अठ' का क्रि.रू. । खेल, क्रीडा कर, घूम, भ्रमण कर ।

अध्यात्मिक अट्टे (क) सं.— खेल, क्रीडा ।

अध्यात्मिक अट्टोप, अध्यात्मिक अट्टोपु, अध्यात्मिक अट्टोत्रु (अ. दे.) सं.— संयम, नियंत्रण, वश ।

अध्यात्मिक अट्ट (क) वि.— घना, निबिड ।

अध्यात्मिक अट्ट (सम्) वि.— 1. ऊँचा 2. सतत 3. शुष्क । सं.— 1. अटा, अटारी 2. क्षुद्र बुर्ज 3. आश्रय, आधार के लिए बनाया हुआ प्राकार 4. हाट, बाज़ार, मंडी 5. प्रासाद महल ।

अध्यात्मिक अट्ट (तद्) वि.— अष्ट (तत्) ; आठ ।

अध्यात्मिक अट्ट (क) वि.— सूखा, रूखा, पका, पक किया हुआ ।

अध्यात्मिक अट्टकवल्, अध्यात्मिक अट्टकवल् (क) सं.— सीधी शाखा या डाली ।

अध्यात्मिक अट्टट्टि (क) सं.— संदेशवाहक, समाचार देनेवाला ।

अध्यात्मिक अट्टट्टिके (क) सं.— पीड़ा, जो पीड़े लगा हुआ हो ।

अध्यात्मिक अट्टणे (क) सं.— ऊँचा गोपुर ।

अध्यात्मिक अट्टतेणु (क) सं.— सूखा नारियल ।

अध्यात्मिक अट्टपट्टि (क) सं.— लंबी लाठी ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— पुस्तक रखने का पीढा ।

अङ्गुलि अङ्कणे (तद्) सं.— अष्टमी (तत्), अष्टमी तिथि ।

अङ्गुलि अङ्कणे (सम्) सं.— 1. ठठाकर हँसना, कहकहा 2. गर्व, घमंड ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— 1. मंडल 2. तंगी, बाधा, कष्ट ।

अङ्गुलि अङ्कणे (तद्) सं.— अट्टाल (तत्) 1. अटा, कोठा 2. दूसरी मंजिल 3. महल, प्रासाद ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे (सम्) सं.— दे. अङ्गुलि ।

अङ्गुलि अङ्कणे (तद्) सं.— अट्टहास (तत्) । दे. अङ्गुलि ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— 1. घर 2. गोशाला, गायों को बांधने का स्थान ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— धोवी ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) क्रि.— 1. भगा, दूर हटा, दौड़ा 2. वस्त्र में रख 3. पका, उबालकर गाढ़ा बना ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) क्रि.— पीछा कर, दौड़ा, भगा, दूर हटा । सं.— हिला-मिला हुआ, सामीप्य, संबंध, रिश्ता ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) क्रि.— 1. गाढ़ा हो, सूख (अक. क्रि.) 2. पका, रसोई कर (प्रे.) । 3. हाथ में लग, प्राप्त हो ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— खाने के लिए दिया गया दान ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— 1. जनता की भीड़ 2. कष्ट, पीड़ा 3. शिकार का प्राणी ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) वि.— झुका हुआ, टेढ़ा । सं.—

1. सिर विहीन देह, रुण्ड 2. तिरछी या टेढ़ी लाठी 3. चमड़ा 4. रक्तप, एक कीड़ा जो पानी में और शीतल भूमि में रहता है और मनुष्यों का रक्त पीता है । 5. पादुका (Shoe) का निचला भाग, तला ।

अङ्गुलि अङ्कणे (तद्) सं.— अट्टाल (तत्) दे. अङ्गुलि ।

अङ्गुलि अङ्कणे (सम्) सं.— गमन, भ्रमण, घूमने की क्रिया ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— कीचड़, पंक (मे.प्र.) ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— कर्नाटक संगीत का एक राग ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) वि.— तिरछा, टेढ़ा । सं.— 1. खेल, क्रीडा 2. रसोई 3. रोक, विरोध 4. क्षुद्र 5. उतावलापन 6. एक ताल का नाम ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— 1. भरना, हाथ में दबाकर भरना 2. समाना 3. नाप-तेल के अनुसार होना 4. सिमट कर रहना 5. संग्रह, संक्षेप 6. समाने या ठीक प्रकार से रहने का स्थान ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे (क) वि. और सं.— एक वस्तु पर दूसरी वस्तु को रखना, एक पर दूसरे का आरोप, एक के ऊपर रखी हुई दूसरी वस्तु ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— सामान रखने की कोठरी । — अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— एक के ऊपर दूसरा और इसी क्रम से रखे हुए घड़े ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— दे. अङ्गुलि ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) क्रि.— दबाकर या संभालकर भर, एक के ऊपर दूसरा रख, मिला, ढेर लगा, नियंत्रण कर, कम कर ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— 1. सुपारी, पान-सुपारी 2. चाह, अभिलाषा ।— प्र. जैसे— अङ्गुलि नीरडिके—प्यास, 'अङ्गुलि' —जल, 'अङ्कणे' प्रत्यय ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे अङ्कण (क) सं.— सुपारी काटने की कैंची, सरोता ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— सुपारी काटने की कैंची, सरोता ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— 1. मांस 2. खण्ड 3. रहस्य, गुप्त बात ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— लुहार की निहाई, स्थूण ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे अङ्कणिसु, अङ्गुलि अङ्कणे अङ्कणिसु (क) क्रि.— कंटक हो, बाधा हो, विघ्न हो (अक. क्रि.) ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) क्रि.— बंद कर, दबा, नियंत्रित कर, ढक, अंत कर, संक्षेप कर ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) क्रि.— 1. छिप जा, ओझल हो, गुप्त रह 2. अस्तित्व खो जा 3. झुक जा 4. बंद हो ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— दे. अङ्गुलि ।

अङ्गुलि अङ्कणे अङ्कणिसु (क) सं.— मांस पकाते समय काम में लाया जानेवाला उपकरण जिसका अंत नोकदार होता है ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— पकाने की क्रिया, रसोई ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे अङ्कणे (क) क्रि.— साष्टांग नमस्कार कर ; मस्तक, हाथ, पैर, छाती, आँख, जाँघ, वचन और मन— इन साष्टांग सहित भूमि पर लेटकर प्रणाम कर ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— किले का निवासी अथवा रखवाला ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) क्रि.— दे. अङ्गुलि ।

अङ्गुलि अङ्कणे अङ्कणिसु (क) सं.— आँख-मिचौनी खेल, एक क्रीडा ।

अङ्गुलि अङ्कणे (अ. दे.) सं.— 1. कमी, अभाव 2. अङ्कण, बाधा ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) क्रि.— 1. भर, बंद कर 2. मार, पीट 3. लगा, दबा 4. विनष्ट कर ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— 1. बीच में आने की क्रिया, अङ्कणे की क्रिया, रोक 2. व्यथा, विषाद 3. अनुपयुक्तता 4. निस्तेज ।

अङ्गुलि अङ्कणे अङ्कणिसु (क) सं.— सेवक, नौकर ।

अङ्गुलि अङ्कणे (क) सं.— 1. धोवी से धुलाने के मैले कपड़े 2. धोवी से किराये पर लिए जानेवाले धुले कपड़े ।

अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे, अङ्गुलि अङ्कणे (क) वि.— 1. तिर्यक्, तिरछा, टेढ़ा, अडा हुआ 2. असभ्य ।

अडनडे अडनडे, अडनडि अडनडि (क) सं.—
देही चालवाला मनुष्य, पशु ।—अन तन
(क) सं.— टेढ़ापन, वक्रता, बुरी प्रकृति ।

अडनड अडप (क) सं.— 1. एक छोटी पेटी या
थैली जो सुपारी रखने के काम में आती है ;
नाई ऐसी पेटी या थैली में अपने सामान
(उपकरण) रखता है । 2. राजा की तांबूल-
पेटिका ।—अड वल, अड, वल्ल (क)
सं.— 1. नाई 3. महल में तांबूल-पेटिका
देनेवाला व्यक्ति ।

अडनड अडपु (क) सं.— 1. एक चर्मरोग जो
कुत्तों को होता है 2. आश्चर्य 3. चढ़ाई ;
वृद्धि ; चढ़ना ।

अडनड अडपु (क) सं.— गिरवी, उधार के बदले
रखा जानेवाला गहना या पदार्थ ।

अडनडिसु अडबडिसु (क) क्रि.— गड़बड़ कर,
हल्ला कर ।

अडनड अडबल, अडनड अडवल (क) सं.—
1. रसोई बनानेवाला, पाचक, महाराज
मांस ।

अडनड अडवे (क) सं.— क्रूरता, निर्दयता ।

अडनड अडयाल (क) सं.— पहचान, चिह्न ।

अडनड जडर, अडनड आडुर (क) क्रि.—
1. चढ़, ऊँचा हो, 2. लग, संलग्न हो,
चमक 3. झपट ।

अडनड अडरासु (क) क्रि.— 1. लालच
दिखा 2. जल्दी कर ।

अडनड अडरिसु (क) क्रि.— लगा, चिपका,
ऊपर चढ़ ।

अडनड अडरु (क) क्रि.— दे. अडनड ।

अडनड अडरिसु (क) क्रि.— ला, लग जा,
फँस जा ; मिला ।

अडनड अडरु (क) सं.— 1. विश्वास, भरोसा
2. देर, राशि 3. प्रतिबिम्ब 4. राख, भस्म ।

अडनड अडलु (क) क्रि.— हिल-डुल, काँप,
भीत हो, डर । सं.— कंपन, भीति, भय,
डर, विमूढता ।

अडनड अडवट (क) वि.— टेढ़ा, कुरूप ।

अडनड अडवि (तद्) सं.— अटवी (तत्)
दे. अडनड.—अडु, किचु (तद्) सं.—
दावाग्नि ।—अड ताण (तद्) सं.—अरण्य
प्रदेश ।—अडगु (तद्) क्रि.— अनाथ
हो, असहाय हो (मुहा.) ।

अडनड अडवु (क) सं.— 1. गिरवी, उधार के
बदले रखा जानेवाला गहना (या पदार्थ)
2. आतंक, कष्ट 3. संतुष्टि, संतोष
4. उपयुक्तता 5. पर्याप्त मात्र में रहना ।

अडनड अडसट्टे (क) सं.— अनुमान, अंदाज़ा ;
गिनती, गणना ।

अडनड अडसरणे (क) सं.— बीच में आने-
वाला विघ्न, अड़चन ।

अडनड अडसल-अडसल अडचल-अडसल (क) वि.
भला-बुरा, ठंडा-गरम, पका-अनपका, खराब
बदचलन ।

अडनड अडसल, अडनड अडसले, अडनड
अडसाल (तद्) सं.— अटरुष (तत्) दे.
अडनड ।

अडनड अडसु (क) क्रि.— लग, चिपक, लिप्त हो,
हो, उसन्न हो ।

अडनड अडहडिसु (क) क्रि.— गड़बड़ी कर,
दृढ़ता से पकड़, झपट, दृढ़ता से रह ।

अडनड अडहाय (क) क्रि.— बीच में आ,
रोक, बाधा डाल ।

अडनड अडहु (क) सं.— दे. अडनड 1.

अडनड अडा (अ. दे.) वि.— ढाई, अढ़ाई ।—
अडनड अडासेरु, अडनड अडशेरि, अडनड
नडरु अडीसेरु वि.— ढाई सेर का परिमाण ।

अडनड अडाडि (क) वि.— गड़बड़, त्वरित ।
सं.— जल्दबाज़ी, शीघ्रता ; गड़बड़ी ।

अडनड अडाणि (अ. दे.) सं.— 1. व्यर्थ
परिश्रम 2. बिना पैसे दिये बलपूर्वक कार्य
कराना 3. क्षेत्रहीन सेवक ; वह मज़दूर
जिसके पास खेत नहीं ।

अडनड अडायिसु (क) क्रि.— ठहरा, रोक ।

अडनड अडायुध (क) सं.— खड्ग विशेष ।

अडनड अडायुडि (क) वि.— गड़बड़ी करने-
वाला । सं.— गड़बड़ी, कोलाहल, शीघ्रता,
झगड़ा ।

अडि अडि (क) सं.— 1. फुट (foot) 2. पाद,
चरण ; छंद का चरण 3. निचला भाग,
तली । वि.— 1. पका हुआ, जो पकने के
लिए आया, परिपक्व 2. नीच, हीन,
निम्न, 3. मिटने का कारणभूत, व्यर्थ,
बेकार ।

अडि अडिकिल् (क) वि., सं.— अडनड ।

अडि अडिके (क) सं.— 1. दे. अडनड 2. प्रत्यय,
जैसे अडनड अडनड निद्रा की स्थिति में
हिलना ।

अडि अडिकेडु, अडि अडिगिडु (क)
क्रि.— हाथ-पैर खो, बहुत डर, भीत हो,
निर्मल हो ।

अडि अडिग (क) प्र.— 1. 'वाला' सूचक
प्रत्यय, जैसे— अडनड हावडिग—साँप से
क्रीडा करनेवाला (संपेर), अडनड हूवडिग—
फूल बेचनेवाला । 2. चरणवाला, पादधारी ।

अडि अडिगडिगे (क) अ.— क्रमशः ऊपर,
कदम-कदम पर, पदे-पदे ।

अडि अडिगट्टु (क) सं.— 1. लकड़ी
2. नीचे का भाग, नींव, बुनियाद ।

अडि अडिगल्ल (क) सं.— दे. अडनड ।
1. नींव या बुनियाद का पत्थर ।

अडि अडिगिडु, अडि अडिगोडु (क)
क्रि.— जड़ सहित ऊखड़कर गिर, अमूल
नष्ट हो ।

अडि अडिगेडे (क) क्रि.— नीचे गिर, अधः
पतित हो ।

अडि अडिगे (क) क्रि.— 1. नीचे कर, पतित
कर 2. पराजित कर, हरा । सं.— 1. पीछे
हटने की क्रिया, हार, पराजय 2. हथेली ।

अडि अडिदावेरे (क) सं.— (अड + अडनड
= चरण + कमल) चरणकमल, पादपद्म ।

अडि अडिदास (क) सं.— पादसेवक ।

अडि अडिनेल (क) सं.— पाताल ।

अडि अडिपाय (क) सं.— नींव, बुनियाद
निचला भाग ।

अडि अडिसुदु (क) अ.— जड़सहित,
नीचे तक, अमूल ।

अडिसो अडिमे (क) सं.—नीच वृत्ति, सेवा-वृत्ति
दास्य । ('अडिसु'—तमिल) ।
अडिसु अडिय (क) सं.—निम्नकुल का मनुष्य,
सेवक, दास ।
अडिरज अडिरज (क) सं.—चरण-धूलि ।
अडिव (क) सं.—जन्म, पैदाइश ।
अडिवज्ज अडिवज्ज (क) सं.—कृतक मणि ।
अडिवज्ज अडिवज्ज, अडिवज्ज अडिवज्ज
(क) सं.—नीचे की रेत, रेत, सैकत ।
अडिव अडिवि, अडिवि अडिवि (तद्) —अटवी
(तत्) । दे. अडिव. —अडिविअडिवि अडिवि-
गिच्चु (तद्) सं.—दे. अडिविअडिवि.
अडिव अडिवु (क) सं.—दे. अडिवि 1.
अडिसु अडिसु (क) क्रि.—रसोई बनवाना
(प्रे.) ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—कुचल
डाल, चूर्ण कर, पुडिया बना, नष्ट कर ।
अडिसु अडिसु (क) क्रि.— 1. खाना पका, रसोई
कर, खाना तैयार कर 2. पक हो (अक्.
क्रि.) । सं.—निमंत्रण-ध्वनि ।
अडिसु अडिसु (क) क्रि.—दे. अडिसु.
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु, अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु
(क) सं.—खाना, भोजन ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—लकड़ी, ईंधन ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—गरम किया
हुआ अचार ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—खाना
तैयार करनेवाली बुढ़िया, वृद्धा पाचिका
2. गरीबिन, दरीद्र स्त्री ।
अडिसुअडिसु (अडिसुअडिसु) (क) सं.—रसोई
खाना बनाने की क्रिया, भोजन के लिए
तैयार वस्तु ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—भाफ से खाना
बनाने का बर्तन, पाक-पात्र (Cooker) ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—पृथक मार्ग,
मार्ग, रास्ता ।
अडिसुअडिसु (क) क्रि.— 1. रोक, टोक,
बीच में आ 2. फैल, व्याप्त हो ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—रसोइया, पाचक,
महाराज ।

अडिसु अडिसु (क) सं.—पंक, कीचड़ ।
अडिसु अडिसु (क) प्र.—'अगर—तो' का अर्थ-
द्योतक-प्रत्यय । उदा.—अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु—अगर
आ जाय तो अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु—अगर
जावे तो . . . । क्रि.— 1. भर, पूरा कर
2. प्राप्त कर, पा 3. विश्वास कर, भरोसा
रख 4. रोक, टोक । सं.— 1. स्थान,
जगह 2. दूकान 3. छोटा पीढा (पीढी)
4. कपड़े का छोर (border) 5. गोबर
6. एक प्रकार का दोसा (खाने की चीज़) ।
7. सहायक, सहारे की लाठी 8. प्रच्छन्न
वस्तु 9. निहाई 10. मिट्टी पर पड़ी पद
चिह्न ।—अडिसुअडिसु (क) क्रि.—गरमी
(उष्णता) में डालकर पक्व कर । (कच्चे
फलों को उष्णता में रखकर पक्व किया
जाता है । (मुहा०) ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.— 1. छिप
जा 2. स्थान दे, जगह दे ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—आधा-आधा
भाग लगाना, आधा-आधा जलना ।
अडिसु अडिसु (क) वि.—बहुत, अधिक । सं.—
1. बीच में या सामने आने की क्रिया
2. रोक-थाम ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—रोक, टोक,
खड़ा कर, विघ्न या बाधा उत्पन्न कर । सं.—
बांध, पुल ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—उपाख्यान, छोटी
कहानी, उप-कथा ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु, अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क)
सं.—चक्की, धाकी ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—अलग नौकरी,
अतिरिक्त नौकरी ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—नन्हा शिशु,
गोद का बच्चा ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—रोक, पकड़ ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु, अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु हाकु
(क) क्रि.—रोक, विघ्न उत्पन्न कर, विरोध
कर । सं.—गणित में बाईं ओर से दाईं ओर
आनेवाली संख्या ।

अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—आड, दही,
परदा ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.— 1. थाली 2. डाल
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—तिपाई, तीन पाये
की चौकी, टिकठी ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—बीच में या
सामने आ, रोक, विघ्न डाल ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) वि.—टेढ़ा-मेढ़ा, असम,
तिरछा ।—अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—विरोधी,
प्रतिस्पर्धा करनेवाला व्यक्ति ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—सता,
बाधा उत्पन्न कर, तंग कर, ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—विघ्न डाल,
बाधा उत्पन्न कर, रोक ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—चिढ़ाने का नाम,
उपनाम ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.— 1. सुँहजोरी,
बुरे वचन ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—बदसूरत ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु, अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क)
क्रि.—दे. अडिसुअडिसु.
अडिसुअडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—विरोध,
रोक, प्रतिबंध ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—निंदा कर, दूषण कर ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—विघ्न, आतंक, तंगी,
कष्ट ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—बीच में या सामने
आ, रोक । सं.—पैदल जाने का रास्ता,
पगडंडी ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—छुट्टी का दिन ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) क्रि.—बीच में से या
सामने से जा । सं.—शरीर पर का वह
चिह्न जो अशुभकर माना जाता है ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) सं.—बीच का रास्ता,
पगडंडी, बुरा चालचलन ।
अडिसुअडिसु अडिसुअडिसु (क) वि.—दे. अडिसुअडिसु.
अडिसुअडिसु (क) सं.— 1. आपत्ति, एतराज,
विरोध 2. विलंब ।

अणु अणु

अणु अणु (क) सं. — कंठाभरण, कंठा, कंठी, कंठमाला 2. कंठाभरण का (सोने का) एक टुकड़ा।

अणु अणु (क) में — दे. अणु (मै. प्र.)

अणु अणु (क) सं. — 1. वह बाँस जिसके बीच में बोझा रख कर दोनों ओर दो व्यक्ति होते हैं अथवा उसके दोनों ओर बोझा रखकर बीच में एक व्यक्ति होता है 2. बीच में या सामने आने की क्रिया 3. बीज बोने का एक साधन।

अणु अणु (क) वि. — दे. अणु. अणु अणु अणु अणु जनरु (क) सं. — असभ्य लोग।

अणु अणु (क) सं. — 1. समतल, गोलाकार टोकरी जिसमें बीच-बीच में छेद होते हैं—ऐसी टोकरी में देवता की मूर्ति रखकर जोगम्मा (मारी या दुर्गा की उपासिका) चलती है। 2. समतल टोकरी या पानी रखने का पीपा या मिट्टी का बर्तन, जिसका व्यापारी लोग अपनी दूकानों में उपयोग करते हैं।

अणु अणु (क) प्र. — दिक् वाचक प्रत्यय, जैसे अणु अणु मूढण—पूर्वका। क्रियार्थक संज्ञा के रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

अणु अणु (क) सं. — 1. सामीप्य, लगाव 2. स्थिरता, दृढ़ता 3. हँसी, हास्य, मज़ाक 4. कष्ट, तंगी, बाधा 5. सुगमता 6. सौंदर्य। — अणु इणु (क) क्रि. — परिहास कर, मज़ाक उड़ा, चिढ़ा (मुहा०)।

अणु अणु (क) क्रि. — छिप, गुप्त रह, बंद हो।

अणु अणु (क) सं. — 1. नम्रता, विनयशीलता 2. सभ्यता।

अणु अणु (क) क्रि. — 1. कम कर, बंद कर 2. चिढ़ा, छेड़।

अणु अणु (क) क्रि. — दे. अणु.

अणु अणु (क) सं. — मांगल्य।

अणु अणु (क) क्रि. — नम्र रह, विनय-शील रह।

अणु अणु, अणु अणु, अणु अणु (क) सं. — कुक्कुरमुत्ता।

अणु अणु (क) सं. — जल की सुराही।

अणु अणु (क) अ. — थोड़ा भी, कुछ भी, अल्पमात्र भी। वि. — बहुत छोटा, क्षुद्र; नगण्य।

अणु अणु, अणु अणु (क) सं. —

1. मुँह का निचला भाग 2. गिलहरी। अणु अणु (क) सं. — 1. एक साथ पकड़ने-वाली वस्तु 2. समूह, टोली, झुंड।

अणु अणु (सम्) सं. — सुई की नोक 2. रथ के खंभे का अंतिम नोकदार भाग 3. सीमा, हद्द।

अणु अणु (क) सं. — 1. उतावलापन, शीघ्रता, जल्दबाजी 2. मिलावट, समुच्चय 3. औचित्य, उपयुक्तता, सुंदरता, मृदुता, आनंद

4. सेना की पंक्ति, क्रम, दल 5. तैयारी 6. अनेक धागों को एक साथ मिलाने की क्रिया, विशेषतया कर्षे पर 7. कुंदन करने की क्रिया 8. बिखरा मोरपंखा। — अणु

आणु (क) क्रि. — तैयार हो, कमर कस, सोल्साह खड़े रह, ज़ोर से पटक। — अणु, अणु

गोळिसु (क) क्रि. — तैयारी कर, भड़का, उत्साह भर।

अणु अणु (क) सं. — उचित या उपयुक्त स्थान।

अणु अणु (क) सं. — प्रबंध करनेवाला, प्रबंधक।

अणु अणु (क) सं. — पहली संतान।

अणु अणु (क) सं. — 1. कंधी 2. आज्ञा 3. अनुमति।

अणु अणु (क) सं. — 1. बुनाई का मर्म 2. रहस्य।

अणु अणु (सम्) सं. — 1. अष्ट सिद्धियों में एक 2. अति सूक्ष्मता।

अणु अणु (क) वि. — बड़ा, विशिष्ट। सं. — महानता, योग्यता, सुंदरता, मृदुता, उपयुक्तता।

अणु अणु (क) क्रि. — मार, पीट, पटक।

अणु अणु (क) सं. — गिलहरी (मै. प्र.)।

अणु (सम्) सं. — 1. अत्यंत सूक्ष्म वस्तु, अत्यंत छोटा कण 2. शिन, विष्णु।

— अणु रेणु (सम्) सं. — त्रसरेणु, धूल-कण। — अणु वाद (सम्) सं. — अणु संबंधी सिद्धान्त।

अणु अणु (क) सं. — शिशु, पुत्र, प्रेमपात्र।

अणु अणु (क) सं. — प्रिय पुत्री, प्रेमपात्री।

अणु अणु (क) सं. — हँसोड़ा-विदूषक।

अणु अणु, अणु अणु, अणु अणु (क) क्रि. — दबा, मार, पीट, विनष्ट कर, बरबाद कर।

अणु अणु (तद्) सं. — हनुमत् (तद्); हनुमान।

अणु अणु (सम्) सं. — छोटा व्रत। जैन-यति अणुव्रत का आचरण करते हैं।

अणु अणु (क) अ. — स्त्रियों के लिए संघोधन—

‘री’ का समानार्थ वाचक शब्द। अधिक प्रेम होने पर इसका प्रयोग होता है। निम्न जाति की स्त्रियों के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। (तुलनीय—तमिल शब्द

‘अणु अणु’ या ‘अणु अणु’ जो इसी अर्थ का द्योतक हैं)। उदा.—अणु अणु इच्छा कणे— नहीं री।

अणु अणु (क) क्रि. — 1. बुन (चटाई, टोकरी आदि बनाना) 2. हिल-मिल 3. छू, स्पर्श कर, पास-पास खींच 4. पीट, मार, पटक, आगे बढ़ा, निकाल 5. अंगुली-प्रहार कर 6. उलटा 7. आलिंगन कर, दृढ़ता से पकड़ 8. जा।

अणु अणु (क) सं. — बांध (Dam), बड़ा पुल।

अणु अणु (क) कृ. — लेपन करके।

अणु अणु (क) सं. — लेपन, लेपन क्रिया-मलहम।

अणु अणु (क) सं. — 1. बड़ा भाई 2. भीरु, अशक्त, जिससे कुछ संभव न हो 3. बहुत बुद्धिमान 4. गौरव सूचक संबोधन। — अणु अणु, अणु अणु (क) सं. — आलसी, सुस्त।

अणु (क) सं.— पुत्री, घेटी ।
 अणु (क) वि.— अच्छा, विशुद्ध ।
 कल् (क) सं.— ओले ।
 अणु (क) सं.— विशुद्ध क्षीर, अच्छा दूध ।
 अणु (क) सं.— रिश्ता-संबंध, मित्रता ।
 अणु (क) सं.— 1. प्रीति, प्रेम, रिश्ता 2. लेपन, लेपन की वस्तु ।
 अणु (क) क्रि.— शक्तिमान या चलवान हो । सं.— शूरता, माहम, पौरुष, शक्ति, बल ।
 अणु (क) अ.— इसलिये, अतएव ।
 अणु (क) अ.— उसके बाद, तत्पश्चात्, तदुपरान्त ।
 अणु (क) वि.— तटहीन, जिसके किनारे न हों, सीधा, डालावाँ । सं.— प्रपात, कँचा पहाड़, पर्वत का अग्रभाग ।
 अणु (क) सं.— झट, असत्य ।
 अणु (क) वि.— उस गुण से हीन । सं.— अलंकार विशेष 2. बहुव्रीहि समास का एक भेद ।
 अणु (क) सं.— सैर, सैर करनेवाला ।
 अणु (क) सं.— जिसका शरीर नहीं है, कामदेव ।
 अणु (क) सं.— शिव ।
 अणु (क) वि.— विना डोरी का, विना तीरों का (बाजा), असंयत, अनुपयुक्त, व्यर्थ ।
 अणु (क) वि.— सतर्क, सावधान जागरूक, होशियार ।
 अणु (क) वि.— युक्ति शून्य, तर्क या दलील के विरुद्ध । सं.— तर्क के नियमों से अतमिज्ञ व्यक्ति ।
 अणु (क) वि.— आकस्मिक, जो विचार में न आया हो ।
 अणु (क) वि.— जिसके विषय में किसी प्रकार का तर्क या विवेचन न हो सके, अचिंत्य, अनिर्वचनीय ।

अणु (क) वि.— जिसके तली या पैदी न हों । म.— 1. सात पातालों में से दूसरा 2. शिव का नाम 3. एक तरक का नाम ।
 अणु (क) वि.— अगाध, बहुत गहरा ।
 अणु (क) अ.— 1. इससे, इसकी अपेक्षा 2. अतः, इसलिये ।
 अणु (क) सं.— आलसी, सन, पटसन ।
 अणु (क) सं.— 1. बहुत, अधिक, विशेष प्रकार का परिमाण से अधिक 2. बढ़कर, श्रेष्ठतर, उच्चतर 3. प्रसिद्ध, प्रतिपन्न ।
 अणु (क) सं.— अतिशयोक्तिपूर्ण कथा, निरर्थक कथा ।
 अणु (क) सं.— नीच कार्य, बुरा काम ।
 अणु (क) सं.— असाधारण देहधारी, राक्षस, रावण का पुत्र ।
 अणु (क) सं.— उलंघन, पार करना, बढ़ जाना ।
 अणु (क) क्रि.— 1. बढ़ जा, आक्रमण कर, पार कर 2. सीमा पार कर 3. अपमान कर, सता (प्रे.) 4. विरोध कर 5. हाथ से निकल जा, वश में न हो (अक्. क्रि.) 6. छोड़, लापरवाही से रह 7. अप्रचलित हो (अक्. क्रि.) ।
 अणु (क) सं.— अत्यंत सुगंधि युक्त, चंदन ।
 अणु (क) क्रि.— तिरस्कार या घृणा कर, लापरवाही से रह ।
 अणु (क) वि.— तीक्ष्ण बुद्धि का, कुशल ।
 अणु (क) वि.— अनित्य, बड़ा परिवर्तनशील । सं.— क्रांतिकारी ।
 अणु (क) सं.— एक प्रकार का कमल, स्थल पद्मिनी, पद्मचारिणी लता ।
 अणु (क) ल.— अधिक काम करना, अत्यधिक अभ्यास ।
 अणु (क) सं.— 1. ग्रहों की शीघ्र गति 2. उलंघन 3. गलती, अशुद्धि ।

अणु (क) वि.— असाधारण वेग से चलनेवाला ।
 अणु (क) वि.— जो आवाद न हो ।
 अणु (क) सं.— अपने बुजुर्गों से आगे बढ़ा हुआ ।
 अणु (क) अ.— अधिक, बहुत अधिक, उच्चतर ।
 अणु (क) सं.— 1. अतिथि, मेहमान, आगतुक 2. क्रोध 3. राम के पौत्र सुहोत्र का दूसरा नाम ।
 अणु (क) सं.— मेहमानदारी, अतिथि का आदर-सत्कार ।
 अणु (क) सं.— स्थानांतर, वह नियम जो अपने निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त विषयों में भी काम दे ।
 अणु (क) वि.— अद्वितीय, अनुपम ।
 अणु (क) सं.— अद्वितीय धनुर्धारी या योद्धा ।
 अणु (क) सं.— बहुत उदारता ।
 अणु (क) सं.— निर्दिष्ट सीमा के आगे उड़ जाना, चूक चाना, छोड़ जाना, उलंघन करना ।
 अणु (क) सं.— सागौन का वृक्ष ।
 अणु (क) सं.— अच्छा रास्ता, राजमार्ग ।
 अणु (क) सं.— अत्यंत सेवा-भाव, भक्तिपूर्वक सेवा ।
 अणु (क) सं.— 1. प्रगाढ़ प्रेम 2. अति उद्वेगता ।
 अणु (क) सं.— 1. अत्यंत उद्वेगता 2. अतिव्याप्ति 3. घनिष्ट संसर्ग ।
 अणु (क) सं.— सयानी लड़की जो विवाह योग्य हो गयी हो ।
 अणु (क) वि.— अत्यन्त बलवान या दृढ़ । सं.— महा पराक्रमी, योद्धा ।

ಅತ್ಯಯ ಅಸ್ಯಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ತ್ರಿತ ಜಾನಾ, ನಿಕಲ ಜಾನಾ; ಅಂತ; उपसंहार, समाप्ति, अनुपस्थिति, लोप, तिरोधान; सुत्यु: नाश; खतरा, बुराई; दुख; आक्रमण; अतिक्रमण, अपराध, दोष ।

ಅತ್ಯರ್ಥ ಅಸ್ಯರ್ಥ (ಸಮ್) ವಿ.—ಅತ್ಯधिक; बहुत ज्यादा, बहुत बड़ा ।

ಅತ್ಯನಸ್ತಿ ಅಸ್ಯವಸ್ಥೇ (ಸಮ್) ವಿ.—सुत्यु-समय ।

ಅತ್ಯುಚಾರ ಅಸ್ಯಾಕಾರ (ಸಮ್) ವಿ.— तिरस्कार- अभिशाप, भर्त्सना, धिक्कार; हट्ट-पुष्ट शरीर ।

ಅತ್ಯುಚಾರ ಅಸ್ಯಾಚಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.— अन्याय, विरुद्धाचार, दुराचार, भाचार का अतिक्रमण; उपद्रव. अधार्मिक क्रत्य, दुःखद काम ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಸ್ಯಾಜಿತ, ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಸ್ಯಾಜಿತ (ಸಮ್) ಸಂ.— लालच ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಸ್ಯಾಶ್ರಮ (ಸಮ್) ಸಂ.— संन्यास आश्रम, संन्यासी ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಸ್ಯಾಸನ್ನ (ಸಮ್) ವಿ.— बहुत संमीप का; मृत्यु की स्थिति का ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಸ್ಯಾಹಿತ (ಸಮ್) ಸಂ.— अत्यंत साहसपूर्ण कार्य; बड़ी विपदा; दुस्साहस ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಸ್ಯುಪಥ (ಸಮ್) ವಿ.— परीक्षित; विश्वस्त ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಸ್ಯುಕ್ತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— बहुत बड़ा हुआ कथन, बढ़ावा; एक अलंकार ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅತ್ರ (ಸಮ್) ಅ.— यहाँ, इधर ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅತ್ರಪ (ಸಮ್) ವಿ.—लजाहीन, निर्लज्ज, उद्धत । — अर्द्ध आत्मिके (सम) सं.— निर्लज्ज स्त्री ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಥ (ಸಮ್) ಅ.— मंगल, प्रारंभ, अधिकार; तत्पश्चात्, बाद में; यदि, किन्तु यदि; और, इसी प्रकार, जिस प्रकार; संदेह, संशय; संपूर्णता ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅರ್ಥ (ಸಮ್) ಸಂ.— अथर्व वेद; पूजारी, ब्राह्मण; एक वैदिक पूजारी का नाम ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅರ್ಥಣ (ಸಮ್) ಸಂ.— अथर्व वेद ।

ಅತ್ಯುಜಿತ ಅಥವಾ (ಸಮ್) ಅ.— या, वा, किंवा ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಕ) ಕ್ರಿ.— दवा, कुचल, हूस, भर, मसल, पीस । सं.— धातु के बर्तनों पर पड़ी चोट (bruise) ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಸಮ್) ವಿ.— बायों; सादा; निर्बल मन का, मूढ़; सौष्टव रहित, अनिपुण, भद्दा; प्रतिकूल ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಕ) ಸಂ.— पराक्रमशाली. थोढ़ा, शूर । — ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಕ) ಸಂ.— वीरता, पराक्रम, गर्व, दर्प, अस्मिमान ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಸಮ್) ವಿ.— बिना दिया हुआ; अन्यायपूर्वक दिया हुआ । सं.— अविवाहित कन्या ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಕ) ಕ್ರಿ.— दवा, कुचल, मसल ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.— गौरव, इज्जत; अदव (अरवी) ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಸಮ್) ವಿ.— बहुत, अधिक, विपुल ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.— करुणारहित, निर्दय ।

ಅದ್ಭುತ ಅದರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— हिल, डुल, काँप । सं.— भय, कंपन; भ्रमण; कच्चा लोहा; कच्चा फल, अपक्व फल । — गुंठिगे (क) सं.— डरपोक दिल, भीरुता । — बँने के (क) सं.— एक बीमारी ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಕ) ಕ್ರಿ.—हिला, हिला-डुला, नीचे दवा, कुचल (प्रे.) ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಸಮ್) ಸಂ.— अमावास्या; अदृश्यता; प्रतिबिंब ।

ಅದ್ಭುತ ಅದ್ಭುತ (ಕ) ಸಂ.— व्यथा, चिंता, वेदना; दया, करुणा; उद्वेग ।

ಅದ್ಭುತ ಅದಾತ, ಅದಾತ, ಅದಾನಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— दान न देनेवाला, कंजूस ।

ಅದ್ಭುತ ಅದಾयाद (ಸಮ್) ವಿ.— उत्तराधिकार रहित ।

ಅದ್ಭುತ ಅದಾವತಿ (ಅರವಿ) ಸಂ.—स्पर्धा, विरोध, शत्रुता ।

ಅದಿತಿ ಅದಿತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— कश्यप ऋषि की पत्नी, देवताओं की माता; पृथ्वी; गाय; भाषण ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— दे. ಅದಿರು ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಸಂ.—माधवी लता ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಸಂ.— कंपन, भय ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಸಂ.—वसंत दूतिका नामक लता ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಸಮ್) ಸಂ.—मंदागि, अजीर्ण, बदहज़मी ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಸರ್ವ.—वह (न.लिं.)—That, It. उदा.— ಅದಿರು ಅದಿರು ಪುಸ್ತಕ — वह पुस्तक है । प्र.— एक प्रत्यय ।

ಅದಿರು ಅದಿರು, ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.—; दब, मिल, संयुक्त हो, मिल जा, उपयुक्त हो (अक. क्रि.); दवा, मिला, लगा, संयोजन कर ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಸಂ.— सुख, प्रसन्नता, संतोष ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— दवा, (प्रे.); हाथ से दवाकर ठीक कर ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.—दे. अदरु.

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ವಿ. वो.— विस्मयादि बोधक प्रत्यय, देखो !

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— दे. अदरु.

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— दे. अदरु.

ಅದಿರು ಅದಿರು (ತದ್) ವಿ.— अद्भुत (तद्) ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— दवा, कुचल, मसल, दृढ़ता से पकड़कर बांध ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— दे. अदरु.

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— दे. अदरु.

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಸಂ.— व्यकुलता; संदेह; किसी वस्तु की पहचान ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— संदेह कर, संशय कर ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಸಮ್) ಸಂ.— अंधा ।

ಅದಿರು ಅದಿರು (ಸಮ್) ವಿ.—अव्यक्त, अगोचर, जो भाँखों को न दीखे । — अर्द्ध शक्ति (सम) सं.— देवी-शक्ति, सृष्टि-शक्ति ।

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.—ಅನುಭವ, ಅಜ್ಞಾತ, ಅಪ್ರಕೃತ | ಸಂ.— ದೈವ, ವಿಧಿ ; ಲಾಭ, ಪ್ರಾಪ್ತಿ | —ಕರ್ಮ ಕರ್ಮ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅನುಭವ ಶून್ಯ ಕಾರ್ಯ | —ಕರ್ಮ ಪೂರ್ವ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಜೊ ಪಹಲೆ ನ ದೇಖಾ ಗಯಾ ಹೊ | —ಕೃತ ಫಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಚ್ಚೆ-ಬುರೆ ಕರ್ಮೊ ಕಾ ಭಾವಿ ಫಲ | —ಕರ್ಮ ವಾದಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಭವಿಷ್ಯ-ವಾಣಿ ಕರ್ನೇವಾಲಾ, ಜ್ಯೋತಿಷ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಕ) ಸಂ.— ವಹ ಪತ್ಥರ ಜೊ ಸುನಾರ ಕಾಮ ಮೆ ಲಾತಾ ಹೆ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ತತ್) ವಿ.—ಅರ್ಧ (ತತ್) ; ಆಧಾ, ಡುಕಡಾ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ, ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ, ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಕ) ಸಂ.— ಚಿಹ್ನ, ಡುಬಾವ, ನಿಮಜ್ಜನ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಡರಾ, ಧಮಕಾ, ಕಂಪಾ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಡುಬಾ, ನಿಮಜ್ಜಿತ ಕರ, ಮಿಗಾ (ಮಿಗೊ), ಗಿಲಾ ಕರ ; ಡರಾ, ಕಂಪಾ | ಡರಾ.— ಅರಣ್ಯ ನೀರಲಡ್ಡು-ಪಾನಿ ಮೆ ಡುಬಾ | ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಕ) ಪ್ರ.— ಪ್ರತ್ಯಯ 'ಜೊ' ಕಾ ಅರ್ಥ-ಛೊತಕ, ಜೆಸೆ—ದೂರವಾದ್ದು ದೂರ-ವಾದ್ದು—ಜೊ ದೂರ ಹೊ, ಅಂದ್ವು ಅಂದ್ವು— ಜೊ ಕಹಾ ಗಯಾ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ವಿಷ್ಮಯಕರ, ಭಯಕರ | ಸಂ.— ಆಶ್ಚರ್ಯ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಅ.— ಅವ, ಆಜ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ಆಜ ತಕ ಕೊ, ಅಧುನಿಕ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಅ.— ಅವ ತೊ, ಅವ ಭಿ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅನುಪಯುಕ್ತ ವಸ್ತು, ಕುಶಿಷ್ಯ, ಕುಪಾತ್ರ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪರ್ವತ, ಪಹಾಡ ; ಪತ್ಥರ ; ಕುಲಿಶ ; ಪೆಡ, ವೃಕ್ಷ ; ಸೂರ್ಯ ; ವಾದಲೊ ಕೊ ಘಟಾ, ವಾದಲ ; ಸಾತ ಕೊ ಸಂಖ್ಯಾ ; ಮಾಪ ವಿಶೇಷ | — ಅರಣ್ಯ ಇಂಶ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಹಿಮಾಲಯ ; ಮಹಾದೇವ |

—ಅರಣ್ಯ ಕನ್ಯಾ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪಾರ್ವತಿ | —ಅರಣ್ಯ ಮಿಡ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಇಂದ್ರ | —ಅರಣ್ಯ ರಾಜ, ಅರಣ್ಯ ಪತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮೇರು, ಹಿಮಾಲಯ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ಡೊ ನಹಿ, ಬೆಜೊಡ್ಡ್ ಏಕ ಮಾತ್ರ, ಅದ್ವಿतीय | ಸಂ.— ಅದ್ವಿतीयತಾ, ಸರ್ವೋತ್ತಮತಾ ; ಏಕೈಕ, ಅಭೇದ, ಬ್ರಹ್ಮ ಆರ ವಿಶ್ವ ಕೊ ಏಕತಾ ; ಪ್ರಾಮುಖ್ಯ ; ಮಹಾತ್ಮಾ ಬುಡ್ಡ ಕಾ ನಾಮ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಕ) ಸಂ.— ಸಂಕಟ, ಪಿಡಾ, ಕಠ | ಅ.— ಖರಾಬ, ಬರವಾದ್ (ಮೆ. ಪ್ರ.) |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅದ್ವಿतीय (ಸಮ್) ವಿ.— ಬೆಜೊಡ್ಡ್ ಏಕ ಮಾತ್ರ ; ಏಕಾಕಿ, ಬ್ರಹ್ಮ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅದ್ವೈತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಡೊ ನಹಿ, ದ್ವಿತ್ವಿತ್ಯಶೂನ್ಯ, ಅಪರಿವರ್ತನಶೀಲ ; ಅನುಪಮ, ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಏಕಾಕಿ | ಸಂ.— ಏಕೈಕ (ವಿಶೇಷಕರ ಜೀವ ಆರ ಬ್ರಹ್ಮ ಕಾ) ; ಸರ್ವೋಪರಿ ಸತ್ಯ, ಬ್ರಹ್ಮ | —ಅರಣ್ಯ ವಾದಿ (ಸಮ್) ವಿ.— ಜೀವ ಆರ ಬ್ರಹ್ಮ ಕೊ ಏಕತಾ ಮಾನೇವಾಲಾ, ವೇದಾಂತಿ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ, ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಅ.— ನೆಚೆ, ನೆಚೆ ಕೆ ಲೊಕ ಮೆ | — ಅರಣ್ಯ ಕರಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ನೆಚಾ ಕರ, ಛೊಟಾ ಕರ | — ಅರಣ್ಯ ಕೃತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಜೊ ನೆಚಾ ಕಿಯಾ ಗಯಾ ಹೊ | ಅರಣ್ಯ ಪತನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ನೆಚೆ ಗಿರನಾ, ಬುರಿ ದಶಾ, ದುರ್ಗತಿ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಕ) ಸಂ.— ಬಲವಾನ, ಸಾಹಸಿ, ವೀರ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಕ) ಸಂ.— ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಶಕ್ತಿ, ವೀರತಾ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ನೆಚ, ಹೀನ, ಹೇಯ, ಛುಡ್ಡ, ಬಹುತ ಬುರಾ | ಸಂ.— ನೆಚ ಮನುಷ್ಯ, ಛುಡ್ಡ ಮನುಷ್ಯ, ಬುರಾ ಆದಮಿ | — ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಬಹುತ ಬಡಾ ನೆಚ ಮನುಷ್ಯ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಮಣ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕ್ರೂರಿ, ಕರ್ಜದಾರ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ನೆಚೆ ಕಾ, ನೆಚ, ಅಧಮ, ಅಶ್ರೇಷ್ಠ, ಪರಾಭೂತ, ಚುಪ ಕಿಯಾ ಡುಬಾ | ಸಂ.— ಹೊಂ, ಅಧರ | — ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ನೆಚತಾ | — ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚುಂವನ, ಚೂಮನೆ ಕೊ ಕ್ರಿಯಾ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಧರ್ಮ ವಾಹ್ಯ, ಪಾಪ ಕರ್ಮ, ಅನ್ಯಾಯ, ನಿಪಿಡ್ಡ ಕರ್ಮ, ದುಷ್ಠತಾ ; ಏಕ ಪ್ರಜಾಪತಿ ಕಾ ನಾಮ ; ಸೂರ್ಯ ಕೆ ಏಕ ಅನುಚರ ಕಾ ನಾಮ | — ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ದುಷ್ಠ, ಪಾಪಿ, ಅನ್ಯಾಯ ಕರ್ನೇವಾಲಾ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ರೊಂ, ಬೆವಾ, ವಿಧವಾ | ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ಅ.— ಅರಣ್ಯ, ಅಧಿಕ, ಶ್ರೇಷ್ಠ ; ಪ್ರಧಾನ, ಮುಖ್ಯ, ವಿಶೇಷ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ಬಹುತ, ಜ್ಯಾದಾ, ವಿಶೇಷ ; ಅತಿರಿಕ್ತ, ಸಿವಾ | ಸಂ.— ಏಕ ಅಲಂಕಾರ | — ಅರಣ್ಯ ಮಾಸ (ಸಮ್) ಸಂ.— ೩೩ ಮಾಸೊ ಮೆ ಏಕ ಬಾರ ಆನೇವಾಲಾ ಅತಿರಿಕ್ತ (ಛೂಟಾ) ಮಾಸ | — ಅರಣ್ಯ ಕರಣ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಆಧಾರ ; ಸ್ವಾಮಿತ್ವ ; ವಿಷಯ, ಭಾಗ, ಪ್ರಕರಣ ; ಮರಕಾರ ; ಅನುಚ್ಛೇದ ; ಏಕಕಾರಕ ಕಾ ನಾಮ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಕರಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ದೇಖಭಾಲ ಕರ, ಅಧಿಕಾರ ಕರ, ನಿಶಾನ ಲಗಾ, ಕಿಸಿ ಕೊ ಡೇಶ ಕರಕೆ ಕಹ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಕಾಮ (ಸಮ್) ವಿ.— ಪ್ರಬಲ ಕಾಮನಾ ರಖನೇವಾಲಾ, ಅಶಾಂತ, ಕಾಮಿ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಕಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾರ್ಯಭಾರ, ಆಧಿಪತ್ಯ, ಪ್ರಭುತಾ ; ಪದ ; ಶಾಸನ ; ಪ್ರಕರಣ, ಶಿರ್ಷಕ ; ಕ್ಷಮತಾ ; ಯೋಗ್ಯತಾ ; ಪರಿಚಯ, ಜ್ಞಾನ | — ಅರಣ್ಯ ಸ್ಥ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಧಿಕಾರಿ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಕೃತ (ಸಮ್) ವಿ.— ; ಅಧಿಕಾರ ಪ್ರಾಪ್ತ, ನಿಯತ, ನಿಯುಕ್ತ ; ಅಧಿಕಾರಿ, ಸ್ವಾಮಿ ; ಶ್ರೇಷ್ಠ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಕೋತ್ತರ (ಸಮ್) ವಿ.— ಅತ್ಯಂತ ಶ್ರೇಷ್ಠ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಕ್ಷಿಪ (ಸಮ್) ವಿ.— ಕೃಣಾ ಕೆ ಯೋಗ್ಯ, ಕೃಣಿತ, ಅಪಮಾನಿತ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಕ್ಷೇಪ (ಸಮ್) ಸಂ.— ತಿರಸ್ಕಾರ, ನಿಂದಾ, ಅಧಿಕ್ಷೇಪ, ಅಪಮಾನ, ವ್ಯಂಗ್ಯ ; ವಿಸರ್ಜನ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಗತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಕಂಠಸ್ಥ ಕಿಯಾ ಡುಬಾ, ಜ್ಞಾತ, ಅವಗತ ; ಪ್ರಾಪ್ತ, ಪಾಯಾ ಡುಬಾ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಗಮನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪ್ರಾಪ್ತಿ, ಜ್ಞಾನ, ಅಧ್ಯಯನ ; ಸ್ವೀಕೃತಿ ; ಸಂಗಮ, ಸಂಸರ್ಗ, ಅಲಾಪ ; ಲಾಭ, ಏಶ್ವರ್ಯ ಕೊ ಪ್ರಾಪ್ತಿ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಜಿಹ್ವ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಾಂಪ, ಸರ್ಪ |

ಅಧ್ಯಕ್ಷ್ಯ ಅರಣ್ಯ ಅಧಿಜ್ಯಧನ್ವನ್ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಧನುಷ ಕಾ ರೊಡಾ ತಾನೆ ಡುಪ್ ಧನುಷಾರಿ |

अनधीत (सम्) वि.— जो नहीं पढ़ा या सीखा गया हो ।

अनध्याय, अनध्ययन (सम्) सं.— पढ़ने के लिए निषिद्ध दिन, छुट्टी का दिन ।

अननुकूल (सम्) वि.— जो अनुकूल न हो, कष्ट का ।

अनंत (सम्) वि.— जिसका अंत न हो, नाशरहित, स्थिर, शाश्वत । सं.— ; आदिशेष, वासुकी ; विष्णु, कृष्ण ; शिव ; आकाश ; पृथिवी ; एक तीर्थंकर का नाम; बुद्ध ।

अनंतरं (सम्) अ. — पश्चात्, उपरांत, बाद में ; पड़ोस, बगल का ।

अनंतशयन (सम्) सं.— ; शेषशायी विष्णु ; तिरुवनंतपुरम् (त्रिवेन्द्रम्) का दूसरा नाम (मै. प्र.) ।

अनन्य (सम्) वि.— अन्य से संबंध न रखनेवाला, एकनिष्ठ, एकरूप, अमिल, अद्वितीय, अविभक्त । — गति (सम्) सं.— दूसरी गति न रहने की स्थिति । — भक्ति (सम्) सं.— एक ही देवता के प्रति दृढ़ भक्ति । — शरणागति (सम्) सं.— एक ही की शरण में जाने का भाव ।

अनन्वय (सम्) वि.— संबंध रहित, अन्वयशून्य । सं.— एक अलंकार ।

अनपत्य (सम्) सं.— संतानहीन व्यक्ति ।

अनपेक्षे (सम्) सं.— इच्छा राहित्य ।

अनभिज्ञ (सम्) वि.— अज्ञ, अनजान, अपरिचित ।

अनय (सम्) सं.— बुरा चाल-चलन, बुरी रीति ; अन्याय ; बदला ; हानि ; अव्यवस्था ; विधि, विपदा ।

अनर्गल (सम्) वि.— बिना ताला-कुंजी का, खुला ; स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित ।

अनर्घ, अनर्घ्य (सम्) वि.— अमूल्य, प्रतिष्ठित ।

अनर्थ (सम्) सं.— निष्प्रयोजन

या बिना मूल्य का, निकम्मी वस्तु ; आपत्ति, विपत्ति ; दुर्भाग्य, बद-किस्मती ; निरर्थक अर्थशून्य ; अविवेक ।

अनर्पित (सम्) वि.— जो अर्पित न किया गया हो ।

अनर्ह (सम्) वि.— अयोग्य, अवांछित, कौड़ी काम का नहीं । — त्रे (सम्) सं.— अयोग्यता ।

अनल (सम्) सं.— आग, अग्निदेव, जठराग्नि । — नयन, नेत्र (सम्) सं.— शिव ।

अनवकाश (सम्) वि.— अवकाश का अभाव, फुरसत का न होना ; जो लागू न हो ; अप्रार्थित । सं.— अनुप-युक्त समय ।

अनवद्य (सम्) वि.— निर्दोष, निष्कलंक, निर्मल, उत्तम ।

अनवधि (सम्) वि.— निस्सीम, अनंत, अवधिरहित ।

अनवरत (सम्) अ. — हमेशा, निरंतर, सतत; सदैव ।

अनवश्य (सम्) वि.— अनावश्यक ।

अनवसर (सम्) वि.— अवकाश या फुरसत का न होना ।

अनवस्थित (सम्) वि.— चंचल, अस्थिर, परिवर्तनशील ।

अनवस्थे (सम्) सं.— दुर्गति, बुरी स्थिति ।

अनशन (सम्) सं.— उपवास, भोजन न करना । — व्रत (सम्) सं.— उपवास व्रत ।

अनाकुल, अनाकुल (सम्) वि.— शांत, आत्मसंयत, स्थिर ।

अनाचार (सम्) सं.— बुरा आचरण, बुरा मार्ग, दुष्कर्म ।

अनात्म (सम्) सं.— जो आत्मा न हो, विरुद्धात्मा । — इक (सम्) वि.— मर्त्य ।

अनाथ (सम्) वि.— नाथ रहित, गरीब, जिसके माता-पिता न हो । — बंधु (सम्) सं.— अनार्थों के सहायक, परमात्मा ।

अनाथे (सम्) सं.— गरीब स्त्री, विधवा ।

अनादर (सम्) सं.— अगौरव, वेहज्जती ; घृणा, तिरस्कार ।

अनादि (सम्) वि.— जिसका शुरु या आरंभ न हो, आदिरहित, सनातन । सं.— स्वर्ग ।

अनादृत (सम्) वि.— जिसका आदर न किया गया हो । अस्वीकृत, घृणित ।

अनाद्यंत (सम्) वि.— जिसका आदि और अंत न हो ।

अनानस, अनानास (अ.दे.) सं.— अनन्नास (Pineapple) ।

अनाप्त (सम्) सं.— अनजान, अजनबी ।

अनामक (सम्) वि.— नाम रहित, गुंमनाम, बदनाम, अप्रसिद्ध ।

अनामधेय (सम्) वि.— जिसका नाम न हो, बदनाम, व्यक्तित्वहीन ।

अनामत् (क) अ.— अकस्मात्, अचानक (मै. प्र.) ।

अनामय (सम्) वि.— स्वस्थ, तंदुरुस्त, सुंदर, शुद्ध । सं.— शिव ।

अनामिक (सम्) सं.— नीच, पापी, अप्रसिद्ध ; हरिजन । — अनामिके (सम्) सं.— अंगूठी पहनने की उंगली ; चंडाल स्त्री ।

अनायस, अनायास (सम्) वि.— बिना प्रयास, बिना उद्योग, सरल, सुगम ।

अनार्थ (सम्) सं.— जो आर्थ न हो, शूद्र, म्लेच्छ, अधम पुरुष ।

अनावरण (सम्) सं.— उद्घाटन, आवरण या परदा खोलना ।

अनावृष्टि (सम्) सं.— वर्षा का अभाव, उपद्रव ।

अनुचर (सम्) सं.— दुर्घटना, बुराई, हानि, विपदा ।

अनुचर (सम्) वि.— विना बुलाया हुआ, अनिमंत्रित ।

अनुचर (सम्) सं.— अनिच्छा, अभिलाषा का अभाव ।

अनुचर, अनुचर (क) अ.— उतना, उस समय तक, इतने में, पूरा, सारा ।

अनुचर (सम्) वि.— अस्थिर, विनश्वर, झूठा ।

अनुचर (सम्) वि.— श्लाघ्य, दोष रहित ।

अनुचर (क) सं.— उतने लोग, सब लोग ।

अनुचर (सम्) वि.— अकारण, आधार रहित, उद्देश्य रहित ।

अनुचर (सम्) सं.— देवता ; मछली ; विष्णु । — अनुचर आश्रय (सम्) सं.— स्वर्ग ; समुद्र । — अनुचर दृष्टि (सम्) सं.— विना पलक मारे देखने की क्रिया । — अनुचर ध्वज (सम्) सं.— मीनकेतन, कामदेव ।

अनुचर, अनुचर (सम्) वि.— जो नियमित न हो ; अनियंत्रित, असंयत ।

अनुचर (सम्) वि.— अनियंत्रित, मुक्त । सं.— भेदिया, जासूस ; स्वेच्छा-चारिता ; प्रद्युम्न के पुत्र का नाम ।

अनुचर (सम्) वि.— अनिश्रित ।

अनुचर (सम्) सं.— निश्चितता या नियम का अभाव, अस्पष्टता ।

अनुचर (सम्) सं.— हवा, वायु, पवन ।

अनुचर (सम्) सं.— भीम ; हनुमान ।

अनुचर (सम्) सं.— अग्नि ।

अनुचर (सम्) सं.— वायु को मापने और पृथक करने का यंत्र (Eudiometer) ।

अनुचर, अनुचर (सम्) वि.— जो निवारण करने योग्य न हो, विवश, सीमाहीन, आवश्यक ।

अनुचर (सम्) वि.— जो निश्चित न हो, अनिर्णीत ।

अनुचर (सम्) सं.— दुर्दैव, दुर्भाग्य ; इच्छा का अभाव ।

अनुचर, अनुचर (सम्) सं.— सेना, टोली, समूह ।

अनुचर (सम्) सं.— अनय, बुरी नीति या चाल ।

अनुचर (सम्) सं.— लगाम, नियंत्रण ।

अनुचर (सम्) सं.— असमर्थ, जो स्वामी न हो ।

अनुचर (सम्) सं.— नास्तिकवाद, चार्वाक का मत ।

अनुचर (सम्) अ.— उपसर्ग — साथ, सहित, संग, पास-पास, संबंध से, पीछे, ओर, तरफ, एक के बाद एक, समान, समर्थनीय ।

अनुचर (क) वि.— ठीक, अच्छा, सुंदर, रम्य, उत्तम, मनोहर, नाजुक । सं.— योग्यता, शक्ति ; अनुकूल स्थिति, सुविधा तैयारी, विजय ; उचित ; या उपयुक्त कार्य ; योजना, विन्यास ; उपयुक्त संदर्भ, समय ; लाभ, उपयोग ; अवसर, मौका । — अनुचर कूट (क) क्रि. साथ हो, मिल, लग, एक हो । — अनुचर क्रेडु (क) क्रि.— खराब हो । — अनुचर गै (क) क्रि.— सुविधा कर, ठीक कर । — अनुचर गोल्लु (क) क्रि.— योग्य हो, तैयार हो । — अनुचर गोल्लिसु (क) क्रि.— तैयार कर, अच्छा बना ।

अनुचर (सम्) सं.— दया, करुणा, सहानुभूति ।

अनुचर (सम्) सं.— नकल, प्रतिलिपि, एकरूपता । — अनुचर करि (सम्) क्रि.— नकल कर ।

अनुचर (सम्) सं.— नकल (अभिनय आदि की) ।

अनुचर (सम्) सं.— आकर्षण, खिंचाव ; पीछे घसीटना ; रथ या गाड़ी के नीचे रहनेवाली लकड़ी जिसके सहारे पहिये रहते हैं ।

अनुचर (सम्) वि.— दयालु, माननेवाला । सं.— स्नेह, प्रीति ; सहायता ; विश्वस्त या दयालु पति, नायक विशेष ।

अनुचर (सम्) वि.— जो नहीं कहा गया हो, जो कहने योग्य न हो ।

अनुचर (सम्) सं.— गणना, रीति, परंपरा, वंशावली ।

अनुचर (सम्) सं.— पीछा करना, क्रम से पाना ।

अनुचर (सम्) सं.— अनुक्रमणिके (सम्) सं.— अनुक्रमणी, जिसमें किसी ग्रंथ में वर्णित विषयों का क्रमिक वर्णन हो ।

अनुचर (सम्) सं.— अनुकंपा, दया, करुणा, कोमलता ।

अनुचर (सम्) सं.— अनुयायी, साथी, आज्ञाकारी नौकर ।

अनुचर (क) क्रि.— रगड़, पीट, सार ।

अनुचर (सम्) वि.— पीछे चलने-वाला, पीछे आया हुआ ।

अनुचर (सम्) सं.— पीछे जाना ; सहगमन, सहमरण ; अनुसरण, अनुकरण ; अनुहार, अनुसार । — अनुचर अनुगामि (सम्) सं.— दे. अनुचर ।

अनुचर (सम्) वि.— समान गुणवाला, अनुकूल, मनोज्ञ, उपयोगी, उचित, उपयुक्त ।

अनुचर (सम्) सं.— दया, सहानुभूति, उपकार ; सहायता, सहयोग ; स्वीकारोक्ति, स्वीकृति । — अनुचर इ (सम्) क्रि.— दया दिखा ।

अनुचर (सम्) सं.— अनुयायी, सेवक, साथी ।

अनुष्ठान

अनुष्ठान (सम्) वि.— अयुक्त, अयोग्य, गलत, अप्रचलित, विलक्षण, गुणहीन ।
 अनुष्ठान, अनुष्ठान अनुजात, (सम्) सं.— छोटा भाई । — अनुष्ठान अनुजाते, अनुष्ठान अनुजे (सम्) सं.— छोटी बहन ।
 अनुष्ठान अनुजीवि (सम्) सं.— परावलंबी, नौकर, सेवक ।
 अनुष्ठान अनुजे (सम्) सं.— आज्ञा, अनुमति ।
 अनुष्ठान अनुताप (सम्) सं.— पश्चात्ताप, दुःख, संताप, कष्ट ; दया, करुणा ।
 अनुष्ठान अनुदात्त (सम्) वि.— जो ऊँचा न हो, जो उदात्त स्वर न हो, गंभीर ।
 अनुष्ठान अनुदिन (सम्) अ.— हमेशा, सदा, दिनों दिन ।
 अनुष्ठान अनुनय (सम्) सं.— विनम्रता, विनय ; स्नेह, प्रेम ; प्रार्थना ; सांत्वना ।
 अनुष्ठान अनुनासिक (सम्) सं.— नासिका से उच्चरित होनेवाला अक्षर, वर्ण के पाँचवें अक्षर ।
 अनुष्ठान अनुपत्य (सम्) सं.— गरीबी, दरिद्रता ।
 अनुष्ठान अनुपद (सम्) अ.— पीछे-पीछे, कदम-कदम, अनंतर, वाद में ।
 अनुष्ठान अनुपदीन (सम्) सं.— जूता, खडाऊ ।
 अनुष्ठान अनुपपत्ति (सम्) सं.— हानि, अपजय, असंगति, असिद्धि, असमर्थता ।
 अनुष्ठान अनुपम (सम्) वि.— उपमारहित, बेजोड़, असाधारण, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम ।
 अनुष्ठान अनुपलवि (सम्) सं.— संगीत में टेक के साथ मिलनेवाली पंक्ति, सह-टेक ।
 अनुष्ठान अनुपान (सम्) सं.— औषध के साथ मिलनेवाला पदार्थ, पदार्थ विशेष जो किसी औषध के साथ या ऊपर खाया जाय ।
 अनुष्ठान अनुप्रास (सम्) सं.— एक अलंकार ।
 अनुष्ठान अनुबद्ध (सम्) वि.— साथ मिला हुआ, संबद्ध ।
 अनुष्ठान अनुबंध (सम्) सं.— संबंध, मिलन, लगाव ; परिशिष्ट ; परिणाम ।

— अनुबंध अनुबंध (सम्) सं.— अनुबंध, रिश्तेदार, संबंधी, मित्र ।
 अनुबंध अनुबंध (सम्) सं.— प्रतिबंध, प्रतिकृति । — अनुबंध इत्सु (सम्) क्रि.— नकल कर ।
 अनुबंध अनुभव (सम्) सं.— अपने प्रयत्न से उत्पन्न ज्ञान, परिज्ञान, अनुभूति ।
 अनुबंध अनुभाव (सम्) सं.— आत्मानुभूति ; काव्य में रस के चार अंगों में से एक, हृदयस्थ भाव को प्रकट करने का अंग-विकार ; अधिकार, गौरव । — अनुबंध भावि (सम्) सं.— अनुभवज्ञ, ज्ञानी ।
 अनुबंध अनुभूति (सम्) सं.— दे. अनुबंध ; गौरव ।
 अनुबंध अनुभोग (सम्) सं.— सुख-दुःख का भोग, विलास ।
 अनुबंध अनुमत (सम्) वि.— स्वीकृत । सं.— अमिप्राय, राय ।
 अनुबंध अनुमति (सम्) सं.— आज्ञा, अनुज्ञा, स्वीकृति ; चतुर्दशी का चंद्रमा । — अनुबंध इत्सु (सम्) क्रि.— सम्पत्ति दे, आज्ञा दे ।
 अनुबंध अनुमरण (सम्) सं.— सहगमन, सहमरण ।
 अनुबंध अनुमान (सम्) सं.— ऊहा, तर्क, संशय । — अनुबंध इत्सु (सम्) क्रि.— तर्क कर, संदेह कर ।
 अनुबंध अनुमिति (सम्) सं.— तर्क, निर्णय ।
 अनुबंध अनुमोदन (सम्) सं.— हर्ष, संतोष ; स्वीकृति, समर्थन ।
 अनुबंध अनुयायि (सम्) सं.— पीछे चलनेवाला, नौकर, साथी ।
 अनुबंध अनुयोग (सम्) सं.— परीक्षा, प्रश्न ।
 अनुबंध अनुरक्ति, अनुबंध अनुराग, अनुबंध अनुरति (सम्) सं.— प्रेम, प्रीति, भक्ति ।
 अनुबंध अनुराध, अनुबंध अनुराधा, अनुबंध अनुराधे (सम्) सं.— २७ नक्षत्रों में एक ।

अनुबंध अनुरूप (सम्) वि.— सदृश्य, समान, योग्य, उपयुक्त । सं.— तुलना-साम्य ।
 अनुबंध अनुरोध (सम्) सं.— अनुसरण, स्वेच्छाचारिता, विनय ; आग्रह, दबाव ।
 अनुबंध अनुलेपन (सम्) सं.— उबटन, लेप, मलहम ; सुगंधित वस्तुओं को शरीर में लगाना ।
 अनुबंध अनुलोम (सम्) वि.— क्रमिक, स्वाभाविक, नियमित । — अनुबंध विवाह (सम्) सं.— उच्च वर्ण के पुरुष का नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह ।
 अनुबंध अनुवर (सम्) सं.— युद्ध, लड़ाई ।
 अनुबंध अनुवर्तन (सम्) सं.— अनुसरण, विनय ; आगे बढ़ाना ; परिणाम ।
 अनुबंध अनुवर्ति (सम्) सं.— अनुयायी ।
 अनुबंध अनुवलि (क) क्रि.— आश्रयहीन हो । हीन दशा प्राप्त कर ।
 अनुबंध अनुवागु (क) क्रि.— तैयार हो, कमर कस ।
 अनुबंध अनुवाद (सम्) सं.— भाषांतर, रूपांतर, तर्जुमा ; शिकायत ।
 अनुबंध अनुविसु (क) क्रि.— अनुसरण कर, विनय कर ।
 अनुबंध अनुवु (क) सं.— तैयारी ।
 अनुबंध अनुवृत्ति (सम्) सं.— स्वीकृति, अनुकरण, अनुसरण ।
 अनुबंध अनुशय (सम्) सं.— पश्चात्ताप, विषाद, क्षोभ ; उद्वेग ; महाक्रोध, घोर शत्रुता ।
 अनुबंध अनुशासन (सम्) सं.— नियम-विधि, आज्ञा, आदेश, मार्गदर्शन, सलाह ।
 अनुबंध अनुषंग, अनुबंध अनुषंग (सम्) सं.— सामीप्य संबंध ; दया, करुणा ; मिश्रित परिणाम ; एकीभाव, आलिंगन ।
 अनुबंध अनुष्टुप् (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम ।
 अनुबंध अनुष्ठान (सम्) सं.— आचरण ; पूर्ण करना ।

अनुसंधान (सम्) सं. — निदान ; शोध ; योजना ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — पीछे-पीछे चलना, अनुकूल आचरण ।
 अनुसंधान (सम्) अ — सुताबिक, समान, सदा ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — स्वर के बाद उच्चरित किया जानेवाला एक अनुनासिक वर्ण, ह्रस्वका चिह्न '०' है ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — झूठ, मिथ्या, कपट, धोखा; कृषि ।
 अनुसंधान (क) प्र. — एक प्रत्यय जिससे क्रि.वि. बनता है, जैसे-सुसूतं सुम्मने-सुपचाप, सुसूतं सुम्मने-धीरे-धीरे ।
 अनुसंधान (क) प्र. — विशेषण रूप के प्रत्यय । उदा. — बंधनोत्तम ओदनेय-पहला [बन्धु ओदु (एक) + अनेय = बन्धु ओदनेय] ।
 अनुसंधान ओदने-पहला ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — कई, एक से अधिक । — अथ (सम्) सं. — कई बार पानी पीनेवाला, हाथी ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — घर न छोड़ना ; पेड़, पौधा ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — भोजन, भात ; विष्णु ; सूर्य ; जल । — अथ (सम्) वि. — दूसरों के जीवन को नष्ट करनेवाला । — अथ (सम्) सं. — सराया जहाँ निःशुल्क भोजन दिया जाता है ।
 अनुसंधान, अनुसंधान (क) अ. — तक, पर्यंत । वि. — वैसा, उस प्रकार का, उस तरह का ।
 अनुसंधान, अनुसंधान (क) अ. — तक, पर्यंत ।
 अनुसंधान, अनुसंधान (क) अ. — तक, पर्यंत ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — अन्न से संबंधित ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — अन्न देनेवाला, स्वामी, प्रभु, मालिक ।
 अनुसंधान (क) वि. — वैसा, उस प्रकार का ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — पार्वती ।

अनुसंधान (सम्) सं. — १६ संस्कारों में एक, बच्चे को प्रथम बार अन्न खिला देने की क्रिया ।
 अनुसंधान, अनुसंधान (तद्) सं. — अन्याय (तत्) ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — दे. अनुसंधान ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — अन्न पर अवलंबित ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — भोजन (अन्न) के अभाव के कारण दुर्दशा, दारिद्र्य ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — भोजन के लिए आया हुआ व्यक्ति, भूखा आदमी, भिखारी ।
 अनुसंधान (क) क्रि. — कह, बोल द्वितीया विभक्ति प्रत्यय । — अनुसंधान इत्सु ; — लगना, अनुभव होना ।
 अनुसंधान (क) अ. — इतने में, तब तक, तब ।
 अनुसंधान, अनुसंधान, अनुसंधान (क) अ. — तब तक, वहाँ तक, उस समय तक या पर्यंत ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — अन्न और जल ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — दूसरा, अलग, भिन्न, पृथक ; सिवाय । — अनुसंधान कामिनि (सम्) सं. — पर स्त्री । — अनुसंधान (सम्) सं. — शत्रुओं की सेना, अरि-सेना । — अनुसंधान (सम्) वि. — बहुतायत में एक । — अनुसंधान (सम्) वि. — दो में एक । — अनुसंधान (सम्) अ. — दूसरी जगह, दूसरा स्थान ।
 अनुसंधान (सम्) अ. — प्रकारान्तर, दूसरे ढंग से, भूल से । — अनुसंधान ज्ञान (सम्) सं. — झूठा ज्ञान ।
 अनुसंधान, अनुसंधान (सम्) सं. — दूसरों से पोषित, कौशल ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — विलक्षण, असाधारण ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — जो न्याय न हो, अनुपयुक्त, अनुचित, अयोग्य ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — समूचा, पूरा ।

अनुसंधान (सम्) सं. — दूसरों की बात एक ; अलंकार ।
 अनुसंधान (सम्) अ. — परस्पर, आपस में । सं. — गाढ़ी मित्रता । — अनुसंधान (सम्) वि. — आपस का सहारा, एक दूसरे की अपेक्षा । — अनुसंधान (सम्) सं. — परस्पर अत्यंत प्रेम । — अनुसंधान (सम्) सं. — परस्पर संभाषण, प्रेम-पूर्ण संलाप । — अनुसंधान (सम्) सं. — प्रगाढ़ प्रेम ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — परंपरा ; कुल, वंश, संबंध ; कविता में शब्दों की संगति या योजना जिससे अर्थ ग्रहण किया जा सके ; सार, निचोड़ ; न्याय में कार्य-कारण संबंध । — अनुसंधान (सम्) सं. — संबंध और विरोध, विरोध संबंध. नियम और अपवाद ।
 अनुसंधान (सम्) क्रि. — मिला, संबंध जोड़, अन्वय कर ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — अर्थ के अनुसार । — अनुसंधान नाम (सम्) सं. — सार्थक नाम धारी ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — खोज, तलाश, शोध, अनुसंधान ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — कमी, उतार, घटाव, अपमान, निरादर ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — बुराई, द्वेष, द्रोह, हानि । — अनुसंधान (सम्) सं. — बुरा आदमी, हानि पहुँचानेवाला ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — अपयश, बदनामी ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — अपकार, कृतघ्नता, बुराई, द्रोह ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — कचा ; अपरिणत ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — दे. अनुसंधान ।
 अनुसंधान (सम्) वि. — वीता, छूटा ।
 अनुसंधान (सम्) सं. — दुर्दशा, नरक ।

असंगम अपगम (सम्) सं.—प्रस्थान, वियोग, मृत्यु ।

असङ्गल अपघन (सम्) सं.—शरीर के अवयव, देह, शरीर ।

असङ्गल अपघात (सम्) सं.—हत्या, हिंसा ; धोखा, प्रवंचना ; विश्वासघात ।

असङ्गल अपचय (सम्) सं.—संग्रह, संकलन ; अवनति, हास ।

असङ्गल अपचार (सम्) सं.—गलत काम-दुष्कर्म, अपराध ।

असङ्गल अपजय (सम्) सं.—पराजय, हार ।

असङ्गल अपलीक (सम्) सं.—जिसकी पत्नी न हो, विधुर ।

असङ्गल अपत्य, असङ्गल अपत्यक (सम्) सं.—संतान, शिशु ।

असङ्गल अपथ्य, (सम्) वि.—अयोग्य, अहित, असंबद्ध । सं.—हानिकर या अहितकर खाना ।

असङ्गल अपदान (सम्) सं.—सत्कार ; उदारता ; पूर्व-चरित्र ; सदाचार ।

असङ्गल अपदेश, असङ्गल अपदेशे (सम्) सं.—दुर्दशा, बुरी स्थिति, दुर्भाग्य ।

असङ्गल अपदेश (सम्) सं.—बहाना ; चिह्न, निशान ; यश ; स्थान ; धोखा, छल ; शौक ।

असङ्गल अपद्वार (सम्) सं.—बगल का दरवाजा ।

असङ्गल अपधैर्य (सम्) सं.—भीरुता, अधैर्य, अविश्वास ।

असङ्गल अपध्यान (सम्) सं.—दुश्चिन्ता, बुरा विचार ।

असङ्गल अपनंबिके, असङ्गल अपनंबिके, असङ्गल अपनंबिके (क) सं.—अविश्वास, संशय, संदेह ।

असङ्गल अपनिंदे (सम्) सं.—कुत्रचन, गाली, अपमान ।

असङ्गल अपनीत (सम्) वि.—विगत, वीता, छूटा ।

असङ्गल अपप्रयोग (सम्) सं.—अशुद्ध प्रयोग, बुरी रीति का उपयोग ।

असङ्गल अपभ्रंश (सम्) सं.—पतन, गिराव ; अशुद्ध भाषा ।

असङ्गल अपमान (सम्) सं.—अगौरव, निरादर, बेइज्जती ।

असङ्गल अपमृति, असङ्गल अपमृत्यु (सम्) सं.—आकस्मिक मृत्यु, कुमृत्यु, कुसमय का मरण ।

असङ्गल अपयश, असङ्गल अपयशस्सु (सम्) सं.—दे. असङ्गल ।

असङ्गल अपर (सम्) वि.—जो पर या दूसरा न हो, पहला, ; पिछला ; दूसरा अन्य, और, भिन्न ; अपकृष्ट, नीचा ।—

असङ्गल क्रिये (सम्) सं.—मृत व्यक्ति के लिए किया जानेवाला क्रिया-कर्म ।

असङ्गल अपरंजि (क) सं.—खालिस सोना, शुद्ध हेम ।

असङ्गल अपरपक्ष (सम्) सं.—विरुद्ध पक्ष ; कृष्ण पक्ष ।

असङ्गल अपररात्रि (सम्) सं.—रात का पिछला पहर ।

असङ्गल अपरवार्धि (सम्) सं.—पश्चिम समुद्र ।

असङ्गल अपराजित (सम्) वि.—जो हारा न हो, अजेय । सं.—शिव ; विष्णु ; जैन यति ।

असङ्गल अपराजिते (सम्) सं.—दुर्गा ।

असङ्गल अपराध (सम्) गलती, दोष ।—

असङ्गल अपराधि (सम्) सं.—पापी, दोषी, अन्यायी ।

असङ्गल अपरांत (सम्) सं.—पश्चिमी सरहद ।

असङ्गल अपराह्न (सम्) सं.—अपराह्न, दिन का शेष भाग, तीसरा पहर ।

असङ्गल अपरिमित (सम्) वि.—परिमाणहीन, असंख्य, सीमाहीन ।

असङ्गल अपरूप (सम्) वि.—कभी दिखाई पड़नेवाला, जो अधिक प्रचलित नहीं ; विकृत रूप ।

असङ्गल अपरोक्ष (सम्) अ.—प्रत्यक्ष, आँखों के सामने ।—असङ्गल ज्ञान (सम्) सं.—आत्मज्ञान, मोक्ष-ज्ञान ।

असङ्गल अपर्णा, असङ्गल अपर्णे (सम्) सं.—पार्वती ।

असङ्गल अपलाप (सम्) सं.—छिपाव, दुराव, किसी बात को छिपाना, तिरस्कार, सत्य को छिपाना ।—असङ्गल इसु (सम्) क्रि.—किसी बात को कहकर उसे छिपा, तिरस्कार कर ।

असङ्गल अपवर्ग (सम्) सं.—मोक्ष ; दान, भेंट, पुरस्कार ; अपवाद, विशेष नियम ।

असङ्गल अपवर्तेन (सम्) सं.—उलट-फेर, वंचना, बुरा चालचलन ।

असङ्गल अपवाद (सम्) सं.—कलंक, दोष, निंदा, दूषण, तिरस्कार । ; आज्ञा, अनुमति ।

असङ्गल अपवारण (सम्) सं.—छिपाव, ढकाव ; रोक ; अंतर्धान ; व्यवधान ।

असङ्गल अपवित्र (सम्) वि.—अशुद्ध, गंदा ।—असङ्गल ते (सम्) सं.—अशुद्धि, गंदगी ।

असङ्गल अपव्यय (सम्) सं.—निरर्थक व्यय, फिजूल खर्च ।

असङ्गल अपशकुन (सम्) सं.—अशुभ शकुन, बुरी सूचना ।

असङ्गल अपशब्द (सम्) सं.—अशुद्ध शब्द, दूषित शब्द ; कुवाच्य, गाली ; असंबद्ध प्रलाप ; अपानवायु ।

असङ्गल अपसरण, असङ्गल अवसरण (सम्) सं.—हटना, पीछे लौटना, दूर जाना ।

असङ्गल अपसर्प (सम्) सं.—गुप्तचर, जासूस, भेदिता ।

असङ्गल अपसव्य (सम्) सं.—दाहिना, दक्षिण ; उलटा ।

असङ्गल अपसाक्ष्य (सम्) सं.—झूठा, साक्ष्य ; न दीखनेवाली आँखें ।

असङ्गल असिद्धांश (सम्) सं.—अशुद्ध निर्णय, अशुद्ध तत्व ।

असंख्ये न अपस्नान (सम्) सं.— क्रिया-कर्म के बाद क्रिया जानेवाला स्नान ।

असंख्ये अपस्मार (सम्) सं.— विस्मृति ; मूर्च्छा रोग ; एक संचारी भाव ।

असंख्ये अपस्वर (सम्) सं.— वह ध्वनि जो ठीक प्रकार से नहीं मिलती ; विरुद्ध वचन ।

असंख्ये अपहत. (सम्) वि.— विनष्ट, दूर किया हुआ, छूटा हुआ ।

असंख्ये अपहरण, असंख्ये अपहार (सम्) सं.— चोरी ; लूट ; छिपाव । असंख्ये अपहरिसु (सम्) क्रि.— चोरी कर, लूट-मार कर ।

असंख्ये अपहारतूर्य (सम्) सं.— युद्ध रोकने की सूचना देनेवाला वाद्य (बाजा) ।

असंख्ये अपहास, असंख्ये अपहास्य (सम्) सं.— हँसी, मज़ाक, निंदा, दूसरों को देखकर हँसना, छेड़ना ।

असंख्ये अपहव, असंख्ये अपह्वति (सम्) सं.— छिपाव, दुःख, 'अपह्वति' — एक अलंकार ।

असंख्ये अपांसुले (सम्) सं.— निर्मल या पवित्र स्त्री, पतिव्रता ।

असंख्ये अपांग (सम्) सं.— बायीं आँख ; विकलांग ।

असंख्ये अपादान (सम्) सं.— हटाना, अलगाव, पृथक्ता ।

असंख्ये अपान (सम्) सं.— पाँच प्राणों में एक, गुदा ।

असंख्ये अपामार्ग (सम्) सं.— विचड़ा ।

असंख्ये अपाय (सम्) वि.— खतरा, हानि, चोट ; मरण ।

असंख्ये अपार (सम्) वि.— बहुत अधिक, सीमारहित ।

असंख्ये अपार्थ (सम्) वि.— अर्थहीन, निरर्थक, बुरे अर्थ का, झूठा अर्थ ।

असंख्ये अपावृत (सम्) वि.— खुला ; ढका हुआ ।

असंख्ये अपाश्रय (सम्) सं.— आश्रय-हीन ; बाड़ ।

असंख्ये अपासंग (सम्) सं.— तरकस ; तूणीर ।

असंख्ये अपि (सम्) अ.— फिर भी, तथापि ; समीप ।

असंख्ये अपिगे, असंख्ये अपिगे (क) सं.— संयोजन, मिलने की क्रिया, पैबंद, दूटे पदार्थों को जोड़ने या ठीक करने की क्रिया ।

असंख्ये अपिधान (सम्) सं.— ढकन, ओढ़नी ।

असंख्ये अपुत्र (सम्) वि.— जिसका पुत्र या बेटा न हो ।

असंख्ये अपुरूप (तद्) वि.— अपरूप (तत्) । दे. असंख्ये ।

असंख्ये अपूप (सम्) सं.— पक्व अन्न ; अपुआ, मालपुआ, अँदरसा, दोसा ।

असंख्ये अपूर्व (सम्) वि.— जो पहले न रहा हो, नया ; विलक्षण, असाधारण । असंख्ये दर्शन (सम्) सं.— ऐसा दर्शन जो पहले न हुआ हो, नया दर्शन । — असंख्ये भूत (सम्) वि.— जो पहले कभी न हुआ हो ।

असंख्ये अपेक्षे (सम्) इच्छा, अभिलाषा । — असंख्ये इसु (सम्) क्रि.— इच्छा कर, अभिलाषा कर ।

असंख्ये अपेय (सम्) वि.— जो पीने योग्य नहीं (शराब आदि) । — असंख्ये पान (सम्) सं.— शराब आदि पीना ।

असंख्ये अपोंगंड (क) सं.— बालक, बच्चा ; भीरु, डरपोक ।

असंख्ये अपोह (सम्) सं.— वितर्क, चिंतन, संदेह-निवारण ।

असंख्ये अप्य (क) सं.— पिता ; यह शब्द पुरुषों के नामों के अंत में भी लिगता है, जैसे— असंख्ये लिंगप्य, असंख्ये दोग्गप्य ।

असंख्ये अप्ये चिक्र—छोटा, असंख्ये दोङ्ग-बड़ा, शब्दों के संयोग से इसके ये रूप बनते हैं—

असंख्ये + अप्य = असंख्ये चिक्रप्य—पिता का छोटा भाई (काका) ; असंख्ये + अप्य = असंख्ये दोङ्गप्य—पिता का बड़ा भाई (ताऊ) । हिन्दी में जैसे 'भाई' का प्रयोग होता है, वैसे कन्नड में 'अस्य' (अथवा अस्य) का प्रयोग होता

है, जैसे — अस्य नोडप्य—देखो भाई ! 'से बड़ा' के अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है, तुलना करते समय कहा जाता— अस्य अस्य इदु अदर अप्य—यह उससे बड़ा है । (यह उत्कर्ष बोधक भी है) ।

अस्य अप्य (क) सं.— चावल का दोसा । अस्य प्रेयप्य—एक प्रकार का मीठा दोसा (अँदरसा) । छोटे बच्चे ऐसी खाने की चीजों को अस्य अप्य कहते हैं ।

अस्य अप्य (क) कृ.— 'अग्य' आगु 'हो' क्रिया से अस्य अप्य—होनेवाला रूप बनता है । उदा.— अस्य अप्य क्यो अप्य अप्य पुष्पविलदे काय अप्य अत्ति— फूल के बिना (कच्चा) फल होनेवाला गूलर (अर्थात् गूलर का फल जो फूल के बिना फलता है) । अस्य अप्य सुदि प्रियवप्य नुदि—प्रिय होनेवाली (बात) बोलो (ऐसा बोलो जो दूसरों को प्रिय हो) ।

अस्य अप्य, अस्य अप, अस्य अप्यप्य, अस्य अप्या, अस्य अप्यो (क) वि. बो.— ओह ! अहा !

अस्य अप्यट, अस्य अप्यट (क) वि.— शुद्ध, अच्छा, निर्मल, जिसमें मिलावट न हो ।

अस्य अप्यट्टे (क) वि.— समतल । सं.— समतल भूमि या वस्तु ।

अस्य अप्यड, अस्य अप्यड (क) सं.— पापड । अस्य अप्यणे (तद्) — आज्ञापन (तत्) ।

आज्ञा, अनुज्ञा, हुक्म । अस्य अप्यणे अस्य अप्यणे एदरे बायिगे बंदिदे — झूठ बोलने के लिए आज्ञा क्या है, मुँह में जो आता है वही (कह.) ।

अस्य अप्यति (तद्) — अपांपति (तत्) । ससुद्र, वरुण ।

अस्य अप्यन (तद्)—अर्पण (तत्) । कर, लगान, भाड़ा, किराया ।

अस्य अप्यंत (क) वि.— संभावित । अस्य अप्यंते (क) अ.— जैसे, समान, सदृश, तरह ।

अक्षरानुसारं अप्ययिसु (क) क्रि.— आलिंगन कर, छाती से लगा ।
 अक्षरानुसारं अप्ययिसु, अक्षरानुसारं अप्ययिसु (क) क्रि.— पटक, ऊपर से नीचे फेंक ।
 अक्षरानुसारं अप्ययिसु, अक्षरानुसारं अप्ययिसु (क) सं.— आलिंगन, मिलन । — अक्षरानुसारं इत्यु (क) क्रि.— आलिंगन कर । अक्षरानुसारं गेय (क) क्रि.— आलिंगन कर, स्वीकार कर ।
 अक्षरानुसारं अप्ययिसु (क) क्रि.— आलिंगन कर ।
 अक्षरानुसारं अप्रकाश (सम्) सं.— जो प्रकाश में न आया हो, जो चमकदार न हो । — अक्षरानुसारं इत (सम्) वि.— जिसका प्रकाशन न हुआ हो, अप्रसिद्ध ।
 अक्षरानुसारं अप्रगल्भ (सम्) वि.— असाहसी, अप्रौढ, लजीला, अज्ञानी ।
 अक्षरानुसारं अप्रति, अक्षरानुसारं अप्रतिम (सम्) वि.— जिसकी तुलना न हो सके, बेजोड़, अद्वितीय, असमान ।
 अक्षरानुसारं अप्रतिभ (सम्) वि.— प्रतिभाहीन ; उदास, सुस्त ; लजाशील ।
 अक्षरानुसारं अप्रतिमान (सम्) वि.— दे. अक्षरानुसारं ।
 अक्षरानुसारं अप्रतिरथ (सम्) सं.— अद्वितीय योद्धा, बेजोड़ वीर ।
 अक्षरानुसारं अप्रतिरूप (सम्) वि.— जिसके समान रूपवाला कोई न हो, अद्वितीय, अप्रतिम ।
 अक्षरानुसारं अप्रतिष्ठे (सम्) सं.— अपयश, कलंक, दोष, क्षुद्र गुण ।
 अक्षरानुसारं अप्रतीति (सम्) सं.— अप्रसिद्ध, अपख्याति ।
 अक्षरानुसारं अप्रत्यक्ष, अक्षरानुसारं अप्रत्याय (सम्) वि.— अदृष्ट, अगोचर, अज्ञात ।
 अक्षरानुसारं अप्रधान (सम्) वि.— अमुख्य, गौण ।
 अक्षरानुसारं अप्रबुद्ध (सम्) वि.— अज्ञानी, नासमझ, मूर्ख, बेवकूफ ।
 अक्षरानुसारं अप्रमाण (सम्) सं.— झूठ, असीम, अपरिमाण ; आधार रहित ।

अक्षरानुसारं अप्रमेय (सम्) वि.— जो नापा न जा सके, असीम, गहन ।
 अक्षरानुसारं अप्रयोजक (सम्) वि.— निरूपयोगी, निरर्थक, बेकार ।
 अक्षरानुसारं अप्रसिद्ध (सम्) वि.— अज्ञात, अप्रकाशित, तुच्छ ।
 अक्षरानुसारं अप्रस्तुत (सम्) वि.— असंगत, प्रसंग विरुद्ध, अप्रधान, असंबद्ध, पृथक, विजातीय । — अक्षरानुसारं प्रशंस (सम्) सं.— एक अलंकार ।
 अक्षरानुसारं अप्रामाणिक (सम्) वि., सं.— जो प्रामाणिक या विश्वास योग्य न हो, अविश्वस्त, ऊट पटांग ।
 अक्षरानुसारं अप्रिय (सम्) वि.— अरुचिकर, नापसंद, तिरस्कृत । सं.— शत्रु, वैरी ।
 अक्षरानुसारं अप्रसरस्, अक्षरानुसारं अप्रसरसि, अक्षरानुसारं अप्रसरे (सम्) सं.— देवांगना, सुरलोक की नर्तकी ।
 अक्षरानुसारं अफल (सम्) वि.— फलरहित, बंध्या, मरुभूमि । — अक्षरानुसारं आकांक्षी (सम्) वि.— फल की इच्छा न करनेवाला, निस्वार्थी ।
 अक्षरानुसारं अफीमु (अ. दे.) सं.— अफीम । इस शब्द के अन्य रूप— अक्षरानुसारं अपिनि, अक्षरानुसारं अफिनि, अक्षरानुसारं अफिसु, अक्षरानुसारं अफु, अक्षरानुसारं अफिनि, अक्षरानुसारं अफीमु (व्या. भा.) ।
 अक्षरानुसारं अब, अक्षरानुसारं अबब, (क) प्र.— वि. बो. प्र. हा ! हा ! ऐ !
 अक्षरानुसारं अबकारि, अक्षरानुसारं अबुकारि, अक्षरानुसारं अब्कारि (अ. दे.) सं.— आबकारी (फ़ारसी) । शराब आदि मादक वस्तुओं के उत्पादन और विक्रय पर लगाया जानेवाला कर ।
 अक्षरानुसारं अबद्ध (सम्) वि.— बुद्ध, मूर्ख, बेवकूफ । सं.— (क ?) झूठ । — अक्षरानुसारं गार (वि.)— झूठ बोलनेवाला । — अक्षरानुसारं साक्षि सं.— झूठा साक्ष्य ।
 अक्षरानुसारं अबल (सम्) वि.— बलहीन, निर्बल, अशक्त । — अक्षरानुसारं अबले (सम्) सं.— स्त्री ।

अक्षरानुसारं अबाध (सम्) वि.— बैरोकटोक, स्वतंत्र ।
 अक्षरानुसारं अबुज (तद्) सं.— अबज (तत्) ; कमल ।
 अक्षरानुसारं अबुदि (तद्) सं.— अबधि (तत्) ; समुद्र ।
 अक्षरानुसारं अबुध, अक्षरानुसारं अबोध, अक्षरानुसारं अबुद्ध (सम्) सं.— नासमझ, मूर्ख, बेवकूफ ।
 अक्षरानुसारं अबज (सम्) सं.— कमल ; चंद्र ; शंख ; रत्न । — अक्षरानुसारं आकर (सम्) सं.— गेरावत, सरोवर । — अक्षरानुसारं गर्भ (सम्) सं.— ब्रह्मा ; विष्णु । — अक्षरानुसारं ज (सम्) सं.— ब्रह्मा । — अक्षरानुसारं बंधु, अक्षरानुसारं बांधव (सम्) सं.— सूर्य । — अक्षरानुसारं भवांड (सम्) सं.— ब्रह्माण्ड — अक्षरानुसारं वासिनि (सम्) सं.— लक्ष्मी । — अक्षरानुसारं वाहन (सम्) सं.— शिव । — अक्षरानुसारं वैरि (सम्) सं.— चंद्र । — अक्षरानुसारं शर (सम्) सं.— मन्मथ, कामदेव ।
 अक्षरानुसारं अब्जिनि (सम्) सं.— कमलिनी, कमल का सरोवर ।
 अक्षरानुसारं अब्जासन (सम्) सं.— ब्रह्मा । अक्षरानुसारं अब्जासने—लक्ष्मी ।
 अक्षरानुसारं अब्जोदर (सम्) सं.— विष्णु ।
 अक्षरानुसारं अब्जोद्भव (सम्) सं.— ब्रह्मा ।
 अक्षरानुसारं अबद्ध (सम्) सं.— जलद, बादल, मेघ ; संवत्, वर्ष । — अक्षरानुसारं वाहन (सम्) सं.— शिव । — अक्षरानुसारं सार (सम्) सं.— कर्पूर विशेष ।
 अक्षरानुसारं अबधि (सम्) सं.— समुद्र ; ताल ; सरोवर, जलाशय, झील ; विशुद्धज्ञान ; कभी सात और कभी दो की संख्या का संकेत । अक्षरानुसारं ज (सम्) चंद्रमा । — अक्षरानुसारं सार (सम्) सं.— रत्न विशेष ।
 अक्षरानुसारं अबधिनवनीत (सम्) सं.— चंद्रमा ।
 अक्षरानुसारं अबधिप (सम्) सं.— वरुणदेव, के देवता ।
 अक्षरानुसारं अबधिशयन, अक्षरानुसारं अबधि शायि (सम्) सं.— विष्णु ।

अब्ज अन्व, अब्ज अन्वा, अब्ज अब्ज अन्व
(क) वि.बो.—अहा! हा! हा! ऐ!

१. अब्ज अन्व (क) सं.—गर्जन, उच्च ध्वनि, बुलंद आवाज़, बाजों की ध्वनि, शोरगुल. चिल्लाहट । — अब्ज इसु (क) क्रि. — गर्जन कर, शोर मचा; इच्छा कर।

२. अब्ज अन्व (क) सं.—इच्छा; उत्कंठा, लालसा।

अब्ज अन्व (क) सं.—दे. अब्ज १.

अब्ज अन्व (क) सं.—जलप्रपात।

अब्ज अन्व (क) सं.—माता; विधवा।

अब्ज अन्व (क) सं.—अभ्यास (वत्)।

अब्ज अन्व (क) सं.—ब्राह्मण

के अयोग्य कर्म। अवध्य, पापकार्य।

वि.बो., जैसे — हाय! हाय! ओह!

अरे!

अब्ज अन्व (क) सं.—एक पौधा
Grewia microcos.

अब्ज अन्व (अ. दे.) सं.—अब्ज आबु—
आवरु (फारसी); मर्यादा, गौरव।

अब्ज अन्व (क) सं.—जो भक्त नहीं,

भक्तिहीन, शठ, अविश्वास पात्र। — अब्ज अन्व

अभक्ति (क) सं.—भक्ति का अभाव,
अविश्वास।

अब्ज अन्व (क) वि.—निडर, सुरक्षित,

सं.—रक्षा, रक्षण, वचन। — अब्ज अन्व प्रदान

(क) सं.—किसी को भय से मुक्त करने

की प्रतिज्ञा या वचन। — अब्ज अन्व हस्त (क) सं.—

आशीर्वाद का हाथ, रक्षा करने का

हाथ।

अब्ज अन्व (क) वि.—जो रक्षा

करता हो, जो अभय देता हो।

अब्ज अन्व (क) सं.—अजन्मा;

शिव, भगवान; अभागा; जो जैन न हो।

अब्ज अन्व (क) वि.—अयोग्य,

नालायक, अपात्र।

अब्ज अन्व (क) वि.—कमी, न्यूनता,

अनस्तित्व।

अब्ज अन्व (क) अ.—उपसर्ग जो संज्ञावाची

और क्रियावाची शब्दों में लगाया जाता है।

ओर, तरफ, पर, ऊपर, पक्ष में, विपक्ष में,
छिड़कना, अधिक, अतिरिक्त, आसपास अर्थ
का यह द्योतक है। विशेषणों और ऐसे
संज्ञावाची शब्दों में, जो क्रिया से नहीं बने
हैं, जब यह लगाया जाता है तब अर्थ होता
है—घनिष्टता, सामीप्य, उत्कृष्टता, प्रत्यक्ष,
एक के बाद एक, पृथक-पृथक।

अब्ज अन्व अभिव्ये, अब्ज अन्व अभिव्या (क) सं.—नाम, प्रसिद्धि, कीर्ति।

अब्ज अन्व अभिगमन (क) सं.—भेंट,
सामने जाना, समीप जाना।

अब्ज अन्व अभिघात (क) सं.—मार, प्रहार,
ताड़न, आक्रमण, विघ्न, हानि। — अब्ज
(क) सं.—शत्रु, वैरी; आघात करने
वाला।

अब्ज अन्व अभिघार (क) सं.—घी। —
अब्ज अन्व (क) क्रि.—घी ढालना।

अब्ज अन्व अभिचर (क) सं.—सेवक, चाकर
अनुचर।

अब्ज अन्व अभिचार (क) सं.—दूसरों
को हानि पहुँचाने की क्रिया; अविश्वास;
जादू, इंद्रजाल।

अब्ज अन्व अभिजन (क) सं.—कुटुंब,
जाति, वंश; जन्मस्थान, पैतृक स्थान;
कीर्ति, प्रसिद्धि; सत्कुल, सत्कुल
प्रसूत; पंडित, नीतिमान।

अब्ज अन्व अभिजात (क) वि.—कुलीन,
श्रेष्ठ, उत्तम, शिष्ट; मधुर, सुंदर;
शुद्ध; गुणवान, विद्वान, पंडित।

अब्ज अन्व अभिजित्, अब्ज अन्व अभिजित्तु
(क) सं.—विष्णु का नाम; नक्षत्र
विशेष; मध्याह्न; चंद्रमा की पत्नी का
नाम; विजय-सुहृत् । — अब्ज अन्व (क) सं.—

मध्याह्न का सुहृत्, शुभ समय।

अब्ज अन्व अभिज्ञ (क) सं.—पंडित, विद्वान,
विज्ञ।

अब्ज अन्व अभिज्ञान (क) सं.—सृष्टि,
चिह्न, निशान; ज्ञान, अनुभव।

अब्ज अन्व अभिधान (क) सं.—नाम;
भाषण, कथन, निरूपण; शब्दकोश;
कीर्ति; प्रकाश।

अब्ज अन्व अभिधे (क) सं.—ध्वनि, नाद;
अभिधा शब्दशक्ति।

अब्ज अन्व अभिधेय (क) सं.—नाम।

अब्ज अन्व अभिनंदन (क) सं.—धन्यवाद,
शुक्रिया।

अब्ज अन्व अभिनय (क) सं.—हृदय के
भाव को प्रकट करनेवाली क्रिया; नाटक का
खेल, स्वांग, नकल।

अब्ज अन्व अभिनव (क) वि.—नया, नूतन,
नवीन।

अब्ज अन्व अभिनिवेश (क) सं.—अनु-
रक्ति, लीनता; दृढ़ प्रतिज्ञ, कृतसंकल्प;
ममता, प्रेम।

अब्ज अन्व अभिनीत (क) वि.—समीप लाया
हुआ, अभिनय किया हुआ, (नाटक) खेला
हुआ, अलंकृति।

अब्ज अन्व अभिन्न (क) वि.—अखण्ड, अटूट,
अपृथक, एकमय।

अब्ज अन्व अभिप्राय (क) सं.—आशय,
मत, राय, उद्देश्य, ज्ञान।

अब्ज अन्व अभिभव (क) सं.—हार,
अपजय; अपमान, तिरस्कार; वृद्धि।

अब्ज अन्व अभिभावि (क) सं.—विजयी,
लोकोत्तर।

अब्ज अन्व अभिभू (क) क्रि.—पराजित हो,
हार जा।

अब्ज अन्व अभिभूत (क) वि.—पराजित,
अपमानित, तुच्छ।

अब्ज अन्व अभिमत (क) सं.—सम्मति,
स्वीकृति; आशय; अभिलाषा।

अब्ज अन्व अभिमंत्रण (क) सं.—
निमंत्रण, स्वागत; जादू टोना।

अब्ज अन्व अभिमान (क) सं.—आत्म-
गौरव, दर्प, अहंकार, गर्व; प्रीति, प्रेम;
चोट, घाव, दुःख।

अब्ज अन्व अभिमुख (क) अ.—सामने,
आगे, सम्मुख, ओर, तरफ; छूना।

अभ्र, अभ्र

अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— आक्रमण, चढ़ाई; परिश्रम, मेहनत; झगड़ा; अशुद्ध सिद्धान्त; दूषण, निंदा, शिकायत।
 — अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— आक्रमण करनेवाला, दोषी ठहरानेवाला।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.—संपूर्ण रक्षण, सर्वविध रक्षण।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— परम सौंदर्य, परम कांति।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.—सुंदर, मनोहर, आह्लादकर, रम्य, प्रिय।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— अभिलाषा; चाह, इच्छा, पसंदगी; आसक्ति।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— इच्छित, वांछित।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— इच्छा, कामना, आकांक्षा, मनोरथ; लालच, लोभ; कंजूसी; प्रेम, प्रीति।
 अभ्र, अभ्र (सम्) क्रि.— धोखा दे।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— अभिवंदन, अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— प्रणाम, नमस्कार, गौरव-प्रदर्शन।
 अभ्र, अभ्र (सम्) क्रि.— भली भौति वर्णन कर।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— प्रणाम, नमस्कार, वंदना।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— अधिकता, वृद्धि; जय, जीत।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— प्रकट, स्पष्ट, न्यंजित, विदित। — अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— प्रकटीकरण, प्रकाशन।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— शाप; झूठ; झलजाम, निंदा।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— कर्ज, उधार, ऋण; हार, पराजय; शाप; कसम; मिलन, एकता; निंदा, तिरस्कार।

अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— अभिपेक; शुद्धीकरण; यज्ञ-स्नान, धार्मिक स्नान; प्रक्षालन; बलिकर्म।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— अभिपेक किया हुआ, भीगा हुआ, राजतिलक किया हुआ।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— जल स्नान, छिड़काव; राजतिलक।
 अभ्र, अभ्र (सम्) दे.— अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— प्रगाढ़ प्रेम, श्रेष्ठता।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— मिलन, समूह; धोखा, कपट, षड्यंत्र।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— समीपगमन, मिलन, प्रेमियों के मिलने का संकेतस्थान।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— नायिका, जो संकेतस्थान पर अपने प्रिय से मिलने स्वयं जाती है या उसे बुलाती है।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— आघात, घाव, चोट।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— आक्रमण, हमला; युद्ध की तैयारी; कैद करना; लूट-खसोट; हथियार लगाना, हथियार लेना; प्रयत्न।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— कथित, कहा हुआ, घोषित।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— निडर, निर्भय।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— अभिलाषी, उत्सुक; कामुक, विलासी; निडर, निर्भय।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— प्रतिमुखावलोकन, उस तरफ देखने की क्रिया।
 अभ्र, अभ्र (सम्) क्रि.— उस तरफ देख।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— अभिलषित, इच्छित, वांछित।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— अहीर, ग्वाला।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— धैर्यशाली, निडर, दृढ़।

अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— दे. अभ्र, अभ्र सं.— अभिलाषा, इच्छा, पसंद, प्रेम।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— अस्तित्वहीन, झूठा। — अभ्र पूर्व (सम्) वि.— जो पहले कभी नहीं था, बेजोड़।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— भेद या अंतर का अभाव, एक-सा, एक रूप।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— अखंडित, अटूट, जो वेधा न जा सके।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— उबटन, तैल-स्नान।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— भीतर का, मध्य, बीच, परिचित।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— आदर-सत्कार, पूजा।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— अत्यादरणीय, मान्य।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— भोजन; भोजन करना, खाना खाना।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— सीखा हुआ, पढ़ा हुआ, कंठस्थ किया हुआ; अभ्यास किया हुआ।
 अभ्र, अभ्र (सम्) वि.— बहुत भारी या बोझिल।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— अतिथि, मेहमान, पाहुना। वि.— आया हुआ, उपस्थित।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— उपयोग, रीति, पद्धति, कसरत, कवायद, अध्ययन।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— उदय; प्रस्थान, किसी के सम्मान के लिए आसन छोड़कर खड़े होने की क्रिया, सादर स्वागत।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— वृद्धि, उन्नति, प्रगति; आनंद, सुख।
 अभ्र, अभ्र (सम्) सं.— मेघ, बादल; आकाश, वातावरण; आँख, लोचन; अभ्रक, अश्म (चमकदार पत्थर); जूड़ा स्त्रियों के बंधे वाल। — अभ्र केश (सम्) सं.— शिव। — अभ्र पथ (सम्) सं.— आकाश।

अभ्रक (सम्) सं.— अभ्रक, अबरक, धातु विशेष ।

अभ्रकंश अभ्रकष (सम्) वि.— गगनचुंबी । सं.— हवा, पर्वत ।

अभ्रग (सम्) सं.— चिड़िया, पक्षी ।

अभ्रगंगे (सम्) सं.— भकाशंगंगा ।

अभ्रमणि (सम्) सं.— सूर्य ।

अभ्रमातंग (सम्) सं.— पुरावत ।— अभ्रसु (सम्) सं.— पुरावत की हथिनी ।

अम (क) अ.— वि. बो. प्र. जो आश्चर्य, आनंद और दुःख सूचक है । हा ! अरे ! बाप रे ! ओह ! हाय ! हाय !

अम (क) सं.— अमृ अम—माता । स्त्रियों के नामों के साथ प्रायः यह शब्द लगता है, जैसे—अमृ चैत्रम् अथवा अमृ चैत्रम्, अमृ ह्रीन्म अथवा अमृ ह्रीन्म ।

अमकिरे, अमकिरे, अमं गुर अमं गुर (क) सं.— असगंध, औषध के लिए उपयोगी पौधा, अश्वगंधा ।

अमकु, अमकु (क) क्रि.— दबा, मसल, कुचल ।

अमकळ (क) सं.— कोलाहल, हलचल (तामिल शब्द—अमं कळअमकळ-समर-भूमि) ।

अमंगल (सम्) वि.— अशुभ, बुरा, खराब ।— अं ले (सम्) सं.— विधवा ।

अमग (क) सं.— उपयुक्त समय ; अवसर, मौका ; त्योहार ; मौसम, विशेष कर फलों के पकने का मौसम ।

अमगु (क) क्रि.— दे. अमं (मै. प्र.) ।

अमञ्जु (क) क्रि.— दे. अमं (मै. प्र.) ।

अमटे (तद्) सं.— अम्बछा । दे. अमं ।

अमटि, अमठि (तद्) सं.— दे. अमं ।

अमत् (सम्) सं.— समय, बीमारी, मृत्यु ।

अमत्र (सम्) सं.— बर्तन, वासन, अर्घ्यपात्र ।

अमत्सर (सम्) वि.— उदार, ईर्ष्या-रहित ।

अमंद (सम्) वि.— क्रियाशील, प्रतिभावान् ; उग्र, तेज, दृढ़, तीव्र ; अधिक, बड़ा, महत्वयुक्त ।

अमर, अमरु (क) क्रि.— मिल, एक रूप हो, हिल-मिल जा, गाढ़ा हो जा, संयुक्त हो, जुड़ जा ; उत्पन्न हो, उठ ; उपयुक्त हो, सुंदर हो ; प्रकट हो, प्रसिद्ध हो ; चढ़, उन्नत हो ; धिर, धैर, सता ; आलिंगन कर, कसकर बांध ।

अमर (सम्) सं.— अविनाशी, देवता ; सोना, चाँदी ; एक लता (coceulus cordifolius), अमरवेल ; अमरकोश (व्या.भा.) ।

अमरकुज (सम्) सं.— सुरलोक का वृक्ष, कल्पवृक्ष ।

अमरकोश (सम्) सं.— अमरसिंह कृत कोश ग्रंथ ।

अमरगुरु (सम्) सं.— देवताओं के गुरु. बृहस्पति ।

अमरत्व (सम्) सं.— अमरता, अविनश्वरता ; मोक्ष, मुक्ति ।

अमरधेनु (सम्) सं.— कामधेनु ।

अमरनागेंद्र (सम्) सं.— पुरावत ।

अमरपति, अमरेंद्र (सम्) सं.— इंद्र ।

अमरमुनि (सम्) सं.— नारद ।

अमराचल (सम्) सं.— अमरादि, अमरादि-देवगिरि, मेरुपर्वत ।

अमरारि (सम्) सं.— देवताओं के शत्रु, राक्षस ।

अमरावति (सम्) सं.— देव-नगरी, इंद्र की राजधानी ।

अमरी (सम्) सं.— देवता की स्त्री, देवी ; इंद्र की नगरी ।

अमरिके (क) सं.— अमरिके-उपयुक्तता, संगति, लगाव, संयोजन, मेल (मिलना) ।

अमरिसु (क) क्रि.— मिलना, बांधना ; दबाना, नाकों दम करना ; तैयार करना, बनाना ।

अमरु (क) क्रि.— दे. अमं ।

अमर्य (सम्) सं.— जो मर्त्य नहीं, देवता ।— अमर्य (सम्) सं.— आकाश ।

अमरु (क) क्रि.— (अमरु + अमृ) कस कर बांध, आलिंगन कर ।

अमरु (तद्) सं.— अमृत (तद्) । इसका अन्य रूप—अमरु अवर्तु । देवताओं का पानीय ; दूध ; मोक्ष ।

अमरुगदिर (तद्) सं.— (अमरु + इर) — अमृत किरणोंवाला, चंद्रमा ।

अमरुण (क) सं.— अमृत पीनेवाले, देवता ।

अमरुवैष्ण (क) सं.— मोक्षांगना, पार्वती ।

अमर्य (सम्) सं.— असहनशीलता, ईर्ष्या, हठ, क्रोध, कोप ; एक संचारी भाव ।— अमर्य (सम्) वि.— उग्र, प्रचण्ड, क्रुद्ध, रूठा ।

अमल (सम्) वि.— निर्मल, शुद्ध, स्वच्छ, सफेद, प्रकाशमान, चमकदार ।

अमलिन (सम्) सं.— मलरहित, निष्कलंक, स्वच्छ, पवित्र ।

अमल, अमल (अ. दे.) सं.— मद, नशा ; समय ; अधिकार, शासन ।— अमल (अ. दे.) सं.— दे. अमल ।

अमल (क) सं.— जोड़ी, युगल, दो, युग्म ।

अमल (क) सं.— जुड़वे बच्चे ; अश्विनीकुमार ।

अमलदलेवक्कि (क) सं.— साथ-साथ रहनेवाले चकवा-चकवी ।

अमा (सम्) अ.—साथ, समीप, पास।
 सं.—अमावास्या; आत्मा, जीव।
 अमात्य (सम्) सं.—मंत्री, सचिव,
 समीप रहनेवाला।
 अमानत (अ. दे.) सं.—अमानत
 (हि.), धरोहर, थाती।
 अमानस्य (सम्) सं.—पीड़ा,
 दुःख।
 अमानुष (सम्) वि.—जो मनुष्य
 के योग्य नहीं, पाशविक, राक्षस के योग्य,
 अस्यंत क्रूर।
 अमान्य (सम्) वि.—जो मानने
 योग्य न हो, अनादरणीय।
 अमावसु (सम्) सं.—पुरुरवा
 और उर्वशी का पुत्र।
 अमावस्ये, अमावस्ये अमावास्या
 (सम्) सं.—कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि,
 अमावस। अमासे (तद्)।
 अमित (सम्) वि.—अपरिमित, बहुत,
 अधिक, विपुल, असीम, असंख्य। —१३
 गति (सम्) वि.—असीम वेगवाला।
 सं.—एक जैन लेखक।
 अमित्र (सम्) सं.—शत्रु, वैरी।
 अमीक्षे (सम्) सं.—पिघला अथवा
 विशुद्ध मक्खन।
 अमीर (अ. दे.) सं.—बड़ा आदमी,
 सरदार। अमीर (हि.)।
 अमुक्त (सम्) वि.—जो मुक्त न हो,
 बंधा हुआ, परतंत्र, अस्वतंत्र।
 अमुत्र (सम्) अ.—वहाँ, परलोक में।
 अमूर्त (सम्) वि.—रूपहीन,
 आकारहीन, निराकार, अदृष्ट।
 अमूल्य (सम्) वि.—वैशकीमत,
 अत्यधिक मूल्यवान, श्रेष्ठतम।
 अमृत (सम्) सं.—दे. असु। —
 ३८ कर, ३८० किरण, ३९३ द्युति, ४३६
 रश्मि (सम्) सं.—चंद्रमा। —३८०१०
 तरंगिणी (सम्) सं.—चंद्रिका, चाँदनी।
 अमृतांगने (सम्) सं.—मोक्षां-
 गना; पार्वती।

अमृतांध, अमृतांधस अमृ-
 तांधस, अमृताशन (सम्)
 सं.—जिसका भोजन अमृत हो, देवता,
 अविनाशी।
 अमृतान्न (सम्) सं.—अमृत सम
 रुचिकर भोजन।
 अमृतांशु (सम्) सं.—चंद्रमा।
 अम्रे (क) प्र.—नामधातुओं के साथ
 लगानेवाला प्रत्यय। उदा.—अम्रे
 अरियमे (अ० + अम्रे)—अज्ञान, नासमझी।
 अम्रेषु अम्रेषु (सम्) सं.—विष्टा, मल;
 अपशकुन; यज्ञ के अयोग्य।
 अम्रेषु अम्रेषु (सम्) वि.—असीम, अपार,
 अपरिमित। सं.—देवता।
 अम्रेषु अम्रेषु (सम्) वि.—अचूक,
 अव्यर्थ, सफल।
 अम्रेषु अम्रेषु (सम्) वि.—दे. अम्रेषु।
 अम्रेषु अम्रेषु (सम्) सं.—माता (अम्रे अम्रे-
 तेलुगु और तमिल)। स्त्रियों के नामों के अंत
 में अम्रे लगता है, जैसे—अम्रे लक्ष्म,
 सुभ्रम्रे सुव्रम्रे। आदर देने के लिए अम्रे
 का प्रयोग होता है, जैसे—अम्रे अम्रे
 कोडि अम्रे—दीजिए, माताजी! (हिन्दी में
 जैसे माताजी का प्रयोग स्त्रियों को आदर देने
 के लिए होता है, वैसे ही कन्नड में अम्रे का
 प्रयोग होता है।) अम्रे मन्सु, अम्रे
 मन्सु, मन्सु मन्सु, अम्रे मन्सु अम्रे
 मनस्सु व्रेलद हागे, मगळ मनस्सु कलिन
 हागे—माता का मन गुड के समान, पुत्री का
 मन पत्थर के समान (कह.)। अम्रे के साथ
 नवरु नवरु लगाकर अधिक आदर की व्यंजना
 की जाती है। अम्रे नवरु प्रायसमर्थे
 अगुवाग अय्यनवरु प्रायसमर्थे आगुवाग
 अय्यनवरु प्रायसमर्थे आगुवाग अय्यनवरु
 कैलास—
 मालकिन जत्र तक सयानी होगी तत्र तक
 मालिक कैलास सिधारंगे (वृद्ध विवाह पर
 व्यंग्य) —(कह.)। 'देवी' 'भगवती' के
 लिए अम्रे नवरु का प्रयोग होता है, जैसे—

अम्रे नवरु प्रायसमर्थे आगुवाग अय्यनवरु प्रसाद—देवी
 जी (अथवा भगवती) का प्रसाद।
 अम्रे अम्रे (क) सं.—स्त्रियों को
 संबोधित करते समय आदर के लिए अम्रे
 का प्रयोग होता है, जैसे—अम्रे अम्रे
 इल्ल अम्रे—नहीं, माता जी। स्त्रियों के
 नामों के अंत में यह शब्द लगता है, जैसे—
 अम्रे देवीरम्रे। छोटे बच्चों की
 भाषा में अम्रे का अर्थ—माता का स्तन
 या चूचुक है।
 अम्रे अम्रे (क) सं.—दे. अम्रे (अंतिम अर्थ);
 व्यावहारिक भाषा में (विशेषकर अनपढ़ लोग)
 अम्रे के बदले अम्रे का संबोधन के रूप में
 प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ 'री' होता है,
 जैसे—अम्रे अम्रे अम्रे अम्रे अम्रे अम्रे
 अम्रे—चल री जल्दी-जल्दी।
 अम्रे अम्रे (क) क्रि.—सक, (शक्य), समर्थ
 हो, संभव हो (अक. क्रि.); साहस कर;
 स्वीकृति दे; इच्छा कर, अभिलाषा कर,
 चाह।
 अम्रे अम्रे (क) सं.—इच्छा, चाह।
 अम्रे अम्रे (तद्) सं.—आत्रातक (तद्);
 आमाड़ा।
 अम्रे अम्रे (सम्) वि.—खटा। सं.—खटाई;
 खटा दही; सिरका, आसव।
 अम्रे अम्रे (सम्) वि.—जो कुम्हलाया
 या मुरझाया न हो, स्वच्छ, पवित्र, चमकीला।
 अम्रे अम्रे (सम्) सं.—इमली का
 वृक्ष।
 अम्रे अय् (क) वि.—(लिखते समय अम्रे
 के बदले अ भी लिख सकते हैं।) पाँच की
 संख्या का संकेत चिह्न। अम्रे (अम्रे +
 अम्रे) अय्यम्रे—पाँच सिरवाला, अम्रे
 अय्यम्रे—पाँच सौवाँ। उपसर्ग,
 जिसका अर्थ है—समीप जाना, पास जाना,
 पहुँचना। अम्रे (अम्रे + अम्रे)
 अय्यम्रे—पास आकर। पुरुषों को संबोधित
 करते समय अम्रे अय्, अय्य अय्य, अय्य
 अय्य का प्रयोग होता है जिसका अर्थ है—

'ಜಿ', 'ಶ್ರೀಮನ್', 'ಮಹಾಶಯ', 'ಮಹೋದಯ' |
ಅಧಿಕ ಖಾದರ ಸೂಚಕ ಹೇ — ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯಗಲ್
ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯಗೋಲು ಶಬ್ದ ; ಇನಕಾ ಪ್ರಯೋಗ
ಪ್ರಾಯಃ ಜಂಗಮ (ವಿರಕ್ತ), ಗುರು ಔರ ಅಧ್ಯಾಪಕ ಕೆ
ಲಿಫ್ ಹೊತಾ ಹೇ | ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯಂ ಅಯ್ಯಂ
ಫಂಕೆ ನೇನೇ ಬರದರೆ ಚಂದ ! ಅಭ್ಯಗಲೆ ಅಭ್ಯಗಲೆ
ಅಭ್ಯದರ ಅಂಕೆ ನೇವೆ ಬರೆದರೆ ಚಂದ !—ಗುರುಜಿ,
ಗುರುಜಿ, ಪೌಚ ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ ಖಾಪ ಹೀ ಲಿಖೆಂ ತೊ
ಅಚ್ಚಾ (ಕಹ.) | ಮಧ್ಯಮ ಪುರುಷ ಏಕ ವಚನ ಕಾ
ತ್ರೋಧಕ ಪ್ರತ್ಯಯ ಜಿಸಕಾ ಪ್ರಯೋಗ ಭೃತಕಾಲ ಮೆ
ಹೊತಾ ಹೇ | ಸುಡಿದಯ್ ಪುಡಿಡಯ್—(ತು) ಬೊಲಾ,
ಪುಡಿಡಯ್ ಪಾಡಿಡಯ್—ತು ನೆ ಗಾಯಾ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ತ. — ದೇ. ಅಯ್ಯಂ. ಸಂಬೋಧನ ಮೆ
ಅಯ್ಯಂ ರು (ಅಯ್ಯಂ + ಅನು) ಕಾ ಪ್ರಯೋಗ ಹೊತಾ
ಹೇ | ವಿಶೇಷಕರ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೊಂ ಕೊ ಏಸಾ ಸಂಬೋಧಿತ
ಕ್ರಿಯಾ ಜಾತಾ ಹೇ | ತದಾ. — ಅಯ್ಯಂ ರು ಅದಾಂ
ಅಭ್ಯನೂರು ಇದಾರಾ ? — ಮಾಲಿಕ ಹೇ ಕ್ಯಾ ?
(ವ್ಯಾ. ಭಾ.) |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ. — ಜಾನೆವಾಲಾ, ಗಮನ
ಕರನೆವಾಲಾ | ಸಂ. — ಗಮನ, ಪೂರ್ವಜನ್ಮ ಕಾ ಶುಭ
ಕರ್ಮ, ಸೌಭಾಗ್ಯ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ. — ನಿಷ್ಪ್ರಯತ,
ಸುಗಮತಾ ಸೇ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಗಮನ ; ರಾಸ್ತಾ,
ಮಾರ್ಗ ; ಸ್ಥಾನ, ಖಾವಾಸಸ್ಥಾನ ; ವ್ಯುಹ ಕಾ ಮಾರ್ಗ ;
ದಕ್ಷಿಣಾಯನ, ತತ್ತರಾಯನ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. —
ಲೋಹಾ, ಇಸ್ಪಾತ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಚುಂಕ
ಪತ್ಥರ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ. — ವಿನಾ ಮೈಗಿ
ಹುಡುಗೆ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ವಿ. — ಅಯ್ಯಂ—ಪೌಚ ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ
ಕಾ ಸೂಚಕ | ತದಾ. — ಅಯ್ಯಂ ತು ಅಭ್ಯವತ್ತು
ಅಭ್ಯವಾ ಅಯ್ಯವತ್ತು ಅಭ್ಯವತ್ತು—ಪಚಾಸ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ವಿ. — ಪೌಚ ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ |
ಅಯ್ಯಂ ಅಂದ್ರಿಯ ಅಭ್ಯಿಡು ಇಂದ್ರಿಯ — ಪೌಚ
ಇಂದ್ರಿಯ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ವಿ. — ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ
(ಕ) ಕ್ರಿ. — ಜಾ, ಗಮನ ಕರ, ಮಿಲ, ಸಂಯುಕ್ತ
ಹೊ, ಪುಡುಕ, ಪಾ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಹಿ.) ; ಆಗೊ, ಭವಿಷ್ಯ ಮೆ |
ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಆ. ದೇ.) ಸಂ. — ಆಗುಡಾ
(ಹಿ.) ; ಆಗೊ, ಭವಿಷ್ಯ ಮೆ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಆ. ದೇ.) ಸಂ. — ಏವ (ಹಿ.) ;
ದೋಷ, ಅವಗುಣ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಆ. ದೇ.) ಸಂ. — ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯಿಡು, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯಿಡು, ಅಯ್ಯಂ
ಅಭ್ಯಿಡು (ಕ) ಸಂ. — ಅನುಪಯುಕ್ತ, ಅನುಮಾದ, ಪಾಗಲ-
ಪನ, ಸನಕ | — ಸಯ್ಯಂ ಪಯಿಡು (ಕ) ಸಂ. —
ಸನಕೀ ಸ್ವಭಾವ ಕಾ ಮನುಷ್ಯ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಆ. ದೇ.) ಸಂ. — ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯಿಡು, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯಿಡು (ಕ) ಅ. —
ತನಾ | ದೇ. ಅಭ್ಯಂ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ. — ಅನುಪಯುಕ್ತ,
ಅನುಚಿತ, ಅಯ್ಯಂ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ. — ಜೊ ಮಿಲಾ ನ ಹೊ,
ಅಸಂಯುಕ್ತ, ಅಸಂಬದ್ಧ | ಸಂ. — ದಸ ಹಜಾರ ಕೀ
ಸಂಖ್ಯಾ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸೀತಾ
(ಜೊ ಗರ್ಮಾಶಯ ಸೇ ಉತ್ಪನ್ನ ನ ಹುಡುಗೆ ಹೊ) |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ. — ಪೂರ್ಣತಃ
ಲೋಹೇ ಯಾ ಇಸ್ಪಾತ ಸೇ ಬನಾಯಾ ಹುಡುಗೆ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಬಾಣ,
ತೀರ ; ಶೂಲಿಕಾ, ವರ್ಣ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — ಮೇಘ, ಬಾದಲ ;
ಹಿಮ, ಕೊಹರಾ | — ಅಯ್ಯಂ ವೇಡ (ಕ) ಸಂ. —
ಹಿಮಾಲಯ | — ಅಯ್ಯಂ ಕುವರಿ, ಅಯ್ಯಂ ಅಗ್ನಿನಿ
(ಕ) ಸಂ. — ಹಿಮವಾನ ಕೀ ವೇಡಿ ಪಾರ್ವತೀ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯತನ, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯತನ (ಕ) ಸಂ. —
ಆರೈ ಯಾ ಜಂಗಮ ಬನನೆ ಕೀ ಸ್ಥಿತಿ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಆ, ಪುಡುಕ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಕ್ರಿ. ರು. — ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ = ಅಯ್ಯಂ
ಇದೇ—ಹೇ (ನ. ಲಿ.) |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಕ್ರಿ. ರು. — ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ = ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ (ಕ)
ಕ್ರಿ. ರು. — ಹೇ (ಪು. ಲಿ.), ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ, ಅಯ್ಯಂ
ಅಭ್ಯದೇ—ಹೇ (ಸ್ತ್ರೀ. ಲಿ.) |
ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಪುಡುಕ, ಮಿಲಾ,
ಪ್ರಾಸ ಕರಾ (ಪ್ರೆ.) |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ದೇ. ಅಯ್ಯಂ ; ಪೌಚ
ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ ಕಾ ಸೂಚಕ | ಅಯ್ಯಂ ನಂದಿ ಅಭ್ಯದೇ
ಮೆಂದಿ—ಪೌಚ ಲೋಗ, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ—
ಪೌಚವೊಂ, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ—ಪೌಚ-ಛ : |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯದೇ (ಕ)
ಸಂ. — ಗಮನ, ಜಾನೆ, ಆನೇ ಕೀ ಕ್ರಿಯಾ (ಮೆ. ಪ್ರ.) |
ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಅ. — ಅಚ್ಚಿ ತರಹ, ಡೀಕ |
ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — ಸೌಭಾಗ್ಯ, ಸುಹಾಗ | —
ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — ಮಂಗಲ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. —
ಪೌಚ ಲೋಗ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — (ಅಜ್ಜ ?) ಪ್ರಭು, ಸ್ವಾಮೀ,
ಮಾಲಿಕ ; ಪಿತಾ ; ಧಾದಾ, ನಾನಾ ; ಜಂಗಮ
(ಲಿಂಗಾಯತ) ; ಅಧ್ಯಾಪಯ, ಅಧ್ಯಾಪಕ, ಗುರು ;
ಸಂಬೋಧನ— ಜಿ, ಮಹೋದಯ ಆದಿ ಕೆ ಅರ್ಥ ಮೆ |
— ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — ಸ್ವಾಮಿತ್ವ, ಪ್ರಭುತಾ,
ಅಧಿಕಾರ ; ಬಾಲ-ಜಂಗಮೊಂ ಕೊ ದಿ ಜಾನೆವಾಲಿ
ದೀಕ್ಷಾ, ಜಂಗಮ-ಅಪನಯನ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ತಮಿಲ ?) ಸಂ. — ಸ್ಮಾರ್ತ
ಬ್ರಾಹ್ಮಣೊಂ ಕೆ ಲಿಫ್ ಪ್ರಯುಕ್ತ ಹೊನೆವಾಲಾ ಶಬ್ದ |
ಪುರುಷೊಂ ಕೆ ನಾಮೊಂ ಕೆ ಸಾಥ ಯಹ ಶಬ್ದ ಲಗತಾ ಹೇ,
ಜೇಸೆ—ಸ್ವಾಮಿನಾಥ ಅಭ್ಯ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ತಮಿಲ ?) ಸಂ. —
ಶ್ರೀವೈಷ್ಣವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೊಂ ಕೆ ಲಿಫ್ ಪ್ರಯುಕ್ತ ಹೊನೆವಾಲಾ
ಶಬ್ದ | ಪುರುಷೊಂ ಕೆ ನಾಮೊಂ ಕೆ ಸಾಥ ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯ
ಶಬ್ದ ಲಗತಾ ಹೇ, ಜೇಸೆ—ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಅಭ್ಯಂಗಾರ್ |
ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯ, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯ, ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯ,
ಅಯ್ಯಂ ಅಭ್ಯ (ಕ) ವಿ. ಬೊ. — ಹಾಯ ! ಹಾಯ !,
ಹಾ ! ಹಾ ! ಅಹೊ ! (ಕರೂಪಾ-ಸೂಚಕ) |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. —
ವತನ, ವಡಾ, ಕುಂಭ, ವರ್ಣಂಜಿತ ಕುಂಭ ಜೊ ಪ್ರಾಯಃ
ವಿವಾಹ ಕೆ ಸಮಯ ಅಪಯೋಗ ಮೆ ಲಾಯಾ ಜಾತಾ ಹೇ |
ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — ಆಂಚೊಂ ಕೀ ವಿಮಾರಿ
ಜಿಸಕೆ ಕಾರಣ ನೇಣಿ ಕೀ ಪಲಕ ಅಧಿಕ ಫೂಲ
ಜಾತೀ ಹೇ |

ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — ಪಚಾಸ ಕೀ
ಸಂಖ್ಯಾ |
ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — ಪೌಚ ಲೋಗ |
ಅಯ್ಯ ಅಭ್ಯ (ಕ) ಸಂ. — ಸಿಂಹ, ಶೇರ |

अयसले (क) अ. — नहीं क्या ? शबाश !

अर् (क) प्र. — अरु अरु—बहुवचन सूचक प्रत्यय । अरु देवि (ए. व.)— अरु देवियर्, अरु देवियरु (व. व.)—देवी-देवियाँ । अरु माडिदरु अरु माडिदरु (व. व.)—(उन्होंने या इन्होंने) किया ।

अर् (क) क्रि. — डूब, निमग्न हो ।

अर (क) सं. — अरु अरु = पीस, रगड़, रेत (क्रि. से इसकी व्युत्पत्ति) — रेती-नथी, लोहे का आयुध विशेष जिससे रेता जाता है ।

अर (सम्) सं. — पहिये की नाभि और नेमि के बीच की लकड़ी ; धर्म ; यम ; आधा ; अकाल ।

अर (क) सं. — अरु अरु = राजा का संक्षिप्त रूप । वि. — जानेवाला, वेगवान । कृत् प्रत्यय ; उदा. — अरु (अरु + अरु) एत्तर—ऊँचाई ।

अरक (क) सं. — चावल को पानी में डालकर कंकड़ और धूल को निकालने की क्रिया । — अरकअरु अरकचट्टि—बड़ा मुँहवाला बर्तन जिससे यह काम किया जाता है ।

अरक (तद्) सं. — अर्क (तद्) ; वाष्पीकरण, वाष्पीकरण करनेवाली वस्तु ।

अरकु, अरकु, अरकु, अरकु (तद्) सं. — अर्क (तद् ?) । तीव्र मदिरा, ताड़ी, रस-सार ; चाँदी का मुलम्मा ।

अरकुडि (क) सं. — राजवंश ।

अरके, अरके (क) सं. — आधा, टुकड़ा, भाग, अपूर्ण, विलकुल छोटा पदार्थ ; खोज, तलाश ।

अरगिळि (क) सं. — तोतों में श्रेष्ठ तोता ।

अरगीळ (क) सं. — धुरी ।

अरगु, अरगु अरगु, अरगु अरगु (क) सं. — छोर, किनारा, अंत (कपड़े आदि का) ; पड़ोस, सामीप्य ।

अरगु (क) क्रि. — नष्ट हो ; जीर्ण हो, हज़म हो । सं. — लाख, लाक्षा ।

अरगुलि (क) सं. — धर्मद्रोही ; शिकारी ।

अरगुवर (क) सं. — राजकुमार ; धर्मराज ।

अरचने (तद्) सं. — अर्चना (तद्) ; पूजा ।

अरचु (क) क्रि. — चिला, पुकार, उच्च स्वर से बोल, शोर मचा, हल्ला कर ; रगड़ रेत (प्रे.) ।

अरजस् (सम्) सं. — रजोधर्म रहित ; देवयानी ।

अरटे (क) सं. = अरु अरु—गपशप (प्रा.) ।

अरण (क) सं. — विवाह में दिये जानेवाले उपहार, भेंट ; दान, पुरस्कार ।

अरणि (सम्) सं. — छेकुर की लकड़ी जिसको रगड़ने से आग निकलती है, यज्ञ के लिए आग निकालने की लकड़ी ।

अरणे (क) सं. — गिरगिट ।

अरण्य (सम्) सं. — जंगल, वन । अरण्य रोदन (सम्) सं. — निष्फल रोना, निष्फल प्रयत्न ।

अरण्यक, अरण्यक (सम्) सं. — वेद के ब्राह्मणों के अंतर्गत एक भाग जो वन में बैठकर रचे गये थे और जिसको वन में ही जाकर पढ़ना चाहिए ।

अरत (सम्) वि. — प्रेमहीन, उपेक्षित ।

अरत (क) सं. — पीसने, कूटने की क्रिया पिसाई, कुटाई ।

अरति (सम्) सं. — प्रेमहीनता, दुःख, अनृत्ति, विकलता ।

अरदळ, अरदळ अरदळ. अरदळ अरिदळ (तद्) सं. — हरिताल (तद्) ; हरताल, एक औषध विशेष ।

अरदु. अरदु अरदु (क) कृ. — पीसकर, रगड़कर । अरु अरु = पीस, रगड़ (क्रि.) ।

अरदु, अरिदु (क) वि. — असंभव, नामुमकिन ; कष्टसाध्य ; गहन ; विस्मयकर ; बड़ा, महान । कृ. — काटकर ; समझकर ।

अरिदुम, अरिदुम अरिजय (सम्) वि. — शत्रुओं को जीतनेवाला, विजयी ।

अरिपद (सम्) सं. — अरि समास ।

अरिपु (सम्) सं. — मित्र, दोस्त ।

अरिपु (क) क्रि. — समझा, बता, कह । सं. — समझ, ज्ञान ।

अरियमे, अरियमे अरिमिके (क) सं. — अज्ञान. नासमझी ।

अरिल् (क) सं. — नक्षत्र । — अरु अरु (क) सं. — नक्षत्र पथ, आकाशमार्ग ।

अरिवर्ग (सम्) सं. — शत्रुसेना । — अरिदुम अरिदुम (सम्) सं. — काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य ।

अरिविलि (क) वि. — अज्ञानी, मूर्ख । सं. — अज्ञान ।

अरिवु (क) सं. — समझ, ज्ञान ।

अरिवे (क) सं. — कपड़ा, वस्त्र ; एक पौधा *Amarantus oleraceus*.

अरिवोयुलु (क) सं. — शत्रुओं का आघात, प्रहार ; ज्ञान पर प्रहार या चोट ।

अरिष्ट (सम्) सं. — प्रारब्ध ; कौआ ; शाप ; छॉछ ; एक राक्षस ।

अरिष्टांश (सम्) सं. — दुष्ट नक्षत्र-भाग, बुरी ग्रह दशा ।

अरिसमास (सम्) सं. — संस्कृत और कन्नड के शब्दों के संयोग से बननेवाला एक समास ।

अरिसिण, अरिसिण अरिसिन (तद्) सं. — हरिद्रा (तद्) । हल्दी, पीला रंग ।

अरि (क) क्रि. — सूख जा, फट जा, टूट जा । सं. — छोर, किनारा, अंतिम भाग ।

अरु, अरु अरु (क) सं. — अर्हन्त, जैनयति, जिन ।

अरुधि (सम्) सं. — रुचिहीनता, अनिच्छा, घृणा ।

ಅರಂಜ ಅರಜ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಭಲಾ ಚಂಗಾ, ನೀರೋಗ;
 ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯ; ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ; ರಾವಣ ಕಾ ಸಾಥಿ |
 ಅರಂಜ ಅರಜ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸೂರ್ಯ ಕಾ ಸಾರಥಿ ;
 ಲಾಲ ರಂಗ ; ಧೂಲ ; ಕಿರಣ ; ಸೋನಾ, ಸ್ವರ್ಣ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರಂಜಾಂಜ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಲಾಲ ಪಾನಿ,
 ರಕ್ತ, ಲಹು |
 ಅರಂಜಂಜಂಜ ಅರಂಜೋದಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪ್ರಾತ:-
 ಕಾಲ, ಭೋರ |
 ಅರಂಜ ಅರುತ (ಕ) ವಿ.— ಸೂರ್ಯ, ರುಖಾ, ಶುಕ್ಲ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುತುಡ (ಸಮ್) ರಾಹು ; ಕರ್ಣಕಠೋರ
 ಧ್ವನಿ ; ಪಿಡಾ ಉಪ್ಪು ಕರನೇವಾಲಾ ಘವ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಧತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ವಶಿಷ್ಠ ಜಿ ಕಿ
 ಪತ್ನಿ |
 ಅರಂಜ ಅರುಪು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಸಮಜ್ಞಾ ; ಸಿಖಾ,
 ಪಡಾ, ಬತಾ |
 ಅರಂಜ ಅರುಮೆ (ಕ) ಸಂ.— ಪ್ರೇಮ, ಪ್ರೀತಿ, ತುಂಬನ ;
 ತರಲ ಭಾವ, ಲಡಕಪನ ಕಿ ಪ್ರಕೃತಿ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಮೋಗ (ಕ) ಸಂ.— ಪುಮುಖ,
 ಪಡಾನನ |
 ಅರಂಜ ಅರುವ, ಅರಂಜ ಅರವ, ಅರಂಜ ಅರುತು
 ಅರಂಜ ಅರುತು (ಕ) ಸಂ.— ತಮಿಲ | — ದೇಶ
 ದೇಶ (ಕ) ಸಂ.— ತಮಿಲ ಭಾಷಾ ಪ್ರದೇಶ | — ಭಾಷೆ
 ಭಾಷೆ (ಕ) ಸಂ.— ತಮಿಲ ಭಾಷಾ | — ಅರಂಜಂಜ
 ಅರವಗಿತ್ತಿ, ಅರಂಜಂಜ ಅರವಿತ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.—
 ತಮಿಲ ಭಾಷಿ ಸ್ತ್ರೀ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುವುಗೆ (ಕ) ಸಂ.— ಅರಿಷಡ್ವರಿ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುವಿಲ್ಲುಮೆ (ಕ) ಸಂ.— ಅಜ್ಞಾನ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಹು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಬತಾ, ಕಹ, ಸಮಜ್ಞಾ |
 ಸಂ.— ಜ್ಞಾನ, ಪ್ರಜ್ಞಾ, ಪ್ರಕಾಶ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಹು (ತಮಿಲ ?) ಸಂ.— ಪ್ರಸಾದ, ಕೃಪಾ,
 ದಯಾ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಪಿಸ, ರಗಡ, ಟುಕಡಾ ಕರ |
 ವಿ.— ಆಧಾ | ಸಂ.— ಚಡಾನ | — ಕಡಿ ಕಡಿ
 (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಆಧಾ ಕರ, ಟುಕಡಾ ಕರ, ರಗಡ,
 ಲೆಪನ ಕರ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರು (ಕ) ಪ್ರ.— ಸಂದಿಗ್ಧತಾ ಸೂಚಕ ಪ್ರತ್ಯಯ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರು ಬಂದರೆ—ವಹ (ಪು. ಲಿ.)
 ಭಾವೆ ತೊ |

ಅರಂಜಂಜ ಅರು (ಕ) ಸಂ.— ಹಿಚಕಿಚಾಹು, ಸಂದೆಹ ; ಏಕ
 ವೈಧಾ Grislea tomentosa, ಧಾತಕಿ ;
 ಪಿಲ್ಲಾ ಭಾಗ, ಸೇನಾ ಕಾ ಪಿಲ್ಲಾ ಭಾಗ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರು, ಅರಂಜಂಜ ಅರು (ಅ. ದೇ.) ಅ.— ಅರು ! ರೆ !
 ಹೆ !
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಗೇಲಸ (ಕ) ಸಂ.— ಆಧಾ-ಆಧಾ
 ಕಾಮ, ಅಪೂರ್ಣ ಕಾರ್ಯ | — ಅರು (ಕ) ಸಂ.— ಕಾಮ-
 ಚೋರ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುದಿಂಗಲು (ಕ) ಸಂ.— ಆಧಾ ಮಾಸ,
 ಪಂದ್ರಹ ದಿನ, ಪಕ್ಷ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುದಿಟ್ಟು (ಕ) ಸಂ.— ಅರ್ಧನಿಮಿಲಿತ ನೆತ್ರ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುದೇಲೆ, ಅರಂಜಂಜ ಅರುದೇಲೆ (ಕ) ಸಂ.—
 ಸೇನಾ ಕಾ ಪಿಲ್ಲಾ ಭಾಗ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಪೋರಿಕ (ಕ) ಸಂ.— ಅರ್ಧವ್ಯಾಪ್ತಿ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಬರ್ (ಕ) ವಿ.— ಕುಲ (ಲೋಗ) |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಮರುಳ್ (ಕ) ಸಂ.— ಆಧಾ ಪಾಗಲ-
 ಪನ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಮೆಯ್ (ಕ) ಸಂ.— ಅರ್ಧ ಶರೀರ | —
 ನೆಣ್ಣು ದ್ರೇಣ (ಕ) ಸಂ.— ಅರ್ಧನಾರೀಶ್ವರ, ಶಿವ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಯ್ಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಪಿಡಾ ಕರ,
 ಅನುಗಮನ ಕರ, ಮಾರ ಕರ ಭಗಾ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುವರಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಅಪೂರ್ಣ ಕರ,
 ಆಧೆ ಮೆ ಛೊಡ್ಡ ದೆ, ತಿರಸ್ಕಾರ ಕರ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುವಾನಿಸ (ಕ) ಸಂ.— ನರಸಿಂಹ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುವೆನೆಯ್ಯು (ಕ) ಸಂ.—
 ಅರ್ಧನಾರೀಶ್ವರ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುವೇರೆ (ಕ) ಸಂ.— ಅರ್ಧ ಚಂದ್ರ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಸೀಕಾರಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಆಧಾ ಜಲ
 ಜಾನಾ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಚಕ (ಸಮ್) ವಿ.— ರುಚಿಹೀನ,
 ಗಂದಾ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅರ್ಕವೃಕ್ಷ ; ಸೂರ್ಯ, ಕಿರಣ ;
 ಇಂದ್ರ ; ಸ್ಫಟಿಕ, ತಾಮ್ರ ; ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷ ; ಆಶ್ವರ್ಯ ;
 ಸಾರ, ನಿಚೊಡ್ಡ | — ಜ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಶಾನಿ,
 ಯಮ, ಕರ್ಣ, ಸುಗ್ರೀವ | — ಅರು (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ಭಾಕ ಕಾ ಪತ್ತಾ | — ಅರು ವಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ರವಿವಾರ, ಇತ್ತವಾರ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಕಾಡಮ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸ್ಫಟಿಕ, ಸೂರ್ಯ-
 ಕಾಂತ ಮಣಿ |

ಅರಂಜಂಜ ಅರುಕೆ (ಕ) ಸಂ.— ವಿಲಾಪ, ರೋದನ. ಕೂಡೆ ;
 ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಗಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದೇ. ಅರುಗಲ.
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಗಲ (ಕ) ಸಂ.— ಅಧಿಕತಾ. ವೃದ್ಧಿ,
 ವಿಪುಲತಾ ; ಏಕ ಜೈನ ಕವಿ ಕಾ ನಾಮ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಗಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮೌಲ್ಯ, ಕೀಮತ, ಮೂಲ್ಯ ;
 ಮೆಂಟ, ಸಸ್ತಾ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಗಲ (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಮೂಲ್ಯ | ಸಂ—
 ಪೂಜಾ ಕಿ ವಸ್ತು | — ಅರುಗಲ, ಪಾಠ (ಸಮ್)
 ಸಂ.— ಅತಿಥಿ ಕಾ ಸತ್ಕಾರ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪೂಜಾರಿ | — ಅರುಗಲ
 ಅರ್ಚನ, ಅರುಗಲ ಅರ್ಚನೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪೂಜಾ |
 ಅರಂಜಂಜ ಅರುಗಲ ಅರ್ಚನೀಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ಪೂಜಾ ಕೆ
 ಯೋಗ್ಯ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಚಿ, ಅರುಗಲ ಅರ್ಚಿಸ್ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ಪ್ರಕಾಶ, ಜ್ವಾಲಾ, ಕಾಂತಿ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಚಿರಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಸಿಕ್ಕೊಡ್ಡನಾ ;
 ಸಿಕ್ಕೊಡ್ಡನಾ, ಠಿಕ್ಕೊಡ್ಡನಾ ; ಲಗನಾ, ಮಿಲನಾ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಚು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಅವ್ಯಕ್ತ ಧ್ವನಿ ಕರನಾ ;
 ಜೋರ ಸೆ ಚಿಲ್ಲಾನಾ, ಹಲ್ಲಾ ಕರನಾ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಚೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪೂಜಾ, ಉಪಾಸನಾ ;
 ಮೂರ್ತಿ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಜನ, ಅರುಗಲ ಅರ್ಜನೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ಉಪಾರ್ಜನ, ಕಮಾಡೆ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಜಿ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.— ಅರ್ಜಿ, ಪ್ರಾರ್ಥನಾ ಪತ್ರ,
 ವಿನಯ-ಪತ್ರ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಜಿತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಕಮಾಡಾ ಹುಂಜಾ,
 ಉಪಾರ್ಜಿತ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಜಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ಕಮಾ, ಅರ್ಜನ
 ಕರ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಜುದಾರ, ಅರುಗಲ ಅರ್ಜಿದಾರ
 (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.— ಆವೇದಕ, ಪ್ರಾರ್ಥನಾ ಪತ್ರ ದೇನ-
 ವಾಲಾ |
 ಅರುಗಲ ಅರ್ಜುನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪಾಂಡವೊ ಮೆ ಏಕ,
 ಧರ್ಮರಾಜ ಕೆ ಛೊಡೆ ಭಾಡೆ ; ಕಾರ್ತೀವೀರ್ಯ ರಾಜಾ ; ಸಫೆದ
 ರಂಗ ; ಮೋರ, ಮಯೂರ ; ವೃಕ್ಷ ವಿಶೇಷ (Termin-
 alia Arjuna) ; ಚೌದಿ ; ಸೋನಾ, ಸುವರ್ಣ ;
 ಸ್ವಸ್ಥ ಮನುಷ್ಯ ; ಇಕಲೌತ ಪುತ್ರ | — ಅರುಗಲ
 ಅರ್ಜುನಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಗಾಯ ; ತುಗಲಖೋರ,
 ಫೂಹಡ್ಡ ಅದಮಿ ; ಅರ್ಜುನ ಕಾ ಪುತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮವಾಹನ |

अर्थ (क) वि.— वेगवान, गतिमान ।
 अर्थ (सम्) सं.— समुद्र । — अर्थ
 (सम्) सं.— चंद्रमा ।
 अर्थ (क) सं.— प्रीति, प्रेम, स्नेह ;
 इच्छा, कामना, चाह ; सुख, हर्ष, विनोद ।
 अर्थकार, अर्थकार (क)
 सं.— विट, विलासी, विनोद करनेवाला ।
 अर्थिके (सम्) सं.— बड़ी बहन (नाट्य
 साहित्य में) ।
 अर्थिग (सम्) सं.— पीड़ित व्यक्ति,
 संकट में पड़ा हुआ मनुष्य ; व्यापारी ।
 अर्थिसु (क) क्रि.— प्रेम या स्नेह कर;
 संतुष्ट हो, प्रसन्न हो ।
 अर्थिसु, (तद्) अर्थिसु (सम्)
 क्रि.— प्रार्थना कर, विनय कर, याचना कर,
 माँग ।
 अर्थु, अर्थु अर्थु, अर्थु अर्थु,
 अर्थु (क) कृ.— (अर्थु या अर्थु =
 समझ, धातु से) समझकर, जानकर ।
 अर्थ (सम्) सं.— याचना, माँग ;
 उद्देश्य, मिश्रण ; प्रयोजन, उपयोग ;
 कारण, हेतु ; पैसा, संपदा ; व्यापार, व्यवहार ;
 प्रार्थना, विनय ; प्रकार, रीति, विधि ;
 निषेध, मनाही ; जीव ; शब्दार्थ, शब्द-
 निरूपण ; वस्तु ; विष्णु का नाम । — अर्थ
 करि, अर्थ करि (सम्) वि.— उपयोगी,
 प्रयोजनकारी । — अर्थ दृक्, अर्थ दृश
 (सम्) सं.— न्यायाधीश । — अर्थ नाथ
 (सम्) सं.— कुबेर । — अर्थ नाथ सख
 सख (सम्) सं.— शिव । — अर्थ न्यास
 (सम्) सं.— ऊहा से अर्थ बतलाना ;
 अमानत । अर्थ वंत (सम्) सं.— धनवान ।
 — अर्थ व्यक्ति (सम्) सं.— अर्थ स्पष्ट
 करना, अर्थ की स्पष्टता । — अर्थ शास्त्र
 (सम्) सं.— अर्थशास्त्र (Economics) ।
 — अर्थ श्लेष (सम्) सं.— अलंकार
 विशेष ।
 अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र (सम्) सं.— संपर्कता,
 अर्थशास्त्र ।

अर्थ (सम्) अ.— याने, या,
 अथवा ; प्रसंगानुसार ।
 अर्थानुरूप (सम्) वि.— अर्थ
 के अनुसार ।
 अर्थानुरूप अर्थानुरूप, अर्थानुरूप अर्थानुरूप-
 न्यास (सम्) सं.— दूसरा प्रसंग, अर्थ-
 भेद ; एक अलंकार ।
 अर्थालंकार (सम्) सं.— काव्य
 में प्रयुक्त अर्थ से संबंधित अलंकार ।
 अर्थ (सम्) सं.— माँगनेवाला, याचक,
 इच्छुक, मिश्रक, सेवक, नौकर, अनुयायी ।
 अर्थ (सम्) वि.— उपयुक्त, ठीक,
 उचित ; धनवान ; बुद्धिमान ; गूढ़ार्थ
 प्रकाशक । सं.— लाल खड़ियां, गेरू ।
 अर्थ (सम्) सं.— पीड़ा, कष्ट, चिंता,
 व्याकुलता ।
 अर्थ (सम्) सं.— हत्या, वध, चोट ;
 याचना, माँग, भिक्षा । — अर्थ अर्थ
 (सम्) वि.— प्रार्थित, याचित ; घायल,
 हत ।
 अर्थ (सम्) वि.— आधा खण्ड, टुकड़ा ।
 — अर्थ गोल (सम्) सं.— भूमि का आधा
 भाग । — अर्थ चंद्र (सम्) सं.— चंद्रार्ध,
 अष्टमी का चौद ; गलहस्त ; अर्थ चंद्र आकार
 का बाण । — अर्थ अर्थ चंद्रप्रयोग
 (सम्) सं.— गला पकड़कर बाहर निकालने
 की क्रिया । — अर्थ नारीश्वर (सम्)
 सं.— महादेव, हर-गौरीरूप शिव ।
 अर्थ अर्ध (सम्) सं.— आधा शरीर ।
 — अर्थ (सम्) सं.— एक बीमारी ।
 अर्थ अर्ध (सम्) सं.— पत्नी ।
 अर्थ अर्ध (सम्) सं.— एक
 आयुध ।
 अर्थ अर्ध (सम्) सं.— अर्थ चंद्र ।
 अर्थ अर्ध (क) सं.— नखी, रेंती, पत्र परशु ।
 अर्थ अर्ध (सम्) सं.— भेंट, नज़र, त्याग ।
 अर्थ अर्ध (क) क्रि.— आलिंगन कर, छाती
 से लगा ।

अर्थ (क) सं.— निर्झर, जल प्रपात ;
 बांध, पुल ।
 अर्थिसु (क) क्रि.— चिला, हला कर,
 गर्जन कर ।
 अर्थ (सम्) सं.— गर्जन, भयानक ध्वनि,
 उच्च स्वर या नाद । क्रि.— गर्जन कर,
 सिंहनाद कर, चिला ।
 अर्थ (सम्) सं.— सांप ; सूजन,
 गुमड़ा ; दस करोड़ की संख्या ; बादल ।
 अर्थ (सम्) सं.— बालक, बच्चा ;
 किसी पशु का बच्चा ।
 अर्थ (क) सं.— आँसू
 की एक बीमारी ।
 अर्थ (सम्) सं.— वैश्य ।
 अर्थ (सम्) सं.— सूर्य ।
 अर्थ (सम्) सं.— वैश्य की
 पत्नी, वैश्य-स्त्री ।
 अर्थ (सम्) सं.—
 वैश्य ।
 अर्थ (क) सं.— मिट्टी—
 कष्ट, गष्ट (क) सं.— मिट्टी का
 श्रम ; मिट्टी ढोने का काम ।
 अर्थ (सम्) सं.— घोड़ा ; हीन, नीच ।
 अर्थ (सम्) वि.— नीच, हेय ।
 अर्थ (सम्) सं.— घोड़ी, कुटनी ।
 अर्थ (सम्) वि.— आधुनिक,
 नया ।
 अर्थ (सम्) सं.— पहाड़ी नदी, निर्झर ।
 अर्थ (क) क्रि.— फैल, व्याप्त हो,
 विस्तृत हो ।
 अर्थ (सम्) सं.— बवासीर रोग ।
 अर्थ (सम्) वि.— योग्य, उपयुक्त,
 ठीक, मूल्यवान ।
 अर्थ (सम्) वि.— आदर के योग्य ।
 सं.— जैन यति, बुद्ध ।
 अर्थ (सम्) सं.—
 योग्यता ।
 अर्थ (सम्) सं.—
 सं.— जिन ; बुद्ध ; योग्य व्यक्ति ।

अलिक अलिक

अलिक अलिक, अलिक अलिक (सम्) सं.—
माथा । — अक्ष (सम्) सं.— फालनेत्र
शिव । — कुंतले (सम्) सं.— भ्रमर
के समान अलकावली वाली स्त्री ।
अलिक (सम्) सं.— भ्रमरी, भ्रमरों
का समूह ।
अलिक, अलिक अलिक (सम्)
सं.— घर के द्वार के सामने का चबूतरा ।
अलिक (सम्) सं.— झूठ, असत्य ।
अलिक, अलिक (क) क्रि.—
दे. अलिक. (तमिलु - अलिक) ।
अलिक (क) क्रि.— हिल, चल, चंचल हो,
गमन कर, घूम, कंपित हो ; आघात कर ।
सं.— लहर; तरंग ; परदा ; कष्ट, संकट,
झंझट । — गै (क) क्रि.— तंग कर,
कष्ट दे ।
अलिक, अलिक (क) सं.— सैर,
घूम, घुमाव ।
अलिक (सम्) सं.— परलोक ।
अलिक (सम्) वि.— जो लौकिक
न हो ; पारलौकिक, असाधारण ।
अलिक (क) क्रि.— दे. अलिक.
अलिक (सम्) वि.— छोटा, क्षुद्र, तुच्छ,
हीन । — तनु (सम्) सं.— पतला
शरीरधारी ।
अलिक (क) अ. क्रि.— नहीं, न, निषेध
सूचक क्रियारूप । दे. अलिक. सं.— अदरक,
हरी सोंठ ।
अलिक (क) क्रि.— अस्वीकार कर,
तिरस्कार कर ; अमान्य कर ।
अलिक, अलिक (क) सं.—
हास्य, मजाक, विनोद ; हर्ष, प्रसन्नता ।
अलिक (क) सं.— एक वीरशैव संत
और श्रेष्ठ वचनकार ।
अलिक (क) सं.— वियोग, प्रेमी जनों से
बिछुड़ना ।
अलिक (क) सं.— तकलीफ, कष्ट, पीड़ा,
दर्द ।
अलिक (क) अ.— हठात्, अकस्मात्,
अचानक ।

अलिक (क) सं.— दे. अलिक.
अलिक (क) सं.— दे. अलिक.— कष्ट
काळग (क) सं.— प्रेम-कलह, झूठमूठ
का झगड़ा । — वोगु (क) क्रि.— टुकड़ा
कर, खण्ड कर, तोड़ ।
अलिक (क) सं.— वहाँ का मनुष्य,
उधर का आदमी ।
अलिक (क) सं.— धोबी ।
अलिक (क) क्रि.— जोड़, बांध, मिला,
लगा ; सी (सीना) । सं.— कंपनी, हिलने की
क्रिया ; घूम (घूमना) ।
अलिक, अलिक, अलिक (क) अलिक-
कलिक (क) वि.— चंचल, चपल, अस्थिर ;
तरंगयुक्त. जहाँ लहरें उठीं हों । सं.—
कोलाहल ; तरंगों की टकराहट ।
अलिक (सम्) उ.— दूर, नीचे, बुरा ; संकल्प,
विचार ; फैलाव, विस्तार ; अवज्ञा, अवहेला ;
अवलंब ; शोधन, निर्मलता ।
अलिक (क) क्रि.— सुन,
ध्यान दे ।
अलिक (सम्) सं.— स्थान, जगह ;
छुट्टी, फुरसत ; अवसर, मौका ; दूरी, अंतर ।
अलिक (सम्) वि.— विकीर्ण,
फैला, व्याप्त ।
अलिक, अलिक, अलिक (सम्) सं.— अवगुंठन
(सम्) सं.— बूँद, नकाब ; धिराव,
खिंचाव ; ओढ़ना ।
अलिक (सम्) सं.— असंतोष,
अपकार ।
अलिक, अलिक (सम्) वि.— जो खींचा
गया हो, आकृष्ट ।
अलिक (सम्) म.— फल हीन वृक्ष ;
मरुभूमि ।
अलिक (अ. दे.) सं.— तंगी, कष्ट,
विपदा, तिरस्कार ; साहस, अपघात ।
अलिक (सम्) वि.— तिरस्कृत,
घृणित, अमान्य ।
अलिक (सम्) वि.— समझा हुआ,
दूर हुआ ; जो अंतर्गत हुआ हो ।

अलिक (सम्) सं.— ज्ञान ; दुर्गति,
दुर्दशा ।
अलिक (क) क्रि.— भर, स्वीकार
कर ।
अलिक (क) क्रि.— डूब, मग्न
हो ; स्नान कर ।
अलिक, अलिक (सम्) सं.— डूबकी, स्नान,
समझ, ज्ञान, ग्रहण, स्वीकृति । — अलिक (सम्) क्रि.—
डूब, डूबकी ले, नीचे उतर ; समझ, जान ।
अलिक (सम्) सं.— बुरे गुण, दोष,
त्रुटि ; दुष्परिणाम ।
अलिक (सम्) सं.— दूर होना,
बिछोह ; बाधा, रोक, अड़चन ; अनावृष्टि,
बुरा ग्रह ; हाथी का समूह ; हाथी का माथा ;
शाप, दंड, सजा ।
अलिक (सम्) सं.— संगठन,
समूह, संग्रह ।
अलिक (सम्) सं.— ढकेलने,
दवाने या रगड़ने की क्रिया, हिलाना ;
संक्षोभ ।
अलिक (सम्) सं.— अपघात ;
कष्ट, पीड़ा, दर्द ।
अलिक, अलिक, अलिक, अलिक, अलिक,
अलिक, अलिक, अलिक, अलिक, अलिक,
अलिक, अलिक (क) क्रि.— गुप्त रख, छिपा ;
ढक ; दबा ; बंद कर ; कसकर बंध ।
अलिक (सम्) वि.— पुड़िया
या चूर्ण से लगा हुआ या पूर्ण ।
अलिक, अलिक (सम्) वि.— ढका हुआ,
बंद किया हुआ, भरा हुआ, पूर्ण ।
अलिक, अलिक (सम्) वि.— टूटा,
खंडित, विभजित, छेका हुआ, घेरा हुआ ;
मिला हुआ ।
अलिक (सम्) वि.— पृथक
करनेवाला, भेदकारी ।
अलिक (सम्) सं.— उपेक्षा, तिरस्कार ;
अपमान ।

अवतंस

अवतंस (सम्) सं.— हार, माला ; कान की बाली ; मुकुट, किरीट ।

अवतरण (सम्) सं.— स्नान के लिए नीचे (जल में) उतरने की क्रिया ; पार होना, उतरना ; उद्घरण ; प्रतिकृति ; अनुवाद, रूपांतर ।

अवतार (सम्) सं.— देवताओं का भूमि पर प्रादुर्भाव ; उतरने की क्रिया ; आडंबर ।

अवतारण (सम्) सं.— उतरने की क्रिया ; किसी भूत-प्रेत का आवेश ; पूजा, श्रृंगार ; अनुवाद ; भूमिका, उपोद्घात ।

अवतारिके (सम्) सं.— भूमिका, प्रस्तावना, उपोद्घात ।

अवतीर्ण (सम्) वि.— नीचे उतरा हुआ, अवतरित ।

अवते (तद्) सं.— अवस्था (तत्) — दुर्दशा ।

अवदशे (सत्) सं.— दुर्दशा, दुर्भाग्य । अवदात (सम्) वि.— शुद्ध, मनोहर ; सफेद, पीला ।

अवदान (सम्) क्रि.— खण्ड या टुकड़े करना । सं.— पवित्र कार्य, पवित्र साधना, महान कार्य ; टुकड़ा, भाग ।

अवद्य (सम्) वि.— अधम, पापी, निम्न ; गहिर, त्याग, कुत्सित ।

अवधिसु (सम्) क्रि.— ध्यान दे, सावधानी से सुन, विचार कर ।

अवधान (सम्) सं.— मनोयोग, सावधानी, संलग्नता ।

अवधारण, अवधारण, अवधारणे (सम्) सं.— निश्चय, निर्णय, प्रमाण सहित वचन ।

अवधारु (सम्) सं.— जागृति, ध्यान । — असु इत्तु (सम्) क्रि.— ध्यान दे, सहन कर ।

अवधि (सम्) सं.— सीमा, हद्द, पराकाष्ठा ; कालावधि, मीमांसा ; नियुक्ति ; भाग्य, किस्मत ; विभाग, खंड, जिला ; रंध, गड्ढा ; दुर्दैव, दुर्भाग्य, संकट ।

अवधीरण, अवधीरण अवधीरणा (सम्) सं.— तिरस्कार, निंदा । — असु इत्तु (सम्) क्रि.— तिरस्कार कर ।

अवधूत (सम्) सं.— विरक्त, त्यागी, संन्यासी ।

अवध्य (सम्) वि.— जो मारने योग्य नहीं, पवित्र ।

अवन (सम्) सं.— रक्षा, संरक्षण ।

अवनत (सम्) वि.— झुका हुआ, नमस्कृत ।

अवनति (सम्) सं.— हीन दशा, दुर्दशा ।

अवनद्ध, अवनद्ध, अवनद्ध (सम्) वि.— झुका हुआ, नमस्कृत ।

अवनि, अवनी (सम्) सं.— भूमि, पृथिवी ; नदी । — असु जात (सम्) सं.— वृक्ष, मंगल ग्रह । — असु जाते, असु जे (सम्) सं.— सीता । — असु धर (सम्) सं.— कुलपर्वत । — असु पति, असु पाल (सम्) सं.— राजा, नृपति । — असु रह (सम्) सं.— वृक्ष, पौधा । — असु सुर (सम्) सं.— भू देवता, ब्राह्मण ।

अवनु (क) सर्व.— वह (पु. लिं.) He.

अवध्य (सम्) वि.— जो वंध्या न हो । प्रशंसा के अयोग्य ; अचूक, दुष्ट ।

अवधुत, अवधुत, अवधुत (सम्) सं.— यज्ञ के अंत में दौप परिहारार्थ किया जानेवाला स्नान ।

अवधोष (सम्) सं.— जागृति, तैयारी ; ज्ञान ; न्याय-निर्णय ।

अवधुत (सम्) सं.— नाश, कुचलने की क्रिया ।

अवमान (सम्) सं.— अपमान ; बदनामी, वैद्विज्जती ।

अवयव (सम्) सं.— शरीर के अंग, अंग ।

अवयवि (सम्) सं.— पूर्ण शरीर धारी ; पूर्ण वस्तु ।

अवर (सम्) वि.— नीच, हेय, कनिष्ठ ; पिछला, पश्चात् का । — असु ज (सम्) सं.— छोटा भाई । — असु जे (सम्) सं.— छोटी बहन ।

अवरत (सम्) वि.— रुका हुआ । बंद हुआ । असु पीछे, पीछे की ओर, पिछला ।

अवरि (तद्) सं.— अमरी (तत्), एक अनाज ।

अवरिष्ठ (सम्) वि.— जो श्रेष्ठ न हो, छोटा, नीचा, हेय, क्षुद्र ।

अवरु (क) क्रि.— नखों से नीच, चुटकी काट या ले । — सर्व.— वे (पु. लिं.) और स्त्री. लिं.) (They).

अवरोध (क) सं.— रोक, अड़चन, बाधा ; अंतःपुर, रनिवास ।

अवरोह, अवरोह अवरोहण (सम्) सं.— नीचे उतरना. उतार ; बेल जो वृक्ष की जड़ से फुनगी तक लिपटी रहती है ; स्वर्ग, आकाश ; वट की डाली ; संगीत के सप्त स्वरों के उतार का क्रम ।

अवर्गीय (सम्) सं.— जो वर्गीय न हो, जो वर्ण न हो । — असु व्यंजन (सम्) सं.— य, र, ल, व आदि ।

अवर्ज्य (सम्) वि.— जो छोड़ा न गया हो, जो छोड़ा न जा सके ।

अवर्ण (सम्) सं.— रंग रहित ; बुरा, कमीना ; निंदा ; आकार ।

अवर्षण (सम्) सं.— वर्षा का अभाव ; कमी, न्यूनता ।

अवलक्ष (सम्) सं.— सफेद रंग ।

अवलक्षण (सम्) सं.— बुरा लक्षण, अपशकुन ।

अवलग्न (सम्) वि.— लटकता हुआ । सं.— कमर, कटि ।

अवलंब, अवलंबन (सम्) सं.— आश्रय, आधार, सहारा, शरण ; अनुसरण ; लटकना ; मेल-जोल ।

अवलंबित (सम्) वि.— आश्रित ।

अवलिप्त अवलिप्त

अवलिप्त अवलिप्त (सम्) वि.— पोता हुआ, सना हुआ; लिस; अभिमानी, क्रोधी।

अवलीन अवलीन (सम्) वि.— कम किया हुआ, नष्ट किया हुआ, अवकुंचित।

अवलु (क) सं.— चूड़ा, चूरा; मछली विशेष।

अवल्लेप (सम्) सं.— अभिमान, गर्व, दर्प, क्रोध; ऐक्य, मेल; तैल उबटन।

अवल्लोकन (अवल्लोक अवलोक) (सम्) सं.— देखन. नज़र, दृष्टि। — असु इसु (सम्) क्रि.— देख।

अवल्लोह (सम्) सं.— घटिया धातु, दुष्ट।

अवशिष्ट अवशिष्ट (सम्) वि.— बचा हुआ, शेष।

अवशेष अवशेष (सम्) सं.— शेष, बाकी।

अवश्य अवश्य (सम्) वि.— आवश्यक, अनिवाय; सर्वथा, जरूर।

अवसन्न अवसन्न (सम्) वि.— समाप्त, रहित. खोया हुआ।

अवसर अवसर (सम्) सं.— मौका, समय, अवकाश; गड़बड़ी, जल्दबाज़ी, शीघ्रता।

अवसादन अवसादन, अवसान अवसान (सम्) सं.— अंत, समाप्ति, पूर्णता; मरण, मृत्यु; सीमा; ठहराव।

अवसे (तद्) सं.— अमावास्या (तत्)।

अवस्थे (सम्) सं.— दशा, हालत; कष्ट, तकलीफ़।

अवहिस्थ अवहिस्थ (सम्) सं.— एक संचारी भाव। वि.— मानसिक भावों को छिपानेवाला; झूठा गर्व या दंभ रहित।

अवहेल अवहेल, अवहेलन अवहेलन (अथवा अवहेलन अवहेलन) (सम्) सं.— तिरस्कार, उपेक्षा, निंदा, अवज्ञा, अपमान।

अवलि-जवलि अवलि-जवलि (क) सं.— युग्म, जुड़वा, दो, युगल, यमल।

अवळु (क) सर्व.— वह (स्त्री. लिं.) She.

अवाक् अवाक्, अवार्त् अवाच् (सम्) वि.— मूक, गूंगा। अ.— दक्षिण का. दक्षिण की ओर, नीचे की ओर।

अवाच्य अवाच्य (सम्) वि.— जो कहने योग्य न हो, बुरा, अपमानकर।

अवांतर (सम्) सं.— बीच का, माध्यमिक; खतरा, विघ्न, गड़बड़ी।

अवार्य अवार्थ (सम्) वि.— जो निवारण करने योग्य न हो।

अवास अव्वास (सम्) वि.— नंगा।

अवि (क) क्रि.— छिप जा, बंद हो, गुप्त हो, घिर जा; नष्ट हो, बरबाद हो, खराब हो।

अवि (सम्) सं.— भेड़, बकरा; रवि, सूर्य; चूहा; पर्वत; पवन, हवा; ऊनी कंबल, शाल; दीवार। — कट (सम्) सं.— भेड़ों का गिरोह।

अविकल, अविकल (सम्) वि.— समूचा, संपूर्ण, नियमित, क्रमिक।

अविकल अविकल, अविकलित (सम्) वि.— स्थिर, अचल, अचंचल, दृढ़।

अविचार अविचार (सम्) वि.— विचार रहित। सं.— विचारहीनता, ग़लत विचार। — इ (सम्) सं.— अज्ञानी, मूर्ख।

अविच्छिन्न अविच्छिन्न (सम्) वि.— अटूट, अखंड, पूर्ण, समूचा।

अविच्छेद अविच्छेद (सम्) सं.— पूर्णता, अखंडता।

अविरथ अविरथ (सम्) सं.— सत्य, तथ्य, सार्थक, अचूक।

अविद्ये (सम्) सं.— अज्ञान; माया।

अविधेय अविधेय (सम्) वि.— अविनीत, दृष्ट, जो आज्ञा न मानता हो; अवाच्य।

अविनय अविनय (सम्) सं.— विनय का अभाव, दृष्टता, उद्दंडता।

अविनाण अविनाण, अविनाण अविनाण (तद्) सं.— अभिज्ञान (तत्); चिह्न, निशान।

अविनीत अविनीत (सम्) वि.— दे. अविधेय।

अविभक्त अविभक्त (सम्) वि.— अटूट, अखण्ड, पूर्ण।

अविमुक्त अविमुक्त (सम्) वि.— जो मुक्त न हो, बद्ध, परतंत्र।

अविरत अविरत (सम्) वि.— निरंतर, सतत, लगातार।

अविरल अविरल, अविरल अविरल (सम्) वि.— घना, सघन, संयुक्त; निरंतर; जो अपूर्ण न हो।

अविलंब अविलंब, अविलंब अविलंब (सम्) सं.— शीघ्रता, विलंब का अभाव।

अविवाहि अविवाहि, अविवाहित अविवाहित (सम्) सं.— ब्रह्मचारी।

अविवेक अविवेक (सम्) सं.— अज्ञान, विवेक हीनता। वि.— नामसज्ञ, अज्ञानी, मूर्ख।

अविश्वास अविश्वास (सम्) सं.— विश्वास का अभाव, भरोसे का अभाव।

अविहित अविहित (सम्) वि.— जो कहने योग्य नहीं, अनुचित, अनुपयुक्त।

अवुकिसु अवुकिसु (क) क्रि.— दबा; कुचला (प्रे.)।

अवुकु अवुकु, अवुकु अवुकु (क) क्रि.— दे. असुकु।

अवुकने अवुकने; अवुकने अवुकने (क) अ.— जल्दी, शीघ्र, तुरंत।

अवुगळ अवुगळ, अवुगळ अवुगळ, अवु अवु (क) सर्व.— वे (न. लिं.), अदु अदु — वह (न. लिं.) का बहुवचन।

अवुगु अवुगु, अवुगु अवुगु, अवुगु अवुगु (क) सं.— एक मिठाई, पुआ, अपूप। क्रि.— दब जा, कुचल जा।

अवुकुह अवुकुह (क) क्रि.— दे. असुकु।

अवुडल अवुडल, अवुडल अवुडल, अवुडल अवुडलिके, अवुडल अवुडल, अवुडल अवुडल अवुडल (तद्) सं.— अमण्ड

भामण्ड (तत्), एरंडी का वृक्ष। अवुडल अवुडल एणु (अथवा अवुडल अवुडलेणु) (क) सं.— एरंडी का तेल।

अनुष्टुप् अष्टादश. अनुष्टुप् अष्टादश (क) क्रि.—
चबा, चर्चण कर । सं.—जबड़ा ; नीचे का
अधर या होट ; दाना ।—अष्टादश कचु (क)
क्रि.—क्रुद्ध हो, नाराज़ हों ।
अनुष्टुप् अवुतण, अष्टादश औतण (तद्) सं.—
आसन्नण (तत्) ; दावत, भोज ।
अनुष्टुप् अवेद्य (सम्) वि.—गुप्त, अप्राप्त,
अज्ञात ।
अनुष्टुप् अवैदिक (सम्) सं.—वेद न जानने-
वाला व्यक्ति, जो वैदिक कर्म से संबंधित न
हो, अज्ञानी ।
अनुष्टुप् अव्यक्त (सम्) वि.—अप्रकट, अज्ञात,
अनजान, अस्पष्ट । सं.—सोना, सुवर्ण ;
परमात्मा ।
अनुष्टुप् अव्यय (सम्) वि.—नागरहित,
अपरिवर्तनशील, सदा एक रस रहनेवाला ।
सं.—स्वर्ग ; विष्णु, शिव, ब्रह्मा ; न्याकरण
का वह शब्द जो सब लिंगों, विभक्तियों
और वचनों में समान रूप से प्रयुक्त हो ।
अनुष्टुप् अन्त्याकुल (सम्) वि.—निश्चित,
ज्ञात, जो घबराहट से दूर हो ।
अनुष्टुप् अन्व्यापार (सम्) सं.—असंबद्ध
न्यापार या कार्य ।
अनुष्टुप् अन्व्याप्ति (सम्) सं.—व्याप्ति का
अभाव, पूर्णता की कमी, कुछ बातों को
छोड़ना ।
अनुष्टुप् अन्व (क) सं.—माता. माँ ।—अनुष्टुप्
अन्व अन्वप्पच्चि आट (क) सं.—बच्चों का एक
खेल (अनुष्टुप् अन्व = माता, अनुष्टुप् अप्प = पिता,
अनुष्टुप् अच्चि = बच्चा) ।—अनुष्टुप् अन्वच्च =
अनुष्टुप् अन्मम्म (क) वि.बो.—बाप रे !
हे !
अनुष्टुप् अन्वलिस्सु (क) क्रि.—क्रुद्ध, छलंग मार,
उछल ।
अनुष्टुप् अन्वाणि, अनुष्टुप् अन्वालि (क) सं.—
भीरु, डरपोक, स्त्री स्वभाव का मनुष्य ।
अनुष्टुप् अन्वे (क) सं.—माता, माँ । आदर
और प्रेम प्रदर्शन के लिए भी इसका प्रयोग
होता है । संबोधन में—अनुष्टुप् अन्वे ! अनुष्टुप्

अनुष्टुप् ! अक्कंठिर ! अन्वेगळिर !—बहनो !
साताओ !
अनुष्टुप् अशक्त (सम्) वि.—निर्बल, कमजोर ;
असमर्थ, अयोग्य ।
अनुष्टुप् अशक्य (सम्) वि.—असंभव, असाध्य ।
अनुष्टुप् अशन (सम्) सं.—अन्न, भोजन, खाना ।
अशन वसन सिक्किद मेले व्यसन याके—
भोजन-वस्त्र मिल जायें तो चिंता काहे
(कह.) ।—अनुष्टुप् पर्णि (सम्) सं—एक
पोधा The plant Marsilea quadri-
folia. —अनुष्टुप् अर्थि (सम्) सं.—खाना
माँगनेवाला ।
अनुष्टुप् अशानि (सम्) सं.—इंद्र का वज्र-
वज्रायुध ।
अनुष्टुप् अशरीर (सम्) सं.—आकाश ; काम-
देव ।—अनुष्टुप् वाणि (सम्) सं.—आकाश-
वाणी ; देव-वाणी ।
अनुष्टुप् अशास्त्रीय (सम्) वि.—शास्त्र
विरुद्ध ।
अनुष्टुप् अशिक्षित (सम्) वि.—अनपढ़, मूर्ख ।
अनुष्टुप् अशिर (सम्) सं.—आग ; सूर्य ; हवा ;
राक्षस ; रत्न ।
अनुष्टुप् अशिव (सम्) सं.—असंगल, अशुभ ।
अनुष्टुप् अशील (सम्) वि.—चरित्रहीन, बद-
चलन ।
अनुष्टुप् अशुचि (सम्) वि.—जो साफ न हो,
मैला, गंदा ।
अनुष्टुप् अशुभ (सम्) सं.—असंगल ; दुर्दैव ।
अनुष्टुप् अशेष (सम्) वि.—पूर्ण, समूचा,
सारा ।
अनुष्टुप् अशोक (सम्) वि.—शोक या दुःख
रहित । सं.—अशोक वृक्ष ; राजा अशोक ;
देवता, सुर ।
अनुष्टुप् अशोभे (सम्) सं.—असौंदर्य,
कांतिहीनता ।
अनुष्टुप् अशौच (सम्) सं.—जनन या मरण
का सूतक ; मैलापन, गंदगी ।

अनुष्टुप् अश्म (सम्) सं.—पत्थर ; मेघ ।—अनुष्टुप्
कारक (सम्) सं.—पत्थर तोड़नेवाला ।
—अनुष्टुप् गर्भ (सम्) सं.—पत्ता, मरकत ।
—अनुष्टुप् दारण (सम्) सं.—हथौड़ा ।
अनुष्टुप् अश्रद्धे (सम्) सं.—श्रद्धा का अभाव,
तिरस्कार, उपेक्षा, अवज्ञा ।
अनुष्टुप् अश्रांत (सम्) वि.—जो थका हुआ
न हो, अथक, लगातार, निरंतर ।
अनुष्टुप् अश्राव्य (सम्) वि.—जो सुनने
योग्य न हो, जिसे नहीं सुनना चाहिए ।
अनुष्टुप् अश्रु (सम्) सं.—आँसू ।
अनुष्टुप् अश्रुत (सम्) वि.—जो सुनाई न पड़े,
जो सुना न गया हो ; मूर्ख, अशिक्षित ।
अनुष्टुप् अश्लील (सम्) वि.—अप्रिय, कुरूप,
गँवारू, फूहड़, भद्दा, असभ्य, कुवाच्य ।
अनुष्टुप् अश्व (सम्) सं.—घोड़ा ।—अनुष्टुप्
अजनि (सम्) सं.—चाबुक ।—अनुष्टुप्
खरज (सम्) सं.—खच्चर ।—अनुष्टुप्
गोष्ठ (सम्) सं.—अश्वशाला, अस्तबल ।
—अनुष्टुप् भा (सम्) सं.—विजली, चपला ।
अनुष्टुप् अश्वत्थ (सम्) सं.—पीपल का पेड़ ।
अनुष्टुप् अश्वत्थाम (सम्) सं.—द्रोण का
पुत्र ।
अनुष्टुप् अश्वमेध (सम्) सं.—यज्ञ विशेष
जिसमें घोड़े की बलि दी जाती है ।
अनुष्टुप् अश्वशाले (सम्) सं.—अस्तबल ।
अनुष्टुप् अश्वसीन (सम्) सं.—सर्पराज तक्षक
का पुत्र ।
अनुष्टुप् अश्वरोह, अनुष्टुप् अश्वरोहि
(सम्) सं.—घुड़सवार ।—अनुष्टुप् अश्वरोहण
अश्वरोहण (सम्) सं.—घोड़े पर चढ़ने की
क्रिया ।
अनुष्टुप् अश्विनि (सम्) सं.—एक नक्षत्र ;
अश्विनीकुमार ।
अनुष्टुप् अष्ट, अनुष्टुप् अष्टक (सम्) सं.—आठ
का समूह ।
अनुष्टुप् अष्टादश (सम्) सं.—आठ दिशाओं
के राज ।

अष्टदिक् अष्टदिक्

अष्टदिक् अष्टदिक् (सम्) सं.—आठ दिशाएँ ।
—गण गज (सम्) सं.— आठ दिशाओं के गज ।

अष्टपद अष्टपद (सम्) सं.— आठ पैरवाले कीड़े—बिच्छू, शरभ आदि; कैलास; सुवर्ण सोना ।

अष्टमंगल अष्टमंगल (सम्) सं.— आठ प्रकार के मंगल; लक्षणयुक्त सफेद घोड़ा ।

अष्टमि अष्टमि (सम्) सं.— शुक अथवा कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि ।

अष्टमूर्ति अष्टमूर्ति (सम्) सं.— शिव जी के विभिन्न रूपों के नाम ।

अष्टवसु अष्टवसु (सम्) सं.— आठ प्रकार की संपदाएँ — आप, ध्रुव, सोम, धव, अनिल, अनल, प्रत्यूप, प्रभास ।

अष्टसिद्धि अष्टसिद्धि (सम्) सं.— आठ सिद्धियाँ — अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व ।

अष्टांग अष्टांग (सम्) सं.— शरीर के आठ मुख्य अवयव — मस्तक, हाथ, पैर, छाती, आँख जाँघ, गला (वचन) और मन; वीरशैव आचार के अनुसार अष्टावरण, वे हैं— गुरु, लिंग, जंगम, पादोदक, प्रसाद, विभूति, रुद्राक्ष और मंत्र । — अष्टांग प्रणाम (सम्) सं.— आठ अंगों का प्रणाम ।

अष्टादश अष्टादश (सम्) वि.— अठारह । — अष्टादश उपपुराण (सम्) सं.— अठारह उपपुराण । — अष्टादश पुराण (सम्) सं.— अठारह महापुराण । — अष्टादश पर्व (सम्) सं.— महाभारत के अठारह पर्व ।

अष्टावक्र अष्टावक्र (सम्) सं.— जन्म से कुरूपी एक ब्राह्मण, कहोद ऋषि का पुत्र ।

अष्टावरण अष्टावरण (सम्) सं.— आत्मा पर घिरे आठ आवरण, वीरशैव आचार के अष्टावरण । दे. अष्टांग ।

अष्टु अष्टु (क) अ.—उतना, उस परिमाण में ।
अष्टुश्रु अष्टुश्रु (सम्) सं.— दे. अष्टुश्रु ।
अष्टोत्तरशत अष्टोत्तरशत (सम्) वि.— एक सौ आठ ।

अस (क) सं.— उपयुक्तता, योग्यता; आज्ञा, अनुज्ञा; बल, शक्ति; कोमलता । अ.— उतना, जितना की (मै.प्र.) । सं.— वेग, शीघ्रता ।

असंय असंय (तद्) वि.— अमल्य (तत्); जो सहन न किया जा सके, दुर्गंध (न्या.भा.) ।

असंशय असंशय (सम्) अ.— निस्संदेह ।

असकलि असकलि (क) क्रि.— हाथ से निकल जा; अतिक्रमण कर ।

असकृत् असकृत् (सम्) अ.— बारंबार, अकसर, निरंतर ।

असक्त असक्त (सम्) वि.— जो किसी में न लगा हो; प्रेम रहित ।

असग असग (क) सं.— धोवी; कन्नड के एक कवि का नाम ।

असंकीर्ण असंकीर्ण (सम्) वि.— जो संकीर्ण न हो; शुद्ध ।

असंख्य असंख्य, असंख्युत् असंख्यात, असंख्येय असंख्येय (सम्) वि.— अनगिनत; बहुत अधिक ।

असंगत असंगत (सम्) वि.— अयुक्त, विषम, असंबद्ध ।

असङ्घि असङ्घि (क) सं.— मूर्ख स्त्री (मै. प्र.) ।

असङ्घ असङ्घ (क) सं.— मूर्खता; नटखटपन ।

असङ्घे असङ्घे (तद्) सं.— अश्रद्धा (तद्); तिरस्कार, उपेक्षा, अवज्ञा ।

असत् असत् (सम्) वि.— झूठा; गलत; दुष्ट, खराब ।

असति असति (सम्) सं.— जो सती या पतिव्रता न हो, बुरी पत्नी ।

असदल असदल (सम्) वि.— असाध्य, अशक्य, असदृश, अव्यवहृत ।

असद्व्याति असद्व्याति (सम्) सं.— उचित उपमा के द्वारा किसी की बुराई की घोषणा; बुरा प्रचार; एक कविसमय ।

असनि असनि (तद्) सं.— अशनि (तत्); दे. अशनि ।

असंतुष्टि असंतुष्टि, असंतोष असंतोष (सम्) सं.— तृप्ति का अभाव, अप्रसन्नता ।

असभ्य असभ्य (सम्) वि.— अपात्र, असमाजिक. सभा या समाज के अयोग्य, खल, नीच ।

असमान असमान (सम्) वि.— असमान, बेजोड़, विषम ।

असमंजस असमंजस (सम्) वि.— अस्पष्ट, असंगत, अवोधगम्य, मूर्खतापूर्ण ।

असमनयन असमनयन, असमनेत्र (सम्) सं.— विषम नेत्रवाले शिव; एक आँखवाला कौआ ।

असमर्थ असमर्थ (सम्) वि.— अयोग्य, अशक्य, बलहीन ।

असमाक्ष असमाक्ष (सम्) सं.— दे. असमाक्ष ।

असमाधान असमाधान (सम्) सं.— शांति का अभाव, अतृप्ति, गड़बड़ी ।

असंबद्ध असंबद्ध (सम्) वि.— बेमेल, अनुचित, गलत ।

असंबंध असंबंध (सम्) वि.— दे. असंबद्ध ।

असंभाव्य असंभाव्य (सम्) वि.— नासुमकिन; जो कभी न हो, अवोधगम्य, असाध्य ।

असंभूत असंभूत (सम्) वि.— जो उत्पन्न न हो, असंभव ।

असम्मत असम्मत (सम्) वि.— विरुद्ध, अमान्य । — अति (सम्) सं.— अस्वीकृति ।

असवर असवर, असवस असवस (क) सं.— शीघ्रता, वेग, गड़बड़ी ।

असवलि असवलि, असवलि असवलि (क) क्रि.— विरक्त हो, ऊब जा; अंत हो; मर जा ।

असहन असहन (सम्) सं.— असहिष्णुता, ईर्ष्या; शत्रु ।

असहाय असहाय (सम्) वि.— जिसको किसी का साहाय्य न हो, एकाकी, अकेला ।

— अशूर शूर (सम्) सं.— एकैक वीर, अद्वितीय योद्धा ।

असह्य असह्य (सम्) वि.— दे. असंय ।
असाकल्य असाकल्य (सम्) सं.— अपूर्णता ।

असादय्य (सम्) वि.— जिसके ममान न हो, अमम, अतुल्य ।

असाधारण (सम्) वि.— जो साधारण न हो, विलक्षण, असामान्य, अपूर्व ।

असार (सम्) वि.— सारहीन, निस्सार, अनुपयोगी ।

असि (सम्) सं.— खड्ग, तलवार ।

असि (क) वि.— कृश, सूखा, महीन, पतला । सं.— कृशता, दुर्बलता, कोमलता, लघुता, सूक्ष्मता । क्रि.—कांप, हिल, डोलायमान हो ; फेंक, फेंला, बाँट ।

असि, असिसि (क) वि. घो.— छिः ! छिः !, धिक् ! धिक् !

असि (क) वि.— जो भूमि पर रखी गयी हो । — असवे असुवे या असवेः असुवे कल्लु (क) सं.— पीसने का पत्थर (तमिल — असु अस्मि) ।

असित (सम्) वि.— जो सफेद न हो, काला, नीला । सं.— एक ऋषि का नाम । — असंध कंधर, — असंध गल (सम्) सं.— नीलकंठ, शिव । — असंध रसे (सम्) सं.— काली मिट्टीवाली भूमि ।

असितानन (सम्) सं.— काले मुँह का बंदर ।

असितांबर (सम्) सं.— बलराम ।

असिताहि (सम्) सं.— कृष्णसर्प, कालिय नाग ।

असिदु (क) वि.— कृश, पतला, महीन, छोटा, कोमल ।

असिधारा, असिधारे (सम्) सं.— तलवार की धारा । — असिधारे व्रत (सम्) सं.— तलवार की धार पर चलने की क्रिया. कठिन काम ।

असिधेनुके (सम्) सं.— खड्ग, तलवार ।

असिनदु (क) सं.— कृश कटि, पतली कमर ।

असिपत्र (सम्) सं.— दे. असिपत्रे. — असिपत्रे व्रत (सम्) सं.— दे. असिपत्रे व्रत ;

नव विवाहित दंपती का बीच में तलवार रख कर सोने की क्रिया, ब्रह्मचर्य का पालन ।

असियवेरु (क) सं.— पतली लंबी उंगली ।

असियलु (क) सं.— पतली स्त्री ; कोमलांगी ,

असि (सम्) सं.— गंगा की एक उपनदी ।

असु (क) सं.— शीघ्रता, वेग ।

असु (सम्) सं.— प्राण ; जीव । — असु कुडि (सम्) क्रि.— प्राण ले, तंग कर ।

असुके, असुगे (तद्) सं.— अशोक (तद्) ।

असुकोल्, असुगेल् असुगेल् (क) क्रि.— प्राण ले, मार, वध कर ; वश में आ ।

असुगावलु (क) सं.— प्राण-रक्षा, जीवन-रक्षा ।

असुदोरे, असुदोरे (क) क्रि.— प्राण त्याग कर, मर ।

असुवु (क) क्रि.— चालित कर, उभाड़, आगे बढ़ा, उत्साहित कर, बाहर निकाल ।

असु (क) सं.— थकावट, आयास, उवाड़ ; अनिच्छा, असह्य का भाव, अजीर्ण ।

असुरु (सम्) सं.— राक्षस ; सूर्य । — असुरु गुरु (सम्) सं.— शुक्राचार्य ।

— असुरु रिपु, असुरु अंतक, असुरु अरि, असुरु हर (सम्) सं.— राक्षसों के शत्रु देवता, विष्णु, शिव आदि ।

असुरि, असुरे (सम्) सं.— राक्षसी ।

असुलाभ (सम्) सं.— प्राणों की रक्षा, बाल-बाल बचना (नै. प्र.) ।

असुवडु, असुवडि (क) क्रि.— मर, प्राण त्याग कर ।

असुहव, असुहव (सम्) सं.— अमित्र, शत्रु, वैरी ।

असुये (सम्) सं.— ईर्ष्या, मात्सर्य ; द्वेष ।

असुलित (सम्) वि.— जो हिले नहीं, स्थिर, सावधान ।

असु (सम्) वि.— फेंका हुआ, डाला हुआ, त्यागा हुआ, डूबा हुआ, समाप्त । — असु अद्रि, असु गिरि (सम्) सं.— पश्चिम पर्वत । — असु मान (सम्) सं.— डूबना ।

— असु राग (सम्) सं.— सूर्य के डूबने के समय दीखनेवाली लालिमा । — असु विसु (सम्) क्रि.— डूब जा, अस्त हो, छोड़ल हो ।

असुव्यस्त (सम्) वि.— अग्यवस्थित, तितर-वितर ।

असु (सम्) अ. क्रि.— है, विद्यमानता । असु (तद्) सं.— अस्थि (तद्) ; हड्डी ।

असुत्व (सम्) सं.— विद्यमानता, सत्ता । असुवारे, असुवारे अस्तिवार (अ. दे.) सं.— नींव. बुनियाद ।

असु (सम्) अ.— ठीक है, वैसा ही हो, खैर ।

असु (सम्) सं.— अभिमंत्रित हथियार या आयुध, बाण, तलवार आदि । — असु जीव (सम्) सं.— योद्धा, सिपाही, अस्त्र विद्या से ही आजीविका पानेवाला ।

असु (सम्) सं.— हड्डी । — असु पंजर (सम्) सं.— हड्डियों का पिंजरा, कंकाल. ठठरी ।

असु (सम्) वि.— चंचल, अस्थायी, झट्टा ।

असु (सम्) वि.— जो चिकना न हो, रूक्ष, कर्कश ।

असु (सम्) वि.— जो छूने योग्य न हो, हरिजन ।

असु (सम्) वि.— जो साफ न हो, संदिग्ध, उलझा हुआ, गलत ।

असु (सम्) वि.— अस्पष्ट, संदिग्ध । असु (सम्) सं.— सिर के बाल ; आँसू, रक्त । — असु प (सम्) सं.— रक्त पीनेवाला, राक्षस ।

असु (सम्) वि.— रोगी, बीमार ।

अस्वाभाविक

अस्वाभाविक (सम्) वि.— जो स्वाभाविक न हो, कृत्रिम, बनावटी ।

अस्वारस्य (सम्) वि.— रसहीन, नीरस ।

अस्वार्थ (सम्) सं.— निःस्वार्थता, स्वार्थता का अभाव ।

अस्वास्थ्य (सम्) सं.— बीमारी, रोग ।

अह (क) वि.— वैसा, उस प्रकार का ।
अहवर्ग—वैसे लोग ।

अहो (क) अ.— वैसे ।

अहंकार, अहंकार, अहंकृति, अहंभाव, अहंयु (सम्) सं.— गर्व, घमंड, स्वार्थता ।

अहो, अहो, अहो हां (क) अ.— वैसे, उस तरह से ।

अहन् (सम्) सं.— दिन ।

अहत्य (सम्) वि.— अवध्य, जो मारने योग्य न हो ।

अहमिके (सम्) क्रि.— 'मैं' कहना, स्वार्थ, अहंभाव ।

अहर्निश (सम्) अ.— दिन-रात ।

अहर्षिता, अहर्षिता, अहर्षिता, अहर्षिता, अहर्षिता (सम्) सं.— दिनकर, सूर्य ।

अहलेकार (अ. दे.) सं.— अहलकार (अरवी, फ़ारसी); अधिकारी, जनता का सेवक ।

अहल्ये (सम्) सं.— गौतम ऋषि की पत्नी ।

अहार्य (सम्) वि.— जो चुराया न जा सके ।

अहि (सम्) सं.— सांप; राहु; सूर्य; वृत्रासुर; घोखेवाज़, दुष्ट मनुष्य; यात्री ।

अहिसे (सम्) सं.— मन, वचन, कर्म से किसी प्राणी को पीड़ा न देना ।

अहिकटक (सम्) सं.— सर्पभूषण शिव; सर्प समूह ।

अहिकंत (सम्) सं.— सर्पराज बासुकी; पवन ।

अहिकुंडल (सम्) सं.— साँप ही जिनके कर्णाभूषण हों, शिव ।

अहिच्छत्र (सम्) सं.— उत्तर पांचाल देश ।

अहित (सम्) वि.— हानिकारी, प्रतिकूल । सं.— वैरी, शत्रु । — अ. त्व (सम्) सं.— शत्रुता ।

अहितुंडक (सम्) सं.— संपेरा, साँप पकड़नेवाला ।

अहितबल (सम्) सं.— शत्रुसेना ।

अहिधर (सम्) सं.— सर्पधारण करने वाले शिवजी ।

अहिपति (सम्) सं.— आदिशेष ।

अहिकंकण (सम्) सं.— शिव ।

अहिकुण्डल (सम्) सं.— नागलोक ।

अहिकुण्डल (सम्) सं.— सर्पभक्षक— गरुड, मयूर ।

अहिभूषण (सम्) सं.— शिव ।

अहिकर (सम्) सं.— सूर्य ।

अहिकर (सम्) सं.— साँप और मगर ।

अहिकरिणी (सम्) सं.— नागकन्या ।

अहिकरिणी (क) अ.— हौं ।

अहिकरिणी (सम्) सं.— अहिकरिणी, अहिकरिणी (सम्) अ.— अहिकरिणी, दिन-रात ।

अहिकरिणी (सम्) सं.— दिन ।

अहिकरिणी (क) क्रि.— डूब; रो । प्र.— स्त्रीवाचक प्रत्यय अहिकरिणी अथवा अहिकरिणी उदा.— अहिकरिणी इनियत्, अहिकरिणी इनियत्— प्रेमिका । अहिकरिणी बंदल, अहिकरिणी बंदल— आयी ।

अहिकरिणी (सम्) सं.— अहिकरिणी, घुँघराले बाल ।

अहिकरिणी (सम्) सं.— दे. अहिकरिणी ।

अहिकरिणी (क) सं.— छेदने या काटने की क्रिया । क्रि.— काटना, छेदना ।

अहिकरिणी, अहिकरिणी (क) सं.— हिलने-डुलने, घूमने या कंपित होने की स्थिति । — अहिकरिणी अहिकरिणी (क) क्रि.— हिल जैसे सिर पर रखे घड़े का पानी हिलता है ।

अहिकरिणी (क) सं.— भय, डर ।

अहिकरिणी (तद्) सं.— अहिकरिणी (तद् ?), एक जाति का घोड़ा ।

अहिकरिणी, अहिकरिणी (क) सं.— मापने का बर्तन जो प्रायः लोहे या पीतल का होता है ।

अहिकरिणी (क) सं.— वश, अधीन; विघ्न ।

अहिकरिणी, अहिकरिणी (क) सं.— मापने या मापा जाने की क्रिया ।

अहिकरिणी, अहिकरिणी (क) सं.— नाप, माप, परिमाण । उदा.— अहिकरिणी अहिकरिणी— अनाज के ढेर को मापो ।

अहिकरिणी (क) वि.— पीला (ग्रा.) ।

अहिकरिणी, अहिकरिणी (क) कृ.— नापकर या मापकर ।

अहिकरिणी (क) सं.— सामर्थ्य; माहात्म्य, बड़प्पन ।

अहिकरिणी, अहिकरिणी, अहिकरिणी अहिकरिणी (क) सं.— मन में नाप-तोल करना; विचार, विश्लेषण, इच्छा, कामना, अभिलाषा ।

अहिकरिणी, अहिकरिणी, अहिकरिणी, अहिकरिणी (क) सं.— अहिकरिणी, अहिकरिणी (क) सं.— अहिकरिणी, अहिकरिणी ।

अहिकरिणी, अहिकरिणी (क) सं.— भय, डर, भीति; व्यग्रता; मनोव्यथा । — अहिकरिणी अहिकरिणी— डरा, घमका, भय-भीत कर ।

अहिकरिणी (क) सं.— भय, डर, भीति, व्यग्रता ।

अर्ध अक्षर, अर्धलिके अक्षर, अर्धल अक्षर (क) सं.— दुःख, व्यथा, पीड़ा; त्रिंता, व्याकुलता ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— बोधिदृक्ष, पीपल का वृक्ष; गिलहरी ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— नष्ट कर, हानि पहुँचा; दुःख दे, पीड़ा दे, तंग कर ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— ठीक-ठीक मिलने, सजने, संयुक्त होने आदि का भाव ।
—अर्धल अक्षर (क) क्रि.— वश में हो, ठीक प्रकार से मिल, संयुक्त हो, घुल-मिल, संभव हो, तैयार हो ।
—अर्धल अक्षर (क) क्रि.— प्रेरणार्थक ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— नैकव्य, सामीप्य; उपयुक्तता, भौचित्य; संभावना; बल, शक्ति; युद्ध या लड़ाई के मैदान में दृढ़, कुशी, मलयुद्ध; आशा, विश्वास ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— मित्र, दोस्त ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— दे. अर्धल. —अर्धल अक्षर (क) क्रि.— सीमहीन हो, हृद् पार कर, उल्लेखन कर ।
—अर्धल अक्षर (क) क्रि.— युद्ध कर, लड़ ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— करार या शर्त का पत्र जो किसान को दिया जाता है, पट्टा; जल का उत्तार ।

अर्धल अक्षर (तद्) क्रि.— आलस्य (तत्); सुस्ती ।
—अर्धल गामिनि (तद्) वि.— मंदगमना ।

अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर (क) क्रि.— नाप या माप करा (प्रे.) ।

अर्ध अक्षर (क) क्रि.— नाप या माप; नष्ट हो, समाप्त हो, मिट जा, मर जा; खोल । वि.— खराब, बुरा । (सम्) सं.— भ्रमर, मधुप ।
अर्ध अक्षर (तद्) सं.— अलिक (तत्); माथा ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— विरोध कर, पीड़ा दे, दिक कर ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— दे. अर्धल.

अर्धल अक्षर (क) सं.— धुद्रकाव्य, अवर काव्य ।
—अर्धल अक्षर (क) सं.— दुष्ट कवि ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— बुरी आँख ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— बुरा समय, अंतिम समय, मृत्यु ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— पानी या अनाज रखने का मिट्टी का बर्तन ।

अर्धल अक्षर (सम्) सं.— भ्रमरी, मादा मधुप ।

अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर (क) सं.— लालसा, कामना, लालच, तीव्रच्छा । क्रि.— लालसा कर, ललचा जा, नष्ट हो ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— दामाद, जामाता ।
अर्धल अक्षर (क) सं.— अक्षर मुनिदरे मगल करकोंडु होदासु— दामाद क्रुद्ध होगा तो पुत्री (अपनी पत्नी) को ले जाएगा (कह.) । वि.— व्यर्थ, तुच्छ, हानि ।
—अर्धल अक्षर (क) वि.— भीरु, डरपोक ।
—अर्धल अक्षर (क) सं.— दामाद होना ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— विनष्ट ग्राम या बस्ती ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— बुरी औरत ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— कामदेव ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— नष्ट कर, मिटा; रूला ।

अर्धल अक्षर (क) क.— गिलहरी ।

अर्धल अक्षर (तद्) सं.— अलीक (तत्); झूठ, मिथ्या ।

अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर (क) क्रि.— डर जा, भयभीत हो; मिट जा । सं.— भय, डर, भीति ।
—अर्धल अक्षर (क) क्रि.— डरा, धमका ।

अर्धल अक्षर (क) वि.— अधिक, महान, बहुत । अ.— खूब । सं.— आधिक्य, महानता, बड़ाई ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— व्याप्त हो, फैल, आवृत्त हो; डरा ।

अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर (क) सं.— डर, भय ।

अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर (क) सं.— गिलहरी ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— नाप, माप । सं.— मट्टा, छौंछ ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— ईर्ष्या, डाह, मात्सर्य; प्रेम, स्नेह; अन्याय ।

अर्धल अक्षर (क) अ.— तुरंत ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— अजीर्ण, डर ।

अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर (क) सं.— भय, (धा. प्र.); प्रीति ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— हिल, डुल; पूर्णतः नष्ट हो ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— व्यग्रता या चिंता उत्पन्न कर; नष्ट हो ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— डर, भयभीत हो ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— डर, भय; रूलाई, विलाप, आलिंगन ।

अर्धल अक्षर (क) अ.— सकल्यक ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— नष्ट हो, लय हो, क्षीण हो ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— रसोई ।

अर्धल अक्षर, अर्धल अक्षर (क) सं.— प्रेम, प्रीति; प्रसन्नता, संतोष; आशा, विश्वास ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— डुबा, (किसी तरल पदार्थ में) निमज्जित कर; जला, मिटा, नष्ट कर; मर ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— आलिंगन ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— पूरा जला ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— कंपा, हिला, धमका, डरा ।

अर्धल अक्षर (क) क्रि.— हिल, डुल, कांप; लटक ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— गिलहरी (मे. प्र.) ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— गिलहरी; लटकनेवाला पदार्थ; कोमलता, निर्बलता । वि.— लटकने वाला ।

अर्धल अक्षर (क) सं.— अश्वत्थ, पीपल; एरंडी (व्या. भा) ।

ॐ ईशानं

ॐ ईशानं (क) सं.— कौपनेवाला सीना ; डर, भय ।
 ॐ ईशानं अकलेविकेयागु (क) क्रि.— बहुत थक जा, श्रान्त हो ।
 ॐ ईशानं अकलेह (क) सं.— मृदु स्पर्श, संबंध ; धीरे से छूना ।
 ॐ ईशानं अक (क) क्रि.— दे. ॐ ईशानं — ॐ ईशानं अकलेके (क) सं.— व्यग्रता, घ्यथा । ॐ ईशानं अकलिंग (क) वि.— घ्यथित, दुःखी ।
 ॐ ईशानं अकिक (क) वि.— नाश करनेवाला ।
 ॐ ईशानं अकिसु (क) क्रि.— दे. ॐ ईशानं ।
 ॐ ईशानं अकिकसु (क) क्रि.— हज़म कर ।
 ॐ ईशानं अकितकार (क) सं.— प्रेम करनेवाला, प्रेमी ।
 ॐ ईशानं अकसु (क) क्रि.— नष्टकर, चरबाद कर, मिटा, मार ।

ॐ आ

ॐ आ — कन्नड वर्णमाला का दूसरा अक्षर । (क) वि. सर्व.— ॐ आ—वह आदि के बदले आनेवाला आदेश । उदा.— ॐ आ गल्लसु अहु ग्लासु—वह गिलास है । ॐ आ गल्लसु उतगुगल्लसु आ आ ग्लासु तेगेदु कौंडु आ—वह गिलास (अथवा उस गिलास को) ले आओ । (क) अ.— आश्चर्य और दुःख सूचक वि. बो. शब्द । प्लुत, जैसे— ॐ आ राम ! हा राम ! ; प्रश्नार्थक अव्यय— शब्दों के अंत में ॐ जोड़ा जाता है । जैसे— ॐ आ ? हौदा ? — है न ? या वेंसी बात ? ॐ आ ? ॐ आ ? रामनु बंदना — राम आया क्या ? सं.— बच्चों की भाषा में ॐ दूध, पानी आदि का बोधक है ।
 ॐ आ (सम्) अ.— से—तक, तक, चारों ओर, थोड़ा (उदा.— ॐ आपाद मस्तक, ॐ आलवृद्ध आवालवृद्ध आदि) ।
 ॐ आं (क) सर्व = ॐ आन्, ॐ एन्, ॐ नन्, ॐ ना, ॐ नां, ॐ नान्, ॐ यानु—प्रथम पुरुष सर्वनाम—एकवचन ' में ' ।

ॐ आः (क) अ.— विस्मय, दुःख या शोक प्रकट करनेवाला विस्मयादिबोधक ।
 ॐ आंकि (क) अ.— अर्थात्, याने, यह कि (सं. प्र.) ।
 ॐ आंके (क) सं.— आधार ; पकड़ने, धारण करने की क्रिया ; भार ढोने का साधन ।
 ॐ आंके गोल (क) क्रि.— पकड़, सामना कर ।
 ॐ आंगिक (सम्) वि.— शारीरिक, दैहिक ; हाव-भाव से युक्त ।
 ॐ आंगिर (तद्) सं.— आंगिरसः (तत्) ; आंगिरस के पुत्र, वृहस्पति ।
 ॐ आंगिरस (सम्) सं.— दे. ॐ आंगिर ।
 ॐ आंजेय (सम्) सं.— अंजना के पुत्र, इनुमान ।
 ॐ आंख (सम्) सं.— अंख से उत्पन्न पक्षी, अन्य जीव ; ब्रह्मा ।
 ॐ आंडारि (क) सं.— एक उपाधि जिसका अर्थ है—प्रभु, स्वामि, अधिकारी, हुजूर ।
 ॐ आंदि (क) सं.— द्रौव धर्म का सन्यासी ।
 ॐ आंत (क) वि.— धारण किया हुआ, पहना हुआ ।
 ॐ आंतर (सम्) वि.— भीतर का, अंदरूनी, अत्यंत गुप्त ।
 ॐ आंतर्क (सम्) सं.— मन, हृदय ; रहस्य, गुप्त बात ।
 ॐ आंतिका (सम्) सं.— बड़ी घहन ।
 ॐ आंतु (क) कृ.— धारण कर, पहनकर, प्राप्त कर, स्वीकार कर ।
 ॐ आंदेग (क) सं.— उल्ला ।
 ॐ आंदोल, ॐ आंदोलन (सम्) सं.— पालकी, डोल ; झुलना, झुला ।
 ॐ आंदोलक (सम्) सं.— बड़ी घड़ी का लंघर pendulum.
 ॐ आंदोलिक, ॐ आंदोलिके (सम्) सं.— दे. ॐ आंदोल ।
 ॐ आंदोलित (सम्) सं.— झूलने-वाला, लटकनेवाला, हिलनेवाला ।

ॐ आंधसिक (सम्) सं.— रसोइया, पाचक ।
 ॐ आंध्र (सम्) सं.— तेलुगु, तेलुगु भाषा प्रदेश, तेलुगु भाषी ।
 ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आन्ध्र (तद्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इमली लगाया हुआ पानी ।
 ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— एक खाने की चीज़ । साधारणतया चने की दाल से यह चीज़ बनाई जाती है । भीमे दाल के साथ उचित अनुपात में नारियल, नमक, मिर्च आदि मिलाकर पीसा जाता है । उसके बाद गोल-गोल बनाकर (बड़ा के जैसे) तेल में भून दिया जाता है । (चने की दाल से बनने-वाली चीज़ ॐ आंध्र और उड़द की दाल से बननेवाली चीज़ ॐ आंध्र कहलाती है) ।
 ॐ आंध्र (तद्) सं.— दे. ॐ आंध्र ।
 ॐ आंकट, ॐ आंकटपुर (सम्) अ.— कंठ तक ; गले तक ।
 ॐ आंकपन (सम्) सं.— कंपनी, कंफ-कंपी ; धरयरारहट, कौपते हुए चलने की क्रिया ।
 ॐ आकर (सम्) सं.— खान, समूह, मूलस्थान ।
 ॐ आकरण, ॐ आकरणे (सम्) सं.— नियंत्रण, बुलावा ; चुनौती, स्पर्धा, होड़ ।
 ॐ आकरिसु (तद्) क्रि.— अंगीकार (तद्) कर ; स्वीकार कर ; आज्ञा दे ; चुनौती दे ।
 ॐ आकर्ण, ॐ आकर्णांत (सम्) अ.— कान तक, कान भर । — ॐ आकर्णक यंत्र, आकर्णक परीक्षा यंत्र (सम्) सं.— हृदय तथा कफदे की परीक्षा करने का यंत्र, स्टेथसकोप Stethoscope.
 ॐ आकर्षण (सम्) सं.— सुनने या ध्यान देकर सुनने की क्रिया । — ॐ आकर्षण (सम्) क्रि.— ध्यानपूर्वक सुन ।

अक्षर आकर्ष (सम्) सं.— खिंचाव, आकृष्ट करने का गुण; पासासार, चौसर और चौपड़ खेलने का साधन; चौपड़ या चौसर का खेल; चौपड़ की विछाँत; वशीकरण; ज्ञानेंद्रिय; कसौटी; (धनुष को) तानना; वेद्याभों की नाज़-नज़ाकत ।
 अक्षर आकर्षक (सम्) वि.— खींचनेवाला, आकृष्ट करनेवाला, मनोहर; चुंबक पथर, अयस्कांत ।
 अक्षर आकर्षण (सम्) सं.— खिंचाव ।
 अक्षर आकर्षणीय (सम्) वि.— खींचनेवाला, खींचा जानेवाला ।
 अक्षर आकर्षिण (सम्) वि.— आकृष्ट कर, प्रसन्न कर ।
 अक्षर आकलन (सम्) सं.— समझ-बूझ; पकड़, गणना; मिलाना, जोड़ना, बांधना ।
 अक्षर आकलित (सम्) वि.— मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ, गिना हुआ, बांधा हुआ ।
 अक्षर आकल्प (सम्) अ.— कल्पान्त तक । सं.— आभरण, शृंगार ।
 अक्षर आकस्मिक (सम्) वि.— अचानक, अकस्मात्, सहसा, अकारण ।
 अक्षर आकळ, अक्षर आकळ, अक्षर आकळ (क) सं.— गाय, गौ-समुदाय ।
 अक्षर आकळस (क) सं.— घृणा, अरुचि, उबाई ।
 अक्षर आकळिके (क) सं.— जंभाई, जम्हाई । — अक्षर इसु—जंभाई ले ।
 अक्षर आकांक्षा, अक्षर आकांक्षे (सम्) सं.— अभिलाषा, इच्छा, चाह । — अक्षर इसु (सम्) क्रि.— इच्छा कर ।
 अक्षर आकार (सम्) सं.— रूप, वेश, चिह्न, शकल, आकृति; वनावट; संगठन ।
 अक्षर आकारण (सम्) सं.— आमंत्रण; ललकार ।
 अक्षर आकाश (सम्) सं.— आसमान, गगन; अवकाश । — अक्षर गर्भ (सम्) सं.— क्षितिज । — अक्षर गंगे (सम्) सं.— देव-गंगा । — अक्षर गामि (सम्) सं.— आकाश में गमन करनेवाले, देवता । —

अक्षर गूड (तद्) सं.— आकाशदीप ।
 — अक्षर विल्लु (तद्) सं.— इंद्रधनुष ।
 — अक्षर वाणि (सम्) वि.— शरीर-वाणी, रेडियो । — अक्षर राज (सम्) सं.— एक राजा का नाम जो तिरुपति के भगवान् श्रीनिवास के ससुर और पद्मावती के पिता थे ।
 अक्षर आकीर्ण (सम्) वि.— भरा हुआ, बिखरा हुआ; फैला हुआ; घना, सघन; बबराया हुआ; धिरा हुआ ।
 अक्षर आकुंचन (सम्) सं.— सिकुड़न, मोड़न, समेटन ।
 अक्षर आकुल (सम्) वि.— भरा हुआ, पूर्ण; व्याप्त; संकलित; व्यथित, व्यग्र, उद्विग्न ।
 अक्षर आकुलिसु (क) क्रि.— जंभाई ले । — अक्षर आकुलिके (क) सं.— जंभाई, जम्हाई ।
 अक्षर आकृत (सम्) सं.— अंग-चेष्टा, इशारा; उद्देश्य, इच्छा ।
 अक्षर आकृति (सम्) सं.— दे. अक्षर ।
 अक्षर आकृष्ट (सम्) वि.— खिंचा हुआ, आकर्षित ।
 अक्षर आके (क) सर्व.— वह (स्त्री. लिं.-ए.व.), वह स्त्री । उदा.— अक्षर अक्षर आके यारु—वह स्त्री कौन है? ('वह' यहाँ आदर-सूचक है) । 'वह' अर्थात् पत्नी के अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है ।
 अक्षर आके (क) सं.— शक्ति, बल, साहस । — अक्षर वाळ (क) सं.— शूर या साहसी पुरुष । — अक्षर वाळतन (क) सं.— वीरता, शूरता ।
 अक्षर अकेकर (क) सं.— तिरछी दृष्टि ।
 अक्षर आकंद (सम्) सं.— शोक, दुःख, विलाप-कलाप; युद्ध; बलात्कार; बंधु, मित्र; राजा; कोई राजा जो अपने मित्र राजा को अन्य राजा की सहायता करने से रोके । आह्वान, निमंत्रण ।
 अक्षर आकंदन (सम्) सं.— विलाप, रुदन; आह्वान ।

अक्षर आखेट (सम्) सं.— शिकार, मृगया ।
 — अक्षर क (सम्) सं.— शिकारी ।
 अक्षर आख्य, अक्षर आख्या, अक्षर आख्ये (सम्) सं.— नाम, प्रसिद्धि, कीर्ति, उपाधि; विवरण ।
 अक्षर आख्यात (सम्) वि.— प्रसिद्ध, गिना हुआ । सं.— क्रिया-पद ।
 अक्षर आख्यान (सम्) सं.— कथन, कथा, कहानी ।
 अक्षर आख्यिके (सम्) सं.— छोटी कथा, कहानी ।
 अक्षर आग (क) अ.— तब, उस समय ।
 अक्षर आग, अक्षर आगे (क) प्र.— में, भीतर, अंदर ।
 अक्षर आग, अक्षर आगस् (क) सं.— अपराध, पाप, गलती, पापपूर्ण विलास । अक्षर आगस् (क) सं.— आगके भोगवे साक्षि—पाप का भोग ही साक्षी है (कह.) ।
 अक्षर आगड (क) सं.— खेल, फ्रीडा; विनोद, तमाशा; दूसरों की नकल, मज़ाक, परिहास । — अक्षर आग (क) वि.— मज़ाक करनेवाला, आक्षेप करनेवाला, पीड़ा देनेवाला । — अक्षर तन (क) सं.— आक्षेप करने का स्वभाव ।
 अक्षर आगडिन (क) वि.— उस समय का, तब का, उस काल का ।
 अक्षर आगडु (क) अ.— तब, उस समय ।
 अक्षर अगड़े (क) अ.— तभी, तुरंत ।
 अक्षर अगत (सम्) वि.— आया हुआ, मिला हुआ, प्राप्त ।
 अक्षर आगति (सम्) सं.— आगमन; आमदनी; उत्पत्ति, प्राप्ति ।
 अक्षर आगंतुक (सम्) सं.— अकस्मात् आया हुआ व्यक्ति, अतिथि, मेहमान ।
 अक्षर आगम (सम्) सं.— आगमन; ज्ञात, शास्त्र; शिव और शक्ति; पूजा तंत्र; आगम प्रत्यय; पार्वती; आमदनी, आय; राजस्व ।
 अक्षर आगमज्ञ (सम्) सं.— आगम जाननेवाला, शास्त्रज्ञ ।

अंगमन आगमन (सम्) सं.— आने की क्रिया, प्राप्ति, उपलब्धि ।

अंगमनोत्थित आगमातीत (सम्) वि.— शास्त्रों से परे । सं.— शिव आदि देवता ।

अंगर आगर (तद्) सं.— आगार (तद्) ; घर, आवासस्थान ; समूह ; जमीन-जायदाद ।

अंगर्भ आगर्भ (सम्) वि.—जन्म से ही, पूर्वजों से लेकर । —श्रीमंत (सम्) सं.— अत्यंत धनी पुरुष, वह व्यक्ति जो संपन्न परिवार में पैदा हुआ हो ।

अंगल् आगल्, (अंग आग) (क) अ.— तब, उस समय ।

अंगलपुर आगलपुर (क) अ.— भाकंठ, कंठ तक ।

अंगल आगल (क) अ.— तभी, उसी समय, उसी वक्त ।

अंगस आगस (तद्) वि.— आकाश (तद्) ; गगन, व्योम ।

अंगस्ती आगस्ती (सम्) सं.— दक्षिण दिशा । —अंगस्ती आगस्ती (सम्) वि.—दक्षिणी ।

अंगल् आगल्, अंगल आगल (क) अ.— उस समय, तब ।

अंगलिके आगलिके (क) सं.— दे. अङ्क ।

अंगल आगल (क) अ.— सदा, हमेशा ।

अंगल आगल (क) अ.— सदा, हमेशा ।

अंगल आगल, अंगल आगल, अंगल आगल (क) अ.— यदा-कदा, कभी-कभी, जब-तब ।

अंगल आगल (क) सं.— यातना या अनिष्ट का बहाना ; आत्महत्या करने की धमकी ।

—गार (क) सं.— वह मनुष्य जो इस प्रकार का बहाना करता है या धमकी देता है ।

अंगल आगल (तद्) वि.— अंगाध (तद्) ।

अंगल आगल (सम्) वि.—आगे आनेवाला, भविष्य का । —क (सम्) वि.— भविष्य से संबंधित, भविष्य का ।

अंगल आगल (सम्) सं.— दे. अंग ।

अंगल आगल (क) क्रि.— होने दे, बना, उत्पन्न कर, उठा ; समाप्त कर, उठा, समाप्त कर ।

अंग आगु (क) क्रि.— हो, (उत्पन्न) हो ; (प्रादुर्भाव) हो ; (पूर्ण) हो, (पूरा) हो, (समाप्त) हो ; (संभव) हो ; (बढ़), बन ; (तैयार) हो ; योग्य हो, (जगह) बना, हो जा, (संबंधित) हो, (निर्णय पर) पहुँच ।

कुछ उदा.— अंगल आगुत्तदे होता है, अंगल आगुत्तु, अंगल आगुत्तु-हुआ, अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा । अंगल आगुत्तु-होगा ।

अक्षर आच्छन्न (सम्) वि.— ढका हुआ, बंद, पहना या ओढ़ा हुआ ।
 अक्षर आच्छाद (सम्) सं.— कपड़ा, वस्त्र ।
 अक्षर आच्छादन (सम्) सं.— ढकनेवाली वस्तु, कपड़ा, वस्त्र, परदा, चादर, ओढ़नी ।
 अक्षर आच्छेद (सम्) वि.— कटा हुआ । सं.— भाग, टुकड़ा ।
 अक्षर आच्य (सम्) वि.— झुका हुआ, नमित ।
 अक्षर आजन्म (सम्) अ.— जन्म से मृत्यु तक, जीवन भर ।
 अक्षर आजन्त (सम्) अ.— अजन्त, हमेशा, सदा ।
 अक्षर आजानुबाहु (सम्) सं.— घुटनों तक लंबे हाथवाला ।
 अक्षर आजानेय (सम्) सं.— कुलीन, सद्बंशज ।
 अक्षर आजि (सम्) सं.— युद्ध, लड़ाई ; रणक्षेत्र । — रंग (सम्) सं.— युद्ध भूमि ।
 अक्षर आजिव (सम्) अ.— दे. अक्षर ; आजिविका, पेसा ; जैन शिक्षुक । — क (सम्) सं.— जैन (या बौद्ध) शिक्षुक ।
 अक्षर आजसि (सम्) सं.— आज्ञा, अनुमति, अनुशा ।
 अक्षर आज्ञा (सम्) सं.— अनुमति ; आदेश, हुकम ; शासन ; विश्वास दिलाना ; न्याय या इंद्रविधान । — धारक (सम्) सं.— आज्ञा या हुकम के अनुसार चलनेवाला, विनम्र सेवक । — पना, पने (सम्) सं.— अनुमति ; आदेश ।
 अक्षर अज्य (सम्) सं.— ची ।
 अक्षर आट (क) सं.— खेल, क्रीडा ; विनोद, तमाशा ; नाटक, सिनेमा ; जुआ ; सरल-संलाप ; बोलना, ध्वनि ; भाववाचक प्रत्यय-जैसे— आटल, आटले, आटलू, आटलू, आटले (क) सं.— चारों ओर घूमना ।
 अक्षर आटविक (क) सं.— खिलाड़ी ; अभिनेता, नर्तक ; जुआरी ; धोखेबाज़ ; धूर्त, भयोग्य ।
 अक्षर आटविक (सम्) सं.— वनवासी ; लकड़हारा ।
 अक्षर आटर् (क) क्रि.— आक्रमण कर ।
 अक्षर आटलिक (क) सं.— दे. अक्षर ।
 अक्षर आटलिक (क) सं.— दे. अक्षर ।
 अक्षर आटि (क) सं.— खिलाड़ी ; जुआरी । सं.— एक पक्षी (Turdus ginginianus) ।
 अक्षर आटिके, अक्षर आटिके (क) सं.— खेल । भाववाचक प्रथय । उदा.— आटिके

संकर—पिछी को तो क्रीडा है (पर) चूहे के प्राण संकर में हैं (कह.) । — कायि कायि गायि (क) सं.— खेल में उपयोग किया जानेवाला अक्ष पास आदि (a die or piece at chess). — गार (क) सं.— खेलनेवाला, खिलाड़ी । — गीत (क) सं.— एक छंद का नाम । — पाट (क) सं.— खेल-कूद (अनुरणन शब्द) । — मने, मनेगलु (क) सं.— चौक, खेल के लिए देखा खींचकर बनाया जानेवाला चौक । — वाटकूट (क) सं.— नृत्य और गीतों का मेला, समारोह जहाँ नृत्य और गीत होते हैं ।
 अक्षर आटक (क) सं.— खेल, क्रीडा, विनोद ।
 अक्षर आटकार्ति, अक्षर आटगार्ति (क) सं.— खेलने या नाचनेवाली स्त्री, अभिनय करनेवाली (मै.प्र.) ।
 अक्षर आटगार (क) सं.— खिलाड़ी, जुआरी, अभिनेता । — आटगारि (स्त्री.लिं.) ।
 अक्षर आटगुलि, अक्षर आटगुलि (क) सं.— सदा खेलनेवाला, खिलाड़ी ; जुआरी ; नर्तक ; अभिनेता ।
 अक्षर आटरुष (तद्) सं.— अटरुष (तद्) दे. अक्षर ।
 अक्षर आटल, अक्षर आटले, अक्षर आटलू, अक्षर आटले (क) सं.— चारों ओर घूमना ।
 अक्षर आटविक (क) सं.— खिलाड़ी ; अभिनेता, नर्तक ; जुआरी ; धोखेबाज़ ; धूर्त, भयोग्य ।
 अक्षर आटविक (सम्) सं.— वनवासी ; लकड़हारा ।
 अक्षर आटर् (क) क्रि.— आक्रमण कर ।
 अक्षर आटलिक (क) सं.— दे. अक्षर ।
 अक्षर आटलिक (क) सं.— दे. अक्षर ।
 अक्षर आटि (क) सं.— खिलाड़ी ; जुआरी । सं.— एक पक्षी (Turdus ginginianus) ।
 अक्षर आटिके, अक्षर आटिके (क) सं.— खेल । भाववाचक प्रथय । उदा.— आटिके

बूटाटिके—दिखावा, आटिके—दंभ, आटिके—पुंटाटिके—दृष्टता-दृष्टता ।
 अक्षर आटिसु (क) क्रि.— माँग, प्रार्थना कर ; इच्छा कर, कामना कर ।
 अक्षर आटु (क) क्रि.— खेल, क्रीडा कर, गतिशील रह, घूम, हिल, हुल, लटक । अ.— उतना, उस परिमाण में ।
 अक्षर आटोप (सम्) सं.— अभिमान, गर्व, दंभ ; आत्मश्लाघा ; रगड़ ; संभ्रम, आटिके ; अक्षर ।
 अक्षर आटिगि (तद्) सं.— अटिगि (तद्) । स्त्री ; पत्नी ।
 अक्षर आटिके (सम्) सं.— असिमान, सद्, भौद्धिक ; दिखावट, नाहरी वेश ; गर्जन, नाद, वज्र-नाद ; रोष, क्रोध ; हर्ष, आनंद ; रणवाच्य ; राशि, ढेर, समूह ; प्रारंभ, समारंभ ; छोटा हाथी, गज शायक ।
 अक्षर आटलु (तद्) सं.— दे. अक्षर ।
 अक्षर आटसोरे (तद्) सं.— अटरुष : (तद्) दे. अक्षर ।
 अक्षर आटसोरे (तद्) सं.— दे. अक्षर ।
 अक्षर आटलत, अक्षर आटले, अक्षर आटलित, अक्षर आटलिते (क) सं.— शासन, अधिकार, प्रबंध, व्यवस्था, शासनाधिकार, सलतनत ।
 अक्षर आटि (क) प्र.— 'वाला' सूचक प्रत्यय । आटि उंडाडि (केवल) खानेवाला (अर्थात् भोजन के ही लायक, सुस्त, वेवकृफ) । आटि ओडनाडि—साथ रहनेवाला, मित्र ।
 अक्षर आटिके (क) सं.— गति, खेल, बोल । प्र.— शब्द के अंत में लगता है, जैसे आटिके—लड़ाई (लड़ाई-झगड़ा-भाववाचक) ।
 अक्षर आटिगि (क) सं.— घूमने-फिरनेवाला, तमाशा करनेवाला, खेलनेवाला, नाचनेवाला, बोलनेवाला आदि का द्योतक । संज्ञा या क्रिया के अंत में अक्षर जोड़कर 'वाला' अर्थ की व्यंजना की जाती है । उदा.— आटिगि

उंडाडिग ('उण्'-खा, धातु है) - खानेवाला (सुस्त या वेकार मनुष्य)। नाडडिग नाडाडिग ('नाडु'-ग्राम या वस्ती)-गाँव-गाँव (या जगह-जगह) घूमनेवाला।

ढिऱ आडिऱ (क) सं.— तकलीफ़, कष्ट।

डिसु अडिसु (क) क्रि.— (खेल) खिला,

क्रीडा करा; घुमा; नचा, अभिनय करा;

(बोल) बुला; गतिमान कर (प्रे.)। असनु

डोऱड अडिसुअनु अवनु कोति आडिसुतानु

—वह बंदर से खेल करता है। इस शब्द के

साथ असनु अवनु (ए.व.) अथवा असनु

अवरु (व.व.) जोड़कर 'वाला' अर्थ की

च्यंजना की जाती है, जैसे—इरडरे अडिसु

नचानेवाला; डोऱड अडिसुअनु कोति

आडिसुअवरु—बंदर से क्रीडा करानेवाले।

—नक विक्के (क) सं.— क्रीडा कराने, नचाने

आदि की क्रिया।

अडुआडु (क) क्रि.— खेल; क्रीडा कर; घूम,

लटक, हिल; नाच, अभिनय कर; बोल,

कह; अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनुअनु आडुसोऱे (तद्) सं.— दे. अडुअनुअनु.

अडुअनु आडुह (क) कृ.— खेलनेवाला, क्रीडा करनेवाला, नाचनेवाला आदि।

अडुअनु आडेलु (क) सं.— उल्लू; आदि, पक्षी विशेष।

अडुअनु आडुक (क) सं.— खॉड या वैल का नथना।

अडुअनु आडुक (सम्) सं.— परिमाण विशेष, द्रोण नामक तौल का चतुर्थांश, लगभग

7 lbs. 11 ozs. का परिमाण। —अडुअनु आडुकि (सम्) सं.— अरहर, तुवरी।

अडुअनु आडुय (सम्) वि.— धनी, धनवान, संपन्न। सं.— ऐश्वर्य, संपत्ति। अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु अडुअनु अडुअनु अडुअनु, अडुअनु

अडुअनु आणे (क) सं.— शपथ, कसम। अडुअनु आणव, अडुअनु आणम, अडुअनु अडुअनु अडुअनु (क) सं.— शावक, प्रभु, स्वामी, मालिक, पति।

अडुअनु आत (क) सर्व.— वह (पु.लिं.) के बदले अडुअनु का प्रयोग होता है जो आदर सूचक है।

अडुअनु आतु? आत याह— वह कौन है? अडुअनु आतु, आतने इंद्र— वही इंद्र है।

अडुअनु आतंक (सम्) सं.— रोक, विघ्न, अडुअनु अडुअनु; रोग, बीमारी; भय, भीति; घंटा, मृदंग अदि का नाद; दूत। —अडुअनु

अडुअनु आत (सम्) सं.— निर्बल, रोगी, कृब। —अडुअनु (सम्) क्रि.—अडुअनु उत्पन्न कर।

अडुअनु आतत (सम्) वि.— विस्तृत, फैला हुआ, आया हुआ।

अडुअनु आततायि (सम्) सं.— महापापी, अपराधी; चोर, हत्यारा।

अडुअनु आतप (सम्) सं.— गरमी, घाम, सूर्य का प्रकाश। —अडुअनु, अडुअनु अडुअनु (सम्) सं.— छतरी, छाता। —अडुअनु वारण (सम्) सं.— छाता, छतरी।

अडुअनु आतपन (सम्) सं.— शिव।

अडुअनु आतर (सम्) सं.— नाव की उतराई, महसूल, भाड़ा, मार्गव्यय।

अडुअनु आतियेय (सम्) सं.— अतिथि के योग्य, अतिथि का सत्कार।

अडुअनु आतिय (सम्) सं.— मेहमानदारी, अतिथि-सत्कार।

अडुअनु (सम्) सं.— लकड़ी या लट्टों का वेड़ा; चौघड़ा।

अडुअनु आतु (क) कृ.— 'अनु' 'आनु' धातु का भूतकालिक कृदंत रूप। दे. अनु।

अडुअनु आतुर (सम्) सं.— रोगी; गड़बड़ी, जल्दबाजी।

अडुअनु आतुरिय (क) सं.— शीघ्रता, जल्दबाजी।

अडुअनु आतुष्टि (सम्) सं.— पूर्ण वृत्ति।

अडुअनु आते (क) सं.— एक कीड़ा, टंडन Cockroach. (मै. प्र.)।

अडुअनु आते (क) सं.— एक कीड़ा, टंडन Cockroach. (मै. प्र.)।

अडुअनु आते (क) सं.— एक कीड़ा, टंडन Cockroach. (मै. प्र.)।

७३०९८ आतोद्य (सम्) सं.—मुरली, चीणा, मृदंग आदि वाद्य ।

७३१ आत्त (सम्) वि.—लिया हुआ, प्राप्त, माना हुआ, आकर्षण किया हुआ, निकाला हुआ ।

७३१००० आत्तगंध (सम्) वि.—सूँधा हुआ ; आक्रमण किया हुआ ; शत्रु से पराजित ।

७३१००१ आत्तगर्व (सम्) वि.—नीचा दिखलाया हुआ, अपमानित, तिरस्कृत, अधःपतित ।

७३१००२ आत्तदंड (सम्) वि.—राजदंड पकड़ा हुआ, अधिकारी ।

७३१००३ आत्तमनस्क (सम्) वि.—अत्यंत आनंद के कारण जो आत्मविस्मृति हो ।

७३१ आत्म (सम्) सं.—आत्मा, जीव ; परमात्मा ; मन ; बुद्धि ; मननशक्ति ; स्फूर्ति ; मूर्ति, स्वरूप ; उद्योग, सावधानी ; पुत्र ; सूर्य ; अग्नि ; पवन ; विशेषता, लक्षण ; स्वभाव, प्रकृति । ७३१००४ आत्माराम (सम्) सं.—सत्यज्ञान के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति । —७३१००५ उद्भव (सम्) सं.—

पुत्र, काम । —७३१००६ उपजीवि (सम्) सं.—अपने परिश्रम से जीवन निर्वाह करनेवाला, नट । —७३१००७ गत (सम्) वि.—अपने

मन में विचार करनेवाला । —७३१००८ घात (सम्) सं.—आत्महत्या । —७३१००९ जन्म, प्रभव (सम्) सं.—पुत्र ।

७३१०१० जा, जाते (सम्) सं.—पुत्री । —७३१०११ विद्वि (सम्) सं.—

ऋषि, मुनि । —७३१०१२ त्याग (सम्) सं.—स्वार्थ त्याग, अपना बलिदान, मृत्यु । —७३१०१३ राण (सम्) सं.—अपनी रक्षा । —७३१०१४

द्रोहि (सम्) वि.—अपने ऊपर अत्याचार करनेवाला । —७३१०१५ निंदे (सम्) सं.—अपनी निंदा आप करना । —७३१०१६ निवेदन

(सम्) सं.—आत्मसमर्पण, अपने आपको समर्पण करना । —७३१०१७ निष्ठे (सम्) सं.—

आत्मज्ञान में आसक्ति । —७३१०१८ प्रशंसे (सम्) सं.—अपनी प्रशंसा आप करना ।

—७३१०१९ बांधव (सम्) सं.—नातेदार,

आप्त, मित्र । —७३१०२० बोध (सम्) सं.—आत्मज्ञान । —७३१०२१ योनि (सम्) सं.—ब्रह्मा, शिव, विष्णु, काम ; पुत्र ।

—७३१०२२ लाभ (सम्) सं.—जन्म, उत्पत्ति । —७३१०२३ वंचक (सम्) वि.—अपने

आपको धोखा देनेवाला । —७३१०२४ वश (सम्) सं.—आत्मसंयम, आत्मशासन । —७३१०२५

विद्वि (सम्) सं.—बुद्धिमान, योगी । —७३१०२६ वीर (सम्) सं.—पुत्र ; साला (पत्नी का भाई) । —७३१०२७ शक्ति (सम्) सं.—

स्वतंत्र शक्ति, अपनी सामर्थ्य । —७३१०२८ स्तुति (सम्) सं.—अपनी प्रशंसा, अपनी बढ़ाई । —७३१०२९ संयम (सम्) सं.—

अपने आप पर अधिकार, आत्मवशात्त्व । —७३१०३० संभवा (सम्) सं.—पुत्री ; बुद्धि । —७३१०३१ हित (सम्) सं.—अपना लाभ, अपना कल्याण ।

७३१०३२ आत्मार्पण (सम्) सं.—अपना बलिदान, आत्मसमर्पण ।

७३१०३३ आत्मिक, ७३१०३४ आत्मक (सम्) वि.—अपना, अपने से संबंधित ।

७३१०३५ आत्मीय (सम्) सं.—अपना, अपने से संबंधित, अत्यंत निकट का ।

७३१०३६ आत्रेय (सम्) सं.—अत्रि के वंशज । —७३१०३७ यी (सम्) सं.—अत्रि की पत्नी ; रजस्वला स्त्री ।

७३१०३८ आथर्वण (सम्) वि.—अथर्व वेद से संबंधित, अथर्व वेद का । सं.—जादूगर ।

७३१०३९ आद (क) अ.—संबंध सूचित करने के लिए इसका प्रयोग होता है ('अगः'—'हो',

घातु—मूल्य रूप) । ७३१०४० आत्मीय-राद—जो आत्मीय हैं, वे ; अगलवाद्—जो चौड़ा है, वह (अर्थात् चौड़ा) ।

७३१०४१ आदडे, ७३१०४२ आदोडे (क) अ.—होने पर ।

७३१०४३ आद (क) अ.—अधिकतर, विशेषकर, मुख्यरूपेण, फिर ।

७३१०४४ आदर, ७३१०४५ आदरणे (सम्) सं.—सम्मान, गौरव, इज्जत । ७३१०४६

आदरणीय (सम्) वि.—मान्य, सम्मान्य । ७३१०४७ आदरिसु (सम्) क्रि.—आदर कर, सम्मान कर, इज्जत कर ।

७३१०४८ आदरातिथ्य (सम्) सं.—आदर-सत्कार ।

७३१०४९ आदरक (सम्) सं.—दुःखी या संकट में सहायता करनेवाला ।

७३१०५० आदर्षिसु (सम्) क्रि.—घमंड चूर-चूर कर ; पीड़ा उत्पन्न कर, तंग कर ।

७३१०५१ आदर्श (सम्) सं.—नमूना, बानगी ; दर्पण, आईना ; ध्येय, लक्ष्य । —७३१०५२ वादि (सम्) सं.—लक्ष्य या आदर्श के अनुसार चलनेवाला ।

७३१०५३ आदले (क) सं.—ललाट, माथा । ७३१०५४ आदातु (क) क्रि.रू.—(अगः—हो,

घातु से) संदिग्धता का बोधक जिसका अर्थ है—हो सकता है, हो सकेगा आदि । उदा.—

अवधु अवधुवावधु अवधु अरसनादातु—वह राजा हो सकेगा (पु. लिं., ए. व.) ।

७३१०५५ आदातु (स्त्री.लिं., ए.व.), ७३१०५६ आदीतु (न.लिं., ए.व.), ७३१०५७ आदारु (पु.लिं., व.व.) तथा ७३१०५८ आदातु (न.लिं., व.व.) का प्रयोग भी द्रष्टव्य है । उदा.—

अवधु अवधु अवधु अवधु राणि आदातु—वह (शायद) रानी होगी अथवा वह रानी हो सकेगी । ७३१०५९ आदेलस आदेलस आदीतु—वह काम शायद (पूरा) होगा या

वह काम पूरा हो सकेगा । अवधु अवधु अवधु अवधु अवधु दोडुवरु आदारु—वे बड़े हो सकते हैं । ७३१०६० आदेलस अवधु हणुगलु आदातु—वे शायद फल होंगे ।

७३१०६१ आदाय (सम्) सं.—आमदनी, उत्पत्ति, लाभ ।

७३१०६२ आदि (सम्) वि.—प्रथम, प्रारंभिक ; मुख्य, प्रधान, प्रसिद्ध । सं.—मूल, प्रारंभ । —७३१०६३ कर्त्तु (सम्) सं.—ब्रह्मा । —७३१०६४

कवि (सम्) सं.—प्रथम कवि, वाल्मीकि । —७३१०६५ ज (सम्) सं.—प्रथम उत्पन्न । —७३१०६६ पर्व (सम्) सं.—महाभारत का प्रथम खण्ड । —७३१०६७ पुरुष (सम्) सं.—विष्णु ।

०८०८१० आदिकारण

—सम् (सम्) वि.—प्रथम, आदिकालीन ।
—उक्ति शक्ति (सम्) सं.—मायाशक्ति,
दुर्गा, पार्वती ।—शेष शेष (सम्) सं.—
नागराज, सर्पराज ।

०८०८१० आदिकारण (सम्) सं.—मूलकारण ।
०८११०० आदिकेशव (सम्) सं.—विष्णु ।
कन्नड के प्रसिद्ध भक्त कवि कनकदास जी के
इष्टदेव आदिकेशव हैं । बेलूर के जगत् प्रसिद्ध
मंदिर के भगवान का नाम आदिकेशव है ।

०८११०० आदिगर्भेश्वर (सम्) सं.—
जन्म से ही धनवान ; बहुत संपन्न परिवार में
उत्पन्न व्यक्ति ।

०८११०० आदितेय (सम्) सं.—अदिति के
पुत्र, देवता ।

०८११०० आदित्य (सम्) सं.—सूर्य, देवता ।

०८११०० आदिष्ट (सम्) वि.—आज्ञापित,
कथित ।

०८११०० आहुणिक (क) सं.—चुन-चुनकर
खानेवाला, भिक्षुक ; कृपण, कंजूस ।

०८११०० आदेय (सम्) वि.—देने योग्य, दिया
जानेवाला (पदार्थ), स्वीकार योग्य ।

०८११०० आदेश (सम्) सं.—आज्ञा ; हुक्म ;
समाचार, खबर ; सूचना, निर्देश ; एक अक्षर
के बदले दूसरे अक्षर का आगमन (व्याकरण
में) ।—आदि (सम्) सं.—उपदेशक ;
भविष्य कहनेवाला ।

०८११०० आदत्त (सम्) वि.—सम्मानित, मान्य,
स्वीकृत, जिसको आदर दिया गया हो ।

०८११०० आद्य (सम्) वि.—प्रथम, प्रारंभ का,
पुरातन, प्राचीन ; बड़ा ; श्रेष्ठ ।—कवि
(सम्) सं.—आदि कवि, वाल्मीकि ।

०८११०० आद्योत (सम्) सं.—प्रकाश ;
चमक ।

०८११०० आधान (सम्) सं.—हवन की अग्नि
का स्थापन ; रखना ; लेना, प्राप्त करना ;
भीतर डालना ; बंधक, धरोहर, अमानत ;
पैदा करना, तैयार करना ।

०८११०० आधार (सम्) सं.—आश्रय, साहाय्य,
अवलंब, आसरा ; नींव, बुनियाद ।—
पीठ (सम्) सं.—विग्रह, स्तंभ आदि रखने
का अवलंब या बुनियाद ।

०८११०० आधि (सम्) सं.—व्यथा, चिंता, मनो-
रोग ।

०८११०० आधिक्य (सम्) सं.—अधिकता,
बहुतायत ; उन्नति, श्रेष्ठता, उत्कृष्टता ।

०८११०० आधिदैविक (सम्) वि.—देवताकृत,
देवताओं द्वारा प्रेरित ; प्रारब्ध से उत्पन्न ।

०८११०० आधिपत्य (सम्) सं.—अधिकार,
शासन, प्रभुता, स्वामित्व ; राज्य ।

०८११०० आधिभौतिक (सम्) वि.—पंच
भूतों से संबंधित ; जीव-जंतुओं से होनेवाली
पीड़ा ।

०८११०० आधीन (सम्) वि.—हाथ में आया
हुआ, वशीकृत ।

०८११०० आधुनिक (सम्) वि.—आजकल का,
नूतन, नवीन, वर्तमानकाल का ।

०८११०० आधृत (सम्) वि.—रखा हुआ, ऊपर
उठाय हुआ, सहारा दिया हुआ ।

०८११०० आधेय (सम्) सं.—बंधक, धरोहर,
गिरवी ।

०८११०० आधोरण (सम्) सं.—महावत ।

०८११०० आध्यात्म (सम्) वि.—आत्मा को
ही प्रधान किया हुआ, अपने में ही उत्पन्न ।
—इक (सम्) वि.—आत्मा से संबंधित ।

०८११०० आध्यान (सम्) सं.—शोक-स्मृति ;
दुःख, चिंता ।

०८११०० आध्यापक (सम्) सं.—अध्यापक,
शिक्षक, गुरु ।

०८११०० आनु (क) क्रि.—हो,
(संभव) हो, (संयुक्त), हो मिल, ठहर, (पूरा)
हो, (सामना) हो, झुक, धारण कर । सर्व-
में (ह. क.) ।

०८११०० आन (सम्) सं.—सौंस लेना, वायु को
भीतर खींचना ।

०८११०० आनक (सम्) सं.—नगाड़ा, बड़ा ढोल ;
गरजनेवाला वादल ।—
(सम्) सं.—नगाड़ा, भेरी ; वसुदेव,
श्रीकृष्ण के पिता ।

०८११०० आनत (सम्) वि.—झुका हुआ, नमित,
प्रणमित, नमस्कृत ।—
आनति-नमस्कार ।

०८११०० आनद्ध (सम्) सं.—ढोल, नगाड़ा ।

०८११०० आनन (सम्) सं.—मुख, चेहरा ।

०८११०० आनंद (सम्) सं.—हर्ष, प्रसन्नता ;
सुख, संतोष ।—
मय (सम्) वि.—
हर्षपूर्ण ; सं.—परब्रह्म ।—
कर (सम्)
वि.—प्रसन्न करनेवाला, तोष देनेवाला ।

—जल, बाष्प (सम्) सं.—
आनंद के कारण निकलनेवाले आँसू ।—
तुंदिल (सम्) वि.—हर्ष से पूर्ण,
प्रसन्नता के आधिक्य के कारण आत्मविस्मृत ।

०८११०० आनंदाश्रु (सम्) सं.—हर्षातिशय
के कारण निकलनेवाले आँसू ।

०८११०० आनय, ०८११०० आनयन (सम्) सं.—
लाना ।

०८११०० आनसु, ०८११०० आनिसु (क) क्रि.—
लगा, मिला, संयुक्त कर, झुका, स्पर्श कर,
संबंधित रह ।

०८११०० आनिके (क) सं.—सहारा, आधार ;
भार ढोने का साधन ।

०८११०० आनिल (सम्) सं.—वायु पुत्र हनुमान
या भीम ।

०८११०० आनुकूल्य (सम्) सं.—अनुकूलता,
उपयुक्तता ; अनुग्रह, कृपा, दया ।

०८११०० आनुगुण्य (सम्) सं.—अनुकूलता,
समानता, वरावरी ।

०८११०० आनुपूर्वक, ०८११०० आनु-
पूर्वि (सम्) सं.—क्रम, रीति, परिपाटी ।

०८११०० आनुषंगिक (सम्) वि.—संबंधित,
अनिवार्य, आवश्यक ; गौण ।

०८११०० आने (क) प्र.—होसगन्नड (आधुनिक
कन्नड) में अन्य पुरुष सर्वनाम के पु.लि.,
पु.व. का सामान्य वर्तमान कालिक प्रत्यय ।
उदा.—
माहत्ताने-रहता है,
माहत्ताने-करता है ; (प्रायः न्या.भा.)

में) अन्य पुरुष सर्वनाम पु.लिं., ए.व. के भासन्न भूतकालिक प्रत्यय के रूप में इसका प्रयोग होता है, जैसे—*ಬಂದಾನೆ* बंदाने-आया है, *ಬಂದಾನೆ* होंगयाने-गया है। सं.—हाथी। *ಅನೇ ನೋಡಿ ನಾಥಿ ಬೊಗಲಿಡೆ ಹಾಣೆ-ಹಾಥಿ* को देखकर जैसे कुत्ता भूकता है (कहा.)। *ಅನೇ ಎತ್ತ, ಅಡು ಎತ್ತ?* आने एत्त, आडु एत्त—हाथी कहाँ, बकरी कहाँ? (कह.)। —*ಕಾಲು* कालु (क) सं.—पील पौव, एक रोग (Elephantiasis)। —*ಕಾಸು* कासु (क) सं.—एक सिंका जिस पर हाथी का चिह्न रहता था, आजकल यह अप्रचलित है (मै. प्र.)। —*ಕಜ್ಜಿ, ಗಜ್ಜಿ* गज्जि (क) सं.—बड़ी खुजली। —*ಗಡುಪು* गडुपु (क) सं.—हाथियों का समूह। —*ಗೊಲೆ ಗೋಲೆ* (क) सं.—बड़ी हत्या; हाथी को मारना। —*ಗೊಲಿ* गोली (क) सं.—हाथी को पकड़ने के लिए बनाया जानेवाला बड़ा गड़दा। —*ಜಂತು* जंतु (क) सं.—हाथी दाँत। —*ಗುಂದಿ* गुंदि (क) सं.—हंपि (विजयनगर) के पास तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित नगर जो इतिहास प्रसिद्ध है। —*ತಲೆ, ದಲೆ* तले, दले (क) सं.—हाथी का सिर। —*ಮಗಾಣಿ* मगाणि (क) सं.—एक प्राचीन सिंका। —*ದೋಲೆ ಕೋಲೆ* (गोले) दोलित कोलु (गोलु) (क) सं.—(महावत का) अंकुश (मै. प्र.)। —*ನಗ್ಗಲ ಮುಳ್ಳು* नेगल मुळु (क) सं.—एक पौधा-इधुगंधा, वन-श्रृंगार (The plant *Asteraentha longifolia*)। —*ಬಾಗಲು* (बागिलु) बागिलु (क) सं.—महल का प्रवेश-द्वार। —*ಮಯ್ಲಿ* मय्लि (क) सं.—एक बुरे प्रकार की चेचक की बीमारी। —*ಮರಿ, ವರಿ* (क) सं.—हाथी का दन्त। —*ಮುಸುಡು* मुसुडु (क) सं.—हाथी का मुख। —*ಮುಟ್ಟು* मुट्टु (क) सं.—हाथी का पद-चिह्न। —*ಮೊಗ* मोग (क) सं.—गणपति, गणेश। —*ಮೊಳ್ಳೆ* मोळे (क) सं.—बड़ा मच्छर (मै. प्र.)। *ಅನೇ* आने (क) सं.—*ಅನೇಕಲು* आनेकलु—भोला।

ಅನೇಗುಲಿ आनेगुलि (क) सं.—हाथी को मारने-वाला। (मै. प्र.)। *ಅನೆಯ* आनेय (क) सं.—जाल। *ಅನೇಶು* आनेशु (सम्) वि.—समीपस्थ, निकट रहनेवाला। *ಅನೇಶಿಕ* आनेशिक (सम्) सं.—तर्क शास्त्र, न्याय दर्शन; आत्मविद्या। *ಅನೇ* आप, *ಅನೇ* आप (क) वि.—समर्थ, शक्तिमान, संभव होनेवाला, सकनेवाला, गरजनेवाला। *ಅನೇ* आप (सम्) सं.—जल, पानी; धार्मिक उत्सव। —*ಗಾ* गा, *ಗೇ* गे (सम्) सं.—नदी, सरिता। *ಅನೇ* आपडे (क) अ.—होने पर, संभव हो तो, सकने पर। *ಅನೇ* आपण (सम्) सं.—दूकान, बाज़ार। —*ಇ* इक (सम्) सं.—दूकानदार, व्यापारी। *ಅನೇ* आपद, *ಅನೇ* आपद, *ಅನೇ* आपदे (अनै आपदु, अनै आपदु) (सम्) सं.—विपदा, विघ्न, संकट, दुःख, दर्द। *ಅನೇ* आपत्ति (सम्) सं.—प्राप्ति; संकट, विघ्न, दुःख, दर्द। *ಅನೇ* आपद्रत (सम्) वि.—विपदा में पड़ा या फँसा हुआ, संकटग्रस्त। *ಅನೇ* आपदसे (सम्) सं.—साधारण समय में शास्त्रविरुद्ध होने पर भी संकट के समय किया जानेवाला आचरण या कार्य, प्रसंग के अनुसार रीति-नीति। *ಅನೇ* आपनीतु (क) वि.—जितना संभव हो उतना, प्राप्ति या उपलब्धि के अनुसार। *ಅನೇ* आपन्न (सम्) वि.—प्राप्त, उपलब्ध, संकटग्रस्त। *ಅನೇ* आपन्नसत्वे (सम्) सं.—गर्भवती स्त्री। *ಅನೇ* आपस्, *ಅನೇ* आपः (सम्) सं.—जल, पानी। *ಅನೇ* आपस्तंभ (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम, कृष्ण यजुर्वेद के कर्ता।

ಅನೇ आपाटि (क) सर्व.—उतना, उस परिमाण में। प्रायः आश्चर्यसूचित करने के लिए इसका प्रयोग होता। *ಅನೇ* आपाಟಿ ಬಾಳೆ ಬಣ್ಣ ಇವೆಯಾ! अलि आपाटि बाळेहणु इदेया! —क्या वहाँ उतने केले हैं! *ಅನೇ* आपात (सम्) वि.—गिरना, पटकना; आक्रमण; अधःपतन; संभावित। —*ತ* तः (सम्) अ.—प्रारंभ से अंत तक; पूरा परीक्षा करके या ध्यान देकर देखना; अकस्मात्, अचानक, अंत में। *ಅನೇ* आपाद (सम्) अ.—पैरों से लेकर। सं.—दुःख का कारण; विपत्ति या संकट में फँसना। —*ಮ* मस्तक (सम्) अ.—पैरों से लेकर सिर तक। *ಅನೇ* आपादन, *ಅನೇ* आपादने (सम्) सं.—दोषारोपण; प्राप्ति; पहुँचना, लाना। *ಅನೇ* आपादित (सम्) वि.—दोषी, अपराधी। *ಅನೇ* आपान (सम्) सं.—मद्यपों की मंडली; कलारी की शराब की दूकान; अधिक शराब पी जाना। *ಅನೇ* आपार (सम्) सं.—व्यस्तता। *ಅನೇ* आपीड (सम्) सं.—सीसफूल; हार, माला; दवाना, निचोड़ना; तंग करना, घायल करना। *ಅನೇ* आपीन (सम्) सं.—थन। क.—हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा। *ಅನೇ* आपु (क) सं.—हाथी को खाने के लिए दी जानेवाली घास (Elephant grass or *Typha Eliphantina*) बड़ी लंबी घास; विराम या रुकने या ठहरने का स्थान, आधार, आश्रय; आकार। *ಅನೇ* आपूर (सम्) सं.—बहाव, धार; पूर्णता, भरती (भरना)। *ಅನೇ* आपूर्ण, *ಅನೇ* आपूरित (सम्) वि.—भरा हुआ, पूर्ण। *ಅನೇ* आपोशन (सम्) सं.—*ಅನೇ* अथन आपोचन (तद्); भोजन के प्रारंभ और अंत में पड़ा जानेवाला मंत्र विशेष, हथेली में

थोड़ा जल रखकर, भोजन के समय मंत्र पढ़कर पिया जानेवाला जल । — कालुष्यं दु हाकुवुदु (सम्) क्रि.— भोजन के लिए आये हुए अतिथि या अभ्यागत की हथेली में (भोजन करने के पूर्व) जल डालना (और तद्द्वारा भोजन करने की सूचना देना ।

ॐ आस (सम्) वि.— प्राप्त, मिला हुआ ; घनिष्ठ, अंतरंग, सच्चा, गोप्य ; युक्तियुक्त, समझदार । — मित्र (सम्) सं.— अंतरंग मित्र, घनिष्ठ मित्र, दिली दोस्त ।

ॐ आसि (सम्) सं.— प्राप्ति, उपलब्धि ; मिलन, भेंट ; परिपूर्णता, समाप्ति ; योग्यता, सम्मान ।

ॐ आप्य (सम्) वि.— प्राप्य, मिलनेवाला, पाने योग्य ।

ॐ आप्यायन (सम्) सं.— संतुष्ट करने की क्रिया, पूर्ण करने की क्रिया ; संतुष्टि, वृत्ति, ऐश्वर्य, उन्नति ।

ॐ आप्लाव (सम्) सं.— स्नान, डुबकी ; पूर्णता । — व्रत (सम्) सं.— स्नातक ; वह गृहस्थ जिसने ब्रह्मचर्य आश्रम छोड़कर गृहस्थाश्रम स्वीकार किया हो ।

ॐ आपीमु (अ.दे.) सं.— दे. — ॐ आपीमु ।

ॐ आप्बंध (सम्) सं.— बंधन ; बांधने की रस्ती, बँल को बांधने का रस्ता ; गहना, शृंगार ।

ॐ आपरु (अ.दे.) सं.— ॐ आपरु, ॐ आपरु, ॐ आपरु, ॐ आपरु, ॐ आपरु— दे. ॐ आपरु ।

ॐ आपल् (क) सं.— लाल कुमुद ।

ॐ आपा (क) सं.— योग्यता, उत्साह, वीरता, साहस । — केडि, गेडि (क) सं.— अयोग्य मनुष्य ; अति साधारण व्यक्ति ।

ॐ आपास (सम्) सं.— आपास (तद्) । तुच्छता, तिरस्कार, अशुद्धि (बोली की), कमी, दोष, खराबी ; हार, पराजय ।

ॐ आपुकारि (अ.दे.) सं.— दे. ॐ आपुकारि । ॐ आपुत्त (सम् ?) सं.— वहन का पति, वहनोई ।

ॐ आपुकारि (अ.दे.) सं.— दे. ॐ आपुकारि । ॐ आपुत्त (सम्) सं.— श्राद्ध (मै.प्र.) । वि.— वार्षिक, सालाना ।

ॐ आपु (अ.दे.) सं.— दे. ॐ आपु । ॐ आप (सम्) वि.— समान, तुल्य । सं.— प्रकाश, प्रतिबिंब ।

ॐ आपरण (सम्) सं.— गहना, आभूषण, शृंगार, ज़ेवर ; पालन-पोषण की क्रिया । ॐ आपण (सम्) सं.— आभाव, अधवसत आभावनते (सम्) सं.— स्थिति, गति, रीति ।

ॐ आपण (सम्) सं.— परस्पर कथोपकथन, बातचीत ; संबोधन ; चिल्लाना ।

ॐ आपण (सम्) सं.— चमक, दमक, झलक ; मिथ्याज्ञान ; भावना, तात्पर्य, अभिप्राय ; सादृश्य, समानता ।

ॐ आपण (सम्) सं.— चौंसठ देवगण का समूह ।

ॐ आपीर (सम्) सं.— अहीर, गोपालक । — पल्लि (तद्) सं.— अहीरों की बस्ती । ॐ आपीरि—अहीर स्त्री ।

ॐ आपील (सम्) सं.— भयंकर, भयावह, कठिन । — शील (सम्) सं.— भयंकर मनुष्य, उग्र प्रकृतिवाला मनुष्य ।

ॐ आपा, ॐ आपे (सम्) सं.— चमक, दमक, कांति, प्रकाश ; वर्ण, रंग, सौंदर्य ; प्रतिबिंब ; छाया, समानता ।

ॐ आपोग (सम्) सं.— भोगविलास, वृत्ति ; पूर्णता, विस्तार, चक्र, सीमा ; उद्योग, प्रयत्न ; झुकाना ; सांप का फैला हुआ फन ।

ॐ आपंतर (सम्) वि.— भीतरी, अंदर का, मध्यम ।

ॐ आप, ॐ आप् (क) सर्व.— हम (ह.क.) ।

ॐ आप (क) सं.— (कुम्हार का) भट्टा ।

ॐ आप (सम्) सं.— रोग, बीमारी ; अजीर्ण ; भूसी ; पृथक किया हुआ अनाज । — गंधि (सम्) सं.— कच्चे मांस की

या मुर्दे के जलने की गंध । — गंधि (सम्) सं.— कच्चे मांस की गंध ।

ॐ आपंड (तद्) सं.— एरण्ड ; (तद्) ; अरंडि का पौधा ।

ॐ आपदु (अ.दे.) सं.— आमद ; आमदनी ।

ॐ आपन (सम्) सं.— भूख ; खराबी, गदगी ।

ॐ आपनस्य (सम्) सं.— दर्द, पीड़ा । ॐ आपण (सम्) सं.— बुलावा, दावत, भोज, न्योता, स्वागत ।

ॐ आपय (सम्) सं.— रोग, बीमारी ; एक संचारी भाव (नागवर्मा के 'काव्यावलोकन' के अनुसार) । — भेद (सम्) सं.— एक प्रकार की बीमारी । ॐ आपय (सम्) वि.— बीमार, रोगी ।

ॐ आपर (सम्) सं.— अमरकोश (ग्रा.) । ॐ आपरु (सम्) सं.— आमामिसार, पेशिश ।

ॐ आपरण, ॐ आपण (सम्) अ.— मृत्यु तक, मरण पर्यंत ।

ॐ आपर्द, ॐ आपर्दन (सम्) सं.— कुचलने, पीसने, रगड़ने या मसलने की क्रिया ।

ॐ आपर्ष (सम्) सं.— क्रोध, अशांति ; मात्सर्य ।

ॐ आपलक (सम्) सं.— आँवले का वृक्ष ; आँवला ।

ॐ आपण (सम्) सं.— दे. ॐ आपण । ॐ आपण (सम्) सं.— मंत्री, सचिव, अमात्य ; सेनापति ।

ॐ आपण (सम्) सं.— अपक्व स्थान, उदरस्थ एक प्रकार की थैली, पेट ।

ॐ आपण (सम्) सं.— मट्टा, छौंछ ; गरम दूध में मट्टा डालकर उसे जमाना ।

ॐ आपण (सम्) वि.— मिला हुआ, जुड़ा हुआ, संलग्न ।

अभिषामिप (सम्) सं.— मौस; घूस, रिश्वत; इनाम; पुरस्कार; भोगविलास, प्रिय या मनोहर वस्तु; अमिलाषा, लालच; संभोग, कामेच्छा। अभिषामिपाशि (सम्) सं.— मौस खानेवाला।

अभिषामिस (तद्) सं.— अभिष (तत्)।

अभिषामीन (अ.दे.) सं.— अमीन।

अभिषामिनी (सम्) सं.— एक प्रकार का बड़ा खड़ा आम (मै.प्र.)।

अभिषामिक (सम्) वि.— मुक्त, छूटा; शिथिल; धारण किया हुआ; फेंका हुआ।

अभिषामिक (सम्) वि.— परलोक से संबंधित, परलोक का।

अभिषाम्यायण (सम्) सं.— सत्कल प्रसूत संतान।

अभिषामूल (सम्) अ.— मूल से, जड़ सहित, पूरा-पूरा। अभिषामूलाग्र— आदि से अंत तक, शुरू से आखिर तक।

अभिषामे, अभिषामे (क) सं.— कछुवा, कच्छप, कूर्म।

अभिषामैत्रि (सम्) सं.— मित्रता, स्नेह, हित।

अभिषामोद (सम्) सं.— हर्ष, प्रसन्नता; सुगंधि। — अभिषामोद (सम्) क्रि.— प्रसन्न रह।

अभिषाम्नाय (सम्) सं.— कालक्रमागत सदाचार या परंपरा; वेद; सद्देशज।

अभिषाम (सम्) सं.— आम का वृक्ष, आम; आमल। — अभिषाम कूट (सम्) सं.— एक पर्वत। — अभिषाम वन (सम्) सं.— आम का बगीचा।

अभिषामिदित (सम्) सं.— द्विरुक्ति, दो बार कहना।

अभिषामल, अभिषामिक (सम्) सं.— इमली का पेड़, इमली। अभिषामजनक (सम्) सं.— प्राणवायु, आक्सीजन।

अभिषाम्, अभिषाम्यु (क) क्रि.— मिला, चुन, हँद, तलाश कर। अभिषाम्युके (क) सं.— चुनाव, चयन।

अयं आय (सम्) सं.— आमदनी, लाभ, उत्पत्ति, कमाई।

अयं आय (क) सं.— मर्म, रहस्य; विवरण; परिमिति, नाप, माप; उपयुक्तता; तैयारी; आकार, स्वरूप; विस्तार; एकांत; सामर्थ्य; ठीक; वस्तु; ब्रह्मा। (सम्) सं.— कर, लगान; लाभ, उत्पत्ति, आय। — अभिषाम्यु कट्ट (क) सं.— उचित, उपयुक्त या ठीक स्थान, उपयुक्तता; बुनियाद, नींव; कुछ निश्चित रकम। — अभिषाम्यु कट्टगार (क) सं.— ठीक प्रकार से काम करनेवाला व्यक्ति। — अभिषाम्यु गार (क) सं.— बुद्धिमान या कुशल मनुष्य। — अभिषाम्यु गारि, अभिषाम्यु गार्ति (क) सं.— बुद्धिमान या कुशल स्त्री।

अयं आयःशूलिक (सम्) वि.— परिश्रमी, अध्यक्ष। सं.— अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जोरदार उपायों से काम लेनेवाला मनुष्य।

अयं आयत (सम्) वि.— विस्तृत, लंबा; बड़ा; मुड़ा हुआ, रुद्ध, घुमा हुआ; आकर्षित, सुंदर; योग्य, उपयुक्त। सं.— इष्ट लिंग-दीक्षा (वीरशैव-संप्रदाय के अनुसार)।

अयं आयतन (सम्) सं.— स्थान, घर, आश्रय; विश्राम स्थल, ठहराव; यज्ञशाला; मंदिर।

अयं आयतक्ष (सम्) सं.— विशाल नेत्रवाला पुरुष। — अभिषाम्यु इ (सम्) सं.— विशाल नयना स्त्री।

अयं आयतंबकि (सम्) सं.— विशाल नेत्रवाली स्त्री।

अयं आयति (सम्) सं.— लंबाई, विस्तार; प्रताप, महिमा, गौरव; उन्नति, वृद्धि; भविष्य, भविष्यत् काल; योग्य साधन विशेष, कर्म।

अयं आयतिके (सम्) सं.— श्रेष्ठता, महिमा, वैभव, संपन्नता।

अयं आयत्त (सम्) वि.— प्राप्त, सिद्ध, आश्रित, अधीन, वश में आया हुआ। (क) सं.— तैयारी।

अयं आयत्ति (सम्) सं.— सामर्थ्य, सीमा, मर्यादा।

अयं आयस (सम्) सं.— आयास (तत्); थकावट, श्रान्ति; तकलीफ।

अयं आयस (सम्) वि.— लोहे का, इस्पात का, धातु का।

अयं आयान (सम्) सं.— आगमन; विघ्न, कष्ट।

अयं आयाम (सम्) सं.— लंबाई, विस्तार, फैलाव।

अयं आयाम (सम्) सं.— थकावट, श्रान्ति, कष्ट।

अयं आयि, अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयकुत्ति, अयं आयकुत्ति (क) सं.— अन्न-संग्रह करनेवाला, शिक्षक; वह वस्तु जो खो गयी हो, छोड़ दी गयी हो, खराब हो गयी हो या खतरे में पड़ गयी हो, उसकी तलाशी, रक्षा या ग्रहण।

अयं आयिके, अयं आयिके (क) सं.— चुनने, हँदकर लेने की क्रिया, चुनाव।

अयं आयित्यार, अयं आयित्यार (क) सं.— इतवार, रविवार (मै.प्र.)।

अयं आयितु, अयं आयितु, अयं आयितु (क) क्रि.रू.— अयं आयितु-हो, धातु का भूतकालिक रूप जिसका अर्थ है 'हुआ'।

अयं आयिदा (अ.दे.) अ.— दे. अयं आयिदा।

अयं आयिल (तद्) प्र.— इसकी न्युरपत्ति संभवतः 'आरुड' (सम्) से है। यह संज्ञा का अर्थसूचक प्रत्यय है। उदा.— अभिषाम्यु आयिल (तद्) सं.— घोरारुड (तत्); घुड़सवार।

अयं आयिस, अयं आयिस (तद्) सं.— आयुष्य (तत्)। आयु, जीवन की अवधि, जीवन।

अयं आयिसु, अयं आयिसु (क) क्रि.— चुनाव, चुनवा (प्रे.)।

अयं आयु (सम्) सं.— जीवन की अवधि, जीवन।

००००० आयुक्त

००००० आयुक्त (सम्) वि.—नियुक्त, नियत ।
 सं.— मंत्री, सहायक, प्रतिनिधि ।
 ००००० आयुग (क) सं.— तलवार की मूठ ;
 मिलना ।
 ००००० आयुध (सम्) सं.— अस्त्र, शस्त्र,
 हथियार ।
 ००००० आयुधिक (सम्) सं.— आयुधधारी,
 योद्धा, सैनिक ।
 ००००० आयुरोग्य (सम्) सं.—
 आयु और आरोग्य, नीरोग जीवन ।
 ००००० आयुरेखे (सम्) सं.— आयु को
 सूचित करनेवाली रेखा या लकीर ।
 ००००० आयुर्दाय (सम्) सं.— दे. ००००० ।
 ००००० आयुर्वेद (सम्) सं.— भारतीय
 स्वास्थ्य या औषध विज्ञान (अथर्ववेद से
 इसका संबंध माना जाता है) ।
 ००००० आयुर्वेदी (सम्) सं.— वैद्य ।
 ००००० आयुर्होम, ००००० आयुर्होम
 आयुर्होम (सम्) सं.— दीर्घ आयु के
 लिए किया जानेवाला एक हवन ।
 ००००० आयुर्कर्म (सम्) सं.— सुन्दन,
 क्षौर ।
 ००००० आयुर्गमत् (सम्) सं.— दीर्घायु,
 पुत्र ।
 ००००० (तद्) सं.— आयुष्य (तत्) ।
 ००००० आयोग (सम्) सं.— नियुक्ति ;
 क्रिया ; समर्पण ; मनाना ; मिलाना ।
 ००००० आयोधन (सम्) सं.— युद्ध,
 समर ।
 ००० आर् (क) क्रि.—उच्च ध्वनि कर, चिल्ला ;
 मिल, संयुक्त हो, भर, पूरा हो ; सक, समर्थ
 हो ; डूब, निमज्जित हो । सं.— हल में
 जोता जानेवाला बैलों का जोड़ा ; काठ का,
 लकड़ी का टुकड़ा जो गाय-बैलों के गले में
 बांधा जाता है । सर्व.— प्रश्नवाचक पु. लिं.
 और स्त्री.लिं., ए.व. और व.व. 'कौन' ।
 ०००=०००, ०००००, ००००० ; उदा.—
 ००००० ००० इवन् आर्—यह कौन है ?
 ००० ०००० आर सुतं— किसका बेटा है ?
 (ह.क.) ।

००० आर (क) अ.—भर, पूर्ण । उदा.— ०००००
 ००००० कण्णार नोडु—आँखें भर (कर)
 देख, ०००००० ००००० किवियार केळु,—कान
 भर (कर) सुन, ०००००० ००००००
 मनस्सार दान कोडु—पूर्ण मन से दान दो ।
 (तद्) सं.— आगार (तत्) — स्थान ;
 उदा.— ०००००० भंडार-भंडागार, ००००००
 देवार—देवस्थान । सं.— निचुल, बेंत ।
 ००० आर (सम्) सं.— लोहा विशेष ; पीतल ;
 कोण, कोना ; मंगलग्रह ; शनिग्रह ।
 ००० आरक्त (सम्) वि.— लाल रंग का ।
 ००० आरक्ष (सम्) सं.—रक्षा, रक्षण, बचाव,
 पालन ।
 ००० आरज (सम्) सं.— संकोच ; इच्छा,
 अभिलाषा ; उत्साह, स्फूर्ति ।
 ००० आरट (सम्) सं.— नट, अभिनेता ।
 ००० आरड्ड (क) क्रि.— चिल्ला, झाड़, फेंक ।
 ००० आरडि (क) सं.—भ्रमर, मधुप ; प्रकाशन,
 रिपोर्ट ; अपयश ; शत्रुता ; कष्ट, तकलीफ ।
 —००० य (क) सं.— कामदेव ।
 ००० आरडिदे (क) सं.— कामदेव के
 धनुष की डोर ।
 ००० आरडिगोळु (क) क्रि.— भ्रमर-
 वृत्ति अपना, मधुप के जैसे संग्रह कार्य कर
 (लाक्ष.) ।
 ००० आरण्य, ००० आरण्यक (सम्)
 सं.— दे.— ००००० ।
 ००० आरत (सम्) वि.—शांत, संतुष्ट ; रुका
 हुआ ; सम्य ; समाप्त । सं.—काम, वृष्णा ।
 ००० आरति (सम्) सं.—रोकना, पकड़ना ;
 नीराजन, आरती ।
 ००० आरड्ड, ००० आरड्डु (क) सं.—
 गर्जन, उच्च ध्वनि ।
 ००० आरब्ध (सम्) वि.— आरंभ किया
 हुआ ।
 ००० आरंब, ००० आरंबु (क) सं.—कृषि,
 खेती-बाड़ी । — ००० गार (क) सं.—कृषक,
 किसान ।

००० आरंभ, ००० आरंभण (सम्) सं.—
 प्रारंभ, आरंभ, शुरुआत ; कर्म, कार्य ;
 शीघ्रता, तेजी । ००० आरंभिसु (सम्)
 क्रि.—प्रारंभ कर । ००० आरंभिसु-
 विके (सम्) सं.— आरंभ करना ।
 ००० आरय्, ००० आरय्यि, ००० आरय्यु
 आरय्यु (क) क्रि.— अन्वेषण कर, ढूँढ,
 तलाश कर ; सोच, विचार कर ; पोषण कर ।
 ००० आरयिके, ००० आरय्यके (क) सं.—
 संरक्षण ; रक्षा, सेवा ; परीक्षण ; देखरेख ;
 ढूँढ, तलाश ।
 ००० आरयिसु, ००० आरैसु (क) क्रि.—
 सुन ; ध्यान दे ; देखरेख कर ; इच्छा कर,
 आशा कर, शुभकामना कर ।
 ००० आरव (सम्) सं.— आवाज़, चिल्लाहट,
 गर्जन, गुर्राहट ।
 ००० आरवार (क) सं.— चिल्लाहट, गर्जन,
 गुर्राहट, हल्ला, शोरगुल ; अधिकार सहित
 भू-संपत्ति की गिरवी या बंधक ।
 ००० आरवे (तद्) सं.— आराम (तत्) ;
 बाग, बगीचा ।
 ००० आराजित (सम्) वि.— अलंकृत,
 शोभित, प्रकाशमान, कांतियुक्त । ००० आराजिसु
 आराजिसु (सम्) क्रि.— शोभित हो,
 प्रकाशमान हो, अलंकृत हो, प्रकट हो ।
 ००० आराति (सम्) सं.— अरि, शत्रु ।
 ००० आरातीय (सम्) वि.— प्राचीन,
 अतीत काल का ; शत्रु से संबंधित ।
 ००० आरात्रिक (सम्) सं.— नीराजन,
 आरती ।
 ००० आराधक (सम्) सं.— पूजा करने-
 वाला, भक्त ।
 ००० आराधन, ००० आराधने (सम्)
 सं.— पूजा, सेवा, प्रार्थना, संतुष्ट करने की
 विधि ; मृत संन्यासियों के उद्देश्य से प्रति
 वर्ष किया जानेवाला कर्म विशेष (श्राद्ध) ।
 ००० आराध्य (सम्) सं.— पूजा या सेवा
 के योग्य व्यक्ति या देवता ; वीरशैव-संप्रदाय
 के ब्राह्मण जो लिंगधारी होते हैं ।

अराम आराम (सम्) सं.— विश्राम, हर्ष; प्रसन्नता; वाग, बगीचा, फुलवारी; विश्राम स्थान।

अरामिक आरालिक (सम्) सं.— पाचक, रसोह्या।

अरामिक आरिद्र (सम्) सं.— छठवाँ नक्षत्र, नक्षत्रविशेष; एक बरसाती कीड़ा; इन्द्रगोप, बीरबहूटी।

अरामिक आरिय (तद्) सं.— आर्य (तत्); योग्य पुरुष।

अरामिक आरिवाल = अरामिक पारिवाल (क) सं.— कर्तृतर (मे. प्र.)।

अरामिक आरिसु (क) क्रि.— चुन, ढूँढ, तलाश कर, बाहर निकाल; शांत कर, बुझा; सुखा, शुष्क कर; वृत्त कर।

अरामिक आरु (क) क्रि.— सूख जा, बुझ, शांत हो; ऊँची आवाज़ से पुकार, चिह्न; सक, समर्थ हो। वि.—अधिकता, पूर्णता। (संख्या) परिमाण वाचक विशेषणों के अंत में अराम लगाकर इस अर्थ का बोध कराया जाता है। उदा.— सूर्य नूरारु-सैकड़ों, सूर्य साविरारु-हजारों। सर्व.— कौन (व. व.) दे. अराम।

अरामिक आरु (क) सं.— नदी। सं.— सुअर, कंकडा, कर्कट। (क) वि.—छः की संख्या। अरामिक आरुणि (सम्) सं.— एक मुनि का नाम।

अरामिक आरुड (सम्) वि.— सवार, चढ़ा हुआ, बैठा हुआ। सं.— मुक्ति, परम पद।

अरामिक आरु (क) सं.— वृक्ष विशेष, अग्निज्वाला या आँवले का पेड़। अ.— पूर्ण, भर का अर्थसूचक अण्यय जो शब्द के अंत में होता है। उदा.— अरु (अरु + अरु) नरु कणारे नोडु — आँखें भर (कर) देख। मरु मरु मनसार माडु— पूर्ण मन से कर। दे. अराम।

अरामिक आरु (सम्) सं.— मोची की रॉपी, चाकू। अरामिक आरुकार (क) सं.— पालक, रक्षक, पोषक।

अरामिक आरुदे (क) सं.— दरपोक, भीरु।

अरामिक आरुके (क) सं.— दे. अरामिक।

अरामिक आरु (क) क्रि. = अरामिक आरु—ढूँढ, तलाश लर, अन्वेषण कर, सोच, विचार कर।

अरामिक आरुगिसु, अरामिक आरुगिसु (क) क्रि.—भोजन कर, खाना खा, खा।

अरामिक आरुगण, अरामिक आरुगणे (क) सं.— भोजन, खाना।

अरामिक आरुग्य (सम्) सं.— स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती; कुशल, क्षेम।

अरामिक आरुप, अरामिक आरुपण, अरामिक आरुपणे (सम्) सं.— स्थापन, लगाना, मढ़ना; शिकायत, दोषारोपण; रोपना, बैठाना; धनुष पर रोदा चढ़ाना।

अरामिक आरुपि (सम्) सं.— वह, जिसपर दोष लगाया गया हो।—सु (सम्) क्रि.— दोषारोपण कर, शिकायत कर, निंदा कर; धनुष पर डोरी चढ़ा।

अरामिक आरुह, अरामिक आरुहण (सम्) सं.— सवार होने या ऊपर चढ़ने की क्रिया; चढ़ने का साधन, निसेनी, सीढ़ी; संगीत के सप्त-स्वरों का चढ़ाव; स्त्री की कमर।

अरामिक आरुहिसु (सम्) क्रि.— सवारी कर, चढ़, ऊपर चढ़।

अरामिक आरुहक (सम्) सं.— चढ़नेवाला, सवारी करनेवाला।

अरामिक आरुट, अरामिक आरुट (क) सं.— बीमार व्यक्ति की व्याकुलता या चिंता।

अरामिक आरुके (क) अ.— [अरामिक आरुके] उत्पन्न होने, सूखने या अधिक होने की स्थिति। उदा.— अरामिक आरुके—प्यास (प्यास के कारण मुँह का सूख जाना)।

अरामिक आरुसु (क) क्रि.— दे. अरामिक।

अरामिक आरुसु (क) क्रि.— डाल, लगा; उड़ा। उदा.— अरामिक आरुसु—गोली उड़ा।

अरामिक आरु (क) क्रि.— निकल, बाहर आ, बुझ, नष्ट हो; ठंडा हो, शांत हो, चुप हो; सूख जा, दूर हो। सं.— शक्ति; सामर्थ्य; साहस, श्रुता; दृढ़ता, दृढ, विरोध. वैर।

अरामिक आरु (क) वि.— छः की संख्या। क्रि.— उड़ (ग्रा.)।

अरामिक आरुके (सम्) सं.— अरुके का पुत्र— शनिग्रह; यम; राजा कर्ण; सुग्रीव; वैवस्वत मनु। ('शनिग्रह' ही प्रचलित अर्थ है।)

अरामिक आरुके (क) सं.— अरामिक आरुके— चिह्नाना, चिह्नाहट। अरामिक आरुके (क) क्रि.— पुकार, चिह्न, जोर से रो। अरामिक आरुकेसु (क) क्रि.— उच्च ध्वनि करा, रुला (प्रे.)।

अरामिक आरुके (सम्) वि.— दे. अरामिक।

अरामिक आरुकेसु (सम्) क्रि.— दे. अरामिक।

अरामिक आरुके (सम्) सं.— दे. अरामिक।

अरामिक आरुके (सम्) वि.— अस्वस्थ, पीड़ित, दुःखित।—सु (स्वर) (सम्) सं.— दुःख या दर्द का स्वर या ध्वनि। अरामिक आरुके (सम्) सं.— दुःख, पीड़ा।

अरामिक आरुके (सम्) सं.— दुःख, पीड़ा, दर्द, क्लेश; मानसिक चिंता; बीमारी, रोग।

अरामिक आरुके (तद्) सं.— आरुके: (तत्); आरुके।

अरामिक आरुके (क) अ.— पराक्रम से, सामर्थ्य से, सामने।

अरामिक आरुके (सम्) सं.— अरुके का पद।

अरामिक आरुकेसु (क) क्रि.— डरा, धमका; गर्जन कर।

अरामिक आरुके (क) क.— डूबकर; झाड़कर; गर्जन करके।

अरामिक आरुके (सम्) वि.— नम, तर, भीगा हुआ, गीला; हरा, रसीला; ताज़ा, नया; कोमल, नरम।

अरामिक आरुके (सम्) सं.— अदरक, हरी सोंठ।

अरामिक आरुके (सम्) सं.— छठवाँ नक्षत्र।

अरामिक आरुके (क) सं.— सामर्थ्य, शक्ति, बल, साहस।

अरामिक आरुके, अरामिक आरुके (क) क्रि.— बलहीन हो, तेजोहीन हो।

अर्धसं आर्धसु, अर्धसं आर्धसु (क) क्रि.— चिह्ना, जोर से पुकार, गर्जन कर।
 अर्ध आर्ध (क) सं.— जोर की पुकार, चिह्नाहट, गर्जन।
 अर्ध आर्ध, अर्ध आर्ध (क) सं.— दे. अर्ध।
 अर्ध आर्ध (सम्) सं.— सत्कुलज; श्रेष्ठ, उच्च, आदरणीय व्यक्ति; वृद्ध, बुजुर्ग; स्वामी; प्रभु, मालिक; आर्ध (जाति की) संतान; सूर्य; मित्र, दोस्त; अपने धर्म को मानने-वाला; प्रथम तीन वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य); गुरु, शिक्षक; वैश्य; ससुर; बुद्ध भगवान।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— मान्य व्यक्ति; पितामह। अर्ध आर्धक (सम्) सं.— कुलीन स्त्री, आदरणीय स्त्री।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— विख्यात वीजगणितज्ञ।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— दे. अर्ध।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— आर्ध स्त्री; पार्वती।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— आर्ध की निवास भूमि, हिमालय और विंध्य के बीच का भूभाग।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— संन्यासिनी; नानी या दादी; वृद्धा।
 अर्ध आर्धक (क) सं.— छ: व्यक्ति।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— विवाह का एक प्रकार। वि.— ऋषियों से संबंधित, ऋषियों का।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— बछड़ा, जो इतना बड़ा हो कि काम में लाया जा सके या सौंड बनाकर छोड़ा जा सके।
 अर्ध आर्धक (क) सं.— अर्ध आसु, अर्ध आच। दे. अर्ध।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— जैनी, जैनियों का सिद्धांत, जिन।
 अर्ध आर्धक (क) क्रि.— कान लगाकर सुन; जोर से पुकार, गर्जन कर।

अर्ध आर्ध, अर्ध आर्ध (क) सं.— बरगद, वटवृक्ष। अर्ध आर्ध, अर्ध आर्ध, अर्ध आर्ध, अर्ध आर्ध आलकके हूविह, सालकके कोने इह— बरगद के फूल नहीं (होते), उधार का अंत नहीं (कह)।
 अर्ध आर्ध (क) सं.— लाल कमल या कुवलय।
 अर्ध आर्ध (सम्) सं.— मछली आदि के अंडे; हरताल; चौड़ाई, विस्तार; बिच्छू की पूँछ।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— हाथी बांधने का खंभा, खंटा या रस्ता; गजस्तंभ।
 अर्ध आर्धक, अर्ध आर्धक (सम्) सं.— अवलंब, आश्रय, सहारा; रस में विभाग विशेष। अर्ध आर्धक अर्ध आर्धक विभाव—रसनिष्पत्ति का एक मुख्य अंग।
 अर्ध आर्धक (सम्) वि.— आश्रित, सहारा या आधार पाया हुआ, लटका हुआ।
 अर्ध आर्धक (सम्) क्रि.— सहारा पा, आश्रय में जा, लटक।
 अर्ध आर्धक, अर्ध आर्धक (सम्) सं.— यज्ञ में पशु की बलि; स्पर्श; पकड़ना; वध, हत्या।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— स्थान, घर; आधार।
 अर्ध आर्धक, अर्ध आर्धक, अर्ध आर्धक (क) क्रि.— सुन, ध्यान दे, ध्यानपूर्वक सुन।
 अर्ध आर्धक (सम्) वि.— सुंदर, मनोहर।
 अर्ध आर्धक, अर्ध आर्धक (तद्) सं.— आलावर्त (तद्); पंखा, न्यजन, तालवृन्तक।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— पेड़-पौधों की जड़ में खींचने के लिए बनाया जानेवाला छोटा गड्ढा; आलवाल, थाला, खोडुआ।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— सुस्त या आलसी मनुष्य।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— सुस्ती, काम करने से भागने की प्रवृत्ति, थकावट; सुस्त या मूर्ख मनुष्य। — गार (सम्) सं.—

आलसी मनुष्य; रोगी। — तन (सम्) सं.— सुस्ती।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— दे. अर्ध।
 अर्ध आर्धक, अर्ध आर्धक आलापना, अर्ध आर्धक (सम्) सं.— वार्तालाप, कथोपकथन, संभाषण; कथन, वर्णन; तान, संगीत के सप्त स्वरों का साधन।
 अर्ध आर्धक (सम्) क्रि.— वार्तालाप कर, संभाषण कर; तान दे, संगीत के सप्त स्वरों की साधना कर; विलाप कर, शोक कर (से.प्र.)।
 अर्ध आर्धक (क?) सं.— कुहड़ा।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— व्यजन, पंखा।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— मगर, मकर।
 अर्ध आर्धक (क) सं.— पानी की वृद्ध; ओला; कनीनिका, आँखों का तारा; आँखों का फड़ फाड़ना।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— सखी, सहेली; अवलि. पंक्ति, रेखा; पुल, सेतु, बांध; भ्रमर; बिच्छू; इच्छा, अभिलाषा; ईमानदारी, शुद्ध मन।
 अर्ध आर्धक, अर्ध आर्धक (सम्) सं.— मिलन, चिपटना, गले लगाना, परिरंभण। अर्ध आर्धक (सम्) क्रि.— परिरंभण कर, गले से लगा।
 अर्ध आर्धक (सम्) सं.— दे. अर्ध।
 अर्ध आर्धक (क) क्रि.— दे. अर्ध।
 अर्ध आर्धक (सम्) वि.— चाटा हुआ, छिलका निकाला हुआ। सं.— तीर चलाते समय खड़े होने की एक विधि।
 अर्ध आर्धक (सम्) वि.— पिघला हुआ, गला हुआ, चूर्ण बना हुआ।
 अर्ध आर्धक, अर्ध आर्धक (सम्) सं.— छोटा बर्तन; महाशेप, सर्पों का अधिपति।
 अर्ध आर्धक (क) सं.— वटवृक्ष; ओला; कान का निचला भाग; ईंख का रस निकालने का यंत्र, कोल्हू। — मने (क) सं.— गुड़ बनाने का घर या स्थान।

ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೇಖ್ಯ (ಸಮ) ವಿ.— ಲಿಖಾ ಜಾನೆ ಯೋಗ್ಯ, ಚಿತ್ರಣ ಕರ್ತೃ ಯೋಗ್ಯ | ಸಂ.— ಲೇಖ, ಚಿತ್ರಣ, ಚಿತ್ರ, ತಸ್ವೀರ |

ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೇಖನ (ಸಮ) ಸಂ.— ಲೇಪ, ಲೇಪನ, ಮಾಲಿಶ, ತಬಟನ |

ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೋಕ (ಸಮ) ಸಂ.— ದೃಷ್ಟಿ, ಚಿತ್ತವನ, ದರ್ಶನ; ಪ್ರಕಾಶ, ಕಾಂತಿ |

ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೋಕಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.— ದೇಖ, ಧ್ಯಾನಪೂರ್ವಕ ದೇಖ |

ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೋಚನ, ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೋಚನೆ (ಸಮ) ಸಂ.— ಸೋಚ, ವಿಚಾರ, ಮತ | ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೋಚಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.— ವಿಚಾರ ಕರ |

ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೋಡನ (ಸಮ) ಸಂ.— ಹಿಲಾನಾ, ಹಿಲಾನಾ-ಛಲಾನಾ, ಮಿಲಾನಾ, ಗಡಬಡ ಕರ್ತೃ; ಪೂರ್ಣರೂಪ ಸೇ ವಿಚಾರ ಕರ್ತೃ |

ಅಲಂಕಾರ ಕಾಲೋಲ (ಸಮ) ವಿ.— ಕಾಂಪನೆವಾಲಾ, ಅಸ್ಥಿರ, ಚंचಲ, ಹಿಲಾ-ಛಲಾ |

ಅವ ಆವ (ಕ) ಸರ್ವ.— ಕೌನ, ಕೌನ-ಸಾ, ಕೊಡೈ |
ಉದಾ.— ಅವ ಕಾರ್ಯಂ ಆವ ಕಾರ್ಯ—ಕೌನ-ಸಾ ಕಾರ್ಯ, ಅವ ಮೂಠು ಆವ ಮಾತು—ಕೌನ-ಸಾ ಮಾತ, ಅವ ಮೂರನಂ ಕೊಡನಂ ಆವಂ ಮೂರನಂ ಕೊಡನು—ಕಿಸನೆ ಮೂರ ಕೊ ಮಾರಾ (ಹ.ಕ.) |
ಅವನ್ ಆವನ್, (ಪು.ಲಿ., ಪ.ವ.)— ಕೌನ (ಪುಷ್ಯ) ಅವನ್ ಆವಲ್ (ಸ್ರೀ.ಲಿ., ಪ.ವ.)— ಕೌನ (ಸ್ರೀ); ಅವನ್ ಆವರ್ (ಪು.ಲಿ. ಔರ ಸ್ರೀ.ಲಿ., ಪ.ವ.)— ಕೌನ, ಅವನು ಆವುಡು (ನ.ಲಿ., ಪ.ವ.) ಅವನು ಆವುಡು (ನ.ಲಿ., ಪ.ವ.) |

ಅವಗಿ ಆವಗಿ, ಅವಗಿ ಆವಗಿ (ಕ) ಸಂ.— ಹಮೇಶಾ, ಜವ ಕಮಿ, ಆಗೇ, ಔರ ಅಧಿಕ |

ಅವಗಿ ಆವಗಿ (ಕ) ಸಂ.— ಕುಮ್ಹಾರ ಕಾ ಭದ್ರಾ |

ಅವಜನ ಆವಜನ (ಸಮ) ಸಂ.— ಬೀಜ ಬೋನೆ, ವಿಲೇರನೇ ಯಾ ಫೆಕನೇ ಕೀ ಕ್ರಿಯಾ; ಛಡಾ, ಭರ್ತನ |

ಅವಜ ಆವಜ, ಅವಜ ಆವಜ (ಸಮ) ಸಂ.— ಲಕನ, ಪದ್, ರೊಕ, ಛೇರಾ; ಚಹಾರದಿವಾರಿ; ಛಾಂಪನಾ, ಛಿಪಾನಾ, ಬಂದ ಕರ್ತೃ |

ಅವಜಿ ಆವಜಿ, ಅವಿ ಆವಿ (ಕ) ಸಂ.— ಭಾಫ, ಬಾಷ್ಪ; ಗರಮಿ |

ಅವಜಿ ಆವಜಿ (ಸಮ) ಕ್ರಿ.— ಆವೃತ್ತ ಹೊ, ಧಿರ ಜಾ, ಫೇಲಾ, ಛಿಪಾ, ಬಂದ ಕರ |

ಅವಜರ ಆವಜರ, ಅವಜರ ಆವಜರ, ಅವಜರ ಆವಜರ (ಸ.ದೇ.) ಸಂ.— ಹಿಸಾಬ-ಕಿತಾಬ ದೇಖನೆ ವಾಲಾ ಜಿಲಾಧಿಕಾರಿ |

ಅವಜರಸು ಆವಜರಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಜುಕಾ, ಜುಕಾ-ಕರ ಬಾಂಧ |

ಅವಜರ ಆವರ (ಸಮ) ಸಂ.— ಬೆವರ, ಧುಮಾವ, ಚಫರ, ಬಂದರ |

ಅವಜರನ ಆವರನ (ಸಮ) ಸಂ.— ಧುಮಾವ, ಚಫರ, ಬೆವರ; ಆವೃತ್ತಿ; ಧಾತುಗಳ ಕಾ ಗಲಾನಾ; ದಹಿ ಕಾ ಮಥನಾ |

ಅವಜ ಆವಲ್ (ಕ) ಸಂ.— ಲಾಲ ಕಮಲೆಗಳ ಕಾ ಸರೂವರ, ಲಾಲ ಕಮಲ |

ಅವಜಿ ಆವಲಿ, ಅವಜಿ ಆವಲಿಕೆ (ಸಮ) ಸಂ.— ಪಂಕ್ತಿ, ರೇಖಾ; ಕ್ರಮ; ಸಮೂಹ; ರಾಶಿ, ಡೇರ; ಯುಗಲ, ಯುಗ |

ಅವಜಿ ಆವಲಿಕ, ಅವಜಿ ಆವಲಿಕ (ಸಮ) ಸಂ.— ಒಕ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ ಯುಗ ಬಾಣ |

ಅವಜಿ ಆವಲಿತ (ಸಮ) ಸಂ.— ಥೊಡಾ-ಸಾ ಮುಡಾ ಹುಬಾ, ಜುಕಾ ಹುಬಾ |

ಅವಲಿ ಆವಲಿ, ಅವಲಿಯುಂ ಆವಲಿಯುಂ (ಕ) ಸ. — ಜಹಾ-ಕಹಾ, ಕಹಿ-ಕಹಿ, ಸರ್ವತ್ರ |

ಅವಜ ಆವಜ್ಯಕ (ಸಮ) ವಿ.— ಸಮಾಹ, ನಿಶ್ಚಿತ, ನಿರ್ಧಾರಿತ | ಸಂ.— ಅನಾಜ ಕಾ ಸಂಗ್ರಹ, ಪಕಾ ಹುಬಾ ಅನಾಜ |

ಅವಜ ಆವಜ್ಯ (ಸಮ) ಸಂ.— ಯಜ್ಞ ಕೀ ಪಂಚಾಕ್ಷಿ ರಖನೆ ಕಾ ಘರ ಯಾ ಸ್ಥಾನ |

ಅವಜ ಆವಹ (ಸಮ) ವಿ.— ಲಾನೇವಾಲಾ, ಮಿಲಾನೇ ವಾಲಾ, ಕಾರಣಭೂತ, ಉತ್ಪನ್ನ ಕರ್ತೃ |

ಅವಜಿ ಆವಜಿ, ಅವಜಿ ಆವಜಿಕೆ (ಸಮ) ಸಂ.— ಡೇ. ಅವಜಿ.

ಅವಜಿ ಆವಜಿ (ಕ) ಸ. — ಕವ, ಕಿಸ ಸಮಯ (ಹ.ಕ.) |

ಅವಜಿ ಆವಜಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ಬೀಜ ಬೋನೆ, ವಿಲೇರನೇ ಯಾ ಫೆಕನೇ ಕೀ ಕ್ರಿಯಾ, ಜಬಡ-ಖಾವಡ ಜಮೀನ, ಆಲಬಾಲ, ಛೊಡಾ ಗಡ್ಡಾ |

ಅವಜಿ ಆವಜಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ಧಿರಾವ, ಚಾರಿಗಳ ಔರ ಕಾ ಸ್ಥಾನ |

ಅವಜಿ ಆವಜಿತ (ಸಮ) ವಿ.— ಧಿರಾ ಹುಬಾ, ಆವೃತ್ತ, ಛಿಪಾ ಹುಬಾ |

ಅವಜಿ ಆವಜಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ದೇ. ಅವಜಿ. ಅವಜಿ ಆವಜಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ಜುಲಾವಾ, ನ್ಯೂತಾ; ದೇವತೆಗಳ ಕಾ ಆಹ್ವಾನ; ಅಭಿ ಮೇ ಆಹುತಿ ದೇನಾ |

ಅವಜಿ ಆವಿ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಅವಜಿ; ದೇ. ಅವಜಿ. ಕಂಠಾರನ ಅವಜಿ ತಂಜುರ ಜಂಬು ಹುಡು ಕೆದ ತಂಗೆ ಕುಂವಾರನ ಆವಜಿ ತಾಂದ್ರ ಚೆಜು ಹುಡುಕಿದ ಹಾಂ-ಕುಮ್ಹಾರ ಕೇ ಭದ್ರೆ ಮೇ ಜೇಸೆ ತಾವೆ ಕಾ ಲೊಡಾ ಹೆಡೆ! (ಕಧ.) |

ಅವಜಿ ಆವಿಕ (ಸಮ) ಸಂ.— ಜನಿ ಚಾದ್ರ, ಕಂಬಲ |

ಅವಜಿ ಆವಿಡ್ಡ (ಸಮ) ವಿ.— ಛಿಡಾ ಹುಬಾ, ವಿಂಧಾ ಹುಬಾ; ಡೆಡಾ, ಜುಕಾ ಹುಬಾ; ರೊಡ್ಡ, ಹುಡುಕಾಂತ | ಸಂ.— ಒಕ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ ನಾಟಕ |

ಅವಜಿ ಆವಿರಿ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಅವಜಿ.

ಅವಜಿ ಆವಿರ್ಮೆವ, ಅವಜಿ ಆವಿರ್ಮೆವ (ಸಮ) ಸಂ.— ಪ್ರಕಾಶ, ಪ್ರಾಕಟ್ಯ, ಉತ್ಪತ್ತಿ, ಅವತಾರ |

ಅವಜಿ ಆವಿರ್ಮೆವಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.— ಪ್ರಕಾಶ ಮೇ ಆ, ಪ್ರಕಟ ಹೊ, ಅವತಾರ ಲೇ |

ಅವಜಿ ಆವಿರ್ಮೆವಿತ (ಸಮ) ವಿ.— ಪ್ರಕಟ, ಪ್ರಕಾಶಿತ, ಅವತರಿಸ |

ಅವಜಿ ಆವಿಲ (ಸಮ) ವಿ.— ಗಂದಾ, ಮೇಲಾ, ಮಡಿಲಾ, ಅಠ, ಮಂದ |

ಅವಜಿ ಆವಿಣಕಾರ, (ಸಮ) ಸಂ.— ಪ್ರಾಕಟ್ಯ, ಪ್ರಕಾಶ, ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ |

ಅವಜಿ ಆವಿಣಕೃತ (ಸಮ) ವಿ.— ಪ್ರಕಟ ಕಿಯಾ ಹುಬಾ, ಸ್ಪಷ್ಟ ಕಿಯಾ ಹುಬಾ, ಪ್ರಕಾಶ ಮೇ ಲಾಯಾ ಹುಬಾ |

ಅವಜಿ ಆವಿಠ (ಸಮ) ವಿ.— ಪ್ರವಿಠ, ಧುಸಾ ಹುಬಾ; ಆವೇಶಿತ; ಮಿಲಾ ಹುಬಾ, ಜುಡಾ ಹುಬಾ |

ಅವಜಿ ಆವು (ಕ) ಸರ್ವ.— ಪ್ರಥಮ ಪುಷ್ಯ ಪ. ವ. 'ಹಮ' | ಸಂ.— ಗಾಯ; ಸಾಂಪ (ವ್ಯಾ. ಭಾ.-ಮೈ. ಪ್ರ.) |

ಅವಜಿ ಆವುಕ (ಸಮ) ಸಂ.— ಪಿತಾ |

ಅವಜಿ ಆವುಗ (ಕ) ಸಂ.— ಕುಮ್ಹಾರ ಕಾ ಭದ್ರಾ | (ತದ್) ಸಂ.— ಪಾಡುಕಾ (ತದ್); ಖಡ್ಗ |

ॐ अत्रुति (तद्) सं.— आहुति (तत्) ; दे. अशुन.

ॐ अत्रुदु (क) सर्व.— कौन, कौन-सा (न. लिं.) ।

ॐ अत्रुत (सम्) वि.— घिरा हुआ, घूमा हुआ, चकर खाया हुआ, झुका हुआ ।

ॐ अत्रुति (सम्) सं.— प्रत्यावर्तन, परिक्रमा, चकर ।

ॐ अत्रुष्टि (सम्) सं.— वर्षा, (सम्) फुहार, वरसात ।

ॐ अत्रु (क) सं.— कच्छप, कछुवा ।

ॐ अत्रुवेग (सम्) सं.— वैचैनी, चिंता, व्यग्रता, उद्वेग, गड़बड़ी ।

ॐ अत्रुवेश (सम्) सं.— व्याप्ति, संचार, प्रवेश ; अनुरक्ति ; गर्व, अहंकार ; चित्त-चांचल्य, उत्तेजना ।

ॐ अत्रुवेशन (सम्) सं.— व्याप्ति, संचार, प्रवेश ; चित्तचांचल्य, उत्तेजना ।

ॐ अत्रुवेशिक (सम्) सं.— अतिथि, अभ्यागत । — अत्रुवेशिकि (स्त्री. लिं.) ।

ॐ अत्रुवेश (सम्) सं.— प्रवेश, अतिथि या अभ्यागत बनकर जाना ।

ॐ अत्रुवेशन (सम्) सं.— ओढनी, पर्दा ; बैठन, बंधन ; ढक्कन ; घेरा ।

ॐ अत्रुवेशु (क) क्रि.— जंभाई ले ।

ॐ अत्रुवेशु (क) क्रि.— झुक ; खींच ।

ॐ अत्रुवेशन (सम्) वि.— ढका हुआ, बंद ।

ॐ अत्रुवेशन (सम्) सं.— प्रतीक्षा, अभिलाषा, कथन, घोषणा ।

ॐ अत्रुवेशसे (सम्) सं.— अभिलाषा, आशा, कथन, घोषणा ।

ॐ अत्रुवेशके (सम्) सं.— अभिप्राय, मत, आधार ; समूह ; संपत्ति, समृद्धि ; इच्छा, अभिलाषा ; शयन, शय्या ; कदहल का पेड़ ; आराम का स्थल ; उद्देश्य ; जल, पानी ; भाग्य ; कंबूस ; पेट, आमाशय ; मन, हृदय ।

अशु आशा, अशु आशे (सम्) सं.— इच्छा, अभिलाषा ; तीव्रेच्छा ; दिशा । — अशु पाश (सम्) सं.— आशा (रूपी) रस्सी, लालच का फंदा । — अशु पिशाचे (सम्) सं.— आशा राक्षसी, अत्यधिक लालच । — अशु भंग (सम्) सं.— आशा का टूटना, निराशा, नाखुशी । — अशु आशांबर (सम्) सं.— दिगंबर, शिवजी । — अशु आशासन (सम्) सं.— शुभाकांक्षा, भंगल-कामना, शुभाशीर्वाद ।

अशु आशित (सम्) वि.— खाया हुआ, खाने को दिया हुआ ; अघाया हुआ, संतुष्ट ।

अशु आशी (सम्) सं.— सर्प का विषदंत, विष, जहर ।

अशु आशीर्वचन, अशु आशीर्वाद (सम्) सं.— आशिष, हुआ ।

अशु आशीविष (सम्) सं.— सांप, सर्प ।

अशु आशु (सम्) अ.— जल्दी, शीघ्र, तुरंत, फौरन । सं.— धान विशेष । — अशु कवि सं.— शीघ्र कविता करनेवाला, अपनी इच्छा मात्र से तुरंत कविता करनेवाला ।

अशु आशुग, अशु आशुगति (सम्) वि.— शीघ्रगामी, जल्दी जानेवाला, तेज चलनेवाला । सं.— हवा, पवन ; बाण, तीर ; सूर्य ।

अशु आशुतोष (सम्) वि.— शीघ्र ही संतुष्ट होनेवाला । सं.— शिवजी की एक उपाधि ।

अशु आशुक्षणि (सम्) सं.— आग, हवा ।

अशु आशौच (सम्) सं.— अपवित्रता, अशुद्धि, जन्म या मरण का सूतक ।

अशु आश्चर्य (सम्) वि.— विस्मय, अचरज ।

अशु आश्म (सम्) वि.— पत्थर का बना हुआ, पथरीला ।

अशु आश्रम (सम्) सं.— साधु संतों के रहने का स्थान, कुटि, पर्णशाला, गुफा ; ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास—

ये चार अवस्थाएँ ; विद्यालय, पाठशाला ; वन, उपवन ।

अशु आश्रय (सम्) सं.— आधार, सहारा, आसरा ; विश्रामस्थल, शरण, भरोसा । — अशु इसु (सम्) क्रि.— आधार या सहारा पा, शरण में जा ।

अशु आश्रयाश, अशु आश्रयाशन (सम्) वि.— समीप आये हुए को खाने-वाला । सं.— आग ।

अशु आश्रयि (सम्) वि.— आश्रित, शरण में आया हुआ, संबंध युक्त ।

अशु आश्रव (सम्) सं.— सरिता, नदी, सोता ; प्रतिज्ञा, वादा ; नम्रता ; दोष, अपराध ।

अशु आश्रित (सम्) वि.— शरणागत, सहायता के लिए आया हुआ, अवलंबित । सं.— नौकर, चाकर, अनुयायी । — अशु राज्य (सम्) सं.— दूसरे के अधीन में रहनेवाला राज्य, छोटे-छोटे राज्य ।

अशु आश्रुत (सम्) वि.— सुना हुआ ; प्रतिश्रुत ; स्वीकृत ।

अशु आश्लेष (सम्) सं.— आलिंगन, चिपटना, घनिष्ठ संबंध ; नक्षत्र विशेष, नौवाँ नक्षत्र ।

अशु आश्व (सम्) वि.— घोड़े से संबंधित ।

अशु आश्वयुज (सम्) सं.— आश्विन मास, क्वार का महीना ।

अशु आश्वलायन (सम्) सं.— एक ऋषि का नाम ।

अशु आश्वस (सम्) सं.— स्वतंत्र रूप से साँस लेना ; सांत्वना, प्रसन्नता ; किसी पुस्तक का अध्याय या काण्ड ।

अशु आश्वसन (सम्) सं.— दिलासा, तसल्ली, आशाप्रदान ।

अशु आश्वसिसु (सम्) सं.— साँस ले ; सांत्वना दे ।

अशु आश्विन (सम्) सं.— आश्वयुज, क्वार का महीना । वि.— घोड़े पर सवार होकर यात्रा करनेवाला ।

७३, ११००० आश्विनिय (सम्) सं.— आश्विनी कुमार; नकुल-सहदेव ।

७३, ११००० आश्वीन (सम्) सं.— घोड़े के लिए एक दिन की यात्रा ।

७३, ११००० आषाढ (सम्) सं.— वर्षा ऋतु का प्रारंभिक मास, आषाढ; पलाश का दंड ।

७३, ११००० आषाढभूति (सम्) सं.— एक व्यक्ति का नाम; अविश्वासपात्र, ठग, धोखे-बाज़ ।

७३, ११००० आस् (क) वि.बो.— क्रोध, दुःख आदि का सूचक; हा! हा!, हाय! हाय! आदि ।

७३, ११००० आस (सम्) सं.— फेंकना, डालना; कमान, धनुष ।

७३, ११००० आसक्त (सम्) वि.— अनुरक्त, लीन, लुब्ध, मुग्ध ।

७३, ११००० आसक्ति, ७३, ११००० आसक्तते (सम्) सं.— अनुरक्ति, लिसता, लीनता; प्रेम, चाह ।

७३, ११००० आसंग (सम्) सं.— अनुराग, स्नेह; संगति; बंधन ।

७३, ११००० आसह (तद्) सं.— आषाढ (सम्) सं.— आषाढ (तद्) ।

७३, ११००० आसत्तु (क) कृ.— श्रम करके, परिश्रम करके, प्रयास करके ।

७३, ११००० आसन (सम्) सं.— बैठना, बैठने की रीति विशेष; बैठक, बैठकी, साधारणतया कोई भी बैठने की वस्तु; हाथी पर महावत के बैठने का स्थान ।

७३, ११००० आसनांकुर (सम्) सं.— बवासीर ।

७३, ११००० आसनोपकरण (सम्) सं.— बैठने के उपकरण, जैसे कुरसी, तिपाई आदि ।

७३, ११००० आसंद (सम्) सं.— विष्णु ।

७३, ११००० आसंदि (सम्) सं.— कोच, वेत्रासन ।

७३, ११००० आसन्न (सम्) वि.— समीपस्थ; निकट का, प्राप्त, उपस्थित ।

७३, ११००० आसर्, ७३, ११००० आसरु (७३, ११००० आसर्, ७३, ११००० आसरु) (क) क्रि.— थक जा, श्रांत हो । सं.— थकावट, श्रांति, आयास ।

७३, ११००० आसर, ७३, ११००० आसरु, ७३, ११००० आसरे, ७३, ११००० आसरिके (क) सं.— आधार, सहारा, आश्रय; अवकाश ।

७३, ११००० आसर्, ७३, ११००० आसरु, ७३, ११००० आसरु, ७३, ११००० आसरिके (क) सं.— थकावट, श्रांति, निरुत्साह, शिथिलता ।

७३, ११००० आसर्गळे (क) क्रि.— थकावट दूर कर, आराम कर ।

७३, ११००० आसव (सम्) सं.— शराव, मद्य ।

७३, ११००० आसवास्तकते (सम्) सं.— मद्य या शराव पी जाने की क्रिया; शराव पीने का स्थान । ७३, ११००० आसवासक्ति (क) सं.— वही ।

७३, ११००० आसाडि (तद्) सं.— आषाढ (तद्) । ७३, ११००० आसाद, ७३, ११००० आसादन (सम्) सं.— नीचे रखना, नीचे उतारना, आक्रमण, उपलब्धि, प्राप्ति ।

७३, ११००० आसादित (सम्) वि.— पास बैठा हुआ, प्राप्त, उपलब्ध ।

७३, ११००० आसार (सम्) सं.— मूसलधार वर्षा; आक्रमण, चढ़ाई; शत्रु राजा की सेना; भोज्यपदार्थ, रसद ।

७३, ११००० आसारक (सम्) सं.— मूसलधार वर्षा ।

७३, ११००० आसारमहालु (अ.दे. ?) सं.— बड़ा हॉल (Hall), बड़ा कमरा ।

७३, ११००० आसिगे (क) सं.— शय्या, विस्तर (ग्रा.) ।

७३, ११००० आसीन (सम्) वि.— बैठा हुआ, उपविष्ट ।

७३, ११००० आसु (क) क्रि.— ऊपर से गिरा, डाल, लगा, फैला । सं.— सालवृक्ष; ताना (जुलाहे का) । व.— उतना, उस परिमाण में ।

७३, ११००० आसुकरं (सम्) अ.— अधिक, अतिशय । सं.— भयंकर स्थिति ।

७३, ११००० आसुति, ७३, ११००० आसुती (सम्) सं.— सोमरस को निकालना ।

७३, ११००० आसुर (क) सं.— अधिकता, वृद्धि, अपरिमिति; श्रेष्ठता; हठ, जिद्द; आवेश, उद्वेग; बल, शक्ति; कष्ट, पीड़ा ।

७३, ११००० आसुर (सम्) वि.— असुरों का. असुर संबंधी, राक्षसी । सं.— एक विवाह पद्धति (मै.प्र.) ।

७३, ११००० आसे (तद्) सं.— आशा (तद्); इच्छा, अभिलाषा; दिशा । — १००० गार (तद्) सं.— लालची पुरुष । — १००० गारि, १००० गार्ति (तद्) सं.— लालची स्त्री । — ३००० तोरे (तद्) क्रि.— इच्छा या कामना का त्याग कर ।

७३, ११००० आसेचन (सम्) सं.— उड़ेलना, डालना, तर करना ।

७३, ११००० आसेदन (सम्) सं.— कार्य में लगना; व्यापार; स्त्री-संभोग ।

७३, ११००० आस्कंदन (सम्) सं.— युद्ध, लड़ाई, समर ।

७३, ११००० आस्तर, ७३, ११००० आस्तरण (सम्) सं.— फैलाव, विस्तार; विछौना, चादर; शय्या, विस्तर ।

७३, ११००० आस्ति (तद्) सं.— अस्ति (तद्); विद्यमानता; ऐश्वर्य, संपत्ति ।

७३, ११००० आस्तिक (सम्) सं.— ईश्वर और धर्म पर विश्वास रखनेवाला ।

७३, ११००० आस्तिक्य (सम्) सं.— ईश्वर और परलोक में विश्वास, विश्वास, श्रद्धा ।

७३, ११००० आस्तिमित (सम्) वि.— कोमल; नरम; सुंदर, स्थिर; प्रसन्न ।

७३, ११००० आस्तीक (सम्) सं.— एक प्राचीन ऋषि जो जरत्कारु के पुत्र थे । इन्हीं के प्रयत्न से जनमेजय का सर्प-यज्ञ बंद हुआ था ।

७३, ११००० आस्था, ७३, ११००० आस्थे (सम्) सं.— श्रद्धा, पूज्यभाव; प्रबल अभिलाषा, आशा, भरोसा; सभा, समारोह; उद्योग, प्रयत्न ।

७३, ११००० आस्थान (सम्) सं.— स्थान, जगह, समारोह; राजसभा, दरबार । — ३०० कवि (सम्) सं.— दरबारी कवि ।

७३, ११००० आस्थानिक (सम्) सं.— राजसभा या दरबार का सदस्य ।

७३, ११००० आस्थायिका, ७३, ११००० आस्थायिके (सम्) सं.— राजसभा, दरबार ।

शुद्ध आस्थित (सम्) वि.—निवास किया हुआ, ठहरा हुआ, स्थिर, संलग्न, गिरा हुआ ।
 शुद्ध आस्पत्रि, शुद्ध आस्पत्रे (अ.दे.) सं.—(अंग्रेजी शब्द Hospital से), अस्पताल ।

शुद्ध आस्पद (सम्) सं.—स्थान, जगह; बैठक, कमरा, आवास स्थान; पद, गौरव, मर्यादा; प्रताप, अधिकार; सामला; सहारा, आश्रय; बुनियाद, नींव (मै.प्र.) ।

शुद्ध आस्फालन (सम्) सं.—अस्फुट अस्पष्टिके (तद्)—आवाज करना, ताली बजाना, रगडना, मलना, पछाड़ना ।

शुद्ध आस्फुरण (सम्) सं.—आगे बढ़ना, उछलना, प्रकाशमान ।

शुद्ध आस्फोट, शुद्ध आस्फोटन (सम्) सं.—फटफटाना; थर थर काँपना; फूँकना; फुलाना; ताल ठोकना, आवाज करना, हाथ और जाँघ ठोककर आवाज करना जैसे कुश्ती लड़नेवाले करते हैं; तोप, बंदूक आदि से दागने की आवाज ।

शुद्ध आस्य (सम्) सं.—मुँह, मुख, चेहरा ।
 —अस्य पत्र (सम्) सं.—कमल ।
 अस्य लंगल (सम्) सं.—शूकर, सुअर ।
 अस्य लोम (सम्) सं.—दाढ़ी ।

शुद्ध आस्ये (सम्) सं.—बैठना, आश्रय पाना; आसन, सिंहासन, गद्दी ।

शुद्ध आस्येयु (सम्) सं.—चंद्र (के समान) मुख ।

शुद्ध आस्रव (सम्) सं.—पीड़ा, दर्द; बहाव, दौड़ ।

शुद्ध आस्वाद, शुद्ध आस्वादन (सम्) सं.—रुचि, रस, सुस्वाद; चसखा लेना ।

अह (क) वि.बो.—धिक्! धिक्!, तोबा ।

अह आह, अह आहा (क) वि.बो.—ऐ!, अहा!

अहक (सम्) सं.—नाक की एक बीमारी ।

अहक (सम्) वि.—पिटा हुआ, चोट खाया हुआ, मारा हुआ, घायल, चोटिल ।

अहकति (सम्) सं.—आघात, प्रहार, चोट ।

अहक (सम्) सं.—ग्रहण, पकड़; परिपूर्णता, बलिदान ।

अहकण (सम्) सं.—ग्रहण, पकड़; छीनना, हरण, चोरी, लूट ।

अहकसु (सम्) क्रि.—छीनकर ले, चोरी कर, अपहरण कर ।

अहक (सम्) सं.—युद्ध, लड़ाई; ललकार, चुनौती; यज्ञ, याग, होम, हवन ।

अहकनीय (सम्) वि.—हवन करने योग्य । सं.—हवन की अग्नि ।

अहकवि (सम्) सं.—योद्धा, सैनिक, सिपाही ।

अहक (सम्) सं.—खाद्य पदार्थ, अन्न, भोजन; लाना, समीप लाना, हरण ।

अहक (सम्) सं.—पशुओं को जल पिलाने के लिए कुएँ के पास बनाया हुआ गड्ढा या हौद ।

अहक (सम्) वि.—दैनिक । सं.—पाणिनि का नाम ।

अहक (सम्) वि.—रखा हुआ, जमा किया हुआ, स्थापित; शत्रु से संबंधित ।

अहकण्डिक (सम्) सं.—संपेरा ।
 अहक (सम्) क्रि.—बुला, चिह्ना ।

सं.—चावल, धान; सूक्ष्मता, परमाणु ।
 अहक (सम्) वि.—बलिदान किया हुआ ।

अहक (सम्) सं.—होम, हवन, किसी देवता के उद्देश्य से मंत्र पढ़कर अग्नि में साकल्य का डालना ।

अहक (सम्) सं.—बुलावा, आह्वान, आमंत्रण ।

अहक (सम्) वि.—लाया हुआ, दिया हुआ ।

अहक (सम्) सं.—साँप, साँप का विष ।

अहक (क) वि.बो.—अहा! (आश्चर्य सूचक) ।

अहक (सम्) अ.—संदेह; विकल्प और संदेह सूचक वि.बो. शब्द ।

अहक (सम्) वि.—दैनिक, नित्य का, रोज का । सं.—संध्यावंदन, जप; दैनिक भोजन ।

अहक (सम्) सं.—हर्ष, प्रसन्नता, आनंद ।
 —अहक (सम्) वि.—हर्षदायक, आनंद देनेवाला ।
 —अहक (सम्) वि.—आनंददायक ।

अहक (सम्) सं.—नाम, संज्ञा; पुकार ।

अहक (सम्) सं.—निमंत्रण, बुलावा, आमंत्रण ।
 —अहक (सम्) क्रि.—बुला, निमंत्रण दे ।

अहक (क) क्रि.—पा, प्राप्त कर; उपलब्ध कर; शासन कर, अधिकार कर, हुकूमत कर; रक्षा कर, वचा; डूब; पकड़, वश में कर, देखरेख कर । सं.—सेवक, नौकर, चाकर; दूत; योद्धा, सिपाही ।

अहक (क) सं.—गहराई, गंभीरता; गड्ढा; दैन्य ।

अहक (क) सं.—गाना, गायन ।

अहक (क) सं.—आलवाल ।
 अहक (क) सं.—अधिक; व्यर्थ; अगाध ।

अहक (क) सं.—आडंबर (तद्) ।
 अहक (क) सं.—आडंबर (तद्) ।
 अहक (क) सं.—कुक्कुरमुत्ता ।

अहक (क) क्रि.—सामना कर, निंदा कर ।

अहक (क) क्रि.—दूषण कर, निंदा कर ।

अहक (क) सं.—आलाप (तद्); संभाषण; दुःख ।

अहक (क) सं.—अहक, अहक (क) सं.—किले के चारों ओर की दीवार; युक्ति,

चमत्कार; कपट; अपमान, तिरस्कार; रुक्ष, कठोर ।

७४ आदि (क) प्र. — 'वाला' अर्थबोधक प्रत्यय । उदा. — ७४०४ ओदादि-हमेशा पहुंचनेवाला, ७४०५ मातादि-अधिक बोलने-वाला (वाचाल) ।

७४ आदि (सम्) सं. — दे. ७४.

७४०० आदिकार (क) सं. — सत्कुलज, अभिजात कुल में उत्पन्न व्यक्ति ।

७४०१ आदिके, ७४०२ आदिके, ७४०३ आदिके (क) सं. — शासन, प्रभुत्व, अधिकार, शासनाधिकार ।

७४०४ आदिके (क) क्रि. — वश में कर, अधिकार में ले; सामना कर ।

७४०५ आदिके (क) सं. — गिलहरी ।

७४०६ आदिके (क) सं. — शोर गुल, गडबडी, हला ।

७४०७ आदिनेरिके (क) सं. — बच्चों का एक खेल ।

७४०८ आदिपोगु (क) क्रि. — डूब जा, निमजित हो जा ।

७४०९ आदिसु (क) क्रि. — प्राप्त कर; अधिकार करा, शासन करा (प्रे.) ।

७४१० आदु (क) क्रि. — राज्य कर, शासन कर; प्रबंध या व्यवस्था कर; डूब; डुबा; प्राप्त करा । सं. — सेवक, दूत, सिपाही । ७४११ मादुवुदु मादु आदु मादुवुदु हादु-सेवक का किया (कार्य) खराब (होता है) (कह.) ; किले के चारों ओर की दीवार ।

७४१२ आदुतन, ७४१३ आदुतन (क) सं. — दे. ७४६.

७४१४ आदुमट (क) सं. — एक मनुष्य की ऊँचाई ।

७४१५ आदुवेरि, ७४१६ आदुवेरि (क) सं. — किले के चारों ओर की दीवार ।

७४१७ आदुके (क) सं. — दे. ७४६.

७४१८ आदु, ७४१९ आदुम (क) सं. — शासक, अधिकारी, प्रभु, स्वामी ।

७४२० आदुबले (क) सं. — मनुष्य की शक्ति ।

७४२१ आदुवेस (क) सं. — नौकरी, सेवावृत्ति, स्वयं-सेवा ।

७४२२ आदुलेलि (क) सं. — बाड़, ऊँची बाड़ (जो मनुष्य की ऊँचाई तक हो) ।

७४२३ आदुवकु (क) सं. — एक सेर का १/८ भाग ।

७४२४ आदि (क) सं. — माप-तोल की गहराई या गंभीरता । — ७४२५ कोडु, ७४२६ गोडु (क) क्रि. — घोखा दे, चकमा दे ।

७४२७ आदि (क) सं. — गोलाई, वृत्त, मंडल, चंद्राकार; शोर-गुल, हलचल, कोलाहल ।

७४२८ आदुदु (क) क्रि. — जल या तरल पदार्थ में मज्जित होना या डूबना ।

७४२९ आदुवर् (क ?) सं. — ['आदुवार्' — तमिल] — बारह प्रसिद्ध आदुवार् या वैष्णव भक्त ।

अ इ

अ इ — कन्नड-वर्णमाला का तृतीय अक्षर । प्र. — खी.लिं. बोधक ; जैसे— ७४३० हुडुग (लडका) — ७४३१ हुडुगि (लडकी) ; ७४३२ तिरुक (भिखारी) — ७४३३ तिरुकि (भिखारिन) । संस्कृत तद्धित प्रत्यय ; उदा. — ७४३४ धन (धन) — ७४३५ धनि (धनवान्), ७४३६ गुण (गुण) — ७४३७ गुणि (गुणवान्), ७४३८ रूप (रूप) — ७४३९ रूपि (रूपवान्) । कृ — पूर्वकालिक कृतंत ; जैसे— ७४४० आदि ('अदि' से) — खेलकर, ७४४१ मादि ('मादि' से) — करके; अधिकरण कारक का चिह्न 'में' ; जैसे— ७४४२ वनदि — घन में (ह.क.), ७४४३ यल्ल मनेयलि — घर में ; खी.लिं. तद् शब्दों के अंत में अ इ का प्रयोग होता है, जैसे— ७४४४ लक्षिम (लक्ष्मी के बदले), ७४४५ सरस्वति (सरस्वती के बदले) ।

७४३० इ — करण (या अपादान) कारक का चिह्न ; उदा. — ७४३१ कणिण (या ७४३२ कणिणि) — आंखों से, ७४३३ अवरिं — उनसे ; ७४३४ अत्तणि — उस तरफ से (ह.क.) ।

७४३५ इ, ७४३६ इ, (क) वि. = (७४३७ इन्, ७४३८ इन्, ७४३९ इम् ; ७४४० ईइ, ७४४१ ईन्, ७४४२ इम्) — मीठा, अच्छा, सुंदर, मनोहर । ७४४३ इंकडल (या ७४४४ इंगडल) — दूध का समुद्र (दुग्धादि) । ७४४५ इंगडलकुवरि

— दुग्धादि की पुत्री (लक्ष्मी) । ७४४६ इंकदिर — सुंदर किरणवाले, चंद्रमा । ७४४७ इंकोरल् (या ७४४८ इंगोरल्) — सुंदर (या मनोहर) स्वर (या ध्वनि) ।

७४४९ इंकार (अ.दे.) सं. — इनकार (हि.) ; अस्वीकृति, अवहेलना ।

७४५० इंके (क) सं. — जल या तरल पदार्थ में भिगोने या मज्जित करने की क्रिया ; सुखाने की क्रिया ।

७४५१ इंक (क) वि. — छोटा ; कुछ, थोड़ा ; बंधा ।

७४५२ इंग (क) सं. — चिह्न, निशान, इशारा ; गति, चाल ।

७४५३ इंगड (क) सं. — पृथकता, भिन्नता, एकांतता । ७४५४ इंगडिगड — पृथक-पृथक, भिन्न-भिन्न । ७४५५ इंगडिसु (क) क्रि. — पृथक कर, अलग-अलग कर, विभाग कर ।

७४५६ इंगलिक, ७४५७ इंगलीक, ७४५८ इंगलीक (क) सं. — शुद्ध लाल रंग ; एक प्रकार का नीला औषध ।

७४५९ इंगल, ७४६० इंगाल (तद्) सं. — अंगार (तद्) ; अंगार, भाग । — ७४६१ कण्ण, ७४६२ गण्ण (क) सं. — शिव । — ७४६३ कोळ, ७४६४ गोळ (क) क्रि. — भाग का जलना । — ७४६५ मग (क) सं. — कार्तिकेय । (तद्) सं. — इंगुदः (तद्) ; इंगुदी, हिंगोट का वृक्ष, मालकंगनी ।

७४६६ इंगलीक (क) सं. — दे. ७४६७.

७४६८ इंगलेश्वर (क) सं. — एक स्थान का नाम जहाँ महात्मा बसवेश्वर का जन्म हुआ था । (७४६९ इंगलेश्वर-भागवति इंगलेश्वर भागवति नाम से यह प्रसिद्ध है ।)

अ०८०, १० इंद्राणि (सम्) सं.— इंद्र की पत्नी शची ; कामदेव की पत्नी रति ; ब्रह्मा की पत्नी सरस्वती, भारती ; शिव की पत्नी दुर्गा, पंचंद्रिय ; किरण, रश्मि, कांति ; इंद्रायन वृक्ष ।

अ०८०, १० इंद्रानुज, अ०८०, १० इंद्रावरज (सम्) सं.— उपेंद्र ; विष्णु, कृष्ण ।

अ०८०, १० इंद्रायुध (सम्) सं.— वज्रायुध ; इंद्रधनुष ; एक घोड़े का नाम ।

अ०८०, १० इंद्रारि (सम्) सं.— इंद्र का शत्रु ; राक्षस ।

अ०८०, १० इंद्रिय (सम्) सं.— बल, शक्ति, जोर ; ज्ञान, कर्मेन्द्रिय तथा ज्ञानेन्द्रिय ; वीर्य ; पाँच की संख्या का संकेत । — अ०८०, १० ग्राम (सम्) सं.— इंद्रियों का समूह । — अ०८०, १० निग्रह (सम्) सं.— इंद्रियों का दमन ।

अ०८०, १० इंद्रे (तद्) सं.— इंद्र की पत्नी शची ।

अ०८०, १० इंद्रेभ (सम्) सं.— इंद्र का हाथी, ऐरावत ।

अ०८०, १० इंद्र (सम्) सं.— जलाने की लकड़ी, जलावन, काष्ठ ।

अ०८०, १० इंद्रु (क) सं.— माधुर्य, सुंदरता, रम्यता, मनमोहकता । — अ०८०, १० इंद्रु (क) क्रि.— सुंदर हो, मनोहर हो, मधुर हो । — अ०८०, १० इंद्रु (क) क्रि.— मनोहर दिखाई दे ।

अ०८०, १० इंद्र (क) सं.— विस्तार, चौड़ाई, वृहत्ता ।

अ०८०, १० इंद्रने (क) अ.— अच्छी रीति से, सुंदर ढंग से ।

अ०८०, १० इंद्रुवरु (क) क्रि.— अच्छा लग, ठीक ठीक हो ।

अ०८०, १० इंद्रुव (क) सं.— पृथिवी, ज़मीन ।

अ०८०, १० इंद्रुविक्र (क) अ.— तत्पश्चात् ।

अ०८०, १० इंद्राणु (क) क्रि.— आधार या सहारा हो, सहायता कर ।

अ०८०, १० इंद्रिडिसु (क) क्रि.— फैला, विस्तार कर ।

अ०८०, १० इंद्रु (क) सं.— रहने या ठहरने का स्थान, स्थान, जगह; घर, मकान ; विस्तार,

चौड़ाई । — अ०८०, १० अरि (क) क्रि.— आश्रय को पहचान । — अ०८०, १० आगु (क) क्रि.— आश्रय हो । — अ०८०, १० एने (क) अ.— सुंदर ढंग से । — अ०८०, १० केयु (क) क्रि.— जगह बना ; कहे अनुसार चल ; मान । — अ०८०, १० क्रोडु (क) क्रि.— शरण में जा, आश्रय पा ।

अ०८०, १० गेयुसु (क) क्रि.— रख, धर । — अ०८०, १० पड़े (क) क्रि.— फैला, विस्तार कर, बढ़ा हो, आश्रय पा ; दिख ; ठहर । — अ०८०, १० पृत्त (क) वि.— सहारा पाया हुआ, सुंदर, मनोहर ।

अ०८०, १० इंवेलेसु (क) सं.— अच्छी फसल या उपज ।

अ०८०, १० इंके (क) प्र.— भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय । उदा.— अ०८०, १० होलिके—समानता, अ०८०, १० केलिके—कथन, वचन ; संप्रदान कारक का चिह्न 'के लिए' का अर्थच्योतक । उदा.— अ०८०, १० माडलिके—करने के लिए, अ०८०, १० आडलिके—खेलने के लिए ।

अ०८०, १० इंको; अ०८०, १० इंको; अ०८०, १० इंको, अ०८०, १० इंको, अ०८०, १० इंको (क) वि.बो.— अहा ! देख !

अ०८०, १० इंकुटु (क) सं.— स्थानाभाव, तंगी, कष्ट, दोनों ओर की तंगी । — अ०८०, १० इंकुटु सुकटु—अनेक विघ्न या संकट । अ०८०, १० इंकुटु उरु—तंग बस्ती । अ०८०, १० इंकुडिगेयु (क) क्रि.— दो भाग या टुकड़े कर ।

अ०८०, १० इंकड़े (क) सं.— दोनों तरफ़, दोनों किनारे ।

अ०८०, १० इंकरिसु (क) क्रि.— मार, पीट ; हिंसा कर, तंग कर, कष्ट दे ; वध कर ; 'सर सर' आहट कर ; इधर-उधर फैला, विकीर्ण कर ; विभाग कर, दो टुकड़े कर ।

अ०८०, १० इंकल (क) सं.— चीमट, चिमटा, सँडसी ।

अ०८०, १० इंकुटु सुत्तिगे (क) सं.— हथौड़ा, हथौड़ी ।

अ०८०, १० इंकु (क) क्रि.— रख, धर ; दे ; मार, पीट ; वध कर, मार डाल ; त्याग, त्याग दे, दान कर ; टुकड़े कर ; बंद कर ; पोंछ ; फेंक । सं.— दान । — अ०८०, १० पडु (क) क्रि.— चोट या आघात सह । — अ०८०, १० ह (क) सं.— देना, दान ।

अ०८०, १० इंकु (क) सं.— निकटता, सामीप्य ; सकरा ; संकट ।

अ०८०, १० इंकु, अ०८०, १० इंकुळ, अ०८०, १० इंकु (क) सं.— दे. अ०८०, १० इंकु, अ०८०, १० इंकुळिके (तद्) सं.— इक्ष्वालिका (तद्) ; काँस ।

अ०८०, १० इंकुके (क) प्र.— संप्रदान कारक 'के लिए' का अर्थच्योतक ; उदा.— अ०८०, १० माडलिके—करने के लिए, अ०८०, १० आडलिके—जाने (के लिए) को । सं.—स्थान, जगह, आश्रय ।

अ०८०, १० इंकुकेल (क) अ.— दोनों ओर, दोनों दिशाओं में ।

अ०८०, १० इंकुकेरि (क) सं.— विद्वान् राजाओं की राजधानी ; एक प्राचीन सोने का सिक्का (लगभग पाँच रुपये) ।

अ०८०, १० इंकुके (क) वि.बो.— दे. अ०८०, १० इंकुके (सम्) सं.— ईख, गन्ना ; पौंडा ।

अ०८०, १० इंकुके चाप, अ०८०, १० धन्वन्, अ०८०, १० धन्वा (सम्) सं.— कामदेव । — अ०८०, १० इंकुके (सम्) सं.— गन्ना । — अ०८०, १० इंकुके मेह (सम्) सं.— एक वीमारी, मधुमेह । — अ०८०, १० इंकुके शरासन (सम्) सं.— कामदेव ।

अ०८०, १० इंकुके इक्ष्वाकु (सम्) सं.— सूर्यवंशी एक राजा जो वैवस्वत मनु के पुत्र थे ; माहाराज इक्ष्वाकु का वंशज ; कड़वी लूनी, तितलौकी ।

अ०८०, १० इंकुके इक्ष्वालिके (सम्) सं.— दे. अ०८०, १० इंकुके ।

अ०८०, १० इंकुके इगह (ल) क्रि.— सूख, निरस हो, शुष्क हो, बाष्प हो । सं.— अंकुर ; किसलय, पल्लव ; मसूड़ा ।

अ०८०, १० इंकुके इगर्जि (अ.दे.) सं.— चर्च (Church) गिरिजा घर ।

तुं ० डिगं इगुडिग (क) सं.— सुद्वार, सुगरा ।

अड्डु इच्च, अड्डु इच्चे (तद्) सं.— इच्छा (तत्) —(अंकगणित में) प्रश्न । अड्डु ० च्चंके—(अंकगणित में) एक आकस्मिक अंक । अड्डु ० च्चंके इच्छवणे—मनमाना अंक डालकर जोड़ना ।

अड्डु ० च्चंके इच्चक, अड्डु ० च्चंके इच्चेग (तद्) वि.— स्तुति के द्वारा दूसरों के मन को संतुष्ट करने-वाला ; दूसरों की बातों को मनानेवाला ; विनम्र, विनयशील । —अड्डु तन (तद्) सं.— मिथ्या प्रशंसा, चापलूसी, खुशामद ।

अड्डु ० च्चंके इच्चगार्ति, अड्डु ० च्चंके इच्चेगार्ति (तद्) सं.— इच्छा करनेवाली (स्त्री-लिं.) । अड्डु ० च्चंके इच्चट, (क) वि.— दुगुना । सं.— बड़ा चोर ।

अड्डु ० च्चंके इच्चडि (क) वि.— दो दलवाला । अड्डु ० च्चंके इच्चयिसु (तद्) क्रि.— इच्छा कर, कामना कर ।

अड्डु ० च्चंके इच्चे (तद्) सं.— इच्छा (तत्) । — अड्डु ० च्चंके कार, गार (तद्) सं.— इच्छा करनेवाला, अपनी रुचि के अनुसार करने-वाला । — गार गार्ति (तद्) सं.— दे. अड्डु ० च्चंके गार ।

अड्डु ० च्चंके इच्चक (क) सं.— दे. अड्डु ० च्चंके । अड्डु ० च्चंके इच्चरसु (सम्) क्रि.— दे. अड्डु ० च्चंके रसु ।

अड्डु ० च्चंके इच्चानुडि (सम्) सं.— दूसरों की इच्छा के अनुसार बोलना ; ऐसे शब्द या वचन जो अन्य लोग पसंद करें ; मधुर बोली ।

अड्डु ० च्चंके इच्चानुसार (सम्) अ.— स्वेच्छा से, अपने मन के अनुसार ।

अड्डु ० च्चंके इच्चायित (सम्) वि.— इच्छित, अभिलषित, वांछित ।

अड्डु ० च्चंके इच्छावति (सम्) सं.— अनेक कामनाएँ करनेवाली स्त्री ।

अड्डु ० च्चंके इच्छावंत (सम्) सं.— अनेक कामनाएँ करनेवाला पुरुष ।

अड्डु ० च्चंके इच्छित (सम्) वि.— वांछित, अभिलषित ।

अड्डु ० च्चंके इच्छिसु (सम्) क्रि.— इच्छा कर, कामना कर । — अड्डु ० च्चंके विके (सम्) सं.— कामना करना ।

अड्डु ० च्चंके इच्चाफे (अ.दे.) सं.— इच्चाफा (अरबी) ; वृद्धि ; उन्नति ।

अड्डु ० च्चंके इच्चार, अड्डु ० च्चंके इच्चारु (अ.दे.) सं.— इच्चार (फारसी) ; पायजामा ।

अड्डु ० च्चंके इच्चारदार (अ.दे.) सं.— ठेकेदार ; एकाधिकारी ।

अड्डु ० च्चंके इच्चारु (अ.दे.) सं.— ठेका ; एकाधिकार ; कृषि क्षेत्र ।

अड्डु ० च्चंके इच्चलु, अड्डु ० च्चंके इच्चलु (क) सं.— कोयला ।

अड्डु ० च्चंके इच्च्या, अड्डु ० च्चंके इच्च्ये (सम्) सं.— यज्ञ, आराधना ; दान, पुरस्कार ; मूर्ति, प्रतिमा ; कुटिनी ; गाय ।

अड्डु ० च्चंके इच्चु, अड्डु ० च्चंके इच्चु (क) अ.— इतना, इस परिमाण में ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुकु, अड्डु ० च्चंके इच्चुकु, अड्डु ० च्चंके इच्चुकु (क) सं.— तंगी, संकीर्णता, संकुचितता, नैकट्य ।

अड्डु ० च्चंके इच्चु (क) वि.— छोटा । — अड्डु ० च्चंके वट्टु, अड्डु ० च्चंके वट्टु (क) सं.— छोटा प्याला ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुणि (क) क्रि.— जुड़ जा, संयुक्त हो, निविड़ हो । सं.— समूह, समुदाय, गिरोह, भीड़ ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुणे, अड्डु ० च्चंके इच्चुणे (क) सं.— समूह समुदाय, गिरोह, भीड़, विघ्न, बाधा, अड्डुचन ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुणि, अड्डु ० च्चंके इच्चुणि, अड्डु ० च्चंके इच्चुणि (तद्) सं.— इच्छिका (तद्) ; इच्छ ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुणिसु, अड्डु ० च्चंके इच्चुणिसु (क) क्रि.— दे. अड्डु ० च्चंके ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुण (क) सं.— भीड़, गिरोह ; समूह, आधिक्य ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुण (क) सं.— एक वृक्ष विशेष, कासारक, कासनी ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुण (क) सं.— अड्डु ० च्चंके इच्चुण (तद् ?)]—खड्ग, बरछा, भाला । — अड्डु ० च्चंके चरु (क) सं.— खड्गधारी योद्धा ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुण (क) वि.— संकीर्ण, सकरा, तंग । कृ.— रखकर, धरकर, थामकर । सं.— आटा ; शब्दांत में, जैसे — अड्डु ० च्चंके उच्चुणु—उपमा (तमिळ्), एक खाने की वस्तु जो सूजी से बनाई जाती है ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुणु, अड्डु ० च्चंके इच्चुणु (क) सं.— तंगी, संकुचितता ; भीड़, संकीर्णता ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुणु, अड्डु ० च्चंके इच्चुणु (सम्) सं.— पृथिवी ; वाणी ; अन्न, आहार ; एक देवी का नाम, मनु की पुत्री ; स्वर्ग ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुकु (क) क्रि.— दबा, कुचल, नोच ; पीट, मार, काट । सं.— संकीर्णता, संकुचितता, तंगी ; तकलीफ, कष्ट, संकट ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुकु (क) सं.— संकीर्णता, संकुचितता, तंगी ; कष्ट, तकलीफ ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरु (क) सं.— विघ्न, बाधा, अड्डुचन ; कष्ट, तकलीफ ; शत्रुता, वैर ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरु (क) क्रि.— ठोकर खा, धीरे से चल, टकर खाकर गिर पड़ ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरु, अड्डु ० च्चंके इच्चुरु (सम्) सं.— दे. अड्डु ० च्चंके ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरु (क) क्रि.— भर, पूर्ण कर, ढूँँस, संयुक्त हो, जुड़ जा ; चूर्ण या पुड़िया बना, काट, पीट । वि.— पूरा, सारा, समूचा ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरु (क) क्रि.— दे. अड्डु ० च्चंके ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरुकिरि (क) क्रि.— पूर्ण हो, समृद्ध हो, जुड़ जा, मिल जा, सघन हो ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरुणि, अड्डु ० च्चंके इच्चुरुणि, अड्डु ० च्चंके इच्चुरुणि (क) सं.— रखने या फेंकने की क्रिया ; गहना, धरोहर, बंधक ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरु, अड्डु ० च्चंके इच्चुरु (क) सं.— टेढ़ापन ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरु (क) क्रि.— पुड़िया या चूर्ण बनावा, रखवा, (प्रे.), खड़ा कर, रोप ।

अड्डु ० च्चंके इच्चुरु (क) क्रि.— रख, धर ; फेंक, पटक ; मार, पीट ; छिया ; खाना परोस (या दे) ।

अडकं इडुकु, अडकं इडुकु (क) क्रि.—
पटक, फेंक, दूर फेंक, मुक्त कर; दबा,
कुचल, नोच, ठूस; काट, मार, पीट।

अडकं इडुकु (क) सं.—संकीर्णता, संकुचितता,
तंगी; स्वतंत्रता, आजादी; पशुओं की एक
बीमारी।

अडकं इडुगु (क) सं.—संकीर्णता, तंगी।
—अडकं तोडगु—(अनुरणन शब्द)—
अनेक विघ्न, बाधाओं का आधिक्य। क्रि.—
भर, व्याप्त हो।

अडकं इडुगु (क) सं.—भगवान् को
समर्पित नारियल।

अडकं इडुगे, अडकं इडुगु (क) सं.—
धरोहर, न्यास, थाती, बंधक।

अडकं इडुपु (क) सं.—राशि, ढेर; रंध,
छेद, बिल; गड्डी, तह पर तह।

अडकं इडुमुडुकु (क) सं.—तंग रास्ता,
छोटा टेड़ा रास्ता।

अडकं इडुविके (क) सं.—रखने, डालने,
उत्पादन करने आदि की क्रिया।

अडकं इडुवु (क) सं.—धरोहर; राशि;
बंधक।

अडकं इडे (क) सं.—स्थान, जगह, रिक्तस्थान।

अडकं इडे, अडकं इडे (सम्) सं.—पृथिवी;
स्वर्ग; अन्न, हवि; गाय; वाणी; इडा देवी
—मनु की पुत्री, बुध की स्त्री और पुरुरवा
की माता; शरीर की एक नाड़ी जो दाहिनी
तरफ रहती है।

अडकं इडुलि, अडकं इडुलिगे, अडकं इडुलिगे,
अडकं इडुलि (क) सं.—इडली—
एक खाने की चीज़ जो चावल के रवा और
उडद से बनाई जाती है।

अडकं इडुवर, अडकं इडुवर (सम्) सं.—साड,
या बैल जो स्वतंत्र रूप से चरने के लिए छोड़
दिया गया हो।

अडकं इणकि (क) सं.—गिलहरी।

अडकं इणि (क) सं.—(बैल या साँड) की पीठ
पर का डील, कूबड।

अडकं इणिकु, अडकं इणुकु (क) क्रि.—
झांक, झुककर देख। —अडकं नोडु (क)
क्रि.—झाँक कर देख।

अडकं इणे (क) सं.—दे. अडकं.

अडकं इतवारि (अ. दे.) सं.—[एतवार
(अरबी) से]—विश्वासपात्र।

अडकं इतर (सम्) अ.—पृथक, भिन्न, अन्य;
खराब, तुच्छ, हेय।

अडकं इतरत्र (सम्) अ.—अन्यत्र, दूसरी
तरफ।

अडकं इतरेतर (सम्) वि.—अन्योन्य,
परस्पर, आपस में।

अडकं इतरेद्युः (सम्) अ.—अन्य दिन,
दूसरे दिन।

अडकं इति (सम्) अ.—इस प्रकार, यों;
समाप्ति।

अडकं इति, अडकं इति (क) प्र.—स्त्री वाचक
प्रत्यय; उदा.—अडकं वीगिति=अडकं
वीगिति-समधिना, अडकं अगसगिति-
धोविना।

अडकं इतिहास (सम्) सं.—वह ग्रंथ
जिसमें अतीत काल की प्रसिद्ध घटनाओं
और तत्कालीन पुरुषों का वर्णन हो, तवारीख।
—अडकं कार, अडकं गार (सम्) सं.—इति-
हास लिखनेवाला, इतिहास-लेखक।

अडकं इतु (क) प्र.—सामान्य भूतकाल का
अन्य पुरुष ए. व. का प्रत्यय; उदा.—
अडकं (‘अडकं’ धातु से) आयितु-हुआ,
अडकं (अडकं, मुटु-पहुँच) मुटु-
पहुँचा, अडकं उल्लियितु या अडकं
उल्लितु (अडकं उल्लि-बच) वचा।

अडकं इत्त (क) अ.=अडकं इत्तल्, अडकं
इत्तल्, अडकं इत्तल् (क) अ.—इधर, यहाँ,
इस तरफ, इस दिशा में; अब; इसके
पश्चात्, तत्पश्चात्, फिर। उदा.—अडकं
अडकं अडकं अडकं अडकं अडकं नोडु-
इत्तिल अत्त अत्तिल इत्त हक्कि हारुत्तिले नोडु-
इधर से उधर, उधर से इधर चिड़िया उड़
रही है, देख!

अडकं इत्तड, अडकं इत्तड, अडकं इत्तडि
(क) सं.—दोनों ओर, दोनों किनारे।

अडकं इत्तड (क) सं.—दो समूह या गिरोह;
तंगी, धर्म-संकट।

अडकं इत्तर, अडकं इत्तर (क) सं.—दो
पंक्तियाँ, दो रीतियाँ, दो मार्ग।

अडकं इत्ताळे (क) सं.=अडकं इत्ताळे
पीतल (व्या. भा.)।

अडकं इत्ति (क) प्र.—स्त्रीवाचक प्रत्यय।
उदा.—अडकं इत्ति कोमटिगिति-बनिये
की स्त्री, अडकं गाणिगिति-तेली की
स्त्री।

अडकं इत्तिगि (क) सं.—दे. अडकं.

अडकं इत्तले (अ. दे.) सं.—इत्तला (अरबी);
समाचार, खबर।

अडकं इत्तु (क) क्रि.—था, थी (न. लिं.,
ए. व.—भूतकाल) उदा.—अडकं अडकं
अडकं पुस्तक अल्ले इत्तु-पुस्तक वहीं थी। अडकं
अडकं वेल् च्चैनागित्तु=गुड अच्चा था।

अडकं इत्थं (सम्) अ.—इस प्रकार, इस
प्रकार से, ऐसे।

अडकं इत्थं (सम्) सं.—निर्णय, निश्चय,
फैसला।

अडकं इत्थादि (सम्) अ.—आदि, वगैरह।

अडकं इत्तर (सम्) सं.—गमन, यात्रा;
यात्री; गरीब, पामर; नीच, अधम; कमी,
न्यूनता।—अडकं इ (सम्) सं.—व्यभि-
चारिणी।

अडकं इद, अडकं इदको (क) वि.बो.—
अहा देख!, इधर देख।

अडकं इदन्निमित्त (सम्) अ.—इस
कारण से, इसलिये।

अडकं इदा (क) वि.बो.—दे. अडकं.

अडकं इदानीं (सम्) अ.—संप्रति, अब,
अब भी।

अडकं इदाने, अडकं इदाने (क) क्रि.—है
(पु.लिं., ए. व.—वर्तमानकाल); उदा.—
अडकं इदाने अवनु इदाने-वह है।

अडकं इदिगो (क) वि.बो.—दे. अडकं.

अडकं इदिर्, अडकं इदिर् (क) अ.=अडकं
इदरु, अडकं इदरु, अडकं इदरु, अडकं
इदरु, अडकं इदरु, अडकं इदरु—
सामने, आगे, सम्मुख; विरोध में।—

अपय् (क) क्रि.— सामने जाना या मिलने जाना । — अगु (क) क्रि.— सामने जा; सामना कर । — अन् आन् (क) क्रि.— सामने जा; सं.— पुष्पमाला । — अङ्कु इक्कु, अङ्कु इहु (क) क्रि.— सामना कर, स्पर्धा कर, विरोध कर । — एत्तु उत्तर (क) सं.— विरुद्ध उत्तर, प्रतिकूल वचन । — एत्तु (क) क्रि.— आक्रमण कर, चढ़ाई कर । — एत्तु एरिसु (क) क्रि.— सामना करा, विरोध करा । — एत्तु एत्तु (क) क्रि.— सामने खड़े हो या उठ खड़े हो; स्वागत कर । — एत्तु एत्तु, एत्तु एत्तु (क) क्रि.— सामने जाकर स्वागत कर, सुस्वागत कर । — एत्तु एत्तु, एत्तु एत्तु (क) क्रि.— भेंट करा, मुलाकात करा (प्रै.) ।
 अदीरिलि (क) सं.— जिसका सामना न हो; तुलना न हो, अद्वितीय, अतुल्य ।
 अदीरिसु, अदीरिहु (क) क्रि.— सामना कर, विरोध कर; रोक ।
 अदी इहु (क) सर्व.— यह (न. लिं., ए. व.) । (बोलते समय कभी-कभी अदी इहु (यह), अदी अहु (वह) का प्रयोग तकिया-कलाम के रूप में होता है।)
 अदीकी इहुकी, अदीगी इहुगी (क) वि. बो.— दे. अद.
 अदीरु (क) अ.— सामने; दे. अदीरु.— वादि (क) सं.— विरोध करनेवाला; प्रतिवादी, मुद्दालाह । — वादिसु (क) क्रि.— मुँहजोरी कर, बड़ों के सामने उनकी अवज्ञा करते हुए बोल; प्रतिवाद कर ।
 अदी इदे (क) क्रि.— है (न. लिं., ए. व.— वर्तमानकाल) ।
 अदी इदे (क) वि. बो.— दे. अद.
 अदीरु इदो (क) वि. बो.— दे. अद.
 अदीरु इहल, अदीरु इहल, अदीरु इहलि (क) सं.— कोयलों ।

अदीरु इहानु, अदीरु इहानु (क) क्रि. रु.— संदेह या संदिग्धता का बोधक—‘होगा’ (पु. लिं., ए. व.) । उदा.— अदीरु अदीरु अदीरु अवतु अले इहानु—वह (आदमी) वहीं होगा ।
 अदीरु इहानु, अदीरु इहानु (क) क्रि.— (निश्चय बोधक) है (पु. लिं., ए. व.) ।
 अदीरु इहेसे (क) सं.— दो दिशाएँ, दो छोर, दो किनारे ।
 अदी इह, अदी इध्य (सम्) वि.— जलता हुआ, उज्वल, प्रदीप्त ।
 अदी इन् (क) वि.— दो की संख्या का बोधक उदा.— अदीरु इन्रु—दो सौ; मधुर, सुंदर; उदा.— अदीरु इन्रु—मधुर अधर, अदीरु इन्रु—सुंदर भुजा ।
 अदी (क) अ.— तक, पर्यंत ।
 अदीरु इन्कुमार (सम्) सं.— शनिग्रह; यम; कर्ण; सुग्रीव ।
 अदीरु इन्कुल (सम्) सं.— सूर्यवंश ।
 अदीरु इन्ज (सम्) सं.— दे. अदीरु इन्ज ।
 अदीरु इन्जात (सम्) सं.— यम ।
 अदीरु इन्रिपु (सम्) सं.— सूर्य के शत्रु— राहु-केतु ।
 अदीरु इन्रिपु (सम्) सं.— विरहिणी स्त्री ।
 अदीरु इन्वान्वय (सम्) सं.— दे. अदीरु इन्वान्वय ।
 अदीरु इन्नाम, अदीरु इन्नासु (अ. दे.) सं.— इनाम (अरबी); पुरस्कार, पारितोषक; मुफ्त में दी गयी ज़मीन या मुफ्त में दी गयी वस्तु ।
 अदीरु इन्नाम (अ. दे.) सं.— दान में दी गयी भूमि; भूमि-कर से मुक्त भूमि ।
 अदीरु इन्नायतु (अ. दे.) सं.— इनायत (अरबी); दया, कृपा; राजा या अधिकारी से प्राप्त पुरस्कार ।
 अदी इनि (क) सं.— मधुरता, सुंदरता, मनोहरता, प्रियता ।
 अदी इनितु, अदी इनित्तु, अदी इनिसु (क) अ.— इतना, यह सब; थोड़ा, थोड़ा भी; सारा ।

अदीरु इनितु (क) अ.— दे. अदीरु इनितु ।
 अदीरु इनिदु (क) वि.— मधुर, सुंदर, मनोहर, रुचिकर ।
 अदीरु इनिदुकु (क) सं.— सुगंध, सुशब्द ।
 अदीरु इनिवर्, अदीरु इनिबर (क) सर्व.— इतने (लोग), ये सब ।
 अदीरु इनिय, अदीरु इनेय (क) सं.— पति, प्रियतम, प्रेमी ।
 अदीरु इनियल, अदीरु इनियलु (क) सं.— प्रेमिका, प्रिया ।
 अदीरु इनिवण (क) सं.— मधुर फल, मीठा फल ।
 अदीरु इनिवातु (क) सं.— मधुर वचन, मीठी बोली ।
 अदीरु इनिवरि (क) सं.— हर्ष, संतोष; कल्याण, मंगल ।
 अदीरु इनिविरिदु (क) वि.— इतना बढ़ा ।
 अदीरु इनिविल् (क) सं.— इच्छु-चाप, ईश्वर का धनुष ।
 अदीरु इनिविल् (क) सं.— कामदेव ।
 अदीरु इन्कार (अ. दे.) सं.— दे. अदीरु इन्कार ।
 अदीरु इन्का (क) वि.— ऐसा, इस प्रकार का ।
 अदीरु इन्का (क) अ.— और, और भी, फिर, पश्चात्, बाद में, आगे; अब ।
 अदीरु इन्कासु (क) सं.— मधुर भोजन, सुखाद भोजन ।
 अदीरु इन्नेगं (क) अ.— इतने में, इस बीच ।
 अदीरु इन्नेबरं, अदीरु इन्नेवरं (क) अ.— अब तक ।
 अदी इप्प (क) वि.— दो की संख्या का सूचक, उदा.— अदीरु इप्प— बीस, अदीरु इप्प— द्वादश ।
 अदी इप्प (क) कृ. = अदीरु इप्प, अदीरु इप्प (‘अप्’ धातु से)— रहने-वाला, रहने का । अदीरु इप्प अदीरु इप्प अदीरु इप्प धनदन् इप्प आलय कैलास अक्कु— धनद के रहने का आलय कैलास है (ह. क.) ।

अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — है (न. लिं., ए.व.) ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — हो (मध्यमपुरुष ए.व.) ।
 सं. — मधूक ; महुआ ; लोध्र पुष्प ; चबाना ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी काली होती है (Dalbergia latifolia) ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — दोनों ओर, दोनों तरफ ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. = अण्ड्यु इण्डु-हिम, तुषार, कोहरा ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — दो व्यक्ति (या जन) ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — खरबूजे का पौधा ।
 अण्ड्यु इण्डु (सम्) सं. — हाथी, गज । — गति, गमन गमने (सम्) सं. — हाथी के समान मंद गति वाली (त्री) । — अण्ड्यु पुर, नगर नगर (सम्) सं. — हस्तिनापुर । — अण्ड्यु दैत्य, सुर सुर (सम्) सं. — गजासुर । — अण्ड्यु मुख, अण्ड्यु वक्त्र (सम्) सं. — गणेश । — अण्ड्यु वाहन, (सम्) सं. — इंद्र । — अण्ड्यु वैरि, (सम्) सं. — सिंह, शेर । — अण्ड्यु हस्त (सम्) सं. — हाथी की सूंड ।
 अण्ड्यु इण्डु (सम्) सं. — हथिनी ।
 अण्ड्यु इण्डु (सम्) वि. — धनवान, संपन्न, अमीर ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — बुझा ; सुखा ; निरस बना ; बाष्प बना ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — सूख, शुष्क हो ; बस ; बाष्प हो ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (अ.दे.) सं. — हमारत (अरबी), भवन ; महल ; गोपुर ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — दे. अण्ड्यु ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) वि. — दुगुना, द्वितीय, दूसरा ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) अ. — भली भाँति, सुंदर ढंग से ।

अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — रसाल, आम ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — सुंदर स्त्री ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — दे. अण्ड्यु ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) अ. — दो बार ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — दो शरीर, दो अंग ; दुधारी तलवार ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — शरीर के दो अंगों का दिखावा ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — कवच, जिसमें दो ओढ़ना या तह हो ।
 अण्ड्यु इण्डु (सम्) वि. — इतना, इतना बड़ा, इतने विस्तार का ।
 अण्ड्यु इण्डु (सम्) सं. = अण्ड्यु इण्डु — सीमा, परिमाण, माप ; वर्ग, श्रेणी ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — हो, विद्यमान हो, रह, बच, ठहर ; हिच किचा, देर कर । प्र. — स्त्री लिंग शब्दों के अंत में लगनेवाला ब. व. प्रत्यय ; उदा. — अण्ड्यु पृणिण् - स्त्रियाँ अण्ड्यु त्रोटित् - दासियाँ ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) प्र. — संबोधन में शब्दों के अंत में लगता है, जैसे— अण्ड्यु (०) ! मुनिगळिर (रा) ! — मुनियो !, अण्ड्यु (०) ! देवियरिर (रा) ! — देवियो ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — दबा, ज़ोर से पकड़ या बांध ; दुविधा में पड़ । सं. — दुविधा, संकट । — अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — दुविधा में डाल, कष्ट में फँसा ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — धुरी, (गाड़ी की) लोहे की छड़ या लकड़ी ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — अण्ड्यु इण्डु, वर्षा की अण्ड्यु जो आड़ न रहने पर घर के अंदर पड़ जाती है ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — रात्रि, रात, निशा (अण्ड्यु इण्डु-तमिळ) ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (सम्) सं. — लुनही ज़मीन ; मरुभूमि, मरुस्थल ।

अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — स्थिति, अधिष्ठान, आश्रय ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — रह, जीवित हो ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — नवमालिका, नवमल्लिका ।
 अण्ड्यु इण्डु (सम्) सं. — बिजली की कौंध, वज्राग्नि ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (अ.दे.) सं. — खजाने में रकम जमा करना ।
 अण्ड्यु इण्डु (अ.दे.) सं. — इरादा (अरबी) ; इच्छा, विचार, अभिप्राय ।
 अण्ड्यु इण्डु (अ.दे.) सं. — दे. अण्ड्यु ।
 अण्ड्यु इण्डु (सम्) सं. — पृथिवी ; वाणी ; सरस्वती ; जल ; अन्न, भोज्य पदार्थ ; मद्य, शराब । — अण्ड्यु इण्डु (सम्) सं. — वरुण, विष्णु, गणेश । — अण्ड्यु चर (सम्) सं. — उपलब्धि, ओला ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — चुभ, भोंक, ठोंक ; मार, पीट ; मार डाल ; लड़ । प्र. — मध्यम पुरुष ब. व. — आज्ञार्थ का बोधक ; जैसे— अण्ड्यु त्रोलगिरि-इट जाइए, अण्ड्यु कुळिरि-बैठिए, अण्ड्यु नोडिरि-देखिए ; आदर-सूचक प्रत्यय जैसे— अण्ड्यु अण्ड्यु-आइएगा, अण्ड्यु एनिरि-क्या है, जी ?, अण्ड्यु हौदिरि-जी हौं ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — वह, जिसमें चुभने या भोंकने का गुण हो ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — लपेट, साँप का चक्राकार बनना ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) क्रि. — ठूस, नोच, कुचल, दबा ।
 अण्ड्यु इण्डु, अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — दे. अण्ड्यु ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — चुभने या ठोंकने की क्रिया ।
 अण्ड्यु इण्डु (क) सं. — सेवा, नौकरी ।

०००० इरिविडु (क) क्रि.— दूध की धारा या बूँद का धीरे-धीरे गिराना ।

०००० इरिसिलु (क) सं.— हाथी, शेर आदि जानवरों को पकड़ने का स्थान, गड्ढा ।

०००० इरिसु (क) क्रि.— रख, स्थापित कर, ठहरा ; मरवा डाल ; लीख को कंधी करके निकालना ।

०००० इरिसुह (क) क्रि.— रखवा, थमा, ठहरवा (प्रे.) ।

०००० इरु, (क) क्रि.— रह, विद्यमान या वर्तमान रह, निवास कर, जीवित रह ।

०००० इरुकु, ०००० इरुकु (क) क्रि.— दबा, नोच, कुचल, पकड़ । सं.— तंगी ; तकलीफ, कष्ट ; छेद, फटा ।

०००० इरुगुडि (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरुपे, ०००० इरुपे (क) सं.— चींटी ।

०००० इरुबु, ०००० इरुबु (क) सं.— गड्ढा, दे. ००००.

०००० इरुबे (क) सं.— समूह, गिरोह, भीड़ ।

०००० इरुबु (क) सं.— संकीर्ण स्थान, तंग जगह, गली ; रूक्षता, शुष्कता ; संकट ।
— ००००, ०००० (क) क्रि.— संकट या दुःख में पड़ ।

०००० इरुवार (क) सं.— दो भाग, उपज के दो सम भाग जो भूस्वामी और कृषक को प्राप्य हैं ।

०००० इरुविके (क) सं.— विद्यमानता, उपस्थिति, वर्तमानता ।

०००० इरुह (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरुह, ०००० इरुह (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरे (सम्) सं.— दे. ००००.

०००० इर (क) सं.— संकीर्णता, तंगी ; कष्ट, संकट ।

०००० इरुकु (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरुचलु (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरत (क) सं.— चुभने, भोंकने, ठोंकने आदि की क्रिया ।

०००० इरवे, ०००० इरिवे (क) सं.— चींटी ।

०००० इरि (क) क्रि.— दे. ००००.

०००० इरिक्कोळु, ०००० इरिक्कोळु (क) क्रि.— अपने आपको छुरा भोंक, आत्महत्या कर ।

०००० इरित (क) सं.— दे. ००००.— ०००० काठ इरितकार-मारने, पीटने, चुभने, भोंकने-वाला मनुष्य ।

०००० इरिपु, ०००० इरिवु (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरिसिल्, ०००० इरुबु, ०००० इरुसल्, ०००० इरुसुल् (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरिसु (क) क्रि.— रख, स्थापित कर ।

०००० इरु (क) क्रि.— रह, ठहर, हिचकिचा ।

०००० इरुकु, ०००० इरुकु (क) क्रि.— दे. ००००.

०००० इरुपे, ०००० इरुबु, ०००० इरुवे (क) सं.— चींटी । ०००० काठ इरुवेय भार इरुवेगे, आनेय भार आनेगे—चींटी का भार चींटी को हाथी का भार हाथी को (कह.) ।

०००० इरुसल्, ०००० इरुसुल् (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरुहे (क) सं.— चींटी, पिपीलिका ।

०००० इरुकेट्टु (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरुकेसु (क) क्रि.— फँसा, रखा ; मार, वध कर ।

०००० इरुकु (क) क्रि.— फँस, रख ; मार, पीट ; वध कर, नाश कर ।

०००० इरुके (क) सं.— रहने का स्थान, रहना ; स्थान, ज़मीन ।

०००० इरुचलु (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरुचिडि (क) क्रि.— दोनों ओर फैल ; दोनों ओर खींच ।

०००० इरुचु (क) क्रि.— रख, धर, स्थापित कर ।

०००० इरुतड (क) सं.— दे. ००००.

०००० इरुतेर (क) सं.— दो श्रेणियाँ । दो पंक्तियाँ ।

०००० इरुतेर (क) सं.— दो रीतियाँ, दो पद्धतियाँ, दो प्रकार ।

०००० इरुपु (क) सं.— रहना ; रस ; माधुर्य, मिठास ।

०००० इरुपुंहु, ०००० इरुपुंहु (क) क्रि.— सूख जा, शुष्क हो, निरस हो ।

०००० इरुबल (क) सं.— दोनों तरफ की सेनाएँ ।

०००० इरुम (क) सं.— ०००० इरुम-घाव । ०००० इरुमकार (क) सं.— नाई, हजाम । ०००० इरुम (क) सं.— सौंदर्य, रमणीयता, इच्छा ; दो बार ।

०००० इरुवर्, ०००० इरुवर् (क) वि.— दो (पु.लिं., स्त्री.लिं.) ।

०००० इरु, ०००० इरु (क) सं.— घर, स्थान, जगह ।

०००० इरुला (सम्) सं.— भूमि, पृथिवी ; धन ; शब्द । — ०००० अधिप (सम्) सं.— भूमि के अधिपति, राजा । — ०००० तल (सम्) सं.— भूतल, भूमि । — ०००० पुत्रि (सम्) सं.— सीता ।

०००० इरुभृत (सम्) सं.— राजा, पर्वत ।

०००० इरुवृत (सम्) सं.— पुराण युग में प्रसिद्ध भूखंड ।

०००० इरुवृदारक (सम्) सं.— ब्राह्मण ।

०००० इरुलि (क) सं.— चूहा, चुहिया । प्र.— रहित ।

०००० इरुलिकु (क) क्रि.— दब जा, कुचला जा ।

०००० इरुलिचि (क) सं.— बेर । ०००० इरुलिदेर (क) सं.— गणेश । ०००० इरुलिमिचि (क) सं.— नीबू, नीबू का पेड़ । ०००० इरुलुकु (क) क्रि.— सिकोड़, मरोड़, ऐंठ ।

अथवा इल्लु (क) सं.— हड्डी, अस्थि ।
 अथवा इल्ले (सम्) सं.— दे. अथवा. अथवा
 इल्ले (सम्) सं.— राजा, नृपति ।
 अथवा इल्ल (क) अ.क्रि.— नहीं, न (निषेध सूचक
 अ.क्रि.) ।
 अथवा इल्लण (क) सं.— छत पर की काली
 गंदी वस्तु (Soot), धुआँ ।
 अथवा इल्लतन (क) सं.— अभाव, हीनता;
 गरीबी, दरिद्रता ।
 अथवा इल्ले, अथवा इल्ले (क) सं.—
 अभाव, नहीं की स्थिति; समाप्ति । अथवा
 अथवा इल्ले इल्ल—बिलकुल नहीं ।
 अथवा इल्ला (क) अ.क्रि.— नहीं, न ।
 अथवा मल्लि (क) सं.— चुगली, निंदा,
 आक्षेप । —अथवा मल्लितन (क) सं.—
 चुगली, आक्षेप या निंदा करने की प्रकृति ।
 अथवा इल्लि (क) अ.— यहाँ, इधर, इस स्थान
 में । —अथवा यवनु (क) सं.— यहाँ का
 आदमी । —अथवा तनक, अथवा वरं (क)
 अ.— यहाँ तक ।
 अथवा इल्लवल (सम्) सं.— एक राक्षस ।
 अथवा इव (क) सर्व.— यह (निश्चय वाचक
 सर्वनाम पु.लिं., ए.व.— अन्यपुरुष)
 अथवा इव (सम्) अ.— जैसा, गोया, कुछ-
 कुछ, थोड़ा, शायद, कदाचित् ।
 अथवा इवल, अथवा इवल (क) सर्व.— यह
 स्त्री.लिं., ए.व.— अन्य पुरुष) ।
 अथवा इवु, अथवा इवुगलु (क) सर्व.— ये
 (न.लिं., अ.व.—अन्यपुरुष) अथवा इवु (यह)
 —अथवा इवु या अथवा इवुगलु (ये) ।
 अथवा इवे (क) क्रि.— हैं (अ.व.) ।
 अथवा इशारे, अथवा इशारे (अ.दे.) सं.—
 इशारा (अरबी); संकेत, सैन; सूचना,
 पहचान ।
 अथवा इशीके, अथवा इषीके (सम्) सं.—
 नरकुल, सींक; बाण ।
 अथवा इपु (सम्) सं.—बाण, अस्त्र । —अथवा
 आसन (सम्) सं.— धनुष ।
 अथवा इपुषि (सम्) सं.— तरकस, तूणीर ।

अथवा इष्ट (सम्) वि.— इच्छित, वांछित ।
 सं.— इच्छा, वांछा; प्रियतम, पति ।
 अथवा इष्टके (सम्) सं.— इंट ।
 अथवा इष्टगंध (सम्) वि.— सुगंधित,
 खुशबूदार ।
 अथवा इष्टदेवते (सम्) सं.— कुलदेवता,
 आराध्य देव ।
 अथवा इष्टमित्र (सम्) सं.— बंधु-मित्र ।
 अथवा इष्टरु (सम्) सं.— मित्र, बंधु, आस
 जन ।
 अथवा इष्टलिंग (सम्) सं.— वह लिंग,
 जिसे वीरशैव लोग धारण करते हैं ।
 अथवा इष्टव (सम्) सं.— उपद्रव, उत्पात ।
 अथवा इष्टसिद्धि (सम्) सं.— मन की
 इच्छा की पूर्ति ।
 अथवा इष्टानिष्ट (सम्) सं.—अभीलाया-
 अनभिलाषा ।
 अथवा इष्टापत्ति (सम्) सं.— मनोरथ
 की पूर्ति, उद्देश्य की साधना ।
 अथवा इष्टार्थ (सम्) सं.— मन की वांछा,
 वांछित वस्तु ।
 अथवा इष्टि (सम्) सं.— अभिलाषा, कामना;
 प्रवृत्ति; यज्ञ, दर्श-पौर्णमास; गड़बड़ी;
 आमंत्रण; आज्ञा, अनुमति । —अथवा (सम्)
 वि.— इच्छित, वांछित; यज्ञ किया हुआ ।
 अथवा इष्टु (क) वि.— इतना, इतने परिमाण
 का, थोड़ा । सं.— अस्त्र, बाण ।
 अथवा इष्टे (सम्) सं.— प्रिया, प्रियतमा ।
 अथवा इष्टोत्तु (क) अ.—(अथवा+अथवा)
 —इतना समय, इतनी देर ।
 अथवा इष्म, अथवा इष्य (सम्) सं.— वसंत
 ऋतु; कामदेव ।
 अथवा इष्वास, अथवा इष्वासन (सम्)
 सं.— शरासन, धनुष ।
 अथवा इस् (क) वि.बौ.— छि: ! छि: !, छि: ।
 अथवा इस (क) वि.— दे. अथवा.
 अथवा इसतु (क) सं.— एक प्रकार का चर्म-
 रोग ।
 अथवा इसतुगोलु (अ.दे.) सं.—
 इसबगोल, एक दवाई विशेष ।

अथवा इससु (अ.दे.) सं.— व्यक्ति ।
 अथवा इसवि (अ.दे.) सं.— इसवी ।
 अथवा इसकोल्, अथवा इसिकोल्
 (क) क्रि.— ले, खींच ले, छीन ले ।
 अथवा इसु (क) क्रि.— तीर चला-बाण-प्रयोग
 कर । प्र.— प्रेरणार्थक प्रत्यय । उदा.—
 अथवा माहु (कर)— अथवा माहुसु
 (करा) ।
 अथवा इसुवेस (क) सं.— आज्ञास कार्य ।
 अथवा इसकवालु (अ.दे.) सं.—स्वागत-
 सत्कार, आदर-सत्कार ।
 अथवा इस्तरि, अथवा इस्त्री (अ.दे.) सं.—
 इस्तिरी (हि.) ।
 अथवा इह (क) वि.— रहनेवाला, विद्यमान,
 वर्तमान । अथवा इहुदु—है, वर्तमान है ।
 अथवा इह (सम्) अ.— यहाँ, इस स्थान में, इस
 समय । —अथवा लोक (सम्) सं.— यह
 लोक, यह भूमि ।
 अथवा इहगे, अथवा इहगे, अथवा इहगे,
 अथवा हीगे, अथवा हीगे (क) अ.— इस
 प्रकार, इस भाँति ।
 अथवा इहत्र (सम्) अ.— यहाँ, इस लोक में ।
 अथवा इहेतु (क) क्रि.— हूँ (उत्तम पुरुष
 ए.व.) ।
 अथवा इल् (क) क्रि.— खींच ।
 अथवा इल्लकलु, अथवा इल्लकलु (क)
 सं.—फिसलन; जल, पानी ।
 अथवा इल्लानाडि (सम्) सं.— दाईं तरफ
 की नाक, नथना ।
 अथवा इल्लिकेयु (क) क्रि.—तिरस्कार कर,
 नीचा दिखा ।
 अथवा इल्लिके पडे (क) क्रि.—तिरस्कृत हो,
 हीन हो, अपमानित हो ।
 अथवा इल्लिके, अथवा इल्लिके, अथवा इल्लिके,
 अथवा इल्लिके, (क) सं.—हीनता, क्षीणता,
 अवनति, अपमान, गरीबी ।
 अथवा इल्लित, अथवा इल्लित (क) सं.— अथवा
 इल्लत, अथवा इल्लत—उतराई, अवनति,
 कमी ।

१० इच्छि (क) कृ.— नीचे उतर कर।
 वि.— क्षीण, खराब।
 १०० इच्छिमुक्तु (क) क्रि.— पूरा-पूरा
 हब, निमज्जित हो; नष्ट हो, बरबाद हो।
 १०१ इच्छिपु, १०२ इच्छिपु, १०३ इच्छिसु,
 १०४ इच्छिसु, १०५ इच्छिहु, १०६ इच्छिहु,
 १०७ इच्छिहु, १०८ इच्छिहु, १०९ इच्छिहु,
 (क) क्रि.— नीचे उतार, उतार दे, क्षीण
 या हीन कर, निंदा कर।
 ११० इच्छिहोतु (क) सं.— अपराह्ण,
 तीसरा प्रहर।
 १११ इच्छि (क) क्रि.— चुभ, भोंक।
 ११२ इच्छि (सम्) सं.— भूमि, पृथिवी।—
 ७७ आणम (तद्) सं.— राजा, भूपति।
 ११३ इच्छिक्क (क) सं.— दे. ७८५.
 ११४ इच्छिदुवरि (क) क्रि.— खींचकर जा,
 बह।
 ११५ इच्छिकुलि (क) सं.— खिंचाव, आकर्षण।

ई

ई—कन्नड वर्णमाला का चौथा अक्षर; सर्व.—
 निर्देशवाचक; उदा.— ई पुस्तक-
 यह पुस्तक, ई बालक—यह बालक
 ई हेंगसु—यह औरत; मध्यम
 पुरुष व.व. प्रत्यय-आज्ञार्थ में; उदा.—
 नदीरि-चलिए, नदीरि-होलीरि-
 मारिए।
 ई, ईयु (क) क्रि.— दे; सौंप दे;
 अनुमति दे; करने दे; जन्म दे (पशुओं का
 बच्चों को जन्म देना)।
 ई (सम्) क्रि.— जाना; चमकना, व्याप्त
 होना; इच्छा करना; फेंकना; रवाना होना;
 माँगना; गर्भवती होना। स.— कामदेव;
 दुःख, पीड़ा, दर्द; उदासी; क्रोध; विवेक;
 आह्वान; आवाहन।
 ई (क) वि.— मीठा, मधुर।
 ईगडल् (क) सं.— क्षीर-समुद्र।

ईचर (क) सं.— सुंदर स्वर, मधुर
 ध्वनि।
 ईदिसु (क) क्रि.— पिला।
 ईदु (क) क्रि.— पी।
 ईके (क) सर्व.— यह (आदर सूचक
 शब्द—स्त्री. लिं., व. व.) उदा.— ईके
 यारु—यह स्त्री कौन है?
 ईक्षक (सम्) सं.— देखनेवाला, प्रेक्षक।
 ईक्षण (सम्) सं.— दृष्टि, दृश्य, नेत्र।
 ईके (सम्) सं.— भविष्य-कथन करने-
 वाला।—ईके (सम्) सं.— भविष्य-
 कथन करनेवाली स्त्री।
 ईक्षण (क) अ.— अभी, तुरंत, फौरन।
 ईक्षित (सम्) वि.— देखा हुआ, ग्रहण
 किया हुआ।
 ईक्षिसु (सम्) क्रि.— देख, अवलोकन
 कर; ध्यान दे।
 ईक्षे, ईक्षा (सम्) सं.— दृष्टि,
 चितवन; विचार, ज्ञान।
 ईक्ष्य (सम्) वि.— देखा जानेवाला,
 देखने योग्य, ध्यान देने योग्य।
 ईग, ईगडु (क) अ.— अब, इस
 समय, इस वक्त।
 ईगल्, ईगलु (क) अ.—
 अभी, तुरंत।
 ईगल् (क) अ.— अब, इस समय।
 ईगलु (क) अ.— अब, इस समय।
 ईगे (क) क्रि.— दे, प्रदान करे, दया
 करे (विधि या आज्ञार्थ)।
 ईगे, ईगिगे (क) अ.— अब,
 इस समय, संप्रति।
 ईगे (क) अ.— दे. ईगं.
 ईचल्, ईचलु (क) सं.—
 एक ताल वृक्ष विशेष जिसके फल खजूर के
 जैसे होते हैं और जिससे मदिरा निकाली जाती
 है; पंखोंवाली दीमक।
 ईचल् (क) सं.— दे. ईचल्.
 ईचलुगार (क) सं.— ताड़ी
 बनाने और बेचनेवाला।

ईचले, ईचल् (क) सं.—
 दे. ईचल्.
 ईचु, ईचु, ईचु (क) वि.—
 रुखा, सूखा, मुरझाया हुआ, झड़ा हुआ।
 सं.— हल की लकड़ी या छड़ी, गाड़ी का
 अग्र भाग (मै.प्र.)।
 ईचुवोगु (क) क्रि.— रसहीन
 हो, सूख जा।
 ईचे (क) अ.— इस तरफ, इस ओर,
 इस किनारे पर।—ईके—इस किनारे
 पर। ईचेगे, ईचेगे—इस
 तरफ, इस किनारे पर। ईचेगे
 —आजकल; आगे चलकर। ईचेगे
 ईचेगे—इस तरफ या इधर का किनारा।
 ईजिसु (क) क्रि.— तैरा (प्रे.)।
 ईजु (क) क्रि.— ईजु, ईजु
 हीजु—तैर।—ईजु बीलु (क) क्रि.—
 तैरना प्रारंभ करना।—ईजु (क)
 सं.— तैरना।—ईजु ईजाडु (क)
 क्रि.— तैर, ईजाडिसु (क) क्रि.—
 तैरा।
 ईटिंगि, ईटि (क) सं.— भाला,
 बरछा, नौकदार आयुध।
 ईटिंगि (तद्) सं.— इष्टिका (तद्);
 ईट।
 ईदु (क) वि.— इतना, इतने परिमाण
 का, थोड़ा (ग्रा.)।
 ईडगु (क) क्रि.— पड़, बन। उदा.—
 अननु एल्लर कायुक्के ईडगु—अब
 एल्लर कारणके ईडगु—वह सभी की
 करुणा का पात्र बना। अननु अननु
 ईडगु नीनु असूयेगे ईडगुवेड—तुम
 असूया में न पड़।
 ईडडु (क) क्रि.— फेंक, फैला, विकीर्ण
 कर, त्याग।
 ईडि (क) सं.— ताड़ी, मदिरा।
 ईडिग (क) सं.— ताड़ी बनानेवाला
 पुरुष।
 ईडिगि (क) सं.— 'ईडिग' स्त्री।

अपठ इति (सम्) वि.— स्तुति किया हुआ, प्रशंसित ।

अपठ इति (क) क्रि.— ज़ोर से मार, आघात कर; वेग से आगे बढ़; बलपूर्वक खींच ।

अपठ इति (क) सं.— लक्ष्य, उद्देश्य; समता; प्रोहर, बंधक, गिरवी; पशुओं का चारा; बंदूक की गोली आदि; शक्ति, ऐश्वर्य; उपयुक्तता; अधिकता, वृद्धि, माध्यम; जुड़ना, मिलना; रक्षण; फेंकना; खींचना, भेदी में मिट्टी के बर्तन रखना । — अपठ कार, अपठ गार (क) सं.— बलवान या शक्तिमान पुरुष ।

अपठ इति (क) सं.— ठीक जोड़ी, अच्छी जोड़ी ।

अपठ इति (सम्) सं.— प्रशंसा, स्तुति ।

अपठ इति (क) क्रि.— सफल कर, पूर्ण कर, समाप्त कर ।

अपठ इति (क) क्रि.— सफल हो, पूर्ण हो ।

अपठ इति (तद्) सं.— चीणा (तत्) (मै.प्र.) ।

अपठ इति (क) सर्व.— यह (अदर सूचक— अन्य पुरुष पु.लिं. ए.व.) । — अपठ गल-ये (ब.व.) । सं.— जन्म देने की क्रिया, प्रसूति ।

अपठ इति, अपठ इतिबाधे (सम्) सं.— अतिवृद्धि, अनावृद्धि, टीढियों का आगमन, वृहों का उपद्रव, तोतों का उपद्रव और शत्रुओं की चढ़ाई; सांक्रामिक रोग; विदेश में भ्रमण या यात्रा ।

अपठ इति (क) प्र.— संदिग्ध वर्तमान न.लिं., ए.व. प्रत्यय । उदा.— अपठ इति बंदीतु— जाता (या जाती) हो, अपठ इति माडीतु— करता (या करती) हो ।

अपठ इति (क) अ.— इस तरफ, इधर, इस दिशा में ।

अपठ इति (क) सं.— प्रसूति, जन्म देना ।

अपठ इति, अपठ इति (सम्) वि.— ऐसा, इस प्रकार का, इसके सदृश्य, इसके बराबर ।

अपठ इति, अपठ इति (क) क्रि.— जन्म दे, गर्भ मोचन कर । वि.— मधुर, अच्छा, सुंदर । उदा.— अपठ इति मधुर अधर, अपठ इति सुंदर बाहू, अपठ इति इति— वह मनुष्य जिसकी बाहुएँ सुंदर हो ।

अपठ इति (क) सं.— मक्खियों का मल या गंदगी, जूँ, लीख ।

अपठ इति (सम्) वि.— वांछित, चाहा हुआ । सं.— इच्छा, चाह ।

अपठ इति (सम्) सं.— मन की इच्छा, वांछित वस्तु ।

अपठ इति, अपठ इति (सम्) सं.— इच्छा अपेक्षा, चाह ।

अपठ इति (अ.दे.) सं.— (अरबी शब्द 'ऐब' से)— भेद, अंतर, असमानता ।

अपठ इति (तद्) सं.— विभूति (तत्); भस्म ।

अपठ इति (क) क्रि.— दिला; प्रसव करा (प्रे.) ।

अपठ इति (क) वि.— दो की संख्या । उदा.— अपठ इति दो फुट, अपठ इति भुज—दस भुजाओं वाले (शिव), अपठ इति दशशिर रावण । अपठ इति बारह ।

अपठ इति, अपठ इति (क) क्रि.— खींच, अपनी ओर लगा, लीख (कंधी करके) निकालना ।

अपठ इति (क) सं.— गीलापन, आर्द्रता, नमी; शीतलता ।

अपठ इति (तद्) वि.— वीर (तत्); अपठ इति वीरभद्र । अपठ इति वसवण— वीरभद्र के सामने वसवण (वृषभ) (कह.) ।

अपठ इति (सम्) सं.— हवा; गमन; आंदोलन, प्रोत्साहन ।

अपठ इति (क) सं.— लीख निकालने की कंधी ।

अपठ इति (क) प्र.— मध्यम पुरुष ब.व. प्रत्यय । उदा.— अपठ इति माडुत्तीरि— करते हैं,

अपठ इति होगुत्तीरि—जाते हैं, अपठ इति इरुत्तीरि—रहते हैं । अपठ इति—प्रश्नसूचक; जैसे—अपठ इति? माडुत्तीरि?—करते हैं क्या?, अपठ इति? माडुत्तीरि?—खेलते हैं क्या ?

अपठ इति (सम्) सं.— रेगिस्तान, मरुभूमि ऊसर भूमि ।

अपठ इति (सम्) वि.— फेंका हुआ, त्यक्त, भेजा हुआ, मारा हुआ, पीटा हुआ ।

अपठ इति (क) क्रि.— कंधी से लीख निकाल ।

अपठ इति (क) सं.— अपठ इति, नीरुत्तीरि—प्याज़ ।

अपठ इति (क) सं.— लीख निकालने की कंधी ।

अपठ इति (क) क्रि.— खींच, शक्ति लगाकर खींच ।

अपठ इति (क) सं.— अपठ इति—तुरई (ग्रा.) ।

अपठ इति (क) सं.— मसूडा ।

अपठ इति (सम्) वि.— उदित; उन्नत; गया हुआ ।

अपठ इति (सम्) सं.— घाव ।

अपठ इति (सम्) सं.— इधर-उधर घूमना-फिरना ।

अपठ इति (सम्) सं.— ककडी (Cucumis utilisissimus) ।

अपठ इति, अपठ इति (सम्) वि.— डाही, मात्सुर्य रखनेवाला ।

अपठ इति, अपठ इति (सम्) सं.— डाह, मात्सुर्य ।

अपठ इति, अपठ इति (सम्) सं.— हसिया, छोटी तलवार ।

अपठ इति, अपठ इति, अपठ इति (सम्) सं.— छोटी तलवार, घास काटने का आयुध विशेष; तरकारी आदि काटने का आयुध, हसिया ।

अपठ इति (क) सं.— संबंध या रिश्ता, जैसे पशुओं का मनुष्यों के साथ और बच्चों का माता-पिताओं के साथ होता है ।

वय ईवर, अवयु ईवर (क) अ.—अभी-
अभी, कुछ ही देर पहले ।
वयग ईवाग (क) अ.—अव, संप्रति ।
वयवु ईवोत्तु (क) अ.—अव, इस समय,
आज ।
वय ईश (सम्) सं.—स्वामी, प्रभु; राजा;
ईश्वर, भगवान, शिव । —वय त्व (सम्)
सं.—प्रभुता, ईश्वरत्व ।
वयव ईशान (सम्) सं.—शिव, अष्टदिक्-
पालकों में एक, सूर्य; शमी वृक्ष ।
वयव ईशानि (सम्) सं.—दुर्गा, पार्वती ।
वयव ईशान्य (सम्) सं.—पूर्व और उत्तर
के बीच की दिशा; शिव ।
वयवव ईशावास्य (सम्) सं.—ईशावास्य
उपनिषद् ।
वयवव ईशितव्य (सम्) वि.—पूजा के योग्य,
शासित ।
वयवव ईशित्य (सम्) सं.—राजा, प्रभु,
शासक, अधिकारी ।
वयवव ईशित्व (सम्) सं.—प्रभुता, अधिकार ।
वयवव ईश्वर (सम्) सं.—स्वामी, प्रभु,
शिव, भगवान । —वयव गण—शिवगण ।
—वयव सन्न (सम्) सं.—मंदिर, देवालय ।
वयवव ईश्वरि (सम्) सं.—स्वामिनी; पार्वती,
दुर्गा; एक विपैली जड़ी ।
वयवव ईक्षण (सम्) सं.—इच्छा; आकांक्षा,
पाश; खोज । —वयव त्रय (सम्) सं.—
तीन पाश-पुत्र, पत्नी, और धन का पाश ।
वयवव ईषत् (सम्) अ.—थोड़ा, कुछ, छोटा ।
वयव ईषे, वयव ईषा (सम्) सं.—गाड़ी का
बम, हल का वाँस ।
वयव ईस, वयव ईसु (क) सं.—कुम्हड़ा ।
वयव ईस (तद्) सं.—ईश (तत्) ।
वयवव ईसर (तद्) सं.—ईश्वर (तत्) ।
वयव ईसु (क) क्रि.—तैर । —वयव आट (क)
सं.—तैरना । —वयववव कुंबळकायि
(क) सं.—सूखा कुम्हड़ा जो तैरना सीखने
के लिए काम में लाया जाता है ।

वयव ईसु (क) क्रि.—दिला, दिलवा, मज़बूर
कर, अनुमति दे; बच्चा जना (प्रे.) ।
वयव ईसु (क) वि.—इतना, इस परिमाण
का । वयवव ईसीसु—इतना-इतना (अनुरणन
शब्द) ।
वयव ईह (क) सं.—देना ।
वयवव ईहा (सम्) सं.—चाह; अभिलाषा;
उद्योग, क्रियाशीलता । —वयवव वृग (सम्)
सं.—भेड़िया; रूपक का एक भेद ।
वयवव ईहित (सम्) वि.—वांछित, अभि-
लषित ।
वयव ईहे (सम्) सं.—दे. वयवव.
वयव ईहे (क) सं.—नारंगी, संतरा, मुसम्बी
आदि फल ।
वयव ईह्य, वयवव ईह्येय (क) सं.—वयवव
वीह्य—तांबूल ।
वयवव ईह्ये (क) सं.—जो सुलझा हुआ
हो; निश्चिंता; स्वतंत्रता ।

७० उ

७० उ—कन्नड-वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर ।
कई शब्द उकारांत ही होते हैं, जैसे—उद
कर (बछड़ा), उदु माडु (कर), उदुव
कोंबु (सींग), उदुव नोडु (देख) आदि;
प्राचीन कन्नड (ह.क.) में जो शब्द व्यंजनांत
होते हैं वे आधुनिक कन्नड (होसगन्नड) में
उकारांत होते हैं; उदा.—उल् कल् (पथर)
—उल्ल कल्ल, उल् तिन् (खा)—उन्नु
तिन्नु; कुछ तद्भव शब्दों के अंत में 'उ'
लगता है; उदा.—उन्नु मनस्सु (मन),
उन्नु यशस्सु (यश); उन्नु मेघस्सु
(मेघा); कर्त्ता कारक का चिह्न; जैसे—
उन्नु रामन्नु (राम), उन्नु अंविक्केयु
(अंविका), उन्नु पक्षियु (पक्षी), उन्नु
हेडियु (भीरु) आदि ।
७० उं (क) अ.—और, तथा, एवं (संयोजक);
उदा.—उन्नु रामन्नु उन्नु लक्ष्मणन्नु—राम और लक्ष्मण; वि.बो.—

हुं (असंतोष का सूचक); बीमार आदमी के
मुँह से या नौद के उचट जाने पर निकलने-
वाला शब्द 'उं' ।
७० उं उंकि, ७० उं उंके, ७० उं उंके (क)
सं.—फैलाया हुआ ताना ।
७० उं उंकिसु (क) क्रि.—देख, अवलोकन
कर, परीक्षा कर, ध्यान दे, विचार कर ।
७० उं उंकुण (तद्) सं.—उत्कुण (तत्);
खटमल ।
७० उं उंगर, ७० उं उंगुर (क ?) सं.—
अंगूठि (इसकी व्युत्पत्ति संभवतः 'अंगुली'
से है) ।
७० उं उंगुट (तद्) सं.—अंगुष्ठ (तत्);
पैर का अंगूठा ।
७० उं उंगुट्टु (तद्) सं.—दे. ७० उं ।
७० उं उंगुदल (क) सं.—धुं-
राले बाल ।
७० उं उंगुरेखु (क) सं.—अंगूठी
पहनने की अंगुली, अनामिका ।
७० उं (क) सं.—दे. ७० उं ।
७० उं उंच (क) सं.—बाँस की छेददार
टोकरी जो मुर्गी, बतख आदि पर ढका
जाता है ।
७० उं उंच (तद्) वि.—उच (तत्); ऊँचा;
श्रेष्ठ, महान् ।
७० उं उंच (सम्) सं.—अनाज के दानों का
संग्रहकार्य । —उं वृत्ति (सम्) सं.—
पेड़े-पौधों के नीचे पड़े हुए अनाज के दानों
का संग्रह करके ही निरवाह करना ।
७० उं उंज (सं)—उंज पुंज, उंज हुंज—
मुर्गी, कुक्कुट ।
७० उं उंट्टु (क) क्रि.—वर्तमान है (द. क)
७० उं उंट्टु = ७० उं उंटागु-
उंट्टु—होगा । ७० उं उंटागु—हो,
उत्पन्न हो । ७० उं उंटागुविके
—उत्पन्न करना, होने देना । ७० उं उंटागुद
दिवस ७० उं उंटागुद ७० उं उंटागुद
देवर उटव कोडलारनो—जिस भगवान् ने
उत्पन्न किया (जन्म दिया), वह भोजन
नहीं दे सकेगा ! (कह.) ।

७०६३ उंटु (क) क्रि. = ७०६३ उंटुडु—
दुर्ग, एक ओर से दूसरी ओर गतिमान
हो।

७०६३ उंटुडु (क) सं. — एक प्रकार की
कमकीन खाने की चीज़ जो चावल से बनाई
जानी है, एक प्रकार का दोसा।

७०६३ उंटुडुडि, ७०६३ उंटुडुडिग (क)
सं. — केवल खा-पीकर समय बितानेवाला,
बेकार मनुष्य।

७०६३ उंटुडिग (क) सं. — एकाकी पुरुष
जिसके माता-पिता या कोई रिश्तेदार न हो।

७०६३ उंटुडिगे (क) सं. — मुहर, छाप; विना
किमी रोक के जाने-जाने या यात्रा करने के
लिए दिया जानेवाला आज्ञा-पत्र; एक छोटा
छेद, जो फल में बनाया जाता है, यह देखने
के लिए कि वह पका है या नहीं।

७०६३ उंटु (क) कृ. — [‘७०६३ उण्’ (खा)
धातु से] — खाकर।

७०६३ उंटुडे (क) सं. — किसी वस्तु (शकर,
भुना हुआ चूड़ा, इमली, मिट्टी, गोबर
आदि) की गोलाकृति।

७०६३ उंटु (क) अ. — इस प्रकार, यह,
इसमें; बीच में; मध्यम रीति से।

७०६३ उंटुडे (क) अ. — अकारण, यों ही।

७०६३ उंटुडे (क) सं. — संग्रह, राशि, ढेर।

७०६३ उंटु (क) अ. — अब, इस समय।

७०६३ उंटुडु, ७०६३ उंटुडु (सम्) सं. —
चूड़ा, घूस।

७०६३ उंटुडुडि, ७०६३ उंटुडुडिगे,

७०६३ उंटुडुडि, ७०६३ उन्मडि,

७०६३ उन्मडिगे, ७०६३ उन्मुडि,

७०६३ उन्मुडिगे (क) सं. — दान,

निःशुल्क दिया हुआ स्थान, मुफ्त की ज़मीन-
वापदाद आदि। — ७०६३ गार (क) सं. —

बह आदमी, जिसको दान की भूमि प्राप्त
हुई हो।

७०६३ उंटु (क) क्रि. — खा, भोजन कर
(प्र.)।

७०६३ उः (क) वि.बो. — (तिरस्कार सूचक)
— छिः!, धत्!।

७०६३ उःपु (क) वि.बो. — (दुःख या निराशा
का सूचक) — हाय!, ओह!

७०६३ उक (क) प्र. — संज्ञार्थक प्रत्यय; उदा.—
७०६३ कटुक—वांधनेवाला, ७०६३ तटुक—
मारने या पीटनेवाला।

७०६३ उकाल् (अ.दे. ?) सं. — वमन,
उलटी (मै. प्र.)। — ७०६३ जुलाव्—
है (Cholera)।

७०६३ उकड (क) सं. — चुंगी या महसूल
वसूल करने का स्थान (Octroi); सुरक्षित
स्थान, डेरे के बाहर का खूँटा, सुरक्षा, पहरा;
एक छोटी रस्सी, जो बड़ी रस्सी के साथ
जुड़ाकर कुएँ से पानी खींचने के लिए उपयोग
में लायी जाती है। — ७०६३ मने (क) सं.—
चुंगी-घर। — ७०६३ होल (क) सं.—
वाहरी सीमा में रहनेवाला खेत।

७०६३ उकंद (क) वि. — अधिक, बहुत,
विशिष्ट, दृढ़। सं. — घर की छत से लगी
हुई छोटी तख्ती या बाँस का टुकड़ा जिसपर
कपड़े आदि लटकाते हैं। ऐसे दो टुकड़े पास-
पास हो तो वे अलमारी (Shelf) के सरीखे
होते हैं।

७०६३ उकलिसु (क) क्रि. — हाथ से
निकल; सीमा से बाहर हो; डर, भयभीत
हो।

७०६३ उकलु (क) सं. — भाराम, विश्राम;
स्थान; समय।

७०६३ उकलिके (तद्) सं. — उत्कलिका
(तत्); उत्कंठा, चिंता, विकलता, वियोग;
डर, भय; कली, मुकुल; लता; कमंडलु।

७०६३ उकला (अ.दे.) सं. — हुक्का (भरवी)।

७०६३ उकव, ७०६३ उकवे (क) सं.—
घोखा, ठगई, कपट, छल।

७०६३ उकिसु (क) क्रि. — उबाल, औटा।

७०६३ उककु, ७०६३ उकु (क) क्रि. — अधिक
हो; उबल, औट, छलक, उछल (जल आदि

का बर्तन से बाहर आना) सं — मद्, नदा;
गर्व; घमंड; शक्ति, बल; फौलाद, पक्का
लोहा।

७०६३ उक्कुल (क) सं. — वृद्धि, अधिकता,
उफान, छलक।

७०६३ उक्कुविके (क) सं. — छलकने,
उछलने की क्रिया।

७०६३ उक्के (क) सं.—जोताई, हल चलाना।
— ७०६३ होड़े (क) क्रि.—जोत, हल चला।

७०६३ उक्के (क) सं.— शेष भाग, वचन।

७०६३ उक्केर (क) क्रि. — अधिक हो,
उछल, छलक जा (अक्. क्रि.)।

७०६३ उक्त (सम्) वि. — कहा हुआ, कथित।
सं.— शब्द, वात।

७०६३ उक्ति (सम्) सं.— कथन, वात, शब्द,
वचन। — ७०६३ क्रम (सम्) सं.— उचित
रीति से वचन कहना। — ७०६३ विद (सम्)
सं.— शब्द जाननेवाला, वैयाकरण।

७०६३ उक्तिसु (सम्) क्रि. — कह, बोल;
घोषणा कर।

७०६३ उक्ते (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम।

७०६३ उक्ये (सम्) सं.— कथन, वचन;
प्रशंसा; एक वृत्त का नाम।

७०६३ उक्ष (सम्) सं.— बैल, साँड़। — ७०६३
ग, ७०६३ गमन, ७०६३ वाहन, ७०६३ ध्वज
(सम्) सं.— शिव।

७०६३ उक्षण (सम्) सं.— छिड़काव, प्रोक्षण,
मार्जन।

७०६३ उक्षतर (सम्) सं.— बलवान या बड़ा
बैल या साँड़।

७०६३ उक्षपति (सम्) सं.— शिव।

७०६३ उक्षराज (सम्) सं.— शिव।

७०६३ उक्षित (सम्) वि.— छिड़का हुआ,
प्रोक्षित।

७०६३ उक्षेश्वर (सम्) सं.— महादेव।

७०६३ उखे (सम्) सं.— घड़ा, बटलोई,
डेगची।

७०६३ उख्य (सम्) वि.— बटलोई में उबाला
हुआ।

- गं उग (क) प्र.— संबंधित, वाला; उदा.—
७गुग ऊरुग—बस्ती या ग्राम से संबंधित
(व्यक्ति) ग्रामीण, (या ग्रामवाला)।
- गं उग (तद्) सं.— युग (तद्); ७गगु
उगादि—युगादि।
- गंउ उगनि (क) सं.— एक लता विशेष
(*Cocculus cordifolius*, *Lettsomia
aggregata*)।
- गंउ उगम (तद्) सं.— उद्गम (तद्);
उत्पत्ति स्थान, निकास; मूल।
- गंउउ उगरिसु (क) क्रि.— कठिनाई से
साँस ले।
- गंउउ उगळ्, ७गंउउ उगळ्, ७गंउउ
उगळ्, ७गंउउ उगळ् (क) क्रि.— थूक,
थूक फेंक। सं.— थूक, खखार।
- गंउउउ उगळिसु, ७गंउउउ उगळिसु,
७गंउउउ उगुळिसु, ७गंउउउ उगुळिसु,
(क) क्रि.— थुका (प्रे.)।
- गगग उगादि (तद्) सं.— दे. ७गं
७गगगउ उगादिहब्ब—वर्षादि का ल्योहार।
- गगगउगग उगाभोग (सम्) सं.— एक
प्रकार का गेय काव्य।
- गगग उगि (क) क्रि.— खींच, शक्ति लगाकर
खींच, उठा ले, चुरा ले; विदीर्ण कर, चीर;
बाहर निकाल (जैसे म्यान से तलवार
निकालना); नख से क्षत कर, आघात कर,
नोच; फाड़, टुकड़े कर; डर, भीत हो;
लौंघ, पार कर; गिर, पड़, चूर-चूर हो;
प्रवेश कर; गाड़। सं.— वाष्प, भाफ।
- गगग उगित (क) सं.— गाड़ने की क्रिया
(मै.प्र.)।
- गगगउ उगिपद् (क) सं.— लूट, अपहरण।
- गगगग उगिवगि, ७गगगग उगिवगि (क)
क्रि.— विदीर्ण कर, चीर, फाड़।
- गगगगउ उगिबंडि (क) सं.— वाष्प से चलने-
वाली गाड़ी, रेल।
- गगगग उगिसु (क) क्रि.— गिरा, चोरी करा,
लूट करा, निकाल, थुका (प्रे.)।
- ७गग उगु (क) क्रि.— डाल, छोड़, निकल,
शिथिल हो, बह, दौड़, गिर; घिरा, लगा,
फेंक, उल्टा कर, चू।
- ७गगउ उगुनि (क) सं.— वृक्ष विशेष, पीलु
सहस्रांगी।
- ७गगउउ उगुर्, ७गगउउ उगुरु (क) सं.—
७गगउ उगुर—नख, पंजा। ७गगउउ ७गगउ
उगुरु ७गगउउ उगुरलि होगुउदक्के
कोडलिये—नाख से जो कार्य संभव है, उसके
लिए कुल्हाड़ी की आवश्यकता है? (कहा.)।
— ७गगउउ ७गगउ—इतना गरम कि नख को
गरमी लगे। — ७गगउउ ७गगउ—घाव को नख से
नोचने से खून में होनेवाली खराबी (या
विष)। — ७गगउउ सुतु—नख का घाव। —
७गगउउ ओतु—नख-क्षत के कारण उत्पन्न घाव।
— ७गगउउ कोने—नख की नोक।
- ७गगउउउ उगुरिसु (क) क्रि.— नोच, नख से
क्षति कर, घायल कर।
- ७गगउउ उगुळ् (क) क्रि.— थूक, मुँह से पानी
गिरा, खखार; तिरस्कार कर, धिक्कार।
सं.— थूक।
- ७गगउउउ उगुळिसु, ७गगउउउ उगुळिसु
(क) क्रि.— दे. ७गगउउ।
- ७गग उगे (क) क्रि.— उत्पन्न हो, जन, बाहर
आ, निकल, दिख। सं.— वाष्प, भाफ।
- ७गग उगग (क) सं.— रस्ती, जो बर्तन आदि
गले में बांधी जाती है।
- ७गग उगगट, ७गग उगगड (तद्) सं.—
उत्कट (तत्); दे. ७गगउउ।
- ७गग उगगड, ७गग उगगडने (क) सं.—
पुनरुक्त ध्वनि; ध्वनि, शोर-गुल; संगीत या
नृत्य में बार-बार उच्चरित किये जानेवाले
स्वर; प्रशंसा।
- ७गग उगगडिसु (क) क्रि.— बारंबार किसी
बात को कह, ध्वनि कर, गुणगान कर (जैसे
'वदी-मागध करते हैं')।
- ७गगउ उगगार (तद्) सं.— उद्गार (तत्);
अभिप्राय व्यक्त करना, मत।
- ७गग उगिग (क) वि.— जलने योग्य। —
७गगउ उगगिग, ७गगउ उगगिग (क)
सं.— जलनेवाला तेल, जलने के योग्य तेल।
- ७गग उगिग (क) सं.— ७गगउ हुगिग—पानी में
उवाला गया चना (या मूँग), जिसमें नमक,
मिर्च—मसाला डालकर खाया जाता है।
- ७गग उगु (क) क्रि.— फेंक, पानी फेंक,
फैला; अटक-अटक कर बोल। सं.— अटक-
अटक कर बोलना, तोतली बोली, तुतलाहट।
- ७गग उग्र (सम्) वि.— भयंकर, भयावह,
भीकर, क्रूर; गरम; तीव्र, तीक्ष्ण; क्रुद्ध।
सं.— क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की
संतान; शिवजी। — ७गगउ गंधे (सम्)
सं.— चंपा का वृक्ष, चमेली, लहसन, हींग।
— ७गगउ चंडि (कम्) सं.— दुर्गा का नाम।
- ७गग उग्रते (सम्) सं.— हिंसा, उद्वेग,
क्रोध, क्रूरता।
- ७गग उग्रत्व (सम्) सं.— दे. ७गगउ।
- ७गग उग्रदंड (सम्) सं.— राजदंड;
निर्दयता।
- ७गग उग्रधन्व (सम्) सं.— इंद्र।
- ७गग उग्रलोचन (सम्) सं.— शिवजी।
- ७गग उग्रशक्ति (सम्) सं.— एक राजा
का नाम।
- ७गग उग्रशासन (सम्) सं.— कठोर
शासन, कठोर आज्ञा।
- ७गग उग्रसेन (सम्) सं.— कंस के पिता
का नाम।
- ७गग उग्रशु (सम्) सं.— महादेव, शिव।
- ७गग उग्राण (क) सं.— सामान आदि रखने
का स्थान, गोदाम, भंडार; खजाना।
- ७गग उग्राणि (क) सं.— भंडार घर का
रक्षक, भंडार घर के रक्षक का नौकर
(मै.प्र.); ग्रामीण सेवक (द.क.)।
- ७गग उग्राणिक (क) सं.— भंडार घर या
गोदाम का रक्षक।
- ७गग उग्राणिसु (क) क्रि.— ढेर होना,
असंख्य होना, असीम होना।
- ७गग उग्रांबक (सम्) सं.— शिव।

७५५ उज्जल (तद्) वि.— उज्वल (तत्) ; प्रकाशमान, कांतियुक्त ।

७५५ उज्जलिके (तद्) सं.— उज्वलता (तत्) ; प्रकाश, कांति ।

७५५ उज्जसन् उज्जसन् (सम्) सं.— हत्या, मारण, घात, मार डालना ।

७५५ उज्जिसु (क) क्रि.— लगवा, रगड़ा (प्रे.) ।

७५५ उज्जीव (सम्) सं.— फिर से जीवित करना, पूर्व रूप में लाना ।

७५५ उज्जीविसु (सम्) क्रि.— फिर से जीवित कर, जीवन-दान कर ।

७५५ उज्जु (क) क्रि.— रगड़, लगा । —

७५५ उज्जुडु (क) सं.— लकड़ी या काठ को चिकना करने का आयुध ।

७५५ उज्जुग (तद्) सं.— उद्योग (तत्) ; काम, नौकरी ।

७५५ उज्जुगिसु (तद्) क्रि.— उद्योगिसु—काम कर, काम में लग ; प्रयत्न कर ।

७५५ उज्जुभित (सम्) वि.— विकसित; खुला; उत्पन्न ; खिला, प्रफुल्लित ; विस्तृत ; मुँह खुला, जंभाई लिया हुआ ।

७५५ उज्जेणि (तद्) सं.— उज्जयिनी (तत्) ।

७५५ उज्जल, ७५५ उज्जल, ७५५ उज्जल, ७५५ उज्जल (सम्) वि.— चमकीला, कांतिमान, मनोहर, सुंदर, स्वच्छ, प्रकाशमान । — ७५५ इसु (सम्) क्रि.— प्रकाशमान हो । — ७५५ ते (सम्) सं.— कांति, चमक, शोभा ।

७५५ उज्जलन (सम्) सं.— प्रदीप्त, चमकीला, चमक, कांति ।

७५५ उज्जलविद्ये (सम्) सं.— सुंदर और अच्छी विद्या ।

७५५ उज्जलित (सम्) वि.— चमकदार, शोभायुक्त ।

७५५ उज्जाल (सम्) सं.— ज्वाला, दीप्ति, लौ ।

७५५ उज्जित (सम्) वि.— त्यक्त, त्यागा हुआ, छूटा, छोड़ा हुआ ।

७५५ उट (सम्) सं.— पत्ते, घास आदि जो झोंपड़ी या कुटी बनाने में काम आते हैं ।

— ७५५ ज (सम्) सं.— कुटी, पर्णशाला ।

७५५ उटायिसु (अ.दे.) क्रि.— ('उठाना' से) उठा, ऊँचा कर ।

७५५ उट्ट, ७५५ उट्टु, ७५५ उरट्ट, ७५५ उरट्ट (क) सं.— मोटापन, गाढ़ापन (जैसे कपड़े, धागे आदि का होता है) ।

७५५ उट्टर (क) सं. = ७५५ उट्ट—नीवी, कमर में बांधी हुई साड़ी की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे ढोरी से या यों ही बांधती हैं ।

७५५ उट्टि (क) सं.— गाली, बुरे वचन, दुर्भाषा ; ताक, ताखा, आला ; छत्ता ।

७५५ उट्टु (क) सं.— गोलाकार वस्तु ; लंगर ; छोटा ढंडा, नाव खेने का ढंडा ।

७५५ उट्टु (क) क्रि.— जन्म ले । सं.— जन्म (प्रे.) ।

७५५ उट्टु (तेलुगु) सं.— ताक (७५५ का ब.व.) । — ७५५ उट्टुट्ट (क) सं.— दे. ७५५ ।

७५५ उठाउठी (हिं. ?) अ.— शीघ्र, तुरंत, फौरन ।

७५५ उड, ७५५ उडु (क) सं.— गिरगिट, छिपकली की जाति का एक प्राणी ।

७५५ उड (क) सं.— कमर, कटि । — ७५५ दार (क) सं.— कटिसूत्र, मेखला, मौंजी ।

७५५ उडगिसु (क) क्रि.— झाड़-बुहार करा, साफ़ करा ; कम करा, निर्बल करा (प्रे.) ।

७५५ उडगु, ७५५ उडगु (क) क्रि.— झाड़-बुहार कर, झाड़ना ; कम हो, दुर्बल हो, सिक्कड़, ठिठुर ; दवा, प्रतिबंध कर ।

७५५ उडपु, ७५५ उडपु (क) सं.— पहनावा, पोशाक ।

७५५ उडलु (क) सं.— दे. — ७५५ ।

७५५ उडसु (क) क्रि.— पहना (प्रे.) ।

७५५ उडाफे (अ. दे.) सं.— विरोध, अस्वीकृति ; उपेक्षा, गाली ।

७५५ उडायिसु (हिं.) क्रि.— उपेक्षा कर, अस्वीकार कर (मै. प्र.) ।

७५५ उडाल (क) सं.— चंचलचित्त, सुस्त, वेकार मनुष्य ।

७५५ उडि (क) क्रि.— काट, टुकड़े-टुकड़े हो, टुकड़े होकर विकीर्ण हो (अक. क्रि.) ; दबा, कुचल, तोड़, फाड़, टूँस । सं.— टुकड़ा, अंश ; एक बीमारी ; कटि, नितंब ; धोती या साड़ी में सामान या छोटी-छोटी वस्तुएँ रखने के लिए बनी थैली या थैली का आकार । — ७५५ कूसु, ७५५ गूसु (क) सं.— नन्हा बच्चा जो माता की गोद (या साड़ी की थैली—'७५५') में रहता है, वह बच्चा जिसका पालन-पोषण सावधानी से करना पड़ता है । — ७५५ कडि, ७५५ गडि (क) सं.— सुपारी रखने की छोटी थैली जो कमर में बाँधी जाती है । — ७५५ दार (क) सं.— दे. ७५५ ।

७५५ उडि (क) क्रि.— पहन, वस्त्रादि धारण कर । सं.— एक पौधा विशेष, अजशृंगी (Oдина wodier) ।

७५५ उडिके, ७५५ उडिगे, ७५५ उडुगु (क) सं.— पहनावा, पोशाक । — ७५५ गण (क) सं.— वह मनुष्य जिसने विधवा से विवाह किया हो । ७५५ गंडन ७५५ उडिके गंडन उपद्रव बहल—विधवा को व्याहा पुरुष बहुत तंग करता है (कह.) । — ७५५ माडु (क) क्रि.— विधवा को चोली या साड़ी देना और इस प्रकार उसे अपनी पत्नी बनाना । — ७५५ यवळु (क) सं.— विधवा, जिसने दूसरा विवाह किया हो ।

७५५ उडिगु (क) क्रि.— झाड़ना, झाड़-बुहार करना ।

७५५ उडिल् (क) सं.— दे. ७५५ (अंतिम अर्थ) ।

७५५ उडिसु (क) क्रि.— चूर-चूर कर, टुकड़े कर ; पहना, धारण करा (प्रे.) ।

ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ವಸ್ತ್ರಾದಿ ಧಾರಣೆ ಕರ |
 — ಕೆರೆ, ಗೆರೆ, ಗೋರೆ, ಗೋರೆ, ಗೆರೆ (ಕ)
 ಸಂ.— ಉಪಹಾರ, ಖೆಡೆ ; ಖಿವಾಹ ಢೆಂ ವರ-ವಧು ಕೊ
 ಉಪಹಾರ ಢೆಂ ದಿವೆ ಜಾನೆವಾಲೆ ವಸ್ತ್ರ | — ಡೊಡ-ಗೆ
 ತೊಡುಗೆ (ಕ) ಸಂ.— ದೊಹರಾ ಪಹನಾವಾ (ಅನುರಣನ
 ಶಬ್ದ | — ಸೀರೆ (ಕ) ಸಂ.— ಕಾಠ
 ಬಾಂಧನೆ ಕೊ ಸಾಡಿ, ಕಾಠನಿ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಕಡಿ, ಕಮರ ; ಡಿಪಕಲಿ
 ಕೊ ಜಾತಿ ಕಾ ಂಕ ಪ್ರಾಣಿ |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ನಕ್ಷತ್ರ ; ಜಲ, ಪಾನಿ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಕಡಿ-ವಸ್ತ್ರ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಸಿಧಾ ಕರ,
 ಬಾಂಧ, ಕಸಕರ ಬಾಂಧ, ದವಾ ; ಪ್ರತಿಬಂಧ ಕರ,
 ಅಧಿಗನ ಢೆಂ ಲಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಉಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಡೊಡುಗೆ ಹುಡುಗ-
 ಲಡಕಾ (ಗ್ರಾ.) |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಡೊಡುಗೆ ಹುಡುಗಿ-
 ಲಡಕಿ (ಗ್ರಾ.) |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ದೆ. ಉಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಸಂಕುಚಿತ ಹೊ,
 ಸಂಕೀರ್ಣ ಹೊ, ಸಿಕ್ಕುಡ, ಕಮ ಹೊ, ನ್ಯೂನ ಹೊ ;
 ಅನುಪಸ್ಥಿತ ಹೊ, ಅದೃಶ್ಯ ಹೊ, ಸುಕ ಜಾ, ಬಂದ
 ಹೊ ಜಾ ; ಡುಕ ; ಡೊಡ, ನಿಕಾಲ, ಖೊಜಲ ಹೊ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಜಾಡ, ಸಾಫ ಕರ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಪೊಶಾಕ, ಪಹನಾವಾ |
 — ಡೊಡುಗೆ ತೊಡುಗೆ (ಕ) ಸಂ.— ದೊಹರಾ
 ಪಹನಾವಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಉಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಗಿಲಹರಿ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಉಡು, ಉಡು ಅಡು, ಉಡು ಅಡು
 ಉಡು ಅಡು, ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ಚಂದ್ರಮಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಡೊಡಿ ನಾವ, ನೆವಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅರ್ಧ
 ಚಂದ್ರ |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಡೊಡಿ ಅಡು ಅಡು ಅಡು, ಉಡು ಅಡು
 ಡೊಡಿ ಅಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಶಿವ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ವಸ್ತ್ರ-ಬಾಂಧನ |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಡು

ಉಡು ಅಡು, ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಬೆಲ
 ಯಾ ಸಾಡ ಕೊ ಪಿಠ ಪರ ಕಾ ಅಭರಾ ಹುಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಉಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಂದ್ರಮಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಅರಣ್ಯ, ಜಂಗಲ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಕಮರ, ಕಡಿ ; ಪಹನನೆ ಕೆ
 ವಸ್ತ್ರ | — ಡೊಡಿ ಮಣಿ (ಕ) ಸಂ.— ರತ್ನಖಚಿತ
 ಢೆಲಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಡೆರ, ರಾಶಿ ಸಾಧಾರಣತಯಾ
 ತಿಗನ ವಸ್ತುಅಂ ಕೊ ರಾಶಿ |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಡು, ಚಿಡಿಂ
 ಕೊ ವಿಶೇಷ ಪ್ರಕಾರ ಕೊ ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಕ್ರೋಧ ಯಾ ರೊಪ
 ಪ್ರಕಟ ಕರನೆ ಕಾ ಸ್ವರ |
 ಉಡು ಅಡು, ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಖಾ,
 ಖೊಜನ ಕರ ; ಅನುಭವ ಕರ, ಮಜಾ ಕರ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಂಕ ಮಠಲಿ ವಿಶೇಷ ;
 ವೃತ (ಅನಾಜ ಖಾದಿ ಕಾ) |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಖಾನಾ ಖಾನಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಖಾನಾ ಖಿಲಾ |
 ಸಂ.— ಖೊಜನ, ಖಾನಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಖಾಂವಲಿಯಡು (ಕ) ಅ.—
 ಅಧಿಕ, ಬಹು, ಅತಿಶಯ ರೂಪ ಸೆ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಖೊಜನ ; ಖಾನಾ ಖಾನಾ ;
 ಗಾಯ-ಬೆಲೆಂ ಕೆ ಶರೀರ ಪರ ರಹನೆವಾಲಾ ಡೊಡಿ
 ಕೊಡಿ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಖಾನಾ ಖಿಲಾ,
 ಖೊಜನ ಕರಾ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಖಾನಾ ಖಾ, ಖೊಜನ
 ಕರ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಸಂ.— ಡೊಡಿ ಹುಡುಗ-ಘವ
 (ಗ್ರಾ.) |
 ಉಡು ಅಡು (ತದ್) ಸಂ.— ಅಡು (ತದ್) ;
 ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಹೊ, ಅಡು ಹೊ,
 ಜನ, ನಿಕಲ, ಬಾಹರ ಖಾ ; ಅಡು ಹೊ, ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಅ.— ಸಂದೆಹ, ಪ್ರಜ್ಞ, ವಿಚಾರ
 ಔರ ಅಧಿಕತಾ ಕಾ ಸೂಚಕ ಅಭ್ಯಯ |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಅ.— ಅಥವಾ, ಯಾ, ಔರ |

ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಪ್ರ.— 'ಹುಡು' ಕಾ ಸೂಚಕ ಪ್ರತ್ಯಯ ;
 ಅಡು.— ನಮಿಸುತ-ನಮಸ್ಕಾರ ಕರತೆ
 ಹುಡು, ಅಡು ಅಡು-ಕಹತೆ ಹುಡು, ಅಡು ಅಡು-
 ಫಿಸಲತೆ ಹುಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಅ.ದೆ.) ಸಂ.— ಅಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಅ.— ಯಾ, ಯಾ ತೊ |
 ಉಡು ಅಡು (ಕ) ಕ್ರ.— ವರ್ತಮಾನಕಾಲಿಕ ಕೃತ |
 ಅಡು.— ನಗುಡು ಅಡು ನಗುಡು ಬಂದ- (ವಹ)
 ಹೆಸತಾ (ಹುಡು) ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಡು ಅಡು, ಅಡು
 ಕರನೆವಾಲಾ ; ಅಡು ಅಡು, ಅಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ವಿ.— ಬಡು, ಅಡು,
 ಅಡು ; ಅಡು, ಅಡು ; ಅಡು,
 ಅಡು ; ಅಡು ; ಅಡು ; ಅಡು ; ಅಡು ;
 ಅಡು ; ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ಸಿಮಾ ಪಾರ
 ಕರ, ಅಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಡು ಅಡು,
 ಅಡು ರೂಪ ಸೆ ಇಚ್ಛಿತ, ಅಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಅಡು ಅಡು (ಸಮ್)
 ಸಂ.— ಅಡು ಅಡು, ಅಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಡು ಅಡು,
 ಅಡು, ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಡು ಅಡು,
 ಅಡು, ಅಡು ; ಅಡು, ಅಡು ; ಅಡು,
 ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಅಡು ಅಡು, ಉಡು ಅಡು
 (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಡು ಅಡು, ಅಡು, ಅಡು ;
 ಅಡು ; ಅಡು ಅಡು, ಅಡು ಅಡು ; ಅಡು,
 ಅಡು ; ಅಡು ಅಡು ; ಅಡು, ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಡು ಅಡು,
 ಅಡು ಅಡು ; ಅಡು ಅಡು ; ಅಡು ಅಡು ;
 ಅಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಡು ಅಡು ;
 ಅಡು ಅಡು ; ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಡು ಅಡು,
 ಅಡು, ಅಡು ; ಅಡು ಅಡು |
 ಉಡು ಅಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಡು ಅಡು,
 ಅಡು |

७३ ७५० उत्क्रम (सम्) सं.—प्रस्थान; नियमविरुद्धता; उछाल, फलांग।
 ७३ ७५० उत्क्रमण (सम्) सं.—निकास, उछाल, प्रस्थान; मृत्यु। — ७३० इसु (सम्) क्रि.—पार हो, प्रस्थान कर।
 ७३ ७५० उत्क्रांति (सम्) सं.—उछाल, प्रस्थान, बाहर निकलना।
 ७३ ७५० उत्क्रोश (सम्) सं.—शोरगुल, कोलाहल; घोषणा, डिंदोरा; कुररी।
 ७३ ७५० उत्क्षेप (सम्) सं.—फेंकना, विकीर्ण करना।
 ७३ ७५० उत्खात (सम्) वि.—निकाला हुआ, खोदा हुआ, पदभ्रष्ट।
 ७३ ७५० उत्ता (क) प्र.—वर्तमान कालिक कृदंत का सूचक; उदा.—७३० नगुत्ता नगुत्ता-हँसते-हँसते।
 ७३ ७५० उत्तंस (सम्) सं.—मुकुट का रत्न, सीसफूल; कान की बाली या झुमका।
 ७३ ७५० उत्तंड (सम्) सं.—सोने का हार, (मै.प्र.)।
 ७३ ७५० उत्तंडालु (सम्) सं.—दे. ७३ ७५०.
 ७३ ७५० उत्तत्ति, ७३ ७५० उत्तुत्ते, ७३ ७५० उत्तोत्ते (क) सं.—सूखा खजूर।
 ७३ ७५० उत्तस (सम्) वि.—बहुत गरम; रुष्ट, क्रुद्ध। सं.—सूखा मांस।
 ७३ ७५० उत्तमं (सम्) वि.—श्रेष्ठ, उत्कृष्ट। सं.—ध्रुव के भाई का नाम; अच्छा आदमी। ७३ ७५० उत्तमनु एत होदरु शुभवे—अच्छा आदमी जहाँ भी जाता है, शुभ ही होता है (कह.)।
 ७३ ७५० उत्तमर्ण (सम्) सं.—कर्ज देनेवाला, साहुकार।
 ७३ ७५० उत्तमश्लोक (सम्) सं.—पुण्यपुरुष, कीर्तिमान्, प्रशंसा का पात्र।
 ७३ ७५० उत्तमांग (सम्) सं.—सिर, मस्तक।
 ७३ ७५० उत्तमाधम (सम्) वि.—श्रेष्ठ-कनिष्ठ, उच्च-नीच।

७३ ७५० उत्तमिके (सम्) सं.—श्रेष्ठता, महानता, अच्छाई।
 ७३ ७५० उत्तमोत्तम (सम्) वि.—अत्यंत श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।
 ७३ ७५० उत्तर (सम्) वि.—उत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ, अच्छा, संपन्न; पीछे का, पिछला, अगला, बाद का। सं.—उत्तर दिशा; भविष्य; पार हौना, उतरना; शिव का नाम, विराट के पुत्र का नाम। — ७३ ७५० क्रिये (सम्) सं.—क्रिया-कर्म, मृतक के निमित्त होने-वाला कर्म। — ७३ ७५० क्रोडु (सम्) क्रि.—जवाब दे; विरुद्ध बचन कह। — ७३ ७५० निहिसु (सम्) क्रि.—निरुत्तर कर, मौन कर (सुह.)।
 ७३ ७५० उत्तरंग (सम्) सं.—द्वार का चौखट। वि.—लहरों से डूबा हुआ, कंपायमान।
 ७३ ७५० उत्तरच्छद (सम्) सं.—चादर, पलंगपोशा।
 ७३ ७५० उत्तरण (सम्) सं.—पार होना।
 ७३ ७५० उत्तरणि, ७३ ७५० उत्तरणे, ७३ ७५० उत्तराणि, ७३ ७५० उत्तरेणि (क) सं.—अपामार्ग, एक घास विशेष।
 ७३ ७५० उत्तरदिग्घर (सम्) सं.—कुबेर।
 ७३ ७५० उत्तरदेश, ७३ ७५० उत्तरदेस (सम्) सं.—उत्तरभारत।
 ७३ ७५० उत्तरपक्ष (सम्) सं.—कृष्णपक्ष; प्रतिवादी।
 ७३ ७५० उत्तरपूजे (सम्) सं.—अंतिम पूजा; अपमान करना (धा. प्र.)।
 ७३ ७५० उत्तरमीमांस (सम्) सं.—वेदांत दर्शन।
 ७३ ७५० उत्तरवयस्सु (सम्) सं.—बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
 ७३ ७५० उत्तरवादि (सम्) सं.—प्रतिवादी, प्रतिपक्षी।
 ७३ ७५० उत्तरसाधक (सम्) सं.—सहायक, मददगार।
 ७३ ७५० उत्तरा (सम्) सं.—नक्षत्र विशेष; विराट की पुत्री का नाम।

७३ ७५० उत्तराधिकारि (सम्) सं.—वारिस, संपत्ति पाने का हकदार।
 ७३ ७५० उत्तरामिसुख (सम्) वि.—उत्तर की ओर मुख किया हुआ या मुड़ा हुआ, उत्तर दिशा में गया हुआ।
 ७३ ७५० उत्तरायण (सम्) सं.—वे छ मास, जिनमें सूर्य की गति उत्तर की ओर झुकी हुई होती है; उत्तरी मार्ग।
 ७३ ७५० उत्तरायि (सम्) सं.—जो निंदन करता हो, परकीय।
 ७३ ७५० उत्तराशपति (सम्) सं.—कुबेर।
 ७३ ७५० उत्तरासंग (सम्) सं.—ऊपर पहनने का वस्त्र, चादर।
 ७३ ७५० उत्तरिगे (तद्) सं.—उत्तरीयं (तत्); उत्तरीय।
 ७३ ७५० उत्तरिसु (सम्) क्रि.—उत्तर दे जवाब दे; हुक़म दे।
 ७३ ७५० उत्तरीय, ७३ ७५० उत्तरीयं (सम्) सं.—ऊपर पहनने का वस्त्र।
 ७३ ७५० उत्तरे (सम्) सं.—दे. ७३ ७५०.
 ७३ ७५० उत्तरेद्युः (सम्) अ.—कल अगला दिन।
 ७३ ७५० उत्तरोत्तर (सम्) अ.—अधिक-अधिक, सदा बढ़नेवाला। सं.—विजय, सुख।
 ७३ ७५० उत्तल् (क) अ.—उधर वहाँ, बहुत दूर।
 ७३ ७५० उत्तवळिके (क) सं.—प्रयत्न कोशिश।
 ७३ ७५० उत्तान (सम्) वि.—फैला हुआ बिछा हुआ, प्रसारित; स्पष्ट, साफ। — (सम्) सं.—कुरती लड़ने का एक दाँव — ७३ ७५० पाद (सम्) सं.—ध्रुव के पित का नाम। — ७३ ७५० शय (सम्) सं.—दुधमुँह बच्चा।
 ७३ ७५० उत्तानित (सम्) वि.—ऊपर कँ मुँह किया हुआ या मुड़ा हुआ, मिला य जुड़ा हुआ।

७७० उत्तर (सम्) सं.— उतारा, ढुलाई, नाव पर लदे माल का उतरना। (क?) सं.— लौटाना, वापस देना, ऋण चुकाना (मै.प्र.); ग्राम के अधिकारी को उसकी सेवा के बदले मुफ्त में दी हुई सरकार की जमीन जिसके लिए भू-कर नहीं देना पड़ता है।
 ७७० उत्तरण (सम्) सं.— उतारा, रक्षण।
 ७७० उत्ताल, ७७० उत्ताल (सम्) वि.— बढ़ा, बलवान, तेज़, ऊँचा, चपल, कष्टकर।
 ७७० उत्तीर्ण (सम्) वि.— उतरा हुआ, पार किया हुआ, आगे बढ़ा हुआ, रक्षित, मुक्त, कृतज्ञता से मुक्त।
 ७७० उत्तु (क) कृ.— ('७७० या ७७०' = 'जोत' धातु से) — जोतकर, बीज बोकर।
 ७७० उत्तुंग (सम्) वि.— उन्नत, श्रेष्ठ, उच्च, ऊँचा।
 ७७० उत्तुम (तद्) वि.— उत्तम (त्त्)।
 ७७० उत्ते (क) प्र.— अन्य पुरुष न.लिं. का प्रत्यय; उदा.— ७७० इरुत्ते-है, ७७० बरुत्ते-आता है, ७७० आहुत्ते-खेलता है।
 ७७० उत्तेजक (सम्) वि.— प्रेरक, उभाड़नेवाला, उकसानेवाला।
 ७७० उत्तेजन (सम्) सं.— प्रोत्साहन, उत्साह, उल्लास, बढ़ावा।
 ७७० उत्तेजित (सम्) वि.— प्रेरित, उल्लसित।
 ७७० उत्तेलनदंड (सम्) सं.— भारी चीज़ को उठाने के लिए काम में लाया जानेवाला लकड़ी या लोहे का डंडा।
 ७७० उत्थ (सम्) वि.— उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ, निकला हुआ।
 ७७० उत्थान (सम्) सं.— उदय, उत्पत्ति; उद्योग, प्रयत्न; युद्ध के लिए प्रस्थान; आंगन; अच्छी औषधि; प्रसन्नता; पुस्तक।
 ७७० द्वादश (सम्) सं.— कार्तिक शुक्ला १२।
 ७७० उत्थापन (सम्) सं.— उठाना, जगाना; प्रतिष्ठा, स्थापना।

७७० उत्थित (सम्) वि.— उठा हुआ, खड़ा हुआ, स्थापित, उत्पन्न; प्रयत्न किया हुआ।
 ७७० उत्पतन (सम्) सं.— उड़ान, उछाल, फलांग, कुदान।
 ७७० उत्पत्ति (सम्) सं.— जन्म; उत्पादन, उद्गम; लाभ, प्रयोजन।
 ७७० उत्पथ (सम्) सं.— बुरा मार्ग, असन्मार्ग; अपराध, पाप; आकाश।
 ७७० उत्पन्न (सम्) कृ.— पैदा हुआ, निकला हुआ; कमाया हुआ।
 ७७० उत्पल (सम्) सं.— नील कमल, कुमुदिनी।
 ७७० उत्पल (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम।
 ७७० उत्पल (सम्) सं.— चंद्रमा।
 ७७० उत्पवन (सम्) सं.— शुद्धीकरण, पवित्र, करना, साफ करना।
 ७७० उत्पाटन (सम्) सं.— जड़ से उखाड़ डालना, नष्ट करना।
 ७७० उत्पात (सम्) सं.— उछाल, उड़ान; अपशकुन, भूकंप आदि अशुभसूचक घटनाएँ।
 ७७० उत्पातक (सम्) सं.— दे. ७७० दुष्ट, हठीला।
 ७७० उत्पाद, ७७० उत्पादन, ७७० उत्पादना (सम्) सं.— उत्पत्ति, जन्म, प्राकट्य, प्रादुर्भाव; पैदा करना।
 ७७० उत्पन्न (सम्) क्रि.— पैदा कर, उत्पन्न कर।
 ७७० उत्पिज, ७७० उत्पिजल (सम्) वि.— अन्यवस्थित, उलझा हुआ, गड़बड़।
 ७७० उत्पिहित (सम्) वि.— ढका हुआ, बंद।
 ७७० उत्पुलक (सम्) वि.— उल्लसित, आनंदित।
 ७७० उत्पास (सम्) सं.— अट्टहास; उभार, उठान; हिंसा।
 ७७० उत्प्रेक्षण (सम्) सं.— चितवन, अवलोकन, ऊहा; ऊपर की ओर देखने की क्रिया।

७७० उत्प्रेक्षे (सम्) सं.— ऊहा, संभावना, एक अलंकार।
 ७७० उत्प्रेखत् (सम्) वि.— ऊपर तैरता हुआ।
 ७७० उत्प्लवन (सम्) सं.— उछाल, छलांग, कुदान; ऊपर तैरना।
 ७७० उत्फल, ७७० उत्फुल (सम्) वि.— पूर्णतः विकसित, खुला हुआ, खिला हुआ।
 ७७० उत्स (सम्) सं.— चश्मा, सोता, क्षरना, स्रोत।
 ७७० उत्संग (सम्) सं.— मिलन, संयोग; गोद, अंक; ढाल, उतार।
 ७७० उत्सर्ग (सम्) सं.— त्याग, न्यास; गिरना, उड़ेलना; भेंट, दान; साधारण नियम।
 ७७० उत्सर्जन, ७७० उत्सर्जने (सम्) सं.— न्यास, त्याग, परित्याग; भेंट, पुरस्कार, दान; (वैदिक) अध्ययन को स्थगित करना।
 ७७० उत्सर्जिसु (सम्) क्रि.— छोड़, परित्याग कर।
 ७७० उत्सर्पण (सम्) सं.— ऊपर जाना या सरकना, फैलाना, उभरना, फिसलना।
 ७७० उत्सव (सम्) सं.— जलसा; समारोह, मंगल-कार्य, त्योहार, मेला।
 ७७० उत्सह (तद्) सं.— उत्साह (त्त्); त्योहार; उत्सव; आनंद।
 ७७० उत्सादन (सम्) सं.— नाश, विनाश; सुगंधि; खेत को अच्छी तरह जोतना; चढ़ना, उठना।
 ७७० उत्सारित (सम्) वि.— बाहर करनेवाला, दूर करनेवाला, मारनेवाला। सं.— सिपाही, चौकीदार, द्वारपाल।
 ७७० उत्सारित (सम्) वि.— दूर किया हुआ, निकाला हुआ, त्यक्त, मुक्त।
 ७७० उत्साह (सम्) सं.— उमंग, जोश, हौसला; शक्ति, सामर्थ्य; दृढ़ संकल्प।
 ७७० उत्साहि (सम्) सं.— उत्साही पुरुष, फुर्तीला मनुष्य।

१३३ उस्सिक्त (सम्) वि.— छिड़का हुआ, अभिमानी, क्रोधी, अकड़वाज़।

१३३ उस्सुक (सम्) वि.— उत्कंठित, फुर्तीला, अत्यंत इच्छावान, उद्विग्न; व्याकुल, विकल।

१३३ उस्सुकते (सम्) सं.— उत्साह, उत्कंठा, शीघ्रता, उल्लास।

१३३ उस्सृष्ट (सम्) वि.— त्यक्त, छोड़ा गया, मुक्त।

१३३ उस्सेक (सम्) सं.— अहंकार, गर्व; हठ; क्रोध।

१३३ उस्सेध (सम्) सं.— उच्च स्थान, मोटापन; शरीर; अच्छा काम; लाभ; हत्या।

१३३ उद् (सम्) अ.—उपसर्ग, जो निम्नांकित अर्थ का है—ऊपर, बाहर; अलग, पृथक; लाभ, अर्जन; लोक प्रसिद्धि; कौतूहल; चिंता; मुक्ति; अनुपस्थिति; बढ़ाना, खोलना; मुख्यता, शक्ति।

१३३ उदक (सम्) सं.— जल, पानी।

१३३ उदक्, १३३ उदंत (सम्) वि.— उत्तरदिशा का, ऊपर का।

१३३ उदक्ये (सम्) सं.— रजस्वला स्त्री। १३३ उदगयन (सम्) सं.— सूर्य का उत्तर की ओर गमन, उत्तरायन।

१३३ उदग (सम्) वि.— ऊँचा, आगे बढ़ा हुआ; भयंकर; उत्तेजित; बढ़ा, श्रेष्ठ।

१३३ उदज (सम्) सं.— जल में उत्पन्न, कमल।

१३३ उदंच (सम्) सं.—प्रगतिगामी, लक्ष्य तक पहुँचनेवाला।

१३३ उदंचन (सम्) सं.—डोल, वाली; ढकन, ओढ़नी।

१३३ उदंचित (सम्) वि.— ऊपर की ओर घूमा हुआ, निकाला हुआ।

१३३ उदधि (सम्) सं.—जलराशि, समुद्र। १३३ उदंत (सम्) सं.— समाचार, खबर; वर्णन, इतिहास; साधु पुरुष।

१३३ उदन्वत् (सम्) सं.— समुद्र, सागर।

१३३ उदपान (सम्) सं.— कृप, कुँआ। १३३ उदय (सम्) सं.— जन्म, उगना, उत्पत्ति, उपज; उठना, ऊँचा होना;

उदयगिरि, उन्नति; अभ्युदय; परिणाम; पूर्णता, परिपूर्णता; लाभ, नफ़ा; आमदनी; आय; व्याज, सूद; कांति, धमक। —

१३३ उदकाल (सम्) सं.—सूर्योदय का समय। — १३३ उदक राग (सम्) सं.— सूर्योदय के समय की लालिमा।

१३३ उदयाचल (सम्) सं.— पूर्वदिशा का पर्वत। १३३ उदयादित्य (सम्) सं.— उदित होनेवाला सूर्य; चंद्रवंश के एक राजा का नाम।

१३३ उदयिसु (सम्) क्रि.— उदय हो; उत्पन्न हो, निकल, प्रकट हो। १३३ उदर (सम्) सं.— पेट, गर्भ। —

१३३ उदर निर्वाह (सम्) सं.—जीवन-निर्वाह, जीवनोपाय। — १३३ उदर भरण (सम्) सं.— पेट भरना, जीवन-निर्वाह।

१३३ उदर शिखि (सम्) सं.— जठराग्नि। — १३३ उदर शूल (सम्) सं.— पेट का दर्द।

१३३ उदरार्थि (सम्) सं.— केवल पेट भरने के निमित्त जीवित रहनेवाला। १३३ उदरावर्त (सम्) सं.— नाभि।

१३३ उदरि (सम्) सं.— बड़े पेट या तोंद वाली। १३३ उदरु (क) क्रि.— गिर (पत्तों का गिरना)। — १३३ उदरु—गिरा (प्रे.)।

१३३ उदरु (सम्) सं.— भविष्य, भविष्य का फल। १३३ उदरु (सम्) सं.— उमड़ आनेवाले आँसू।

१३३ उदवासित (सम्) सं.— घर, मकान, निवास स्थान। १३३ उदवास (सम्) सं.— समुद्र; समुद्र में रहना।

१३३ उदश्चित (सम्) सं.— समान रूप से मिला हुआ पानी और मट्टी।

१३३ उदस्त (सम्) वि.— फेंका हुआ, उड़ाया हुआ। १३३ उदात्त (सम्) वि.— श्रेष्ठ, उन्नत, प्रख्यात, कुलीन, दानी, महिमान्वित। सं.— दान, भेंट; वाद्य यंत्र विशेष। — १३३ उदरित (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

१३३ उदान, १३३ उदानवायु (सम्) सं.— शरीरस्थ एक वायु जो कंठ में ही रहती है; डकार, छींक। १३३ उदार (सम्) वि.— महान्, श्रेष्ठ, कुलीन, दानशील, धर्मात्मा सच्चा, प्रिय, सुंदर। — १३३ उदारता (सम्) सं.— उदारता, महानता।

१३३ उदारि (सम्) सं.— उदार स्वभाव का पुरुष, लागी, दानी। १३३ उदास (सम्) सं.— विषय-विरागी व्यक्ति; विरक्ति।

१३३ उदासीन (सम्) वि.— विरक्त, निरपेक्ष, तटस्थ। — १३३ उदासी (सम्) सं.— निरुत्साह, विरक्ति, सुस्ती। १३३ उदास्थित (सम्) सं.— पर्यवेक्षक

दारोगा; द्वारपाल, दरवान; जासूस, गूढचार। १३३ उदाहरण (सम्) सं.— मिसाल, दृष्टांत; वर्णन, कथन, प्रसंग। — १३३ उदाहरिसु (सम्) क्रि.— दृष्टांत देकर समझा, विवरण दे।

१३३ उदाहृत (सम्) वि.— मिसाल दिया हुआ, वर्णित, कथित। १३३ उदि (सम्) वि.— उगा हुआ, ऊपर चढ़ा हुआ; बढ़ा हुआ, कथित। १३३ उदितोदित (सम्) वि.— अधिकाधिक उत्पन्न, पुरोगामी। १३३ उदिर, १३३ उदिरु, १३३ उदरु, १३३ उदरु (क) क्रि.— गिर, नीचे गिर, झड़ (पत्तों का झड़ना)।

लुडिङ्ग उदित्तु, लुडिङ्ग उदिरिसु, लुडु
रुसु उदुरुसु (क) क्रि.— नीचे गिरा,
(पत्तों को) गिरा ।
लुडिसु उदिसु (सम्) क्रि.— उदित हो, पैदा
हो, निकल ।
लुडिङ्ग उदीचि, लुडिङ्ग उदीची (सम्)
सं.— उत्तर दिशा ।
लुडिङ्ग उदीचीन (सम्) सं.— औत्तरेय,
उत्तर का आदमी ।
लुडिङ्ग उदीच्य (सम्) वि.— उत्तर का,
उत्तर दिशा से संबंधित ।
लुडिङ्ग उदीरण (सम्) सं.— कथन,
उच्चारण, प्रकटन । वि.— बढ़ा हुआ, भागे
किया हुआ ।
लुडिङ्ग उदीर्ण (सम्) वि.— बढ़ा हुआ, उगा
हुआ, उत्पन्न हुआ, उदार, महान, बढ़ा,
खिंचा हुआ ।
लुडु उदु (क) सर्व.— 'यह' और 'वह' के
बीच का सूचक सर्व । प्र.— अन्य पुरुष
न.लिं., ए.व. प्रत्यय, उदा.— बन्धु
बन्धु—आया, अगुवुदु—होगा ।
सादुवुदु माडुवुदु (सादु+लुडु)
—करना, क्खुवुदु हेळुवुदु (क्खु+लुडु)
—कहना ।
लुडुगुडु उदुगरिसु (तद्) क्रि.— ('उद्गार'
से)—कह ; वमन कर ; छोट ; छोड़ ।
लुडुङ्ग उदुभव (तद्) सं.— उद्भव (तत्) ;
जन्म; उत्पत्ति; उद्भव स्थान । — अरु इसु
(तद्) क्रि.— जन्म ले, उत्पन्न हो ।
लुडुङ्ग उदुबर (सम्) सं.— औदुबर,
उदुबर, गूलर का पेड़ ; ताम्र ; देहली,
इयोही । — अरु मशक (सम्) सं.—
उदुबर के फल के अंदर का फीड़ा ।
लुडुङ्ग उदुखल (सम्) सं.— उदुखल,
ओखली ।
लुडुङ्ग उदो, लुडुङ्ग उधो (क) वि.बो.—
ओहो ! ओहो (देवी के नाम पर किया जाने-
वाला जयघोष) ।
लुडुङ्ग उदुत (सम्) वि.— उठा हुआ, चढ़ा
हुआ, निकला हुआ ।

लुडुङ्ग उदुत्ति (सम्) सं.— उठान, उगना,
निकास, उद्भव ।
लुडुङ्ग उदुत्थ (सम्) वि.— अत्यधिक सुगंधित,
खूशाबूदार ।
लुडुङ्ग उदुत्तम (सम्) सं.— उदय, आविर्भाव,
उत्पत्ति का स्थान, निकास ; फूल, कली ;
वमन । — अरु मंजरि (सम्) सं.—
फूलों का गुच्छा । अरु सार (सम्) सं.—
मधु, पराग ।
लुडुङ्ग उदुत्तमन (सम्) सं.— उदय, आवि-
र्भाव, उत्पत्ति ।
लुडुङ्ग उदुत्तमनीय (सम्) वि.— चढ़ा
हुआ, ऊपर गया हुआ ।
लुडुङ्ग उदुत्तमिसु (सम्) क्रि.— चढ़, ऊपर
आ, उठ ।
लुडुङ्ग उदुत्तलित (सम्) वि.— पड़ा, पड़ा
हुआ ।
लुडुङ्ग उदुत्तवृत्त (सम्) सं.— उद्गाता, यज्ञ
में सामवेद का गान करनेवाला ।
लुडुङ्ग उदुत्तार (सम्) सं.— उबाल, उफान ;
वमन, धूक, खखार ; डकार ; कथन, अपने
अभिप्राय का प्रकटन ।
लुडुङ्ग उदुत्तीर्ण (सम्) वि.— वमन किया
हुआ, उगला हुआ, उड़ेला हुआ, बाहर
निकला हुआ ।
लुडुङ्ग उदुत्थ (सम्) सं.— बढ़ा ग्रंथ,
बड़ी पोथी ।
लुडुङ्ग उदुत्तीव (सम्) वि.— सिर ऊपर
उठा हुआ, गर्दन ऊपर उठा हुआ ।
लुडुङ्ग उदुत्थ (सम्) सं.— शक्ति ; आनंद ;
प्रधानता ; आदर्श नमूना ।
लुडुङ्ग उदुत्थ (सम्) सं.— बढ़ा बर्तन, एक
प्रकार का बर्तन ।
लुडुङ्ग उदुत्थन (सम्) सं.— खोलना,
बंधन या ग्रंथि को खोलना ; स्पष्ट रूप से
कहना । — अरु इसु (सम्) सं.— स्पष्ट
हो, प्रकट हो, प्रकाशित हो ।
लुडुङ्ग उदुत्थन, (सम्) सं.— रगड़,
ताड़न ।

लुडुङ्ग उदुत्थाट (सम्) सं.— चौकी, रक्षा
का स्थान ।
लुडुङ्ग उदुत्थाटक (सम्) सं.— खोलने-
वाला ; चाबी, कुंजी ; कुएँ पर की रस्सी
और डोल ।
लुडुङ्ग उदुत्थाटन (सम्) सं.— खोलना,
प्रकाशन, प्रकटन, प्रारंभ करना ।
लुडुङ्ग उदुत्थात (सम्) सं.— आरंभ, प्रारंभ ;
ताड़न ; आयुध ; प्रकरण, परिच्छेद ; झटका,
जो गाड़ी में बैठने पर लगता है, प्राणायाम ।
लुडुङ्ग उदुत्थासि (सम्) सं.— अच्छी तलवार,
उत्तम खड्ग ।
लुडुङ्ग उदुत्थ (सम्) वि.— अच्छी
तरह रगड़ा हुआ, घोंटा हुआ ।
लुडुङ्ग उदुत्थोषण, (सम्) सं.—
घोषणा, डिंढोरा, जोर से चिल्लाना, गर्जन ।
— लुडुङ्ग उदुत्थोपिसु (सम्) क्रि.—
जोर से चिल्ला, गर्जन कर, घोषणा कर ।
लुडु उदु (तद्) सं.— ऊर्ध्व (तत्) ; ऊँचाई,
लंबाई, गहराई, (गर्व) । लुडुङ्ग उदुगल
(लुडु + अगल) — लंबाई-चौड़ाई ऊँचाई-
चौड़ाई । — लुडुङ्ग उरुदु (क) वि.—
ठीठ, धृष्ट । लुडुङ्ग उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग
उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग
उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग उरुदुङ्ग
थप्पड़ ही है (कह.) ।
लुडुङ्ग उदुत्थ (सम्) सं.— खटमल ;
चिलुआ ; मच्छर ।
लुडुङ्ग उदुत्थ (सम्) वि.— डँडुल सहित ;
डंडा उठाए हुए ; उठा हुआ, उच्च ; साहसी,
गर्वीला ; भयानक, क्रूर ; धृष्ट, हीठ । —
उरु तन (सम्) सं.— धृष्टता, डिठाई,
गर्वपूर्ण व्यवहार । — उरु त्ते (सम्) सं.—
ऊँचाई, महानता । — अरु इके (सम्)
सं.— गर्व, गर्वपूर्ण व्यवहार, धृष्टता । —
अरु इसु (सम्) क्रि.— डिठाई कर, गर्व-
पूर्ण-व्यवहार कर ।
लुडुङ्ग उदुत्थ, लुडुङ्ग उदुत्थ (तद्) वि.—
ऊँचा, लंबा ।
लुडुङ्ग उदुत्थ, लुडुङ्ग उदुत्थ (तद्) सं.—
उद्यम (तत्) ; नौकरी, व्यवहार ।

७० उद्विग्न (सम्) वि.— उद्विग्न (तद्) सं.—
 ('उद्विग्न' से)—कर्ज, उधार, लेन-देन ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— विस्तृत, घना,
 बड़ा, महान । सं.— अग्रिष्ठ, चूल्हा ।
 ७० उद्विग्न (तद्) वि.— लंबा, ऊँचा ।
 सं.— लंबाई, ऊँचाई (मै.प्र.) ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— बंधनरहित,
 मुक्त, स्वतंत्र; स्वेच्छाचारी; भयानक,
 गर्वीला; बड़ा, उत्तम, महान् ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं— एक ऋषि
 का नाम; एक प्रकार का मधु या शहद ।
 ७० उद्विग्न (क) सं.— खेत का ढलुआ टीला,
 जहाँ सिंचाई के लिए जल का संग्रह किया
 जाता है ।
 ७० उद्विग्न (क) सं.— दे. ७० (मै.प्र.);
 युगंधर, गाड़ी के अगले भाग की लंबी
 लकड़ी ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— बंधनयुक्त, बंधा
 हुआ ।
 ७० उद्विग्न (तद्) सं.— उद्यम (तत्) ;
 — गार, दार (तद्) सं.— उद्यम
 करनेवाला, व्यापारी, किसान ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— उद्विग्न,
 अभिप्राय, लक्ष्य । अ.— के लिए, के
 निमित्त ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— वर्णित, कथित,
 विशेष रूप से कहा हुआ ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— दहन, जलन,
 प्रकाशन, दहनकारी ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— उत्तेजित
 करने की क्रिया, रोशनी करना, प्रकाशित
 करना ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— दहकता हुआ,
 जलता हुआ, प्रकाशमान ।
 ७० उद्विग्न (क) क्रि. = ७० उद्विग्न—रगड़,
 घिस । सं.— उद्विग्न । ७० उद्विग्न उद्विग्न
 वेले-उद्विग्न की दाल ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— अभिमानी,
 घमंडी ।

७० उद्विग्न (सम्) सं.— लक्ष्य, निर्देश ;
 कारण, हेतु, स्थान ; वर्णन, सविशेष विवरण,
 इच्छा, अपेक्षा ; खोज, अनुसंधान । — ७०
 इसु (सम्) क्रि.— निर्देश करके कह, लक्ष्य
 रखकर काम कर । — क (सम्) सं—
 उदाहरण, (अंकगणित में) प्रश्न, कूटप्रश्न ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— प्रकाशमान,
 कांतियुक्त ।
 ७० उद्विग्न (तद्) वि.— उद्विग्न (तत्) ;
 अभिमानी, अकड़वाज़, घमंडी । सं.— घमंड,
 अभिमान, (मै.प्र.) । — तन (तद्)
 सं.— घमंड, रूखापन, अकड़वाजी ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— दे. ७० ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— उठान, ऊँचाई ;
 अभिमान, गर्व ; आघात, चोट ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— उठाना, खींचना,
 निकाल फेंकना, नाश करना ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— खींचना,
 उतारना, निकालना ; छुड़ाना, मिटाना,
 वमन करना ; मुक्ति, ऋण से मुक्ति ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— छोटा चमच (आचमन के लिए
 उपयुक्त) ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— श्रीकृष्ण के सखा ;
 आनंद, उरसाह, लोहार ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— मुक्ति, छुटकारा,
 त्राण ; ऊपर उठाना । — क (सम्) सं.—
 उद्विग्न करनेवाला, सहायक ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— असंयत, अनरुद्ध,
 स्वतंत्र, बंधनमुक्त, भारी, स्थिर ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— उठायी हुआ,
 गिरा हुआ, हिला हुआ, उन्नत ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— चूर्ण किया
 हुआ, छिटकाया हुआ ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— चूर्ण करना,
 पीसना ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— चूर्ण किया
 हुआ, छिटकाया हुआ ।
 ७० उद्विग्न (सम्) क्रि.— चूर्ण
 कर, पीस ।

७० उद्विग्न (सम्) वि.— निकाला हुआ,
 खींचा हुआ, अन्य स्थान से ज्यों का त्यों
 लिया हुआ ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— चूल्हा ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— अत्यंत शक्तिमान,
 बहुत बलशाली ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— बाहें उठाए
 हुए ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— जागा हुआ,
 उत्तेजित, खुला हुआ, विकसित ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— जागृति, स्मृति, प्रबोध ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— जन्म, उत्पत्ति,
 प्रादुर्भाव, जो उत्पन्न हुआ हो, मूल, जड़ ।
 — ७० इसु (सम्) क्रि.— जन्म ले,
 उत्पन्न हो ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— उत्पत्ति,
 प्रादुर्भाव ; वंश, परंपरा ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— चमक, कांति,
 आभा ; किरण ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं. = ७० उद्विग्न
 उद्विग्न—वनस्पति, अंकुर से उत्पन्न पेड़
 पौधे आदि ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— अंकुरित, अंकुर
 से बाहर आया हुआ ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— खुला हुआ,
 विकसित, अंकुरित, बाहर निकला हुआ ;
 पृथक-पृथक ।
 ७० उद्विग्न (सम्) सं.— घूमरी,
 घूर्णीटा ; घूमना-फिरना ; (तलवार को)
 घुमाना ; उतावलापन, जल्दवाजी, पश्चात्ताप ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— विह्वल,
 घबराया हुआ, भ्रमित ।
 ७० उद्विग्न (तद्) वि.— उद्यत् (तत्) ; दे.
 ७० ।
 ७० उद्विग्न (सम्) वि.— उत्पन्न होनेवाला,
 शोभित, ऊँचा, महान ।

ಉದ್ಯತೆ उद्यत (ಸಮ್) ವಿ.— ಲಗಾಹುಖಾ, ಊಪರ, ಉಠಾ ಹುಖಾ, ಪ್ರಯತ್ನಶೀಲ ; ಚಪಲ, ತುಲಾ ಹುಖಾ ।
ಉದ್ಯಮ उद्यम (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪರಿಶ್ರಮ, ಉಢೂಗ, ಅಧ್ಯವಸಾಯ, ನೂಕರೂ, ಕಾಮ ; ಉತ್ಯಾನ, ಉಢಯನ ।

ಉದ್ಯಮಿ उद्यमि (ಸಮ್) ವಿ.— ಉಢಮ ಕರನೇವಾಲಾ, ಪ್ರಯತ್ನಶೀಲ, ಸಾಹಸೂ, ಕಾಮ ಕರನೇವಾಲಾ ।—
ಢಾರ ಢಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಢೇ. ಉಢ್ಢೂಢೂಢಾರ.
ಉದ್ಯಾನ उद्यान, ಉದ್ಯಾನವನ उद्यानवन (ಸಮ್) ಸಂ.— ಉಪವನ, ವಾಗ ; ಗಮನ, ವಹಿಗಮನ ।

ಉದ್ಯಾನ उद्यान, ಉದ್ಯಾನವನ उद्यानवन (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಮಾಸಿ, ಖವಸಾನ ; ಕಿಸಿ ಲ್ಯೂಹಾರ, ಪರ್ವ ಯಾ ಉತ್ಸವ ಕೂ ಸಮಾಸಿ ।

ಉದ್ಯುಕ್ತ उद्युक्त (ಸಮ್) ವಿ.— ಲಗಾ ಹುಖಾ, ತೈಯಾರ ; ಫುರೂಲಾ, ಉಢ್ಢೇಜಿತ ।

ಉದ್ಯೋಗ उद्योग (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮ, ಕಾಮ-
ಛಂಛಾ, ಉಢಮ, ನೂಕರೂ ; ಪರಿಶ್ರಮ ; ವ್ಯಾಪಾರ ;
ಕಾರ್ಯಾಲಯ, ಖಾಫಿಸ ; ಸ್ಥಾನ, ಸ್ಥಿತಿ । —
ಇ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮ ಕರನೇವಾಲಾ । —
ಇಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ಕಾಮ ಮೇ ಲಗ । —
ಇಸ್ಥ (ಸಮ್) ಸಂ.— ವಹ, ಜಿಸಕೂ ನೂಕರೂ
ಹೂ, ನೂಕರ ।

ಉದ್ರ उद्र (ಸಮ್) ಸಂ.— ಜಲ ಕೂ ವಿಢ್ಢಿ, ಊಢವಿಲಾವ ।

ಉದ್ರಿಕ್ತ उद्रिक्त (ಸಮ್) ವಿ.— ಬಢಾ ಹುಖಾ, ಅತ್ಯಾಧಿಕ, ಉಢ್ಢೇಜಿತ, ವಿಪುಲ ।

ಉದ್ರೇಕ उद्रेक (ಸಮ್) ಸಂ.— ವೃಢ್ಢಿ, ಬಢತೂ, ಅಧಿಕತಾ, ವಿಪುಲತಾ, ಉಢ್ಢೇಜನಾ- ಖೂಗ, ಖುಕ್ತಿ ।
— ಇಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ಛೇಢ, ಕೂಢ ಉತ್ಪನ್ನ ಕರ ।

ಉದ್ವರ್ತ उद्वर्त, ಉದ್ವರ್ತನ उद्वर्तन (ಸಮ್) ಸಂ.— ಊಪರ ಜಾನಾ, ನಿಕಲನಾ, ವಾಢ (ಪೂಢೂ ಕೂ) ; ಸಮೃಢ್ಢಿ, ಉಢಯನ ; ಬಢತ ; ಸುಗಂಛ-
ಲೇಪನ, ತೇಲ-ಫುಲೇಲ ಕೂ ಮಾಲಿಶ । —
ಉಢಯ ಖಾಲಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸ್ನಾನ-ಘರ ।

ಉದ್ವಹ उद्वह (ಸಮ್) ಸಂ.— ಖಾನಂಢ, ಹರ್ಪ ।

ಉದ್ವಹನ उद्वहन (ಸಮ್) ಸಂ.— ಊಪರ ಉಠಾನಾ, ಲೇ ಜಾನಾ ; ಸಹಾರಾ ; ವಿವಾಹ ।

ಉದ್ವಾಹ उद्वाह (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಹಾರಾ ; ಪರಿಣಯ, ವಿವಾಹ ।

ಉದ್ವಾಹನ उद्वाहन (ಸಮ್) ಸಂ.— ಢೇ. ಉಢ್ಢಹನ.
— ಉಢ್ಢಾಹಿಕ್ ಉಢ್ಢಾಹಿಕ್ (ಸಮ್) ವಿ.—
ವಿವಾಹ ಸೇ ಸಂವಂಛಿತ ।

ಉದ್ವಾಹಿಸು उद्वाहिसु (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ವಿವಾಹ ಕರ, ಪರಿಣಯ ಕರ ।

ಉದ್ವಿಗ्न उद्विग्न (ಸಮ್) ವಿ.— ಢುಃಖೂ, ಸಂತಸ, ಉಢಾಸ, ಖಿನ್ನ ।

ಉದ್ವೃತ್ತ उद्वृत्त (ಸಮ್) ವಿ.— ಉಠಾ ಹುಜಾ, ಊಢಾ ಕಿಯಾ ಹುಖಾ, ಉಢ್ಢತ, ಉಢಢಾ ಹುಖಾ ; ಗವೂಲಾ, ಉಢ್ಢತ ।

ಉದ್ವೃತ್ತಿ उद्वृत्ति (ಸಮ್) ಸಂ.— ಗರ್ವ, ಹಠ, ಛೃಢತಾ ।

ಉದ್ವೇಗ उद्वेग (ಸಮ್) ಸಂ.— ಖಯ, ಖಾಶಂಕಾ ; ಖೇಢ, ಢಿಂತಾ ; ಕಂಪನ, ಥರಥರಾಹಢ ; ಖಾಶ್ಚರ್ಯ ।

ಉದ್ವೇಗಿಸು उद्वेगिसु (ಸಮ್) ಕ್ರಿ —ವೇಗ ಸೇ ಜಾ ।

ಉದ್ವೇಜಿಸು उद्वेजिसु (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ಢರಾ, ಖಯಖೂತ ಕರ, ಕಂಪಾ, ಢುಃಖಾ ।

ಉದ್ವೇಲ उद्वेल (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮರ್ಯಾಢಾ ಕಾ ಅತಿಕರ್ಮಣ, ಸೂಮಾ ಕೂ ಪಾರ ಕರ ಬಹನಾ ।

ಉನಿ उनि (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಜಲ ಸೇ ಸಿಂಢಿತ ಹೂ, ಸೂಂಢ । ಉನಿಯಾಕೂ ಉನಿಯಾಕೂ-ಜಲ ಸೇ ಸೂಂಢ । ಉನಿಸು ಉನಿಸು-ಸೂಂಢ ।

ಉನಿತ उनित (ಕ) ವಿ.— ಇತನಾ, ಇಸ ಪರಿಮಾಣ ಕಾ ; ಉತನಾ ।

ಉನ್ನ उन्न (ಸಮ್) ವಿ.— ತರ, ಖಾಢ್ಢೆ, ಗೂಲಾ ; ಕರುಣ । ಸಂ.— ಢಾಪಲ್ಸನೂ, ಛೂಠ ।

ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉಠಾ ಹುಖಾ, ಊಢಾ, ಲಂಬಾ, ಶ್ರೇಢ, ವಢಾ । — ಛೂಯ ಛೂಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಘನೂ ಛಾಯಾ, ಊಢೂ ಖಾವಾಜವಾಲಾ ।

ಉನ್ನತನ उन्नतानत (ಸಮ್) ವಿ.— ಊಢಾ-
ನೂಢಾ, ವಿಘಮ ।

ಉನ್ನತಿ उन्नति (ಸಮ್) ಸಂ.— ಊಢಾಢ್ಢೆ, ಢಢಾವ, ವೃಢ್ಢಿ, ಸಮೃಢ್ಢಿ ।

ಉನ್ನತಿಕೆ उन्नतिके (ಸಮ್) ಸಂ.— ಊಢಾಢ್ಢೆ, ಶ್ರೇಢತಾ, ಮಹಾನತಾ ।

ಉನ್ನತೋನ್ನत उन्नतोन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಬಹುತ ಊಢಾ, ಅತ್ಯಂತ ಶ್ರೇಢ ।

ಉನ್ನತ उन्नित, ಉನ್ನತ उन्नित, ಉನ್ನತ उन्नित
ಉನ್ನತ (ಕ) ಖ.— ಇಸ ಪ್ರಕಾರ, ಇಸ ತರಹ ।

ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಕಸಕರ ಬಂಛಾ ಹುಖಾ, ಉಢಢಾ ಹುಖಾ, ಅಧಿಕ ಹುಖಾ, ಸಮೃಢ್ಢಿ ।

ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉಠಾ ಹುಖಾ, ಛೂಕಾ ಹುಖಾ ।

ಉನ್ನत उन्नत, ಉನ್ನत उन्नत, ಉನ್ನत उन्नत
ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಊಪರ ಢಢನಾ, ಊಪರ ಉಠನಾ, ಊಢಾಢ್ಢೆ, ಢಢಾಢ್ಢೆ ।

ಉನ್ನत उन्नत (ಕ) ಸರ್ವ.— ಂಸೇ (ಲೂಗ) ।

ಉನ್ನत उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ನಿಢ್ಢಾರಹಿತ, ಜಾಗುತ ; ವಿಕಸಿತ, ಸುಕುಲಿತ ।

ಉನ್ನत उन्नत (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಸೂಢ, ವಿಢಾರ ಕರ ।

ಉನ್ನत उन्नत (ಕ) ಖ.— ಖೂ, ಊರ ।

ಉನ್ನत उन्नत, ಉನ್ನत उन्नत (ಕ) ಖ.— ಖವ, ತವ ; ಖಢ ತಕ, ತವ ತಕ ।

ಉನ್ನत उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಕಲ್ಪಿತ, ಅನುಮಾನಿತ ।

ಉನ್ನत उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಮತ್ತ, ಪಾಗಲ, ಉಢ್ಢೇಕ ಸೇ ಯುಕ್ತ । ಸಂ.— ಅಖಿಮಾನೂ, ಘಂಢೂ ; ಛತೂರಾ । — ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮಢ, ನಶಾ । ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಉನ್ನಾಢ ; ಗರ್ವ ।

ಉನ್ನत उन्नत, ಉನ್ನत उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನत उन्नत, ಉನ್ನत उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನत उन्नत, ಉನ್ನत उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನತ उन्नत, ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನತ उन्नत, ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನತ उन्नत, ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನತ उन्नत, ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನತ उन्नत, ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನತ उन्नत, ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉನ್ನತ उन्नत, ಉನ್ನತ उन्नत (ಸಮ್) ವಿ.— ಉನ್ನತ, ಪಾಗಲ, ನಶೂ ಮೇ ಢೂರ ; ಅಖಿಮಾನೂ, ಗರ್ವೂಲಾ ।

ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— जिस पर रखकर सहारा लिया जाय, तकिया; विशेषता; व्यक्तित्व; धार्मिक अनुष्ठान; त्रिप, जहर। — ಉಪಧಾನೀಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— तकिया।
 ಉಪಧಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— धोखेवाजी, धेईमानी, कपट, छल; भय, धमकी; पहिया या पहिये का विशेष स्थान।
 ಉಪಧಿತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— शोभा, कांति. चमक, रश्मि।
 ಉಪಧಿತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— कपट, छल, सत्य का अपलाप; सच्चाई की परीक्षा।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— अधर, होंठ। — ಉಪಧಾನೀಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— होंठ से उच्चरित होनेवाले अक्षर।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— उपपुर, नगर, प्रांत; नगर का बाहरी भाग।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— झुका हुआ, नमस्कृत, अवलंबित, आया हुआ, प्राप्त।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— छोटी नदी, बड़ी नदी की शाखा।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— उद्यान, आराम, बाग।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— यज्ञोपवीत धारण करना, यज्ञोपवीत-संस्कार, गुरु के पास ले जाना।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— कल्पित नाम, संक्षिप्त नाम, चिह्नांके का नाम।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— चीटा, बंडल, मलहम, लेप; सितार की खँटी।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— मुहर लगाकर रखी हुई अमानत, गिरवी रखी हुई वस्तु, धरोहर, बंधक।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— उपनिषद्, वेद की शाखा के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग, जिनमें आत्मा-परमात्मा का विचार तत्व है, वेदों के गुप्तार्थ प्रकाशक ग्रंथ, ज्ञान, रहस्य, ब्रह्मज्ञान।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— राजमार्ग, प्रधान मार्ग।

ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— समीप लाया हुआ, यज्ञोपवीत धारण कराया हुआ।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— भाषण, सूचना, विवरण; परिचय प्राप्त करना, चर्चा; धरोहर, बंधक, अमानत; शासन, नियम।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— जार।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— उत्पत्ति, प्राप्ति, सिद्धि, प्रतिपादन; संगति, युक्ति; हेतु, प्रमाण; योग्यता, उपयुक्तता।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— जारिणी।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— प्रधान शब्द के साथ अर्थांतर उत्पन्न करनेवाला दूसरा शब्द, उपाधि, प्रशस्ति।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— लब्ध, प्राप्त, मिला हुआ, उपयुक्त, उचित, योग्य, पर्याप्त, उदाहृत, उत्पन्न।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— छोटा पाप, पंच महापातकों के अतिरिक्त पातक।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— सिद्धि, निश्चय, ठहराव, निर्णय, परीक्षा, अवगति।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— सिद्ध क्रिया हुआ, सावित।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— अठारह महापुराणों के अतिरिक्त अन्य छोटे पुराण।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— कष्ट, संकट, विपत्ति, क्लेश; अशुभ घटना, सूर्य या चंद्र-ग्रहण, उल्कापात; राज्यक्रांति।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— ಉಪಧಾನ, ಉಪಧಾನ ಉಪಧಾನ, ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— तकिया।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— भक्ति से संबंधित व्रत-नियम।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— उपशाखा, छोटा भाग; नगर का समीप भाग।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— भोगविलास, सुख का अनुभव, आनंद, संतोष। — धर्म इसु (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— आनंद का अनुभव कर, मज़ा कर।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— समानता, सादृश्य, तुलना; एक अलंकार विशेष।

ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— जिसके साथ तुलना की गई हो, तुलना किया हुआ। — ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— तुलना कर, समानता का अवलोकन कर।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— मापने की वस्तु; तुलना करने की वस्तु।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— योध्य, ठीक, उचित, उपयोगी।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— काम, व्यवहार, प्रयोग, इस्तेमाल।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— पीड़ित, संतप्त, ग्रस्त, रंगीन, अंधकार से पूर्ण। ಸಂ.— राहु-केतु ग्रस्त, चंद्र-सूर्य।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— बंद किया हुआ, मारा हुआ, मृत।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— बंद करना, समाप्ति, विरति, त्याग, वैराग्य; स्त्री-संभोग, सुरत; उदासीनता।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ವಿ.— ऊपर, पश्चात्, बाद में।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ऊंचा स्थान।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ऊपर का लोक, स्वर्ग।
 ಉಪಧಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— रहस्य, गुप्त बात, बंद करना।

उपरोध उपरोध (सम्) सं.— रोकटोक, बाधा, अड़चन, विरोध; उत्पात, आफत।
 — असु इसु (सम्) क्रि.— रोक, बाधा डाल।
 उपल उपल (सम्) सं.— पत्थर, चट्टान; रत्न।
 उपलक्षण उपलक्षण (सम्) सं.— अवलोकन, ईक्षण; पहचान, चिह्न; पदवी।
 उपलक्ष्य उपलक्ष्य (सम्) सं.— लक्ष्य, ध्येय, गम्यस्थान।
 उपलब्ध उपलब्ध (सम्) वि.— प्राप्त; ज्ञात; कल्पित।
 उपलभ उपलभ (सम्) सं.— प्राप्ति, उपलब्धि, पहचान, खोज।
 उपलालन उपलालन (सम्), उपलालने उपलालने (सम्) सं.— आलिंगन, दुलार, करना; प्रशंसा करना।
 उपले उपले (सम्) सं.— मिश्री, शुद्ध चीनी।
 उपलेपन उपलेपन (सम्) सं.— मालिश, लेप, उबटन, मलहम।
 उपवन उपवन (सम्) सं.— उद्यान, बाग, पार्क।
 उपवर्तन उपवर्तन (सम्) सं.— प्रांत, प्रदेश, राज्य।
 उपवस्त उपवस्त (सम्) सं.— उपवास, निराहार-व्रत।
 उपवास उपवास (सम्) सं.— उपवास उपास (तद्)— निराहार रहना, व्रत, उपोषण।
 उपवाह्य उपवाह्य (सम्) सं.— राजा की सवारी—हाथी, घोड़ा, रथ आदि।
 उपविष्ट उपविष्ट (सम्) वि.— बैठा हुआ, विद्यमान।
 उपवीत उपवीत (सम्) सं.— यज्ञोपवीत, जनेऊ।
 उपवृत्ति उपवृत्ति (सम्) सं.— छोटा काम, प्रधान नौकरी के अतिरिक्त अन्य नौकरी।
 उपवेद उपवेद (सम्) सं.— वे विद्याएँ जिनका मूल वेद में है, वे चार हैं—धनुर्वेद,

गंधर्ववेद, आयुर्वेद, स्थापत्य।
 उपवेश उपवेश, उपवेशन उपवेशन (सम्) सं.— बैठना, जमना, स्थित होना, एकाग्रता।
 उपवेष्ट उपवेष्ट (सम्) वि.— आवृत्त, घिरा हुआ, वस्त्र-भूषित।
 उपशम उपशम, उपशमन उपशमन (सम्) सं.— निस्तब्धता, शांति, विराम, अवसान, निवृत्ति; इंद्रियनिग्रह।
 उपशल्य उपशल्य (सम्) सं.— नगर या ग्राम का बाहरी मैदान।
 उपशाखे उपशाखे (सम्) सं.— छोटी शाखा, डाली, विभाग।
 उपशांत उपशांत (सम्) वि.— शांत, बुझा हुआ, निस्तब्ध, निवृत्त।
 उपशांति उपशांति (सम्) सं.— विराम, शांति; हास, बुझना।
 उपश्रुत उपश्रुत (सम्) वि.— कानों से सुना हुआ, वचन दिया हुआ। उपश्रुति (सम्) सं.— प्रतिज्ञा, वचन, स्वीकृति।
 उपसंव्यान उपसंव्यान (सम्) सं.— भीतरी पहनावा, कुर्ता, बनियन आदि।
 उपसंहार उपसंहार (सम्) सं.— समाप्ति, अंत; नाश, मृत्यु। — असु इसु (सम्) क्रि.— समाप्त कर, वापस ले ले, नष्ट कर, अंत कर।
 उपसन्न उपसन्न (सम्) वि.— मिला हुआ, जुड़ा हुआ, लगा हुआ, समीप आया हुआ।
 उपसंपन्न उपसंपन्न (सम्) वि.— प्राप्त, आगत, कमाया हुआ।
 उपसर उपसर (सम्) सं.— समीप जाना, फूल के खिलने का समीप-काल, गौ का प्रथम गर्भ।
 उपसर्ग उपसर्ग (सम्) सं.— सामीप्य, मिलना; विपत्ति, संकट; दुर्दैव, अपशकुन, उत्पात; उपसर्ग; शब्दों के पूर्व आनेवाला अक्षर-समुदाय।
 उपसर्जन उपसर्जन (सम्) सं.— विपत्ति, संकट, दैवी उत्पात; विसर्जन; ग्रहण; हिंसा; शुभाशुभ शकुन; वह शब्द, जो

दूसरे शब्द के साथ रहने पर अपनी स्वतंत्रता खोकर दूसरे का अर्थबोध करता है।
 उपसर्प उपसर्प, उपसर्पण उपसर्पण, उपसर्पण उपसर्पण (सम्) सं.— समीप जाना, आगे बढ़ना।
 उपसाक्षि उपसाक्षि, उपसाक्ष्य उपसाक्ष्य (सम्) सं.— सहायक साक्षी, छोटे साक्षी।
 उपस्कर उपस्कर (सम्) सं.— उपकरण, सामान, मसाला; अधूरी वस्तु को पूर्ण करना, पूर्ति।
 उपस्थ उपस्थ (सम्) वि.— समीप का, निकट का। सं.— स्त्री की योनि, पुरुष का लिंग।
 उपस्थित उपस्थित (सम्) वि.— प्राप्त, प्रस्तुत, विद्यमान।
 उपस्पर्शन उपस्पर्शन (सम्) सं.— मज्जन, स्नान; स्पर्श करना; कुछा करना; आचमन।
 उपहति उपहति (सम्) सं.— हत्या, वध; प्रहार; चोट; कष्ट, संकट, विपत्ति।
 उपहसित उपहसित (सम्) वि.— चिढ़ाया हुआ, मज़ाक उड़ाया हुआ, हास्य का कारण भूत।
 उपहार उपहार (सम्) सं.— भेंट, चढ़ावा; दान, पुरस्कार; पूजा, बलिदान।
 उपहास उपहास (सम्) सं.— हँसी, दिलगी, मज़ाक; तिरस्कार, निंदा।
 उपशान्ति उपशान्ति (सम्) अं.— गुप्त रूप से, रहस्य रूप से।
 उपकरण उपकरण (सम्) सं.— उपक्रम, तैयारी, अनुष्ठान, समीप बुलाना।
 उपकार उपकार (सम्) सं.— संस्कार, विशेष, प्रतिवर्ष यज्ञोपवीत धारण करने का पर्व, जो श्रावण पूर्णिमा के दिन होता है; तैयारी, प्रारंभ।
 उपकृत उपकृत (सम्) वि.— समीप लाया हुआ, आरंभ किया हुआ, बलिदान किया हुआ;
 उपाख्यान उपाख्यान (सम्) सं.— पुरानी कहानी, किसी मूल कथा से संबंधित अन्य कथा।

ಉಪ್ಪಗಮ ಉಪಾಗಮ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಮೀಪ
 ಆಗಮನ, ಪಹುಣನಾ ; ಸಂಭಾವನಾ, ಘಟಿತ ಹೊನಾ ;
 ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ, ಸ್ವೀಕೃತಿ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಗ್ರ (ಸಮ್) ವಿ.— ನಿಮ್ನ ಶ್ರೇಣಿ ಕಾ,
 ಹೀನ, ಅಂತಿಮ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಗ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಛೋಟೆ ಛೋಟೆ ಅಂಗ,
 ಅವಯವ. ಉಪಭಾಗ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಪ್ರಾಪ್ತ, ಸ್ವೀಕೃತ,
 ಪಾಯಾ ಹುಞಾ, ಲಿಯಾ ಹುಞಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾತೃಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸೀಮಾ ಕಾ
 ಅತಿಕ್ರಮಣ, ಮರ್ಯಾದಾ ಕಾ ಉಲ್ಲಂಘನ ; ತಿರಸ್ಕಾರ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾದಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಗ್ರಹಣ
 ಕರನಾ, ಮಿಕ್ಷಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾದೇಯ (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಂಗೀಕಾರ
 ಕರನೇ ಯೋಗ್ಯ, ಸ್ವೀಕಾರ ಯೋಗ್ಯ, ಅತ್ಯುತ್ತಮ,
 ಉಪಯುಕ್ತ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಧಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪದವಿ, ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ-
 ಸೂಚಕ ಶಬ್ದ ; ಧೋಖಾ, ಜಲ, ಚಾಲಾಕಿ ; ಕಪಟ ;
 ವಿಘ್ನ । — ಸಂಠ ವಂತ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸದಾ
 ಕಾಮ ಕರನೇವಾಲಾ, ಮಾನನೀಯ, ಪದವಿ ಪ್ರಾಪ್ತ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಧ್ಯ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯ ಉಪಾಧ್ಯಾಯ
 (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪುರೋಹಿತ, ಗುರು, ಶಿಕ್ಷಕ,
 ಉಪದೇಶಕ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಧ್ಯಾಯಿನಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ತಿಕ್ಷಿಕಾ, ಪುರೋಹಿತ ಯಾ ಗುರು ಕೀ ಪತ್ನಿ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಧ್ಯಾಯಿ ಉಪಾಧ್ಯಾಯಿ
 ಉಪಾಧ್ಯಾಯಿ, ಉಪಾಧ್ಯಾಯಿ ಉಪಾಧ್ಯಾಯಿ (ಸಮ್)
 ಸಂ.— ದೇ. ಉಪಾಧ್ಯಾಯಿ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾನತಿ, ಉಪಾನತ್ ಉಪಾನತ್,
 ಉಪಾನಹ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಪ್ಪಲ,
 ಪಾಡುಕಾ, ಖಡಾಕ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಂತ, ಉಪಾಂತ ಉಪಾಂತ (ಸಮ್)
 ಖ.— ಸಮೀಪ ಕಾ, ನಿಕಟ ಕಾ, ಅಂತ ಅಕ್ಷರ
 ಕೇ ಸಮೀಪ ಕಾ ಅಕ್ಷರ ; ದೃಢಿಕೋಣ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಾಧನಾ, ಯುಕ್ತಿ,
 ತಂತ್ರ, ವಿಧಾನ ; ರಾಜನೈತಿಕ ತಂತ್ರ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಯನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಮೀಪ
 ಗಮನ, ಧರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ ; ಖೆಂಟ, ಪುರಸ್ಕಾರ ।

ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾರ್ಜನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪ್ರಾಪ್ತಿ,
 ಕಮಾಡ್, ಉಪಲಬ್ಧಿ । — ಇಸು (ಸಮ್)
 ಕ್ರಿ.— ಪ್ರಾಪ್ತ ಕರ, ಕಮಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾರೂಢ (ಸಮ್) ವಿ.— ಚಡಾ ಹುಞಾ,
 ಉಪರ ಗಯಾ ಹುಞಾ, ಅಧಿಕ ಹುಞಾ, ಬಡಾ ಹುಞಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಲಂಘ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪ್ರಾಪ್ತ ಕರನಾ,
 ಪ್ರಾಪ್ತಿ ; ಉಲಾಹನಾ, ನಿಂದಾ, ತಿರಸ್ಕಾರ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಶ್ರಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಆಧಾರ,
 ಆಶ್ರಯ, ವಿಶ್ವಾಸ ಪಾತ್ರ ; ತಕ್ಕಿಯಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಸಂಗ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಮೀಪತಾ,
 ನೈಕತ್ಯ ; ತರಕಸ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಸನ, ಉಪಾಸನೆ ಉಪಾಸನೆ (ಸಮ್)
 ಸಂ.— ಪೂಜಾ, ಸೇವಾ, ಆರಾಧನ ; ಧನುರ್ವಿಜ್ಞಾ,
 ಬಾಣ ಚಲಾನೇ ಕಾ ಅಭ್ಯಾಸ, ಸಮೀಪ ಉಪಸ್ಥಿತ
 ರಹನಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಸಿತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಪೂಜಿತ,
 ಆರ್ಚಿತ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಸ್ತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪೂಜಾ, ಸೇವಾ,
 ಶುಶ್ರೂಷಾ, ಧ್ಯಾನ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಹಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಲ್ಪ ಆಹಾರ,
 ಜಲಪಾನ, ಥೊಡಾ ಖಾನಾ ಖಾನಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪಾಹಿತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಸ್ಥಾಪಿತ,
 ಜಮಾ ಕರಾಯಾ ಹುಞಾ, ಸಂಬಂಧಯುಕ್ತ, ಸಂಯೋಜಿತ ।
 ಸಂ.— ಟೂಟಾ ತಾರಾ, ಉಲ್ಕಾಪಾತ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪೇಕ್ಷ, ಉಪೇಕ್ಷಾ ಉಪೇಕ್ಷಾ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ತಿರಸ್ಕಾರ ಉದಾಸೀನತಾ, ಲಾಪರವಾಹಿ, ವಿರಕ್ತಿ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪೇತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಯುಕ್ತ, ಸಂಪನ್ನ,
 ಸಂಬಂಧಿತ, ಉಪಸ್ಥಿತ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪೇಂದ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಇಂದ್ರ ಕಾ ಛೊಟಾ
 ಭಾಡ್, ವಾಮನ ಯಾ ವಿಷ್ಣು ಭಗವಾನ್ ; ರಾಜಾ,
 ಸರ್ಪ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪೋದ್ಘಾತ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪ್ರಾರಂಭ,
 ಆರಂಭ, ಭೂಮಿಕಾ ; ಉದಾಹರಣ, ನಮೂನಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪೋಷಣ, ಉಪೋಷ್ಯ ಉಪೋಷ್ಯ
 (ಸಮ್) ಸಂ.— ಉಪವಾಸ, ನಿರಾಹಾರ ರಹನಾ,
 ವ್ರತ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪ್ಪ (ಸಮ್) ವಿ.— ಬೀಜ ಬೋಯಾ ಹುಞಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪ್ಪಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಬೀಜ ಬೋನಾ ।
 ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪ್ಪೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ರಾತ್ ।

ಉಪ್ಪಗಂ ಉಪ್ಪಗತಿ, ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ, ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ)
 ಸಂ.— ಉಕ ಕಾಡಿದಾರ ವೃಕ್ಷ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ) ಸಂ.— ನಮಕ ಮೆ ಲಗಾಕರ
 ಸುಖಾಯಿ ಗಯಿ ತರಕಾರಿ । (ತದ್) ಸಂ.— ಉಪಟ
 (ತತ್) — ವಸ್ತ್ರ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ) ಸಂ.— ನಿರ್ಯಾಣ ; ಯಾತ್ರಾ
 ರೋಕನಾ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ತದ್) ವಿ.— ಉಪರಿ (ತತ್) ;
 ಉಪ, ಅಂತ, ಉಪರ ಕಾ । — ಉಪ ಕುಡಿ, ಗುಡಿ
 ಗುಡಿ (ತದ್) ಸಂ.— ಉಪರ ಉಪಾಯಿ ಗಯಿ ಇಂಡಾ ।
 — ಸೂಡು ಮಾಡು (ತದ್) ಕ್ರಿ.— ಅಂತ (ದಿವಾರ
 ಆದಿ ಕೋ) ಉಪಾನಾ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ, ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ತದ್)
 ಕ್ರಿ.— ಉಲಂಗ ಮಾರ, ಕೂಡ, ಉಪರ ಜಾ, ಚಡ,
 ಅಧಿಕ ಹೋ ; ಜಾಗ, ಆವರಣ ನಿಕಾಲ ; ಜಗಾ ;
 ವಿಸ್ತಾರ ಕರ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ತದ್) ಸಂ.— ಉಪರ ಕಾ
 ವಸ್ತ್ರ, ಉತ್ತರಿಯ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ತದ್) ಸಂ.— ಉಪರ
 ಕಾ ಆಘಾತ, ಪ್ರಹಾರ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ತದ್) ಸಂ.— ಉಪಕಾರಿಕೆ
 (ತತ್) ; ಮಹಲ, ಅಡಾಲಿಕಾ, ಸೌಧ, ಮೆಜಿಲ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ) ಸಂ.— ನಮಕ ಬನಾನೆ-
 ವಾಲಾ ; ಮಡುಖಾ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಉಕ ಛೊಟಾ ವೃಕ್ಷ
 (Macaranga Indica.)
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಉದಯರಾಗ, ರಾಜಾ
 ಆದಿ ಕೋ ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಜಗಾನೇ ಕಾ ಗೀತ । —
 ಇಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಜಗಾ, ಜಾಗೃತ ಕರ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ತದ್) ಸಂ.— ಉತ್ಪಲ (ತತ್) ;
 ವಿಶಾಲತಾ, ಫೆಲಾವ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ) ಸಂ.— ರಾಜ, ಉಪ-ಮಕಾನ
 ಬನಾನೆವಾಲಾ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಉಪ್ಪಗತಿ ;
 ನಮಕ ಬನಾನೆವಾಲಾ, ಜೋ ತರಕಾರಿ ಮಿ ಉತ್ಪನ್ನ
 ಕರತಾ ಹೆ ।
 ಉಪ್ಪಗತಿ ಉಪ್ಪಗತಿ (ಕ) ಸಂ.— ರಾಜ ಕೀ ಛಿ,
 ನಮಕ ಬನಾನೆವಾಲೆ ಕೀ ಛಿ ।

ऋषि उपाधिके (क) सं.— ईंट-पत्थर उठाने का काम, नमक बनाने का पेशा ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— नमक, लवण ; प्रेम, प्रीति, ममता ; उपकार, कृतज्ञता ; रक्षण, संरक्षण ; एक प्रकार का खेल । ऋषि उपाधि जो नमक खाता है, वह पानी पीता है (कह.) । ऋषि उपाधि (क) सं.— एक खाने की चीज जो चावल या गेहूँ के रवा से बनाया जाता है, उपाधि । ऋषि उपाधि (क) सं.— नमक की दूकान, नमक का भंडार । ऋषि उपाधि (क) सं.— अचार । ऋषि उपाधि मातंगे मोदलु गादे उपाधिके मोदलु उपाधिके—बात का आदि कहावत है, भोजन का आदि अचार है (कह.) ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— नमक-मिर्च ; तीक्ष्ण वचन । — ऋषि उपाधि (क) सं.— नमक-मिर्च मिलाकर बोल, चुगली खा (लाक्ष.) ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— दे. ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— ऋषि उपाधि, दे. ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) अ.— मुँह से निकलनेवाली हवा जो 'उफ' ध्वनि निकलती है, चूल्हे को फूँकते समय 'उफ उफ' किया जाता है, संपेरा सांप को नचाते समय इस प्रकार की ध्वनि करता है ताकि वह दर्शकों को आकर्षित कर सके । — ऋषि उपाधि (क) सं.— 'उफ' की हवा ।

ऋषि उपाधि (क) अ.— दे. ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) क्रि.— उमड़, उभर, उफन अधिक हो ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि—उमड़ना, उफान, अधिक होना ; महानता ; साहस ; शक्ति ; बहादुरी ; वीरता ; गर्जन ।

ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि (क) सं.— आधिक्य, वृद्धि ; महानता ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— एक आयुध विशेष, गदा ; दरवाजे की किल्ली ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— उमड़ना, उभरना, उफान, आधिक्य, महानता ; साहस ; वीरता । — ऋषि उपाधि (क) क्रि.— दे. ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— धान का भूसा ; शरीर से गिरनेवाले बाल या रोम ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— ऊर्ध्वश्वास (तद्) ; श्वास, दमा, साँस की बीमारी ; रगड़, कुचलन ; मात्सर्य, ईर्ष्या ; संकुचितता, संकीर्णता ; कष्ट, संकट ।

ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधिके (क) सं.— वमन, उलटी ।

ऋषि उपाधि (क) क्रि.— वमन कर ।

ऋषि उपाधिके, ऋषि उपाधिके (क) सं.— दे. ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— उत्साह से किया हुआ प्रहार या आघात ।

ऋषि उपाधि (क) क्रि.— उभाड़, अधिक कर ; वृद्धि कर ; ऊपर उठा ।

ऋषि उपाधि (क) क्रि.— उमड़, उफान, अधिक हो, बढ़ा हो, प्रसन्न हो, फूले न समा । सं.— उमड़ना, उफान ; ऊँचाई, ऊँचा स्थान ; गर्व, अभिमान ; आनंद, हर्ष । — ऋषि उपाधि (क) क्रि.— उभाड़, उकास, उत्तेजित कर । — ऋषि उपाधि (क) सं.— असमता, विषमता, पहाड़ और गड्ढा । — ऋषि उपाधि (क) सं.— दीर्घ दांत, आगे निकला हुआ दाँत ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— चिंहाहट, चिंहाना ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— अत्यधिक गर्व, दर्प, अत्यधिक अभिमान ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि (क) सं.— दे. ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) क्रि.— ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— गरमी, उष्णता ; भाफ, वाष्प ; वर्षा, बरसात । — ऋषि उपाधि (क) सं.— वह घर या स्थान जहाँ धोवी गंदे कपड़ों को भाफ में ढालता है ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— एक नक्षत्र, दे. ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— उद्देग ; विकलता, व्याकुलता, भय ; दुःख ।

ऋषि उपाधि (क) वि.— दो, दोनों । — ऋषि उपाधि (क) सं.— दो पाप । — ऋषि उपाधि (क) अ.— दोनों ओर, दोनों जगह, दोनों लोकों में, इह तथा पर में । — ऋषि उपाधि (क) सं.— धर्मसंकट, दोनों ओर का संकट ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— कन्नड और संस्कृत दोनों भाषाओं में कविता करनेवाला कवि ।

ऋषि उपाधि (क) वि.— दोनों पक्षों के लिए मान्य ।

ऋषि उपाधि (क) क्रि.— उण्-खा, उपभोग कर ।

ऋषि उपाधि (अ. दे.) वि.— उमदा (अरवी) ; श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, सुंदर, अच्छा ।

ऋषि उपाधि (अ. दे.) सं.— उमराव (अरवी) ; प्रतिष्ठित व्यक्ति ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— गरमी, उमस ।

ऋषि उपाधि (क) सं.— पार्वती । — ऋषि उपाधि (क) सं.— शिव । — ऋषि उपाधि (क) सं.— ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि ।

ऋषि उपाधि, ऋषि उपाधि (क) सं.— धान, का भूसा ।

ऋषि उपाधि (क) अ.— और, तथा, एवं ।

ऋषि उपाधि (क) प्र.— संज्ञार्थक प्रत्यय ; उदा. ऋषि उपाधि—योग्यता, उपयुक्तता ।

ಉಮೆ ಉಮೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದೇ. ಉಮಾ.—ಹೇವಿ
 ದೇವಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪಾರ್ವತಿ । —ಯಾಳ್
 ಯಾಳ್, ಯಾಳ್ ಯಿನಿಯ, ಯಾಳ್ ಯೋಡೆಯ
 (ಕ) ಸಂ.— ಶಿವ ।

ಉಮೇದ ಉಮೇದು, ಉಮೇದು ಉಮೇದು (ಋ. ದೇ.)
 ಸಂ.— ಉಮಿಧ (ಫಾರಸಿ) ; विश्वास, भरोसा,
 आशा ; इच्छा । —उमैद वार (ಋ. ದೇ.) ಸಂ.—
 ಉಮೇದವಾರ (ಫಾರಸಿ) ; नौकरी पाने की आशा
 करनेवाला । वि.— आशादायक, विश्वासपूर्ण ।
 —उमै वार (ಋ. ದೇ.) ಸಂ.— ಆಶಾಧಾಯಕತಾ,
 प्रतीक्षा करना ; उम्मीदवार होना ।

ಉಮೇಶ ಉಮೇಶ್ವರ ಉಮೇಶ್ವರ (ಸಮ್)
 ಸಂ.— ಶಿವ ।

ಉಮೃಚ್ಛ ಉಮೃಚ್ಛ, ಉಮೃಚ್ಛ ಉಮೃಚ್ಛ,
 ಉಮೃಚ್ಛ ಉಮೃಚ್ಛ (ತದ್) ವಿ.— ಉಮೃಚ್ಛ
 (ತದ್) ; उन्मत्त, मदमत्त, घमंटी, भभिमानी ।
 ಸಂ.— धतूरे का पौधा ।

ಉಮೃದ ಉಮೃದ (ತದ್) ವಿ.— ಮದಮತ್ತ. ಖಚಿಕ
 घमंटी ।

ಉಮೃಲು ಉಮೃಲು, ಉಮೃಲು ಉಮೃಲು (ಕ)
 ಸಂ.— कफ़, श्लेष्मा ; सौंस लेने में कठिनाई,
 दमा ।

ಉಮೃಳ ಉಮೃಳ, ಉಮೃಳ ಉಮೃಳ (ತದ್)
 ಸಂ.— उष्मन् (ತದ್) ; गरमी ; दुःख ; दर्द ;
 संकट, व्याकुलता । —उम इसु (ತದ್)
 ಕ್ರಿ.— गरम हो ; व्याकुल हो, चिंतित
 हो, दुःखी हो, मचेत हो ।

ಉಮೃದ ಉಮೃದ (ತದ್) ಸಂ.— ಉಮೃದ (ತದ್) ।
 ಉಮೃಗೆ ಉಮೃಗೆ, ಉಮೃಗೆ ಉಮೃಗೆ (ಕ) ಸಂ.—
 गेहूँ या जौ का रसपूर्ण दाना ।

ಉಮೃ (ಕ) ಕ್ರಿ.— वाहर निकल,
 उमड़. उभर, उपर आ । सं.—चावल, भात
 (वच्चे माधारणतया इसका प्रयोग करते हैं) ;
 चुवन (मै.प्र.) ।

ಉಮೃ ಉಮೃ, ಉಮೃಳ ಉಮೃಳ (ಕ) ಸಂ.—
 रस निकालने के लिए उपयुक्त पथर ।

ಉಮೃ ಉಮೃ (ತದ್) ಸಂ.— उष्मः (तद्) ; गरमी;
 भाफ, वाष्प ।

ಉಮೃ ಉಮೃ (ತದ್) ಸಂ.— उमा (तद्) ; सन ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಕ್ರಿ.— दो, उठा, एक स्थान
 से दूसरे स्थान ले जा ; प्रतिबंध कर, दवा,
 रोक । सं.— धान या अनाज का भूसा,
 सूखा पत्ता ; पशुओं को चलाते समय कहा
 जानेवाला शब्द ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ,
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ.
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ,
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.— झूला, हिंडोला,
 पालना, होली ।

ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.— दोष ; हिंसा, क्रूरता ;
 चिह्नाना. चिह्नाहट ।

ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— छाती,
 वक्षस्थल ; धैर्य, शौर्य ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.— ययय हुरुकु—
 खुजली ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— उर से जानेवाला,
 साँप । —उरग अंगने (ಸಮ್) ಸಂ.—
 सर्पिणी ; नागकन्या । —उरन अशन (ಸಮ್)
 ಸಂ.— साँप को खानेवाला, गरुड, मोर ।
 —उरन आभरण (ಸಮ್) ಸಂ.— शिव ।
 —उर पति, उर राज (ಸಮ್) ಸಂ.—
 आदिशेष. वासुकी । —उरन भूषण
 (ಸಮ್) ಸಂ.— शिव । —उरन भोजि
 (ಸಮ್) ಸಂ.— गरुड, मोर, न्योला । —
 उरन शयन, उरन श्रापि (ಸಮ್) ಸಂ.—
 विष्णु ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— तिरुपति के
 पास का एक पहाड़ ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— उरगपति ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ. ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ)
 ಸಂ.— गोडाई, मोटाई, मोटापन (वस्त्र, धागा
 आदि का) । —उरम कूदल—मोटे बाल,
 उरम तोगलु—मोटी खाल, उर दार—
 मोटा धागा ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.— ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ,
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ. ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ— विवाह के समय वर-
 वधू का नारियल या गेंद (फूल का) से क्रीड़ा
 करना ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ,
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ
 (ಋ. ದೇ.) ವಿ.— उल्टा, क्रम विरुद्ध, बाँधा,
 विपरीत ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ. ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಋ. ದೇ.)
 ಕ್ರಿ.— उल्टा कर ; अस्वीकार कर ; घोखा दे
 (वातों से) ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.—
 सस्ता होना. थोड़ा दाम ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಕ್ರಿ.— गोल कर, लुढ़का,
 घुमा । सं.— दे उरम

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 मेघ, मेड़ ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ
 (ಕ) ಸಂ — लकड़ी के लट्टों को उठाने का
 रोलर या बेल ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.— जलना,
 लौ, ज्वाला ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— बेल की पीठ
 पर सामान बांधने के लिए उपयोग में लायी
 जानेवाली रस्सी ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ,
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.—
 जलना, उत्तेजित होना । क्रि.— जला,
 उत्तेजित कर, भाग लगा (प्र.) ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— मेड़, मेघ ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಸಮ್) ವಿ.— वचन दिया
 हुआ, मान्य, स्वीकृत ; विस्तृत, फैला हुआ ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ,
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ
 ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ)
 ಸಂ.— जाल, फंदा, फाँसी की रस्सी ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ, ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ
 ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.— शीघ्रता, उताव-
 लापन, गड़बड़ी, झपटना ; रोय, क्रोध ;
 निष्ठुरता ।

ಉರ್ಮೆ ಉರ್ಮೆ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಉರ್ಮೆ ;
 गर्जन, जोर से चिह्नाना ; गर्व, घमंड ।

७०००० उरवणिसु (क) क्रि.—शीघ्रता कर, उतावला हो, झपट; निष्ठुर हो; क्रुद्ध हो।
 ७०००० उरवणिकार्तन (क) सं.— शीघ्रता करना या उतावला होना।
 ७०००० उरवल (क) सं.— ७०००० उरुवल, ७०००० उरुवल—समिधा, ईंधन।
 ७०००० उरसिज (सम्) सं.— छाती पर उत्पन्न, स्तन।
 ७०००० उरसिरुह (सम्) सं.— दे. ७००००।
 ७०००० उरसिल (सम्) सं.— चौड़ी छाती-वाला।
 ७०००० उरसु, ७०००० उरिसु (क) क्रि.— जला, आग लगा, उत्तेजित कर।
 ७०००० उरस्य (सम्) वि.— वक्षस्थल का, सर्वोत्कृष्ट। सं.— पुत्र।
 ७०००० उरस्वत् (सम्) वि.— चौड़ी छाती-वाला।
 ७०००० उरःसूत्रिके (सम्) सं.— उर पर पहनने का मुक्ताहार, मोतियों की माला।
 ७०००० उरळि, ७०००० उरळि, ७०००० उळि, ७०००० उळ्ळ, ७०००० उळ्ळि, ७०००० उळ्ळे, ७०००० उळ्ळि (क) सं.— मिट्टी या भाटे का गोला, गोलाकार पिंड; मिट्टी या धातु का गोलाकार वर्तन। ७०००० उरळिगड्डे, ७०००० उळ्ळिगड्डे (क) सं.— प्याज़।
 ७०००० उरळि, ७०००० उळ्ळि, ७०००० उळ्ळि (क) सं.— ७०००० उरळि—कुलथी।
 ७०००० उरळु (क) क्रि.— लुढ़क, चकर खा। — ७०००० इसु (क) क्रि.— लुढ़का, गिरा, गोल कर, घुमा।
 ७०००० उरि (क) क्रि.— जल, दह, दग्ध हो, प्रज्वलित हो, प्रकाशित हो; व्यथित कर, चिंतित कर। सं.— आग, ज्वाला; ज्वर, बुखार; चिंता, व्यथा। — ७०००० केंड (क) सं.— जलनेवाला कोयला, अंगारा। — ७०००० कण, ७०००० गण (क) सं.— दहनेवाली आँख, लाल आँख। — ७०००० गाळि (क) सं.— गरम हवा, ल। — ७०००० किच्चु,

७०००० गिच्चु (क) सं.— प्रज्वलित वह्नि।
 — ७०००० केंदरु, ७०००० गेंदरु (क) क्रि.— आग फैला, आग लगा। — ७०००० केंय्य, ७०००० गेंय्य (क) सं.— जिसके हाथ में आग हो, भस्मासुर। — ७०००० क्रोळ्, ७०००० गोळ् (क) क्रि.— आग का लगना, आग का जलना। — ७०००० क्रोळिसु, ७०००० गोळिसु (क) क्रि.— आग जला. प्रज्वलित कर। — ७०००० गेस (क) सं.— ताम्रकेश, भूरे बाल। — ७०००० चेल्लु (क) सं.— लाल या बहुत विपैला विच्छू। — ७०००० नंलु (क) सं.— शीत ज्वर, ज्वर की विशेष पीड़ा। — ७०००० नालिये (क) सं.— अग्निशिखा, ज्वाला, आग। — ७०००० पु (क) सं.— जलना, 'धग् धग्' जलना। — ७०००० मातु (क) कठोर वचन, ईर्ष्यापूर्ण वचन। — ७०००० मारि (क) सं.— दुर्गा, भयंकर स्त्री। — ७०००० मूत्र (क) सं.— बार-बार पेशाब करने की बीमारी। — ७०००० वेणुणे (क) सं.— गरम तेल। — ७०००० वातु (क) सं.— दे. ७००००। — ७०००० विसिल्, ७०००० विसिल् (क) सं.— बहुत धूप, निदाघ का दाघ। — ७०००० शित (क) सं.— ज्वर के कारण हुआ जुकाम। — ७०००० सिंगि (क) सं.— डंडुभ, सर्प विशेष; क्रूर मनुष्य। — ७०००० हत्तु (क) क्रि.— आग का लगना, जलना, ज्वलित होना। — ७०००० हच्चु, ७०००० हत्तिसु (क) क्रि.— आग लगा, आग जला।
 ७०००० उरि (क) सं.— एक वृक्ष विशेष; धागा। क्रि.— भूँज, झुलस, सूख। — ७०००० गाळु= ७०००० हुरिगाळु—भुने हुए मसाले दार चने, मूँग आदि।
 ७०००० उरि (क) सं.— भाग से उपभोग करनेवाला, वह जो जलाया गया हो; निष्ठुर या क्रुद्ध पुरुष।
 ७०००० उरि (क) सं.— जलना, ज्वाला।
 ७०००० उरिसु, ७०००० उरिसु (क) क्रि.— छिलका निकाल (फल आदि का), (सड़े-गले को) फेंक, शिथिल हो।

७०००० उरित (क) सं.— दे. ७००००।
 ७०००० उरिमेव (सम्) सं.— सागवान का वृक्ष।
 ७०००० उरिल् (क) सं.— दे. ७००००।
 ७०००० उरिसु (क) क्रि.— जला, प्रज्वलित कर।
 ७०००० उरि (सम्) वि.— विस्तृत, फैला हुआ; स्वीकृत वचन दिया हुआ।
 ७०००० उरु (सम्) वि.— बड़ा, श्रेष्ठ, अधिक, अमूल्य, उत्तम, प्रख्यात, प्रसिद्ध, योग्य, उपयुक्त, विस्तृत।
 ७०००० उरुकु (क) क्रि.— स्थिर रह, अविचल रह; खड़ा रह। — ७०००० इसु (क) क्रि.— विस्तृत कर, टेढ़ा-मेढ़ा कर (प्रे.)। — ७०००० क्रोळ् (क) क्रि.— पीछे हट।
 ७०००० उरुग (क) सं.— क्रोधी पुरुष। ७०००० उरुगि (स्त्री.लिं.)।
 ७०००० उरुगु (क) सं.— रोष, क्रोध, कोप।
 ७०००० उरुट, ७०००० उरुटु (क) वि.— मोटा, शुष्क; असभ्य।
 ७०००० उरुटि, ७०००० उरुटि (क) सं.— दे. ७००००। — ७०००० इडु (क) क्रि.— सुगंधित तेल से शरीर को मल, मालिश कर।
 ७०००० उरुटिसु (क) क्रि.— दे. ७०००० (७००००)।
 ७०००० उरु (क) सं.— गर्व, अभिमान; मोटापन, गोलाई; निष्ठुर, शुष्क; असभ्य। क्रि.— अतिक्रमण कर, लौंघ, लुढ़क। ७०००० उरु— ७०००० उरु। उरुटु उरुटु उरुटु इरुटु— जो गोला है, वह लुढ़के बिना न रहे (कह.)। — ७०००० तन (क) सं.— निष्ठुरता श्रुता, घमंड।
 ७०००० उरुटु (क) क्रि.— रक्षा कर; लुढ़क सं.— गोलाकार वर्तन। — ७०००० इसु (क) क्रि.— लीप, पोत।
 ७०००० उरुटु (क) क्रि.— लुढ़क, गाल हो सं.— गोला।
 ७०००० उरुतंति (सम्) सं.— रस्सी।

लुडडर उरुतर (सम्) वि.— बहुत बड़ा, विस्तृत, बहुत श्रेष्ठ।

लुडडर उरुपु (क) सं.— दे. लुडडर।

लुडडर उरुडु, लुडडर उरुडु (क) क्रि.— चढ़ भा. आक्रमण कर। सं.— बलात्कार; शीघ्रता।

लुडडर उरुडे (क) सं.— आधिक्य; राशि, समृद्धि; बलात्कार; भीषणता।

लुडडर उरुमिडे, लुडडर उरुमिगे (क) सं.— आधिक्य, अधिकता।

लुडडर उरुमिडे (सम्) सं.— घोड़ा।

लुडडर उरुलु (क) सं.— दे. लुडडर।

लुडडर उरुलुगोले, लुडडर उरुलु बले (क) सं.— फौसी।

लुडडर उरुव (क) वि.— श्रेष्ठ, अधिक. उत्तम, बलशाली।

लुडडर उरुवणिसु (क) क्रि.— दे. लुडडर नक्षत्र।

लुडडर उरुवलु (क) सं.— ईधन, समिधा।

लुडडर उरुवु (क) सं.— दे. लुडडर; राशि, समूह, गोमा, बड़प्पन।

लुडडर उरुसु (क) क्रि.— दे. लुडडर।

लुडडर उरुलु. लुडडर उरुलु (क) क्रि.— लुडक, गोल हो. घूम, चकर काट, गिर, उल्टा हो। सं. दे. लुडडर; धुरी। — लुडडर इसु (क) क्रि.— गिरा, घुमा: गोल कर। — लुडडर केडहु (क) क्रि.— फौसी पर लटका, संकट में डाल। — लुडडर लु (क) क्रि.— दे. लुडडर।

लुडडर उरुलि (क) सं.— गोला, गोलाकार पिंड, काँसे का बर्तन; मैना। — लुडडर कोळ (क) क्रि.— गोलाकार हो, वृत्त हो। — लुडडर के (क) सं.— गोल या वृत्त होना, लपेट।

लुडडर उरुलुक (क) सं.— लपेटने की चीज़, बेलन।

लुडडर उरु, लुडडर उरु (क) अ.— वि.बो.— अच्छा हुआ!, शबास!, बहुत अच्छा!

लुडडर उरुज (सम्) सं.— स्तन, पयोधर।

लुडडर उरुज (सम्) सं.— दे. लुडडर उरुज, लुडडर उरुज, लुडडर उरुज, लुडडर उरुज (क) सं.— एक क्रीड़ा जिसमें नारियल. फल आदि ऊपर लटकाकर खेलनेवाले व्यक्ति गोपों का वेप धारण कर उन्हें पाने का प्रयास करते हैं—यह खेल साधारणतया श्रीकृष्णजन्माष्टमी के बाद के दिन मनाया जाता है।

लुडडर उरुलि (क) सं.— राशि, डेर. पुंज। लुडडर उरुलि (क) सं.— तक, आला, ताखा।

क्रि.— लुडडर उरुलि—सूँघ; चूस, सोख। लुडडर उरुसु (क) क्रि.— खड़ा कर. रोक; सह, सहन कर, बर्दाश्त कर।

लुडडर उरु, लुडडर उरु (क) क्रि.— हो, विद्यमान हो, रह; रुक; हिचकिचा; डगमगा. लहरा. आगे-पीछे हिल; जुड़ जा।

लुडडर उरुकु (क) सं.— खड़े रहना, रुकना, स्थिरता।

लुडडर उरुगिसु (क) क्रि.— वक्र कर, तिरछा कर, मोड़।

लुडडर उरुगु (क) क्रि.— वक्र हो, तिरछा हो, झुक. मुड़। सं.— वक्रता। — लुडडर (क) सं.— वक्र पद, टेढ़ा पैर। — लुडडर डेरुलु (क) सं.— टेढ़ी उँगली।

लुडडर उरुपु (क) सं.— रुकना, स्थिर रहना; स्थायी भाव।

लुडडर उरुवु (क) सं.— संयुक्तता; राशि, डेर, पुंज; आधिक्य, अधिकता; बड़ा होना, बड़प्पन, महानता; सुंदरता, मनोहरता।

लुडडर उरु (क) वि.— अधिक, बहुत, पूर्णतः, सुंदर, अच्छा। सं.— राशि, समूह. डेर; आधिक्य, बड़ा होना।

लुडडर उरु (क) क्रि.— अधिक हो, (बर्तन से) बाहर निकल, उमड़. उभर,। सं.— गर्व, अभिमान; औद्धत्य; शूरता। — लुडडर उरु

आलगळ (क) सं.— पराक्रमी योद्धा, शूर सैनिक। — लुडडर उरु (क) क्रि.— हिम्मत हार, अधीर हो।

लुडडर उरुकुके (क) सं.— विरोध, प्रति-कूलता।

लुडडर उरु (क) क्रि.— खींच (किसी को अपनी ओर खींचना, तलवार को म्यान से निकालना आदि), बाहर निकाल; शिथिल कर; शुद्ध कर; शिथिल हो, ढीला हो; शुद्ध हो (अक्. क्रि.)।

लुडडर उरुगि, लुडडर उरुगि (क) सं.— दे. लुडडर।

लुडडर उरु (क) क्रि.— लगा, डाल, जुड़ा, मिला, संयुक्त कर।

लुडडर उरुकि (क) सं.— रगड़, घिसाव। लुडडर उरु (क) क्रि.— रगड़, घिस। सं.— उड़द।

लुडडर उरु (तद्) सं.— वृद्धि (तद्)। लुडडर उरु (क) क्रि.— दे. लुडडर और लुडडर।

लुडडर उरु (क) सं.— दे. लुडडर।

लुडडर उरुस (क) सं.— दे. लुडडर. — लुडडर गोळिसु (क) क्रि.— दूसरों की साँस में बाधा डाल।

लुडडर उरुनि (क) वि.— बड़ा, महान, अच्छा, सुंदर।

लुडडर उरुसु (क) क्रि.— दे. लुडडर. (प्रे.)।

लुडडर उरु (क) क्रि.— दे. लुडडर. (अक्. क्रि.)।

लुडडर उरु (क) सं.— आधिक्य, बहुतायत। लुडडर उरु (क) सं.— दे. लुडडर और लुडडर।

लुडडर उरु (क) वि.— श्रेष्ठ, महान, अधिक। लुडडर उरु (सम्) सं.— उपजाऊ भूमि।

लुडडर उरु, लुडडर उरु (सम्) सं.— भूमि, पृथिवी; मैदान; एक छंद का नाम।

—ज (सम्) सं.— भूमिजा ; पेड़ ।
 —डल तल (सम्) सं.— भूतल ।
 ध्र (सम्) सं.— राजा ; पर्वत ।
 पति (सम्) सं.— राजा ; नृपति ।
 रुह (सम्) सं.— वृक्ष, पौधा, लता ।
 ७०० उर्विनं (क) वि.— दे. ७००.
 ७०० उर्विसु (क) क्रि.— दे. ७००.
 ७०० उर्वींद्र (सम्) सं.— भूपति,
 राजा ।
 ७०० उर्वु (क) क्रि.— उभर, उमड़, अधिक
 हो ।
 ७०० उल् (क) क्रि.— गरम हो ।
 ७०० उलक, ७०० उलके (तद्) सं.—
 उल्का (तत्) ।
 ७०० उलकु (क) क्रि.— उठ ; हिल ;
 निकल ; विचार कर ; कंप, कंपित हो ; मन
 को गोचर हो, स्फुरण हो (अक्. क्रि.) ।
 सं.— मरोड़, ऐंठ ।
 ७०० उलटा (अ.दे.) सं.— दे. ७००.
 ७०० उलि (क) क्रि.— ध्वनि कर, चिला, कह,
 बोले । सं.— रव, ध्वनि, शब्द, चिलाहट,
 चिल्लाना, चहचहाना ।
 ७०० उलिप, ७०० उलिपु, ७०० उलिवु,
 ७०० उलवु, ७०० उलहु (क) सं.—
 दे. ७००.
 ७०० उलिव (क) सं.— एक छोटी चिड़िया
 जिसकी पूँछ लंबी होती है, उच्चपुच्छ ।
 ७०० उलकु (क) क्रि. और सं.— दे.
 ७००.
 ७०० उलुड (क) क्रि.— दे. ७००.
 ७०० उलुक (सम्) सं.— उल्लू ।
 ७०० उलुखल (सम्) सं.— ओखली ।
 ७०० उलुपि (सम्) सं.— नागराज की
 एक कन्या का नाम, जो अर्जुन को ब्याही
 थी ।
 ७०० उल्क, ७०० उल्का (सम्) सं.— नक्षत्र;
 लुक, प्रकाश, तेज ; अग्नि, अंगारा ।
 पात (सम्) सं.— नक्षत्र का गिरना ।
 ७०० उल्कु (क) क्रि. और सं.— दे.
 ७००.

७०० उल्के (तद्) सं.— दे. ७००.
 ७०० उल्वण, ७०० उल्वणे, ७०० उल्वणी
 उल्वणे, ७०० उल्वणे, ७०० उल्वण
 (सम्) वि.— गाढ़ा, गांठोंदार ; अधिक,
 विपुल ; दृढ़, बड़ा ।
 ७०० उल्मुक (सम्) सं.— मशाल,
 दीवतः ।
 ७०० उलंगि (क) सं.— टिटिभ पक्षी,
 टिटहरी चिड़िया ।
 ७०० उलघन, ७०० उलघने (सम्)
 सं.— अतिक्रमण, लौघना ; विरुद्धाचरण ।
 ७०० उलडे (क) सं.— दे. ७००.
 ७०० उलस, ७०० उलस (सम्) सं.—
 हर्ष, आनंद ; चमक, आभा, दीप्ति ।
 ७०० उलसत् (सम्) वि.— चमकदार,
 प्रकाशमान ; रोमांचकर ।
 ७०० उलसन (सम्) सं.— हर्ष, आनंद ;
 रोमांच ।
 ७०० उलसित (सम्) वि.— चमकीला,
 दमकदार, उत्फुलित ; हर्षित ।
 ७०० उलघ (सम्) वि.— चतुर, कुशल,
 शुद्ध ; रोग से छूटा हुआ ; संतुष्ट ।
 ७०० उलघाप (सम्) सं.— वाणी, शब्द ;
 अपमानकारक शब्द, आक्षेप ।
 ७०० उलघार (क) सं.— ७०० उलघार—
 सावधानी से बैठने का आसन ; छोटी
 खिड़की, गवाख ।
 ७०० उलघि (क) अ.— स्थान का सूचक, वहाँ,
 बीच में, मध्य ।
 ७०० उल्लु (तद्) सं.— उल्लूक (तत्) ;
 उल्लू (हि.), मूर्ख, बेवकूफ ।
 ७०० उल्लुठन, ७०० उल्लुठे (सम्)
 सं.— श्लेष वाक्य, व्यंग्योक्ति, विपरीतार्थक
 वाक्य ।
 ७०० उल्लुठित (सम्) वि.— चलित,
 हिलता हुआ, घूमता हुआ ।
 ७०० उल्लेख (सम्) सं.— वर्णन, चर्चा ;
 जिक्र, लेख ; एक अलंकार विशेष । — ७००
 इसु (सम्) क्रि.— लिख ।

७०० उल्लेखन (सम्) सं.— वर्णन, चर्चा,
 लेख, चित्रण ; खुदाई, छीलन, खुरचन,
 रगड़ ।
 ७०० उल्लोच (सम्) सं.— राजछत्र,
 मण्डप ; जंभाई ।
 ७०० उल्लोल (सम्) सं.— लहर, तरंग,
 हिलोर, जर्मि ।
 ७०० उल्लवण (सम्) वि.— दे. ७००.
 ७०० उल्लास (तद्) सं.— उल्लास (तत्) ।
 ७०० उव (क) सर्व.— बीच का, यह (आदमी)
 प्र.— वाला या योग्य अर्थसूचक प्रत्यय
 उदा.— ७०० आगुव—होनेवाला, ७००
 तिननुव—खाने योग्य, ७००
 खरीदने योग्य ।
 ७०० उवनु (क) सर्व.— बीच का (आदमी)
 ७०० उवल्लु (क) सर्व.— बीच की (स्त्री)
 यह स्त्री ।
 ७०० उवाले (क) सं.— दे. ७००.
 ७०० उवाले (क) सं.— दे. ७००.
 ७०० उशन, ७०० उशनस् (सम्) सं.—
 शुक्राचार्य, शुक्र ग्रह ।
 ७०० उशीर (सम्) सं.— खस, वीरनमूल
 ७०० उश्रास (तद्) सं.— उच्छ्वास (तत्)
 ७०० उष, ७०० उषस्, ७०० उषा (सम्)
 सं.— प्रातः, सवेरा, सुबह ।
 ७०० उषःकाल (सम्) सं.— उषःकाल
 सवेरा ।
 ७०० उषण (सम्) सं.— काली मिर्च
 सोंठ ।
 ७०० उषुध (सम्) सं.— अग्नि
 भाग ; वच्चा ।
 ७०० उषापति (सम्) सं.— उषा के
 अनिरुद्ध ।
 ७०० उषित (सम्) वि.— जला हुआ
 बसा हुआ ।
 ७०० उष्ट (सम्) वि.— प्रकाशमान, कांति
 युक्त ; रहनेवाला ।
 ७०० उष्ट (सम्) सं.— ऊँट ।
 ७०० उषुधिक्षि (सम्) सं.— आफ्रीका का
 एक बड़ा पक्षी ।

७०७ उष्ण (सम्) सं.— गरमी, ताप; ग्रीष्म ऋतु, घाम।
 ७०७ उष्ण उष्णरश्मि (सम्) सं.— सूर्य।
 ७०७ उष्ण उष्णीष (सम्) सं.— पगड़ी, फेंटा, साफा।
 ७०७ उष्ण उष्णोदक (सम्) सं.— गरम पानी।
 ७०७ उष्ण, ७०७ उष्णम्, ७०७ उष्णे (सम्) सं.— गरमी, ताप; ग्रीष्म ऋतु।
 ७०७ उष् (क) अ.— थकावट के समय निकलने वाली ध्वनि 'उष्'; जानवरों को चलाते समय उच्चरित करनेवाली ध्वनि।
 ७०७ उष्कने, ७०७ उष्कने (क) अ.— चुपचाप, मौन रूप से; गुप्त रूप से।
 ७०७ उष्कने (क) अ.— तुरंत, फौरन, शीघ्रता से।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्कने, ७०७ उष्क, ७०७ उष्क, ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क) सं.— सैकत, रेत।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क) सं.— ध्वनि करना, कहना, बोलना; (साँस लेना)।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क) सं.— साँस, श्वास, जीवन; साँस लेना, यति, विराम।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क) क्रि.— बक बक कर।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क?) सं.— भीगे अनाज (चना, मूँग आदि) से बनाई गई रसोई, उवाला गया अनाज (विशेषकर चना या मूँग) जिसमें नमक, मिर्च मिलाकर खाया जाता है।
 ७०७ उष्क (सम्) सं.— प्रकाश, किरण; साँड़।
 ७०७ उष्क (सम्) सं.— गाय।
 ७०७ उष्क (क) अ.— संबोधन और निषेध सूचक अव्यय।
 ७०७ उष्क (क) अ.— सड़ों के कारण टिट्टरते समय निकलनेवाली आवाज़।

७०७ उष्क (क) अ.— दे. ७०७; पशुओं को चलाते समय कहा जानेवाला शब्द।
 ७०७ उष्क (क) क्रि.— हो, रह, वर्तमान रह, युक्त हो; हल चला। अ.— अंदर, भीतर में, अच्छी तरह। — ७०७ अंजिसु (क) क्रि.— मन को डरा। — ७०७ अलर् (क) क्रि.— भीतर में खिल।
 ७०७ उष्क (क) सं.— काठ की गुड़िया जो पहियों के सहारे चल सकती हो।
 ७०७ उष्क (क) क्रि.— छिप जा, गुप्त रह; बंद हो; छोड़; अधिक हो; पार हो। सं.— छिपना, चोर के छिपने का स्थान, ताक में बैठी रहनेवाली सेना, शिकारियों की झोंपड़ी; छेनी, रुखानी।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क) सं.— बचत, बची रकम, लाभ।
 ७०७ उष्क (क) सं.— छिपनेवाला मनुष्य।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क) सं.— बचना, बचत, कमाई, लाभ।
 ७०७ उष्क (क) क्रि.— हल चला, जोत; रह।
 — ७०७ (क) सं.— हल चलाना, जोताई; विद्यमानता, लाभ; संपन्नता।
 ७०७ उष्क (क) सं.— दे. ७०७।
 ७०७ उष्क (क) सं.— शेष, बचत; वासी भात।
 ७०७ उष्क (क) सं.— अच्छे वस्त्र।
 ७०७ उष्क (क) क्रि.— प्रकाशित हो, चमक।
 — ७०७ मुष्क (क) क्रि.— छिप, अगोचर हो।
 ७०७ उष्क (क) सं.— जोताई, हल चलाना।
 ७०७ उष्क (क) सं.— उड़द।
 ७०७ उष्क (क) सं.— संपन्नता, रहने की स्थिति।
 ७०७ उष्क (क) सं.— चमक, दीप्ति; समझना।
 ७०७ उष्क (क) अ.— युक्त, सहित, रहनेवाला, जिसके पास हो। — ७०७ व (क) सं.— धनवान।

७०७ उष्क (क) सं.— प्याज़।
 ७०७ उष्क (क) सं.— भीतरी उपसंख्यान।
 ७०७ उष्क (क) क्रि.— डर, हिम्मत हार।
 ७०७ उष्क (क) सं.— बडवाशि. ससुद्र की भाग।
 ७०७ उष्क (क) क्रि.— हल चला, जोत।
 ७०७ उष्क (क) वि.— बचा हुआ, शेष, अवशिष्ट; छोड़, त्याग, चला जा, निकल।
 ७०७ उष्क (क) वि.— शेष, बचा हुआ, अवशिष्ट। — ७०७ जनरु (क) सं.— शेष लोग।
 ७०७ उष्क (क) सं.— जोताई; बचत, जो बचा हो।
 ७०७ उष्क (क) सं.— जो बचा हो (चावल, धान आदि या पैसा), लाभ।
 ७०७ उष्क (क) सं.— बचत, अवशेष; लाभ।
 ७०७ उष्क (क) सं.— जोताई।
 ७०७ उष्क (क) सं.— जोताई। क्रि.— घूम, चकर काट, चंचल हो, मुक्त होकर उड़।
 ७०७ उष्क (क) सं.— जो बचा हुआ, अवशेष।
 ७०७ उष्क (क) वि.— बचा हुआ, अवशिष्ट।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क) क्रि.— जोताई करना; बचाना।
 ७०७ उष्क (क) सं.— दे. ७०७. (मै.प्र.)।
 ७०७ उष्क, ७०७ उष्क, ७०७ उष्क (क) क्रि.— बचा, रक्षित कर।
 ७०७ उष्क (क) क्रि.— दे. ७०७; मुक्त हो, जीवित हो; बच, रक्षित हो; पीछे रह।
 वि.— छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ, बचा हुआ, अवशिष्ट।

उक्ति (क) सं.— अवशेष, बचत, बचाव ; एक तपस्या-विधि, एक व्रत ।

उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) क्रि.— मन लगा. प्रसन्न हो, प्रेम कर । सं.— समुक्तता, वासना ।

उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उक्ति (क) क्रि.— जोताई करा ; रक्षा, रक्षा कर, जीवित रख, मुक्त कर ।

उक्ति (क) क्रि.— दे. उक्ति.

उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— जोताई, हल चलाना ।

उक्ति (क) क्रि.— दे. उक्ति.

उक्ति (क) सं.— जोताई ।

उक्ति (क) सं.— एक प्रकार की तपस्या, एक व्रत ।

उक्ति (क) सं.— उक्ति (क) सं.— मन लगा, प्रसन्न हो, प्रेम कर ।

उक्ति (क) सं.— प्रेम, प्रीति, स्नेह ।

उ

उ—कन्नड वर्णमाला का छठा अक्षर ।
अ.— और, तथा, एवं ; उदा.— राम राम गोपालनू—राम और गोपाल.... ।

उ (क) सं.— ताना-बाना, बुनाई ।

उ (क) सं.— ताना-बाना, बुनाई ।

उ (क) सं.— दे. उक्ति । सर्व.—

यह (स्त्री.लिं.), यह (बीच की) स्त्री ।

उ (क) सं.— दे. उक्ति । सर्व.—
बटलोई या मिट्टी में उवाला हुआ ।

उ (क) क्रि.— हिल, हिल-डुल ; लटक ; चिन्हा ; पुकार ।

उ (क) सं.— अवशेष, बचत, बचाव ; एक तपस्या-विधि, एक व्रत ।

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

उ (क) सं.— दे. उक्ति. उक्ति (क) सं.— दे. उक्ति.

७०३ कृ (क) क्रि.— फूंक, हवा भर; उभार, श्वास छोड़, (श्वास छोड़कर किसी बाजे को) बजा । सं.—फूंकना; अगर बत्ती; —१२३ किवि (क) क्रि.— शिकायत कर, चुगली खा । —१२३ कामाळे (क) सं.— एक रोग । —१२३ कौळवे (क) सं.— हवा फूंकने की नाली । —१२३ बत्ती (क) सं.— अगरबत्ती ।

७०३ ऊध. ७०३ ऊधस् (सम्) सं.—थन । ७०३ ऊधस्य—दूध, क्षीर । ७०३ ऊन (सम्) वि.— दे. ७०३. ७०३ ऊनते (सम्) सं.— दे. ७०३. ७०३ ऊबलु. ७०३ ऊबलु (क) सं.— उभर, बढ़ा होना ।

७०३ ऊबु (क) क्रि.— फूंक, हवा भर, पंखा झल । सं.— जौ के बाल, कांटेदार घास । ७०३ ऊम् (क) वि.बो.— क्रोध का सूचक । ७०३ ऊम, ७०३ ऊमे (क) सं.— बहरा; मूर्ख मनुष्य; चुप रहनेवाला मनुष्य (मै.प्र) । स्त्री.लि.— वही ।

७०३ ऊयिसु, ७०३ ऊहिसु (तद्) क्रि.— ('ऊहा' से) — कल्पना कर, अंदाज़ कर ।

७०३ ऊर्, ७०३ ऊरु (क) सं.— रहने का स्थान, ग्राम, नगर, वस्ती ।

७०३ ऊरुय्य (सम्) सं.— वैश्य ।

७०३ ऊरिके (क) सं.— टेकने का साधन, टेकने की लकड़ी, टेकना ।

७०३ ऊरिसु (क) क्रि.—टिका, झुका, लगा; चला, हटा ।

७०३ ऊरु (क) क्रि.— टेक, लगा, थाम । सं.—दे. ७०३, ७०३ ऊरुदसर मससु, ७०३ ऊरु. ऊरिके होदवर मनस्सु देवरु वल्ल—जो (अन्य) गाँव गये हुए हैं, उनका मन भगवान ही जानता है (कह.)

७०३ ऊरु (सम्) सं.— जांघ, जंघा ।

७०३ ऊरुग (क) सं.— ग्रामीण; मूर्ख ।

७०३ ऊरुज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०३ ऊरुव (सम्) सं.— घुटना ।

७०३ ऊरुवलि (क) सं.—ग्रामों को मुफ्त में देना या दान ।

७०३ ऊरि, ७०३ ऊरिके (क) सं.—टेक, सहारा ।

७०३ ऊरिसु (क) क्रि.— लगा, टिका, झुका. नीचे रखा; सुखा, सूखने दे ।

७०३ ऊरु (क) क्रि.—हो. रह, वर्तमान हो, स्थिर रह; रख, स्थिर कर, लगा, थाम ।

७०३ ऊरु (क) क्रि.— फूट, बाहर निकल (जैसे पानी का सोता); सूख, शुष्क हो; टिके रह । वि.— टिका हुआ । —१२३ ऊरु कोलु, १२३ ऊरु गोलु (क) सं.— टेकने की लकड़ी ।

७०३ ऊरुवलिग (क) सं.— ग्राम का रक्षक, संतरी ।

७०३ ऊरु (सम्) सं.— शक्ति, बल; प्रयत्न. कौशिश; कार्तिकमास ।

७०३ ऊरुस्व (सम्) वि.— शक्तिमान, बलवान् ।

७०३ ऊरुस्वि (सम्) सं.— बलशाली, बलवान पुरुष ।

७०३ ऊरुजित (सम्) वि.— प्रसिद्ध, श्रेष्ठ, अधिक, बढ़ा हुआ, प्रचलित ।

७०३ ऊरु, ७०३ ऊरु, ७०३ ऊरु (सम्) सं.— ऊन, ऊनी वस्त्र ।

७०३ ऊरुनाभ (सम्) सं.— मकड़ी; जाल विछानेवाला । —१२३ ऊरु जाल (सम्) सं.— मकड़ी का जाल ।

७०३ ऊरुनाभि (सम्) सं.— मकड़ी ।

७०३ ऊरुयु (सम्) सं.— मेघ, मेढ़ा; मकड़ी; कंवल, ऊनी वस्त्र ।

७०३ ऊरुव (सम्) वि.— ऊपर का, उठा हुआ, उन्नत । —१२३ गत (सम्) वि.— ऊपर गया हुआ । —१२३ गति (सम्) सं.— मोक्ष, मुक्ति । —१२३ गामि (सम्) सं.— ऊपर जानेवाला, मोक्षकामी । —१२३ पुंड्र (सम्) सं.— सीधा लगाया गया तिलक । —१२३ रेत, १२३ रेतम् (सम्) सं.—

संयमी, इंद्रिय निग्रह करनेवाला, जितेंद्रिय, संन्यासी । —१२३ श्वास (सम्) सं.— दमा. एक बीमारी ।

७०३ ऊरि (सम्) सं.— लहर, तरंग; धार. प्रवाह; गति, गति की शीघ्रता ।

७०३ ऊरु ऊरिके (सम्) सं.— लहर. तरंग; अंगूठी; खेद, शोक ।

७०३ ऊरु ऊरिके (सम्) सं.— लक्ष्मण की पत्नी का नाम । —१२३ पति (सम्) सं.— लक्ष्मण ।

७०३ ऊरु (सम्) सं.— बड़वाग्नि ।

७०३ ऊरु उरुशि (सम्) सं.— ऊरु उरुशि— एक अप्सरा. देवलोक की नर्तकी ।

७०३ ऊरु (सम्) सं.— लवण-भूमि, क्षार ।

७०३ ऊरु (सम्) सं.— लवणमय भूमि, ऊसर भूमि ।

७०३ ऊरु, ७०३ ऊरु (सम्) सं.— गरमी, ग्रीष्म ऋतु, घाम; भाग ।

७०३ ऊरु उरुवलि (क) सं.— गिरगिट, छिपकली की जाति का एक प्राणी ।

७०३ ऊरु, ७०३ ऊरु, ७०३ ऊरु (सम्) सं.— कल्पना, अनुमान, अटकल; समझ, युक्ति; विचार, तर्क ।

७०३ ऊरु ऊरुकार (सम्) सं.—ऊहा करने-वाला, कल्पना या विचार करनेवाला ।

७०३ ऊरु ऊरुपोहे (सम्) सं.— तर्क-वितर्क, सोच-विचार ।

७०३ ऊरु ऊरु (सम्) वि.— कल्पित, तर्क किया हुआ ।

७०३ ऊरु ऊरु, ७०३ ऊरु ऊरु (सम्) सं.— समूह, समुदाय; सेना ।

७०३ ऊरु (क) क्रि.—पुकार, बुला; चिल्ला, गर्जन कर । सं.— चिल्लाहट, गर्जन ।

७०३ ऊरु, ७०३ ऊरु (क) सं.— जोर की चिल्लाहट, सियार की पुकार ।

७०३ ऊरु, ७०३ ऊरु, ७०३ ऊरु (क) सं.— काम, नौकरी, व्यवहार, सेवा ।

लल्लुगलतु कुलुगलतु, लल्लुगलतु कुलुगलतु
(क) सं.— सेविका, दासी ।
लल्लुगलतु कुलुगलतु (क) सं.— सेवक, नौकर ।
लल्लुगलतु कुलुगलतु (क) क्लि. = लल्लुगलतु हल्लुगलतु— गाड़,
मिट्टी में बंद कर ।

००० क

०० क—कन्नड-वर्णमाला में सातवाँ अक्षर ।
०० कक्, ०० क्कु, ०० क्के
(सम्) सं.— वेदमंत्र, ऋग्वेद ।
०० क्क (सम्) सं.— संपत्ति, ऐश्वर्य ।
०० क्क (सम्) सं.— रीछ, भालू; नक्षत्र,
तारा; एक पर्वत का नाम; राशिचक्र की
एक राशि । — ०० पति (सम्) सं.—
जांबवान; चंद्रमा । — ०० राज (सम्)
सं.— चंद्रमा; जांबवान; रीछों के राजा ।
०० क्क (सम्) सं.— ऋग्वेद. वेदों में
पहला वेद । — ०० इ (सम्) सं.— ऋग्वेद
माननेवाले, ऋग्वेद पढ़े हुए व्यक्ति ।
०० क्क (सम्) सं.— इच्छा, चाह,
अभिलाषा ।
०० क्क (सम्) वि.— सीधा, सच्चा, ईमान-
दार, सरल, सहज, अनुकूल ।
०० क्क (सम्) सं.— उधार, कर्ज, ऋण ।
०० क्क (सम्) सं.— तीन ऋण—
देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण ।
०० क्क (सम्) वि.— उधार से
मुक्त ।
०० क्क (सम्) सं.—
उधार से मुक्त करना ।
०० क्क (सम्) सं.—
पूर्व जन्म के ऋण का संबंध ।
०० क्क (सम्) सं.—
कर्जदार, वह जिसने उधार लिया हो ।
०० क्क (सम्) वि.— सरल; सच्चा, सीधा;
ठीक, उचित; पूज्य, सम्मानित । सं.—
सत्य, प्रिय वचन; दानों को चुनना या जमा

करना; सूर्य, चंद्रमा, हंस, मराल, जल,
पानी, अंधकार ।
०० क्क (सम्) सं.— गमन, मार्ग; गाली;
उन्नति ।
०० क्क (सम्) सं.— मौसम, वसंतादि
छे ऋतुएँ, छे की संख्या का संकेत; प्रकाश;
योग्य समय, निश्चित समय; रजस्, स्त्रियों
का मासिक धर्म ।
०० क्क (सम्) सं.— एक राजा
का नाम ।
०० क्क (सम्) सं.— रजस्वला ।
०० क्क (सम्) सं.— ऋतुओं में
श्रेष्ठ, वसंत ।
०० क्क (सम्) सं.— जब पहली
वार स्त्री रजस्वला होती है तब किया जाने-
वाला एक धार्मिक समारोह ।
०० क्क (सम्) सं.— रजोदर्शन
के बाद स्नान की हुई स्त्री ।
०० क्क (सम्) सं.— रजोदर्शन
के बाद का स्नान ।
०० क्क (सम्) सं.— यज्ञ-पुरोहित, यज्ञ-याग के
कार्यों में भाग लेनेवाला ।
०० क्क (सम्) वि.— बढ़ा हुआ, उन्नत ।
सं.— संपत्ति, धन-दौलत; समृद्धि, राशि ।
०० क्क (सम्) सं.— वृद्धि, समृद्धि,
अभिवृद्धि; कुशलता-क्षेम ।
०० क्क (सम्) सं.— देव, देवता, स्वर्ग
में उत्पन्न ।
०० क्क (सम्) सं.— इन्द्र ।
०० क्क (सम्) सं.— सफ़ेद पैरों का
बारहसिंगा ।
०० क्क (सम्) सं.— अनिलरुद्र ।
०० क्क (सम्) सं.— वृषभ, सौंड;
संगीत के सप्त स्वरों में से दूसरा; एक पर्वत;
आदितीयकर । — ०० क्क (सम्) सं.—
शिव । — ०० क्क (सम्) सं.—
शिव ।

०० क्क (सम्) सं.— तपस्वी, योगी,
संन्यासी, वैदिक मंत्र-द्रष्टा । — ०० क्क पुत्रि
(सम्) सं.— एक पुष्प, अजजटी (The
flower Artemisia Indica).
०० क्क (सम्) सं.— एक नदी
विशेष ।
०० क्क (सम्) सं.— खड्ग, तलवार ।
०० क्क (सम्) सं.— एक
मृगभेद, काले रंग का हिरन ।
०० क्क (सम्) सं.— एक
पर्वत विशेष ।
०० क्क (सम्) सं.— एक ऋषि
का नाम, ये विभांडक ऋषि के पुत्र थे ।
रामायण में इनका उल्लेख मिलता है ।

००० क

०० क—कन्नड-वर्णमाला का आठवाँ अक्षर ।
०० कक्कार—क अक्षर ।

२९

२९—कन्नड-वर्णमाला का नौवाँ अक्षर । इसका
उच्चारण प्रायः '०० ये या ०० य' के रूप में
होता है । कुछ संज्ञाओं, क्रियाओं और
क्रियाविशेषणों के अंत में 'ए' होता है,
उदा.— ०० आने—हाथी, ०० मने—घर,
०० तेगे—खोल; ०० मेलने—धीरे-धीरे,
०० मत्ते—पुनः । संस्कृत आकारांत स्त्रीलिंग
शब्द कन्नड में एकारांत होते हैं, उदा.—
०० माला—माले, ०० शाला—
शाले; संवोधन में '२९' का प्रयोग
होता, उदा.— २९ राम—हे राम!,
२९ ए अक—ऐ बड़ी बहन!; प्रत्यय,
जिसका अर्थ साधारणतया 'पर, से' होता है,
उदा.— ०० माले, ०० मेलने.
गायक पाड़े देव मेलने— गायक के गाने पर
प्रभु प्रसन्न हुए ।

२० एं (क) प्र.— प्रथम पुरुष ए.व. और व.व. का विधि, निषेध, भविष्यत् काल आदि का सूचक प्रत्यय, उदा.— साडेसो माडिहें—(मैंने) किया; साडेसो माडुवें—(हम) करेंगे; साडेसो मालपे—करूँगा, साडेसो माडे—नहिं करूँगा।

२० कलु एं कलु (क) सं.— डाल, शाखा।

२० गी एं गि (क) सं.— नासमझ, मूर्ख, बेवकूफ आदमी। सं.— कपट, छल, वंचना, झूठ।

२० गी एं गे (क) अ.— कैसे (आ.)।

२० ङलु एं ङलु, २० ङलु एं ङलु, २० ङलु एं ङलु (क) सं.— जूठन, जूठा, उच्छिष्ट। — ङलु ङलु = जूठा खाना। — ङलु हलु — जूठा दूध। ङलु ङलु २० ङलु २० ङलु तुप्यद आशेगे एं ङलु तिंद— धी की चाह से जूठा खाया (कहा.)। — ङलु इसु (क) क्रि.— जूठा कर, उच्छिष्ट कर।

२० ङलु एं ङलु (क) सं.— शरभ, विच्छू; आठ फुट। — ङलु परिज (क) सं.— वीरभद्र।

२० ङलु एं ङलु, २० ङलु एं ङलु (क) वि.— आठवाँ।

२० ङलु एं ङलु (क) वि.— आठ की संख्या। सं.— गर्व, अभिमान, मद।

२० ङलु एं ङलु (क) सं.— धैर्य, हिम्मत, साहस, गर्वीला मन या हृदय।

२० ङलु एं ङलु (क) सं.— ङलु ङलु— गोबर।

२० ङलु एं ङलु (क) सं.— केकड़ा, कर्कट।

२० एं (क) अ.— कि। उदा.— असु बरुतेनेंत कहेद अवनु बरुतेनेंत हेळिद—उसने कहा कि मैं आता हूँ। क.— कहते हुए, समझते हुए आदि; उदा.— ङलु ङलु २० ङलु २० ङलु बरुतेनेंत हेळिद बरुतेने— 'नहीं है' कहते हुए ही मैं उतर आता हूँ।

२० एं (क) अ.— कैसे, किस प्रकार या तरह का।

२० एं (क) अ.— कैसे, किस रीति से। क्रि.रू. = २० एं एंदि—कहा (न.लिं.)।

२० एं (क) अ.— कैसे, किस प्रकार से। वि.— कितना, किस परिमाण का।

२० एं (क) वि.— दे. २० एं.

२० एं (क) अ.— कब, किस समय। 'कि' का अर्थद्योतक, उदा.— नासु माड लार २० एं असु कहेदसु. नासु माडलारे एं अवनु हेळिदनु।

२० एं (क) क.— कहा जानेवाला।

२० एं (क) क्रि.— बोल, कह। उदा.— २० एं एं— (हम) कहें, २० एं एं— कहा जानेवाला।

२० एं (क) क्रि. सं.— कहना, बोल।

२० एं (क) क्रि.— मान, स्वीकार कर, जैसा कहते हो (या वचन देते हो) वैसा कर।

२० एं (अ.दे.) सं.— अधिकार, शक्ति, नियंत्रण, वश में रखने का उपाय।

२० एं (अ.दे.) सं.— इकरार (भरती); स्वीकृति; साक्षी।

२० एं (अ.दे.?) सं.— एकड़।

२० एं (क) वि.बो.— देख!, यह देख!

२० एं (तद्) सं.— अर्क; (तद्); अर्कवृक्ष, आकवृक्ष।

२० एं (तद्) वि.— एक (तद्)।

२० एं (तद्) वि.— अकेला, एकाकी, एकांतवासी। — २० एं (क) क्रि.— एक ओर बुलाना; स्वागत कहना।

२० एं (क) सं.— अच्छा या २० पुरुष।

२० एं (क) सं.— महानता, विस्मय।

२० एं (तद्) सं.— एकस्थल (तद्)।

२० एं (तद्) सं.— एकताल (तद्)।

२० एं (क) सं.— उपहास, हँसी, ठट्टा।

२० एं (क) क्रि.— उपहास कर-हँसी कर, मज़ाक कर।

२० एं (क) वि.— बड़ा, लंबा, ऊँचा। सं.— सूकर, जंगली सुअर।

२० एं (क) सं.— चप्पल, पाहुका, जूता।

२० एं (क) सं.— २० एं एं— अम. संदेह, शंका।

२० एं (क) सं.— हठी स्त्री, जिद्दी स्त्री।

२० एं (तद्) सं.— एक स्वर (तद्)।

२० एं (क) सं.— दे. २० एं.

२० एं (क) सं.— २० एं एं— अधिकता, आधिक्य, बहुतायत।

२० एं (तद्) सं.— एकावली (तद्)।

२० एं (क) सं.— काठ या बाँस का टुकड़ा।

२० एं (क) सं.— कपास या रुई को धुनना। — २० एं एं (क) क्रि.— धुना (प्र.)।

२० एं (क) क्रि.— बाँट, विभाग कर, पृथक

कर ; अलग हो ; कपास को धुन ; उन को साफ कर । — **अडु** आडु (क) क्रि.— धुन ।
ऊप एककु (क) क्रि.— ऊपर आ, पैरों की उंगली की नोंक पर खड़े हो ।
ऊक्के (क) सं.— श्रेष्ठता, प्रसिद्धि, अधिक बल ; तुलना ; समुदाय, समूह ।
ऊक्केक्के (क) अ.— एक के ऊपर एक, एक-एक ।
ऊगचि (क) सं.— उच्चाव, बेर, एक पौधा विशेष (Monetia barlerioides).
ऊगचिग (क) सं.— परिहास या हास्य करनेवाला, विदूषक ।
ऊगचु (क) क्रि.— उपहास कर, मजा कर, चिढ़ा ।
ऊगताल (क) सं.— **अडुअडु**.
ऊगरिके (क) सं.— छलांग, फलांग ।
ऊगरिसु (क) क्रि.— ऊपर उठा, उड़ा, फहरा, उत्तोलन कर ; कुदा ; दूर ले जा ।
ऊगरु (क) क्रि.— ऊपर जा, कूद, छलांग मार ; फहर, उड़ ; निकल जा ; नष्ट हो ।
ऊगा (क) अ.— **ऊगादिग** ऊगादिग-ऊपर-नीचे, आगे-पीछे ।
ऊगु (क) सं.— उठाना, लगाना, चढ़ाना ।
ऊगुमति दिगुमति (क) सं.— निर्यात-आयात ।
ऊगु (क) सं.— बेवकूफ, मूर्ख, असभ्य, अशिष्ट, गँवार । — **ऊतन** (क) सं.— मूर्खता, असभ्यता ।
ऊगुल (क) सं.— दे. **अडुअडु**.
ऊगु (क) सं.— लज्जा, शर्म ; अपमान, निंदा, हानि, मूर्खता ; कमी ।
ऊगुलि (क) सं.— लज्जालु ; भीरु, मूर्ख, गँवार । — **ऊतन** (क) सं.— लज्जा, शर्म, भीरुता ।
ऊचे (क) क्रि.— बाण चला, निकाल, निकाल फेंक, उलीचा (जैसे पानी को नाँद से उलीचा जाता है) ।

ऊकुतु एककु (क) कृ.— जागकर, नींद से उठकर ।
ऊकु एककु, **ऊकु** एककु, **ऊकु** एककु, **ऊकु** एककु (क) सं.— जागना, जागृति ।
ऊकु क्रि.— जाग, जागृत हो, नींद से उठ ।
ऊकुके एककुके, **ऊकुके** एककुके (क) सं.— जागना, नींद से उठना, जागृति ।
ऊकुसु एककुसु, **ऊकुसु** एककुसु (क) क्रि.— जाग, जागृत कर ।
ऊकु एककु, **ऊकु** एककु (क) क्रि.— जाग, नींद से उठ, जागृत, हो ।
ऊकु एककु (क) क्रि.— लीप, प्रोत, लगा, लेपन कर ; अलंकार कर ; अधिक हो (अक. क्रि.) । सं.— अधिकता ।
ऊकु एककु (तद्) सं.— वेधः (तत्) ; छेद, रंध ।
ऊकु एककु (क) क्रि.— हाथ को लग, छूने में आ, पर्याप्त हो, मिल । — **ऊकु** इसु (क) क्रि.— पैरों की उगली की नोंक पर खड़े होकर किसी वस्तु को छू या स्पर्श कर ।
ऊकु एककु, **ऊकु** एककु (क) सं.— लोहे का दांतोंवाला औजार जो खेत में मिट्टी को ठीक करने के काम में आता है ।
ऊकु एककु (क) वि.— दुर्गम, दुःसाध्य ।
ऊकुके एककुके (क) सं.— मिलना, पहुँच ।
ऊकुतन एककुतन (क) सं.— विघ्न, रुकावट ।
ऊकुसु एककुसु (क) क्रि.— दे. **ऊकुसु**.
ऊकु एककु (क) क्रि.— ऊपर जो वस्तु है, उसे ग्रहण कर ; पहुँच में हो, हाथ में आ, मिल । सं.— **ऊकु** एककु— धक्का, आघात, चोट ।
ऊकु एककु (क) सं.— स्थान, जगह, ज़मीन ।
ऊकु वि.— बाईं, बायाँ, वाम । — **ऊकु** ताक (क) सं.— वह मनुष्य जो बार-बार आता और जाता हो । — **ऊकुसु** ताकिसु (क) क्रि.— बार-बार आने-जाने दो । — **ऊकु** ताक (क) क्रि.— बार-बार आ-जा ।

— **ऊकु** एककु, **ऊकु** एककु (क) सं.— बाईं ओर । — **ऊकु** एककु, **ऊकु** एककु (क) सं.— जायाँ जाँघ ।
ऊकु एककु (क) सं.— बीच का स्थान, अंतर ; मध्य ; कमर ; ओछा, नीचा, कम । — **ऊकु** तर (क) सं.— मध्यम प्रकार की वस्तु ।
ऊकु एककु, **ऊकु** एककु (क) सं.— बीच की स्थिति ; बुरी स्थिति या बुरा चरित्र । — **ऊकु** मनुष्य वट्ट मनुष्य (क) सं.— मूर्ख मनुष्य । — **ऊकु** वट्ट वट्टतन (क) सं.— मूर्खता ।
ऊकु एककु (क) सं.— वह मनुष्य जो सदा बायें हाथ का ही प्रयोग करता है ।
ऊकु एककु (क) सं.— बायाँ हाथ होने की स्थिति ; कठिनाई (बातचीत करते समय इसका प्रयोग किया जाता है) ।
ऊकु एककु (क) सं.— मध्यम वयस्का स्त्री ; निरुपयोगी स्त्री ।
ऊकु एककु (क) सं.— बायें हाथ से काम करनेवाला, बुद्धिहीन ।
ऊकु एककु, **ऊकु** एककु, **ऊकु** एककु (क) सं.— ठोकर । क्रि.— ठोकर खा, गिर पड़ ।
ऊकु एककु, **ऊकु** एककु (क) सं.— विघ्न, बाधा, रुकावट, अड़चन ।
ऊकु एककु (क) सं.— गरीबी, दारिद्र्य ; सर्वनाश ।
ऊकु एककु (क) क्रि.— दुष्ट हो, ब्रेईमान हो, ठोकर खा, गिर पड़, (बोलते समय) तुतला । सं.— दुष्टता ।
ऊकु एककु (क) सं.— निरुपयोगी मनुष्य, भीरु, कापुरुष ।
ऊकु एककुसु एककुवरिसु (क) क्रि.— ठोकर खा ; तुतला ; गलती कर ।
ऊकु एककुसु एककुसु (क) सं.— ठोकर, स्वलन ।
ऊकु एककु (क) सं.— स्थान, जगह, स्थल ; बीच का स्थान, अंतर, दूरी । न्यूनता, हीनता, कमी, छोटाई । — **ऊकु** ककु, **ऊकु** ककु

(क) सं.— छोटा पुल । — ३८ कडि, १८ गडि (क) क्रि.— काट, विच्छेद कर । — ३८८ किडु, १८८ गिडु (क) सं.— स्थाना-भाव । — ३८८८ क्रेडहु, १८८८ ग्रेडहु (क) क्रि.— नीचे या ज़मीन पर फेंक या पटक । — ३८८८८ क्रेडिसु, १८८८८ ग्रेडिसु (क) क्रि.— नीचे या ज़मीन पर गिरा । ३८८—क्रेडे, १८८ ग्रेडे (क) क्रि.— नीचे या ज़मीन पर गिर । — १८८८ ग्रेय (क) सं.— बायाँ हाथ । — ३८८८८ कोडु, १८८८८ गोडु (क) क्रि.— स्थान दे. प्रस्तुत कर, सौंप । — ३८८८८ कोळ, १८८८८ गोळ (क) क्रि.— हो, संभव हो, खड़ा हो, स्थिर हो । — ३८८८८ तेरेहु, १८८८८ देरेहु (क) सं.— स्थानांतर । — १८८८८ नुडि (क) सं.— मध्यम या बीच की बात । — १८८८८ नेरे (क) सं.— स्थान की पर्याप्त । — १८८८८ मडगु (क) क्रि.— अंतर छोड़ । — १८८८८ मने (क) सं.— बीच का घर । — १८८८८ एडेयलागु (क) क्रि.— समीप या पास हो, अत्यंत निकट हो । — १८८८८ घाट, १८८८८ आट (क) सं.— घूमना, एक स्थान से दूसरे स्थान जाना, सैर । — १८८८८ योस्तु, १८८८८ ओस्तु (क) क्रि.— दबा, कुचल । — १८८८८ विडु, १८८८८ बिडु, (क) क्रि.— नियत स्थान छोड़, सीमा का उल्लंघन कर । — १८८८८ वुगु, १८८८८ पुगु (क) क्रि.— पास आ, निकट आ । — १८८८८ वेरेसु, १८८८८ वेरेसु (क) क्रि.— स्थिर हो, खड़े हो । — १८८८८ सेले (क) सं.— नदी की भीतरी गति । — १८८८८ हगलु (क) सं.— सवेरे ९ १/२ से १० १/२ बजे तक का समय । — १८८८८ होस्तु (क) सं.— सूर्यो-दय और सूर्यास्त के बीच का समय ।

७९९९ (क) सं.— अधिकता, आधिक्य, बहुतायत ।

७९९९ (तद्) सं.— इडा (तत्); अन्न, चढ़ावा, भोजन । — ७९९९ इडु, ७९९९ इक्कु, ७९९९ नीडु, ७९९९ माडु, ७९९९ हाकु (तद्)

क्रि.— भगवान को भोजन समर्पित कर, (किसी व्यक्ति को) भोजन दे ।

७९९९ (क) सं.— निरूपयोगी पुरुष, कापुरुष ।

७९९९ (क) सं.— सुंदरता, मनोहरता, मृदुता । वि.— धोखेबाज, ठग, झूठ बोलनेवाला ; मूर्ख, वेवकूफ़ ।

७९९९ (क) सं.— धोखा, ठगई, मूर्खता, वेवकूफी ।

७९९९ (क) सं.— मूर्ख स्त्री ।

७९९९ (क) क्रि.— परिहास कर, मज़ाक कर, निंदा कर, ताना मार, तिरस्कार कर ; धोखा दे ।

७९९९ (क) सं.— धोखा, झूठ ; मूर्खता, मूर्ख पुरुष या स्त्री ।

७९९९ (क) सं.— दे. ७९९९.

७९९९ (क) सं.— दे. ७९९९.

७९९९ (क) क्रि.— गिन, गणना कर ; सोच, विचार कर । सं.— आठ की संख्या का सूचक (समस्त-पदों में), उदा.— ७९९९ एण्हासिर—आठ हजार, ७९९९ एण्देसे—आठ दिशाएँ ।

७९९९ (क) सं.— एक प्रकार का हार जिसमें सोने के फूल और रत्न क्रमशः एक के बाद एक जड़े रहते हैं ।

७९९९ (क) क्रि.— गिन, गिनती कर ; सोच, विचार कर, अंदाज़ कर ।

७९९९ (क) सं.— गिनना, गिनती ; अंक, (नंबर) ; सोच, विचार ; निरीक्षण-सूचना ।

७९९९ (क) क्रि.— दे. ७९९९.

७९९९ (क) सं.— जोड़ी, युग्म, युगल ; संबंध, समानता, साम्य, एकीकरण । क्रि.— ७९९९ देणे—बुन, बना, तिरछा कर । — ७९९९ गंदु (क) सं.— धम्मिल्ल ; सिर के बालों का जूड़ा । — ७९९९ कळे, ७९९९ गळे (क)

क्रि.— खो, किसी वस्तु के संबंध को खो । — ७९९९ काणु, ७९९९ (क) क्रि वांछित को देख या पा । — ७९९९ गोण (क) सं.— दो या गर्दनवाला । — ७९९९ कोळ, ७९९९ (क) क्रि.— समान हो । — ७९९९ वर, ७९९९ वर, (क) क्रि.— समता कर । ७९९९ योड्डु (७९९९ ओड्डु) (क) क्रि. रख, उलटा रख, प्रतिकूल कर । — ७९९९ वक्कि, ७९९९ पक्कि (क) सं.— चक्रवाक । — ७९९९ वडे, ७९९९ पडे (क) क्रि.— जुड़, हो, मिल ।

७९९९ (क) सं.— दे. ७९९९.

७९९९ (क) क्रि.— दे ७९९९.

७९९९ (क) क्रि.— गिन, गिनती कर ; सोच, विचार कर ।

७९९९ (क) सं.— तेल, तैल, ७९९९ सीरे कಾಯ एण्णे सीरेकायि—तेल और शिककाई (सुह.), ७९९९ ककिदरे कळ्ळं गणे हाकिदरे कणिणे गुण—तेल आँखों के लिए गुणकारी है ; ७९९९ मनेगे वण्णे वंड—जिस घर में चोर ने चोरी की हो, उस घर (की तलाशी) के लिए तेल व्यर्थ है ; ७९९९ बण्णे वण्णे वंडाग कण्णु मुच्चिकोड—जब तक तेल आया तब तक आँखें सूँद ली (कहा.) । ७९९९ एण्णे—तिल का तेल, ७९९९ ओण्णे—वही ; ७९९९ कडळेकायि एण्णे—मूँगफली का तेल, ७९९९ हरणेणे=७९९९ कैणेणे (मै.प्र) —एरंडी का तेल, ७९९९ सीमे एण्णे मिटी का तेल ।

७९९९ (क) सं.— तिलहन ।

७९९९ (क) सं.— भूरा रंग जिसमें थोड़ा कालापन भी हो ।

ॐ कौशुकी एणकोपरिगे, ॐ गौशुकी एणकोपरिगे (क) सं.— तेल की बड़ी कड़ाही ।

ॐ तीं एणगे तेगे (क) क्रि.— तेल निकाल ।

ॐ ठाठु एणगे हाकु (क) क्रि.— तेल डाल ;

दूसरों के काम को बरवाद कर (मुह.) ।

ॐ एणवर (क) सं.— आठ व्यक्ति ।

ॐ एतन, ॐ एत (तद्) सं.— यत्न (तत्) ; प्रयत्न वश ।

ॐ एति, (तद्) सं.— यति (तत्) ।

ॐ एत (क) अ.— कहाँ, किधर, किस ओर ; कैसे । ॐ एत्तण—कहाँ, कहाँ का ॐ एत्तद—उठा हुआ ; ॐ एत्तंतु, ॐ एत्तदु—किस स्थान का, कहाँ का, किधर का ; ॐ एत्तसु—कहाँ भी, कहाँ-कहाँ ; ॐ एत्तलु, ॐ एत्तलु—हर

कहाँ, सर्वत्र ।

ॐ एत्त (क) सं.— उठाना, ऊपर करना ; निकालना, निकलना, प्रारंभ ; पहुँचना, मिलना, पाना ; पता लगाना ; (हिसाब में) धोखा, कपट, चालाकी ।

ॐ एत्तन (तद्) सं.— दे. ॐ एत्तन.

ॐ एत्तर (क) सं.— ऊँचाई, लंबाई । उदा.— ॐ एत्तर इतु बहल एत्तर—यह बहुत ऊँचा है, तंगिन मरगळु अगस्तु अडि एत्तर इरुत्तवे—नारियल के पेड़ों साठ फुट ऊँचे होते हैं ।

ॐ एत्तरु (क) सं.— दे. ॐ एत्तरु ; ॐ एत्तरु (क) सं.— दे. ॐ एत्तरु ; ॐ एत्तरु (अनुरणन शब्द) —अम ।

ॐ एत्तल (क) अ.— कहाँ, किधर, किस ओर ; कैसे ।

ॐ एत्तिके (क) सं.— उठाना ; निकालना ; पहुँचना, मिलना ; धोखा, चालाकी ।

ॐ एत्तिसु (क) क्रि.— उटवा, ऊपर उटवा ऊँचा करा, खड़ा करा, सीधा करा (प्रे.) ।

ॐ एत्तु (क) क्रि.— उठा, ऊपर उठा, ऊँचा कर, सीधा कर, खड़ाकर ; निकाल ; पा, प्राप्त कर ; निंदा कर ; चुरा ; मिला ; कह, बोल ; प्रदर्शित कर ; बड़ा हो (अक्. क्रि.), काट, चुभ, भोंक । सं.— बैल, सांड ।

ॐ एत्तुगडे (क) सं.— प्रयत्न ; उपाय ; उद्धार ।

ॐ एत्तुवलि, ॐ एत्तुवलिक्के, ॐ एत्तुविके (क) सं.— उठाना, ऊँचा करना ; ले जाना, चुराना ; मिलना, जमा करना ।

ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— ॐ एत्तुवुदु—उठाना । सं.— बैल के जैसे पढ़ना ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

अदिर, अदिरु (क) क्रि.— हिम्मत हार, साहस खो ; हृदय का कांपना ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— किसी बीमारी के कारण छाती का कमज़ोर होना ; छाती का धक् धक् करना, साहस खोना ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— हिम्मत कर ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— साहस खो, भयभीत हो ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— साहस खो, विमनस्क हो ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— दे. ॐ एत्तुवुदु. — ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— दया या करुणा उत्पन्न हो (अक्. क्रि.) ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— हिम्मत हार ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— हृदय की ज्वाला, हृदय का दर्द ; ईर्ष्या, मात्सर्य ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— गड़बड़ी, जल्द-बाज़ी, उतावलापन ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— हिम्मत हार, डर ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— अत्यधिक धैर्य या साहस, दृढ़ता ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— साहस खो ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— डरा, साहस का हरण कर ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— दे. ॐ एत्तुवुदु. — ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— डरानेवाला, भयंकर व्यक्ति ; अविश्वासपात्र ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— गर्व से बोल, घमंड कर, आत्मश्लाघा कर ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— साहस, धैर्य ; बल ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— हृदय ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— दिल की धड़कन ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— छाती पर की मणि ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— डरपोक ।— ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— छाती का दर्द, हृदय-पीड़ा ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— भावना रहित हो ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— हायिसु (क) क्रि.— छाती आगे कर, साहस कर ।— ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— छाती का धक् धक् करना (भय के कारण) ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

ॐ एत्तुवुदु (क) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न ।

होगे—जैसे मैस पर पानी बरसे (कह.)—
तुलनीय—मैस के आगे वीन बजाना (हि.)।

२२० एम्मे (क) सं. = २२० हेम्मे—गर्व,
अभिमान।

२०० एय् (क) प्र.—मध्यम पुरुष ए.व.
सामान्य भूतकालिक प्रत्यय, उदा.—
२०० एय् पेळिदेय्—(तूने) कहा. मूढियेय्
माळिदेय्—(तूने) किया, २०० एय् बंदेय्
—(तू) आया।

२०० एय् एय्त्, २०० एय्त् (क) क्रि.—
आ, निकट आ, पधार।

२०० एय्त् (क) क्रि.—जा; मर। वि. =
२०० एय्त्—पाँच।

२०० एय्त् (क) सं.—जंगली भालू।

२० एर (क) सं.—एक वृक्ष विशेष, कर्कशु;
कर्ज, उधार, ऋण; धुरी।

२० एरक (क) सं.—ढलाई।—होयि.
होयि. होय्यु (क) क्रि.—ढालना।
२० एरक होय्यु रू स० क० त्पुदु एरक होय्दरु
नरक त्पुदु—(साँचे में) ढालने पर भी नरक
से छुटकारा नहीं (कह.)।

२० एरकल (क) सं.—२० एरकलकांबोदि
एरकलकांबोदि—एक रागविशेष।

२० एरकसु (क) क्रि.—ढाल, ढलाई के
जैसे जुड़।

२० एरकिलु (क) सं.—छप्पर।

२० एरके, २० एरके (क) सं.—पंख, पर;
भुजा।

२० एरगि (क) सं.—वे कान जो दूसरों
की शिकायत सुनते हैं।

२० एरगु (क) क्रि.—झुक, नमस्कार कर,
शरण में जा; इच्छा कर; झपट, घेर;
उतर, नीचे उतर, हवा कर; ढाल; मार।

२० एरखु (क) क्रि.—फेंक, फैला, छिटका,
विकीर्ण कर।

२० एरडु (क) वि.—दो की संख्या. उभय.

युग्म. युग।—२० एरडु अनेय. २० एरडु अने—दूसरा।
२० एरडु एरडुबगे (क) क्रि.—दो रीति से
विचार कर, छल या कपट कर।—२० एरडु
आनुं—कम से कम दो।—२० एरडु मूरु-
दो-तीन।—२० एरडु वरे (२० एरडु वरे) ढाई,
बढाई।—२० एरडु होस्तु (क) सं.—प्रातः-
सायं। २० एरडु दासरीगे नंवि कुरुडु दास केट-
दो दासों पर भरोसा रखकर अंधा दास
बरबाद हुआ (कह.)। सं.—छल, कपट।

२० एरडु एरडुणिसु (क) क्रि.—दे. २० एरडु
बग.

२० एरण, २० एरणे (क) सं.—बछड़े का
गोबर; गिरगिट।

२० एरदु, २० एरदु (क) कृ.—(२०—
एरदु—सींच, ढाल) —सींच कर, ढालकर।

२० एरपु, २० एरपु (क) सं.—कर्ज,
उधार, ऋण।

२० एरल्, २० एरल्, २० एरल्, २० एरल्,
२० एरल्, (क) सं.—हवा, वायु,
अनिल।

२० एरल्, २० एरलु (क) सं.—२० एरल्
हेरल्, २० एरल् हेरल्, २० एरल् हेरलु—स्त्रियों
के बालों का जूड़ा।

२० एरल् (क) सं.—खेल, क्रीड़ा, नाच,
तमाशा।

२० एरले (क) सं.—कृष्णमृग, एक प्रकार
का हिरन।

२० एरव (क) सं.—कर्ज, उधार. याचना;
—वनमानुस।

२० एरवगे (क) सं.—कर्ज या ऋण
लेनेवाला।

२० एरवल्, २० एरवु (क) सं.—
इच्छित वस्तु; कर्ज, उधार, ऋण; कर्ज या
उधार लेने की क्रिया; दूर का संबंध; स्नेह

या प्रेम की न्यूनता, तिरस्कार; हानिप्रद
गुण, हानि। २० एरवल्, २० एरवल्

एरवी, २० एरवुकोडु (क) क्रि.—
इच्छित वस्तु दो, उधार दो। २० एरवुमुट्टु
एरवुमुट्टु (क) सं.—उधार की वस्तु।

२० एरवुमुट्टु, २० एरवुमुट्टु कोडु (क)
क्रि.—दे. २० एरवल्, २० एरवुमुट्टु, २० एरवुमुट्टु
एरवुमुट्टु वेककोळु (क) क्रि.—उधार लो।

२० एरवुमुट्टु, २० एरवुमुट्टु मुट्टु (क)
सं.—उधार देने और लेने की वस्तु।

२० एरविग (क) सं.—दे. २० एरवल्, २० एरवल्

२० एरवेट्टु (क) सं.—ऊँचा स्थान, टीला,
पहाड़ी।

२० एरल् (क) वि.—समस्त पदों में २० एरडु
का रूप २० एरल् होता है, उदा.—२० एरल्
एरल्तर—दो पंक्तियाँ, २० एरल् नालिगे—दो जिह्वाएँ, साँप।

२० एरले (क) सं.—दे. २० एरल्.

२० एरल्, (क) वि.—दो की संख्या का
सूचक शब्द। उदा. २० एरल् एरल्कर—दो
हाथ, २० एरल् एरल्कुदुरे—दो घोड़े,
२० एरल् एरल्कैदु—दो हथियार, २० एरल्
एरल्देसे—दो प्रकार।

२० एरु (क) सं.—गोबर, कूड़ा-करकट।
२० एरु, २० एरु (क) सं.—
केंचुआ (An Earthworm or Muck
worm).

२० एरे (क) सं.—भूरा रंग, मिश्रित भूरा
और काला रंग, भूधला या काला रंग;
काली मिट्टी, काली मिट्टीवाली भूमि; जूठन
या उच्छिष्ट में रहनेवाला कीड़ा; पशु-पक्षियों
का आहार (पक्षियों का आहार, साँपों का
आहार आदि) साँप की केंचुली। क्रि.—
माँग, याचना कर, उधार ले; सींच, ढाल,
प्रदान कर।

अर्यु प्रेय (क) सं.—प्रभु, स्वामी, अधिकारी;

पति, प्रियतम ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—आश्रय-स्थान,

आधार; घर ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—दे. अर्यु. प्रेम, प्रीति,

स्नेह ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—छप्पर, फूस ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय

अर्यु प्रेय (क) सं.—पंखा, पर, पक्ष, पत्र ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—झुका, मोड़ ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—झुका, मुड़, नीचे की

ओर आ, प्रणत हो, नमस्कार कर; घेर,

आक्रमण कर; प्रवेश कर, मिल । सं.—

प्रणति, नमस्कार; सरलता, सादगी ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—झुकना, नीचे की

ओर आना, प्रणिपात करना ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—दे अर्यु.

अर्यु प्रेय (क) सं.—छिटकाना,

फँकना, फैलाना, विकीर्ण करना ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—पत्नी, कामदेव की पत्नी

रति ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—एक पहाड़ी जाति ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—समग्रता, पूर्णता ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय (क) सं.—पति या स्वामी होना,

प्रभु, कर्तृ । क्रि.—किसी तरल पदार्थ को

ढाल या सींच. पानी सींच; ढाल ।

अर्यु प्रेय (क) सं. = अर्यु प्रेय

अर्यु प्रेय—अपूप, अँदरसा ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—ढलवा,

मिंचा (प्रे.) ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय (क) सं. = अर्यु प्रेय—अर्यु (तत्)

अर्यु प्रेय ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय (क) वि.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय (तद्) वि.—व्यर्थ (तत्) ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—दे. अर्यु. — अर्यु गोल

(क) क्रि.—धैर्य या साहस कर; समग्र,

जान । — अर्यु पत्तु (क) क्रि.—समग्र में

आ, मन में आ (अकृ.क्रि.) । — अर्यु

यागम (क) सं.—हृदयेश्वर, प्राणप्यारा ।

—अर्यु वलाके (क) अ.—मन का

आंदोलन, अशांति । — अर्यु वलाके (क)

सं.—मानसिक चिंता, व्यथा, पीडा, अधैर्य ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय (क) अ.—रे, अरे, हे

(संबोधन-पुरुषों के लिए); अहा! ऐ!

(आश्चर्यसूचक) ।

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय (क) अ.—री, अरी

(संबोधन-स्त्रियों के लिए) ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—उन्नाव, फेनिल, बेर ।

अर्यु प्रेय (तद्) सं.—गुला (तत्);

इलायची (हि.) ।

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय

(क) सं.—हड्डी ।

अर्यु प्रेय (क) सं. = अर्यु प्रेय—वायु,

हवा, अनिल । — अर्यु उणि (क) सं.—

सांप, हवा खानेवाला । — अर्यु वट्टे (अर्यु

वट्टे) — हवा का मार्ग, आकाश ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—स्फूर्ति दे, चैतन्य

प्रदान कर, सजग कर ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—शालमली वृक्ष, सेंमर

का पेड़ ।

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय (क) अ.—

हे!, अरे! (संबोधन ए.व.—पुरुषों के लिए) ।

अर्यु प्रेय (क) वि.वो.—अहा!, शवास!,

भला! ।

अर्यु प्रेय (क) सं. = अर्यु प्रेय—चूहा, मूषक ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—हड्डी ।

अर्यु प्रेय (क) क्रि.—हिल, हिल-डुल,

कॉप ।

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय (क) अ.—री, अरी

(संबोधन स्त्रियों के लिए) । अर्यु प्रेय—

किसी बात का स्मरण करते समय या संबोधन

में इसका प्रयोग होता है ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—पत्ता, पर्ण, पत्र; पान;

तलवार, चाकू आदि की नोंक । — अर्यु

अर्यु (क) सं.—पर्ण जैसा बाण । — अर्यु

अर्यु (क) सं.—पान-सुपारी । — अर्यु

नागर (क) सं.—पत्तों में होनेवाला छोटा

सांप । — अर्यु पति, अर्यु हनि (क) सं.—

पत्तों पर से गिरनेवाली ओस । — अर्यु मने

(क) सं.—पर्णशाला । — अर्यु वस्त्र (क)

सं.—रंगीला रुमाल ।

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय (क)

सं.—पान बेचनेवाला ।

अर्यु प्रेय (क) सं.—पान बेचने-

वाली स्त्री ।

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय

(क) अ.—हे!, अरे!, रे!

अर्यु प्रेय (क) सं.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय (क) सं.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय (क) सर्व.—सब, समग्र, पूरा,

सकल, अखिल ।

अर्यु प्रेय, अर्यु प्रेय (क) सर्व.—

सभी (पु.लिं. और स्त्री.लिं., व.व.) ।

अर्यु प्रेय (क) सर्व.—सभी (न.लिं.

व.व.) ।

अर्यु प्रेय (क) सर्व.—दे. अर्यु.

अर्यु प्रेय (क) अ.—हमेशा, सदा,

सर्वदा ।

अर्यु प्रेय (क) अ.—कहाँ, किधर, किस स्थान

या जगह पर? अर्यु प्रेय—कहाँ से,

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— दो में एक, दूसरा, अनेक में एक ।

ॐ ईं ईं एकतान (सम्) सं.— एकाग्रता, एक चित्तता ; एक लक्ष्य ; एक स्थान ; एक राग ; बार-बार एक ही राग का आलाप, एक ही बात को बार-बार कहना ।

ॐ ईं ईं एकताल, ॐ ईं ईं एकताळ (सम्) सं.— ऐक्य, समस्वर ; गान, नृत्य और वाद्य की संगति ; एक ताल का नाम । — ॐ ईं ईं रगळे (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम ।

ॐ ईं ईं एकते, ॐ ईं ईं एकत्व (सम्) सं.— ऐक्य, एकता, समता ।

ॐ ईं ईं एकत्र (सम्) अ.— एक स्थान में, एक पक्ष में, इकट्ठा ।

ॐ ईं ईं एकदंत (सम्) सं.— एक ही दाँत-वाला, गणेश ।

ॐ ईं ईं एकदल (सम्) सं.— एक लता, सुरस्वती लता ।

ॐ ईं ईं एकदा (सम्) अ.— एक बार, एक ही बार ।

ॐ ईं ईं एकदृश्, ॐ ईं ईं एकदृक् (सम्) सं.— कौआ ; शिवजी । वि.— एक आँख-वाला, अत्युत्तम दृष्टिवाला ।

ॐ ईं ईं एकदेश (सम्) सं.— एक भाग, एक टुकड़ा ।

ॐ ईं ईं एकदेशि (सम्) सं.— एक ही देश, एक ही देश या भाग से संबंधित ।

ॐ ईं ईं एकदेशीय (सम्) वि.— एक ही देश या भाग से संबंधित ।

ॐ ईं ईं एकदेह (सम्) सं.— एक ही शरीर-वाले ; मित्र, दोस्त ; बुध नक्षत्र ।

ॐ ईं ईं एकधुर, ॐ ईं ईं एकधुरीण (सम्) वि.— केवल एक काम करने योग्य, एक ही जुगु में जोते जाने योग्य ।

ॐ ईं ईं एकनाथ (सम्) सं.— जिसका एक ही प्रभु या स्वामी हो ; एक ही प्रभु या अधिकारी ।

ॐ ईं ईं एकपतिके (सम्) सं.— परम पतिव्रता ।

ॐ ईं ईं एकपत्न (सम्) सं.— एक ही पत्नी-वाला ।

ॐ ईं ईं एकपत्नि (सम्) सं.— एक ही पत्नी, सच्ची पत्नी, पतिव्रता । — ॐ ईं ईं व्रत (सम्) सं.— केवल अपनी पत्नी पर ही अनुरक्ति, आत्मसंयम । — ॐ ईं ईं व्रतस्थ (सम्) सं.— एक पत्नी-व्रत का आचरण करनेवाला ।

ॐ ईं ईं एकपत्र (सम्) वि.— एक पत्तावाला, एक पंखवाला ।

ॐ ईं ईं एकपद् (सम्) सं.— एक कदम ; वर्तमान समय, एक ही समय ।

ॐ ईं ईं एकपदि (सम्) सं.— एक मार्ग, पगडंडी, चरण पर चरण ।

ॐ ईं ईं एकपाद (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकपिंग, ॐ ईं ईं एकपिंगल (सम्) सं.— कुबेर ।

ॐ ईं ईं एकभुक्त (सम्) सं.— दिन में एक ही बार भोजन करनेवाला ।

ॐ ईं ईं एकमत (सम्) सं.— एक अभिप्राय, समान मत, ऐक्य ।

ॐ ईं ईं एकमति (सम्) सं.— एक वस्तु में लगा हुआ मन ; एकमत (मै.प्र.) ।

ॐ ईं ईं एकमत्य (सम्) सं.— दे. ॐ ईं ईं उठ.

ॐ ईं ईं एकमात्र (सम्) अ.— एक ही एक, केवल एक ; एक मात्रा (एक अक्षर के उच्चारण का समय) ।

ॐ ईं ईं एकमात्रे (सम्) सं.— एक ही गोली, जो किसी भी बीमारी को दूर करने के लिए दी जाती है ।

ॐ ईं ईं एकयष्टि (सम्) सं.— इकहरा मोतियों का हार ।

ॐ ईं ईं एकयष्टिके (सम्) सं.— दे. ॐ ईं ईं उठ.

ॐ ईं ईं एकरस (सम्) सं.— समान, एक टंग का, केवल एक रस ।

ॐ ईं ईं एकरूप, ॐ ईं ईं एकरूप (सम्) सं.— एक ही प्रकार की पोशाक, समान रंग-रंग ।

ॐ ईं ईं एकलडि (सम् ?) सं.— दे. ॐ ईं ईं उठ. ॐ ईं ईं एकलिंगदेव (सम्) सं.— कुबेर, यक्षराज ।

ॐ ईं ईं एकलोचन (सम्) सं.— कौआ । ॐ ईं ईं एकवचन (सम्) सं.— एकवचन, एक संख्यावाची ।

ॐ ईं ईं एकवाक्यते (सम्) सं.— सामंजस्य, एकता ।

ॐ ईं ईं एकशेष (सम्) सं.— एक मात्र अवशिष्ट, द्वंद्व समास का एक भेद ।

ॐ ईं ईं एकसंधिग्राहि (सम्) सं.— एक बार पढ़ने या सुनने मात्र से समझने या स्मरण रखनेवाला ।

ॐ ईं ईं एकसर (सम्) सं.— दे. ॐ ईं ईं उठ.

ॐ ईं ईं एकस्थ (सम्) वि.— मिला हुआ, एक में एक मिला हुआ ; एकाकी ।

ॐ ईं ईं एकस्थल (सम्) सं.— एक स्थान, वही स्थान ।

ॐ ईं ईं एकस्थान (सम्) सं.— दे. ॐ ईं ईं उठ.

ॐ ईं ईं एकस्थानि (सम्) वि.— एक स्थान से संबंधित या उसी स्थान से संबंधित ।

ॐ ईं ईं एकहस्त (सम्) सं.— एक हाथ ; एक ही हाथवाला ; सिद्धहस्त या अद्वितीय कलाकार ।

ॐ ईं ईं एकाएकि (हि.) अ.— सहसा, अकस्मात् ।

ॐ ईं ईं एकाकि (सम्) वि.— अकेला, एक ही । — ॐ ईं नी (सम्) वि.— अकेली (स्त्री) ।

ॐ ईं ईं एकाक्ष (सम्) वि.— एक आँखवाला ; अद्वितीय नेत्रवाला । सं.— कौआ ।

ॐ ईं ईं एकाक्षर (सम्) सं.— एक अक्षर का (शब्द), आँकार ।

ॐ ईं ईं एकाक्षि (सम्) वि.— दे. ॐ ईं ईं उठ.

ॐ ईं ईं एकाग्र (सम्) वि.— एक ओर ध्यान लगाए हुए, ध्यानावस्थित ; एक ही नोक वाला ।

७३४ एकाग्र

७३४, एकाग्र (तद्) सं.— एक ही ओर ध्यान लगाना, एक चित्तता ।
 ७३४०१ एकांग (सम्) सं.— एक व्यक्ति या भाग ; शरीर रक्षक ; बुधग्रह ; मंगलग्रह ; विष्णु ; चन्दन ।
 ७३४०११ एकांगि (सम्) सं.— एकाकी, अकेला- एक ही भादमी ।
 ७३४०१२ एकांगि (सम्) सं.— एक ही पैर वाला, लंगड़ा ।
 ७३४०१३ एकांक (सम्) सं.— एक ही अंक का नाटक, छोटी नाटिका ।
 ७३४०१४ एकादश (सम्) वि.— ग्यारह, ग्यारहवाँ ।
 ७३४०१५ एकादशी (सम्) सं.— ग्यारहवीं तिथि, एकादशी (स्मार्त और वैष्णव एकादशी के दिन उपवास-व्रत करते हैं) ।
 ७३४०१६ एकाधिपति (सम्) सं.— सम्राट, चक्रवर्ती ।
 ७३४०१७ एकाधिपत्य (सम्) सं.— साम्राज्य, संपूर्ण राज्य पर एक ही का शासन ।
 ७३४०१८ एकांत (सम्) सं.— सुनसान स्थान, गुप्त स्थान ; एक ही लक्ष्य या उद्देश्य ; रहस्य, रहस्य-पूर्ण व्यवहार । ७३४०१९ एकांत-वायितु—रहस्य का तो पर्दापाश हुआ । ७३४०२० एकांत, नाना-एकांत-इन्वारिदरे एकांत, मूवरिदरे लोकांत—दो व्यक्तियों तक रहस्य रहस्य रहता है, पर तीन व्यक्तियों तक पहुँचे तो वह लोक की बात हो जाता है (कह.) । — ७३४०२१ वास (सम्) सं.— एकांत में रहना, एकाकी रहना । — ७३४०२२ वासि (सम्) सं.— संन्यासी, तपस्वी ।
 ७३४०२३ एकायन (सम्) सं.— एक विषय पर ध्यान लगाना ; एकांत स्थान ; एकमत ।
 ७३४०२४ एकार्थ (सम्) सं.— एक ही अर्थ या प्रयोजन, एक ही लाभ ।
 ७३४०२५ एकावलि, ७३४०२६ एकावलि (सम्) सं.— इकहरा मोतियों का हार ; एक काव्यालंकार विशेष ।

७३४०२७ एकाश्रय (सम्) सं.— एक ही का आश्रय, अनन्य शरणागति ।
 ७३४०२८ एकाह (सम्) सं.— एक दिन की अवधि ।
 ७३४०२९ एकीभाव (सम्) सं.— ऐक्य, समता, संमिश्रण । — ७३४०३० एकीभविसु (सम्) क्रि.— मिल, सम्मिलित हो, एक हो ।
 ७३४०३१ एकु (क) सं.— हिचकी ।
 ७३४०३२ एके (क) अ.— ७३४०३३ याके—क्यों, किसलिए ?
 ७३४०३४ एकोक्ति (सम्) सं.— एक ही शब्द, एक ही कथन, एक ही संख्या- सच्चाई ।
 ७३४०३५ एकोदर (सम्) सं.— एक ही गर्भ से उत्पन्न, भाई । — ७३४०३६ वहन ।
 ७३४०३७ एगं (क) अ.— हमेशा, सदा ; निश्चित रूप से, सचमुच ।
 ७३४०३८ एगळ्, ७३४०३९ एगळु, ७३४०४० एगळुं (क) अ.— सदा, हमेशा ।
 ७३४०४१ एगु (क) क्रि.— हिचकी ले ; संभव कर, अपना ।
 ७३४०४२ एगुबुटु (क) सं.— किंकर्तव्यविमूढता ।
 ७३४०४३ एगोळ् (क) क्रि.— मान, स्वीकार कर ।
 ७३४०४४ एट्ट (क) सं.— चोट, आघात, प्रहार, धाव । वि.— कितना, किस परिमाण का । — ७३४०४५ गार (क) सं.— मारनेवाला, ठीक प्रहार या गोली ।
 ७३४०४६ एड (सम्) सं.— बहरा ; एक प्रकार की भेड़ ।
 ७३४०४७ एडक (सम्) सं.— एक प्रकार की भेड़ ; जंगली बकरा ।
 ७३४०४८ एडके (सम्) सं.— भेड़ी ।
 ७३४०४९ एडमूक, (सम्) सं.— बहरा और गूंगा ; मूर्ख ।
 ७३४०५० एडि (क) सं.— केकड़ा ।
 ७३४०५१ एडि (क) सं.— ७३४०५२ हेडि—डरपोक, भीरु ।

७३४०५३ एडिसु, ७३४०५४ एडिसु (क) क्रि.— परिहास कर. मजाक कर ; दुर्वचन कह, गाली दे ।
 ७३४०५५ एण्, ७३४०५६ एणु (क) सं.— नोंक, सिरा-अग्र, छोर, मोड़ ।
 ७३४०५७ एण. (सम्) सं.— ७३४०५८ एणक—लाल हिरन । — ७३४०५९ धर (सम्) सं.— चंद्रमा । — ७३४०६० धरधर (सम्) सं.— चंद्रशेखर । — ७३४०६१ रिपु (सम्) सं.— बाध ; सिंह, शेर । — ७३४०६२ लांछन (सम्) सं.— चंद्र, शिवजी । — ७३४०६३ वाहन (सम्) सं.— वायुदेव ।
 ७३४०६४ एणाधि (सम्) सं.— मृगाधि, हिरन की आँख के समान आँखवाली ।
 ७३४०६५ एणांक (सम्) सं.— चंद्रमा ।
 ७३४०६६ एणाजिन (सम्) सं.— मृगचर्म, काले हिरन का चमड़ा ।
 ७३४०६७ एणाधिनाथ, ७३४०६८ एणायक (सम्) सं.— शिवजी ।
 ७३४०६९ एणि (सम्) सं.— काली हिरनी ।
 ७३४०७० एणि (क) सं.— चढ़ने की सीढ़ी, निसेनी ।
 ७३४०७१ एणवार (क) सं.— साथी, मित्र ।
 ७३४०७२ एत (क) सं.— ७३४०७३ यात—उठना, चढ़ाव ; कुएँ से पानी खींचने का साधन (एक लंबी बाँस की लकड़ी के अंत में बाल्टी बांधकर खींचा जाता है) ; बाँस का मूलल जिससे धान कूटा जाता है । — ७३४०७४ कोलु (क) सं.— बाँस की लकड़ी जिसमें बाल्टी बांधी जाती है ।
 ७३४०७५ एतके (क) अ.— क्यों, किसलिए, किस हेतु ।
 ७३४०७६ एतत्, ७३४०७७ एतद् (सम्) सर्व.— यह ।
 ७३४०७८ एतदेशीय (सम्) वि.— एक ही देश से संबंधित ।
 ७३४०७९ एतर्, ७३४०८० एतु (क) सर्व.— क्या, किसका, कौन-सा ।
 ७३४०८१ एतर्हि (सम्) अ.— अब, इस समय, संप्रति ।

०७७८७९० एतादृश (सम्) वि.— इस प्रकार का, ऐसा, इस रीति का ।

०७७८७९० एतावत् (सम्) वि.— इतना, इतना बड़ा, इस परिमाण का ।

०७७८७९० एतु (क) क्रि.— प्रयास कर, प्रयत्न कर, साहस कर ; हाँफ, दीर्घ उच्छ्वास ले । सं.— जंगली भालू ।

०७७८७९० एध, ०७७८७९० एधस् (सम्) सं.— इंधन, काष्ठ, जलने की लकड़ी ।

०७७८७९० एधे (सम्) सं.— समृद्धि, आनंद, हर्ष ।
०७७८७९० एन्, ०७७८७९० एनु (क) सर्व.— क्या, क्यों, कैसे, कौन, कौन-सा ।

०७७८७९० एनस् (सम्) सं.— पाप, अपराध, दोष ।

०७७८७९० एनानुं (क) अ.— कुछ भी हो ।

०७७८७९० एनि (क) सर्व.— दे. ०७७८७९० (मै.प्र.) ।

०७७८७९० एनिके (क) सर्व.— कुछ, कोई । सं.— कुछ होने का भाव ।

०७७८७९० एनु (क) सर्व.— दे. ०७७८७९० ।

०७७८७९० एनु (क) प्र.— संदिग्ध वर्तमान कालिक

प्रथम पुरुष ए. व. प्रत्यय ; उदा.—
०७७८७९० एनु कोट्टेनु—देता हूँगा (शायद देता हूँ),
०७७८७९० एनु होट्टेनु—जाता हूँगा (शायद जाता हूँ),
०७७८७९० एनु माट्टेनु—करता हूँगा (शायद करता हूँ) ।

०७७८७९० एने (क) प्र.— वर्तमान कालिक प्रथम पुरुष ए. व. प्रत्यय ; उदा.—
०७७८७९० एने ओट्टेने—पढ़ता हूँ, ०७७८७९० एने बरेयुत्तेने—लिखता हूँ ।

०७७८७९० एपि (क) सं.— महौगनी वृक्ष (Shorea robusta) ।

०७७८७९० एवंडं (क) सं.— क्या हिसाब, क्या पैसा, क्या संपत्ति ।

०७७८७९० एवंडु (क) सं.— कैसी दिक्कित, कैसा अपमान ।

०७७८७९० एव्रज (क) सं.— इंद्रगोप, वीरबहूटी ।

०७७८७९० एव्रासि (क) सं.— ०७७८७९० एव्रासि—
दे. ०७७८७९० ।

०७७८७९० एय् (क) क्रि.— ढाल, लगा, फेंक ; ढाल ।

०७७८७९० एय् (क) अ.— छोटे या नीच जाति के लोगों के लिए प्रयुक्त संबोधन ।

०७७८७९० एर, ०७७८७९० एरु (क) क्रि.— चढ़, उठ, ऊपर पहुँच, अधिक हो, आरोहण कर ।

०७७८७९० एरुका, ०७७८७९० एरुके (सम्) सं.— तृण विशेष, एक प्रकार की घास ।

०७७८७९० एरंड (सम्) सं.— एरंडी का पौधा ।

०७७८७९० एरुल (क) सं.— पीड़ा, आसन, तख्ता ।

०७७८७९० एरुलिकु (क) क्रि.— आसन लगा, आसन दे ।

०७७८७९० एराट (क) सं.— चढ़ना, सवारी करना ; चढ़ाई ; रोप ; क्रोध ।

०७७८७९० एराळि (क) सं.— अच्छा घुड़सवार ; चढ़ाई करनेवाला, आक्रमणकारी ।

०७७८७९० एरि (क) सं.— तालाब या सरोवर के पास ऊँचा स्थान, ऊँची जगह, तटाक बंधन ।

०७७८७९० एरिरि (क) क्रि.— घायल कर, प्रहार कर, चुभ । सं.— नदी का किनारा ।

०७७८७९० एरिहोगु (क) क्रि.— चढ़ आ, आक्रमण कर ।

०७७८७९० एरिळित (क) सं.— चढ़ाव-उतार, उवार-भाटा, उन्नति-अवनति ।

०७७८७९० एरु (क) सं.— गोबर ; हल ।— ०७७८७९० कंदाय—हल का कर ।

०७७८७९० एरुं (क) वि.— चढ़नेवाला (वाली) ।
— ०७७८७९० बळिळ—चढ़नेवाली लता ।

०७७८७९० एरु (क) सं.— घाव । क्रि.— हो, उपयुक्त हो, लग, संभव हो, सक, समर्थ हो ; सामना कर, विरोध कर, चढ़ाई कर ; चुन, चयन कर, उठा ले, बटोर, अलग कर ।

०७७८७९० एरुळि (क) सं.— दे. ०७७८७९० ।

०७७८७९० एरि (क) सं.— चढ़नेवाला ।

०७७८७९० एरुके (क) सं.— चढ़ना, चढ़ने की क्रिया, सवारी करना, अधिक होना, आधिक्य ।

०७७८७९० एरिसु, ०७७८७९० एरिसु (क) क्रि.— उठा, ऊँचा कर, चढ़ा, फहरा, आरोहित कर ।
०७७८७९० एरिसि भारतद् वावुट—भारत के झंडे को (ऊँचा) फहराइए ।

०७७८७९० एरु (क) क्रि.— उठ, ऊँचा उठ, ऊपर

पहुँच, चढ़, सवार हो, आरोहण कर ; अधिक हो । सं.— चढ़ना, ऊँची भूमि, टीला ; घाव, प्रहार, दर्द, पीड़ा ।

०७७८७९० एरुत (क) सं.— दे. ०७७८७९० ।

०७७८७९० एरुविके (क) सं.— दे. ०७७८७९० ।

०७७८७९० एरुडु (क) क्रि.— उत्पन्न हो, व्यवस्थित हो ।

०७७८७९० एरुडु (क) सं. = ०७७८७९० एरुडु, ०७७८७९० एरुडु—प्रबंध, इंतजाम ।

०७७८७९० एरुडु (क) सं.— ककड़ी ; खरबूजा ।

०७७८७९० एरुस (क) सं.— युद्ध की तैयारी, समर का प्रबंध ।

०७७८७९० एरुविक (तद् ?) सं.— ०७७८७९० एरुविक, ०७७८७९० एरुविक—इलायची, एला (तद्) ।

०७७८७९० एला, ०७७८७९० एले (सम्) सं.— इलायची ।

०७७८७९० एलावालुक (सम्) सं.— कैंधे की छाल, सुगंध द्रव्य विशेष ।

०७७८७९० एलापत्र (सम्) सं.— सर्पराज ।

०७७८७९० एलां (क) सं.— नीलाम ।

०७७८७९० एलु (क) क्रि.— लटक, हिल, हिल-डुल ।

०७७८७९० एव (क) सं.— घृणा, तिरस्कार, उबाई, विरक्ति ।

०७७८७९० एवं (सम्) अ.— इस प्रकार ; और ; सचमुच ; भी ।

०७७८७९० एवागलू (क) अ.— ०७७८७९० एवागलू यावागलू—हमेशा ।

०७७८७९० एवु (क) प्र.— ०७७८७९० एवु का बहुवचन ; उदा.— ०७७८७९० एवु बंदेवु—आते होंगे, ०७७८७९० एवु इहेवु—रहते होंगे । (दे. ०७७८७९०) ।

०७७८७९० एवे (क) प्र.— ०७७८७९० एवे का ब.व. ; उदा.— ०७७८७९० एवे बरुत्तेवे—आते हैं, ०७७८७९० एवे ओट्टेवे—पढ़ते हैं । (दे. ०७७८७९०) ।

०७७८७९० एवे (क) सं. = ०७७८७९० एवे—कमठ, कर्म, कछुआ ।

०७७८७९० एवण (सम्) सं.— ०७७८७९० एवण—इच्छा, अस्मिमान, चाह ; लोहे का बाण ;

ॐ ऐ

अन्वेषण, खोज । — उ० त्रय — स्त्री, पुत्र और संपत्ति की लालसा ।

बन्धुत्वं एसाह (क) क्रि. — फेंक, डाल, चला ।

बन्धु एसु (क) क्रि. — फेंक, बाण चला । वि. — कितना, किस परिमाण का ।

बन्धु एहस् (क) सं. — क्रोध, रोष ; बुराई ।

बन्धु एलिद् (क) सं. — निंदा, निरस्कार ; मजाक, परिहास ; गाली, कोसना ; परिहास या निंदा करनेवाला ।

बन्धु एलिसु (क) क्रि. — निरस्कार कर, निंदा कर ; हटा, फेंक, दूर कर, छिपा, ढँक ।

बन्धु एल् (क) क्रि. — उठ, खड़े हो, जागृत हो, तैयार हो (बन्धु एल् — आधुनिक कन्नड) ।

बन्धु एलिगे, [बन्धु एलिगे] (क) सं. — उठना ; उन्नति, वृद्धि, प्रगति, अधिकता, महानता, श्रेष्ठता, कीर्ति ; दुष्टता ।

बन्धु एलिसु [बन्धु एलिसु] (क) क्रि. — उठा, जगा ।

बन्धु एल् [बन्धु एल्] (क) क्रि. — उठ, खड़े हो, जागृत हो, तैयार हो । सात की संख्या का सूचक ; उदा. — बन्धु बन्धु एल् दिन — सात दिन, बन्धु बन्धु एल् नूरु — सात नौ, बन्धु बन्धु एल् नूरु — चौदह (७ × २) सं. = बन्धु हेल् — कह, बोल, बना (ग्रा.) ।

बन्धु बन्धु एल्बिके [बन्धु बन्धु एल्बिके] (क) सं. — उठना, जागना, तैयार होना ।

बन्धु बन्धु एल्ह (क) सं. — दे. बन्धु बन्धु.

बन्धु बन्धु एल्गे [बन्धु बन्धु एल्गे] (क) सं. — दे. बन्धु बन्धु.

बन्धु बन्धु एल्बर् [बन्धु बन्धु एल्बर्, बन्धु बन्धु एल्बर्], बन्धु बन्धु एल्बर्, [बन्धु बन्धु एल्बर्] सं. — सात जन, सात लोग ।

बन्धु बन्धु एल्बिके [बन्धु बन्धु एल्बिके] (क) सं. — दे. बन्धु बन्धु.

बन्धु ऐ — कन्नड वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर । माधारणतया इसका उच्चारण ए००० अक्षर, ए००० अक्षि के जैसे होता है । वि. बो. = ए००० अक्षि — ऐ ! हे ! (संबोधन में) ।

बन्धु ऐगुद (सम्) सं. — ('इंगुद' से) — इंगुद या हिंगोट का फल ।

बन्धु ऐदव (सम्) वि. — इंदु या चंद्रमा से संबंधित । — इंदु कले (सम्) सं. — चंद्रकला ; मृगशिरा नक्षत्र ।

बन्धु ऐद, बन्धु ऐदा (अ.दे.) अ. — बाइंदा, आगे ।

बन्धु ऐद्र (सम्) वि. — इंद्र से संबंधित ; जेषा नक्षत्र । — ऐद्र जाल (सम्) सं. — जादू, टोना । — ऐद्र जालिक (सम्) सं. — जादूगर । — ऐद्र धनु (सम्) सं. — इंद्रधनुष । — ऐद्र शर (सम्) सं. — इंद्रास्त्र ।

बन्धु ऐद्रलुसिक (सम्) सं. — गंजा सिरवाला आदमी ।

बन्धु ऐद्रि (सम्) सं. — इंद्र का पुत्र — जयंत, वाली, अर्जुन ; कौआ ; पूर्व दिशा ।

बन्धु ऐद्रिय, बन्धु ऐद्रियक (सम्) वि. — इंद्रियों से संबंधित ।

बन्धु ऐकमत्त (सम्) सं. — एकमत, एकता, एक अभिप्राय ।

बन्धु ऐकागारिक (सम्) सं. — चोर, लुटेरा ।

बन्धु ऐकाग्र्य (सम्) सं. — एकाग्रता, एकचित्तता, स्थिरता ।

बन्धु ऐकांतिक (सम्) वि. — एकांत से संबंधित, एक ही एक, केवल एक ; एक पत्नी व्रताचरण करनेवाला ।

बन्धु ऐकिल् (क) सं. — हिम, तुषार ; जाड़ा, सर्दी । — ऐकिल् बेट (क) सं. — हिमपर्वत, हिमाद्रि ।

बन्धु ऐक्य (सम्) सं. — एकता, लीनता ; एकमत, अभेद, एकरूपता । — ऐक्य भाव

— एक होना, मिल जाना । — ऐक्य वर्ण मिला हुआ रंग ।

बन्धु ऐक्षव (सम्) वि. — इक्षु या ईख से संबंधित ; शकर, गुड़ ।

बन्धु ऐक्षवाक (सम्) वि. — इक्ष्वाकु वंश का ।

बन्धु ऐगण्य (क) सं. — पाँच बाणवाला, कामदेव ।

बन्धु ऐगल, बन्धु ऐगोरल (तद्) सं. — शिव ।

बन्धु ऐगलु (क) सं. — अध्यापक, गुरु ।

बन्धु ऐगोल (क) सं. — कामदेव ।

बन्धु ऐच्छिक (सम्) वि. — अपनी इच्छा का ।

बन्धु ऐडविड (सम्) सं. = बन्धु ऐलविल — कुबेर ।

बन्धु ऐडक (सम्) सं. — असुंदर दीवार ।

बन्धु ऐण (सम्) वि. — काले हिरन से संबंधित ।

बन्धु ऐण्य (सम्) वि. — काली हिरन से संबंधित ।

बन्धु ऐतर्, बन्धु ऐतरु (क) क्रि. — आ, पहुंच, पधार ।

बन्धु ऐतिह्य (सम्) सं. — परंपरागत वृत्तांत, दंतकथा, किंवदंती ।

बन्धु ऐदने (क) वि. — पाँचवाँ ।

बन्धु ऐदु (क) वि. — पाँच की संख्या । क्रि. — जा ; पा ।

बन्धु ऐदे (क) सं. — सुहागिन, सुमंगली, सधवा । — ऐदे तन (क) सं. — सौभाग्य, सौमांगल्य, सुहागिन होना ।

बन्धु ऐना (अ.दे.) सं. — आईना (फ़ारसी), दर्पण ।

बन्धु ऐनु (अ.दे.) वि. — ऐन (हिं.) ; मुख्य, योग्य, उचित ।

बन्धु ऐनुताळि (क) सं. — सुहाग, मांगल्य ।

बन्धु ऐनोरु (क) सं. — मालिक, स्वामी, हुज़ूर (ग्रा.) ।

७५० ऐवु (अ.दे.) सं.— ऐव (अरबी) ; दोषः
 अवगुण, न्यूनता, कमी ।
 ७५०१ ऐमोग (क) सं.— शिव ।
 ७५००७ ऐयव (क) सं.— कामदेव ।
 ७००० ऐरण (क) सं.— सैधव, लवण ।
 ७०००० ऐरेदाळि, ७००००० ऐरेदाळि (क)
 सं.— मांगल्य, सुहाग ।
 ७००००० ऐरावण (सम्) सं.— इंद्र का हाथी,
 ऐरावत. पूर्व दिशा का गज ; सर्पों का एक
 प्रधान पुरुष ; एक राक्षस का नाम ।
 ७००००० ऐरावत (सम्) सं.— इंद्र का हाथी ।
 ७०००००० ऐरावति (सम्) सं.— इंद्र की
 हथिनी ; विजली, मेघ ; संतरे का पेड़ ;
 इरावती नदी से संबंधित ।
 ७०००००० ऐरीय (सम्) सं.— शराव, मद्य ।
 ७०० ऐल (सम्) सं.— इला और बुध से
 उत्पन्न पुरुरव ।
 ७००००० ऐलेय (सम्) सं.— सुगंध द्रव्य
 विशेष ।
 ७०००० ऐवजि (अ.दे.) अ.— एवज (अरबी) ;
 के बदले, के स्थान पर ।
 ७००००० ऐवजु (अ.दे.) सं.— संपत्ति, धन,
 ऐश्वर्य । — ७०००००० दार—धनवान, धनी ।
 ७०००००० ऐवायु (क) सं.— सिंह, शेर ।
 ७००००००० ऐश्वर्य (सम्) सं.— संपत्ति, धन-
 दौलत, विभूति । — ७००००००० वंत (सम्)
 सं.— धनवान ।
 ७०००० ऐसले, ७००० ऐसे (क) अ.— नहीं क्या ?
 ऐसा नहीं क्या ? और क्या ?
 ७०००० ऐसिर (तद्) सं.— ऐश्वर्य (तत्),
 संपत्ति ।
 ७०००० ऐहिक (सम्) वि.— इह या इस लोक
 से संबंधित, लौकिक, भौतिक ।

७ ओ

७ ओ—कन्नड वर्णमाला का बारहवाँ अक्षर ।
 प्र.—क्रियाओं के अंत में प्रश्न का सूचक ;
 उदा.— ७०००००० बंदनो—आया क्या ?
 ७००००००० माडिदनी—किया क्या ? ; विधि

या आज्ञार्थ में ; उदा.— ७०००००० वारो—
 आ रे !, ७०००००० माडो—कर रे ! ; संबोधन
 में भी इसका प्रयोग होता है, उदा.—
 ७०००००० ओ रामि—हे रामि !, ७०००००००
 ओ केंपेगौड !—हे केंपेगौड !
 ७००० ओंकि (क) सं.— ७०००० वंकि—कुलावा.
 काँटा (Hook) ; एक सोने का आभूषण
 विशेष जो टेढ़ा होता है ।
 ७०००० ओंगु (क) सं.— स्तन का अग्रभाग,
 चूचक ।
 ७००० ओंगे (क) सं.— ७०००० होंगे—तिनिश,
 नेमि, रथद्रु (वृक्ष विशेष) ।
 ७००० ओंति (क) वि.— एक, केवल, एक मात्र,
 अकेला । — ७०००० (कण्णु) गणणु (कण्णु)
 — एक आँख । ७००००० (क्य्य) ग्य्य (क्य्य)
 — एक हाथवाला मनुष्य ।
 ७००० ओंति (क) सं.— एक प्रकार के बड़े
 कर्णकुंडल, कानों की बाली ।
 ७००० ओंति, ७००० ओंटे (तद्) सं.— उष्ट्र
 (तत्) ; ऊँट ।
 ७००० ओंतिग (क) सं.— अकेला या एकाकी
 मनुष्य । — ७००० तन (क) सं.— अकेलापन,
 एकाकी रहने का भाव, तनहाई । ७००००००
 ओंतिगार, (गार) गार—अकेला आदमी
 (मे.प्र.) । ७०००००० ओंतिगिति—अकेली
 स्त्री ।
 ७०००० ओंतिगितन (क) सं.— दे. ७०००००००.
 ७००० ओंटु (क) क्रि.— लग (तवीयत को
 लगाना), स्वास्थ्यकर हो ।
 ७००० ओंटे (तद्) सं.— उष्ट्र (तत्), ऊँट ।
 ७०००० ओंतिगार (७००००० ओंतिगार)
 (क) सं.— दे. ७०००००००.
 ७०० ओंडि (क) सं.— किनारा, तट ।
 ७००० ओंडु (क) सं.— कीचड़, पंक; नदी
 तालाब की मिट्टी ; कीचड़पन ।

७००० ओंतु (क) सं.— वारी (turn), चक्र,
 समय ; हिस्सा. भाग ।
 ७००० ओंदरि (क) सं.— ७००० ओंद्रि,
 ७०००० वंदरि. ७०००० वंदरे, ७००० वंद्रे—
 चलनी, छलनी ।
 ७००० ओंदिके, ७००० ओंदिगे (क) सं.—
 मिलना, मेल, संयोग, संयोजन ।
 ७००० ओंदिगळु (क) सं.— गृहिणी, कुटुंबिनी
 (साधारणतया) 'सूक्ष्म ७०००० मकळ
 ओंदिगळु—बाल-बच्चोंवाली स्त्री' का प्रयोग
 होता है ।
 ७००० ओंदिसु (क) क्रि.— एक कर, मिला,
 जोड़, लगा, संयुक्त कर । (तद्) क्रि.—
 नमस्कार कर ।
 ७००० ओंदु (क) सं.— एक की संख्या ।
 ७००० ओंदने, ७०००० ओंदनेय—पहला,
 ७००० ओंदेडे—एक स्थान पर, ७००००
 ओंदरे—डेढ़, एक या आधा, एकाध, कई
 (अनिश्चित) ।
 ७००० ओंदुगे (तद्) सं.— अंदुक (तत्) ;
 पायल, मंजीर, नूपुर ।
 ७००० ओंबत्तु (क) वि.— नौ की संख्या ।
 ७००० ओंबत्तनेय—नौवाँ । ७००००
 ओंबत्तनूरु—नौ सौ । ७००००
 ओंबत्तु साविर—नौ हजार ।
 ७००० ओंयि (क) सं.— भैंसों के चिलाने
 की ध्वनि ; मार खाने पर बच्चे इस ध्वनि के
 द्वारा अपनी बेचैनी प्रकट करते हैं ।
 ७०० ओक् (क) वि.— एक की संख्या का सूचक
 (समस्त पदों में) ; उदा.— ७००० ओक्कट्ट
 — एक होना, एकता, ऐक्य, एकमत ।
 ७००० ओक्कडे—एक तरफ या जगह ।
 ७००० ओक्कण—एक आँखवाला आदमी ।
 ७००० ओक्केय—एक हाथ । ७००००
 ओक्केय्य—एक हाथवाला मनुष्य । ७०००००
 ओक्केंबु—एक शाखा या डाल ।

७०६ ओक्कण (तद्) सं.—उत्कृणः (तत्) ; खटमल, जुआँ, लीख, चीलहर ।

७०६ ओक्कणिके (क) सं.— भूसे से अन्न अलग करने की क्रिया, धुनना या पीटना ।

७०६ ओक्कणे (तद्) सं.— व्याख्यान (तत्) ; लिखने की रीति, कथन, वचन की रीति या हंग । — ७०७ इसु (तद्) क्रि.— कह, बयान कर ।

७०६ ओक्कतन (क) सं.— मित्रता, दोस्त ।

७०६ ओक्कर (तद्) वि.— वक्र (तत्) ; टेढ़ा ।

७०६ ओक्करणे (तद्) सं.— पुष्करणी (तत्) ; तालाब, सरोवर ।

७०६ ओक्करिसु (क) क्रि.— वमन कर, उलटी कर ; थूक ।

७०६ ओक्करु (क) क्रि.— छलांग मार, कूद ।

७०६ ओक्कल्, ७०६ ओक्किल् (क) सं.— भूसे से अन्न को अलगाने की क्रिया । ७०६ ओक्कलायितु— धुनने या पीटने की क्रिया समास हो गई । ७०६ ओक्कलिकु— धुन या पीट ; नष्ट कर, तंग कर, मार डाल ।

७०६ ओक्कल्, ७०६ ओक्कलु (क) सं.— रहना, रहने का स्थान, घर, मकान ; भाडे के घर में रहना, भाडे के घर में रहनेवाला ; काश्तकार, अपने मालिक की खेती करनेवाला, किसान, सरकार की भूमि की कृषि करनेवाला ; प्रजा । — ७०७ माडु (क) क्रि.— किराये पर रह ; दूसरे की खेती किराये पर कर, काश्तकारी कर ।

७०६ ओक्कल (क) सं.— किसान, कृषक ।

७०६ ओक्कलित्ति (क) सं.— किसान की स्त्री, कृषक-महिला ।

७०६ ओक्कलतन (क) सं.— कृषि, खेती-वाड़ी, किसानी ।

७०६ ओक्कलिंग (क) सं.— कृषक, किसान, शूद्र ।

७०६ ओक्कलित्ति (क) सं.— दे. ७०६ ओक्कलित्ति ।

७०६ ओक्कलित्ति (क) सं.— दे. ७०६ ओक्कलित्ति ।

७०६ ओक्कलुगळु (क) सं.— ७०६ ओक्कलु (दे. ७०६) का व. व.— किरायेदार, आसामी ।

७०६ ओक्कलुमग (क) सं.— कृषक, किसान ।

७०६ ओक्कलुमने (क) सं.— वह घर, जो रहने योग्य हो या जिसमें कोई रहते हो ; खलिहान के पास का किसान का घर (द.क.) ।

७०६ ओक्कलिकु, ७०६ ओक्कलिकु (क) क्रि.— फेंक, पटक, मार, पीट, नष्ट कर, खराब कर ।

७०६ ओक्कालु (क) सं.— एक पाद, एक चौथाई ।

७०६ ओक्किके (क) सं.— अनाज को ठीक करना या अलगाना ।

७०६ ओक्किल्ल, ७०६ ओक्किल्लु (क) सं.— दे. ७०६ ।

७०६ ओक्कुकु (क) कृ.— (७०७ उगु— डाल धातु से)— डालकर । क्रि.— अनाज को भूसे से अलगाना, कंकड़ आदि निकालकर अनाज ठीक करना, धुनना, पीटना । — ७०७ गोलु [७०७ कोलु] (क) सं.— अनाज को भूसे से अलग करने के लिए, उसे पीटने का लट्टा ।

७०६ ओक्कुकु (क) सं.— शकुन, सगुन ।

७०६ ओक्कुकुडित्ति (क) सं.— जल का वह परिमाण, जो एक बार पिया जा सकता हो, अंजलि भर ।

७०६ ओक्कुकुद (क) सं.— जूठा, जूठन, खाने के बाद बचा अंश, प्रसाद ।

७०६ ओक्कुकुलिसु (क) क्रि.— डकार ले, संतोष की सांस ले ।

७०६ ओक्कुरे (तद्) सं.— पुष्कर (तत्), सरोवर, तालाब ।

७०६ ओक्कुरेडु (क) क्रि.— फेंक, दूर कर, हटा, डाल ।

७०६ ओगटु (क) सं.— पहेली, प्रहेलिका, बुझौबल ।

७०६ ओगट्टे [७०६ ओगट्टे] (क) सं.— दे. ७०६ ।

७०६ ओगडिके (क) सं.— वमन, ओकाई ।

७०६ ओगडिसु (क) क्रि.— वमन कर, थूक । ७०६ ओगडु (क) क्रि.— दे. ७०६ ।

७०६ ओगडु (क) क्रि.— वमन, ओकाई ।

७०६ ओगत, ७०६ ओगेत (क) सं.— धुलाई, धोने की क्रिया ; फेंकना, फेंकने की क्रिया ।

७०६ ओगतन (क) सं.— पति-पत्नी का सुंदर पारिवारिक जीवन और घर-बार का अच्छा प्रबंध ; अच्छा पारिवारिक जीवन । — ७०७ माडु (क) क्रि.— अच्छी तरह पारिवारिक जीवन चला (ने.प्र.) ।

७०६ ओगनि (क) सं.— ७०७ उगुनि, गैरठ गोणि— गुडफल, पीलू का पेड़ ।

७०६ ओगर, ७०६ ओगरु (क) वि.— कडुआ, कसैला, अरुचिकर, अमधुर, नमकीन ।

७०६ ओगरे (क) सं.— समता, उपयुक्तता, औचित्य, ठीक-ठीक ।

७०६ ओगविके (क) सं.— धोना, धुलाई ।

७०६ ओगसु (क) क्रि.— धुला ; फेंका, दूर हटवा (प्रे.) ।

७०६ ओगि (क) क्रि.— धो, साफ कर ; फेंक, हटा ।

७०६ ओगिसु (क) क्रि.— ७०७ ओगसु, ७०७ ओगसु— दे. ७०७ ।

७०६ ओगु (क) क्रि.— फैला, डाल ; उमड़ ; उतार ; निकल ; जा, प्रवेश कर । सं.— उमड़, उमंग, आधिक्य । — ७०७ मिगे (अनुरणन शब्द)— बहुत, अधिक ।

७० ओगे (क) क्रि.—उत्पन्न हो, निकल, बाहर आ, दिखाई पड़; कपड़े धो, साफ़ कर; दूर हटा, फेंक; मार, पीट, पटक।

७० ओगट्टु (क) सं.—दे. ७० ओगट्टु (७० में)।

७० ओगगर (क) सं.—राशि, ढेर; समूह, समुदाय, गिरोह, टोली।

७० ओगगरे (क) सं.—छौंक। — ७० ओगगरे (क) क्रि.—छौंक डाल; किसी बात को मिर्च-मसाला मिलाकर या बढ़ा-चढ़ाकर कह।

७० ओगगरेसु (क) क्रि.—छौंक डाल; (किसी बात को) मधुर बना, प्रभावशाली बना।

७० ओगगा (क) सं.—बहुत बीज एक ही स्थान पर बोना। — ७० ओगगा (क) क्रि.—एक ही स्थान पर बहुत बीज बो दे।

७० ओगगिसु (क) क्रि.—सरल या साधु बना, सीधे मार्ग पर ला, अपने वश में कर अपने स्वभाव के अनुकूल बना; पाल (पालतू बना)।

७० ओगगु (क) क्रि.—७० ओगगु—एक हो, मिल, संयुक्त हो, जुड़, हिल-मिल, लग (अक्. क्रि.); मिला, जोड़, लगा; हवा, पानी आदि (स्वास्थ्य के लिए) लग, अच्छा लग। सं.—समूह, समुदाय, राशि, ढेर; एकता, मेल, मिलन।

७० ओगगु (क) क्रि.—७० ओगगु उछुगु—झुक, ँठ, मुड़; नम्र हो, विनीत हो।

७० ओच्च (क) वि.—एक की संख्या का सूचक (समस्त शब्दों में); उदा.—७० ओच्चर—एक हार। ७० ओच्चवडि—जोड़ी; मिलन। ७० ओच्चारे—एक हथेली। ७० ओच्चुट्टु—अंगुष्ठ और तर्जनी के बीच का नाप या अंतर। ७० ओच्चोत्तु—एक समय, एक बार।

७० ओच्च (क) वि.—सुंदर, अच्छा, सुप्रसिद्ध।

७० ओच्चत (क) सं.—समानता, समरसता, अनुकूलता; आनंद, हर्ष; संतोष, संतुष्टि। — ७० ओच्चु (क) क्रि.—एक साथ या एक बार लो।

७० ओच्चय (क) सं.—अपमान, बेइज्जती; तिरस्कार, निंदा; परिहास, मज़ाक़. खिही।

७० ओच्चोत्तु (क) सं.—असमय, अनुचित समय।

७० ओच्चेय, ७० ओच्चे (क) सं.—दे. ७० ओच्चेय।

७० ओज (अ.दे.) सं.—वजन (अरबी); भार, बोझ; इज्जत, मर्यादा।

७० ओजर (क) सं.—फवारा, उत्स, वारिप्रवाह, निर्झर। (तद्) सं.—वज्र (तद्)।

७० ओज्जे (अ.दे.) सं.—वजन (अरबी), दे. ७० ओज्जे।

७० ओट (क) अ.—७० वट—एक निरर्थक शब्द। — ७० ओट (दुहराना)—टर टर; जैसे—७० ७० ७० ७० कपड़े ओट ओट एनुत्तदे—मेंढक टर टर करता है। — ७० ओट माताडु (क) क्रि.—अधिक बोल, बड़बड़ कर। ७० ओटगुट्टु (क) क्रि.—दे. ७० ओटगुट्टु।

७० ओटार (क) सं.—७० वठार—घर के चारों ओर की चहारदीवारी; वह चहार दीवारी या परिधि जहाँ चार-पाँच घर हो।

७० ओटज (क) सं.—कर, शुल्क, उपहार, भेंट।

७० ओटजे (क) सं.—राशि, ढेर; समूह, गिरोह, समुदाय; आधिक्य, बहुतायत; श्रेणी, पंक्ति। — ७० ओटजे (क) क्रि.—तोड़, फोड़, हटा।

७० ओट्टण (क) सं.—समूह, सम्मेलन, संघ।

७० ओट्टिसु, ७० ओट्टिसु (क) क्रि.—एक कर, मिला, जोड़, ढेर कर; टोली बना; स्पर्धा कर, सामना कर; जीत, विजयी हो; कुचल डाल, व्याकुल कर।

७० ओट्टु (क) सं.—राशि, ढेर; समूह, समुदाय।

७० ओट्टिसु (क) क्रि.—एक कर, एक साथ मिला, मिला, जोड़।

७० ओट्टारे (क) अ.—कुल मिलाकर, बात यह है कि, सारांश यह कि।

७० ओट्टि (क) वि.—हठीली, मूर्ख, जिद्दी स्त्री।

७० ओट्टिके (क) सं.—ढेर या राशि लगाने की क्रिया।

७० ओट्टिल्, ७० ओट्टिलु (क) सं.—अंजली भर; दे. ७० ओट्टिल्।

७० ओट्टिसि (क) क्रि.—राशि या ढेर लगा; ढेर लगवा (प्रे.)।

७० ओट्टु (क) क्रि.—एक कर, मिला, एक साथ, लगा, जोड़, ढेर लगा; एक हो, राशि या ढेर हो; पड़े रह। सं.—मिलन, संयोजन; राशि, ढेर; कुल रकम या वस्तु; अंकुर, कीटाणु; मिट्टी का पिंड। ७० ओट्टिगे—कुल मिलाकर। ७० ओट्टिगे वार—सरकार और काश्तकार का अनाज, जो अविभक्त हो। ७० ओट्टिगे—दे. ७० ओट्टिगे। ७० ओट्टिगेडिसु—एक साथ मिला, एक कर, एकता उत्पन्न कर। ७० ओट्टिगे—बड़ी राशि या ढेर।

७० ओट्टु (क) सं.—कसम, शपथ। ७० ओट्टुके (क) क्रि.—कसम खा।

७० ओट्टे (क) सं.—रंघ, छेद। — ७० ओट्टे (क) क्रि.—छेद हो, छेद पड़।

७८ ओड (क) वि.— साथ में, साथ-साथ, मिला हुआ, लगा हुआ (समस्त-शब्दों में), उदा.— ७८गोड (७८) ओडगूट (कूट) — अत्यंत नैकत्व, सामीप्य संबंध । ७८ गोडिसु ओडगूडिसु (क) क्रि.— एक साथ मिला, जोड़, लगा । ७८०७८ ओडंबडिके (क) सं.— परस्पर एक दूसरे के विचार या शर्तें मानना, संधि । ७८०७८स ओडंबडिसु (क) क्रि.— मना, संधि करा । ७८८८८, ७८८८८ ओडहुट्टिववु (क) सं.— भाई, अग्रज या अनुज । ७८८८८८ ओडहुट्टि-दवळु—बहन ।

७८ ओड (क) अ.— तुरंत, फौरन, तत्क्षण ; के साथ ।

७८८ ओडक, ७८८ ओडकु (क) वि.— छेद पड़ा हुआ, टूटा हुआ, फटा हुआ, फूटा हुआ । सं.— छेद, रंध, मतभेद । ७८८८८ ७८८८८ ७८८८८ ७८८८८ मनेयलि ओडक हुट्टिसुववु — घरफोड़ स्वभाववाला आदमी । ७८८८८ ओडकदनि—टूटी आवाज़, कर्कश ध्वनि । ७८८८८ ७८८८८ ओडक वायवनु—फटा सुँहवाला अर्थात् वह मनुष्य जो किसी भी बात को गुप्त नहीं रख सकता । ७८८८८ गोडि ओडकु गडिगे—टूटा या छेद पड़ा हुआ घड़ा । ७८८८८ ७८८८८ ओडकु दोणि—टूटी नाव । ७८८८८ ७८८८८ ओडकु चील — फटी या छेदवाली धैली । ७८८८८ ७८८८८ ओडकु हरवि—टूटा या छेदवाला मिट्टी का वर्तन ।

७८८८८ ओडगविसु (क) क्रि.— दे. ७८ गोडिसु (७८ में) ।

७८८८८ ओडगोडु (क) क्रि.— फेंक, दूर हटा ।

७८८८८ ओडगोळ, ७८८८८ ओडगोळु (क) क्रि.— मिल, जुड़, लग, एक हो ।

७८८८८ ओडतण, ७८८८८ ओडतन, ७८८८८ ओडेतन (क) सं.— स्वामित्व, प्रभुता, अधिकार, शासन ।

७८८८८ ओडति (क) सं.— स्वामिनी, मालकिन, अधिकारिणी ।

७८८८८ ओडन्, ७८८८८ ओडे (क) सं.— साथ (समास में) । ७८८८८ ओडनाट—साथ-साथ खेलना, मित्रता, मिलन, स्नेह । ७८८८८ ओडनाडि—खेल का साथी, मित्र । ७८८८८ ओडनाडितन—मित्रता, स्नेह । ७८८८८ ओडनिर्—साथ रह, मित्र बनकर रह (क्रि.) । ७८८८८ ओडनिरिसु—साथ रख (क्रि.) ।

७८८८८ ओडने (क) अ.— तुरंत, फौरन ; साथ में, साथ ।

७८८८८ ओडनोडने (क) अ.— साथ-साथ, एक-साथ ; कभी-कभी, जब-तब ।

७८८८८ ओडवडि (क) क्रि.— तोड़, फोड़, नष्ट कर ।

७८८८८ ओडवडिके, ७८८८८ ओडंबडिके (क) सं.— स्वीकृति, अंगीकार, परस्पर मानना, संधि ।

७८८८८ ओडवडु, ७८८८८ ओडंबडु (क) क्रि.— मान, स्वीकार कर, संधि कर ।

७८८८८ ओडमे, ७८८८८ ओडवे, ७८८८८ ओडिवे (क) सं.— गहना, आभूषण ; धन-दौलत, संपत्ति ।

७८८८८ ओडंवि, ७८८८८ ओडंवे (क) सं.— शरीर, काया ।

७८८८८ ओडर्, ७८८८८ ओडरु (क) क्रि.— मान, स्वीकार कर ; मिला, लग ; प्रारंभ कर, शुरू कर ।

७८८८८ ओडरिसु, ७८८८८ ओडरिसु, ७८८८८ ओडरु, ७८८८८ ओडरिसु

(क) क्रि.— हाथ में ले, रच, आरंभ कर ; लगा, जोड़, मिला ; कर ; उत्पन्न कर ; प्रयास कर ; यत्न कर, उद्यम कर ।

७८८८८ ओडरु (क) क्रि.— उत्पन्न हो, निकल, बाहर आ ।

७८८८८ ओडल्, ७८८८८ ओडलु (क) सं.— शरीर, देह, काया । — ७८८८८ गोळ (क) क्रि.— शरीर धारण कर, जन्म ले । — ७८८८८ उरि [७८८८८] (क) सं.— ईर्ष्या, डाह ; जठराग्नि ।

७८८८८ ओडवे (क) सं.— दे. ७८८८८ — ७८८८८ गोडु (क) सं.— संपत्ति का नाश, धन की हानि । ७८८८८ ७८८८८ ७८८८८ ओड-लिंगन नेंदु ओडवेगोडु— किसान की मैत्री, धन की हानि ! (कह.) ।

७८८८८ ओडवेरसु (क) क्रि — साथ हो, मिल, एक हो, जुड़, लगा ।

७८८८८ ओडवेरे (क) क्रि.— दे. ७८८८८

७८८८८ ओडसु, ७८८८८ ओडिसु (क) क्रि.— टुकड़े करा, भेद करा, कटा (प्रे.) ; भेद उत्पन्न कर ।

७८८८८ ओडसीळु (क) क्रि.— टुकड़े-टुकड़े कर, तोड़-फोड़, काट-कूट, चूर-चूर कर ।

७८८८८ ओडि (क) सं.— कमर, कटि ।

७८८८८ ओडि (क) क्रि.— टूट, फूट, टुकड़े हो, निकल, बाहर आ, खिल (जैसे कली का खिलना) ; अलग हो, छोड़ ; फट (जैसे दूध का फटना) ; निर्बल हो, असफल हो, हिम्मत हार ; सुड़, झुक (जैसे पेड़ की डाली का झुकना, रास्ते का मोड़) ; धीरे-धीरे वह (छोटे झरने का बहना) बूँद-बूँद करके बह ; बहकर धक्का लगा (जैसे स्याही) । ७८८८८ ओडिगट्टु = ७८८८८ ओडियकट्टु (क) क्रि.— छान ; शोध, निचोड़ ।

७८८८८ ओडिसु (क) क्रि.— दे. ७८८८८

७८८ ओडिसे (क) सं.— कखौरी ।

७८८ ओडुचु (क) सं.— कखौरी ।

७८८ ओडे (क) क्रि.— दे. ७८८; नाश कर ।

७८८ ओडेदु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर ।

ओडेयु होय—तोड़, टुकड़े-टुकड़े कर, चूर-चूर कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर ।

ओडेयु होय—तोड़, टुकड़े-टुकड़े कर, चूर-चूर कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर ।

ओडेयु होय—तोड़, टुकड़े-टुकड़े कर, चूर-चूर कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर ।

ओडेयु होय—तोड़, टुकड़े-टुकड़े कर, चूर-चूर कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर । ७८८ ओडेयु—तोड़कर ।

७८८ ओडे (क) सं.— स्वामित्व, प्रभुता, अधिकार, ज़मीन-सकान आदि का अधिकार होना ।

७८८ ओडेगारु, ७८८ ओडेगारुति (क) सं.— स्वामिनी, मालकिन, अधिकारिणी ।

७८८ ओडेतन (क) सं.— दे. ७८८.

७८८ ओडेय (क) सं.— प्रभु, स्वामी, अधिकारी ; शासक, नेता, नायक ; राजा ।

७८८ ओडेयतन (क) सं.— दे. ७८८.

७८८ ओडेसु (क) क्रि.— दे. ७८८.

७८८ ओडु (क) सं.— ओडू ; पत्थर तोड़ना, तालाब खोदना आदि काम करनेवाले एक जाति के लोग जो ग्रामीण तेलुगु बोलते हैं । इनमें कुछ लोग, जो उत्तर कर्नाटक में रहते हैं, सौलापुर के सिद्धरामेश्वर के उपासक हैं । राशि, ढेर, समूह ; सेना ; पण, दौंव, बाजी, खेल या क्रीड़ा का साधन । ७८८ ओडुदेश—ओडूदेश, उडीसा ।

७८८ ओडुण, ७८८ ओडुणे (क) सं.— राशि, ढेर ; समूह, गिरोह, संघ ; सेना ।

७८८ ओडुण, ७८८ ओडुणाण (क) सं.— मेखला, करधनी, किंकिणी ।

७८८ ओडुति (क) सं.— ओडु जाति की स्त्री ।

७८८ ओडुयिसु (क) क्रि.— एक साथ मिलकर सामना कर ; हरा, पराजित कर ।

७८८ ओडुव (क) सं.— शब्दों का उचित चयन, शब्द-सौंदर्य, शैली ।

७८८ ओडुवणे (क) सं.— क्रमिकता, सजावट ; तैयारी ।

७८८ ओडुडि (क) सं.— ओडु जाति से संबंधित, उडीसा । ७८८ ओडुडि जगन्नाथ—उडीसा (पूरी) के भगवान जगन्नाथ ; दौंव, पण, बाजी । अ.— सामने, सम्मुख, विरोध में ।

७८८ ओडुडिके (क) सं.— राशि या ढेर लगाना, रखना ।

७८८ ओडुवाण (क) सं.— मेखला, करधनी, किंकिणी ।

७८८ ओडुसु (क) क्रि.— रखवा (प्रे.) ।

७८८ ओडु (क) क्रि.— रख, धर, प्रस्तुत कर, पेश कर ; (किसी वस्तु को) पकड़ ; (हाथ) पसार ; लगा, डाल ; क्रम से रख, सजा ; अलंकृत कर ; दौंव या बाजी लगा ; विरोध कर, विरोधी बन ; प्रतिकार ले, बदला ले ; राशि या ढेर लगा । सं.— राशि, ढेर, समूह ; दौंव, बाजी ; तड़क-भड़क, वैभव, गांधीर्य ; व्यूह, सेना ; (गणित में) गुना या भाग करने की मूल संख्या । — ७८८ ओडुगल् (क) सं.— चट्टान, पत्थर । ७८८ ओडुगु (क) क्रि.— सेना में प्रवेश कर । ७८८ ओडुगु (क) सं.— दरबार, बड़ी सभा, आस्थान ।

७८८ ओडुवले (क) सं.— डाल, ढार ।

७८८ ओडुविके (क) सं.— सामने रखना, प्रस्तुत करना, हवा लगने देना, निष्पाव ।

७८८ ओडुवेरे (क) क्रि.— सेना में मिल ।

७८८ ओडुवाण (क) सं.— दे. ७८८.

७८८ ओण (क) वि.— सूखा हुआ, मुरझा हुआ, शुष्क, नीरस ; प्रयोजनहीन, खाली । — ७८८ कैयु (क) सं.— शुष्क या खाली हाथ । — ७८८ कैलस (क) सं.— प्रयोजनहीन या बेकार काम । — ७८८ गायि (क) सं.— शुष्क फल । — ७८८ गिड (क) सं.— सूखा वृक्ष । — ७८८ ज्वर (क) सं.— वह ज्वर, जो हानिकर न हो । — ७८८ तिडि (क) सं.— शुष्क आहार (दालों से बना हुआ), एक प्रकार की खुजली या चमड़े की बीमारी । — ७८८ तोगु (क) सं.— सूखा चमड़ा । — ७८८ नेल (क) सं.— सूखी भूमि, ऊसर भूमि । — ७८८ मातु (क) सं.— शुष्क वचन, निरर्थक बात । — ७८८ रगळे (क) सं.— व्यर्थ की बात । — ७८८ सुगणि (क) सं.— सूखा गोबर । — ७८८ हरटे (क) सं.— निरर्थक बातचीत, गपशप । — ७८८ जंब (क) सं.— शुष्क गर्व, निरर्थक असिमान, दिखावटी बड़प्पन ।

७८८ ओणक (क) सं.— क्षीण या दुर्बल मनुष्य । वि.— दे. ७८८.

७८८ ओणकल, ७८८ ओणकलु (क) वि.— दे. ७८८.

७८८ ओणकु (क) क्रि.— काँप, कंपित हो ; हिल, हिल-डुल ।

७८८ ओणगिल्, ७८८ ओणगिलु (क) सं.— शुष्क या नीरस रहने की स्थिति, सूखापन, नीरसता ।

७७११० ओणिसु (क) क्रि.— सुखा, निरस कर (प्रे.) ।

७७११० ओणगु (क) क्रि.— सूख, शुष्क हो, नीरस हो, सुरक्षा; क्षीण हो, दुर्बल हो । ७७११० ७७ ओणगिद एले—सूखा पत्ता, ७७११० ७७०० ओणगिद कायि—सूखा फल (कच्चा फल), ७७११० ७७० ओणगिद मर—सूखा पेड़ । ७७११० ७७ ७७०००००० ७७ ०७ ०७०००० ओणगिद एले उदुरुवाग हसरेले नगुत्तदे—जब सूखा पत्ता (पेड़ से) नीचे गिरता है, तब हरा पत्ता हँसता है (कह.) । सं.—शुष्कता, नीरसता, सूखापन ।

७७०० ओणर् (क) क्रि.— ('७७०० उणर्= जान, समझ' तमिल) — जान, समझ; अनुभव कर, विचार कर ।

७७० ओणे, ७० ओने (क) क्रि.— ओसा, फटक, पछोर (winnow) ।

७७ ओत् (क) वि.— (समस्त शब्दों में)— एक की संख्या का सूचक; उदा— ७७७ ओत्तट्टु—एक तरफ, एक ओर । ७७० ओत्तड—एक समूह या गिरोह । ७७० ओत्तर—एक दल, खंड या अंश । ७७० ओत्तोळ—एक बाहु ।

७७७ ओत्तट, ७७७ ओत्तड (क) सं.— दवाव, कुचलन, गरम जल से सेंकने की क्रिया ।

७७०७ ओत्तवर (क) सं.—बहुत उतावलापन, जल्दवाजी; बहुत दवाव ।

७७० ओत्तर (क) सं.— दवाव, जल्दवाजी, बहुत तीव्रता, प्रचंडता ।

७७० ओत्तरिसु (क) क्रि.— हटा, ढकेल, (दूसरे के स्थान के) पास-पास आ; अधिक हो, बहुत हो, बहुतायत हो; दवा; कुचल, तीव्रता कर, प्रचंड हो, उतावला हो, शीघ्रता कर ।

७७७ ओत्तल, ७७७ ओत्तळ (क) सं.— दे. ७७७ ।

७७०० ओत्ताय (क) सं.—दवाव, बलात्कार तीव्रता, शीघ्रता, जल्दवाजी, उतावलापन ।

७७०० ओत्तासर, ७७० ओत्तासे (क) सं.— साहाय्य, सहायता, मदद ।

७७ ओत्ति (क) कृ.— ('७७ ओत्तु' से)— दवाकर, मसल कर, कुचल कर आदि (दे. ७७) ।

७७ ओत्तिके (क) सं.— दे. ७७७ ।

७७ ओत्तिगे (क) अ.— पास, समीप, एक साथ । सं.— पुस्तक, किताब ।

७७ ओत्तिविडि (क) क्रि.— दवा, कुचल, नोच, मसल ।

७७ ओत्तिसु (क) क्रि.— दवा, कुचला, मसला (प्रे.) ।

(१) ७७ ओत्तु (क) क्रि.— दवा, कुचल, मसल, नोच; रगड़; मोहर लगा, छाप डाल, प्रभाव डाल; लगा; हटा, ढकेल, किसी पर बल प्रयोग कर, बलात्कार कर; अधिकार कर, शासन कर; तंग कर, कष्ट दे; कपड़े से धीरे-धीरे दवा (जैसे घाव पर मलहम लगाकर किया जाता है), लेपन कर; असाधारण बल या तीव्रता का प्रयोग कर; किसी बात पर जोर दे, एक श्वास से उच्चारण कर (जैसे अक्षर का उच्चारण) । ७७ ओत्ति (क) कृ.— दृढ़ता से; जोर देकर, जोर से; बलपूर्वक, शुष्कता से; दवाकर, कुचलकर, नोचकर, दवाव डालकर; धीरे-धीरे दवाकर; लगाकर, छाप डालकर, प्रभावित करके; हटा कर, ढकेलकर ।

(२) ७७ ओत्तु (क) सं.— स्थान दे, रास्ता दे, हट; गरम जल से सेंक; सुपारी काट ।

(३) ७७ ओत्तु (क) सं.— दवाव, कुचलन, नोचने की क्रिया; जुड़ जाना, मिलन,

संयोजन, एकता; राशि, ढेर; सामीप्य, निकटता; अधिकत, गाढ़ापन, निविडता, पास-पास होना; आधार; नदी-तट; चुकीला लट्टा; ज्वार; छाप, मुहर; द्वित्व, गुना होना (गुणित); स्निग्धता, एक के पास-पास दूसरा होना (जैसे एक अक्षर के बहुत पास दूसरा अक्षर लिखा जाता है) ।

(४) ७७ ओत्तु (क) सं.— ७७ ओत्तु— समय, काल (७७ ओत्तु—इष्टोत्तु—इतना समय, ७७ ओत्तु अष्टोत्तु—उतना समय) । कृ.— उठाकर, ढोकर ।

७७ ओत्तुकागद (क) सं.— ७७ ओत्तु ओत्तुकरडु—स्याही सोख, सोखता ।

७७ ओत्तुग, ७७ ओत्तुयंत्र (क) सं.— दवाने का यंत्रविशेष; मुद्रणयंत्र ।

७७ ओत्तुविके, ७७ ओत्तुह (क) सं.— दवाव, कुचलन, रगड़, मर्दन ।

७७ ओत्ते (क) सं.—बंधक, गिरवी; वेश्याओं को दिया जानेवाला धन । ७७ ओत्तिडु (क) क्रि.— गिरवी रख । ७७ ओत्ते हरिसु (क) क्रि.— ७७ ओत्ते ई, ७७ ओत्ते क्रोडु (क) क्रि.— गिरवी रख । ७७ ओत्ते सूळे (क) सं.— वेश्या, जो धन लेती है । ७७ ओत्ते तेगे, ७७ ओत्ते हिडि (क) क्रि.— गिरवी या बंधक ले ।

७७ ओत्ते (क) सं.— एक होने की स्थिति, अकेलापन ।

७७ ओत्तेगोडळ (क) सं.— वेश्या, वारांगना ।

७७ ओदगिसु (क) क्रि.— ७७ ओदगिसु—सुलभ कर, किस वस्तु को प्राप्त करा (प्रे.); दे, प्रदान कर, तैयार कर, उत्पन्न करा (प्रे.); परिपूर्ण कर, मिला, जोड़; लगवा; संचय कर ।

बदना ओदगु (क) क्रि.— साथ-साथ रह, अनुगमन कर; मिल, प्राप्त हो; तैयार हो, उपयोग में आ; हो, उत्पन्न हो, संभव हो; सुलभ हो; परिपूर्ण हो; शक्तिपूर्ण हो, समर्थ हो, वृद्धि पा, समृद्ध हो; अधिक हो, बहुतायत हो। सं.— प्राप्ति, परिपूर्णता, सौलभ्य, समृद्धि, आधिक्य, (किसी वस्तु का) मिलना, जो हाथ में हो।

बदना ओदुडु (क) सं.— बदना ओदरु, बदना ओदुडु—होंठ, अधर।

बदना ओदरु (क) सं.— दे. बदना।

बदना ओदरिसु (क) क्रि.— आवाज़ उत्पन्न करा, टंकार करा; चिल्लाने दे, पुकारने दे; हिलाने या झड़ने दे (प्रे.)।

बदना ओदरु (क) क्रि.— हिला, झाड़, टंकार कर, आवाज़ उत्पन्न कर (ताली बजाकर या भुजाओं को ठोंककर जैसे मलयुद्ध करनेवाले करते हैं), चिल्ला, पुकार, जोर की आवाज़ दे, जोर से चिल्ला, गर्जन कर। वि.— हिलनेवाला, कांपनेवाला। बदना ओदरु-दले [डल तले] (क) सं.— हिलनेवाला सिर (जैसे वृहों का सिर हिलता है)।

बदना ओदरुविके (क) सं.— चिल्लाहट, पुकार, जोर की आवाज़, गर्जन; हिलना; झाड़ना; टंकार।

बदना ओदरिसु (क) क्रि.— दे. बदना।

बदना ओदरु (क) क्रि. और सं.— दे. बदना।

बदना ओदसु, बदना ओदिसु (क) क्रि.— पादप्रहार करा, लात लगवा (प्रे.)।

बदना ओदुगु (क) सं.— दे. बदना।

बदना ओदुडु (क) सं.— दे. बदना।

बदना ओदु (क) सं.— लात, पादप्रहार। क्रि.— लात मार, पादप्रहार कर, पैरों से मार। बदना ओदुगु ओदरु बदना ओदुगुओदरु

ओद एदु होगु अंदरे ओदु होगुतेने अंद— (एक ने कहा)—उठकर चले जा, (दूसरे ने कहा)—लात मारकर जाता हूँ (कह.)।

बदना ओदुडु (क) सं.— परस्पर लात मारना; तकलीफ, कष्ट, कठिनाई, मुश्किल; संघर्ष। बदना ओदुडु (क) क्रि.— संघर्ष कर, जूझ, कष्ट का सामना कर, तकलीफ उठा।

बदना ओदु (क) क्रि.— दे. बदना।

बदना ओदु (तद्) सं.— भाद्र (तत्); गीला, भीगा हुआ।

बदना ओनु (क) वि.— एक की संख्या का सूचक (समस्त-पदों में), उदा.— बदना ओनुदिन, बदना ओनुदिवस—एक दिन, बदना ओनुदेसे एक ओर, किसी निश्चित दिशा में।

बदना ओनुके (क) सं.— बदना ओनुके—मूसल, मूसर।— बदना पाडु (क) सं.— कृत्ये समय गाया जानेवाला गीत।

बदना ओनुपु, बदना ओलपु (क) सं.— नाज, हाव-भाव, सुंदर चाल।— बदना गार्ति (क) सं.— बदना ओलपुगाति— नाजनी, हाव-भाव दिखाने वाली स्त्री, सुंदर चालवाली स्त्री।

बदना ओनुल, बदना ओनुलु (क) सं.— अत्यधिक क्रोध। क्रि.— अंगार उगल, आँखें लाल कर।

बदना ओनुलि (क) सं.— दे. बदना।

बदना ओनुसु, बदना ओनुसु (क) क्रि.— 'बदना ओनु—ओसा, पछोर' का प्रेरणार्थक रूप।

बदना ओनु (क) क्रि.— दे. बदना।

बदना ओनु (क) वि.— एक की संख्या का सूचक (समस्त-पदों में) उदा.— बदना

ओप्पस्तु—एक जून, एक समय, एक बार। बदना ओप्पारु—नीत्र, नीध्र, छप्पर और छत्त की ओलती। बदना ओप्पिडि—एक सुट्टी, सुट्टी भर।

बदना ओप्प (क) सं.— उपयुक्तता, योग्यता; शुद्धता, सफाई, पवित्रता; सौंदर्य, मनोहरता; गहना, आभरण; चमक, कांति, आभा; ठीक होना; समानता, आपसी समझौता, अनुमोदन, स्वीकृति। बदना ओप्पिडु तप्पिदवगे ओप्पिडि—जो गलती करता है वह शुद्धता का विचार नहीं करता है (कह.)। बदना ओप्पगुडु (क) क्रि.—

सौंदर्य या आभा कम हो। बदना ओप्पेगुडिसु (क) क्रि.— सौंदर्य नष्ट कर, खराब कर। बदना ओप्पेगु (क) क्रि.— ठीक कर, सुधार। बदना ओप्पमाडु (क) क्रि.— मृत व्यक्ति का अंतिम क्रिया-कर्म कर। बदना ओप्पवडे, बदना ओप्पवेरु (क) क्रि.— सौंदर्य या आभा प्राप्त कर। बदना ओप्पविकु, बदना ओप्पविडु (क) क्रि.— सौंदर्य या आनंद सूचित कर; चमका, आभायुक्त कर, लेपन कर। बदना ओप्पविडुविके (क) सं.— परिकर्म, अंगसंस्कार, लेपन। बदना ओप्पहाकु (क) क्रि.— हस्ताक्षर कर।

बदना ओप्पिचि, बदना ओप्पिचि, बदना ओप्पिचि (क) वि.— थोड़ा, कुछ, बहुत कम। बदना ओप्पिचि, बदना ओप्पे (क) सं.— छोटे वच्चों का पेट (मै.प्र.)। बदना ओप्पंद (क) सं.— मानना, स्वीकृति, अनुमोदन, संविदा, सट्टा, पट्टा, संधि। बदना ओप्पिसु (क) क्रि.— दे. बदना।

बदना ओप्पर (क) सं.— आँखों का पर्दा या आवरण।

ॐस्युते ओपाने (क) सं. — उपयुक्ता, योग्यता, ठीक होना. शुद्धता, पवित्रता, सौंदर्य, आभा (मै.प्र.) ।

ॐस्युठ ओपारि (क) सं.—समानता, समता, एकरूपता, एकात्मक संबंध ।

ॐस्युते ओपिक्के, ॐस्युते ओपिणे, ॐस्युते ओपुणे (क) सं.—मानना, स्वीकार करना, स्वीकृति, अनुमोदन ।

ॐस्युते ओपित (क) सं.—मानी हुई या स्वीकृत बात । ॐस्युते नूतु तस्युते नूतु. ओपितद मातु तपिसवारदु—मानी हुई बात से विचलित नहीं होना चाहिए (कह.) । —ॐस्यु हाकु (क) क्रि.—हस्ताक्षर कर ।

ॐस्युते ओपिसु (क) क्रि.—मना, स्वीकार करा; सौंप, (किसी वस्तु को) दे दे, प्रस्तुत कर; (कंठस्थ किये हुए या पढ़े हुए पाठ को) कह, दुहरा; चमका, आभायुक्त कर (मै.प्र.) ।

ॐस्युते ओपु (क) क्रि.—लग, ठीक हो, उपयुक्त हो, योग्य हो; सुंदर हो, चमक, धच्छा हो, कांतियुक्त हो; अंगीकार कर, मान, स्वीकार कर; उपयोग में आ। सं.—उपयुक्तता, योग्यता, ठीक होना; स्वीकृति, अंगीकार; सौंदर्य, मनोहरता; चमक, आभा, कांति । ॐस्युते ओपंते, ॐस्युते ओपुवेंते—उचित ढंग से, उपयुक्त रीति से, मानने के जैसे । ॐस्युते ओपुगोळ (क) क्रि.—मान, स्वीकार कर । ॐस्युते ओपुगोलिसु (क) क्रि.—स्वीकार करा, मना । ॐस्युते ओपुवज्जर [ॐस्युते वज्जर] (क) सं.—आभायुक्त हीरा ।

ॐस्युते ओपिणे (क) सं.—दे. ॐस्युते.

ॐस्युते ओपुविके (क) सं.—मानना, स्वीकार करना ।

ॐस्युते ओव्व (क) वि. = ॐस्युते ओर्व, ॐस्युते ओर्व—एक (पु.लिं. तथा स्त्री.लिं.) । ॐस्युते मसुते ओव्व मनुप्य—एक आदमी, ॐस्युते मंगसु ओव्व हुंगसु—एक स्त्री, ॐस्युते ओव्वनु—एक पुरुष ('सु' पु. लिं. का सूचक), ॐस्युते ओव्वलु—एक स्त्री ('लु' स्त्री. लिं. का सूचक प्रत्यय) ।

ॐस्युते ओव्वदिग (क) सं. = ॐस्युते ओव्वदिग—अकेला या एकाकी पुरुष ।

ॐस्युते ओव्वट्टु (क) सं.—एक प्रकार की मिठाई, खाने की वस्तु; चपत, थप्पड़ (लाक्ष.) ।

ॐस्युते ओव्वदिग (क) सं.—दे. ॐस्युते.

ॐस्युते ओव्वि (क) सं.—एक बारी (turn), एक समय ।

ॐस्युते ओव्विट्टु (क) सं.—दे. ॐस्युते.

ॐस्युते ओव्वुळि (क) सं. = ॐस्युते ओव्वुळि कुल; राशि, समुच्चय, समुदाय; छुंड । —ॐस्युते (क) क्रि.—मिला, जोड़, समुच्चय कर । — ॐस्युते गुडु (क) क्रि.—एक हो, मिल, समुच्चय हो ।

ॐस्युते ओव्वे (क) सं.—झाड़ी; एक बार डाली गई वस्तु, एक बार की वस्तु (घी या तेल में भूनते समय कड़ाही में (कोई पदार्थ) एक बार जितना डाला जाता है उतना ।

ॐस्युते ओम्मत्त (क) सं.—एकमत, एक ही अभिप्राय, एक ही निर्णय, एक ही आचार-विचार ।

ॐस्युते ओम्मन (क) सं.—एक ही मन, एक ध्यान, एकचित्तता ।

ॐस्युते ओम्मु (क) क्रि.—मिल, जुड़, लग, एक हो, एकरूप हो, योग्य या उपयुक्त हो, मन, स्वीकार कर । सं.—मानना, स्वीकृति, एक होना, एकता ।

ॐस्युते ओम्मे (क) अ. = ॐस्युते ओम्मे—एक बार, एक समय, एक दफे; उसी समय ।

ॐस्युते ओम्मे (क) सं.—एक देह; एकाकीपन, तनहाई ।

ॐस्युते ओम्मोम्मे (क) अ.—एक-एक बार, कभी-कभी, जब-तब, कभी ।

ॐस्युते ओम्मोग (क) सं.—एक मुख; एकमत, एकरूपता, एक ही ओर ।

(१) ॐस्युते ओय्, ॐस्युते ओयि, ॐस्युते ओय्यु, ॐस्युते वय्, ॐस्युते वय्यु, ॐस्युते वेय् (क) क्रि.—ले जा, उठा ले जा, पकड़कर ले जा, बढ़ा, पहुँचा; (अपहरण कर) । — ॐस्युते गोडु (क) क्रि.—ले जाने दो, उठा ले जाने दो (प्रे.) ।

(२) ॐस्युते ओय् (क) क्रि.—ॐस्युते वय्—रख, धर, एक ओर रख, गुप्त रख, थाती रख ।

ॐस्युते ओय्क, ॐस्युते ओय्क (क) सं.—वमन करते समय निकलनेवाली ध्वनि ।

ॐस्युते ओयि (क) क्रि.—दे. ॐस्युते (१). = ॐस्युते होयि—डाल, किसी तरल पदार्थ को डाल; मार, पीट, पटक, धक्का दे ।

ॐस्युते ओय्कने (क) अ.—सीधे, ठीक-ठीक, उचिन रीति से ।

ॐस्युते ओय्के (क) सं.—धरोहर, थाती, निक्षेप; निधि ।

ॐस्युते ओय्त (क) सं.—ले जाने या उठाने की क्रिया ।

ॐस्युते ओय्यने (क) अ.—धीरे-धीरे, सावधानी से, आराम से, जान-बूझकर ।

ॐस्युते ओय्यार (क) सं.—ॐस्युते वय्यार—चमक, चमक-दमक, नाज़-नज़ाकत, शौक, गर्व, अभिमान । — ॐस्युते गाति, ॐस्युते गित्ति (क) सं.—शौकीन औरत, विलासिनी । — ॐस्युते गार् [ॐस्युते गार्] (क) सं.—

शौकीन पुरुष, विलासी पुरुष । — उत तन (क) सं. — दिखावटीपन, विलास ।

ॐॐॐॐ ओय्यारि (क) वि. — शौकीन, विलासी (स्त्री या पुरुष) ।

ॐॐॐॐ ओय्याळि (तद्) सं. = ॐॐॐॐ ओय्याळि, ॐॐॐॐ वैहाळि—घोड़े पर सवारी करना । — ग ग (क) सं. — घोड़े पर सवारी करनेवाला ।

ॐॐॐॐ ओय्यिके (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओय्यु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरगल्लु (क) सं. — कसौटी ।

ॐॐॐॐ ओरगु (क) क्रि. — सहारा ले, आश्रय ले, पीठ लगाकर (किसी आसन पर) बैठ ; झुक, आराम ले ; ऊँच, सो जा ।

ॐॐॐॐ ओरगे (क) सं. — एकता, अद्वैत-भाव, संपूर्णता ।

ॐॐॐॐ ओरट्टु (क) वि. — मोटा, गाढ़ा, कड़ा, अकोमल ; गँवार, असभ्य । — उत तन (क) सं. — मोटापन ; असभ्यता ।

ॐॐॐॐ ओरत (क) सं. = ॐॐॐॐ ओरैत—रगड़, घिसन ।

ॐॐॐॐ ओरयिसु, ॐॐॐॐ ओरैयिसु (क) क्रि. — रगड़ा, घिसा (प्रे.), खिंचा, कर्षित करा (प्रे.) ।

ॐॐॐॐ ओरळ्, ॐॐॐॐ ओरळ्, ॐॐॐॐ ओरळ्, ॐॐॐॐ ओरळ् ॐॐॐॐ ओरळ्, ॐॐॐॐ ओरळ् [ग्रा.] (क) सं. — [पत्थर या काठ की] ओखली ।

ॐॐॐॐ ओरळ्चु (क) क्रि. — रुला, चिछाने दे, विलाप करा, कराहने दे (प्रे.) ।

ॐॐॐॐ ओरळ्चु, ॐॐॐॐ ओरळ्चु (क) सं. — उत्स, चश्मा, सोना, जल का स्थान, झरना, फौवारा ।

ॐॐॐॐ ओरवारि (क) सं. — छोटी कुदाली ।

ॐॐॐॐ ओरसिसु (क) क्रि. — रगड़वा, घिसवा (प्रे.), स्पर्श करा (प्रे.) ।

ॐॐॐॐ ओरसु (क) क्रि. — पोंछ, स्पर्श कर, कपड़े से पोंछ । सं. — रगड़, घिसन, घर्षण ; तंग करना, कष्ट देना, चिढ़ाना ; नष्ट करना, मारना, हिंसा ।

ॐॐॐॐ ओरळ्, ॐॐॐॐ ओरळ् (क) सं. — ओखली ।

ॐॐॐॐ ओरिसु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरुप, (तद्) सं. = ॐॐॐॐ वरुप—वर्ष (तद्) ।

ॐॐॐॐ ओरै (क) सं. — समानता, साम्य, एकरूपता ; म्यान ; वचन, बात, वर्णन । क्रि. — खींच, बाहर निकाल, कर्षण कर ; लगे रह, संयुक्त रह ; छू, स्पर्श कर ; रगड़, घिस, लेपन कर, कस (जैसे कसौटी पर कसना) परीक्षा कर, जाँच ; पीस, कूट ; चिछा, पुकार, कह, बोल, उपदेश दे, वर्णन कर ; छील (जैसे पेंसिल को छीलना) ।

ॐॐॐॐ ओरगु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.— ॐॐॐॐ इसु—प्रेरणार्थक रूप ।

ॐॐॐॐ ओरंगु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरते, ॐॐॐॐ ओरते (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरपु (क) सं. — सौंदर्य ।

ॐॐॐॐ ओरळ् (क) सं. — स्नेह, प्रेम ; कराह, चीख, चिछाहट । क्रि. — स्नेह कर, प्रेम कर ; कराह, चीख, चिछा ।

ॐॐॐॐ ओरलिसु, ॐॐॐॐ ओरळ्चु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरळ्चु (क) सं. — चीखना, कराहना, चिछाना ।

ॐॐॐॐ ओरळ्चु (क) वि. — गीला, भीगा, तर, फूला हुआ (जलरोग के कारण शरीर के किसी

अंग का फूलना) । — ॐॐॐॐ कणु (क) सं. — क्लिबाक्ष, चुंधा । — ॐॐॐॐ गाल् [ॐॐॐॐ काल्] (क) सं. — पीलपाँव ।

ॐॐॐॐ ओरळ्चु (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरळ्चु (क) क्रि. — कराह, चीख, चिछा ।

ॐॐॐॐ ओरै (क) क्रि. — गीला हो, तर हो, भीग, आर्द्र हो ; बह, रसकर बह, टपक, स्ववित हो । सं. — म्यान, शस्त्रकोश ।

ॐॐॐॐ ओरैगार (क) सं. — म्यान या शस्त्रकोश बनानेवाला ।

ॐॐॐॐ ओर्काल (क) सं. — एक समय, एक काल ।

ॐॐॐॐ ओर्कुडिते (क) सं. — जल का उतना परिमाण जो एक बार पिया जा सके, अंजलि भर ।

ॐॐॐॐ ओर्कैसु (क) क्रि. — धर, पकड़ ; आलिंगन कर ।

ॐॐॐॐ ओर्गु (क) सं. = ॐॐॐॐ ओरगु—राशि, ढेर, समूह, समुदाय, श्रेणी ; अतिपरिचय, नैकट्य संबंध, स्नेह ।

ॐॐॐॐ ओर्दु (क) वि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओर्पु (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ ; बल, शक्ति ; टिकाऊ होना, उपयुक्तता, मोटापन (कपड़े का) ।

ॐॐॐॐ ओर्व (क) सं. = ॐॐॐॐ ओर्व—एक पुरुष ।

ॐॐॐॐ ओर्वुडि (क) सं. = ॐॐॐॐ ओर्वुडि । — ॐॐॐॐ इसु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओर्वे (क) अ. — एक बार, एक समय ।

ॐॐॐॐ ओर्व, ॐॐॐॐ ओर्व (क) — एक आदमी ।

ॐॐॐॐ ओर्सु (क) क्रि. — (व्या. भा.) दे. ॐॐॐॐ.

बुधर्ण ओळणे

बुधर्ण ओळणे (क) सं.— (व्या. भा.) दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— इच्छा कर, कामना कर, चाह, पसंद कर, प्रेम कर; आनंदित हो, संतुष्ट हो। सं.— चाह, अपेक्षा, समता, साम्यता। अ.— बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे—के समान, के जैसे, की तरह।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) सं.— प्रेम, प्रीति; करुणा, सहायभूति; झुकाव।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— रमणीय पुरुष, प्रियदर्शन, सबका प्यारा। — बुधर्ण ओळणे (स्त्री.लिं.)।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— कोल्हू।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) सं.— झुकाव, हिलना-डुलना; प्रेम, स्नेह।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— बुधर्ण ओळणे— आनंद, हर्ष, चित्ताकर्षक व्यक्ति या वस्तु। बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— आनंद उठा, प्रसन्नता का अनुभव कर; किसी ओर झुक, पक्ष स्वीकार कर।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे वलसे, बुधर्ण ओळणे—पलायन, शत्रु-सेना के भय से घर-बार छोड़कर भागना, स्थानांतरण।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— प्रेखोलन, दोल, झूला, हिंडोला।
 बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— प्रसन्न हो, अनुकूल हो; आनंदित हो, संतुष्ट हो; चाह, इच्छा कर, पसंद कर; ठीक हो, उपयुक्त हो, योग्य हो। — बुधर्ण इत्तु—प्रेरणार्थक रूप।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.

बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे—आनंद, हर्ष; स्नेह, प्रेम, अनुराग; कृपा, करुणा, सहाय-भूति; (राजा का) प्रसाद या मेहरवानी।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— चूल्हा; हिलना-डुलना, लहरना। क्रि.— हिल, डुल, लहर; कांप, कंपित हो, डोलायमान हो; लटक, झुक; हिलते हुए गतिमान हो, दिखावट, रूप के साथ गतिमान हो; प्रकट हो, दिखाई पड़।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) अ.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— जरीवाली छोटी धोती, उत्तरीय।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) क्रि. रू.— मुझे नहीं चाहिए, मैं नहीं चाहता।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— हर्ष, आनंद, प्रसन्नता; उत्सव, त्योहार; गौना; भाषण; रपट, समाचार; कीर्ति। — बुधर्ण कळणे (क) क्रि.— समाचार भेज।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) सं.— मसूड़ा, दाँतमांस।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— धीरे वह, स्वित हो, रस होकर वह, टपक; बहने दे, टपकने दे, स्वित होने दे। वि.— स्वित होनेवाला। — बुधर्ण गळणे (क) सं.— एक प्रकार का पत्थर जिससे जल स्वित होता है, चंद्र-शिला।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— बुधर्ण ओळणे— देहली, देहरी।

बुधर्ण ओळणे (क) अ.— बुधर्ण वसि—थोड़ा (ग्रा.)।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— दे. बुधर्ण.
 बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— आनंदित हो, प्रसन्न हो, हर्षचित्त हो, उपयुक्त हो; पसंद कर; प्रेम कर; मान, स्वीकृति दे।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— भेंट, उपहार, पुरस्कार।
 बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— हो, रह। वि.— अच्छा, सुंदर। अ.— में, अंदर, भीतर।
 बुधर्ण ओळणे (क) वि.— भीतर का, अंदर का, भीतरी। बुधर्ण ओळणे—भीतर (या घर में)।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— हाथ में ले, अपने अधिकार में कर, वश में कर।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— भीतरी द्वीप।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— गुप्त मार्ग, रहस्य-पथ।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— अपने वश में कर, (किसी वस्तु से) युक्त हो।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) सं.— किले का भीतरी भाग।
 बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— अधीन हो, दूसरे की अधीनता स्वीकार कर; ऋण में पड़।
 बुधर्ण ओळणे (क) सं.— मंदिर का गर्भ-गृह; बीच का घर; बीच की झोंपडी।
 बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— रहस्य प्रकट कर, गोपनीय बात कह।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) क्रि.— स्वागत कर, अपने दल में मिला।
 बुधर्ण ओळणे, बुधर्ण ओळणे (क) अ.— में, के अंदर, के भीतर।

७५० ओलमै (क) क्रि.— प्रसन्न कर, संतुष्ट कर, वश में कर । सं.— गुप्तचर, जासूस ।

७५० ओलतु, ७५० ओलितु (क) सं.— अच्छी बात, ठीक है, अच्छा ।

७५० ओलहु (क) सं.— भीतरी भाग, वह जो अंदर हो ।

७५० ओलदेगे (क) क्रि.— पीछे हट, हिचकिचा ; भीतर पहुँच ।

७५० ओलपहु (क) क्रि.— अधीन हो, वश में आ ।

७५० ओलपुगु (क) क्रि.— भीतर पहुँच, अंदर जा ।

७५० ओलमातु (क) सं.— अंदरूनी बात, रहस्य ।

७५० ओलमुख (क) सं.— अंतर्मुख, आत्मदर्शन, आत्मज्ञान ।

७५० ओलमुच्चक (क) सं.— ७५० ओलमुच्चग— एक कोमल पौधा, स्पर्श करते ही जिसके पत्ते मंद पड़ जाते हैं ।

७५० ओलर, ७५० ओलरु [७५० ओलर, ७५० ओलरु] (क) क्रि.— कह, बोल, बड़बड़ा, चिल्ला, गर्जन, कर, आवाज़ कर ।

७५० ओलले (क) सं.— बच्चों को दूध दिलाने का एक छोटा-सा (प्रायः चाँदी का) बर्तन ।

७५० ओलवगे (क) सं.— भीतरी शत्रु, घर का भेदी ; काम, क्रोधदि ।

७५० ओलवरते (क) सं.— ७५० ओलवरते— आनंद, प्रसन्नता ; प्रेम ।

७५० ओलवु (क) सं.— भीतर, रहस्य ; अधीनता, किसी के वश में होना ।

७५० ओलसंचु (क) सं.— अंदर ही अंदर मंत्रणा करना, षड्यंत्र ।

७५० ओलसरि, ७५० ओलसार (क) क्रि.— पीछे हट, अमफल हो, हार ।

७५० ओलसोरु (क) क्रि.— हिम्मत हार ।

७५० ओलहु (क) सं.— धन, दौलत ; सत्य, अच्छाई, श्रेष्ठता ; वश में करना ।

७५० ओलहोरगु (क) सं.— अंदर और बाहर, अंतरंग और बहिरंग ।

७५० ओलागर (सम्) सं.— भीतरी भाग ; बाग, बगीचा ।

७५० ओलितु, ७५० ओलितु (क) वि.— अच्छा, शुभ, मंगलकर, सुंदर । ७५० ओलितुकु— अच्छाई और बुराई ।

७५० ओलु (क) वि.— अच्छा, सुंदर, श्रेष्ठ । ७५० ओलु नारि (क) सं.— सुंदर स्त्री ।

७५० ओलुडि (क) सं.— अच्छी या सुंदर बात । ७५० ओलुडिकार (क) सं.— वाग्मी, सुंदर बात करनेवाला ।

७५० ओलुमोग (क) सं.— सुंदर मुखड़ा ।

७५० ओलुपेसर् (क) सं.— अच्छा नाम ।

७५० ओलु (क) सं.— प्रियतम के साथ सरस संभाषण, विभ्रम ।

७५० ओलुपु, ७५० ओलुहु (क) सं.— दे. ७५०.

७५० ओलुतन, [७५० ओलुकेतन] (क) सं.— अच्छाई ।

७५० ओलुपु (क) सं.— ७५०.

७५० ओलुवरलु (क) सं.— श्रेष्ठ रत्न, असूल्य मणि ।

७५० ओलुकि (क) सं.— ७५० उकिळ—प्याज । ७५० ओलुकितु (क) वि.— अच्छा, शुभद, मंगलकर, सुंदर, मनोहर, श्रेष्ठ ।

७५० ओलुकितु (क) वि.— दे. ७५०.

७५० ओलुकिद (क) सं.— अच्छा, भाग्यवान, ७५० ओलुकि (क) सं.— ७५० ओरल (प्रा.) दे. ७५० ; बूढ़ा सियार ।

(१) ७५० ओलुके (क) सं.— ७५० ओलुकेतन— अच्छाई । ७५० ओलुकेय, ७५० ओलुके (क) वि.— अच्छा, सुंदर । ७५० ओलुकेयवतु अच्छा आदमी, ७५० ओलुकेयवतु— अच्छी स्त्री, ७५० ओलुकेयदु— अच्छी वस्तु । ७५० ओलुकेयवरु— अच्छे लोग ।

(२) ७५० ओलुके (क) सं.— एक निर्विशेष विशेष, हुंडुभ ।

७५० ओलुकेतन, ७५० ओलुकेतन (क) सं.— दे. ७५० (१).

७५० ओलुकु (क) क्रि.— प्रवाहित हो, बह । सं.— धारा, प्रवाह ।

७५० ओलुगलु (क) सं.— मिले रहने या जुड़े रहने की स्थिति ।

७५० ओलुगु (क) क्रि.— आ, मिल, जुड़, लग, सम्मिलन हो, एक हो, एकत्रित हो । सं.— समूह, समुदाय, संघ ।

६ ओ

६ ओ— कन्नड वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर । कहीं-कहीं (सुदृणदोष अथवा अशुद्धि के कारण) ६ के बदले ७ अथवा ८ का प्रयोग दृष्टिगत होता है ; उदा.— वोकरिके वाकरिके—ओकाई, वमन । अ.— प्रश्नसूचक अव्यय, उदा.— ७७७७ एडविदुनो— टोकर खाया क्या ? (अन्य पुरुष, पु.लिं., ए.व.) ७७७७ बरेदुनो—लिखा क्या ? (अन्य पुरुष, पु.लिं., ए.व.) ७७७७ बंदुको—आयी क्या ? (अन्य पुरुष पु.लिं.,

ए.व.), बन्दिता—आया या आयी क्या? (न.लिं., ए.व.) । कृ.— एव उव के बदले ६ ओ का प्रयोग होता है, उदा.— बन्दिता बन्दिता (बन्दिता बन्दिता के बदले) = गिरनेवाला या गिरता हुआ, ६०६ आडो (६०६-आडो) —खेलनेवाला या खेलता हुआ ; वि.बो. संबोधन में इसका प्रयोग होता है, उदा.— ६ ००० ओ राम—हे राम ! ६ ००० ओ देवरे—हे भगवान (या हाय भगवान) ! ६ ६ ओ ओ=६०६ ओहो (दुहराना)—हे ! हे ! ।

६ ओ (क) क्रि.— लग, प्रेम कर, प्यार कर, परिचित रह ; (किसी से) संतुष्ट हो, प्रसन्न हो ; दया दिखा, मेहबानी कर ।

६ ओं. ६०००, ओंकार (सम्) सं.—प्रणव, एक पवित्र पद जो वेदमंत्र के प्रारंभ और अंत में कहा जाता है ।

६०० ओटे (क) सं.— एक बड़ा जंगली नरकट, मुश्कबंत ।

६०० ओक, ६०० ओकस्, ६०० ओकस (क) सं.— घर, स्थान, निवासस्थान, मकान ; छाया, रक्षा, आश्रय, शरण ; पक्षी, शूद्र ।

६०० ओक (क ?) सं.— वृक्ष विशेष, सिंदूर का वृक्ष, बल्ल का पेड़ (oak) ।

६०० ओकरि, ६०० ओकरिके, ६०० ओकाल, ६०० ओगडिके, ६०० वाकरिके, ६०० वाकडिके, ६०० ओहडिके (क) सं.— वमन, ओकाई ।

६०० ओकरिसु (क) सं.— वमन कर, ओक ।

६०० ओकरिसुह (क) सं.— वमन करना ।

६०० ओकस् (क) सं.— घर, मकान ; आश्रय, शरण ।

६०० ओकनौकस (क) सं.— गौरैया ।

६०० ओकडि, ६०० ओकुडि (क) सं.— होली खेलने का मंगल (रंगीन) जल, विवाह के समय का मंगल जल ।

६०० ओके (क) प्र.— संप्रदान कारक 'के लिए' का अर्थ द्योतक प्रत्यय, यह क्रियार्थक संज्ञा के साथ लगता है ; उदा.— ६०० ओके नोडोके (६०० ओके नोडोके के बदले) —देखने के लिए, ६०० ओके माडोके (६०० ओके माडोके के बदले) करने के लिए ।

६०० ओगटे (क) सं.— समस्या, पहेली, बुझौवल ।

६०० ओगडिसु (क) क्रि.— दे. ६०० ओगडिसु

६०० ओगरे (क) सं.— भात, भक्तम्, भोजन, पकाया हुआ चावल ।

६०० ओगु (क) क्रि.— ६०० ओगु—जा (ग्रा.) ।

६०० ओघ (क) सं.— जल की धार, जल का बहाव, जल की बाढ़ ; राशि, समूह ; शीघ्र गति (संगीत में) ।

६०० ओज (क) सं.— ६०० वाज—गुरु, आचार्य, शिक्षक ; कारीगर—बढ़ई, सोनार, लुहार ।

६०० ओज, ६०० ओजस् (सम्) सं.— प्राणबल, सामर्थ्य, शक्ति, उत्पादन शक्ति ; चमक, दीप्ति ; जल ; काव्यालंकार विशेष ।

६०० ओजायिल (क) सं.— अधिकारी, प्रभु, स्वामी, धनवान ।

६०० ओजिसु (क) क्रि.— (कोई काम) ठीक-ठीक या अच्छी तरह कर ।

६०० ओजे (क) सं.— श्रेणी, वर्ग, पंक्ति ; राशि, ढेर, समूह, सम्मेलन ; क्रमिकता, क्रम, नियमितता, उपयुक्तता, समुचितता ; सदसि-प्राय । — ६०० गेडु (क) क्रि.— क्रम या उपयुक्तता का भंग हो । — ६०० गोल (क) क्रि.— विनीत हो, नम्र हो, पालतू बन ।

— ६०० तपु (क) क्रि.— क्रम-भंग कर, गलत रास्ता अपना । — ६०० पिडि, ६०० हिडि (क) क्रि.— क्रम का अनुसरण कर, नियम के अनुसार चल । — ६०० पेरु, ६०० वेरु (क) क्रि.— क्रम में रह, ठीक-ठीक रह ।

६०० ओट (क) सं.— (६०० ओडु = दौड़ से) दौड़ना, भागना, दौड़ ; गति, तीव्रता, बड़ा वेग ; धारा, प्रवाह । — ६०० ओडु (क) क्रि.— दौड़ना, भागना । ६०० ओडु का थोड़ा थोड़ा ओट ओडिदरु काट तपुदु— दौड़ दौड़ने (या भागने) पर भी संकट (या कष्ट) दूर नहीं हुआ (कह) । — ६०० गार, ६०० गार (क) सं.— दौड़नेवाला ।

६०० ओटि, ६०० ओटे, ६०० ओटे, ६०० वाटे (क) सं.— नारियल का आधा टुकड़ा ; इमली का बीज, फलों की गुठली ; कपित्थ का आधा टुकड़ा ; बादाम आदि की खोली (छिलका) ; नरकट, मुश्कबंत ।

६०० ओटु, ६०० ओसु (क) अ.— ६०० अनितु, ६०० अटु—उतना । ६०० ओटु बाटु, ६०० ओटु बाटु—उतने के बारम्बार अंदरे ओटके मुनिकोड—'खानेके लिए आओ भाई' उतना कहने मात्र से (वह) क्रुद्ध हो गया (कह.) ।

६०० ओटे (क) सं.— दे. ६०० ; छेद, रंध, दर्रा, दरार, (किसी वस्तु का) टूटना ; आभ्रवती या आभ्रवती वृक्ष ।

६०० ओड (क) सं.— नाव, नौका ।

६०० ओडिके (क) सं.— दौड़ना, भागना, पलायन ।

६०० ओडिसु (क) क्रि.— दौड़ा, भागा, (गाड़ी आदि को) सवेग चला (प्रे.) ।

६०० ओडु (क) क्रि.— दौड़, भाग, पलायन कर । सं.— टुकड़ा, खंड, अंश, वर्तन-भाण्डे का टुकड़ा (भाण्डशकलः) ; कपाल, खोपड़ी ; कमठ की पीठ का भाग ; खपड़ा ; दौड़, भगदौड़ ।

६०० ओडुकुडि (क) सं.— दौड़ने या भागनेवाला ।

६०० ओडुविके (क) सं.— दौड़ना, भागना ।

६०० ओडे (क) सं.— चक्र, (मिट्टी का जला हुआ) पट्टा जो कुएँ या किसी घेरे के अंदर दीवार में एक के ऊपर दूसरा रखा जाता है ; अनाज रखने का मिट्टी का भाण्ड ।

ॐळ ओडू, ॐळदेंश ओडूदेश (सम्) सं.— उडीसा ।

ॐळओडू ओडूपुष्प (सम्) सं.— उडुपुष्प, जवाकुसुम (The china rose or the shoe flower).

ॐळ ओणि (क) सं.— ॐळ ओळि—पंक्ति, कतार, श्रेणी; रास्ता, राह, गली ।

ॐळ ओत (क) सं.— पढ़ना ।

ॐळ ओत (सम्) वि.— बुना हुआ, सूत से एक छोर से दूसरे छोर तक सिला हुआ ।

ॐळओत ओतप्रोत (सम्) वि.— सब ओर फैला हुआ, अंतर्व्याप्त, एक में एक बुना हुआ, गुथा हुआ; समता, समानता; अंतर ।

ॐळ ओति, ॐळओतिकेत, ॐळओळि ओतिकाट (क) सं.— गिरगिट, सरट ।

ॐळओतु (क) सं.— पढ़ना, पढ़ी हुई चीज़; वेद ।

ॐळओतु (सम्) सं.— विह्ली ।

ॐळओदन (सम्) सं.— भोजन, भात, पकाया हुआ चावल ।

ॐळओदाळि (क) सं.— पढ़नेवाला, हमेशा पढ़नेवाला, अध्ययनशील व्यक्ति, पाठक; विद्वान ।

ॐळओदिके (क) सं.— पढ़ना, पढ़ाई ।

ॐळओदिसु (क) क्रि.— पढ़ा, सिखा; शिक्षा दे, अध्यापन कर ।

ॐळओदु (क) क्रि.— पढ़, पठन कर, ज़ोर से वाचन कर, सीखी हुई बात को दुहरा, उच्चारण कर । ॐळओदु श्वास्तु, ॐळओदु श्वास्तु ओदोदु शास्त्र, इवकोदु गाळ — पढ़ना तो शास्त्र है, (पर) करना तो मत्स्यबंधन (अर्थात् बुरा काम); ॐळओदु मरुळाद कूचंभट्ट— पढ़ पढ़कर कूचंभट्ट मूर्ख हुआ! (कह.) । सं.— पढ़ना, पढ़ाई । — ॐळओदु गार, ॐळओदु गार, ॐळओदु गार (क) सं.— पढ़नेवाला, पाठक, विद्यार्थी, बुद्धिमान पाठक ।

ॐळओदुविके (क) सं.— पढ़ना, पाठ, पढ़ाई ।

ॐळओनाम (सम्) सं.— वह मंत्र जिसका प्रारंभ ओ से होता है, अक्षराभ्यास के समय पहले सिखाया जानेवाला अक्षर ओ (या ओं) ।

ॐळओप (क) सं.— रक्षक, पालक, प्रेमी, प्रिय, पति, स्वामी, प्रभु ।

ॐळओपळ (क) सं.— पत्नी, प्रियतमा, प्रेयसी ।

ॐळओपादि (क) अ.— जैसा, जैसे, (के) समान, भांति, तरह ।

ॐळओविकाल, ॐळओविकाल ओविकाल (क) सं.— बहुत प्राचीनकाल ।

(१) ॐळओम (क) सं.— ॐळओमु, ॐळओव. ॐळओवु, ॐळओवु वादक्कि, ॐळओवु वाम, ॐळओवु वीम—दीप्य, लोचमस्तक (Bishops weed).

(१) ॐळओम (सम्) सं.— दया, कृपा, सहानुभूति, सहायता ।

ॐळओयि (क) वि.बो.— अरे!, रे!, रे!

ॐळओर (क) वि.— (समस्त-पदों में) एक की संख्या का सूचक; उदा.— ॐळओरडि — एक फुट, ॐळओरडे—एक के जैसे, ॐळओरेले—एक पत्ता ।

ॐळओर, ॐळओरु (क) सं.— छेद, रंध, (में. प्र.) ।

ॐळओर, ॐळओरे (क) सं.— ढाल, उतार, एक ओर, तरफ, अंत, नोक, सिरा ।

ॐळओरगिति, [ॐळओरगिति वारगिति] (क) सं.— पति के भाई की पत्नी, जिठानी, देवरानी (यातृ) ।

ॐळओरगे, (क) सं.— ॐळओरगे, ॐळओरगे वारगे—(आयु की) समानता, समता, जोड़ा या जोरी । — ॐळओरगे यव (क) सं.— सम-वयस्क ।

ॐळओरडि (क) सं.— दे. ॐळओर; असमता, अंतर, भिन्नता ।

ॐळओरण (क) सं.— पंक्ति, कतार, श्रेणी । — ॐळओरु (क) क्रि.— पंक्ति में हो या पंक्ति में रख ।

ॐळओरिगे (क) सं.— दे. ॐळओरु ।

ॐळओरु (क) क्रि.— सोच, विचार कर, विश्लेषण कर; पूछताछ कर; = ॐळओरु होरु—लड़, जूझ, संघर्ष कर, युद्ध कर ।

ॐळओरे (क) सं.— एक तरफ या ओर, ढाल, उतार, टेढ़ापन, वह जो झुका हुआ हो, तिरछा; वक्रता, अशुद्धि, गलती; असमता । — ॐळओरे (क) सं.— टेढ़ा हाथ । — ॐळओरे किवि—टेढ़ा कान । — ॐळओरे कट्टु, ॐळओरे गट्टु (क) क्रि.— एक तरफ झुकाकर बांध ।

ॐळओरे कण्णु, ॐळओरे गण्णु (क) सं.— टेढ़ी या तिरछी आँख, एक ओर झुकी हुई आँख, पक्षपात । — ॐळओरे मूगु (क) सं.— वक्र नाक । — ॐळओरे मो (क) सं.— ऐंठा हुआ चेहरा, असुंदर मुख ।

ॐळओरे (क) सं.— घर की दीवारों के निचले भाग में लाल रंग लगाना । — ॐळओरे गार [ॐळओरे गार] (क) सं.— रंग ढालनेवाला, चित्रकार ।

ॐळओरु (क) अ.— के जैसे, के समान, की भांति ।

ॐळओरु, ॐळओरु (क) क्रि.— झुक, आकर्षित हों, (किसी के प्रति प्रेम के कारण) खिंच जा, प्रेम कर; जलक्रीडा कर, स्नान कर, नहा । — ॐळओरु ओलाट (क) सं.— लटकना; स्नेह, प्रेम, मेत्री । ॐळओरु ओलाडु (क) क्रि.— पसंद कर, प्रेम कर; नहा-जलक्रीडा कर । ॐळओरु ओलाडिसु (क) क्रि.— नहला, स्नान करा, जलक्रीडा करा (प्रे.) ।

ॐळओरु (क) सं.— सेवा, प्रभुभक्ति; दरबार, राजसभा; दर्शक, श्रोतागण; शहनाई, वाद्यविशेष । — ॐळओरु (क) क्रि.— राजसभा कर; सेवा कर; उपस्थित रह । ॐळओरु ओलंगोडु (क) क्रि.— दे.

ಓಲಗ ಓ. ಓಲಗಂ ಪರಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ರಾಜಸಭಾ ಯಾ ದರಬಾರ ವಿಸರ್ಜಿತ ಕರ | ಓಲಗ ಪಾಲೆ ಅಲಗ ಶಾಲೆ (ಕ) ಸಂ.— ರಾಜ-ದರಬಾರ, ರಾಜಸಭಾ-ಮಂದಿರ, ಬಡ್ಡಾ ಹಾಲ್ (Hall). ಓಲಗಾರ್ಡ್ ಅಲಗಾರ್ತೆ (ಕ) ಸಂ.— ಸೇವಾ ಕರ್ನೇ-ವಾಲಾ, ಪ್ರಭುಭಕ್ತಿ ಕರ್ನೇವಾಲಾ | ಓಲಗಾರ್ಡ್ ಅಲಗಾರ್ತೆ (ಕ) ಸಂ.— ಸೇವಕ, ಅನುಚರ, ಸಹಾಯಕ | ಓಲಗಿಸು ಅಲಗಿಸು. ಓಲಯ್ಯ ಅಲಯ್ಯ, ಓಲ ಎಸು ಅಲವಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಸೇವಾ ಕರ, ಅನುಗಮನ ಕರ; ಏಕತ್ರಿತ ಹೊ, ಏಕ ಸ್ಥಾನ ಮೆ ಮಿಲ; (ಕಿಸೀ ಕೀ ಆರ) ಷುಕ | ಓಲಿಸು ಅಲಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ. = ಓಲಿಸು ಪಾಲಿಸು —ತುಲನಾ ಕರ, ಉಪಮಾ ಕರ, ಮಿಲಾ | ಓಲಿಡು ಅಲಿಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಗಿರವೀ ರಖ, ಬಂಧಕ ರಖ; ಸತ್ಕಾರ ಕರ | ಓಲ ಅಲ (ಕ) ಕ್ರಿ.— (ಕಿಸೀ ವಸ್ತು ಕೆ) ಸಮಾನ ಹೊ; ಷುಕ, ತಿರಣಾ ಹೊ, ಅಸಮ ಹೊ; ಲಡಕ, ಷುಲ | ಸಂ.— ಜ್ಞಾಮಿನ, ಜ್ಞಾನತ, ಪ್ರತಿಭೂ (Security); ಜ್ಞಾನತ ಯಾ ಪ್ರತಿಭೂ ಕೆ ರೂಪ ಮೆ ಶತ್ರು ಕೊ ಪ್ರದತ್ತ ವ್ಯಕ್ತಿ; ಬಂಧಕ, ನ್ಯಾಸ | ಓಲಗಾರ್ಡ್ ಅಲಗಾರ್ತೆ (ಕ) ಸಂ.— ಜ್ಞಾನತ ದೇನೇ-ವಾಲಾ, ಉತ್ತರದಾಯಿ, ಜ್ಞಾನಿದಾರ; ಜ್ಞಾನತ ಕೆ ರೂಪ ಮೆ ಶತ್ರು ಕೊ ಪ್ರದತ್ತ ಪುರುಷ | ಓಲಗಾರ್ಡ್ ಅಲಗಾರ್ತೆ—ಓ. ಲಿಂ. | ಓಲೆ ಅಲೆ (ಕ) ಸಂ.— ತಾಡ ಕಾ ಪತ್ತಾ ಜೊ ಲಿಖನೇ ಕೆ ಕಾಮ ಮೆ ಖಾತಾ ಹೆ, ತಾಲಪತ್ರ; ಷಿರಿಯೆ ಕೆ ಪಹನನೇ ಕಾ ತಾಡ ಕೆ ಪತ್ತೆ ಕಾ ಕರ್ಣಾಭರಣ, ಕರ್ಣಿಕಾ; ಸೋನೇ ಕಾ ಕರ್ಣಾಭೂಷಣ, ಬಾಲಿಯೆ; ಉತ್ತರೀ ಕೆ ಖಾಕಾರ ಕಾ ಶಕಟ (ಗಾಡಿ) ಕಾ ವೆದವಾ.—ಓಲಕ ಪುಸ್ತಕ (ಕ) ಸಂ.— ತಾಲಪತ್ರೆಯೆ ಕೀ ಪುಸ್ತಕ | ಓಲಯ್ಯನರ ಅಲೆಯ-ಮರ (ಕ) ಸಂ.— ತಾಡ, ತಾಲವೃಕ್ಷ | ಓಲೆಕಾರ್ಡ್ ಅಲೆಕಾರ್ಡ್ [ಕಾರ್ಡ್ ಕಾರ್] (ಕ) ಸಂ.— ತಾಲಪತ್ರ ಲೆ ಜಾನೇವಾಲಾ ಸೇವಕ, ಪತ್ರವಾಹಕ, ಸಂದೇಶವಾಹಕ | ಓಲೆಭಾಗ್ಯ ಅಲೆಭಾಗ್ಯ (ಕ) ಸಂ.— ಕರ್ಣಾಭೂಷಣ

ಪಹನನೇ ಕಾ ಸೌಭಾಗ್ಯ, ಸುಹಾಗ, ಸುಹಾಗಿನ ರಹನಾ | (೧) ಓವ ಅಲ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಓವ. (೨) ಓವ ಅಲ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಓವ (೧). ಓವೆಡೆ ಅಲವೆಡೆ (ಕ) ಕ್ರ.— ಪ್ರೇಮ ನ ಕರ, ರೋಷ ಯಾ ಕ್ರೋಧ ಸೆ | ಓವೆರಿ ಅಲವರಿ (ತದ್) ಸಂ.— ಉಪಗೃಹ (ತದ್); ಗರ್ಭಗೃಹ, ಘರ ಕಾ ಭೀತರೀ ಭಾಗ, ಕಮರಾ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಓವ (೧) ಕ್ರಿ.— ಪಾಲನ ಕರ, ರಕ್ಷಾ ಕರ, ದೆಖರೆಖ ಕರ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— ಓವೆ ಅಲವೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪೌಠಾ, ಗುಲಮ; ದವಾಡೆ, ದವಾ; ಪೌಠಾ-ವಿಶೇಷ ಜೊ ಪಕನೇ ಪರ ಸುಖ ಜಾತಾ ಹೆ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— ಚಂದ್ರಮಾ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಧರ, ಹೆಂಟ | —ಓವೆ ಪಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚುಂಬನ, ಚೂಮನಾ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— ಅಧರೆಯೆ ಕೆ ಸಮಾನ ಲಾಲ ಪುಷ್ಪ, ಬಂಧುಕ ಕುಸುಮ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಧರೆಯೆ ಕಾ | ಸಂ.— ಅಧರೆಯೆ ಕೀ ಸಹಾಯತಾ ಸೆ ಉಚರಿತ ಹೋನೇ-ವಾಲೆ ಅಕ್ಷರ— ಉ, ಊ, ಪ, ಫ, ಬ, ಭ, ಮ | ಓವೆ ಅಲವೆ, ಓವೆ ಅಲವೆ, ಓವೆ ಅಲವೆ, ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— ಏಕ ಅಲವೆ ಷುಕನಾ, ಷುಕಾವ, ಉತ್ತಾರ, ಡಾಲ, ಅಸಮತಾ, ಅಸಮ (ಏಕ ಅಲವೆ ಷುಕಾ ಡುಖಾ) ಬೋಜಾ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— ಏಕ ಅಲವೆ ಷುಕೇ ರಹನೇ ಕೀ ಸ್ಥಿತಿ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಷುಕ, ಏಕ ಅಲವೆ ಹೊ, ಏಕ ಅಲವೆ ಸುಡ; ಪಿಲೆ ಹಟ, ವಾಪಸ ಲೆ; ರಾಸ್ತಾ ದೆ, ಜಗಹ ದೆ, ಹವಾಲೆ ಕರ, ಸ್ವೀಕಾರ ಕರ; ದೂರ ಹೊ, ಹಟ, ನಿಕಲ, ಅಲಗ ಹೊ; ಪೃಥಕ ಕರ; ಹಿಚಕಿಚಾ; ರೊಕ, ಟೊಕ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ವಿ.— ಉತ್ತನಾ, ಉತ್ತ ಪರಿಮಾಣ ಕಾ; ಸವ, ಸಾರಾ, ಪೂರ | ಓವೆ ಅಲವೆ, ಓವೆ ಅಲವೆ, ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಅ.— ಕೆ ಲಿಪ್, ಕೆ ವಾಸ್ತೆ, ಕೆ ಅರ್ಥ, ಕೆ ನಿಮಿತ್ತ, ಕೆ ಕಾರಣ |

ಓವೆ ಅಲವೆ, ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ವಿ.ಬೊ.— ಅಹಾ!, ಏ!; ಏಏ!, ಸುಕ ಸುಕ! ಓವೆ ಅಲವೆ ಅಲವೆ (ಡುಹರಾನಾ) | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— [ಓವೆ ಅಲವೆ-ತಮಿಲು] —ನಿಧುವನ, ಮೈಥುನ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— ಕ್ರಮಿಕ ಶ್ರೇಣಿ ಯಾ ಪಂಕ್ತಿ, ಗುನಾ, ಸಂಖ್ಯಾ, ಕುಲ, ಸಮೂಹ | ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ವಿ.— ಸಾತ ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ ಕಾ ಸೂಚಕ (ಸಮಸ್ತ-ಪದೆಯೆ ಮೆ) | ಓವೆ ಅಲವೆ, ಓವೆ ಅಲವೆ (ಕ) ಸಂ.— ಓವೆ ಅಲವೆ ಪೊಲ್, ಓವೆ ಅಲವೆ ಪೊಲ್ (ಓವೆ ಅಲವೆ) ಹೊಲ್— ಖಾಧುನಿಕ ಕನ್ನಡ—ಡುಕಡಾ, ಅಂಶ, ಸಂಪಡ |

ಓ ಅ

ಓ ಅ—ಕನ್ನಡ ವರ್ಣಮಾಲಾ ಕಾ ಚೌದಹವೆ ಅಕ್ಷರ | ಓ ಅ ಕೆ ಬದಲೆ ಅ ಅಲವೆ ಯಾ ಅ ಅವ ಕಾ ಭೀ ಪ್ರಯೋಗ ಡ್ರಫ್ಟ್ ಹೆ (ಉದಾ.— ತಾಯನ ತಾಯನೇ—ತಾಯನ ತಾಯನೇ=ಮಾಯಕಾ) | ಓ ಅಕ್ಷ, ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಬೆಲೆಯೆ ಕಾ ಷುಂಟ | ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸ್ತೊಮ, ಸಮೂಹ, ಸಮುದಾಯ | ಓ ಅಕ್ಷ, ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಯೋಗ್ಯತಾ, ಉಪಯುಕ್ತತಾ, ಲೆಲಿನತಾ, ಸಚಾಡೆ; ಸಂತೋಷ, ನ್ಯಾಯ | ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಜೈನ ಮುನಿಯೆ ಕಾ ಏಕ ವ್ರತ—ಮೌನವ್ರತ | ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ವಿ.— ಉತ್ತರ ದಿಶಾ ಸೆ ಸಂಬಂಧಿತ | ಸಂ.—ಉತ್ತರಾ ಕಾ ಪುತ್ರ ಪರಿಕ್ಷಿತ್ | ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ರಾಜಾ ಉತ್ತಾನಪಾದ ಕೆ ಪುತ್ರ, ಧ್ರುವ, ಧ್ರುವನಕ್ಷತ್ರ | ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಉತ್ತಮತಾ, ಉತ್ತಮ; ಚಿಂತಾ, ವ್ಯಾಕುಲತಾ, ವೇಚಿನಿ | ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ರಸೋದಯ | ಓ ಅಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪೆಡ್, ಭೋಜನ-ಭಡ್ಡ |

डिवाय्य औदार्य (सम्) सं.— उदारता ; कुलीनता, बड़प्पन ।

डिवाय्य औदासीन, डिवाय्य औदासीन्य (सम्) सं.— उपेक्षा, उदासीनता, निरपेक्षता ।

डिवाय्य औदुंबर (सम्) सं.— उदुंबर, गूलर का वृक्ष ; उदुंबर से संबंधित ।

डिवाय्य औदत्य (सम्) सं.— उद्वण्डता, ठिठाई, धृष्टता, अक्खड़पन ।

डिवाय्य औद्राहिक (सम्) वि.— विवाह संबंधी । अ.— विवाह के समय कन्या को दिये जानेवाले उपहार ।

डिवाय्य औन्नत्य (सम्) सं.— ऊँचाई, उच्चता, बड़ाई, बड़प्पन ।

डिवाय्य औपकार्य (सम्) सं.— बासा, खेमा, डेरा ।

डिवाय्य औपचारिक (सम्) वि.— उपचार संबंधी, गौण, अग्रधान, जो केवल कहने-सुनने के लिए हो ।

डिवाय्य औपधर्म्य (सम्) सं.— मिथ्या सिद्धांत, मिथ्या उपदेश, अपकृष्ट धर्म ।

डिवाय्य औपाधिक (सम्) वि.— कपटी, धोखेबाज़ ।

डिवाय्य औपपत्तिक (सम्) वि.— तैयार, पहुँच के भीतर, उपयुक्त, योग्य ।

डिवाय्य औपम्य (सम्) सं.— उपमात्व, साम्य, तुलना ।

डिवाय्य औपयिक (सम्) वि.— योग्य, उचित ; ठीक उपाय ।

डिवाय्य औपासन, डिवाय्य औपासने (सम्) सं.— गृह्याग्नि, अग्निपूजा, उपासना से संबंधित दैनिक कर्म ।

डिवाय्य औरभ्र (सम्) सं.— ऊनी वस्त्र, ऊनी कंबल ।

डिवाय्य औरभ्रक (सम्) सं.— भेड़ों का छुंड ।

डिवाय्य औरस (सम्) वि.— छाती से उत्पन्न, विहित । सं.— विहित पुत्र ।

डिवाय्य और्ध्वदेहिक, डिवाय्य और्ध्वदेहिक (सम्) सं.— प्रेतकर्म, अंत्येष्टि कर्म ।

डिवाय्य और्व (सम्) सं.— भृगुवंशी एक प्रसिद्ध ऋषि ; बडवानल । — अग्नि (सम्) सं.— बडवानल ।

डिवाय्य औलक्य (सम्) वि.— उल्लू से संबंधित । सं.— वैशेषिक दर्शन के प्रचारक कणाद का नाम ।

डिवाय्य औषध (सम्) सं.— जड़ी-बूटी, दवाई ।

डिवाय्य औषधाचार्य (सम्) सं.— भगवान् धन्वन्तरी ।

डिवाय्य औषधि (सम्) सं.— अशुभ, अवुक्ति (तद्) दवा, दवाई ।

डिवाय्य औष्टक (सम्) सं.— ऊटों का समुदाय ।

डिवाय्य औष्ट्य (सम्) वि.— अधरों से संबंधित । — अक्षर वर्ण (सम्) सं.— अधरों की सहायता से उच्चरित होनेवाले अक्षर—उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म ।

डिवाय्य औसद (तद्) सं.— औषधम् (तद्) ।

क क

क क—कन्नड वर्णमाला का पंद्रहवाँ अक्षर, व्यंजनों में इसका प्रथम स्थान है ।

क (सम्) सं.— ब्रह्मा ; जीव, आत्मा ; सूर्य ; पवन ; सिर ; जल, पानी ; आनंद, हर्ष ; एक की संख्या ।

कं (सम्) सं.— ब्रह्मा ; जीव, आत्मा ; क्षेत्र ; सूर्य ; पवन, वायु, मारुत ; सिर ; जल, उदक ; स्वर्ग ; अग्नि ; इंद्रिय ; व्योम, आकाश ; यति, संन्यासी ; कीर, तोता ; मयूर ; आनंद, प्रसन्नता, सुख ; शून्य (Zero) ।

कं (क) सं.— कण्—आँख । कंगड (क) सं.— आँखें (कं का व.व.) ।

कं कं कंकण (क) सं.— आँख । कंगड (क) सं.— आँखें (कं का व.व.) ।

कंगड़े, कंगड (क) सं.— एक झांकी, एक दृष्टि, कटाक्ष । कंगण (क) क्रि.— कंगण, कंगण, कंगण—आँखों से देख । कंगणिसु (क) क्रि.— कंगणिसु—दिखा (प्रे.) । कंगणिसु (क) क्रि.— कंगणिसु—आँख खराब या नष्ट कर, अंधा कर ; भ्रम में डाल । कंगणिसु (क) क्रि.— कंगणिसु—आँखें खो, अंधा बन ; भ्रम में पड़ । कंगणिसु (क) क्रि.— कंगणिसु—प्रकाशमान हो, दिखाई पड़, आँखों को आकर्षित कर ।

कंक (सम्) सं.— सारस, बगुला ; यम ; मिथ्या या बनावटी ब्राह्मण ; युधिष्ठिर का नाम, जिन्होंने अज्ञातवास के समय राजा विराट के यहाँ अपना नाम कंक ही रखा था ; एक प्रकार का आम ।

कंकट, कंकटक (सम्) सं.— कवच ; अंकुश ।

कंकडि (तद्) सं.— कर्कटि (तद्) ; ककड़ी विशेष ।

कंकण (सम्) सं.— कलाई में पहनने का आभूषण विशेष, कड़ा, विवाहसूत्र ; मेखला, कमरबंद ; कौस्तुभ, छाती पर पहनने का आभूषण ; साधारणतया कोई भी आभूषण ; चोटी ; पानी की बूँद । — कंकण ग्रहण (सम्) सं.— आंशिक अथवा वार्षिक (सूर्य-चंद्र) ग्रहण । — कंकण वन्द (सम्) वि.— कंकण पहना हुआ, तैयार, कार्य में उद्यत ।

कंकणीक (सम्) सं.— बजनेवाला कलाई का आभूषण ।

कंकत, कंकतिके (सम्) सं.— कंधी ।

कंकपत्र (सम्) सं.— पंखोंवाला एक प्रकार का वाण, तीर ।

कंकमाले (सम्) सं.— एक बाजा,

वाद्यविशेष ; ताली बजने का समय ।
 ॐॐॐॐॐ कंकमुख (सम्) सं.— चिमटा ।
 ॐॐॐॐॐ कंकर (सम् ?) वि.— दुष्ट, नीच, बुरा ।
 ॐॐॐॐॐ कंकरि (तद्) सं.— खंकरि (तत्) ; बड़ा चाबुक ।
 ॐॐॐॐॐ कंकरिके (तद्) सं.— कंकणिका (तत्) ; दे. ॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐ कंकर (अ.दे.) सं.— कंकड़ (हिं.) ।
 ॐॐॐॐॐ कंकल (तद्) सं.— कंकण (तत्) ; दे. ॐॐॐॐॐ (१) ।
 ॐॐॐॐॐ कंकल, ॐॐॐॐॐ कंकल, ॐॐॐॐॐ, कंकल, ॐॐॐॐॐ कंकल, ॐॐॐॐॐ कंकल [ॐॐॐॐॐ कंकल, ॐॐॐॐॐ कंकल—आधुनिक कन्नड] (क) सं.— काँख ।
 ॐॐॐॐॐ कंकाल (सम्) सं.— उठरी, अस्थि-पंजर, हड्डियों का ढाँचा । — ॐॐॐॐॐ धर (सम्) सं.— शिव । — ॐॐॐॐॐ पाणि (सम्) सं.— शिव । — ॐॐॐॐॐ मालि (सम्) सं.— शिव ।
 ॐॐॐॐॐ कंकालि (सम्) सं.— शिव जी के एक अनुचर का नाम ।
 ॐॐॐॐॐ कंकि, ॐॐॐॐॐ कंकु (क) सं.— भूसा अलगाया हुआ ज्वार या कोई अनाज ।
 ॐॐॐॐॐ कंकेलि, ॐॐॐॐॐ कंकेलि (सम्) सं.— अशोक वृक्ष ।
 ॐॐॐॐॐ कंकोष्टि (सम्) सं.— लता विशेष ; पटुपर्णि, हैमवती पौधा ।
 ॐॐॐॐॐ कंगने (क) अ.— अधिक, बहुत, समृद्ध रूप से ।
 ॐॐॐॐॐ कंगाल, ॐॐॐॐॐ कंगाल (क) सं.— अंधा मनुष्य ।
 ॐॐॐॐॐ कंगारु, ॐॐॐॐॐ कंगाल, ॐॐॐॐॐ कंगु (क) सं.— असंतुष्टि, असंतोष ; क्रोध ।
 ॐॐॐॐॐ कंगाल (अ.दे.) वि.— कंगाल (हिं), दरिद्र, गरीब ; खराब ; निर्बल, असार (जैसे भूमि) । ॐॐॐॐॐ कंगाल—दरिद्र, भिक्षुक या निर्बल पुरुष (मै.प्र.) ।

ॐॐॐॐॐॐॐ कंगालतन (अ.दे.) सं.—दारिद्र्य, गरीबी ; दीनता, विपत्ति ।
 ॐॐॐॐॐ कंगालि (अ.दे.) सं.— दीनता, विपत्ति ; दे. ॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐ कंगालु (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐ कंगाल (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐ कंगालि (अ.दे.) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ ।
 (१) ॐॐॐॐॐ कंगु (क) सं.— बड़ा विस्मय, अत्यंत आश्चर्य ; दे. ॐॐॐॐॐ ; अरुचि (साधारणतया इसका प्रयोग तेल के जलते समय उसकी दुर्गंध को सूचित करने के लिए किया जाता है) ; ज्वलनि या ज्योतिष्मति (cardispermum halicacabum) ।
 (२) ॐॐॐॐॐ (तद्) सं.— क्रमुक (तत्) ; सुपारी का पेड़ ; प्रियंगु (The Indian Millet).
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंगुगे, ॐॐॐॐॐॐॐ कंगुगे, ॐॐॐॐॐॐॐ कंगुदि (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ (२) ।
 ॐॐॐॐॐ कंच, ॐॐॐॐॐ कंचु (तद्) सं.— कांस्य (तत्) ; काँसा । — ॐॐॐॐॐॐॐ मिंचागु (क) क्रि.— अचानक चमक, प्रकाशित हो या दिखाई पड़ ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंचुक (सम्) सं.— कवच ; चोली, जाकट ; सर्पचर्म, केंचुली ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंचुकांग (सम्) सं.— एक प्रकार की चोली ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंचुकि (सम्) सं.— कवचधारी ; चोली पहनी हुई (स्त्री) ; जनानी ड्योडी का रक्षक, शयन गृह का परिचारक, अंतःपुर का रक्षक ; सांप ; चोली ; कवच ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंचुकित (सम्) वि.— कवचधारी, चोली पहनी हुई (स्त्री) ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंचुगार, ॐॐॐॐॐॐॐ कंचगार [गार गार] (तद्) सं.— ठेरा ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंज (सम्) सं.— कमल, पद्म ; ब्रह्मा । — ॐॐॐॐॐॐॐ गर्भ (सम्) सं.— विष्णु । — ॐॐॐॐॐॐॐ ज (सम्) सं.— ब्रह्मा । — ॐॐॐॐॐॐॐ जात (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐॐ — (ॐॐॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐॐॐॐ

(कं) जोड़व (सम्) सं.— नारद । — ॐॐॐॐॐ नाम (सम्) सं.— विष्णु । — ॐॐॐॐॐ नाल (सम्) सं.— कमल का डंडा । — ॐॐॐॐॐ नेत्र (सम्) सं.— कमल (के समान) नेत्र-वाली स्त्री । — ॐॐॐॐॐ बाण (सम्) सं.— कामदेव । — ॐॐॐॐॐ भव (सम्) सं.— ब्रह्मा ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजर (सम्) सं.— उदर, पेट ; हाथी ; सूर्य ; ब्रह्मा ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजरीट (तद्) सं.— खंजरीट (तत्) ; खंजन पक्षी ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजलोचन (सम्) सं.— कमल नेत्रवाले, विष्णु ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजवैरि (सम्) सं.— चंद्रमा ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजशर (सम्) सं.— कामदेव ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजसख (सम्) सं.— सूर्य ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजसघे (सम्) सं.— लक्ष्मी ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजात (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजास (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजारि (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजासन (सम्) सं.— ब्रह्मा ।
 ॐॐॐॐॐॐॐ कंजास्ये (सम्) सं.— कमलमुखी (स्त्री) ।
 ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ कंजोदय, ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ कंजोद्भव (सम्) सं.— ब्रह्मा ।
 ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ कंजोदर (सम्) सं.— विष्णु ।
 ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ कंठ (तद्) सं.— कंठ (तत्) ; तालपत्र पर लिखने के लिए प्रयुक्त लोहे की लेखनी ; बर्तन का कंठ ; कंठक ।
 ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ कंठक (सम्) सं.— काँटा, सूई या भालपिन की नोक ; पुलक, रोमांच ; तकलीफ देनेवाला, शत्रु ; व्याकुलता, व्यग्रता या विघ्न का कारण, पाप ; युद्ध, खतरा ; लुब्धक, व्याध, शिकारी । — ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ छेद्य (सम्) सं.— काँटे काटनेवाला आयुध । — ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ द्वार (सम्) सं.— विघ्नदायक द्वार (दरवाज़ा) । — ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ फल (सम्) सं.— कटहल ।

च०छ०० कंटकि (सम्) सं.— चुभनेवाली वस्तु, तंग करनेवाली स्त्री, एक पौधा विशेष ।

च०छ०० कंटणे, च०छ०० कंटले (क) सं.— डरना, भीत होना, पीछे हटना ।

च०छ०० कंटणिसु, च०छ०० कंटळिसु (क) क्रि.— डर, भीत हो, हिम्मत हार, व्याकुल हो ।

च०छ०० कंटि (सम्) सं.— कांटेदार वृक्ष । (तद्) सं.— कंटिका (तत्); गले में पहनने का सोने का हार ।

च०छ०० कंटिकफल (सम्) सं.— दे. च०छ०० क००.

च०छ०० कंटिके, च०छ०० कंटिके, च०छ०० कंडु (क) सं.— लपेटा गया धागा, वेम, करघा ।

च०छ०० कंटिगे, च०छ०० कंटिके (तद्) सं.— कंटिका (तत्) ।

च०छ०० कंटिसु (क) क्रि.— दुःख दे, कष्ट दे ।

च०छ०० कंटु (क) सं.— कुएँ की दीवार पर लगा आँखुआ ; कुएँ की सीढ़ियों का नीचे उतरने का डंडा ; बर्तन का कोर या किनारा ; बर्तन का तल ।

च०छ०० कंठ (सम्) सं.— गला, गर्दन ; बर्तन का गर्दन ; लोहे की लेखनी ; स्वर, नाद, ध्वनि ; शरीर, देह ; सामीप्य, पड़ोस ; तट, किनारा । — गंठ गत (सम्) वि.— गले में स्थित, गले में आया या अटका हुआ । — गंठ गरल (सम्) सं.— शिव । — गंठ पाठ (सम्) सं.— कंठस्थ करना । — गंठ भूषे (सम्) सं.— गले में पहनने की छोटी माला । — गंठ माले (सम्) सं.— गले में पहनने का हार । — गंठ लज्ज (सम्) वि.— गले में लगा हुआ, आलिंगित । — गंठ शोष (सम्) सं.— च०छ०० कंटशोषण— गला सूखना, निरर्थक बात, व्यर्थ की अभिव्यक्ति । — गंठ सूत्र (सम्) सं.— मांगल्य, मंगलसूत्र ।

च०छ०० कंठि (सम्) सं.— गले में पहनने का हार ।

च०छ०० कंठिके (सम्) सं.— एकावली, गुंज ।

च०छ०० कंठीरव (सम्) सं.— कंठ से गर्जन करनेवाला. सिंह, शेर ; हाथी ; कवूतर । — कंठीरव (सम्) सं.— मैसूर के एक राजा का नाम । च०छ०० कंठीराय = च०छ०० कंठीरवराय ।

च०छ०० कंठीसर (सम्) सं.— दे. च०छ००.

च०छ०० कंठीष्ट (सम्) सं.— ७, ६ और ६ वर्ण ।

च०छ०० कंड (तद्) सं.— खंड (तत्), मांस-खंड ; टुकड़ा, काटना, काटना या तोड़ना । कांड दे. च०छ००.

च०छ०० कंड (क) सं.— मांस, गोश्त । क्रि.रू.= च०छ०० कंड्य, च०छ०० कंड्या— देखा क्या (तूने या तुमने) ।

च०छ०० कंडग, च०छ०० कंडिग. च०छ०० कंडुग (क) सं.— नापविशेष, लगभग २८ मन (एक मन = ४८ सेर) का परिमाण ।

च०छ०० कंडणे (क) सं.— अंतिम निर्णय, सुलह ; संधि ।

च०छ०० कंडने (क) सं.— दे. च०छ०० (मै-प्र.) ।

च०छ०० कंडपट (तद्) सं.— काण्डपट (तत्) ; कनात, पर्दा ।

च०छ०० कंडपड (तद्) सं.— कांडपट (तत्) ; दे. च०छ००.

च०छ०० कंडरणे (क) सं.— शिल्पकलाकृति, शिल्पकला का काम, नक्काशी ।

च०छ०० कंडरिसु (क) क्रि.— अंकित कर, चित्रित कर, नक्काशी कर, काट, खंडित कर ।

च०छ०० कंडरे (तद्) सं.— कंडरा (तद्) ; नस, कंठ की प्रधान नस ।

च०छ०० कंडलि (क) सं.— चीर फाड़ करने का आयुध विशेष, एक प्रकार का चिमटा ।

च०छ०० कंडि, च०छ०० किंडि, च०छ०० गंडि (क) सं.— छोटी खिड़की, रंग, छेद, खुला स्थान ।

च०छ०० कंडिके (क) सं.— टुकड़ा, खंड ; नाल, कांड ; वेम, करघा, वायदण्ड ।

च०छ०० कंडित (क) अ.— खंडित खंडित— विलकुल, नितांत, सचमुच, दृढ़ रूप से । — च०छ०० (क) सं.— वह, जो न्याय और सत्य की बात कहता है ।

च०छ०० कंडिसु (क) क्रि.— निश्चित कर (साधारणतया किसी वस्तु का मूल्य निश्चित करना) ।

च०छ०० कंडु (क) सं.— वेम, वायदण्ड, करघा । क.— ('काण्' काण् अथवा च०छ०० काणु = देख' से) देखकर ।

च०छ०० कंडुग (क) सं.— दे. च०छ००.

च०छ०० कंडूति (सम्) सं.— खुजलन, खुजली, खाज ।

च०छ०० कंडूयन (सम्) सं.— मलना, खुजलना ; खुजली ।

च०छ०० कंडूयमान (सम्) सं.— मलना, खुजलना ।

च०छ०० कंडूये (सम्) सं.— दे. च०छ००.

च०छ०० कंडेय (क) सं.— एक प्रकार का खड्ग ।

च०छ०० कंडोल (सम्) सं.— बाँस की टोकरी जिसमें अनाज रखा जाता है ; ऊँट ।

च०छ०० कंत, च०छ०० कंतु (क) सं.— किश्त (Instalment), ऋणभाग ।

च०छ०० कंति (क) सं.— तेल और काली पुड़िया का मिश्रण जो शिवलिंग तथा नंदी पर लेपन करने के काम में आता है ।

च०छ०० कंति (सम्) सं.— कन्नड की एक प्राचीन कवयित्री का नाम ; संन्यासिनी, भिक्षुकी (भिक्षुणी) ।

च०छ०० कंतु (क) सं.— दे. च०छ००. क्रि.— अस्त हो, डूब ।

च०छ०० कंतु (सम्) सं.— प्रसन्नता ; कामदेव ; हृदय ; धान्यागार, खत्ती ।

च०छ०० कंतुक, च०छ०० कंदुक (सम्) सं.— गेंद ।

च०ड०सि० (सम्) सं.— विष्णु ।
 च०ड०सु०च०रं कंतुमर्दन, च०ड०सु०० कंतुवैरि,
 च०ड०ड० कंतुहर (सम्) सं.— शिवजी ।
 च०ड० कंते (क) सं.— गडरी (घास आदि की) ।
 च०ड० कंते (तद्) सं.— कथा (तत्) ; व्यर्थ की
 वस्तु या बात । — च०ड० विसाडु (तद्)
 क्रि.—पुराने कपड़े फेंक ; मर जा (सुह.) ।
 = च०ड० पुराण (तद्) सं.— निस्तार बात
 या विवरण ।
 च०ड० कंतेग (तद्) सं.— कथाधारिन् (तत्) ;
 कथरी पहननेवाला, योगी, भिक्षुक ।
 च०ड० कंथे (सम्) सं.— कथा, कथरी, कथड़ी ;
 दीवार । च०ड०य० कंथेयलि
 कलिनाथय्य — दीवार में कलिनाथय्या
 (भगवान्) ! (कह.) ।
 च०ड० कंद (क) सं.— छोटा शिशु, मुन्ना, मुन्नी,
 लाल ; एक वृत्त का नाम । च०ड०य०
 कंदय्य=च०ड०. (सम्) सं — कंदमूल,
 खाने योग्य जड़ ; मेघ, बादल, गाँठ,
 गुमड़ी ; लहसन ; गर्दन का निचला भाग ।
 च०ड० कंदक (अ.दे.) सं.— खंदक, गड्ढा,
 किले के चारों ओर की खाई ।
 च०ड० कंदणिके (क) सं.— खाली बोरा ।
 च०ड० कंदमूल (सम्) सं.— मूली,
 शकरकंद आदि जड़ें ।
 च०ड० कंदर (सम्) सं.— गुफा, घाटी,
 खुखाल ।
 च०ड० कंदरि, च०ड० कंदरा, च०ड० कंदरे
 (सम्) सं.— गुफा, घाटी ।
 च०ड० कंदर्प (सम्) सं.— कामदेव, मन्मथ ।
 — च०ड० जनक (सम्) सं.— विष्णु । —
 च०ड० जात (सम्) सं.— एक वृत्त का
 नाम । — च०ड० रिपु (सम्) सं.— शिव ।
 — च०ड० वैरि, च०ड० अरि (सम्) सं.—
 शिव ।
 च०ड० कंदल, च०ड० कंदलु, च०ड० कंदलु
 (क) सं.— मिट्टी का छोटा बर्तन ।

च०ड० कंदल (सम्) सं.— गाल, गाल और
 कनपुटी ; कपाल, खोपड़ी ; अंडुर, अंडुआ ;
 युद्ध, लड़ाई ; सुवर्ण, सोना ।
 च०ड० कंदलि (सम्) सं.— एक जाति का
 हिरन ; केले का पौधा ; झंडा. ध्वज, पताका ।
 च०ड० कंदवाहन (सम्) सं.— मेघवाहन-
 इन्द्र ।
 च०ड० कंदार (सम्) सं.— सेना,
 पुलिस, सिपाही ।
 च०ड० कंदाय (सम्) सं.— कर, लगान ;
 मकान, भूमि आदि से संबंधित कर ; (ज्योतिष
 में) चार मास का अंतर ।
 च०ड० कंदि (क) सं.— व्यायी गाय ; बछड़ा ।
 (सम्) सं.— सफ़ेद और भूरे रंग का
 मिश्रण, धूसर वर्ण ।
 च०ड० कंदिके (क) सं.— कांतिहीन होना,
 मंद पड़ना, सूखना, मुरझाना ।
 च०ड० कंदिल, च०ड० कंदील (अ.दे. ?)
 सं.— च०ड० कंदील, च०ड० खंदील —
 लालटेन, दीपक, कंडील ।
 च०ड० कंदिसु (क) क्रि.— कांतिहीन कर,
 मंद कर, सुखा, मुरझा (प्रे.) ।
 च०ड० कंदु (क) क्रि.— मुरझा, सूख, कांति-
 हीन हो । सं.— पशुओं का बच्चा, बछड़ा ;
 छोटे-छोटे केले के पौधे ; पीसने का पत्थर ।
 कलक, कालिमा, आभाहीनता ; निरस्ताह,
 दुःख, पीड़ा ।
 च०ड० कंदु (सम्) सं.— बटलोई ; तंदूर
 चूल्हा ; तवा ।
 च०ड० कंदुक (सम्) सं.— गेंद ।
 च०ड० कंदुगार [गार गार] (क) सं.—
 वह जिसकी आँखें मंद हो ।
 च०ड० कंदोटि, च०ड० खंदोटि (अ.
 दे. ?) सं.— धन को रक्षित रखने की वस्तु-
 थैली, पेटी आदि ।
 च०ड० कंध (सम्) सं.— मेघ, बादल ; गर्दन ।
 च०ड० कंधर (सम्) सं.— गर्दन ; मेघ,
 बादल ।

च०ड० कंधरे (सम्) सं.— गर्दन ।
 च०ड० कंधि (सम्) सं.— समुद्र ; गर्दन ।
 च०ड० कंप (सम्) सं.— हिलना, काँपना,
 थरथराना ।
 च०ड० कंपण (तद्) सं.— कंपन (तत्) ;
 एक आयुध विशेष ।
 च०ड० कंपन (सम्) सं.— दे. च०ड० ; च०ड०.
 च०ड० कंपणिग (क) सं — रक्षक, द्वारपाल,
 नौकर ।
 च०ड० कंपाडग (क) सं.— सागौन
 (Teak) ।
 च०ड० कंपायमान (सम्) वि.—
 हिलनेवाला, काँपनेवाला, थरथरानेवाला,
 डरा हुआ, भीत ।
 च०ड० कंपित (सम्) वि.— हिलता हुआ,
 कांपता हुआ ।
 च०ड० कंपिल, च०ड० कंपिल्ल, च०ड० कंपिल्ल,
 च०ड० कंपिल्य (सम्) सं.— एक पौधा
 विशेष ।
 च०ड० कंपिसु (सम्) क्रि.— कंपित हो,
 थरथरा, हिल-डुल । (क) क्रि.— सुगंधित
 हो, सुगंध फैला ।
 च०ड० कंपु (क) सं.— दुर्गंध, बदबू ; सौरभ,
 सुगंध, महक । — च०ड० गाति (क) सं.—
 सुगंध फैलानेवाला स्त्री ।
 च०ड० कंपुगु, च०ड० कंपु वीरु (क)
 क्रि.— सुगंध फैला, सुगंधित हो ।
 च०ड० कंप्र (सम्) वि.— हिलता हुआ, डुलता
 हुआ, कांपता हुआ ।
 च०ड० कंब, च०ड० कंभ (तद्) सं.— स्तंभ
 (तत्) ; खंभा ।
 च०ड० कंबनि (क) सं — आँसू, अश्रु ।
 च०ड० कंबल, च०ड० कंबलि (सम्) सं.—
 ऊनी कंबल, कमरी, गलथ्या ।
 च०ड० कंबल (क) सं.— कूली, दैनिक पारि-
 श्रमिक (जो प्रायः अनाज के रूप में दिया
 जाता है) । — च०ड० गार [गार गार] (क)
 सं.— मज़दूर, कूली, श्रमिक ।

च०७५ कंबलि (तद्) सं.— दे. च०७५.

च०७५ कंबार (तद्) सं.=कम्मर—(कर्मकार)
—लोहार । —१३ गिति (तद्) सं.—
लोहार की स्त्री ।

च०७५ कंबारिके (सम्) सं.— लोहार का
पेशा ।

च०७५ कंबि (क) सं.— तार ; शलाका, लोहे
की सलाई ; नाक की हड्डी ; धोती, साड़ी
आदि में बीच-बीच में या अंत में लगनेवाली
पट्टी ; भारयष्टि, भारी वस्तुओं को ढोने की
(कंधे पर रखकर) बाँस की लकड़ी ; गदा,
लाठी । सं.— चमच, कछली ; बाँस की
शाखा या मिलाव ।

च०७५ कंबिकार [काल कार] (क) सं.—
कंधे पर बाँस की लकड़ी रखकर उसके
सहारे सामान ढोनेवाला, कहार ।

च०७५ कंबिकीळु (क) क्रि.— भाग,
चंपत हो ।

च०७५ कंबिग (क) सं.— गदाधारी, द्वारपाल,
द्वाररक्षक ।

च०७५ कंबु (सम्) सं.— शंख ; रंगबिरंगा रंग,
सफेद रंग ; कंकण, वलय ; गज, हाथी ;
जल, पानी ; गर्दन ; एक अनाज । —च०७
कंठि (सम्) सं.— शंख जैसी गर्दनवाली
स्त्री ।

च०७५ कंबुक (सम्) सं.— शंख ; कंकण,
वलय ; नीच या तुच्छ पुरुष ।

च०७५ कंबुगे (क) सं.— रथगुप्ति, वरुथ, रथ
के किनारे या चारों ओर लंगा हुआ काठ या
लोहे का ढाँचा जो रथ को दूसरे रथ से
टकराने से बचाता है ।

च०७५ कंबुकंठ, च०७५ कंबुगल, च०७५
११९७ कंबुग्रीव (सम्) सं.— शंख के समान
गर्दन ।

च०७५ कंब (तद्) सं.— दे. च०७५.

च०७५ कंबि (क) सं.=च०७५ कम्—कडुआपन,
कटुः ।

च०७५ कंस (सम्) सं.— काँसा ; धातु का
बर्तन, जल पीने का पात्र, गिलास, घंटी,
कटोरा ; मथुरा का राजा कंस, जिसे श्रीकृष्ण

ने मारा था । —३३ जित (सम्) सं.—
श्रीकृष्ण । —७७ ताल (सम्) सं.—
काँसे का झाँझ या मंजीरा । —७८ हर
(सम्) सं.— श्रीकृष्ण ।

च०७५ कंसांतक, च०७५ कंसाराति,
च०७५ कंसारि (सम्) सं.— श्रीकृष्ण ।

च०७५ कंसाल (तद्) सं.— कांस्यताल (तत्) ;
एक प्रकार का झाँझ या मंजीरा ।

च०७५ कंसालक (सम्) सं.— सोना-चांदी
का काम करनेवाला, सोनार । (च०७५ कंसाल
कंसालवाडु—तेलुगु) ।

च०७५ कंसालगिति (सम्) सं.— सोना-
चांदी का काम करनेवाली, सुनारिन ।

च०७५ कक् (क) सं=क का—जंगल, वन ।
च०७५ कक्वाडे कायि—इंद्रवारुणि
(colocynth) ।

च०७५ ककलाते, च०७५ ककुलते, च०७५
ककुलाते, च०७५ ककुळते, च०७५
ककलाते, च०७५ ककुलते, च०७५
कककुलिते (क) सं.— प्रेम, प्रीति ; इच्छा,
काभना, व्यर्थ की कामना ।

च०७५ ककुस्थ (सम्) सं.— इक्ष्वाकु वंश का
एक राजा ।

च०७५ ककुस्थज (सम्) सं.— राम ।

च०७५ ककुद्, च०७५ ककुद (सम्) सं.—
चोटी, शिखर ; बैल का कुब्ज ; सींग ;
सांड ; प्रधान, मुख्य ; राजकीय चिह्न ;
कृपाण, खड्ग ; बैल या सांड का थूथुन ;
आकाश, गगन ।

च०७५ ककुद्, च०७५ ककुद् (सम्)
सं.— बैल, सांड ।

च०७५ ककुद्गति (सम्) सं.— जघन,
कूल्हा ।

च०७५ ककुम्, च०७५ ककुभ (सम्) सं.—
दिशा ; चोटी, शिखर ; कांति, सौंदर्य ; प्रधान,
मुख्य, श्रेष्ठ ; वीणा की झुकी हुई लकड़ी ;
अर्जुनवृक्ष ; गीत, गीतविधि ।

च०७५ ककुलते, च०७५ ककुलाते, च०७५
ककुळते (क) सं.— दे. च०७५.

च०७५ ककोक, च०७५ ककोक, च०७५
ककुफ, च०७५ कोक (सम्) सं.— एक
पंडित का नाम ।

च०७५ कक (अ.दे.) सं.— काका (हिं) ; चाचा ।
च०७५ कक, च०७५ ककरि, च०७५ ककोरि,
च०७५ कोंग, च०७५ कोंग, च०७५
कोंगु, च०७५ कोंगरि (क) वि.— वक्र,
टेढ़ा । च०७५ ककबिकरि, च०७५
ककरि-विकरि—टेढ़ा-मेढ़ा ।

च०७५ ककड (क?) सं.— दीवट, मशाल ।
च०७५ ककडे (क) सं.— एक आयुध विशेष,
खड्ग, बरछी ।

च०७५ ककलाते (क) सं.— दे.— च०७५.
च०७५ ककस (तद्) सं.— कर्कश (तत्) ;
थकावट, साँस लेने में कठिनाई का अनुभव,
दमा ; दर्द, पीड़ा ; कठिनता, क्रूरता ।

च०७५ ककसगार [गार गार] (क) सं.—
क्रूर पुरुष ।

च०७५ ककसते (तद्) सं.— कर्कशता (तत्) ।
च०७५ ककसु, च०७५ ककोसु, च०७५
ककसु (क?) सं.— संडास, शौचगृह,
पायखाना ।

च०७५ कका (क) वि.— घबराया हुआ, कातर,
भीरु । —च०७५ विक (क) सं.— भीरु या
कातर पुरुष । —च०७५ विकरि, च०७५
विकि, च०७५ विकु (क) सं.— घबराहट, कातरता,
भीरुता ; भयध्वनि ।

च०७५ ककि (क) सं.— च०७५ ककके—वृक्ष विशेष,
राजतरु, सुवर्ण पुष्पी ।

च०७५ ककि (अ.दे.) सं.— काकी (हिं) ।
च०७५ ककिसु (क) क्रि.— वमन करा-
उगला, (पेट के अंदर से) बाहर निकलवा ;
बुरी रीति से खायी गयी किसी चीज़ (पैसा
आदि) को बाहर निकलवा दे या वापस
ले ले ।

च०७५ कककु (क) क्रि.— वमन कर, उगल-
(पेट के अंदर से) बाहर निकाल । सं.—

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि
 कच्ची, कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि—किसी
 आयुध का नुकीला भाग, तीक्ष्णता, आरे की
 धार या नोक ; नुकीलापन, असम (टेढ़ा-
 मेढ़ा) सतह या भाग ; कठोरता, अकोमलता ;
 खण्ड, टुकड़ा ; औकाई, घमन की हुई
 चीज । वि. = कच्ची कच्ची—दे. कच्ची.
 कच्ची कच्ची कचिचि = कच्ची कच्ची
 कचिचि ।

कच्ची कचिचि (क) सं.— दाँतोंवाला
 आयुध विशेष, आरे जैसा आयुध ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— बकुल वृक्ष ।

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि (क)
 सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि (क) सं.— प्रेम-
 करनेवाला पुरुष ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— एक सुगंध
 द्रव्य ।

कच्ची कचिचि (क) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि (सम्) वि.— सखत, कड़ा,
 कठोर, ठोस ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि
 (तद्) — धोती का छोर, काछनी, कछवा ;
 कौपीन ; कमरबंद, कांची ; घास, सूखी
 घास ; लता, बेल विशेष ; राजा का अंतःपुर,
 प्रांगण ; काँख, बगल ; कांतार, जंगल का
 भीतरी भाग ; (तर्क-वितर्क में) आपत्ति
 उठाना ; दलदलवाली जमीन ; भैंस ; फाटक ;
 तारा ; पाप ; कक्षा, कमरा । — कच्ची पाल, कच्ची
 पालिके, कच्ची पुट (सम्) सं.—
 काँख या बगल में दवाने की थैली । —
 कच्ची अंतर (सम्) सं.— प्रकोष्ठ ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— कच्ची कचिचि,
 कच्ची कचिचि (तद्) — काछनी, धोती
 बांधना, कछवा ; लंगोट ।

कच्ची कचिचि (क) सं.— विरोधी पक्ष ; विरोध,
 आपत्ति । — कच्ची गार या कच्ची गार =
 बकील के पास मुकद्दमा ले जानेवाला ।

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि (सम्) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— एक प्रकार का
 बाण ।

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि (सम्) सं.—
 हाथी या घोड़े का कमरा ; मकान के सामने
 की खाली जगह ; प्रांगण ; हाता ।

कच्ची कचिचि (क) वि = कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि—
 कठोर, कठिन, कड़ा, बलवान, अधिक, घना,
 उलझा हुआ । कच्ची कचिचि, (क) सं. =
 कच्ची कचिचि कचिचि, कच्ची कचिचि—
 बहुत उलझी हुई गाँठ । कच्ची कचिचि कचिचि
 (क) सं.— घना अंधकार, गाढांधकार ।
 कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि—
 बहुत कठोर पत्थर (Granite) । कच्ची कचिचि
 कचिचि (क) सं.— घना या घोर जंगल,
 निविड अरण्य । कच्ची कचिचि (क)
 सं.— बिलकुल कच्चा फल । कच्ची कचिचि
 (क) सं.— मूसलधार वर्षा, अतिवृष्टि ।
 कच्ची कचिचि (क) सं.— अधिक सूखापन,
 अनावृष्टि । कच्ची कचिचि (क) सं.—
 अकाल । कच्ची कचिचि कचिचि (क)
 सं = कच्ची कचिचि या कच्ची कचिचि ।

कच्ची कचिचि (क) सं.— लंबा, नीरस भाषण ;
 नीरस साहित्यिक रचना ।

कच्ची कचिचि (क) अ.— दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि (क) सं.— दे. कच्ची (१)

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— सिर के केश, बाल ;
 जटा ; जूड़ा ; सूखा और पूरा हुआ घाव ;
 वादल ; बृहस्पति के पुत्र का नाम ; बांधना,
 नस्थी करना ; चमकना ; शब्द करना,
 चिह्नाना, शोर मचाना ; कपड़े का किनारा
 (अंचल) ।

कच्ची कचिचि (क) अ.— अचानक, जल्दी,
 तेज़ी से ; वह ध्वनि जो पत्थर के मिट्टी पर
 गिरने से निकलती है ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— घास, पत्ता ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— केशराशि,
 अलकावलि, अलंकृत केश या बाल ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि (क) सं.— पकाकर नमक-मसाला
 मिलाया हुआ चावल ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— बालों का
 जूड़ा ।

कच्ची कचिचि (सम्) सं.— धुआँ,
 धूम ।

कच्ची कचिचि (अ.दे.) सं.— कचरा, गंदगी ;
 बुरा काम ।

कच्ची कचिचि (अ.दे.?) क्रि —
 थक जा, श्रांत हो ।

कच्ची कचिचि (अ.दे.?) क्रि.— साव-
 धान रह, होशियार रह, ठीक प्रकार से काम
 कर, तेज़ हो ।

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि
 कचिचि, कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि
 कचिचि (तद्) सं.— खजूरः
 (तत्), खजूर ।

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि (तद्) सं.— कक्ष (तत्)
 दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि (अ.दे.) वि.— कच्चा
 (हि.), अपक्व, अधूरा, मोटा, कड़ा ;
 कोमल ।

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि
 (तद्) सं.— कक्षपट, (तत्) ; दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि (अ.दे.) सं.— कचड़ा, कचरा,
 गंदगी ।

कच्ची कचिचि (क) सं.— एक प्रकार का
 व्यंजन या साग ।

कच्ची कचिचि (अ.दे.) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि (क) सं.— व्यंजन विशेष, साग,
 चटनी ।

कच्ची कचिचि (क) अ.— दे. कच्ची।

कच्ची कचिचि (क) सं.— उपाधि का सूचक
 कंकण ।

कच्ची कचिचि (क) सं.— (दाँतों से) काटना,
 काट ।

कच्ची कचिचि, कच्ची कचिचि (क) क्रि.—
 मिला, जोड़, दो वस्तुओं को किसी धातु के
 सहारे एक कर ।

कठकोल (?) सं.— पीकदानी ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— अग्नि ; सोना ;
 गणेश जी का नाम ।
 कठकोल कठकोल (क) अ.— दे. कठकोल ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— मुँह का
 अंतिम भाग, मुँह की ओर ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— कठकोल ; कठकोल (क)
 अ.— ठीक-ठीक, सटीक, बराबर ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— वीक्षण, देखना,
 एक दृष्टि ; करुणा, सहानुभूति ।
 कठकोल कठकोल (सम्) क्रि.— एक दृष्टि डाल ; करुणा
 कर, सहानुभूति प्रदर्शित कर ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— कठकोल,
 जंगल ।
 कठकोल कठकोल (अ.दे.) क्रि.— (फसल)
 कटवा ।
 कठकोल कठकोल (अ.दे.) सं.— कठकोल —
 कठकोल, कठकोल ।
 कठकोल कठकोल (अ.दे.) सं.— फसल काटना,
 कटवा ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कठकोल कठकोल,
 कठकोल कठकोल—कठकोल, कठकोल ;
 खपर ; अर्धगोल ; सूप, बॉस की छड़ी,
 बॉस का तल ; मिलन, मिलना ; सामीप्य ;
 अवसर, समय, मौसम ; कूप, कुआँ ;
 कट्ट ; नरक ; टूटा खपरा ; छोटी भैंस जिसके
 सींग नये-नये प्रकट हो रहे हों ।
 कठकोल कठकोल (क) क्रि.— छेनी (या
 टाँकी) से पत्थर तोड़ । सं.— कुरकुरापन ।
 — कठकोल (दुहराना) ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कमर, नितंब ; हाथी
 का गडस्थल ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— कसाई, मांस
 विक्रेता ;
 कठकोल कठकोल (क) क्रि.— कठकोल कठकोल—
 टूट जा (वीणा के तार का टूटना), कठकोल
 अलग हो ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— दे. कठकोल ; हत्यारा ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कमरबंद,
 इज़ारबंद, नारा, मेखला ; शीतोष्ण वृत्त ।

कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कठकोल कठकोल
 — करेला ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कठकोल,
 कमर का दर्द ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— दे. कठकोल
 कठकोल ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कठकोल, गुफा, कूल्हा ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— दे. कठकोल ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— कठकोल ।
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कठकोल ।
 कठकोल कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कठकोल कठकोल
 कठकोल कठकोल—एक पौधा जो देवाई के
 काम में आता है ।
 कठकोल कठकोल (क) वि.— थोड़ा, कुछ, कम,
 अल्प, महीन । सं.— (रोटी आदि खाने की
 वस्तुओं का) रूखापन, सूखापन ।
 कठकोल कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कठकोल कठकोल
 या तुम्बी ।
 कठकोल कठकोल (तद्) सं.— कठकोल (तत्) ।
 कठकोल कठकोल कठकोल (सम्) सं.— दे.
 कठकोल कठकोल
 कठकोल कठकोल (सम्) सं.— कठकोल वचन
 या वात ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— छेनी । क्रि.— छेनी या
 टाँकी से पत्थर तोड़ना ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— दाँत 'कट्ट कट्ट' करना ;
 'कट्ट-कट्ट' करते हुए लकड़ी तोड़ना ।
 कठकोल कठकोल (क) वि.— 'कठकोल कठकोल = अंतिम,
 आखिर' का दूसरा रूप । कठकोल कठकोल कठकोल—
 बिलकुल अंतिम, आखिरी ; अंत में, आखिर-
 कार । कठकोल कठकोल कठकोल—अंतिम उत्तर या
 बात । कठकोल कठकोल [कठकोल कठकोल] कठकोल
 [= कठकोल कठकोल कठकोल] कठकोल, जंगल ।
 कठकोल कठकोल (क) अ.— तेज़ी से, तीक्ष्ण रूप
 से, तीखा ।
 कठकोल कठकोल कठकोल (क) सं.— अत्यंत आश्चर्य ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— भवन, इमारत ।
 कठकोल कठकोल, कठकोल कठकोल (क) सं.— दे.
 कठकोल ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— सुंदरी, सौंदर्यवती ।

कठकोल कठकोल (क) सं.— कठकोल आज्ञा,
 अनिवार्य रूप से पालन करने योग्य आज्ञा ।
 कठकोल कठकोल कठकोल (क) क्रि.— आलिंगन कर,
 गले मिल ।
 कठकोल कठकोल कठकोल (क) सं.— यश, कीर्ति,
 प्रसिद्धि, ख्याति ।
 कठकोल कठकोल, कठकोल कठकोल (क) वि.—
 बद्ध, बंधा हुआ, स्थित ।
 कठकोल कठकोल, कठकोल कठकोल, कठकोल कठकोल—आज्ञा,
 आदेश ; मूल्य ; तौल ; मट्टा ; नियम,
 कायदा । अ.— की संख्या में, जैसे कठकोल
 कठकोल कठकोल—लाखों की संख्या में ।
 कठकोल कठकोल कठकोल, कठकोल कठकोल (क?)
 सं.— बुरी या दुष्ट स्त्री या गाय ।
 कठकोल कठकोल (क) सं.— आज्ञा, आदेश ;
 मूल्य, तौल ; मट्टा ; नियम, कायदा ।
 कठकोल कठकोल (तद्) सं.— काष्ठिका (तत्) ;
 लकड़ी, काष्ठ, काठ ; ईंधन, जलने की
 लकड़ी ; लाठी, छड़ी । — कठकोल [कठकोल
 कार], कठकोल गार [कठकोल गार] (तद्) सं.—
 लकड़हारा ; लाठी धारी, द्वारपाल, प्रतीहारी ।
 कठकोल कठकोल कठकोल, कठकोल कठकोल (क)
 अ.— बिलकुल सामने, ठीक-ठीक सामने,
 सीधे, सममुख ।
 कठकोल कठकोल कठकोल (क) सं.— बड़ी काली
 चींटी, काटनेवाली चींटी ।
 कठकोल कठकोल कठकोल (क) क्रि.— बंधना, बंधन करा,
 रचा (प्रे.) ।
 कठकोल कठकोल (क) क्रि.— बांध, बंधित कर ;
 (घाव पर) पट्टी लगा या बांध ; बन्ना, रच ;
 निर्माण कर ; रोक ; व्यवस्थित कर ;
 (दरवाजा आदि) बंद कर, (मुँह) बंद कर ।
 सं.— बंधन, उद्धान, रोक, टोक, विघ्न,
 प्रतिरोध, बाधा ; गठरी, गट्टा ; बांध, पुल ;
 सीमा ; चक्र की परिधि ; ढाँचा, बनावट
 आकार ; बनी हुई चीज़ जैसे भवन, इमारत ;
 रचना ; निर्माण, गठन ; लुभाना, मोहित
 करना । कठकोल कठकोल (क) सं.— आपसी
 समझौता । कठकोल कठकोल (क) सं.— यात्रा
 में ले जाया जानेवाला भात ।

कट्टाणु (क) क्रि.— नियम के अनुसार हो, ठीक हो; कङ्कण कट्टाणि—नियमबद्ध होकर, ठीक प्रकार से, ठीक-ठीक। कङ्कण कट्टाणि (क) सं.— सोने का (मणियों का) हार। कङ्कण कट्टाणु कट्टुगोलिसु (क) क्रि.— दृढ़ या स्थिर कर। कङ्कण कट्टुपट्टु (क) क्रि.— बंधित हो, नियमबद्ध हो। कङ्कण कट्टुमाडु (क) क्रि.— दे. कङ्कण कट्टुवीळु (क) क्रि.— दे. कङ्कण कट्टुमिणि (क) सं.— चमड़े की रस्सी जो बांधने के काम में आती है। कङ्कण कट्टुमुट्टु (क) सं.— अधिक आवश्यकता; बल (सै.प्र)। कङ्कण कट्टुवडे [कट्टुवडे] (क) क्रि.— मन का निरोध या निग्रह कर। कङ्कण कट्टोडे (क) क्रि.— नियम तोड़, वचन भंग कर; किसी संघ या संस्था को विसर्जित या भंग कर। वि.— बंधा हुआ, रोका हुआ; घोर, घना, गाढा; बना हुआ; कल्पित, रचित; बड़ा, अधिक। कङ्कण कट्टुक (क) सं.— घोर युद्ध। कङ्कण कट्टुडवि (क) सं.— घना जंगल। कङ्कण कट्टुणक (क) सं.— बड़ी शक्ति या सामर्थ्य। कङ्कण कट्टुरण्य (क) सं.— दे. कङ्कण कट्टुरसु (क) सं.— सम्राट, अभिषिक्त राजा। कङ्कण कट्टुले (क) सं.— दे. कङ्कण कट्टुले (क) सं.— गाढालिंगन। कङ्कण कट्टुलिक्के (क) सं.— अत्यंत दुःख, वियोग। कङ्कण कट्टुलकर (क) सं.— बहुत प्रेम या आनंद। कङ्कण कट्टाजे (क) सं.— कड़ी आज्ञा। कङ्कण कट्टाय (क) सं.— दृढ़ता, स्थिरता, दृढ़ निर्णय या शासन, अनिवार्यता; हिंसा। कङ्कण कट्टुकथे (क) सं.— कल्पित कहानी, झूठी कथा। कङ्कण कट्टुमुडि (क) सं.— बंधे हुए बाल, गुथी हुई चोटी, जूड़ा, कबरी। कङ्कण कट्टुमोसरु (क) सं.— दही, जो छानकर कपड़े में बांधकर लटकाया हुआ हो। कङ्कण कट्टुहावु (क) सं.— एक सांप विशेष (Ophiophagus elaps)।

कङ्कण कट्टु (क) सं.— अनाज या तरकारी पकाते समय निकाला जानेवाला पानी या रस (decoction), पक्कधान्य रस। कङ्कण कट्टुक (क) सं.— बांधनेवाला, झूठी कल्पना करनेवाला, झूठ बोलनेवाला; झूठी कथा, कल्पित कथा, झूठा। कङ्कण कट्टुकडि (क) क्रि.— नियम का उल्लंघन कर, सीमा पार कर; व्याकुलचित्त हो। कङ्कण कट्टुवास (क) सं.— ऊपर धारण करने का वस्त्र, ओढ़नी। कङ्कण कट्टुविके (क) सं.— बांधना, बनाना, रचना, बंधन, बनावट, निर्माण। कङ्कण कट्टुशब्द (क) सं.— सांकेतिक बात, रहस्य वचन। कङ्कण कट्टुह (क) सं.— दे. कङ्कण कट्टे (क) सं.— मिट्टी या पत्थर का बना ऊँचा (स्थान), आसन या बेंच जिसपर बैठा जाता है, टीबा, टीला; रक्षा का स्थान; तालाब या कुएँ के चारों ओर की (मिट्टी या पत्थर की) दीवार, जगत; बांध, पुल, सेतु; आलवाल, थाला; (भोजन की थाली या पत्तल पर) भात से बीच में बनाया गया छोटा गड्ढा जिसमें रस, संबार आदि डाला जाता है; गड्ढा, ताल, तलैया; झाड़ू, बुहारी; बाँस की वह स्थिति जब कि वह सूख जाता है, बाँस का वृद्धत्व। कङ्कण कट्टेसक (क) सं.— महत्वपूर्ण कार्य; सौंदर्य, कांति। कङ्कण कट्टेसुगे (क) सं.— बाणों की वर्षा या बौछार। कङ्कण कट्टेकांत (क) सं.— अत्यंत रहस्य, अति गोप्य विषय। कङ्कण कट्टेलेगे (क) सं.— अधिक प्रगति, बहुत विकास। कङ्कण कट्टेरलिके (क) सं.— बहुत कराहना, बहुत पीड़ा। कङ्कण कट्टोलेगे (क) सं.— बहुत ममता या प्रेम।

कङ्कण कट्टण (क) सं.— भवन, इमारत, महल; स्वाद, रस, सुस्वाद। कङ्कण कट्टे (क) सं.— दे. कङ्कण कट्टेर (सम्) वि.— घृणास्पद, घृणा के योग्य। कट्ट (सम्) सं.— एक मुनि का नाम जो वैशांपायन के शिष्य थे; एक उपनिषद् का नाम—कटोपनिषद्। कट्टाणि (क) सं.— बहुत सुंदर या मूल्यवान होने की स्थिति; बढ़िया, श्रेष्ठ पदार्थ। कट्टारि (अ.दे.) सं.— दे. कट्टारु। कट्टारु कट्टिजर (सम्) सं.— तुलसी का पौधा। कट्टिण (तद्) वि.— कठिन (तत्); कड़ा, सख्त, कठोर। कट्टिणते (तद्) सं.— कठिनता। कट्टिणत्त्व (तद्) सं.— कठिनत्व, कठोरता। कट्टिन (सम्) वि.— दे. कट्टिन कट्टिनते—दे. कट्टिन कट्टिनत्व—दे. कट्टिन कट्टिनहृदय (सम्) वि.— कटोर हृदयवाला, क्रूर, दयारहित। सं.— कटोर हृदय। कट्टिनी (सम्) सं.— कनिष्ठिका, छिगुनिया; चॉक (chalk), खडिया मिट्टी। कट्टिण (तद्) वि.— कठिन (तत्); दे. कट्टिन। कट्टोर (सम्) वि.— कट्टोर कट्टोर (तद्)—कड़ा, सख्त, ठोस; निष्ठुर, निर्मम, दयाहीन, क्रूर; तीक्ष्ण, तेज, पैना; पूरा, पूरा-पूरा।—उत्त तन (सम्) सं.— कटोरता, क्रूरता, तीक्ष्णता, कर्कशता।—उत्तर (सम्) वि.— असाधारण रूप से कटोर, निर्दयी, क्रूर। कट्ट कट्ट (क) सं.— कर्जा, उधार, ऋण।—कट्टा गोळ, कट्टा गोळ (क) क्रि.— कर्जा या उधार ले; नदी का छिछला भाग घाट। वि.—(समस्त-पदों में) (कट्ट कट्ट)।

कडसिगे, कडसिगे (क) सं. — पौधा विशेष, शृंगी ।
 कडसु (क) सं. — वह गाय या भैंस जो ब्यानेवाली हो, बड़ी बछड़ी । क्रि. — दे. कडसु ।
 कडह (क) सं. — मथन, मथना ; दे. कडह ।
 कडह (तद्) सं. — कदंब ।
 कडकडि (क) अ. — ठीक, ठीक-ठीक, बराबर ।
 कडकडि (क) सं. = कडकडि कडियण — लगाम, संयम, गाड़ी की धुरी (की खूँटी) ।
 कडकडि (क) अ. — कडाह, बड़ी कड़ाही (पीतल, काँसे या लोहेकी) ।
 कडकडि (क) क्रि. — कडकडि चडायिसु, कडकडि जडायिसु — (खूँटी) ठोक, मार, पीट, लगा ; शोर कर, बड़ी आवाज़ कर, गर्जन कर ।
 कडकडि (सम्) वि. — साँवला, धौला, पिंगल ; अकड़बाज़, क्रोधी, अहंकारी, घमंडी ।
 कडकडि (अ.दे.?) सं. — खड़ाऊ, पाटुका ।
 कडकडि (अ.दे.) सं. — फटे रहने की स्थिति ; थैला ।
 कडकडि (क) सं. — दे. कडकडि ।
 कडि (क) क्रि. — काट, दांतों से काट, काट दे, काट मार, डँक मार, डस ; खुजली या खुजलन हो ; दर्द कर या पीड़ा दे, (दांतों में) कड़कड़ा हो ; गिरा ; काटकर गिरा, खंडन कर, खोद, बना ; मार, पीट, खींच ; मथ, मथन कर (जैसे दही को मथना) ।
 कडिदाट (क) सं. — परस्पर मारना या काटना, झगड़ा । कडिदाडु (क) (क) सं. — परस्पर मार-पीट कर, लड़-झगड़ । वि. — बड़ा, मोटा, अधिक, बहुत, कठोर । कडिकोप (क) सं. — अत्यधिक क्रोध । कडिगंड (क) सं. — बड़ा खतरा । कडिनुडि (क) सं. — कठोर वचन । कडियं (क)

सं. — बड़ा बलवान पुरुष । सं. — छोर, किनारा, कोना ; खंड, अंश, टुकड़ा, कटा हुआ पदार्थ ; कढ़ी, दही में नमक-मिर्च आदि मिलाकर बनाया गया एक व्यंजन (जो भात में मिलाकर खाया जाता है) ; लच्छा, पेचक, तागे की गोली ।
 कडिक, कडिग (क) सं. — मारने-वाला, कसाई, हत्यारा ।
 कडिकु, कडुकु (क) सं. — खण्ड, टुकड़ा, अंश ।
 कडिकु (क) क्रि. — दे. कडिकु ।
 कडिके (क) सं. — खलियान, धान्य-संग्रह ।
 कडित (क) सं. — दे. कडित ।
 कडितले (क) सं. — खड्ग, चमड़े का ढाल ; साहस का काम । — काँस कार [काँस कार] गः ल गार् [गार गार] (क) सं. — सिपाही, योद्धा ।
 कडिति (क) सं. — हिरन विशेष, सांब नामक हिरन ।
 कडिदु (क) सं. — दे. कडिदु ।
 कडिपु (क) सं = कडिपु कडुपु, कडिपु कडुहु — दृढ़ता, स्थिरता, तेज़ी, वेग, तीव्रता ; उत्साह ; पराक्रम, बल, साहस ; गर्व, घमंड ।
 कडिमे (क) वि. — दे. कडिमे । — नमो माडु (क) क्रि. — कम कर । — बीलु (क) क्रि. — कम हो, घाटा हो ।
 कडियं, कडियं (क) वि. — दृढ़, स्थिर, सीधा, कठोर ।
 कडियण, कडियण कडियाण, कडिवण, कडिवण कडिवाण (क) सं. — लगाम ; संयम ।
 कडियाल (क) सं. — पौधा विशेष, शंखिनी या चोरपुष्पी (Andropogon aciculatum) ।
 कडियिसु (क) क्रि. — दे. कडियिसु ।
 कडियुविके (क) सं. — काटना ; काट, डंक ; खुजलन ; छेदन ।

कडिल् (क) अ. — दृढ़ता से, जोर से, कठोरता से ।
 कडिवण, कडिवण कडिवाण (क) सं. — दे. कडिवण ।
 कडिसु (क) क्रि. — कटा, (दांतों से) कटा, कटवा, डसा ; मथन करा (प्रे.) ।
 कडु (क) वि. — स्थिर, दृढ़, बली, कठोर, कर्कश ; मोटा, गाढा ; तेज, तीक्ष्ण, तीखा ; चपल, वेगवान ; बड़ा, ज्यादा, बहुत, अति, अधिक, महान । कडुकंगुडु (क) क्रि. — बहुत डर, अधिक भीत हो । कडुकुण (क) सं. — अधिक दयावान । कडुकार्पण्य (सम्) सं. — बहुत दरिद्रता । कडुकावलि (क) सं. — बड़ी कड़ाही । कडुकै (क) क्रि. — तीव्रता कर, जल्दी कर । कडुकोप, कडुगोप (क) सं. — अत्यधिक क्रोध ; कडुगोप बंदाग तडकोंडवने जाण — जब अत्यधिक क्रोध आता है तब जो उसका संयम कर लेता है वही बुद्धिमान है (कह.) । कडुकुत्तले = कडुकुत्तले (क) सं. — गाढांधकार । कडुगाय [कडुगाय काय] (क) क्रि. — बहुत अधिक गरम हो या उबल । कडुगासि (क) सं. — बड़ा संकट । कडुगाळि (क) सं. — तेज़ हवा, अधिक हवा । कडुगुज (क) वि. — बहुत छोटा । कडुगुदुरे [कडुगुदुरे] (क) सं. — तेज़ दौड़नेवाला घोड़ा । कडुगुपु (क) सं. — विलकुल लाल रंग । कडुगुय (क) क्रि. — दे. कडुगुय ; कडुगुलसि (क) सं. — कठोर परिश्रम करनेवाला । कडुगुगु [कडुगुगु] (क) सं. — बड़ा नटखट या दुष्ट पुरुष । कडुगुगु (क) क्रि. — बहुत मोटा हो । कडुगुगु (क) सं. — दे. कडुगुगु । कडुगुगु (क) सं. — बड़ा क्रोधी पुरुष । कडुगुगु (क) सं. —

बहुत सुंदर पुरुष । कड़कीलू कड़कुलेव (क) सं. — कड़कीलूव. कड़कुवक कड़कुतवक (क) सं. — अतिशीघ्रता, बहुत जल्दवाजी, बहुत उतावलापन । कड़कुवर्ष कड़कुदर्प (सम्) सं. — अत्यंत गर्व । कड़कुदधू कड़कुदृष्टि (क) सं. — बहुत साहसी पुरुष । कड़कुदुदुरु (क) सं. — बहुत दुष्ट पुरुष । कड़कुदुदुदुदु कड़कुदुदुदुदु [कड़कुदुदुदुदु] (क) सं. — बहुत बड़ी चीज़ । कड़कुदुदुदुदु कड़कुनालिगे (क) सं. — लंबी जिह्वा अर्थात् अधिक बोलनेवाली जिह्वा । कड़कुदुदुदु कड़कुनीर (क) सं. — अत्यंत प्यारा या प्रिय व्यक्ति, अधिक सौंदर्य । कड़कुदुदुदु कड़कुनीरे (क) सं. — अधिक सौंदर्य, बहुत सुंदरी । कड़कुदुदु कड़कुनो, कड़कुनो नोवु (क) सं. — अत्यधिक पीड़ा । कड़कुदुदु कड़कुपापि (सम्) सं. — बड़ा पापी । कड़कुदुदु कड़कुवडव (क) सं. — बहुत गरीब आदमी, कड़कुदुदु कड़कुवडतन (क) सं. — बहुत गरीबी । कड़कुदुदु कड़कुविन्नण (क) सं. — अधिक कौशल या चातुरी । कड़कुदुदु कड़कुवेले (क) सं. — अधिक उपज या फसल होना । कड़कुदुदु कड़कुमुपु (क) सं. — बहुत बुद्धि । कड़कुदुदु कड़कुमुळि (क) सं. — बहुत गुस्से में आ । कड़कुदुदु कड़कुमुचु (क) क्रि. — अधिक पसंद कर, अधिक प्रसन्न हो । कड़कुदुदु कड़कुराग (सम्) सं. — अधिक प्रेम । कड़कुदुदु कड़कुसुतु (सम्) सं. — रजोदर्शन का निश्चित समय । कड़कुदुदु कड़कुसुतुविनवळु क्रतुमती, पुष्पवती । कड़कुदुदु कड़कुलागु (क) सं. — अधिक उछाल । कड़कुदुदु कड़कुलेसु (क) वि. — अधिक अच्छा, बहुत अच्छा । कड़कुदुदु कड़कुविल्ल (क) सं. — अच्छा धनुर्धारी, अद्वितीय धनुर्धारी । कड़कुदुदु कड़कुविष (तद्) सं. — तेज विष । कड़कुदुदु कड़कुविसिल्, कड़कुदुदु विसिल् (क) सं. — कड़ी धूप । कड़कुदुदु कड़कुशिशु (सम्) सं. — नन्हा बच्चा । कड़कुदुदु कड़कुसडलु (क) सं. — बहुत शिथिलता या हिलाई । कड़कुदुदु कड़कुसौर्य (सम्) सं. — अत्यंत साहस या पराक्रम ।

कड़कुसोदि कड़कुसोदि (क) सं. — बड़ी भ्रष्टा या दुराचारिणी स्त्री । कड़कुदुदु कड़कुहेडु (क) सं. — बड़ा मूर्ख पुरुष । कड़कुदुदु कड़कुहेडि (क) सं. — बड़ा भीरु या डरपोक ; तिरछा, टेढ़ा, वक्र, झुका हुआ ; कड़कुदुदु कड़कुविल्, कड़कुदुदु कड़कुविल् (क) सं. — वक्र या झुका हुआ धनुष । सं. — तंग रास्ता या गली ; वह जो सीधा हो या खड़ा हुआ हो ; नदी को पार करने का स्थान ; विष, जहर । (तद्) सं. — कड़कु (तद्) ; कड़कुवापन ; खडी (तद्) ; खड़िया मिट्टी, चॉक (chalk) । कड़कुदु कड़कुकु (क) सं. — काटना, कटा हुआ पदार्थ ; टुकड़ा, अंश, खण्ड (दे. कड़कु) ; कबंध, रंड ; पेड़ की डाली या शाखा ; एक पौधे का नाम । कड़कुदु कड़कुकु (तद्) सं. — कटक : (तद्) ; रत्नकुंडल, कर्णाभरण विशेष । कड़कुदु कड़कुग (तद्) सं. — खड्ग (तद्) ; तलवार । कड़कुदु कड़कुगु (क) क्रि. — दे. कड़कुगु ; सख्त, कठोर, ठोस या सघन हो । कड़कुदु कड़कुपु (क) सं. — दे. कड़कुपु कड़कुदु कड़कुदु, कड़कुदु कड़कुदु (क) सं. — दे. कड़कुदु कड़कुदु कड़कुमे, कड़कुदु कड़कुहु (क) सं. — दे. कड़कुदु. कड़कुदु कड़कुहुकार [कार कार] (क) सं. — साहसी या पराक्रमी पुरुष । कड़कुदु कड़कु (क) क्रि. — मथ. मंथन कर ; रगड़ ; घोल, हिला ; जा, पार हो, स्थान बदल, भागे बड़ ; घटित हो ; नीचे गिर, फिसल, डूब । सं. — अंत, अवसान, छोर. सीमा, अंतिम स्थान या स्थिति, स्थान, दिशा, (एक) ओर, गया बीता या न्यून ; रंगोली, घर के अंदर और बाहर (द्वार के सामने) सफेद मुंलयाम पत्थर के चूर्ण या भाटे से खींचे जानेवाले अलंकृत चित्र (कड़कुदु कड़कुदु— तमिल, मुगु मुगु—तेलुगु) । कड़कुदु कड़कुदु कड़कुदु इवनु अवनिर्गितल कड़कु— यह व्यक्ति उस व्यक्ति से भी गया बीता है ।

कड़कुदु कड़कुकणु, कड़कुदु कड़कुगणु (क) सं. — आँख का कोना या छोर ; कटाक्ष ; अर्द्ध दृष्टि, तिरछी दृष्टि । कड़कुदु कड़कुगंति, कड़कुदु कड़कुगंदि (क) सं. — वह गाय जो अंतिम बार व्याती है ; अंतिम बछड़ा । कड़कुदु कड़कुगाणु (क) क्रि. — तिरस्कार या उपेक्षा की दृष्टि से देख । कड़कुदु कड़कुगाल [कड़कु काल] (क) सं. — अंतिम समय, मृत्यु का समय । कड़कुदु कड़कुगिल्लु [कड़कु कील्लु] (क) सं. — अक्ष, धुरी । कड़कुदु कड़कुगुसु (क) सं. — (सबसे) अंतिम वच्चा । कड़कुदु कड़कुविल्लु (क) क्रि. — बाहर आ, बाहर हो । कड़कुदु कड़कुगु माणिसु (क) क्रि. — निकाल, तुड़ा । कड़कुदु कड़कुगु गोळिसु (क) क्रि. — अंत कर. समाप्त कर । कड़कुदु कड़कुनोट (क) सं. — एक दृष्टि, झोंकी । कड़कुदु कड़कुयण (क) सं. — अंतिम मनुष्य ; किसी एक पक्ष का मनुष्य । कड़कुदु कड़कुवगल् [कड़कु पगल्] (क) सं. — सायंकाल, सूर्यास्त का समय । कड़कुदु कड़कुवहु [कड़कु पहु] (क) सं. — अंत में हो । कड़कुदु कड़कुवल्लि [कड़कु हल्लि] (क) सं. — अंतिम ग्राम । कड़कुदु कड़कुवायु [कड़कु हायु] (क) सं. — एक तरफ हो जा, (किसी के ज़रिए) जा, पार कर । कड़कुदु कड़कुवेळुगु [कड़कु वेळुगु] (क) सं. — दे. कड़कुवगल्. कड़कुदु कड़कुसरि, कड़कुदु कड़कुसार् (क) क्रि. — एक तरफ हो । कड़कुदु कड़कुहायिसु (क) क्रि. — पार करा, जाने दे, रक्षित कर, बचा । कड़कु कड़कु (सम्) सं. — पहुँची, कंगन । कड़कुदु कड़कुगुल्लु, कड़कुदु कड़कुगुल्लु (क) सं. — मथानी । कड़कुदु कड़कुचळु (क) सं. — मथने का साधन । कड़कुदु कड़कुत (क) सं. — मथना ; मथने का साधन । कड़कुदु कड़कुय (क) सं. — दे. कड़कु (क) । (तद्) सं. — कटक (तद्) ; शिंजिनी, पैर का आभूषण विशेष ।

३३७ कणव

३३७ कणव (क) सं.— सफेद खुरवाला घोड़ा ।
 ३३७ कणवे (क) सं.— लता विशेष, रौद्री
 नामक लता ।
 ३३७ कणमे, ३३७ कणिमे, ३३७ कणवे,
 ३३७ कणिवे (क) सं.— घाटी, पहाड़ों के
 बीच का तंग रास्ता ।
 ३३७ कणय (क) सं.— नीवी, नारा, उच्चय ।
 (तद्) सं.— दे. ३३७.
 ३३७ कणलिमे (क) सं.— दे. ३३७।७।
 ३३७ कणवे (क) सं.— दे. ३३७।
 ३३७ कणसु (क) सं.— देखना, अवलोकन,
 दृष्टि ।
 ३३७ कणा, ३३७ काणा (क) क्रि. रू.— नहीं
 क्या, देखा नहीं ?
 ३३७ कणाद (सम्) सं.— एक ऋषि का नाम
 जो वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक हैं । सोनार
 (कलाद) ।
 ३३७ कणि (क) सं.— चर्मवाद्य विशेष, डफ,
 डफली ; गौठ, बंधन ; दृष्टि, भविष्य-दृष्टि,
 दिव्य-दृष्टि, शुभाशुभ शकुन, सत्य, यथार्थता ;
 पत्थर, शिला, स्थान, जगह ।
 ३३७ कणि (तद्) सं.— कण, अणु ; खनि (तद्) ;
 खान, आकर, गड्ढा, छिछली कटेरी या
 तश्तरी ।
 ३३७ कणिक (क) सं.— दे. ३३७।
 ३३७ कणिके, ३३७ कणुक (क) सं.— अनाज
 अलगया हुआ डौंठ, डंठल । (तद्) सं.—
 कण, अणु, स्वल्प परिमाण ; बूँद ; एक
 पौधा विशेष ।
 ३३७ कणिकल, ३३७ कणिकलु (क)—
 दे. ३३७।७।
 ३३७ कणिकार्ति (क) सं.— भविष्य कहने
 वाली स्त्री ।
 ३३७ कणिरिनु, ३३७ कणिकल (क)
 सं.— दे. ३३७।७।
 ३३७ कणिकल, ३३७ कणिकलिल, ३३७
 कणिकलिले (क) सं.— दे. ३३७।७।
 ३३७ कणितले (क) सं.— कनपटी ।
 ३३७ कणिति (क) सं.— दे. ३३७।७।

३३७ कणिमे, ३३७ कणिवे (क) सं.— दे.
 ३३७।
 ३३७ कणिश (सम्) सं.— अनाज की बाल ।
 ३३७ कणिस (क) सं.— उचित तौल या माप ।
 ३३७ कणिसु, ३३७ कणुचु, ३३७ कणिसु
 (क्रि.)— (दिखाई पड़), देख, विचार कर ।
 ३३७ कणियसु, ३३७ कणियसु (सम्) वि.—
 बहुत छोटा, छोटा ।
 ३३७ कणु (क) सं.— आँख, दे. ३३७।
 ३३७ कणुक (क) सं.— दे. ३३७।
 ३३७ कणुकपटे (क) सं.— दे. ३३७
 ३३७।
 ३३७ कणुकु (क) सं.— दे. ३३७।
 ३३७ कणे (क) सं.— छड़ी, डंडा ; बाण ;
 नीवी, नारा, इजारबंद ; कोल्हू का
 बड़ा रोलर या बेलन ; शकर की मिल में काम
 आनेवाले इस प्रकार के रोलर का जोड़ा, यष्टि ;
 पीपल ।
 ३३७ कणेरिले (क) सं.— ३३७।७ कणगल —
 दे. ३३७।७।
 ३३७ कणेय (क) सं.— कथा, कहानी,
 उपकथा ; प्रारंभ ; न्याय ।
 ३३७ कणकपटे ३३७ कणकपड़े
 (क) सं.— दे. ३३७।
 ३३७ कणुचु (क) क्रि.— दे. ३३७।
 ३३७ कणकपडि (क) सं.— दे. ३३७
 ३३७।
 ३३७ कणिक (क) सं.— रस्सा, रस्सी, डोरी ।
 ३३७ कणु (क) सं.— दे. ३३७।
 ३३७ कणकपटे, ३३७ कणकपडे
 (क) सं.— दे. ३३७।
 ३३७ कणिक (क) सं.— करणे—थका, पिंड ।
 ३३७ कणव (सम्) सं.— एक ऋषि का नाम ;
 अपराध, पाप (मै.प्र.) । — सुता
 (सम्) सं.— शकुंतला ।
 ३३७ क (क) सं.— पत्थर, शिला । ३३७ क
 कत्तले (क) सं.— एक पौधा विशेष जिसका
 रस कड़ुआ होता है, बोल, मुसब्बर ।

३३७ कत (क) सं.— कारण, हेतु (कृत-तत् ?)
 एक अनुकरण-ध्वनि, जैसे — कत्कत्कत्
 कतकतकत्—जल के उबलते समय उत्पन्न
 होनेवाली ध्वनि ।
 ३३७ कतक (सम्) सं.— निर्मली वृक्ष जिसके
 फल से पानी साफ किया जाता है । (तद्)
 वि. कृतक— (तत्) ।
 ३३७ कतबा (अ. दे.) सं.— कतब, अंगीकार
 पत्र, कनूनी स्वीकृति पत्र ।
 ३३७ कतवे, ३३७ कदवे (अ. दे. ?) सं.—
 विवाह, झगड़ा, कलह ।
 ३३ कति [या ३३ खति] (क) सं.— क्रोध, रोष,
 गुस्सा ।
 ३३ कतिपय (सम्) वि.— कुछ, थोड़ा,
 कुछेक ।
 ३३ कते (तद्) सं.— कथा (तत्) । — गार
 (क) सं.— कथा कहनेवाला ।
 ३३ कतलिन ३३ कत्तगालिन ३३ क
 अटरूप, अड्डसा ।
 ३३ कत्तरि (तद्) सं.— कर्त्ती या कर्त्तनी, (तत्)
 कैची, चाकू, छोटी तलवार । — ३३
 कळ, गधु, गळ (तद्) सं.— गिरहकट,
 ठग । — ३३ कोळ, ३३ गोळ (क)
 सं.— कैची । — ३३ बावुलि (तद्)
 सं.— कान के ऊपरी भाग में पहनने का
 आभूषण विशेष । ३३ कत्तरिसु (तद्)
 क्रि.— काट, टुकड़े कर ।
 ३३ कत्तल, ३३ कत्तल ३३ कत्तलु,
 ३३ कत्तले (क) सं.— अंधेरा,
 अंधकार । — ३३ इसु (क) क्रि.— अंधेरा
 या अंधकार हो । — ३३ गणि (क) क्रि.—
 अंधेरा छा । — ३३ मणि (क) सं.—
 अंधेरे की मणि, चंद्रमा ।
 ३३ कत्तल (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
 हत्या ; हिंसा ।
 ३३ कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
 छोटी तलवार, चाकू, छुरी । ३३ क
 ३३ कत्तियदरे रक्त
 बारदे — सोने की तलवार हो तो क्या रक्त
 (खून) नहीं आएगा (कह०) ।

कंदु कं कटुक कंदुकु कटुक, कंदु०कः कंदुकु
 (क) क्रि.— चोंच मार, चंचुघात कर ।
 कंदु कटु (क) क्रि.— मिल, जुड़, संयुक्त हो,
 पास जा, दब, मसला जा, संकुचित हो ।
 कंदु वंठि कहवणि (क) सं.— रोमांच, पुलक ।
 कंदु कहि (क) सं.— इच्छा, चाह ।—काल
 कार [काल कार] (क) सं.— इच्छुक ।
 कंदु यीसु कहियसु (क) क्रि.— इच्छा कर,
 कामना कर, पसंद कर, चाह ।
 कंदु कटु (क) वि.— धौला, भूरा । सं.—
 कश्यप की एक पत्नी का नाम जो सर्पों की
 माता थी ।
 कंदु०कं कंदुकु (क) क्रि.— दे, कंदुकु
 कंदु कन (क) सं.— (दृश्य), सपना ।
 कंदु कनक (सम्) सं.— सोना ; धतूरा ;
 पलाश वृक्ष ।—१० गिरि (सम्) सं.—
 मेरु पर्वत ।
 कंदु०कं कनकदास (सम्) सं.— कन्नड के
 एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त कवि ।
 कंदु०कं कनकनग (सम्) सं.— दे. कंदु०कं
 कंदु०कं कनकवृष्टि (सम्) सं.— सोने की
 वर्षा ।
 कंदु०कं कनकाचल, कंदु०कं कनकाद्रि
 (सम्) सं.— मेरु पर्वत, सुरगिरि ।
 कंदु०कं कनकाध्यक्ष (सम्) सं.— कोशा-
 ध्यक्ष ।
 कंदु०कं कनकाभियेक (सम्) सं.— गुरु,
 कवि या बड़े व्यक्ति का, उनके सिर पर या
 चरणों में सोने की मुद्राओं की वर्षा कर
 सम्मान करना ।
 कंदु०कं कनकारविंद (सम्) सं.— हेम
 वर्ण का कमल ।
 कंदु०कं कनकालुके (सम्) सं.— सोने का
 कलश या पात्र ।
 कंदु०कं कनकक, कंदु०कं कनकक (क) सं.—
 चश्मा, ऐनक ।
 कंदु०कं कनडि, कंदु०कं कनडि (क) सं.— दर्पण,
 आईना ।
 कंदु०कं कनर, कंदु०कं कनरु (क) सं.— अपक्व

फल, कच्चा फल, अपक्वरस, कड़वी रुचि ;
 अरुचिकर गंध (तेल के जलने से निकलनेवाली
 गंध) ।
 कंदु०कं कनल, कंदु०कं कनलु (क) सं.— क्रोध,
 रोष । क्रि.— क्रुद्ध हो, गुस्से में आ ।
 कंदु०कं कनलके (क) सं.— क्रोध, रोष, गुस्सा ।
 कंदु०कं कनस, कंदु०कं कनसु (क) सं.— सपना,
 स्वप्न ।
 कंदु०कं कनवरिसु, कंदु०कं कनवरि (क)
 क्रि.— सपना देख, किसी एक वस्तु में ही
 ध्यान लगा ।
 कंदु०कं कनि (क) क्रि.— चमक, प्रकाशमान हो ।
 सं.— दया, करुणा, सहायुभूति, दयालु
 होना । कंदु०कं कनिकर (क) सं.— दया
 सहायुभूति ।
 कंदु०कं कनिष्ठ (सम्) वि.— सब से छोटा, सब
 से कम, बहुत छोटा ।
 कंदु०कं कनिष्ठिके (सम्) सं.— छिगुनिया, हाथ
 की सबसे छोटी उंगली ।
 कंदु०कं कनिष्ठे (सम्) सं.— दे. कंदु०कं
 कंदु०कं कनीनि, कंदु०कं कनीनिके (सम्) सं—
 छिगुनिया ; आँख की पुतली ।
 कंदु०कं कनीयस् (सम्) वि.— छोटा,
 कम । सं.— छोटा भाई । कंदु०कं कनी-
 यसि (सम्) सं.— छोटी बहन ।
 (१) कंदु०कं कन (क) सं.— (चोरों से दीवार में
 बनायी जानेवाली) सेंध ; झरोखा, दरार
 (मै. प्र.) ।— कंध कळ, कंध कळ, गंध, गळळ
 (क) सं.— सेंध मारनेवाला, चोर । कंध,
 कंध कनकाळवु, कंध कंधाचोरि(क)
 सं.— सेंध मारकर चोरी करने का अपराध ।
 (२) कंदु०कं कन (क) सं.— कंदु०कं कने—गाल,
 कपोल (मै. प्र.) ।
 (३) कंदु०कं कन (तद्) सं.— कर्ण (तद्) ; कान ।
 कंदु०कं कनगार [कंध गार] (क) सं.— सेंध
 मारकर चोरी करनेवाला ।
 कंदु०कं कनड (क) सं.— कन्नड भाषा जो कर्ना-
 टक में बोली जाती है ; कन्नड भाषा प्रदेश,
 कर्नाटक ।

कंदु०कं कनडि (क) सं.— दे. कंदु०कं
 कंदु०कं कनडिग (क) सं.— कन्नड भाषी पुरुष ।
 कंदु०कं कनडिगिति—कन्नड भाषी स्त्री ।
 कंदु०कं कनडिसु (क) क्रि.— प्रतिबिंबित हो ;
 प्रतिबिंबित कर, प्रकट कर, अनुवाद कर,
 भाषांतर कर ।
 कंदु०कं कनवड (क) सं.— दीवार जो दर्पणों
 से आवृत हो ।
 कंदु०कं कनवर (तद्) सं.— कर्णपूर (तद्) ;
 कर्णाभरण ।
 कंदु०कं कनिके (तद्) सं.— कन्यका (तद्) ;
 लड़की, अविवाहित लड़की ।
 कंदु०कं कने (तद्) सं.— कन्या (तद्) ; दे. कंदु०कं
 —कन तन (तद्) सं.— कन्या रहना, बच-
 पन ।—कन माड (तद्) सं.— अंतःपुर ।
 —कन वेण (तद्) सं.— अविवाहिता
 लड़की ।
 कंदु०कं कन्यके, कंदु०कं कन्यका (सम्) सं.—
 दे. कंदु०कं
 कंदु०कं कन्यसा, कंदु०कं कन्यसे (सम्) सं.—
 छिगुनिया, सब से छोटी उंगली ।
 कंदु०कं कन्या (सम्) सं.— दे. कंदु०कं
 कंदु०कं कन्याकुमारि (सम्) सं.—
 दुर्गा जो कुमारी ही रही ; एक नदी का
 नाम, जिसके तट पर, कह जाता है कि
 पार्वती ने तप किया था ; कुमारी अंतरीप ।
 कंदु०कं कन्यादान (सम्) सं.— (शुल्क लिए
 बिना) कन्या को (विवाह में) दान देना ।
 कंदु०कं कन्यापति (सम्) सं.— दामाद,
 जामाता ।
 कंदु०कं कन्यापरिणते (सम्) सं.— बुद्धि
 मति लड़की या कन्या ।
 कंदु०कं कन्यापुत्र, कंदु०कं कन्याजात
 (सम्) सं.— अविवाहिता लड़की से उत्पन्न
 लड़का, कानीन ।
 कंदु०कं कन्यार्थि (सम्) सं.— वह पुरुष जो
 विवाह में कन्या को माँगता हो, वर ।
 कंदु०कं कन्याव्रत (सम्) सं.— आजीवन
 कन्या ही रहने का दृढ़ संकल्प या व्रत ।

कन्याशुल्क कन्याशुल्क

कन्याशुल्क (सम्) सं.— वह धन,
जो कन्या के मूल्य के रूप में दिया जाता है।
कन्ये (सम्) सं.— कन्या।
कपट (सम्) सं.— धोखा, छल,
प्रवचन।— कृत्य (सम्) सं.— छल का
काम।— गोर गर, गार गार
(सम्) सं.— कपटी पुरुष।— तन
(सम्) सं.— धोखेबाजी।— वेष
(सम्) सं.— मिथ्या वेश, झूठा स्वरूप।—
शबर (सम्) सं.— शिव।—
हृदय (सम्) सं.— वह जिसका हृदय छल से पूर्ण हो।
कपटि (सम्) सं.— छल करनेवाला,
धोखेबाज पुरुष।
कपटे, कपट्टे, कपट्टि, कपट्टि,
कपट्टे, कपट्टे, कपट्टे (क) सं.— दे. कपट्टे।
कपड (तद्) सं.— कपडा (हिं.); वस्त्र।
कपर्द (सम्) सं.— कौड़ी; जटा
(विशेष कर शिवजी का जटाजूट)।
कपर्दक, कपर्दिक (सम्) सं.— कौड़ी।
कपर्दि (सम्) सं.— शिवजी।
कपाट, कपाट (सम्) सं.—
किवाड़; द्वार, दरवाजा; अलमारी (मैं प्र.)।
कपायि, कपायि, कपायि, कपायि
कपायि (अ. दे. ?) सं.— देव-मूर्तियों को
पहनाने के वस्त्र।
कपाल (सम्) सं.— खोपड़ी, खप्पर,
भिक्षापात्र, कटोरा, प्याला; संग्रह,
समारोह।— धर धर, भृत् (सम्)
सं.— शिव।— हस्त (सम्) सं.—
शिव।
कपालि (सम्) सं.— खोपड़ी रखनेवाला,
शिव।
कपालिके (सम्) सं.— दे. कपाल।
कपालिनि (सम्) सं.— शक्ति
(दुर्गा); निम्न जाति की स्त्री, ब्राह्मण
माता और शूद्र पिता की पुत्री।

कपि (सम्) सं.— बंदर।— केतु
(सम्) सं.— सुग्रीव।
कपित्थ (सम्) सं.— कैथा का वृक्ष,
कैथा का फल।
कपिध्वज (सम्) सं.— अर्जुन।—
कुलध्वज (सम्) सं.— सुग्रीव।
कपिति, कपिले (सम्) सं.— एक
नदी का नाम जो मैसूर जिले में बहती है।
कपिमुष्टि (सम्) सं.— बंदर की
मुष्टि या पकड़, दृढ़ता, हठ।
कपिल (सम्) वि.— भूरा, सुनहला।
सं.— एक ऋषि का नाम जो सांख्य दर्शन
के आविष्कर्ता है।— वर्ण (सम्)
सं.— भूरा रंग।
कपिले (सम्) सं.— दे. कपिले ;
भूरे रंग की गाय; एक प्रकार का सुगंध
द्रव्य; लकड़ी का लट्टा; दक्षिण-पूर्व दिशा
की हथिनी।
कपिवृषभ (सम्) सं.— वाली,
सुग्रीव या हनुमान।
कपिश (सम्) सं.— भूरा या सुनहला
रंग।
कपीन्द्र (सम्) सं.— बंदरों का
नायक, दे. कपीन्द्र।
कपोत (सम्) सं.— (साधारणतः)
पक्षी; कबूतर, पिङ्की।— पालि
(सम्) सं.— काबुक, भड्डी।— पालिके
(सम्) सं.— दे. कपोत पालि।
कपोताघ्रि (सम्) सं.— एक
प्रकार का सुगंध द्रव्य,
कपोताजन (सम्) सं.— सुर्मा।
कपोल (सम्) सं.— गाल।
कप्प (क) सं.— कर, शुल्क, उपहार;
सोने या चाँदी का बलय जो पैर या कलाई
में पहना जाता है, व्रत (प्रतिज्ञा) सूचक कंकण,
गड्ढा। वि.— काला, कप्पे, कप्पे। कप्प-
कपने (क) सं.— बहुत ही कालापन।
कप्पणे, कप्पणे, कप्पणे (क) वि., सं.— काला; काला रंग, काला-
पन।

कप्पट (तद्) सं.— दे. कप्पट।
कप्पट्टे (क) सं.— दे. कप्पट्टे।
कप्पड (तद्) सं.— दे. कप्पड।
कप्पडि (क) सं.— दे. कप्पडि।
कप्पडे (क) सं.— दे. कप्पडे।
कप्पणे (क) वि., सं.— दे. कप्पणे, अ.—
तुरंत, जल्दी, जल्दी-जल्दी।
कप्पर (तद्) सं.— कर्पूर: (तत्); कप्पर।
(तद्) सं.— कर्पूर (तत्); कडाही;
खोपड़ी।
कप्पल, कप्पलु (क) सं.—
गड्ढा (हाथी को पकड़ने के लिए बनाया
जानेवाला गड्ढा)।
कप्पु (क) वि.— खोदना, गड्ढा बनाना
घेरना, आवृत्त करना; फैलाना, व्याप्त करना,
चारों ओर घेरना। सं.— गड्ढा, गति; चिह्न,
निशान; ध्वज, केतु; काला, कालापन,
काला रंग; काजल, मसी; मांस, गोश्त;
कर, शुल्क, उपहार।
कप्पुर (तद्) सं.— कर्पूर: (तत्);
कप्पुर।
कप्पे (क) सं.— मेंढक, भेक।
कप्प (तद्) सं.— कप्पे।
कप्प (सम्) सं.— कप्प (तद्)— श्लेष्मा;
बलगम।
कप्पणि, कप्पणि, कप्पणि, कप्पणि
कप्पणि (सम्) सं.— कुहनी।
कप्प (क) वि.— काला; कप्पे, कप्पे
कप्पे, कप्पे— सारिका, मैना; कप्पे,
कप्पे या कप्पे कप्पे— एक काली
बेल जो बहुत मजबूत होती है— बाँस के
गट्टों को बांधने में यह काम आती है।
सं.— कप्पे— पत्थर।
कप्पे, कप्पे, कप्पे, कप्पे, कप्पे
गप्पे, गप्पे, गप्पे [कप्पे कप्पे]
(क) अ.— तुरंत, जल्दी, जल्दी-जल्दी।
कप्पे (तद्) सं.— कवच (तत्)।
कप्पे (क) सं.— चमगादड़ पक्षी। (तद्)
सं.— कपट (तत्)।
कबंध (सम्) सं.— सिर-रहित घड़

(विशेषकर वह धड जिसमें प्राण शेष हो) पेट ; पानी ; जल ; मेघ ; बादल ; राहु का नाम ; इंद्र के शत्रु एक राक्षस का नाम ; रामायण में वर्णित एक राक्षस ।

चंभुट कबर (अ. दे.) सं— कबर (अरबी) ; मुसलमानों की समाधि ।— मूस स्थान (अ. दे.) सं— कब्रिस्तान (अरबी), स्मशान ।

चंभुट कवरि, चंभुट कवरि (सम्) सं—जूड़ा ; गुथी हुई चोटी ।

चंभुट कबर (अ. दे.) सं— खबर (अरबी) ; समाचार, जानकारी ।—दारदार (अ. दे.) सं—खबरदार (अरबी, फ़ारसी) ; होशियार रहनेवाला या नियमबद्ध पुरुष ।—दांरदारि (अ. दे.) सं— खबरदारी, जागृति, होशियारी ।

चंभुट कवल, चंभुट कवल, चंभुट कवण, चंभुट कवल, चंभुट कवल, (सम्) सं—मुखभर, कौर ।

चंभुट कवलन (सम्) सं—मुखभर या कौर खाना ।

चंभुट कवल (क) सं—शिकारी व्याध । (तद्) सं—दे. चंभुट ।

चंभुट कवलिमु (तद्) क्रि.— खा, निगल । चंभुट कवल् (अ. दे.) सं— स्वीकृति, अंगीकार, मानना (कवल-अरबी) ।

चंभुट कवल् (अ. दे.) सं— ग्रहण, दे. चंभुट ।

चंभुटाळी कवलाति (अ. दे.) सं—लिखित या मौखिक स्वीकृति (बंधन) ।

चंभुट कवोजि (क) सं— अंधा पुरुष । चंभुट कव्व (तद्) सं—काव्य (तद्), काव्य, कविता ।

चंभुट कव्वेदे (क) सं—चमगादड़ पक्षी । चंभुट कव्वण, चंभुट कव्वण, चंभुट कव्वण (क) सं— लोहा ।

चंभुट कव्वळि (क) सं—दे. चंभुट । चंभुट कव्वारें (क) सं—सारस ; बगुला ।

चंभुट कव्वि (क) सं—लगाम ; संयम । चंभुट कव्विग (तद्) सं—कवि, काव्य-प्रणेता ।

चंभुट कव्विग कव्विग कैपिडि—एक प्राचीन कन्नड-शब्द-कोश का नाम ।

चंभुट कव्विण (क) सं—दे. चंभुट ।

चंभुट कव्विल (क) सं—(दे. चंभुट) शिकारी, व्याध ।

चंभुट कव्विलग (क) सं—मलाह; मछुआ । चंभुट कव्विलिगिति, चंभुट कव्विलिति (क) सं—मलाह या मछुआ जाति की स्त्री ।

चंभुट कव्वु, चंभुट कव्वु, चंभुट कव्वु (क) सं— ईख, जख । चंभुट कव्वु कव्विनहालु— ईख का रस । चंभुट कव्वु कव्वु डोंकादरें सवि डोंके— ईख टेढ़ी हो तो क्या उसकी मधुरता भी टेढ़ी है ? अन्यायी चंभुट नेयुयुवदकुंठ अरुनन्यायी सङ्गरे नेयुयुवदु लेशु मेयुवुदाकिंत इखेयागि सकरे मेयुवुदु लेसु— हाथी होकर ईख चवाने की अपेक्षा चींटी होकर शकर उड़ाना बेहतर है (कह.) । चंभुट कव्वु कव्वु कव्वु कव्वु कव्वु कव्वु कव्वु (क) सं—कामदेव ।

चंभुट कव्वुन (क) सं— दे. चंभुट ।

चंभुट कव्वेय (क) सं—दे. चंभुट ।

चंभुट कम् (क) वि.—काला; चंभुट कम्मडु, चंभुट कम्मडु (क) सं— काली नदी— यमुना । चंभुट कम्मडुविन अण्ण (क) सं—यम । चंभुट कम्मत्ति (क) सं— शाल वृक्ष । चंभुट कम्मर (क) सं— लकुर, कटहल ।

चंभुट कमटि, चंभुट कमेटि, चंभुट कमेटी कयामेटि (अ. दे.) सं— Committee (अंग्रेजी) ; समिति, सभा, संघ ।

चंभुट कमत, चंभुट कमुट्ट, चंभुट कमरु (क) सं—अरुचिकर गंध, दुर्गंध, बदबू (खराब नारियल, मैले कपड़े या जलनेवाले तेल की दुर्गंध) ।

चंभुट कमठ (सम्) सं— कछुआ ; घड़ा ।

चंभुट कमंडल, चंभुट कमंडलु (सम्) सं—मिट्टी या लकड़ी का जलपात्र ।

चंभुट कमन (सम्) वि.—विषयी, लंपट ; सुंदर, मनोहर । सं—कामदेव; अशोकवृक्ष ।

चंभुट कमनीय (सम्) वि.—मनोहर, सुंदर, वांछनीय ।

चंभुट कमर, चंभुट कमरु (क) सं—किसी पदार्थ की जल जाने या झुलस जाने की स्थिति ; तेल, घी, बाल आदि के जलने से उत्पन्न दुर्गंध ।

चंभुट कमरि, चंभुट कमरि (क) सं— ढार, उतार, प्रपात, तट ; चट्टान ; कंदरा, खड्ड ।

चंभुट कामरिके, चंभुट कामरिगे (क) सं— दे. चंभुट ।

चंभुट कमरु (क) क्रि.—जल जा, झुलस जा । सं—दे. चंभुट ।

चंभुट कमल (सम्) सं—कमल पुष्प, जलज ; जल ; ताँबा ; किरण, रश्मि ; चंद्रमा ; मृग (हिरन) विशेष ; सारस पक्षी ; एक छंद का नाम ।—खंड खंड (सम्) सं— कमलों का समूह ।—गंध गंधि (सम्) सं—स्त्री, जो कमल के समान सुगंध से युक्त हो।—गर्भ गर्भ (सम्) सं— ब्रह्मा ।—ज (सम्) सं—ब्रह्मा ।—ज्वाण जाण्ड (सम्) सं— संसार, विश्व ।—नाभ नाभ (सम्) सं—विष्णु ।—पेटे पेटे (सम्) सं— वस्त्र का एक प्रकार का अलंकृत किनारा ।—बाण बाण (सम्) सं— कामदेव ।—बाण बांधव (सम्) सं— सूर्य ।—धंस भव (सम्) सं—ब्रह्मा ।—सुत्र मित्र (सम्) सं—सूर्य ।—मुखि, नदन नदने (सम्) सं—कमल के समान मुखवाली स्त्री ।—सख सख (सम्) सं— सूर्य ।—संभव संभव (सम्) सं— ब्रह्मा ।

चंभुट कमला (सम्) सं—लक्ष्मी ; सर्वोत्तम स्त्री ।—कुमार कुमार (सम्) सं— प्रद्युम्न, मन्मथ ।

चंभुट कमलाक्ष (सम्) सं— विष्णु, कृष्ण ।

चंभुट कमलाक्षि (सम्) सं— कमल के समान नेत्रवाली स्त्री ।

कमलानने (सम्) सं—दे. कमल
मूखी (कमल में)

कमलास (सम्) सं—दे. कमल
सख (कमल में) ।

कमलालये (सम्) सं—लक्ष्मी ।

कमलासन (सम्) सं—ब्रह्मा ।

कमलनि (सम्) सं—कमल-समूह,
सरोवर जहाँ कमल हों ; कमल जैसी स्त्री ।

कमले (सम्) सं— लक्ष्मी ।

कमलेश (सम्) सं— विष्णु ।

कमलोदर (सम्) सं— विष्णु
चंद्रमा ।

कमलोद्भव (सम्) सं—
ब्रह्मा ।

कमल (तद्) सं— कमल (तत्) ;
कमल ।

कमानु (अ. दे.) सं— कमान
(हिं.), धनुष ; घड़ी की कमानी ; सारंगी
(Violin) बजाने का कमान ।

कमायिषि (अ. दे.) सं—
(‘कमाना’ से)—लगान या भू-कर की वसूली।
— दार (अ. दे.) सं— लगान या
कर वसूल करनेवाला ।

कमुडु (क) सं— दे. कमलु.

कम्म, कम्म (क) सं—
सुगंधि, खुशबू ।

कम्म (तद्) सं— कर्म (तत्), काम,
कार्य । — गार [गार] (तद्)
सं— कर्मकार (तत्) ; दे. कम्म
[= कम्मर कम्मर] ।

कम्मगे, कम्मने (क) अ.—
बहुत सुगंध युक्त ।

कम्मट (क) सं— सुद्रा ; टकसाल ।

कम्मटि (क) सं—सिक्का बनानेवाला ।

कम्मरि (क) सं— दे. कम्मरि.

कम्मरे (क) सं— दे. कम्मरे.

कम्मर (तद्) सं— दे. कम्मर,
कम्मरि— ‘कम्मर’ का स्त्री.
लिं. ।

कम्मर (तद्) सं— दे. कम्मर.

कम्मरगति, कम्मरि
कम्मरगति.

कम्मरि (तद्) सं— ‘कम्मर’
का स्त्री. लिं. ।

कम्मरि (तद्) सं— दे.
कम्मरि.

कम्मर (तद्) सं— पेशावर ;
लोहार, सोनार ।

कम्मि (अ. दे.) सं— न्यूनता, कमी ।
वि.— कम, थोड़ा । कम्मि कम्मि
जास्ति (अ. दे.)— कम-ज्यादा ।

कम्मि, कम्मि, कम्मि (क) सं—
सुगंध देनेवाला, सुगंध युक्त पदार्थ, सुगंधि ।

कम्मि (क) सं— सुगंध युक्त पुरुष ।

कम्मि (क) सं— सुगंध युक्त
स्त्री ।

कम्मि (क) क्रि.— सुगंधित हो,
खुशबूदार हो. ; (दाँतों से) ध्वनि उत्पन्न
कर । सं—खुशबू, सुगंध ।

कम्मि (क) सं— (स्मार्त) ब्राह्मणों की
एक शाखा ।

कम्मि (सम्) वि.— मनोहर, सुंदर,
प्यारा ।

कम्मि (क) सं = कम्मि क्ये या कम्मि
कै — हाथ ; = कम्मि क्यि, कम्मि क्यि,
कम्मि क्यि— कट्ट, कट्टापन ; खेत ।

वि.— मथने का, मथन करने का,
कम्मि क्ये या कम्मि क्ये—मथानी । क्रि.— कर, काम कर, संपन्न
कर ।

कम्मि (सम्) सं— ब्रह्मा का नाम ।

कम्मि (क) सं— कंठ को धीरे से
दबाने पर निकलनेवाली ध्वनि ।

कम्मि (क) सं— धान ; चावल ।

कम्मि (सम्) सं— कल्पना,
अनुमान ।

कम्मि (क) सं— कट्टा, कट्टापन ;
हाथ । कम्मि क्यि (क) सं—
परकाल (compasses) कम्मि क्यिसने
(क) सं— हाथ का इशारा ।

कम्मि क्यिसु, कम्मि क्यिसु, कम्मि क्यिसु
(क) क्रि.— करा, काम करा (प्रे.) ।

कम्मि क्यि, कम्मि क्यि (क) सं— कट्टापन
कुटः ।

कम्मि क्यि (क) सं— दे. कम्मि.
कम्मि क्यि, कम्मि क्यि (क) क्रि.—
हाथ में आ, प्राप्त हो ; उपलब्ध हो ; सफल
हो ।

कम्मि क्यि (क) सं— प्रशंसा ; सहारा ।

कम्मि क्यि (क) सं— कृत्रिम क्षेत्र, खेत ।

कम्मि क्यि (क) क्रि.— दे. कम्मि.

कम्मि (क) वि.— अधिक, बहुत, ज्यादा ।

कम्मि (क) सं—अधिकता, बहुतायत,
समृद्धि, बल, शक्ति ; एक अनुकरण ध्वनि ;
कम्मि करकर—दाँतो को रगड़ने से उत्पन्न
होनेवाली ध्वनि ; दुःख या चिंता के समय
निकलने वाली एक ध्वनि ; कम्मि करकर
(दुहराना)अ.—बहुत दुःख से या चिंता से ।

कम्मि करकरे (क) वि.—दुःखद, कष्टप्रद ।

कम्मि करकरे (क) सं—चिंता, व्याकु-
लता ।

कम्मि (सम्) सं—हाथ ; हाथी की सूँड ;
कर, चुंगी ; अंगुल का माप विशेष ; ओला ;
किरण, रश्मि ; जल, पानी ; मेघ, बादल ;
रक्त, खून ; पवन, हवा ; दो की संख्या ;
छः की संख्या ; हस्त नक्षत्र ।

कम्मि करक (सम्) सं—जलपात्र, कम्मि ;
ओला ; दाडिम, अनार ; जंगल, वन ;
घोंसला ; एक वृक्ष ।

कम्मि करकु, कम्मि करिकु, कम्मि करिकु,
कम्मि करकु, कम्मि करकु (क) सं—बर्तन
के ऊपर की मसि जो जलाने पर उत्पन्न होती
है, बर्तन के अंदर किसी पदार्थ के अधिक
जलने से उत्पन्न होनेवाली कालिमा ; कालिख ;
काजल ; काली दवा (चूर्ण) जो पानी में
मिलाकर ली जाती है ।

कम्मि करके (सम्) सं— ओला ।

कम्मि करग (तद्) सं—करक (तत्) ; जलपात्र,
कम्मि ।

कम्मि करगदुग (तद्) सं— हाथ में

खेलने का गेद ।
 चं०००३६ करगलंतिके (तद्) सं.—छोटा घड़ा,
 छोटी गगरी ।
 चं०००३७ करगस, गं०००३७ गरगस (तद्) सं.—
 ककच (तत्) ; आरा ।
 चं०००३८ करगिसु, चं०००३८ करगिसु, चं०००३८
 करगिसु (क) क्रि.— गला, घुला ; द्रवीभूत
 कर, पिघला ।
 चं०००३९ करगु (क) क्रि.—गल, द्रवीभूत हो,
 पिघल, द्रवीभूत हो ; मुलायम हो ।
 चं०००४० करग्रहण (सम्) सं.—पाणिग्रहण,
 विवाह ।
 चं०००४१ करंक (सम्) सं.— खोपड़ी ; नरेरी,
 नारियल का बना पात्र, पिटारी, संदूक ।
 चं०००४२ करंगु (क) क्रि.—दे. चं००४२।
 चं००४३ करचि, चं००४३ करजि, चं००४३ करचि, चं००४३
 करजि (क) सं—गेहूँ का आटा बेलकर उसमें
 तिल और गुड़ रखकर बनाई जानेवाली एक
 मिठाई ।
 चं००४४ करज (सम्) सं.— हाथ की उँगली का
 नख ; एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी भवन-
 निर्माण में काम आती है, मिलावे का पेड़,
 एक सुगंध द्रव्य ।
 चं००४५ करजात (सम्) सं.— दे. चं०४५।
 चं००४६ करजि (क) सं,—दे. चं०४६।
 चं००४७ करंज चं००४७ करंजक (सम्) सं—
 दे. चं०४७।
 चं००४८ करट (सम्) सं.— हाथी का गाल,
 गंडस्थल ; कौआ, काक, मेंढक ; नभ ;
 गगन, आसमान ; जीव, आत्मा ।
 चं००४९ करट चं००४९ करटी, चं००४९ करटी, चं००४९
 कंट (क) सं—(फोड़े) नारियल का ढाँचा ।
 चं००५० करटक (सम्) सं.— कौआ ; हितोप-
 देश और पंचतंत्र में वर्णित एक सियार का
 नाम ; आक्षेप करनेवाला ; चुगलखोर ।
 चं००५१ करटि (सम्) सं.— हाथी, गज ।
 चं००५२ करड, चं००५२ करडु, चं००५२ कडु (क) सं.—
 सूखी घास ।
 चं००५३ करडो चं००५३ करडिगे, चं००५३ करं-
 डिगे, चं००५३ करडिगे (तद्) सं— करंडिका

(तत्) ; बाँस की पिटारी ।
 चं००५४ करडि (क) सं.— भालू, रीछ ; = चं०५४
 करडे—झर्रर, डोल, नगाड़ा ।
 चं००५५ करडिगे (तद्) सं.—दे. चं०५५।
 चं००५६ करडु (क) सं—बेकार काम, लिखा हुआ
 कागज़, पाण्डुलिपि ; दे. चं०५६. वि.—मोटा
 गाढ़ा, रूखा, रूक्ष, कठोर ; बेकार ; दुष्ट ।
 क्रि.—मिल, मुल-मिला, हिला ।
 चं००५७ करडे (क) सं.—दे. चं०५७।
 चं००५८ करण (सम्) सं.— करना, संपन्न करना ;
 क्रिया ; धर्मानुष्ठान ; व्यवसाय, व्यापार ;
 इंद्रिय ; शरीर ; क्रिया का साधन, कारण,
 हेतु ; टीप, दस्तावेज़, लिखित प्रमाण ;
 संगीत विद्या में ताली से ताल देना ; ज्योतिष
 में दिन विभाग विशेष ; शूद्र माता और वैश्य
 पिता का पुत्र ; सभा भेद, लेखन का अभ्यास ;
 लेखक, लिखनेवाला ; पाँच की संख्या ; ताल,
 (नाटकीय) भाव-प्रदर्शन, नृत्य की भंगिमा ।
 —गु००५८ ग्राम (सम्) सं—इंद्रियों की
 समष्टि ।—उ००५८ त्रय (सम्) सं.—मन,
 वचन और काय—ये तीन ।—उ००५८ शाले
 (सम्) सं.— लेखकों का कार्यालय ।—
 उ००५८ शाले (सम्) सं= चं०५८।
 चं००५९ करणि (सम्) सं.—करना, बनाना,
 संपन्न करना ; संकर जाति की स्त्री ; लिखने-
 वाला—दे. चं०५९।
 चं००६० करणिक (सम्) सं.—चं०६० करणीक,
 चं०६० करणीक— लेखक, लिखनेवाला ;
 हिसाब लिखनेवाला, मुनीम ; गणितज्ञ,
 ज्योतिषी ।—उ००६० मंडलीक (सम्)
 सं.—प्रधान मुनीम ।
 चं००६१ करणीक (सम्) सं—दे. चं०६१।
 उ००६१ तन (सम्) सं.—मुनीमी ।
 चं००६२ करणीय (सम्) वि.—करने योग्य,
 करने उपयुक्त ।
 चं००६३ करणे, चं००६३ कणे (क) सं.— थक्का,
 पिंड, गोलाकृति, गोला ।
 चं००६४ करणेन्द्रिय (सम्) सं.— कान,
 श्रवणेन्द्रिय ।
 चं००६५ करंड, चं००६५ करंडक, चं००६५ करं-

डो (सम्) सं.— दे. चं०६५।
 चं००६६ करतल (सम्) सं.— हथेली ।—उ००६६
 उ००६६ आमलक (सम्) सं.—हथेली पर का
 आँवला ; अत्यंत सुगम कार्य ।
 चं००६७ करतल (सम्) सं.—दे. चं०६७।
 चं००६८ करताल, चं००६८ करताल (सम्) सं。
 —झाँझ, मंजीरा ; ताली बजाने का समय ।
 चं००६९ करताळि (तद्) सं—दे. चं०६९।
 चं००७० करदंड (सम्) सं.—कमल, लाठी ;
 एक काँटेदार पौधा ।
 चं००७१ करपत्र (सम्) सं.—आरा ; पत्रिका,
 लघु पुस्तिका, छोटा कागज़ ।
 चं००७२ करपल्लव (सम्) सं.—उंगली ; हाथ ;
 इशारा (हाथ का इशारा) ।
 चं००७३ करपात्रे (सम्) सं.—छोटा बर्तन,
 गिलास, प्याला ।
 चं००७४ करपीठ (सम्) सं.—सोंटा ; एक
 औज़ार विशेष जिससे रास्ते की भूमि को
 समतल किया जाता है ।
 चं००७५ करपुट (सम्) सं.— हथेली ; अंजलि ;
 आदर सूचनार्थ दोनों हथेलियों को जोड़ना ।
 चं००७६ करबाल (सम्) सं.—चं०७६ कर-
 पाल, चं०७६ करवाल चं०७६ करवाल,
 चं०७६ करवाल, —तलवार, खड्ग ।
 चं००७७ करवृज, चं०७७ करवृज, चं०७७ करवृज
 करवृज, चं०७७ करवृज, चं०७७ करवृज
 करवृज (अ.दे.) सं.— खूरवृजा (फारसी),
 तरवृज ।
 चं००७८ करबोन (तद्) सं.— छोटा जलपात्र
 जिसका मुँह बड़ा होता है ।
 चं००७९ करभ (सम्) सं.— कलाई से लेकर
 उंगली के नख तक के हाथ का पृष्ठभाग ;
 ऊँट ; जवान ऊँट ; जवान हाथी ; सूंड ;
 एक वाद्य विशेष (ग्रामीण) ।
 चं००८० करभूषण (सम्) सं.— कलाई का
 आभूषण, कंकण ।
 चं००८१ करभोरु (सम्) वि.— सुंदरी-
 करभ के समान जांघवाली ।
 चं००८२ करमे (क) वि.—दे. चं०८२।

कंठं करं (सम्) वि. — मिश्रित, मिला हुआ, रंगबिरंगा ।

कंठं करंभ (सम्) सं. — आटा या अन्य भोज्य पदार्थ जिसमें दही मिला हो ।

कंठं करंभक (सम्) सं. — दे. कंठं ; दे. कंठं.

कंठं कररुह (सम्) सं. — हाथ की उंगली का नख ।

कंठं करवल्य (सम्) सं. — चूड़ी; मल-विद्या के कुछ दौंव-पेच ।

कंठं करवाल कंठं करवाल कंठं करवाल करवाल (सम्) सं. — दे. कंठं.

कंठं करवीर (सम्) सं. — एक पुष्प (वृक्ष) विशेष ; तलवार, एक देश का नाम ।

कंठं करवूर् (क) सं. — बड़ा नगर ; एक नगर का नाम ।

कंठं करशाखे (सम्) सं. — उंगली ।

कंठं करशीकर (सम्) सं. — हाथी की सूँड से टपकाया हुआ जल ।

कंठं करसीकर (सम्) सं. — दे. कंठं.

कंठं करसु (क) क्रि. — कंठं करिसु, कंठं करेसु, कंठं करेयिसु—बुलवा ; भून, भुनवा ; (दूध) दुहा ।

कंठं करह, कंठं करेह (क) सं. — बुलावा, निमंत्रण, आह्वान ; दुहना ।

कंठं करग्रा (सम्) सं. — हाथ का अग्र भाग, उंगली, हाथी की सूँड का अंतिम भाग ।

कंठं कराट (सम्) सं. — दे. कंठं.

कंठं कराल, कंठं कराल (सम्) वि. — भयंकर, भयानक, बड़ा, लंबा, ऊँचा; विषम, विकृत ।

कंठं करालि (सम्) सं. — शिवशक्ति, दुर्गा ।

कंठं करालि (क) सं. — समुद्र-तट या नदी तट का स्थान ।

कंठं करावु (क) सं. — दूध दुहना ।

कंठं करसि (तद्) सं. — खर असि, तीक्ष्ण तलवार ।

(१) कंठं करि (सम्) सं. — हाथी ; आठ की संख्या ।

(२) कंठं करि (क) क्रि. — भून, घी या तेल में

भून; कुछ जला, झुलसा; जलाकर काला करा सं.—भुने रहने की स्थिति; कालापन, काला रंग; कोयला। कंठं करिय, कंठं करी—काला। कंठं करिगुड्डु (क) सं.—आँख की पुतली। कंठं करिगुड्डि (क) सं.—नीलकंठ पक्षी। कंठं करिजालिमर (क) सं.—बबूल का पेड़। कंठं करिजिगि (क) सं.—कपास के वृक्ष को होने वाली एक बीमारी। कंठं करिजीरिगे (क) सं.—काला जीरा। कंठं करि-तुल्यसिगिड (क) सं.—तुलसी पौधा विशेष, कृष्ण-तुलसी। कंठं करिदिंगलु (क) सं.—कृष्ण पक्ष। कंठं करिबुरा दिन, ग्रहण के बाद का दिन, अशुभ दिन। कंठं करिवेवु (क) सं.—मीठा नीम; एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते सुगंधित होते हैं, वे रस, सांवार आदि में (सुगंधि के लिए) डाले जाते हैं। कंठं करिमणि (क) सं.—काली मणि, काली मणियों की माला जो सुमंगलियाँ पहनती हैं। कंठं करिय (क) सं.—काला पुरुष। कंठं करियकण (क) सं.—काली आँख। कंठं करियकंबलि (क) सं.—काली कमली (कंबल) कंठं करिय जीरिगे (क) सं.—दे. कंठं, कंठं बदनकाय कंठं करिय बदनेकायि (क) सं.—काले (भूरे)रंग के बैंगन। कंठं करियवाल(क) सं.—एकसुगंधि द्रव्य कंठं करिय ब्राह्मण (क) सं.—काला ब्राह्मण; कंठं करिय नंबबारदु, बिळी इंग्लियन नंबबारदु—काले ब्राह्मण और गोरे अछूत पर विश्वास नहीं करना चाहिए (कहं)। कंठं करियळ (क) सं.—काली स्त्री। कंठं करियळवे (इरुवे) (क) सं.—काली चींटी। कंठं करियुप्पु (क) सं.—काला नमक। कंठं करिहत्ति (क) सं.—काली कपास (The American Cotton Plant)। कंठं करिकवु; कंठं करि

करिकवु (क) सं.—काली ईख जो बहुत मीठी होती है। कंठं करिचेळु (क) सं.—काला बिच्छू।

(३) कंठं करि (क) क्रि.—= कंठं कळि—बहुत दूर जा, अंत हो, मर जा, हाथ से निकल जा; निकल जाने दे; = कंठं करे—बुला, पुकार, आह्वान कर, निमंत्रण दे।

कंठं करिक, कंठं करिग (क) सं.—काला आदमी।

कंठं करिकर (सम्) सं.—हाथी की सूँड। कंठं करिकु, कंठं करिकु (क) सं.—दे. कंठं.

कंठं करिग (क) सं.—दे. कंठं.

कंठं करिगमने (सम्) सं.—हाथी की चाल-सी चालवाली स्त्री।

कंठं करिगर्जित (सम्) सं.—हाथी का गर्जन।

कंठं करिगाल (क) सं.—बुरे या अशुभ लक्षणवाला पुरुष। कंठं करिगालि—स्त्री. लिं.।

कंठं करिगि (क) सं.—काली स्त्री।

कंठं करिगिसु (क) क्रि.—दे. कंठं

कंठं करिगोरल (तद्) सं.—नीलकंठ, शिव।

कंठं करिघटे (सम्) सं.—गज-समूह, हाथियों का झुंड।

कंठं करिचर्मधारि, कंठं करिचर्मधारि (सम्) सं.—शिव।

कंठं करिचु, कंठं करिचु (क) क्रि.—पकड़, धर, छीन ले, जूट कर।

कंठं करिदु, कंठं करदु, कंठं करेदु (क) सं.—काली चीज़, जो काला हो वह; कालापन।

कंठं करिदंत (सम्) सं.—हाथीदंत।

कंठं करिप (सम्) सं.—महावत।

कंठं करिपोत (सम्) सं.—हाथी का बच्चा।

कंठं करिप्रास (सम्) सं.—तुक का एक भेद।

कठिमुख करिमुख (सम्) सं.— गणेश जी ।
 कठि करिर, कठि करीर (सम्) सं.— घड़ा,
 जलकुंभ ; हाथीदाँत का मूल ; बाँस का
 अँसुआ ; करील (एक कंटीला झाड़) ।
 कठि करिरिपु, कठि करिवैरि (सम्)
 सं.— शेर, सिंह ।
 कठि करिवदन (सम्) सं.— दे. कठिमुख ।
 कठि करियंति (सम्) करिवैजयंति सं.—
 हाथी की पीठ पर रखा हुआ झंडा ।
 कठि करिशावक (सम्) सं.— दे. कठि
 शवक ।
 कठि करिष्णु (सम्) वि.— करने का
 इच्छुक, कर्तव्य-प्रिय ।
 कठि करिसु (क) क्रि.— दे. कठिमु ।
 कठि करीर (सम्) सं.— दे. कठि ।
 कठि करीरक (सम्) सं.— झगड़ा, लड़ाई ।
 कठि करीरि (सम्) सं.— हाथीदाँत का मूल ।
 कठि करीप (सम्) सं.— सूखा गोबर ।
 कठि कर (क) वि.— बड़ा, महान्, ऊँचा; कठि
 न्याय करमाड (क) सं.— बड़ा या ऊँचा
 भवन । सं.— बड़वा, गाय-भैंस का
 बच्चा ; पुतली, गुड़िया, ढली हुई वस्तु ।
 क्रि.— लक्ष्य कर, निशान लगा; विचार
 कर; अनुमान कर; कठि करविडु (क)
 क्रि.— ढाल, लेप्य-कर्म कर ।
 कठि करकु (क) सं.— दे. कठि ।
 कठि करण, कठि करणे (सम्) सं.—
 दया; रहम, अनुकंपा; सहानुभूति; तपस्वी ;
 काव्य करसों में एक; करणाभाव ; दयालु,
 कृपालु ; कोमलता ।
 कठि करणाकर, कठि करणानिधि,
 कठि करणाधि (सम्) सं.— अत्यंत
 दयावान् ।
 कठि करणांबु (सम्) सं.— करणा
 के आँसू ।
 कठि करणांबुधि (सम्) सं.— दया-
 सागर ।
 कठि करणालवाल (सम्) सं.— करणा
 -जलाशय (अत्यंत दयावान्) ।

कठि करणालु (सम्) सं.— दयालु,
 दयावान् । सं.— तन (सम्) सं.—
 दयालुता, कारण्य ।
 कठि करणावंत (सम्) सं.— दयालु ।
 कठि करणाशरनिधि. कठि करणा-
 मयुद्ध, करणासमुद्र, कठि करणा
 सागर, कठि करणासिंधु (सम्)
 सं.— दया-समुद्र (अत्यंत दयावान्) ।
 कठि करणि (सम्) सं.— कृपालु, दयालु ।
 कठि करणिसु (सम्) क्रि.— दया कर,
 अनुकंपा कर ; सहानुभूति दिख ।
 कठि करुत्तिरि (क) क्रि.— निशान लगा,
 लक्ष्यपूर्वक मार या वेध ।
 कठि करुपु (क) सं.— ईर्ष्या, मात्सर्य ;
 तिरस्कार ।
 कठि करुव (क) सं.— ईर्ष्यालु पुरुष ।
 कठि करुवु (क) क्रि.— ईर्ष्या कर, डाह
 कार । सं.— ईर्ष्या, मात्सर्य, डाह ।
 कठि करुवु (अ. दे.) सं.— दे.
 कठि करुवु ।
 कठि करुमाड, कठि करुवाड (क)
 सं.— ऊँचा या बड़ा भवन अट्टालिका ।
 कठि करुहु (क) सं.— दे. कठि ।
 कठि करुल्, कठि करुलु, कठि करुलु,
 कठि करुल्, कठि करुलु (क) सं.— ;
 आँत, अंतर्द्वियाँ ; प्रेम, प्रीति, वात्सल्य,
 ममता ।
 कठि करे (क) क्रि.— बुला, पुकार, आह्वान
 कर, निमंत्रण दे ; बरस. बरसा, (आँसू)
 बहा ; (दूध) दुह ; छिपा । सं.— बुलावा,
 निमंत्रण ; तट, किनारा, छोर ; काला,
 कालापन, कालिम, कलंक, दोष ; गो-कुल,
 गजशाला ; हरी गोल मिर्च ; हरी इलायची ।
 कठि करे करे कमल (सम्) सं.— करेव, कुमुद ।
 कठि करे नेल (क) सं.— काली मिट्टी-
 वाली भूमि । कठि करे वेकु (क) सं.—
 काली बिल्ली । कठि करे कूदल (क)
 सं.— काले बाल । कठि करे जीरिगे
 (क) सं.— काला जीरा । कठि करे महु

(क) सं.— बारुद । कठि करे म्णसु
 (क) सं.— काली मिर्च । कठि करे हडि
 (क) सं.— काली छिपकली ।
 कठि करेकलुहु (क) क्रि.— बुला, पुकार ;
 कह ।
 कठि करेगणु (क) सं.— सीमा का
 अतिक्रमण कर, लौंघ, उल्लंघन कर ।
 कठि करेगार (क) सं.— एक जाति विशेष
 का व्यक्ति ।
 कठि करेगालि (क) सं.— भूमि से समुद्र की
 ओर बहनेवाली, हवा ।
 कठि करेगोरल (क) सं.— शिव ।
 कठि करेदु, कठि करिदु (क) सं.— काला
 पदार्थ ।
 कठि करेगिसु, कठि करेसु (क) क्रि.—
 दे. कठिमु ।
 कठि करेयुविके, कठि करेह (क) सं.—
 बुलाना, बुलावा, आह्वान ; (दूध) दुहना ।
 कठि करेणु (सम्) सं.— हाथी, हथिनी,
 बड़ा भीरु, बड़ा डरपोक ; रज, धूल ;
 कार्पिकार, कठचंपा या वनचंपा का पेड़ ।
 कठि करोटि (सम्) सं.— खोपड़ी ;
 कटोरा, बर्तन ।
 कठि करोर्ध (सम्) सं.— हाथ का पिछला
 भाग ।
 कठि करोलु (अ. दे.) सं.— करौली
 (तुर्की) ; पिस्तौल ।
 कठि करु, कठि करु (क) सं.— बड़वा । वि.—
 काला; कठि करु करुने-बिलकुल काला ।
 कठि करु (क) सं.— दे. कठि ।
 कठि करुके, कठि करिके, कठि करुके,
 कठि करुके, कठि करुके, कठि करुके,
 कठि करुके (क) सं.— दूर्वा, एक प्रकार की
 घास (Huriallee grass) ।
 कठि करुगु (क) सं.— कालापन ।
 कठि करुल्, कठि करुलु, कठि करुल् (क)
 वि.— खारा, लवणमय, उसर । —

कर्म करसु

धूम्र भूमि (क) सं.— ऊसर भूमि ।

कर्म करसु (क) क्रि.— दूध बहा, दूध दुहा; वर्षा करा (प्रे.) ।

कर्म करसु (क) सं.— (दूध) दुहना ।
कर्म करि (क) क्रि. = कर्म करे — दुह ;

बहने दे; छोड़, निकाल; पानी बरस; आँसू बहा, रो । सं.— तरकारी; साग; मांस, शोरवा । वि.— काला; (कलंक, दोष); कर्म करिगोरलव (क) सं.— वह जिसका कंठ काला हो, शिव ।

कर्म करिके (क) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर (क) सं.— दे. कर्म.— गाँव गाहि (क) सं.— बछड़ों की देखरेख करने-वाला लड़का । क्रि.— दे. कर्म (क्रि.) ।

कर्म करके कर्म करके (क) सं.— दे. कर्म.

कर्म करवु, कर्म करवु (क) सं.— असूया, ईर्ष्या, शत्रुता । क्रि.— ईर्ष्या कर, द्वेष कर । कर्म करवतन (क) सं.— असूया करना, शत्रुत्व (शत्रुता) ।

कर्म करवु (क) सं.— बछड़ा ।

कर्म करे (क) क्रि.— दे. कर्म (क्रि.) । वि.— दे. कर्म (वि.) ।

कर्म करणे कर्म करणे (क) वि.— काला ।
कर्म कर्क (सम्) वि.— सफेद । अच्छा,

सुंदर । सं.— सफेद घोड़ा; अग्नि ।

कर्म कर्कट (सम्) वि.— कठोर, दृढ़, घलवान, मजबूत । सं.— केकड़ा, कर्कराशि ।

कर्म कर्कटक (सम्) सं.— केकड़ा ।

कर्म कर्कटि (सम्) सं.— ककड़ी विशेष; केकड़ी; साँप (कर्कोट ?) ।

कर्म कर्कटिके (सम्) सं.— तरबूज ।

कर्म कर्कड (तद्) वि.— कर्कट (तत्) ।

कर्म कर्कडे (क) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर्कधु (सम्) सं.— उन्नाव, बेर (पेड़ और फल) ।

कर्म कर्कर (सम्) वि.— कठोर, कड़ा, ठोस ।

कर्म कर्करि (सम्) सं.— जलपात्र, जिसकी पौदी में छलनी की तरह छिद्र हो ।

कर्म कर्कलगिड (क) सं.— पीले फूलवाला एक पौधा (Grewia Pilosa Lamk) ।

कर्म कर्कश (सम्) वि.— कड़ा, कठोर, सर्व्व, रूखा । — उँ ते (सम्) — सं.— कठोरता, रूखापन । — कर्म यौवन (सम्) सं.— जवानी का कठोर समय ।

कर्म कर्कळ (तद्) सं.— कके (तत्); सफेद घोड़ा ।

कर्म कर्कारु (सम्) सं.— एक प्रकार की लौकी; कुम्हड़ा ।

कर्म कर्कु (क) सं.— दे. कर्म, दे. कर्म
कर्म कर्कोचे (तद्) सं.— कर्कोच (तत्); कुरर पक्षी ।

कर्म कर्कोट, कर्म कर्कोटक (सम्) सं.— एक सर्प का नाम (आठ मुख्य सर्पों में एक) ।

कर्म कर्कोटिकि (सम्) सं.— करेला, करेले का पौधा ।

कर्म कर्गिसु (क) क्रि.— दे. कर्म.

कर्म कर्गु (क) क्रि.— दे. कर्म; = कर्म कलगु — काला हो । सं.— कालापन ।

कर्म कर्चि, कर्म कर्चिकायि (क) सं.— दे. कर्म, कर्म कर्चि, कर्म कर्चु, कर्म खर्चु (अ. दे.) सं.— खर्च, (फ़ारसी); व्यय; साधारण; छोट ।

कर्म कर्चु (क) क्रि.— दे. कर्म; धो, प्रक्षालन कर । सं.— काटना, (दाँतों से) काटना, पकड़ना, पकड़, लगना, धोना, धुलाई ।

कर्म कर्जि, कर्म कर्जिकायि (क) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर्जिरिगे (क) सं.— = कर्म कडजीरिगे—दे. कर्म.

कर्म कर्जूर (तद्) सं.— खर्जूर; (तत्) खर्जूर ।

कर्म कर्डिगे (तद्) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर्डु (क) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर्ण (सम्) सं.— कान; बर्तन के कड़े

या कान; सूरज; महाभारत में वर्णित कर्ण जो अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध है; डॉड, पतवार; समकोण त्रिभुज की वह रेखा जो समकोण के सामने होती है ।

कर्म कर्णकठोर (सम्) वि.— सुनने के लिए कठोर, बहुत कर्कश, अमधुर ।

कर्म कर्णकुंडल (सम्) सं.— कानों में पहनने का आभूषण ।

कर्म कर्णगत (सम्) वि.— कान से संबंधित, ज्ञात—कर्म माडु (सम्) क्रि.— कह, बोल सुना ।

कर्म कर्णचालन, कर्म कर्णताल (सम्) सं.— हाथी के कानों का फटफट शब्द ।

कर्म कर्णज, कर्म कर्णजात, कर्म कर्णतनय, कर्म कर्णसूनु (सम्) सं.— कर्ण का पुत्र वृषकेतु ।

कर्म कर्णजलौके (सम्) सं.— गोजर, कनखजूरा ।

कर्म कर्णधार कर्म कर्णधारक (सम्) सं.— पतवारी, माँझी, नौका-वाहक ।

कर्म कर्णपत्र (सम्) सं.— कानों में आभरण के रूप में रखा जानेवाला ताड़ का पत्ता, ताड़ के पत्ते का कर्णभरण ।

कर्म कर्णपरंपरे (सम्) सं.— सुनी सुनाई बात ।

कर्म कर्णपलिके (सम्) सं.— कान का लटकता हुआ भाग (The lobe of ear) ।

कर्म कर्णपाश (सम्) सं.— सुंदर नाक ।

कर्म कर्णपिशाच, कर्म कर्णपिशाचि (सम्) सं.— मंत्र-प्रभाव से बशीभूत पिशाच जो (कानों में) बाँधित समाचार सुना देता है ।

कर्म कर्णपूर (सम्) सं.— कर्णफूल, कानों का आभूषण ।

कर्म कर्णभूषण कर्म कर्णवेष्टन (सम्) सं.— कान का गहना ।

कर्म कर्ममोति (सम्) सं.— चायुंटी (दुर्गा) ।

कर्मण्यु कर्णवाल (सम्) सं.— दे. कर्मण्यु कर्णवाल

कर्मण्यु कर्णशूले (सम्) सं.— कान का दृढ़ ।

कर्मण्यु कर्णसंभव (सम्) सं.— दे. कर्मण्यु कर्णसंभव कर्णाकर्णिके (सम्) वि.— कानों कान ।

कर्मण्यु कर्णाट, कर्मण्यु कर्णाटक (सम्) सं.— कन्नड भाषा-प्रदेश, कन्नड भाषा, कन्नड भाषी ।

कर्मण्यु कर्णारि (सम्) सं.— कर्ण का शत्रु, अर्जुन ।

कर्मण्यु कर्णालंकरण, कर्मण्यु कर्णालंकार, कर्मण्यु कर्णावतंस (सम्) सं.— कान का गहना ।

कर्मण्यु कर्णिके (सम्) सं.— कर्ण का पुत्र ; कान से संबंधित ; हल का एक भाग । (तद्) सं.— करण (तत्) ; लिखनेवाला, लेखक, मुनीम ।

कर्मण्यु कर्णिक (सम्) सं.— दे. कर्मण्यु कर्णिक

कर्मण्यु कर्णिकार (सम्) सं.— वनचंपा या कठचंपा का पेड़ (या पुष्प) ।

कर्मण्यु कर्णिका, कर्मण्यु कर्णिके (सम्) सं.— कानों का गहना, बाली, गुमडी ; कमल-बीज-कोष ; कूची ; फल का डंठल ; हाथी की सूंड की नोक ; तीर्थ ; आहवांग, युद्ध का मध्य ; एक अप्सरा का नाम ; बीच की (हाथ-की) उंगली, मध्यमां ; बाला ; चॉक (Chalk), खड़िया-मिट्टी ।

कर्मण्यु कर्णजप (सम्) सं.— चुगलखोर, झूठा किस्सा बनानेवाला ।

कर्मण्यु कर्णद्रिय (सम्) सं.— सुनने की इंद्रिय— कान ।

कर्मण्यु कर्त (तद्) सं.— कर्तृ (तत्) ; करनेवाला ; स्वामी, प्रभु, राजा ; सृष्टिकर्ता, परब्रह्म ।

कर्मण्यु कर्तन (सम्) सं.— काटना, कतरना, टुकड़े करना ।

कर्मण्यु कर्तारि (सम्) सं.— दे. कर्मण्यु कर्तारि

कर्मण्यु कर्तले (क) सं.— दे. कर्मण्यु कर्तले

कर्मण्यु कर्तव्ये (सम्) सं.— फर्ज, करने योग्य या आवश्यक कर्म, ऋण, कार्य ।

कर्मण्यु कर्तार, कर्मण्यु कर्तु (तद्) सं.— कर्तृ (तत्) ।

कर्मण्यु कर्तृ (सम्) सं.— कर्ता, करनेवाला; लेखक ; कार्यकर्ता, प्रतिनिधि (Agent) ; राजा, अधिपति ; सृष्टिकर्ता, परब्रह्म ।

कर्मण्यु कर्तृक (सम्) सं.— अपनी इच्छा के अनुसार करनेवाला, कर्ता, कारक ।

कर्मण्यु कर्त्तिके [कर्मण्यु कर्त्ती] (सम्) सं.— कैंची, कतरनी ; छुरी ।

कर्मण्यु कर्त्तिके (सम्) सं.— छुरी, छोटी तलवार, चाकू, शिकार का चाकू ।

कर्मण्यु कर्दम (सम्) सं.— कीच, कीचड़, पंक ; मैल ; पाप ; मांस ; एक प्रजापति का नाम ।—कर्मण्यु जाते (सम्) सं.— कमल, पंकज ; बुरी जाति की स्त्री ।

कर्मण्यु कर्दुकु, कर्मण्यु कर्दुकु (क) क्रि.— दे. कर्मण्यु कर्दुकु

कर्मण्यु कर्पट (सम्) सं.— पुराना या पैवंद लगा हुआ कपड़ा ; वस्त्र ; साड़ी ।

कर्मण्यु कर्पटि (सम्) सं.— चिथड़े पहना हुआ सन्यासी ।

कर्मण्यु कर्पड (तद्) सं.— कर्पट : (तत्) ।

कर्मण्यु कर्पर (सम्) सं.— कड़ाही ; बर्तन, घड़ा, प्याला ।

कर्मण्यु कर्पास (सम्) सं.— कपास का वृक्ष-कपास, रुई ।

कर्मण्यु कर्पासि (सम्) सं.— दे. कर्मण्यु कर्पासि

कर्मण्यु कर्पु (क) सं.— दे. कर्मण्यु कर्पु

कर्मण्यु कर्पूर (तद्) सं.— कपूर (तत्) ।

कर्मण्यु कर्पूर (सम्) सं.— कपूर (Camphor) । कर्मण्यु बाले (क) सं.— केले का एक प्रकार ।—कर्मण्यु बल्लि [कर्मण्यु बल्लि] (तद्) सं.— एक सुगंधित लता जिसके पत्ते मोटे होते हैं ।

कर्मण्यु कर्पूरकंडक (सम्) सं.— कपूर रखने की पेट्टी ।

कर्मण्यु कर्पूरारति (सम्) सं.— कपूर को

जलाकर की जानेवाली आरती ।

कर्मण्यु कर्तु (क) सं.— दे. कर्मण्यु कर्तु

कर्मण्यु कर्तुन (क) सं.— दे. कर्मण्यु कर्तुन

कर्मण्यु कर्तुर (सम्) सं.— सोना (स्वर्ण) ; एक राक्षस का नाम । वि.— रंगविरंगा ; भूरा ।

कर्मण्यु कर्तुज (अ. दे.) सं.— दे. कर्मण्यु कर्तुज

कर्मण्यु कर्तुर (सम्) सं.— सोना, हेम ; हल्दी का पौधा ; हरताल ।

कर्मण्यु कर्तुरित (सम्) वि.— रंगविरंगा, अनेक वर्णों का ।

कर्मण्यु कर्तुन् (क) सं.— लोहा, आयस ।

कर्मण्यु कर्म (सम्) सं.— क्रिया, कर्म, व्यवसाय, कर्तव्य ; (व्याकरण में) कर्म, कर्मणि प्रयोग का भाव ; धर्मानुष्ठान, धार्मिक कृत्य, पाप, प्रारब्ध, कर्मविपाक ।

कर्मण्यु कर्मकर (सम्) सं.— नौकर, मजदूर श्रमिक ।

कर्मण्यु कर्मकरि (सम्) सं.— नौकरानी, मजदूरिन ।

कर्मण्यु कर्मकांड (सम्) सं.— वेद का वह अंश जिसमें यज्ञानुष्ठानादि कर्मों का एवं उनके माहात्म्य का वर्णन है ।

कर्मण्यु कर्मकार (सम्) सं.— पेशावर, श्रमजीवी ; लोहार, कारीगर, मजदूर ।

कर्मण्यु कर्मकीलक (सम्) सं.— धोबी, रजक ।

कर्मण्यु कर्मक्षम (सम्) वि.— कार्य में दक्षता रखनेवाला, दक्ष, योग्य ।

कर्मण्यु कर्मगति (सम्) सं.— कर्म या कार्य का फल, परिणाम, भाग्य ।

कर्मण्यु कर्मठ (सम्) वि.— काम में दक्ष, अत्यंत निष्ठावान्, कार्यनिष्ठ, कार्यचतुर, श्रद्धावान, आचार को ही धर्म माननेवाला ।

कर्मण्यु कर्मणि (सम्) सं.— व्याकरण में कर्मणि प्रयोग ; दक्ष या होशियार कारीगर ।

कर्मण्यु कर्मण्य (सम्) सं.— कार्यकुशल कारीगर या मजदूर ।

कर्मण्यु कर्मण्ये (सम्) सं.— कूली, मजदूरी ।

कर्मदोष कर्मदोष (सम्) सं.—दोषपूर्ण कार्य, दोष, अपराध, पाप; मानवोचित कर्मों का शोच्य परिणाम।

कर्मधारय (सम्) सं.—एक समास का नाम।

कर्मदि (सम्) सं.—ब्राह्मण यति या संन्यासी।

कर्मपरिपाक (सम्) सं.—पूर्व जन्म में किए हुए कर्मों के फल की प्राप्ति का समय, कर्मों से छुटकारा कर्मविपाक।

कर्मफल (सम्) सं.—कर्म से प्राप्त शुभ या अशुभ फल; पूर्व जन्म के कर्मों का फल; प्रारब्ध।

कर्ममार्ग (सम्) सं.—कर्मयोग, कर्म का मार्ग, धार्मिक विधि-विधान; पाप का मार्ग।

कर्मवादि (सम्) सं.—वह जो कर्ममार्ग का आचरण करता है या उपदेश देता है।

कर्मविपाक (सम्) सं.—पूर्व जन्म में किए हुए कर्मों के फल की प्राप्ति का समय।

कर्मशाले (सम्) सं.—करीगर का घर, काम करने का स्थान लोहार का घर।

कर्मशील (सम्) वि.—कार्य में निरत, सतत परिश्रम करनेवाला, कार्यकुशल।

कर्मसाक्षि (सम्) सं.—सभी कर्मों का साक्षी, सूर्य।

कर्मसान (सम्) सं.—कील, लगाम में ठोंकी गई कील।

कर्मसिद्धि (सम्) सं.—कार्य सफलता, मनोरथ का साफल्य।

कर्मधिकार (सम्) सं.—कर्म अथवा वैदिक धर्माचरण का अधिकार।

कर्मतर (सम्) सं.—क्रिया-कर्म, मृत व्यक्ति के प्रति किये जाने वाले कर्म।

कर्मयत्त (सम्) सं.—कर्मों का फल।

कर्मार (सम्) सं.—कारीगर; लोहार; बाँस।

कर्मि (सम्) वि.—क्रियाशील, कार्य-तत्पर, कार्य करनेवाला, कार्य में व्यस्त; पापी।

कर्मिष्ठ (सम्) वि.—चतुर, परिश्रमी, व्यापारपटु; बड़ा पापी।

कर्मद्रिय (सम्) सं.—वे इंद्रियाँ जो कर्म करें, आँख-कान, हाथ-पैर आदि।

कर्म (क) वि.—दे. कर्म।

कर्म कर्मट (सम्) सं.—मंडी; किसी प्रांत का ऐसा नगर जिसके अंतर्गत कम से कम २०० से ४०० तक ग्राम हों।

कर्म (क) सं.—दे. कर्म।

कर्म (सम्) सं.—तनाव, खिंचाव, आकर्षण; सोलह माशा की सोने-चाँदी की तौल।

कर्म कर्मक (सम्) सं.—किसान, कृषक।

कर्म कर्मण (सम्) सं.—खींचना, तानना; हल चलाना, जोतना।

कर्म कर्मपल (सम्) सं.—कसौटी।

कर्म कर्म (क) सं.—दे. कर्म।

कर्म कर्म (क) क्रि.—कर्म कलि—सीख, अभ्यास करा सं.—सीखना, शिक्षा; पत्थर, शिला; जड़ता, मन का चलत्व।

कर्म कर्म (क) सं.—कर्म कर्म कलकुटिग—पत्थर तोड़नेवाला; राज।

कर्म कर्म (क) सं.—कर्म कर्म कलकुटिग—पत्थर की गोली।

कर्म कर्म (क) सं.—कर्म कर्म कलगाण—पत्थर का कोल्हू।

कर्म कर्म (क) सं.—पत्थर तोड़नेवाले की छेनी।

कर्म कर्म (क) सं.—घड़ा, बर्तन। अ.—सतत, सदा, हमेशा; कर्म कर्म कलकाल—सदा काल, स्थिर रूप से।

कर्म कर्म (सम्) वि.—अस्पष्ट मधुर धीमी और कोमल; निर्बल; कच्चा; रुन-झुन शब्द करनेवाला।

कर्म कर्म (सम्) सं.—अस्पष्ट धीमी कोमल ध्वनि; छोटा मुद्गर; सोना (स्वर्ण); संगीत का ताल; ताड़ का पेड़।

कर्म कर्म (क) सं.—मिश्रण, मिलावट, मिला हुआ या घुला हुआ पदार्थ (औषध में)।

कर्म कर्म (सम्) सं.—कोयल, मधुकर, हंस, कव्तर; मधुर स्वर या गान।

कर्म कर्म (क) क्रि.—हिला, कंपा, मंथन करा, गंदा करा; पंकिल करा; व्यग्र करा (प्रे.)।

कर्म कर्म (क) क्रि.—हिला, अस्थिर कर, विचलित कर, कंपा, उत्तेजित कर; व्यग्र कर; गंदा कर, पंकिल कर; हिल, अस्थिर हो, व्यग्र हो, पंकिल हो (अक्. क्रि.)।

कर्म कर्म (क) क्रि.—हिलने या अस्थिर होने की स्थिति, पंकिलता, गंदलापन।

कर्म कर्म (क) क्रि.—कर्म कर्म (अ. दे.) सं.—Collector (अंग्रेजी); जिलाधीश।

कर्म कर्म (सम्) सं.—कर्म कर्म कलंकु, कर्म कर्म कलंकु—धब्बा, काला दाग, चिह्न, कालिमा; दोष; पाप, त्रुटि; अपयश, अपकीर्ति, बदनामी; लोहे का मुर्चा; मेघ, बादल।

कर्म कर्म (क) क्रि.—दे. कर्म।

कर्म कर्म (तद्) सं.—कलंक (तद्), दे. कर्म।

कर्म कर्म (क) क्रि.—कर्म कर्म कलंगडि, कर्म कर्म कलंगडि (क?) सं.—खरबूज (water melon)।

कर्म कर्म (क) क्रि.—कर्म कर्म कूलज्जि, कर्म कर्म कूलज्जि, कर्म कर्म कूलज्जि (क) सं.—बहुत बूढ़ी स्त्री, बुढ़िया; रसोई बनानेवाली बुढ़िया।

कर्म कर्म (सम्?) सं.—अनाज रखने की बड़ी टोकरी।

कर्म कर्म (क) क्रि.—हिल, कलुषित हो, अस्थिर हो।

कर्म कर्म (सम्) सं.—कर्म कर्म कलत्र—जघन; पत्नी।

कर्म कर्म (सम्) सं.—सोना, हेम; रजत, चाँदी; सफेद रंग, धवल; धतूरा।

कल कलन (सम्) सं.—ग्रहण, ग्रास, पकड़ ;
मिलाना, जोड़ना ; कलंक, धब्बा, दाग ;
भ्रूण ।
कल कलपु (क) सं.—जुड़े या मिले रहने की
स्थिति. मिश्रण, समूह. गिरोह ।
कल कलवत्त, कल कलपत्तु, कल कल
कलवत्तु (क ?) सं.—पत्थर (या किसी
धातु) की बनी छोटी-सी ओखली और
मूसल ।
कल कलभ (सम्) सं.— हाथी का बच्चा ;
ऊँट का बच्चा ।
कल कलमु, कल कलम, कल कलं,
कल कलामु (अ. दे.) सं — कलम
अरबी) ; लेखनी ; तूलिका, कूची ।
कल कलदानि, कल कलदानि, कलमुदानि
(अ. दे.) सं—कलमदान (अरबी, फ़ारसी) ।
कल कलंब (सम्) सं = [कल कलंब, कल
कलंब, कल कलंब, कल कलंब
कलंब (तद्)] —तीर, बाण ; हंस, मराल ;
चक्रवाक ; लाल कमल ; कदंब वृक्ष) —
कल कलसन (सम्) सं.—धनुष; शरासन ।
कल कलंबु (तद्) सं. — कलंब (तद्)—
कदंब वृक्ष ।
कल कलरव (सम्) सं—धीमी मधुर कोमल
ध्वनि ; कोयल, कव्तर ।
कल कलल (सम्) सं.—योनि, गर्भ की
झिल्ली ।
कल कललु (अ. दे.) सं—खलल (अरबी) ;
नुकसान, नाश ।
कल कलविक (सम्) सं.—गौरैया पक्षी ।
कल कलवे, कल कलवे (क) सं—कुवलय,
नील कमल ।
कल कलश (सम्) सं.—[कल कलस, कल
कलश, कल कलस—तद्]—कलसा,
घड़ा ; देवालय के गौपुर का अग्रभाग
(धातु-निर्मित), शुभद ।—कल पूजे (सम्)
सं.—विवाहादि में की जानेवाली कलसा
की पूजा ।
कल कलकुत्रे, कल कलस्तनि
(सम्) सं—कलश के समान कुचवाली स्त्री,

युवती ।
कल कलसु (क) क्रि.—[कल कलसु]—
मिला, मिश्रित कर । सं.— मिश्रण, सम्मि-
श्रण ।
कल कलह (सम्) सं.—झगड़ा ; लड़ाई.
युद्ध, झड़, छल ; दौंवपेच ; मारपीट ।
कल कलहंस (सम्) सं.— एक प्रकार का
हंस जिसके पर भूरे रंग के होते हैं ।
कल कलहप्रिय, कल कलहार्थि
(सम्) सं.— झगड़ा, झगड़ा करनेवाला ।
कल कलहंतरिते (सम्) सं—कल-
हंतरिता नायिका, अपने प्रेमी से झगड़ा
कर उससे वियुक्त स्त्री ।
कल कलहार (सम्) सं.— झगड़ा, लड़ाई ।
कल कलहाशन, कल कलहाडिग
(सम्) सं—नारद ।
कल कलहिसु (सम्) क्रि.—झगड़ा कर,
लड़ ।
कल कला (सम्) सं—(कुछ विद्वानों के मता-
नुसार कन्नड शब्द 'कल् = पत्थर' से
कला शब्द की व्युत्पत्ति हुई है)—कला,
ललित कलाएँ तथा अन्य कलाएँ, कोई
धंधा ; किसी वस्तु का छोटा अंश : चंद्र-
मंडल का १६वाँ अंश ; समय विभाग ;
व्याज, सूद ; अणु ; चातुर्य, प्रतिभा ; छल,
कपट ; नौका ; रजोदर्शन ; अस्वीकृति,
छोड़ना ; १६ की-संख्या ; नूतनता, चमक,
कांति ; रजोदर्शन ।—कल कांत (सम्)
सं—चंद्रमा ।—कल कौशल (सम्)
सं—कला, (गाना, नाचना आदि) में निपु-
णता ।—कल धर, कल निधि (सम् सं—
चंद्रमा ।
कल कलाद (सम्) सं.—सोनार ।
कल कलांतर (सम्) सं.—व्याज, सूद ;
लाभ ।
कल कलाप (सम्) सं.—झगड़ा, कलह,
विवाद ; गद्दा, गठरी ; समुदाय, संग्रह ;
मयूरपुच्छ ; करधनी, मेखला ; आभूषण ;
तरकस, तणीर ; चंद्रमा ; तीर, बाण ; एक
ग्राम का नाम ।

कल कलापकलाधर (सम्) सं.—
चंद्रशेखर, शिव ।
कल कलापि (सम्) सं.—मोर, मयूर ।
कल कलापतु, कल कलावतु
(अ. दे.) सं.—कपड़ों के किनारे पर की
ज़री ।
कल कलामु (अ. दे.) सं.— दे. कलामु.
कल कलाय (सम्) सं.— मटर आदि
-बीज ।
कल कलाय, कल कलायि (अ. दे.)
सं.—कलाई (अरबी) बर्तनों के अंदर त्रपु
या टीन से किया जाने वाला लेप-कार्य ।
—कल गार् (अ. दे.) सं.—ऐसा लेप-
कार्य करनेवाला ।
कल कलाल (अ. दे.) सं.—शराब बेचने
वाला ।
कल कलावक्र (सम्) सं.—सोलह
सुखवाला ब्रह्मा ।
कल कलावति (सम्) सं.—दुर्गा ; स्त्रियों
का नाम ।
कल कलाविद, कल कलाविद (सम्)
सं.—ललित कलाएँ जाननेवाला, कलाकार ।
कल कलासि (अ. दे.) सं.— [खलासी—
अरबी] मज़ाह ।
कल कलाहीन (सम्) सं.—जिसमें सब
कलाओं में एक कला कम हों, चंद्रमा ।
कल कलि (क) क्रि.—सीख ; मिल, हिल-
मिल, संयुक्त हो, पास-पास हो । सं.—
शिक्षित, निपुण, शक्ति और साहस में
प्रसिद्ध पुरुष. वीर, योद्धा ; पुराने घाव का
बचा चिह्न. चेचक का चिह्न ; मिट्टी, तेल
आदि का धब्बा ; चरित्र में कलंक ।
कल कलि (सम्) सं. शूर, वीर, योद्धा ;
विभीतिका वृक्ष. बहेड़ा का पेड़ ; चौथा युग,
कलियुग ; कलि (पुरुष), जिसने राजा नल
को सताया था ; युद्ध, लड़ाई, समर ; कली
अविकसित पुष्प; किसी श्रेणी का सर्वनिकृष्ट ।
—कल काल (सम्) सं.—कष्ट और पाप
का समय ।—कल मन (सम्) सं.—वीर

हृदय ।

कलिका (सम्) सं.—अविकसित फूल।

कलिके (क) सं.—सीखना, शिक्षा ;

कौशल, चातुरी ।

कलिंग (सम्) सं.—[कलिंग कलिंग]

—एक देश का नाम (वर्तमान उड़ीसा) ;

चातक : सारंग ; एक प्रकार की चिड़िया

जो अपने शिकार को काँटों में बंद कर देती

है (Lanius forficatus) : इंद्रयव,

अनाज विशेष : दीर्घतमस के पुत्र का नाम ।

वि.—होशियार, चतुर, सुंदर ।

कलिंग (सम्) सं.—अनाज रखने का स्थान, खत्ता, खत्ती ।

कलित (क) सं.—सीखना, विद्या,

पांडित्य ।

कलित (सम्) वि.—लगा हुआ, जुड़ा

हुआ, मिला हुआ, पकड़ा हुआ, लिया हुआ,

गृहीत ।

कलितन (क) सं.—भौतिक विद्याओं

में पाण्डित्य ; वीरता, बहादुरी ।

कलिकरुम (सम्) सं.—बहेड़ा

पेड़ ।

कलिकाशन (सम्) वि.—कलियुग

के कलुषसंकट को नष्ट करनेवाला ।

कलिक (सम्) सं.—

दे.—कलिक, एक पर्वत का नाम जिससे

यमुना नदी निकलती है।—क्षे (सम्)

सं.—यमुना । — नन्दिनि (सम्)

सं.—यमुना ।

कलियुग (सम्) सं.—चौथा युग—

(यह ४३२००० वर्षों का माता जाता है,

इसका प्रारंभ ई. पू. ३१०२ फरवरी १८

तारीख को हुआ) ।

कलियुगिके (क) सं.—सीखना,

सीखने की क्रिया, विद्याभ्यास ।

कलिसु (क) क्रि.—कलिसु—

मिला, मिश्रित कर ; = कलिसु—

सिखा, पढ़ा, शिक्षा दे ।

कलु (क) सं.—पत्थर, शिला,

कंकड़ । कलुकुटिंग (क) सं.—

पत्थर तोड़नेवाला । कलुकंभ,

कलुकंभ (क) सं.—पत्थर का

खंभा, शिला-स्तंभ । कलुङ्गु (क)

सं.—पत्थर जो पीसने के काम में आता है,

पानी से घिसा हुआ चिकना गोल पत्थर ।

कलुमद (क) सं.—शिलाजीत

(राल) ; लाल खड़िया ।

कलुबु (क) क्रि.—हिला ; अस्थिर

कर, गंदला कर, कलुपित कर, व्याकुल कर,

भ्रम में डाल । सं.—कलुष, गंदलापन,

कलंक, दोष ; धब्बा, दाग ।

कलुवे (क) सं.—दे, कलुवे ।

कलुष (सम्) सं.—मैलापन, गंदला-

पन ; पाप । वि.—मटीला, गंदला, मैला,

खराब, भद्दा ।

कलुसु (क) क्रि.—दे. कलुसु

कलुहे (क) सं.—मैलापन, गंदलापन,

कलुष ।

कले (सम्) सं.—दे. कला.

कले (क) सं.—दे. कले (क) ; ध्वनि

करना, ध्वनि, शोर-गुल, हल्ला । क्रि.—

एक हो, मिल, मिल-जुल ।

कलेवर (सम्) सं.—शरीर, देह ;

कलक (क) सं.—कलक—मिश्रण,

औषध का मिश्रण, मिश्रित पदार्थ ।

(सम्) सं.—घी या तेल की तलछट ;

लेही या लेही की तरह चिपकनेवाला कोई

पदार्थ ; मैला, कूड़ा, विष्टा ; पाप ; दंभ,

कपट, नीचता ; पीसा हुआ चूर्ण ।

कलिक (सम्) सं.—विष्णु के दस अव-

तारों में अंतिम अवतार ।

कल्प (सम्) सं—धर्मशास्त्र की आज्ञा,

आदेश, निर्दिष्ट-नियम, ऐच्छिक नियम ; छः

वेदांगों में से एक ; ब्रह्मा जी का एक दिवस

अथवा १००० युगव्यापी काल ; निश्चय,

संकल्प ; प्रस्ताव, सूचना ; पद्धति, ढंग,

विधान ; प्रलय ; बीमार की चिकित्सा

।—कल कुज, उरु तरु, कलुसु हुम,

कलवृक्ष (सम्) सं—कल्पतरु, स्वर्ग का

एक वृक्ष ।—उड लते (सम्) सं.—स्वर्ग

की एक लता ।

कल्पतु (अ. दे.) सं.—दे. कल्पतु.

कल्पन (सम्) सं.—दे. कल्पन,

काटना ।

कल्पना, कल्पने (सम्) सं.—

बनाना, करना ; तरकीब में लाना ; सजाना,

हाथी की सजावट ; मानसिक कल्पना,

विचार, आविष्कार ; युक्ति ।—कल्पे

(सम्) सं—काल्पनिक कथा, झूठी कहानी

में. प्र.) ।

कल्पपाल, कल्पपाल

(सम्) सं.—[कल्पपाल—

तद्]—कलार, शराब खींचनेवाला ।

कल्पभूज, कल्पभूजात,

कल्पभूरुह (सम्) सं.—दे.

कल्पभूज (कल्प में) ।

कल्पानि (सम्) सं.—प्रलयकाल की

अग्नि, भयंकर आग ।

कल्पान्त (सम्) सं.—प्रलयकाल, नाश ।—

कल्पान्त (सम्) सं.—प्रलयकाल में

उत्पन्न होनेवाली अग्नि ।

कल्पान्त (सम्) सं.—प्रलयकालीन

मेघावलि ।

कल्पि (क) सं.—सीखना, विद्या,

पांडित्य ।

कल्पित (सम्) वि.—बना हुआ,

कृत्रिम, निर्मित, आविष्कृत, खोजा हुआ ;

सुव्यवस्थित, सजा हुआ, सज्जित । सं.—

विचार, भाव ; युद्ध के लिए सज्जित हाथी ।

कल्पिसु (क) क्रि.—मिला, जोड़, लगा,

संयुक्त कर ।

कल्पिसु (क) क्रि.—कल्पना कर,

अनुमान कर ; आविष्कार कर ; विचार कर ;

निर्मित कर ; सज्जित कर, व्यवस्थित कर ।

कल्पितु (अ. दे.) सं.—दे. कल्पितु.

कल्पि (सम्) सं.—मैल ; पाप ;

धब्बा ।

कल्पि (सम्) सं.—सफेद और

काले रंग का मिश्रण, भूरा रंग, चितक-
बरा रंग ; काला रंग ।
कल्य कल्प (सम्) वि. — तंदुरुस्त, स्वस्थ ;
तैयार, तत्पर ; शुभ, अनुकूल ; बहरा,
गूंगा ; शिक्षाप्रद, सीख देनेवाला । सं.—प्रातः-
काल, सुबह ; कल, पूर्वदिन ; शराब, मद्य ;
शत्रुता, द्वेष, परस्पर बंधन ।
कल्याण (सम्) वि.—शुभ, मंगलकर,
सुखी, भला ; सौभाग्यशील, भाग्यवान् ;
सुंदर, प्रिय, मनोहर ; सर्वोत्तम ; गौरवान्वित
सं.—भाग्य, सुख, सुख-संतोष ; उत्सव,
विवाह ; एक वृत्त का नाम ; एक नगर का
नाम ; सोना, सुवर्ण ।
कल्याणि (सम्) वि.—शुभ, समृद्धि-
शाली, धन्य, सुखी, भाग्यशाली, मंगल या
शुभकारी । सं.—लक्ष्मी ; पार्वती ; सरस्वती ;
चतुर्भुजाकार सरोवर जिसके चारों ओर
उतरने के लिए सीढियाँ हो ; एक राग का
नाम ।
कल (सम्) वि.—बहरा, बधिर ।
कलंगडि (क) सं.—खरबूजा ।
कलंगि (क) सं.—अबांवील चिड़िया
(Swallow) ।
कलमूक (सम्) सं.—[कलमूक
कलमूक—तद्]—बहरा और गूंगा ।
कलर (क) सं.—शिला राशि, पत्थरों
का ढेर ; चट्टान ।
कलय्य कलायत (क) सं.—गुरु, आचार्य,
विद्वान, पंडित ।
कलि (क) सं.—एक प्रकार का जाली का
काम, जाल जैसी थैली ; कुर्ता ; गठरी ।
कलु (क) सं.—पत्थर, शिला ; कंकड़ ;
पाषाण । कलुणवे (क) सं.—चट्टानों
पर उगनेवाला कुकरमुत्ता । कलुत्ति-
गिड (क) सं.—अंजीर का पेड़ । कलुण्ड
कलुदारी (क) सं.—पथरीला रास्ता । कलु
नन्दि (सम्) सं.—नंदि की मूर्ति ।
कलुसकुरे (क) सं.—मिश्री ।
कलुकुटिग (क) सं.—पत्थर

तोड़नेवाला ; राज । कलुकुलस कलुकुलस
(क) सं.—पत्थर का काम, पत्थर की दीवार
आदि । कलुगालि (क) सं.—
पत्थर का पहिया । कलुनारु,
कलुण्ड कलुनारु (क) सं.—अदह धातु
(Asbestos) । कलुनेल (क) सं.—
पथरीला फर्श या ज़मीन । कलुवडे
(क) सं.—चट्टान । कलुमातु
(क) सं.—एक लता या पौधा विशेष ;
जंगली आम का पेड़ । कलुमकरे
(क) सं.—मिश्री । कलुहाकु (क)
क्रि—पत्थर नीचे रख या गिरा, पत्थर (या
कंकड़) मार ; दूसरों के कार्य या व्यवसाय
को खराब कर । कलुदे (क) सं.—
दृढ़चित्त ; धैर्यपूर्ण हृदय । कलुसे (क)
क्रि.—पत्थर मार । कलुडे (क) सं—
पत्थर से लगी चोट । कलुत्तु (क)
सं.—पद तल में होनेवाला घाव । कलु
रुण कलुरुल (क) सं.—पत्थर की
ओखली ।
कलु [कलु कळ, कलु कळ] (क)
सं.—मद्य, आसव, शराब ।
कलुणिसु (क) सं.—ध्वनि, स्वर ;
पुकार ।
कलुल (सम्) सं.—विशाल लहर ;
शत्रु ; प्रसन्नता, हर्ष ।—कलुले (सम्)
सं.—लहरों की पंक्ति ।
कलुलिनि, कलुलिनी (सम्) सं.—सरिता, नदी ।
कलुलार (सम्) सं.—लाल कनेर ;
लाल कमल ; सफेद कमल ।
कलुव (क) सं.—क्रोध के समय व्यक्त
होनेवाला शब्द । कलुव (दुह-
राना) ; कलुव कलुव अक्षु या कलु
कलु कलुव माडु (क) क्रि—गुर्रा,
गाली दे ।
कलुकुने (क) अ.—तुरंत, फौरन,

जल्दी-जल्दी ।
कवच (सम्) सं.—कवच, वर्म, जिरह,
बख्तर ; कंचुक, चोली ; यंत्र, ताबीज़, कंचुली
ढोल ; उच्च ध्वनि, घोषणा ; कुट वृक्ष ।
कवचु, कविचु, कविसु,
कवचु (क) क्रि.—उलटा, ऊपर-
नीचे कर, आँधा रख, विपरीत कर, उलट-
फेर कर ; प्रेरणार्थक रूप ।
कवटे, कवडे, कवाडे
(क) सं.—कवटिकायि, कवडे
कवाडे कवडेकायि—इंद्रायण, एक प्रकार
का कडुआ सेव ।
कवड (तद्) सं.—कपट (तद्) ।—
कवड कट (तद्) । सं.—बड़ा कपटी या
धोखेवाज़ ; बड़ा धोखा ।
कवडि, कवडे (तद्) सं.—
कपर्द ; (तद्) ; कौड़ी ।
कवडिके (क) सं.—धोती का एक
प्रकार का अलंकृत किनारा ; एक प्रकार का
बाण । (तद्) सं.—कपर्दिका, (तद्) ;
कौड़ी ।
कवडिग (क) सं.—एक प्रकार का
घटिया चावल जो लाल होता है ।
कवडु (क) सं.—=कवडिके
—धोती का एक प्रकार का अलंकृत किनारा ;
=कवड कवडु कवडु—विभाग,
शाखा, विभक्त रहने की स्थिति ; जोड़ा,
युगल ।
कवडे (क) सं.—कवडि.
कवडे (सम्) सं.—कवडि.
कवणे (क) सं.—ढेलवाँस, पत्थर मारने
या फेंकने के काम में आनेवाली रस्ती ।—
कवण (क) सं.—ढेलवाँस का पत्थर ।
कवते, कवटे (क) सं.—लुभाना ;
बलात्कार पूर्वक लेना, लूटना, अपहरण ।—
कवट (क) क्रि—अपहरण कर, लूट ;
लुभा, मोहित कर ।
कवदि, कविदि, कवडु
(क) सं.—गद्दा, तोशक ; रजाई, कथा ।
कवन (सम् ?) सं.—पद्य, कविता,

कविता की रचना ; साहित्यिक रचना; विनोद
— गार [गार गार] (क) सं.—
कविता करनेवाला, कवि ।

कवयोर कवयर, कवयोर कविदार, कवयोर
कैवार (क) सं.—परकाल (Compasses)।
कवोर कवर, कवर (क) क्रि.—बलात्कार पूर्वक
ले, (किसी के पास से) खींच कर ले, छीन,
पकड़, लूट, अपहरण कर; मुरझ, सूख,
प्रकाशहीन हो ।

कवर कवर, कवर कवरा, कवरी कवरी
(सम्) वि.—मिश्रित, मिला जुला ; जुड़ा
हुआ, रंगबिरंगा ।

कवर कवर, कवर कवर (अ.दे.) सं.—
Cover (अंग्रेजी) —लिफाफा ।

कवर कवर (क) क्रि.—दे. कवर ।

कवर्त कवर्त (क) सं.—दे. कवर्त ।

कवल कवल, कवल कवल (क) क्रि.—
विभक्त हो, शाखा हो, शाखा या डाल फूट
निकल । सं.—कवल कवल, कवल कवल—दे.
कवल ।

कवल कवल (सम्) सं.—कवल कवल—
मुखभर, कौर ।

कवल कवल (तद्) सं.—कवल (तत्); दे.
कवल ; तांबूल ।

कवल कवलि, कवरे कवरे, कवरे कवले,
कवरे कौवरे (क) सं.—मूर्छा, बेहोशी ;
मन में आंदोलन, हलचल, भ्रम, क्षोभ ।

कवले कवले (तद्) सं.—कपालिका(तत्);
खपरा, खप्पर; एक प्रकार का बर्तन । (क?)
सं.—पान या केले के पत्तों की गठरी या
बंडल ।

कवले कवाट (तद्) सं.—कपाट (तत्) ;
किवाड़, अलमारी ।

कवले कवाड (क) सं.—पशुओं का झुण्ड ।
— गीति (क) सं.—गाय चरानेवाली
स्त्री । कवले कवाडिग (क) सं.—गोपा-
लक, ग्वाला ।

कवले कवायित, कवले कवायित,
कवले कवातु (अ. दे.) सं.—कवायद

(अरवी) ; सैनिक-शिक्षा ।

कवि कवि (सम्) सं.—सर्वज्ञ ; विद्वान्; बुद्धि-
मान, चतुर, प्रतिभावान्; कविता करनेवाला,
कवि, रचनाकार, शायर; शुक्राचार्य ; पानी,
जल ; लगाम; जल-पक्षी । कवि कविसु, कवि
कवि कविसु रवि काण—जितना कवि
देखता है उतना रवि भी नहीं देखता (कह. ।।
कवि कवि (क) क्रि.—घिर, आवृत्त हो, चारों
ओर उमड़, भर; घेर, आक्रमण कर, आच्छा-
दन कर. फैल व्याप्त हो । सं.—घेरना,
आच्छादित होना. आक्रमण करना ।

कवि कविक, कवि कविके (सम्) सं—
लगाम ।

कवि कविकु, कवि कविकु (क) क्रि. दे.
कवि ।

कवि कविजल, कवि कविजु, कवि कविजु,
कविजग, कविजु कविजु; कविजग कविजुग,
कविजल गवुजल, कविजल गवुजल,
कविजु गवुजु (तद्) सं.— कविजल: (तत्)
चातक पक्षी ; तीतर पक्षी ।

कवि कविते, कवि कवित्व (सम्) सं.—
कविता, पद्य रचना ।

कवि कविदि (क) सं.—दे. कवि ।

कवि कविमार्ग (सम्) सं.—कविता
करने की रीति, उत्तम काव्य-विधान ।

कवि कविराजमार्ग (सम्) सं.—
राष्ट्रकूट सम्राट नृपतुंग के नाम पर प्रचलित
कन्नड का एक प्रसिद्ध काव्य-शास्त्र-ग्रंथ ।

कवि कविल, कवि कविल, कवि कविलु
(तद्) सं.—कपिल (तत्); कपिल वर्ण,
भूरा रंग ।

कवि कविले (तद्) सं.— कपिला (तत्) ;
गाय ।

कवि कविसमय (सम्) सं.—काव्य-
समय, परंपरागत काव्य-पद्धति, कवियों की
विशिष्ट जानकारी ।

कवि कविसु (क) क्रि.—कवि का प्रेरणार्थक
रूप, दे. कवि ।

कवि कवु (क) सं.—एक अनुकरण ध्वनि ।
कवि कविसु कवुकविसु—गाय का रंभाना ;

कुत्ते का भूकना ।

कवि कवुकु, कवि कवुकु, कवि कवुकु,
कवि कवुकु, कवि कवुकु
(क) सं.— कवि कवुकु—कॉल,
बंगल ।

कवि कवुगु, कवि कवुगु (तद्) सं.—
क्रमुक : (तत्) ; सुपारी ।

कवि कवुचिसु (क) सं.—रेती, नत्थी ।
कवि कवुचु (क) क्रि.—दे. कवि ।

कवि कवुजग, कवि कवुजु, कवि कवुजु,
कवि कवुजु (तद्) सं.—दे. कवि ।

कवि कवुटु (क) सं.—तेल, बाल आदि के
जलने पर आनेवाली अरुचिकर गंध, दुर्गंध ।
कवि कवुडे, कवि कवुडिनि (क) सं.—
एक पौधा विशेष ।

कवि कवुदि (क) सं.—दे. कवि ।

कवि कवुरि, कवि कुरवि (तद्) सं.—कुरव:
(तत्) ; गुलशादाव का फूल ।

कवि कवुरु (क) सं.—दे. कवि ।

कवि कवुलु (क) सं.—गाल, कपोल ।

कवि कवुलुडे (क) सं.—तकिया, उपधान ;
गद्दा, मसनद ।

कवि कवे (क) सं.—दे. कवि ।

कवि कवेर (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम ।
—कवेर कन्या (सम्) सं.—कावेरी नदी ।

कवि कवोष्ण (सम्) वि.—कुछ कुछ
गरम, गुनगुना ।

कवि कव्य (सम्) सं.—पितरों को दिया हुआ
अन्न, पिंड ।

कवि कवने (क) अ.—रोष से, गुस्से से ।
कवि कवर, कवि कुवर, कवि कवरी
(क) सं.—पर्दा, जवनिवा, यवनिका ।

कवि कवरे (क) सं.—दे. कवि ।

कवि कवल (क) सं.—दुर्गंध, बद्व ।

कवि कवले (क) सं.—दे. कवि ।

कवि कशिपु (सम्) सं.—अन्न ; वस्त्र ; अन्न-
वस्त्र ।

कवि कशे [कवि कश] (सम्) सं.—चाबुक ;
कोड़ा ।

कईरु कसेर, कईरु कसेर (सम्) सं.—
रीड़ की हड्डी ; एक प्रकार का तृण ; जल में
उत्पन्न होनेवाला फल विशेष जिसे कसेर
(Scirpus kysoor) कहते हैं ।

कईरुके कशेरके (सम्) सं.—रीड़ की हड्डी ।
कईरु कश्चित्, कईरु कश्चित् (सम्) सर्व.—
कोई ।

कईरु कइमल (सम्) सं.—मोह, सूर्छा ; गंदा,
मैला, लजीला, घृणित ।

कईरु कइय (सम्) वि.—चाबुक लगाने योग्य ।
सं.—घोड़े की पीठ या कमर ; शराब, मद्य ;
सोमरस ।

कईरु कइयप (सम्) सं.—कलुआ ; एक
प्रकार की मछली ; एक प्रकार का मृग
(हिरन) ; एक ऋषि । — कइरु नंदन (सम्)
सं.—अरुण ; गरुड ।

कईरु कप (सम्) सं.—रगड़, कसौटी (का
पत्थर) ।

कईरु कपाय (सम्) सं.— कइरु कसाय,
कइरु कसायि (तद्) — लाल रंग ;
काड़ा ; कसैला या कडुआ स्वाद या रस,
जड़ी-बूटी को पानी में उबालकर बनाया
जानेवाला औषध विशेष ; सुगंधि ; चौर-
मार्ग ।

कईरु कपट (सम्) वि.— बुरा, खराब, गलत,
दुष्ट, कठोर, कठिन । सं.— कठिनाई,
विपत्ति, पीड़ा ; दुष्टता, पाप ; अड़चन ।

कईरु कपट कपट (क) क्रि.— कपट या
तकलीफ दे । कईरु कपट कपटिसु (क)
क्रि.— कपट दे, सता । कईरु कपट पडु
(क) क्रि.— परिश्रम कर । कईरु कपट पडु
कपट कपट फल बुंदु— परिश्रम करने
से फल मिलेगा (कह) ।

कईरु कपट कपट (सम्) वि.— कुष्ठरोग
से ग्रस्त ।

कईरु कपट कपट (सम्) सं.— परिश्रमी या मेहनती पुरुष ।

कईरु कपट (सम्) सं.— कपट देनेवाली या
दुष्ट स्त्री ।

(१) कईरु कस, कईरु कसकु, कईरु कसर,

कईरु कसि, कईरु कसु, कईरु कसुरु, कईरु
कुसुरि, कईरु कुसुरु, [कईरु कसकट्टे]
(क) वि.—कड़ा, कच्चा, विलकुल कच्चा,
अपक्व । कईरु कसगायि [कईरु कायि]
(क) सं.— अपक्व या कच्चा फल ।

(२) कईरु कस, कईरु कसवु (क) सं.—कड़ा-
करकट, मैला-कुचला पदार्थ, तुच्छ पदार्थ,
निस्तार द्रव्य ; शरीर के त्रिदोष (वात,
पित्त, कफ) ; वेकार या खराब पौधा ; खेड़ी,
नाल । कईरु कसकट्टि (क) सं.—(दुह-
राना)—कड़ा-करकट । कईरु कसगणु
(क) सं.—उत्तेजित या जलती हुई आँख ।

कईरु कसकट्टि कस गुडिसलु बट्टे,
कईरु कसवरिगे, कईरु कसवरिगे,
कईरु कसवरिगे (क) सं.—झाड़ू-बुहारी । कईरु कस गुडिसु
(क) क्रि.—झाड़ू दे ।

(३) कईरु कस (क) सं= कइरु कसा, कईरु कसि,
कईरु गसि,—अशांति, थकावट, पेट में गड़-
बड़ी, मानसिक अशांति । कईरु कसविसि
(दुहराना) ।

कईरु कसकसि, कईरु कसकसे, कईरु कसकसे
गसगसे (अ.दे.) सं— खसखस (Poppy-
Seed) ।

कईरु कसकिल, कईरु कसकिलु (क)
सं— झाड़ू, बुहारी ।

कईरु कसकु (क) वि.— दे. कईरु (१) ।

कईरु कसके (क) सं.— तृण विशेष ।

कईरु कसव, कईरु कसवु, कईरु कसवु
(अ.दे.) सं.— कसव (अरबी) ; पेशा,
व्यापार, व्यवसाय । — दार (अ.दे.)
सं.— व्यापारी ।

कईरु कसवा, कईरु कसवे (अ.दे.) सं.—
कसवा (अरबी) ; ज़िला या ताल्लुक (Talug)
का प्रधान नगर ; राजधानी ।

कईरु कसर (क) सं.— गले में खुरचन या
गुदगुदी । क्रि.— गले में गुदगुदी या सुरसुरी
पैदा हो ।

कईरु कसरत् (अ.दे.) सं.— कसरत (अरबी) ;
किसी कला का अभ्यास ; व्यायाम ।

कईरु कसरिके (क) सं.— सिकुड़ना ;
सिकुड़न ; अपहास ; बुरा विनोद ।

(१) कईरु कसर (क) सं.— अपक्वता, कच्चा
होना ; दुर्विनोद अपहास ; शरीर के दोष
(वात, पित्त आदि) ; धूल, कड़ा-करकट ।

(२) कईरु कसर, कईरु कसुरु (अ.दे.)
सं.— कसर (अरबी) ; कमी, न्यूनता ;
बुद्धि ; मुद्रा के विनिमय में लाभ या हानि ।
कईरु कसले, कईरु कसाले (क) सं.— कुछ
अस्वस्थता ; एक पौधा ।

कईरु कसवर (क) सं.— सोना, हेम ।

(१) कईरु कसवु (क) सं.— दे. कईरु (२) ।

(२) कईरु कसवु, कईरु कसवु (अ.दे.) सं.—
बल, शक्ति ; (भूमि का) सार ।

कईरु कसा (क) सं.— दे. कईरु ; कइरु
कसाविसि=कइरु कसाविसि ।

कईरु कसाव, कईरु कसाय, कईरु कसायि
कसायि (अ. दे.) सं.— कसाई (अरबी) ;
मांस विक्रेता ।

कईरु कसाय, कईरु कसायि (तद्)
सं.— कपायः (तद्) ; दे. कइरु कसाय ।

कईरु कसारिके, कईरु कसाले (क) सं.—
कुछ अस्वस्थता, शारीरिक अनारोग्य,
तकलीफ, कष्ट, क्लेश ।

कईरु कसि (क) क्रि.— नीचे गिर, खिसक,
गिर पड़ ; सत्त्वहीन हो, सड़ ; टपक, बूँद-
बूँद करके बह, रसकर बह, बह ; छीन,
हड़प ले, हथिया, अपहरण कर । सं—कच्चा,
कड़ा या अपक्व फल ; पेड़-पौधों को काटना-
छाँटना, काट-छाँट ; दे. कईरु (३) ।

कईरु कसिक (क) सं.— छीननेवाला, झपटकर
लेनेवाला ।

कईरु कसिगि (क) सं.—जल में उत्पन्न होने-
वाला एक पौधा जिसकी जड़ औषधि में
काम आती है (Polygonum glabrum) ।

कईरु कसित (सम्) वि.— हिला हुआ, गया
हुआ ।

कईरु कसिवि (अ. दे.) सं—दे. कईरु कसिवि
(कईरु में) ।

कईरु कसीदि, कईरु कसूति, कईरु कसूदि

(अ. दे.) सं.—कसीदा (हिं.); कसीदे का काम ।

कंसु कसु (क) वि. — कच्चा, अपक्व ।—
गायि (क) सं.—कच्चा या अपक्व फल ।

कंसुकोष्ठु, कसुकोष्ठु (क) क्रि.=[कंसुकोष्ठु, कसुकोष्ठु] — छीन, हड़प ले, हथिया, झपट कर ले, अपहरण कर ।

कंसुक कसुक (क) सं.—दे. कंसु.

कंसुरु कसुरु (क) सं.—दे. कंसु (१) (अ. दे.) सं.—दे. कंसु (२).

कंसु कसु (अ. दे.) सं.—दे. कंसु (२).

कंसु कसुति, कंसु कसुदि (अ. दे.) सं.—
दे. कंसु.

कंसु कसे (तद्) सं.—कशा (तत्) ; डोरी, रस्सी, सुतली । — गंसु गोल् (तद्) क्रि.—चाबुक पकड़ या छीन । — गंसु पावाड़े (क) सं.—लहंगा जिसमें डोरी लगी हो ।

कंसु कसेरु (तद्) सं.—दे. कंसु.

कंसु कस्ति (अ. दे) सं.—हिंसा, जोर ; छेड़-छाड़ ।

कंसु कस्तु (अ. दे.) सं.—दर्द, पीड़ा, कष्ट ; छीना-झपटी, औद्धत्य ।—गंसु गार् (अ. दे.) सं—कष्ट देनेवाला, सतानेवाला ।—
कंसु तगाड़े (अ. दे.) सं—पैसे (ऋण) वापस देने की बार-बार माँग करना ।

कंसु कस्तुरि, कंसु कस्तुरि (सम्) सं.—मुश्क; कस्तुरी । कंसु कंसु कंसु कस्तुरि—कंसु कस्तुरी (के समान सुगंधित) है (कह०) ।

कंसु कस्वर (सम्) वि.—जानेवाला, चलित, सीमाहीन । सं.—संपदा, वित्त, धन ; परमात्मा, क्षेत्रज्ञ ।

कंसु कहकह (क) सं.— सारस पक्षी की ध्वनि ।

कंसु कहलारव (सम्)—सींगे (बाजा) की ध्वनि ।

कंसु कहळा, कंसु कहळे, कंसु काळे (तद्) सं.—काहला (तत्), सींगा, धातु का

वना सींगा (भोंपा) । — कार, कंसु कार (तद्) सं.— सींगा बजानेवाला ।

कंसु कहि (क) सं.— कटुः, कडुभापन, तिक्तता ।

कंसु कहिपु (क) सं=कंसु (मं. प्र.) ।

कंसु कहलार (सम्) सं. = कंसु कलहार सफेद कमल ।

(१) कंसु कळ, कंसु कळु, गंसु गळ, गंसु गळु (क) प्र.—ब. व. प्रत्यय, उदा.—गंसु मगु (बच्चा—गंसु मकळ या गंसु मकळु (बच्चे), गंसु नायि (कुत्ता)—
गंसु गंसु (कुत्ते) ।

(२) कंसु कळ (क) क्रि.—चोरी कर, चुरा, अपहरण कर । कंसु कळले [कंसु कळले कलंगडले]—(क) सं.—एक झाड़ी-दार पौधा । कंसु कळलचु (क) सं.— झूटा साँचा (नमूना) । कंसु कळळट (क) सं.—चोरी का खेल या व्यवहार । कंसु कळळडे (क) सं.—चोरी के गहने या चोरी का माल ।

(३) कंसु कळ (क) सं. = कंसु कळु, कंसु कळु, शराब, ताड़ी ; तागे का लच्छा ।

(१) कंसु कळ (क) सं.—कुछ निश्चित परिमाण, लगभग पाँच सेर (नाप) ; = कंसु कळ—चोर ; धूर्त, शठ ; = कंसु कळलु—चोरी ; = कंसु कळ—प्रकाश, चमक ; कंसु कळलिसु, कंसु कळलिसु—प्रकाशमान हो, चमक ; = कंसु कळले, कंसु कळे—(राशि या ढेरे से) ले लेना ; कंसु कळलु, कंसु कळलु—पुलाक, कदन्न, भात (जो राशि या ढेर से निकाला गया हो) ।

(२) कंसु कळ (क) सं.— रुलाई के समय आनेवाली ध्वनि, सिसकी ; कंसु कळकळ (दुहराना) ; कंसु कळकळने अळु (क) क्रि.—रो, सिसकी भर ; चावल के उबलते समय आनेवाली ध्वनि ; कंसु कळकळ अन्न (क) क्रि.— 'कळकळ' कर ; व्यग्रता, व्याकुलता या मन की अशांति का सूचक शब्द ; कंसु कळकळ,

कंसु कळवळ (क) सं.—व्यग्रता, मानसिक अशांति, चिंता कंसु कळवळगोळु (क) क्रि.—व्यग्र हो, चिंतित हो, आकुल हो ; कंसु कळवळ (क) क्रि. = कंसु कळवळिसु, कंसु कळवळपडिसु (क) क्रि.—व्यग्र कर, आकुल कर ; जोर से हँसते समय निकलनेवाली ध्वनि ; कंसु कळकळ नगु [कंसु कळकळ नगु] (क) क्रि.—'कळकळ' करके अर्थात् जोर से हँस ।

(३) कंसु कळ (तद्) सं.—खलः (तत्) ; खलिहान ; भूमि ; युद्धभूमि । (तद्) सं.—कळ (तत्) ; मूक पुरुष गूंगा ।

कंसु कळकळ (तद्) सं.—कळकळ (तत्) ; कलरव ; शोर गुल ; मधुर स्वर ; पक्षियों का स्वर ।

कंसु कळकळिके (क) सं.—व्यग्रता, आकुलता ।

कंसु कळकुळ (क) क्रि.—डर, भीत हो । सं.—विकीर्ण होना ।

कंसु कळकळ (तद्) सं.—कळकळ (तत्) ; धब्बा, दाग ।

कंसु कळलु (क) क्रि.—निकाल ; मुक्त कर, छोड़, ढीला कर, अलग कर, गिरा ; हिला ; खींच ले, बाहर कर ; शिथिल हो, मुक्त हो, (अक. क्रि.) ।

कंसु कळलजि (सम् ?) सं.—दे. कंसु.

कंसु कळतन, कंसु कळतन, कंसु कळतन (क) सं—चोरी ।

कंसु कळत्र (सम्) सं.—पत्नी, भार्या ।

कंसु कळदिगे (क) सं.—एक पौधा विशेष जो औषधि में काम आता है, अशोक-रोहिणी पौधा ।

कंसु कळम, कंसु कळमे (तद्) सं—कळम (तत्) ; धान, चावल ।

कंसु कळव (तद्) सं.—कळव (तत्) ; तीर, बाण ।

कंसु कळरु (क) क्रि.—बोल, कह ; सता, तंग कर ।

ॐ सं०००६ कळमंजळ, ॐ सं०००६ कळवंजळ (क ?) सं.—एक प्रकार की हल्दी या हरिद्रा ।

ॐ सं०००६ कळवळ (क) सं.—व्यग्रता, चिंता, आकुलता ।

ॐ सं०००६ कळवळिगे (क) सं.—चौर; धूर्त ।

ॐ सं०००६ कळविगे (क) सं.— एक प्रकार का सुगंधित पौधा ।

ॐ सं०००६ कळवु, ॐ सं०००६ कळहु (क) सं.— चोरी ।

(१) ॐ सं०००६ कळवे, ॐ सं०००६ कळिवि (क) सं.— एक कांटेदार झाड़ी: जिसमें छोटे-छोटे रसदार गोल फल फलते हैं ।

(२) ॐ सं०००६ कळवे (क) सं.—दे. ॐ (१):

ॐ सं०००६ कळश (सम्) सं.—ॐ०३.

ॐ सं०००६ कळस (तद्) सं— कलश (तत्) ।

ॐ सं०००६ कळसिगे (तद्) सं.—कलशी, गगरी; अनाज नापने का एक प्रकार का वर्तन ।

ॐ सं०००६ कळसु (क) क्रि.—ॐ सं०००६ कळिसु—भेज, प्रेषित कर; कम कर, घटा; संकट से पार हो, बाल-वाल बच ।

ॐ सं०००६ कळह (क) सं.— निकालना, दूर करना, हटाना, घटाना ।

ॐ सं०००६ कळहु (क) क्रि.—भेज, प्रेषित कर । सं.—चोरी ।

ॐ सं०००६ कळगम (क) सं.—वृद्धि, बढ़ना आगम ।

ॐ सं०००६ कळभाव (सम्) सं— प्रेम, स्नेह, प्रेम की रीति; कलाहीनता, कांतिहीनता ।

ॐ सं०००६ कळविद (सम्) सं— ॐ सं०००६ कलाविद—कलाकार ।

ॐ सं०००६ कळस (अ.दे.) सं.— खलास (अरबी) कुल, पूरा-पुरा; समाप्ति; = ॐ सं०००६ कडास—थैला ।

ॐ (क) क्रि.— जाने दे, फेंक, निकाल, छोड़, अस्वीकार कर, खींच दे, एक ही छोड़, बच; घटा; खर्च कर, व्यय कर, समय बिता; पार कर; बाहर निकाल (जैसे तलवार को म्यान से निकालना); मुक्त कर; हटा; नाश कार; बुझा; गिरा, खिसका; शिथिल या ढीला कर; दुर्बल कर, अपूर्ण कर; पक, पक्व

हो । सं.— पकना, अच्छी तरह पकने की स्थिति । ॐ सं०००६ कळियडिके (क) सं.— श्रेष्ठ सुपारी । ॐ सं०००६ कळि हणु (क) सं.—पूर्ण रूप से पका फल । ; खट्टा मीठ ।

ॐ सं०००६ कळिक (सम्?) सं.—बाजरा । ॐ सं०००६ कळिका, ॐ सं०००६ कळिके (सम्) सं.— कलिका; कली; ज्वाला, लौ; चंद्रकला ।

ॐ सं०००६ कळिग (सम्)— चालक, बुरा मनुष्य । ॐ सं०००६ कळीज, ॐ सं०००६ काळज, ॐ सं०००६ काळिज, ॐ सं०००६ काळिजि (अ.दे.) सं— कलेजा (हिं.); यकृत, जिगर ।

ॐ सं०००६ कळिपु, ॐ सं०००६ कळुपु, ॐ सं०००६ कळहु ॐ सं०००६ कळहु (क) क्रि.— भेज, प्रेषित कर ।

ॐ सं०००६ कळिने (क) सं.— दे. ॐ सं०००६ कळिवु, ॐ सं०००६ कळिवु (क) सं— निकालना, मुक्ति, हिलाना, समाप्ति ।

ॐ सं०००६ कळिसु (क) क्रि.— दे. ॐ सं०००६; = ॐ सं०००६ कणिसु, ॐ सं०००६ कणु— दिख, प्रकट हो, दिखाई पड़ ।

ॐ सं०००६ कळिसु, ॐ सं०००६ कळिसु (क) क्रि.— भेज ; भिजवा (प्रे.) ।

ॐ सं०००६ कळु (क) सं.— चोरी; छल, झूठ । क्रि.— चोरी कर ।

ॐ सं०००६ कळुकु (क) सं.— एक अनुकरणात्मक शब्द ; किसी वस्तु को तोड़ते समय निकलने की ध्वनि ; ॐ सं०००६ कळुकने— चटका करके; ॐ सं०००६ कळुकनु (क) क्रि.— चटकाकर तोड़; आश्चर्यचकित हो; भय, चकित हो, मन में कंपित हो ।

ॐ सं०००६ कळुपु (क) क्रि.— दे ॐ सं०००६ ॐ सं०००६ कळुहिसु (क) क्रि.— ॐ सं०००६ ॐ सं०००६ कळुहिसुविके (क) सं— भेजना ; प्रेषण ।

ॐ सं०००६ कळहु (क) क्रि.— दे. ॐ सं०००६ ॐ सं०००६ कळे (क) क्रि.— दे. ॐ सं०००६; शिथिल हो, मुक्त हो ; जा ; वीत । सं.— ॐ सं०००६ कळय— निकालना, हटाव, अपहरण ; खेत में उगने-

वाली निरूपयोगी घास, कूड़ा-करकट ।

ॐ सं०००६ कळे (तद्) सं.— ॐ सं०००६ कळा = ॐ सं०००६ कळे

— दे. ॐ सं०००६ ॐ सं०००६, एरु (तद्) क्रि.— चमक, प्रकाशमान हो ।— ॐ सं०००६ कुंदु, ॐ सं०००६ गुंदु (क) क्रि.— प्रकाशहीन हो— ॐ सं०००६ कुंदु (क) क्रि.— कांतिहीन. हो सुरझ, सूख, नीरस हो ।— ॐ सं०००६ कुळ, ॐ सं०००६ कुळ, ॐ सं०००६ कुळ (क) क्रि.— प्रकाशमान हो ।

ॐ सं०००६ कुळु (क) क्रि.— खो; दूर कर; मुक्त हो ; ले ; तक्लीफ हो । ॐ सं०००६ कुळुविके (क) सं.— खोना ; दूर करना, जाने देना ।

ॐ सं०००६ कुळुवेंजळ (क?) सं.— दे. ॐ सं०००६ ॐ सं०००६ कुळुवु (क) सं.— दे. ॐ सं०००६

ॐ सं०००६ कळंग (तद्) सं— खड्ग (तत्) । ॐ सं०००६ कळतन (क) सं.— दे. ॐ सं०००६

(१) ॐ सं०००६ कळ (क) सं.— चौर, तस्कर; धूर्त, बुरा आदमी । ॐ सं०००६ कळ (क) सं.— दे. ॐ सं०००६ ॐ सं०००६ कळकन हेडति एंदिंरु मुडे— चौर की पत्नी आज नहीं तो कल विंधवा होगी ही (कह.) । ॐ सं०००६ कळगंडु (क) सं.— कामचोर । ॐ सं०००६ कळगंडु (क) सं.— चोरी का माल ; वह गठरी जो देखने में अच्छी लगे पर उसमें कुछ सार न हो । ॐ सं०००६ कळचीटु (क) सं.— जाली रसीद या कागज । ॐ सं०००६ कळजंन (क) सं.— चौर लोग । ॐ सं०००६ कळद्वारि (क) सं.— चोर-मार्ग, अपथ । ॐ सं०००६ कळवट (क) सं.— पक्षा चोर । ॐ सं०००६ कळरुजुं (क) सं.— जाली हस्ताक्षर । ॐ सं०००६ कळवेष (सम्) सं— झूठा वेप ॐ सं०००६ कळसाक्षी (सम्) सं.— झूठा साक्षी । ॐ सं०००६ कळहुंदि (अ.दे.) सं.— जाली हुंडी या चेक Cheque ।

(२) ॐ सं०००६ कळ (क) सं— एक पोथे का नाम । ॐ सं०००६ कळगडले (क) सं.— दे. ॐ सं०००६ (२) ॐ सं०००६ कळतन (क) सं.— दे. ॐ सं०००६ ॐ सं०००६ कळवाळ (तद्) सं — कलयपाल (तत्) ; कलार, शराव खींचनेवाला ।

(१) ॐ सं०००६ कळिक (क) सं— समंतदुग्धा, थूहर (Euphorbia tirukalli); बुरा आदमी ।

(२) कं, कळिळ, कं, कळले (क) सं—चोरी-करनेवाली, चोर-स्त्री ।

कं, कळु (क) सं—ताड़ी, शराब; = कं करुळ—प्रेम, ममता ।

कं, कळले (क) सं—दे. कं; दे. (१) कं.

कं, कळु, कं, कळु (क) सं—हाथी के कान को छेदने का एक औजार ।

कं, कळ (क) सं—दे. कं; = कं

कळु—व्याकुलता (स्थान या पद की); कं

कळकुळ, कं, कळकुळ — (दुह-

राना) —स्थान-व्याकुलता, पहले रूप या स्थिति की हानि ।

कं, कळत (क) सं—अतिसार रोग ।

कं, कळमा, कं, कळमे, कं, कळवे

तद् सं—कलमः (तत्); धान, चावल ।

कं, कळ (क) क्रि.=कृश हो, पतला

हो, महीन हो, तेजोहीन हो; निराश हो;

व्यग्र हो; घबड़ा; चू पड़; टपक; फिसल;

नीचे गिर, शिथिल हो; ढीला हो; फेंक दे,

हटा। सं.—कृशता, पतला या महीन

होना; निराशा; दही, मट्टा, छाँड़; मंजीर,

पायल, नूपुर ।

कं, कळु (क) क्रि.—शिथिल कर, ढीला

कर; निकाल, बाहर निकाल, (जैसे न्यान

से तलवार को निकालना) । सं.—ईख का

टुकड़ा; ईख का अरोचक (या वेस्वाद का)

ऊपरी अंश ।

कं, कळले (क) सं—एक छोटी काँटेदार

डाल या टहनी; = कं, कळिले = बाँस

के वृक्षों के बीच में उगनेवाला छोटा पौधा

या अंकुर, वंशांकुर ।

कं, कळलु, कं, कळलिसु (क) क्रि.=

अलग कर, पृथक कर, निकाल, हटा; दूर,

कर; ढीला हो, मुक्त हो; अंत हो ।

कं, कळवे (तद्) सं—दे. कं.

कं, कळि (क) क्रि—दूर हट, बहुत दूर जा;

चल बस, अंत हो, मर; हाथ से निकल

जा; अधिक हो; मुक्त हो; मुक्त कर; पार

करा, गमन करा; शुद्ध कर, पाप हटा (मैं-

प्र.) । सं—बहुत दूरी, बहुत दूर जाना; मॉड, काँजी ।

कं, कळिले (क) सं—दे. कं.

कं, कळिवु (क) सं—अंत, समाप्ति,

मुक्ति ।

कं, कळिह (क) सं—अधिक होना, अधि-

कता, वृद्धि ।

कं, कळु (क) सं—दे. कं और कं.

कं, कळकने (क) अ.=गं, गकने—अक-

स्मात्, अचानक, सहसा ।

कं, कळकु (क) क्रि.—वमन कर, ओकाई

कर, ओक ।

कं, कळगु (क) क्रि.=कं, कं—काला

हो ।

कं, कळतलिसु (क) क्रि.—तम हो,

अंधेरा छा ।

कं, कळतले (क) सं—अंधकार, तम ।

—कं, वणि (क) सं—चंद्रमा ।

कं, कळते (क) सं.=कं, कते—गधा,

गर्दभ ।

(१) कं का (क) क्रि.=कं, काय—

रक्षा कर, बचा, रख; पहरा दे, चौकसी कर ।

सं.—=कं, कक, कं, काडु—वन,

जंगल; कौए का 'का का' करना ।

(२) कं का (सम्) उ.—बुरा, खराब,

कुत्सित ।

कं, कांके (क) सं—(किसी प्रकार की)

गरमी, उष्णता ।

कं, कांक्षित (सम्) वि.—इच्छित,

अभिलाषित । सं.—इच्छा, अभिलाषा ।

—कं, इसु (सम्) क्रि.—इच्छा या

अभिलाषा कर, कामना कर ।

कं, कांक्षे (सम्) सं.—कामना, इच्छा,

अभिलाषा; आँख की एक बीमारी ।—कं, कांक्षे

तीरिसिकोळु (सम्) क्रि.—

अभिलाषा पूर्ण कर ।

कं, कांचण (तद्) सं.—(तद्); कांचन

सोना; धन । कं, कांचन प्रसर

(सम्) सं.—वकुल; नागकेसर वृक्ष ।

क००००० कांचनमंच (सम्) सं.—

सोने का पलंग ।

क००००० कांचनमाले (सम्) सं.—

एक वृत्त का नाम ।

क००००० कांचनवर्ण (सम्) सं.—सोने

का रंग, हेमवर्ण ।

क००००० कांचनवाद (सम्) सं.—

सुवर्णवाद, अच्छा वाद या रपट ।

क००००० कांचनाद्रि (सम्) सं.—सोने

का पर्वत (मै.प्र.) ।

क००००० कांचनारक (सम्) सं.—

कोविदार या कचनार का पेड़ ।

क००००० कांचनाल (सम्) सं.—दे.

क०००००.

क००००० कांचनि (सम्) सं.—हरिद्रा, हलदी ।

क००००० कांचाण (तद्) सं.—कांचन (तद्);

धन ।

क००००० कांचाल (क००००० कांचिवाल),

क००००० कांचिवाल (तद्) सं.—

कांचनाल (तद्); दे. क०००००.

(१) क००००० कांचि (क) सं.—मालातृण, एक

सुगंधित तृण विशेष ।

(२) क००००० कांचि, क००००० कांची (सम्)

सं.—करधनी; एक पौधा विशेष

(Abrus Precatorius); दक्षिण भारत

का प्रसिद्ध नगर कांची नगर ।

क००००० कांचिक, क००००० कांजि, क०००००

कांजिक, क००००० गंजि (सम्) सं.—खटी

महेरी या काँजी ।

क००००० कांचित (सम्) वि.—अर्चित,

समाहृत ।

क००००० कांचिवाल (तद्) सं.—दे. क०००००

क००००० कांचीपद (सम्) सं.—कूहा

और कमर ।

क००००० कांजि, क००००० कांजिक (सम्) सं.—

दे. क०००००.

क००००० कांजिर, क००००० कांजीरगे (क)

सं.—कुचला नामक पौधा (Nux Vomica)

४००५० कांजु (तद्) सं.— काचः (तत्),
काँच, शीशा ।

४००५० कांड (सम्) सं.— भाग, अंश,
एक पोरुए से दूसरे पोरुए तक का (पौधे
का) भाग ; बाण, तीर ; पुस्तक का भाग,
परिच्छेद या अध्याय ; तना, डंठल, डाली,
शाखा ; समूह, गुच्छा, गट्टा ; मौका,
अवसर ; पानी, जल ; गगन, आसमान,
नभ ; निंदा, गाली ; पर्दा ; रहस्य स्थान ;
मिलन, संयोग ; वेग, गति ; बँत,
नरकुल ; छड़ी, डंडा ; बुरा, दुष्ट, पापी
(समस्त-पर्दों में) ; घोड़ा । — ५ ज (सम्)
सं.— कमला । — ५ धि (सम्) सं.—
समुद्र । — ५ पट (सम्) सं.— पर्दा,
डेरें का कपड़ा । — ५ पृष्ठ (सम्)
सं.— सैनिक, बाण ले जानेवाला ।

४००५० कांडव (तद्) सं.— खांडव (तत्) ;
खाण्डव नामक वन ।

४००५० कांडवत्, ४००५० कांडवत्
(सम्) सं.— वाणधारी, सैनिक ।

४००५० कांडस्पृष्ट (सम्) सं.— योद्धा,
सिपाही ; वह ब्राह्मण जो सैनिक वृत्ति पर
जीवित है ।

४००५० कांडाल (सम्) सं.— नरकुल की
बनी टोकरी, अनाज रखने की टोकरी ।

४००५० कांडीर (सम्) सं.— धनुषधारी,
सैनिक ।

४००५० कांत (सम्) वि.— इच्छित, प्रिय,
प्यारा ; सुंदर, मनोहर, निर्मल, आकर्षक ।
सं.— प्रेमी प्रेमपात्र, पति ; पत्थर, शिला ;
घर, मकान, लोहा ; चंद्रमा ; कृष्ण,
स्कंद ; रत्नविशेष ; कविता-रचना का एक
गुण । ५००५० अयस्कांत, ५००५०
लोहकांत (सम्) सं.— चुंबक (Magnet) ।

४००५० कांतलक (सम्) सं.— तुन का वृक्ष
(Credela Toona) ।

४००५० कांता, ४००५० कांते (सम्) सं.—
प्रेमिका, प्रेमपात्री स्त्री, पत्नी, भार्या ; प्रियगु
लता ; पृथिवी ; बड़ी हलायची ।

४००५० कांतार (सम्) सं.— जंगल, बड़ा

वन ; दुर्गम पथ ; खराब रास्ता ; एक प्रकार
की ईख । — ५००५० चरिगे (सम्) सं.—
जंगल या जंगलों में घूमना ।

४००५० कांतारक (सम्) सं.— एक प्रकार
की ईख ।

४००५० कांति (सम्) सं.— मनोहरता, सौंदर्य ;
आभा, प्रकाश, चमक ; कामना, इच्छा,
चाह ; व्यक्तिगत शृंगार । ५००५० वंत (सम्)
सं.— सुंदर या प्रकाशमान पुरुष । ५००५०
स्तंभ (सम्) सं.— दीपस्तंभ, दीप ।

४००५० कांते (सम्) सं.— दे. ४००५०.

४००५० कांदविद (सम्) सं.— हलवाई
(baker) ।

४००५० कांदिशीक (सम्) वि.— भगोड़ा,
भागनेवाला ; भयभीत, डरा हुआ ।

४००५० कांपिल्य, ४००५० कांपिल (सम्)
सं.— गुंडारोचना नामक लता ।

४००५० कांबल (सम्) सं.— कंबल या ऊनी
वस्त्र से ढका हुआ, कंबल या ऊनी वस्त्र से
ढकी हुई गाड़ी ।

४००५० कांबविक (सम्) सं.— शंख का
व्यापारी ।

४००५० कांब, ४००५० कांबुव (क) वि.—
(४००५० काण = प्रकट हो) — प्रकट होने-
वाला, प्रकटित, व्यक्त ।

४००५० कांबोज (सम्) सं.— कंबोडिया
देशवासी ; पुत्राग वृक्ष ; कांबोज देश की
घोड़ों की एक जाति विशेष ।

४००५० कांबोजि (सम्) सं.— दे. ४००
५००५०.

४००५० कांबोदि (सम्) सं.— एक
(कर्नाटक) राग का नाम ।

४००५० कांबु (सम्) सं.— तना ; डौंठ, डंठल ;
दस्ता, मुठिया ।

४००५० कांसुकि (सम्?) सं.— तेजस्वी
नामक पौधा (The Plant Sida indica) ।

४००५० कांस्य (सम्) सं.— काँसा ; काँसे
का घड़ियाल ; पीतल का जलपात्र, गिलास ।

४००५० कांस्यताल (सम्) सं.— (४००५०
कंसाल (तत्) — मंजीरा, झांझ ।

४००५० कांस्यतोरण (सम्) सं.—
काँसे का बना तोरण ।

४००५० काक (सम्) सं.— कौआ ; नीच, बुरा
आदमी ; एक राक्षस का नाम ; एक वृक्ष
का नाम । — ५००५० ज्वर (सम्) सं.—

एक प्रकार का ज्वर जिसके कारण शरीर
काला हो जाता है । — ५००५० पोक (सम्)
सं.— कामुक या लंपट । — ५००५०

ताळिन्याय (सम्) सं.— अचानक या
अकस्मात् होनेवाली घटना (कथा यह है —
एक बटोही एक ताल वृक्ष के नीचे पड़ा था ।

वृक्ष पर एक कौआ भी बैठा था । कौआ ज्यों
ही वृक्ष को छोड़कर उड़ा त्यों ही वृक्ष से

एक पका फल गिरा । यद्यपि कौए के
उड़ने और वृक्ष से कल के गिरने में कोई
संबंध नहीं था, तथापि संबंध की कल्पना की

गई । — ५००५० तिंदुक (सम्) सं.—
कोविदार, धावनूस । — ५००५० तुंड (सम्)
सं.— कौए का मुख ; एक राक्षस ; एक पौधा

विशेष । — ५००५० तुंडि, ५००५० तुंडे
(सम्) सं.— तमाल वृक्ष । — ५००५०

तुंडिके (सम्) सं.— तमाल वृक्ष, तापिच्छ । —
५००५० पक्ष (सम्) सं.— एक प्रकार की
जुलफें, पट्टे, शिखा, शिखंडिका । — ५००५०

पीलुक (सम्) सं.— एक प्रकार का
कोविदार । — ५००५० बलि (सम्) सं.—
कौबों को दिया जानेवाला अन्न । ५००५०

बुद्धि (सम्) सं.— नीच बुद्धि, तुच्छता ।
— ५००५० भाजन (सम्) सं.— कौए को
दिया जानेवाला अन्न, पिंड ; खराब, व्यर्थ ।

— ५००५० भीरु (सम्) सं.— उल्ल ।
४००५० काकवि, ४००५० काकवि (सम्) सं.—
ईख का रस, खोंड, गुड़ ।

४००५० काकलि (सम्) वि.— धीमा मधुर स्वर,
कौमल मधुर स्वर ।

४००५० काकवि (सम्) सं.— दे. ४००५० ।
४००५० काकलिपि (सम्) सं.— अस्पष्ट
लिखावट ।

४००५० काकवंध्य (सम्) सं.— वह स्त्री
जिसके केवल एक ही संतान होता है ।

(१) ठठठ काका (अ.दे.) सं. = चट्टु कक— काका, पिता का छोटा भाई ।

(२) ठठठ काका (क) सं.— बिच्छू की पूंछ ; भाजी ; लाल लाक्षा (लाख) ; एक झाड़ी जिसमें छोटे-छोटे रसदार गोल काले या लाल फलते हैं ।

ठठठठ काकारि (सम्) सं.— उल्लू ; काका-सुर के शत्रु राम ।

(१) ठठठ काकि (तद्?) सं.— काक (तत्) ; कौआ ।

(२) ठठठ काकि (सम्) सं.— मादा कौआ । ठठठठ काकिणि (सम्) सं.— कौड़ी ; सिका विशेष जो चौथाई पण या २० कौड़ियों के बराबर होता है ; चौथाई माशा ; माप का एक अंश विशेष ।

(१) ठठठ काकु (क) सं.— दे. ठठठ ; प्याज़ बड़ी तीखी गंध ।

(२) ठठठ काकु (सम्) सं.— वक्रोक्ति ; भय, शोक, क्रोध के समय की स्वर-विकृति ; अस्वीकारोक्ति जो इस प्रकार कहना कि सुननेवाले को स्वीकारोक्ति जान पड़े ; गुन-गुनाहट ; जोर देकर कहना ; बोली, बोल-चाल का शब्द ; जिह्वा ।

ठठठठ काकुद (सम्) सं.— तालु ।

ठठठठ काकुस्थ (सम्) सं.— राम लक्ष्मण आदि ।

ठठठ काके (तद्?) सं.— कौआ ।

ठठठठ काकेदु (सम्) सं.— एक प्रकार का कोविदार ।

ठठठठठठठठ काकोडुबरिके (सम्) सं.— अंजीर, गूलर ।

ठठठठठठठ काकोदर (सम्) सं.— साँप, सर्प ।— ठठठ शायि (सम्) सं.— विष्णु, शेषशायी ।

ठठठठठठ काकोल (सम्) सं.— कौआ, काला कौआ ; शत्रुता, विरोध ; एक प्रकार का विष, जहर ; दावाप्ति ।— ठठठ धर (सम्) सं.— शिवजी ।

ठठठठठठ काकोलि (सम्) सं.— एक प्रकार के पौधे का रस जो औषधि के रूप में काम में

लाया जाता है, स्वादु रस ।

ठठठ काग (सम्) सं.— कौआ ।

ठठठठ कागज, ठठठठ (अ.दे.) सं.— कागज (फारसी) ।

ठठठठ कागडि, ठठठठ कावडि (क) सं.—

ताक ; एक प्रकार का हिंडोला जो छत से नीचे की ओर लटकाया जाता है (मै. प्र.) पर्याहार, विवध, जुआडा ।

ठठठ कागि (तद्?) कौआ ।— ठठठ कण्णु (क) सं.— छोटी आँख जो कौए की आँख जैसी हो । ठठठ वणण (क) सं.— बिल-कुल काला रंग ।

ठठठठ कागिद, [ठठठठ कागद] (अ.दे.) सं.— कागज (फारसी)

ठठठ कागु (क) सं.— बिलकुल काला या नीला रंग ।

ठठठठठठ कागुणित (क) सं.— बारहखड़ी । ठठठठठठ ठठठठठठठ ठठठठठठ ठठठठठठ ? कागुणित बारहखड़ी काव्य हेतु हेतु हेंगे ?— जिसको बारहखड़ी मालूम नहीं उसको काव्य कैसे पढ़ावें ? (कह.) ।

ठठठ कागे (तद्?) सं.— कौआ ; एक पौधा विशेष ।

ठठठ काच, ठठठ काजु, ठठठठ काजु, ठठठ कासु, ठठठ, ठठठ गास (तद्) सं.— दे. ठठठ ; ताक ; एक नेत्ररोग ।

ठठठठठठ काचभूषण (सम्) सं.— चूड़ी । ठठठठठठ काचमणि (सम्) सं.— ठठठ ठठठ गाजुमणि— काँच की मणि, स्फटिक ।

ठठठठठठ काचवलय (सम्) सं.— दे. ठठठठठठठ ।

ठठठ काचा (अ.दे.) सं.— काछ (हिं.), कूल्हे पर बांधने का कपड़ा ।

ठठठ काचि, ठठठ कांचि, ठठठठ कासंच, ठठठठ कासंचि, ठठठठ कावंचि (क)

सं.— दे. ठठठ (१) — ठठठ ठिड (क) सं.— एक पौधा जिसमें छोटे-छोटे रसदार गोल (लाल या काले) फल फलते हैं ।

ठठठ काजु (क) सं.— खदिरसार, कथा ।

(१) ठठठठठठ काजवार, ठठठठठठ काजिवाँर,

ठठठठ कांजिर, ठठठठ कासर, ठठठठ कासर्क, ठठठठठ कासरिके, ठठठठठ कासारक, ठठठ कास्र (क) सं.— दे. ठठठठठठठ ।

(२) ठठठठठठ काजवार (तद्) सं.— कासारः (तत्) ; भैंसा ।

ठठठ काजि (अ.दे.) सं.— काजी (अरबी) ; फकीर ; जज, न्यायाधीश ।

ठठठठठठ काजिवार (क) सं.— दे. ठठठठठठठ ।

ठठठ काजु (तद्) सं.— काचः (तत्) ; काँच, शीशा ।

ठठठ काट (क) सं.— कट, पीड़ा, तंग करना, सताना ;= ठठठठ काटक, ठठठ काडु— वनचर, शिकारी ; लाल मिर्च, तमाखू आदि की तीखी गंध ।

ठठठठ काटक (क) सं.— दे. ठठठ ; तंग करने या सतानेवाला पुरुष ; लुटेरा (मै.प्र.) ; कट, पीड़ा, सताना ।

ठठठठठठ काटकतन (क) सं.— सताना, पीड़ा देना ।

ठठठठठठ काटकाय, ठठठठठठ काटकायि, ठठठठठठ काटगायि (क) सं.— लट-मार, लट ।

ठठठ काटि (क) सं.— बाजरा विशेष ; बाजरे या रागी की काँजी (बाजरे या रागी को भूनकर आटा बनाया जाता है, उसमें मट्टा डालकर पिया जाता है) ।

ठठठ काटु (क) सं.— दाँत काटने का चिह्न, तलवार, चाकू आदि की चोट का चिह्न ।

ठठठ काटे (क) सं.— दे. ठठठ ठठठ काठिन्य (सम्) सं.— ठठठठ काठिन्य (तद्) ; कठिनता, कठोरता कड़ापन, सख्ती ; कष्ट तकलीफ ।

ठठठ काडू ठठठ काडु (क) सं.— जंगल, वन । ठठठ ठठठ काडुगिचु, ठठठठठठ काडुगिचु ।

(क) सं.— दावागिन । ठठठठठठठ कडकोण, ठठठठठठठ काडुकोण (क) सं.— जंगली भैंसा । क्रि.— सता, पीड़ा दे, कष्ट दे, तंग कर, दिक कर ; सख्ती कर, अनादर कर ।

ठठठ काड (क) वि.— जंगल का ; वन का ।

काठको काठवे (क) सं.— दावाग्नि ।
 काठको काठवे (क) सं.— (कठको कठवे)
 —एक प्रकार का बड़ा वारहासिंगा ।
 काठको काठको (क) सं.— जंगल का
 निवासी, चंचु नामक जाति के लोग ।
 काठको काठको (क) सं.—जंगल में रहनेवाली
 स्त्री, चंचु जाति की स्त्री ।
 काठको काठको (क) सं.—सताना, पीड़ा देना,
 दिक् करना ; पीड़ा, सुखी ।
 काठको काठको (क) सं.—सतानेवाला, पीड़ा
 देनेवाला ; जंगल का निवासी ।
 काठको काठको (क) सं.—काजल, कजल ।
 काठको काठको (क) क्रि.—सता, दिक् कर ।
 काठको काठको (क) क्रि., सं.— दे. काठको ;
 काला, कालापन ; स्याही. अंधकार ; बादल ।
 काठको काठको (क) सं.—दे. काठको ।
 (१) काठको काठको (क) सं.— दे. काठको ।
 (२) काठको काठको (क) सं.— काठा (हिं.) ;
 क्वाथ (Decoction))
 (३) काठको काठको (तद्) सं.— काण्ड (तत्) ;
 तना, डंठल ।
 काठको काण (क) क्रि.—देख, अवलोकन कर,
 दर्शन कर ; दिख, दिखाई पड़, प्रकट हो ।
 काठको काणवरु (क) वि.— दिखनेवाला ;
 प्रकटित । काठको काणवरु (क) क्रि.
 रु.—देखा जा सकता है । काठको काण
 वाह (क) वि.—दिखाई पड़नेवाला, गोचर
 होनेवाला काठको काणवरु (क)
 क्रि.— देख सक ; दिख ।
 (१) काठको काण (क) सं.—वह जो देख नहीं
 सकता, अंधा ।
 (२) काठको काण (सम्) सं.—काना ; कौआ ।
 (१) काठको काणिके (क) सं.—किसी सिक्के का
 १/६४ भाग ; २४ भू-परिमाण ; पुरस्कार,
 उपहार ; संपत्ति, अधिकार ।
 (२) काठको काणिके (क?) सं — तराजू की
 असमता, तौल में कमी, समतोल करना ।
 काठको काणिके, काठको कणके (क) सं—

देखना, दृष्टि ; दर्शन ; उपहार, भेंट,
 उपायन ।
 काठको काणिसु (क) क्रि.— दिखा, दर्शन
 करा, प्रकट करा ; व्यक्त हो, प्रकट हो ;
 मन को गोचर हो ।
 काठको काणु (क) क्रि.— दे. काठको. काठको काणु
 काणगोडु (क) क्रि.— देखने दे ; दिखा ।
 काठको काणवरु (क) क्रि.— दिखाई पड़,
 दृष्टि में आ, प्रकट हो । काठको काणु काणु
 काणु (क) क्रि.— देख ! देख !
 काठको काणुविके (क) सं.— देखना ;
 दिखाई पड़ना ।
 काठको काणके (क) सं.— दे. काठको ।
 काठको काणमे (क) सं.— बड़ी बहादुरी, बड़ी
 वीरता ।
 काठको कातर (सम्) वि.— भीरु, डरपोक ;
 उत्साहहीन, दुःखित, शोकान्वित, भीत ;
 व्याकुल, आकुल, घबड़ाया हुआ ।—उत्ते
 (सम्) सं.— विह्वलता, व्याकुलता ; भय ।
 काठको कातरि (अ.दे.) सं.— खातिरी (अरबी) ;
 भरोसा. विश्वास, दृढ़ता ।
 काठको कातल (तद्) सं.— कातर (तत्) ; दे.
 काठको ।
 काठको कातलिक (तद्) सं.— व्याकुल या
 भीत पुरुष ।
 काठको काति (क) सं.— क्रोध, रोष ; नारियल
 की जटा जो रस्सी, चटाई आदि बनाने के
 काम में लायी जाती है, ऐसी रस्सी या
 डोरी ।
 काठको कात्यायनि (सम्) सं.— दुर्गा-
 पार्वती ; मध्य वयस्का विधवा ।
 काठको कात्यायनिके (सम्) सं.— दे.
 काठको कात्यायनि ।
 काठको कात्यायनीपुत्र (सम्) सं.—
 गणेश ; कार्तिकेय ।
 काठको कादंब (सम्) सं.— कलहंस ; कदंब
 वृक्ष, कदंब के फूल ।
 काठको कादंबक (सम्) सं.— दे. काठको
 काठको कादंबरि (सम्) सं — कदंब के
 फूलों से खींची गई मदिरा, शराब ; वाणभट्ट

का प्रसिद्ध संस्कृत गद्य-ग्रंथ ।
 काठको कादंबिके (सम्) सं.— मेघमाला,
 बादलों की पंक्ति ।
 काठको कादंबु काठको कादंबुके (क) सं.—प्रेम,
 स्नेह ।
 काठको कादि (अ. दे.) सं.— खादी (हिं.) ।
 काठको कादिसु (क) क्रि.— लड़ा, युद्ध कर,
 समर कर. जूझ ।
 काठको कादुह (क) सं.— युद्ध करना, युद्ध,
 लड़ाई ।
 काठको कादवेय (सम्) सं.— सांप,
 सर्प ।
 (१) काठको कान (क) सं.— लड़कों का एक
 खेल (एक लड़का दूसरे के चरणों के पास
 कूदता है और इस प्रकार खेल होता है) ।
 (२) काठको कान (तद्) सं.— कर्ण (तत्) ;
 काठको कानवावुलि (तद्) सं.— कानों
 की बालियाँ ।
 काठको कानक (सम्) वि.— कनक का, सोने
 का ।
 काठको कानगु (क) सं.— एक वृक्ष विशेष
 जिसकी लकड़ी उपयोगी होती है (Dalbe-
 rgia arborea) ।
 काठको कानन (सम्) सं.— वन, जंगल ।—
 कंठ चर (सम्) सं.— शिकारी, व्याध ।
 काठको कानीन (सम्) सं.— अविवाहिता
 स्त्री से उत्पन्न पुत्र ।
 काठको कानू, काठको कानून (अ.दे.) सं.—
 कानून (अरबी) ; कायदा, नियम, धर्म ।
 काठको काने (अ. दे.) सं.— खाना (फ़ारसी) ;
 घर, कमरा, विभाग ।
 काठको कान्मिग (क?) सं.— काननमृग,
 जंगली हिरन ।
 काठको कापटिक (सम्) वि — ('कपट' से)
 कपटी, झूठा, धोखेबाज़, अविश्वासी ;
 परनिर्भर ; चापलूस (मै.प्र.) ।
 काठको कापथ (सम्) सं.— कपट, धोखा,
 छल ।
 काठको कापथ (सम्) सं.— बुरा मार्ग, बुरी
 सड़क ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯ (ತದ್) ಸಂ.— ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ತದ್) ; ಧೋಖೆವಾಜ, ಕಪಟಿ ; ಬಾಜಿಗರ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಪಾಲ ಯಾ ಖೋಪಡಿ ಸೇ ಸಂಬಂಧಿತ ; ಸಂನ್ಯಾಸಿ ; ವಾಮಾಚಾರಿ, ಏಕ ಉಪಸಂಪ್ರದಾಯ (ಜೊ ಶೈವ- ಸಂಪ್ರದಾಯ ಕೇ ಅಂತರ್ಗತ ಹೈ)— ಇಸ ಉಪ ಸಂಪ್ರದಾಯ ಕೇ ಲೋಗ ಅಪನೇ ಪಾಸ ಖೋಪಡಿ ರಖತೇ ಹೈ ಔರ ಉಸಿ ಮೇ ರಿಂಥ ಕರ ಯಾ ರಖಕರ ಖಾತೇ ಹೈ ।

(೧) ಕೌಠಿ ಕಾಪಿ ಕೌಠಿ ಕಾಫಿ (ಅ.ದೇ.) ಸಂ.— (Coffee) (ಅಂಗ್ರೇಜಿ). ಕಾಫಿ, ಕಹವಾ ।— ಗಿಡ ಗಿಡ=ಕಹವಾ ಕಾ ಪೌಠಾ ।

(೨) ಕಾಪಿ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.— Copy (ಅಂಗ್ರೇಜಿ) ; ನಕಲ । — ಮೂಡು ಮಾಡು (ಅ. ದೇ.) ಕ್ರಿ.— ನಕಲ ಕರ, ಉತಾರ ।

(೩) ಕೌಠಿ ಕಾಪಿ (ಕ?) ಸಂ.— (ಕರ್ನಾಟಕ) ರಾಗ ಕಾ ನಾಮ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಏಕ ಪ್ರಕಾರ ಕಿ ಮದಿರಾ, ಶರಾಬ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಕ) ಸಂ.— ರಕ್ಷಾ, ರಕ್ಷಣ, ರಕ್ಷಾಸ್ಥಿತಿ, ಕೌಟುಂಬಿಕ ; ಬಚ್ಚೆ ಕೇ ಜನ್ಮ ಕೇ ಸಂತತೇ ದಿನ ಮನಾಯಾ ಜಾನೆವಾಲಾ 'ರಕ್ಷಾ' ಕಾ ಚಿಹ್ನ ; (ದೃಷ್ಟಿದೋಷ ಸೇ ಬಚ್ಚಾನೆ ಕೇ ಲಿಫ್) ಬಚ್ಚೆ ಕೇ ಏಕ ಗಾಲ ಯಾ ದೊನ್ನೆ ಗಾಣೆಂ ಪರ ಲಗಾಯಾ ಜಾನೆವಾಲಾ ಕಾಜಲ ಕಾ ಚಿಹ್ನ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಬುರಾ ಪುತ್ರ, ಬುರಾ ಬೆಟಾ, ಕಪುತ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಭೀರು, ಡರಪೊಕ, ತುಛ್ಚ'ಯಾ ನಿಛ ಪುರುಷ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಬಂದರ ಕೇ ಉಪಾಯ ಔರ ಕೃತ್ಯ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ವಿ.— ಭುರೇ ಭುರೇ ಸಫೇದ ರಂಗ ಕಾ । ಸಂ.— ಭುರಾ ರಂಗ ; ರೊಡಾ, ಪೊಡಾಸ ಅದಿ, ಖಟಾಪನ ಹಟಾನೆ ಕಾ ಪದಾರ್ಥ, ಸಪ್ಪಿ-ಖಾರ ; ಸು. ನಾ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಂಟ ಮೆ ಲಗಾನೆ ಕಾ ಸುರಮಾ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಕ) ವಿ.— ದೇ. ಕೌಟುಂಬಿಕ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಕ) ಸಂ.— ವ್ಯಾಕುಲತಾ, ಕಷ್ಟರಾಹತ, ಮನ ಮೆ ಅಂದೊಲನ, ಪಿಂತಾ, ಗಡಬಡಿ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ತದ್) ಸಂ.— ಕಾವ್ಯ (ತದ್) ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮನಾ, ಅಖಿಲಾಷಾ ; ಅಖಿಲಪಿತ ಪದಾರ್ಥ, ಪ್ರೇಮ, ಸ್ನೇಹ ; ಪುರುಷಾರ್ಥ ವಿಶೇಷ ; ಕಾಮದೇವ, ಪ್ರದಯುಗ್ಮ ; ಕಾಸುಕತಾ ; ಮೈಥುನೆಚ್ಚಾ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮದೇವ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಇದ್ರ ಧನುಷ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಇದ್ರ ಧನುಷ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಫಾಲ್ಗುಣ ಮಾಸ ಕಿ ಪೌರ್ಣಿಮಾ, ಹೋಲಿ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಪನಿ ಕಾಮನಾ ಕೇ ಅನುಸಾರ ಕರನಾ ; ಗರ್ವ, ಅಹಂಭಾವ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ತುಲಸಿ ಪೌಠಾ ವಿಶೇಷ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ವ್ಯಭಿಚಾರ, ವೇಶ್ಯಾವೃತ್ತಿ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಪನಿ ಇಚ್ಚಾನುಸಾರ ಕರನೆವಾಲಾ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದೇ. ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮ ಸೇ ಉತ್ಪನ್ನ, ಅನಿರುದ್ಧ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕೃಷ್ಣ, ವಿಷ್ಣು । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪ್ರೇಮ ಜ್ವರ, ವಿರಹ-ಹತಾಪ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮಶಾಸ್ತ್ರ, ಪ್ರೇಮ-ಕಲಾ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಖಿಲಾಷಾ ಪೂರ್ಣ ಕರನೆವಾಲಾ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮ ಸುಖವುಡು — ಕಾಮ ಕೊ ಜಲಾನಾ, ಹೋಲಿ ಲ್ಯೊಹಾರ ಕೇ ಸಮಯ ಲಕಡಿ ಕೊ ಜಲಾನಾ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮಧೇನು । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಗಾಯ, ಸಭಿ ಕಾಮನಾಫೆ ಪೂರ್ಣ ಕರನೆವಾಲಿ ಗಾಯ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ರತಿ, ಕಾಮ ಕಿ ಸ್ತ್ರೀ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ವಲರಾಮ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮಪ್ರಭಂಸಿ, ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಶಿವ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಬ ಕುಛ ಖಾ ಜಾನೆವಾಲಾ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮದೇವ ಕಾ ಶತ್ರು, ಶಿವ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಇಚ್ಚಿತ ರೂಪ ಧಾರಣ ಕರನೆವಾಲಾ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ವಿನೊಡ ಕಿ ವಾತ, ಸ್ವೇಚ್ಛಾ ಸೆ ಕುಛ ಸಭಿ ಕಹನಾ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಸ್ವಾಭಾವಿಕ ಇಚ್ಛಾ, ಕಾಮುಕತಾ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮವೈರಿ, ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಶಿವ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.— ಕಾಮ-ಕಾಜ (ಹಿಂ.) ; ಕಾಮ, ಕಾರಿಗರಿ ; ಮರಮ್ಮತ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಕೌಟುಂಬಿಕ (೧) ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಕ) ಸಂ.— ಪಾಂಡುರೋಗ, ಕಾಮಲಾ ರೋಗ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ವಿ.— ಇಚ್ಛಾ ಕರನೆ ವಾಲಾ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ವಿ.— ಇಚ್ಛಾ ಕರನೆವಾಲಾ, ರಸಿಕ ; ಲೆಪಟ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಕೌಟುಂಬಿಕ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದುರ್ಗಾ, ಕಾಂಚಿ ಕಿ ಕಾಮಾಕ್ಷಿ ದೇವತಾ ; ಏಕ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ ಕಮಲ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಹಾಥ ಕಿ ಅಂಗಲಿ ಕಾ ನಖ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಆಮ ಕಾ ವೃಕ್ಷ ; ಏಕ ವೃತ್ತ ಕಾ ನಾಮ ; ಮದಿರಾ, ಶರಾಬ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.— ಶ್ರಮ, ಮಜ್ದೂರಿ, ಕಾಮ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.— ಮಜ್ದೂರಿ-ಶ್ರಮ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮ ಯಾ ಪ್ರೇಮ ಸೆ ಪಿಡಿತ್ತ ವ್ಯಕ್ತಿ, ಅಪನಿ ಇಚ್ಛಾ ಕೊ ಪೂರ್ಣ ಕರನೆ ಮೆ ತಪರ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮಾಂಗೀ-ಸ್ತ್ರೀ ಲಿಂ. ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಶಿವ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮ ಯಾ ಪ್ರೇಮ ಕಾ ಅಂಧಾ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮಪಿಡಿತ್ತ, ಪ್ರೇಮವಿಹಲ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಕ) ಸಂ.— ಕೌಟುಂಬಿಕ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಾಮ ಬಾಣ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ವಿ.— ಕಾಮುಕ, ಕಾಮಿ,

ರಸಿಕ ; ಅಖಿಲಾಷಿ, ಇಚ್ಛುಕ ; ಸ್ತ್ರೀಣ । ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಕೌಟುಂಬಿಕ ।

ಕೌಟುಂಬಿಕ ಕಾರ್ಯಾಂಗಿಕ (ಸಮ್) ವಿ.— ಇಚ್ಛಿತ, ಅಖಿಲಪಿತ । ಸಂ.— ಇಚ್ಛಾ

अभिलाषा ।
 कर्मशास्त्र का मितार्थ (सम्) सं.—इच्छित वस्तु ।
 कर्मशास्त्र का मिति (सम्) सं.—प्यार करनेवाली स्त्री, सुंदर स्त्री ; स्त्री ; भीरु स्त्री ।
 कर्मशास्त्र कामु, कर्मशास्त्र कांतु, कर्मशास्त्र कावु (क) सं.—दे० कर्मशास्त्र ।
 कर्मशास्त्र कामुक (सम्) सं.—अभिलाषी, चाह करनेवाला, ऐयाश ; लंपट पुरुष ।
 कर्मशास्त्र कामुकि (सम्) सं.—अभिलाषा या चाह करनेवाली स्त्री, वैश्या ।
 कर्मशास्त्र कामुके (सम्) सं.—किसी वस्तु (खाना, पैसा आदि) की कामना करनेवाली ।
 कर्मशास्त्र कामोद्भव (सम्) सं.—प्रेम से उत्पन्न ; एक वृत्त का नाम ।
 कर्मशास्त्र काम्य (सम्) वि.—वांछनीय ; अच्छा, सुंदर, मनोहर ; ऐच्छिक । सं.—अभिलाषा, इच्छा ।
 कर्मशास्त्र काम्यदान (सम्) सं.—वांछित वस्तुओं को देना, स्वीकार करने योग्य उपाहार या भेंट ।
 कर्मशास्त्र काम्यार्थ (सम्) सं.—विशेष प्रकार का लाभ जिसकी पूर्ति की कामना की जाती है ।
 कर्मशास्त्र काय (क) क्रि.—फल उत्पन्न हो, फललगा, फल फल; फल पक्व हो; = कर्मशास्त्र—कायु—गरम हो, गरम किया जा, जलकर लाल हो ; कुद्द हो ; आंखें लाल कर; कर्मशास्त्र कायि, कर्मशास्त्र कायु —रक्षण कर, बचा, रक्षा कर । सं.= कर्मशास्त्र काय, कर्मशास्त्र कायि, कर्मशास्त्र कायु — कच्चा फल, पक्व फल ; बोड़ी, फली ; चौसर के खेल में उपयोगी छोटे-छोटे टुकड़े ; कड़ापन; सख्ती ।
 (१) कर्मशास्त्र काय (क) सं.—दे० कर्मशास्त्र ।
 (२) कर्मशास्त्र काय (सम्)—शरीर, देह ; समुदाय, समारोह ; पेड़ का घड़ या तना ; पूंजी, मूलधन, घर ; डेरा ; तारों को छोड़कर धीणा का समस्त काठ का ढाँचा ; स्वभाव ; चिह्न ।
 कर्मशास्त्र काय (अ. दे.) वि.—स्थिर, निश्चित,

स्थापित, (कायम—अरबी) ।
 कर्मशास्त्र कायक (सम्) वि.—शरीर से संबंधित, शरीर संबंधी, शरीर से किया जानेवाला । सं.—काम, पेशा, नौकरी ; अभ्यास, उद्योग ; आचार; नियम ।
 कर्मशास्त्र कायज (सम्) सं.—शरीर में उत्पन्न ; पुत्र ; काम, मदन । — शब्द पित (सम्) सं.—श्रीकृष्ण (विष्णु) ।
 कर्मशास्त्र कायजात (सम्) सं.—काम, मन्मथ ।
 कर्मशास्त्र कायजांतक कर्मशास्त्र काय-जारि (सम्) सं.—शिव ।
 कर्मशास्त्र कायत (तद्) सं.—दे० कर्मशास्त्र ।
 कर्मशास्त्र कायभव (सम्) सं.—मदन, मन्मथ । — कर्मशास्त्र रिपु (सम्) सं.—शिवजी ।
 कर्मशास्त्र कायस्थ (सम्) सं.—कर्मशास्त्र कायत (तद्)—मुनीमी करनेवाला व्यक्ति, लेखक, हिसाब लिखनेवाला, मुनीम; मुनीमी करनेवाले ब्राह्मणों की एक उपजाति ।
 कर्मशास्त्र कायि (क) सं., क्रि.—दे० कर्मशास्त्र । — कर्मशास्त्र कडुवु (क) सं.—एक प्रकार की खाने की चीज़ (इडली) जिसके अंदर गुड़ और नारियल रखा जाता है । — कर्मशास्त्र पल्य, कर्मशास्त्र पल्ये (क) सं.—तरकारी, भाजी-तरकारी । — कर्मशास्त्र हालु (क) सं.—नारियल का रस (क्षीर) । — कर्मशास्त्र हणु (क) सं.—नारियल और केले ।
 कर्मशास्त्र कायिकावृद्धि (सम्) सं.—पूंजी या धरोहर से प्राप्त सूद या व्याज ; वह सूद या व्याज जो किसी धरोहर रखे हुए का उपयोग करने के बदले प्राप्त हो ।
 कर्मशास्त्र कायिके (क) सं.—रक्षण, रक्षा, देखरेख, बचाना, चौकसी ।
 कर्मशास्त्र कायिदे (अ. दे.) सं.—कर्मशास्त्र कायदे—कायदा (अरबी); नियम, क्रम, विधान, व्यवस्था ।
 कर्मशास्त्र कायिले (अ. दे.) सं.—काहिली (अरबी) ; रोग, अस्वस्थता, बीमारी ।
 कर्मशास्त्र कायिसु (क) क्रि.—कर्मशास्त्र कासु—

गरम कर, उबाल ; रक्षण करा; रक्षा करा; चौकसी करा ; प्रतीक्षा करने दे (प्रे.) ।
 कर्मशास्त्र कायु (क) क्रि.—दे० कर्मशास्त्र ।
 कर्मशास्त्र कायु (क) सं.—कर्मशास्त्र कावु, कर्मशास्त्र काहु—गरमी, उष्णता, ताप ; क्रोध, रोष । कर्मशास्त्र कडुकायु—अत्यधिक क्रोध । कर्मशास्त्र कायिपडि (क) क्रि.—क्रोध अधिक हो ।
 कर्मशास्त्र काय्य (तद्) सं.—दे० कर्मशास्त्र ।
 कर्मशास्त्र कार (क) वि.दे.—काला । — कर्मशास्त्र कारिडु (क) क्रि.—काला हो । कर्मशास्त्र कारिरुळ (क) सं.—काली रात्रि, अंधकारपूर्ण रात । कर्मशास्त्र कारेरुळु (क) सं.—शरीर पर का छोटा काला चिह्न, पहचान का चिह्न । कर्मशास्त्र कारेरुडल (क) सं.—काला शरीरवाला, कृष्णा सं.—कालापन ; बादलों का आगमन, वर्षाकाल, बरसात का समय । कर्मशास्त्र कारमुगिल् (क) सं.—वर्षाकाल के बादल । क्रि.—बरस, वर्षा कर ; वमन कर, ओक ; दाँतों से काट खा ।
 (१) कर्मशास्त्र कार (तद्) सं.—क्षार (तद्) ; तीखापन, मिर्चे का तीखापन ; तीखा पदार्थ ; तीखी ; दवा ; सोड़ा, पोटाश आदि ; जलानेवाली वस्तु ; क्रोध, गुस्सा ।
 (२) कर्मशास्त्र कार (सम्) सं.—(कर्मशास्त्र कार — (तद्)—समासांत में यह शब्द लगता है जिसका अर्थ है—करनेवाला, बनानेवाला, संपादन करनेवाला आदि ; जैसे कर्मशास्त्र कुंभकार=कुम्हार, कर्मशास्त्र ग्रंथकार=किसी पुस्तक का रचयिता, लेखक ; अक्षरों की ध्वनि का सूचक, जैसे — कर्मशास्त्र अकार, कर्मशास्त्र मकार आदि ; = कर्मशास्त्र कारा—बंधन, जेलखाना, बंदीगृह ।
 कर्मशास्त्र कारक (सम्) वि.—करनेवाला, बनाने वाला सं.—वह जो कुछ बनाता या उत्पन्न करता है; प्रतिनिधि, कारिंदा, मुनीम; (व्याकरण में) कारक, जो वाक्य में क्रिया के साथ संज्ञा का संबंध सूचित करता है ।—कर्मशास्त्र दिपक (सम्)

सं.— एक प्रकार का दिया ।
 ०००००० कारकून (अ.दे.) सं.— कारकून
 (फ़ारसी) ; मुनीम ; चूंगी वसूल करनेवाला
 (मै.प्र.) ।
 ०००००० कारखाने, ०००००० कारखाने,
 ०००००० कारखाने— (अ.दे.) सं.— कार-
 खाना (फ़ारसी) ।
 ०००००० कारगृह (तद्) ; जेल, बंदीखाना ।
 ०००००० कारणे (क) सं.— दे. ०००००० ।
 ०००००० कारंजि (क?) सं.— फ़व्वारा, सोता ।
 ०००००० कारण (सम्) सं.— कारण, हेतु,
 वजह ; साधन, ज़रिया ; उत्पादक कर्ता,
 जनक ; तत्त्व ; देवता ; पिता ; इंद्रिय ;
 शरीर ; चिह्न ; टीप, प्रमाण ; अधिकार
 किसी नाटक की मूल घटना ; मारना,
 वध करना ; आघात करना, चोट करना
 पीड़ा, क्लेश— ०००००० पुरुष (सम्) सं.—
 महापुरुष, देवता, वह पुरुष जो किसी कार्य
 का मूल हो । — ०००००० पुरुषरत्न (सम्)
 सं.— महापुरुषों में रत्न । — ०००००० योगि
 (सम्) सं.— महायोगी, वह योगी
 जिसको प्राधान्य दिया जा सके ।
 ०००००० कारणांत (सम्) अ.— बिना
 कारण के, अकस्मात्, आकस्मिक रूप से,
 अचानक ।
 ०००००० करणांतर (सम्) सं.— अन्य
 कारण या उद्देश्य ।
 ०००००० कारणिक (सम्) सं.— परीक्षक,
 जाँच करनेवाला; नैमित्तिक; क्रिया, व्यापार ।
 ०००००० कारणे (सम्) सं.— घर की दीवारों के
 निचले भाग पर लाल रंग से (अलंकार के
 लिए) खींची गई रेखा ।
 ०००००० कारण (तद्) सं.— कारण (तद्) ;
 पीड़ा, क्लेश ।
 ०००००० कारंड, ०००००० कारंडव (सम्) सं.—
 एक प्रकार की बतख ।
 ०००००० कारभार (अ. दे.) सं.— कारोबार
 (फ़ारसी) ; व्यापार, व्यवहार ।
 ०००००० कारभारि (अ. दे.) सं.— व्यापारी ;

प्रबंधक ।
 ०००००० कारंभे (सम्) सं.— प्रियंगु वृक्ष ।
 ०००००० कारत्र (सम्) सं.— कौआ, काक ।
 ०००००० कारवि, ०००००० कारिवि, ०००००० कारवे
 (अ.दे.?) सं.— एक प्रकार का लाल कपड़ा ।
 ०००००० कारसिके, ०००००० कारसिके (क) सं.—
 एक प्रकार का खीरा या ककड़ी ।
 ०००००० कारसे (क) सं.— दवा के काम में
 आनेवाला भालू या धतूरे की जाति का
 पौधा (The Plant Solanum) ।
 ०००००० कारागार, ०००००० कारागृह (सम्)
 सं.— दे. ०००००० ।
 ०००००० काराच (सम्) सं.— दे. ०००००० ।
 ०००००० कारांजि (क?) सं.— दे. ०००००० ।
 ०००००० कारावर (सम्) सं.— एक संकर
 जाति का पुरुष ; नीच जन्मा [०००००० गवरिग
 (तद्)] ।
 ०००००० कारि (क) सं.— फटी ज़मीन, वह भूमि
 जो पानी के बहाव के कारण छिल्ली बनी
 हो ; खाड़ी ; नदी का छिल्ला भाग जो
 हलकर पार किया जा सके ; बादलों का
 आगमन, वर्षाकाल ।
 ०००००० कारि (सम्) वि.— करनेवाला, बनाने-
 वाला, कारणभूत । सं.— कर्म, क्रिया
 कलाकार, कारीगर ; यंत्रज्ञ ; अभिनेता,
 नट ।
 ०००००० कारिके, (सम्) सं.— [०००००० कारिके,
 ०००००० कारिके—तद्]— (कार्य) करनेवाली
 या अभिनय करनेवाली, नटी ; कारोबार,
 व्यापार, व्यवसाय ; व्याख्यान; टिप्पणी, ।
 ०००००० कारिणि, ०००००० कारिणी (सम्) वि.—
 करनेवाली, बनानेवाली ।
 ०००००० करिय (तद्) सं.— कार्य (तद्) ।
 ०००००० कारिवि (अ. दे.?) सं.— दे. ०००००० ।
 ०००००० कारीष (सम्) सं.— उपलों का ढेर ।
 ०००००० कारु (क) क्रि., सं.— दे. ०००००० ।
 संड़सी, चिमटा, कंकमुख ।
 ०००००० कारु (सम्) सं.— कर्ता, करनेवाला
 कलाकार, कारीगरी ।
 (१) ०००००० कारुक (सम्) सं.— कारीगर,

कलाकार, यंत्रज्ञ ।
 (२) ०००००० कारुक (क) सं.— काला आदमी ।
 ०००००० कारुकृत्य (सम्) सं.— कारीगरी ।
 ०००००० कारुखाने (सम्) सं.— दे. ००००००
 ०००००० ।
 ०००००० कारुणिक (सम्) सं.— कोमल
 हृदयवाला, दयालु, करुणाकर ।
 ०००००० कारुण्य (सम्) सं.— करुणा, दया ।
 — ०००००० निधि, ०००००० सागर, ०००००० सिंधु
 (सम्) सं.— दयासागर, अत्यंत दयालु ।
 ०००००० कारुबारि (अ. दे.) सं.— दे. ००००००
 ०००००० ।
 ०००००० कारुबारु (अ. दे.) सं.— दे. ००००००
 ०००००० ।
 ०००००० कारुवे (अ. दे.?) सं.— दे. ०००००० ।
 (१) ०००००० कारे (क) सं.— तिक्तकी नामक
 पौधा (The Spinous shrub webera
 Tetandra) ।
 (२) ०००००० कारे (सम्) सं.— जेल, बंदीगृह; पीड़ा,
 क्लेश, कष्ट ; सोने का कंठाभरण विशेष ।
 (६) ०००००० कारे (तद्) सं.— कार्य (तद्) ।
 ०००००० कारेगार (अ. दे.) सं.— कारीगर,
 काम करनेवाला ।
 ०००००० कारोत्तर (सम्?) सं.— खमीरा,
 शराब का फेन, झाग ।
 ०००००० कारु (क) क्रि.—भोक, वमन कर,
 उलटी कर ।
 ०००००० कार (तद्) सं.— दे. ०००००० ; ००००००
 कारि — स्त्री. लिं. ।
 ०००००० कारिके (क) सं.— उलटी, ओकाई ।
 ०००००० कारिके (तद्) सं.— दे. ०००००० ।
 ०००००० कारिसु (क) क्रि.— वमन करा ;
 प्रत्यर्पण करा (प्रे.), छिनी हुई वस्तु को ले ।
 ०००००० कारु (क) क्रि.— दे. ०००००० सं.—
 ओकाई, वमन ; हल की धार, फार ।
 ०००००० कारुह (क) सं.— वमन, उलटी ।
 ०००००० कारुह्य (सम्) सं.— कर्कशता,
 कठोरता, सख्ती, मोटापन, कड़ापन ।

शिवजी ।—कर्मका, कर्मणी
सम्) सं.—दुर्भाग्य, विपत्ति । सं.—विष्णु;
शिव ; ब्रह्मा, दक्ष (ब्रह्मा) ; राजकुमार ;
एक राजकुमार का नाम ; उन्नाव, फेनिल ;
सर्पविशेष ।
कालक (सम्) सं.—कलेजा, यकृत ;
शरीर पर का काला धब्बा या चिह्न ।
कालकंधर (सम्) सं.—शिव,
रुद्र ।
कालकर्म (सम्) सं.—मृत्यु ।
कालकाल (सम्) सं.—मृत्यु के
लिए मृत्यु, मृत्युंजय, शिव ।
कालकूट (सम्) सं.—एक भयं-
कर विष, हालाहल ।—ग्रीव (सम्) ।
सं.—नीलकंठ, शिव ।
कालक्रियामान (सम्) ।
सं.—(संगीत में) समय की अवधि का माप ।
कालक्षेप (सम्) सं.—समय
विताना, समय नष्ट करना ; विलंब, देरी ।
कालखंड (सम्) सं.—हृदय,
लीवर (Liver) ।
कालगति (सम्) सं.—समय या
युग की परिस्थिति ; समय का वीत जाना ।
कालचक्र (सम्) सं.—समय का
पहिया, युग ।
कालजित्. कालजितु (सम्) ।
सं.—शिव ; राम ।
कालज्ञ (सम्) सं.— उचित समय
या अवसर जाननेवाला, ज्योतिषी ; रसो-
इया ।
कालज्ञान (सम्) सं.—समय का
ज्ञान, परिस्थितियों का ज्ञान ।
कालत्रय (सम्) सं.—भूत, वर्त-
मान और भविष्यत् काल ; प्रातः, मध्याह्न
और सायंकाल ।—वेदि (सम्) सं—
तीनों कालों को जाननेवाला ।
कालदर्शि (सम्) सं.—वह जो
समय के बारे में जानता हो और बतलाता
हो ।
कालदूत (सम्) सं.—यम का

सेवक, मृत्यु की सूचना ।
कालधर्म (सम्) सं.—मृत्यु ।
कालनेमि (सम्) सं.—एक राक्षस
जिसे हनुमान जी ने मारा था ।
कालपुरुष (सम्) सं.— मृत्यु-
देवता ।
कालपृष्ठ (सम्) सं.— कर्ण के
धनुष का नाम ।
कालभेद (सम्) सं.—निश्चित
समय, भिन्न भिन्न काल, ऋतु, मौसम ।
कालभैरव (सम्) सं.— भयंकर
(मृत्यु को लानेवाला) भैरव, प्रलयंकर रुद्र ।
कालमान (सम्) सं.—समय की
माप, परिस्थिति के अनुरूप, समय की
अनुरूपता ।
कालमुख (सम्) सं.— कौआ,
भगरु ।
कालमेधि (सम्) सं.—मंजिष्ठा नाम
का पौधा ।
कालरात्रि, कालरात्रि
(सम्) सं.—भयंकर रात, प्रलयकाल की
रात ।
कालरुद्र (सम्) सं.—दे. काल
ध्वंस ।
कालवश, कालधीन (सम्)
सं.—समय के अधीन, मृत्युके वश में
होना ।
कालसूत्र (सम्) सं.— एक नरक
का नाम ; समय या मृत्यु की डोरी ।
कालवह्नि, कालाग्नि
(सम्) सं.—प्रलय के समय की आग ।
कालवेळे (सम्) सं.—समय (दुह-
राना) ।
कालव्यापि (सम्) वि.—सार्व-
कालिक, स्थिर ।
कालसूत्र (सम्) सं.—एक नरक
का नाम ; समय या मृत्यु की डोरी ।
कालस्कंध (सम्) सं.—तमालवृक्ष ।
कालहर (सम्) सं.— शिव ।

कालहरण (सम्) सं.— समय को
व्यर्थ करना ; देरी, विलंब ।
कालागुरु (सम्) सं.— काला
भगरु ।
कालाग्नि (सम्) सं.—दे. कालध्वं.
कालांगि (सम्) सं.— इलायची,
पुला ।
कालातिक्रम (सम्) सं.—
उपयुक्त या उचित समय का अतिक्रमण,
समय का अधिक वीत जाना ।
कालधीन (सम्) सं.— दे. काल
वध ।
कालानुकूल (सम्) सं.—
समय पर, प्रत्येक वर्ष ; कभी न कभी ।
कालानुकूलते (सम्) सं.—
अनुकूल समय, शुभ समय ।
कालांतक (सम्) सं.— समय जो
मृत्यु देवता माना जाता है ; यम ।— कृत् (सम्) सं.— शिव ।
कालांतर (सम्) सं.—मध्यांतर ;
(Interval) समय का विधान, अवधि ;
दूसरा या आगामी समय ।
कालायस (सम्) सं.— लोहा ।
कालारि (क) सं.— टिटिहरी ।
कालावाधि (सम्) सं.— उपयुक्त
या निश्चित समय ।
कालास, कालास (सम्) सं.—
ध्वज, पताका ।
कालाहि (सम्) सं.—काला नाग ।
(१) कालि (क) सं—पैरोंवाली स्त्री ।
(२) कालि, काली, कालि
(सम्) सं.— दुर्गा, कालीमाता ; कालारंग ।
कालिक (सम्) वि.— समय संबंधी,
समय पर निर्भर, समयानुसार ।
कालिका, कालिके (सम्)
सं.— काला रंग, स्याही ; बादलों का
समूह ; मुर्चा ; दुर्गा, कालीमाता ।
कालिंग, कालिंग (सम्)
वि.— कालिंग देश में उत्पन्न या उससे
संबंधित । सं.— कालिंग-राजा ; कालिंग देश

काल्य काव्य (सम्) सं. — उशनस् या शुक्र ; पद्यमय-रचना, कविता या कविता का विभाग, कवि । — काल्य कर्तार (सम्) सं. — कवि, रचनाकार । — काल्य कर्तृ (सम्) सं. — कवि । काल्य — रचने (सम्) सं. — कविता की रचना । — काल्य समय (सम्) सं. — कवि समय ।

काल्यवर्णन काव्यावलोक, काल्यवर्णन काव्यावलोकन (सम्) सं. — कन्नड कवि नागवर्मा की प्रसिद्ध काव्यशास्त्र रचना ।

काल्य काश (सम्) सं. — चमकना, चमक, प्रकाश ; एक प्रकार की घास जो चटाई बनाने और छत छाने के काम में आती है ।

काल्यकर्मण्य काशाकर्पटि (सम्) सं. — कौपीन ; जाँघिया ।

काल्य काशि, काल्य काशी (सम्) सं. — सप्त मोक्षपुरियों में एक, बनारस ; चमक, प्रकाश । — काल्य कागद = अच्छा सफेद कागज । — काल्य तलि = मांगल्य । — काल्य भागीरथि (सम्) सं. — काशी से लाया गया गंगा-जल ।

काल्य काशिका, काल्य काशिके (सम्) सं. — बनारस ।

काल्य काशिनाथ, काल्य काशि विश्वनाथ (सम्) सं. — विश्वनाथजी, शिव ।

काल्य काशिराज (सम्) सं. — काशी के एक राजा का नाम, अनुसाल्व के पिता का नाम ।

काल्य काश्मरि (सम्) सं. — गांभारी नामक पौधा ।

काल्य काश्मीर (सम्) सं. — कश्मीर ; कश्मीर से संबंधित पदार्थक ; केसर, जाफ़ान । — काल्य (सम्) सं. — केसर, जाफ़ान ।

काल्य काश्यप (सम्) सं. — एक प्रसिद्ध ऋषि । काल्य काश्यपि — गरुड़, अरुण ।

काल्य काषाय (सम्) सं. — गेरुआ वस्त्र । — काल्य धारी (सम्) सं. — संन्यासी । — काल्य वसन (सम्) सं. — गेरुआ वस्त्र धारी ।

काल्य काष्ठ (सम्) सं. — लकड़ी का

टुकड़ा, लट्ठा, छड़ी, ईंधन ; सूखे, वेवकूफ ; कृश होना, पतला होना ; नापने का एक औज़ार । काल्य तक्ष, काल्य तट् (सम्) सं. — बढ़ई । — काल्य व्यसन (सम्) सं. — व्यर्थ की चिंता ।

काल्य काष्ठांबुवाहिनि (सम्) सं. — लकड़ी की बाल्टी ।

काल्य काष्ठिके (सम्) सं. — काष्ठ, लकड़ी का टुकड़ा, ईंधन ।

काल्य काष्ठीभूत (सम्) सं. — काठ के समान या काठ होना ।

काल्य काष्ठीले (सम्) सं. — कदली वृक्ष, केले का पेड़ ।

काल्य काष्ठे (सम्) सं. — दिशा ; सीमा, चरमसीमा ; जगह ; मैदान ; समय का परिमाण ; अठारह बार पलकें मारने का समय ; उत्कृष्टता, शुद्धता, स्पष्टता ; अनुकूलता ; विकास, उन्मीलन ।

काल्य कास (तद्) सं. — काश (तद्) ; चमक प्रकाश, कांति ; विकास, खिलना ।

काल्य कास (सम्) सं. — खौंसी ; दमे की बीमारी (सै.प्र.) ।

काल्य कासगि (अ.दे.) वि. — खास (अरबी) ; अपना, स्वकीय ।

काल्य कासगि (सम्) सं. — दवा के काम में आनेवाला आलू या धतूरे की जति का पौधा (Solanum) ।

काल्य कासदार (अ.दे.) सं. — (काल्य कासगार) — सईस, अश्वपालक ।

(१) काल्य कासर, काल्य कासक (क) सं. — दे. काल्य और काल्य ।

(२) काल्य कासर (सम्) सं. — भैंसा । काल्य कासरि (सम्) सं. — भैंस ।

काल्य कासरिके (क) सं. — दे. काल्य ; दे. काल्य ।

काल्य कास्य (अ.दे.) वि. — खास (अरबी) ; अच्छा, सुंदर, मनोहर ; अपना ।

काल्य कासाय (तद्) सं. — कापाय (तद्) । काल्य कासार (सम्) सं. — तालाव, खरोवर पुष्करिणी ।

काल्य कासारक (क) सं. = काल्य ।

काल्य कासि (तद्) सं. — काशी (तद्) । (तद्) सं. — काशा (तद्) — कौपीन ; दे. काल्य, काल्य कासिकेचि = काल्य, काल्य कासिकेचि (तद्) सं. — काशाकर्पट (तद्) ; दे. काल्य ।

काल्य कासित (सम्) वि. — भेजा हुआ, दूर किया हुआ, हटाया गया ।

काल्य कासिसु (क) क्रि. — गरम करा, उष्ण करा (प्रे.) ।

काल्य कासु (क) क्रि. = काल्य कासिसु — गरम कर, उबाल, औटा, ताप । सं. — बहुत छोटा सिक्का, कौड़ी, पैसा ।

काल्य कासु, काल्य काशू (सम्) सं. — एक प्रकार का भाला ; अस्पष्ट भाषण ; दीप्ति, कांति, चमक ; रोग ; भक्ति ।

काल्य कासुलि (सम्) सं. — दे. काल्य काल्य कासे (तद्) सं. — काशा (तद्) ; कौपीन काष्ठ ; जाँघिया ।

काल्य कासुति (सम्) सं. — पगडंडी, गुप्तमार्ग ।

काल्य कास्तार (अ.दे.) सं. — दे. काल्य काल्य कास (क) सं. — दे. काल्य (१)

काल्य काहक (क) सं. — रक्षक, संरक्षक, पालक ; चौकसी करनेवाला ।

काल्य काहल (सम्) सं. — बिहारी ; मुर्गा ; काक, कौआ ; रव, ध्वनि ; पंचमहावायु, सींगा ।

काल्य काहि (क) सं. — दे. काल्य काल्य काहले, [काल्य कहले] (तद्) सं. — काहल : (तद्) ; सींगा ।

काल्य काहि (क) सं. — दे. काल्य काल्य काहिले (अ.दे.) सं. — दे. काल्य, काल्य काहि (क) सं. — दे. काल्य

काल्य काहु (क) सं. — दे. काल्य काल्य काहु, काल्य काहुरते (क) सं. — दे. काल्य

काल्य काहेरु (क) क्रि. — गरम हो, उष्ण हो ; ताप अधिक हो ।

काहोनल काहोनल, काहोनल काहोनल (क) सं.— वन में बहनेवाली धारा, नदी की बाढ़ ।

काह काह, काह काह (क) सं.— दाना ; धीज, अनाज ।

काह काह (तद्) सं.— काल : (तद्) ; काह यम कालयम— सृष्ट्युदेवता यम । (तद्) सं.— काल (तद्) ; काला ; काहकाह काहकाह— गाढांधकार, काहकाह काह— जीरिगे— काला जीरा, काहकाह काहकाह— अंधेरी रात ।

काह काह, काह काह (क) सं.— युद्ध, समर, लड़ाई ।

काह काह (अ. दे.) सं.— काह काह काह— काह काह, काह काह, काह काह— कलेजा, यकृत ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (क) सं.— पीकदानी ; सुगंधित जल छिटकाने का सोने, चाँदी या पीतल का बर्तन विशेष, रसपात्र ; एक प्रकार का चैवर या पंखा ।

(१) काह काह (क) सं.— दे. काह.

(२) काह काह (तद्) सं.— एक नाम (स्त्रियों का) ; दुर्गा की उपाधि — काह नाथ = शिव — काह मथन = कृष्ण ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (तद्) सं.— काहकाह, काहकाह ।

काहकाह काहकाह (तद्) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (तद्) सं.— काहकाह नाग, काला सपे ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (अ. दे.) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (तद्) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह (तद्) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह (क) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह (क) सं.— वन, जंगल, अरण्य रुक्षता, जंगलीपन ; बलात्कार, दुष्टता, बुराई-बुरा भादमी, शत्रु ; दे. काहकाह काहकाह ; काहकाह काहकाह (क) सं.— काली भैंस ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— मन की कठोरता ; हठ, प्रतीपता ; अहंकार, गर्व ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह (काहकाह काहकाह) (क) सं.— अनाज बेचनेवाला ।

काह काह, काह काह (सम्) सर्व., अ.— क्या ; कैसे ; या— तो ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— सेवक, दास, नौकर । — डे ते, डे स्व (सम्) सं.— सेवा-भाव, दासता ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— नौकर की स्त्री ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— नौकरानी, दासी ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (क) सं.— संकीर्णता, तंगी, भीड़ का होना ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— छोटी धंटियों से निकलने-वाली ध्वनि, पायल की ध्वनि ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— धूँवर, छोटी-छोटी धंटियाँ ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— घोड़ा ; कोयल, कोकिल ; मधुकर, भ्रमर ; कामदेव ; लाल रंग ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— तोता ; कोयल ; कामदेव ; अशोकवृक्ष ; महासहा, अरुलान पुष्प ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— दे. काहकाह.

काहकाहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— असहाय स्थिति, किंकर्तव्यविमूढता, जब कि मालूम न हो कि क्या करना चाहिए ।

काहकाहकाह काहकाह (क) सं.— हिंसा ; पीड़ा, कष्ट, संकट ।

काहकाह काहकाह (सम्) सर्व.— कुछ, थोड़ा ; कुछ हद तक, और नहीं ।

काहकाह काहकाह (सम्) सर्व.— कुछ, थोड़ा ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— वह स्त्री जिसका विवाह बहुत काल के बाद भी न हुआ हो ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— केंचुआ ; गंडूपद ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— कमल पुष्प का

रेशा, कमल का फूल ; किसी वृक्ष का फूल या रेशा ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— झरोखा, थोड़ा खुला स्थान, छिद्र ।

काहकाह काहकाह (सम्) अ.— लेकिन, परंतु, मगर ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) वि.— अपक्व, कच्चा ; लड़कपन स्वभाव का ; मूर्ख । सं.— कद्दू, कुम्हड़ा ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— किन्नर, देवताओं के गायक— इनका मुख घोड़े जौसा और शरीर मनुष्य जैसा होता है ; 'कैसे मनुष्य हैं' यह आंति उत्पन्न होती है ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— दंतकथा ; अफवाह ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— अनाज की बाल ; वाण, तीर ; सारस, बगुला ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— पलाश वृक्ष ।

काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— अनेक श्रेणीवाली माला ।

काहकाह काहकाह, काहकाहकाह काहकाह (सम्) सं.— चातक पक्षी ; नीलकंठ पक्षी ।

काहकाहकाह काहकाह (क) क्रि.— छोटा कर, कम कर, एक साथ मिला, सटा ; भीड़ हो, संकीर्ण हो, तंग हो, स्थानाभाव हो, निविड या घना हो ।

काहकाहकाह काहकाह (क) सं.— तंगी, संकीर्णता, संकुचितता ; भीड़ ; दबाव ।

काहकाहकाह काहकाह (क) क्रि.— संयुक्त हो, अत्यधिक निकट हो, निविड या घना हो, भीड़ हो, जन-समूह हो, संकीर्ण हो । सं.— भीड़, अधिकता, संकीर्णता, तंगी, जन-समूह, स्थानाभाव ।

काहकाहकाह काहकाह (क) सं.— चीख, पुकार, चिलाहट ।

काहकाह काहकाह (क) वि.— छोटा, लघु । काहकाहकाह काहकाह (क) सं.— छोटी गठरी, छोटा गट्टा ।

काहकाहकाह काहकाह (क) सं.— छोटी भाँख ।

काहकाहकाह काहकाह (क) वि.— हीन, तुच्छ, मूल्यरहित ।

काहकाहकाह काहकाह (क) सं.— छोटी गठरी ।

कृष्णोत्थं किफायति (अ. दे.) सं.—किफा (अरवी) नफा, ; — लाभ ।

कृष्णोत्थं किक्वदि, कृष्णोत्थं किक्वदि, कृष्णोत्थं किक्वदि, कृष्णोत्थं किक्वदि (क) सं.—जंतु या मनुष्य का मांसल पाश्र्व, पेट ।

कृष्णोत्थं किक्वसिरु, कृष्णोत्थं किक्वसुरु (क) सं.—पेट का निचला भाग, नाभि के नीचे का भाग ; वस्ति ।

कृष्णोत्थं किक्वि, कृष्णोत्थं किक्वे (क) सं.—पहाड़ का ढाल प्रदेश, पहाड़ के मूल की भूमि या स्थान ।

कृष्णोत्थं किक्वोट्टु (क) सं.—छोटी उंगली, छिगुनिया ।

कृष्णोत्थं किमि (तद्) सं—कान (ग्रा.) ।

कृष्णोत्थं किमिचु (क) क्रि.—हाथ से दबा या कुचल ; मसल, मर्दन कर ।

कृष्णोत्थं किमुक् (क) सं.—थोड़ा शोर-गुल । कृष्णोत्थं किमुक्केन्नु — थोड़ा शोर-गुल कर ।

कृष्णोत्थं किमुळ्, कृष्णोत्थं किमुळ् (क) सं.—कुचला या मसला जाने के बाद की स्थिति ; संकुचितता, सिकुडन ।

कृष्णोत्थं किमुळ्चु [कृष्णोत्थं किमुळ्चु] (क) क्रि.—दे. कृष्णोत्थं ; झुरीं पड़, सिकुड ; —हस्तमर्दन, मसलन ; सिकुडन ।

कृष्णोत्थं किम्मत्तु (क) सं.—कीमत (अरवी) ; मूल्य, भाव ।

कृष्णोत्थं किम्मीर (तद्) सं.—किमीर ; (तद्) । —स्यै वैरि (तद्) सं.—भीमसेन ।

कृष्णोत्थं किर (सम्) सं.—दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरण (सम्) सं.—किरण, रश्मि ।

कृष्णोत्थं किरय (तद्) सं—क्रय (तद्) ; मूल्य, मोल ; बेचना ।

कृष्णोत्थं किरमंजि (क ?) सं.—लाल रंग और काले रंग का मिश्रण ।

कृष्णोत्थं किराणि (अ. दे.) सं.—किराना (हिं.) ।

कृष्णोत्थं किरात (सम्) सं.—एक पहाड़ी जंगली जाति, शबर, व्याध ; जंगली, बर्बर ; वामन,

बौना, नाटा आदमी ; साईस, घुड़सवार ।

कृष्णोत्थं किराति (सम्) सं.—शबर जाति का व्यक्ति ।

कृष्णोत्थं किराते (सम्) सं.—किरात जाति की स्त्री ।

कृष्णोत्थं किराय (अ. दे.) सं.—किराया, भाड़ा ।

(१) कृष्णोत्थं किरि (क) क्रि.—हजामत कर, क्षौर कर ; दाँत दिखा, मूर्खता, या पीड़ा से हँस ।

(२) कृष्णोत्थं किरि (सम्) सं.—दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरिकिरि (अ. दे.) सं.—कृष्णोत्थं किरिकिरि — किरिकिरी पीड़ा, कष्ट ।

कृष्णोत्थं किरिचु (क) क्रि.—दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरिट (सम्) सं.—मुकुट, ताज, कलंगी—बाण चाप (सम्) सं.—एक पक्षी विशेष ।

कृष्णोत्थं किरिटी (सम्) सं.—मुकुटधारी ; अर्जुन का नाम ।

कृष्णोत्थं किरुटिग (क) सं.—एक प्रकार का पक्षी जो अपने शिकार को काँटों में बंद कर देता है ।

कृष्णोत्थं किरि (क) सं.—कृष्णोत्थं किरि—साग-भाजी । कृष्णोत्थं किरि, कृष्णोत्थं किरि (क) क्रि.—ढक, बंद कर ; रोक ; बाड़ लगा, रक्षित रख ; मौन रह, चुप रह ; घेर, आवृत्त कर ।

कृष्णोत्थं किरि [कृष्णोत्थं किरि] (क) वि.—छोटा लघु । कृष्णोत्थं किरिकुळ (क) सं—पीड़ा, तंग करना । वि.—छोटा, न्यून, तुच्छ ।

कृष्णोत्थं किरिकु (क) सं.—एक अनुकरण मूलक शब्द ; कृष्णोत्थं किरिकु किरिकु—बॉस के वृक्षों से (हवा के चलने पर) निकलने-वाली ध्वनि ।

कृष्णोत्थं किरिचु (क) क्रि. = कृष्णोत्थं किरिचु, कृष्णोत्थं किरिचु, कृष्णोत्थं किरिचु — चीख, चिह्ला, ज़ोर से पुकार ।

कृष्णोत्थं किरिचुविके [कृष्णोत्थं किरिचुविके] (क) सं.—चिह्लाना, चिह्लाहट, पुकार, चीख ।

कृष्णोत्थं किरिदु, कृष्णोत्थं किरिदु [कृष्णोत्थं किरिदु, कृष्णोत्थं किरिदु] (क) वि.—छोटा ।

कृष्णोत्थं किरिब [कृष्णोत्थं किरिब] (क) सं.—चीता, तेंदुआ ; लकड़बग्घा ।

कृष्णोत्थं किरिबु (क) सं.—दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरि (क) वि.—छोटा, लघु, कम, न्यून, नीच । कृष्णोत्थं किरिकुल (सम्) सं.—नीच कुल ; नीचजन्मा । कृष्णोत्थं किरिगंटे (तद्) सं.—छोटी घंटी । कृष्णोत्थं किरिगणु (क) सं.—छोटी बाँख । कृष्णोत्थं किरिदु काल (सम्) सं.—कम समय, कुछ देर । कृष्णोत्थं किरिदु दिन (सम्) सं.—कुछ दिन ।

कृष्णोत्थं किरिकि (क) सं.—दे. कृष्णोत्थं । कृष्णोत्थं किरिकिजोडु (क) सं.—चरचराहट उत्पन्न करनेवाले जूते ।

कृष्णोत्थं किरिगे (क) सं.—लड़कियों के पहनने की छोटी साड़ी ; दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरिचु (क) क्रि.—दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरिदु (क) वि.—दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरि (क) वि.—दे. कृष्णोत्थं । सं.—एक अनुकरण मूलक शब्द ; कृष्णोत्थं किरिगुडटिसु (क) सं.—बच्चों को रुला या उनको चिह्लाने दे । कृष्णोत्थं किरिगूसु (क) सं.—छोटा बच्चा । कृष्णोत्थं किरिगुसुतन (क) सं.—बचपन, शैशव ।

कृष्णोत्थं किरिगणे (क) सं.—लहंगा । कृष्णोत्थं किरिगणेजे (क) सं.—किंकणी । कृष्णोत्थं किरिनेल्लिकायि (क) सं.—छोटा-आँवला ।

कृष्णोत्थं किरिकु (क) क्रि.—खुरच, खुजला ; छील ।

कृष्णोत्थं किरिचु (क) क्रि.—दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरिब (कृष्णोत्थं किरिब) (क) सं.—दे. कृष्णोत्थं ।

कृष्णोत्थं किरिने (क) अ.—खड़खड़ाहट के साथ ; ज़ोर-ज़ोर से ।

कृष्णोत्थं किरिगे (क) सं.—दे. कृष्णोत्थं ।

कंगु किर्गु, कंळु, किल्लु (क) क्रि.— नीचे हो; तुच्छ हो, ठिगना।

कंळु किर्गु (क) सं.—दे. कंळु; दे. कंळु।

कंद किर्दि, कंद किर्दी (अ. दे.) सं.— दैनिक आय-व्यय लिखने की पंजिका, हिसाब वही।

कंद किर्दु (क) वि.— छोटा। सं.— छोटी वस्तु।

कंद किर्दी (सम्) वि.— ध्वेदार, चित्तेदार, रंगविरंगा। सं.— एक राक्षस का नाम जिसे भीमसेन ने जीता था।

(१) कं किल (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द जो हँसी या आनंद का सूचक है। कं किल्लु, किलकिल्लु (क) क्रि.— खिलखिलाकर हँस पड़।

(२) कं किल (सम्) अ.— निश्चय, अवश्य, सच ही, सचमुच, शायद। सं.— खेल, क्रीडा।

कं कं किल (सम्) सं.— प्रेमी-प्रेमिकाओं के (रोना, हर्ष प्रकट करना, क्रोध करना आदि) नाना भाव।

कं कं किल (सम्) सं.— हर्षसूचक शब्द, जोरसे चिल्लाना।

कं किल (क) सं.— औंटाया हुआ दूध; खोवा; पनीर।

कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— मंहर, मुर्चा, जंग; ताम्रकिट्ट, बर्तनों का किष्ट मलिनता; जिस तांबे या पीतल के बर्तन में कलई न हो उसमें मट्टा आदि रखने से उसके खराब होने की स्थिति।

कं किल्ल (सम्) सं.— चकत्ता, दिंदोरा; पपड़ी, एक प्रकार का चर्मरोग।

कं किलि (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द। कं किल्लु, किलकिल्लु (क) क्रि.— खिलखिलाकर हँस पड़।

कं किलिंग (क) सं.— नाई, हज्जाम।

कं किलिज, कं किलिजक (सम्) सं.— चटाई; हरी लकड़ी का पतला तख्ता; आड़, पर्दा।

कं किल्लु; कं किल्लु (क) सं.— दे. कं किल्लु।

कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— दे. कं किल्लु।

कं किल्लिष, कं किल्लिष (सम्) सं.— (१) पाप, अपराध, दोष (२) बीमारी, रोग (३) अन्याय, अपकार, अनिष्ट। कं किल्लिष किल्लिष (तद्)।

कं किल्ले (अ. दे.) सं.— किला (अरवी); दुर्ग, गढ़। — कार दार (अ. दे.) सं.— किले का प्रधान कर्मचारी।

कं किल्लु (क) क्रि.— दे. कं किल्लु।

कं किल्लु (क) सं.— कं किल्लु— बहरापन, बहरा होना। कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु = बहरा आदमी, कं किल्लु, कं किल्लु = बहरी स्त्री। कं किल्लु किल्लु, कं किल्लु किल्लु किल्लु किल्लु (क) सं.— बहरापन।

कं किल्लि (क) सं.— कान, श्रवणेंद्रिय; कड़ाही, गंगाल आदि बर्तनों के कड़े या कान; दस्ता, बेंट। — कं किल्ले (क) अ.— कानों से, कान भरकर। — कं किल्ले (क) सं.— बालियाँ, कर्णाभरण। — कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु (क) क्रि.— कान दे, ध्यान दे। कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— वह स्त्री जिसके कान काट दिये हों। — कं किल्लु (क) सं.— सुनी-सुनाई बात। कं किल्ले (क) क्रि.— कान खोल। — कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले (क) सं.— कानों का आभरण। — कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— वह स्त्री जो अपने कानों से वंचित हो; वह स्त्री जिसके कानों में कोई आभूषण न हो। कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) सं.— कान की गंदगी या मल। कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) क्रि.— जता, बता।

कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— कान दे, ध्यान दे। कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— वह स्त्री जिसके कान काट दिये हों। — कं किल्लु (क) सं.— सुनी-सुनाई बात। कं किल्ले (क) क्रि.— कान खोल। — कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले (क) सं.— कानों का आभरण। — कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— वह स्त्री जो अपने कानों से वंचित हो; वह स्त्री जिसके कानों में कोई आभूषण न हो। कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) सं.— कान की गंदगी या मल। कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) क्रि.— जता, बता।

कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— वह स्त्री जो अपने कानों से वंचित हो; वह स्त्री जिसके कानों में कोई आभूषण न हो। कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) सं.— कान की गंदगी या मल। कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) क्रि.— जता, बता।

कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— वह स्त्री जो अपने कानों से वंचित हो; वह स्त्री जिसके कानों में कोई आभूषण न हो। कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) सं.— कान की गंदगी या मल। कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) क्रि.— जता, बता।

कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— वह स्त्री जो अपने कानों से वंचित हो; वह स्त्री जिसके कानों में कोई आभूषण न हो। कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) सं.— कान की गंदगी या मल। कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) क्रि.— जता, बता।

कं किल्लु, कं किल्लु (क) सं.— वह स्त्री जो अपने कानों से वंचित हो; वह स्त्री जिसके कानों में कोई आभूषण न हो। कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) सं.— कान की गंदगी या मल। कं किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु, कं किल्लु, कं किल्लु किल्लु (क) क्रि.— जता, बता।

कं किल्ले (क) सं.— बहरापन। कं किल्ले (क) सं.— बहरापन; बहरा आदमी।

कं किल्ले किल्ले (क) सं.— कं किल्ले। कं किल्ले (क) सं.— दे. कं किल्ले।

कं किल्लु, कं किल्लु (क) क्रि.— दे.— कं किल्लु।

कं किल्ले, कं किल्ले (सम्) सं.— बच्चा, नाबालिग; किसी जानवर का बच्चा।

कं किल्ले (क) सं.— दे. कं किल्ले।

कं किल्ले (सम्) सं.— किल्ले— वाली-सुग्रीव की राजधानी का नाम।

कं किल्लु (सम्) वि.— दुष्ट, बुरा, घृणित, तिरस्कार करने योग्य। सं.— बाँह; बारह अंगुल की माप।

कं किल्ले (सम्) सं.— एक बंदर का नाम जिसके कारण 'किल्ले' नाम प्रचलित हुआ।

कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले (क) वि.— खुला हुआ, निकाला हुआ, दाँत बाहर निकाला हुआ, व्यर्थ हाँसता हुआ। कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले (क) सं.— (व्यर्थ) हंसनेवाला मुख (जो दुर्बलता का चिह्न है), क्षुद्रमति; काँड़, काँड़, कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले, कं किल्ले (क) सं.— बार-बार वही गीत गाओ ऐ क्षुद्रमति (अनाडि) गायक! (कह.)।

कं किल्ले (क) अ.— बड़ी जोर की आवाज़ के साथ; अचानक, सहसा।

कं किल्ले (अ. दे.) सं.— (किस अरवी); नमूना, जाति, वर्ग, श्रेणी।

कं किल्ले (सम्) सं.— पल्लव, कोमल पत्ता।

कं किल्ले (क) क्रि.— खोलना, निकालना, दाँत बाहर दिखाना; बढ़ाना। वि.— कं किल्ले; कं किल्ले कं किल्ले किल्ले (क) क्रि.— खिलखिलाकर (हंस)।

कं किल्ले (क) क्रि.— खोलकर; दाँत बाहर दिखाने के लिए।

ॐॐॐ कीर्ति (सम्) वि.—प्रशंसा किया हुआ, प्रशंसित ; वर्णित ।

ॐॐॐॐॐ कीर्तिवंत, ॐॐॐॐॐ (सम्) वि.— यश या कीर्ति पाया हुआ कीर्तिमान् ।

ॐॐॐॐॐ कीर्तिसु (सम्) क्रि.—वर्णन कर, गान कर, प्रशंसा कर ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्य (सम्) वि.— फैला हुआ, फैलाने योग्य ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्, ॐॐॐॐॐ कीर्त्ति; ॐॐॐॐॐ कीर्त्तु (तद्) सं.—कीर्त्तुः (तत्) ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तु (सम्) सं.—कीर्त्तु, पिन, खूँटी, सेख, बर्छी; खंबा. स्तूप, खूँटा; आग, ज्वाला; पर्वत, पहाड़; लाख, लाक्षा ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तुक (सम्) सं.—दे. ॐॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तुल (सम्) खून, रक्त; पानी; लाल रंग, लालिमा; जानवर, पशु; ज्वाला; अमृत के समान पेय पदार्थ, शहद, मधु ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तुलि (तद्) सं.—कीर्त्तु; ताला; घड़ी की बहुत महीन बाल या कमानी ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तुलिक्के (सम्) सं.—कीर्त्तुलिका, धुरी की कीर्त्तु ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तुलिसु (सम्) क्रि.—कीर्त्तु लगाना, ठोकना, लगाना, जोड़ना, स्थिर या दृढ़ करना ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तुलु (तद्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ; लकड़ी की चूल (जो छेद में बैठाई जाती है), जोड़ा, मिलाव, कपट-मोजना, आविष्कार, उपाय, रहस्य साधन. रहस्य; ताली, चाभी. कुंजी, कुंड़ी । — ॐॐॐॐॐ ब्रौंवे (सम्) सं.—चाभी देने पर घूमने या नाचनेवाली गुड़िया ।

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तुलुक (तद्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐॐ कीर्त्तुले (सम्) सं.— ज्वाला, लौ ।

ॐॐॐॐॐ कीव, ॐॐॐॐॐ कीवु (क) सं.—दे. ॐॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐॐ कीश (सम्) सं.— वानर, बंदर ।

ॐॐॐॐॐ कीसर (क) सं.— जोर से बोलने, चिल्लाने, रोने आदि का शोर, शोर-गुल, हल्ला ।

ॐॐॐॐॐ कीसु (क) क्रि.— खिंच, खिंचा जा, कर्षित हो; खिंचवा, कर्षण करा; खींच;

पतला कर; कृश कर, रगड़कर चमकाना, रगड़ । सं.— रगड़कर चमकाना या पालिश करना; कानों में पहनने का ताड़ के पत्ते के आभरण, कर्णपत्र ।

ॐॐॐॐॐ कीसुलि (क) सं.— रगड़कर चमकाने-वाला आयुध, रुखानी, छेनी ।

ॐॐॐॐॐ कीळ, ॐॐॐॐॐ कीळु (क) सं.— नीच या हेय पदार्थ या व्यक्ति; बछड़; गाय का बच्चा बरामदा । क्रि.— तोड़ (फल आदि); निकाल खींच ले, लूट ।

ॐॐॐॐॐ कीळिल् (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ

ॐॐॐॐॐ कीळु (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ; लगाम,

घोड़े के मुँह का लोहा । क्रि.— (फल आदि) तोड़, खींच ले, (बाहर) निकाल, उलटा; लूट ।

ॐॐॐॐॐ कीळ (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐॐ कीळतन, ॐॐॐॐॐ कीळतन ॐॐॐॐॐ तन कीळतन, ॐॐॐॐॐ कीळतन (क) सं.— नीचता, तुच्छता, नीचे होना क्षुद्रता ।

ॐॐॐॐॐ कीळिसु (ॐॐॐॐॐ कीळिसु) (क) क्रि.— (फल आदि) तुड़वा, निकलवा, खिंचवा (प्रे.) ।

ॐॐॐॐॐ कीळु (क) क्रि.— दे. ॐॐॐॐॐ. सं.— दे. ॐॐॐॐॐ.

ॐॐॐ कु (सम्) अ.— हास, खराबी, कमी, पाप, धिक्कार. घिसावट, स्वल्पता आदि का बोधक अव्यय ।

ॐॐॐ कु, ॐॐॐ कुं (क) प्र.— अन्य पुरुष ए. व. और ब. व. (सभी काल और लिंगों में) सूचक प्रत्यय; उदा.— ॐॐॐ, अकु, ॐॐॐ अकुं— होता है, ॐॐॐ इकुं— है ।

ॐॐॐॐॐ कुंकुम (सम्) सं.— ॐॐॐॐॐ कुंकुव (तद्)— कुंकुम; केसर, जाफ्रान । —

ॐॐॐॐॐ केसरि (सम्) सं.— केसर का फूल ।

ॐॐॐॐॐॐॐ कुंकुमांक (सम्) वि.— कुंकुमक से लिप्त, कुंकुम लगाया हुआ ।

ॐॐॐॐॐ कुंके [ॐॐॐॐॐ गोंके] (क) सं.— गर्दन का पिछला भाग; कंधा ।

ॐॐॐॐॐ कुंग (क) सं.— मछुआ ।

ॐॐॐॐॐ कुंग (क) सं.— मौन, चुप्पी, खामोशी क्रि.— दे. ॐॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐॐ कुंच (तद्) सं.— कूचः (तत्) — गुच्छा (गाँठ, ग्रंथि), समूह; कौंच; शब्दा, फुदन; कुँची; पंखा. चासर, चँवर ।

ॐॐॐॐॐ कुंचक (सम्) वि.— झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र ।

ॐॐॐॐॐॐॐ कुंचटिग ॐॐॐॐॐ कुंचिग (क) सं.— शूद्रों की एक उपजाति जो प्रायः अरहर की दाल का व्यापार करते हैं ।

ॐॐॐॐॐॐॐ कुंचडिग (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐॐॐॐ कुंचवडिग (अ. दे.) सं.— कूचा से मखियों को भगानेवाला आदमी ।

ॐॐॐॐॐ कुंचि, ॐॐॐॐॐ कुंचिगे ॐॐॐॐॐ कुंचिगे (क) सं.— अंगरखा, बच्चों की टोपी ।

ॐॐॐॐॐ कुंचिके, [ॐॐॐॐॐ कुंचिका] (सम्) सं.— ताली, कुंजी, चाभी ।

ॐॐॐॐॐ कुंचिगे (तद्) सं.— कूचिका (तत्)

चित्र लिखने की कुँची या पेंसिल, तूलिका ।

ॐॐॐॐॐ कुंचित (सम्) वि.— झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र । — ॐॐॐॐॐ अंगुलि (सम्) सं.— झुकी हुई या टेढ़ी उंगली ।

ॐॐॐॐॐ कुंचु, ॐॐॐॐॐ कुंगु, ॐॐॐॐॐ कुंगु, ॐॐॐॐॐ कुंगु (क) क्रि.— डूब, झुक, नीचे हो, दब, कम हो, न्यून हो; रुढ़ हो, अवरुढ़ हो, रुंध जा (जैसे कंठ की ध्वनि) । ॐॐॐॐॐ कुंचदव (क) सं.— वह आदमी जो किसी के सामने नहीं झुकता, निर्भीक पुरुष ।

ॐॐॐॐॐ कुंज (सम्) सं.— लतागृह, लतामंडप; जवड़ा; हाथी के दाँत ।

ॐॐॐॐॐ कुंजर (सम्) सं.— हाथी; श्रेष्ठार्थ वाचक; गजासुर नामक राक्षस । — ॐॐॐॐॐ कर (सम्) सं.— हाथी की सूँड़ ।

ॐॐॐॐॐॐॐ कुंजरारि (सम्) सं.— सिंह; शेर शरभ; शिवजी ।

क०ञ०श०श० क०जराशन (सम्) सं.— पीपल का वृक्ष ।

क०ञ०श० क०जल (सम्) सं.— (कु + जल?) कांजी, खट्टी कांजी ।

क०ञ०श० कुंजु (क) क्रि.— कूद, छलांग मार ।

(१) क०ञ०श० कुंट (क) सं.— पंगु, लंगड़ा मनुष्य । क०ञ०श० कुंटि— स्त्री. लि. । क०ञ०श० मूढरुव कुंटुमुख — लंगड़ा (दुहराना) ; क०ञ०श० मूढरुव क०ञ०श० मूढरुव न०न० मूढरुव क०ञ०श० मूढरुव कालिद्वरु काशिरु होदरे नीनेलि होदी कुंटुमुख— जिनके पैर हो वे काशी जावें तो तू कहां जाएगा पंगु ! (कह.) ।

(२) क०ञ०श० कुंट (तद्) वि.— कुंट (तत्) बलहीन, निर्बल, कमजोर । क०ञ०श० कुंटदेवरु (तद्) सं.— निर्बल देवता । क०ञ०श० कुंटिगिन्ति, क०ञ०श० कुंटिगिन्ति, क०ञ०श० कुंटलिगिन्ति, क०ञ०श० कुंटलिगिन्ति (तद्) सं=कुंटिनी (तत्) ; कुंटनी, दलाला ।

क०ञ०श० कुंटिगि (तद्) सं—दे. क०ञ०श० कुंटिगि (क) सं—एक पैर के बल पर कूदना या चलना ।

क०ञ०श० कुंटिगि (तद्) सं.— कुंटना ।

क०ञ०श० कुंटिगिन्ति, क०ञ०श० कुण्डलिगिन्ति (तद्) सं.—दे. क०ञ०श० कुण्डलिगिन्ति ।

क०ञ०श० कुण्डलतन (तद्) सं—कुंटनाने की क्रिया ।

क०ञ०श० कुंटि (क) सं.—लंगड़ी स्त्री ।

क०ञ०श० कुंटिगि (क) सं. = क०ञ०श० कुंटिगि— एक लता विशेष ।

क०ञ०श० कुंटिगि (तद्) सं—दे. क०ञ०श० कुंटिगि ।

क०ञ०श० कुंटितन [क०ञ०श० कुंटितन] (क) सं.—पंगु होना, लंगड़ापन ।

क०ञ०श० कुंटिसु (क) क्रि.—एक पैर के बल दूसरे को कूदने दे (या) कूदा (प्रे.) ।

क०ञ०श० कुंटु (क) क्रि.— लंगड़ा कर चल,

ठमक ; एक पैर के बल पर चल या कूद । सं—एक पैर के बल पर चलने या कूदने की क्रिया ; लंगड़ापन ।

क०ञ०श० कुंटे (क) सं.—लंगड़ी स्त्री ; गड्ढा जिसमें पानी हो, छोटा ताल, तलैया छीलर ; खेत में घास-फूस या कूड़ा-करकट निकालने का एक औजार ; करघे की यह लकड़ी जिसमें बुने कपड़े लपटे जाते हैं ; एक माप विशेष ।

क०ञ०श० कुंटलिगिन्ति (तद्) सं.—दे. क०ञ०श० कुंटलिगिन्ति ।

क०ञ०श० कुंटुल्य (तद्) सं.—दे. क०ञ०श० कुंटुल्य ।

क०ञ०श० कुंट (सम्) वि. मूर्ख, सुस्त ; हठी ; निर्बल, कमजोर ।

क०ञ०श० कुंटित (सम्) वि.—मौथरा, गोंठिल, अंगहीन ; सुस्त, मूर्ख ; रुका हुआ, गतिहीन ; आवृत्त, घिरा हुआ, ढका हुआ ।

क०ञ०श० कुंठीकरण (सम्) सं.— मूर्ख, सुस्त या गतिहीन बनाने या करने की क्रिया ।

क०ञ०श० कुंड, क०ञ०श० कुंड (सम्) सं.— भूमि में छेद, गड्ढा ; कुण्ड, कूप ; घड़ा, कुम्भ ; तालाब, तलैया ; गमला ; छिनाल का पुत्र ।

क०ञ०श० कुंडगोलक (सम्) सं.—महेरी, पसाव, मोंड ; छिनाल क पुत्र ।

क०ञ०श० कुंडिगि, क०ञ०श० कुण्डलि (तद्) सं.— कुण्डलिन् (तत्) ; दे. क०ञ०श० कुण्डलिन् ।

क०ञ०श० कुंडरिके सं.—क०ञ०श० कुण्डरिके— हाथी पर बैठने के निमित्त लगाया गया आसन ।

क०ञ०श० कुंडरु, क०ञ०श० कुण्डरु (क) क्रि.—बैठ, गिर कर जमीन पर बैठ, गिर पड़, डूब जा ।

क०ञ०श० कुंडल ((सम्) सं—क०ञ०श० कुण्डल, क०ञ०श० कुंडल (तद्)—कान का आभूषण ; पहुंची ; रस्ती की गडरी, षंठन ; जन्मकुण्डली । — क०ञ०श० दीक्षित (सम्) सं—वह मनुष्य जो याग या यज्ञ करने के

बाद कर्णभूषणों से अलंकृत होता है । — क०ञ०श० पंडित (सम्) सं—पंडित जो अपने कानों में सम्मानार्थ दिये गये कर्णाभरण पहनता हो ।

क०ञ०श० कुंडलि (सम्) वि.—कुण्डल धारण किया हुआ, गोलाकार, षंठदार, उमेठा हुआ । सं.—सर्प ; मोर ; वरुण की उपाधि ; एक पौधा विशेष ; (ज्योतिष में) जन्म-कुण्डली ।

क०ञ०श० कुंडलीशायन (सम्) सं.— शेषशायी, विष्णु ।

क०ञ०श० कुंडलीश्वरकुंडल (सम्) सं.—शिव ।

क०ञ०श० कुंडलु, क०ञ०श० कुंडलि (तद्) सं.— दे. क०ञ०श० कुंडलि ।

क०ञ०श० कुंडिका, क०ञ०श० कुंडिका, क०ञ०श० कुंडिके (सम्) सं.— (ब्रह्मचारी का) जलपात्र, घड़ा, कमंडल ।

क०ञ०श० कुंडिनि (सम्) सं.— एक पौधा विशेष ।

क०ञ०श० कुंडे (क) सं.— पृष्ठ, नितंब, चूतड़, कटिप्रोथ ; बर्तन का निचला भाग, तल ।

क०ञ०श० कुंडोदर (सम्) सं.— एक भूत का नाम ।

क०ञ०श० कुंडिके (क) सं.— (दे.) क०ञ०श० कुंडिके ; बैठने का आसन, चटाई आदि ।

क०ञ०श० कुंडिसु (क) क्रि.— क०ञ०श० कुंडिसु रिसु—बैठा, उपविष्ट करा (आ.) ।

क०ञ०श० कुंडरु (क) क्रि.— क०ञ०श० कुंडरु, क०ञ०श० कुंडिका, क०ञ०श० कुण्डिकरु, क०ञ०श० कुण्डिकरु, क०ञ०श० कुंडरु, क०ञ०श० कुंडरु — बैठ, उपविष्ट हो ।

क०ञ०श० कुंत (सम्) सं— क०ञ०श० कुंत (तद्) —भाला, प्रास नामक शस्त्र ; कीट, कीड़ा ।

क०ञ०श० कुंतल (सम्) सं—सिर के बाल ; बालों का एक प्रकार का अलंकार ; देश

क००००० कुंयि (क) सं. = क०००० कुयि, क००००००
कोयि—मारने पर कुत्ते के मुँह से निकलने-
वाली ध्वनि ।

क००००० कुकभ (सम्) सं. — एक प्रकार की
मदिरा ।

क००००० कुकर (सम्) सं.— बुरा या टेढ़ा हाथ ।

क००००० कुकवि (सम्) सं.— बुरा कवि ।

क००००० कुकाल (सम्) सं.—बुरा समय या
मौसम ।

क००००० कुकिल् (क) क्रि. — कोयल के जैसे
बोल ; कोयल की कूक । सं.—कोयल ।

क००००० कुकिल (क) सं.—पक्षी विशेष ।

क००००० कुकिलु (क) सं.— कोयल ।

क००००० कुकुंदर (सम्) सं.—जवन कृप ।

क००००० कुकूल (सम्)—सं. भूसी, चोकर ;
चोकर की आग ; सुराख, छेद, गड्ढा,
गर्त ; डालुवा भूमि ; सातु । वि.—उत्कृष्ट,
अच्छा, श्रेष्ठ ।

क००००० कुकुटि (क) सं. — कांटेदार पूँछवाली
एक चिड़िया, कलिंग नामक पक्षी ।

क००००० कुकुडि (सम्?) सं.— निकालकर
लपेटे गये धागे का एक परिमाण विशेष ।

क००००० कुकुरिसु (क) क्रि.— (किसी चीज
को) तीव्र गति या जोर से रख ; नष्ट या
खराब कर (लाक्ष.) ; भूमि में सटकर बैठ,
पालथी लगाकर बैठ ।

क००००० कुकुकि (क) सं.— गायों का मुख-बंधन;
टोकरी (बाँस की) ।

क००००० कुकुसु (क) क्रि.— धुला, साफ़ करा;
चोंच मारने दे, पलक मारने दे, दबवा,
शक्ति लगवा (लाक्ष.) ; टीका लगा ;
चौंधा ; हिलवा ।

क००००० कुकु (क) क्रि.— चंचुघात कर, चोंच
मार ; डेड़ मार (चुभने के जैसे)
चुभ, छेद कर ; मिट्टी को कुदाली से खोद;
दबा, शक्ति लगा ; जल्दी-जल्दी खोल
और बंद कर, पलक मार ; चौंध ; धीरे-
धीरे कपड़े को (धोते समय) पीट ; हिला,
हुला । सं.— सारस, बगुला ।

क००००० कुकुट (सम्) सं.— मुर्गा ।

क००००० कुकुटासन (सम्) सं.— मुर्गी के
आकार जैसा एक योगासन ।

क००००० कुकुटि (सम्) सं.— मुर्गा ; दंभ,
माया ।

क००००० कुकुभ (सम्) सं.— जंगली मुर्गा ।

क००००० कुकुर (सम्) सं.— कुत्ता ; एक
सुगंध द्रव्य ; एक देश विशेष का नाम ।

क००००० कुकुरिसु (क) क्रि.— (भय से)
सिकुड़, ठिठक, लाचारी सूचित करने के
लिए कंधे सिकोड़ ; गिर पड़, ऐसा गिर कि
कुचल जा, चूर-चूर हो या नष्ट हो जा ;
जमीन पर पटक ।

क००००० कुकुकुल (क) सं.—अधिक पीड़ा या
संकट । क००००० कुदियिसु (क) क्रि.—
अधिक पीड़ा दे या सता ।

क००००० कुकुकु (क) सं.— टोकरी ।

क००००० कुकुक्षि (सम्) सं.—पेट, गर्भाशय । —
क (सम्) सं.—एक पक्षी का नाम ।

क००००० कुकुगटे (क) सं. = क००००० कूगटे —
शिककाई का वृक्ष (Soap nut tree) ।

क००००० कुगिसु, क००००० कुगिसु, क०००००
कुगिसु, (क) क्रि.—कम कर, नीचे कर,
घटा, छोटा कर, न्यून कर, (आवाज़) बंद
करा या रोक ।

क००००० कुगु (क) क्रि. = क००००० कुंगु, क०००००
कुंगु, क००००० कुंगु—दे. क०००००.

क००००० कुग्रह (सम्) सं.—अशुभ या बुरा
ग्रह ।

क००००० कुग्राम (सम्) सं. — बुरा गांव ;
छोटा गांव ।

क००००० कुच (सम्) सं.—स्तन, स्तन का अग्र-
भाग, चूचुक । — अग्र अग्र, ब०००० मुख
(सम्) सं.—चूचुक ।

क००००० कुचंदन (सम्) सं.—लाल चंदन ।

क००००० कुचर (सम्) वि.— धीरे-धीरे जानेवाला,
बुरा व्यवहार करनेवाला ; दुष्ट, अधम ;
दोष निकालनेवाला, निंदा करनेवाला ।

क००००० कुचाळि (सम्?) सं.—बुरी चाल,
कुचाल ; उपहास (करना), खिछी (उड़ाना);
बुरा व्यवहार करनेवाला पुरुष ।

क००००० कुचित्त (सम्) सं.—बुरा मन, बुरा
विचार ; बुरे विचारवाला मनुष्य ।

क००००० कुचु (क) सं. — एक अनुकरणामूलक
शब्द ; क०००० क००० कचु कुचु—पिस-पिस
या फुसफुस ।

क००००० कुचेल (सम्) सं.—बुरा वस्त्र, फटे
पुराने वस्त्र, ऐसे वस्त्रधारी ; सुदाम का
नाम ।

क००००० कुचेष्टक (सम्) सं. — बुरा कार्य
या व्यवहार करनेवाला ।

क००००० कुचेष्टे (सम्) सं.—बुरी क्रिया या
योजना, (नटखटी, होहला करना आदि) ।

क००००० कुचोद्य (सम्) सं.— छेड़छाड़,
उपहास करना, किसी का अनुरक्षण कर
हँसना, मज़ाक करना ; बुरा विचार, बुरा
व्यवहार ।—ग००० गार (ग००० गार) सं.—
उपहास करनेवाला, मजाकिया ।

क००००० कुच (क) सं.—विलकुल (पूर्ण रूप से)
अंधा ।

क००००० कुचित्त (तद्) वि.—कुत्तिसत (तत्) ।

(१) कुचु (क) क्रि.— क०००० कुदसु, क००००
कुदिसु — उबाल सं. — एक प्रकार की
मछली ।

(२) क०००० कुचु (तद्) सं. = क०००० कुच,
क०००० कुचु — [कूचः (तत्)] — दे.
क००००.

क००००० कुज(सम्)सं.—वृक्ष, पौधा ; मंगलग्रह ;
किरात, पुलिंदक, बुरी चीज ; बुरी बुद्धि
या मन ।

क००००० कुजन (सम्) सं.—बुरा व्यक्ति, बुरे
लोग ।—उ००० (सम्) सं.—बुराई, नीचता ।

क००००० कुजवार (सम्) सं.—मंगलवार ।

क००००० कुजात (सम्) सं.—वृक्ष ; मंगलग्रह ;
स्यंदन या तिनिस का पेड़ ।

क००००० कुजे (सम्) सं.—नीच या अधम स्त्री ।

क००००० कुजे (क) सं.—कच्चा कटहल ।

(१) कंठ कुट (क) वि.— (कंठ, कुट्टु = कूट, मार) — मारनेवाला, (डंक मारनेवाला), कूटनेवाला ।
 (२) कंठ कुट (सम्) सं. = कंठ कौट, कंठ क्रोड (तत्) — जलपात्र, गागरी, घड़ा, कलसा ।
 (१) कंठ कुटक (क) सं. — मारनेवाला, कूटनेवाला, तोड़नेवाला (जैसे कंठ कुटक कल्कुटिक — पत्थर तोड़नेवाला); देनेवाला, दाता; पीनेवाला ।
 (२) कंठ कुटक (सम्) सं. — हल जिसमें बांस न लगा हो ।
 कंठ कुटकु, कंठ कुलुकु (क) क्रि. — ठूस, मुँह तक भर, (थैली आदि में) हिला-हिला कर भर ।
 कंठ कुटग (क) सं. — दे. कंठ (१).
 कंठ कुटक (सम्) सं. — छत; झोंपड़ी ।
 कंठ कुटज, कंठ कुटजक (सम्) सं. — दवाई में उपयोगी एक वृक्ष विशेष (Wrightia antidysenterica) ।
 कंठ कुटन्नट (सम्) सं. — सरो का वृक्ष; लवंग, लौंग ।
 कंठ कुटर (सम्?) सं. — डेरा, तंबू ।
 कंठ कुटायिसु, कंठ कुटायिसु (क?) क्रि. — मिला, कलखुल के सहारे मिला ।
 कंठ कुटि (सम्) सं. — मोड़, झुकाव; झोंपड़ी, घर; एक प्रकार का वर्तन; नथ, नथनी; फूलों का गुच्छा ।
 कंठ कुटिक (क) सं. — दे, कंठ (१)
 कंठ कुटिके, कंठ कुटिके (क) सं. — मारनेवाला, (पीड़ा देनेवाला), स्पंदित करनेवाला ।
 कंठ कुटिग (क) सं. — दाता, देनेवाला ।
 कंठ कुटिल (सम्) वि. — टेंड़ा, झुका हुआ, मुड़ा, घूमा हुआ, घुमाव का; बनावटी; कपटी; झूठा, बेईमान; दुःखदायी, पीड़ाकारक । — गार्ति (सम्); सं. — झूठी या बेईमान स्त्री ।

डन तन, डे ते (सम्) सं. — कुटिलता, वक्रता, बेईमानी । — ड, त्व (सम्) = कंठ डन.
 कंठ कुटिलांग (सम्) सं. — झूठा या बेईमानी के साधन ।
 कंठ कुटिले (सम्) सं. = कंठ कुटिले (दे. कंठ).
 कंठ कुटीर (सम्) सं. — छोटा घर, कुटिया, झोंपड़ी, कुटी ।
 कंठ कुटु (क) सं. — एक अनुकरणमूलक ध्वनि; कंठ कुटु कुटु — चूहे का भनाज खाते समय निकलनेवाली ध्वनि ।
 कंठ कुटुक (क) सं. — दे. कंठ (१) — कंठ कुटुकु (क) क्रि. — निगल, जल्दी से निगल, गट गट निगल ।
 कंठ कुटुकु (क) क्रि. — काट, डंक मार (बिच्छू का डंक मारना) । सं. — घूंट; टुकड़ा, कौर, ग्रास ।
 कंठ कुटुंगक, कंठ कुटुंगक (सम्) सं. — लताओं से बनाया गया मंडप, छत, पंडाल, झोंपड़ी, मढ़ैया ।
 कंठ कुटुंब (सम्) सं. — कुटुम्ब, परिवार, परिवार के जन; गृहिणी, गृहस्वामिनी, पत्नी । — कंठ कुटुंब व्यापृत (सम्) सं. — परिवार का पालन-पोषण करने वाला । — कंठ कुटुंब स्थ (सम्) सं. — बाल-बच्चों वाला पुरुष ।
 कंठ कुटुंबि (सम्) सं. — घर का स्वामी, गृहस्वामी; वह जो देख भाल करे; किसी कुटुंब का एक व्यक्ति ।
 कंठ कुटुंबिनि, कंठ कुटुंबिनि (सम्) सं. — गृहिणी, घर के स्वामी की पत्नी; स्त्री ।
 कंठ कुटु (सम्) क्रि. — (समासांत में) — काटना, चूर्ण करना, पीसना ।
 कंठ कुटुक (सम्) सं. — पीसनेवाला, कूटनेवाला ।
 कंठ कुटुग (क) सं. — दे कंठग.
 कंठ कुटुण (क) सं. — ओखली, किसी धातु की बनी छोटी ओखली जो पान-सुपारी कूटने के काम में आवे । कंठ कुटुणद भक्ति — (हाथ से) कूटा चावल ।

(१) कंठ कुटुणि (क) सं. — दे. कंठ कुटुण.
 (२) कंठ कुटुणि (तद्) सं. — दे. कंठ कुटुण.
 कंठ कुटुणिके, [कंठ कुटुणिके] (सम्) सं. — नौकरानी ।
 (१) कंठ कुटुणिके, कंठ कुटुणिके (क) सं. — कूटने या चूर्ण करने की क्रिया ।
 (२) कंठ कुटुणिके (सम्) सं. — बौलों का झुण्ड ।
 कंठ कुटुणिक (क) सं. — एक प्रकार का खेल ।
 कंठ कुटुणिक (क) सं. — वनदेवता; भूत, विशाच । — कंठ कुटुणिक (क) सं. — जादू करने की विद्या ।
 कंठ कुटुणिक (सम्) वि. — कटा हुआ, पीसा या चूर्ण किया हुआ; समतल किया हुआ ।
 कंठ कुटुणिक (सम्) सं. — दे. कंठ कुटुणिक.
 कंठ कुटुणिक (सम्) सं. — पलस्तर लगाया और चिकना फर्श ।
 कंठ कुटुणिक (क) क्रि. — कूटा, चूर्ण कर, ताड़न कर, पुड़िया करा (प्रे.) ।
 कंठ कुटु (क) क्रि. — कूटा, चूर्ण कर, पुड़िया कर; चोट कर, आघात कर; फेंक, (तीर चला); छेद, चुभ; डंक मार, पीड़ा दे; (समासांत में) कह, बोल; कर (कंठ कुटुणिक गौणगुट्टु — अस्पष्ट रूप से बोल, कंठ कुटुणिक बुसुगुट्टु — (रोष के मारे) सांप के जैसे 'बुस-बुस' कर । सं. — मार, ताड़न, डंक; मल के अवरोध (कंठ कुटुणिक) के कारण होनेवाला पेट का दर्द; बुकन, बुकनी ।
 कंठ कुटुणिके, कंठ कुटुणिके (क) सं. — दे. कंठ कुटुणिक (१).
 कंठ कुटुणिके (क) सं. — कीड़ों के लगने से उत्पन्न वृक्ष की बुकनी ।
 कंठ कुटुणिक, कंठ कुटुणिक (क) सं. — दे. कंठ कुटुणिक.
 कंठ कुटुणिक (तद्) सं. — कुटुणिक (तद्); कली, नयी कली ।
 कंठ कुटुणिक (तद्) सं. — दे. कंठ कुटुणिक.

कंठिड कुट्टर

कंठिड कुट्टर, कंठिड गुट्टु (क) सं.—गुट्टक (कनूतर का गुट्टकना) ।
 कंठिड कुट (सम्) सं.— वृक्ष, पेड़ ।
 कंठिड कुट्टर [कंठिड कुट्टर, कंठिड कुट्टक] (सम्) सं.— खंभा जिसमें मथानी की रस्ती लपेटी जाय ।
 कंठिड कुडाकु (तद्) सं.— काष्ठकूट (तव) कटफोड़वा ; एक पक्षी ।
 कंठिड कुडार (सम्) सं.—परशु, कुल्हाड़ी ।
 कंठिड कुडारक (सम्) सं.— कुल्हाड़ी ; परशुराम ।
 कंठिड कुडारि (सम्) सं.—कुल्हाड़ी ; कुल्हाड़ी धारण करनेवाला, प्रधान द्वारपाल ।
 कंठिड कुडारु (सम्) सं.— वृक्ष, पेड़ ; वंदर ।
 कंठिड कुड (क) क्रि. रू.—दे ; नहीं देता ; नहीं देगा । सं.— खुरचने का (लोहे का) औज़ार ; लोहे की छड़ी जैसा रोलर जो कपास के बीज को निकालने में काम आता है ; दागने की क्रिया में उपयोगी लोहा ; (लाख से) सुहर लगाने की लोहे की छड़ी ।
 कंठिड कुडक, कंठिड कुडिक (क) सं.—शराबी, मद्यप, पियकड ।
 कंठिड कुडत, कंठिड कुडित (क) सं.— पीना ; घूंट ।
 कंठिड कुडतण्डुल कुडतर्गनवक्रिड (क) सं.— मल्लिका की एक जाति ।
 कंठिड कुडता, कंठिड कुडति, कंठिड कुडता (अ. दे.) सं.—(' कुर्ती ' से ?) — चोली, जाकट ।
 कंठिड कुडते ; कंठिड कुडिते, कंठिड कुडते (क) सं.—हथेली, जुड़ी दोनों हथेलियां, अंजलि ।
 कंठिड कुडलु, कंठिड कुडलु, कंठिड कुडलु कुडगोलु (क) सं.— छोटी तलवार जो लकड़ी आदि काटने के काम में आवे ।
 (१) कंठिड कुडि (क) सं.—कंठिड कुडलु. दे. कंठिडलु.
 कंठिड कुडि (क) क्रि.—पी, पान कर ; सांस खींच । वि.—पीने का, पीने योग्य ; कंठिड

कंठिड कुडिनीरु—पीने का पानी । सं.— नौक, अग्र, लता का अग्रभाग, बांस का अग्र भाग, (दिये की) बत्ती का सिर या अग्र, ज्वाला का ऊपरी भाग ; चोटी, शृंग ; ध्वज, पताका ; घर ; गृहस्थी ; रहनेवाला निवासी ; नागरिक ; काश्तकार ; कंठिड कुडिय (क) सं.— शूद्र, किसान ।
 कंठिड कुडिक (क) सं.— दे. कंठिड.
 कंठिड कुडिके (क) सं.—मिट्टी का छोटा बर्तन जिसमें तेल, घी आदि रखे जाते हैं (कंठिड कुडिक सुण्णद कुडिके—चूना रखने का मिट्टी का बर्तन) ; (मिट्टी), लकड़ी या धातु के अत्यंत छोटे-छोटे बर्तन-भागड जिन्हें रखकर छोटी लड़कियां खेला करती हैं। कंठिड कुडिके अन्नुवन्नन कंठिड कंठिड कल्लु कूतुकौडु तिन्नुवनिगे कुडिके हण सालदु—जो यों ही बैठकर खाता रहता है (अर्थात् बेकार बैठा रहता है), उसको मिट्टी के बर्तन में रखा (जमा किया हुआ) धन पर्याप्त नहीं होता (कह.) ।
 कंठिड कुडिगु, कंठिड कुडिनु (क) सं.— हल का एक भाग, कर्णी ।
 कंठिड कुडित (क) सं.—दे. कंठिड.
 कंठिड कुडिते, कंठिड कुडिते (क) सं.—दे. कंठिड.
 कंठिड कुडिन (क) सं.—हल जिस में बांस न लगा हो, निरीश, हल का फाल ।
 कंठिड कुडिय (क) सं.—शूद्र, किसान ।
 कंठिड कुडियुविके (क) सं.—पीना, पान करना ।
 कंठिड कुडिलु (क) सं.—पल्लव, किसलय ।
 कंठिड कुडिसु (क) क्रि.—पिला, पान करा ; दिला (प्रे.) ; झुक, टेढ़ा या वक्र हो (अक्. क्रि.) ।
 कंठिड कुडु (क) क्रि.—दे, प्रदान कर, दान कर ; बजा, (ताडन कर । सं.—झुके रहने, टेढ़ा होने की स्थिति, वक्रता ; असमता, टेढ़ा-मेढ़ा होना) । वि.—पीने का ; कंठिड कुडु नीरु—पीने का पानी ।
 कंठिड कुडुकु (क) क्रि.—कंठिड कुक्कु—

चंचुघात कर, चौंच मार ; धीरे-धीरे कपड़े को पीट या साफ कर । सं.—अनाज आदि द्रव्य ।
 कंठिड कुडुंगक (तद्) सं.—दे. कंठिडकुड.
 कंठिड कुडुते (क) सं.—दे. कंठिड.
 कंठिड कुडुटु (क) सं.—दे. कंठिड.
 कंठिड कुडुपु, कंठिड कुडुटु (क) सं.— ढोल, नगाड़ा आदि बजाने की लकड़ी या छड़ी ; सारंगी का कमान ; कपास को साफ करने का एक साधन ।
 कंठिड कुडु (क) सं.— कंठिड कुरुड — अंधा (व्या. भा.) ।
 कंठिड कुडिड (क) सं.— अंधी स्त्री (कंठिड कुरुडि) ।
 कंठिड कु (क) सं.— कंठिड कुरुडु—अंधता ।
 कंठिड कुडुता (अ. दे.) सं.—दे. कंठिडलु.
 कंठिड कुडुमल (सम्) सं.—दे. कंठिडलु.
 कंठिड कुडुय (सम्) सं.—दीवाल, दीवार ।
 —कंठिड विशेष (सम्) सं.—एक प्रकार की दीवार ।
 कंठिड कुडुल (क) सं.—दे. कंठिडलु.
 कंठिड कुणत, कंठिड कुणित (क) सं.—नाचना, नाच, नृत्य ।
 कंठिड कुणप (सम्) सं.—शव, लाश ।
 कंठिड कुणव (क) सं.—एक पौधा (Amarantus oleraceus) ।
 कंठिड कुणि (क) सं.— टुकड़ा, अंश ; चिथड़ा, लत्ता ; कपड़ा ; छेद, गडढा, गर्त । क्रि.— नाच, नृत्य कर, नर्तन कर । कंठिड कुणिकुणितुडु (क) क्रि.—नाच नाच ; कंठिड कुणिकुणिके (क) सं.—नाचने की-सी चाल ; कुदान, छलांग ।
 कंठिड कुणिक (सम्) सं.—वह जिसके हाथ-पैर कट गये हों या सूख गये हों ।
 कंठिड कुणिके (क) सं.—छेद, बिल, खोह ; पोला होना, खोखलापन ; फंदा ; दरार ; चकर, घेरा ; कड़ी, संधि, मेल, गांठ, अंगली ; कोना, कोण, कोया ।
 कंठिड कुणित (क) सं.—दे. कंठिड.

कौटिल्यसिद्धि कुणियुविके (क) सं—नाचना, नाच, नाच्य ।

कौटिल्य कुणिल (क) सं.—डंडा, सोंटा ।

कौटिल्यसु कुणिसु (क) क्रि.—नचा, नाच्य करा ।

कौटिल्य कुणिह (क) सं.—नृत्य, नाच ।

कौटिल्य कुणुकु (क) सं.—कूटने या चूर्ण करने की क्रिया । क्रि.—खेल, क्रीडा कर ।

कौटिल्य कुणुमु (क) क्रि.—झुक, गिर, नीचे की ओर गिर पड़ ।

कौटिल्य कुत (क) सं.—एक अनुकरणमूलक शब्द । कौटिल्य कुतकुत — पानी के उबलते समय निकलनेवाली ध्वनि ।

कौटिल्य कुतणि, कौटिल्य कुतनि, कौटिल्य कुत्तिणि, कौटिल्य कुत्तणि, कौटिल्य कुत्ति (अ. दे.) सं.—साटन कपड़ा (Satin) ।

कौटिल्य कुतंत्र (सम्) सं.—बुरी मंत्रणा या यौजना ।— गार [गार] (सम्) सं.—बुरी मंत्रणा करनेवाला ।

कौटिल्य कुतप (सम्) सं.—थोड़ा गरम या उष्ण ; अपराह्न, सायंकाल ; कुश, दर्भ ; बुरी तपस्या ; अंजलि ; श्राद्ध करने का उपयुक्त समय ।

कौटिल्य कुतर्क (सम्) सं.— बुरा तर्क या दलील, झूठा वाद ।

कौटिल्य कुतल (सम्) सं.—भूमि, पृथ्वी ; भूमि के नीचे का तीसरा लोक ।

कौटिल्य कुनापि (सम्) सं.— बुरी प्रवृत्ति या इच्छाएँ रखनेवाला मनुष्य ।

कौटिल्य कुतु (सम्) सं.—कुप्पी, कुप्पा ।

कौटिल्य कुतुक (सम्) सं.—अभिलाषा, कामना इच्छा, प्रवृत्ति ; कौतुक, उत्कंठा ।

कौटिल्य कुतुप (सम्) सं.—कुप्पा या कुप्पी ; दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य कुतूहल (सम्) सं.— उत्कंठा, उत्साह ; तीव्रता, प्रचंडता ; कौतूहल ; इच्छा, कामना ; आश्चर्य, कौतुक ।

कौटिल्य कुत्कील (सम्) सं.—पर्वत, पहाड़ ।

कौटिल्य कुत्त (क) सं.—दोष, अपराध, कसूर ;

कमी, न्यूनता ; रोग, बीमारी ; कष्ट, पीड़ा, संकष्ट, खतरा ।

कौटिल्य कुत्तरि (क) सं.—कौटिल्य कुत्तरि—सूखी घास, (अनाज के) भूसे का ढेर ।

कौटिल्य कुत्तर, कौटिल्य कुत्तर (क) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य कुत्तिगे (क) सं.—कंठ, गला, गर्दन ; गर्दन और गला ।

कौटिल्य कुत्तिसु (क) क्रि.— चुभा, पिटा, ताडन करा (प्रे.) ; पिट, ताडित हो ; चुभ (अक्. क्रि.) ।

कौटिल्य कुत्तु (क) क्रि.—मार, पीट, आघात कर, चोट कर, चुभ ; नीचे की ओर लगा या मोड़, फेंक, ढकेल । वि.— मारनेवाला, पीटनेवाला, चुभनेवाला, ढकेलनेवाला ।

कौटिल्य कुत्तुगे (क) सं.— चुभने, लगने, आघात खाने, नीचे की ओर मुड़ा जाने या झुकने की क्रिया ।

कौटिल्य कुत्तुर्, कौटिल्य कुत्तुरु (क) सं— झाड़ी ।

कौटिल्य कुत्ते (क) सं.—किसी रोग से पीड़ित स्त्री ।

कौटिल्य कुत्ति (अ. दे.) सं.—कौटिल्य ।

कौटिल्य कुत्तिसत (सम्) वि.—तिरस्कार करने योग्य, नीच, हेय, दुष्ट, कमीना ।

कौटिल्य कुत्से [कौटिल्य कुत्सा] (सम्) सं.— गाली, अपशब्द, निंदा, तिरस्कार ।

कौटिल्य कुथ, कौटिल्य कुथे (सम्) सं.— कुश, दर्भ ।

कौटिल्य कुदकल, कौटिल्य कुदकलु (क) सं.— कौटिल्य कुदकल, कौटिल्य कुदकलु कुदकल, कौटिल्य कुदकलु कुदकल, कौटिल्य कुदकलु कुदकलु— (आधा-आधा) उबालने की क्रिया । कौटिल्य कुदकलु कुदकलु (क) सं.—धान को थोड़ा उबालकर सुखाने के बाद किया गया चावल ।

कौटिल्य कुदर, कौटिल्य कुदिर, कौटिल्य कुदुरु (क) सं.—निचली भूमि, खोखली भूमि,

गड्ढा, नदी की पार्श्व भूमि ; नदी का द्वीप ; नदी ।

कौटिल्य कुदरे (क) सं.—घोड़ा, अश्व ।

कौटिल्य कुदर्शन (सम्) सं.—बुरा दर्शन ; बुरा दृश्य ।

कौटिल्य कुदसल (क) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य कुदसु, कौटिल्य कुदिसु, कौटिल्य कुदिसु (क) क्रि.—उबाल ; पका ; शौटा ।

कौटिल्य कुदि (क) क्रि.—उबल, शौट ; जल, हृदय में जलन या पीड़ा हो, दग्ध हो, मन-स्ताप हो । सं.—उबाल, उफान ; जलन, पीड़ा, दुःख ।

कौटिल्य कुदिगे (क) सं.—कौटिल्य (सं.) ।

कौटिल्य कुदियिसु (क) क्रि.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य कुदिर् (क) सं.—धान्यकोष्ठक, धान (या अनाज) रखने की बांस की बड़ी टोकरी या मिट्टी के भाण्ड ।

कौटिल्य कुदिर (क) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य कुदिरि (क) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य कुदिसु (क) क्रि.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य कुदिह (क) सं.— उबालना, उबाल, उफान ।

कौटिल्य कुदुकु (क) क्रि.— कौटिल्य कुदुकु—दुलकी चल, इतराते हुए चल. ठमक कर चल, तेज चल, । सं.—दुलकी, (घोड़े की) दुलकी चाल, ठमक ।

कौटिल्य कुदुपल (क) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य कुदुर (क) सं.—दीवाल. दीवार ।

कौटिल्य कुदुरु (क) क्रि.—चंगा हो, स्वस्थ हो, सुधर जा ; स्थिर हो, ठीक हो, व्यवस्थित हो ; ठीक तरह से लग, एकीकरण हो, मिल ; हाथ लग, अच्छा हो, सुधारित हो, (किसी के) उपयुक्त ; चुप हो, शांत हो ; दृढ़ हो, लगे रह ; अभिवृद्ध हो, बढ़, विकसित हो, सफल हो । सं.—स्थिरता, ठीक होना, सुडौलपन, अवयवों की संगति, स्वस्थता, स्वास्थ्य, सुंदरता, स्वास्थ्य में सुधार ; पौधों की क्यारी (मेड़) ; हाल ; गोलाकर पदार्थ (धान कूटने समय धान

बाहर न विकीर्ण हो, इस उद्देश्य से इसको, धोखली पर रखा जाता है); घड़े के नीचे रखा जानेवाला चक्राकार पदार्थ (इसके रहने से घड़ा लुढ़क नहीं जाता); दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ कुटुरे (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ; बंदूक का घोड़ा, अंतरंग के खेल में 'बज़ीर'

ॐॐॐॐ कुटुरेगार (क) सं.—घोड़ा रखने-वाला, वह जिसके पास घोड़ा हो, अश्व-पालक ।

ॐॐॐॐ कुटुरेगाव (क) सं.—घोड़े की देखभाल करनेवाला, अश्व-रक्षक ।

ॐॐॐॐ कुटुरे (सम्) सं.—घुरी दृष्टि; निर्बल या कमजोर दृष्टि ।

ॐॐॐॐ कुटुरे (क) सं.—श्रंखला; वेड़ी, बंधन ।

ॐॐॐॐ कुटुरे, ॐॐॐॐ, कुटुरे (सम्) सं.—गुहलि (तद्)-कुटुरे; फावड़ा; कचनार का वृक्ष, कांचन वृक्ष ।

ॐॐॐॐ कुटुरे (क) सं.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ कुटुरे, ॐॐॐॐ कुटुरे (सम्) सं.—भूधर, पर्वत, पहाड़ ।

ॐॐॐॐ कुनक (सम्) सं.—कौभा ।

ॐॐॐॐ कुनटि (सम्) सं.—लाल संख्या या विष ।

ॐॐॐॐ कुनसु (अ. दे.) सं.—खुनस (हिं); —विद्वेष, गहरी शत्रुता या डाह ।

ॐॐॐॐ कुनासक (सम्) सं.—एक कांटेदार पौधा (Alhagi maurorum Tournef).

ॐॐॐॐ कुनि (क) क्रि.—झुका, शरीर को आगे झुका; नवा, नमस्कार कर; अंग सिकोड़ । सं.—टेढ़ी या वक्र भूमि ।

ॐॐॐॐ कुनिकल् (क) सं.—बोरा, धैला, धैली ।

ॐॐॐॐ कुनिष्ट (क) सं.—ॐॐॐॐ कुनिष्टे—वक्रता, टेढ़ापन; हठ, दृष्टता, घटता, अविनय । (तद् ?) सं.—विलकुल छोटा या क्षुद्र पदार्थ या व्यक्ति ।

ॐॐॐॐ कुनिसु (क) क्रि.—दिक कर, कष्ट दे, पीड़ा दे ।

ॐॐॐॐ कुनुगु (क) क्रि.—झुका, सिकुड़, सकुचित हो; विनम्र हो ।

ॐॐॐॐ कुन्न (क) सं.—जुआं (चीलर) ।

ॐॐॐॐ कुन्नि (क) सं.—पशुओं का बच्चा—विशेषकर कुत्ते का बच्चा, पिल्ला; कुत्ता; नीच या हेय बुद्धिवाला पुरुष ।

ॐॐॐॐ कुन्ने (क) सं.—ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ कुपति (सम्) सं.—पृथ्वीपति, राजा ।

ॐॐॐॐ कुपय (सम्) सं.—बुरा रास्ता; बुरा चरित्र, घृणा करने योग्य स्वभाव ।

ॐॐॐॐ कुपरि (सम्) सं.—बुरा विधान, रीति या व्यवहार ।

ॐॐॐॐ कुपित (सम्) वि.—वरुद्ध, रष्ट, क्रोध किया हुआ । सं.—क्रोध, गुस्सा, रोष ।

ॐॐॐॐ कुपुय (सम्) वि.—दृष्टाचरणवाला, नीच, क्षुद्र ।

ॐॐॐॐ कुपुटे, ॐॐॐॐ कुपुडिगे (क) सं.—अंगीठा, अंगीठी. वर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा जिसमें आग रखी जाती है, वहनीय या सहज ही ले जाने योग्य अंगीठी ।

ॐॐॐॐ कुपरिसु (क) क्रि. = ॐॐॐॐ कुपुलिसु—दोनों पैरों को जोड़कर कूद, छलांग मार, मेंढक के जैसे कूद; उठाकर ज़मीन पर फेंक या पटक ।

ॐॐॐॐ कुपुस (तद्) सं. = ॐॐॐॐ कुपुस, ॐॐॐॐ कुवस, ॐॐॐॐ कुवुस, ॐॐॐॐ कुवस, ॐॐॐॐ कुवस — कृपास (तद्) — चोली, जाकट, कंचुक ।

ॐॐॐॐ कुपुलिसु (क) क्रि.—राशि हो, ढेर हो; समूह हो, समुदाय हो, अधिक हो, समृद्ध हो; गरम तरल पदार्थ से हानि या दुःख हो, फफोला या छाला हो; दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ कुपि, ॐॐॐॐ कुपिगे (तद्) सं.—कृपी (तद्); बोंतल, कांच की शीशी, पतली गर्दन की बोंतल, कुप्पी ।

ॐॐॐॐ कुपिसु (क) क्रि.—(किसी जानवर को कुड़ा या छालग मारने दे ।

ॐॐॐॐ कुपु (क) क्रि.—ढेर बना, राशि कर, एक साथ मिला, पुंजीकरण कर; कूद, लांघ,

छलांग मार; दोनों पैरों को एक साथकर कूद । सं.—एक प्रकार का रोग, वीमारी ।

ॐॐॐॐ कुपु (क) सं.—राशि, ढेर; गोबर की राशि; एक पौधा विशेष (Acalypha Indica) ।

ॐॐॐॐ कुपु (सम्) सं.—उपधातु, चांदी और सोने के अतिरिक्त शेष धातु ।

ॐॐॐॐ कुपुतकिंग (सम्) सं.—घुरी दलील देनेवाला, बुरा तर्कशास्त्रज्ञ ।

ॐॐॐॐ कुपुवोधे (सम्) सं.—बुरा ज्ञान दुर्बुद्धि ।

ॐॐॐॐ कुप्रिय (सम्) वि.—अरुचिकर, अप्रिय, असम; बुरे स्वाद का ।

ॐॐॐॐ कुवकु. ॐॐॐॐ कुवुकु (क) क्रि.—धीरे-धीरे जमीन खोद. घास—पात निकाल ।

ॐॐॐॐ कुवस (तद्) सं.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ कुवु, ॐॐॐॐ कुविवि (क) सं.—जोर की चिल्लाहट, मनसेच्छा चिल्लाना, होहल्ला ।

ॐॐॐॐ कुवुस (तद्) सं.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ कुवरे, ॐॐॐॐ कुवरे (सम्) सं.—यक्षराज, घनाध्यक्ष देवता, उत्तर दिक्पति ।

ॐॐॐॐ कुवोधक (सम्) सं.—कुगुरु, बुरा उपदेश देनेवाला ।

ॐॐॐॐ कुवोधने (सम्) सं.—बुरा उपदेश, बुरा ज्ञान ।

ॐॐॐॐ कुवुज (सम्) वि.—ॐॐॐॐ कुवुज (तद्)—कूबड़ा; झुका हुआ, वक्र । सं.—कूबड़, वक्रता, टेढ़ापन ।

ॐॐॐॐ कुवुस (तद्) सं.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ कुवु, ॐॐॐॐ कुवु (क) सं.—अहं भाव, घमंड, मद । ॐॐॐॐ कुवुवट (क) सं.—अहंभावपूर्ण व्यवहार ।

ॐॐॐॐ कुवुस (तद्) सं.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ कुभापि (सम्) सं.—बुरा या अपशब्द कहनेवाला ।

ॐॐॐॐ कुमृत् (सम्) सं.—पहाड़, पर्वत ।

ॐॐॐॐ कुमकि, ॐॐॐॐ कुमुकु; ॐॐॐॐ कुम्मकु, (अ. दे.) सं.—सहायता, मदद, सहारा ।

कंसुंजुन कुंजुन (क) सं.—दे. कंसुंजु.

कंसुंति कुंमति (सम्) सं.—बुरी या खराब प्रवृत्ति; मंद बुद्धि। वि.—बुरा, खराब, भूर्ख।
कंसुंन कुंमन (सम्) सं.—बुरा या बरूर मन या हृदय।

कंसुंथु कुंमत्र (सम्) सं.—बुरी मंत्रणा, बुरी योजना, षड्यन्त्र, बुरे उपायों द्वारा अपनी इच्छा-पूर्ति का कार्य।

कंसुंठ कुंमरि (क) सं.—जंगल में पेड़-पौधों को काटकर या जलाकर खेती के योग्य बनायी गई भूमि का भाग जहाँ एक-दो वर्ष ही खेती की जाती है।

कंसुंथु कुंमये (क) सं.—बुरा उपाय।

कंसुंठ कुंमार (सम्) सं.—कंसुं कुंवर (तद्)—पुत्र, बालक, पांच वर्ष से कम आयु का बालक; युवराज, राजकुमार; कंसुं का नाम।—कंसुं गुरु (सम्) सं.—शिव।

कंसुंठ कुंमारते, कंसुंठ कुंमार्ते (तद्) सं.—लड़की, कुमारी, जवान लड़की; पुत्री।

कंसुंठ कंसुं कंसुं कुंमार रामन कथे (सम्) सं.—कंसुं कवि नंसुंठ का एक काव्य।

कंसुंठ कंसुं कुंमार वाल्मीकि (सम्) सं.—कंसुं का एक जनप्रिय महाकाव्य 'तोरवेरामायण' के कवि का नाम।

कंसुंठ कंसुं कुंमारव्यास (सम्) सं.—'कर्णाट-भारत-कथामंजरी' या कंसुं-महा-भारत के कवि का उपनाम (इनका वास्तविक नाम नारणपा था।

कंसुंठ कंसुं कुंमारस्वामि (सम्) सं.—कंसुं, कार्तिकेय।

कंसुंठ कुंमारि (सम्) सं.—कंसुं कुंवरि (तद्)—दे. कंसुंठ.

कंसुंथु कुंमुद (क) सं.—खराबी, धिनौना-पन, सड़ापन; दुर्गंध, बदबू। क्रि.—सूख, मुरझ; कंसुं, छलांग मार।

कंसुंथु कुंमुद (सम्) वि.—दयारहित, अमित्र; लालची।

कंसुंथु कुंमुद (सम्) सं.—सफेद कमल जो चंद्रोदय पर खिलता है; लाल कमल; नीलोत्पल; दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम; एक वृक्ष का नाम; चंद्रमा; कपूर, काफूर; कपिल वर्ण, भूरा रंग; जल, पानी; जनप्रमोद, हर्ष, आनंद; कठोरता, निष्ठुरता, दयाराहित्य; एक प्रधान कवि का नाम।

कंसुंथु कुंमुदप्रिय, कंसुंथु बंधु कुंमुदबंधु, कंसुंथु बंधु कुंमुदबंधु (सम्) सं.—चंद्रमा।

कंसुंथु कुंमुदवैरि, कंसुंथु कुंमुदारि (सम्) सं.—सफेद कमल का शत्रु सूर्य।

कंसुंथु कुंमुदाक्षि (सम्) सं.—स्त्री जिसकी आंखें कुंमुद के समान हों।

कंसुंथु कुंमुदिनि (सम्) सं.—सफेद कमलों का सरोवर या समूह।—कंसुं कांत (सम्) सं.—चंद्रमा।

कंसुंथु कुंमुदत्, कंसुंथु कुंमुदति (सम्) सं.—सफेद कमलों का सरोवर, सफेद कमलों का समूह; स्त्रियों का नाम; एक नदी का नाम;

कंसुंथु कुंमुद, कंसुंथु कुंमुद (क) सं.—दे. कंसुंथु.

कंसुंथु कुंमुदसु, कंसुंथु कुंमुदसु (क) क्रि.—चूर्ण करा, कुटा (प्रे.)।

कंसुंथु कुंमुदसु (क) क्रि.—दोनों पैरों को एक साथ मिलाकर कंसुं।

कंसुंथु कुंमुद (क) क्रि.—मूसल से कंसुं, पुड़िया या चूर्ण बना।

कंसुंथु कुंमुद, कंसुंथु कुंमुद, कंसुंथु कुंमुद (क) क्रि.—काट, विभाग कर, टुकड़े कर, चीर।

कंसुंथु कुंमुद, कंसुंथु कुंमुद (तद्) सं.—कुहका (तद्)—छलिया, जालसाज़।

कंसुंथु कुंमुद (क) क्रि.—दे. कंसुंथु.

कंसुंथु कुंमुद, कंसुंथु कुंमुद (क) सं.—काटना, कटाव। कंसुंथु कुंमुद (क) सं.—फसल, काटने के लिए नियुक्त मजदूर।

कंसुंथु कुंमुद, कंसुंथु कुंमुद, कंसुंथु कुंमुद (क) क्रि.—कटा, कटाव करा (प्रे.)।
कंसुंथु कुंमुद (क) सं.—छड़ी, सौटा; अंकुश।
कंसुंथु कुंमुद (क) सं.—काटने की क्रिया।

कंसुंथु कुंमुद, कंसुंथु कुंमुद (क) वि. वो.—हाय. हाय।

(१) कंसुं कुर, कंसुं कुर, कंसुं कुर (क) सं.—व्रण, घाव, फोड़ा।

(२) कंसुं कुर (तद्) सं.—खुर: (तद्); (गाय आदि का) खुर।

कंसुंथु कुरकर कंसुंथु कुरंकर (सम्) सं.—सारस पक्षी, बगुला।

कंसुंथु कुरग (क ?) सं.—निहाई, स्थूणा, लोहे का साधन जिस पर (वस्तुएँ) रखकर सोनार काम करता है।

कंसुंथु कुरंग (सम्) सं.—हिरनों की एक जाति, लाल रंग का हिरन; एक देश का नाम।—कंसुं धर (सम्) सं.—चंद्रमा।—कंसुं नाभि (सम्) सं.—मुद्क. कस्तूरी।—कंसुं रिपु (सम्) सं.—बाघ, व्याघ्र।

कंसुंथु कुरचि, कंसुंथु कुरिचि, कंसुंथु कुरसि (क) सं.—कुरसी (अ. दे.) सं.—कुरसी (अरबी); बैठने का आसन।

कंसुंथु कुरचिल (सम्) सं.—केकड़ा।

कंसुंथु कुरट (सम्) सं.—चमार, मोची।

कंसुंथु कुरटिके, कंसुंथु कुरटिग, कंसुंथु कुरटिके, कंसुंथु कुरटिग (क) सं.—एक वृक्ष विशेष।

कंसुंथु कुरड, कंसुंथु कुरड (क) सं.—अंधा आदमी।

कंसुंथु कुरडि (क) सं.—अंधी स्त्री।

कंसुंथु कुरडु, कंसुंथु कुरडु (क) सं.—अंधता, अंधत्व।

कंसुंथु कुरंट, कंसुंथु कुरंटक (सम्) सं.—पीले रंग का सदाबहार गुलशादाव।

कंसुंथु कुरर (सम्) सं.—उत्क्रोश पक्षी, चकवा।

कंसुंथु कुररि (सम्) सं.—चकवी।

क०र० कूरल्

क०र० कूरल् (क) क्रि. — चिह्ना, चीख, पुकार ।
 क०र० कूरवक, क०र० कूरवक (सम्) सं. — गुलकेस, गुलशादाव ।
 क०र० कूरवि (क) सं. — एक पौधे का नाम ।
 क०र० कूरुल्, क०र० कूरुल्, क०र० कूरुल्, क०र० कुर्ल् (क) सं. — उपला, गोमय-पिंड, करीष ।
 क०र० कुराण, क०र० कुरान्, क०र० कुरानु, क०र० खुराण, क०र० खुरानु (अ. दे.) सं. — कुरान ।
 क०र० कुरिचि (अ. दे.) सं. — दे. क०र० ।
 क०र० कुरु (क) सं. — दे. क०र० । (सम्) सं. — आधुनिक दिल्ली के भासपास का प्रदेश; उस देश के राजा । — क०र० कुल (सम्) सं. — कुरुवंश, पाण्डव और कौरवों का वंश । — क०र० क्षेत्र (सम्) सं. — दिल्ली के पश्चिम का एक तीर्थस्थान, जहाँ पांडव और कौरवों का युद्ध हुआ था ।
 क०र० कुरुजांगल (सम्) सं. — देश का नाम और उसके निवासी ।
 क०र० कुरुजातु (सम्) सं. — प्राचीनकाल का एक सिक्का ।
 क०र० कुरुजु (क) सं. — बांस की तीलियों का ढाँचा जिसपर कागज या कपड़ा या पत्ते लगे रहते हैं और जिसके अंदर विग्रह आदि रखे जाते हैं, बांस का मंडप, वर-वधू को बैठने का कल्याण-मंडप ।
 क०र० कुरुटिग (क) सं. — दे. क०र० ।
 क०र० कुरुटिगे, क०र० कुरुटिके (क) सं. — दे. क०र० ।
 क०र० कुरुड (क) सं. — दे. क०र० ।
 क०र० कुरुडतन (क) सं. — दे. क०र० ।
 क०र० कुरुडि (क) सं. — दे. क०र० ।
 क०र० कुरुडु (क) सं. — दे. क०र० ।
 क०र० कुरुडु (सम्) सं. — ग०र० गोरटे, ग०र० गोरटे, ग०र० गोरटे, ग०र० गोरटे (तद्) — लाल रंग का गुलशादाव ।
 क०र० कुरुडक (सम्) सं. — दे. क०र० ।
 क०र० कुरुडंड (सम्) सं. — लंबी लाठी, छड़ी या दण्ड ।

क०र० कुरुपे (तद्) सं. — कृपा (तद्) ।
 क०र० कुरुपे, क०र० कुरुपे (क) सं. — अपक्व या कच्चा नारियल, नम (या कोमल) नारियल ।
 क०र० कुरुविंद (सम्) सं. — एक सुरभित वृक्ष ; लाल, रत्न ।
 क०र० कुरुविस (सम्) सं. — चार तोले की सोने की तौल ।
 क०र० कुरुवु (क) सं. — दे. क०र० (१) ।
 क०र० कुरुवैरि (सम्) सं. — कौरवों के शत्रु, भीम ।
 क०र० कुरुसि (अ. दे.) सं. — क०र० ।
 क०र० कुरुल् (क) सं. — दे. क०र० ; क०र० कुरुल्, क०र० कुर्ल् — घुंघराले बाल, अलंकृत केश ।
 क०र० कुरुल् (क) सं. — दे. क०र० ; दे. क०र० ।
 क०र० कुरुले (क) सं. — मिट्टी का बड़े मुँह का बर्तन जिसमें दही मंथा जाता है ।
 क०र० कुरुल् (क) क्रि. — शस्त्र या आयुध हिला, शस्त्र-संचालन कर ।
 क०र० कुरुप (सम्) सं. — क०र० कुरुप (तद्) — बुरा रूप, रूप या सौंदर्य हीनता, भद्दापन । क०र० कुरुपि (सम्) वि. — बदसूरत, भद्दा ।
 (१) क०र० कुरे (क) सं. — एक अनुकरणमूलक शब्द ।
 (२) क०र० कुरे (?) सं. — शुद्ध सोना, कुंदन ।
 क०र० कुरुचि, क०र० कुरुच, क०र० कुरुचुं (क) सं. — छोटा वृक्ष विशेष । — क०र० काडु (क) सं. — छोटा-छोटे वृक्षों का जंगल ।
 क०र० कुरुव, क०र० कुरुव, क०र० कुरुव (क) सं. — गड़रिया, चरवाहा; मूर्ख, बेवकूफ । — क०र० तन (क) सं. — गड़रिये की वृत्ति, मूर्खता ।
 क०र० कुरुव, क०र० कुरुव, क०र० कुर्व (क) सं. — द्वीप, अंतरीप ।
 क०र० कुरुल् (क) सं. = क०र० कुल् —

नाटापन, छोटापन; छोटी-छोटी पंक्तियों (चरणों) की कविता (उदा. — तमिळ का 'तिरुक्कुरल्' ग्रंथ) ।
 क०र० कुरि (क) क्रि. — निशान लगा, चिह्न लगा; लिख, नोट कर; ध्यान दे, विचार कर । सं. — चिह्न, निशान; पहचान; लक्ष्य, उद्देश्य, निशाना; भेड़, मेष, मेढ़ा ।
 क०र० कुरिके (म) सं. — ग्राम. गांव ।
 क०र० कुरितन (क) सं. — भेड़ जैसी बुद्धि, मूर्खता ।
 क०र० कुरितु (क) अ. — के बारे में, के संबंध में ।
 क०र० कुरिपु (क) सं. — दे. क०र० (सं) ।
 क०र० कुरु (क) वि. — छोटा, लघु । क०र० ग०र० कुरुगुं (क) सं. — छोटी गठरी या गट्टा । क०र० ग०र० कुरुगेय (क) सं. — छोटा हाथ । क०र० कुरुपडे (क) सं. — छोटी सेना ।
 क०र० कुरुकु, क०र० कुरुकु (क) क्रि. — दांतों से काट, कुतर, खा ।
 क०र० कुरुकुलि (क) सं. — निंदा करने वाला ।
 क०र० कुरुगणि (क) सं. — न्यूनता. कमी, घटना; वह जो घट गया या कम हो गया हो; कानों की गंदगी (मैल) ।
 क०र० कुरुचु (क) सं. — कम होने या घटने की क्रिया, कमी, न्यूनता, घटना; छोटापन, लघुता; नाटापन, टिगनापन ।
 क०र० कुरुजे, क०र० कुंजे (क) सं. — कच्चा (या अपक्व) कटहल ।
 क०र० कुरुपु (क) सं. — दे. क०र० (सं) ।
 क०र० कुरुव (क) सं. — दे. क०र० ; दे. क०र० ; कुम्हार ।
 क०र० कुरुवगिति (क) सं. — गड़रिया जाति की स्त्री ।
 क०र० कुरुवतन (क) सं. = क०र० कुरुवतन ।
 क०र० कुरुबति; क०र० कुरुबिति (क) सं. — क०र० कुरुबति ।

कौशिक कुम्भ (क) सं.—दे. कौशिक; एक पहाड़ी जाति के लोग और उनकी बोली (यह कन्नड से संबंधित एक बोली है); किले का आदमी, किले का रक्षक।

कौशिक कुम्भ, कौशिक कुम्भिक (क) सं.—कुम्भ जाति की स्त्री।

कौशिक कुम्भ (क) सं.—दे. कौशिक; मूर्खता, बेवकूफी; (दुष्टता)।—गौश गार (क) सं.—बेवकूफ आदमी, मूर्ख पुरुष।

कौशिक कुम्भ (क) सं.—दे. कौशिक।

कौशिक कुम्भ, कौशिक कुम्भ (क) सं.—चिह्न, निशान, पहचान; कलंक, लांछन, दोष; लक्ष्य, उद्देश्य।

कौशिक कुम्भ (क) सं.—भेंट, उपहार (विवाह के समय दूल्हा-दुल्हिन को दिये जानेवाले उपहार—वस्त्रादि)।

कौशिक कुम्भ (सम्) सं.—कुत्ता, श्वान।

कौशिक कुम्भ (क) क्रि.—झुक, टेढ़ा हो; सिकुड़, संकुचित हो; दब, भार के कारण नीचे जा; कम हो, घट। सं.—झुकने या टेढ़ा होने की स्थिति, टेढ़ापन, सिकुड़न; कुकुद्, कूबड़।

(१) कौशिक कुम्भिक (क) सं.—वह जिसने कटे जाने के कारण अपने शरीर के किसी अंग को खो दिया है।

(२) कौशिक कुम्भिक (अ. दे.) सं.—दे. कौशिक। कौशिक कुम्भिके, कौशिक कुम्भिके, (सम्) सं.—कुंजी; कुंजी, ताली; दुग्धविकार; सुई।

कौशिक कुम्भिक (क) सं.—घास-फूस निकालने का कांटा।

कौशिक कुम्भ (क) सं.—दे. कौशिक।

कौशिक कुम्भ (क) सं.—दे. कौशिक।

कौशिक कुम्भ (सम्) सं.—कुल, वंश, घराना; कुलीन या उच्च वंशीय; समूह, समुदाय; झुण्ड, दल; जाति; घर, स्थान; देश; शरीर। कौशिक कुम्भिके, कौशिक कुम्भिके, कौशिक कुम्भिके (सम्) सं.—कुमुद (सम्) व्रहीननागवारदु-दूल्हा भामित्र-लायक-वह कदुर्शन कदापि

न हो (कह)।—गौशिक गौशिक (क) सं.—अपनी जाति या वंश को खराब करनेवाला।—गौशिक गौशिक (क) सं.—स्त्री. लिं। गौशिक गौशिक (क) क्रि.—कुल या जाति खराब हो, बरबाद हो।

कौशिक कुलक (सम्) सं.—अच्छे कुल का व्यक्ति, सद्गुणज; कोविदार या आब्रनूस विशेष, एक प्रकार की कविता; तितलौकी; कडुआ भर्चीड़ा।

कौशिक कुलकरणि, कौशिक कुलकर्णि (सम्) सं.—ग्राम के लेखक, ग्राम के मुंशी; ग्राम की मुंशीगरी करनेवालों की एक जाति।

कौशिक कुलकिसु, कौशिक कुलिकिसु, कौशिक कुलकिसु (क) क्रि.—हिलवा; झटका, हिला, उतेजित कर, व्यग्र कर; पंकिल कर।

कौशिक कुलक, कौशिक कुलिक, कौशिक कुलिक (क) क्रि.—हिला (बोतल को हिलाना), हिला कर ठीक कर; पंकिल कर, गंदा कर; व्यग्र कर उतेजित कर। सं.—हिलाने की क्रिया; हिलना, कंपन, डुलना; झटका।

कौशिक कुलक्षय (सम्) सं.—कुल या वंश का नाश।

कौशिक कुलगिरि (सम्) सं.—कुलपर्वत, सात प्रधान पर्वतों में एक।

कौशिक कुलगुरु (सम्) सं.—कुल के धार्च्य।

कौशिक कुलगृह (सम्) सं.—उच्च या श्रेष्ठ घराना।

कौशिक कुलगोत्र (सम्) सं.—घराना या वंश और जाति-संप्रदाय।

कौशिक कुलज (सम्) सं.—सत्कुल में उत्पन्न व्यक्ति। सत्कुल का; पूर्वजों का, परंपरागत।

कौशिक कुलजे (सम्) सं.—अभिजात वंश की स्त्री।

कौशिक कुलदे (सम्) सं.—कुलटा, छिनाल, व्यभिचारिणी स्त्री।

कौशिक कुलथ (सम्) सं.—कुलथी, अनाज विशेष।

कौशिक कुलनग (सम्) सं.—दे. कौशिक।

कौशिक कुलनारि (सम्) सं.—अच्छे परिवार की स्त्री, सद्गृहिणी, पतिव्रता।

कौशिक कुलपर्वत (सम्) सं.—दे. कौशिक।

कौशिक कुलपालिके, कौशिक कुलपालिके (सम्) सं.—अभिजात कुलवधू, आदणीय स्त्री।

कौशिक कुलमद (सम्) सं.—जाति, वंश या जन्म का घमंड या मद।

कौशिक कुलमे, कौशिक कुलिमे, कौशिक कुलमे, कौशिक कुलमे, कौशिक कुलिमे, कौशिक कुलिमे (क) सं.—चूल्हा, अंगीठी।

कौशिक कुलविवर (सम्) सं.—कुलभेद।

कौशिक कुलविहीन (सम्) सं.—जाति अथ पुरुष; नीच कुल में उत्पन्न मनुष्य।

कौशिक कुलस्थ (सम्) सं.—अच्छे वंश या परिवार का व्यक्ति। कौशिक कुलस्थे—स्त्री. लिं.।

कौशिक कुलाचल (सम्) सं.—दे. कौशिक।

(१) कौशिक कुलाय (सम्) सं.—घोंसला।

(२) कौशिक कुलाय, कौशिक कुलायि, कौशिक कुलावि, कौशिक कुलायि, कौशिक कुलायि, कौशिक कुलायि (क?) सं.—छोटी टोपी, बच्चों की पहनाने की टोपी। कौशिक कुलायिसु (अ. दे.) क्रि.—[खोल (हिं) से]—खुला हो, फैला हुआ या ग्याप्त हो; साफ-साफ हो; अधिक हो, वृद्धि हो।

कौशिक कुलाल (सम्) सं.—कुम्हार।—उत्पन्न करण (सम्) सं.—कुम्हार की वृत्ति।—उत्पन्न चक्र (सम्) सं.—कुम्हार का चाक।

कौशिक कुलालि (सम्) सं.—कुम्हार की स्त्री; एक प्रकार का नीला पत्थर; कुलथी का पौधा विशेष।

कौशिक कुलि (क) सं.—मारनेवाला, हत्यारा। (सम्) सं.—हाथ।

कौशिक कुलिक (सम्) वि.—कुलीन। सं.—एक नाग या सर्प का नाम।

क०ठैच कुलिकिसु

क०ठैच कुलिकिसु (क) क्रि.—दे. क०ठैच.
 क०ठैच कुलिकु (क) क्रि.—दे. क०ठैच.
 क०ठैच कुलिके, क०ठैच कुलिके, क०ठैच कुलिके, [क०ठैच कुणिके] (क) सं.—फंदा दरार, चक्रर, गांठ, अंकुड़ा; मेल, जोड़, कड़ी, संधि।
 क०ठैच कुलित (सम्) वि.—राशि किया हुआ, मिलाया हुआ, एकत्रित।
 क०ठैच कुलिमे (क) सं.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुलिश (सम्) सं.—इन्द्र का वज्र; एक माप विशेष; एक प्रकार की मछली।— ढर धर, ढार धारि; क०ठैच हस्त (सम्) सं.—इन्द्र।
 क०ठैच कुलीन (सम्) वि.—सदृश में उत्पन्न, अच्छे परिवार का, अच्छी नस्ल का।— क०ठैच स्व (सम्) सं.—कुलीनता।
 क०ठैच कुलीने (सम्) सं.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुलीर (सम्) सं.—केकड़ा।
 क०ठैच कुलिकिसु (क) क्रि.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुलिकु (क) क्रि.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुलुगाति (क) सं.—हाव-भाव दिखलानेवाली स्त्री, विलासवती स्त्री, कामिनी नारी।
 क०ठैच कुलुमे (क) सं.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुलुमे, क०ठैच कुलोद्दाम (सम्) सं.—वंश या घराने का प्रधान पुरुष।
 क०ठैच कुलुकु (क) क्रि.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच (अ. दे. ?) सं.—भैंसा।
 क०ठैच कुल्माष (सम्) सं.—माँड़, पीची; आधा पका जौ; घटिया प्रकार का उदद; रौंगी, बरबटी।
 क०ठैच कुल्मे, (क) सं.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुल्य (सम्) सं.—(क०ठैच, कुल्ये—तद्)— हड्डी, अस्थि; नाला, नहर; खाई; परिखा; किनारा, तट; नदी; वन, जंगल; मोह; फूहड़ आदत, लत। वि.—कुल का, कुलीन, वंश संबंधी।

क०ठैच कुल्ये (सम्) सं.— दे. क०ठैच; कुलवधू, कुलनारी; लक्ष्मी।
 क०ठैच कुल्या (अ. दे.) वि.— खुला; फैला हुआ।
 क०ठैच कुल्यि, क०ठैच कुल्यि (क ?) सं.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुल्ल (अ. दे.) वि.— कुल (हिं.); सब; पूरा।
 क०ठैच कुवक (तद्) सं.— कुहकम् (तद्); छल, प्रवंचना, जालसाजी।
 (१) क०ठैच कुवर (क) सं.—कुम्हार; = क०ठैच कव्वर, क०ठैच कौव्वरि— पदार्थ, यवनिका; (घूँघट, नकाब)।
 (२) क०ठैच कुवर (तद्) सं.— क०ठैच क्ववर, क०ठैच कौमर, क०ठैच कौमार, क०ठैच कौर (कुमार:— तद्)—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुवरि, क०ठैच कौवरि (तद्) सं.— कुमारी (तद्) — लड़की, पुत्री, जवान लड़की।
 क०ठैच कुवल (सम्) सं.— फेनिल, उन्नाव (वृक्ष और फल); कमल विशेष।
 क०ठैच कुवल्य (सम्) सं.— कमल; नीलकमल विशेष; भूमि, धरा।— क०ठैच धारि (सम्) सं.— सरोवर; राजा, भूपति।
 क०ठैच कुवरि, क०ठैच कौलि (क ?) सं.—उन्नाव, फेनिल।
 क०ठैच कुवाक्, क०ठैच कुवाच् (सम्) सं.—बुरे वचन, निंदा, गाली।
 क०ठैच कुवाद (सम्) सं.—बुरा वाद, बुरी दलील, हठवाद। वि.—बदनाम, तुच्छ; निंदक।
 क०ठैच कुवि (क) क्रि.—पुकार, चिल्ला।
 क०ठैच कुविंद, क०ठैच कुविंदक (सम्) सं.—जुलाहा।
 क०ठैच कुवेणि (सम्) सं.—कुवेणी मछलियों को रखने की टोंकरी।
 क०ठैच कुवेर (सम्) सं.—दे. क०ठैच।
 क०ठैच कुवेरक (सम्) सं.—तुन का वृक्ष।
 क०ठैच कुवेगक्षि (सम्) सं.—एक पौधा-

विशेष (The plant Bignonia Suaveolens)।
 क०ठैच कुवे (क) सं.— एक वृक्ष विशेष जिसके पत्तों से शिरखाण (टोपी जैसी वस्तु) बनाया जाता है और वर्षा के जल से बचने के लिए उसका उपयोग किया जाता है; अरारूट।
 क०ठैच कुश (सम्) सं.—दर्भ, पवित्र तृण विशेष; पानी, जल; राम के बेटे का नाम; एक बड़ा द्वीप विशेष।— अज, अज जात (सम्) सं.— कमल, कुवल्य।
 क०ठैच कुशब्द (सम्) सं.—बुरा शब्द, अनुचित वचन।
 क०ठैच कुशल (सम्) वि.— ठीक, अच्छा, शुभ, प्रसन्न, समृद्धिशाली; योग्य, प्रवीण, पटु, निपुण, दक्ष।— क०ठैच गार (सम्) सं.— बुद्धिमान पुरुष; क०ठैच गार्ति— स्त्री. लिं.।— क०ठैच तन (सम्) सं.— बुद्धिमत्ता, निपुणता, दक्षता।— क०ठैच ते (सम्) सं.— क०ठैच तन.—क०ठैच प्रश्ने (सम्)— कुशल-सैम पूछना।
 क०ठैच कुशलि (सम्) सं.— बुद्धिमती या निपुणा स्त्री।
 क०ठैच कुशस्थलि (सम्) सं.— द्वारकापुरी; दक्ष की पुत्री का नाम।
 क०ठैच कुशाप्रबुद्धि, क०ठैच कुशाप्रमति (सम्) सं.— तीक्ष्ण बुद्धिवाला, तेज बुद्धिवाला।
 क०ठैच कुशाल (अ. दे.) सं.— खुशहाल (फारसी); सुख संपन्नता, अच्छी स्थिति, आनंद।
 क०ठैच कुशासन (सम्) सं.— कुश या दर्भ का आसन (चटाई)।
 (१) क०ठैच कुशि (सम्) सं.— हल की फाल; कामटी लोहा।
 (२) क०ठैच कुशि, क०ठैच कुषि, क०ठैच कुसि (अ. दे.) सं.— खुशी (फारसी); आनंद संतोष।
 क०ठैच कुशिक, क०ठैच कुशिर (सम्) सं.— हल की फाल।

०३१०८०८ कुशीलव (सम्) सं.— भाट, चारण, गायक, नट, अभिनेता ।
 ०३१०८०९ कुशील (सम्) सं.— कुशील कुशील (तद्)— भंडार, अन्न भरने की कोठरी ।
 ०३१०८१० कुशी (सम्) सं.— दे. कुशी. लगाम ; लकड़ी की टुकड़ी ; किसी को ढँकने का काष्ठ फलक या तख्ता ।
 ०३१०८११ कुशेशय (सम्) सं.— पानी में उत्पन्न होनेवाला, कमल, कुवलय ; विष्णु (मै. प्र.) ।
 ०३१०८१२ कुशभ्र (सम्) सं.— भूमि में एक छोटा छेद ।
 ०३१०८१३ कुक्कि (क?) सं.— वह भूमि जहाँ वर्षा होने से उपज हो सकती है ।
 ०३१०८१४ कुष्टिग (क) सं.— एक लता विशेष ।
 ०३१०८१५ कुष्ट (सम्) सं.— एक पौधा विशेष, कुष्ठ या कोढ़ रोग ।
 ०३१०८१६ कुष्मांडक (सम्) सं.— कुन्हड़ा ।
 ०३१०८१७ कुस (क) सं.— कुसकुस— फुसफुसाहट । कुसगुट्टु (क) क्रि.— फुसफुसाहट कर ।
 ०३१०८१८ कुसकु (क) सं.— कपड़े को धीरे धीरे साफ कर या पीट ।
 ०३१०८१९ कुसंग (सम्) सं.— बुरी संगति ।
 ०३१०८२० कुसंधि (सम्) सं.— शब्दों का असाधु मेल ; तंगी, तंग जगह ; ग्रहों की बुरी गति ।
 ०३१०८२१ कुसमय (सम्) सं.— बुरा समय ; बुरा नियम या क्रायदा ; नास्तिकता ।
 ०३१०८२२ कुसल (क) सं.— दे. कुसल ।
 ०३१०८२३ कुशल (तद्) सं.— कुशल (तत्) ।
 ०३१०८२४ कुसाकळि (क) सं.— कष्ट, संकट ; व्यग्रता, विकलता ।
 ०३१०८२५ कुसाले (क) सं.— दे. कुसाले ।
 (१) कुशी कुसि (क) सं.— कवाटशलाका, दरवाजे का क्रीला; झुकने या टेढ़ा रहने की स्थिति, झुकाव, टेढ़ापन । क्रि.— ढह जा, नीचे की ओर हो जा, झुक जा, भार (बौझ) के कारण ढब जा, नवा ; ठोकर खाकर गिर ;

कंपित हो, कांपकर गिर ; डूब ; स्थान दे ; ठहर ।
 (२) कुशी कुसि (अ. दे.) सं.— दे. कुशी (२) ।
 कुशीकु कुसिकु (क) क्रि.— मार, पीट, आघात कर ; कपड़े को धीरे-धीरे साफ कर या जमीन पर पीट ।
 कुशीबे कुसिबे, कुशीबे कुसिबे (तद्) सं.— कुसुंभः (तत्) ।
 कुशीद कुसीद, कुशीद कुसीदक (सम्) सं.— व्याज या सूद पर जीवित रहनेवाला ।
 कुसु कुसु (क) सं. = कुसुकुसु कुसुकुसु = कुसुकुसु ।
 कुसुक कुसुक (क) सं.— दे कुसु (१) ।
 कुसुकु कुसुकु (क) सं.— भार या बौझ के कारण ढबकर गिरने या झुकने की स्थिति । क्रि.— दे. कुसुकु ।
 कुसुकु कुसुकु (क) क्रि.— दे. कुसुकु ।
 कुसुकु कुसुकु, कुसुकु कुसुकु (क) क्रि.— कपड़े को पत्थर पर मार-मार कर साफ कर ; नीचे गिरा, टेल दे ।
 कुसुबे कुसुबे (तद्) सं.— कुसुंभः (तत्) ।
 कुसुंभ कुसुंभ (सम्) सं.— फूल ; पुष्प ; रजोदर्शन ।
 कुसुमधन्वा, कुसुमबाण कुसुमबाण, कुसुमशर कुसुमशर, कुसुमसायक कुसुमसायक, कुसुमायुध कुसुमायुध (सम्) सं.— मन्मथ, कामदेव ।
 कुसुमंजरी कुसुमंजरी (सम्) सं.— फूलों का गुच्छा, फूलों की माला ।
 कुसुमरस कुसुमरस (सम्) सं.— शहद, मधु ।
 कुसुमविचित्र (सम्) सं.— एक छंद का नाम ।
 कुसुम विशिख (सम्) सं.— कामदेव ।
 कुसुम पट्टपदि (सम्) सं.— एक छंद का नाम ।
 कुसुमाकर कुसुमाकर (सम्) सं.— कामदेव ।
 कुसुमांघ्रि कुसुमांघ्रि (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम ।

कुसुमांजन (सम्) सं.— पीतल धातु का भस्म ।
 कुसुमारि (सम्) सं.— सुदगर, सुदगर ।
 कुसुमास्त्र (सम्) सं.— कामदेव ।
 कुसुमित (सम्) वि.— फूलों से अलंकृत, फूलों से भरा हुआ, फूला हुआ ।
 कुसुमु (क) क्रि.— दे. कुसुमु ।
 कुसुमे (सम्) सं.— रजोदर्शन, एक पौधे का नाम ।
 कुसुमेपु (सम्) सं.— दे. कुसुमेपु ।
 कुसुंबरि, कुसुंबरि, कुसुंबरि, कुसुंबरि (सम्?) सं.— तत् तत् ऋतुओं के फलों को रक्षित रखने की क्रिया ।
 कुसुंबे (तद्) सं.— कुसुंभः (तत्) ।
 कुसुंभ (सम्) सं.— केसर ; गोखरू-जैसा पौधा ।
 (१) कुसुरि, कुसुरु (क) सं.— फल या तरकारी का बिलकुल कच्चा या कोमल अंश ।
 कुसुरि (अ. दे. ?) सं.— एक प्रकार का कपड़ा ।
 कुसुरु (क) सं.— दे. कुसुरु ; किंजल्क, पुष्प का रेशा ।
 कुसुवु (क) सं.— जूट ; पट्टा ।
 कुसूल (सम्) सं.— खत्ती, अन्न का भांडार गृह ।
 कुसुति (सम्) सं.— छल, कपट, धोखा, प्रवंचना, जाल ।
 कुसुति (अ. दे.) सं.— कुशती (फ़ारसी) ; मलयुद्ध ।— अड्डा आड्ड (अ. दे.) क्रि.— कुशती लड़ ।
 कुसुंभ (सम्) सं.— विष्णु ; समुद्र ।
 कुसुंबरि (सम्?) सं.— धनिया, (धनिया की पत्ती) ।
 कुसुंबरि (सम्?) = कुसुंबरि

कुस्तुंबरि, क००३००० क००३०००
 क००३००० क००३०००, क००३०००,
 क००३०००, क००३०००, क००३०००
 क००३०००, क००३०००, क००३०००
 क००३०००, क००३०००, क००३०००
 (बीज और पत्ते)।
 क००३००० क००३००० (सम्) सं. — बुरा या खराब
 स्वर।
 क००३००० क००३००० (सम्) सं. — छलिया, जाल-
 साज; धोखा, छल, जाल। क००३०००
 क००३०००—छलिया, जालसाज।
 क००३००० क००३००० (सम्) सं. — क००३०००
 क००३०००, क००३०००।
 क००३००० क००३००० (सम्) सं.—रंभ्र, छिद्र; गुफा;
 कंदरा।
 क००३००० क००३००० (सम्) सं.—अमावास्या, अमा-
 वस।—क००३००० (सम्) सं.—कोकिल।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—उपला, गोमयपिंड।
 (१) क००३००० क००३००० (क) सं.—माप विशेष, अनाज
 मापने का वर्तन (जिसमें चार-पाँच सेर
 अनाज समा सकता हो); लेन-देन, खरीद-
 फरोख्त, लेना, खरीदना।
 (२) क००३००० क००३००० (तद्) सं.—कुल, (तत्);
 कुल, वंश, घराना; काश्तकार; कर या
 लगान देनेवाला।
 क००३००० क००३००० क००३००० क००३००० (तद्) सं. = क००३०००
 क००३००० क००३०००—मायका।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—एक प्रकार का विषैला
 सांप।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—बाँख का कोया
 (या कोना)।
 क००३००० क००३००० (क) कृ.—बैठकर।—क००३०००
 क००३००० (क) क्रि.—बैठ।
 (१) क००३००० क००३००० (क) क्रि.—क००३०००, क००३०००,
 क००३००० क००३०००, क००३००० क००३०००, क००३०००,
 क००३०००, क००३०००, क००३०००, क००३०००,
 क००३०००—बैठ, उपविष्ट हो; झुक; वश में हो,
 अधीन में हो।
 (२) क००३००० क००३००० (क) क्रि.—क००३००० हो,
 शीतल हो; क००३००० क००३००० (वि.)—

ठंडा, शीतल। क००३००० क००३००० (क) सं.—
 ठंड, शीतलता, जाड़ा, सर्दी, हिम; कुहरा।—
 क००३०००, क००३००० (क) सं.—चंद्रमा।—क००३०००
 क००३००० क००३००० (क) सं.—बहुत ठंडा
 पानी।—क००३०००, क००३००० (क) सं.—हिम पर्वत।
 क००३००० क००३००० (क) क्रि.—पेड़ (की डालियों)
 पर कूदकर या लटककर आनंदित हो।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—दे. क००३०००.
 क००३००० क००३००० (क) कृ.—दे. क००३०००.
 क००३००० क००३००० क००३००० (क?) सं.—दे. क००३०००.
 क००३००० क००३००० क००३००० (क) कृ.—क००३०००.
 क००३००० क००३००० क००३००० (क) क्रि.—दे. क००३०००.
 क००३००० क००३००० क००३००० क००३००० (क) क्रि.—क००३०००,
 क००३०००, क००३००० क००३०००, क००३०००,
 क००३०००, क००३००० क००३०००, क००३०००—
 बैठा, उपविष्ट करा (प्रे.)।
 क००३००० क००३००० (क) क्रि.—दे. क००३०००.
 क००३००० क००३००० (क) सं.—उपला, गोमयपिंड;
 छोटापन, नाटापन। क००३०००, क००३०००=नाटा
 आदमी, वामन। क्रि.—बैठ, उपविष्ट हो।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—कंकमुख, चिमटा।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—दिग्भ्रम, भ्रम, भ्रूँति;
 अव्यवस्था; चिंता, व्यग्रता; हल की फाल,
 लोहे की शलाका, दागने की क्रिया में उप-
 योगी लोहे की शलाका।
 क००३००० क००३००० (क) क्रि.—खनन कर, खोद;
 छेदकर, रंभ्र कर; छेद हो; नीचे हो,
 अधीन में हो। सं.—छिद्र, रंभ्र, गड्ढा,
 खाई।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—हल की फाल।
 क००३००० क००३००० क००३००० (क) क्रि.—क००३०००
 क००३०००—झुका, टेढ़ा कर (या करा), सक्चित
 कर (या करा प्रे.)।
 क००३००० क००३००० (क) क्रि.—दे. क००३०००.
 (१) क००३००० क००३००० (क) सं.—चिंताहट, पुकार; सुगें
 की बाँग।
 (२) क००३००० क००३००० (सम्) सं.—चुड़ैल; दुष्टा स्त्री।
 क००३००० क००३०००, क००३००० क००३०००, [क००३०००

कुरुगणि, क००३००० कुरुगणि] (क) सं.—
 कानों की गंदगी या मल।
 क००३००० क००३०००, क००३००० क००३०००, क००३०००
 क००३००० (क) सं.—कर्णधार, नियाम,
 मल्लाह।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—बहुत दूरी या
 फासला।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—चिंता, चिंताहट,
 शोरगुल।
 क००३००० क००३०००, क००३००० क००३००० (क) क्रि.—चिंता,
 पुकार, शोर मचा; चहचहा।
 क००३००० क००३००० (क?) सं.—आभरणों से
 सजित कर कन्या को विवाह में देनेवाला।
 क००३००० क००३०००, क००३००० क००३००० क००३००० (क)
 सं.—दे. क००३०००.
 क००३००० क००३००० (क) सं.—रीठा; दे. क००३०००.
 —क००३००० क००३००० (क) सं.—मल के कारण
 कान में होनेवाला धाव।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—दे. क००३०००.
 क००३००० क००३००० (क) क्रि.—पुकार, बुला;
 चिंता; (पक्षियों का कूकना, चहचहाना
 आदि)। सं.—पुकार, चिंताहट, बुलाना,
 शोर; पक्षियों की ध्वनि।
 क००३००० क००३००० (क) सं.—अनाज विशेष।
 क००३००० क००३००० क००३००० (क) सं.—बुलाना,
 पुकारना, चिंता, पुकार, चिंताहट।
 क००३००० क००३००० (क) क्रि.—ऊपर जा, उड़।
 सं.—उत्सर्पण।
 क००३००० क००३०००, क००३००० क००३००० (क) सं.—धरन का
 आधारभूत स्तंभ (खंभा)।
 (१) क००३००० क००३००० (क) सं.—दे. क००३०००.
 छोटापन, लघुता; महीन होना, कृशता।
 (२) क००३००० क००३००० (अ. दे.) सं.—कूच
 (फ़ारसी); यात्रा, प्रयाण; सेना का चलना।
 (१) क००३००० क००३००० (अ. दे.) सं.—कूजा (हिं.);
 सुराही।
 (२) क००३००० क००३००० (सम्) सं.—चिंताहट, कूक,
 गुंजन, कूजन, गड़गड़ाहट, खड़खड़ाहट।
 (१) क००३००० क००३००० (क) सं.—मिलना, मिलन,
 संयोजन, संधि, अभिषंग, एकीभाव;

संभोग, रति, सुरत ; समूह, समुदाय, भीड़ ; राशि, ढेर ; संघ, सभा, समागम, किला, खूँटी ; डट्टा ।

२) कूट (सम्) सं.— राशि, ढेर, समूह ; मिलन, संयोजन ; सींग ; शिखर, चोटी ; निकास, ऊँचाई ; अचलता, स्थिरता छल, कपट, धोखा, चालाकी, जालसाजी जहाज़, नाव ; हथौड़ी, मुँगरी ; बैल जिसके सींग टूट गये हों ; इलायची, एला ; वर-वधू के जन्म-पत्रों का एकीभाव ।

कूटक (सम्) सं.— समूह, राशि ; हल की नोक ; हल की फाल ; छल, धोखा जाल ।

कूटणि (सम्) सं.— कुट्टिनी ।

कूटमान (सम्) सं.— झूठी तौल ; सभी बाजों का मिलन ।

कूटयंत्र (सम्) सं.— फंदा, जाल (जिसमें हिरन या पक्षी फँसाये जाते हैं) ।

कूटर (सम्) सं.— सींग रहित पशु ।

कूटशास्त्रमलि (सम्) सं.— एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

कूटसाक्षि (सम्) सं.— झूठा गवाह ।

कूटसाक्ष्य (सम्) सं.— झूठी गवाही ।

कूटस्थ (सम्) सं.— परमात्मा ; उच्च स्थान पर रहनेवाला, समूह या बीच में रहनेवाला ; आकाशादित्व ; परिवार का स्वामी । — वृ. त्व (सम्) सं.— अपरिवर्तनशीलता, एकरूपता ।

कूटाक (सम्) सं.— हथौड़ी ।

कूटि (क) सं.— खूँटी, कीला ।

कूट (क) सं.— दाल के साथ दो-तीन तरकारियों को मिलाकर बनाया जानेवाला व्यंजन विशेष ।

कूट (क) अ.— भी ; और ; के साथ ।

कूटदले, कूटदले (क) सं.— सफलता, वृद्धि, समृद्धि ।

कूट (क) क्रि.— दे. कूट (१) ।

कूट, कूट, कूट

कूट (क) सं.— मिले रहने या संयुक्त रहने की स्थिति ; संधि, संगम, समागम । संगम संगम — वह स्थान जहाँ कृष्णा और भीमा नदियाँ परस्पर मिलती हैं । — संगमेश संगमेश — उस स्थान में प्रतिष्ठित शिवलिंग (या भगवान शिव) ।

कूटसु, कूटसु (क) क्रि.— मिला, जोड़, एक कर, संयुक्त कर ।

कूटिके (क) सं.— जोड़ना, जोड़ ; मिलन, संगम ; विधवा से विवाह करना ।

कूटिरिसु (क) क्रि.— मिला, जुड़ा ; किसी के संग में रख ; बैठा (प्रे.) ।

कूटिसु (क) क्रि.— दे. कूटिसु, कूटिसु कूटिसुविके (क) सं.— एक साथ रखना, मिलाना या जोड़ना ; संग्रह ।

कूट (क) क्रि.— मिला, जुड़, लग, संयुक्त हो, एक हो ; योग्य हो, उपयुक्त हो ; सुरत या संभोग कर ; (अंकों को) जोड़ या मिला । सं.— मिलन, संधि, संगम, सम्मेलन, संघ ।

कूटदले (क) सं.— दे. कूटदले

कूटविके (क) सं.— जोड़ना, जोड़ ; शब्दों का मिलन, समास ।

कूटह (क) सं.— मिलन, संगम, एकीभाव ।

कूट (क) अ.— के साथ, के संग, साथ-साथ ; और, भी ।

कूटिसु (क) क्रि.— दे. कूटिसु

कूट (क) क्रि.— दे. कूट (१) ।

कूट (क) सं.— दे. कूट

कूट (क) क्रि.— लंगड़ा (लंगड़ाना) । सं.— लंगड़ाने की क्रिया ।

कूट (क) सं.— नाच, नृत्य, खेल-क्रीडा, तमाशा । कूट — बैठकर ; गंडसु कूट

कूट (क) सं.— दे. कूट

कूट (क) सं.— लंगड़ा (लंगड़ाना) । सं.— लंगड़ाने की क्रिया ।

कूट (क) सं.— नाच, नृत्य, खेल-क्रीडा, तमाशा । कूट — बैठकर ; गंडसु कूट

कूट (क) सं.— एक लता विशेष (Bryonia Seabra) ।

कूट, कूट, कूट

कूट (क) सं.— बाल, केश ; रोम ।

(१) कूट, कूट (क) क्रि.— झुक, टेढ़ा हो, तिरछा हो ; कूबड़ हो । सं.— कुञ्ज, कूबड़ । कूट (क) सं — कुबड़ा ।

(२) कूट (क) सं.— कूट, कूट कूट — चिह्न, निशान, पहचान, जान-पहचान, परिचय ।

कूट (क) सं — कूबरी ; तेली का मिट्टी का बर्तन ।

कूट (क) क्रि. सं.— दे. कूट (१) और (२) ।

कूट, कूट (क) सं.— प्रेम करना, प्रेमी, प्रेमपात्र, पति ।

कूट (सम्) सं — कूट, कूट, कूट (तद्) — छिद्र, रंध्र ; कूआँ ।

कूट (सम्) सं.— गुफा, बिल ; कुआँ, कच्चा कुआँ ; कुप्पा, कुप्पी ; नदी के बीच की चट्टान या वृक्ष ; जहाज़ आदि का मस्तूल ।

कूट (सम्) सं.— जहाज़ आदि का मस्तूल ।

कूट, कूट (सम्) सं.— समुद्र ।

कूट (सम्) सं.— कुप्पी, बोटल ।

कूट (सम्) सं.— दे. कूट (सम्) वि.— सुन्दर, मनोहर ; कुबड़ा ।

कूट, कूट (सम्) सं.— कूट से ढँकी हुई गाड़ी ।

कूट (क) क्रि.— मन लगा, अनुरक्त रह, स्नेह कर, प्रेम कर ; = कूट कूट—बैठ, उपविष्ट हो । सं.— तीक्ष्णता, नुकीलापन ।

कूट (सम्) सं.— भोजन, भात । (तद्) वि.— वर ।

कूट (क) सं.— तलवार, कटार ।

कूट (सम्) सं.— भात का पानी ; कैंजी ।

कुरिके

कुरिके (क) सं—तीक्ष्णता, नुकीला-पन ।

कुरितु, कुरितु (क) सं—वह जो तीक्ष्ण या नुकीला हो ।

कुरिद (क) सं— तीक्ष्ण, तेज़ या साहसी पुरुष ।

कुरिलि (क) सं— वह जो तीक्ष्ण या नुकीला न हो ।

कुरिसु (क) क्रि— प्रेम करा (या करवा); बैठा, उपविष्ट करा (या करवा) (प्रे.); मिला, जोड़, पिरो ।

कुरु [कुरु] (क) क्रि— नीचे गिर, गिर पड़, वह जा । सं— खिंचाव-कसाव, तनाव ।

कुरिगे (क) सं— बीज बोने का साधन, वापि ।

कुरे (क) सं—(मैले) कपड़े में उत्पन्न होनेवाली लीख ।

कुराणि (क) सं—तीक्ष्ण या नुकीले बाण ।

कुरुच (सम्) सं— मूठा, गट्टर; मुट्ठी भर कुश; मोरपंख; दाढ़ी, मूँछ; चुटकी; कूँची; सिर; दोनों भौंहों का मध्यभाग; विभाग; अक्कड़पन, ढोंग, दंभ ।

कुरुचक (सम्) सं— कूँची, चित्र लिखने की पेन्सिल, तूलिका ।

कुरुचिर्ष (सम्) सं— नारियल का वृक्ष ।

कुरुचिके (सम्) सं— दे. कुरुचिके; दुग्धविकार ।

कुरुदग (सम्) सं— छलांग; खेल, क्रीडा ।

कुरुप (सम्) सं— भौंहों के बीच का स्थान; बाँस का एक प्रकार का ढकन; योनि के रोम ।

कुरुपर (सम्) सं— कुहनी, घटना ।

कुरुपास, कुरुपासक (सम्) सं— चोली, जॉकट; कवच ।

कुरुपु (क) सं— तीक्ष्णता, तेज़ी, नुकीलापन; साहस, प्रताप; तीक्ष्ण दृष्टि,

प्रेम, प्रीति (कुरुपवन्तु — प्रेमी, प्रियतम, पति); नाश, तबाही ।

कुरुम (सम्) सं— कछुआ; विष्णु के दशावतारों में एक; शरीर की बाह्य हवा ।

कुरुमि (सम्) सं— कछुवी ।

कुरुमे (क) सं— अनुरक्ति, स्नेह, प्रेम, अनुराग ।

कुरुकोल् (क) वि— बड़ा, लंबा ।— कुरुकोल् कुरुकोल् (क) सं— लंबा जाल ।

कुरुकोल् (सम्) सं— किनारा, तट, छोर; ढाल, उतार; सामीप्य ।

कुरुकोल्कुष, कुरुकोल्कुष (सम्) सं— नदी । अ.— आमूलाग्र, आदि से अंततक ।

कुरुकुलजि (क) सं— दे. कुरुकुलजि ।

कुरुकोल् (सम्) सं— कूली, मजदूरी; कूली करनेवाला, मजदूर ।— कुरुकोल् कार्ति, कुरुकोल् कार्ति (क) सं— मजदूरिन, कूली करनेवाली स्त्री ।— कुरुकोल् कार, [कुरुकोल् कार] (क) सं— कूली, मजदूर ।— कुरुकोल् कार = कुरुकोल् कार ।

कुरुकोल्सु (क) क्रि— गिरा खिसका, नाश कर ।

कुरुकोल् (क) क्रि— गिर, गिर पड़, खिसका, ढह, नष्ट हो । सं— लकड़ी की चूल (जो छेद में बैठाई जाती है); नदी की (नीचे उतरने की) सीढ़ियाँ ।

कुरुकोल्वर (सम्) सं— दे. कुरुकोल्वर (तद्) । सं— दे. कुरुकोल्वर ।

कुरुकोल्वरि (सम्) सं— दे. कुरुकोल्वरि ।

कुरुकोल्वे (क) सं— अरारुट ।

कुरुकोल्कुण्ड (सम्) सं— कुम्हड़ा ।

कुरुकोल्सु (क) सं— शिशु, बच्चा या बच्ची; बालक, बालिका ।— उन् तन (क) सं— शैशव, बचपन ।

कुरुकोल्, कुरुकोल् कुरुकोल् (क) सं— मछली पकड़ने की टोकरी, कुवेणी ।

कुरुकोल् (क) सं— दे. कुरुकोल्; वृक्ष की कटी हुई डाली, बाजरे के पौधों का कटा हुआ भाग ।

कुरुकोल् (क?) सं— भात, भोजन । (तद्) । वि— कुरु (तद्) ।

कुरुकोल् (क) सं— नीच, हेय, तुच्छ, बेकार, या क्षुद्र पुरुष ।— उन् तन (क) सं— नीचता, तुच्छता, क्षुद्रता ।

कुरुकोल्सु (क) सं— भात, भोजन, खाना ।

कुरुकोल्कुले (क) सं— दे. कुरुकोल्कुले । कुरुकोल्कुले (क) सं— दे. कुरुकोल्कुले । कुरुकोल्कुले (क) सं— दे. कुरुकोल्कुले । कुरुकोल्कुले (क) सं— दे. कुरुकोल्कुले ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— गला, कंठ ।

कुरुकोल्कुले, कुरुकोल्कुले (सम्) सं— तीतर ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— छिपकली विशेष, गिरगिट ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— मुर्गा; मोर. मयूर; छिपकली, गिरगिट ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— गर्दन का पिछला भाग ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— कठिनाई, पीड़ा, संकट, विपत्ति, शारीरिक कष्ट ।

कुरुकोल्कुले (सम्) वि— किया हुआ, बनाया हुआ । सं— काम, कार्य, कर्म; कृत्य ।

कुरुकोल्कुले (सम्) वि— अस्वाभाविक, बनावटी, बनाया हुआ, मनुष्य-निर्मित ।

कुरुकोल्कुले (सम्) वि— चतुर, निपुण, होशियार ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— अर्जुन का पुत्र व्रभुवाहन ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— कपटी या धूर्त स्त्री ।

कुरुकोल्कुले (सम्) वि— वह जिसका उद्देश्य सिद्ध हो, संतुष्ट, अघाया हुआ; कर्तव्य पालन किया हुआ ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— किये गये उपकार का स्मरण न करनेवाला ।— उन् तन (सम्) सं— कृतघ्नता ।

कुरुकोल्कुले (सम्) सं— उपकृत, उपकार का स्मरण करनेवाला ।— उन् तन (सम्) सं—

कृतज्ञता, उपकार का स्मरण । — कृ. त्व
(सम्) सं. — कृतज्ञता ।
कृष्ण कृतपुंख (सम्) सं. — धनुर्विद्यामें
प्रवीण ।
कृष्ण कृतमाल (सम्) सं. — दलचीनी
का वृक्ष ।
कृष्ण कृतमुख (सम्) वि. — शिक्षित,
बुद्धिमान ।
कृष्ण कृतयुग (सम्) सं. — चार युगों में
एक—सत्ययुग (यह १७२,८,००० वर्षों।
का माना जाना है ।
कृष्ण कृतलक्षण (सम्) वि. — अच्छे
लक्षण या गुणों से युक्त ।
कृष्ण कृतवर्म (सम्) वि. — चतुर,
निपुण । सं. — एक राजा का नाम ।
कृष्ण कृतवीर्य (सम्) सं. — हैहय राजा
अर्जुन (कार्तवीर्य) के पिता का नाम ।
कृष्ण कृतव्रण (सम्) सं. — एक ब्रह्मा का
नाम ।
कृष्ण कृतसापत्तिके (सम्) सं. — वह
स्त्री जिसकी सौत हो ।
कृष्ण कृतस्वर (सम्) वि. — ध्वनि पूर्ण,
स्वर से भर हुआ ।
कृष्ण कृतहस्त (सम्) सं. — पटु, निपुण,
कुशल ।
कृष्ण कृताकृत (सम्) वि. — किया हुआ-न
किया हुआ, योग्य-अयोग्य ।
कृष्ण कृतांजलि (सम्) सं. — सम्मान
प्रदर्शनार्थ दोनों कर जोड़नेवाला ।
कृष्ण कृतांत (सम्) सं. — समाप्त करना,
समाप्ति ; सत्य का निरूपण ; किसी क्रिया
या कार्य का अंत ; यम ; पाप, बुरा कार्य
— क क (सम्) सं. — यमराज । —
कृष्ण कृतमर्दक (सम्) सं. — शिव ।
कृष्ण कृताभिपेक (सम्) वि. — अभि-
पेक, राज-तिलक किया हुआ ।
कृष्ण कृतार्थ (सम्) सं. — अपने उद्देश्य
की पूर्ति किया हुआ पुरुष, संतुष्ट या तृप्त
पुरुष । — कृते (सम्) सं. — उद्देश्य की
सिद्धि, सफलता ।

कृष्ण कृति (सम्) सं. — बनाना, करना, क्रिया
रचना, साहित्यिक रचना, कविता । वि. —
चतुर, निपुण, पंडित । — कृष्ण पति (सम्)
सं. — रचनाकार, कवि । — कृष्ण मत
(सम्) सं. — कविता का शैली-विधान ।
कृष्ण कृत (सम्) वि. — कटा हुआ, विभक्त,
खण्ड किया हुआ ।
कृष्ण कृत्ति (सम्) सं. — चर्म, चमड़ा ;
मृगचर्म भोजपत्र । — कृष्ण वास, कृष्ण
वासन्. (सम्) सं. — शिव ।
कृष्ण कृत्य (सम्) वि. — वह जो किया जाना
चाहिए, उपयुक्त, योग्य ; संभव, साध्य ।
सं. — कर्तव्य, कर्म, उद्देश्य, प्रयोजन ।
कृष्ण कृत्ये (सम्) सं. — क्रिया, कर्म, कार्य ;
दुष्टशक्ति, विनाशकरिणी देवी ।
कृष्ण कृत्रिम (सम्) वि. — बनावटी,
नकली, कल्पित ; गोद लिया हुआ ।
कृष्ण कृत्रिमि (सम्) सं. — कपटी पुरुष ।
कृष्ण कृत्स्न (सम्) वि. — संपूर्ण, पूरा,
सारा ।
कृष्ण कृदर (सम्) सं. — धान्यागार, अनाज
रखने का भण्डार ।
कृष्ण कृत, कृष्ण कृतन (सम्) सं. — काटना ;
काटकर टुकड़े करना ।
कृष्ण कृप (सम्) सं. — अश्वत्थामा के मामा
का नाम ।
कृष्ण कृपण (सम्) वि. — गरीब, दरिद्र,
अभागा, सहायुभूति के योग्य । सं. —
लोभी, कंजूस । — कृष्ण तन (सम्) सं. —
लोभ, कंजूसी । — कृष्ण त्व (सम्) सं. =
कृष्ण त्वत्त्वं ।
कृष्ण कृपा (सम्) सं. — दया, रहम, अनुकंपा ।
— कृष्ण कृपाक्ष (सम्) सं. — दया दृष्टि,
अनुकंपा भरी दृष्टि । — कृष्ण कर (सम्)
सं. — दयालु, करुणाकर । — कृष्ण कर
सागर (सम्) सं. — करुणासागर, अत्यंत
दयावान ।
कृष्ण कृपांग (सम्) सं. — अत्यंत दयालु
पुरुष ।
कृष्ण कृपाण (सम्) सं. — तलवार, छुरी ।

कृष्ण कृपाणि (सम्) सं. — कैची ; छुरी,
तलवार ; खंजर ।
कृष्ण कृपालु (सम्) वि. — दयालु,
रहमदिल ।
कृष्ण कृपावलोकन (सम्) सं. —
दे. कृष्ण कृष्ण (कृष्ण) में ।
कृष्ण कृपीट (सम्) सं. — पेट ; पानी, उदक
काँसा ; वन, जंगल ; ईधन । — कृष्ण
योनि (सम्) सं. — आग, अग्नि ।
कृष्ण कृपे (सम्) सं. — दे. कृष्ण ।
कृष्ण कृमि (सम्) सं. — कीट, कीड़ा ;
मकड़ी ; रेशम का कीड़ा ; लाख ।
कृष्ण कृमिवन (सम्) सं. — एक पौधा जो
दवाई में काम आता है ; कीड़ों को मारने
वाला ।
कृष्ण कृमि (सम्) सं. — अगरु ।
कृष्ण कृमिरोग (सम्) सं. — कीड़ों से
होनेवाली एक बीमारी ।
कृष्ण कृवि (सम्) सं. — करघा ।
कृष्ण कृश (सम्) वि. — पतला, दुबला ;
निर्बल ; छोटा, थोड़ा, महीन ।
कृष्ण कृशशर (सम्) सं. — वह जिसके
बाण दुर्बल हो गये हों ।
कृष्ण कृशांग (सम्) सं. — दुबला या
निर्बल शरीर ।
कृष्ण कृशांगि (सम्) सं. — पतली स्त्री ;
प्रियंगु बेल ।
कृष्ण कृशानु (सम्) सं. — आग, अग्नि ;
माप विशेष । — कृष्ण कृशानु (सम्) सं. —
शिव ।
कृष्ण कृशाशिव (सम्) सं. — कृशाशिव का
शिष्य ; नाटक का पात्र, अभिनेता ।
कृष्ण कृशोदरि (सम्) सं. — पतली
कमरवाली स्त्री ।
कृष्ण कृषि (सम्) सं. — कृषि, खेती-बाड़ी,
किसानी । — कृष्ण क (सम्) सं. — कृष्णक,
कृष्णान । — कृष्ण वल (सम्) सं. — किसान ।
कृष्ण कृष्ट (सम्) वि. — खींचा हुआ आकृष्ट ;
जोता हुआ ।

रंछुं कृष्ण

रंछुं कृष्ण (सम्) सं. — रंछुं, किष्ट, रंछुं कृष्ट, रंछुं कृष्टण, रंछुं क्रिष्टण, रंछुं क्रिष्ण (तद्)—काला रंग, काला मृग; कौशा; कोयल; कृष्णपक्ष; कृष्ण (दशा-वतारों में एक); इंद्र; अग्नि; व्यास; अर्जुन; जीवन, पानी; नदी; आकाश, गगन; मुकुट, मौली; जाल, फंदा; बही पीपल। — रंछुं कर्म (सम्) सं — चुरा कर्म। वि. — अमदाचारी, पापी, दोषी। — रंछुं काक (सम्) सं. — जंगली कौशा। — रंछुं जयंति (सम्) सं — कृष्ण का जन्म-दिन, कृष्णाष्टमी। — रंछुं ते, रंछुं स्व (सम्) सं. — कालापन; धोखा, छला। — रंछुं द्वैपायन (सम्) सं. — व्यास। — रंछुं पक्ष (सम्) सं. — अंधेरा पक्ष, कृष्णपक्ष। — रंछुं पांडुर (सम्) सं. — भूरा और सफेद रंग। — रंछुं भूम (सम्) सं. — काली भूमि वाला। — रंछुं मेदि सं. — दवाई में उपयोगी एक पौधा, कटु-रोहिणी। — रंछुं मुनि (सम्) सं. — व्यास। — रंछुं मृत्तिके (सम्) सं. — काली मिट्टी।
 रंछुं कृष्णले (सम्) सं. — घुँघची का पौधा।
 रंछुं कृष्णलोहित (सम्) सं. — काले और लाल रंग का मिश्रण, बैंगनी रंग।
 रंछुं कृष्णवक्त्र (सम्) सं. — काले मुख का वानर।
 रंछुं कृष्णवर्ण (सम्) सं. — काला रंग; राहु; शूद्र।
 रंछुं कृष्णवर्त्म (सम्) सं. — आग; राहुग्रह; ओछा आदमी।
 रंछुं कृष्णवृत्ते (सम्) सं. — फूल विशेष (Bignonia Suavedens)।
 रंछुं कृष्णवेणि (सम्) सं. — एक नदी का नाम।
 रंछुं कृष्णसर्प (सम्) सं — काला नागा।
 रंछुं कृष्णसार (सम्) सं. — काला हिरन।
 रंछुं कृष्णहृदय (सम्) वि. — प्रबंचक, धोखेबाज़, कलंकित; दुष्ट।
 रंछुं कृष्णाग्र (सम्) सं. — काला

अग्र; काला चंदन।
 रंछुं कृष्णांक (सम्) सं. — काला-चिह्न; (कलंक)।
 रंछुं कृष्णांगि (सम्) सं. — काली देवता।
 रंछुं कृष्णाजिन (सम्) सं. — काले हिरन का चर्म।
 रंछुं कृष्णिके (सम्) सं. — काली सरसों।
 रंछुं कृष्ण्य (सम्) वि. — जोतने योग्य; जोता हुआ।
 रंछुं कृशर, रंछुं कृशर (सम्) सं. — खिचड़ी, एक प्रकार का पक्वान्न।
 रंछुं कृसरि (सम्) सं. — दे. रंछुं।
 रंछुं क्लप्त (सम्) वि. — व्यवस्थित, तैयार-बनाया हुआ, खोजा हुआ, सजा हुआ; टुकड़े किया हुआ, कटा हुआ। सं. — मूल्य, कीमत, भाव; कतरन, काट।
 रंछुं क्लसिक (सम्) सं. — मूल्य, कीमत।
 रंछुं के (क) प्र. — संप्रदान कारक का प्रत्यय; उदा. — रंछुं बने — बने को (के लिए), रंछुं पोलके — खेत (के लिए); संभाव्य भविष्यत में अन्य पुरुष का सूचक प्रत्यय; उदा. रंछुं भवर् माळके — वे करें!, रंछुं रक्षिके — रक्षा करें!
 रंछुं के (क) वि. — (समस्त-पदों में) लाल, अरुण। — रंछुं गण (क) सं. — लाल आँख। — रंछुं गण (क) सं. — लाल आँखोंवाला; कोयल। रंछुं गणलविक (क) सं. — कोयल। — रंछुं गरि (क) सं. — लाल, पंख। — रंछुं गरिगोल (क) सं. — लाल पंखवाला बाण। — रंछुं गल् (क) सं. — लाल पत्थर। — रंछुं गेड (क) सं. — लाल अंगारा; — शिव। — रंछुं गोडे (क) सं. — लाल छतरी।
 रंछुं केक (क) सं. — हेम वर्ण, सोने का रंग, ताम्र वर्ण।
 रंछुं केकल (क) सं. — मछली विशेष।
 रंछुं केकलिसु (क) क्रि. — लाल हो, अरुण हो।
 रंछुं केकगे, रंछुं केकने (क) वि. — लाल। सं — लालिमा।

रंछुं केचि (क) सं. — लाल या भूरे रंग की स्त्री; स्त्रियों का नाम।
 रंछुं केचिगे, रंछुं केजिगे, (क) सं. — पौधा विशेष।
 रंछुं केचु (क) सं. — लाल रंग।
 रंछुं केचिग [रंछुं केजग, रंछुं केचुगे] (क) सं. — लाल चींटी जो काटती है।
 रंछुं केड (क) सं. — अंगारा। रंछुं केडके इरुवे मुत्तीते — क्या अंगारे को चींटी लग सकती है (कह)।
 रंछुं केडलिसु (क) क्रि. — टुकड़े कर विभाग कर।
 रंछुं केडविसु (क) क्रि. — जला, अंगारा एकत्रित कर।
 रंछुं केडल (क) सं. — लाल दल; लाल हथेली, किसलय।
 रंछुं केदार (क) सं. — मंदिर, देवालया।
 रंछुं केदावरे (क) सं. — लाल कमल।
 रंछुं केदु (क) सं. — लाल रंग। क्रि. — उपर गिर या झुक।
 रंछुं केपु (क) सं. — लाल रंग, रक्त वर्ण, अरुणिमा। — रंछुं अरगु (क) सं. — लाख। — रंछुं कणिगले (तद् ?) सं. — लाल कनेर। — रंछुं कल्लु (क) सं. — शोणरत्न। — रंछुं कूवे (क) सं. — एक प्रकार का अरारुट। — रंछुं तावरे (क) सं. — लाल कमल। — रंछुं तुंति (क) सं. — वरट, हड्डा। — रंछुं नेल (क) सं. — लाल ज़मीन। — रंछुं यण (क) सं. — रंग, रक्त वर्ण।
 रंछुं केपोले (क) सं. — कानों की बाली जिसमें लाल मणि जड़ी गई हो।
 रंछुं केपत्ति (क) सं. — कपास का पौधा जिसके फूल लाल होते हैं।
 रंछुं केवलु (क) सं. — खौंसी।
 रंछुं केवार (क) सं. — सायंकालीन अरुणिमा; अधिक गरमी या उष्णता के कारण बच्चों को होनेवाला फफोला।
 रंछुं केवारे (क) सं. — दे. रंछुं।
 रंछुं केकर (क) सं — खरबूजे बेल।
 रंछुं केकर (क) सं. — खरबूजा।

कृ०सु० केवकरिसु (क) क्रि.—लाल हो, रक्त वर्ण हो ।

कृ०सु० केवकस (क) सं.—गाली, निंदा ; अपमान ।

कृ०सु० केवदिसु (क) क्रि.—भीत हो, डर, घबरा ।

कृ०सु० केवु (क) सं.—गो-शिक्षा ध्वनि, गायों को बुलाने की आवाज़ ।

कृ०सु० केवके (क) सं.—गाल, कपोल ।

कृ०सु० केवने (क) वि.—लाल, लाल रंग का, अरुणिम ।

कृ०सु० केवल, कृ०सु० केवलु (क) सं.—थन ।

कृ०सु० केवल (क) सं.—थन ।

कृ०सु० केवु (क) सं.—लाल रंग ; तिरछा करने से पड़ी गाँठ, उलझन ; तरु-सार, पेड़-पौधों का अंतर्भाग ; सार, बल ; गर्व, अभिमान, घमंड । क्रि.—दो धागों को मिला या उनमें गाँठ लगा ; लगा, जड़ ; बंद कर ।

कृ०सु० केवतन (क) सं.—बुराई, बुरा गुण, दुष्टता ; शरारत । कृ०सु० केवदु—बुरी चीज़ या बात । कृ०सु० केववु—बुरा आदमी ।

कृ०सु० केवटे (क) वि.—बुरा, हानिकार, दुष्ट ; अभाग्य, दुर्गति (कृ०सु० केवणिसु (क) क्रि.—बुराई कर या अहित सोच ।

कृ०सु० केवक, कृ०सु० केवकिक, कृ०सु० केवुक (क) सं.—बुरा, दुष्ट या नीच पुरुष ।

कृ०सु० केवकतन, कृ०सु० केवकुकतन, कृ०सु० केवकुकतन (क) सं.—बुरा गुण या स्वभाव, दुष्टता, नीचता ।

कृ०सु० केवकि, कृ०सु० केवकिकि, कृ०सु० केवकिकि (क) सं.—बुरी, दुष्ट, अहित करनेवाली या नीच स्त्री, विनाशकारिणी स्त्री ।

कृ०सु० केवकु (क) सं.—बुराई, अहित, दुष्टता, बुरा स्वभाव, खराबी, नाश, विनाश ।

कृ०सु० केवकुतन (क) सं.—दे. कृ०सु० केवकतन.

कृ०सु० केवदिसु, कृ०सु० केवदिसु (क) क्रि.—गिरवा; पतन करा (प्रे.) ।

कृ०सु० केवदु, कृ०सु० केवदु, कृ०सु० केवदु, कृ०सु० केवदु (क) क्रि.—गिरा, नीचे गिरा,

नीचे फी धोर खींच, पतन कर ।

कृ०सु० केवदिसु (क) क्रि.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवदु (क) क्रि.—दे. कृ०सु० केवदु. छेद या रंध में लगा अंदर घुसा या चुभ ।

कृ०सु० केवदुह (क) सं.—वह मनुष्य जो बिना सोचे-विचारे यों ही कुछ शब्द कह देता है ।

कृ०सु० केवदिसु (क) क्रि.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवदुह (क) क्रि.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवदुविके (क) सं.—गिराने का कार्य, निपातन, नियातन ।

कृ०सु० केवदिक (क) सं.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवदिके (क) सं.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवदिसु (क) क्रि.—कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवदु (क) क्रि.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवदिसु (क) क्रि.—खराब कर ; नाश कर, बुरा कर, बरबाद कर ; गिरा, पतित कर, निकाल, दूर कर ; बुझा (दया बुझाना) ।

कृ०सु० केवु (क) क्रि.—खराब हो ; नष्ट हो, बरबाद हो, गिर, पतित हो, बुरा हो, नीच हो ; निकल, दूर हो ; बुझ ; सड़ा ।

कृ०सु० केवुक (क) सं.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवुकिकि (क) सं.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवुकुकतन (क) सं.—दे. कृ०सु० केवदु.

कृ०सु० केवुकिके (क) सं.—खराब होना, नष्ट होना, सड़ना, खराबी, नाश, पतन ; दूर होना, अदृश्यता ।

कृ०सु० केवुह (क) सं.—विनाश, बरबादी, तबाही ; निकालना, अदृश्यता ।

कृ०सु० केवु (क) क्रि.—गिर, गिर पड़, पतित हो नष्ट हो, डूब जा (अक्. क्रि.) ; गिरा, डाल, सोचे-विचारे बिना शब्द कह, बड़बड़ा । सं.—बड़बड़ाहट ।

कृ०सु० केवुकु (क) क्रि.—छेड़, चिढ़ा (अपनी बात या क्रिया के द्वारा) ।—असु इसु—प्रेरणार्थक रूप ।

कृ०सु० केवुने (क) सं.—रत्न आदि जड़ने की क्रिया; कारीगरी, नकाशी ; खोदना ।

कृ०सु० केवुवारि (क) सं.—खेत में घास-फूस निकालने का एक प्रकार का अंकुड़ ।

कृ०सु० केवुके, कृ०सु० केवुके (क) सं.—दे. कृ०सु० केवुके.

कृ०सु० केवुसु (क) क्रि.—खुदा, नकाशी करा, कारीगरी करा (प्रे.) ।

कृ०सु० केवु (क) क्रि.—खोद, नकाशी कर, (रत्न आदि जड़. कारीगरी कर ; कंपित हो, काँप, थरथरा ; काट, कुतर, घास-फूस काटकर निकाल ; साफ़ कर, पतला कर, थोड़ा खोद ।

कृ०सु० केवु (क) सं.—(लकड़ी, पत्थर या फल का टुकड़ा, कतरन ।

कृ०सु० केवु (क) सं.—दे. कृ०सु० केवुके.

कृ०सु० केवुकु (क) क्रि.—खुरच, नोच; खोद ।

कृ०सु० केवु, कृ०सु० केवु (क) क्रि.—

बालों का विखरना या अव्यवस्थित होना । कृ०सु० केवुकि (क) सं.—वह स्त्री जिसके बाल विखर गये हों ।

कृ०सु० केवुकि (क) सं.—बालों की अव्यवस्था या उनका विखरना ।

कृ०सु० केवु (क) क्रि.—विखर, अव्यवस्थित हो ; विकीर्ण हो ; फैल, अलग-अलग हो ; खुरच, पंजे से खुरच । सं.—विखरना, फैलना, फैलाव, विकीर्ण होना ।—कृ०सु० केवुलु (क) सं.—विखरे बाल ।

कृ०सु० केवु (क) सं.—(समस्त-पदों में) 'लाल रंग' का अर्थ सूचक । कृ०सु० केवुन (क) सं.—लाल पशु । कृ०सु० केवुले (क) सं.—लाल सिर । कृ०सु० केवुलेग (क) सं.—लवा बटेर । कृ०सु० केवुलि (क) सं.—अरुण पल्लव । कृ०सु० केवुवरे (क) सं.—लाल कमल । कृ०सु० केवुटि (क) सं.—लाल अधर । कृ०सु० केवुलिगे (क) सं.—लाल जिह्वा । कृ०सु० केवुलिगे (क) सं.—लाल कुमुद ।

कृ०सु० केवु (क) सं.—सुंदरता, मनोहरता; लावण्य, रमणीयता ; मलाई ।—कृ०सु० केवुसु (क) सं.—मलाईदार दही ।—कृ०सु० केवुहालु (क) सं.—मलाईदार दूध ।

कृ०सु० केवु (क) सं.—हेषा ध्वनि कर, हिनहिना ।

केयू केयू (क) सं.—अधिकता; वृद्धि । केयू०
 केयू—अधिक; बहुत, और ।
 केयू केयू (क) सं.—गाल कपोल ।
 केयू केयू (क) सं.—बहरापन । केयू, केयू
 —बहरा आदमी, केयू, केयू—बहरी स्त्री ।
 केयू केयू (क) सं.—(मिट्टी का) लाल रंग ;
 छिलका ।
 केयू केयू (क) सं.—(समस्त-पदों में) लाल
 रंग । केयू केयू (क) सं.—लाल
 रंग । केयू केयू, केयू केयू (क)
 सं.—कपास का पौधा जिसके फूल होते हैं ।
 केयू केयू (क) सं.—लाल मिट्टी ।
 केयू केयू (क) सं.—लाल मछली ।
 केयू केयू (क) सं.—चुपचाप, यौ ही,
 अकारण ही ।
 केयू केयू (क) सं.—केयू, केयू
 केयू, केयू केयू, केयू केयू—
 खाँसी ।
 केयू केयू (क) क्रि.—खाँसी । सं.—खाँसी ।
 केयू केयू (क) सं.—दे. केयू, केयू ।
 केयू केयू (क) सं.—खाँसना, खाँसी ।
 केयू केयू (क) क्रि.—कर, बना, काम कर,
 हाथ में ले, संपन्न कर; सेवा कर. सेवा
 के योग्य हो; उपयुक्त हो । सं.—
 हाथ, कर, कराग्र (करतल); हाथी की
 सूँड; डाल, शाखा; स्तंभ, खंवा, छड़ी,
 डंडा, कुंजी, लकड़ी का हाथ; छोटापन,
 लघुता; माध्यम, सहारा; सज्जा, साज-
 सज्जा, वैभव, अलंकरण; खेत, ज़मीन;
 क्षेत्र.—केयू केयू (क) क्रि.—हाथ
 बांध, हाथ का संचालन न हो, गरीब हो;
 सं.—हाथ का आभरण, कंकण, वलय ।—
 केयू केयू (क) सं.—सब लोगों को
 ज्ञात चिकित्सा-विधि, चिकित्सा ।—केयू
 केयू, केयू केयू (क) सं.—शारीरिक
 परिश्रम, मेहनत, श्रम, मज़दूरी ।—केयू
 केयू (क) क्रि.—हाथ से निकल, अधीन में
 न रह ।—केयू केयू (अ. दे.) सं.—हाथ
 का कागज़, सट्टा ।—केयू केयू (क)
 सं.—हाथ पैर ।—केयू केयू, केयू केयू, कालु

कटिकोळु (क) क्रि.—गिड़गिड़ा, पैरों में
 पड़. दीनता से याचना कर ।—केयू केयू
 कालु केयू (क) क्रि.—विभ्रमित हो ।—
 केयू केयू कालु बीळु (क) क्रि.—दीनता से
 याचना कर, गिड़गिड़ा ।—केयू केयू
 कालु होयु (क) क्रि.—हिम्मत हार, निराश
 हो ।—केयू केयू कालु पड़े (क) क्रि.—
 धैर्य पा; काम में लग, कटिबद्ध हो ।—
 केयू केयू कालु (क) सं.—मलयुद्ध ।—
 केयू केयू कुंचिके (सम्) सं.—छोटी कुंची ।
 —केयू केयू (क) सं.—छोटा-मोटा काम,
 मज़दूरी ।—केयू केयू केयू (क) सं.—
 कूली, मज़दूर ।—केयू केयू केयू (क) अ.—
 हाथ के नीचे; अधीन में (किसी के) अधि-
 कार के नीचे ।—केयू केयू केयू, केयू
 केयू (क) क्रि. हाथ में ले, कर, प्रारंभ
 कर; प्राप्त कर, स्वीकार कर, मान, ध्यान
 दे ।—केयू केयू केयू, केयू केयू
 केयू (क) क्रि.—स्वीकार करा, प्राप्त करा,
 स्वाधीन करा ।—केयू केयू केयू (क)
 सं.—लेना, स्वीकार करना, पाना ।—केयू केयू
 केयू (क) सं.—लाठी, छड़ी ।—केयू केयू
 केयू (क) सं.—वेड़ी, शृंखला ।—केयू
 केयू (क) सं.—ऋण, उधार, कर्ज ।—केयू
 केयू (क) क्रि.—हाथ से मथ या रगड़ ।—
 केयू केयू केयू (क) सं.—छोटा घड़ा, गागरी ।
 —केयू केयू केयू (क) सं.—(व्यक्तिगत-सर्व
 के लिए उपयोगी पैसा या धन ।—केयू केयू
 केयू केयू केयू (क) सं.—सुखसुखत
 कार्य ।—केयू केयू केयू (क) क्रि.—द्वयोर से
 निकल, सीमाहीन हो, अतिक्रमण कर, संक
 हो ।—केयू केयू केयू (क) सं.—चाद, धागा
 केयू केयू केयू (क) सं.—कूर,
 ठग ।—केयू केयू केयू (क) सं.—सुस्ती ।
 —केयू केयू केयू (क) सं.—चोरी
 वाली स्त्री ।—केयू केयू केयू (क) क्रि.—की की
 केयू केयू केयू (क) सं.—गाणके (क) सं.—
 उपहार, भेंट ।—केयू केयू केयू (क) सं.—
 चतुर या बुद्धिमान पुरुष ।—केयू केयू
 केयू, [केयू केयू केयू] (क) सं.—दुर्गमिल

धंधे; कारीगरी ।—केयू केयू केयू, केयू
 केयू (क) सं.—उतना खाना जितना एक
 एक हाथ में समाता है और मुँह में रखा
 जाता है ।—केयू केयू केयू (क) सं.—
 अंजलि भर ।—केयू केयू केयू
 (क) सं.—हाथ लगा, सम्मान के साथ
 हाथ मिला ।—केयू केयू केयू (क) क्रि.—
 मिल, प्राप्त हो; सफल हो ।—केयू केयू
 केयू (क) सं.—मज़दूरी, कूली ।—केयू केयू
 केयू (क) सं.—मिल, प्राप्त हो; उप-
 योगी हो ।—केयू केयू केयू (क) क्रि.—कर,
 बना ।—केयू केयू केयू (क) क्रि.—पहुँच में
 आ, पकड़ में आ, प्राप्त हो ।—केयू केयू
 केयू (क) सं.—छोटा काठ का हथौड़ा ।
 —केयू केयू केयू (क) सं.—हाथ ढकने का
 वस्त्र; क्रि.—सर्दी के कारण दोनों हथे-
 लियों को मिला ।—केयू केयू केयू (क)
 क्रि.—करा, बनवा, पूर्ण करा, संपन्न करा,
 सफल करा ।—केयू केयू केयू (क) सं.—एक
 स्थान से दूसरे स्थान ले जाने योग्य वितान ।
 —केयू केयू केयू (क) सं.—केयू केयू केयू
 केयू चण्णले — ताली बजाना ।—केयू केयू
 केयू (क) सं.—हस्तकौशल, दक्षता;
 हाथ की सफाई, इंद्रजाल ।—केयू केयू
 केयू (क) सं.—हाथ या बहू में सिकुड़न या
 एंडन ।—केयू केयू केयू (क) क्रि.—हाथ
 फैला या पसार ।—केयू केयू केयू (क) सं—
 हस्त-त्राण, हाथ का मोजा ।—केयू केयू केयू
 केयू (क) क्रि.—हाथ जोड़कर नमस्कार
 कर. प्रार्थना कर ।—केयू केयू केयू (क)
 सं.—ताली बजाना, एक प्रकार की बड़ी
 झाँझ ।—केयू केयू केयू (क) सं.—हाथ की
 गलती, हाथ से गिरना ।—केयू केयू केयू
 (क) सं.—हाथ जो कमल के समान हो ।
 —केयू केयू केयू (तद्) सं.—हाथ में पक-
 डने का दीपक, टार्च ।—केयू केयू केयू (क)
 क्रि.—हाथ लगा; शीघ्रता या उतावलेपन
 से पकड़, बलपूर्वक कड़, गड़बड़ पकर;
 सं.—शीघ्रता या बलपूर्वक पकड़ने की
 क्रिया ।—केयू केयू केयू (क) सं.—हाथ का

आभूषण ।—दोहसु दोहसु (क) सं. — सुक्की, मार-पीट ।—नीरु (क) सं.— विवाह के समय वर-वधू के हाथ में डाला गया पानी ।—नूति (क) सं.—हथेली में होनेवाला घाव ।—नेगहु (क) सं.—हाथ ऊपर उठाने की क्रिया ।—नेरवु (क) सं.—सहायता, मदद, सहारा ।—नेय (क) सं.—दूसरे के अधीन में रहनेवाला, सेवक ।—वरे (क) सं.—डमरू ।—पावड (क) सं.—रूमाल ।—पिडि (क) सं.—दस्ता, मुठिया; धनुष टाँगने का स्थान; दर्पण, आईना ।—वदलु (क) सं.—(धन का) उधार, कर्ज ।—वले (क) सं.—वलय, कंकण ।—वाचि (क) सं.—छोटा बसूला ।—वाळु (क) सं.—घास काटने की तलवार, हँसिया ।—विडु (क) क्रि.—हाथ छोड़; सहारा देना छोड़; ।—मगग (क) सं.—हाथ-करघा ।—मरे (क) क्रि.—व्यग्र हो; व्याकुल हो; चलित हो । सं.—नाच में एक भंगिमा, अचल-भाव ।—मसकु (क) सं.—हाथ पर लगी-काली धूली ।—माट (क) सं.—हाथ का इगारा या चेष्टा ।—माडु (क) सं.—हाथ से इशारा या संकेत कर, हाथ के द्वारा कुछ समझा; मार या प्रहार कर, आक्रमण कर, विरोध कर; शस्त्रसंचालन कर, हथियार चला; लेन-देन या खरीद-फ़रोख्त म मूल्य-निर्णय कर ।—मिगु (क) क्रि. अधिक हो, अधिक बली या अधिकार युक्त हो ।—मिचु (क) क्रि.—हाथ से निकल, (किसी के) अधिकार से बाहर हो, वश में न हो, ।—मीरु (क) क्रि. = मीरु ।—मुनि (क) क्रि.—हाथ जोड़, प्रणाम कर, विनय कर ।—मुट्टु (क) सं.—छोटे-छोटे उपकरण; क्रि.—हाथ से छू ।—सुरि (क) क्रि.—हाथ मरोड़; असहाय स्थिति हो ।—मूळि (क) सं.—आभरण-

हीन हाथ या बाहू ।—केश्यक्षर (क) सं.—हाथ की लिखी चीज़; हस्ताक्षर ।—केश्यलागदु (क) क्रि. सं.—(हाथ से) नहीं होता, संभव नहीं ।—केश्यलवि (क) सं.—संभावना, अधिकार, बल ।—केश्याडिसु (क) क्रि.—हाथ का संचालन कर, (किसी वस्तु को) इधर-उधर हिला हाथ से धीरे-धीरे दबा या रगड़, हाथ फेर, सहला, थपथपा ।—केश्यार् (क) क्रि.—दोनों हाथ जुडा, तैयार हो; पूर्ण हो ।—केश्याळु (क) सं.—मज़दूर या सेवक का सहायक ।—केश्यलदववु (क) सं.—वह जिसके हाथ न हो ।—केश्यासे (क) सं.—रिश्वत, धूस ।—केश्येणे (क) सं.—हाथ का निकाला (अर्थात् मिल का नहीं) तेल; एरंडी का तेल (मै. प्र.) ।—केश्योडडु (क) क्रि.—(किसी वस्तु को लेने के लिए) हाथ पसार ।—राटे (क) सं.—छोटी धिरनी ।—राटण (क) सं.—हाथ ।—वडु (क) क्रि.—हाथ लग, प्राप्त हो, मिल ।—वरे (क) सं.—छोटा ढोल ।—वरेग (क) सं.—हाथ से या डंडे से नाल बजानेवाला ।—वत्तिसु, वत्तिसु (क) क्रि.—निकाल, मुक्त-छोड़, दूर कर; दे ।—वश-वश (क) क्रि.—हाथ में आ, वश में हो, धी; निकार में हो ।—वाड (क) सं.—हो, डूब उ में होना, पास होना; अधिकार ।—वार (क) सं.—परकाल (Compass); प्रशंसा, सराहना ।—वडवडाहट (क) क्रि.—प्रशंसा या सराहना कर ।—वडवडाहट (क) क्रि.—प्रशंसा या सराहना कर ।—वडवडाहट (क) सं.—हाथ की पकड़ ।—वडवडाहट (क) सं.—हाथी कर्तने (क) सं. केनथने ।—वीसु [वीसु] (क) सं.—हाथी मा; कारीगरी, —चलते समय हाथों को धीरे-धीरे ३० केतवारि (क) हिला; लडने के पूर्व हाथ को लालने का एक प्र-वागु (क) क्रि.—प्राप्त हो, वागु (क) सं.—ताली

बजाना ।—वोल (क) सं.—अपने हाथ से छुती गई ज़मीन ।—वोग (क) सं.—हस्तकौशल; निपुणता ।—वन्ने (क) सं.—हाथ का संकेत ।—सागु (क) क्रि.—संभव हो; सफल हो ।—सार, सारु (क) क्रि.—हाथ जोड़; प्राप्त हो, मिल ।—साले (क) सं.—(मंदिर का) वरामदा ।—सद्विने (क) सं.—छोटी बोतल ।—सुरिगि, सुरिगे (क) सं.—छोटा कटार, चाकू ।—सुरे [सुरे] (क) सं.—लूट; विनाश ।—सेरे, सेरे (क) सं.—गिरफ्तारी ।—सेरु (क) क्रि.—हाथ में आ, मिल ।—सोडर (क) सं.—छोटा दिया ।—सोलु (क) सं.—कीसी भारी चीज़ को उठाने के कारण बहुओं को होनेवाली थकावट या पीड़ा ।—होडे (क) क्रि.—(किसी बात की प्रतिज्ञा करते समय) जिसको वचन दिया जाता है उसके हाथ में हाथ रख; सौदा निर्णय कर; सं.—गोधा, चमड़े का पट्टा जो बाईं भुजा पर धनुष की रगड़ से बचने को रखा जाता है ।—होल (क) सं.—दे, छोटा खेत ।—केशि (क) सं.—क्षेत्र, खेत, वप्र ।—दे, दे ।—केशि (क) सं.—क्रिया, करना, संपन्नता; छल, कपट, धोखा ।—केशि (क) सं.—करना, बनाना, संभर करना, क्रिया, कर्म; उपाय; कपट, धोखा ।—केशि (क) सं.—कुटिलता, प्रवृत्त व्यवहार, छल, कपट ।—केशि (क) वि.—पिनद, बंद, अलंकार, वस्त्रों से सज्जित ।—केशि (क) सं.—केशि — शब्द आयुध, हथियार ।—केशि (क) क्रि. आयुध का उपयोग कर, हथियार चला

कंठगत केलमे

लड । — काल कार [कार] (क) सं.—
सैनिक, सिपाही । — कालतन कार तन (क)।

सं. शस्त्र-संचालन की निपुणता ।

कंठगत केलमे (क) सं.—करना. कार्य, कर्म, भारी
करत, वीरता का कार्य ; बुद्धिमत्ता, दक्षता,
निपुणता ; धूर्तता, छल, वंचना ।

कंठगत केलिय (क) सं.—हाथ ; खेल, क्षेत्र ।

कंठगत केलसु (क) क्रि.—करा, करवा, बना,
बनवा, काम, करा (करवा) ।

कंठगत केलह (क) सं.—करना, कर्म ।

कंठगत केल (क) सं.—कंठगत केलवु, कंठगत केलहु,
कंठगत केलु—(चमड़े का) चप्पल, जूता ।

कंठगत केलकलु (क) सं.—चावल पकाये गये
बर्तन के अंदर, तल में खुरचना. खुरचन ।

कंठगत केलकु (क) सं.—वह जो रूक्ष या खुर-
चनेवाला हो ; पपड़ी, एक प्रकार का चर्म-
रोग ।

कंठगत केलरुदु (क) क्रि. — नख से खोद, नोच,
खुरच ।

कंठगत केलवु (क) सं.—दे. कंठ.

कंठगत केलसे (क) सं.—गंठगत केलसे, गंठगत
गेलसे, गंठगत गेरसे—चौकाकार, और सम
तल (बाँस की) टोकरी । — बायीयस
बायियव (क) सं.—बड़े मुँह का मनुष्य ;
रहस्य बतला देनेवाला ।

कंठगत केलहु (क) सं.—दे. कंठ.

कंठगत केलरु, कंठगत केलरु (क) क्रि.—पुकार,
चिल्ला ; चीख. कराह, रोग अधिक हो ;
रुष्ट हो, गुस्से में आ, क्रुद्ध हो ।

कंठगत केलरुचु (क) क्रि.—चिढ़ा, क्रुद्ध
करा ; क्रुद्ध हो, रुठ ।

कंठगत केलरु (क) क्रि.—दे. कंठगत ; बढ़,
अधिक (दुःख या दर्द), फैल (घाव का
फैलना) ।

कंठगत केलरुचु (क) क्रि.—भुजाएँ थपाकर या
ताली बजाकर शोर मचा ; आस्फोटन कर ;
गर्जन कर ; दे. कंठगत ।

कंठगत केलसु (क) क्रि.—हजामत करा, क्षौर
करा ; खुरचा (प्रे.) ।

कंठगत केलरे (क) क्रि.—खुरच, खुजला, नोच,

नख से खुरच, नख से खोद ; हजामत कर,
क्षौर कर । सं.—गो-समूह ; गायों का
झुंड, तालाव, तटाक ।

कंठगत केलरे (क) सं.—दे. कंठ ; छेद बना ।

कंठगत केलरु (क) सं.—दे. कंठ.

कंठगत केल (क) सं.—पेड़ की डाली, शाखा ।

कंठगत केल (क) वि.—दायाँ, बायाँ, एक ओर
का ; एक तरफ का ; (ओर, दिशा में, तरफ) ;
कुछ, थोड़ा, कई, अल्प । कंठगत केलकल
—दोनों ओर । कंठगत केलदं—वह पुरुष

जो दोनों ओर हो या एक ओर हो । कंठगत
केलददु (क) सं.—अन्य वस्तुओं की बगल
में रखी गई थाली । कंठगत केलददु—एक

ओर ले । कंठगत केलदोलगु—एक
ओर हो । कंठगत केलवल—बायाँ और
दायाँ । कंठगत केलवु—कुछ ; कंठगत

केलवुगलु—कुछ (ब. व.) । कंठगत केलवु
केलवु जनरु—कुछ लोग ; कंठगत केलवु
केलवु पंडितरु—कुछ पंडित या विद्वान ।

कंठगत केलचु (क) सं.—मदद, सहायता,
साहाय्य ।

कंठगत केलस (क) सं.—काम, कार्य, कर्म ;
नौकरी, पेशा ; क्रिया ; उपयोग, महत्व,
लाभ । कंठगत केलसके बलिद (क)

सं.—कर्मठ, काम करने में पटु । कंठगत
केलसके मैदुगेयुववु (क) सं.—कामचोर पुरुष । कंठगत

केलसके मैयोडुववु (क) सं.—चतुर या दक्ष, कर्मशूर । कंठगत
केलसके बरु (क) क्रि.—उपयोगी
हो । कंठगत केलसगळति (क) सं.—सुस्त या कामचोर स्त्री । कंठगत

केलस गळति केलस गळतिगे कूसु
हुष्टि हागे—(जैसे) कामचोर (या सुस्त)
स्त्री को बच्चा हुआ घो (कह.) । कंठगत केलस
केलस हेरु (क) क्रि.—काम करने की
आज्ञा दे ।

कंठगत केलसि (क) सं.—काम करनेवाला
व्यक्ति ; नाई, हजाम ।

कंठगत केलसिग, कंठगत केलसिगरव,

कंठगत केलस्य (क) सं.—दे. कंठगत (२)।

कंठगत केले (क) सं.—जोर से चिल्ला, उत्साह से
चिल्ला, हल्ला कर, शोर मचा ।

कंठगत केलत (क) सं.—निंदात्मक कोलाहल,
गाली ।

कंठगत केलले, कंठगत केलले (क) सं.—रस्ती या धागे
का टुकड़ा ।

कंठगत केलयिसु (क) क्रि.—पतली पट्टी
चीर, खमाची बना ; सताया जा कष्ट पा,
व्यग्र हो ।

कंठगत केलले (क) सं.—दे. कंठगत ; टुकड़ा, चीरने
के बाद बचा हुआ अंश ; आयुध, हथियार ;
कंपन ।

कंठगत केललेगेडे (क) क्रि.—चूर-चूर कर,
टुकड़े कर ।

कंठगत केलवल, कंठगत केलल (क) सं.—एक
पौधा जिसके फूल अंगूरी रंग के होते हैं
(*Ixora coccinea*)

कंठगत केलवने (क) सं.—ढेला मारते समय
आनेवाली आवाज़ ।

कंठगत केलस, कंठगत केलसु (क) सं.—कुकुरमुत्ता,
छत्रक ।

कंठगत केलसु (क) सं.—असहायता । अरुचि,
उबाई ; झगड़ा, कलह ; बुरी दृष्टि, दृष्टि-
दोष ।

कंठगत केलसु केलसु (क) सं.—पंक,
कीचड़, दलदल ।

कंठगत केलसिगे (क) सं.—स्नानागार की
मोरी ।

कंठगत केलसु (क) सं.—दे. कंठगत ; पौधा विशेष
(*The cocco*) ।

कंठगत केलसु (क) सं.—दे. कंठगत (२)।

कंठगत केल (क) वि.—नीचे का, निम्न, अधो-
भाग का । कंठगत केलगडे—नीचे या नीचे-
के भाग में । कंठगत केलतुटि (क) सं.—

नीचे का अधर । कंठगत केलदवडे (क)
सं—नीचे का जबड़ा । कंठगत केलभाग
(क) सं.—नीचे का भाग ।

कंठगत केलगु (क) अ.—के नीचे, तले, अधोभाग
में, नीचे की ओर या दिशा में, के पहले ।

केंद्री केंद्रगे (क) अ.—दे. केंद्रगे.
 केंद्री केंद्रदि (क) सं.—गणति, गण्ड
 गेळति, गण्ड गेळते—सखी, आली, सहेली ।
 केंद्री केंद्र (क) क्रि.—जबाई ले, मँह खोल,
 खोल ; बढ़ा, अधिक कर ; चट कर खिल,
 सिल, खुल जा, विकसित हो ; प्रकट हों,
 निकल ; चिह्न, जोर से पुकार, चीख ;
 गर्जन कर ।
 केंद्री केंद्रे (क) क्रि.—(किसी की ओर) कर्षित
 हो, खिंच जा, आकर्षित हो । सं.—आक-
 र्षण, खिंचाव ; दोस्ती, मित्रता, सख्य,
 मिलन ; मित्र, दोस्त, सखा या सखी ।
 केंद्री केंद्रेतन (क) सं.—गण्ड गेळतेन—
 मित्रता, दोस्ती, स्नेह ।
 केंद्री केंद्रेय (क) सं.—मित्र ; दोस्त, सखा ;
 मित्रता, दोस्त, स्नेह ।
 केंद्री केंद्रेव, केंद्री केंद्रेव (क) सं.—बूढ़ा
 धादमी ।
 केंद्री (क) क्रि.—लेट, सो, शयन कर, विश्राम
 कर ; मैथुन कर ।
 केंद्री केंद्र (क ?) सं.—वाँझ ; मरुभूमि,
 रुक्षता ।
 केंद्री केंद्रय (सम्) सं.—देश विशेष और
 उसके निवासी ।
 केंद्री केंद्र (सम्) सं.—भैंडा, भेंडी आख-
 वाला ; सुंदर पुरुष ।—अवलो-
 कन ; (सम्) सं.—(प्रेम की) तिरछी दृष्टि ।
 केंद्री केंद्रके (क) सं.—निष्ठेव ; थूक,
 खाँसकर गला साफ करने की क्रिया ।
 केंद्री केंद्रसु (क) क्रि.—खाँस कर गला
 साफ कर, थूक ।
 केंद्री केंद्रके (सम्) सं.—मोर की
 बोली ।—रव (सम्) सं.—मोर
 की बोली ।
 केंद्री केंद्रके (सम्) सं.—मोर, मयूर ।
 केंद्री केंद्रके, केंद्री केंद्रके (सम्) क्रि.—मोर की
 बोली के समान बोल या ध्वनि कर ।
 केंद्री केंद्रके (क) सं.—टठाकर हँसते समय
 ट निकलनेवाली ध्वनि । एक अनुकरणमूलक
 शब्द ।

केंद्री केंद्र (सम्) क्रि.—मोर का बोलना ;
 दे. केंद्रके ।
 केंद्री केंद्रके (क) सं.—नटखटी करनेवाला ;
 पीडा देनेवाला. खराब करनेवाला, बुरा व्यव-
 हार करनेवाला ।
 केंद्री केंद्रके, केंद्री केंद्रके (क) सं.—दे.
 केंद्रके ।
 केंद्री केंद्रके (क) सं.—खराबी, नटखटपन, बुराई, विनष्टता ।
 केंद्री केंद्रके (क) सं.—नाश, बरबादी ; नटखटी,
 बुराई, हानि ।
 केंद्री केंद्रके (क) सं.—दे. केंद्रके ।
 केंद्री केंद्रके (क) सं.—मास्सर्ष, द्वेष, बदला
 प्रतिशोध ; क्रोध, रोष ; लालच, लोभ ;
 विचार, वितर्क, विवेचन ; प्रतिरोध, रुढ़ावट ;
 संयम ।
 केंद्री केंद्रके (क) सं.—[केंद्रके] (क) सं.—
 प्रतिशोध लेनेवाला या द्वेष करनेवाला ।
 (१) केंद्री केंद्रके (क) सं.—अस्थायी कुआँ या
 तालाब ; नदी के किनारे पर बनाई गई
 खाई ।
 (२) केंद्री केंद्रके (तद्) सं.—केलिः (तद्) ;
 खेल, क्रीडा ; आमोद-प्रमोद ।—गोलू
 (तद्) क्रि.—कीडा कर, आमोद-प्रमोद कर ;
 गतिमान हो ।—केंद्रके, ग ग (तद्)
 सं.—व्यपारी, व्यवसाय करनेवाला ।
 केंद्री केंद्रके, केंद्रके (सम्) सं.—घर,
 मकान ; आबादी, बस्ती ।
 केंद्री केंद्रके (सम्) सं.—केतकी (वृक्ष
 और फूल) ।
 केंद्री केंद्रके (सम्) सं.—घर, मकान ;
 आमंत्रण, आह्वान ; व्यवहार ; पताका,
 ध्वज ।
 केंद्री केंद्रके (तद्) सं.—केंद्रके (तद्) ।
 केंद्री केंद्रके (सम्) सं.—किरण, प्रकाश,
 पुच्छलता, धूमकेतु ; केतुग्रह, ग्रह ;
 ध्वज ; चिह्न, निशान ; निमान ; प्रधान,
 मुखिया ; रोग ; शत्रु ।—केंद्रके (सम्)
 सं.—पताका का बाँस ।—केंद्रके पट
 (सम्) सं.—झंडा । केंद्रके माल (सम्)

सं.—विश्व के नौ बड़े भागों में एक ; जंबू
 द्वीप का पश्चिमी भाग ।
 केंद्री केंद्रके (सम्) सं.—एक पौधा विशेष ।
 केंद्रके (सम्) सं.—(पानी से भरा)
 खेत, चरागाह ; उपवन, बगीचा ; पर्वत ;
 शिवालय, मंदिर, शरीर देह ; शिवजी का
 रूप विशेष ; केंद्रके केदारगौड़—एक
 राग का नाम ।
 केंद्रके (सम्) सं.—केतकी (तद्) ।
 केंद्रके (सम्) सं.—कपील का ऊपरी
 भाग, कनपटी ।
 केंद्रके (सम्) सं.—पतवार,
 ढाँड ।
 केंद्रके (सम्) सं.—वृत्त का मध्यभाग,
 मध्यस्थल, मुख्यस्थान ।
 केंद्रके (सम्) सं.—दे. केंद्रके ।
 केंद्रके (अ. दे.) सं.—खेप ।
 (१) केंद्रके (क) सं.—(चमड़े का) कड़ा-
 पन ।
 (२) केंद्रके (तद्) सं.—क्षेम (तद्) ;
 प्रसन्नता, सुख, चैन ।
 केंद्रके (क) क्रि.—जमा
 करा, धरा (प्रे.) ।
 केंद्रके (सम्) सं.—बाजूबंद,
 तावीज़ ।
 केंद्रके (क) सं.—दीवार,
 भित्ति ; मिलावे का वृक्ष, वीरवृक्ष ।
 केंद्रके, केंद्रके (क) अ.—पश्चात्,
 इत्पश्चात्, के बाद, उपरांत ।
 केंद्रके (अ. दे. ?) सं.—कड़ा-कराकट, तुच्छ
 पदार्थ ।—केंद्रके मातु—घटिया प्रकार का
 आम ।
 केंद्रके (क) सं.—गली, सड़क, रास्ता ;
 पगड़ी की पट्टी (धारी) । केंद्रके (क)
 माख केरि, केंद्रके केंद्रके केरि (क)
 सं.—बाजार, विपणी ।
 केंद्रके (क) सं.—एक सांप
 विशेष (Rat-snake or whip-snake) ।

कैरे

कैरे (क) क्रि.—पछोर, सूप में पछोर।
कैरेसु—(प्रेरणार्थक रूप)।

कैरे केलु कैरे केलु (क) सं.—एक बड़ा मिट्टी का जलपात्र, बड़ी सुराही।
कैरे केलन, कैरे केलि, कैरे केली, कैरे केलि (सम्) सं.—खेल, क्रीडा, लीला, मनोविनोद, आमोद-प्रमोद।
कैरे केलिकिल (सम्) सं.—विदूषक, मसखरा।

कैरे केलिके, कैरे केलिका, कैरे केलिके (सम्) सं.—खेल, क्रीडा।

कैरे केलिसु, कैरे केलिसु (सम्) क्रि.—खेल, क्रीडा कर, लीला कर, विहार कर।
कैरे केव (क) सं.—गर्व, घमंड, अहंभाव।
कैरे केवण (तद्) सं.—क्षेपणम् (तत्); फेंकना, डालना; भेजना, बतलाना; व्यतीत करना; छोड़ जाना।

कैरे केवल (सम्) अ.—सिर्फ, मात्र, केवल। वि.—विशिष्ट, असाधारण, अकेला, एकमात्र, अद्वितीय; समस्त, समूचा, पूरा; साफ़, शुद्ध। सं.—कैवल्य, मोक्ष।
कैरे ज्ञान (सम्) —विशुद्ध ज्ञान, मोक्षज्ञान।

कैरे केवलि (सम्) सं.—जैन-संन्यासी; अर्हत्।

कैरे केवु (क) सं.—रति, मैथुन (मै. प्र.)।
कैरे केश (सम्) सं.—सिर के बाल; सुगंध द्रव्य विशेष।

कैरे केशघ्न (सम्)—रोग जिसके कारण सिर गंजा होता है।

कैरे केशपक्ष, कैरे केशपाश (सम्) सं.—अधिक बाल, अलकावली।

कैरे केशबंधन (सम्) सं.—सुटीला, बालों का जूड़ा।

कैरे केशमार्जन कैरे केशमार्जनि (सम्)—सं.—कंधा कंधी।

कैरे केशव (सम्) सं.—बहुत अथवा सुंदर केशोंवाला; कृष्ण, विष्णु।

कैरे केशवेश (सम्) सं.—केशबंधन, जूड़ा।

कैरे केशहस्त (सम्) सं.—केशहस्त।
कैरे केशकेशि (सम्) स.—सिर के केश पकड़कर परस्पर लड़ना।

कैरे केशि (सम्) सं.—अधिक बालों वाला; सिंह; एक असुर का नाम जिसको श्रीकृष्णने मारा था; रुद्र, शिव।—राज (सम्) सं.—कन्नड के प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ 'शब्द-मणिदर्पण' के रचयिता का नाम।

कैरे केशिक (सम्) वि.—सुंदर बालों वाला।

कैरे केशिनि (सम्) सं.—सुंदर वेणीवाली स्त्री; विश्रवस की पत्नी और रावण की माता; एक पौधा विशेष (Chrysopogon aciculatus)।

कैरे केशिहर (सम्) सं.—श्रीकृष्ण।
कैरे केश, कैरे क्यास (क) अ.—के बाद, पश्चात्, उपरांत।

कैरे केसर (सम्) सं.—फूल का रेशा या सूत; पुष्प-रज, पराग; सिंह की गर्दन के बाल; बकुल वृक्ष, बकुल पुष्प; केशर, जाफ़ान।

कैरे केसरि (सम्) सं.—सिंह; अपनी; श्रेणि का सर्वोत्तम या सर्वोत्कृष्ट; घोड़ा, अश्व; केशर, जाफ़ान; लाल रंग का धान पुन्नाग वृक्ष।—द्विपाराशि (सम्) सं.—सिंह और हाथी का शत्रु मेरुण्ड।—द्विष (सम्) सं.—शरभ।

(१) कैरे केसु (क) सं.—दे. कैरे; लाल रंग; कैरे केसविक—लाल चावल।

(२) कैरे केसु (क) क्रि.—दे. कैरेसु।
कैरे केल, कैरे केलु (क) सं.—सुन, श्रवण कर, ध्यान दे; पूछ; माँग, याचना कर।

(१) कैरे केल (क) सं.—मित्र, दोस्त।
(२) कैरे केल (तद्) सं.—कदली (तत्)।

कैरे केलि (तद्) सं.—सुनना, श्रवण, ध्यान देना; पूछना, प्रश्न; माँगना, माँग।

कैरे केलिसु (क) क्रि.—सुना, श्रवण करा (या करवा); सुन, श्रवण कर; सुनाई पड़; ध्वनि कर, आवाज़ कर।

कैरे केलु (क) क्रि.—दे. कैरे।

कैरे केलुविके, कैरे केलुह, कैरे केलुविके (क) सं.—दे. कैरे।

कैरे केलि (क) सं.—पंक्ति, कतार; श्रेणी, वगैरे; समूह, राशि, झुण्ड।

कैरे कै (क) सं.—कैय हाथ; अलंकार, सजावट; खेत, क्षेत्र; कहुआपन; मन्थन करना, मन्थन।

कैरे कैकेय, कैरे कैकेयि (सम्) सं.—कैकेय राजा की पुत्री और दशरथ महाराज की छोटी रानी का नाम।

कैरे कैकसे (सम्) सं.—रावण की माता का नाम।

कैरे कैके (तद्) सं.—दे. कैरे।

कैरे कैकेय (सम्) सं.—कैकेय देश का राजा या राज कुमार।

कैरे कैकर्य (सम्) सं.—सेवा, सेवा-भाव, दास्य।

कैरे कैटभ (सम्) सं.—एक राक्षस का नाम।—७० अरि, ०४ रिपु, जित ४७ (सम्) सं.—विष्णु।

कैरे कैट्य (सम्) सं.—दवाई में काम आनेवाला एक पौधा, कटफल।

कैरे कैत (क) सं.—दे. कैरे।

कैरे कैतव (सम्) सं.—जुआ; छल, कपट, झूठ, जाल; जुआ खेलने का स्थान या घर।

कैरे कैदव (तद्) सं.—कैतव (तत्)।

कैरे कैदारक, कैरे कैदारिक, कैरे कैदार्य (सम्) सं.—खेतों का समुदाय।

कैरे कदि (अ. दे.) सं.—कैदी (अरबी); बन्दी।

(१) कैरे कैदु (क) सं.—दे. कैरे।

(२) कैरे कैदु (अ. दे.) सं.—कैद (अरबी); बन्धन, गिरफ्तारी।—काने (अ. दे.) सं.—कारागार, जेल।

कैरे कैफियतु (अ. दे.) सं.—कैफियत (अरबी); समाचार, विवरण, रपट, मामला; उन्माद।

कैरे कैमे (क) सं.—दे. कैरे।

कौ०००० कैयि कौ०००० कैयि (क) सं. — हाथ; कर ।
 कौ०००० कैरव (सम्) सं.—कोकावेली, चंद्रमा की चादनी में खिलनेवाली सफेद कमल) — बाण्डन बांधव, मित्र मित्र (सम्) सं — चंद्रमा । — मित्र विणि (सम्) सं — सफेद कमलों का समुदाय ।
 कौ०००० कैलास (सम्) सं — हिमालय पर्वत का शिखर विशेष । — दार्ग दुर्ग, शु० पुरि (सम्) सं. = कौ००००।
 कौ०००० कैवर्त (सम्) सं.—मछुआ, मछुआह ।
 कौ०००० कैवर्त मुस्तक (सम्) सं. — एक सुगंधित तृणविशेष ।
 कौ०००० कैवल्य (सम्) सं. — एकत्व, एका-न्तता ; मोक्ष, मुक्ति ; निर्मलता, शुद्धता ; मुख्य स्थान ; वेदों की शाखा ।
 कौ०००० कैशिक (सम्) सं.— बालों का परिमाण ; प्रेम, प्रेमभाव ; कामुकता ।
 कौ०००० कैशिकि (सम्) सं.— नाट्यशास्त्र की एक वृत्ति ।
 कौ०००० कैश्य (सम्) सं— बालों का परिमाण, संपूर्ण केश ।
 कौ०००० कौक, कौ०००० कौंग, कौ०००० कौंगु (क) सं.— क्षुद्रता, तुच्छता; परिहास, हँसी, दिखगी ; दिखगी करनेवाला, विदूषक ; क्षुद्र पुरुष ।
 कौ०००० कौंकण, कौ०००० कौंकण, कौ०००० कौंगण (क) सं. — कौंकण देश । — स्थ (क) सं. कौंकण देश का ब्राह्मण ।
 कौ०००० कौंकणि (क) सं.— कौंकण-ब्राह्मण जाति का पुरुष ।
 कौ०००० कौंकणिग (क) सं.— कौंकण देश का ब्राह्मण ।
 कौ०००० कौंकळ, कौ०००० कौंकळ (क) सं.— काँख, बगल ।
 कौ०००० कौंकळ, कौ०००० कौंकळ (क) सं.— दे. कौ००००००।
 कौ०००० कौंकि (क) सं.— अँकुड़ा, कुलाबा, काँटा, मछली फँसाने की बँसी ।

कौ०००० कौंकिसु (क) क्रि.— वक्र कर, टेढ़ा कर ; रूप बिगाड़ ।
 कौ०००० कौंकु (क) क्रि.— वक्र हो, टेढ़ा हो, तिरछा हो, रूप बिगाड़, रूप परिवर्तन हो, भग्न हो, कुटिल हो ; झूठा हो । सं.— वक्रता, टेढ़ापन, तिरछापन, भग्नता, कुटिलता; गुरु, गुरुवर्ण ।
 कौ०००० कौंकुळ (क) सं.— दे. कौ००००००।
 कौ०००० कौंग (क) सं.— दे. कौ००००।
 कौ०००० कौंगरि (क) सं.— कौ०००००००० कौंगरि बिंगरि—हका-बका होना ।
 कौ०००० कौंगु (क) सं.— दे. कौ०००० ; देश विशेष का नाम (वर्तमान केरल का एक भाग) ।
 कौ०००० कौंगे, कौ०००० कौंबु, कौ०००० कौंबे (क) सं.— पेड़ की शाखा, डाली ।
 कौ०००० कौंच, कौ०००० कौंचे (क) वि.— थोड़ा; कुछ, लेशमात्र ।
 कौ०००० कौंचिगे (क) सं.— बच्चों को पहनाने की टोपी ।
 (१) कौ०००० कौंचे (क) वि.— दे. कौ०००००० सं.— आवरण, प्राचीर, शाल, हाता, घेरा । ; उत्तर काल की या बाद की वस्तु ।
 (२) कौ०००० कौंचे (तद्) सं.— कौ०००००० कंच, कौ०००००० कंचु-कौंच (तद्) — कुरर पक्षी ।
 कौ०००० कौंड (क) सं.— गदा ; मुद्गर ; पेड़ का कटा हुआ भाग, डूँड, लकड़ी का कुंदा-लट्टा ।
 (१) कौ०००० कौंड (क) सं.— पहाड़, पर्वत । — कौ०००० कुरि, कौ०००० गुरि (क) सं.— रौहिष ; जंगली भेड़ ।
 (२) कौ०००० कौंड (तद्) सं.— कुंडः (तद्) ; कूड़ा, कूड़ी, हौदी ।
 कौ०००० कौंडल, कौ०००० कौंडलु (तद्) सं.— कुंडलः (तद्) ; कानों की बाली, कर्णाभरण ।
 कौ०००० कौंडसु (क) सं.— एक पौधा विशेष (सूप-कारिका नामक पौधा) ।
 कौ०००० कौंडमारु (क) सं.— निष्फल-क्रिया, मूल रूप ।

कौ०००० कौंडाट (क) सं.—स्तुति, प्रशंसा-सराहना । कौ०००० कौंडाडु (क) क्रि.— गुण-कथन कर ।
 कौ०००० कौंडि (क) सं.— अँकुड़ा, खूटी, ताले क अंदर की कड़ी ; बिच्छू का पुच्छ ।
 कौ०००० कौंडिसु (क) क्रि.— कलंक लगा, अपयश कर, बदनाम कर ।
 कौ०००० कौंडु (क) कृ.— (' कौ०००० कौल् ' से) — लेकर ; खरीद कर ।
 कौ०००० कौंडे (के) सं.— कौ०००००० कौंडेय— चुगली, शिकायत ; अपयश, बदनामी ; गाली ; सिर पर धारण करने की मोतियों की लड़ी या माला ; गुच्छा ; जूड़ा ; झन्डा ।
 कौ०००० कौंडेग (क) सं.— दे. कौ०००० ; शिकायत करनेवाला, चुगलखोर, बदनाम करनेवाला, अपयश फैलानेवाला ।
 कौ०००० कौंडेगार [कौ०००० गार] (क) सं.— चुगलखोर, अपयश फैलानेवाला पुरुष ।
 कौ०००० कौंडेतन (क) सं.— दे. कौ०००० १।
 कौ०००० कौंडेय (क) सं.— दे. कौ००००००।
 कौ०००० कौंत (तद्) सं.— कुंत (तद्) प्राप्त नामक शस्त्र, भाला ।
 कौ०००० कौंति (तद्) सं.— कुंती (तद्) ।
 कौ०००० कौंटु (क) कृ.— (' कौ०००० कौल् या कौ०००० कौल्लु = मार) — मारकर ।
 कौ०००० कौंदे (क) सं.— मोटी दालचीनी का पेड़ ।
 कौ०००० कौंपे (क) सं.— काँटों की झाड़ी २. छोटा ग्राम ; झोंपडी ।
 कौ०००० कौंबु (क) सं.— पशुओं का सींग, वह जो सींग-जैसा हो, शृंग, ललाम ; हाथी का निकला हुआ दाँत ; पेड़ की शाखा, डाली ; संकेत-स्थान, संकेतस्थल । क्रि.— ले, खरीद ।
 कौ०००० कौंबुविके (क) सं.— खरीदना, लेना ।
 कौ०००० कौंबे (क) सं.— डाल, शाखा ।
 कौ०००० कौंयि (क) सं.— मारने पर कुत्तों के मुँह से निकलनेवाली आवाज़ ।

कौटिल्य कोकर

कौटिल्य कोकर (क) सं.—असह्यता; चिह्नान्तर, गर्जन; विरोध।
 कौटिल्य कोकरि (क) सं.—हृदयवक्रता होना।
 कौटिल्य कोकरिसु (क) क्रि.—डरा, धमका, डँट, फटकार बताना; गाली दे, कोस; तिरछा हो, टिडुर, काँप (सर्दी के मारे या भय से), सिकुड़, ठिठक; चिह्नान्तर, पुकार, गर्जन; खिसिया, मुँह बँद करके हँस।
 कौटिल्य कोकरे (क) सं.—सारस; बगुला।
 कौटिल्य कोक्कि (क) सं.—पेड़ का टूँठ, पेड़ की टेढ़ी शाखा; वक्रता, टेढ़ापन; तिरछापन, दुष्टता।
 कौटिल्य कोक्कु (क) सं.—दे. कौटिल्य; चोंच।
 कौटिल्य कोक्क (क) सं.—टेढ़ापन; वक्रता; कुलाबा, काँटा (अहचन, बाधा)।
 कौटिल्य कोक्के (क) सं.—दे. कौटिल्य।
 कौटिल्य कोग्ग (क) सं.—वक्रता, टेढ़ापन; वक्र या कर्कश ध्वनिवाला पुरुष।
 कौटिल्य कोग्गि, कौटिल्य कोग्गिडि, कौटिल्य कोग्गिलि, कौटिल्य कोग्गे (क) सं.—एक पौधा विशेष (Tephrosia purpurea)।
 कौटिल्य कोग्गु (क) सं.—कानों का मल।
 कौटिल्य कोक्कि (क) सं.—काटने की क्रिया।
 कौटिल्य कोक्किसु (क) क्रि.—कटा, कटवा (प्रै.)।
 (१) कौटिल्य कोक्कु (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर; अधिक बोल, बड़बड़ा, डींग हाँक; भाटे को साफ कर. पछार। सं.—काटना, काटने की क्रिया, काटने का आयुध; पुडिया, चूर्ण; धूल मूत्र की दुर्गंध।
 (२) कौटिल्य कोक्कु (तद्) सं.—कूर्चम (तद्); गुच्छा; मूठा; गट्टर।
 कौटिल्य कोक्के (क) सं.—दलदल, कीचड़, पंक।
 कौटिल्य कोक्के, कौटिल्य खोजा (अ. दे.) सं.—खोजा (फ़ारसी); नयुंसक, कापुरुष।
 कौटिल्य कोट, कौटिल्य कोटगे, कौटिल्य कोटगे,

कौटिल्य कोट्टिग (तद्) सं.—कुटंक (तद्); छोटी झोंपड़ी, गोशाला।
 कौटिल्य कोटार, कौटिल्य कोटार (तद्) सं.—कोट्टागार (तद्); खलियान; अनाज (भूसे से अलगाने के लिए) पीटने का स्थान।
 (१) कौटिल्य कोट्टि (क) सं.—बाँस की नली; एक पौधा। वि.—बिलकुल अंत का, अंतिम।
 (२) कौटिल्य कोट्टि (तद्) सं.—दे. कौटिल्य; कोष (तद्)।
 (३) कौटिल्य कोट्टि (सम्) सं.—कोट, गढ़, किला। — गच्छ गार् (सम्) सं.—किलेदार।
 कौटिल्य कोट्टिज (क) सं.—राज कर, भेंट।
 कौटिल्य कोट्टिडि (अ. दे.?) सं.—कोठरी, कमरा।
 कौटिल्य कोट्टण (क) सं.—धान को कूटने की क्रिया। — कूट अक्कि (क) सं.—कूटा हुआ (अर्थात् मिल का नहीं) चावल। — गच्छ गिति (क) सं.—धान कूटनेवाली स्त्री।
 कौटिल्य कोट्टतन (अ. दे.) सं.—खोटापन (हिं.); वक्रता; छल, कपट।
 कौटिल्य कोट्टवळ (सम्) सं.—किलेदार।
 कौटिल्य कोट्टस (क) सं.—भूना हुआ माँस।
 कौटिल्य कोट्टार (तद्) सं.—दे. कौटिल्य।
 (१) कौटिल्य कोट्टि (क) सं.—निर्लज्ज, बेशर्मा, नीच, तुच्छ या क्षुद्र पुरुष।
 (२) कौटिल्य कोट्टि (अ. दे.) वि.—खोटा (हिं.); झूठा, अविश्वास के योग्य, छलिया, कपटी, बुरा, खराब; दुराचारी, पापी।
 (३) कौटिल्य कोट्टि (अ. दे.) सं.—कमरा, कोठी।
 कौटिल्य कोट्टु (क) सं.—नोक, अग्र भाग; चूचुक; मुकुट, कलंगी; सिर पर धारण करने का एक आभूषण विशेष, चूडा। क.—(कौटिल्य कोट्टु = दे.) — देकर।
 कौटिल्य कोट्टुक, कौटिल्य कोट्टुग (क) सं.—(क) टिटिहरी।

कौटिल्य कोट्टे (क) सं.—फलों की गुठली या गुद्दी।
 कौटिल्य कोट्टण (क) सं.—दे. कौटिल्य।
 कौटिल्य कोठडि (अ. दे.?) सं.—कमरा; कोठरी।
 (१) कौटिल्य कोड (क) सं.—कोमलता, मृदुता; कोमल वय, यौवन (कौटिल्य कोडगुसु — सयानी लड़की, युवती; कन्या); शहद, मधु; तलवार, हँसिया।
 (२) कौटिल्य कोड (तद्) सं.—कुट; (तद्); जलपात्र, घड़ा, गागरी।
 कौटिल्य कोडकु (क) सं.—वक्रता, टेढ़ापन।
 कौटिल्य कोडके, कौटिल्य कोडके (क) सं.—कान।
 कौटिल्य कोडग (क) सं.—दरिद्रता, गरीबी; आवश्यकता।
 कौटिल्य कोडगु (क) सं.—कूर्म जो वर्तमान मैसूर राज्य का एक भाग है।
 कौटिल्य कोडगे (क) सं.—देन; भेंट; उपहार; अनुदान।
 कौटिल्य कोडचि (क) सं.—एक पौधा विशेष।
 कौटिल्य कोडचु, कौटिल्य कोडसु (क) सं.—हाथ की उंगली से या कनखोदनी से कानों का मल निकाल; बर्तन में लगी गंदगी को हाथ से (रगड़कर) निकल।
 कौटिल्य कोडत (क) सं.—शीतलता; सर्दी, जाड़ा; कुत्ते के गर्दन पर बांधा जानेवाला डंडा; घाव का दर्द (पीडा)। क्रि.—खोखला कर, थोथा कर; छेद, भेद, रंघ कर, चुभ।
 कौटिल्य कोडति, कौटिल्य कोडति (क) सं.—लौहे की हथौड़ी।
 कौटिल्य कोडपु, कौटिल्य कोडपु, कौटिल्य कोडहु (क) क्रि.—झाड़, हाथ से पटक या फैला, हिला।
 कौटिल्य कोडमे, कौटिल्य कोडवे (क) सं.—मछली पकड़ने की टोंकरी, जाल।
 कौटिल्य कोडरिसु (क) सं.—एक आभूषण विशेष।

कोडलि, कोडलि (तद्) सं.—कुठारः (तत्) कुल्हाडी, परशु ।
 कोडवु (क) सं.—दे. कोडवु. क्रि.—
 दे, कोडवु.
 कोडसिगु (क) सं.—एक पौधा विशेष (The tree cluystia collina) ।
 कोडसु, कोडहु (क) सं.—
 दे. कोडसु.
 कोडि (क) सं.—बल, शक्ति ; सामर्थ्य ;
 मोटापन)
 कोडिगे (क) सं.—कोडगं.
 कोडिसिगु, कोडसिगे, कोडसिगु
 कोरिसिगु (तद्) सं.—कुटजक (तत्),
 एक वृक्ष का नाम ।
 कोडिसु (क) क्रि.—दिला, दिलवा
 (प्रे.) ।—बिक्रि =दिलाना ।
 कोडु (क) क्रि.—दे. प्रदान कर ; दान
 दे ।
 कोडु, कोडुविके, कोडुविके
 कोडुह (क) सं.—देना, प्रदान करना ; देन,
 दान ।
 कोडे (क) सं.—छाता, छतरी । क्रि.—
 विकीर्ण कर ; छेद कर, उंगली से खोद या
 नोच, निकाल ; कानों का मल उंगली से
 कनखोदनी से निकाल ; दर्द कर, पीडा
 उत्पन्न हो ; बहुत खुजलाहट हो. गुदगुदी
 हो ।
 कोडु (क) सं.—एक प्रकार का इन्द्र-
 धनुष ; मूल या वेवकृफ मनुष्य ।
 कोण (क) सं.—तालाब, सरोवर ;
 नाक की आवाज़ । कोण कोण एन्नु
 कोण कोण एन्नु—नाक से बोल ।
 कोणकु (क) क्रि.—लौघ, कूद, उछल
 (पशुओं का लौघना) । सं.—लौघना उछ-
 लना ।
 कोणगु (क) सं.—खुर ।
 कोणत (क) सं.—गदा, मुदगर ।
 कोणपि (क) सं.—मूसल, कण्डनी
 (द. क.) ।

कोणबिगे (क) सं.—काठ की थाली ;
 काठ का बर्तन (द. क.) ।
 कोणविके (क) सं.—दे. कोणविके.
 कोणसु (क) सं.—दुष्ट मृगों का
 बच्चा ।
 कोत (क) सं.—एक अनुकरणमूलक
 शब्द ।
 कोतम्बरि, कोतम्बरि कोतम्बरि
 (क ?) सं.—धनिया की पत्ती ।
 कोतम्बरि (क) सं.—झुण्ड, समूह,
 समुदाय ।
 कोतल, कोतल (क) सं.—
 कोट दुर्ग का प्राचीर ।
 कोतल (क) सं.—दे. कोतल.
 कोत्ति (क) सं.—बिली या बिलाव ।
 कोत्तु (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर,
 बोटी-बोटी कर । सं.—गुच्छा ; समूह ।
 कोत्तमरि, कोत्तमरि कोत्तमरि,
 कोत्तम्बरि (क) सं.—दे.
 कोतम्बरि.
 कोदल, कोदल (क) क्रि.—
 तुतलाकर बोल, रुक-रुक कर बोल । सं.—
 तुतलाना, तुतली ।
 कोदल (क) सं.—दे. कोदल.
 कोनर, कोनरु (क) क्रि.—
 अंकुरित हो, पल्लव हो ; निकल, विकसित
 हो. कुसुमित हो ; अधिक हो । सं.—पल्लव,
 किसलय ; मृणाल, कमल, की नाल ।
 कोनरे (क) सं.—वक्रता, टेढ़ापन ;
 दुष्टता ।
 कोने (क) क्रि.—स्वीकृत कार्य में वृद्धि
 पा ; हिल, हिल-डुल । सं.—अन्त्य, समाप्ति,
 छोर, अखिरी भाग ; कोना ; अग्र भाग ; पेड़
 की शाखा ।
 कोप्प (क) सं.—झोंपडी, छोटा गाँव ।
 कोप्प (क) सं.—धनुष का अग्र
 भाग, सींग की नोक ।
 कोप्पर (क) सं.—भुजा, कन्धा ।
 कोप्परिगे (तद्) सं.—कर्पर (तद्) ;
 कड़ाह, कडाही ।

कोप्परिसु, कोप्परिसु कोप्परिसु
 (क) क्रि.—मार, पीट ; कुचला जा ;
 अधीन में हो ।
 कोप्पल (क) सं.—राशि, ढेर ;
 छोटा ग्राम ।
 कोप्पु (क) सं.—क. प्युष ; कान के
 ऊपरी भाग में धारण करने का आभूषण ;
 जूडा, केशबंध ; वेणी में धारण करने का
 आभूषण विशेष ।
 कोप्परि, कोप्परि (क) सं.—
 गरी ।
 कोप्परि (क) सं.—धान का भूसा ।
 कोप्परि (क) सं.—गर्वीला पुरुष ।
 कोप्परि (क) सं.—असभ्य, अशिष्ट,
 गँवार या क्षुद्र मनुष्य ।
 कोप्परिसु (क) क्रि.—मोटा हो ; मोटा
 कर ।
 कोप्परि (क) क्रि.—मोटा हो, तगड़ा
 हो ; अधिक हो, वृद्धि पा ; घमंडी हो,
 गर्व कर, उद्धत हो, हीठ हो । सं.—चरबी,
 वसा ।
 कोप्परि (क) सं.—
 दे. कोप्परि.
 कोप्परि (क) क्रि.—जलने लग (जैसे
 आग का जलना या क्रोध का उभड़ना) ।
 कोप्परि (क) सं.—अनाज की खत्ती
 एक प्रकार की घास ।
 कोप्परि (क) क्रि.—काट. आरे से काट
 फसल काट ; तोड़ (फल, फूल आदि) ।
 सं.—काटना, तोड़ना ।
 कोप्परि (तद्) सं.—कुहक (तद्) ।
 कोयि (क) क्रि. दे. कोयि.
 कोयिक (क) सं.—काटने वाला
 पुरुष ।
 कोयिकतन (क) सं.—काटना,
 कटाव ।
 कोयिकत (क) सं.—काटना ; काटने
 का आयुध विशेष ।
 कोयिलु (क) सं.—काटना, कटाव ;
 तोड़ना ।

कौटिल्य कौयिसु (क) क्रि.— कटा, कटवा ; तुड़ा, तुड़वा ।
 कौटिल्य कौयु, कौटिल्य कौयु (क) क्रि.— दे. कौटिल्य.
 कौटिल्य कौयक (क) सं.— दे. कौटिल्य.
 कौटिल्य कौयिक (क) सं.— वह स्त्री जिसके कान आदि कट गये हो ।
 कौटिल्य कौयिके (क) सं.— काटनेवाली स्त्री ।
 कौटिल्य कौयिगार (क) सं.— काटनेवाला ।
 कौटिल्य कौयिय (क) क्रि.— दे. कौटिल्य.
 कौटिल्य कौय्यु (क) क्रि.— दे. कौटिल्य.
 कौटिल्य कौय्यो (क) अ.— हाय । हाय ।
 कौटिल्य कौय्यु (क) सं.— दे. कौटिल्य।
 कौटिल्य कौय्यसु (क) क्रि.— दे. कौटिल्य।
 कौटिल्य कौर (क) सं.— 'कौर-कौर' ध्वनि, खुराटा ; बिछी की हर्ष-ध्वनि ; लाभ, फायदा, उपयोग ।
 कौटिल्य कौरकंचि (क) सं.— एक पौधा विशेष ।
 कौटिल्य कौरकंचे (तद्) सं.— कौरकंचे (तत्) ; कुरर पक्षी ।
 कौटिल्य कौरगणे (क) सं.— दुःख, व्यथा, खेद, शोक ।
 कौटिल्य कौरगिसु (क) क्रि.— रसहीन कर, व्यथित कर, दुःखी कर ।
 कौटिल्य कौरगु (क) क्रि.— व्यथित हो, दुःखी हो ; ग्लानि कर, रसहीन हो । सं.— दुःख, व्यथा, ग्लानि ।
 कौटिल्य कौरंगि (क) सं.— कपि, बंदर ।
 कौटिल्य कौरसु (क) क्रि.— उपहास कर, मज़ाक उड़ा ; निंदा कर, तिरस्कार ।
 कौटिल्य कौरतिगे (क) सं.— एक वृक्ष विशेष की गुठली ।
 कौटिल्य कौरदु, कौटिल्य कौरदु (क) सं.— उत्पन्न न होने देने या बढ़ने न देने की स्थिति, भग्न करना, भंग ।
 कौटिल्य कौरदु (क) सं.— दे. कौटिल्य २.
 कौटिल्य कौरनारि (क) सं.— दलदल का एक पौधा ।

कौटिल्य कौरप (क) सं.— घोड़े को मलने का खरहरा ।
 कौटिल्य कौरल, कौटिल्य कौरल, कौटिल्य कौरल, कौटिल्य कौरल, कौटिल्य कौरल, कौटिल्य कौरल (क) सं.— कौटिल्य कौरल, कौटिल्य कौरल (क) सं.— गर्दन, गला, कण्ठ, गला और गर्दन ; स्वर, भावाज्ञ, ध्वनि ।
 कौटिल्य कौरल्लु (क) क्रि.— पुकार, चिला, चीख ।
 कौटिल्य कौरिपिडि (अ. दे.?) सं.— व्याकुलता, व्यग्रता, चिंता ।
 कौटिल्य कौरि (क) क्रि.— घरांटा, सोते समय नाक से शब्द निकाल ।
 कौटिल्य कौर (क) सं.— काटना, कटाव (कौटिल्य कौरकल्लु— नुकीला, रूक्ष पत्थर) ; कमी, न्यूनता, छोटापन ; शेष, बचत ।
 कौटिल्य कौरकल, कौटिल्य कौरकल (क) सं.— नदी के पानी से बननेवाला गड़ढा ; नाला, नहर ।
 कौटिल्य कौरकु (क) क्रि.— काट ; दाँतों से काट ।
 कौटिल्य कौरच (क) सं.— एक पहाड़ी जाति लोग जो प्रायः लकड़ी की कथियाँ बेचा करते हैं ।
 कौटिल्य कौरु (क) क्रि.— दे. कौटिल्य।
 कौटिल्य कौरडा, कौटिल्य कौरडे (अ. दे.) सं.— कोड़ा (हिं.) ; चाबुक ।
 कौटिल्य कौरदु (क) सं.— दे. कौटिल्य २.
 कौटिल्य कौरत (क) सं.— काटने की क्रिया, काटना, कटाव ; शीतलता, बहुरत ठंडा होना ।
 कौटिल्य कौरति (क) सं.— छोटी या नाटी स्त्री ।
 कौटिल्य कौरतु, कौटिल्य कौरदु, कौटिल्य कौरदु (क) कृ.— (' कौटिल्य कौरि' धातु से) — छेदकर, भेदकर ; काटकर ; खोदकर ।
 कौटिल्य कौरते (क) सं.— कमी, न्यूनता, (किसी वस्तु की) आवश्यकता ; हानि, लोप ।
 कौटिल्य कौरते (क) सं.— दे.— कौटिल्य ३.
 कौटिल्य कौरम, कौटिल्य कौरव (क) सं.—

एक जाति के लोग जो कन्नड बोलते और जो टोकरी, चटाई आदि बनाने का काम करते हैं ।
 कौटिल्य कौरले (क) सं.— एक अनाज विशेष (स्रग्वति) एक प्रकार की चाँदी ।
 कौटिल्य कौरवजि, कौटिल्य कौरवति कौटिल्य कौरविति, (क) सं.— 'कौरव' जाति की स्त्री ।
 कौटिल्य कौरसाट (क) सं.— उपहास, परिहास, मज़ाक, किसी की नक़ल करना ।
 (१) कौटिल्य कौरि (क) क्रि.— छेद, भेद, खनन कर, खोद, काट ; चुभ, लग, बहुत शीतल या ठंडा हो । सं.— वह पदार्थ जो काट दिया गया हो ; काँटेदार वृक्ष की कटी हुई बड़ी डाली ।
 कौटिल्य कौरि (क) क्रि.— तेज़ी से चक्कर खा, घूम, चारों ओर घूम ; व्याकुल हो, अमित हो ।
 कौटिल्य कौरिसु, कौटिल्य कौरिसु (क) क्रि.— 'कौटिल्य' का प्रेरणार्थक रूप ।
 कौटिल्य कौरकु (क) क्रि.— कौटिल्य।
 कौटिल्य कौरि (क) क्रि.— दे. कौटिल्य (१) ; कम हो, न्यून हो, छोटा हो । सं.— कमी, न्यूनता, छोटापन ; अवशेष, बचत ; काटना, कटा हुआ पदार्थ ; एक प्रकार का अनाज उपहार या भेंट के रूप में (विवाहादि में) दिये जाने वाले वस्त्र ; घुमकड़, घूमनेवाला मनुष्य ।
 कौटिल्य कौरित (क) सं.— दे. कौटिल्य (मै.प्र.)।
 कौटिल्य कौरियुविके (क) सं.— भेदना, छेदना ; खोदना ।
 कौटिल्य कौरि (क) क्रि.— अधिक बोल, बढ़ा-चढ़ाकर कह, बड़बड़ा, डींग हँक ; काट डाल, छेद डाल । सं.— मूत्र की दुर्गंध ।
 कौटिल्य कौरि (क, क्रि.— दे. कौटिल्य)।
 कौटिल्य कौरि (क) सं.— दे. कौटिल्य।
 कौटिल्य कौरि (क) सं.— वसा, चरबी ।
 कौटिल्य कौरि (क) सं.— कौटिल्य।
 (१) कौटिल्य कौरि, कौटिल्य कौरि, कौटिल्य कौरि (क) क्रि.— मार डाल, हत्या कर, चघ कर ।

(२) कौल कोल् (क) सं. — लट्टों का या पीपे का वेड़ा; जोड़, मिलाव; = कौल कोल्—छड़ी, डण्डा, लाठी।
 कौलिके, कौलिके (क) सं.— अँकुरा, अँकुड़ा।
 कौलिके (क) सं.— चूल्हा, अंगीठी।
 कौलिसु, कौलिसु (क) क्रि. मरा, मरवा, वध करा।
 कौल (क) सं.— क्रि. दे. कौल।
 कौलमे (क) दे. कौलमे।
 कौले (क) सं.— हत्या, वध; कतल, मारना; हिंसा।
 कौलेग, कौलेगार (क) सं. मारनेवाला, हत्यारा, क्रांतिल।
 कौलिंग (क) सं.— रस्सी, लाठी आदि के सहारे खेल करनेवाला या नाचनेवाला। कौलिंग—(स्त्री. लिं.)।
 कौलिंगे (क) सं.— खेलना, खेल, खेद-कूद।
 कौलार, कौलारि, कौलारु (क) सं.— बैल गाड़ी।
 कौलि, कौले (क) सं.— झुकाव, टेढ़ापन; कोना; खाड़ी, आखात।
 कौलिसु (क) क्रि.— दे. कौलिसु।
 कौलु (क) क्रि.— दे. कौल।
 कौलिके (क) सं.— मारना, हत्या, वध।
 कौलिके (क) सं.— पर्दा; यवनिका।
 कौलिके (क) सं.— कर्णिकार, वनचम्पा या कठचम्पा।
 कौलिके (क) सं.— दे. कौलिके।
 कौलिके (क) सं.— इच्छा, अभिलाषा, चाह; कामना; विस्तार, अधिकता; वर्णन; छीना-झपटी; चिन्हाइट।
 कौलिके (क) क्रि.— अधिक हो; फैल; संयमहीन हो; बलपूर्वक ले, छीन; उत्कंठा कर, लालसा कर, चाह; किसी वस्तु की माँग कर या अधिक माँग। सं.— उत्कंठा, लालसा, वांछा, अति लोभ;

साधारणतया किसी वस्तु को खरीदते समय उसको और अधिक माँगना।
 कौलिके (क) सं.— कष्ट, पीड़ा, व्यग्रता।
 कौलिके (क) क्रि.— निधुवन कर, परिंभण कर। सं.— घोड़े पर चढ़ने की एक रीति।
 कौल, कौल, कौल (क) सं.— पकड़, धर, छीन ले, झपटकर ले, जब्त कर; ले, स्वीकार कर, अपना, पा, प्राप्त कर, ग्रहण कर, खरीद कर, मोल कर, मूल्य देकर ले। सं.— लेना, खरीद, विक्रय, खरीद-फरोखत; गला गर्दन, कंठ।
 कौल (क) सं.— संकेतस्थान; सरोवर, सरसी; मापने का बर्तन विशेष।
 कौलिके, कौलिके (क) सं.— धान की फसल जो वर्ष में तीसरी बार होती है।
 कौलिके (क) सं.— मापने का एक बर्तन विशेष (जो प्रायः चार या पाँच सेर का होता है); एक बड़ा जलपात्र (धातु का); कानों का आभूषण विशेष; खुर (पशुओं) का खुर।
 कौलिके (क) सं.— खुर।
 कौलिके (क) सं.— जलाशय के भास-पास उत्पन्न होनेवाला पौधा विशेष, इक्षुगंधा।
 कौलिके, कौलिके, कौलिके (क) सं.— दे. कौलिके।
 कौलिके (क) सं.— मंजिष्ठा, मधुक; उत्पल; योजनवल्ली, योजनपर्णी।
 कौलिके (क) सं.— एक सुगंधित तृण विशेष।
 कौलिके, कौलिके (क) सं.— दे. कौलिके।
 कौलिके (क) सं.— नली, नलिका।
 कौलिके (क) सं.— तालाब, सरोवर।
 कौलिके (तेलुगु?) सं.— नल, पाइप का पानी।
 कौलिके (क) सं.— पकड़ना, धरना।
 कौलिके (क) सं.— दे. कौलिके।

कौलिके, कौलिके (क) क्रि.— धरा, पकड़ा, खरीदवा, विक्रय करा (प्रे.)।
 कौलिके (क) सं.— पकड़ाना, धराना, खरीदवाना।
 कौलिके (क) क्रि.— दे. कौलिके।
 कौलिके (क) सं.— कौलिके।
 कौलिके (क) सं.— पकड़ना, धरना; क्रय, मोल।
 कौलिके (क) सं.— दे. कौलिके।
 कौलिके (क) सं.— दे. कौलिके।
 कौलिके (क) सं.— निकुंज; गह्वर, गुफा; = कौलिके—नाटा मनुष्य।
 कौलिके (क) सं.— मशाल, उल्का, उल्मुक।
 कौलिके (क) क्रि. सं.— दे. कौलिके।
 कौलिके (क) सं.— लेना, ग्रहण, करना, ग्रहण, स्वीकृति, खरीदना, क्रय-विक्रय।
 कौलिके (क) सं.— दे. कौलिके; लट, लटमार।— गौल गार [गौल गार] (क) सं.— लुटेरा।
 कौलिके (क) वि.— गंदा, पंकिल, कीचड से युक्त।
 कौलिके (क) सं.— गन्दगी, सड़ा हुआ (पदार्थ); मैलापन। वि.— गन्दा, मैला सड़ा हुआ।
 कौलिके (क) सं.— गन्दगी, मैलापन, अशुद्धता, सड़े रहने की स्थिति।
 कौलिके (क) सं.— कीचड़पन, पंकिलता; गन्दगी।
 कौलिके (क) सं.— अड़चन, रुकावट, बाधा, विघ्न।
 कौलिके, कौलिके, [कौलिके] (क) सं.— कौलिके, कौलिके (क) सं.— मुरली, बाँसुरी, वेणु।
 कौलिके, कौलिके (क) सं.— नली, बाँस की नली, नाली।

कोट

कोट (क) क्रि. — सड़ा मैला कर, गन्दा कर; नष्ट कर।

कोट (क) क्रि. — मैला हो, गन्दा हो, अशुद्ध हो, सड़ा, जीर्ण हो, नष्ट हो, खराब हो। सं. — मैलापन, गन्दगी, अशुद्धता, मल, पंक, कीचड़, दलदल; रुकावट, अड़चन, बाधा, अवरोध, देर।

कोट (क) क्रि. — कोट, का छोटा रूप; पिरो, गूँथ; ताँत लगा, डोरी लगा, तार चढ़ा; पिरोया जा; गूँथा जा।

कोट (सम्) सं. — भेड़िया; चक्रवाक; कोयल; मेंढक; खजूर का पेड़ वृक्ष विशेष; बड़ी बहन; एक पंडित का नाम।

कोट (सम्) सं. — लाल कमल।
— ३० वैरि (सम्) सं. — चन्द्रमा; एक छन्द का नाम।

कोट (सम्) सं. — वक्रवाक, रथांग।

कोट (सम्) सं. — कोयल।

कोट (सम्) सं. — दे. कोट।

कोट (सम्) सं. — कोट।

कोट (सम्) सं. — खोगीर (फारसी); घोड़े की जीन (मसनद)।

कोट (सम्) सं. — Coach (अंग्रेजी); चौपहिया गाड़ी।

(१) कोट (अ. दे.) सं. — दे. कोट।

(२) कोट (क) सं. — अतिक्रम, भूल; वेवकूफी। — धंभू भट्ट (क) सं. — मूर्ख पुरुष।

कोट (सम्) सं. — Coachman (अंग्रेजी); गाड़ीवान।

(१) कोट (क) सं. — शीतलता, सर्दी, ठण्ड, ठण्डापन; एक पक्षी का नाम, व्याकुली या किरिटचाप पक्षी; एक ग्वाले का नाम।

(२) कोट (अ. दे.) सं. — खोटा (हिं) देहापन, वक्रता; झोंपड़ी, कुटी; किला।

कोट (अ. दे.) सं. — कोट।

कोट (सम्) सं. — नंगी स्त्री; दुर्गा।

कोट (क) सं. — सतानेवाला या पीडा देनेवाला पुरुष।

कोट (क) सं. — सताना. कष्ट. पीडा दर्द।

कोट (सम्) सं. — दे. कोट।

कोट (सम्) सं. — कोट।

कोट (सम्) सं. — नोंक, छोर; अख की नोंक या धार; चरमबिंदु, आधिक्य, सर्वोत्कृष्टता; चन्द्रकला; करोड़ की संख्या; धनुष का अंतिम भाग; समकोण त्रिभुज की एक भुजा; श्रेणी. कक्षा, विभाग; राज्य, सल्तनत, आभरण. भूषण; सौंदर्य. चारुता; मन का उत्साह या उमंग; अनगिनत संख्या; पेड़ का खोलला; गुहा; संग्राम. युद्ध।

कोट (सम्) सं. — अग्र. नोंक, श्रेणी, चोटी।

कोट (सम्) सं. — पतवार।

कोट (सम्) सं. — दवाई में उपयोगी एक पौधा।

कोट (सम्) सं. — पाटा, हँगा।

कोट (सम्) सं. — सुकृष्ट. तज्ञ. किरिट, कलंगी चोटी।

कोट (सम्) सं. — कोट; गढ़ किला, दुर्ग; शाला, झोंपड़ी; बाँकापन; दाढ़ी।

कोट (सम्) सं. — शिव; एक ग्राम का नाम।

कोट (सम्) सं. — कोट, गढ़, किला।

कोट (सम्) सं. — किला या किले के भीतर का ग्राम; चोर-डाकुओं का स्थान; सरोवर या तालाब की सीढ़ियाँ; कूप, तड़ाग; कामुक, लम्पट या दुराचारी पुरुष।

कोट (क) सं. — दे. कोट।

कोट (अ. दे.) सं. — कोठी (हिं)।

कोट (क) सं. — बन्दर, कपि, मर्कटा

कोट (क) सं. — बन्दर जैसा व्यवहार करनेवाला; विदूषक, टिडोलिया, भौंड। — उल तन (क) सं. — दिल्ली, परिहास।

कोट (क) सं. — चावल के आटे से बनाया जानेवाला एक नमकीन पदार्थ।

कोट (क) सं. — जलोच्छ्वास, परिवाह, जलमार्ग; कमी, न्यूनता, किसी वस्तु की आवश्यकता; एक राक्षस का नाम।

(१) कोट (क) क्रि — ठंडा हो, ठंडा लग, शीतल हो; काँप, थरथरा, भीत हो। सं. — ठंड, शीतलता; कंपन, भय; पशुओं का सींग, विषाण; शृंग, श्रेणी, चोटी; पेड़ की शाखा, डाल; देन, उपहार, भेंट।

(२) कोट (तद्) सं. — कूट (तत्); जोड़ा — कोट के (सम्) सं. — जुड़े हाथ, दोनों हाथ।

कोट (क) सं. — पश्चिमी हवा, ठंडी हवा।

(१) कोट (क) सं. — महिष, भैंसा।

(२) कोट (सम्) सं. — कोना; छोर नगाड़ा या ढोल बजाने का डंडा; डंडा, छड़ी।

कोट (सम्) सं. — यमराज; निरुक्ति; राक्षस. दैत्य।

कोट (क) सं. — कलश. घड़ा; कमरा, रसोई घर। (तद्) सं. — परिधि की बिंदु।

कोट (तद्) सं. — किला, गढ़।

(१) कोट (क) सं. — एक जाति के लोग जो नीलगिरि में रहते हैं।

(२) कोट (अ. दे.) सं. — कोताह? (फारसी); कमी, न्यूनता।

कोट (क?) सं. — दे. कोट।

कोट (क) सं. — कपि, बंदर, मर्कट।

कोट (क) सं. — हल

चलाना, जोतना, जोताई । कृ. — पिरोकर, गूँथ-कर ।

(१) कौशिक कौटिल्य (सम्) सं. — धनुष, कमान ।

(२) कौशिक कौटिल्य (क) सं. — स्कूल में छात्रों को दंड देने के लिए उनके दोनों हाथ ऊपर की ओर बांधने की रस्सी (प्राचीन काल में छात्रों को ऐसी सजा दी जाती थी) ।

कौशिक कौटिल्य (सम्) सं. — कौटिल्य अनाज ।

कौशिक कोन (तद्) सं. — कोण (तत्) ।

कौशिक कोप (सम्) सं. — क्रोध, रोष, गुस्सा ।

— कृष्ण क्रम (सम्) सं. — क्रोधी पुरुष ।

— गण्ड गति (सम्) सं. — क्रोधी स्त्री ।

— गण्ड गार = कौशिककृष्ण. — ङ्ग ङ्ग सं. — ब्रह्मा की सृष्टि । — ण कोपने = कौशिकगण्ड. — षी शिखि (सम्) सं. — क्रोध रूप अग्नि । — णी (सम्) सं. = कौशिकषी-ष्, ष्ट (सम्) सं. — क्रोधी पुरुष ।

— ष्ट ष्ट (सम्) सं. — क्रोधी स्त्री । — षस इसु (सम्) क्रि. — क्रोध कर, गुस्से में आ ।

कौशिक कोपु (क) सं. — नाटकीय हाव-भाव या अभिनय ।

कौशिक कोमटि (क) सं. — वैश्य, बनिया ; लोभी, कंजूस ।

कौशिक कोमटिग (क) सं. — दे. कौशिक. कौशिक कोमटिगि (क) सं. — वैश्य या बनिया जाति की स्त्री ।

कौशिक कोमटितन (क) सं. — बनिया का पेशा, लालच, लोभ ।

कौशिक कोमल (सम्) वि. — कौशिक कोमल, कौशिक कोमल (तद्) — मृदुल, सुलायम, नरम ; धीरपा, मन्द ; प्रिय, मधुर ; मनोहर, सुन्दर । सं. — पक्कव फल ; जल, पानी । — उते (सम्) सं. — कोमलता, मृदुलता ; मनोहरता ।

कौशिक कोमल (सम्) वि. — कौशिक कोमल, कौशिक कोमल (तद्) — मृदुल, सुलायम, नरम ; धीरपा, मन्द ; प्रिय, मधुर ; मनोहर, सुन्दर । सं. — पक्कव फल ; जल, पानी । — उते (सम्) सं. — कोमलता, मृदुलता ; मनोहरता ।

कौशिक कोमल (सम्) वि. — कौशिक कोमल, कौशिक कोमल (तद्) — मृदुल, सुलायम, नरम ; धीरपा, मन्द ; प्रिय, मधुर ; मनोहर, सुन्दर । सं. — पक्कव फल ; जल, पानी । — उते (सम्) सं. — कोमलता, मृदुलता ; मनोहरता ।

कौशिक कोमल (सम्) वि. — कौशिक कोमल, कौशिक कोमल (तद्) — मृदुल, सुलायम, नरम ; धीरपा, मन्द ; प्रिय, मधुर ; मनोहर, सुन्दर । सं. — पक्कव फल ; जल, पानी । — उते (सम्) सं. — कोमलता, मृदुलता ; मनोहरता ।

कौशिक कोमल (सम्) वि. — कौशिक कोमल, कौशिक कोमल (तद्) — मृदुल, सुलायम, नरम ; धीरपा, मन्द ; प्रिय, मधुर ; मनोहर, सुन्दर । सं. — पक्कव फल ; जल, पानी । — उते (सम्) सं. — कोमलता, मृदुलता ; मनोहरता ।

कौशिक कोमल (सम्) वि. — कौशिक कोमल, कौशिक कोमल (तद्) — मृदुल, सुलायम, नरम ; धीरपा, मन्द ; प्रिय, मधुर ; मनोहर, सुन्दर । सं. — पक्कव फल ; जल, पानी । — उते (सम्) सं. — कोमलता, मृदुलता ; मनोहरता ।

कौशिक कोमलित (सम्) वि. — दे. कौशिक. कौशिक कोमले, कौशिक कोमले (सम्) सं. मृदुल, प्रिय या सुन्दर स्त्री ।

कौशिक कोमु (अ. दे.) सं. — कौम (अरबी) ; जाति, वर्ण, वर्ग ।

कौशिक कोयष्टि. कौशिक कोयष्टिक (सम्) सं. — शिखरी, पानी के ऊपर उड़ने-वाला एक पक्षी ।

कौशिक कोर (तद्) सं. — दे. कौशिक. कौशिक कोरक (सम्) सं. — कली, अधखिला फूल ।

कौशिक कोरगि (सम् ?) सं. — छोटा इला-यची ।

(१) कौशिक कोरडि, कौशिक कोरडा, कौशिक कोरडे (अ. दे.) सं. — चाबुक ।

(२) कौशिक कोरडि (क ?) सं. — रिक्तता, खाली होना, रसहीनता ।

कौशिक कोरदूष (सम्) सं. — दे. कौशिक. कौशिक कोरंब (क ?) सं. — देवता-विग्रहों का सोने या चांदी का मुकुट या किरीट ।

कौशिक कोरयिसु (क) क्रि. — चौंध, चका चौंध उत्पन्न कर, चमक, चमचमा ।

कौशिक कोर (अ. दे.) वि. — नया, नवीन । सं. — सफेद न किया हुआ खादी का कपड़ा ।

कौशिक कोरिंटे (क) सं. — एक प्रकार का सुगंधित तृणविशेष ।

कौशिक कोरु (क ?) सं. — जरी ; प्रांत, प्रदेश ।

कौशिक कोरे (क) सं. — वक्रता, टेढ़ापन, नीचता, दुष्टता ।

कौशिक कोर (क) सं. — दे. कौशिक. कौशिक कोरडि, कौशिक कोरडे (अ. दे.) सं. — दे. कौशिक (१) ।

कौशिक कोरि (क) सं. — छोटा कपड़ा (पुराना) चिथड़ा, लत्ता ।

कौशिक कोरिंके (क) सं. — इच्छा, कामना, अभिलाषा ।

कौशिक कोरु (क) क्रि. — इच्छा कर, कामना कर ; माँग ; विचार कर । सं. — भाग, अंश, खण्ड, हिस्सा ।

कौशिक कोरे (क) सं. — काटना ; नुकिलापन, तीक्ष्णता ; दौत, बाहर निकला हुआ नुकीला दौत ; दौत की जड़ ।

कौशिक कोर्टु (अ. दे.) सं. — Court (अंग्रेजी) ; अदालत, न्यायालय ।

कौशिक कोल्, कौशिक कोलु (क) सं. — लड़ी, डंडा, छडी, दण्ड ; (मापने का दण्ड (माप-दण्ड) ; बाण, तीर ; ऊँचाई, उच्चता, दीर्घ होना ; लट्ठों का वेड़ा ।

(१) कौशिक कोल (क) सं. — गहना, आभरण, आभूषण ; रंग, रूप-रंग, पोशाक ; उत्सव, जलसा ।

(२) कौशिक कोल (सम्) सं. — वेड़ा, नाव ; शूकर, सुअर ; उन्नाव, फेनिल ; एक प्रकार का आयुध ।

कौशिक कोलक (सम्) सं. — एक सुगन्ध द्रव्य ; काली मिर्च ।

कौशिक कोलदल (सम्) सं. — एक सुगंध द्रव्य ।

कौशिक कोलंबक (सम्) सं. — वीणा का ढाँचा ।

कौशिक कोलाट (क) सं. — डण्डों का खेल ; बाण चलाकर युद्ध करना ।

कौशिक कोलार (क) वि. — देशीय ; नीव, निम्न जाति या नस्ल का । — षी, तद्दु = निम्न जाति का घोड़ा ।

कौशिक कोलाहल (सम्) सं. — शोरगुल, हल्ला, चिलाहट ।

कौशिक कोलि (क) सं. — बाजरे का ढंडा (फसल काटने के बचा अंश) । (सम्) सं. — बेर, उन्नाव ।

कौशिक कोलु (क) सं. — दे. कौशिक. कौशिक कोलुकार (क) सं. — दरवान, द्वारपाल, सेवक ।

कौशिक कोले (सम्) सं. — बेर ; पीपल ।

कौशिक कोव (क) सं. — एक जाति के लोग ; कुम्हार ।

कौशिक कोवण (तद्) सं. — कौपीन (तत्) ; लंगोटी ।

कौटिल्य की वरि (क) सं.—संभ्रम, औत्सुक्य ; गड़बड़ी ।

कौटिल्य की वरि (क) सं.—नाली, नली ; बेंसी, बांसुरी ; बन्दूक ।

कौटिल्य की वरि (सम्) वि.—पंडित, चतुर, बुद्धिमान, विद्वान् (कौटिल्य की वरि — स्त्री. लिं.) । कौटिल्य की वरि = पांडित्य, विद्वत्ता ।

कौटिल्य की वरि (सम्) सं.—एक वृक्ष विशेष. लाल कचनार ।

कौटिल्य की वरि (क) सं.—अजीर्ण, मंदाग्नि ; बच्चों के सिर पर होनेवाला फोड़ा ; एक वृक्ष विशेष ; धातु गलाने की धरिया, तैजसाव-तिनी ।

कौटिल्य की वरि (अ. दे.) सं.—खोवा, दूध-पेड़ । कौटिल्य कोश, कौटिल्य कोष (सम्) सं.—

कठौती, दोहनी, बाल्टी, डोलची, कोई भी पात्र, भांडार. घर, भांडार, खजाना, धनागार ; धन ; संपत्ति, दौलत ; शब्दार्थ संग्रह ; कली, अधखिला फूल ; कर्णिका, फल की गुठली ; सोना, चाँदी ; छीमी, फली, बौड़ी ; जायफल सुपारी ; एक देश का नाम ; रेशम का कोका ; योनि, गर्भा-शय ; अंडा ; लिंग, पुरुष-जननेन्द्रिय ; गोला, गेंद ; वेदांत में वर्णित अन्नमय कोश आदि ; काव्य में एक प्रकार की अभि-व्यक्ति ; मारना, हत्या । — गृह गृह (सम्) सं.—वह स्थान जहाँ मूल्यवान वस्तुएँ रखी जाती हैं, खजाना, धनागार । — फल (सम्) सं.—एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।

कौटिल्य की वरि (सम्) सं.— एक प्रकार का कीरा या कद्दू ।

कौटिल्य की वरि (सम्) सं.—बीजकोश, बोड़ी, फली ।

कौटिल्य की वरि (सम्) सं.—गिलास, एक प्रकार का जलपात्र ।

कौटिल्य कोष (सम्) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोष्ठ (सम्) सं.—शरीर का भीतरी

भाग—पेट, फेफड़ा आदि ; मेदा, पेड़ ; कमरा ; अन्नभांडार ; एक वृक्ष विशेष ; = कृष्ण कुष्ठ—एक रोग ; हिसाब में सम चतुर्भुज ।

कौटिल्य कोष्ठक (सम्) सं.—अनाज का भण्डार, भण्डारी ; हाता, हाते की दीवार ।

कौटिल्य कोष्ठगार (सम्) सं.—भाण्डार, खजाना ।

कौटिल्य कोष्ण (सम्) वि.—गुनगुना, थोड़ा गरम ।

कौटिल्य कोसके, कौटिल्य कोसर, कौटिल्य कोस्कर, कौटिल्य गोस्कर (क) अ.—के लिए, के वास्ते, (को) ।

कौटिल्य कोसगे (क) अ.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोसल, कौटिल्य कोशल (सम्) सं.—देश का नाम और उनके निवासी ।

(१) कौटिल्य कोसु (क) क्रि.—(सुई में) धागा लगा या पिरो । सं.—वक्रता, टेढ़ापन ।

(२) कौटिल्य कोसु (?) सं—गोभी । (तद्) सं.—क्रोशः (तत्) ; तीन या चार मील का अंतर, दूरी ।

कौटिल्य कोसुमरि, कौटिल्य कोसुम्बरी (सम् ?) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोसुंबरी, कौटिल्य कोसुंबरी (क) सं.—मूँग की दाल या चने की दाल पानी में भिगोकर उसमें नारियल, हरि-मिर्च नमक आदि मिलाकर तैयार किया हुआ एक खाद्यपदार्थ ।

कौटिल्य कोस्कर (क) अ. दे.—कौटिल्य.

कौटिल्य कोहल, कौटिल्य कोहले (सम्) सं.—काहिली, एक वाद्य विशेष ।

कौटिल्य कोहु (क) सं.—क्रमिक पंक्ति या कतार ।

कौटिल्य कोळ (क) सं.—पकड़ना, छीनना, लटटना, लट, लट-मार ; शिकार, लट का माल ; विनाश ; आक्षेप, झूठा अभियोग, निंदा ।

कौटिल्य कोळ (क) सं.—बेड़ी, धरन-बंधन ।

कौटिल्य कोळहलिके (तद्) सं—कोला हल (तत्) ।

कौटिल्य कोळि (क) सं.—एक चढ़नेवाली लता जिसके फूल लाल या पीले होते हैं ।

कौटिल्य कोळु (क) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोळ (क) सं.—पशुओं का सींग, विषाण ; श्रेणी, चोटी ।

कौटिल्य कोळि (क) सं.—सुर्गी, सुर्गा, ताम्र-चूड़ ।

कौटिल्य कोळे (क) सं.—कफ, सर्दी ।

कौटिल्य कौकुटिक (सम्) सं.—चिड़ीमार ; वह साधु जो चलते समय ज़मीन की ओर दृष्टि रखता है ता कि कोई जीव उसके पैर से न कुचल जाय ; दुग्धी, पाखण्डी ।

कौटिल्य कौक्षेयक (सम्) सं.—तलवार ।

कौटिल्य कौटक्ष (सम्) सं.—स्वतंत्र रूप से अपने घर में काम करनेवाला बड़ई ।

कौटिल्य कौटवि (सम्) सं.—नंगी स्त्री ।

कौटिल्य कौटिक (सम्) सं.—चिड़ीमार, जाल में फँसानेवाला, कसाई, अधिक, छलिया, डग ।

कौटिल्य कौटिल्य (सम्) सं.—चाणक्य का नाम ; कुटिलता, दुष्टता, बेईमानी, जाल, छल ।

कौटिल्य कौटिल्यते (सम्) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिन्य (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम ।

कौटिल्य कौतुक (सम्) सं.—अभिलाषा, इच्छा, चाह ; कौतूहलोत्पादक कोई वस्तु, औत्सुक्य, आश्चर्य, कौतूहल ; हर्ष, आनंद, प्रसन्नता ; विवाह में एक विधि विशेष, महोत्सव, उत्सव, शुभ उत्सव ।

कौटिल्य कौतूहल (सम्) सं—अभिलाषा, जिज्ञासा, औत्सुक्य, आश्चर्य, कौतूहलो-त्पादक वस्तु ।

कौटिल्य कौधर्म (सम्) सं.—बुरा धर्म या आचरण ।

कौटिल्य कौंति (सम्) सं.—एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।

कौटिल्य कौंतिक (सम्) सं.—भाला धारण किया हुआ थोड़ा ।

००३९००० कौतेय (सम्) सं.—कुंती का पुत्र ; धर्मराज, भीम और अर्जुन ।
 ००३९००० कौपीन (सम्) सं.—गुह्य, गुप्तांग ; लंगोटी ; पाप या अनुचित कर्म ।
 ००३९००० कौवेरि (सम्) सं.—उत्तर दिशा ।
 ००३९००० कौमारि (सम्) सं.—सप्त मातृकाओं में एक ।
 ००३९००० कौमुदि (सम्) सं.—चंद्रिका, चाँदनी ।
 ००३९००० कौमोदकि (सम्) सं.—विष्णु की गदा का नाम ।
 ००३९००० कौरव (सम्) सं.—कुरु के वंशज, विशेषतः धृतराष्ट्र के पुत्र ।
 ००३९००० कौरवारि (सम्) सं.—कौरवों का शत्रु, भीम ।
 ००३९००० कौलकेय (सम्) सं.—छिनाल का वेटा, वर्णसंकर ।
 ००३९००० कौलटिनेय (सम्) सं.—सती भिक्षुकी का लड़का ; वर्णसंकर ।
 ००३९००० कौलटेय (सम्) सं.—सती या असती भिखारिन का पुत्र ।
 ००३९००० कौलिक (सम्) सं.—कोरी, जुलाहा ; दंभी, पाखण्डी ; वाममार्गी ।
 ००३९००० कौलीन (सम्) सं.—सत्कुल का पुरुष, सत्कुलीन ; लोकापवाद-कांचनवाद ; रोगी, बीमार ; काला-काजल ; युद्ध, लड़ाई, पशुओं की लड़ाई, मुर्गों की लड़ाई ।
 ००३९००० कौलु (अ. दे.) सं.—कौल (अरबी) ; स्वीकृति, संधि, सुलह ।
 ००३९००० कौलेय (सम्) सं.—सत्कुलप्रसूत ; कुत्ता ।
 ००३९००० कौवेरि (सम्) सं.—उत्तर दिशा ।
 ००३९००० कौशल, कौशल्य (सम्) सं.—प्रसन्नता, समृद्धि, निपुणता, चतुरता ।
 ००३९००० कौशिक (सम्) सं.—इंद्र ; विश्वामित्र का नाम ; सर्पोपजीवी, सपैला ; उल्लू ; गूगल ; न्योला ; अद्भुत, आश्चर्य ; साँप का मुख ।
 ००३९००० कौशिके (सम्) सं.—प्याला, कटोरा ।

कौसल्ये, कौसले (सम्) सं.—दशरथ की बड़ी रानी और राम की माता ।
 कौसलेय (सम्) सं.—राम ।
 कौसीद्य (सम्) सं.—सुस्ती, अकर्म-ण्यता ।
 कौसृतिक (सम्) सं.—जादूगार ; छलिया ।
 कौस्तुभ (सम्) सं.—विष्णु के चक्षस्थल पर धारण करने की मणि ।
 कौलिक (तद्) सं.—कौटिक (तद्) ; कसाई ।
 ककच (सम्) सं.—आरा ।
 ककचे (सम्) एक पौधा विशेष (The tree pandanus odoratissimus) ।
 ककण, ककर (सम्) सं.—तीतर ; एक पौधा विशेष ।
 ककु (सम्) सं.—यज्ञ, याग ; एक प्रजापति का नाम ; एक विश्वदेव का नाम ; विष्णु की उपाधि ; एक पौधा ।—ककु ध्वंसि (सम्) सं.—शिव ।—ककु पुरुष (सम्) सं.—विष्णु ।
 ककुथ (सम्) सं.—यादवों का एक वंश ।
 ककुथन (सम्) सं.—मारना ; वध, हत्या ।
 ककुद (सम्) सं.—रोदन, रोना, विलाप ।
 ककु क्रम (सम्) सं.—गमन, चलना-फिरना, आगे बढ़ना ; पग, कदम, चरण, पद ; पैर ; अनुष्ठान, आरंभ ; सिलसिला ; तरीका, ढंग ; कर्म, कार्य ; वेद पढ़ने की शैली विशेष ; तैयारी, तत्परता ।
 ककु क्रमण (सम्) सं.—दे. ककु ।
 ककुगत (सम्) वि.—क्रम से आया हुआ ।
 ककु क्रमिसु (सम्) क्रि.—जा, चल, गमन कर, पग रख ।
 ककु क्रमुक (सम्) सं.—सुपारी का पेड़ ; अहत्त का पेड़ ; लाल लोध्र वृक्ष ।

ककु क्रमेणक, ककु क्रमेणक (सम्) सं.—कूट ।
 ककु क्रय (सम्) सं.—खरीद, मूल्य देकर लेना ; कीमत, मूल्य ।—ककु विक्रय = खरीद-फरोख्त ।—ककु विक्रयिक (सम्) सं.—व्यापारी ।
 ककु क्रयिक (सम्) सं.—ग्राहक, खरीदने-वाला ।
 ककु क्रय्य (सम्) वि.—बिकने के लिए, बिकाऊ ।
 ककु क्रय्य (सम्) सं.—मांस, कच्चा मांस ।
 ककु क्रय्याद (सम्) सं.—मांस खाने-वाले जीवजंतु ; राक्षस ।
 ककु क्रय्यक (सम्) सं.—दे. ककु ।
 ककु क्रय्यक (सम्) सं.—एक पौधा विशेष (Vernonia anthelmintica) ।
 ककु क्रिमि (सम्) सं.—कीड़ा ।—ककु (सम्) सं.—कीड़े से उत्पन्न, रेशम ।
 ककु क्रियाकार (सम्) सं.—आपसी समझौता, स्वीकार पत्र ।
 ककु क्रियाखण्डन (सम्) सं.—तोड़ना, टुकड़े करना ।
 ककु क्रियांग (सम्) सं.—नाटक में—प्रवेश-निर्गम आदि ।
 ककु क्रियापद (सम्) सं.—क्रिया (Verb) ।
 ककु क्रियाफल (सम्) सं.—किये हुए कार्य का फल ।
 ककु क्रियालोप (सम्) सं.—धार्मिक कार्यों में कर्तव्य-च्युति ; व्याकरण में क्रिया का अध्याहार ।
 ककु क्रियावंत (सम्) सं.—कर्मठ व्यक्ति, सच्चा आदमी, चरित्रवान् ।
 ककु क्रियावाचक (सम्) सं.—कार्य की अभिव्यक्ति ; क्रियार्थक संज्ञा ।
 ककु क्रियाविशेषण (सम्) सं.—व्याकरण में क्रियाविशेषण (Adverb) ।
 ककु क्रिये (सम्) सं.—कार्य, कृति, कर्म, उद्योग ; क्रिया शब्द का कार्य ; काल, समय ; क्रिया ; संपादन, सफलता ; परि-

श्रम; अभ्यास; साहित्यिक रचना; चिकित्सा; धार्मिक कार्य या कर्म (प्रतिज्ञा); प्रायश्चित्त; श्राद्धकर्म, मृतसंस्कार; पूजन; माध्यम, उपाय, साधन; शिक्षण गान-विद्यादि की जानकारी; कृतज्ञता, उपकार का स्मरण।

कुंक्षुल क्रिष्ण, कुंक्षुल क्रिष्ण (तद्) सं — कृष्ण (तद्)

कुंक्षुल क्रिस्त (अ.दे.) सं.—Christ (अग्रजी); ईसा।—४८ शक=ईसवी।

कुंक्षुल क्रिस्ति (अ.दे.) सं.—ईसाई।

कुंक्षुल क्रीकार (सम्) सं.—हंस की ध्वनि।

कुंक्षुल क्रीडाकुलि (सम्) सं.—जलक्रीडा करने योग्य सरोवर।

कुंक्षुल क्रीडागृह (सम्) सं.—केली का घर, खेलने का स्थान, खास कमरा।

कुंक्षुल क्रीडिसु (सम्) क्रि.—कीडा कर, केली कर, खेल; रमण कर, शृंगार-क्रीडा कर।

कुंक्षुल क्रीडे, कुंक्षुल क्रीडा (सम्) सं.—खेल; केली, रमण।

कुंक्षुल क्रीत (सम्) वि.—खरीदा हुआ। सं.—गोद लिया हुआ या खरीदा हुआ पुत्र।

कुंक्षुल कुंच, कुंक्षुल कुंचु (सम्) सं.—कुरर पक्षी।

कुंक्षुल कुद्ध (सम्) वि.—क्रोध में आया हुआ, गुमैल।

कुंक्षुल कुध (सम्) सं.—क्रोध, कोप, रोष।

कुंक्षुल कुपे (तद्) सं.—कृपा (तद्)।

कुंक्षुल कुष्ट (सम्) सं.—पुकारना, चिल्लाना, चिल्लाहट, रोदन; शोरगुल।

कुंक्षुल कूर (सम्) वि.—निष्ठुर, निर्दय, करुणा-रहित, कठोर; भयंकर, भयावह; उपद्रवी। सं.—बुरा आदमी, दुष्ट, खल, दुर्जन; चोर; कठोरता, सख्ती; एक मृग विशेष; पकाया गया चावल।

कुंक्षुल कूरकर्मि (सम्) सं.—नृशंस कार्य करने वाला, भयंकर पुरुष।

कुंक्षुल कूरास्त्र (सम्) सं.—तीक्ष्ण आयुध-चक्र।

कुंक्षुल क्रेणि (सम्) सं.—खरीदना, खरीद। कुंक्षुल क्रेतव्य = खरीदने योग्य। कुंक्षुल क्रेतु = खरीदनेवाला, ग्राहक। कुंक्षुल क्रेय = कुंक्षुल क्रेतु।

कुंक्षुल क्रोड (सम्) सं.—छाती, वक्षस्थल; शूकर; शनिग्रह।—रुपि (सम्) सं.—विष्णु।—४००० करण (सम्) सं.—भालिंगन, छाती से लगाना।—४००० करिसु (सम्) क्रि.—भालिंगन कर; संक्षिप्त कर, संक्षेप में लिख।

कुंक्षुल क्रोध (सम्) सं.—कोप, गुस्सा, रोष।

कुंक्षुल क्रोधन (सम्) सं.—एक वर्ष का नाम। वि.—क्रुद्ध, रुष्ट।

कुंक्षुल क्रोधि (सम्) सं.—एक वर्ष का नाम। वि.—क्रुद्ध, रुष्ट।

कुंक्षुल क्रोश (सम्) सं.—चीख, चिल्लाहट, चीत्कार, कोलाहल; कोस।—०००० युग (न०) सं.—रो कोत्र।

कुंक्षुल क्रोष्टु (सम्) सं.—सियार; गीदड़।

कुंक्षुल क्रौंच (सम्) सं.—दे. कुंक्षुल।

कुंक्षुल क्रौंचारति, कुंक्षुल क्रौंचारि (सम्)—स्कंद, कार्तिकेय।

कुंक्षुल क्रौर्य (सम्) सं.—कूरता, कठोरता, निष्ठुरता, नृशंसता, भयंकरता।

कुंक्षुल कुम, कुंक्षुल कुमथ, कुंक्षुल कुमथु (सम्) सं.—थकावट, श्रम।

कुंक्षुल कुिन्न (सम्) वि.—गीला, भीगा. तर।

कुंक्षुल कुिलनाक्ष (सम्) सं.—बुंधा।

कुंक्षुल कुिलशित, कुंक्षुल कुिलष्ट (सम्) वि.—पीडित, दुःखी, सताया हुआ, संतप्त, सुर-झाया हुआ; विरोधी, असंगत; कृत्रिम; लज्जित; कठोर, कठिन।

कुंक्षुल कुलीतक (सम्) सं.—मुलेठी (Liquorice)।

कुंक्षुल कुलीतकिके (सम्) सं.—नील का पौधा।

कुंक्षुल कुलीव, कुंक्षुल कुलीव (सम्) सं.—नपुंसक, हिजड़ा; कापुरुष, भीरु।

कुंक्षुल कुलुप्त (सम्) वि.—निर्णीत, निश्चित।

कुंक्षुल कुलेश (सम्) सं.—पीड़ा, कष्ट, दुःख, व्यथा, झंझट।

कुंक्षुल कुलोम (सम्) सं.—फेफड़ा. फुफुस।

कुंक्षुल कुवण (सम्) सं.—स्वर. ध्वनि, झंकार।

कुंक्षुल कुवणकंकण (सम्) सं.—बजने-वाला कंगन।

कुंक्षुल कुवणन (सम्) सं.—कुंक्षुल।

कुंक्षुल कुवथित (सम्) वि.—उबाला हुआ, पकाया हुआ, काढ़ा हुआ।

कुंक्षुल कुवाण (सम्) सं.—दे. कुंक्षुल।

कुंक्षुल क्षण (सम्) सं.—पल; लहमा, ४/१ सेकंड; अवकाश, फुरसत; अवसर, मौका; कर्म, उद्योग; हर्ष, आनंद, संतोष; मध्य, बीच का; पराधीनता।

कुंक्षुल क्षणभस्ति, कुंक्षुल क्षणप्रभे (सम्) सं.—क्षण भर चमकनेवाला, विजली।

कुंक्षुल क्षणदे (सम्) सं.—रांत, निशा।

कुंक्षुल क्षणन (सम्) सं.—घाव करना, चोट करना, मार डालना।

कुंक्षुल क्षणिक (सम्) वि.—पल भर का, दम भर का।

कुंक्षुल क्षणिके (सम्) सं.—विजली, विद्युलता।

कुंक्षुल क्षत (सम्) वि.—घायल, कटा हुआ; भंग किया हुआ, तोड़ा हुआ। सं.—घाव, चोट; चीर, चीरफाड़।—४ ज (सम्) सं.—रक्त, खून; पीव, मवाद।—४ व्रत (सम्) सं.—ब्रह्मचारी।

कुंक्षुल क्षति (सम्) सं.—घाव, चोट; विनाश, काट; हानि।

कुंक्षुल क्षत्र (सम्) सं.—अधिकार, प्रभुता, प्रधानता, शक्ति; क्षत्रिय जाति का पुरुष।—४ धर्म (सम्) सं.—क्षत्रिय का धर्म, बहादुरी, वीरता।

कुंक्षुल क्षत्रिय (सम्) सं.—क्षत्रिय जाति का पुरुष, राजपूत।

कुंक्षुल क्षत्रियाणि (सम्) सं.—क्षत्रियाणि, क्षत्रिय की पत्नी।

ॐ ००० क्षत्रियि, ॐ ००० क्षत्रिये (सम्) सं.—
 दे. ॐ ००००००००.
 ॐ ००० क्षत्र (सम्) सं.— धैर्यवान्, सहनशील;
 विनयी ।
 ॐ ००० क्षपण (सम्) सं.— बौद्ध-भिक्षु; सूतक,
 अशौच ; नाश, निर्वासन ।
 ॐ ००० क्षपणक (सम्) सं.— दे. ॐ ००००.
 ॐ ००० क्षपा, ॐ ००० क्षपे (सम्) सं.— रात,
 रजनी ; हल्दी ।
 ॐ ००० क्षपाकर, ॐ ००० क्षपानाथ (सम्)
 सं.— चंद्रमा ।
 ॐ ००० क्षम (सम्) सं.— धैर्य ; सहनशीलता
 माफी । वि.— उपयुक्त, योग्य, ठीक,
 उचित ।
 ॐ ००० क्षमते (सम्) सं.— क्षमता, योग्यता,
 दक्षता ; उपयुक्तता ।
 ॐ ००० क्षमाप (सम्) सं.— पृथ्वीनाथ,
 राजा ।
 ॐ ००० क्षमापण (सम्) सं.— क्षमा,
 माफी ।
 ॐ ००० क्षमारुह (सम्) सं.— पेड़, वृक्ष ।
 ॐ ००० क्षमियिसु, ॐ ००० क्षमिसु (सम्)
 सं.— माफ़ कर, क्षमा प्रदान कर ।
 ॐ ००० क्षमे, ॐ ००० क्षमा (सम्) सं = ॐ ००००.
 ॐ ००० क्षय (सम्) सं.— क्षयरोग, क्षयी का
 रोग ; हानि, ह्रास, कमी, खराबी ; नाश,
 समाप्ति, अंत । — ॐ ००० पक्ष (सम्) सं.—
 अंधियारा पक्ष ।
 ॐ ००० क्षयिष्णु (सम्) वि.— ह्रास होने-
 वाला, खराब होनेवाला, घटनेवाला ।
 ॐ ००० क्षर (सम्) वि.— पिघला हुआ । सं.—
 जंगम, चर ; पानी ; शरीर ; बादल ।
 ॐ ००० क्षव (सम्) सं.— खोँसी, छींक ; काली
 सरसों ।
 ॐ ००० क्षवथु (सम्) सं.— दे. ॐ ००००.
 ॐ ००० क्षात्र (सम्) वि.— क्षत्रिय संबंधी या
 क्षत्रिय का ।
 ॐ ००० क्षांत, ॐ ००० क्षांति, (सम्) सं.—
 सहनशीलता, क्षमागुण ।
 ॐ ००० क्षाम (सम्) वि.— झुलसा हुआ, जल

हुआ, घटा हुआ, नष्ट किया हुआ, दुबला,
 हल्का, छोटा-थोड़ा, निर्बल । सं.— दुर्ब-
 लता, क्षीणता, अकाल ।
 ॐ ००० क्षार (सम्) वि.— काट करनेवाला,
 जलानेवाला, तेज़. खारा, नमकीन । सं.—
 काला नमक ; रस, सार ; जल, पानी
 शीरा, चोटा, राव, सोड़ा (Soda) ।
 ॐ ००० क्षारक (सम्) सं.— फूल, कली ।
 ॐ ००० क्षारकि (सम्) सं.— एक लता विशेष ।
 ॐ ००० क्षारमृत्तिके (सम्) सं.— खारी
 भूमि या मट्टी ।
 ॐ ००० क्षारांबुधि (सम्) सं.— खारा
 समुद्र ।
 ॐ ००० क्षालन (सम्) सं.— धोना, साफ़
 करना, प्रक्षालन. सफाई ।
 ॐ ००० क्षित (सम्) वि.— घटा हुआ, नष्ट किया
 हुआ, विनष्ट, क्षीण ।
 ॐ ००० क्षिति (सम्) सं.— घर, आवास ; पृथिवी,
 भूमि, मिट्टी । — ॐ ००० कांत (सम्) सं.—
 राजा । — ॐ ००० जे (सम्) सं.— सीता ।
 — ॐ ००० धर (सम्) सं.— पहाड़ । —
 ॐ ००० नाथ, ॐ ००० पति, ॐ ००० पाल,
 ॐ ००० रमण (सम्) सं.— राजा । — ॐ ०००
 रुह (सम्) सं.— पेड़ । — ॐ ००० सुता,
 ॐ ००० सुते (सम्) सं.— सीता ।
 ॐ ००० क्षित्यधिप, ॐ ००० क्षितीश (सम्)
 सं.— राजा ।
 ॐ ००० क्षिप्त (सम्) वि.— फेंका हुआ, छितरा-
 या हुआ, पटका हुआ, त्यागा हुआ, भेजा
 हुआ. निकाला हुआ ।
 ॐ ००० क्षिप्र (सम्) अ.— तेज़ी से, जल्दी,
 शीघ्रता से ।
 ॐ ००० क्षिये (सम्) सं.— घटना, कमी, क्षय,
 हानि, नाश ।
 ॐ ००० क्षीण (सम्) वि.— घटा हुआ, नष्ट किया
 हुआ, दुबला, पतला, विनष्ट, खोया हुआ ;
 घायल ; टूटा हुआ ; थोड़ा, कम ; अधीन
 में आया हुआ ; दरिद्र ; खराब ।
 ॐ ००० क्षीणत्व (सम्) सं.— क्षीणता,
 विनाश ; व्यय घटना, घटना, क्षत होना ।

ॐ ००० क्षीव, ॐ ००० क्षीव (सम्) वि.— उन्ने-
 जित, नशे में चूर ।
 ॐ ००० क्षीर (सम्) सं.— दूध ; पानी ; बादल ।
 ॐ ००० क्षीरके, ॐ ००० क्षीरिके (सम्) सं.—
 दूध से बनायी गई एक मिठाई, खीर ; एक
 पौधा विशेष (The plant Mimusops
 kākūki) ।
 ॐ ००० क्षीरज (सम्) सं.— दही ।
 ॐ ००० क्षीरनीर (सम्) सं.— दूध और
 पानी ; दूध और पानी की तरह एकता ;
 आलिंगन ।
 ॐ ००० क्षीरविकृति (सम्) — जमा हुआ
 दूध ।
 ॐ ००० क्षीरस (सम्) सं.— दूध का सार,
 दूध से बना कोई पदार्थ ।
 ॐ ००० क्षीरसमुद्र, ॐ ००० क्षीराब्धि
 (सम्) सं.— क्षीरसागर, दूध का समुद्र ।
 — ॐ ००० तनये (सम्) सं.— लक्ष्मी ।
 ॐ ००० क्षीरांबुधि, ॐ ००० क्षीरोद
 (सम्) सं = ॐ ००० क्षीरसमुद्र ।
 ॐ ००० क्षुता, ॐ ००० क्षुत् (सम्) सं.— छींक ।
 ॐ ००० क्षुताभिजनन (सम्) सं.— काली
 सरसों ।
 ॐ ००० क्षुत्रपत्र (सम्) सं.— पर्णास, काम-
 कस्तूरी ।
 ॐ ००० क्षुधा (सम्) सं.— भूख । — ॐ ००० बाधे
 (सम्) सं.— भूख के कारण बेचैनी ।
 ॐ ००० क्षुद्र (सम्) वि.— छोटा, विकल छोटा ;
 दरिद्र. गरीब ; कमीना, ओछा, नीच ; लोभी,
 कजूस ; क्रूर, निष्ठुर ।
 ॐ ००० क्षुद्रि (सम्) सं.— कलंकी या मिथ्या-
 निर्दक पुरुष ।
 ॐ ००० क्षुद्रे (सम्) सं.— कर्कशा स्त्री, लंजी
 औरत, रंडी, बेइया ; नाचनेवाली स्त्री,
 अमर ; एक प्रकार की लता ।
 ॐ ००० क्षुद्रत् (सम्) वि.— भूखा ।
 ॐ ००० क्षुध, ॐ ००० क्षुधा, ॐ ००० क्षुत्
 (सम्) सं.— भूख ।
 ॐ ००० क्षुधाभिजनन (सम्) सं.—
 काली सरसों ।

कूटनाड ध्रुवार्त, कूट ध्रुवार्त (सम्) सं.— भूखा ।
 कूट ध्रुवार्त (सम्) सं. = कूट ।
 कूट ध्रुवार्त ध्रुवार्त कूट ध्रुवार्त (सम्) वि.— व्याकुल, भयभीत, कौपता हुआ ; क्रुद्ध ।
 कूट ध्रुवार्त (सम्) सं — छुरा, अस्तुरा ; गौ का खुर ; घोड़े का सुम ; तीर ; एक पौधा ।
 कूट ध्रुवार्त ध्रुवार्त कूट ध्रुवार्त (सम्) सं. — नाई, हज्जाम ।
 कूट ध्रुवार्त ध्रुवार्त (सम्) सं — चाकू, छुरी, कटार ।
 कूट ध्रुवार्त ध्रुवार्त (सम्) वि.— छोटा, लघु ; पतला, दुबला, सूक्ष्म ; कृपण, दीन, गरीब, नीच, क्षुद्र ; कंजूस ; लोभी ; मतिहीन, अल्पमति ; मिथ्यावादी ; छोटा शंख ; किरात, शबर ।
 कूट ध्रुवार्त ध्रुवार्त (सम्) सं.— एक प्रकार का अम्लवेत ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— खेत ; स्थान, जगह, स्थल ; देश, प्रदेश, ज़िला, तीर्थस्थान पत्नी, भार्या ; शरीर ; रेखागणित की एक शक्ति, अंकित क्षेत्र, चित्र ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— क्षेत्रोत्पन्न शरीरोत्पन्न, चारह प्रकार के पुत्रों में से एक ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— चतुर, दक्ष ; आत्मा ; शरीर को जाननेवाला ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्रफल (सम्) सं.— खेत की लंबाई चौड़ाई की माप ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— उछलना, फेंकना, पटकना, फेंक, पटक, भेजना । क क वि.— फेंकनेवाला, पटकने वाला, भेजने-वाला, निर्देश करनेवाला ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— शांति, प्रसन्नता, सुख, चैन, स्वस्थ रहना ; रक्षा ; निर्विघ्नता ; रक्षित ; जो वस्तु पास हो उसका रक्षण ; एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ; स्नेहपूर्वक आलिंगन करना ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— शुभ, मंगलकारी ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— खेतों का समूह ।

कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— भूमि, खेत ; माप विशेष ; एक की संख्या । — कूट ध्रुवार्त जासुत (सम्) सं.— सीता का बेटा ।
 — कूट ध्रुवार्त जा (सम्) सं. — सीता ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— पहाड़, पर्वत ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— राजा, पृथ्वीपति ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— पिसाई, घुटाई ; विभ्रम व्यग्रता ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) वि.— छोटा, बृहत् छोटा ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— हिलना, चलना ; उछलना, उत्तेजन, घबरा-हट उत्पात ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— अटारी, अटा ; बुना हुआ रेशम ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— शहद, मधु ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— रेशमी वस्त्र, बुना, हुआ रेशम ; हवादार अटा, अटारी ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— हज्जामत । — क क (सम्) सं.— नाई, हज्जाम ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— भूमि ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— राजा ; पहाड़, पर्वत ।
 कूट ध्रुवार्त क्षेत्र (सम्) सं.— जहर, विष ।

ख

२० ख — कवर्ग का दूसरा अक्षर । कन्नड-वर्णमाला का सोलहवाँ अक्षर ।
 २० ख (सम्) सं.— आकाश, गगन ; इंद्रिय, बुद्धि ; मन ; ब्रह्मा ; स्वर्ग, क्षेत्र, खेत, अर्गला, ताला ; यति, संन्यासी ; शून्य ; सूना स्थान ; दो की संख्या ।
 २० ख खंकर (सम्) सं.— अलक, लट, धुँघराले बाल ।
 २० ख खंज (सम्) वि.— लंगड़ा, रुका हुआ ।

२० ख खंज (सम्) सं.— खंजन पक्षी ।
 २० ख खंजरि (सम्) सं.— खंजड़ी, चंग ।
 २० ख खंजरीट (सम्) सं.— खंजन पक्षी ।
 २० ख खंड (सम्) सं.— टुकड़ा, भाग, हिस्सा, अंश ; खंड, चीनी ; एक प्रकार का गन्ना ; एक प्रकार का नमक ; भूगोल का भाग ; अर्धचंद्र ।
 २० ख खंडक (सम्) सं.— टुकड़ा भाग, अंश, हिस्सा ।
 २० ख खंडण, २० ख खंडन (सम्) सं.— काटना, तोड़ना, टुकड़े करना ; चोट करना, घायल करना ; विरोध, विमर्जन । — २० ख परशु (सम्) सं.— कुल्हाड़ी से काटना ; शिव, परमेश्वर ; परशुराम ; विनायक, गणेश । — २० ख शशधर (सम्) सं.— अर्धचंद्र । — २० ख शशिशेखर (सम्) सं.— शिव ।
 २० ख खंडक (सम्) सं.— मटर ।
 (१) २० ख खंडित (क) सं.— दृढ़ता, निश्चितता, स्थिरता । अ.— सचमुच, निश्चित रूप से ।
 (२) २० ख खंडित (सम्) वि.— कटा हुआ, टुकड़े किया हुआ, विभक्त ; नष्ट किया हुआ ; हराया हुआ ।
 २० ख खंडिते (सम्) सं.— खंडिता नायिका ; वह स्त्री जिसका पति अन्यत्र रात बिताता हो ।
 २० ख खंडिसु (सम्) क्रि. — काट, टुकड़े कर ; नष्ट कर ; निराश कर ; वाद में हरा ।
 २० ख खंडिसु (तद्) क्रि. — दे. २० ख. २० ख खगत्त (सम्) सं.— आकाश में उड़ना, उड़ान, २० ख खगपति, २० ख खगराज, २० ख खगवल्लभ, २० ख खगेश्वर (सम्) सं. — गरुड ।
 २० ख खगोल (सम्) सं.— आकाशमण्डल, खगोल विद्या, ज्योतिष विद्या ।
 २० ख खचर (सम्) सं.— चिड़िया, पक्षी सूर्य ; गंधर्व ; एक की संख्या । — २० ख

अंगने, ७७७ अक्ले (सम्) सं.— गंधव-
स्त्री ।
०३३ खचित (सम्) वि.— जड़ा हुआ, भरा
हुआ, मिला हुआ ; गड़ा हुआ ; स्थिर, दृढ़,
सच्चा ।
०३४ खजक (सम्) सं.— मथानी ; चँदवा,
आच्छादन ।
०३५ खजव (सम्?) सं.— चँदवा, वितान ।
०३६ खजाके (तद्) सं.— बड़ा चमचा,
करछुल, चमचा ।
०३७ खजांचि (अ. दे.) सं.— खजानची
(फ़ारसी) ; कोपाध्यक्ष ।
०३८ खजाने (अ. दे.) सं.— खजाना
(अरबी) ; कोष, धनागार ।
०३९ खजिके (तद्) सं.— खजाचिका (तत्) ;
चमचा ।
०४० खजिख (तद्) सं.— दे. ७७८.
०४१ खजीने (अ. दे.) सं.— दे. ७७९.
०४२ खज्या, ७७३ खज्या (अ. दे.) सं.—
झगड़ना । — ७७९ खोर = झगड़ा ।
०४३ खट (सम्) सं.— कफ, अंधा कूप ;
टाँकी ; हल ; घास ; खटखट ध्वनि ।
०४४ खटखटाहक (सम्) सं.—
पीकदानी ।
०४५ खटिके (सम्) सं.— ७७८ खटिके
(तद्) — खड़िया, चॉक (Chalk) ।
०४६ खटिक (सम्) सं.— कसाई ; चिड़ीमार,
बहेलिया, शिकारी, खटिक ।
०४७ खट्वांग (सम्) सं.— लकड़ी या
डंडा जिसमें खोपड़ी जड़ी हो — यह शिवजी
का हथियार समझा जाता है । — ७७८ धर
(सम्) सं.— शिव ।
०४८ खट्वा, ७७९ खट्वा, ७८० खट्वा (सम्)
सं.— चारपाई, खाट, सेंज, पलका ; झूला,
हिंडोला ।
०४९ खड (अ. दे.) सं.— कड़ी । (सम्) सं.—
घास विभक्त करना, तोड़ना । (तद्)
सं.— तलवार, खड्ग ।
०५० खड्ग (सम्) सं.— तलवार । — ७८०
पिधान (सम्) सं.— म्यान । — ७८१ फल

(सम्) सं.— तलवार की नोक ।
०५१ खड्गि (सम्) सं.— तलवार धारण किया
हुआ, खड्गधारी ; गौंडा, गण्डक ।
०५२ खड्गमृग (सम्) सं.— गौंडा,
गण्डक ।
०५३ खणि, ७८२ खणिल् (क) सं.— एक
अनुकरणमूलक शब्द ; जोर से, जोर का
शब्द ।
०५४ खतमाल (सम्) सं.— बादल मेघ ;
धुआँ ।
०५५ खतिलक (सम्?) सं.— सूर्य ।
०५६ खदिर् (सम्) सं.— कत्या का वृक्ष ;
इन्द्र : चंद्रमा ।
०५७ खदिरि (?) सं.— छुईं मुई का पौधा ।
०५८ खद्योत (सम्) सं.— पतंग : सूर्य ।
०५९ खनक (सम्) सं.— खोदना ; खोदने-
वाला ; सेंध फोड़नेवाला ; चूहा, घूस ।
०६० खनन (सम्) सं.— खोदना, खुदाई,
गाड़ना ।
०६१ खनि (सम्) सं.— खान ।
०६२ खनिज (सम्) सं.— खनिज ।
०६३ खनित्र (सम्) सं.— फावड़ी, कुदाली ।
०६४ खपुर (सम्) सं.— सुपारी का पेड़ ।
०६५ खप्रवाह (सम्) सं.— गंगा नदी ।
— ७८३ जूट । (सम्) सं.— शिव ।
०६६ खर (सम्) वि.— कड़ा, रूखा, ठोस,
तेज़, तीक्ष्ण, कठोर ; गरम ; खट्टा ; तीखा ।
सं.— गधा ; एक वर्ष (संवत्) का नाम ;
एक राक्षस का नाम । — ७८४ कर (सम्)
सं.— सूर्य ; एक माप विशेष । — ७८५
किरण (सम्) सं.— सूर्य । — ७८६ वैरि (सम्)
सं.— राम ।
०६७ खरणस्, ७८७ खरिस (सम्) सं.—
नुकीली नाकवाला पुरुष ।
०६८ खरसाण (सम्) सं.— तीक्ष्ण या
तेज़ आराधककी ।
०६९ खरारु (अ. दे.) सं.— खरहरा (हिं.),
घोड़े को मलने का खरहरा ।
०७० खरीदि (अ. दे.) सं.— खरीद (फ़ारसी).
खरीदना ।

७८७ खर्चु (अ. दे.) सं.— खर्च (फ़ारसी) ;
व्यय । — ७८८ दार (अ. दे.) सं.— अति-
व्ययी ।
७८९ खर्जूर (सम्) सं.— चाँदी ; हर ;
ताल ; कजूर का पेड़ ।
७९० खर्जूरि (सम्) कृ.— दे. ७८९.
७९१ खर्व (सम्) वि.— अपूर्ण ; ठिंगना ;
छोटा, नीजा । — ७९२ शाखा (सम्) सं.—
ठिंगना ; बौना ।
७९३ खर्वूज (अ. दे.) सं.— खरबूजा
(फ़ारसी) ।
७९४ खल (सम्) सं.— नीच, दुर्जन, दुष्ट ;
खलिहान ; जगह, स्थान ; धूल का ढेर ;
तलछट । — ७९५ करण (सम्) सं.—
अनाज को पीटकर भूसे अलग करने की
क्रिया ।
७९६ खलति (सम्) वि.— गंजा ।
७९७ खलधान्य (सम्) सं.— खलिहान ।
७९८ खलपु (सम्) सं.— झाड़ू, बुहारी ।
७९९ खलीन (सम्) सं.— लगाम ।
८०० खल्लरिक (सम्) सं.— खल्लरिका,
परेड-मैदान जहाँ सेना शस्त्रास्त्र का अभ्यास
करती है ।
८०१ खल्ये, ८०२ खलिनि (सम्) सं.—
खलिहान का समूह ।
८०३ खलवाट (सम्) वि.— गंजा ।
८०४ खखविसु (क) क्रि.— जल,
ज्वलित हो, इच्छा कर, आतुर हो ।
८०५ खस (सम्) सं.— खाज, खुजली ।
८०६ खल (तद्) सं.— दे. ७९४.
८०७ खलग (तद्) सं.— खड्ग (तत्) ; तलवार ;
मादा गौंडा ।
८०८ खल्ले, ८०९ खल्ले (क) अ.—
जोर से, कर्कशाता से ।
८१० खल्लि (क) सं.— एक अनुकरणमूलक
शब्द ।
८११ खलड (सम्) सं.— खड्ग, तलवार ।
८१२ खलडखलडि— महयुद्ध ; तलवारों
से परस्पर लड़ना ।

खाण, खान (अ. दे.) सं.— खाणा, भोजन ।
 खात (सम्) वि.— खुदा हुआ, टूटा हुआ, फटा हुआ । सं.— पुश्करीणी, बड़ा तालाब ।
 खातक (सम्) सं.— खोदनेवाला ; गड़वा, गर्त ।
 खाति, खाते (अ. दे.) सं.— खाता ।
 खाद, खादन (सम्) सं.— खाना, चबाना ।
 खादि (अ. दे.) सं.— खादी, खहर ।
 खादित (सम्) वि.— खाया हुआ ।
 खादिर (सम्) वि.— खदिर या कल्या के वृक्ष से संबंधित ।
 खान (अ. दे.) सं.— खाना ; राजा, राज-कुमार ; नेता, नायक एक उपाधि ।
 खानगि (अ. दे.) वि.— खानगी (फ़ारसी) ; घर से संबंधित, खास, विशेष ।
 खाने (अ. दे.) सं.— स्थान, जगह ; घर ।
 खार, खारि (सम्) सं.— १२ मन या ३२ सेर की अनाज की तौल ।
 खालि (अ. दे.) वि.— खाली (अरबी) ; रिक्त ।
 खास, खामा (अ. दे.) वि.— खासा (अरबी) ।
 खिंकृत (सम्) सं.— बाण प्रयोग के समय उत्पन्न होनेवाली आवाज़ ।
 खिजमत (अ. दे.) सं.— खिदमत (अरबी) ; सेवा । — गार (अ. दे.) सं.— सेवक ।
 खिन्न (सम्) वि.— दुःखी, उदास, संतप्त ।
 खिल (सम्) सं.— बंजर भूमि या मरुभूमि का टुकड़ा ; परिशिष्ट भाग, अतिरिक्त भाग ; खोखलापन ; अविशिष्ट भाग ; खाली स्थान ।
 खिलातु, खिलतु (अ. दे.) सं.— खिताब, पदवी ।

खुद (अ. दे.) सं.— खुदा (फ़ारसी) ; भगवान ।
 खुदु (अ. दे.) वि.— खुद (फ़ारसी) ; स्वयं, आप ।
 खुरणस, खुरणस (सम्) सं.— चपटी नाकवाला ।
 खुरपुट (सम्) सं.— खुर ।
 खुराक (अ. दे.) सं.— खुराक (फ़ारसी) ; भोजन ।
 खुरानु (अ. दे.) सं.— कुरान (अरबी) ।
 खुरासानि (अ. दे.) सं.— घटिया प्रकार का तिल का तेल ।
 खुरास, खुरासु (अ. दे.) सं.— नमस्कार, वंदन ।
 खुलास (अ. दे.) सं.— खुलासा (अरबी) ; स्पष्टता, निर्णय ; रिक्तता, स्वतंत्रता ।
 खुल (सम्) वि.— छोटा, कम, नीचा, छोछा । सं.— असंयमशीलता, क्रोध, रोष । — तन (सम्) सं.— तुच्छता, नीचता ।
 खुषामतु (अ. दे.) सं.— खुशामद (फ़ारसी) ; मिथ्या प्रशंसा, चापल्य ।
 खूनि (अ. दे.) सं.— हथियारा, मार डालनेवाला ।
 खेचर (सम्) सं.— आकाशगामी, खग, पक्षी ; गंधर्व ।
 खेट (सम्) (सम्) सं.— कफ़ गाँव, छोटा शहर ; बलराम का मूसल ; घोड़ा ; शिकार, आखेट । वि.— खराब, नीच, तुच्छ ।
 खेटक (सम्) सं.— गाँव ; ढाल ।
 खेटन (सम्) सं.— शिकार, आखेट ।
 खेड (सम्) सं.— गाँव ; भयभीत पुरुष ।
 खेडेय, खेड्य (तद्) सं.— ढाल ।
 खेद (सम्) सं.— दुःख, पीड़ा, शोक, उदासी, निराशा, शिथिलता, सुस्ती, थकावट ;

घोड़े का हिनहिनाना ; सिंह गर्जन ; वाँस ; विष, जहर । वि.— छोटा, अल्प । — खंडन विडंबन (सम्) सं.— दुःख की अभिव्यक्ति । — इसु (सम्) क्रि.— दुःख कर, शोक कर ।
 खेपु (अ. दे.) सं.— एक बार, एक दफ़े ।
 खेय (सम्) सं.— पुल ; खाई ।
 खेलन, खेले (सम्) सं.— कीड़ा, खेल ।
 खेले (सम्) सं.— खिलाड़ी ; मलबार का आदमी ।
 खैर (अ. दे.) सं.— खैर (फ़ारसी) कुशल-क्षेम, अच्छाई, हित ।
 खोप्परिसु (क) क्रि.— मार, पीटा ; कुचला जा, पीटा जा ; अधीन में हो ।
 खो (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ; लड़ते समय किया जानेवाला खो शब्द ।
 खोजा (अ. दे.) सं.— खोजा (फ़ारसी) ; हिजड़ा, नपुंसक ।
 खोड, खोल (सम्) सं.— लंगड़ा, लला ।
 खोलि (सम्) सं.— तरकस, तूणीर ।
 ख्यात (सम्) वि.— जाना हुआ, कीर्तिमान, मशहूर, उक्त, कहा हुआ, प्रसिद्ध ।
 ख्याति (सम्) सं.— प्रसिद्धि, यश, कीर्ति ; गौरव, पदवी, उपाधि ; वर्णन, प्रशंसा ।

गं ग

गं ग—कन्नड-वर्णमाला का सत्रहवाँ अक्षर । कवर्ग का तीसरा अक्षर ।
 गं ग (सम्) वि.— (समास में पीछे आता है) —जानेवाला, होनेवाला, ठहरनेवाला, रहनेवाला, मैथुन करनेवाला । सं.—संगीत में तीसरा स्वर 'गांधार' ; तीन की संख्या ।
 (१) गं गं (सम्) सं.—गीत, भजन ।
 (२) गं गं (क) अ.—तक, पर्यंत ।

(१) गोवंश गण, गोवंश गणिक, गोवंश गणो (क) सं. = गोवंशगण गणदोगलु, गोवंश गण गणिकदोगलु, गोवंशगण गणदोगलु —(गाय या) बैल के गले के नीचे का लटकता हुआ झालरदार मांस ।
 (२) गोवं (सम्) सं. —कर्नाटक के एक राजवंश का नाम ।
 गोवंशिक गणिकार [गण कार] (क) सं. —शूद्रों की एक शाखा (जाति) का नाम ।
 गोवंश गण गण गण, गण गण, गण गण, गण गण (क) सं. —चाँदी या पीतल का बड़ा छल्ला जिसको हिलाने पर 'क्षण-क्षण' आवाज़ निकलती है ।
 गोवंश गणल (तद्) सं. —गंगा (तत्) ।
 गोवंश गणल, गोवंश गणल (अ. दे. ?) सं. —गंगाल (हिं), बड़ा जलपात्र, बड़ा बर्तन; थाली ।
 गोवंश गणा, गोवंश गणे (सम्) सं. — गंगा नदी; शिवजी की पत्नी; सत्यवती का नाम ।
 गोवंश गणल गणल, गोवंश गणल, गोवंश गणल गणल, गोवंश गणल गणल, गोवंश गणल गणल (सम्) सं. — शिवजी ।
 गोवंश गणल गणल, गोवंश गणल गणल, गोवंश गणल गणल (सम्) सं. — गंगाजल ।
 गोवंश गणल गणल (सम्) सं. — शिव ।
 गोवंश गणल गणल (सम्) सं. — गांगेय, भीष्म ।
 गोवंश गणल (अ. दे.) सं. — दे. गोवंश ।
 गोवंश गणिक (क) सं. — दे. गोवंश ।
 गोवंश गणे (तद्) सं. — दे. गोवंश (क) सं. = दे. गोवंश ।
 गोवंश गणिक (सम्) सं. — गंगोत्री, गंगाजी के निकलने का स्थान ।

गोवंश गणिक (सम्) सं. — दे. गोवंश गणिक ।
 गोवंश गणिक (तद्) सं. — कांजिकम् (तत्); काँजी ।
 गोवंश गण, गोवंश गण (सम्) सं. — खान; खजाना भण्डार; गोशाला; गंज; अनाज की मण्डी; शराबखाना ।
 गोवंश गणिक, गोवंश गणिक (क) सं. — झाड़ी, पौधा, लता ।
 गोवंश गणिक, गोवंश गणिक (क) सं. — एक सुगंधित तृण विशेष, सौगंधिका ।
 गोवंश गणल, गोवंश गणल (क) सं. — गाय, बैल, घोड़े, हाथी, गधे, भेड़ बकरी का मूत्र या पेशाब (मै. प्र.) ।
 गोवंश गणल (क) सं. — दे. गोवंश ।
 गोवंश गणल (तद्) सं. — दे. गोवंश; पटुआ ।
 गोवंश गणिक (क) सं. — दे. गोवंश ।
 गोवंश गणल (अ. दे.) सं. — गंजीफा (फारसी) ।
 गोवंश गणल (तद्) सं. — शराबखाना; खान; भण्डार, खजाना ।
 गोवंश गणल (क) अ. — तक, तलक (ग्रा.) ।
 गोवंश गणल (तद्) सं. — छोटी गाँठ, छोटा बंडल ।
 गोवंश गणल, गोवंश गणल, गोवंश गणल, गोवंश गणल (क) सं. — गला ।
 गोवंश गणल (क) सं. — छोटा कर्णाभरण ।
 गोवंश गणल (क) सं. — गुच्छा, कुंज ।
 गोवंश गणल (क) सं. — एक पौधा विशेष ।
 गोवंश गणल (तद्) सं. — ग्रंथि (तत्); गाँठ, रस्सी की गाँठ, कपड़े की गाँठ आदि; गुमड़ी, गुमड़ा; बेंत, बाँस या नरकल के पेरुओं की गाँठ या जोड़; जोड़ा, बंधन, बंडल (bundle); धन, संपत्ति, पूंजी ।
 — असे, (तद्) सं. — धनी होने की कामना; — असे, इक्कु (तद्) क्रि — गाँठ बांध, बांध । — असे, क्रोयक, गोवंश गणल (तद्) सं. — गिरहकट, दूसरे की रुपये-पैसे की थैली चुरानेवाला । — असे, क्रोयके, गोवंश गणल = दूसरे की रुपये,

पैसे की थैली चुरानेवाली स्त्री । — असे, बीलु (क) क्रि. — गाँठ पड़, ग्रंथि लग, जुड़; मित्रता हो, एक दूसरे के साथ संबंध हो, अनुचित रूप से साथ लग; मेल, अनुरूपता ।
 (१) गोवंश गणल (क) सं. — कन्द-मूल ।
 (२) गोवंश गणल (तद्) सं. — घण्टा (तत्); घण्टी, घड़ियाल; घंटा, बजे ।
 गोवंश गणल (क) सं. — दे. गोवंश ।
 (१) गोवंश गणल (क) सं. — दृढकाय, शक्तिमान, समर्थ पुरुष; पति; रमण, कांत, प्रियतम; = गोवंश गणल — मोटापन; शक्ति. सामर्थ्य; महानता । — असे, असे (क) सं. — पति-पत्नी, दंपती । — असे, असे, असे असे असे असे असे (क) सं. — दंपती, पति-पत्नी ।
 (२) गोवंश गणल (सम्) सं. — गाल; हाथी की कनपुटी; बुदबुद, बबूला, बुला; फोड़ा, सूजन; गुमड़ा, गिल्टी; कोई बीमारी, गाँठ, जोड़ा; दाग, धब्बा; वीर, योद्धा, नेता, नायक, सर्वोत्तम; गैडा; मूत्र-स्थाली; योग का एक प्रकार ।
 गोवंश गणल (क ?) सं. — हिजड़ा, नपुंसक ।
 गोवंश गणल (सम्) सं. — गैडा ।
 गोवंश गणल गणल, गोवंश गणल गणल (सम् ?) सं. — छुई सुई का पौधा ।
 गोवंश गणल, गोवंश गणल गणल (सम्) सं. — एक नदी का नाम ।
 गोवंश गणल गणल (क) सं. — पुरुष की वेश-भूषा, पौरुष, वीरता ।
 गोवंश गणल गणल गणल (क ?) सं. — दो सिर-वाला एक पक्षी, मैसूर-राजाओं के ध्वज पर इमका चिह्न देखा जा सकता है ।
 गोवंश गणल गणल (क) सं. — हरिन की एक जाति ।
 गोवंश गणल गणल (सम्) सं. — पहाड़ से गिरी शिला या चट्टान ।
 गोवंश गणल, गोवंश गणल, गोवंश गणल, गोवंश गणल (क) सं. — पुरुष, मर्द ।
 असे तन (क) सं. — पुरुषता, पौरुष ।

गठं गक्कु

गठं गक्कु गठस्थल (सम्) सं. — गाल ; हाथी की कनपुटी ।
 गठं गठं गठं गठं गठं (क) सं. — अव्यवस्था ; अन्यायपूर्ण कलह, छीना-झपटी ; निर्लज्जता. दिखाई ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — वीर, बहादुर, योद्धा ।
 गठं गठं गठं गठं (रगम्) सं. — संकट, विपदा, खतरा ; दुर्भाग्य ; रोग ।
 गठं गठं (क) सं. — चुंगी वसूल करनेवाला ; किले की पगडण्डी ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — वीरता, पराक्रम ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — वीर पुरुष, बहादुर, योद्धा ।
 गठं गठं (क) सं. — पुरुषता, पौरुष, साहस, वीरता, दृढ़ता ; शक्ति, सामर्थ्य पुरुष. आदमी, नर ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — पराक्रमी होना, पराक्रम; बहादुरी ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — दे. गठं गठं ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — कीट विशेष ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — सुँह भर, अंजली भर ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — नर कृष्णमृग, काला हिरन ।
 गठं गठं (तद्) सं. — ग्रंथि (तत्) ।
 गठं गठं (सम्) सं. — रास्ता, मार्ग, पथिक । वि. — हिलनेवाला, लटकनेवाला, नाचनेवाला ।
 गठं गठं (सम्) वि. — जानेवाला ।
 गठं गठं (सम्) सं. — बैलगाड़ी ।
 गठं गठं (तद्) सं. — गंध (तत्) ।
 गठं गठं गठं गठं (तद्) सं. — गंधर्व (तत्) ।
 गठं गठं गठं गठं (तद्) सं. — ग्रंथि (तत्) ; फोड़ा, सूजन ।
 गठं गठं गठं गठं (तद्) सं. — सुगंध द्रव्य बेचनेवाला ; कुटना; नेत्र-चिकित्सा करनेवाला, नेत्र-वैद्य ।

गठं गठं गठं गठं (तद्) सं. — ग्रंथिका (तद्) ; — गठं गठं गठं गठं (क) सं. — दवाई की दूकान ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — वृ. वास ; सुगंध द्रव्य, गंधक ; घिसा हुआ चन्दन ; शिला, पत्थर ; संबन्ध, रिश्ता ; पडोस ; अहंकार, गर्व ; चन्दन) — कठु (तत्) सं. — ऊदवती, अगरवती ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — गंधक (Sulphur) — कठु घृति (सम्) सं. — गन्धक से निकला हुआ अम्ल पदार्थ (Sulphuric acid) ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — आँवा हल्दी, करकचूर ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — सुगन्धित कस्तूरी या मुश्क ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — वह स्त्री जो सुगंधद्रव्य बनाते के लिए नियुक्त हो ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — चंदन का तेल ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — सौरभ, परिमल ; उत्साह ; प्रकाश, प्राकट्य ; किसी बात को बतलाना, समाचार ; संतोष. आनन्द ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — एक पौधा विशेष ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — दवाई में उपयोगी एक पौधा ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — एक पहाड़ का नाम जो रामेश्वरम में है ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — सुश्क बिल्ली, कस्तूरी मृग ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — गंधमूषि, गंधमूषिके (सम्) सं. — छछून्दर ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — बोल, लोहवान ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — देवताओं के गायक ; गवैया ; घोड़ा ; कस्तूरीमृग मृत्यु के बाद और जन्म के पूर्व की जीव की दशा ; काली कौयल ; एक प्रकार का अमर ; सूर्य ; पत्नी ; सुंदरी स्त्री । —

गठं गठं (सम्) सं. — गंधर्व स्त्री । — कठु हस्तक (सम्) सं. — एण्डी का पौधा ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — भूमि, पृथिवी ; एक प्रकार की जुंही ; व्यास जी की माता का नाम ; एक नगर का नाम ; गंधक ; एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — पवन, हवा ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — नाक, नासिका ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — काला नमक ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — चंदन ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — छछूंदर ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — गंधक ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) वि. — वह जिसमें वृ हो, गंध युक्त ; सुगंधित, सुवासित ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — गंधक ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — गठं गठं गठं गठं (तद्) — वरट, हटा ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — परिमल, सुगंध, खुशबू ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — टोकरा, टोकरा ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — एक वृक्ष का नाम ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) वि. — गहरा ; गाढ़ा ; सघन, घना ; प्रगाढ़ ; अगाध ; विलक्षण ; गुप्त, दृढतर । — उते (सम्) सं. — गहराई आदि ।
 गठं गठं गठं गठं (सम्) सं. — एक नदी का नाम ।
 गठं गठं गठं गठं (तद्) सं. — गह्वर (तत्) ।
 गठं गठं गठं गठं (क) अ. — अत्यधिक अंधकार पूर्ण (या के साथ) ।
 गठं गठं गठं गठं (क) अ. — शीघ्र, तुरंत ; हठात् ।
 गठं गठं गठं गठं (क) सं. — एक प्रकार का सारस पक्षी ।

गणेश गण, गणेश गगन (सम्) सं. — आकाश, आसमान, अंतरिक्ष, शून्य ।
 गणेशगण गगनगंगे (सम्) सं. — आकाश गंगा ।
 गणेशचर गगनचर (सम्) सं. — पक्षी; ग्रह; स्वर्गीय आत्मा; गंधर्व । गणेशचरि = गंधर्व-स्त्री ।
 गणेशचक्र गगनचाप (सम्) सं. — इंद्रधनुष ।
 गणेशमण्डल गगनमणि (सम्) सं. — सूर्य ।
 गणेश गगगर, गणेश गगगरि (क) सं. — दे. गणेश ।
 गणेश गग (क) वि. — मूढ़, मूर्ख, बेवकूफ ।
 गणेश गगु (क) सं. — अरुचि, असह्यता (जलते हुए तेल की दुर्गंध) ।
 गणेश गग (क) सं. — दे. गणेश ।
 गणेश गगण गगण्ये (क) सं. — वार्निश, चमक ।
 गणेश गगचु (अ. दे.) सं. — गच (हिं); गारा, सिमेंट, चूना ।
 गणेश गगच (सम्) — वृक्ष; अंकगणित का एक पारिभाषिक शब्द ।
 (१) गणेश गग (क) सं. — एक अनुकरणमूलक शब्द । — गणेश गग = कोलाहल । शोरगुल ।
 (२) गणेश गग (सम्) सं. — हाथी; दिग्गज; एक राक्षस का नाम; आठ की संख्या ।
 (३) गणेश गग (अ. दे.) सं. — लम्बाई मापने की माप विशेष जो दो हाथ की होती है, तीन फीट ('गज' — फ़ारसी) ।
 गणेश गगचक्र (सम्) सं. — हाथी का आहार ।
 गणेश गगकर्ण (सम्) सं. — दाद ।
 गणेश गगकर्णिके (सम्) सं. — एक पौधे का नाम ।
 गणेश गगग, गणेश गगगु, गणेश गगगि, गणेश गगगि, गणेश गगगि, गणेश गगगि, गणेश गगगि, गणेश गगगि (क) सं. — एक वृक्ष विशेष जिसके बीज लड़कों के खेलने की गोली के रूप में उपयोगी होते हैं (The Molucca bean or Guilandia bonducella Lin) ।

गणेशगण गगगमन (सम्) सं. — इन्द्र ।
 गणेशगण गगगमने गगगगग गगगगगि (सम्) सं. — हाथी जैसी चाल से चलने-वाली स्त्री ।
 गणेशगण गगगगग गगगगगगग, गणेशगण गगगगग गगगगगगग (सम्) सं. — शिवजी ।
 गणेशगण गगगगग, गणेशगण गगगगग (सम्) सं. — महावत ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — गजता, हाथियों का समूह ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — हाथी का दाँत; गणेशजी ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — हाथी का मद, हाथी का दान ।
 गणेशगण गगगगग (सम्) सं. — गजासुर ।
 गणेशगण गगगग (क) सं. — वह खेत जहाँ धान की बहुत कम उपज होती है ।
 गणेशगण गगगग; गणेशगण गगगगग (सम्) सं. — हस्तिनापुर, दिल्ली ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — अनुप्रास का एक भेद ।
 गणेशगण गगगग, गणेशगण गगगग (सम्) सं. — एक सुगंधित गोंद (Boswellia Serrata) ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — गजशाला, हाथियों को बांधने का स्थान ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — दे. गणेशगण ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — गणेश ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — गपशप, थोथी बात ।
 गणेशगण गगगग, गणेशगण गगगग (क) सं. — चिल्लाहट, रोषपूर्ण ध्वनि या बात । क्रि. — जोर से बोल, चिल्ला; गाली दे ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — गणेश ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — सिंह, शेर ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — हाथियों की टोली; आठ की संख्या ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — आठ की संख्या ।

गणेशगण गगगग (सम्) सं. — हाथियों को बांधने का स्थान ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — गजाख्य; मोटी दालचीनी या तेजपात का पौधा ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — गणेश ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — सिंह, शेर ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — सिंह; शिवजी ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — महावत ।
 गणेशगण गगगग (क?) सं. — गपशप, निरर्थक बातचीत । — गगग गगग = गपशप करने वाली स्त्री । — गगग गगग = गपशप करने-वाला पुरुष ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — विनायक, गणेश ।
 गणेशगण गगगग (क) सं. — भ्रम, अंति, अव्यवस्था, उलझन ।
 गणेशगण गगगग, गणेशगण गगगग, गणेशगण गगगग (क) सं. — दे. गणेश ।
 गणेशगण गगगग (सम्) सं. — हाथियों की टोली ।
 गणेशगण गगगग (अ. दे.) सं. — गाजर (हि.) ।
 गणेशगण गगगग (क) सं. — खुजली, खुजलन ।
 गणेशगण गगगग (क) — दे. गणेश ।
 गणेशगण गगगग (क) सं. — दुर्गंधमय मोरी का पानी ।
 गणेशगण गगगग (क) सं. — दे. गणेश ।
 गणेशगण गगगग (क) सं. — घुँघरू ।
 गणेशगण गग (तद्) सं. — घट (तद्); घड़ा ।
 गणेशगण गग (तद्) सं. — घटक (तद्); शक्ति-मान या समर्थ पुरुष ।
 गणेशगण गग (तद्) सं. — घटिका (तद्); गाढ़ा होना, घना होना, जमा होना; कठोरता ।
 गणेशगण गग (क) सं. — झगडाहट और गाली देनेवाली स्त्री ।
 गणेशगण गग (तद्) सं. — घट्ट; (तद्); घाट ।
 गणेशगण गग (तद्) सं. — घट्टना (तद्); हिलाना; घना या गाढ़ा करना; मारना, पीटना ।
 गणेशगण गग (क) वि. — बलवान्, दृढ़, स्थिर । सं. — स्थिरता, कड़ापन, गाढ़ा होना, घन

गणक

होना. जमा होना ; शक्ति, साहस. सामर्थ्य; जोर की आवाज़; दृढ़ता, अशियलता; कसाव ।

गणक (क) सं. — बली: समर्थ और हठा-कटा पुरुष ।

गणक (क) अ. — स्थिर रूप से, जोर से, उच्च ध्वनि से ।

गणक (क) सं. — दृढ़ता स्थिरता शक्ति ।

गणक (क) सं. — गंधकारिका, सैरंघी, सुगंध द्रव्य बनानेवाली स्त्री ।

(१) गणक (क) क्रि. — प्रयत्न कर, उद्योग कर ।

(२) गणक (क) क्रि. — मार, पीट ।

गणक (क) सं. — किनारा. तट; बांध, पुल ।

(१) गणक (क) अ. — सचमुच सच तो, हैं । सं. — एक अनुकरणमूलक शब्द । — गणक = गड़-गड़ शब्द । — गणक गड़ने = तुरंत, फौरन, शीघ्रता से ।

(२) गणक (क) सं. — दे. गणक ।

(३) गणक (अ. दे.) सं. — गड़ (हिं.); दुर्ग, किला ।

गणक (क) सं. — एक प्रकार की मछली ।

गणक गणक (क) सं. — घडा आदि रखने की बैठकी (रूकाव) ।

गणक (क) सं. — घटिका (तत्); मिट्टी का घडा ।

गणक (अ. दे.) सं. — गडक (हिं.); गोदाम, सामान रखने का स्थान, शराबखाना ।

गणक (क) सं. — सख्त होना, कठोरता, कडापन; कठिनता; कुडकीलापन; भारीपन, अधिक होना ।

गणक (क) सं. — राशि, ढेर, समूह निकाय ।

गणक (क) क्रि. — मिला, जोड़,

एक साथ लगा. संयुक्त कर, राशि लगा; बना, तैयार कर ।

गणक (तद्) सं. — गणना (तत्); सोच, विचार; अर्थ, अभिप्राय, उद्देश्य ।

गणक (क) सं. — स्थूलता, मोटापन. गाढापन, घनत्व; शक्ति ।

गणक (अ. दे.) वि. — गाढा (हि.); गहरा, घना ।

गणक (अ. दे.) सं. — छिपना अदृश्य होना ।

गणक (क) सं. — सीमा, हद्द, सीमित समय या काल, मीयाद; किस्त ।

गणक (क) सं. — हठा-कटा बंदर (नर) ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — मोटा. पुष्ट मनुष्य ।

गणक (अ. दे.) सं. — गड़ना (हि.); किसी चीज को ज़मीन (भूमि) में स्थिर रूप से लगा, गाड़ ।

गणक (क) सं. — लोहे का डंडा या छड़ी ।

गणक (क) सं. — उच्च ध्वनि, शोरगुल, हल्ला ।

(१) गणक (क) सं. — स्तंभ; छड़ी ।

(२) गणक (क) सं. — सीमा, हद्द सरहद्द; अंतर, अवधि; स्थान, जगह, आश्रय ।

(३) गणक (अ. दे.) — गड़, छोटा किला ।

(४) गणक (तद्) सं. — घटि (तत्); २४ मिनट का काल ।

गणक (तद्) सं. — दे. गणक ।

गणक (अ. दे.) सं. — घड़ी, घड़ियाल ।

गणक (तद्) क्रि. — ('घट्' धातु से) — एक साथ मिला, जोड़; प्राप्त कर, कमा; रोक, प्रतिबंध कर ।

गणक (क) सं. — अवधि, निश्चित समय, मीयाद ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (अ. दे.) वि. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — बाँस का स्तंभ, नौका-दण्ड; समता, समानता; जोड़ा ।

गणक (तद्) सं. — घटी (तत्); घटीयंत्र, पानी उलीचने की धरनी ।

गणक (क) सं. — हाथी पर पताका का दण्ड धारण करनेवाला पुरुष; डंडे से नाव को खेनेवाला पुरुष ।

गणक (क) सं. — दाढ़ी; दाढ़िका; = गणक गह — चिबुक ।

गणक (क) सं. — जिस ब्राह्मण को (औपासन करने की) आदत नहीं थी, उसने औपासन कर अपनी दाढ़ी-मूँछ जलायी (कह.) ।

गणक (क) सं. — कंद, कंद-मूल; समूह, ढेर, राशि; गुच्छा, ठोस पदार्थ; कर्णमूल, कानों का मूल; ऊँचा टीला; नदीतट; द्वीप, नदी का वह स्थान जहाँ पानी न हो ।

(१) गणक (क) सं. — एक अनुकरणमूलक शब्द । — गणक = घटयों की आवाज़, 'झनझन' ध्वनि ।

(२) गणक (सम्) सं. — झुण्ड, समूह, गिरोह, टोली. दल; श्रेणी, कक्षा; २७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पदातियों की सेना; शिवजी के गण; व्याकरण में एक श्रेणी की धातुएँ; छंद: शास्त्र में प्रयुक्त गण; एक प्रकार का सुगंध द्रव्य; गणेशजी ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणक (क) सं. — दे. गणक ।

गणितज्ञ, गणना करनेवाला ; मुंशी ; ज्योतिषी ।

गणक (सम्) सं.— ज्योतिषी की पत्नी । (क) सं.— एक पौधा विशेष ।

गणक गणजलि, गणक गणजिलु, गणक गणजिले (क) सं.— भोजन की एक जड़ी-बूटी ।

गणक गणजिलु (क) सं.— छोटी चेचक ।

गणक गणिक (क) सं.— एक जाति का हिरन ।

गणक गणदिसु, गणक गणदिसु, गणक गणदिसु, गणक गणदिसु (सम्) क्रि.— गणना-कर, गिनती कर; विचार कर, अंदाज़ कर ।

गणक गणद्रव्य (सम्) सं.— जनता की संपत्ति; विविध पदार्थ ।

गणक गणन, गणक गणना, गणक गणने (सम्) सं.— गिनती, हिसाब-किताब; जोड़, कल्पना, विचार ।

गणक गणनाथ, गणक गणनायक, गणक गणप, गणक गणपति, गणक गणाधिप, गणक गणाधीश (सम्) सं.— विनायक, गणेश ।

गणक गणयिसु, गणक गणिसु (सम्) क्रि.— गणना कर; गिनती कर, हिसाब-किताब कर ।

गणक गणरात्र (सम्) सं.— कई रात्रियाँ ।

गणक गणरूप (सम्) सं.— एक वनस्पति ।

गणक गणल् (क) सं.— घंटियों की 'झनझन' ध्वनि ।

गणक गणलु (क) सं.— अंगुली का जोड़ या गाँठ ।

गणक गणहासक (सम्) सं.— एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।

गणक गणाक्षर (सम्) सं.— छंदःशास्त्र में प्रयुक्त गणों के अक्षर ।

गणक गणार्चने (सम्) सं.— वीरशैव या लिंगायत लोगों द्वारा की जानेवाली जंगमों (संन्यासियों) की पूजा ।

गणक गणिका, गणक गणिके (सम्) सं.—

रंडी, बेइया; हथिनी; पुष्प विशेष ।

गणक गणगिणु, गणक गणगिणु, गणक गणगिणु (तद्) सं.— करवीर (तद्); कनेर (लाल या पीला) ।

गणक गणितगार, गणक गणितज्ञ (सम्) सं.— देवज्ञ, ज्योतिषी ।

गणक गणितज्ञते (सम्) सं.— ज्योतिष विद्या ।

गणक गणिल् (क) सं.— दे.— गणल् ।

गणक गणे (क) सं.— प्याज़ का तना या डंडल ।

गणक गणेगार (गणक गार) (क) सं.— मल्लाह, नाविक ।

गणक गणेय (सम्) वि.— गिनने योग्य ।

गणक गणेश, गणक गणेश्वर (सम्) सं.— विनायक, गणपति ।

गणक गणण (क) सं.— धान का खेत या उसका भाग ।

गणक गण्य (सम्) वि.— गिनने योग्य, आदरणीय ।

गणक गत (सम्) वि.— गया हुआ, बीता हुआ, अतीत, व्यतीत, विगत, गुज़रा हुआ; मरा हुआ; आया हुआ, पहुँचा हुआ; अवस्थित, स्थापित; अवलंबित; संबंधी, विषय का; फैला हुआ ।

गणक गतक (सम्) सं.— जाना, चलना; चंचलता ।

गणक गतासु (सम्) वि.— मृत, मरा हुआ ।

गणक गति (सम्) सं.— गमन, चाल, प्रवेश; समाई, जगह, विस्तार; पहुँचना, प्राप्ति; दशा, हालत-फल, परिणाम; पहुँच, शरण-स्थान; कर्म-फल; भग्य, प्रारब्ध; दुष्कर्म, पाप; नाचने की गति, नृत्य का नियम । — गणक गेडु, गणक गेडु (सम्) क्रि.— अच्छी स्थिति, सुख या प्रसन्नता को खराब कर; विनष्ट हो, सुख-संतोष खो जा ।

गणक गतिभंग (सम्) सं.— निवारण, निवृत्ति; प्रतिबंध ।

गणक गतिलघन (सम्) सं.— कुदान, छलांग ।

गणक गतिलाघव (सम्) सं.— चलने में तीव्रता ।

गणक गतिविहीन (सम्) वि.— वेबम, असहाय, अनाथ ।

गणक गतिसु (सम्) क्रि.— जा, गुज़र जा मृत हो, मर जा. (समय) व्यतीत हो ।

गणक गतिहीन (सम्) वि.— दे. गणक गतिहीन, गणक गत्यंतर (सम्) सं.— दूसरा या अन्य

उपाय या आधार; बचने का मार्ग; पलायन ।

(१) गणक गद् (क) अ.— गणक गद्गद् — थरथर; गणक गद्गद् गद्गद् नहुगु = थरथर काँप ।

(२) गणक गद् (सम्) सं.— बोलना, बोली; वाक्य; रोग, बीमारी; एक यादव का नाम ।

गणक गद्गदिसु, गणक गद्गदिसु (सम्) क्रि.— गद्गद् हो ।

गणक गद्गद् (क) सं.— पशुओं के मूत्र की दुर्गंध; लाल मिर्च या तमाखू के जलने पर उत्पन्न असह्य गंध ।

गणक गद्गद् (क) क्रि.— ढकेल, दबा, किसी पर बल प्रयोग कर ।

गणक गद्गद् (क) सं.— दे. गणक गद्गद् ।

गणक गद्गद्गद् [गणक गद्गद्गद्] (क) सं.— फटकार, डाँट—डपट, गर्जन; (पशुओं के शरीर पर) घाव का चिह्न पड़ना ।

गणक गद्गद् (क) क्रि.— गर्जन कर, गरज-उच्च ध्वनि कर, चिल्ला; फटकार बताना; डाँट । सं.— गर्जन; चिल्लाहट । — गणक गद्गद् (क) क्रि.— गणक गद्गद् (क्रि.) ।

गणक गद्गद्गद् (सम्) सं.— विष्णु ।

गणक गद्गद् (सम्) वि.— कहा हुआ, कथित ।

गणक गद्गद् (सम्) क्रि.— कह, बोल ।

गणक गद्गद्, गणक गद्गद् (क) सं.— सूचन, फुलाव, फोड़ा, गिलटी, सूजन ।

गणक गद्गद्, गणक गद्गद् (क) सं.— एक पौधे का नाम; एक नगर का नाम ।

गणक गद्गद् (सम्) सं.— दे. गणक गद्गद् ।

गठि०००० गठोकर

गठि०००० गठोकर (सम्) सं. — व्यधि, बीमारी ।

गठि००० गठद (सम्) सं. — हकलाना, तुतलाना ।

गठि० गठ (क) सं.—दे. गठि० २.

गठि००० गठरिसु, गठि००० (क) क्रि. — फोड़ा हो (घाव) फूल, सूज ।

गठि००० गठरिसु, गठि००० गठिसु (क) क्रि. — दे. गठि० २.

गठि० गठल (क) सं. हला, शोरगुल ।

गठि० गठदिगे, गठि० गठदिगे, गठि० गठदिगे (क) सं. — सिंहासन, गद्दी ; आसन ; मूल, आधार ; जंगमों (संन्यासियों) का स्मारक ।

गठि० गठिसु (क) क्रि.—चिह्ना, गर्जन कर ; फटकार बता ।

गठि० गठि, गठि० गठि (क) सं.—धान का खेत । गठि० गद्य (सम्) सं.—गद्य, वह रचना जिसमें पद्य न हो (Prose) ।

गठि० गद्याण, गठि० गद्याणक (सम्) सं.—रत्नी भर की तौल ।

गठि० गनह (तद्) सं.—शिवजी ; ब्राह्मण, विप्र ।

गठि० गनि (तद्) सं.—खनिः (तत्) ; खान ।

गठि० गनीम (अ.दे.) सं.—गनीम (अरबी) ; शत्रु, लुटेरा डाकू ।

गठि० गने (क) क्रि.—गर्जन कर ; चिह्ना ।

गठि० गन्न (क) सं.—चोरी ; रहस्य ; चातुरी ; धोखा ।

गठि० गपचिप (अ.दे.) अ.—चुपचाप, चुप, मौन रूप से ।

गठि० गप्पने (क) अ. — अकस्मात्, तुरंत, हठात् ।

गठि० गप्पु. गठि० गप्पि (अ.दे.) सं. — गप्प (हि.) ; झूठ, झूठा समाचार ।

गठि० गवगव. [गठि० गवगव] (क) अ.—जल्दी जल्दी ।

गठि० गवकने (क) अ. — जल्दी, शीघ्र, गठि० गव्व (तद्) सं. — गर्व (तत्) ; गर्भ (तत्) ; — गठि० गव्वगु, गठि० गव्वगु

गव्वगु = गामिन हो (गाय और बैस के लिए ही प्रयुक्त होता है) ।

गठि० गव्वरिसु (क) क्रि. — खनन कर, खोद, भूमि खोद, सुरंग लगा ।

गठि० गव्वि (तद्) वि.—गर्वी (तत्) ; घमंडी ।

गठि० गव्विलायि (क) सं.—चमगादड़ ।

गठि० गव्वु, गठि० गव्वु (क) सं.—दुर्गंध, बदबू ।

गठि० गभस्ति (सम्) सं.—सूर्य, सूर्य की किरण ।

गठि० गभीर (सम्) वि. — गंभीर, गहरा ; गुप्त ; रहस्यमय, गाढ़ा, सघन घना ।

(१) गठि० (क) सं.—गंध, सुगंध, फूलों की सुरभि ।

(२) गठि० (सम्) वि. — जानेवाला, चलनेवाला ।

गठि० गमक (सम्) सं.—सूचक, संकेतकारी, स्मारक, विश्वासोत्पादक ; स्पष्ट करना, स्पष्टीकरण, प्रमाण, काव्य-पठन की एक प्रणाली ; संगीत में अंतर या स्वर की गहराई ।

गठि० गमकि (सम्) सं.—बोलनेवाला, कथन करनेवाला. स्वर-माधुर्य के साथ काव्य-वाचन करनेवाला, वाक् चतुर ।

गठि० गमण, गठि० गमन (क) सं.—गंध, सुगंध ।

गठि० गमन (सम्) सं.—जाना, चाल, गति, समीप जाना ; प्राप्ति, उपलब्धि ; स्त्री-मैथुन ।

गठि० गमनि (सम्) सं.—एक गाली ; दुष्ट पापी, दुर्जन ।

गठि० गमनिसु, गठि० गवनिसु, गठि० गविसु (क) क्रि.—ध्यान दे. गौर कर, मन लगा, सावधान हो ।

गठि० गमनिसु (सम्) क्रि.—जा, चल ।

गठि० गमार, गठि० गवार (अ.दे.) सं.—गँवार (हिं.) मूर्ख, बेवकूफ ।

गठि० गमिसु (सम्) क्रि.—जा, चल, ।— ०० विके = जाना, चलन ; गमन ।

गठि० गम्म, गठि० गम्मु (तद्) सं.—धर्मः (तत्) ; गरमी, उष्णता ।

गठि० गमत्तु (अ.दे. ?) सं.—विनोद से समय विताना, तमाशा ।

गठि० गम्मने (क) अ.—शीघ्र, जल्दी ।

गठि० गम्मु (क) क्रि.—(बंदर जैसे) विचित्र-ध्वनि कर ।

गठि० गम्य (सम्) वि.—समीप जाने योग्य, बोधगम्य, वांछनीय, योग्य, प्राप्त करने योग्य ।

गठि० गय, गठि० गये (सम्) सं.—गया (स्थान का नाम) ।

गठि० गयावळ, गठि० गयावाळ (सम्) सं.—गया का पंडा (गयावाला ?) ।

गठि० गयाळ (क ?) सं.—निर्बल या निरूप-योगी मनुष्य ।

गठि० गय्याळि (क) सं.—मूर्ख स्त्री, झगडाळ स्त्री ; जिद्दी औरत ।—उत्तन = झगडाळ होना ।

गठि० गयसु (क) क्रि.—करा या करवा ।

गठि० गर (क) सं.—‘गरगर’ शब्द । (तद्) सं—ग्रह (तत्) ।

गठि० गरकु, गठि० गरकु, गठि० गरसु, गठि० गरकु (क) सं.—असमता, रूक्षता, कठोरता ।

गठि० गरग, गठि० गरगु, गठि० गरगा, गठि० गरगु, गठि० गरग (क) सं.—एक झाड़ी का नाम, ग्रेगराज (Eclipta abla Hassk) ।

गठि० गरगतिग (क) सं.—एक पौधे का नाम ।

गठि० गरगत्ति (क) सं.—वृक्षविशेष (The tree Ficus asperrima) ।

गठि० गरगरिके (क) सं.—सुन्दरता, चारुता, स्वच्छता, शुभ्रता ।

गठि० गरगस (तद्) सं.—क्रकच (तत्) ; आरा ।

गठि० गरगु (क) सं.—दे. गठि० १.

गठि० गरजु (अ.दे.) सं.—गरज (अरबी) ; आवश्यकता, जरूरत, प्रयोजन ।

गठि० गरडि, गठि० गरुडि, गठि० गरुडि-मने (क) सं.—व्यायामशाला, कसरत करने का स्थान ।

गठं गरणे (क) सं. — थका, पिंड ; घना पदार्थ (मट्टे में दही का गाढ़ा अंश) ।

गठं गति, गठं गति (तद्) सं. — सद् गृहिणी, अभिजांत कुल की आदरणीय स्त्री ।

गठं गरम (तद्) वि.—घर्मः (तत्) ; गरम, उष्ण । गठं गरमि=गरमी, उष्णता ।

गठं गरल, गठं गरल (सम्) सं. — जहर, विष । — कंठं कंधर, गि, एव ग्रीव. कं धर (सम्) सं.—शिव । — शं पूर (सम्) सं. — साँप । — कं भुक् (सम्) सं. — शिव । — शिख (सम्) सं.—विषैला बाण । — अशन (सम्) सं.—शिव ।

गठं गरवु (क) क्रि. — सब कुछ छीन ले, सब कुछ ले ले ।

गठं गरसु (क) सं.—दे. गठं ; कंकड, पथरी ।

गठं गरसे, गठं गरसे (क) सं. — एक परिमाण विशेष जो प्रायः ३२० पौंड के बराबर होता है ।

गठं गरल (सम्) सं.—दे. गठं

गठं गरले (सम्) सं.—एक पौधे का नाम ।

गठं गराणदार (अ. दे.) सं. — आदरणीय पुरुष ।

गठं गरास (तद्) सं. — ग्रासः (तत्) ; कौर, गस्सा ।

गठं गरि (क) सं.—एक तृणविशेष ; पक्षियों का पुच्छ ; कोमल पत्ता ; नारियल या ईख का पत्ता । घास ; बाण का पिछला भाग ।

— कट्टु (क) क्रि.—पंख निकल ; संभल ; जा ; शक्ति पा । — कं केदरु (क) क्रि.—पंख फैला । — शं पू (क) सं.—केतकी पुष्प ।

गठं गरिके (क) सं.—घास, तृण दूर्वा ।

गठं गरिग (क) सं.— एक पक्षी ; बाण, तीर ।

गठं गरिम, गठं गरिमा (सम्) सं.— गुरुता, महत्त्व, विशेषता, गौरव, उत्तमता ; मुख्यता, योग्यता ।

गठं गरिसुरि (क) सं.— दूध, पक्का ; कठोर ।

गठं गरिमे (सम्) सं. = गठं ।

गठं गरिष्ठ (सम्) वि.— सबसे अधिक भारी, खबसे अधिक महत्वपूर्ण ।

गठं गरीव (अ. दे.) सं.— गरीव (अरबी) ; दरिद्र ।

गठं गरीय (तद्) वि.— गरीयस् (तत्) ; अपेक्षाकृत भारी या महत्वपूर्ण ।

गठं गरु (तद्) वि. = गुरु (भारी) ।

गठं गरुग, गठं गरुगु (क) सं.— दे. गठं ।

गठं गरुड (सम्) सं.— पक्षिराज गरुड के आकार का व्यूह, गरुडाकार भवन ; एक की संख्या । — शं ध्वज (सम्) सं.— विष्णु की उपाधि । — शं पाताळ (सम्) सं.— एक जड़ी-बूटी जो साँप के डसने पर विष दूर करने के काम में आती है । — शं पुराण (सम्) सं.— एक पुराण का नाम । — शं फल (सम्) सं.— वृक्ष विशेष (The tree Hydno-carpus Veneata Gaert) । — शं वाहन (सम्) सं.— विष्णु ; मंदिरों में रहनेवाला गरुड का वाहन । — शं वाहिनि (सम्) सं.— गरुड के आकार का व्यूह ।

गठं गरुडग्रज (सम्) सं.— गरुड का बड़ा भाई, अरुण ।

गठं गरुडांक (सम्) सं.— गरुडध्वज ।

गठं गरुडि (क) सं.— स्थान, जगह, घर, आश्रय ; व्यायामशाला, कसरत करने का स्थान, अखाड़ा ।

गठं गरुत् (सम्) सं.— पंख, पर ।

गठं गरुत्त (सम्) सं.— पक्षी ; गरुड ।

गठं गरुत्त, गठं गरुत्त (सम्) सं.— गरुड ।

(१) गठं गरुत् (तद्) वि.— गरुः या गरिमा (तत्) ; योग्य आदरणीय, मान्य ।

(२) गठं गरुत् (तद्) सं — गर्वः (तत्) ।

गठं गरुत्लि (क) सं.— पवन, हवा, समीर ।

गठं गरुवायि, गठं गरुविके (तद्) सं.— गंभीरता, गंभीर गमन, (हाथी की चाल-सी) चाल, गौरवपूर्ण विधान, उचित ढंग ; घमंड, गर्व ।

गठं गरुसु (क) सं.— दे. गठं ।

गठं गरु (क) अ. — चारों ओर, जल्दी-जल्दी, चक्र-दार । सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ।

गठं गरुके (क) सं.— दूर्वा ।

गठं गरुगु (क) सं.— जल जाना. मुरझाना सूखना ; घी या तेल में भुनने के बाद पापड़ आदि का कुरकुरा होना ।

गठं गरि (क) सं.— पंख, पर ; पंख जैसा ताड़ या नरियल का पत्ता ।

गठं गरिके (क) सं.— दे. गठं ।

गठं गरुगु (क) सं.— दे. गठं ।

गठं गरु (क) सं.— डकार लेते समय की ध्वनि ।

गठं गरुके (क) सं.— दे. गठं ।

गठं गरु (क) सं.— दे. गठं ।

गठं गरु (सम्) सं.— घर्घरः (तत्) ; बरबराहट, कोलाहल ।

गठं गरुगे (सम्) सं.— मथानी ; गगरी ।

गठं गरुगे (सम्) सं.— गर्जन, चिलाहट, जोर से ध्वनि करना, चीत्कार, गड़गड़ाहट, घुरघुराहट ; रोष, क्रोध ; युद्ध, लड़ाई ; भर्त्सना, फटकार, धिक्कार ।

गठं गरुगे (सम्) सं. = गठं ।

गठं गरुगे (सम्) सं.— बादल जिससे गरज तथा बिजली उत्पन्न होती है ।

(१) गठं गरुगे (क) सं.— एक पौधे का नाम जिसके छोटे-छोटे कडुवे फल से अचार बनता है ।

(२) गठं गरुगे (सम्) सं — बादलों की गरजन ।

गठं गरुगे (सम्) क्रि.— गर्जन कर, भयंकर ध्वनि कर ; डाँट, गाली दे, शिकायत कर ।

गठं गरुगे (सम्) सं. = गठं ।

गठं गरुगे (सम्) सं.— ऊँचा आसन, गद्दी ।

गर्भ गति

सिंहासन. युद्ध के रथ का आसन ; रथ ;
पासे का खेल खेलने की मेज़ ; पोल, छेद,
गुफा ।

गर्भ गति (तद्) सं.— दे. ग०३.
गर्भ गर्दभ (सम्) सं.— (यह द्राविड
शब्द ही है जिसे संस्कृत ने अपनाया है)
— गधा ।

गर्भगण्ड गर्दभांड (सम्) सं.— वृक्ष विशेष
(The tree thespesia populneoides
wall) ।

गर्भगण्ड गर्दगु (क) सं.— एक पौधे का नाम ।
गर्भगण्ड गर्दगु (क) सं.— दे. ग०३.
गर्भ गर्दे (क) सं.— ग०३ गर्दे—खेत ।
गर्भगर्द गर्धन, गर्भगर्द गर्धित (सम्) वि.—
लालची, लोभी । गर्भगर्द गर्धने = लोभ,
लालच ।

गर्भ गर्व (तद्) सं.— गर्व (तत्) ।
गर्भगर्दु (क) सं.— दे. ग०३.
गर्भ (सम्) सं.— गर्भाशय, पेट ; गर्भाशय,
पेट ; गर्भाशय की झिल्ली, गर्भाधान ; गर्भ
का बच्चा ; भीतरी भाग, मध्य भाग ।

गर्भगर्दु गर्भक (सम्) सं.— फूलों का गुच्छा
जो वालों में खोसा जाता है ।
गर्भगर्दु गर्भगृह (सम्) सं.— भीतरी कमरा ;
प्रसूतिका गृह ; मंदिर का गर्भगृह जहाँ मूर्ति
स्थपित हो ।

गर्भगर्दु गर्भपात (सम्) सं.— गर्भस्त्राव,
अकाल उत्पत्ति ।
गर्भगर्दु गर्भमोचन (सम्) सं.— जन्म,
उत्पत्ति ।

गर्भगर्दु गर्भश्रीमंत (सम्) सं.— वह
पुरुष जो जन्म से ही धनी और मान्य हो ।
गर्भगर्दु गर्भागार (सम्) सं.— भीतरी कमरा,
मंदिर का गर्भगृह ।

गर्भगर्दु गर्भिणि (सम्) सं.— गर्भिणी स्त्री ।
गर्भगर्दु गर्भित (सम्) वि.— गर्भवाली,
जिसके पेट में गर्भ हो ; पूर्ण, भरा हुआ,
युक्त ।

गर्भगर्दु गर्भुत् (सम्) सं.— एक तृण विशेष ।

गर्भ गर्व (सम्) सं.— घमंड, अभिमान,
ऐंठ । — उंते = घमंडी होना ।
गर्भ गर्वि, गर्भगर्दु गर्वित (सम्) वि.—
घमंडी, अभिमानी ।

गर्भगर्दु गर्विसु (सम्) क्रि.— गर्व कर, घमंड
कर, अभिमान कर ।

गर्भगर्दु गर्वु (तद्) सं.— गर्व (तत्) ।
गर्भगर्दु गर्हण (सम्) सं.— भर्त्सना, फटकार ;
कलंक, धिक्कार ।

गर्भगर्दु गर्शक (सम्) सं.— ताँत्रे या पीतल का
वर्तन ।

गर्भ गल् (क) सं.— अवधि, समय, मीयाद ।
(१) गल् गल (क) सं.— 'ज्ञनज्ञन' शब्द ।
(२) गल् गल (सम्) सं.— गला, गर्दन । —
क०३० कंबल (सम्) सं.— बैल या गाय की
गर्दन की खाल जो लटकती रहती है ।

गल् गलकु (क) सं.— 'ज्ञनज्ञन' ध्वनि ;
एक प्रकार की घास ।

गल् गलगु (क) सं.— नरकट ; बहुत ज़ोर
का शब्द, कड़कड़ शब्द ।

गल् गलन (सम्) सं.— चूना, टपकना,
रिसना ।

गल् गलति, गल् गलित, गल् गलितु
(अ. दे.) सं.— गलती (फ़ारसी), अशुद्धि ।
गल् गलति, गल् गलतिके, गल् गलति
गलतिगे (सम्) ; सं.— गल् गलन्तिगे,
गल् गलतिगे (तद्)— छोटा कलसा, कल-
सिया, झोटा घड़ा ; छोटा घड़ा जिसकी
पेंदी में छेद करके जल भरकर शिवालिंग के
ऊपर टाँग देते हैं ।

गल् गलि (क) सं.— गल् गलिविलि —
अव्यवस्था, अक्रम, भ्रम, भ्रंति ।

गल् गलि (अ. दे.) वि.— गलीज़ (अरबी) ;
गंदा, अशुद्ध ।

गल् गलु (क) सं.— दे. ग०३.
गल् गलगु (क) सं.— दे. ग०३.

गल् गलुडु (क) सं.— झनक-झनक शब्द ।
गल् गलुडु (अ. दे.) सं.— गिलाफ़ (अरबी) ।
गल् गलुकु (क) सं.— पायल की ध्वनि ।

गल् गलित (अ. दे.) सं.— दे. ग०३.

गल् गल्भ (सम्) वि.— साहसी, हिम्मती ।
गल् गल्ये (सम्) सं.— गल्या, गलों का
समूह ।

गल् गल (क) सं.— [गंड—तत् ?] — कपोल,
गाल ।

गल् गलणे (क) सं.— कष्ट, पीड़ा, चिंता,
व्यग्रता ; यातना, उत्पात, कंटक ।

गल् गलतु (अ. दे.) सं.— दे. ग०३.

गल् गला, गल् गल्ले (अ. दे.) सं.— गला
(अरबी) ; दैनिक-व्यापार का धन, धन रखने
की पेटी ।

गल् गलि (अ. दे.) सं.— गली (हिं.) ।
गल् गलिसु (क) क्रि.— कष्ट दे, पीड़ा दे,
यातना दे, व्यग्र कर, चिंतित कर ; चिंतित
हो, व्यग्र हो ; पछोर ; मिला ; चंचल कर ;
हिला ; ढकेल, हटा ।

गल् गल्लु (क ?) सं.— फ़ांसी । गल् गल्लु
गल्लिगे हाकु (क) क्रि.— फ़ांसी पर लटका,
फ़ांसी की सजा दे ।

गल् गल्ले (क) सं.— थक्का, पिंडा, ढोंका ;
गाल, कपोल ।

गल् गल्वर्क (सम्) सं.— बिना हथिये का
पानी पीने का प्याला या कटोरा ।

गल् गव (क) सं.— कुत्ते के भूँकने की
आवाज़ ।

(१) गव गव (क) क्रि.— खुजलन हो, गुद-
गुदी हो ।

(२) गव गव (सम्) सं.— गाय, पशु ।
गव गवड, गव गवड, गव (क) सं.—
ग्राभीण, एक जाति विशेष ; पुरुषों के अंत
में यह शब्द लगता है, जैसे गव गव
(गव) मारे गवड (गौड) आदि ।

गव गवकेने (क) अ.— तुरंत, फौरन ।
गव गवन (क) सं.— ध्यान, मत, विचार,
सावधानी । — गव इसु (क) क्रि.— ध्यान
दे ; गौर कर, मन लगा, सावधान हो ।

गव गवय (सम्) सं.— बैल की जाति
विशेष ।

गव गवरिग (क) सं.— चटाई, टोकरी आदि-
बनानेवाले लोगों की जाति का आदमी ।

सूचक प्रत्यय । उदा.—*द्वैतगतं देवतेगळ्*,
द्वैतगतं देवतेगळु = देवता । *गुरुगतं*
गुरुगळ्, *गुरुगतं गुरुगळु* = गुरु ।
गणेश गळक् (क) सं.— किसी चीज को
निगलते समय आनेवाली ध्वनि ।
गणेश गळग. *गणेश* गळिगे (तद्) सं.— घटिका
(तत्?) ; तह, परत ।
गणेश गळने (क) अ.— जल्दी-जल्दी,
शीघ्रता से ।
गणेश गळगाळ (क) सं.— कुलाबा, काँटा,
मछली, फँसाने की बंसी ।
गणेश गळगे (क?) सं.— बाँस की बड़ी
टोकरी जिसमें अनाज रखा जाता है ।
गणेश गळतिगे (सम्?) सं.— ('गृह से')
— कमारा, कौठरी ।
गणेश गळिगे (तद्) सं.— दे. *गणेश*.
२४ मिनट की एक घड़ी ।
गणेश गळिसु (तद्) क्रि.— दे. *गणेश*
गणेश गळु (क) प्र.— दे. *गणेश*.
गणेश गळेवु, *गणेश* गळेयवु, *गणेश*
गळेय (क) सं.— कृषि के काम आनेवाले
उपकरण, कृषकों के लिए उपयोगी आयुध ।
गणेश गळ्णे (क) अ.— हँसते समय
उ पन्न होनेवाली ध्वनि ।
गणेश गळ्ळे (क) सं.— थक्का, पिंड ।
गणेश गळ (क) सं.— 'शीघ्रता' का अर्थबोधक
शब्द ; नौकादण्ड, नाव खेने की पतवार ।
गणेश गळप (क) सं.— वाचाल, बकवाद
करनेवाला या झूठ बोलनेवाला पुरुष ।
गणेश गळपत्व (क) सं.— बकवास,
मँहजोरी ; झूठ ।
गणेश गळपु, *गणेश* गळहु (क) क्रि.—
बकवाद कर, बहुत बोल, गपशप कर ।
सं.— बकवास ; गपशप, व्यर्थ की बात ।
गणेश गळह (क) सं.— दे. *गणेश*.
गणेश गळहु (क) क्रि.— दे. *गणेश*.
गणेश गळिके (क) सं.— प्राप्ति, कमाना,
कमाई, अर्जन ।
गणेश गळिगे (तद्) सं.— घटिका (तत्) ।

गवेषुके (सम्) सं.— मवेशियों के खाने
योग्य घास ।
गणेश गवेषणे (सम्) सं.— गवेषणा, शोध,
खोज, अनुसंधान ।
गणेश गवेषित (सम्) वि.— खोजा हुआ,
शोध किया हुआ, अनुसंधान किया हुआ ।
गणेश गव्यूत (सम्) सं.— एक कोस या
दो मील ।
गणेश गव्ये (सम्) सं.— गायों की हेड़ ।
गणेश गव्वर (तद्) सं.— गह्वर (तत्) ।
गणेश गव्वु, *गणेश* गव्वि (क) सं.— तलछट,
तेल या घी के नीचे का मल ।
गणेश गव्वस (क) सं.— धीरे-धीरे रगड़ने
से निकलनेवाली ध्वनि (जैसे दाँत की ध्वनि) ।
गणेश गव्वण (तद्) सं.— घर्षणम् (तत्) ;
रगड़, रगड़न ।
गणेश गव्वणे (क) सं.— दुःखद या कातर
विचार ।
गणेश गव्वसट (तद्) सं.— घर्षण ; कष्ट या
पीड़ा, चिंताजनक विषय, व्यग्र करनेवाली
बात ।
गणेश गव्वि (क) सं.— दे. *गणेश*.
गणेश गव्वित्, *गणेश* गव्वु (अ. दे.) सं.— गश्त
(फारसी) ; भ्रमण, घूमना ; चारों ओर
चकर काटना ।
गणेश गव्व (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द,
हँसते समय निकलनेवाली ध्वनि ।
(१) *गणेश* गव्वन (क) सं.— कमी या दोष
निकालने की बात, नुकताचीनी ।
(२) *गणेश* गव्वन (सम्) सं.— अगाध गर्त,
गहराई ; गुफा, वन, जंगल ; अगम्य स्थान ।
वि.— अगाध, गहरा, गाढ़ा, घना, अगम्य,
अप्रवेश्य ; रहस्यमय, गुप्त, दुर्बोध ; गंभीर,
प्रखर ।
गणेश गव्वर (सम्) सं.— गुफा, वन, जंगल,
बिल, छिपने ला स्थान, गहराई, अगम्य
स्थान ; लतामण्डप, निकुंज ; रहस्य, गुप्त
बात ; कालापन ; अंधकार ; तमाल वृक्ष ।
वि.— गहरा, गंभीर, गहन, घना, समीप ।
गणेश गळ, *गणेश* गळु (क) प्र.— बहुवचन

गणेश गवल (सम्) सं.— जंगली भैंसा, भैंस
का सींग ।
गणेश गवलु, *गणेश* गवुलु, (क) सं.—
दुर्गंध, बदबू ।
गणेश गवसणि, *गणेश* गवसणिके, *गणेश*
गवसणिगे (क) सं.— गिलाफ, बाहरी
ढकना, आच्छादन, लपटने की कोई चीज ;
लिफाफा ।— *गणेश* इसु (क) क्रि.— आच्छा-
दन कर, बाहर ढक, गिलाफ लगा ।
गणेश गवलि, *गणेश* गवुलि (क) सं.— छिप-
कली ।
गणेश गवळिग (तद्) सं.— गोपालक (तत्),
गवाला । *गणेश* गवळिगिति— स्त्री. लिं. ।
गणेश गवाक्ष (सम्) सं.— बैल की आँख ;
छोटी खिड़की ।
गणेश गवळी (सम्) सं.— एक प्रकार की ककड़ी ।
गणेश गविक (क) सं.— आश्रय-स्थान, गुफा । वि.—
आच्छादित; फैला हुआ ।
गणेश गविसु (क) क्रि.— ध्यान दे, गौर कर
सावधान हो, मन लगा ।
गणेश गवीन (सम्) वि.— गाय से संबं-
धित ।
गणेश गवु (क) वि.— गाढ़ा, बहुत, अधिक ।
गणेश गवुजळ, *गणेश* गवुजळ (तद्)
सं.— धूसर वर्ण का तीतर या चकोर ।
कर्पिजलः— (तत्) ।
गणेश गवुजळ, *गणेश* गवुजु (क) सं.—
खंजन पक्षी ।
गणेश गवुजि, *गणेश* गवुजु (क) सं.— शोर,
शोरगुल ।
गणेश गवुड (क) सं.— दे. *गणेश*. *गणेश*
गवुडगिति— स्त्री. लिं. *गणेश* गवुडति =
गणेश गवुडि.
गणेश गवु, *गणेश* गवुरु (क) सं.— उच्च
ध्वनि, कठोर ध्वनि, भयंकर ध्वनि ।
गणेश गवुलु, *गणेश* गवुलु (क) सं.— दे.
गणेश.
गणेश गवुलि (क) सं.— *गणेश*.
गणेश गवेहु, *गणेश* गवेधु, *गणेश* गवेधु

तल्लुगु गळिय (क) सं.— क्रमिकता, व्यवस्था, प्रबंध, तैयार करना; तैयारी ।

तल्लुगु गळिसु (तद्) क्रि.— दे.— तल्लुगु.

तल्लुगु गळु (क) सं.— नौकादण्ड, पतवार ।

तल्लुगु गळुवु (क) सं.— दे. तल्लुगु.

तल्लुगु गळे (क) सं.— बाँस, बाँस की लकड़ी, डंडा, लाठी, छड़ी, पतवार; मथानी ।— ञळ कार (क) सं.— दे. तल्लुगुळ.

तल्लुगु गंभेय (सम्) सं.— गंगा का पुत्र, भीष्म, कार्तिकेय, कर्ण; सुवर्ण, सोना, सफेद रंग ।

तल्लुगु गंगेरुकि (सम्) सं.— एक पौधा विशेष The plant uraria lagopodioides ।

तल्लुगु गांज, तल्लुगु गांजि (अ. दे.) सं.— गांजा (हिं.) ।

तल्लुगु गांटि (अ. दे.) सं.— छोटी गठरी ।

तल्लुगु गांडिव, तल्लुगु गांडीव (सम्) सं.— अर्जुन के धनुष का नाम ।

तल्लुगु गांडिवि, तल्लुगु गांडीवि (सम्) सं.— अर्जुन ।

तल्लुगु गांडु (क) सं.— गुदा, अपान; बुद्धि-हीन पुरुष, मूर्ख; बड़ी गदा ।

तल्लुगु गांजि (सम्) सं.— गांजी, बैलगाड़ी ।

तल्लुगु गांधर्व (सम्) सं.— गांधर्व से संबंधित; गांधर्व-विद्या—संगीत, नृत्य ।— ञळ भवन (सम्) सं.— सुंदर भवन; संगीत का हॉल (Hall)— ञळ विवाह (सम्) सं.— आठ प्रकार के विवाहों में एक ।

तल्लुगु गांधार (सम्) सं.— संगीत के सप्त स्वरों में तीसरा. कांधार और उसके निवासी ।

तल्लुगु गांधारि (सम्) सं.— धतराष्ट्र की पत्नी का नाम; एक पौधा, देवपत्र या माचीपत्र; गांधवती, एक प्रकार की चमेली; एक राग का नाम ।

तल्लुगु गांप (क) सं.— गँवार, मूर्ख या बेवकूफ आदमी ।

तल्लुगु गांपतन, तल्लुगु गांपु (क) सं.— मूर्खता बेवकूफी ।

तल्लुगु गांभीर्य (सम्) सं.— गंभीरता, गहराई, चरित्र की उच्चता; उत्साह; चतुराई ।

तल्लुगु गागळ (क) सं.— शौर, शोरगुल, हल्ला ।

तल्लुगु गाचार (तद्) सं.— ग्रहचार (तत्); दुर्भाग्य, विधि ।

तल्लुगु गाजु (तद्) सं.— काच; (तत्); शीशा, काँच ।

(१) तल्लुगु गाट (क) सं.— लाल मिर्च आदि की तीक्ष्ण गंध ।

(२) तल्लुगु गाट (तद्) वि.— गाढ (तत्); — बढ़ा, बृहत्; गुरु, गाढ़ ।

तल्लुगु गाटलिसु (क) क्रि.— तंग कर, दिक कर, कष्ट दे, पीड़ा दे ।

तल्लुगु गाड (तद्) वि.— गाढ (तत्); गहरा, घना, सघन, कसा हुआ, अगम्य ।

(१) तल्लुगु गाडि (क) सं.— सौंदर्य, सुंदरता, चारुता, मनोहरता, शोभा ।

(२) तल्लुगु गाडि (अ. दे.) सं.— गाड़ी (हिं.), बैल गाड़ी, घोड़ा गाड़ी, इका, तांगा । — ञळ कार = गाड़ीवान ।

तल्लुगु गाडिकार्ति, तल्लुगु गाडिगार्ति (क) सं.— सुंदर स्त्री, सुंदरी ।

तल्लुगु गाडिके (सम्) सं.— (गाढ से) — अधिकता, बहुतायत, घनत्व ।

तल्लुगु गाडिग, तल्लुगु गाडिग (तद्) सं.— गारुडिक; (तत्); ऐंद्रजालिक, जाहूगर ।

तल्लुगु गाडिनतन (क) सं.— दे. तल्लुगु (१) तल्लुगु गाड (सम्) वि.— तल्लुगु. — ञळ अंधकार (सम्) सं.— गहरा अंधेरा । — ञळ आलिंगन (सम्) सं.— बहुत प्रेम के साथ गले मिलना । — तल्लुगु निद्रे (सम्) सं.— गाढ-निद्रा; मधुर निद्रा (मै. प्र.) ।

तल्लुगु गाडोक्ति (सम्) सं.— असभ्यता, रूक्षता, भद्रापन ।

(१) तल्लुगु गाण (क) सं.— कोल्हू, ईख का रस निकालने का यंत्र; काँटा, कुलाबा, मलली फँसाने की वंसी ।

(२) तल्लुगु गाण (तद्) सं.— ग्रहणम् (तत्) — सूर्य या चंद्र ग्रहण; गानम् (तत्)— गीत । तल्लुगु गाणगिति, तल्लुगु गाणगिति (क) सं.— तेलिन, तेली की पत्नी ।

तल्लुगु गाणि (तद्) सं.— गायिका ।

तल्लुगु गाणिक्य (सम्) सं.— वेश्याओं का समूह ।

तल्लुगु गाणिग (क) सं.— तेली ।

तल्लुगु गाणगिति (क) सं.— दे. तल्लुगु. तल्लुगु गाणप (क) सं.— दे. तल्लुगु.

तल्लुगु गात (तद्) सं.— घात; (तत्); गहराई; प्रहार, चोट ।

तल्लुगु गातर, तल्लुगु गात्र (क) सं.— दे. तल्लुगु.

तल्लुगु गाति, तल्लुगु गार्ति (क) प्र.— 'वाली' (स्त्री. लिं.) का अर्थसूचक प्रत्यय ।

तल्लुगु गावृ (सम्) सं.— गायक ।

(१) तल्लुगु गात्र (क) सं.— दे. तल्लुगु.

(२) तल्लुगु गात्र (सम्) सं.— शरीर, देह, शरीरावयव; हाथी के आगे के पैर की जाँध ।

तल्लुगु गात्रक (सम्) सं.— चंदन (लाल चंदन) ।

तल्लुगु गात्रसंकोचि (सम्) सं.— खेखर, ऊद-विलाव के समान पशु विशेष ।

तल्लुगु गात्रानुलेपनि (सम्) सं.— शरीर पर मलने का सुगंध द्रव्य ।

तल्लुगु गाधि (सम्) सं.— गायक; विश्वामित्र के पिता का नाम ।

तल्लुगु गाधे, तल्लुगु गादे, तल्लुगु गाहे (सम्) सं.— गाथा; गाना, गति; पद्य; छन्दोबद्ध सूत्र; कथन, कहावत ।

तल्लुगु गादरि (क) सं.— कीड़े-मकोड़ों के काटने से शरीर में होनेवाले घाव या घाव का निशान ।

तल्लुगु गादि (अ. दे.) से. तल्लुगु गाद्री (हिं.); तल्लुगु आसन, तकिया । सं.— दे. तल्लुगु.

तल्लुगु गादिगे (त अ. दे.) सं.— धिरनी खंदक, खाई । तल्लुगु का चर्खा ।

गण्डो गाढु (क) सं. — सुन्दर ढंग से उत्पन्न घास या झाड़ी ।

गण्डो गाढे (तद्) सं.—गाथा (तत्) ; कहावत, लोकोक्ति । गण्डो वंदेच्छु तलेदोणु गाढे वेदके तलेद्विंशु — कहावत वेदों के लिए तकिया (की भाँति) है ; वंदे सुषुदरो गण्डो सुषुदो वेद सुळ्लादरु गाढे सुळ्लादीते — वेद झूठे हों, पर क्या कहावत झूठी होती है ? ; वंदो वंदो गण्डो लुधेच्छु वंदो लुधेच्छु मातिगे मोदलु गाढे उटके मोदलु उपिनकायि—वात का आदि कहावत है, भोजन का आदि अचार है, (कह) ।— गण्डो गारु (तद्) सं.—अधिक कहावते जाननेवाला पुरुष ।

गण्डो गाध, (सम्) वि.—उथला, गम्य, पार करने योग्य । सं.—उथली जगह, स्थान, नीचे का स्थल, तल ।

गण्डो गाधि (सम्) सं. = गण्डो गाधि—विश्वामित्र के पिता का नाम ।

गण्डो गाधेय (सम्) सं. — विश्वामित्र ।

गण्डो (सम्) सं. — गीत, भजन ; गायक, गंधर्व ; कोयल; कलकंठ आदि ; 'कंद' नामक छंद ।

गण्डो गावर, गण्डो गावरि (क?) सं.—घबराहट (हिं.) ; भय, डर, दुःख की स्थिति ।

गण्डो गाबु (क) सं.—भय, डर ; भयध्वनि, भय सूचित करने की पुकार ।

गण्डो गामि (सम्) वि. —जानेवाला, चलने वाला, प्राप्त होनेवाला ।

गण्डो गाय; गण्डो घाय (क) सं. — घाव, व्रण ; चोट ।

गण्डो गायक (सम्) सं. — गानेवाला, गवैया । गण्डो गायकि—स्त्री लिं. ।

गण्डो गायत्रि (सम्) सं.— गीत ; एक छंद जिसमें २४ गायत्री परम गण्डो गायुलु (क) सं. — परम

गण्डो गवुळि (क) सं.— गण्डो.

गण्डो गवेहु, गण्डो गवेधु, गण्डो गवेधु

गायक । गण्डो गायनि=गायिका ।

गण्डो गायि (तद्) सं.—गाय ।

गण्डो गारड (तद्) सं.— गारुड (तत्) ; गरुड से संबंधित, गरुडमन्त्र ; मरकत. पत्रा ; वाक्छल, इन्द्रजाल ।

गण्डो गारुडि, गण्डो गारुडि (सम्) सं.— इन्द्रजाल, वाक्छल, जादू ; जादूगर ; संपेरा ।

गण्डो गारुडिग, गण्डो गारुडिगारु [गण्डो गारु], गण्डो गारुडिक, गण्डो गारुडिग, गण्डो गारुडिगारु (तद्) सं.— गारुडिक: (तत्) ; जादूगर, ऐंद्रजालिक ।

गण्डो गारण (तद्) सं. — क्षारण (तत्) ; अभिशाप, अभियोग, निंदा, झूठा दूषण ।

गण्डो गारणे (क) सं.— दीवार पेर खींची जानेवाली रंगीन रेखा ।

(१) गण्डो गारिगे (क) सं.— गेहूँ के आटे या चावल के आटे और गुड़ से (घी या तेल में भूनकर) बनाई जानेवाली मिठाई विशेष, एक प्रकार का अंदरसा।

(२) गण्डो गारिगे (तद्) सं.—खातिका (तत्) ; खाई, खंदक ।

गण्डो गारिसु (क) क्रि. — तेल या घी में भून या पका ।

गण्डो गारु (क) सं.— शरीर के अंदर की गरमी या उष्णता के कारण शरीर पर होनेवाला निर्गम या फोला ।

गण्डो गारुड (सम्) सं.— दे. गण्डो. — तन = जादूगरी ।

गण्डो गारुडि (सम्) सं.— दे. गण्डो. गण्डो गारुडिक गण्डो गारुडिग (तद्) सं.— दे. गण्डो.

गण्डो गारुडिग (सम्) सं.— विष को दूर करने के लिए प्रयुक्त औषधि ।

गण्डो गारु (अ.) दे.— गारा (हिं.) ।

गण्डो गारुण (तद्) सं.— गण्डो.

गण्डो गारु (क) सं.— जंगली, असभ्य ; रूक्षता, असभ्यता, अपराध, दौष ।

गण्डो गारुग्य (सम्) सं.— गर्ग ऋषि से संबंधित, गर्ग वंश का ; गर्ग ऋषि का पुत्र

गण्डो गारिगे गण्डो गारिगे (सम्) सं.— एक विदुषी ; याज्ञवल्क की पत्नी ।

गण्डो गारि (क) प्र.— दे. गण्डो.

गण्डो गारुडिग गार्दभ (सम्) वि.— गर्दभ से संबंधित । सं.— गधा ।

गण्डो गारुडिग गार्भिण्य (सम्) सं.— गर्भवती स्त्रियों का समूह ।

गण्डो गार्हपत्य (सम्) सं.— अग्निहोत्र की अग्नि, वह स्थान जहाँ पवित्र अग्नि रखी जाय ।

गण्डो गार्हस्थ्य (सम्) सं.— गृहस्थ धर्म, गृहस्थी ।

गण्डो गाल (सम्) सं.— घाव ; (किसी पत्नीली चीज़ को) छानना ; पिघलना ।

गण्डो गालव (सम्) सं.— एक ऋषि का नाम ; लोध्र वृक्ष ।

गण्डो गालि (क) सं.— चक्र, पहिया ।

गण्डो गालु, गण्डो गालु (अ. दे.) सं.— आक्रमण करना, नष्ट करना, नाश ; अवस्था, हलचल, उपद्रव ; क्षोभ ।

गण्डो गाव, गण्डो गावे (तद्) सं.— ग्राम: ; (तत्) गाँव ।

गण्डो गावटे (क) सं.— एक वृक्ष का नाम ।

गण्डो गावणिग (अ. दे.) सं.— ('गँवार' से ?) — नीच या तुच्छ पुरुष ।

गण्डो गावद, गण्डो गावुद (तद्) सं.— गव्यूतम् (तत्) ; एक कौस या दो मील ।

गण्डो गावदि (अ. दे.) सं.— गँवार (हिं.), मूर्ख ।

गण्डो गावर, गण्डो गावळि (क) सं.— ध्वनि, स्वर, आवाज़, आहट, कोलाहल ; पीड़ा का शब्द ।

गण्डो गावरिसु (क) क्रि.— ध्वनि कर, शब्द कर ; शोर मचा, हल्ला कर ।

गण्डो गावासिग (तद्) सं.— ग्रामसिंह: (तत्) ; कुत्ता ।

गण्डो गावल (क) सं.— अंधकार, अंधेरा, तिमिर ।

गण्डो गावळि (क) सं.— दे. गण्डो.

गठवशत गावळिग

गठवशत गावळिग (क) सं.— हो-हला करनेवाला, शौर-गुल करनेवाला ।
 गठवशत गावळि (तद्) सं.— ग्रामीणः (तत्) ; गँवार ; मूर्ख ।
 गठवशत गावुद (तद्) सं.— दे. गठवशत ।
 गठवशत गावुळि (क) सं.— समूह, समुदाय ; राशि ।
 गठवशत गास (तद्) सं.— काचः (तत्) ; काँच, शीशा ।
 गठवशत गासि (क) सं.— तकलीफ़, कष्ट, पीड़ा ; थकावट ; दर्द । — गठवशत, कोळु (क) क्रि.— थकावट का अनुभव कर ।
 गठवशत गाह (सम्) सं.— डुबकी, गोता, स्नान ; गहराई, अन्तर्देश । — क (सम्) वि.— गहारई में जानेवाला ।
 गठवशत गाहन (सम्) सं.— डुबकी, गोता, स्नान ।
 गठवशत गाहु (क) सं.— कपट, घोखा, ठगई ।
 गठवशत गाड़े (तद्) सं.— गाथा (तत्) ।
 गठवशत गाल, गठवशत गालि, गठवशत गालु (क) सं.— हवा, पवन, वायु, अनिल ; श्वास ।
 गठवशत गाल, गठवशत गाण (क) सं.— दे गठवशत (१) ।
 गठवशत गालक (क) सं.— (ग्राहक-तत्?) — अच्छा या योग्य पुरुष ।
 गठवशत गालि (क) सं.— दे. गठवशत ; शून्यता, सूनापन, खाली होना, विवेकहीनता ; भूत, प्रेत, राक्षस ।
 गठवशत गालिग (क) सं.— वह भूत जिसकी 'गालि-पूजा' की जाती है ।
 गठवशत गालिसु (सम्) क्रि.— ('गालनम्' से) — छान, पछोर ; पिघला ।
 (१) गठवशत गालु (क) सं.— दे. गठवशत ।
 (२) गठवशत गालु (अ. दे.) सं.— दे. गठवशत ।
 गठवशत गालुक (अ. दे.?) सं.— चिमटा, सँडसी ।
 गठ गि, गठ गी (क) — ध्वन्यात्मक शब्दों में इसका प्रयोग होता है, जैसे — गठवशत-गठवशत कुदरे-गिदरे = घोड़ा-वोड़ा ; गठवशत-गठवशत नीरु-गीरु = पानी-वानी आदि ।

गठवशत गिंशु (क) सं.— एक पक्षी विशेष ।
 गठवशत गिंशु, गठवशत गोकु (क) सं.— सुस्ता, कैवर्त सुस्तक, एक प्रकार का कंद ।
 गठवशत गिज (क) सं.— एक अनुकरणमूलक ध्वनि ; अस्पष्टता, हो-हला । गठवशत गिजगिज— (दुहराना) ।
 गठवशत गिजटि (क) सं.— मज्जा, वसा, गुदा एक झाड़ी या पौधा ; लाल रंग के छोटे-छोटे गोलाकार बीज विशेष (धुंधची) ।
 गठवशत गिजि (क) सं.— दे. गठवशत ; भ्रम या भ्रँति का सूचक शब्द ; गठवशत गिजिगिजि (क) वि.— खचाखच ; पक्षियों का चहचहाना ; दे. गठवशत ।
 गठवशत गिजुगार (क) सं.— खंजन, खंजरीट ।
 गठवशत गिट (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द । — गठवशत गरे = खाने या पीने के बाद पेट में गड़गड़ शब्द होना ।
 गठवशत गिटक, गठवशत गिटकु, गठवशत गिटकु (क) सं.— गरी ।
 गठवशत गिटिसु गठवशत गीटिसु (क) क्रि.— अपना (हड़प ले) ; पहुँचा ; प्राप्त हो ।
 गठवशत गिट्टु (क) क्रि.— प्राप्त हो, मिल ; बराबर हो, ठीक हो ; एक दूसरे के पास लगा या दबा ।
 गठवशत गिड (क) सं.— पौधा, छोटा वृक्ष, झाड़ी । गठवशत गिडगलु — व. व. ।
 गठवशत गिडग (क) सं.— बाज, श्येन पक्षी ।
 गठवशत गिडगार [गठवशत गार] (क) सं.— वह मनुष्य जो कपट रूप ले दूसरे को विष देता हो ।
 गठवशत गिडि (क) क्रि.— एक कौर के बाद दूसरा कौर जल्दी-जल्दी खा, मुँह के अंदर ठूस । सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ; गठवशत गिडविड — डमरु आदि वाद्य बजाने से उत्पन्न ध्वनि ।
 गठवशत गिडिग (क) सं.— दे. गठवशत ।
 गठवशत गिडु (क) सं.— गिड ।
 गठवशत गिडु (क) सं.— छोटा, नाटा आदमी, वामन, बौना ।

गठवशत गिडुने, गठवशत गिडुने (क) वि.— छोटा, नाटा ।
 गठवशत गिडिड (क) सं.— छोटी या नाटी स्त्री ।
 गठवशत गिणि (क) सं.— तोता, कीर ; कपड़े आदि टाँगने की खूँटी ; एक अनुकरणमूलक ध्वनि, टन्टन् ध्वनि ।
 गठवशत गिणिके, गठवशत गिलकु (क) सं.— टन्टन् ध्वनि, खड़खड़ाहट ।
 गठवशत गिण्ट (क) सं.— मोटा कपड़ा, दो तागे का कपड़ा ।
 गठवशत गिंडी (क) सं.— छोटे मुँह का एक जल-पात्र ।
 गठवशत गिंडु (क) क्रि.— चकौटी काट, नोच ।
 गठवशत गिण्ण, गठवशत गिण्णु, गठवशत गेण्णु (क) सं.— व्याई हुई गाय या भैंस का दूध ।
 गठवशत गिण्णि (क) सं.— एक प्रकार की बीमारी जिसके कारण हाथ-पैर की अंगलियाँ और नाक खराब हो जाती है ।
 गठवशत गिण्णु (क) सं.— दे. गठवशत ; जोड़, गांठ ।
 गठवशत गित्ति ['गठवशत' का अन्यरूप] — स्त्री. लिं. सूचक प्रत्यय ; उदा. — गठवशत गठवशत कुंवारगित्ति = कुंवारिन, गठवशत गठवशत डोंवरगित्ति = डोंम जाति की स्त्री ।
 गठवशत गिदु ; गठवशत गिदुन, गठवशत गिदुन, गठवशत गिर गठवशत गिदु (क) वि. १/४ [एक चौथाई] भाग, एक परिमाण विशेष ।
 गठवशत गिर (सम्) सं.— गिरा, वाणी, बात ।
 गठवशत गिरकालु (क) वि. — १/१६ (एक बटा सोलह) ।
 गठवशत गिरकु (क) क्रि.— ठूस, दबाकर भर ; घना हो ;
 गठवशत गिरके (क) सं.— रुई धुनने का यंत्र ।
 गठवशत गिरगट, गठवशत गिरगट, गठवशत गिरगटे (सम्) सं.— एक एक प्रकार का वाद्य विशेष जिसका स्वर उतना आकर्षक नहीं होता ।
 गठवशत गिरगे (क) सं.— नली (Ankle) ।
 (१) गठवशत गिरणि (क) सं.— दे. गठवशत ।
 (२) गठवशत गिरणि (अ. दे.) सं.— धिरनी (हिं.) सूत कातने का चर्खा ।

गिरस्त (तद्) सं.—गृहस्थ (तत्) ।
गिराकि (तद्) सं.—ग्राहकः (तत्) ;
खरीदनेवाला ।

गिरागति (तद्) सं.—गृहगति (तद्)
किसी की व्यक्तिगत बातें ।

गिरास्त (तद्) सं.—दे. गिरस्त.

(१) गिरि (सम्) सं.—प्रतिष्ठित, मान
नीय ; पर्वत, सात प्रधान पर्वतों में एक ;
सात की संख्या; = गिरि ('गिर' धातु) —
निगलना ।

(२) गिरि (अ.दे.) प्र.—व्यापार-व्यवसाय
का सूचक प्रत्यय ; उदा.—गिरिगुमास्तगिरि.
गुमास्तगिरि. गुमास्तगिरि =
मुनीम ।

गिरिकर्ण (सम्) सं.—एक पौधा,
विष्णुकान्ता ;

गिरिकर्णिके (सम्) दे.—गिरिकर्ण ;
पृथिवी ।

गिरिके (सम्) सं.—गिरिका, छोटा चूहा ।
चुहिया ।

गिरिगे (क) सं.—दे. गिरि.

गिरिज (सम्) सं.—पार्वती, पहाड़ी
केला ; मल्लिका लता, गंगाजी ; सेंट-
खड़ी, खड़िया मिट्टी ।

गिरिजाकल्याण (सम्) सं.—
कन्नड के प्रसिद्ध कवि हरिहर का प्रबंध
काव्य ।

गिरिजाकांत (सम्) सं.—शिव ;
माप विशेष ।

गिरिजाते, गिरिजे (सम्) सं.—
पार्वती ।

गिरिजानाथ, गिरिजेन्द्र,
गिरिजेश (सम्) सं.—शिवजी ।

गिरिदुर्ग (सम्) सं.—पहाड़ी
किला ।

गिरिधन्व (सम्) सं.—शिव ।

गिरिधर (सम्) सं.—श्रीकृष्ण ।

गिरिमल्लिके (सम्) सं.—एक
प्रकार की चमेली ; कुटजवृक्ष ।

गिरिराज (सम्) सं.—हिमालय ।

गिरिरिपु (सम्) सं.—इंद्र ।

गिरिवातनाथ, गिरिश
(सम्) सं.—शिव ।

गिरिशृंग (सम्) सं.—पर्वत की
चोटी ; गणेश ।

गिरिस (तद्) सं.—गिरिश (तत्) ।

गिरिसानु (सम्) सं.—अधिलका,
पहाड़ की तलहटी ।

गिरिसार (सम्) सं.—लोहा ;
जस्ता ।

गिरिसुते (सम्) सं.—गिरिजेन्द्र.

गिरिश, गिरिश्वर (सम्) सं.—
शिव ; हिमालय ।

गिरि (सम्) सं.—गिरा, वाणी ।

गिर्याण (तद्) सं.—ग्रहणम् (तत्) ।

गिरि (क) क्रि.—सोच, विचार कर,
कल्पना कर, गौर कर ।

गिरि (क) अ.—गिरिगिरि—चारों
ओर घूमते हुए या चक्कर काटते हुए ।

गिरिके (क) सं.—चारों
ओर घूमने या चक्कर काटने की क्रिया ;
विभ्रम ।

गिरिकु (क) सं.—सीधा होना, स्थिर या
दृढ़ होना ; बहुत कठिनाई के साथ खोलने
योग्य होना (जैसा कि दरवाजा) ; खचा-
खच (भरा) होना । सं.—चरचर शब्द
(दरवाजे का) ।

गिरिके (क) सं.—दे. गिरिके.

गिरि (क) सं.—चक्कर काटना ; चक्कर,
किसी पदार्थ के वेग से घूमने से निकलने-
वाली ध्वनि ।

गिरिके (क) सं.—दे. गिरिके.

गिरिके (क) सं.—दे. गिरिके ; बच्चों
का खिलौना ; रस्सी के सहारे चलनेवाला
पहिया ।

गिरि (क) वि.—चराचरहट करनेवाला ।

गिरिकु (क) सं.—चराचरहट ; हवा की
ध्वनि ।

गिरिगटे (क) सं.—बच्चों का

खिलौना जिसमें से खड़खड़ाहट का शब्द
निकले ; खड़खड़ शब्द ।

गिरिगटे (क) सं.—दे. गिरिगटे.

गिरि, गिरिगे (क) अ.—
वेग से चक्कर काटने हुए, शीघ्रता से ।

गिरिगटे, गिरिगटे (सम्) सं.—
दे. गिरिगटे.

गिरि (क) वि.—दे. गिरि.

गिरि, गिरि (क) सं.—खड़खड़,
गड़गड़ आदि शब्द ।

गिरि (क) सं.—खड़खड़ शब्द ।

गिरिकु, गिरिके (क) सं.—दे.
गिरिके और गिरिके.

गिरिग्राह (सम्) सं.—मगर, नक,
घड़ियाल ।

गिरिलन (सम्) सं.—निगलना, खा
डालना ।

गिरिगला, गिरिगला, गिरिगला
गिरिगला (अ. दे.) सं.—गिरिगला (फारसी)

गारा, दीवार पर गारा लगाने की क्रिया ।
गिरि (क) सं.—दे. गिरि.—गिरिगला

गिरिगला = गिरिगला गिरिगला —
औषध की एक जड़ी-बूटी ।

गिरिके, गिरिके, गिरिके (क)
सं.—बच्चों का खिलौना जिसमें से
खड़खड़ शब्द निकले ।

गिरिगला (अ. दे.) सं.—शिकायात,
कलंक लगाना, दुर्नाम करना, अपयश
फैलाना ।

गिरिगला (क) सं.—तोता, कीर, शुक ।

गिरिगला गिरिगला (क) सं.—
हाथी का चिंघाड़ना ।

गिरिगला गिरिगला (क) क्रि.—खुरच,
रगड़कर चमका ; रेखाएँ खींच, अस्पष्ट
लिख, घसीट लिखकर कागज़ भर ; नोच,
छील ; किसी पेड़ से रस निकालने लिए
नश्तर लगा । सं.—खुरचन ; छेनी,
कलम आदि से खींची गई रेखा ; नोचना ;
हल की लकीर ।

गुण्डु

गुण्डु गीजग, गुण्डु गीजग (क) सं.—
एक पक्षी जिसका घोंसला बोटल जैसा होता
है (Ploceus baya)।

गुण्डु गीजु (क) क्रि.—कलम या लेखनी से
लकीरें खींच। सं.—आँख का स्त्राव
(Rheum)।

गुण्डु गीजुग (क) सं.—दे. गुण्डुग.

गुण्डु गीटिसु (क) क्रि.—दे. गीटिसु.

गुण्डु गीटु (क) सं.—रेखा, लकीर। क्रि.—
मिल; पा; पहुँच।

गुण्डु गीत (सम्) सं.—गीत, गाना; कीर्तन;
एक छंद का नाम।

गुण्डु गीति (सम्) सं.—भजन, गीत; एक
छंद का नाम।

गुण्डु गीतिके (सम्) सं.—छोटा गाना या
गीत।

गुण्डु गीते, गुण्डु गीता (सम्) सं.—गीत,
भजन, गाना; एक छंद का नाम; भग-
वद्गीता।

गुण्डु गीबु (क) सं.—घर, रहने का स्थान;
ब्याई गाय का दूध।

गुण्डु गीर (सम्) सं.—वाणी, भाषा।

गुण्डु गीरु (क) क्रि.—खुरच, नोच, छील:
कलम से लकीर खींच; रगड़। सं.—रेखा,
लकीर; निशान, चिह्न; = कुरु जीरु—
कींगुर।

गुण्डु गीरुण (सम्) वि.—निगला हुआ, खाया
हुआ; प्रशंसित।

गुण्डु गीरुणि (सम्) सं.—निगलना, भक्षण;
प्रशंसा, कीर्ति।

गुण्डु गीरुण (सम्) सं.—देव, देवता।
— गुण्डु नाथ (सम्) सं.—इंद्र; जैन
संन्यासी या अर्हत्। — गुण्डु भाषे (सम्)
सं.— संस्कृत।

गुण्डु गीरुणि (सम्) सं.—देवी, भगवती;
सरस्वती।

गुण्डु गीरुपति (सम्) सं.—बृहस्पति।

गुण्डु गीरु (क) सं.—गर्जन, चिल्लाहट,
चीख, चीत्कार।

गुण्डु गीरु (क) क्रि.—(कपड़ा) फाड़, टुकड़े-

टुकड़े कर। — गुण्डु माहु (क) क्रि.—
नीचा दिखा, अपमान कर।

(१) गु गु (क) प्र.—प्रत्यय जिससे संज्ञा तथा
क्रिया-शब्द बनते हैं। उदा.— गुण्डु
केलुगु — निचाई; निम्नता; गुण्डु
मेगु — ऊपरी भाग या उच्चता; गुण्डु
पोगु या गुण्डु होगु — जा, गमन कर।

(२) गु गु, गु गुं (क) प्र.—दे. गु, गुं.
गुण्डुगुंड गुंगाड, गुण्डुगुंड गुंगाडि, गुण्डुगुंड
गुंगाणि (क) सं.—मच्छर; छोटा पदार्थ,
नाचीज वस्तु या व्यक्ति।

गुण्डु गुंगि (क) सं — काला अमर जो
भाकार में बड़ा होता है। — गुण्डु माहु
(क) सं.— एक प्रकार का आम।

गुण्डु गुंगु (क) सं.— धान का भूसा, भूसा,
छिलका।

गुण्डु गुंगुरु (क) वि.—घुंगुरारे, (गुण्डुगुं
कुण्डल गुंगुरु कृदलु= घुंगुराले बाल)।
सं.— मच्छर, वनमक्खी, कुटकी, पिस्सु।

गुण्डु गुंगु (तद्) सं.— गुच्छ; (तद्);
गुच्छा, फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता।

गुण्डु गुंज, गुण्डु गुंजि, गुण्डु गुंजे (तद्)
सं.— कुंज; (तद्); लतागृह, लतावितान;
भाण्डार; घुंगची।

गुण्डु गुंजत् (सम्) सं.—गूँजना, गुंजार
करना, गुंजगाना।

गुण्डु गुंजत्तु गुंजामरण (सम्) सं.— घुंघ-
चियों का बना आभरण वा गहना।

गुण्डु गुंजित्तु गुंजायिषि (अ. दे.) सं.—
(लाभ), अवैध लाभ।

गुण्डु गुंजि, गुण्डु गुंजे (तद्) सं.— गुंजा,
गुंजिका (तद्); घुंगची का दाना।

(१) गुण्डु गुंजु (क) वि.—छोटा, लघु। क्रि.
उलझ (धागा उलझना)। सं.—उलझना;
कपड़े पर का रोवा; नारियल की जटा।
— गुण्डु गुंडु (क) सं.— उलझी हुई
गाँठ। — गुण्डु बीलु (क) क्रि.— उलझ
जा।

(२) गुण्डु गुंजु (क) क्रि.— खींच;
सिकुड़, छोटा कर; छुँट जा।

(१) गुण्डु गुंडु (क) सं.— रास्ता; घर,
मकान, गड्ढा। अ.—पास, समीप, निकट।

(२) गुण्डु गुंड (क) सं.—कीला, खूटी।
गुण्डु गुंटे (क ?) सं.— १/४ एकड़ या १२१
वर्ग गज।

गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार;
सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

सेवक, नौकर; व्यक्तिवाचक संज्ञा (पुरुष
का नाम)। गुण्डु गुंड गुंड अण्ड
गुण्डु गुंड (क ?) सं.— गोला, गोलाकार ;

बंदूक में चलाने की सीसे की गोली । —
 कल्लु कल्लु (क) सं.—पीसने का पत्थर,
 ಉಂಡವರಿಗೆ ಉಪಯೋಗ ಗುಂಡು ಕಲ್ಲಿಗೆ ಎಣ್ಣೆ
 ಬೇಡ ಉಂಡವರಿಗೆ ಉಪಯೋಗ ಗುಂಡು ಕಲ್ಲಿಗೆ ಎಣ್ಣೆ
 ಬೇಡ — जो खा चुके उनको खाना नहीं
 चाहिए, पीसने के पत्थर को तेल नहीं
 चाहिए अर्थात् उस पर तेल नहीं लगाना
 पड़ता है (कह.) । — ಕೂಲಿ ಕೊತ್ತಿ (क)
 सं.— छोटी कुंड़ी या भँवर कड़ी । —
 ಕುಣ್ಣಿ ಮಲ್ಲಿಗೆ (क) सं.— एक प्रकार की
 चमेली । ಮುಟ್ಟುಗ ಮುಟ್ಟುಗ (क) सं.— एक
 पक्षी जो पानी में पत्थर के समान गोता
 मारता है । — ಎಲೆ ವಲೆ (क) सं.— एक
 प्रकार का जाल । — ಹಾರಿಸು (क)
 क्रि.— गोली मार; बंदूक का प्रयोग कर ।
 ಹೊಡೆ ಹೊಡೆ (क) क्रि. = ಗುಂಡು ಹಾರಿಸು.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) वि.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (तद्) सं.— गुंफना (तत्)
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) क्रि.— पीछे हट, ठमक,
 ठिठक, सिकुड़ ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— भीड़, राशि, समूह,
 समुदाय गहराई, गंभीरता ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— बंधन, रचना,
 गूथना ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— क्रमबद्ध रचना,
 गूथना । ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) वि.— गूँथा
 गया, पिरोया गया, क्रम से रखा गया ।
 (१) ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.—
 गूढ़ता, गुप्त बात ; गंभीरता (Reserved-
 ness) ।
 (२) ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (तद्) सं.— कुंभः (तत्) ;
 घड़ा ; पहिये की नाभि (मध्यभाग) ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— एक
 अनुकरण — मूलक ध्वनि, भनभनाहट,
 सनसनाहट ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) क्रि.— तुतला, बोलते से
 अधिक साँस खींच । सं.— तुतलाना,
 तुतलाहट ; हृदय का कंप ; कौर, ग्रास ।

ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ
 (क) सं.— उवाला गया चना या भूंग
 जिसमें नमक-मिर्च मिलाकर खाया जाता
 है ; सिकुड़न; रोंगटे खड़े होना ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— अवदंश । वि.—
 घुंघराले ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— रोमांच, रोमहर्ष ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ
 ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ
 (सम्) सं.— गुग्गुल, एक प्रकार का सुगंध
 पदार्थ (Bdellium) ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— कानों का मल ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, (क) सं.— छोटा-
 पन, नाटापन ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— गुच्छा, फूलों का
 गुच्छा ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— गुच्छा ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— हार जिसमें
 चौबीस तार हो ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— फुसफुसाहट,
 कानाफूसी ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (तद्)
 सं.— गूजर राष्ट्र, गुजरात ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, (अ. दे.) सं.— आजीविका,
 जीवन-उपाय, वृत्ति ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) वि.— घुंघराले; घुंघरारे,
 कुटिल ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) वि.— छोटा, लघु । —
 ಕೂಲಿ ಕೊತ್ತಿ = छोटी डाल ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) वि.— छोटा । सं.— छोटा
 आदमी, नाटा आदमी, बीना ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ
 ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ. ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ
 (क) सं.— एक प्रकार की चमेली ; सेमन्ती ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (तद्) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ
 ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (अ. दे.) सं.— एक राग का
 नाम ।

ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.—
 गुर्जरः (तत्) ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— नाटा आदमी,
 बीना ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— नाटी स्त्री ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ ; अकड़
 की चाल ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— एक अनुक
 रणमूलक शब्द, गुरगुराहट ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क)
 क्रि.— 'गटगट' पी ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— घूँट ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ, ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— गोली (Pill)
 गोल स्फटिक)
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) क्रि.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) क्र.— 'गटगट'
 करके ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— छोटी पहाड़ी ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दवा का उतना परिमाण
 जिसे बच्चे एक बार निगल सके ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— रहस्य, गुप्त बात, निजी
 विषय ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— छोटी पहाड़ी ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— गाय-बैलों का रंभाना ;
 कबूतर की बोली ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— गुड, शीरा ; गोला ;
 गेंद ; कौर, ग्रास ; हाथी का कवच या
 ज़िरहबख्तर ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— एक पौधा
 विशेष (The plant Fluggea leucopy-
 rus) ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— वृक्ष विशेष
 (Bessia latifolia) ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (सम्) सं.— पीलू का पेड़ ।
 ಗುಂಡುಗೆ ಗುಂಡುಗೆ (क) सं.— दे. ಗುಂಡುಗೆ.

गुणवर्म (सम्) सं.—कन्नड के एक लेखक का नाम ।

गुणवृष (सम्) सं.—मस्तूल या वह खंभा जिससे जहाज या नाव बांधी जाती है ।

गुणसौंदर्य (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

गुणचर (सम्) सं.— गुणन-क्रिया, गुना करना ।

गुणद्वय (सम्) सं.—दे. गुणद्वय. गुणारि (सम्) सं.— गाँव के अंक-लेखक (शानुभोग) का सहायक ।

(१) गुण (क) वि.— पोला, छूछा । क्रि.—चाबुक की मूठ ।

(२) गुण (सम्) सं.—गुणवान् पुरुष ; धनुष ; एक पौधा विशेष ।

गुणिके (सम्) सं.—गुमड़ी, गिल्टी । गुणित (सम्) वि.—गुना किया हुआ । सं.—गुणन क्रिया ।

गुणिसु (सम्) क्रि.—दे. गुणिसु. गुणु (क) क्रि.—गुणगुणु गुणगुट्ट बड़बड़ाहट, कुडबुडाना ।

गुणुकु (क) सं.—दे. गुणुकु. गुणु (क) सं.— राशि, समुदाय ; गहराई, अथाह ; गंभीरता, गुप्त होना, रहस्य ।

(१) गुणु (क) वि.— दृढ़, कसा हुआ । गुणु (तद्) वि.—गुप्त (तद्) ।

गुणुने (क) कृ.—कसकर, दृढ़ता से । गुणुदार (क ?) सं.—ठेकेदार ।

गुणुति (क) सं.— फली या फूलों का गुच्छा ; झाड़ी ।

गुणुतिगे (क) सं.— ठेका, ठेकेदारी ; काश्तकारी ।

गुणुतु (क) सं.— चिह्न, निशान, पहचान ; स्थान, जगह ; तंगी ।

गुणुत्स (तद्) सं.— गुत्सक (तत्) ; गुच्छा ।

गुणुत्सक (सम्) सं.— गट्ठा, बंडल, गुच्छा ।

गुणुत्सक (सम्) सं.—दे. गुणुत्सक. गुद (सम्) सं.—गुदा ।—३९७ कील, ३९७८ कीलक (सम्) सं.—बवासीर ।

(१) गुदग (क) सं.—दरवाजे को अंदर से बंद करने की कुंडी ।

(२) गुदग (क) सं.—मोटा आदमी । गुदगि—स्त्री. लिं. ।

गुदगु (क) सं.—दे. गुदग (१). गुदगे, गुदिगे, गुदगे, गुदगे (क) सं.—गदा, गदका ; मुद्गर ।

गुदजनि (सम्) सं.—विष्णु ।

गुदि (क) क्रि.—कूद, छलांग मार, पैरों से शोर मचा ; पाद या पैर बांध । सं.— गुदिगे, गुदगे, गुदगे, गुदगे—ताड के वृक्ष या नारियल के वृक्ष पर चढ़ते समय पादों में बांधने को रस्सी ; गुच्छा ।

गुदिगे (क) सं.—दे. गुदग ; दे. गुदि. गुदु (क) सं.—सनसनाहट ।

गुदगु (क) सं.—दे. गुदग (१). गुदगे, गुदगे (क) सं.—दे. गुदग (सं.) ।

गुदरिसु (क) क्रि.— आगे-आगे चला, खींच ; मुक्की मार ।

गुदलि, गुदलि (तद्) सं.— कुहालः (तत्) ; कुदाली ।

गुदु (क) सं.— पशुओं के गले में बांधने की रस्सी ।

गुदिसु (क) क्रि.—आगे-आगे चलवा (गुदिसु का प्रेरणार्थक) ।

गुदु (क) क्रि.— मुष्टि प्रहार कर, धँसा दे, मुक्की मार ; कूट, चूर्ण कर । सं.— धँसा ; चूहे, सौंप आदि का बिल ।

गुदुके (क) सं.— मुष्टि प्रहार करना ।

गुदु (तद्) सं.—दे. गुदु. गुदु (क) सं.— बाजरे के ऊपर का छोटा भाग ; धान आदि का भूस।

गुदु (क) सं.— ऊपर उठा हुआ स्थान,

(पहाड़ी) ; छोटापन । गुदु गुदुने-छोटा हाथी ।

गुदु (क) सं.— सुनहले रंग का कागज़ जो अलंकार करने के काम में आता है ।

गुदु (तद्) सं.— गुप्त (तत्) ।

गुदु (सम्) सं.— रहस्य, गोपनीय बात ।

गुदु (सम्) सं.— रक्षक ; गुदु, जासूस ।

गुदु (सम्) सं.— रक्षण, संरक्षण ; छिपाव ; बिल, गुफा ; तलवार की मूठ ।

गुदुवाद (सम्) सं.— रहस्यपूर्ण संभाषण ।

गुदुने (क) अ.— चुपचाप, मौन रूप से ।

गुदु (क) क्रि.— कूद, लांघ ; छिप ; छिपा (पूरे शरीर को या शरीर के किसी भाग को) ।

गुदु (क) सं.— डेर, राशि ।— गुदु गोल् (क) क्रि.— राशि हो ।

गुदु (क) सं.— घनत्व, निविड़ होना, भीड़भाड़ होना । क्रि.—दे. गुदु. गुदु (क) सं.—भीड़ का शोरगुल ; फुलाव, सूजन, वृद्धि ।

गुदु (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द । वि.— गरम, उष्ण ।

गुदु (क) सं.—मेंढक की टरटराहट । गुदु (क) सं.—दे. गुदु.

गुदु (क) सं.— छोटा पक्षी, गौरैया ।

गुदु (क) सं.— दे. गुदु ; पिण्ड, गाँठ ।

गुदु (क) सं.— दे. गुदु ; गुदु (क) सं.— एक प्रकार का तृण ।

गुदु (क) सं.— दे. गुदु. गुदु (क) सं.— एक प्रकार का तृण ।

गुदु (क) सं.— गुदुगुदु— फूलों की सुगंधि की व्याप्ति ।

गुदु (तद्) सं.— गुदु वाद्य, गुमति वाद्य— कुंभ वाद्य ।

गुमरी

गुमरी (अ. दे.) सं.— बच्चों का आपसी झगड़ा ।

गुमस्त, गुमास्त, गुमास्ता (अ. दे.) सं.— गुमास्ता (फ़ारसी); कर्क, मुनीम ।

गुमान, गुमाने (अ. दे.) सं.— गुमान (फ़ारसी); संदेह, शक; वि.— घमंडी, अभिमानी ।

गुमास्त, गुमास्ता (अ. दे.) सं.— दे. गुमस्त.— गो गिरि = कर्की, मुनीमी ।

गुमि (क) सं.— राशि, समुदाय, भीड़ । गुमित (क) सं.— गुप्त वार्ता, अपवाह । गुमट (अ. दे.) सं.— गुंबज़ ।

गुमुरि (अ. दे.) सं.— गुंबज़, गुंबद । गुम्म (क) सं.— झूठा भय, हौआ । गुमट (अ. दे.) सं.— दे. गुमुरि । गुमन (क) सं.— गुमन गुसक — गंभीरत ; गंभीरा स्वभाव का पुरुष । गुमनगुसक — गुमनगुसकि — गंभीर स्वभाव की स्त्री ।

गुमने (क) अ.— तुरंत, जल्दी, फौरन । सं.— खींचते, कूटते या पीसते समय उत्पन्न होनेवाली ध्वनि ।

गुमि (क) सं.— राशि, ढेर, समुदाय । गुमिसु (क) क्रि.— सुकी मार । गुमसु (क) क्रि.— सुकी मार, धक्का दे, धूँसा दे ; ज़मीन पर पीठ लगाकर उसके बल आगे बढ़ (जैसे बच्चे करते हैं) । सं.— राशि, ढेर भीड़ ; तैरते समय आगे बढ़ने की क्रिया ; पीछे हट, ठिठक, ठमक ।

गुमट (अ. दे.) सं.— गुंबद । गुम्मे (क) सं.— दे. गुमि । गुमि (क) सं.— दे. गुमि ।

गुमकयिसु, गुमकयिसु (क) क्रि.— गुरगुरा, क्रोध में आ । गुमण (सम्) सं.— प्रयत्न, सतत चेष्टा । गुमव (क) सं.— आश्चर्य ; भयंकर दृष्टि, भयानक दृश्य ।

गुमुरि (क ?) सं.— ढाल । गुमुराल (?) सं.— एक प्रकार की गोलाकार नाव ।

(१) गुमुर (क) सं.— खड़खड़ाहट । (२) गुमुर (सम्) सं.— पिता ; बूढ़ा ; शिक्षक ; दीक्षा देनेवाला, मंत्रदाता ; प्रभु, अध्यक्ष ; शासक ; बृहस्पति, बृहस्पति ग्रह ; द्रोणाचार्य । वि.— भारी, बोझिल ; महान्, उत्तम, सर्वोत्कृष्ट, सम्मानित ; प्यारा, प्रेम-पात्र ; घमंडी, अहंकारी । — कुलवास (सम्) सं.— गुरु के आश्रम या घर में रहना) — कुलवासी (सम्) सं.— शिष्य, छात्र ।

गुमुरगुलु (क) सं.— सूरजमुखी का फूल । गुमुरगे (सम्) सं.— बड़ा सोपान या डग । गुमुरव (सम्) सं.— गुरुता, भारीपन, गौरव के योग्य । गुमुरवु (क) सं.— दे. गुमुर । गुमुरोषिते (सम्) सं.— गुरु की पत्नी ; आदरणीया स्त्री ।

गुमुरभा (सम्) सं.— पहाड़ी केला । गुमुरगं गुमुरलिंग जंगम (सम्) सं.— वीरशैव संप्रदाय के अनुसार तीन पवित्र और पूज्य स्थान (गुरु) लिंग और जंगम ।

गुमुरवार (सम्) सं.— गुरुवार, बृहस्पतिवार । गुमुरसिद्ध (सम्) सं.— निपुण गुरु । गुमुरस्त (सम्) सं.— गुरुस्त — गुरु के अधीन में रहनेवाला, वीरशैव या लिंगायत ।

गुमुरे, गुमुरे, गुमुरे (क) सं.— बुलबुला ; छाला ; फफोला ; फुन्सी, फोड़ा ; छोटा गोलाकार ढाँचा ; पैर की अंगुली में पहनने की अंगुठी (Ring worn on the toe) ।

गुमुर (क) सं.— कुद्ध धूस के मुँह से निकलनेवाली ध्वनि ।

गुमुरे (क) सं.— घराटे का शब्द । गुमुर (क) सं.— गुमुर, गुमुर, गुमुर, गुमुर, गुमुर, गुमुर—निशान, चिह्न, पहचान ; जानकारी ।

गुमुर (क) सं.— लक्ष्य, ध्येय । — का (क) सं.— धनुर्विद्या में प्रवीण पुरुष ; शस्त्रधारी सेवकों में प्रधान पुरुष ।

गुमुरे (क) सं.— एक पौधे का नाम । गुमुरे (क) सं.— लड़कों का एक खेल । गुमुर (क) सं.— क्रोध सूचक ध्वनि ; घुर-घुराहट ।

गुमुरगुमुरे (क) अ.— मौन रूप-से, चुपचाप । गुमुरे (क) सं.— दे. गुमुरे ।

गुमुरे (क) सं.— दे. गुमुरे । गुमुरे (क) सं.— दे. गुमुरे ।

गुमुरे (क) क्रि = गुमुरेगुमुरे, —गुमुरे — गुरगुरा (जैसे बाघ, भालू, कुत्ते आदि जानवर करते हैं) ।

गुमुरे (क) सं.— दे. गुमुरे । गुमुरे (क) सं.— वृक्ष विशेष (Cam-boge tree) ।

गुमुरे (सम्) सं.— गुजरात प्रदेश । — वृक्ष (सम्) सं.— गुजरात का रेशमी वस्त्र ।

गुमुरे (क) सं.— दे. गुमुरे । गुमुरे (क) क्रि.— दे. गुमुरे । गुमुरे (क) सं.— दे. गुमुरे । गुमुरे (सम्) सं.— गर्भवती स्त्री ।

गुमुरे (क) सं.— घुंघची । गुमुरे (अ. दे.) सं.— गुलाब (फ़ारसी) ।

गुमुरे (अ. दे.) सं.— गुलाम (अरबी), दास, सेवक ।

गुमुरे (अ. दे.) सं.— गुलाल रंग जिसका प्रयोग होली में होता है ।

गोली च गुलिके (सम्) सं.—गोली (A ball), गोल स्फटिक ।

गोली गोळ गुलिंगि (क) सं.— गोलीगोळ, गोलीगुळ, गोलीगुळ, गोलीगुळ (सम्) सं.— गुच्छा, दस्ता ।

गोली गुल्फ (सम्) सं.— पाँवों की गाँठे, गिटुआ ।

गोली गुल्फि (सम्) सं.— एक पक्षी का नाम ।

गोली गुल्म (सम्) सं.— गोलीगुल्म (तद्) — झाड़ी, वृक्षों का झुरमुट, वन, जंगल; प्रधान पुरुषों से युक्त रक्षकदल जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ अश्व और ४५ पदाति होते हैं; दुर्ग, किला; प्लीहा; देहाती पुलिस की चौकी; घाट ।

गोली गुल्मलता (सम्) सं.— सोमवल्ली ।

गोली गुल्मिनि (सम्) सं.— झाड़ बांधकर उगनेवाली लता ।

गोली गुल्लु (क) सं.— शोरगुल, हो हल्ला ।

गोली गुलाक (सम्) सं.— सुपारी का पेड़ ।

गोली गुवि (तद्) सं.— गुहा (तद्); गुफा ।

गोली गुस (अ. दे.) सं.— घूसा (हिं.) ।

गोली गुसुगुसु (क) सं.— फुसफुसाहट, कानाफूसी ।

गोली गुह (सम्) सं.— कार्तिकेय । — जनक (सम्) सं.— शिव ।

गोली गुहे (सम्) सं.— गुहा, गुफा, विल; हृदय ।

गोली गुह्य (सम्) वि.— छिपाने के योग्य, गुप्त । सं.— रहस्य, गुप्तत्व; एकांत; अकार्य, अनुचित कार्य; कूल्हा; भग, योनि; कौपीन, लंगोट ।

गोली गुह्यक (सम्) सं.— देवयोनि विशेष — कुवेर के धनागार की रक्षा करनेवाले; कुवेर ।

गोली गुह्यकेशर (सम्) सं.— कुवेर ।

गोली गुह्यपिधान (सम्) सं.— लंगोट, कौपीन ।

गोली गुल (क) सं.— हिंगुलि, इंगुर; पानी

या किसी तरल पदार्थ के उबलते समय निकलनेवाली ध्वनि ।

गोली गुलक्. गोली गुलुक, गोली गुलुकु (क) सं.— किसी चीज़ को एक ही बार पूर्णतः निगलते समय उत्पन्न होनेवाली ध्वनि ।

गोली गुलिक (तद्) सं.— कुलिकः (तद्); एक नाग का नाम ।

(१) गोली गुलिके (तद्) सं.— गुटिका (तद्); गोली (Pill) ।

(२) गोली गुलिके (तद्) सं.— घुटिका (तद्); पावों की गाँठे, एड़ी ।

गोली गुलुक, गोली गुलुकु (क) सं.— दे. गोलीगुलुकु ।

गोलीगुलुकु (क) सं.— दे. गोलीगुलुकु ।

गोली गुले, गोली गुलेय, गोली गुल्य (क) सं.— समुदाय; स्थानांतरण (शत्रुओं के आक्रमण के भय या अकाल के भय से एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान जाना) ।

गोली गुल्ल (क) सं.— लता विशेष, निदग्धिका या राष्ट्रिका (Solanum ferox) ।

गोली गुल्लि (क) सं.— दे. गोलीगुल्लि ।

मसिपात्र, दवात ।

गोली गुल्ले (क) सं.— दे. गोलीगुल्ले ।

गोली गुल्ल (क) सं.— हाथी-घोड़े का सजावटी साज; हल की फाल; लोहे की छड़ी ।

गोली गुल्लि (क) सं.— निम्न भूमि, गड्ढा; विल ।

गोली गुल्लु (क) सं.— दे. गोलीगुल्लु (समुद्र के जल का गर्जन; अग्नि-ज्वाला का शब्द) ।

गोली गुली, गोली गूले, गोली गूले (क) सं.— उल्लू ।

गोली गूगु (क) सं.— भूसा, भूसी ।

गोली गूगे (क) सं.— दे. गोलीगूगे ।

गोली गूट (क) सं.— कीला, खूँटा, खूँटी ।

गोली गूड, गोली गूडे (क) सं.— टोकरी ।

गोली गूडार (तद्) सं.— दे. गोलीगूडार ।

गोली गूडिसु (क) क्रि.— एक साथ मिला, राशि लगा, झाड़ देकर राशि लगा; झाड़ दे ।

गोली गूड (क) सं.— घोंसला, नीह; कबूतर का दरवा; मुर्गी-मुर्गे का घर; अस्थायी वासस्थान; दीवार में छोटा ताखा (Niche); क्रूर मृगों को फँसाने का फँदा; पिंजड़ा; नाभि; हड्डी का खोखला; ढाँचा, खाका; शरीर, देह; बाजरे की सूखी भूसी का ढेर ।

गोली गूडे (क) सं.— टोकरी; एक पौधा विशेष ।

गोली गूड (सम्) वि.— छिपा हुआ, ढका हुआ, गुप्त; गहन, एकांत ।

गोली गूडचतुर्थ (सम्) सं.— एक प्रकार का चित्र ।

गोली गूडचर, गोली गूडचार, गोली गूडचारि (सम्) सं.— गुप्तचर, जासूस ।

गोली गूडे (सम्) सं.— गुप्तत्व, रहस्य ।

गोली गूडप, गोली गूडपाद्, गोली गूडपाद (सम्) सं.— सौंप, सर्प ।

गोली गूडपद (सम्) सं.— रहस्य; असाधारण शब्द ।

गोली गूडसाक्षि (सम्) सं.— प्रपंची गवाह ।

गोली गूडांग (सम्) सं.— कमठ, कछुवा ।

गोली गूणु (क) सं.— छोटा ताखा, छोटा आला ।

गोली गूट (क) सं.— दे. गोलीगूट ।

गोली गूथ (सम्) सं.— विद्या, मल ।

गोली गूडे (क) सं.— टमाटर ।

गोली गूनि (क) सं.— कुबड़ी, कुब्जा ।

गोली गूनु (क) सं.— खूँडा ।

गोली गूवे (क) सं.— दे. गोलीगूवे — बाबलु (क) सं.— बल्लू का जीवन ।

गोली गूरलु, गोली गूरु (क) सं.— कांस्य रोग ।

गोली गूरु (गोली गूरुसि) सं.— गोलीगूरुसि ।

या (बड़े) दाँतों से सं.— गोलीगूरुसि । उल्टा ।

गुणार्थ गूण (सम्) वि.— लिया हुआ, प्रयत्न किया हुआ ।

गुणार्थसु गुणिसु, गुणार्थसु गुणिसु (क) क्रि.— गर्जन कर, कलकल कर, ध्वनि कर ; गूँज ; जंभाई ले ; खोल ; विस्तृत कर ; प्रकट हो ; उत्पन्न हो, ऊपर उठ ।

गुणार्थसु गुणिसु (क) क्रि.—दे. गुणार्थसु. गुणव गूव (क) सं.— कबूतर, कपोत ।

गुणार्थक गुवाक (सम्) सं. = गुणार्थक गुवाक — सुपारी का पेड़ ।

गुण् गूळि (क) सं. — सौंड ; बड़ा जुआ, चीलर ।

गुण् गूळे, गुण् गूळ्यु, गुण् गूळ्य (क) सं.—दे. गुण्.

गुण् गूज्जन (सम्) सं.—लहसुन ।

गुण् गूधु (सम्) वि. — लालची, लोभी ; अभिलाषी ।

गुण् गूध्र (सम्) वि.—लालची, लोभी । सं. गीध ।

गुण् गूष्टि (सम्) सं.—एक बछड़ेवाली गाय ; कोई भी जवान मादा जानवर ।

गुण् गूष्टिके (सम्) सं. — एक प्रकार का पौधा ।

गुण् गूह (सम्) सं.—घर, भवन ; पत्नी ।

गुण् गूहकृत्य (सम्) सं.—घरेलू कार्य या बातें ; घर का काम-काज ।

गुण् गूहोधिके (सम्) सं. — छिप-कली ।

गुण् गूहच्छिद्र (सम्) सं. — घर-गृहस्थी का दोष या कलंक ।

गुण् गूहपति (सम्) सं. — गृहस्थ, घर का स्वामी ; यज्ञ करनेवाला ।

गुण् गूहपिक (सम्) सं.—दे. गुण् गूहपिके.

गुण् गूहप्रवेश (सम्) सं. — नये बने कामिसु (क) ।

गुण् गुण (सम्) ; नव विवाहिता वधू का पति-गृह में आगमन ।

गुण् गुण (क) सं. — अगमक इत्य

गुण् गूहबलिभुज (सम्) सं. — गौरैया !

गुण् गूहवाटि (सम्) सं.—घर के सामने का बगीचा ।

गुण् गूहशांति (सम्) सं. — घर की शांति के लिए किया जानेवाला कर्मानुष्ठान ।

गुण् गूहस्थ (सम्) सं. —घर का स्वामी, गृहपति, बाल बच्चोंवाला ; सज्जन, सत्पुरुष ।

गुण् गूहस्थान (सम्) सं. — अस्थायी निवास-स्थान ।

गुण् गूहस्थाश्रम (सम्) सं.—चार अश्रमों में दूसरा ।

गुण् गूहस्थिके (सम्) सं.—घर-गृहस्थी ; सज्जनता, शिष्टता, सभ्यता ।

गुण् गूहस्थे (सम्) सं.—गृहिणी, घर की स्वामिनी ।

गुण् गूहाधिप (सम्) सं.—गृहस्थ. घर का स्वामी ।

गुण् गूहावग्रहणि (सम्) सं. — देहरी ।

गुण् गूहि (सम्) सं.=गुण् गूह.

गुण् गूहिणि (सम्) सं.—घर के स्वामी की पत्नी, पत्नी ।

गुण् गूहीत (सम्) वि.—लिया हुआ, प्राप्त, उपलब्ध, स्वीकृत, ग्रहण किया हुआ, धारण किया हुआ ।

गुण् गूह्य (सम्) वि.—घरेलू, घर से संव-धित ; आकर्षणीय ; प्रसन्न करने योग्य ।

सं.—घर में बसनेवाला, पालतू जानवर ।

गुण् गूह्यक (सम्) सं.—परतंत्र, पालतू, पालतू जानवर ।

गुण् गू (क) प्र. — संप्रदान कारक का चिह्न : उदा.—असंगे भवनिगे — उसको, असंगे कविगे—कवि को. असंगे ननगे—मुझे (मेरे लिए) ।

गुण् गूद (क) सं.—दूरी, फासला, अधिक दूरी, हटाव ।

गुण् गूडे (क) सं.—शिश्न, लिंग, पुरुष की जननेन्द्रिय ; कंद, मूल ।

गुण् गूडेमीनु (क) सं. — एक प्रकार की मछली ।

गुण् गूगे (क) वि.—छोटा, लघु ।

गुण् गूज्जलु (क) सं.—दीमक ।

गुण् गूज्जे (क) सं.—गूपुर, पायल ; ऊरुसंधि, पेट और जांव क बीच का भाग ।

गुण् गूज्जेगार [गूज्जे गार] (क) सं. — पायल बनानेवाला ; शूद्रों की एक जाति ।

गुण् गूडप (क) सं.—तोते की बोली ।

गुण् गूडह, गुण् गूडे (क) क्रि.—गिरा, नीचे गिरा, पतित कर ।

गुण् गूडे (क) सं.—संपर्क, संगति, स्नेह, ठीक होना ; सामीप्य । क्रि.—दे. गुण्.

गुण् गूडेडे (क) सं.—कंद, मूल ; मृणाल ।

गुण् गूणति (क) सं.—सखी, सहेली ; बच्चों की भाषा में शरीर पर हल्का भूरा धब्बा या चिन्ती ।

गुण् गूणसंगु (क) सं.—एक बड़ा वृक्ष (Heterophragma roxburghii) ।

गुण् गूणसु (क) सं.—शकरकंद । गुण् गूणसु गूडेडेगेणसु = कंद-मूल ।

गुण् गूणि (क) सं. — मिलन, स्नेह, दोस्ती ; दोस्त, मित्र ।

गुण् गूणिगार [गूणि गार] (क) सं.— दोस्त, मित्र ।

गुण् गूणितन (क) सं. — दोस्ती, मैत्री, स्नेह ।

गुण् गूणिय (क) सं.—गूणिगार ।

गुण् गूणिसु (क) सं.—दे. गुण्.

गुण् गूणगाति (क) सं.—सखी, सहेली, खाली ।

गुण् गूणगार (क) सं.= गूणिगार ।

गुण् गूणेतन (क) सं.—गूणितन ।

गुण् गूणैय (क) सं.—दोस्त, मित्र, सखा ।

गुण् गूणु (क) सं.—व्याई हुई गाय या भैंस का दूध ।

गुण् गूदलु (क) सं.—दीमक ।

गुण् गूदि (क) क्रि.—जीत, विजयी हो, विजय प्राप्त कर ।

गैदिसु गेदिसु (क) क्रि.—गैद का प्रेरणार्थक रूप—जिता, विजय प्राप्त करा ।

गैदुल गेदलि, गैदुल गेदलु (क) सं.— दीमक ।

गैदु गेपित (तद्) सं.—ज्ञेपितः (तत्) ; सम-ज्ञाना, जानना, बुद्धि ; स्मरण ।

गैदुल गेबरु (क) क्रि.— नख से (जमीन) खोद ।

गैदुल गेवु (क) क्रि.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेय (क) क्रि.—कर, काम कर, बना, तैयार कर, जोत, कृषिकर्म कर ।

गैदुल गेयि (क) क्रि.—= गैदुलु.

गैदुल गेयिसु (क) क्रि.—करा, काम करा, बनवा, तैयार करा (प्रे.) ।

गैदुल गेयु (क) क्रि.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेयत (क) सं.—काम, श्रम ।

गैदुल गेय्मे (क) सं.—काम, परिश्रम, जोताई, कृषि ।

गैदुल गेयु (क) क्रि.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेयसु (क) क्रि.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेरसे (क) सं.—सूप, अनाज रखने की चौकाकार टोकरी, सेकपात्र ।

गैदुल गेरसे (क) सं.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेरे (क) सं.—नख या छेनी की रेखा, रेखा, लायिन लकीर ।

गैदुल गेरेसे (क) सं.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेर (क) सं.—रेखा, लकीर ।

गैदुल गेर्बु (क) क्रि.—सैथुन कर, रति-क्रीडा कर ।

गैदुल गेल् (क) क्रि.—जीत, विजय पा, विजय हो ; लेपन कर, मल, संपर्क में ला ।

गैदुल गेल्, गैदुल गेल्बु (क) सं.—जीत, विजय, जय ; जीतने का आनंद, विजयोत्साह ।

गैदुल गेल्बु सोलु — जीत और हार ।

गैदुल गेलि, गैदुल गेलिडु, गैदुल गेलिडु (क) कृ.—जीतकर ।

गैदुल गेलिसु (क) क्रि.—जिता, विजयी कर (प्रे.) ।

गैदुल गेल् (क) क्रि.—दे. गैदुलु. सं.— विजय, जीत ।

गैदुल गेल्गे (क) सं.—जीतना, जीत, विजय (मै. प्र.) ।

गैदुल गेल्बिके, गैदुल गेल्बु, गैदुल गेल्बुह (क) सं.—जीत, जय, विजय ।

गैदुल गेल् (क) सं.—जीत, जय, विजय ।

गैदुल गेलिसु (क) क्रि.—जिता, विजय प्राप्त करा (प्रे.) ।

गैदुल गेल्लु (क) क्रि.— विजय प्राप्त कर, जीत ।

गैदुल गेल्लुविके (क) सं.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेळति, गैदुल गेळते (क) सं.—सखी, सहेली, आली ।

गैदुल गेळिय, गैदुल गेळिय (क) सं.—दोस्त, मित्र, सखा ।

गैदुल गेळे (क) सं.— स्नेह, मित्रता, मैत्री, सांगत्य ।

गैदुल गेळेगति (क) सं.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेळिय (क) सं.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेल्सु (क) सं.— शकरकंद, मूल या कंद ।

गैदुल गे (क) क्रि.—कर, बताना, तैयार कर, कृषि कर ।

गैदुल गेड, गैदुल गेडु, गैदुल गेडामृग (तद्) सं.— गैडा, गंडक ।

गैदुल गेडु, गैदुल गेडुक (सम्) सं.—गेद ।

गैदुल गेकु (क) सं.—दलदल का एक पौधा ।

गैदुल गेण (क) सं.— अंगूठे और कनिष्ठिका के बीच का परिमाण, वितस्ति ; बड़ा चाकू, तलवार । — ळाकु (क) क्रि.—

हाथ से नाप (अंगूठे और कनिष्ठिका के बीच का स्थान) ; दूर की बात सोच ।

गैदुल गेण (क) सं.— दे. गैदुलु.

गैदुल गेणि (क) सं.— भाड़ा, किराया ; संविदा ।

गैदुल गेणु (क) सं.— दे. गैदुलु.

गैदुल गेणे (क?) सं.— एक पौधा विशेष ।

गैदुल गेन (तद्) सं.— ज्ञान । — ळड वंत (तद्) सं.— ज्ञानवान्, ज्ञानी (प्रा.) ।

गैदुल गेपक (तद्) सं.— ज्ञापक (तत्), याद ।

गैदुल गेवे (क) सं.— रोग के कारण (शरीर के किसी अंग का) फूलना ।

गैदुल गेमे (क) सं.— काम, कार्य ।

गैदुल गेय (सम्) वि.—गाने योग्य, गानेवाला, गवैया । सं.— एक वृत्त का नाम ।

गैदुल गेयिसु (क) क्रि.— काम करा (प्रे.) ।

गैदुल गेर (क) सं.— कफ के कारण छाती और कंठ में उत्पन्न होनेवाली ध्वनि ।

गैदुल गेरु (क) सं.— दे. गैदुलु ; काजू का पेड़ ।

गैदुल गेरु (क) क्रि.—सूप से पछोर (मै.प्र.) ।

गैदुल गेरुसु (क) सं.— काजू का पेड़ ।

गैदुल गेलि (क) सं.— हँसी-ठट्ठा, उपहास, मजाक, खिली उड़ाना ।

गैदुल गेस्त (तद्) सं.— गृहस्थ (तत्) ।

गैदुल गेहिनि (सम्) सं.— गृहिणी, पत्नी, घर की स्वामिनी ।

गैदुल गेहेनिदि, गैदुल गेहेयुर (सम्) सं.— डरपोक, पर्दे का सुर्गा ।

गैदुल गेहेनन (सम्) सं.— घर के पास का बगीचा ।

गैदुल गे (क) क्रि.—दे. गैदुलु.

गैदुल गेरखर्च (अ. दे.) सं.— अतिरिक्त व्यय ।

गैदुल गैराजर, गैदुल गैरहाजर (अ. दे.) वि.— गैरहाज़िर (अरबी) ; अनुपस्थित ।

गैदुल गैरिक (सम्) सं.— पहाड़ पर उत्पन्न ; सोना ; शिलाजीत, राल ।

गैदुल गैरेय (सम्) सं.— राल, शिलाजीत ।

गैदुल गेके (क) सं.— कंठ, गला ।

गैदुल गैंगडि (अ. दे.) सं.— सिर और मुँह पर लगाने की चादर ; चादर ; अच्छा और लंबा इमली का फल ।

गैदुल गैंगु (क) सं.— दे. गैदुलु.

गोंगों गोंगे (क) सं.—राशि, ढेर ; बकवादी, गप्पी ।

गोंगोंगों गोंचल, गोंगोंगों गोंचल, गोंगोंगों गोंचल (क) सं.— गुच्छा, फलों या फूलों का स्तवक ।

गोंगोंगों गोंचि, गोंगोंगों गोंचे (क) सं.—राशि, ढेर, समुदाय ।

गोंगोंगों गोंड (क) सं.— कोण, कोना ; परकाल की बिंदु ।

गोंगोंगों गोंडे (क) सं.— गुच्छा, समूह ; झब्बा, फीता ; दुर्भेद्य या अगम्य स्थिति, घनत्व ; घना जंगल, निविड अरण्य ।

गोंगोंगों गोंडेय (क) सं.— राशि, ढेर ।

गोंगोंगों गोंतु (क) सं.—चिह्न, निशान, जान-पहचान ।

गोंगोंगोंगोंगोंगोंगों गोंतेमगोरुचेट्ट (क) सं.— एक पौधा (The Plant Peaderia felida) ।

गोंगोंगों गोंद, गोंगोंगों गोंदे (क) सं.— टमाटर ।

गोंगोंगोंगों गोंदण, गोंगोंगोंगों गोंदणि, गोंगोंगों गोंदल (क) सं.— राशि, ढेर, समुदाय ; लोगों की भीड़, गड़बड़ी, भीड़ का शोर-गुल ।

गोंगोंगोंगोंगों गोंदणिसु (क) क्रि.— एकत्रित हो, भीड़ हो, बहुलता हो ।

गोंगोंगों गोंदल (क) सं.— गड़बड़ी, भ्रम ।

गोंगोंगोंगों गोंदलिग (क) सं.— भगवती पार्वती-पर गीत रचकर गानेवाला और उनकी कथा का कीर्तन करनेवाला ।

गोंगोंगों गोंदल (क) सं.— दे. गोंगोंगोंगों.

गोंगोंगोंगों गोंदलिसु (क) क्रि.— दे. गोंगोंगोंगोंगों.

गोंगोंगों गोंदि, गोंगोंगों गोंदु (क) सं.— गली, तंग रास्ता ; आवनाय, जल का तंग रास्ता ।

गोंगोंगों गोंदे (क) सं.— समूह, समुदाय ; बच्चों का खिलौना, पुतली ।

गोंगोंगों गोंधि (क) सं.—मच्छर का 'मिन-मिन' शब्द ।

गोंगोंगोंगों गोंगाय्य (क) सं.—हौआ, हाऊ (बच्चों को डराने के लिए कहा जाता है) ।

गोंगोंगों गोंचे, गोंगोंगों गोंजे (क) सं.—दल-दल, कीचड़, पंक ।

गोंगोंगोंगों गोंजुगु (क) क्रि.—अस्पष्ट रूप से बोल, हड़बड़ा । सं.—बड़बड़ाहट, अस्पष्ट बोली ।

गोंगोंगोंगों गोंजिविजि (क) सं.—दे. गोंगोंगोंगों.

गोंगोंगों गोंजुगे (क) सं.—दे. गोंगोंगों.

गोंगोंगोंगों गोंजुलु (क) सं.—पंक, कीचड़ ।

गोंगोंगोंगों गोंजु (क) सं.—अम्लता खट्टापन ; तरकारी के साथ मिर्च-मसाला आदि डालकर बनाया जानेवाला एक व्यंजन विशेष ।

गोंगोंगोंगों गोंजुगे (क) सं.—दे. गोंगोंगों.

गोंगोंगोंगों गोंटकु (क) सं.— मरनेवाले व्यक्ति का आखिरी बार हाँफने की स्थिति ।

गोंगोंगोंगों गोंटरु, गोंगोंगों गोंट्रु (क) सं.— बिल, खोखला ।

गोंगोंगों गोंट (क) सं.—पशुओं को आहार या दवाई देने में काम आनेवाली बाँस की नली ; आम की गुठली ; कोना, कोण ।

गोंगोंगोंगों गोंटचि (क) सं.— एक पौधा विशेष ।

गोंगोंगोंगों गोंट्रिगे (तद्) सं.—घोटिका (तत्) ; घोड़ी ।

गोंगोंगोंगों गोंट्रु (क) सं.— चक्रता, टेढ़ापन, धूर्तता ; अनुपलब्धि, दुःप्राप्य होना ; नीर-सता, सूखापन, शुष्कता ; अकाल ।

गोंगोंगों गोंटु (क) सं.—दे. गोंगोंगोंगों.

गोंगोंगोंगों गोंटुगु, गोंगोंगोंगों गोंडुगु (क) सं.— खोखला, बिल ।

गोंगोंगोंगों गोंटचि (क) सं.— आँख की पुतली का एक रोग ; एक पौधा ।

गोंगोंगोंगों गोंटरु (क) सं.— टटराहट ; बैल के डकारने की ध्वनि ।

गोंगोंगोंगों गोंडुलु (क) सं.— भूसा, असार पदार्थ, थोथा ; कूड़ा-करकट ।

गोंगोंगोंगों गोंडवे (क) सं.— संबंध, विचार, मतलब, प्रयोजन । गोंगोंगों गोंगोंगों गोंगों गोंगों गोंगों ? ऊरिगे होगदवारिग । दारी गोंडवे याके-जो गाँव नहीं जाते उनको

मार्ग से क्या मतलब या प्रयोजन (कह.) । गोंगोंगोंगों गोंडुगु (क) सं.— दे. गोंगोंगोंगों.

गोंगोंगों गोंडु (क) सं.— उलझी हुई और व्याकुल करने वाली बात ; भय, संदेह, शंका ; एक पौधे का नाम ।

गोंगोंगों गोंडिड (क) सं.—बाँझ स्त्री ; (नाटक में) स्त्री वेषधारी पुरुष ।

गोंगोंगों गोंडुडु (क) सं.—असारता, शुष्कता ; बाँझ स्त्री या गाय ।

गोंगोंगोंगोंगों गोंणगुट्टु (क) क्रि.— बड़बड़ा, अस्पष्ट बोल ।

गोंगोंगों गोंणग (क) सं.—नाक से बोलनेवाला । गोंगोंगों गोंणगि—स्त्री. लिं. ।

गोंगोंगोंगों गोंणगु (क) क्रि.— नाक से बोल (मै. प्र.) । सं.—एक पौधा ; नाक की बोली ; कुड़कुड़ाहट, बड़बड़ाहट ;

गोंगोंगोंगों गोंणसु (क) सं.— गोंगोंगों गोंलसु — शृंखला (जंजीर) की कड़ी ; फंदा, जाल ; पाँच रत्नों का गुच्छा (आभरण) ।

गोंगोंगोंगों गोंणय (क) सं.—धनुष की डोरी का मध्य भाग ।

गोंगोंगोंगों गोंणु (क) सं.—काठ का क्रीड़ा ; नाक का मल ; स्याही का धब्बा ।

गोंगोंगों गोंणु (क) सं.—चिह्न, निशान, पहचान ; परिचय ; नियतता, नियम, विधि, आज्ञा ; निश्चित स्थान ; गुफा ; आश्रय-स्थान ; पशु-शाला ।

गोंगोंगोंगों गोंणुगारु [गोंगों गारु] (क) सं.—पुरुषपरिचय ; मुख्य पुरुष, प्रधान व्यक्ति ।

गोंगोंगों गोंद (क) सं.—गाढ़ापन ।

गोंगोंगोंगों गोंदकु, गोंगोंगोंगों गोंदगु (क) सं.— पंक, कीचड़ ।

गोंगोंगोंगों गोंदम (क) सं.—देवता के रथ के चक्र को रोकने के लिए काम में लाया जानेवाला लकड़ी का मोटा टंडा ।

गोंगोंगोंगों गोंदले (क) सं.— एक मछली का नाम ।

गोंगोंगों गोंद (क) सं.— एक प्रकार बड़ी काली चींटी जिसके काटने से बहुत पीड़ा होती है ; एक वृक्ष (The Sun-Paper tree) ।

गोपाली गोमरे

गोपाली गोमरे (क) क्रि.—मेंढक के डकारने की ध्वनि; गिड़गिड़ा, दैन्य प्रकट कर।
 गोपाली गोमरेत (क) सं.— गिड़गिड़ाना; दीनता।
 गोपाली गोमि (क) सं.— पटुआ।
 गोपाली गोमिसु (क) क्रि.—वमन कर, कै कर।
 गोपाली गोचर (सम्) वि.— गौ का चरण हुआ; पृथिवी पर घूमनेवाला; लक्ष्य के भीतर। सं.— गोचरभूमि, चरागाह; इंद्रियों के विषय।
 गोपाली गोचरिसु (सम्) क्रि.— गोचर हो, सूत्र में आ, प्रकट हो।
 गोपाली गोचि (तद्) सं.— कौपीन, लंगोटी।
 गोपाली गोचु (क) क्रि.— झाड़ू देकर एक स्थान में इकट्ठा कर; डाका डाल, लट (मै. प्र)।
 गोपाली गोजल (सम्) सं.— गाय का मूत्र।
 गोपाली गोजाति (सम्) सं.— पशु; पशुओं की सी प्रकृति या स्वभाव, असभ्यता।
 गोपाली गोञु (क) सं.— दे. गोञु।
 गोपाली गोत (क) सं.— पीड़ा कर या ह्वेश देनेवाला मनुष्य।
 गोपाली गोतचि, गोपाली गोतचि (क) सं.— एक पौधा।
 गोपाली गोति (क) वि.— पीडाकार, कुशदायक।
 (१) गोपाली गोदु, गोपाली गोदु (क) सं.— कोना, कोण, परकाल की बिंदु; दिशा; किनारा, अंचल, अंतिम भाग या छोर; किनारी, गोटा; इमली का फल जिसका बढ़ाव रुका हुआ हो। वि.— कड़ा, रुक्ष।
 गोपाली गोदडिके = कड़ी, निम्न प्रकार की सुपारी।
 (२) गोपाली गोदु (अ. दे.) सं.— गोटा (हिं.); किनारी, कपड़े का किनारा।
 गोपाली गोडंवि, गोपाली गोडंवे (क) सं.— काजू।
 गोपाली गोडु (क) सं.— कुएँ और तालाबों के तल से निकाली गई मिट्टी या दलदल।
 गोपाली गोडुंबे (सम्) सं.— कलौंदा,

हिंंगवाना, तरबूजा।
 गोपाली गोडे (तद्) सं.— कोट; (तद्) — दीवार, भित्ति।
 गोपाली गोणु, गोपाली गोण, गोपाली गोणु, गोपाली गोळ (क) सं.— गर्दन का पिछला भाग, गर्दन, कंठ।
 गोपाली गोणि (क) सं.— बोरा, थैला; दे. गोपाली; एक छोटा वृक्ष विशेष (A Small Medicinal tree); पिप्पल, वट वृक्ष।
 गोपाली गोणु (क) सं.— दे. गोपाली।
 गोपाली गोणुमुरि (क) क्रि.— गला मरोड़; हिंसा दे; मार डाल।
 (१) गोपाली गोत (क) सं.— गाय-बैलों का दुर्गंध युक्त पेशाब।
 (२) गोपाली गोत (अ. दे.) सं.— गोता (अरबी); डुबकी; हानि, नष्ट। — काळ हाकु (क) क्रि.— मर जा, चल बस (मुहा.)।
 गोपाली गोतम (सम्) सं.— सतानंद के पिता और अहल्या के पति का नाम।
 गोपाली गोत्र (सम्) सं.— पशु, पशुओं का समूह, पशुओं का रक्षक (पशुवज); वंश, कुल; संतति, संतान; नाम, वंश का नाम; पर्वत, अचल; भूमि, धरा; देश; रास्ता, मार्ग; ज्ञान; मैदान, खेत। — अज (सम्) सं.— एक ही वंश में पैदा हुआ व्यक्ति, रिश्तेदार। — अजु, पुत्रि (सम्) सं.— पार्वती। — अजु भिद् (सम्) सं.— इंद्र। — अजु अग्र (सम्) सं.— पर्वत का शिखर। — अजु अरि (सम्) इंद्र। — अजु अरिपुत्र (सम्) सं.— अर्जुन।
 गोपाली गोत्रे (सम्) सं.— गायों का समूह; धरा-पृथिवी।
 गोपाली गोत्रेकपालक (सम्) सं.— श्रीकृष्ण; समुद्र।
 गोपाली गोद, गोपाली गोदं (सम्) सं.— [गोदंम् (तद्)] ; मस्तिष्क, दिमाग।
 गोपाली गोदण, गोपाली गोदलि, गोपाली गोदलु, गोपाली गोदले, गोपाली गोदलि

(क) सं.— गायों के लिए चारा डालने का स्थान (गोशाला में)।
 गोपाली गोदरुडु (क) सं.— अंडकोप।
 गोपाली गोदान (सम्) सं.— गोदान; गाय को दान में देना।
 गोपाली गोदारण (सम्) सं.— हल, फावड़ा; कुदाली।
 गोपाली गोदावरि (सम्) सं.— गोदावरी नदी।
 गोपाली गोदि, गोपाली गोदिदे (तद्) सं.— गेहूँ।
 गोपाली गोदुमे, गोपाली गोदुवे (तद्) सं.— गेहूँ।
 गोपाली गोदुह (सम्) सं.— दूध दुहनेवाला; गोपालक।
 () गोपाली गोदे (क) सं.— पौधे की गाँठ; कुपेवाला कंद।
 (३) गोपाली गोदे (तद्) सं.— गोदावरी, नदी।
 गोपाली गोदिल (क) सं.— दे. गोपाली।
 गोपाली गोधि, गोपाली गोधे (सम्) सं.— चमड़े का पट्टा जो बाईं भुजा पर धनुष की रगड़ से बचने के लिए बांधा जाता है।
 गोपाली गोधन (सम्) सं.— गाय रूपी धन; गायों का समूह।
 गोपाली गोधि (सम्) सं.— माथा; गंगा का नक्र; दे. गोपाली।
 गोपाली गोधिका, गोपाली गोधिके (सम्) सं.— एक प्रकार की छिपकली; गोह।
 गोपाली गोधूम (सम्) सं.— गेहूँ।
 गोपाली गोधे (सम्) सं.— दे. गोपाली; एक प्रकार की छिपकली (Iguna)।
 गोपाली गोनीय (सम्) सं.— योग दर्शन के प्रवर्तक तथा महाभाष्य के कर्ता पतंजलि।
 गोपाली गोनास, गोपाली गोनास (सम्) सं.— अजगर।
 गोपाली गोन्, गोपाली गोनु (क) सं.— दे. गोपाली।
 गोपाली गोनालि (क) सं.— कंठ, गला।

गौ०००० गोंद, गौ०००० गोंदु (अ.दे.) सं.—
गोंद (Gum) ।
गौ००० गोप (सम्) सं.— गो-रक्षक, ग्वाला ;
छिपाव, दुराव ; गाली, कुवाच्य ; दीप्ति,
चमक, कांति ; श्रीकृष्ण ; राजा ; शिव,
शंकर ; इंद्र ; ब्रह्मा ; सूर्य ; चंद्रमा ; मेरु
पर्वत ; वृषभ, बैल ; गरुड पक्षी ; बोल,
लोहवान (Myrrh) । — कामिनि
(सम्) सं.— ग्वालिन, ग्वाले की पत्नी ।
गौ०००० गोपदुत्व (सम्) सं.— वक्तृत्व
शक्ति ।
गौ०००० गोपति (सम्) सं.— साँड, बैल ;
सूर्य ; इंद्र ।
गौ०००० गोपथ (सम्) सं.— गार्थों का मार्ग ;
गोपथ ब्राह्मण ।
गौ०००० गोपध्वज (सम्) सं.— शिव ।
गौ०००० गोपन (सम्) सं.— रक्षा, रक्षण,
देख-भाल ; छिपाव, दुराव ।
गौ०००० गोपवनभुगिन (सम्) सं.—
चमकदार आदिशेष सर्प ।
गौ०००० गोपवाहन (सम्) सं.— इंद्र
का वाहन—ऐरावत, ब्रह्मा का वाहन—हंस,
विष्णु का वाहन—गरुड, वृषभ—वाहन—
शिव ।
गौ०००० गोपादप (सम्) सं.— स्वर्ग का
वृक्ष ।
गौ०००० गोपायित (सम्) वि.— रक्षित ।
गौ०००० गोपाल (सम्) सं.— गोप, ग्वाला,
वैष्णव साधुओं की एक जाति ; श्रीकृष्ण ;
शिव ; अन्न, भोजन (मै. प्र.) ।
गौ०००० गोपालक (सम्) सं.— अहीर,
ग्वाला ।
गौ०००० गोपाळ (तद्) अ.— नाचीज़, निकृष्ट ।
गौ००० गोपि (सं. र) सं.— गोपी ; अहीर
जाति की स्त्री ; ग्वालिन ; एक पौधा
विशेष । — चंदन (सम्) सं.—
एक प्रकार की सफ़ेद मिट्टी (चंदन) जो
ललाट पर तिलक लगाने के काम में आता
है । — नाथ (सम्) सं.— श्रीकृष्ण ।
गौ००० गोपुर (सम्) सं.— गोपुर, प्रांगण

या नगर का द्वार, जिसपर गोपुर होता है
मंदिर का गोपुर ।
गौ००० गोप्य (सम्) वि.— रक्षा करने योग्य,
छिपाने योग्य, गोपनीय । सं.— दासी का
पुत्र ।
गौ००० गोप्यक (सम्) सं.— नौकर, दास ।
गौ००० गोमतल्लिके (सम्) सं.— अच्छी
गाय ।
गौ००० गोमनाळि (क) सं.— गला ;
कंठ, गदने ।
गौ००० गोमंत (सम्) सं.— एक पर्वत का
नाम ।
गौ००० गोमय (सम्) सं.— गोबर । —
पिण्ड (सम्) सं.— उपला ।
गौ००० गोमराळि, गौ००० गोमलाळि
(क) सं.— दे. गौ००० गोमराळि ।
गौ००० गोमायु (सम्) सं.— पशुओं के
जैसे ध्वनि करना ; सियार ; एक प्रकार का
मैंढक ।
गौ००० गोमाल (सम्) सं.— सार्वजनिक
तृणभूमि (चरागाह) ।
गौ००० गोमाले (क) सं.— कंठ का बाहरी
उभाड़ ।
गौ००० गोभिनि (सम्) सं.— महालक्ष्मी,
विष्णु—माया । — तनुज (सम्)
सं.— काम, मदन ।
गौ००० गोमुख (सम्) सं.— गाय का
मुँह या चेहरा, गाय जैसा मुख ; विलेपन,
अनुलेपन ; एक प्रकार का बाजा ; शुद्धता,
सफ़ाई ; मदमत्तता, नशा ; छेद, सुराख ;
नक्र, मगर, घड़ियाल । — ग्याघ्र
(सम्) सं.— मुख गाय का और हृदय बाघ
का अर्थात् दुष्ट हृदय (A wolf in sheep's
clothing) ।
गौ००० गोमेद, गौ००० गोमेदक,
गौ००० गोमेदिक सं.— लाल रत्न,
मणि विशेष ।
गौ००० गोमेध (सम्) — वह यज्ञ जिसमें
गाय की आहुति दी जाती है ।

गौ००० गोम्याळि (क) सं.— गदने का
पिछला भाग ।
गौ००० गोर, गौ००० गोरु (क) क्रि.— मछली
पकड़ ; जाल पसार ; एकत्रित कर, राशि
बना ।
गौ००० गोर (तद्) वि.— घोर (तद्) ।
गौ००० गोरटे (तद्) सं.— दे. गौ००० गोरटे ।
गौ००० गोरटे (सम्) सं.— स्फूर्ति, सतत प्रयत्न,
लगातार चेष्टा करना ।
गौ००० गोरंट, गौ००० गोरंटे, गौ०००
गोरंटी (तद्) सं.— दे. गौ००० गोरंटी ।
गौ००० गोरथ (सम्) सं.— बैल गाड़ी ।
गौ००० गोरस (सम्) सं.— गाय का दूध ;
गट्टा ।
(१) गौ००० गोरि (क) सं.— जानवरों को
मोहित करने का गान ; खिंचाव, आकर्षण,
हेंगी, भूमि चिकनाने का औजार ।
(२) गौ००० गोरि (अ. दे.) सं.— गोर
(फ़ारसी), स्मशान, समाधि ।
गौ००० गोरिकल्लु (क) सं.— सफ़ेद पत्थर,
चकमक पत्थर ।
गौ००० गोरिकायि, गौ००० गोरिकायि
कायि (क) सं.— एक प्रकार का सेम ।
गौ००० गोरिसु (क) क्रि.— इकट्ठा करा,
एकत्रित करा ।
(१) गौ००० गोरु (क) क्रि.— एकत्रित कर,
इकट्ठा कर, झाड़ू देकर ढेर लगा, राशि बना,
अनाज के ढेर में कूड़ा-करकट निकाल ; छूट,
छीन, झपट कर ले ; जोती गई ज़मीन को
समतल कर ।
(२) गौ००० गोरु (तद्) सं.— तकलीफ़, कष्ट,
विकलता ।
गौ००० गोरे (क) सं.— नाव या जहाज़ के
भीतर कूड़ा-करकट निकालने का फावड़ा ;
(गुड़ निकालने के) तख्ते से निकाला गया
गुड़ ।
गौ००० गोरोच, गौ००० गोरोच,
गौ००० गोरोचन (सम्) सं.—
गोरचना, गौ के मस्तक से निकाला हुआ
पीला पदार्थ ।

गो (क) क्रि.— नख से खुरच । —
 खुरचने या रेखाएँ
 खींचने के काम में जानेवाली छेनी ।
 गोरे (क) सं.— हठी, दुष्ट या
 चिड़चिड़ा पुरुष ।
 गोर्द (सम्) सं.— दिमाग, मस्तिष्क ।
 गोल (सम्) सं.— गेंद गोला, ;
 भूगोल ; वृत्त ; लोहवान ; गाय का खुर ।
 (१) गोलक (सम्) सं.— गेंद,
 वृत्त ; विधवा का पुत्र ।
 (२) गोलक (अ. दे) सं.— गोलक,
 धन-संग्रह करने की पेटी या गोलाकार
 डिब्बा ।
 गोलि (सम्) सं.— गोला, गेंद, गोल
 पदार्थ. बंदूक की गोली, बच्चों के खेलने की
 काँच की गोली ।
 गोलु (सम्) सं.— गोला, वृत्त ;
 भूगोल ।
 गोले (सम्) सं.— लाल संखिया ।
 गोलोमि (सम्) सं.— उग्रगंध
 नामक पौधा ; भूतकेश नामक और एक
 पौधा ।
 गोव (तद्) सं.— गोप (तत्), ग्वाला ;
 अमरुद् का पेड़ ।
 गोवत्स (सम्) सं.— बछड़ा ।
 गोवंदिनि (सम्) सं.— प्रियंगु
 वृक्ष ।
 गोवर्धन (सम्) सं.— गोवर्धन
 पर्वत ; श्रीकृष्ण ।— ढर धर (सम्) सं.—
 श्रीकृष्ण, गिरिधर ।
 गोवळ, गोवळिग (तद्) सं.— गोपाल ; (तत्), ग्वाला ।
 गोवाहिनि (सम्) सं.— गंगा
 नदी ।
 गोवु (सम्) सं.— गाय, गायों का
 समूह ।
 गोवि (अ. दे. ?) सं.— शब्द, कथा ।
 गोविठ (सम्) सं.— जमाव, सभा ;
 संस्था ; वार्तालाप, संवाद ; समूह, समु-

दाय ; नाटक रचना का एक प्रकार ;
 संबंध ।
 गोविठके (सम्) सं.— समूह, Par-
 ty) ।
 गोवपद (सम् ?) सं.— गाय का पद
 या खुर ; गाय के खुर के समानवाला परि-
 माण ; खुर का चिह्न ।
 गोवस (सम्) सं.— बोल, लोहवान ।
 गोवसे, गोवसे (तद्) सं.—
 घोषणा (तत्) ।
 गोसायि, गोसावि (तद्) सं.— गोस्वामिन् (तत्) ।
 गोसेवे (क) सं.— गिरगिट ।
 गोस्कर (क) प्र.— के लिए, के वास्ते
 गोस्तन (सम्) सं.— गाय का थन ;
 फूला हुआ समुदाय ; चार तारों का हार
 (Necklace) ।
 गोस्तनि (सम्) सं.— दे. गोस्तन ;
 अंगूर का गुच्छा ; अंगूर की लता ।
 गोस्वामि (सम्) सं.— गाय का
 धनी ; भिक्षुक विशेष ; उपाधि विशेष ।
 गोपुर (तद्) सं.— गोपुर (तत्) ।
 गोल (तद्) सं.— गोल, गोला,
 भूगोल ।
 गोळाट (क) सं.— रोना-चिखाना,
 विलाप, सलाई ।
 गोळि (क) सं.— एक प्रकार की वन-
 स्पति ; बरगद का पेड़ ; अंजीर या गूलर
 का पेड़ ; केसर ; बकुल ।
 गोळिसु (क) क्रि.— रगड़ ; रगड़-
 कर मिला, हिला (Stir) ।
 गोळु, गोळु (क) सं.— रोना,
 सलाई ; झंझट, गड़बड़ (लाक्ष.) ।
 गोळाट (क) सं.— दे. गोळाट ।
 गोड (सम्) सं.— मिठाइयां ; एक देश
 का नाम ; काव्य की एक रीति । (क) सं.—
 एक जाति जो प्रायः कृषि करती है ।
 गोडि (सम्) सं.— गुड़ (या ऊख) की
 मदिरा । (क) सं.— 'गौड' जाति की
 स्त्री ।

गौण (सम्) वि.— अग्रधान, अमुख्य ;
 आलंकारिक, गुण बतलानेवाला ।
 गौतम (सम्) सं.— बुद्ध या सांख्य
 मुनि का नाम ; दे. गोतम ।
 गौतमि (सम्) सं.— गौतमी नदी ।
 गौधार (सम्) सं.— एक प्रकार की
 छिपकली ।
 गौधेर (सम्) सं.— एक प्रकार की छिपकली ।
 गौधेर (सम्) सं.— एक प्रकार की छिपकली ।
 गौर (सम्) वि.— सफ़ेद ; पीला ;
 लाल । सं.— चंद्रमा ; एक प्रकार का हिरन ;
 सफ़ेद सरसों ; कमल का तंतु ।
 गौरव (सम्) सं.— वजन, भारीपन ;
 मर्यादा, सम्मान, प्रतिष्ठा ; प्रधानता, बड़-
 पपन ; कुलीनता, पदमर्यादा ।
 गौरि, गौरी (सम्) सं.— पार्वती ;
 कन्या ; लड़की जिमको रजोधर्म न हुआ
 हो ; गोरी लड़की ; पृथिवी, धरा, हल्दी ;
 गोरोचन ; तुलसी का पौधा ; वरुण की
 स्त्री ; महिला की लता, मंजिष्ठ का पौधा ।
 गौरिजड़े (सम्) सं.— भूजटा नामक
 पौधा ।
 गौरे, गौरा (सम्) सं.— दे. गोरे ।
 गौळ (तद्) सं.— गौड (तत्) ; एक
 राग का नाम ।
 गुण्डित (सम्) सं.— बांध, गाँठ लगाना ;
 पुस्तक, रचना, साहित्यिक रचना ; धन,
 संपत्ति ; अनुपुष्ट छंदवाला पद्य ।— उर्ध्व,
 कर्त, उर्ध्व कार, उर्ध्व लेखक (सम्) सं.—
 लेखक, रचयिता ।
 गुण्डित (सम्) सं.— गूथना, गाढ़ा
 करना, लिखना ।
 गुण्डित (सम्) सं.— गिल्टी, गुमड़ा,
 गुमड़ी ; गाँठ. बंधन, रस्ती की गाँठ ।
 गुण्डित (सम्) सं.— दैवज्ञ, ज्योतिषी ;
 दवाई का एक पौधा ।
 गुण्डित (सम्) सं.— एक सुगं-
 गंधित पौधा, माचीपत्र ।
 गुण्डित (सम्) वि.—

गूथा हुआ, रचा हुआ, बांधा हुआ; जमाया हुआ, गाढ़ा किया हुआ ।

गुप्त ग्रस्त (सम्) वि.—खाया हुआ, भक्षण किया हुआ; पकड़ा हुआ; प्रभाव पड़ा हुआ; ग्रहण लगा हुआ ।

गुप्त ग्रह (सम्) सं.—पकड़ना, लेना, ग्रहण करना; पाना, प्राप्ति, अंगीकार करना, वसूल करना; बंदी करना, गिरफ्तारी; रोक-थाम; ग्रह; (सूर्य-चंद्र का) ग्रहण; भूत, पिशाच; बच्चों को कष्ट देनेवाली दुष्ट योनि विशेष; ब्राह्मण; जीव-समूह; नौ की संख्या ।—अठार चार (सम्) सं.—ग्रहों का चलना; दुर्भाग्य, अशुभ परिणाम ।

गुप्त ग्रहण (सम्) सं.—सूर्य-चंद्र का ग्रहण; पकड़ना, पाना; बुद्धि, समझ; ज्ञान ।

गुप्त ग्रहणी (सम्) सं.—संग्रहणी रोग, शीतला रोग, दस्तों की बीमारी ।

गुप्त ग्रहणिकर (सम्) सं.—नवग्रह ।

गुप्त ग्रहपति (सम्) सं.—सूर्य ।

गुप्त ग्रहमाले (सम्) सं.—ग्रह ।

गुप्त ग्रहिके (सम्) सं.—ग्रहण करना, समझना; ज्ञान ।

गुप्त ग्रहिसु (सम्) क्रि.—ले, धर; ग्रहण कर, पकड़; समझ, जान ।

गुप्त ग्रहचार (तद्) सं.—दे. गुप्तग्रह ।

गुप्त ग्राम (सम्) सं.—गाँव, पुरवा; जाति, समाज; समूह, समुदाय; स्वर, राग; रति, भोग; इंद्रिय; रेतस्, वीर्य; किरण; शब्द, ध्वनि; भूतग्राम; मागध ।

गुप्त ग्रामिणी (सम्) सं.—ग्राम का आदमी; मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ; ग्रामीण; नाई ।

गुप्त ग्रामिणी (सम्) सं.—गाँवों का समूह ।

गुप्त ग्रामधान, गुप्त ग्रामाधान (सम्) सं.—गाँव, छोटा नगर ।

गुप्त ग्रामशाहू (सम्) सं.—कुत्ता ।

गुप्त ग्रामिणी (सम्) सं.—गाँवों का समूह ।

सं.—गाँव, गाँव का रहनेवाला, मूर्ख, बेवकूफ ।

गुप्त ग्रामीणे (सम्) सं.—नील का पौधा ।

गुप्त ग्रामे (सम्) सं.—अनुप्रास का एक भेद ।

गुप्त ग्रामेयक (सम्) सं.—गाँव, ग्रामीण; असभ्य ।

गुप्त ग्राम्य (सम्) वि.—गाँव संबंधी, गाँव का; ग्रामवासी, मूर्ख, अनपढ़, असभ्य, अशिष्ट ।—असभ्य धर्म (सम्) सं.—मैथुन, स्त्री-प्रसंग । अशु पशु (सम्) सं.—पालतू जानवर ।—अशु शब्द (सम्) सं.—अशिष्ट शब्द ।

गुप्त ग्राव (सम्) सं.—पत्थर, पाषाण; पर्वत; दृढ़ता, धैर्य, निडरता ।

गुप्त ग्रावाळ (सम्) सं.—पत्थर पाषाण ।

गुप्त ग्रास (सम्) सं.—कौर, गस्ता, मुँह भर माप; अन्न, भोजन, पालन-पोषण का उपस्कर ।

गुप्त ग्राह (सम्) वि.—पकड़ा हुआ । सं.—मगर, नक्र; बंदी, कैदी; स्वीकृति; समझ, ज्ञान; दृढ़ता, अटलता, संकल्प, निश्चय ।

गुप्त ग्राहक (सम्) सं.—खरीदनेवाला, ग्रहण करनेवाला; पुलिस अफसर ।

गुप्त ग्राह्य (सम्) वि.—ग्रहण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य, लेने योग्य, जानने योग्य, विचार करने योग्य ।

गुप्त ग्रीव, गुप्त ग्रीवे (सम्) सं.—गर्दन, गर्दन का पिछला भाग ।

गुप्त ग्रीष्म (सम्) सं.—गरमी की ऋतु, गरमी, उष्णता ।—अठार काल (सम्) सं.—गरमी की ऋतु ।

गुप्त ग्रीवेय (सम्) वि.—गर्दन संबंधी । सं.—गले का हार, कंठहार ।

गुप्त ग्लानि (सम्) सं.—थकान; निपैलता, बीमारी; ह्रास; अनिच्छा, अरुचि, घृणा; एक संचारी भाव ।

गुप्त ग्लासु (अ. दे.) सं.—गिलास, प्याला ।

घ

घ—कन्नड वर्णमाला का आठारहवाँ अक्षर; कवर्ग का चौथा अक्षर ।

घं (क) सं.—डमरू या ढक्के की ध्वनि । घंटा, घंटे (सम्) सं.—गठे गंटे (तद्) — घंटा, घंटी; बजे ।

घंटाकर्ण (सम्) सं.—स्कंद और शिव का एक गण ।

घंटागार (सम्) सं.—घंटाघर ।

घंटागाद (सम्) सं.—घंटे की ध्वनि या रव; एक पौधे का नाम ।

घंटापथ (सम्) सं.—प्रधान मार्ग; मुख्य रास्ता ।

घंटापाटलि (सम्) सं.—तुरही-पौधा (घंटे के आकार के फूलों वाला पौधा) - (Bignonia Suaveolens) ।

घंटापणि (सम्) सं.—स्वर्णक्षीरी या हैमवती पौधा ।

घंटिके (सम्) सं.—घंटी, छोटी घंटी ।

घट (सम्) वि.—होनेवाला, मिलनेवाला, जुड़नेवाला, छूनेवाला, स्पर्श करनेवाला । सं.—संग्रह; हाथी का माथा; घड़, कुंभराशि; कुंभक प्राणायाम; द्रोण के समान तौल; स्तंभ का एक भाग; मधु-गोष्ठी, मधुपान गोष्ठी; काया, देह, शरीर; छोर, किनारा, परिधि ।

घटक (सम्) वि.—प्रयत्नवान, प्रयास करनेवाला; बली, शक्तिमान (मै. प्र.); प्रधान, वास्तविक । सं.—एक वृक्ष जिसमें फूल न लगकर फल ही लगते हैं ।

घटन, घटने (सम्) सं.—घटना, प्रयत्न, उद्योग; होना, संपन्नता, पूर्णता; मेल, ऐक्य, संबंध, संसर्ग; बनाना, तैयार करना, गढ़ना ।

घटयोनि (सम्) सं.—घड़े में पैदा हुआ व्यक्ति, अगस्य ।

घटसर्प (सम्) सं.—बहुत बड़ा साँप ।

झंझ घटि (सम्) सं.—छोटा घड़ा; चौबीस मिनट का अंतर; घंटा, घड़ियाल; समय को मापनेवाला; बर्तन विशेष; (कुएँ से पानी निकालने की) रस्सी और बाल्टी।

झंझक घटिके (सम्) सं.—दे. झंझ; पैर और पाद को मिलानेवाली नली (Ankle)।
 झंझक घटियिसु (सम्) क्रि.—मिल, पा, प्राप्त हो, हो, संभव हो, संयुक्त हो, जुड़।

झंझसु घटिसु (सम्) क्रि.—दे. झंझक।
 झंझक घटियंत्र (सम्) सं.—ढेकी, कुएँ से पानी निकालने की रस्सी और बाल्टी; जलघड़ी।

झंझ घटे (सम्) सं.—प्रयत्न, चेष्टा; समूह, समुदाय; युद्ध के लिए सजाये गये हाथियों की सेना।

झंझक घटोत्कच (सम्) सं.—भीम का पुत्र।—उत्कच तनुज (सम्) सं.—घटोत्कच का पुत्र मेघनाद।

झंझक घटोद्भव (सम्) सं.—दे. झंझक।

झंझ घट (सम्) सं.—घाट (Ghaut), पर्वतों की पंक्ति।

झंझक घट्टण, झंझक घट्टन, झंझक घट्टने (सम्) सं.—मिलना, स्पर्श करना, छूना; मारना, पीटना, रगड़ना, हिलाना, गड़बड़ करना, मलना; व्यवसाय, पेशा।

झंझक घट्टाघट्टि (सम्) सं.—परस्पर मारना-पीटना।

झंझ घट्टि (क) सं.—गाढ़ापन।

झंझक घट्टित (सम्) वि.—मिला हुआ; स्पर्श किया हुआ; मारा हुआ, पीटा हुआ; हिलाया हुआ;।

झंझक घट्टिवलिति (सम्) सं.—सैरंध्री, गंधकारिका (A female perfumer)।

(१) झंझक घट्टिसु (क) क्रि.—बल पा, शक्ति-संपन्न हो।

(२) झंझक घट्टिसु (सम्) क्रि.—मार, पीट; धीरे से हाथ से रगड़।

झंझक घटा (तद्) सं.—घटवाद्य।

झंझक घण (क) सं.—झंझक घणघण—झनझनाहट, घंटी की आवाज़।

झंझक घन (सम्)—गढ़ा, मुद्गर; कोई भी घना पदार्थ; देह, शरीर; लोहा; घंटा, घंटी; बादल, मेघ; समूह, समुदाय; एक पौधे का कद; झँझ, मजीरा, टीन; चर्म, चमड़ा, छाल; जल, पानी; नृत्य का एक प्रकार; युद्ध, समर; डोस, घन, त्रिघात; अनभिज्ञता, भोलापन, मोह। वि.—घना, गाढ़ा, सघन; सांद्र; कड़ा, कठोर, दृढ़, बड़ा, महान, विस्तृत; पूर्ण, गहरा, स्थायी।

झंझक घनज्वलित (सम्) सं.—बड़ी या भयंकर ज्वाला।

झंझक घनतर (सम्) वि.—कड़ा, घना, महान, बड़ा।

झंझक घनते (सम्) सं.—कसाव, दृढ़ता, घनत्व, कड़ापन; महानता; बड़प्पन।

झंझक घनत्व (सम्) सं.—दे. झंझक।

झंझक घनदीप्ति (सम्) सं.—विद्युत्, बिजली, सौदामिनी।

झंझक घनपथ (सम्) सं.—बादलों का मार्ग, आकाश।

झंझक घनपुष्प (सम्) सं.—जल, पानी।

झंझक घनवारि (सम्) सं.—मेघों का पानी, वर्षा।

झंझक घनवीर (सम्) सं.—महान योद्धा, पराक्रमी पुरुष।

झंझक घनश्याम (सम्) सं.—विष्णु, राम, कृष्ण।

झंझक घनसमय (सम्) सं.—वर्षा ऋतु, बरसात का मौसम।

झंझक घनसार (सम्) सं.—कर्पूर, काफूर; जल; पानी; बर्फ, कोहरा, ओस।

झंझक घनाघन (सम्) सं.—वर्षा के बादल, वर्षा; समूह, समुदाय; मदमत्त हाथी; इंद्र का हाथी; इंद्र। वि.—दुष्ट, क्रूर, नटखट; समान्य, समान; बहुत।

झंझक घनीभूत (सम्) वि.—बहुत

गाढ़ा, घना, जमा हुआ।
 झंझक घनोफल (सम्) सं.—भोले।
 झंझक घरट्ट (सम्) सं.—पीसने का पत्थर।
 झंझक घरि (क) सं.—झंझक घरिघरि—एक अनुकरणमूलक शब्द, दांतों की खटखटाहट।
 झंझक घरिल् (क) सं.—झनझनाहट।
 झंझक घर्घर (सम्) सं.—बरबराहट, कोलाहल; द्वार, फाटक; आनंदोत्साह, हास्य, हँसी, धुँवरु की आवाज़; उल्लास।
 झंझक घर्घरि (सम्) सं.—धुँवरु या घंटे की ध्वनि; गंगा; वीणा विशेष।
 झंझक घर्म (सम्) सं.—गरमी, उष्णता, निदाघ, गरमी का मौसम; पसीना, स्वेद; शैत्य, ठंडापन।
 झंझक घर्मोत्तर (सम्) सं.—अत्यधिक उष्णता या गरमी।
 झंझक घर्षण (सम्) सं.—रगड़, रगड़न; कूटना, पीसना; पॉलिश करना, चमकाना।
 झंझक घर्षणे (सम्) सं.—दे. झंझक।
 झंझक घलिलु (क) सं.—डमरु या नगाड़े की ध्वनि।
 झंझक घस्मर (सम्) वि.—खाऊ, पेहू।
 झंझक घस्त (सम्) सं.—एक दिन।
 झंझक घळ (क) सं.—किसी भारी वस्तु के ज़मीन पर गिरने से उत्पन्न होनेवाली ध्वनि। झंझक घळघळ = कलकल (पानी का)।
 झंझक घळिगे (तद्) सं.—घटिका (तत्); २४ मिनट का अंतर; लमहा, पल।
 झंझक घळिलु (क) सं.—दे. झंझक।
 झंझक घळिय (क) सं.—क्रमिकता, क्रम में रखना, नियमितता; बनाने की क्रिया, तैयारी।
 झंझक घळिल् (क) अ.—तुरंत, फौरन, जल्दी।
 झंझक घाट (सम्) सं.—गर्दन का पिछला भाग।
 झंझक घाटक (सम्) वि.—प्रयत्न करनेवाला, काम करनेवाला।
 झंझक घाटे (सम्) सं.—दे. झंझक।
 झंझक घाड (अ. दे.) वि.—गाढ़ा।

अं० चंद्र

(२) अं० चंद्र (अ. दे.) सं.— सुरचंद्र ।
 अं० चंद्र (क) सं.— मजदूर, श्रमिक
 (सं. प्र.) ; निर्लज्ज, बेहया ।
 अं० चंद्र (क) वि.— दे. अं० ।
 अं० चंद्र (क) सं.— एक जंगली जाति,
 शबर जाति ।
 अं० चंद्र (सम्) वि.— जानेवाला,
 चलनेवाला, हिलनेवाला, हुलनेवाला,
 चंचल,
 चपल ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— भ्रमर,
 मधुकर ।
 अं० चंद्र (सम्) वि.— कौपनेवाला,
 धरारनेवाला, कंपकंपी, अस्थिर ।—
 अं० तन,
 अं० त्व (सम्) सं.— चंचलता, अस्थिरता,
 कांपना ।—
 अं० नेत्रे, अं० अक्षि (सम्) सं.—
 अं० ।—
 अं० अपांग (सम्) सं.—
 आँख का बाहरी अस्थिर भाग ।
 अं० चंद्र (क) सं.— दक्षिणावर्ती या
 धूमपुष्प वृक्ष (Flacourtia catafracta) ।
 अं० चंद्र (सम्) वि.— दे. अं० चंद्र ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— चंचला, विजली ;
 भाग्य ; लक्ष्मी ।
 अं० चंद्र (क) सं.— [' अं० चंद्र ' —
 तेलुगु] — छोटी थैली — विशेषकर पान-
 सुपारी रखने की थैली ।
 अं० चंद्र (क) सं.— चंच या शबर
 जाति की छी ।
 (१) अं० चंद्र (क) सं.— दे. अं० चंद्र ।
 (२) अं० चंद्र (सम्) सं.— चोंच ; एरण्डी
 का पौधा । वि.— प्रसिद्ध, प्रख्यात ; चतुर ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— एक पक्षी विशेष ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— चोंच जो
 खुला न हो ।
 अं० चंद्र (सम्) वि.— चतुर, पटु ;
 सुंदर ।
 अं० चंद्र (तद्) सं.— [' अं० चंद्र ' के
 बदले] — सायंकाल, शाम (आ.) ।
 अं० चंद्र (सम्) वि.— भयानक, उग्र,
 रुद्ध, गरम ; कर्मट, फुर्तीला ; झालरदार ।
 सं.— गरमी, उष्णता ; क्रोध, रोष ; शिव ;

स्कंद ; एक राक्षस का नाम ; शिवजी का
 एक भक्त ।—
 कर (सम्) सं.— सूर्य ।
 —
 कीर्ति (सम्) सं.— शिवजी का
 एक गण ।—
 मुंड (सम्) सं.—
 चामुंडा, दुर्गा का नाम ।—
 रुचि
 (सम्) सं.— सूर्य ; एक राक्षस ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— उष्णता, गरम
 होना ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— सूर्य ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— सुगंधित कनेर ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— कुर्ती, छोटा
 कोट ; छोटा लहंगा ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— चांडाल, एक
 पतित जाति ; ब्राह्मण पिता और शूद्र स्त्री
 से उत्पन्न एक अत्यंत नीच या घृणित वर्ण-
 संकर जाति ।—
 वल्लि (सम्) सं.—
 चांडाल का सितार, सितार ।
 (१) अं० चंद्र (सम्) सं.— कामुका या
 हिंमालु स्त्री ; स्त्रियों को प्रेम के साथ
 संबोधित करने का एक शब्द ; दुर्गा ;
 दुर्दम या स्वेच्छाचारिता (सं. प्र.) ।
 (२) अं० चंद्र (अ. दे.) सं.— अं० चंद्र—
 ठंड, ठंडापन ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.—
 दुर्गा ; पार्वती ।—
 रमण (सम्)
 सं.— शिव ।
 अं० चंद्र (क) सं.— चोटी, शिखा ;
 जूड़ा ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— रुद्र, शिव ;
 नाई ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— अग्रिम धन, वयाना ।
 अं० चंद्र (सम्) क्रि.— कुद्ध हों, गुस्से
 में आ ; स्वेच्छाचारी हो ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— शिव ।
 अं० चंद्र (क) सं.— [' कंदुक ' से ?] गेंद ;
 फूटों का गुच्छा ; पुरुष के लिंग का भाग ;
 गर्दन, गर्दन का पिछला भाग ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— दुर्गा ; एक प्रकार

का सुगंध द्रव्य ; एक वृक्ष विशेष (Cerbera
 odollam Gaert) ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— शिव ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— दुर्गा ।
 अं० चंद्र (क) सं.— भारद्वाज पक्षी,
 लवा ।
 (१) अं० चंद्र (तद्) वि.— अं० चंद्र (तद्) —
 सुंदर, अच्छा, लसित, चमकदार, उचित,
 प्रसन्न करनेवाला । सं.— विधान, ढंग,
 आकार, आकृति, प्रकार ।
 (२) अं० चंद्र (तद्) सं.— चंद्र ; (तद्) ;
 चंद्रमा, चाँद ।
 (३) अं० चंद्र (तद्) सं.— अं० चंद्र (तद्) ;
 अं० चंद्र (इसका बहुत कम प्रयोग होता है) ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— अं० चंद्र चंद्रण,
 अं० चंद्र चंद्रल, अं० चंद्र चंद्रल,
 अं० चंद्र चंद्रल (तद्)—चंद्रन, चंद्रन का वृक्ष ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— मलय-
 पर्वत जहाँ चंद्रन क वृक्ष अधिक होते हैं ।
 अं० चंद्र (सम्) सं.— चंद्रन
 घिसने का पत्थर, सान (का पत्थर) ।
 अं० चंद्र (तद्) सं.— सिंदूर
 (तद्) ; सिंदूर ।
 अं० चंद्र (तद्) सं.— चंद्रन (तद्) ।
 चंद्रन का कटोरा ।
 अं० चंद्र (तद्) सं.— दे.
 अं० चंद्र ।
 अं० चंद्र (अ. दे.) सं.— गृहशिवर, मकान
 का पाखा ।
 अं० चंद्र (तद्) सं.— चंद्र ; (तद्),
 चंद्रमा ।
 अं० चंद्र (तद्) सं.— चाँद ; तिथि, तारीख ।
 (१) अं० चंद्र (सम्) चंद्रमा, चाँद ; चंद्र-
 ग्रह ; कपूर ; मयूरपंख में चंद्रिकाएँ ;
 आनंद देनेवाली कोई वस्तु ; सोना ; लाल
 रंग ; धूलि, रज ; सिंहासन, विष्टर, बैठक
 (यथा कुरसी आदि) ; वन, जंगल ; माप
 विशेष ; जल, पानी । वि.— चमकनेवाला,
 चमकदार ; मुख्य, श्रेष्ठ, प्रमुख, अच्छा ।

(२) ॐॐ चंद्र (तद्) सं.—सिंदूर (तत्) ;
 सेंदुर ।
 ॐॐ चंद्रक (सम्) मयूरपंख में चंद्रिकाएँ ;
 चंद्रमा ।
 ॐॐ चंद्रकांत (सम्) सं. — चंद्रकांत
 शिला ; चाँद ।
 ॐॐ चंद्रकांति (सम्) सं.—चंद्रिका,
 चाँदनी ।
 ॐॐ चंद्रकि (सम्) सं.—मोर, मयूर ।
 ॐॐ चंद्रचूड (सम्) सं.—शिव ।
 ॐॐ चंद्रज (सम्) सं.—बुध ।
 ॐॐ चंद्रज्योति (सम्) सं. —
 चाँदनी ।
 ॐॐ चंद्रदार (सम्) सं.—चाँद की
 पत्नियाँ, २७ नक्षत्रों में कोई एक ।
 ॐॐ चंद्रधर (सम्) सं.—ॐॐ ।
 ॐॐ चंद्रनखि (सम्) सं.— रावण की
 बहन का नाम ।
 ॐॐ चंद्रप्रभ (सम्) सं.—आठवें तीर्थ-
 कर का नाम ।
 ॐॐ चंद्रबाले (सम्) सं.—बड़ी इला-
 यची ।
 ॐॐ चंद्रभागा [भाग भागे] (सम्)
 सं.—एक नदी का नाम ।
 ॐॐ चंद्रम, ॐॐ चंद्रमस (सम्)
 सं.—चाँद ।
 ॐॐ चंद्रमौलि [मौलि मौलि] (क)
 सं.—शिव ।
 ॐॐ चंद्रलेखे (सम्) सं.— चंद्र की
 कला ।
 ॐॐ चंद्रवंश (सम्) सं.— प्राचीन
 भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश, चंद्रवंश ।
 ॐॐ चंद्रवदने (सम्) सं.— चंद्रमा
 के समान मुखवाली स्त्री ।
 ॐॐ चंद्रशाले (सम्) सं = ॐॐ
 चंद्रशाले—भटारी, भटा ।
 ॐॐ चंद्रशिले (सम्) सं.—चंद्रकांता
 पत्थर ।
 ॐॐ चंद्रहास (सम्) सं.— चम

चमाती तलवार, रावण की तलवार का नाम;
 केरल के एक राजा का नाम ।
 ॐॐ चंद्रांगद (सम्) सं.— इंद्रसेन
 राजा का पुत्र ।
 ॐॐ चंद्राचूड (सम्) सं.— शिव ।
 ॐॐ चंद्रातप (सम्) सं.—चाँदनी ;
 बड़ा हॉल ।
 ॐॐ चंद्रात्मज (सम्) सं.—बुध ।
 ॐॐ चंद्राभरण (सम्) सं.—शिव ।
 ॐॐ चंद्राश्म (सम्) सं.— ॐॐ ।
 ॐॐ चंद्रि (सम्) वि.—चमकदार ; स्वर्णिमा
 सं.—एक वृत्त का नाम ; बुध ।
 ॐॐ चंद्रिके (सम्) सं.— चाँदनी ;
 व्याख्या, टीका ; चन्द्रभागा नदी ; एक
 वृत्त का नाम ; ताड़ के पत्तों की गड्ढरी ;
 रोशनी ; बड़ी इलायची ; मल्लिका लता ।
 ॐॐ चंद्रे (सम्) सं.— भटारी, भटा,
 मकान के ऊपरी भाग का हॉल ।
 ॐॐ चंद्रोदय (सम्) सं.— चांद
 का निकलना ; चँदवा, सभा-भवन में
 ऊपरी भाग में बिछाया गया कपड़ा)
 ॐॐ चंप, चंपे (सम्) सं.—पहाड़ी आबनूस ;
 चंपक पुष्प (या वृक्ष) ।
 ॐॐ चंपक (सम्) सं.— संपिणे
 (तद्)—चंपा का वृक्ष जिसके पुष्प पीले
 (या लाल) और सुगन्धित होते हैं ; एक
 सुगंध द्रव्य ; एक छंद का नाम जो 'चंप-
 कमाला' कहलाता है।—सालिनि
 (सम्) सं.—चंद्रहास की दूसरी पत्नी का
 नाम ।—साले (सम्) सं.—एक
 वृत्त का नाम ।
 ॐॐ चंपु, ॐॐ चंपू(सम्)सं.—चंपू काव्य,
 गद्य-पद्य मिश्रित रचना ।
 ॐॐ चंबक (क) सं.— एक प्रकार का
 वाजा ।
 ॐॐ चंबार, ॐॐ चम्मार (तद्) सं.—
 चर्मकार; (तत्) ; मोची, चमार, चमड़े का
 काम करनेवाला ।
 ॐॐ चंबु (क) सं.— तौबा ; लोटा (तांबे,
 पीतल आदि का) ।

ॐॐ चकचक (क) अ.— जल्दी, शीघ्र ;
 चमकते हुए, प्रकाशित होते हुए ।
 ॐॐ चकडा, ॐॐ चक्रि (तद्) सं.—
 शकट (तत्) ; गाड़ी, छकड़ा ।
 ॐॐ चकमुकि, ॐॐ चक्रिमुकि,
 ॐॐ चक्रमुकि, ॐॐ चक्रमुकि
 (अ. दे.) सं.— चकचक (फारसी) ।
 ॐॐ चकर (तद्) सं.— चक्र (तत्) ।
 ॐॐ चकळगुलि, ॐॐ चकळगुलि,
 ॐॐ चकळगुलि (क) सं.— गुदगुदी,
 गुदगुदी पैदा करके दूसरे को हँसाना ।
 ॐॐ चकित (सम्) वि.— थरथर काँपता हुआ,
 डरा हुआ, भयभीत, चौंका हुआ, शकित ।
 ॐॐ चकिसुकि (अ. दे.) सं.— दे-
 चकिसुकि ।
 ॐॐ चकोत, ॐॐ चकोतु, ॐॐ चकोतु,
 ॐॐ चकोतनसोपु (क) सं.— एक
 भाजी का नाम ।
 ॐॐ चकोर (सम्) सं.— चकोर पक्षी,
 तीतर की जाति का एक पहाड़ी पक्षी जो
 चंद्रमा को देखकर बहुत प्रसन्न होता है ।
 ॐॐ चकोरक (सम्) सं.— ॐॐ ।
 ॐॐ चकोरि, ॐॐ चकोरिके (सम्)
 सं.— माद चकोर ।
 ॐॐ चकडा, ॐॐ चक्रि (तद्) सं.—
 दे.— ॐॐ ।
 ॐॐ चकने (क) अ.— शीघ्रता से, जल्दी,
 सवेग, तुरंत ।
 ॐॐ चकंद (क) सं.— गणशप, व्यर्थ की
 बात ; आनंद, मनोरंजन ; संतोष, वृत्ति ।
 ॐॐ चकमुकि (अ. दे.) सं.— दे-
 चकिसुकि ।
 ॐॐ चकुरिसु (क) क्रि.— बकरे की
 'बा वा' ध्वनि ।
 ॐॐ चकळगुलि (क) सं.— दे-
 चकळगुलि ।
 ॐॐ चकलि, ॐॐ चकलि, ॐॐ चकलि,
 ॐॐ चकलि (तद्) सं.— चकली (तत्) ;
 एक खाने की (नमकीन) चीज़ ।

अक्षर चक्र (तद्) सं.— ('छागलः' से ?) — चमडा ।

अक्षरगुण चक्रगुण (क) सं.— दे. अक्षरगुण ।

अक्षर चक्र (क) सं.— वह वस्तु जो दबकर चपटी हो गयी हो ।

अक्षर चक्र (अ. दे.) सं.— एक प्रकार का सूती कपड़ा ।

अक्षरबन्दी चक्रबन्दी (अ. दे.) सं.— चक्रबन्दी (हिं), भूमि का विभाजन ।

अक्षरचक्र चक्रमुक्ति (अ. दे.) सं.— दे. अक्षरचक्र ।

अक्षर चक्र (तद्) सं.— दे. अक्षर ।

अक्षर चक्र (तद्) सं.— शकं (तद्) ; छाला ; लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े ।

अक्षरचक्र चक्रोत्त, अक्षरचक्र चक्रोत्तु (तद्) सं.— चक्रोत्तरा ; एक फल विशेष ।

अक्षर चक्र (सम्) सं.— पहिया, चक्र ; कुम्हार का चाक ; चक्रायुध ; वृत्त, गोला-कृति ; बच्चों के खेलने का पहिया ; सेना, फौज ; अधिकार, शासन, सत्ता ; गगन, आकाश ; नदी का मोड़ ; दल, समूह ; चक्रवाक ।

अक्षरचक्र चक्रकारक (सम्) सं.— एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।

अक्षरचक्र चक्रधर (सम्) सं.— विष्णु, कृष्ण ।

अक्षरचक्र चक्रधारे (सम्) सं.— पहिए की परिधि या घेरा ।

अक्षरचक्र चक्रपक्षि (सम्) सं.— चक्रवाक ।

अक्षरचक्र चक्राणि (सम्) सं.— अक्षरचक्र ।

अक्षरचक्र चक्रवाल (सम्) सं.— मण्डल, वृत्त, समुदाय, समूह, क्षितिज ।

अक्षरचक्र चक्रमर्द, अक्षरचक्र चक्रमर्दक (सम्) सं.— तेजपात; एक पौधा (Cassia-tora) ।

अक्षरचक्र चक्रयुग (सम्) सं.— चक्रवाक ।

अक्षरचक्र चक्रले (सम्) सं.— एक सुगंधित तृण विशेष ।

अक्षरचक्र चक्रवर्त (सम्) सं.— दे. अक्षरचक्र ।

अक्षरचक्र चक्रवर्ति (सम्) सं.— सम्राट, आत्ममुद्रक्षितीश ; आदरणीय व्यक्ति ; कुम्हार ; विष्णु ; चक्रोत्तरा ; चक्रवर्तिनी, एक सुगंधित पौधा ।

अक्षरचक्र चक्रवर्तिनि (सम्) सं.— सम्राज्ञी ; चक्रोत्तरा ।

अक्षरचक्र चक्रवाक (सम्) सं.— चक्रवाक पक्षी, रथांग पक्षी ।

अक्षरचक्र चक्रवाड, अक्षरचक्र चक्रवाल (सम्) सं.— दे. अक्षरचक्र ।

अक्षरचक्र चक्रवृद्धि (सम्) सं.— अक्षरचक्र चक्रवृद्धि (तद्) — सूद दर सूद ।

अक्षरचक्र चक्रव्यूह (सम्) सं.— वृत्ताकार सैनिक संस्थापना ।

अक्षरचक्र चक्रांकि (सम्) सं.— राजहंस ।

अक्षरचक्र चक्रांग (सम्) सं.— (नर) हंस । अक्षरचक्र चक्रांगि ; (मादा) हंस ; एक पौधा ।

अक्षरचक्र चक्रादि (सम्) सं.— नदी का मोड़ या वक्रगति ।

अक्षरचक्र चक्रायुध (सम्) सं.— विष्णु का चक्र ; विष्णु ।

अक्षरचक्र चक्रि (सम्) सं.— वह जिसके पास चक्र हो ; विष्णु, कृष्ण ; राजा, कुम्हार ; सौंप ; खर, गधा । — अक्षरपति (सम्) सं.— खचर ।

अक्षरचक्र चक्रिवत् (सम्) सं.— गधा ।

अक्षरचक्र चक्रेश ; अक्षरचक्र चक्रेश्वर (सम्) सं.— राजा ।

अक्षरचक्र चक्रिल (सम्) सं.— एकवृक्ष विशेष (The Manilla tamarind) । (तद्) सं.— दे. अक्षरचक्र ।

अक्षरचक्र चक्षु (सम्) सं.— चक्षु, आँख, नेत्र ।

अक्षरचक्र चक्षुःश्रवस् (सम्) सं.— सौंप ।

अक्षरचक्र चक्षुःश्रवाश (सम्) सं.— सौंप को खानेवाला, मयूर ; मोर ।

अक्षरचक्र चक्षुःश्रोत्र (सम्) सं.— सौंप ।

अक्षरचक्र चक्षुष्य (सम्) सं.— सुंदरी स्त्री । वि. सुंदर, मनोहर ।

अक्षरचक्र चक्षुष्ये (सम्) सं.— नीला पत्थर जो

आँखों का अंजन बनाने के लिए उपयोगी होता है ।

अक्षरचक्र चक्र (क) सं.— अक्षरचक्र चक्र, अक्षरचक्र चक्रोत्त, अक्षरचक्र चक्रोत्त, अक्षरचक्र तगले, अक्षरचक्र तगले, अक्षरचक्र तगले, अक्षरचक्र तगले, अक्षरचक्र तगले—चक्रमर्दक पौधा (Cassia-tora) ।

अक्षरचक्र चक्रकार (क ?) सं.— गाते समय पद से आहत करना ।

अक्षरचक्र चक्रर (क) सं.— सावधानी, जागृति, जल्दबाजी, उतावलापन ।

अक्षरचक्र चक्ररीग (क) सं.— उत्साही, फुर्तीला मनुष्य, शीघ्र काम करनेवाला ।

अक्षरचक्र चक्रु (क) क्रि.— रगड़, मार, पीट, चूर्ण कर ।

अक्षरचक्र चक्रुक (तद्) सं.— दे. अक्षरचक्र ।

अक्षरचक्र चक्रु (क) सं.— अक्षरचक्र चक्रु, अक्षरचक्र चक्रु, अक्षरचक्र चक्रु, अक्षरचक्र चक्रु—वाजरा ।

अक्षरचक्र चक्र (क) सं.— लकड़ी के टूटने पर उत्पन्न होनेवाली ध्वनि, कोड़े की ध्वनि, छड़ी की ध्वनि ।

(१) अक्षरचक्र चक्र (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ; चक्रपल या जूते से निकलनेवाली ध्वनि ।

(२) अक्षरचक्र चक्र (अ. दे.) सं.— लत, बुरी आदत, लालच ।

अक्षरचक्र चक्रक (सम्) सं.— गौरैया ।

अक्षरचक्र चक्रकश्राद्ध (सम्) सं.— श्राद्ध का एक प्रकार, कृचा रखकर किया जानेवाला श्राद्ध ।

अक्षरचक्र चक्रकयिसु, अक्षरचक्र चक्रकयिसु, अक्षरचक्र चक्रकयिसु (अ. दे.) क्रि.— ['छाँटना' (हिं.) से ?] — काट डाल, छाँट, काटकर छोटा कर ।

अक्षरचक्र चक्रके (सम्) सं.— मादा गौरैया ।

अक्षरचक्र चक्रकने (क) अ.— तुरंत, फौरन, तत्क्षण, सहसा ।

अक्षरचक्र चक्रकटिके, अक्षरचक्र चक्रकटिके (क) सं.— तीव्रता, उत्साह, काम-काज ।

अक्षरचक्र चक्रक (क) सं.— कोड़े से निकलने वाली गंभीर ध्वनि ।

अक्षरानुसारी चटाकु (अ. दे.) सं.—छाँक (हिं.)
अक्षरानुसारी चटिके (सम्) सं.—मादा गौरैया; पीपल
की जड़ ।

अक्षरानुसारी चटिगे अक्षरानुसारी चटिगे (क) सं.—मिट्टी
का भाण्ड जिसका मुँह बड़ा होता है ।

अक्षरानुसारी चटिल् (क) सं.—दे. अक्षरानुसारी.

अक्षरानुसारी चटीरने (क) अ. — ज़ोर-ज़ोर से,
'चट' शब्द के साथ ।

अक्षरानुसारी चट्ट (सम्) सं.—चापलूमी भरे शब्द ;
पेट ।

अक्षरानुसारी चटुकने (क) सं.—ज़ोर की चोट,
थप्पड ।

अक्षरानुसारी चटुकु (क) सं.—कोड़ से या छड़ी से
(भारते समय) आनेवाली ध्वनि ।

अक्षरानुसारी चटुल (सम्) वि.—कँपकँपा, कँप-
नेवाला, अस्थिर ; चंचल ; मनोहर, सुंदर ।

अक्षरानुसारी चटुवटिके (क) सं.—दे. अक्षरानुसारी.

अक्षरानुसारी चट्ट (क) सं.—पछोरकर या छानकर
निकाला गया कूड़ा-करकट ; समतलता ;
गाड़ी, खाट, कुरसी या चित्र का ढाँचा ;
मुर्दा ले जाने की टिकठी, अस्थि ; योजना,
नियम, क्रम, कानून ; सफ़ाई, स्वच्छता ; मनो-
हरता ।

अक्षरानुसारी चट्टने (क) अ.—तुरंत, सहसा, फौरन,
अचानक, स्वरित गति से ।

अक्षरानुसारी चट्टि (क) सं.—मिट्टी का भाण्ड ।
(तद्) — (१) श्रेष्ठिन् (तत्) — बनिया,
सेठ (२) षष्ठी (तत्) । — गणेश गरण
(तद्) सं.— षष्ठीग्रहणं (तत्) ।

अक्षरानुसारी चट्टिगे (क) सं.— दे. अक्षरानुसारी.

अक्षरानुसारी चट्टिरि (क) क्रि.— शरीर पर
सुगंध द्रव्य का लेपन कर ।

अक्षरानुसारी चट्टु (क) सं.— समतलता ; गाड़ी
का तल या भ्रमचान ; = अक्षरानुसारी चतु-पालकी
का समतल वस्त्र-परिवेश ; बीजकोष,
फली ; अशुद्धि ; गंदगी ; नीचता ; नाश,
विनाश ; बीजरहित आँवला जिसे धूप में
सुखाकर रखा जाता है ।

अक्षरानुसारी चट्टे (क) सं.—अंग्रेज़ी-फैशन का वस्त्र ;
समतलता ; एक प्रकार की बीमारी । —

कार कार, कार कार (क) सं.— अंग्रेज़ी-
फैशन का वस्त्र पहना हुआ व्यक्ति । —
गार गार, गार गार (क) सं.— अक्षरानुसारी.

अक्षरानुसारी चट्टणि, अक्षरानुसारी चट्टनि (अ. दे.) सं.—
चटनी (हिं.) पीसा जाना या रगड़ा जाना ।

अक्षरानुसारी चट्टति (अ. दे.) सं.— ('चटनी' से ?)
— ईर्ष्या, डाह ।

अक्षरानुसारी चट्टायिसु (अ. दे.) क्रि.— चट्टा,
अधिक कर, बढ़ा ; लगा, दढ़ कर, जड़ ।

अक्षरानुसारी चट्टायु, अक्षरानुसारी चट्टाल (अ. दे.)
सं.— बढ़ती, अधिकता, वृद्धि ।

अक्षरानुसारी चट्टि (अ. दे.) सं.— सीढ़ी ; ऊँचतर की
खुशी पूँछ के समान (डमरुआ) चूल ; छड़ी ।

अक्षरानुसारी चट्टपुडने (क) अ.— जल्दी,
शीघ्रता से ।

अक्षरानुसारी चट्टे, अक्षरानुसारी सट्टे (अ. दे.) वि.— अलग,
पृथक, बिना भार का ।

अक्षरानुसारी चट्टि (अ. दे.) सं.— चट्टी (हिं.) ।

अक्षरानुसारी चण (सम्) वि.— प्रसिद्ध, प्रख्यात ;
निपुण । (तद्) सं.— क्षणः (तत्) ।

अक्षरानुसारी चणक (क) सं.— चट्टी । (सम्) सं.—
चना ।

अक्षरानुसारी चणगि (क) सं.— अक्षरानुसारी चणगे. अक्षरानुसारी
चणगि, अक्षरानुसारी चणगि — मांगल्यक,
ममूर ।

अक्षरानुसारी चणगे. अक्षरानुसारी चणगि (क) सं.—
दे. अक्षरानुसारी.

अक्षरानुसारी चणंग (तद्) सं.— चणक (तत्) ;
चना ।

अक्षरानुसारी चणग (क) सं.— छोटा जाँधिया, चट्टी ।

अक्षरानुसारी चतुः (सम्) वि.— चार की संख्या ।
— चार शाल, चार शाले (सम्) सं.—
चार मंदिर या भवन जो सम चतुर्भुज आकार
में हो ।

अक्षरानुसारी चतुर (सम्) वि.— अक्षरानुसारी चदर,
अक्षरानुसारी चदर, अक्षरानुसारी चदर,
अक्षरानुसारी चदर (तद्)—चतुर, होशियार, पटु, निपुण ;
तेज, मनोहर, प्रिय । — अक्षरानुसारी तन (सम्)
= चातुर्य ।

अक्षरानुसारी चतुरंग (सम्) सं.— अक्षरानुसारी चद-

रंग, अक्षरानुसारी चदुरंग (तद्) — चतुरंगिनी
सेना ; शतरंज ।

अक्षरानुसारी चतुरते (सम्) सं.— चातुर्य, होशि-
यारी ।

अक्षरानुसारी चतुरश्र, अक्षरानुसारी चतुरस्र (सम्) वि.
— चार कोनोंवाला, चतुष्कोण ।

अक्षरानुसारी चतुरानन, अक्षरानुसारी चतुरास्य
(सम्) सं.— ब्रह्मा ।

अक्षरानुसारी चतुरास्यनिघंटु (सम्) सं.
— बौद्ध कवि का एक कोश ग्रंथ ।

अक्षरानुसारी चतुरोपाय (सम्) सं.—
शत्रुओं के साथ व्यवहार के चार उपाय—
साम, दान, भेद और दण्ड ।

अक्षरानुसारी चतुर्गति (सम्) सं.— परमात्मा ।
कछुवा ।

अक्षरानुसारी चतुर्थि (सम्) सं.— अक्षरानुसारी चवुति,
अक्षरानुसारी चौति (तद्)—चौथ तिथि ।

अक्षरानुसारी चतुर्दंत (सम्) सं.— ऐरावत ।

अक्षरानुसारी चतुर्बल (सम्) सं.— चतुरंग ;
हाथी ; घोड़े, रथ और पैदल सिपाहियों से
सज्जित सेना ।

अक्षरानुसारी चतुर्भद्र (सम्) सं.— चार पुरुषार्थ—
धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।

अक्षरानुसारी चतुर्भुज (सम्) सं.— चतुष्कोण,
त्रिपुण ।

अक्षरानुसारी चतुर्मुख (सम्) सं.— ब्रह्मा ।

अक्षरानुसारी चतुर्युग (सम्) सं.— चार युग
— कृत, त्रेता, द्वापर और कलियुग ।

अक्षरानुसारी चतुर्वक्त्र (सम्) सं.— ब्रह्मा ।

अक्षरानुसारी चतुर्वर्ग अक्षरानुसारी चतुर्वर्ग
विधपुरुषार्थ । (सम्) सं.— दे. अक्षरानुसारी.

अक्षरानुसारी चतुष्कोण (सम्) वि.— चार
कोनों वाला, सम चतुर्भुज आकार का ।

अक्षरानुसारी चतुष्टय (सम्) वि.— चार की
संख्या, चार लोगों से युक्त ।

अक्षरानुसारी चतुष्पथ (सम्) सं.— चौराहा ।

अक्षरानुसारी चतुष्पद, अक्षरानुसारी चतुष्पाद (सम्)
वि.— चार पैरोंवाला, चार अवयवोंवाला ।

अक्षरानुसारी चतुष्पादि (सम्) सं.— एक वृत्त का
नाम ।

अंशुल चत्तरी

अंशुल चत्तरी, अंशु चत्तरी, अंशु छत्तरी (तद्)

सं.—छत्रं (तत्); छाता, छतरी ।

अंशुल चत्तरी (तद्) सं.—अंशुल.

अंशुल चत्तरी, अंशुल जत्तरी (क) सं.—
काव्यरचना का एक प्रकार ।

अंशुल चत्तरी (तद्) सं.—दे. अंशुल.

अंशुल चत्तरी (अ. दे.) सं.—छत (हिं.); बिस्तर,
पालकी. कमरे आदि का आवरण-वस्त्र ।

अंशुल चत्तरी (तद्) सं.—छत्र (तत्); सत्रं
(तत्) ।

अंशुल चत्तरी (तद्) सं.—दे. अंशुल.

अंशुल चत्तरी (सम्) सं.—चवूतरा, आँगन;
चौराहा; यज्ञ के लिए तैयार की गई सम-
तल भूमि ।

अंशुल चत्तरी (सम्) वि.—चार की संख्या ।

अंशुल चत्तरी (सम्) वि.—
चालीस (संख्या) ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (तद्) सं.—चतु-
ष्कोण ।

अंशुल चत्तरी (तद्) सं.—दे. अंशुल.

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (क)

क्रि.—विकीर्ण कर, फैला, छितरा. बिखेर ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (क) क्रि.—बिखर
जा, फैल जा, विकीर्ण हो ।

अंशुल चत्तरी (तद्) वि.—दे. अंशुल.

अंशुल चत्तरी (तद्) सं.—शतरंज ।

अंशुल चत्तरी (तद्) वि.—चतुरा. निपुणा स्त्री ।
(तद्) सं.—चातुर्य ।

अंशुल चत्तरी (अ. दे.) सं.—चदर. चादर (फारसी) ।

अंशुल चत्तरी (क) वि.—(समस्त पदों में) ।

लाल, अरुण; उचित, योग्य, ठीक, अच्छा,
श्रेष्ठ, उत्तम, नियमित, सम, सीधा ।

अंशुल चत्तरी (सम्) अ.—[च + न] — और
नहीं ।

अंशुल चत्तरी (क) सं.—सुंदर या मनोहर पुरुष;
एक व्यक्ति का नाम ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (क) अ.—
अच्छी तरह, अच्छे प्रकार से, भली भाँति,
सुन्दरता से ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (क) सं—

एक बड़ा वृक्ष जिसके छाल सफेद होते हैं
(*Largerstroemia Parviflora*); =
अंशुल चत्तरी—मसूर ।

अंशुल चत्तरी (क) सं.—सुन्दर पुरुष ।

अंशुल चत्तरी (क) सं.—सीधापन. अच्छापन,
सौंदर्य, उत्तमता. औचित्य ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (क) सं.—सुन्दरी स्त्री ।

अंशुल चत्तरी (सम्) सं.—बाँस, बाँस की छड़ी ।

—कारक (सम्) सं.—बाँस का

काम करनेवाला, टोकरी आदि बनानेवाला ।

अंशुल चत्तरी (क) क्रि.—'चप चप' ।

कर, खाना खाते समय चपचप कर ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (क) वि.—सम-

तल । सं.—बड़ा समतल पत्थर ।

अंशुल चत्तरी (सम्) वि.—हिलनेवाला, काँपने-

वाला. चंचल, अस्थिर, हँवाडोल; निर्बल,

नइवर; फुर्तीला, उतावला । सं.—मछली;

पाग, पारद, सुगंध द्रव्य विशेष; चातक

पक्षी ।—अनं तन, अंशुल (सम्) सं.—

चंचलता, अस्थिरता आदि ।

अंशुल चत्तरी (सम्) सं.—कुलटा स्त्री; मदिरा;

विजली; लक्ष्मी; जिह्वा; पीपल ।

अंशुल चत्तरी (क) वि.—दे. अंशुल सं.—

थप्पड़, तमाचा ।

अंशुल चत्तरी (क) क्रि.—दे. अंशुल.

अंशुल चत्तरी (अ. दे.) सं—चपाती (हिं) ।

अंशुल चत्तरी (अ. दे.) क्रि.—

(‘छिपाना’ से) छिपा ।—अंशुल चत्तरी

वणे = छिपाव । अंशुल चत्तरी = छिपाव ।

अंशुल चत्तरी (सम्) सं.—फैले हुए हाथ की

हथेली; थप्पड़ ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (क) अ.—नीरस,

सारहीन, स्वादहीन ।

अंशुल चत्तरी (क) वि.—दे. अंशुल; ताली

बजाना ।

अंशुल चत्तरी (क) सं.—बड़ा समतल पत्थर ।

अंशुल चत्तरी (क) क.—‘चपचप’ करते हुए ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (अ. दे.) वि.—

छप्पड़ (संख्या) ।—अंशुल देश = छप्पड़ देश

विशेष ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (अ. दे.) सं.—
छप्पड़ (हिं.); मंडप, पंडाल; चँदवा,
आच्छादन ।

अंशुल चत्तरी (क) सं.—चिड़ियों का चूँ
चूँ शब्द; गाय-बैलों को चलाते समय
किसानों के मुँह से निकालनेवाली ध्वनि;
मुँह बंद करके हँसना, प्रसन्नता का चिह्न
दिखलाना ।

अंशुल चत्तरी (क) सं.—अनेक तृणों के
नाम ।

अंशुल चत्तरी (क) क्रि.—गाय-बैलों को

चलाते समय एक प्रकार का शब्द कर;

चवाते समय आवाज़ कर, एक प्रकार की

आवाज़ के साथ चवा; थोड़ा-थोड़ा करके

पी (चूस); थपकी दे; थप्पड़ मार, तमाचा

लगा ।

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (अ. दे.) सं.—

—छप्पड़, जूता ।

अंशुल चत्तरी (क) सं.—ताली बजाने की

क्रिया ।

अंशुल चत्तरी (क) क्रि.—दे. अंशुल

अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी (क) सं.—

दे. अंशुल.

(१) अंशुल चत्तरी (क) वि.—दबी हुई, चिपटी
हुई । सं.—चूतड़ की हड्डी; वेस्वाद, रस
हीनता ।

(२) अंशुल चत्तरी (अ. दे.) सं.—छाप (हिं),
सुहर. सुद्रा ।

अंशुल चत्तरी (अ. दे.) सं.—दे. अंशुल.

अंशुल चत्तरी. अंशुल चत्तरी, अंशुल चत्तरी

(अ. दे.) सं.—चाबुक ।

अंशुल चत्तरी चमकयिसु, अंशुल चमकयिसु

(अ. दे.) क्रि.—चमक. दमक, कँपा;

डॉट ।

अंशुल चत्तरी चमकयिसु, अंशुल चमकयिसु (तद्)

सं.—चर्मपट्टिका (तत्); पाँसे फेंकने का

चमड़े का चौरस टुकड़ा ।

अंशुल चमड (तद्) सं.—चर्मन् (तत्);

(हिन्दी से यह शब्द कन्नड में आया है)

चमड़ा ।

अनुच्छेद चमत्कार (सम्) सं.— विस्मय, आश्चर्य, चमत्कार ; तमाश ; होशियारी, बुद्धिमत्ता ; शीघ्रता । अनुच्छेद चमत्कारि —वि. अनुच्छेद चमत्करिसु —क्रि. ।

अनुच्छेद चमत्कृति (सम्) सं.— अनुच्छेद. अनुच्छेद चमर (सम्) सं.— एक प्रकार का हिरन ; जन्तु विशेष की पूँछ का बना चँवर, 'याक' नामक मृग ।

अनुच्छेद चमरि (सम्) सं.— सुरागाय, चमर की मादा ।

अनुच्छेद चमरिक (सम्) सं.— कोविदार वृक्ष (Bauhinia Variegata) ।

अनुच्छेद चमस (सम्) सं.— यज्ञों में सोम रस पीने का एक पात्र विशेष ; चमच ; एक प्रकार की मिठाई, लड्डू ; ऋषभ देव के पुत्र का नाम ।

अनुच्छेद चमसि (सम्) सं.— दे. अनुच्छेद.

अनुच्छेद चमु, अनुच्छेद चमू (सम्) सं.— सेना, फौज़ ; दल जिसमें 729 हाथी, 729 रथ, 2,187 घोड़े और 3,645 पैदल सिपाही होते हैं । अनुच्छेद पति (सम्) सं.— सेनापति, सिपहसालार ।

अनुच्छेद चमूर (सम्?) सं.— बाघ, व्याघ्र ।

अनुच्छेद चमूरु (सम्) सं.— एक प्रकार का हिरन ।

अनुच्छेद चम्म (तद्) सं.— चमत् (तत्) ; चमड़ा ।

अनुच्छेद चम्मटिगे, अनुच्छेद चम्मट्टिगे (तद्) सं.— दे. अनुच्छेद ; चर्मयष्टिका (तत्) —चर्मदण्ड ; लुहार का भारी हथौड़ा, घन ।

अनुच्छेद चम्मलि, अनुच्छेद चम्मलिके (तद्) सं.— सैहिकेयः (तत्) ; केतु ग्रह ; एक प्रकार का साँप ; एक प्रकार की मछली ।

अनुच्छेद चम्मर (तद्) सं.— दे. अनुच्छेद.

अनुच्छेद चम्मरिगे (तद्) सं.— चर्मपादुका (तत्) एक प्रकार का चमड़े का जूता ; चमरौघा ।

अनुच्छेद चम्मे, अनुच्छेद चम्य, अनुच्छेद चम्बे (क) सं.— कृकवाक या नेत्री नामक

अनुच्छेद चय (सम्) सं.— समूह, समुदाय, ढेर, राशि ; टीला ; धुस्सा ; दुर्गद्वार, परकोटा ; इमारत, भवन ; बैठकी ; लकड़ी का ढेर ।

अनुच्छेद चयन (सम्) सं.— इकट्ठा या एकत्र करने की क्रिया, एकत्रीकरण, चयन, चुनना ; ढेर । — अनुच्छेद कुसुम (सम्) सं.— फूलों का एकत्रीकरण ।

(१) अनुच्छेद चर (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ; 'चर चर' शब्द ।

(२) अनुच्छेद चर (सम्) वि.— चलनेवाला, हिलने वाला, काँपता हुआ, थरथराता हुआ ; जंगम ; जीवधारी । सं.— जासूस, गुप्तचर, भेदिना, दूत ; खंजन पक्षी ; कौड़ी ; मंगलग्रह ; मंगलवार ; जुआ, पाँसे का खेल ।

(१) अनुच्छेद (सम्) सं.— जासूस, गुप्तचर, दूत ; रमता भिक्षुक ; आयुर्वेद विशेष, आयुर्वेद के एक आचार्य का नाम ; पाण्डु ; माया, इंद्रजाल (मै. प्र.) ।

(२) अनुच्छेद चरक, अनुच्छेद चरकि. अनुच्छेद चरखा (अ. दे.) सं — चरखा (हिं.) ।

अनुच्छेद चरग, अनुच्छेद चरुग, अनुच्छेद चरुग (क) सं.— खेत में दी जानेवाली आहुति ।

अनुच्छेद चरट (क) सं.— भूसा, भूखी ; तलछट ; थोथी वस्तु ।

अनुच्छेद चरण (सम्) सं.— पैर, पाद, चरण ; सहारा, खंभा, वृक्षमूल ; वेद की शाखा ; श्लोक का एक पाद या चरण ; जाति, नस्ल ; घूमना, फिरना ; संपादन, अभ्यास ; चालचलन, बर्ताव, संपन्नता। — अनुच्छेद (सम्) सं.— पदतल, तलवा । — अनुच्छेद युग (सम्) सं.— दोनों पाद । — अनुच्छेद वात्मीक (सम्) सं.— पैर जो साँप के बिल जैसे हो ; एक प्रकार का पीलपाँव । — अनुच्छेद विन्यास (सम्)—पैर या चरण नीचे रखना ।

अनुच्छेद चरणाक्ष (सम्) सं.— अक्षपाद, गौतम ।

अनुच्छेद चरणाभरण (सम्) सं.— पैरों का आभूषण ।

अनुच्छेद चरणायुध (सम्) सं.— मुर्गा ।

अनुच्छेद चरणिगे (क) सं.— नाँद ।

अनुच्छेद चरंत, अनुच्छेद चरंति (सम्) सं.— लिंगायत-जंगम, ब्रह्मचारी ।

अनुच्छेद चरथ (सम्) सं.— जंगम, चलनेवाला ।

अनुच्छेद चरपु, अनुच्छेद चरपु (तद्) सं.— चरु (सम्) ; भगवान् के लिए रखा गया नैवेद्य । अनुच्छेद चरचंडवल, अनुच्छेद चरचंडवल (क) सं.— चर-पूँजी, व्यापार के लिए लगाई गई पूँजी ।

अनुच्छेद चरवि, अनुच्छेद चरवि, अनुच्छेद चरवि (अ. दे.) सं.— चरवी (फ़ारसी) ; मेद-वसा ।

अनुच्छेद चरम (सम्) वि.— अंतिम ; आखिरी ; पिछला, पुराना, वृद्ध ; बिलकुल बाहरी ; सबसे नीचे या कम ; पश्चिमी । — अनुच्छेद क्षमाभृत् (सम्) — अस्ताचल । — अनुच्छेद गिरि, अनुच्छेद अद्रि (सम्) सं.— अस्ताचल । — अनुच्छेद काल (सम्) सं.— मृत्यु की घड़ी । — अनुच्छेद गीते (सम्) सं.— शोक-गीत, चरमगीत, मर्त्यिया ।

अनुच्छेद चरयिसु (सम्) क्रि.— घूम, भ्रमण कर ।

अनुच्छेद चरालिंग (सम्) सं.— चलनेवाला लिंग ; लिंगायत संप्रदाय का जंगम ।

अनुच्छेद चरवण (तद्) सं.— चर्वणम् (तत्) ।

अनुच्छेद चरविगे (क) सं.— अनुच्छेद चरिगे, अनुच्छेद चरिविगे, अनुच्छेद चरविगे, अनुच्छेद चरुविगे — बड़ा तौबे या पीतल का घड़ा, जल रखने का घड़ा ।

अनुच्छेद चराचर (सम्) सं.— चर और अचर स्थावर और जंगम, संपूर्ण जगत्. आकाश ।

वि.— चलने और न चलनेवाला, अस्थिर । अनुच्छेद चरादाय (सम्) सं.— ऐसे पशुओं को बेचने से सरकार को मिलनेवाली भाव जिनके कोई मालिक न हो ; वेतन के अतिरिक्त रिश्वत आदि से होनेवाली भाव ।

अनुच्छेद चरायि (अ. दे.) सं.— चराई (हिं.) ; चरागाह ।

अनुच्छेद चरि (सम्) वि.— जानेवाला, रहनेवाला । सं.— बंदूक की छोटी गोली ।

अनुच्छेद चरिकि ; अनुच्छेद चरि (अ. दे.) सं.— चरवी

(हिं) ; पीसने की चरखी ; कुम्हार का चाक ।
 (१) अंशों चरित्रे (क) सं. — दे. अंशों ;
 = अंशु चंबु—लोटा। अंशु अंशों दंडु,
 वादरु अंशु; दांडी दंडु, अंशु चरि-
 नेगे दरिद्रवादरु हंचुहुडिगे दरिद्रवल्ल—लोटे-
 बर्तनों के लिए दारिद्र्य होने पर भी खप-
 रेल के टुकड़ों के लिए दारिद्र्य नहीं है
 (कह.) ।
 (२) अंशों चरित्रे (तद्) सं.—चर्या (तत्) ;
 गति, चाल, चालचलन ; व्यवहार, आच-
 रण ; अनुष्ठान ; भक्षण ; जैनों का भोजन ।
 अंशुचरिचलि (क) सं.—दे. अंशुचरि।
 अंशुचरित (मम्) कृ.—भ्रमण किया हुआ,
 घूमा हुआ ; पूरा किया हुआ, अभ्यास किया
 हुआ ; प्राप्त किया हुआ ; जाना हुआ ;
 भेंट किया हुआ । सं. — गमन, मार्ग,
 अभ्यास, चालचलन, आचरण ; जीवनचरित,
 जीवनी इतिहास ।
 अंशुचरितार्थत्व (सम्) सं. — कृता-
 र्थता, सफलता, फल-सिद्धि ।
 अंशुचरिते (मम्) सं. = अंशुचरि।
 अंशुचरित्र (सम्) सं.—आचरण, आदत,
 बान, टेव, चालचलन ; कर्तव्य, निर्दिष्ट
 अनुष्ठान ; संपादन, निर्वाह ; कथा ; इतिहास
 वृत्तांत, स्वहस्त लिखित जीवनी ; साहसिक
 कार्य ।— गोर गार, गोर गार (सम्)
 सं.— इतिहासकार ।
 अंशुचरित्रे (सम्) सं. = अंशुचरि।
 अंशुचरियसु (मम्) क्रि.— दे. अंशुचरि।
 अंशुचरिविगे (क) सं.— दे. अंशुचरि।
 अंशुचरिण्यु (सम्) वि.—चंचल, भ्रमण-
 कारी, क्रियाशील, डोलनेवाला ।
 अंशुचरी (सम्) सं.— दूती, स्त्री जासूस ;
 दासी, युवनी ।
 अंशुचरु (सम्) सं.— हव्याज या यज्ञाज
 पकाने का बर्तन, कुंभ, घड़ा, भाण्ड, स्थाली
 हव्य विशेष ।
 अंशुचरुग (क) सं.— अंशुचरि।
 अंशुचरुपु (तद्) सं.— दे. अंशुचरि।

अंशुचरुट (तद्) सं.—भरुकं (तत्) ;
 भुना हुआ मांस ।
 अंशुचरुच (सम्) सं.— सूर्य । (अ. दे.)
 सं.— गिरिजधर ।
 अंशुचरुचिके (सम्) सं.— शरीर में
 चंद्रनादि का लेप ; ढँकना ; पाठ, पुनरावृत्ति
 बहस ; खोज, अनुसंधान ।
 अंशुचरुचित (सम्) वि.—लगा हुआ ; लेप
 किया हुआ, विचार किया हुआ ; अनुसंधान
 किया हुआ । अंशुचरुचिसु—क्रि. रू. ।
 अंशुचरुचु (क) क्रि.— बच्चों का पालन-
 पोषण कर (अ. दे.) । सं.— Church
 (अंग्रेजी) ; गिरिजाधर ।
 अंशुचरुचु (सम्) सं.— शरीर पर सुगंध
 द्रव्य का लेपन, अनुलेपन ; पाठ, पुनरावृत्ति,
 बार-बार पढ़ना, अध्ययन ; खोज, अनुसंधान ;
 बहस ; उत्सव ; मोद ; दुर्गा, भैरवी ; रति,
 रतिबंध, सुरत ; उक्ति, वचन ; व्रत ;
 प्रतिमा ; बुदबुद, बुलबुला ; गाली देना,
 धिक्कारना, निंदा करना ; झगड़ा, कलह ;
 उपहास, मज़ाक उड़ाना ।
 अंशुचरुचुचि (सम्) सं.—चपानी, रोटी ।
 अंशुचरुचुचि (सम्) सं.—डाल, चमड़ा, चाम,
 खाल ।
 अंशुचरुचुचुचि (सम्) सं.—लजाधुर, छुई
 मुई का पौधा ।
 अंशुचरुचुचुचुचि (सम्) सं.—मोची, चमार ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचि (सम्) सं.— चमड़े
 का बोतल जिसमें तेल रखा जाता है ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—स्थूल दृष्टि,
 बाहरी नेत्र ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—वह पुरुष जो
 किसी प्रश्न का शीघ्र और उचित उत्तर दे
 सकता हो ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—चाबुक ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— दे.
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—
 चमार की रौपी ।

अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—चर्मप्रसेविक,
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—घोंकनी ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—चाबुक।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—बहिया ढाल ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—
 —चमार, मोची ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—सिपाही जिसके हाथ
 में ढाल हो ; भूर्जवृक्ष ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—दे. अंशुचरि। (२)
 (१) अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—दे. अंशुचरि।
 (२) अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— चवाना,
 खाना, चखना ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— नीले रंग की
 मक्खी ; काली मक्खी ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— चवाने की
 क्रिया ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (क) सं.— दे. अंशुचरि।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) वि.—कॉपता हुआ, हिलता
 हुआ, डोलता हुआ, अस्थिर ; शिथिल, ढीला ;
 निर्बल ; घबड़ाया हुआ ; नाशवान ।
 (१) अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— कंपकंपी, घबराहट,
 विकलता ; पवन, हवा ; पारद ।
 (२) अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.—छल ; हठवा-
 दिता, अपनी बात पर अडे रहना ; जिद्द ।—
 गोर गार — हठी पुरुष या स्वेच्छाचारी
 पुरुष ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— अंशुचरि।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (क) क्रि.— हाथ से जाने दे, मुक्त
 कर, विमोचन कर, फेंक, उडेल ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— सिनेमा,
 फ़िल्म ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (क) सं.— दे.
 अंशुचरि।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— स्वेच्छाचारिता,
 हठवादिता ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— घूमना, फिरना,
 गमन, अस्थिरता, कंपकंपी ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (सम्) सं.— अश्वत्थवृक्ष ।
 अंशुचरुचुचुचुचुचुचुचुचु (क) सं.— बासी भात ।

अलन चलन

अलन चलन (सम्) वि.— हिलनेवाला, काँपने वाला, जानेवाला, गमन करनेवाला । सं.— चरण, पैर ; हरिण ।

अलनक चलनक, अलन चलनि (सम्) सं.— छोटा लहंगा, घाघरा ।

अलन चलने (सम्) सं.— चलन, परिवर्तन ।

अलन चलमे, अलन चलिमे, अलन चलुमे, अलन चल्ले, अलन चल्ले (क) सं.— नली का छिद्र, भूमि का गहरा छिद्र, गड्ढा ; नदी या तालाब, जहाँ पानी न हो वहाँ खोदा गया गड्ढा; फ़ौवारा, सोता । अलन चलावादि (तद्) सं.— दे. अलन (अल २.)

अलन चलचल (सम्) वि.— हिलनेवाला, अस्थिर ।

अलन चलायिसु (अ. दे.) क्रि.— चला (हिं.) ; बढ़ा, पूर्ण कर, समाप्त कर ; समाप्त हो ।

अलन चलावणे (अ. दे.) सं.— चलन, रिवाज़, प्रचलन, रुपये-पैसे का संचार ।

(१) अलन चलि, अलन चलि (क) सं.— जाड़ा, सर्दी, ठण्डी, तमाशा, उपहास ; मज़ा ।

(२) अलन चलि (सम्) सं.— चादर, ओढ़नी मसूर का वृक्ष ।

अलन चलित (सम्) वि.— चला हुआ, हिला आ, आँदोलित ; गया हुआ ; प्राप्त, पाया हुआ ; जाना हुआ, समझा हुआ । अलन चलिसु (सम्) क्रि.— चल, गतिमान हो, क्रियाशील हो; हिल, काँप, थरथरा ; अमित हो ; प्रस्थान कर, जा ; घूम, चंचल हो ।

अलन चलु, अलन चलुवु (क) सं.— सौंदर्य, सुन्दरता, चारुता ।

अलन चलुकु, अलन चलुकु (क) क्रि.— (बर्तन से जल) बाहर आ, उरसजित हो, जल फेंका जा, शिथिल हो ।

अलन चलुमि, अलन चलुवि, अलन चलुवे, अलन चलुवे, अलन चलुवे (क) सं.— सुन्दरी स्त्री ।

अलन चलुमे (क) सं.— दे. अलन. अलन चलुव, अलन चलुवु, अलन चलुव, अलन चलुवु, अलन चलुव, अलन चलुवु

अलु चेल्व (क) सं.— सुन्दर पुरुष ; सौंदर्य, चारुता ।— अलन तन (क) सं.— सुन्दरता, मोहकता ; मनोहर स्वभाव ।

अलन चलुवति (क) सं.— सुन्दरी स्त्री ; रतिदेवी ।

अलन चलुवि (क) सं.— दे. अलन.

अलन चलुविके, अलन चलुविके, अलन चलुविके, अलन चलुविके (क) सं.— सुन्दरता, मनोहरता ; स्वच्छता, पवित्रता, कोमलता, लालित्य ; सद्ग्यवहार ।

अलन चलुवु (क) सं.— दे. अलन.

अलन चलुवे (क) सं.— दे. अलन.

अलन चलो (क) वि.— अच्छा, सुन्दर, सुहावना खूबसूरत ।

अलन चलण (क) सं.— दे. अलन.

अलन चल्ले (क) सं.— दे. अलन.

अलन चल्ल (क) सं.— हँसी, मज़ाक, तमाशा, सरसता, विनोद । क्रि.— चारों ओर फेंक, (पानी) छिटका ।— गति, गति गति (क) सं.— क्रीडा करनेवाला, सरसता करनेवाली या विनोद करनेवाली स्त्री ।

अलन चल्लण (क) सं.— छोटा जाँघिया, चढ़ी, इज़ार ।

अलन चल्लवडि (क) क्रि.— ऐसा मार (या पीट) कि चारों ओर तितर-बितर जाय ।

अलन चल्लवत्त, अलन चल्लवत्त, अलन चल्लवत्त, अलन चल्लवत्त (क) सं.— मसखरेपन से जीनेवाला, विदूषक ।

अलन चल्लवारिव (क) सं.— आवारा, स्वेच्छा से घूमनेवाला । अलन चल्लवाडु—क्रि. ।

अलन चल्लट (क) सं.— खेल, तमाशा, विनोद ; बाल्य-चापल्य । अलन चल्लट्टु (क) क्रि. ।

अलन चल्लपलि, अलन चल्लपिळि (क) अ.— अव्यवस्थित. क्रमहीन ।

अलन चल्लि (क) सं.— आड़ना, दर्पण ।

अलन चल्लु (क) क्रि.— तितरा, बाहर फेंक (जैसे बर्तन से पानी या अनाज नीचे फेंकना), फैला, ज़मीन पर तितरा या फेंक ; हवा में उड़ने दे, (दूसरों की आंखों में)

रेत डाल, रेत बिखेर, बीज फेंक या बो ; रुपये-पैसे बहा या अधिक खर्च कर । सं.—

आलसी पुरुष ; भ्रमणकारी व्यक्ति ।— अलन (क) सं.— आलस्य, सुस्ती भ्रमणशीलता, बाल्य-स्वभाव, गांभीर्य का अभाव,

अलन कलु, अलन कलु, अलन कलु (क) क्रि.— लबालब भरकर या उमड़कर बह ।

अलन चले (क) सं.— लंबाई, दूरी, फैलाव ।

अलन चलु, अलन चलु (क) सं.— दे. अलन.

अलन चल्ले (क) सं.— दे. अलन.

अलन चवकि, अलन चवुकि (अ. दे.) सं.— चौकी (हिं.) ।

अलन चवडिके (तद्) सं.— चाण्डालिका (तद्) ; एक प्रकार का तंत्रीवाद्य, इकतारा बाजा ।

अलन चवर, अलन चवल, अलन चवुल (तद्) सं.— चौल (तद्) — क्षौर, हजामत ।

अलन चवरि, अलन चवुरि, अलन चौरि (तद्) सं.— चमरी (तद्) ; चँवर ।

अलन चवरिगे (क) सं.— दे. अलन.

अलन चवलंन (क) सं.— आँख की पलक ।

अलन चवि (तद्) सं.— छवि (तद्) ; कांति, सौंदर्य ; चमड़ा, खाल ।

अलन चविके (सम्) सं.— एक वृक्ष विशेष, पिप्पली ।

अलन चवु (अ. दे.) सं.— साबुन (अरबी) ।

(१) अलन चवुक (अ. दे.) सं.— चौक (हिं.) चौकाकार चाँदी या लकड़ी की पेट्टी ; चौकाकार रुमाल ; चार रुपये (मै. प्र.) ; पौड़े, प्लुत, घोड़े की चाल विशेष ।

(२) अलन चवुक (?) सं.— सस्तापन, कम मूल्य ।

अलन चवुकसि (अ. दे.) सं.— चौकसी ; सावधानी से पूछ-ताछ करना ।

अलन चवुकळि, अलन चवुकळि (अ. दे.) सं.— चार मोतियों का समूह ; चार मोतियों का कर्णाभरण ; चौकोर रेखाओं का कपड़ा ।

अनुकृति चवुकासि

अनुकृति चवुकासि, अनुकृति चवुकाशि,
अनुकृति चौकासि, अनुकृति चौकाशि
(अ. दे.) सं.—[‘चौकसी’ से ?]—सौदा,
मोल-भाव ।
अनुकृति चवुगड़े (अ. दे.) सं.—(चौबड़ा—
मराठी) चार ढोल जिन्हें दो व्यक्ति बजाते
हैं ।
अनुकृति चवुडंगि (क) सं.—अजगंधि नामक
पौधा ।
अनुकृति चवुडि (तद्) सं.—चामुण्डी (तद्) ।
अनुकृति चवुति, अनुकृति चौति (तद्) सं.—
चतुर्थी (तद्), चौथतिथि ।
अनुकृति चवुरि (तद्) सं.—दे. अ००० ।
अनुकृति चवुरिगे (क) सं.—दे. अ०००० ।
अनुकृति चवुल (तद्) सं.—दे. अ०००० ।
अनुकृति चवुलु (क) वि.—सारा, तीता । —
अनुकृति मणु (क) सं.—सारी मिट्टी, उप,
लुनही मिट्टी ।
अनुकृति चव्य (सम्) सं.—दे. अ०००० ।
अनुकृति चवे (क) सं.—दे. अ०००० ।
अनुकृति चषक (सम्) सं.—मदिरा पीने का
बर्तन; प्याला ।
अनुकृति चषाल (सम्) सं.—यज्ञ-स्तंभ के
ऊपर लगाने का काठ का छेदा ।
अनुकृति चहड. अनुकृति चहडि, अनुकृति चाडि
(क) सं.—(मराठी सं ?) — शिकायत-
चुगली ।
अनुकृति चहा (अ. दे.) सं.—चाय ।
अनुकृति चळ (क) सं.—एक अनुकरणमूलक शब्द ;
चमक, कांति—अनुकृति चळ - चमकते हुए ।
अनुकृति चळरु (क) सं.—कौशल, प्रवीणता,
निपुणता, दक्षता, शीघ्रता, वेग; वात के
कारण शरीर का जकड़ना; छिटकाना ।
अनुकृति चळकु (क) सं.—दे. अ००००; चाबुक
की मार, पीड़ा, दर्द, थकावट ।
अनुकृति चळगति (तद्) सं.—चपलगति (तद्);
वेग, शीघ्रता; फुर्तीलापन ।
अनुकृति चळमाले (सम्) सं.—एक पौधा
विशेष (Hibiscus micranthus) ।
अनुकृति चळय, अनुकृति चळय (क) सं.—

पानी छिटकाने की क्रिया ।
अनुकृति चळि (क) सं.—तलवा दुखना, दाँतों की
सनसनाहट; जाड़ा, सर्दी, ठण्डापन, शैत्य
हिम, कोहरा । क्रि—शक्ति घट या कम
हो, प्रभाव कम हो, अपनी स्वाभाविक
स्थिति को खो; थक जा, श्रांत हो;
थरथरा, कँप ।
अनुकृति चळिकिगे अनुकृति चळिके (क) सं.—
पुष्प कंकण; सोने का कंगन ।
अनुकृति चळित (क) सं.—शीतलता, ठण्डी ।
अनुकृति चळिय (क) सं.—दे. अ०००० ;
पंकिलता; सड़ना ।
अनुकृति चळिसु (क) क्रि.—थरथरा, कँपा ;
साता ।
अनुकृति चळुकु (क) सं.—दे. अ०००० ।
अनुकृति चळुपु (क) सं.—दे. अ०००० ।
(१) अनुकृति चळे (क) क्रि.—छिड़का, फैला, चारों
ओर फेंक, उमड़ ।
(२) अनुकृति चळे (तद्) सं.—चलि: (तद्) ;
बच्चों या निर्बल व्यक्तियों, को उठाने की
चादर या कपड़ा ।
अनुकृति चळेय (क) सं.—दे. अ०००० ।
अनुकृति चळळ, अनुकृति चळळे, अनुकृति चळळ, अनुकृति
चळळु, अनुकृति चळळे, अनुकृति चळळे (तद्)
सं.—शेखु (तद्) ; एक तरह का बेर
जिसका गूदा गोंद-सा होना है; उद्दाल ।
अनुकृति चळळु (क) सं.—लंबा शलाका या
फावड़ा ।
अनुकृति चा (अ. दे.) सं.—चाय ।
अनुकृति चांगाल (क) वि.—प्रसन्न, मनोहर,
सुहावना ।
अनुकृति चांगु (क) अ.—शाबाश ! अच्छा !
अनुकृति चांगेरि (क ?) सं.—चुक या अम्लबेता
अनुकृति चांचलय (सम्) सं.—चंचलता,
चपलता, अस्थिरता ।
अनुकृति चांडाल (सम्) सं.—दे. अ००००० ।
अनुकृति चांडालिके (सम्) सं.—खुद्र या
टेप सितार, चंडाल का सितार ।
अनुकृति चांतराशि (क) सं.—एक प्रकार की
तरकारि ।

अनुकृति चांदणि, अनुकृति चांदनि, अनुकृति
चान्नि (अ. दे.) सं.—चाँदनी (हिं.) ।
अनुकृति चांदस (तद्) सं.—छाँदस: (तद्);
वेदज्ञ ब्राह्मण ।
अनुकृति चांद्र (सम्) सं.—चांद्रमास; शुक्ल
पक्ष; चंद्रकांत मणि; चांद्रायण व्रत ।
अनुकृति चांद्रक (सम्) सं.—सौंद ।
अनुकृति चांद्रमस (सम्) वि.—चंद्रमा से
संबंधित । सं.—मृगशिरस् नक्षत्र ।
अनुकृति चांद्रमसायन (सम्) सं.
बुधग्रह ।
अनुकृति चांद्रमान (सम्) सं.—चंद्र
की तिथियों से काल की गणना करना । —
सर्व वर्ष (सम्) सं.—चांद्रमान संवत् ।
अनुकृति चांद्रायण (सम्) सं.—एक
व्रत विशेष ।
अनुकृति चांपिल (सम्) सं.—चम्पा अथवा
चंबल नदी ।
अनुकृति चांपेय, अनुकृति चांपेयक
(सम्) सं.—केरार, नागकेसर वृक्ष; चंपा
वृक्ष; सोना, सुवर्ण; धतूरे का पौधा ।
अनुकृति चाक (सम्) वि.—सुन्दर, मनोहर ।—
अनुकृति चाकय (सम्) सं.—चमक-दमक;
चंचलता; शीघ्रता; होशियारी, कुशलता ।
अनुकृति चाकट्टु (क) सं.—सोने की गोलियों
का बाजूबंद ।
अनुकृति चाकणि (क) सं.—ढक्कन, तश्तरी ।
अनुकृति चाकर (अ. दे.) सं.—चाकर (फ़ारसी);
दास, नौकर । अनुकृति चाकरि (अ. दे.) सं.—
नौकरी. सेवा ।
अनुकृति चाकु (अ. दे.) सं.—चाकू (फ़ारसी) ।
अनुकृति चाक्रिक (सम्) सं.—कुम्हार ;
तेली ; गाड़ीवान ।
अनुकृति चाक्रिण (सम्) सं.—कुम्हार या तेली
का पुत्र ।
अनुकृति चाक्षुष (सम्) वि.—नेत्र संबंधी,
दृष्टिगोचर ।
(१) अनुकृति चाग (क) सं.—हरा रंग । अ.—
शीघ्र, जल्दी ।

(२) अर्थात् चाग (तद्) सं.— त्यागः (तत्) ।
 अर्थात् चागि = त्यागी ।
 अर्थात् चागु (क) अ.— दे. अर्थात् ।
 अर्थात् चाचि, अर्थात् ताचि (क) सं.— स्तन
 (छोटे बच्चों द्वारा प्रयुक्त शब्द) ।
 अर्थात् चाचु (क) क्रि.— भागे बढ़ा, बढ़ा,
 पसार, फैला, आगे फैला, सम्मुख रख ।
 अर्थात् चाट (सम्) सं.— टग, बटमार, बदमाश,
 वंचक ।
 अर्थात् चाटक (सम्) सं.— बाजीगरी, जादू ।
 अर्थात् चाटकैर (सम्) सं.— नर गौरैया ।
 अर्थात् चाटि, अर्थात् चावटि, अर्थात् चावुटि
 (क) सं.— चाबुक, पेनिया ;
 (१) अर्थात् चाटु (क) सं.— आश्रय, आड,
 पर्दा; कोई भी वस्तु, जो गरमी, हवा और
 वर्षा से बचानेवाली हो ।
 (२) अर्थात् चाटु (सम्) सं.— चापलूसी,
 खुशामद ।— तन (सम्) सं.— सुहा-
 वना होना, खुशामदी ।
 अर्थात् चाड (क) सं.— अपयश फैलानेवाला
 पुरुष, चुगलखोर ।
 अर्थात् चाडि (क) सं.— दे. अर्थात् ; अपयश
 फैलानेवाली स्त्री ।
 अर्थात् चाडिकार, अर्थात् चाडिग, अर्थात्
 चाडिगार (क) सं.— चुगलखोर, शिका-
 यत करनेवाला ।
 अर्थात् चाण, अर्थात् चान (क) सं.— छोटी
 छैनी, रूखानी ।
 अर्थात् चाणक्य, अर्थात् चाणिक्य (सम्) सं.—
 प्रसिद्ध अर्थशास्त्रज्ञ विष्णुगुप्त या
 कौटिल्य का नाम ।
 अर्थात् चाणूर (सम्) सं.— कंस का एक
 सेवक जो मलयुद्ध में श्रीकृष्ण से मारा गया ।
 अर्थात् चात (क) सं.— राक्षस ।
 अर्थात् चातक (सम्) सं.— अर्थात् चादगे
 (तद्)— चातक पक्षी, पपीहा ।
 अर्थात् चाताणि. अर्थात् चाताळि (क) सं.—
 शूद्रों की एक जाति जो विष्णु की पूजा
 करते हैं)
 अर्थात् चातुर (सम्) वि.— चतुर, योग्य,

सयाना; सुचारुभाषी; चापलूस; दृश्य;
 चार की संख्या संबंधी ।— तन (सम्)
 सं.— चतुरता आदि ।
 अर्थात् चातुरंग (सम्) सं.— दे. अर्थात् ।
 अर्थात् चातुरि अर्थात् चातुर्य (सम्)
 सं.— चतुराई, निपुणता, दक्षता, पटुता ।
 अर्थात् चातुरिय (तद्) सं.— चातुर्य (तत्) ।
 अर्थात् चातुरिक (सम्) सं.— चौथिया,
 ज्वर ।
 अर्थात् चातुर्दंत (सम्) सं.— हाथी,
 गज ।
 अर्थात् चातुर्बल (सम्) सं.— चतुर्बल,
 चतुरंगिनी सेना ।
 अर्थात् चातुर्मास्य (सम्) सं.— चार
 महीनों का व्रत जिसका आचरण संन्यासी
 करते हैं ।
 अर्थात् चातुर्मुक्ति, अर्थात् चातु-
 र्वर्ग (सम्) सं.— दे. अर्थात् ।
 अर्थात् चातुर्य (सम्) सं.— दे. अर्थात् ।
 अर्थात् चातुर्वर्ण्य (सम्) सं.— हिन्दुओं
 की चार वर्ण-व्यवस्था — ब्राह्मण, क्षत्रिय,
 वैश्य और शूद्र ।
 अर्थात् चादिगे (तद्) सं.— दे. अर्थात् ।
 अर्थात् चादर (अ. दे.) सं.— चादर (फारसी) ।
 अर्थात् चान (क) सं.— दे. अर्थात् ।
 अर्थात् चान्नि (अ. दे.) सं.— दे. अर्थात् ।
 (१) अर्थात् चाप, अर्थात् चापे. (क) सं.—
 चटाई ।
 (२) अर्थात् चाप (सम्) सं.— धनुष, कमान;
 वृत्तांश; इन्द्रधनुष; धनुःराशि ।
 (३) अर्थात् चाप (अ. दे.) सं.— छाप, (हिं.)
 मुद्रा, मुहर ।— अर्थात् खाने (अ. दे.) सं.—
 प्रेस, मुद्रणशाला ।
 अर्थात् चापट्य (सम्) सं.— जार;
 धोखेबाज़ ।
 अर्थात् चापल (सम्) सं.— चापल्य, चंचलता,
 शीघ्रता, वेग; बेचैनी, विकलता ।— तद् दे
 (सम्) सं.— धनुष की डोरी; चपलता,
 चंचलता ।
 अर्थात् चापल्य (सम्) सं.— दे. अर्थात् ।

अर्थात् चापवह्निरि (सम्) सं.— धनुष.
 अर्थात् चापार, अर्थात् जापार (सम्) सं.—
 वासविशेष ।
 अर्थात् चापिसु (अ. दे.) क्रि.— छाप, छाप
 लगा, मुद्रण कर ।
 (१) अर्थात् चापु (क) सं.— विस्तार, लंबाई,
 व्यापकता ।
 (२) अर्थात् चापु (अ. दे.) सं.— दे. अर्थात् ।
 (३).
 (१) अर्थात् चापे (क) सं.— बंदूक का घोड़ा ।
 (२) अर्थात् चापे (अ. दे.) सं.— दे. अर्थात् (१)
 — अर्थात् खाने (अ. दे.) सं.— अर्थात् ।
 अर्थात् चामर (सम्) सं.— चमर, चौरी ।
 — अर्थात् ग्राहिणि (सम्) चमर डुलाने-
 वाली स्त्री ।
 अर्थात् चामरिग (सम्) सं.— चमर डुलाने-
 वाला पुरुष । अर्थात् चामरिगिति (सम्)
 सं.— दे. अर्थात् ।
 अर्थात् चामीकर (सम्) सं.— सोना,
 स्वर्ण ।
 अर्थात् चामुंडि (सम्) सं.— दुर्गा, भैरवी ।
 — अर्थात् बेट्ट (क) सं.— मैसूर नगर में
 स्थित एक पर्वत ।
 अर्थात् चाय, अर्थात् चायि (तद्) सं.— चाय
 (तत्); रंग ।— अर्थात् बेरु (तद्) सं.—
 मजीठ, कालमेशी ।
 (१) अर्थात् चार (सम्) सं.— गमन, गति
 चाल, भ्रमण; जासूस, गुप्तचर; अनुष्ठान,
 अभ्यास; बेड़ी, जंजीर; बंदीखाना, कारा-
 गार कंबल, ऊन का कपड़ा; कृत्रिम उपाय;
 एक वृक्ष (Buchanania latifolia) ।
 अर्थात् चार (अ. दे.) सं.— चारा, चरागाह ।
 अर्थात् चारक (सम्) सं.— भेदिया, जासूस;
 गडरिया, गोपाल; नेता, नायक; सारथी,
 गाड़ीवान; घुड़सवार, साईस; बंदीगृह;
 हथकड़ी; भ्रमणकारी ब्रह्मचारी ।
 अर्थात् चारचक्षु (सम्) सं.— राजा जो
 गुप्तचर रूपी नेत्रों से देखता है ।
 अर्थात् चारण (सम्) सं.— भ्रमणकारी, यात्री;
 पर्यटन करनेवाला; घूमने फिरनेवाला नद

या गायक ; चारण, भाट, राजपुताने की एक जाति । — ०३०११ योगि (सम्) सं. — एक गंधर्व योगी ।

अक्षरों के चारभट (सम्) सं. — पराक्रमी योद्धा ।

अक्षरों के चारम (क) सं. — चेर राजा का नाम । अक्षरों के चारमानि (क) सं. — एक देश का नाम ।

अक्षरों के चारलिग (सम्) सं. — दे. अक्षरों के.

अक्षरों के चारि (गम्) वि. — जानेवाला, घूमनेवाला, भ्रमण करनेवाला, रहनेवाला ; करनेवाला । सं. — ढंग, विधान, पद्धति ; करने या क्रिया का विधान ; इच्छा, मन का ध्येय ; सस्तापन ; कुतंत्र ; उपाय ।

अक्षरों के चारिके (सम्) सं. — परिचारिका, दायी ।

अक्षरों के चारित्र (सम्) सं. — आचरण, चालचलन ; स्वभाव, निर्वाह ।

अक्षरों के चारिसु (क) क्रि. — पीस, चूर्ण कर ; रगड़, मथ, मिला ।

अक्षरों के चारु (सम्) वि. — सुंदर, मनोहर, अच्छा, प्रिय । सं. — केसर, जाफ़ान ।

अक्षरों के चारु (क) सं. — पंक्ति, रेखा, लकीर ।

अक्षरों के चारु अक्षरों के चारु सारु (क) सं. — सार, रस, मिर्च-मसाला मिलायी गई पतली दाल ।

अक्षरों के चारुनि (अ. दे.) सं. — चौकोर घर । — २१३ सीरे (अ. दे.) सं. — चौकोर रेखाओं की साड़ी ।

अक्षरों के चारिण्य (सम्) सं. — शरीर पर सुगंध द्रव्यों का लेपन, शरीर को सुवासित करना ; उन्नतन ।

अक्षरों के चार्ज (अ. दे.) सं. — (Charge) (अंग्रेज़ी) ; सुपुर्दगी, सौंपना, कार्यभार ; अभियोग ; दाम, खर्च ; आक्रमण, हमला । अक्षरों के चार्मण (सम्) वि. — चर्म या चाम से ढका हुआ ।

अक्षरों के चार्मांडि (सम्) सं. — मैसूर और मंगलूर के बीच का पहाड़ी भाग ।

अक्षरों के चर्वाक (सम्) सं. — नस्तिकवादी

एक दार्शनिक का नाम ।

अक्षरों के चाल, अक्षरों के चालु (सम्) सं. — गति-शीलता, चर, जंगम ; घर की छत, नील-कंठ पक्षी ।

अक्षरों के चालति. अक्षरों के चालित (अ. दे.) सं. — (मराठी—'चालता') वह जो चाले, हो ; गतिशीलता ।

अक्षरों के चालन (सम्) सं. — हिलना डुलना ; चलनी में रखकर छाना, शिथिल करना. इधर उधर हिलना ;

अक्षरों के चालनि (सम्) सं. — चालनी, चलनी । अक्षरों के चालाक (अ. दे.) (तद्) सं. — दे. अक्षरों के.

अक्षरों के चावडि (क ?) सं. — मंडप, चट्टी, पड़ाव; अस्थायी रूप से रहने का स्थान, सराया ; घर के सामने की बैठने की जगह ; ग्राम का सार्वजनिक मंडप ।

अक्षरों के चावणि (अ. दे.) सं. — छावनी (हिं.) ; शिविर, डेरा ; घर की छत या छवनई ।

अक्षरों के चावरि (क) सं. — नटखट पुरुष ।

अक्षरों के चावळ (तद्) सं. — चापल (तत्) ; दे. अक्षरों के.

अक्षरों के चावि (अ. दे.) सं. — चाभी (हिं.) ।

अक्षरों के चावुटि (क) सं. — दे. अक्षरों के.

अक्षरों के चावुंडि (तद्) सं. — चामुण्डी (तत्) ; दुर्गा ।

अक्षरों के चाह (अ. दे.) सं. — चाय ।

अक्षरों के चालक (अ. दे.) सं. — ('चालक से') दे. अक्षरों के.

अक्षरों के चालयिसु, अक्षरों के चालयूसु (तद्) सं. — इधर उधर हिला-डुला ।

अक्षरों के चालि, अक्षरों के चाले (क) सं. — आदत, चालचलन, गुण, स्वभाव, लत । अक्षरों के चालि मने मंदिरोल्ल— बड़ी बहन की आदत घर के सब लोगों की आदत (कह.) ।

(१) अक्षरों के चालिसु (क) क्रि. — हरा, पराजित कर; तमाशा कर; चपल हो; छान ।

(२) अक्षरों के चालिसु (सम्) क्रि. — अस्थिर हो; चपल हो ।

(३) अक्षरों के चालिसु, अक्षरों के चालीसु, अक्षरों के चालिम, अक्षरों के चालेश (अ. दे.) सं. — चालीस वर्ष; चालीस वर्ष की आयु में होने वाली (नेत्र की) दृष्टि की मंदता ; ऐनक ।

अक्षरों के चाले (क) सं. — दे. अक्षरों के.

अक्षरों के चालेय (क) सं. — गतिलंघन, कूदने या उड़ने की क्रिया, चाल चलकर हराने की क्रिया ।

अक्षरों के चाल (क) सं. — सैहिकेय का सिर, राहुग्रह ।

अक्षरों के चालि (सम्) सं. — गुंजा, घुघची का पौधा ; इमली का पेड़ ।

(१) अक्षरों के चाले (क) सं. — वापी, कूप; तालाब ।

(२) अक्षरों के चाले (सम्) सं. — इमली, इमली का पेड़ ।

अक्षरों के चितन, अक्षरों के चितने (सम्) सं. — सोचना, विचारना, चिंतन, सोच-विचार ।

अक्षरों के चिताक (क ?) सं. — एक प्रकार का सोने का हार ।

अक्षरों के चिताकुल (सम्) वि. — चिता से विकल, बेचैन, उरसुक ।

अक्षरों के चितामणि (सम्) सं. — सभी अमिलापाओं को पूर्ण करनेवाली एक मणि या रत्न ; एक कल्पित मणि ; भगवान् ।

अक्षरों के चितारत्न (सम्) सं. — दे. अक्षरों के.

अक्षरों के चितालु (क) सं. — सोना—चाँदी तोलने का छोटा तराजू ।

अक्षरों के चितिसु (सम्) क्रि. — चिता कर, परवाह कर ।

अक्षरों के चिते, अक्षरों के चिता (सम्) सं. — चिता, व्याकुलता, दुःख, फ़िक्र ।

अक्षरों के चित्य (सम्) कृ. — सोचने योग्य, विचारने योग्य, चिता के योग्य, हूँदने या पता लगाने योग्य ।

अक्षरों के चिदि (क ?) सं. — चिथड़ा, गूदड़ ।

अक्षरों के चिपि, अक्षरों के चिपे, अक्षरों के चिपि, अक्षरों के चिपु, अक्षरों के चिपे (तद् ?) सं. — शंबु (तत्) घोंघा ; शंख ।

ॐ०००० चिपिग (तद्) सं.—[‘चेलिक’?]
— दर्जी । ॐ०००० काँल्लु चिपिगान हुल्लु —
एक प्रकार की घाम ।

ॐ००००० चिपिरितले (क) सं. — बालोंवाला

सिर जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो ।

ॐ००००० चिपेजि (क) सं.—बंदर की एक

जाति ।

ॐ० चिः, ॐ० ची, ॐ० छिः (क) अ.—छिः !

लानत । धिक्कार ।

ॐ०० चिकट. ॐ०० चिकट, ॐ०० चिक्राड,

ॐ०० चिक्राडि, ॐ०० चिक्राडु, ॐ००

चिगट (क) सं.—पिस्सु, देहिका ।

ॐ०० चिकणि, ॐ०० चिकिणि (अ. दे.) वि.

—चिकना (हिं.); कड़ा, कठोर; गाढ़ा,

मोटा, बड़ा ।

ॐ०० चिकित्तक (सम्) सं. — चिकित्सा

करने वाला, डाक्टर, वैद्य ।

ॐ०० चिकित्से (सम्) सं.—इलाज, औषधो-

पचार ।

ॐ०० चिकीषे (सम्) सं.—कामना, अभि-

लाषा ।

ॐ०० चिकुर (सम्) वि.—चंचल, अस्थिर;

अविचारी, दुस्साहसी । सं.—सिर के बाल,

केश ।

(१) ॐ० चिक (क) वि.—छोटा, लघु, क्षुद्र,

कमीना । सं.— एक पुरुष का नाम ।

ॐ० चिकप्प (क) सं.—पिता का छोटा

भाई । ॐ० चिकतायि (क) सं.—

पिता के छोटे भाई की पत्नी । मौसी. खाला;

सौतेली माँ । ॐ० चिकानु बन्दु दौडु

मीनन्नु नुंगितते—छोटी मछली आकर बड़ी

मछली को निगलने लगी (कह.) । ॐ०

चिकववु—छोटा (लड़का), ॐ० चिकववु

—छोटी (वस्तुएँ) ।

(२) ॐ० चिक (सम्) सं.—छछूंदर ।

(१) ॐ० चिकण (सम्) वि.— चिकना;

चमकीला, कोमल, स्निग्ध, तिलहा ।

(२) ॐ० चिकण (क) सं.—छोटी चोली ।

ॐ० चिकतन (क) सं.—बचपन; लड़क-

पन. छुटपन; क्षुद्रता ।

ॐ० चिकम्म (क) सं.—दे. ॐ० चिकम्म

(ॐ० में) ।

ॐ० चिक्राड; ॐ० चिक्राडि, ॐ० चिक्राडु

(क) सं.—दे. ॐ०.

ॐ० चिक्रि (क) सं.—एक, स्त्री का नाम;

नक्षत्र. तारा, तिलक, बिंदी ।

ॐ० चिकके (सम्) सं.— छछूंदर; चपटी

नाकवाली स्त्री; सुपारी ।

ॐ० चिगट (क) सं.—दे. ॐ०.

ॐ० चिगरि (क) सं.—हिरन, कृष्णमृग ।

ॐ० चिगरु (क) सं.— पल्लव, किसलय,

कोपल । क्रि.—अंकुरित हो, पल्लवित हो,

पल्लव निकल ।

ॐ० चिगरे (क) सं.—दे. ॐ०.

ॐ० चिगलि, ॐ० चिगुलि (क) सं.—

तिल और गुड को कूटकर बनाई गई गोली

(मिठाई विशेष) ।

ॐ० चिगि (क) क्रि.—अंकुरित हो, अंकुर फूट,

पल्लवित हो; अंगुली या अंगुलियों को

ढीला कर, अंगुली से विसर्जित कर या फेंक;

कूद, उछल ।

ॐ० चिगिर् (क) सं.—शीघ्रता. जल्दी ।

ॐ० चिगिल् (क) क्रि.— चिपचिपा या

लसलसा हो ।

ॐ० चिगिसु (क) क्रि.— कुदा, उछाल,

चकर काटने दे ।

ॐ० चिगुर्, ॐ० चिगुरु (क) क्रि.

और सं.— दे. ॐ०.

ॐ० चिगुलि (क) सं.— दे. ॐ०.

ॐ० चिचक्षु (सम्) सं.— ज्ञान नेत्र,

अंतःचक्षु ।

ॐ० चिचो ॐ० चिचोल्ला (क)

सं.— लोरी ।

ॐ० चिटकि, ॐ० चिटकु (क) सं.—

चुटकी ।

ॐ० चिटगुट्टु (क) क्रि.— ‘चिट चिट’

शब्द कर (जैसे सरसों को गरम तेल में

डालने से निकलनेवाला शब्द) ; क्रोध

दिखा ।

ॐ० चिटगुट्टि (क) सं.— छोटी गौरैया

चिड़िया ।

ॐ० चिटि (क) वि.— छोटा; लघु, क्षुद्र

अल्प । सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ।

ॐ० चिटिके (क) सं.— चुटकी; ताल का

उपकरण वि.— कुछ, थोड़ा; उतना

परिमाण जितना अंगूठे और तर्जनी में

समाता है ।

ॐ० चिटिगरु (क) सं.— छोटा दूकानदार ।

ॐ० चिटिगे (क) सं.— दे. ॐ०.

ॐ० चिटिपाल (क) सं.— एक वृक्ष

विशेष (Zizyphus tree) ।

ॐ० चिटियु (क) क्रि.— गरमी के कारण

फट. चिटक ।

ॐ० चिटिल्, ॐ० चिटिलु (क) सं.—

‘चिटचिट’ शब्द, आग की ज्वाला से

निकलने वाला शब्द ।

ॐ० चिटिठिसु (क) क्रि.— छिटक,

छिड़क ।

ॐ० चिटुकु (क) सं.— बिंब, गोलाकार

वस्तु, मंडल; चुटकी ।

ॐ० चिटुके (क) सं.— दे. ॐ०.

ॐ० चिटुकिसु, ॐ० चिटुकु (क)

क्रि.— चुटकी बजा ।

ॐ० चिट्टेने (क) अ.—ज़ोर से चिहाते

हुए ।

ॐ० चिट्टुल्लु (क) सं.— घास विशेष,

मालातृण ।

ॐ० चिट्टामुट्टि (क) सं.—बारहमासी

पौधा ।

ॐ० चिट्टि (क) सं.—अनाज का एक परिमाण,

चार सेर ।

ॐ० चिट्टु (क) वि.—छोटा. लघु । सं.—

जुगुप्सा, उबाई ।

ॐ० चिट्टे (क) सं.—तितली एक कीड़ा;

= ॐ० चिट्टि—अनाज का परिमाण विशेष ।

ॐ० चिट्टा (अ. दे.) सं.—चिट्टा (हिं.) ।

छिन्न चित्रपटकायि (क) सं.— लड़कों की एक फ्रीडा ।
 छिन्न चित्रपुटि (क) सं.— किसी भी दाल की पुटिया या चूर्ण ।
 छिन्न चिदिल (क) सं.— एक जंगली पेड़ ।
 छिन्न चिदिलसु (क) क्रि.— हुटकी बजा, तोड़, फोड़, जोर की आवाज़ कर ।
 छिन्न चिदायिसु (अ. दे.) क्रि.— चिढ़ा (हिं.), (किसी को) नाराज़ कर ।
 छिन्न चिणि, छिन्न चिणिण, छिन्न चिणिणे (क) सं.— गुल्ली, लकड़ी का छोटा टुकड़ा । वि.— छोटा ।— छिन्न कौलु (क) सं.— गुल्ली डंडा ।— छिन्न कोलाट (क) सं.— गुल्ली डंडे का खेल ।
 छिन्न चिणिणि (क) सं.— एक विपैला साँप ।
 छिन्न चिणिण (क) सं.— छोटा लड़का, बालक ।
 छिन्न चिणिण, छिन्न चिणिणे (क) सं.— दे. छिन्ने ।
 छिन्न चित् (सम्) सं.— चेतना, ज्ञान, विवेक ममज्ञ, बुद्धि ; मन, हृदय, आत्मा ; ब्रह्म ।
 छिन्न चित (सम्) वि.— एकत्र किया हुआ, संग्रहीत. ढेर लगाया हुआ ; प्राप्त ; अच्छी तरह देखा हुआ, परीक्षित ।
 छिन्न चितकुं (क) सं.— फिसलन ।
 छिन्न चिता, छिन्न चित् (सम्) सं.— चिता, राव जलाने के लिए तर ऊपर रखी गई लकड़ी का ढेर ।— छिन्न भस्मधारि (सम्) सं.— शिवजी ।
 छिन्न चितावणि (अ. दे.) सं.— चेतावनी (हिं.) ; चिढ़ाना ।
 छिन्न चिति (सम्) सं.— एकत्रीकरण ; ढेर राशि. समूह. परिमाण ; तह, पत ; चिता; बुद्धि ।
 छिन्न चित् (सम्) सं.— दे. छिन्न ।
 छिन्न चित्कले (सम्) सं.— चैतन्य अंश. दैविक ज्ञान ।
 छिन्न चित्कृत, छिन्न चित्कृति (सम्) सं.— परिश्रमों की खड़खड़ाहट ।
 छिन्न चित्त (सम्) वि.— देखा हुआ. पहचाना हुआ. विचार किया हुआ, मनन किया हुआ ।

सं.— विचार, मनन ; मनोयोग ; इच्छा उद्देश्य ; मन ; हृदय ; प्रतिभा, विचारशक्ति युक्ति, हेतु ।— छ ज (सम्) सं.— कामदेव ।— छत्तू जन्म, छत्तू भव (सम्) सं.— कामदेव ।— छत्तू जारि, छत्तू भवरिपु, छत्तू भवहर (सम्) सं.— शिवजी ।— छत्तू भेद (सम्) सं.— मत-अनैक्य ; असंगति । छत्तू असे, छत्तू विभ्रमे (सम्) सं.— विक्षिप्तता, पागलपन, सिद्धीपन ।— छत्तू मोह (सम्) सं.— चित्त विभ्रम ।— छत्तू विकार (सम्) सं.— विचार या भावना में परिवर्तन ।
 छिन्न चित्तयिसु, छिन्न चित्तयसु, छिन्न चित्तविसु (सम्) क्रि.— ध्यान दे, चित्त लगा. लक्ष्य कर, विचार कर, मन लगा ।
 छिन्न चित्तर (तद्) सं.— चित्रं (तत्) ; तसवीर ।
 छिन्न चित्तरटे (सम्) सं.— एक पौधे का नाम ।
 छिन्न चित्तवंत (सम्) सं.— गुह्यचर, जासूस ।
 छिन्न चित्तविसु (सम्) क्रि.— दे. छिन्न ।
 छिन्न चित्तवृत्ति (सम्) सं.— प्रवृत्ति, स्वभाव. झुकाव ।
 छिन्न चित्तशुद्धि (सम्) सं.— हृदय की सफाई ।
 छिन्न चित्तसमुच्चति (सम्) सं.— अहंकार घमंड ।
 छिन्न चित्तागार, छिन्न चित्तार (सम्) सं.— चित्रकारः (तत्) ।
 छिन्न चित्ताभोग (सम्) सं.— विषय-सुख की ओर मन की आशक्ति ।
 छिन्न चित्तार, छिन्न चित्तारिग (तद्) सं.— चित्रकार. चित्तेरा ।
 छिन्न चित्ति (सम्) सं.— चिंतन, प्रज्ञा, चित्ति ।
 छिन्न चित्तिनि (सम्) सं.— चित्तिनी, बुद्धि-मती स्त्री ।
 छिन्न चित्तु (क) सं.— एक पौधा विशेष ;

स्याही का धव्वा, छोट ; लिखित चीज़ में सुधार ; पुरजा (draft) । (तद्) सं.— चित् (तत्) ।
 छिन्न चित्ते (तद्) सं.— चित्रा (तत्) ; चौद-हवों नक्षत्र ।
 छिन्न चित्तेद्रेक (सम्) सं.— गर्व ।
 छिन्न चित्र (सम्) सं.— तसवीर ; चित्र ; हाँचा. चाका ; चमकीला आभूषण. गहना ; विलक्षण दर्शन, आश्चर्य ; स्वर्ग, आकाश ; सांप्रदायिक तिलक ; धव्वा ; कोढ़ रोग ; लोह या कोई धातु ; वायु, रामीर ; कविता की पद्धति ; दो वृत्तों के नाम । वि.— चमकीला, स्पष्ट. माफ़ ; रंगविरंगा ; प्रिय, रुचिकर ; भिन्न भिन्न ; आश्चर्यकर, अद्भुत ।
 छिन्न चित्रक (सम्) सं.— चित्तेरा, चित्रकार ; चीता ; सांप्रदायिक तिलक, पुंडू ; चित्र-मूल नामक पौधा (Ceylon leadwort); अशोक ; पुंडू का पौधा ; एक वृत्त का नाम ।
 छिन्न चित्रकंठ (सम्) सं.— कवूतर ।
 छिन्न चित्रकंबल, छिन्न चित्रकंबल (सम्) सं.— रंगीन चादर या कंबल ।
 छिन्न चित्रकर, छिन्न चित्रकार (सम्) सं.— चित्तेरा, चित्रकार ।
 छिन्न चित्रकाय (सम्) सं.— बाध, व्याध ; चीता ।
 छिन्न चित्रकुटि (सम्) सं.— शिविर, ढेरा ।
 छिन्न चित्रकूट (सम्) सं.— एक पर्वत का काम ।
 छिन्न चित्रकृत (सम्) सं.— चित्तेरा, चित्रकार ; एक वृक्ष विशेष (Delbergia oujeinensis) ।
 छिन्न चित्रगार [गार] (तत्) सं.— चित्रकारः (तत्) ।
 छिन्न चित्रगुह (सम्) सं.— जीवधारियों के पाप-पुण्य का लेख लिखनेवाले यमराज के पेशकार ।
 छिन्न चित्रपट (सम्) सं.— चित्रपट, चित्र ; सिनेमा ।

ಚಿತ್ರಪದ ಚಿತ್ರಪದ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವೃತ್ತ ವಿಶೇಷ |
 ಚಿತ್ರಪುಂಜಿ ಚಿತ್ರಪುಂಜಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ತೀರ, ಬಾಣ |
 ಚಿತ್ರಭಾನ್ವಿ ಚಿತ್ರಭಾನ್ವಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸೂರ್ಯ ;
 ಭಾಗ ; ಮದಾರ ಕಾ ಪೌಧಾ ; ಒಕ ಸಂವತ್ಸರ ಕಾ
 ನಾಮ (೧೬ ವೌ) |
 ಚಿತ್ರಮೂಲ ಚಿತ್ರಮೂಲ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಒಕ ಪೌಧಾ,
 ಚಿತ್ರಕ |
 ಚಿತ್ರರಥ ಚಿತ್ರರಥ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸೂರ್ಯ ; ಗಂಧರ್ವೊ
 ಕೆ ಒಕ ನಾಯಕ ಕಾ ನಾಮ |
 ಚಿತ್ರರೂಪ ಚಿತ್ರರೂಪ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಿತ್ರಕಾರ |
 ಚಿತ್ರಲತೆ ಚಿತ್ರಲತೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವೃತ್ತ ವಿಶೇಷ |
 ಚಿತ್ರಲೇಖಿ ಚಿತ್ರಲೇಖಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ತಮವೀರ,
 ಚಿತ್ರ ; ಬಾಣಾಸುರ ಕೀ ಕನ್ಯಾ ಉಫಾ ಕೀ ಸಖೀ
 ಕಾ ನಾಮ ; ಒಕ ಅಪ್ಸರಾ ಕಾ ನಾಮ (ಮೈ. ಪ್ರ.) |
 ಚಿತ್ರವಧಿ ಚಿತ್ರವಧಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಶರೀರ ಕೊ ಬೊಟಿ
 ಬೊಟಿ ಕರ ಮಾರನಾ, ಭಯಕರ ಮೃತ್ಯು-ದण्ड |
 ಚಿತ್ರವಿದ್ಯೆ ಚಿತ್ರವಿದ್ಯೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಿತ್ರಕಲಾ |
 ಚಿತ್ರಶಾಲೆ ಚಿತ್ರಶಾಲೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಿತ್ರೊ ಕಾ
 ಪ್ರದರ್ಶನ ಮಂದಿರ ; ಸ್ಟುಡಿಯೊ (Studio) |
 ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಿ ಚಿತ್ರಶಿಖಂಡಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಸ
 ತ್ರಪಿಯೊ ಕೀ ಉಪಾಧಿ | — ಜ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 —ಬೃಹಸ್ಪತಿ | — ಚ್ಯವಂಶ ಪ್ರಸೂತ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 —ಬೃಹಸ್ಪತಿ |
 ಚಿತ್ರಸೇನ ಚಿತ್ರಸೇನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಒಕ ಗಂಧರ್ವ ನೆತಾ |
 ಚಿತ್ರಕಾರ ಚಿತ್ರಕಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಿತ್ರೇತಾ |
 ಚಿತ್ರಹಿಂಸೆ ಚಿತ್ರಹಿಂಸೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಡೆ ಪ್ರಕಾರ
 ಸೆ ಸತಾನಾ ಯಾ ಹಿಂಸಾ ಕರನಾ |
 ಚಿತ್ರಾಂಗ ಚಿತ್ರಾಂಗ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಹಿರನ ; ಚಿತ್ತಾ ;
 ಅರ್ಜುನ ; ಸಿಂಧೂರ ; ಒಕ ಘೊಡೆ ಕಾ ನಾಮ |
 ಚಿತ್ರಾಗದೆ ಚಿತ್ರಾಗದೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ವಿಚಿತ್ರ
 ಚೂಡಿಯೊ ಧಾರಣ ಕೀ ಹುಡೆ ಖೀ ; ಅರ್ಜುನ ಕೀ ಪತ್ನಿ
 ಒರ ಬಭವಾಹನ ಕೀ ಮಾತಾ |
 ಚಿತ್ರಾನ್ವಿ ಚಿತ್ರಾನ್ವಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಿತ್ರಾನ್ವಿ, ಒಕ
 ವಿಶೇಷ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ ಭಾತ |
 ಚಿತ್ರಾವಹ ಚಿತ್ರಾವಹ (ಸಮ್) ವಿ.— ಆಶ್ಚರ್ಯ
 ಉತ್ಪನ್ನ ಕರನೇವಾಲಾ |
 ಚಿತ್ರಚಿತ್ರ ಚಿತ್ರಚಿತ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ಚಿತ್ರಕಾರ |
 ಚಿತ್ರಣಿ ಚಿತ್ರಣಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಿತ್ರಣಿ, ಬನಾವ-
 ಸಿಂಗಾರ ಮೆಂ ಶೌಕೀನ ನಾರಿ |

ಚಿತ್ರಿಸು ಚಿತ್ರಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ಚಿತ್ರಿಸು ಕರ,
 ತಸವೀರ ಖೊಂಚ, ರಂಗ ಭರ, ಅಂಕಿತ ಕರ |
 ಚಿತ್ರೇ ಚಿತ್ರೇ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಿತ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರ ; ಖೀರಾ ;
 ಕಕಡೆ ; ಒಕ ಅಪ್ಸರಾ ಕಾ ನಾಮ ; ಸುಭದ್ರಾ
 ಕಾ ನಾಮ |
 ಚಿದಂಬರ ಚಿದಂಬರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ನಿರ್ಮಿತ ಜ್ಞಾನ
 ಸ್ವರೂಪ ಭಗವಾನ ; ಒಕ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ ಕಾ ನಾಮ
 ಜೊ ತಮಿಲನಾಡು ಮೆಂ ಹೆ |
 ಚಿದಕು ಚಿದಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಪಾನಿ ಮೆಂ ಅನಾಜ ಕೊ
 ಮಿಗೊಕರ ಉಸಕೆ ಡಿಲಕೆ ನಿಕಾಲ, ಅನಾಜ ಕೆ
 ಡಿಲಕೆ (ಒಂಗಲಿಯೊ ಸೆ ದವಾಕರ) ನಿಕಾಲ | ಸಂ.—
 —ಡಿಲಕೆ ಸೆ ಮುಕ್ತ ಹೊನೆ ಕೀ ಸ್ಥಿತಿ |
 ಚಿದಕ್ಷಿ ಚಿದಕ್ಷಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದೆ. ಚಿಕ್ಷಿ. |
 ಚಿದಾನಂದ ಚಿದಾನಂದ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮನ ಕಾ
 ಖಾನಂದ | — ಮೂರ್ತಿ ಮೂರ್ತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ಶಿವ | — ರೂಪ ರೂಪ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಶಿವ |
 ಚಿದುಕು ಚಿದುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ. ಒರ ಸಂ.— ದೆ.
 ಚಿದಕು. |
 ಚಿದ್ಗಗನರೂಪ ಚಿದ್ಗಗನರೂಪ (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ಶಿವ |
 ಚಿದ್ರೂಪ ಚಿದ್ರೂಪ (ಸಮ್) ವಿ.— ಬುದ್ಧಿಮಾನ,
 ವಿಚಾರವಾನ ; ಅಚ್ಚೆ ಹೃದಯ ಕಾ | ಸಂ.—
 ಚಿನ್ಮಯ, ಜ್ಞಾನ, ಪರಮಹಂಸ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ |
 ಚಿನ್ ಚಿನ್ (ಕ) ವಿ.— ಛೊಟಾ ; ಪತಲಾ, ಮಹೀನ |
 — ಕಡಿ ಕಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಛೊಟೆ-ಛೊಟೆ
 ಡುಕಡೆ ಕರ |
 ಚಿನ್ಯಾ ಚಿನ್ಯಾ (ಅ. ದೆ.) ಸಂ.— ಚೀನ ಸೆ
 ಆಯಾ ಹುಞಾ ಪದಾರ್ಥ |
 ಚಿನ್ಯಾಲಿ ಚಿನ್ಯಾಲಿ (ಅ. ದೆ.) ಸಂ.— ಡಿನ್ಯಾಲಿ (ಹಿ.),
 ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ ಸ್ತ್ರೀ |
 ಚಿನ್ಯಿ ಚಿನ್ಯಿ (ಕ) ಸಂ.— ಒಕ ರಂಗ |
 ಚಿನ್ಯವಾರಿ ಚಿನ್ಯವಾರಿ, ಚಿನ್ಯವಾರಿ ಚಿನ್ಯವಾರಿ ; ಚಿನ್ಯ
 ವಾಲಿ ಚಿನ್ಯವಾಲಿ, ಚಿನ್ಯವಾರಿ ಚಿನ್ಯವಾರಿ (ಕ) ಸಂ.—
 ಸರಾಫ, ಸೋನೆ-ಚೌದಿ ಕಾ ವಿಕೇತಾ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು ಕುರಡಿ
 —ಕುಕ್ಷಿಕಾ ನಾಮಕ ಪಕ್ಷಿ |
 ಚಿನ್ಯುಕುರಡಿ ಚಿನ್ಯುಕುರಡಿ (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಚಿನ್ಯು ;
 [ಚಿನ್ಯು + ಕುರಡಿ (= ಕುರಡಿ)] — ಕುಲಖಿ
 ಕೆ ಅನು ದಾನೆ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಸೋನಾ, ಸುವರ್ಣ, ಹೆಮ |

ಚಿನ್ಯು ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿ ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿ,
 ಬಹುಬೇ ? ಚಿನ್ಯು ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿಯೊ
 ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿಯೊ ?—ಸೋನೆ ಕೊ ತಲವಾರ ಹೆ. ಒಸಾ
 ಸಮಜಕರ ಕಯಾ ಸಿರ ಕಡವಾಯಾ ಜಾ ಸಕತಾ ಹೆ ?
 ಚಿನ್ಯು ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿಯೊ
 ಕುರಡಿಯೊ ಕುರಡಿಯೊ ಚಿನ್ಯು ಹರಿವಾಣವಾದರು ಮಣ್ಣಿನ ಗೋಡೆಗೆ
 ಗೋಡೆಗೆ ಆರಗವೆಕು—ಸೋನೆ ಕೊ ಥಾಲಿ ಕೊ ಖೊ
 ಮಿಡ್ಡಿ ಕೊ ದಿವಾರ ಕಾ ಸಹಾರಾ ಲೆನಾ ಪಡತಾ ಹೆ
 (ಕಹ.) | ವಿ — ಛೊಟಾ, ಲಘು |— ೧೦ ಗಿರಿ
 (ಸಮ್) ಮೆರು ಪರ್ವತ | — ಸರಾಫ ವರದ (ಕ)
 ಸಂ.— ಸರಾಫ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಚಿನ್ಯು. |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಅರಹರ ಕೊ ದಾಲ ಕೆ ಬಾರೀಕ
 ಡುಕಡೆ ಜೊ ಪಶುಂ ಕೊ ಖಿಲಾಯೆ ಜಾತೆ ಹೆ ; ಒಕ
 ಪೌಧಾ ವಿಶೇಷ (Acalypha betulina) |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಬುದ್ಧಿಮತ್ತಾ,
 ಮೆಧಾ ಶಕ್ತಿ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಚಿನ್ಯು. |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ತದ್) ಸಂ.— ಚಿಹ್ನೆ (ತದ್) ; ನಿಶಾನ,
 ದಾಗ, ಮೊಹರ, ಲಕ್ಷಣ, ಸಂಕೇತ, ಇಶಾರಾ, ಲಕ್ಷ್ಯ,
 ದಿಶಾ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಜ್ಞಾನಸ್ವರೂಪ,
 ಪರಮಾತ್ಮಾ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಸಮ್) ಸಂ.— ದೆ. ಚಿನ್ಯು. |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು—
 ಡಿಪಕಲಿ ಕೊ ಆವಾಜ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು
 — ಮಾಲಾತೃಣ, ಒಕ ಪ್ರಕಾರ ಕೊ ಘಾಸ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ತದ್) ಸಂ.— ಶಿಲ್ಪ (ತದ್) | ಚಿನ್ಯು
 ಚಿನ್ಯು (ತದ್) ಸಂ.— ಶಿಲ್ಪಕ (ತದ್) ;
 ಕಾರಿಗರ ; ಯಂತ್ರಸಂಚಾಲಕ ; ದರ್ಜಿ | ಚಿನ್ಯು
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ತದ್) ಸಂ.— ಶಿಲ್ಪ-
 ವಿಧಾ | ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ತದ್) ಸಂ.—
 ಕಾರಿಗರ ಕೊ ಖೀ ; ದರ್ಜಿ ಕೊ ಖೀ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಕಡಾ ಡಿಲಕಾ ; ಡಿಲಕಾ,
 ನಾರಿಯಲ ಕಾ ಕಡಾ ಡಿಲಕಾ (Shell) ;
 ಖೊಪಡಿ ಸೀಪ, ಶುಕ್ತಿ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಡಿಲಕಾ, ಕಡಾ ಡಿಲಕಾ,
 ಸೀದ, ಶುಕ್ತಿ ; ಖೊಪಡಿ |
 ಚಿನ್ಯು ಚಿನ್ಯು (ಕ) ಸಂ.— ಡಿಲಕಾ |

अंशुल चिल्लर

अंशुल चिल्लर (क) सं — एक प्रकार का वृक्ष ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (सम्) सं - उड़ी ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं. बाँस की टोकरी ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (तद्) सं. — सिधम (तद्); एक चर्म रोग. ददोरा, चकत्ता, चट्टा ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.—दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.—(पानी) छिटक, छिड़क ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (अ. दे.) सं. — चिमटा, चिमटी (हिं.) ।

अंशुल चिल्लर (अ. दे.) सं. — (Chimney) अंग्रेजी ; चिमनी, धुआँकना ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.—चिमचिम शब्द ; लुठन क्रिया, लोटपोट होना ।

अंशुल चिल्लर (क) क्रि.—दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर [अंशुल चिल्लर] (क) क्रि.— छिटक, छिड़क ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) क्रि.—दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर (अ. दे.) सं— दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर (अ. दे.) सं.—कतगनी से बाल खींचना ।

(१) अंशुल चिल्लर (क) क्रि.—पलक मार, आँखें मटक ।

(२) अंशुल चिल्लर (अ. दे.) क्रि.— दबा, चिमटा से दबा ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.— शींगुर ।

अंशुल चिल्लर (क) क्रि.— हाथ की अंगुलियों से उछाल या उछलवा ; हिला, हिलवा (प्रे.) ।

अंशुल चिल्लर (क) क्रि.— हाथ की अंगुलियों से मुक्त होकर ऊपर की ओर उछल ; कूद,

दौड़, छिटक, छिड़क ; फट, फट जा ; उड़ जा ; शस्त्र संचालन कर, हिला ; पीस ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— हाथ पीछे की ओर बांधने (जकड़ने) की क्रिया ।

अंशुल चिल्लर (सम्) वि.— दीर्घ, दीर्घकालव्यापी ; पुराना, बहुत दिनों का । सं.— दीर्घकाल ।

— अंशुल क्रिया (सम्) सं.— धीरे-धीरे कार्य करनेवाला, विलंब करनेवाला । — अंशुल जीवते (सम्) सं.— दीर्घ-जीवन ।

अंशुल चिल्लर (सम्) सं.— दीर्घ जीवी ; पुत्र भेटा ।

अंशुल चिल्लर (सम्) सं.—दे. अंशुल ; कौआ ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (सम्) सं.— विवाहिता या अविवाहिता जवान स्त्री जो दीर्घकाल तक अपने पिता के घर में रहती है ।

अंशुल चिल्लर (सम्) वि.— प्राचीन, पुरातन, बहुत प्राचीन ।

अंशुल चिल्लर (सम्) सं.— वृक्ष विशेष (The tree Pongamia glabra) ।

अंशुल चिल्लर अंशुल चिल्लर (सम्) सं.— वह गाय जिसके कर्ण बछड़े उत्पन्न हुए हों ।

अंशुल चिल्लर (अ. दे.) सं.— चिराग (फारसी) ; दिया, दीपक ।

अंशुल चिल्लर (सम्) अ.— बहुत समय तक ।

अंशुल चिल्लर (सम्) सं.— दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर (सम्) सं.— तोता ।

अंशुल चिल्लर (क) क्रि.— हँस, ठट्ठा कर ; मुस्करा ।

अंशुल चिल्लर अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.— चीता, तेंदुआ ।

अंशुल चिल्लर चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.— एक प्रकार का भूनीम या किरात (A kind of a Blue-flowered plant) ।

अंशुल चिल्लर (क) वि.—छोटा ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.— दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर, (सम्) सं.—चिर्मटी, ककड़ी विशेष ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.—दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.— दर-वाजे की कुंडी, अर्गल ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.—एक मूत्ररोग ।

अंशुल चिल्लर (सम्?) सं.—कवच ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— पानी का सोता, फौवारा ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.—एक निश्चित धन-राशि के ऊपर का अयुग्म (odd) धन ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े ; हिलमोचिका, वास्तुक, एक पौधा-विशेष ।

अंशुल चिल्लर (क?) सं.—एक प्रकार की छोटी मछली ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— पक्षियों की चहहाइट ।

अंशुल चिल्लर (अ. दे.) सं.— चिलम (फारसी) ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— एक पक्षी का नाम ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— दे. अंशुल ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— दही मथते समय निकलनेवाली ध्वनि ।

अंशुल चिल्लर (तद्) सं.—द्वेष, ईर्ष्या ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.— छुट पैसे, छुटे, फुटकर पैसे ; क्षुद्रता ; क्षुद्र पुरुष (लाक्ष.) ।

(१) अंशुल चिल्लर (क) सं.— एक वृक्ष विशेष (The clearing nut tree) ।

(२) अंशुल चिल्लर (सम्) सं.— चील, एक प्रकार का बाज़ ।

अंशुल चिल्लर (क) सं.— फट, संकट, पीड़ा ।

अंशुल चिल्लर, अंशुल चिल्लर (क) सं.— दे. अंशुल ।

३३००१०६ चुंगाणि

३३००१०६ चुंगाणि (क) सं. — कटार, छुरी, छोटी तलवार ।

३३००१०७ चुंगाणिलि (क) अ. — अस्तव्यस्त, अव्यवस्थित, तितर-वितर ।

३३००१०८ चुंगल (क) वि. — छोटा टुकड़ा ; तकुआ धरने का साधन या चमड़े का कान ; एक वृक्ष विशेष ।

३३००१०९ चुंगले (क) सं. — अयोग्य, नालायक, नटखट या दुष्टा स्त्री ।

३३००११० चुंगलु (क) क्रि. — चीन, नख से तोड़, कचोटनी काट ; आँख मार ।

३३००१११ चुंगरु (क) क्रि. — खरोच, नख से नोच ।

३३००११२ चुंगिडु (क) क्रि. — दे. ३३००११३ ।

३३००११४ चुंगुक (सम्) सं. — टुडडी ।

३३००११५ चुंगुकिसु, ३३००११६ चुंगुकु (क) क्रि. — दे. ३३००११७ ।

३३००११८ चुंगुडु (क) क्रि. — दे. ३३००११९ ।

३३००१२० चुंगुडु, ३३००१२१ चुंगुडु (क) क्रि. — खरोच, नोच, नखच्छेदन कर ।

३३००१२२ चुंगुरु (क) क्रि. — दे. ३३००१२३ ।

३३००१२४ चुंगु, ३३००१२५ चुंगु (क) क्रि. — पतले रूप में काट, छील, छिलका निकाल, छोट-परिष्कार कर या चमका ।

३३००१२६ चुंगु (सम्) दे. ३३००१२७ ।

३३००१२८ चुंगुलि (क) सं. — एक मछली विशेष ; एक अनुकरणात्मक शब्द ।

३३००१२९ चुंगुले (क) वि. = ३३००१३०, चुंगुलेपिळ्ळे — छोटे-छोटे । सं. — छोटे बाल-बच्चे)

३३००१३१ ची (क) अ. — छिः ! छिः, तिरस्कार सूचक अव्यय ।

३३००१३२ चीकरि, ३३००१३३ चीकलु, ३३००१३४ चीकु (क) वि. — छोटा ।

३३००१३५ चीकु (?) सं. — बीमारी, रोग (तमिल ?) ।

३३००१३६ चीकुवायि (क) सं. — क्षिगुर, कनखजूरा, चपड़ा ; बड़ा भ्रमर ।

३३००१३७ चीटि (अ. दे.) सं. — कागज़ का टुकड़ा, चिट्ठी ; छोट का कपड़ा ; टिकट, स्टांप ।

३३००१३८ चीटु (अ. दे.) सं. — दे. ३३००१३९ ।

३३००१४० चीडे (क) सं. — (३३००१४१ चीडे-तमिल) चावल के आटे से (गोली के आकार में) घी या तेल में तलकर बनाया जानेवाला एक नमकीन खाद्य पदार्थ ; नष्ट भाग । — ३३००१४२ टुलु (क) सं. — नीलंगु कीड़ा ।

३३००१४३ चीण (अ. दे.) सं. — चीन देश, चीनी लोग । — ३३००१४४ अंबर (अ. दे.) सं. — चीन का कपड़ा ।

३३००१४५ चीत्कार (सम्) सं. — चीत्कार, चिल्लाहट ; हाथी की चिंवाड या गधे की रेंक ।

३३००१४६ चीन, ३३००१४७ चीना (अ. दे.) सं. — दे. ३३००१४८ ।

३३००१४९ चीनि (अ. दे.) सं. — चीनी लोग ; शक्कर विशेष ; कपूर ।

३३००१४९ चीपरि (क) सं. — झाड़ू, बुहारी ।

(१) ३३००१५० चीपु (क) क्रि. — चूस, फल आदि का रस चूस ।

(२) ३३००१५१ चीपु (अ. दे.) सं. — चीप (हिं.) टुकड़ा, लकड़ी या पत्थर का टुकड़ा ।

(१) ३३००१५२ चीर, ३३००१५३ चील (क) सं. — थैला, बोरा ।

(२) ३३००१५४ चीर (सम्) सं. — वस्त्र ; छाल ; चिथड़ा, धज्जी ; चोलड़ी मोती की माला, लकीर, पंक्ति ; नकाशी, खुदाई ; सीसा ।

३३००१५५ चीरण, ३३००१५६ चीर्ण, ३३००१५७ जीर्ण (क) सं. — छोटी रहानी या छेनी ।

३३००१५८ चीरि, ३३००१५९ चीरिके (सम्) सं. — गेंद बल्ले का खेल ।

३३००१६० चीरिलि (क) सं. — एक प्रकार की बड़ी मछली ।

३३००१६१ चीरु (क) सं. — टुकड़ा, छोटा भाग, खंड । क्रि. — छितर, टुकड़े-टुकड़े कर, खण्ड कर ; खरोच ।

३३००१६२ चीरु (क) क्रि. — चिल्ला, चीख उठ, जोर की आवाज़ कर । — ३३००१६३ इसु, (क) क्रि. — प्रेरणार्थक रूप ।

३३००१६४ चीरु (क) क्रि. — दे. ३३००१६५ वि. —

छितरा हुआ, खरोचा हुआ ; बुरा, दुष्ट ।

३३००१६६ चीरुवु (क) सं. — चिल्लाहट, चीखना ; व्यर्थ की बात ।

(१) ३३००१६७ चीर्ण (क) सं. — दे. ३३००१६८ ।

(२) ३३००१६९ चीर्ण (सम्) वि. — चीर्ण, चीरा हुआ, फटा हुआ ; विभाजित ; किया हुआ, कृत ।

३३००१७० चीर्णे (?) सं. — एक वृक्ष, मीठे नीम का पेड़ (The tree Murraya koenigii) ।

३३००१७१ चील, ३३००१७२ चीलु (क) सं. — दे. ३३००१७३ (१) ।

३३००१७४ चीलमंडे (क) सं. — पैर और चरण को मिलानेवाली नली ; युटिका, गुल्फ ।

३३००१७५ चीलयित (क) सं. — एकाक्ष नामक पौधा ।

३३००१७६ चीलाय (क) सं. — चाकू, तलवार या छुरी का फल ।

३३००१७७ चीलि (क) सं. — बिछी को संबोधित करने का शब्द ।

३३००१७८ चीलु (क) सं. — दे. ३३००१७९ (१) ।

३३००१८० चीले (तद्) सं. — कीलः (तत्) कीलः पिन ।

३३००१८१ चीवर (सम्) सं. — वस्त्र, फटा कपड़ा ; चिथड़ा ; बौद्ध भिक्षुक या किसी संन्यासी का कपड़ा ।

३३००१८२ चीवु (क) क्रि. — दे. ३३००१८३ ।

३३००१८४ चीळ (क) सं. — चीखना ; चिल्लाहट — ३३००१८५ इडु — क्रि. रू. ।

३३००१८६ चुंग (क) सं. — पेशाब की बंदू की प्रकट करनेवाला एक शब्द ।

३३००१८७ चुंगडि (क) सं. — क्षुद्रता, अल्पता छुटे, छुट पैसे ; निश्चित धन-राशि के ऊपर के (अतिरिक्त) पैसे ; सूद, व्याज ।

३३००१८८ चुंगरिसु (क) क्रि. — सर्दी के कारण-रोंगटे खड़े हो (रोमांच होना) ।

३३००१८९ चुंगाणि (अ. दे.) सं. — छोटा चिलम ।

ॐ००००० (क) सं.— हठी या दुष्ट स्त्री ; हठी या दुष्ट पुरुष ।

ॐ००००० (क) सं.— कपड़े का छोर या किनारा फाड़कर किसी वस्तु के साथ लटकया गया खण्ड ; कुसुम की नोक ; अंतिम भाग ।

ॐ००००० चूचु; ॐ००००० चूचु (क) सं.— चोंच ॐ००००० चूचल — एक वृक्ष विशेष (Cochorus trilocularis) ।

ॐ००००० चूचल (क. सं.— छोटा चूहा; चुहिया. छछूंदर ।

(१) ॐ००००० चूचु (क) सं.— चोंच ; वीर्यवनी नामक पौधा ; माथे पर लटकनेवाले घुंघराले बाल ; लाल या भूरा रंग ; घर का शिलाफलक । वि.— छोटा ।

(२) ॐ००००० चूचु (सम्) वि.— प्रसिद्ध, प्रख्यात, निपुण ।

ॐ००००० चूदि, ॐ००००० चूदि, ॐ००००० चूदि (सम्) सं.— छोटा कुआ ; छोटा तालाब ।

ॐ००००० चूडु (क) वि.— छोटा । ॐ००००० चूडिलि (क) सं.— चुहिया ; छछूंदर ।

ॐ००००० चूदि (सम्) सं.— चुंदी, कुटनी ।

ॐ००००० चूबक (सम्) सं.— चूमनेवाला ; धूर्त, लंपट, रसिया, वेश्यागामी ; वह जो चूमा गया हो ; चुंबक पत्थर (loadstone) ।

ॐ००००० चूवित (सम्) वि.— चूमा हुआ ; स्पर्श किया हुआ ; स्पष्ट । ॐ००००० चूविसु — क्रि. रू. ।

ॐ००००० चूयि, ॐ००००० चोंयि (क) सं.— 'दोसे' बनाते समय गरम तवा पर पानी की बूँद पड़ने से निकलनेवाली ध्वनि ।

ॐ००००० चूकाणि, ॐ००००० चूकण (अ. दे.) सं.— पतवार ।

ॐ००००० चूकायिसु (अ. दे.) क्रि.— चुक (हिं.), पूरा कर; व्यवस्थित कर, ठीक कर; मूल्य का निर्णय कर, चुका दे ।

ॐ००००० चूकुल, ॐ००००० चूकुल (सम्) सं.— हेमदुग्ध नामक पौधा ।

ॐ००००० चूकण (अ. दे.) सं.— दे. ॐ०००००

(१) ॐ००००० चूकि ॐ००००० चूके (क) सं.— बिंदी छोटा धन्वा ।

(२) ॐ००००० चूकि (तद्) सं.— शुक्र: (तद्) ; शुक्रग्रह ; शुक्राचार्य ।

ॐ००००० चूक, ॐ००००० चूकि, ॐ००००० चूके (सम्) सं.— खटाई, खट्टापन, इमली ।

ॐ००००० चूचुक, (सम्) सं.— चूचुक कुच का अग्र भाग ।

ॐ००००० चूचुल, ॐ००००० चूजुल (क) सं.— एक वृक्ष विशेष (Helicteres isora) ।

ॐ००००० चूचु (क) क्रि.— चुभ, भोंक, गाड़ घुसेड़, बेध, मन को पीड़ा दे ; जल, जलन हो । वि.— चुभनेवाला, बेधनेवाला ; छोटा ।

— ॐ००००० चूके (क) सं.— चुभन, बेध, छेदन ; पीड़ा, व्यथा ।

ॐ००००० चूचुंदर, ॐ००००० चूचुंदरि (अ. दे.) सं.— छछूंदर (हिं.) ।

ॐ००००० चूजुल (क) सं.— दे. ॐ००००० चूके (क) वि.— छोटा, कम, नाटा, ठिगना, अल्पावधि का । सं.— छोटी कविता ।

ॐ००००० चूटिके (क) सं.— चुटकी ; उतना परिमाण जितना अंगूठे और तर्जनी से पकड़ा जाता है ?

ॐ००००० चूट, ॐ००००० चूटि (क) सं.— चुरट, तमाखू का बड़ा सिगरेट ।

ॐ००००० चूनायिके; ॐ००००० चूनावणे (अ. दे.) सं.— चुनाव । (हिं.) चुनना । ॐ००००० चूनायिसु— क्रि. रू. ।

ॐ००००० चूत (क) सं.— निंदा, गाली ; बदनामी, अपमान, तिरस्कार । — ॐ००००० चूत (क) क्रि.— गाली दे, निंदा कर, नीचा दिखा ।

ॐ००००० चूतुक (सम्) सं.— टुडडी ।

ॐ००००० चूतिकि (क) क्रि.— चल, गमन कर; प्रस्थान कर ।

ॐ००००० चूय (क) सं.— दे. ॐ०००००

(१) ॐ००००० चुरि (सम्) सं.— छोटा कुर्छा ।

(२) ॐ००००० चुरि, ॐ००००० चूरि (अ. दे.) सं.— छुरी ।

ॐ००००० चुरकु, ॐ००००० चुरकु (क) वि.— तेज़, तीक्ष्ण, कुशाग्र ।— ॐ००००० बुद्धि— तीक्ष्ण बुद्धि ।

ॐ००००० चुरचि (क) सं.— चालाकी, कुशलता । ॐ००००० चुरकु (क) सं.— तेज़ी, तीक्ष्णता ;

अग्नि की ज्वाला, शरीर की गरमी ; शीघ्रता, वेग ; पीड़ा ; चाकू आदि की तीक्ष्णता. सूक्ष्मता, फुर्तीलापन । — ॐ००००० तन (क) सं.— सूक्ष्मता, तीक्ष्णता, तेज़ी, फुर्तीलापन ।

ॐ००००० चुरचि (क) सं.— एक पौधा विशेष जिसको छूने से खुजलाहट होती है ।

ॐ००००० चुरकु (क) सं.— दे. ॐ००००० चूचु (क) क्रि.— दे. ॐ०००००

(१) ॐ००००० चूलक, ॐ००००० चूलक, (सम्) सं.— गहरा कीचड़ ; मुँह भर जल; अंजलि, चूल्हू ; छोटा बर्तन ।

(२) ॐ००००० चूलक, ॐ००००० चूलकु (क) वि.— क्षुद्र, लघु, हलका, चपल । — ॐ००००० तन (क) सं.— क्षुद्रता, चपलता, अल्पता, हल्कापन ; गंभीरता की कमी ।

ॐ००००० चूलि (सम्) सं.— चूल्हा । ॐ००००० चूलि, ॐ००००० चूलि (क) सं.— चोंच । ॐ००००० चूलिके (क) सं.— कपास पीटने का ढंडा ।

ॐ००००० चूचुक (सम्) सं.— चूचुक, स्तन का अग्रभाग । ॐ००००० चूटि (क) सं.— उद्देश्य, ध्येय ; योजना, उपाय, साधन, उपकरण ।

ॐ००००० चूड (क) सं.— दे. ॐ००००० ॐ००००० चूड (सम्) सं.— चोटी, चुटिया । ॐ००००० चूडकर्म (सम्) सं.— चूडकर्म संस्कार; मुण्डन संस्कार ।

ॐ००००० चूडामणि, ॐ००००० चूडारत्न (सम्) सं.— सीसफूल, सिरमें धारण करने का एक आभूषण विशेष ; कन्नड के एक कवि का नाम ।

ॐ००००० चूडाल (सम्) सं.— चूडाल, चूड़ी ; कंकण ।

अंशुवर्ण चूडाले (सम्) सं.—एक प्रकार का सरो वृक्ष ।
 अंशुवर्ण चूडे (सम्) सं.—चूडा, चुटिया, चोटी ; मोर की कलंगी ; तिर ; शिखर, चोटी ; एक प्रकार की चूड़ी, कंकण ।
 अंशुवर्ण चूणि (क) सं.—आदि, अग्र, सेना का अग्रभाग ।
 अंशुवर्ण चूत (सम्) सं.—आम का पेड़ ; भग, योनि ।
 अंशुवर्ण चूतक (सम्) सं.—छोटा कुआ ।
 अंशुवर्ण चूतकुज (सम्) सं.—आम का पेड़ ; एक वृत्त का नाम ।
 अंशुवर्ण चूपु (क) सं.—दृष्टि, दृश्य ; झलक ; दर्शन ; आँख, नेत्र ; नुकीलापन, सूक्ष्मता, तीक्ष्णता, पैना भाग ।
 अंशुवर्ण चूरण (तद्) सं.—चूर्ण (तत्) ; बुकनी, आटा ; घिसा हुआ चंदन ।
 अंशुवर्ण चूरि (अ. दे.) सं.—दे. अंशु (२).
 अंशुवर्ण चूरिसु—टुकड़े-टुकड़े कर ।
 अंशुवर्ण चूरु (क) क्रि.—खरोच, नोच । सं.—टुकड़ा । खण्ड, अंश, अल्प परिमाण ; बुकनी, पुड़िया ; छत का अंतिम भाग ; घर के ऊपर छत बनाने का ढाँचा ।
 अंशुवर्ण चूरुमरि (अ. दे.) सं.—चरमुरा ; भुना हुआ चावल ।
 अंशुवर्ण चूर्ण (सम्) सं.—चूर्ण, पुडिया बुकनी, धूल, आटा ; चूना ; चोंक ; सूरन, जमीकंद ।
 अंशुवर्ण चूर्णकुंडल (सम्) सं.—धुंध राले बाल ।
 अंशुवर्ण चूर्णि (सम्) सं.—लौ कौड़ियों का योग या जोड़ ; चूर्ण ।
 अंशुवर्ण चूर्णिके (सम्) सं.—गद्य रचना की शैली विशेष ; भुना और पिसा हुआ अनाज ।
 अंशुवर्ण चूल ; अंशुवर्ण चूलु (क) सं.—पशुओं-का गर्भ धारण करना ।
 अंशुवर्ण चूल (सम्) सं.—घाल, चोटी ।
 अंशुवर्ण चूलिके (सम्) सं.—हाथी की कन-पटी ; मुर्गे की कलंगी ; चोटी ; शिखर,

वृक्ष का ऊपरी भाग ; नाटक में वह कथन जो नेपथ्य की भाड़ में कहा जाता है ; सेना-मुख, युद्ध का मुख ।
 अंशुवर्ण चूपे (सम्) सं.—हाथी के राज की पटी ।
 अंशुवर्ण चूलय (क) सं.—(सिर की) माँग जिसमें मोती का आभरण रखा जाता है ।
 अंशुवर्ण चूळि (क) सं.—दे. अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंगु (क) क्रि.—कूद, उच्चल, छलांग मार ; दौड़, भाग । सं.—उछलन ; कुदान ।
 अंशुवर्ण चेंडकनरि (क) सं.—(भारतीय) लोमड़ी. लियार ।
 अंशुवर्ण चेंडि (सम्) सं.—चण्डी (तत्) ; दे. अंशुवर्ण (१).
 अंशुवर्ण चेंडिके (क) सं.—शिखा, चोटी, जूड़ा ।
 अंशुवर्ण चेंडु (क) सं.—गेंद, कंदुक ।
 अंशुवर्ण चेंद (तद् ?) सं.—सुन्दर, मनोहर, सुधुर ।
 अंशुवर्ण चेंदर, अंशुवर्ण चेंदिर (तद्) सं.—चंद्र (तत्) सिंदूर (तत्) चेंदिर ।
 अंशुवर्ण चेंद्रेगु, अंशुवर्ण चेंदु (क) सं.—लोटा, जलपात्र ।
 अंशुवर्ण चेंकने (क) अ.—जल्दी, शीघ्र, वेग से, तेजी से ।
 अंशुवर्ण चेंकरिसु (क) क्रि.—मिमिया, बकरी या भेड़ का शब्द कर ।
 अंशुवर्ण चेंकल (तद्) सं.—दे. अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंकु (अ. दे.) सं.—दे. अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंकुसु (क) क्रि.—बंद कर, रोक, निकाल, प्रवाहित कर ।
 अंशुवर्ण चेंके (तद्) सं.—दे. अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंचर (क) सं.—शीघ्रता, त्वरित गति ; सावधानी, होशियारी, जागरूकता ; निश्चितता ।
 अंशुवर्ण चेंचरिग (क) सं.—उरसाही या फुर्तीला पुरुष ।
 अंशुवर्ण चेंचु (क) क्रि.—कूट, पीट, मार, कुचल, पीस ; चूर्ण कर, पुडिया बना ।
 अंशुवर्ण चेंजे (क) सं.—दे. अंशुवर्ण ।

अंशुवर्ण चेंडि (क) सं.—टिटिहरी चिड़िया ; मिट्टी का भाण्ड (मै. प्र.) ।
 अंशुवर्ण चेंदु (क) सं.—पौधा, छोटा वृक्ष ; दे. अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंण (क) सं.—दे. अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंदरु (क) क्रि.—दे. अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंन् (क) वि.—लाल (समास में) । उदा.—अंशुवर्ण (अंशु + वर्ण) चेंद-लिर्—लाल किसलय । अंशुवर्ण (अंशु + वर्ण) चेंदावरे—लाल कमल आदि ; अच्छा, सुंदर. ठीक । उदा.—अंशुवर्ण चेंदमिळ् (अंशुवर्ण चेंदमिळ्)—अच्छी तमिळ् ।
 अंशुवर्ण चेंन्न (क) सं.—सुन्दर पुरुष या वीर ।
 अंशुवर्ण चेंन्नंगि (क) सं.—दे. अंशुवर्ण १ ।
 अंशुवर्ण चेंन्नि (क) सं.—सुन्दरी स्त्री । अंशुवर्ण चेंन्नि (क) सं.—सुन्दर पुरुष ।
 अंशुवर्ण चेंन्नु (क) सं.—अच्छाई ; सौंदर्य, लावण्य ; ठीक होना ।
 अंशुवर्ण चेंन्ने (क) सं.—सुन्दरी स्त्री ; एक वृक्ष विशेष ।
 अंशुवर्ण चेंम् (क) वि.—लाल, अरुण (समास में) । उदा.—अंशुवर्ण चेंम्—लाल पुष्प, अंशुवर्ण चेंवोन्—अरुण सुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंय (क) वि.—सीधा, सुन्दर, अच्छा ।
 अंशुवर्ण चेंय्याट (क) सं.—तमाशा, विनोद ।
 अंशुवर्ण चेंरग (क) सं.—दे. अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंरिगे (क) सं.—बड़े मुँह का बर्तन ; लोटा, लुटिया ।
 अंशुवर्ण चेंरुकु (क) सं.—इंख, जख ।
 अंशुवर्ण चेंचें (तद्) ; सं.—दे. चर्चा (तत्) ; अंशुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंल्. अंशुवर्ण चेंल्लु (क) क्रि.—(पानी) उडेल ; फेंक ।
 अंशुवर्ण चेंल्लुकु, अंशुवर्ण चेंलगु (क) क्रि.—दे. अंशुवर्ण. छिटक, छिटक ।
 अंशुवर्ण चेंल (क) वि.—सुन्दर, मनोहर ।
 अंशुवर्ण चेंलव (क) सं.—सुन्दर या मनोहर पुरुष ; सौंदर्य ।

चोगर्चि (क) सं.—एक वृक्ष विशेष (cassia occidentalis)
 छोच्छु चोच्च (तद्) वि.—स्वच्छ (तत्), साफ़, शुद्ध ।
 छोच्छुलु चोच्चलु (क) सं.—पहली प्रसूति, पहली संतान ।
 छोच्छु चोद, छोच्छु चोट्टि, छोच्छु चोट्ट, छोच्छु चोत्तु (क) सं.—लंगड़ापन, टेढ़ापन, वक्रता ।
 छोच्छु चोट्टे (क) वि.—टेढ़ा, वक्र ।
 छोच्छु चोट्टे (अ. दे.) सं.—छोटा मनुष्य, नीच पुरुष ।
 छोच्छु चोत्ति, सोच्छु सोत्ति (क) सं.—लंगड़ी स्त्री ।
 छोच्छु चोत्तिगे (तद्) सं.—योक्त्र (तत्) हल के जुए की रस्ती ; गाड़ी का जोत ।
 छोच्छु चोत्तु (क) सं.—लंगड़ापन, लंगड़ा भादमी ।
 छोच्छु चोप्पट्टे (क) सं.—देवदारु वृक्ष ।
 छोच्छु चोर (क) सं.—मकर, मगर ।
 छोच्छु चोछण (क) सं.—दे. छल्लण.
 छोच्छु चोळ्ळेय, छोच्छु चोळ्ळेह, छोच्छु चोळ्ळेह (क) सं.—जूड़े या वेणी की नोक या सिरा ।
 छोच्छु चोळ्ण (क) सं.—दे. छल्लण.
 छोच्छु चोक्ष (सम्) वि.—शुद्ध, साफ़ ; सच्चा, ईमानदार ; पटु, चतुर, निपुण ; प्रिय, मनोहर ।
 छोच्छु चोच (सम्) सं.—छाल, त्वचा, चमड़ा, खाल, नारियल ।
 छोच्छु चोच्चिग, सोच्छु सोच्चिग (तद्) सं.—चोद्यम् (तत्) ; आश्चर्य, विस्मय, अचरज ।
 छोच्छु चोटा (अ. दे.) वि.—छोटा (हिं.) ।
 छोच्छु चोट्टु (क) सं.—अंगूठे और तर्जनी के बीच का अंतर ।
 छोच्छु चोड, छोच्छु चोडि (सम्) सं.—साड़ी ; चोली ।
 छोच्छु चोदन (सम्) सं.—प्रेरणा, उत्साह ।

छोच्छु चोद्य (सम्) सं.—एतराज, आपत्ति, प्रश्न करना ; आश्चर्य, अचरज ; प्रेषणीयता ।
 छोच्छु चोपदार (अ. दे.) सं.—चोपदार, चोबदार ।
 छोच्छु चोर, छोच्छु चोरक (सम्) सं.—चोर, ठग, डाकू ।
 छोच्छु चोरखंडक (सम्) सं.—एक पौधा विशेष ।
 छोच्छु चोरत्व, छोच्छु चोरि (सम्) सं.—चोरी, डकैती ।
 छोच्छु चोल (सम्) सं.—चोली, अंगिया ।
 छोच्छु चोलक (सम्) सं.—छाल की बनी पोशाक, बल्कल, वस्त्र, चोली ; पेटी, चपरास ।
 छोच्छु चोलि (सम्) सं.—चोली ।
 छोच्छु चोषण (सम्) सं.—चूसना ।
 छोच्छु चोष्य (सम्) वि.—चूसने योग्य ।
 छोच्छु चोस्क (सम्) सं.—बढ़िया घोड़ा ।
 छोच्छु चोह (तद्) सं.—योग : (तत्) ; वेप, भेस, मुख का आवरण, स्वांग ।
 छोच्छु चोल (क) सं.—एक राजवंश का नाम, एक देश और उसके निवासियों का नाम ।
 छोच्छु चोपालकचरित्र (क) सं.—केशव की कृति का नाम जिसमें चोल राजाओं का चरित है ।
 छोच्छु चोळि (क) सं.—चोल देश से संबधित या चोल देश का भादमी ।
 छोच्छु चौक (अ. दे.) सं.—चौक (हिं.), चौकोर चबूतरा, चार का समूह, चार वस्तुएँ ।
 छोच्छु चौकट्टु (अ. दे.) सं.—चौखट (हिं.) ।
 छोच्छु चौकंड (तद्) सं.—चतुःखण्ड (तत्), कमरा ।
 छोच्छु चौकळि (अ. दे.) सं.—दे. छुक्कळि.
 छोच्छु चौकि (अ. दे.) सं.—चौकी (हिं.) ।
 छोच्छु चौकिगे (अ. दे.) सं.—घर के भीतर का आंगन ।
 छोच्छु चौकीदार (अ. दे.) सं.—चौकीदार (हिं.), रक्षक, रक्षा करनेवाला ।

छोच्छु चौकुल (तद्) सं.—चार कुल या जातियाँ ।
 छोच्छु चौगावे (तद्) सं.—चतुर्ग्राम (तत्), चार गाँव ।
 छोच्छु चौड, छोच्छु चौल (सम्) सं.—मुंढन, चूडाकर्म संस्कार ।
 छोच्छु चौति (तद्) सं.—दे. छुत्ति.
 छोच्छु चौथायि (अ. दे.) सं.—चौथाई (हिं.), १/४ भाग ।
 छोच्छु चौपद (तद्) सं.—चतुःपद (तत्) चतुष्पथ (तत्) ; चौपाया ; छंद विशेष का नाम ; 'चौपद' गाकर अपने शिष्यों के साथ भेंट पाने के लिए घर-घर जानेवाला अध्यापक ।
 छोच्छु चौपदि (तद्) सं.—दो छंदों का नाम, चौरास्ता ।
 छोच्छु चौपळिगे (क) सं.—हॉल (Hall) ; जैन मन्दिर के सामने का मंडप ।
 छोच्छु चौभुज (तद्) वि.—चतुर्भुज (तत्) ।
 (१) छोच्छु चौर (सम्) सं.—चोर ।
 (२) छोच्छु चौर (तद्) सं.—क्षौर (तत्) ; हजामत ।
 छोच्छु चौरगे छोच्छु चौरिगे (तद्) सं.—चतुःशाला ।
 छोच्छु चौरिके (सम्) सं.—चोरी, डकैती ।
 छोच्छु चौर्य (सम्) सं.—दे. छुत्त.
 छोच्छु चौल (सम्) सं.—दे. छुत्त.
 छोच्छु च्यवन (सम्) सं.—गति, गतिशीलता ; शून्यता, राहित्य ; नाश, मरण ; बहाव, टप-काव एक ऋषि का नाम ।
 छोच्छु च्युत (सम्) वि.—गिरा हुआ, फिसला हुआ, स्थानांतरित ।
 छोच्छु च्युति (सम्) सं.—पतन, टपकना, गिरना, अलगाव ; बह निकलना ; अदृश्य होना, नष्ट होना ; योनि, भग ; गुदा ।
 छोच्छु च्युत (सम्) सं.—आम का पेड़ ।

छ छ

छ छ—कन्नड वर्णमाला का इक्कीसवाँ अक्षर ; चवर्ग का दूसरा व्यंजन ।

छ

छ (क) वि.—सात की संख्या ।
 (१) छंद छंद (सम्) सं.—इच्छा; कामना, अभिलाषा; अभिप्राय, इरादा, मंशा; वंश में करना, कावू में करना; जहर, विष; मधुर होना, आकर्षित करना ।
 (२) छंद छंद (तद्) सं.—छंदस् (तत्); पद्य, वृत्त; छंदःशास्त्र; छन्वीस की संख्या ।
 छंद छंदक (सम्) सं.—दे. छंद (१).
 छंदसु छंदसु (तद्) सं.—छंदस् (तत्)—इच्छा, कामना, स्वेच्छा; पद्य, वृत्त; छंदःशास्त्र; वैदिक ऋचाएँ; वेद ।
 छंदोबुधि छंदोबुधि (सम्) सं.—कन्नड के प्रसिद्ध प्राचीन कवि नागवर्मा का छंदःशास्त्र विषयक ग्रंथ ।
 छंदोवतंस छंदोवतंस (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।
 छक छक (तद्) वि.—षट्क (तत्); छः-गुना ।
 छग छग, छगल छगल, छगल छगल (सम्) सं.—बकरा ।
 छगलंछि छगलंछि (सम्) सं.—एक पौधा विशेष (The plant *Argyrea speciosa* or *argentea* sweet) ।
 छटछट छटछट (क) सं.—फड़फड़ाहट, छट-छट शब्द ।
 छटसु छटसु (क) क्रि.—छट-छट शब्द हो, फड़फड़ाहट हो ।
 छट्टि छट्टि छट्टे (सम्) सं.—समूह, समुदाय, जमाव; चमक, दमक, कांति, प्रकाश की रश्मियों का समूह; अटूट पंक्ति ।
 छडकि छडकि (क) सं.—कुश्ती लड़नेवालों की एक पंच ।
 छडाछडि छडाछडि (क) अ.—जल्दी; तुरंत, शीघ्र; फौरन् ।
 छडाछिसु छडाछिसु (क) क्रि.—जोर से झटका 'छट' शब्द उत्पन्न कर; प्रज्वलित हो; चिढ़, गुस्से में आ, उद्विक्त हो ।
 छत्तीस छत्तीस (अ. दे.) वि.—छत्तीस (हिं.) ।
 (१) छत्र छत्र (सम्) सं.—छाता, छतरी; कुकुरमुत्ता ।

(२) छत्र छत्र (तद्) सं.—सत्र (तत्); धर्म-शाला, आश्रय स्थान ।
 छत्रक छत्रक (सम्) सं.—कुकुरमुत्ता ।
 छत्रपति छत्रपति (सम्) सं.—राजा की आदर-सूचक उपाधि ।
 छत्राक छत्राक, छत्राकि छत्राकि (सम्) सं.—कुकुरमुत्ता, कठफूल ।
 छत्रिके छत्रिके (सम्) सं.—राजछत्र; कुकुरमुत्ता ।
 छत्रे छत्रे (सम्) सं.—एक पौधा विशेष; कुकुरमुत्ता; धनिया ।
 छत्रर छत्रर (सम्) सं.—घर, निवासस्थान; कुंज, लतामंडप ।
 छद छद, छदल छदल (सम्) सं.—ढकना; फैलाना, आच्छादन; डैना, पर; पत्ता ।
 छदिस छदिस, छदे छदे (सम्) सं.—छत या छावनी ।
 छद्व छद्व (सम्) सं.—कपटवेश; बहाना, व्याज ।
 छद्वे छद्वे (तद्) सं.—दे. छद्व ।
 छद्वे छद्वे (सम्) वि.—ढका हुआ, छिपा हुआ, रहस्यमय ।
 छद्वे छद्वे (सम्) सं.—अनाथ, मातृ-पितृहीन व्यक्ति ।
 छद्वे छद्वे (क) अ.—छम् शब्द के साथ ।
 छद्वे छद्वे (क) अ.—क्रोध, गुस्सा; मद ।
 छद्वे छद्वे (तद्) सं.—स्वरः (तत्); तलवार या किसी आयुध की सूँट ।
 छद्वे छद्वे (सम्) सं.—वमन, कै, रोग ।
 छल छल (सम्) सं.—कपट, धोखा, दगा; चालाकी, धोखेबाज़ी, बदमाशी; व्याज, बहाना; दुष्टता; अभिप्राय, मत; भुलावा ।
 छलगिल छलगिल (क?) सं.—शूरता, पराक्रम; वीरता ।
 छलवादि छलवादि (सम्) वि.—हठी, हठीला, जिद्दी; धोखेबाज़ ।
 छलिक छलिक (सम्) नाटक या नृत्य विशेष ।
 छल्लि छल्लि, छल्ली छल्ली (सम्) सं.—छाल,

खाल, चमड़ ।; लता विशेष; संतान, संतति; एक प्रकार का फूल ।
 छवि छवि (सम्) सं.—चमड़ा, खाल, चमड़े की रंगत; कांति, शोभा, सौंदर्य, चमक, भाव ।
 छल्लेने छल्लेने (क) अ.—'छल्लि' शब्द के साथ ।
 छांगु छांगु (क) अ.—शाबाश!, अच्छा!, भला! ।
 छांगु छांगु (क?) सं.—घोड़ों की एक बीमरी ।
 छांदस छांदस (सम्) वि.—छंद से संबंधित, पद्यमय; वैदिक, वेदाधीन ।
 छांदसि छांदसि, छांदसि छांदसि (सम्) सं.—वेदज्ञ ब्राह्मण । [छांदसः—तत्] ।
 छाग छाग (सम्) सं.—बकरा ।
 छागि छागि (सम्) सं.—बकरी ।
 छात छात (सम्) वि.—कटा हुआ, विभाजित; निर्बल, दुबला ।
 छाद छाद, छादन छादन (सम्) सं.—ढकना, आच्छादन, लुकाव, छिपाव; छत, छप्पर ।
 छादित छादित (सम्) वि.—ढका हुआ ।
 छादनस छादनस, छादनस छादनस (क) सं.—[छांदस्—तत्?]-देरी, विलम्ब ।—गार=देरी करनेवाला ।
 छादने छादने (अ. दे.) सं.—मुद्रणालय, प्रेस (Press) ।
 छाया छाया, छाये छाये (सम्) सं.—छाया, परछाई; प्रतिबिंब; समानता; सादृश्य; अम, माया; धोखा; रंगों की गड़बड़ी; चमक, दमक; रंग; सौंदर्य; चेहरे की रंगत; पंक्ति, कतार; रक्षा; अंधकार; सूर्य की पत्नी; दुर्गा; धूसरिश्वत ।—गुण ग्रह (सम्) सं.—शीशा, दर्पण, आईना ।—गुण (सम्) सं.—छाया पकड़ना ।—गुण (सम्) सं.—एक राक्षसी का नाम ।—गुण तनय, गुणनंदन, गुणसुत (सम्) सं.—शनिग्रह ।—गुण पति (सम्) सं.

अ०अ० जंजड (अ. दे.) सं.—झंझट (हिं.); परेशानी, तकलीफ़ ।

अ०अ० जंजर (सम् ?) वि.—शिथिल, दौड़ने-वाला, क्रमहीन ।

अ०अ० जंजाट (अ. दे.) सं.—अ०अ० ।

अ०अ० जंजालु (अ. दे.) सं.—जंजाल, बखेड़ा; बंदूक, तोप ।

अ०अ० जंजु. अ०अ० झंझू (क) सं.—हवा या वर्षा की ध्वनि ।

अ०अ० जंझार (तद्) सं.—[जंज = लड़ना]—वीर या पराक्रमी पुरुष, वीर का शरीर ।

अ०अ० जंजवात (अ. दे.) सं.—Joint (अंग्रेज़ी) ;

जोड़, मिलना, मिलने का स्थान; सह-भागी होना, साक्षा; मिले रहना । — गार = साझेदार, सहभागी । अ०अ० जंजिसु (अ. दे.) क्रि.—लगा, मिला, जोड़ ।

अ०अ० जंजे (अ. दे.) सं.—झण्डा (हिं.); पताका ।

अ०अ० जंत (तद्) सं.—दंत (तत्) ; दाँत ।

अ०अ० जंतु (सम्) सं.—जीव, प्राणधारी; मनुष्य, आत्मा; जानवर; कीड़े-मकोड़े ।

—अ०अ० फल (सम्) सं.—गूलर का वृक्ष ।

—अ०अ० निकर (सम्) सं.—जीवों का समूह ।

अ०अ० जंते, अ०अ० जंति (क) सं.—धरन, वल्ला ।

अ०अ० जंत्र (तद्) सं.—यंत्रम् (तत्) ; तावीज़; ताला ।

अ०अ० जंपति (सम्) सं.—पति-पत्नी, देवती ।

अ०अ० जंपु (क) सं.—आलस्य, सुस्ती, ऊँच; समूह, समुदाय (अ. दे.) सं.—छलांग, कुदान. उछलन ।—अ०अ० हिडि (क) क्रि.—ऊँच, नींद आ ।

(१) अ०अ० जंत्र (तद्) सं.—एक प्रकार का घोड़ा ।

(२) अ०अ० जंब (तद्) सं.—दंभः; दंभः (तत्); अहंकार, घमंड, गर्व, डींग, शेखी । — अ०अ० कोरु = डींग हॉक, शेखी मार । (सुह.) ।—अ०अ० गार (तद्) सं.—घमंडी ।

अ०अ० जंबर (क) सं.—काम, उद्योग, मामला; व्यापार ।

अ०अ० जंबाल (सम्) सं.—कीचड़, पंक, दलदल; काई ।

अ०अ० जंबि (तद्) सं.—शमी (तत्); छेंकुर का पेड़ ।

अ०अ० जंबीर (सम्) सं.—नींबू, नींबू का पेड़ ।

(१) अ०अ० जंबु (क) सं.—लम्बाई; एक प्रकार का नरकट या मुत्तबेत (Typha angustifolia) ।

(२) अ०अ० जंबु (सम्) सं.—जामुन का पेड़ और फल ।

अ०अ० जंबुक, अ०अ० जंबूक (सम्) सं.—सियार, स्यार; गीदड़; नीच मनुष्य; जामुन का फल ।

अ०अ० जंबुखाने (अ. दे.) सं.—दे. अ०अ० ।

अ०अ० जंबुद्वीप (सम्) सं.—सात द्वीपों में एक जो मेरु पर्वत को घेरे हुए है ।

अ०अ० जंबुमालि (सम्) सं.—रावण की सेना का एक राक्षस ।

अ०अ० जंबुनदि (सम्) सं.—मेरु पर्वत से निकलनेवाली एक नदी का नाम । कहा जाता है कि वह मेरुपर्वत पर स्थित एक जंबू वृक्ष के (जामुन के) रस से बनती है ।

अ०अ० जंबुफल (सम्) सं.—जामुन का फल ।

अ०अ० जंभ (सम्) सं.—नींबू, जंभीरी; दाँत; मुँह, जाबड़ा; इंद्र द्वारा हत एक राक्षस का नाम ।—अ०अ० द्वेषि, अ०अ० भेदि, अ०अ० रिपु, अ०अ० शत्रु (सम्) सं.—इंद्र ।

अ०अ० जंभल (सम्) सं.—नींबू ।

अ०अ० जंभामित्र, अ०अ० जंभारि (सम्) सं.—इंद्र ।

अ०अ० जंभीर (सम्) सं.—नींबू; एक प्रकार का तुलसी का पौधा ।

अ०अ० जकणि, अ०अ० जकणि (तद्) सं.—यक्षिणी (तत्); यक्ष स्त्री ।

अ०अ० जकाति (अ. दे.) सं.—जकात (अरबी); कर ।

अ०अ० जकट (सम्) सं.—मलयपर्वत; कुत्ता ।

अ०अ० जकेरे (अ. दे.) सं.—जखीरा (अरबी); वस्तुओं को संग्रह कर रखने का स्थान, भंडार ।

(१) अ०अ० जक (तद्) सं.—‘चक्रं’ और चक्रः (तत्); चक्र, पहिया; चक्रवाक । अ०अ० जकंदोललि (तद्) सं.—मैंस जो यम का वाहन है । अ०अ० जकंदोलिदेर (तद्) सं.—यम । अ०अ० जकवकि (तद्) सं.—चक्रवाक ।

(२) अ०अ० जक (तद्) सं.—यक्षः (तत्) । अ०अ० जक + अ०अ० = अ०अ० जकण-चारि—कर्णाटक के एक प्रसिद्ध शिल्पी का नाम । अ०अ० जकणचार्य—एक शिवभक्त का नाम ।

अ०अ० जकणि (तद्) सं.—दे. अ०अ० ।

अ०अ० जकलु (क) सं.—चापलूसी, चाटुकारिता, अति अनुरोध की स्थिति ।

अ०अ० जकि (तद्) सं.—यक्षी (तत्)—यक्ष स्त्री; कर्णिका ।

अ०अ० जकिणि (तद्) सं.—दे. अ०अ० । वह स्त्री जो सुहागिन होकर मरती है और सम्मानित होती है (मैं. प्र.) ।

अ०अ० जकिसु, अ०अ० जगिसु, (क) क्रि.—झुका; खींच, नीचे दबा, प्रयत्न कर खींच; घमंड से चल, अकड़पन से चल ।

अ०अ० जककुलि (क) सं.—गुदगुदी ।

अ०अ० जककुलिसु (क) क्रि.—गुदगुदी उत्पन्न कर; स्पर्श कर; विनोद कर, मज़ा कर, आनंदित हो; खेल, क्रीड़ा कर; दाँत दिखा ।

अ०अ० जककुलिसु (क) क्रि.—दे. अ०अ० ।

अ०अ० जकके (तद्) सं.—अ०अ० ।

(१) अ०अ० जग (तद्) सं.—अ०अ० जगजग —झगझग, चमक-दमक ।

(२) अ०अ० जग (तद्) सं.—जगत् (तत्); दुनिया, संसार !—अ०अ० दोड़ेय (तद्)

सं.—जगत का स्वामी ।—बुद्ध बंध (तद्)
सं.—अत्यंत निर्लज्ज मनुष्य ।—सोम
मोंड (तद्) सं.—अत्यंत हठी ।—कर कर
(तद्) सं.—ब्रह्मा ।
जगत्संज्ञा जगच्चक्षु (सम्) सं.—सूर्य,
सूरज ।
जगत् जगत् (सम्) सं.—संसार, दुनिया ।
वि.—चलनेवाला ।
(१) जगति जगति, जगति जगलि, जगत्
जगलि, जगत् जगलि (क) सं.—वेदिका,
मंच, चबूतरा, बैठकखाना ।
(२) जगति जगति (सम्) सं.—पृथिवी, धरा,
संसार; मानवजाति, लोग; राजा और
प्रजा, राजा का प्रधान अनुचर या मन्त्री, राज
सभा के लोग; घर बनाने का स्थान; छंद
विशेष जिसके प्रत्येक पाद में १२ अक्षर
होते हैं; भारोपजीवी, बोझा ढोकर आजी-
विका कमानेवाला ।
जगतिव जगतिव (सम्) सं.—राजा ।
जगतिवत् जगतीतल (सम्) सं.—दे. जगति
(१).
जगतिवत् जगतीपालक (सम्) सं.—
राजा ।
जगतिवत् जगतीमानिनि (सम्) सं.—
संसार,भर में मान्य स्त्री; जगत् जो स्त्री
माना जाय ।
जगत्संज्ञा जगत्कर्तृ, जगत्संज्ञा जगत्कर्तृ,
जगत्संज्ञा जगत्कर्तृ (सम्) सं.—ब्रह्मा ।
जगत्संज्ञा जगत्संज्ञा (तद्) सं.—जगत् (तद्) ।
जगत्संज्ञा जगत्त्रय (सम्) सं.—तीन लोक—
स्वर्ग, भूमि और पाताल ।
जगत्संज्ञा जगत्प्राण (सम्) सं.—हवा,
पवन ।
जगत्संज्ञा जगत्य (तद्) सं.—जगती (तद्);
पृथिवी ।
जगत्संज्ञा जगदंबे (सम्) सं.—दुर्गा; गंगा ।
जगत्संज्ञा जगदिति (तद्) सं.—जगत् की दृष्टि,
सूर्य ।
जगत्संज्ञा जगदीश, जगत्संज्ञा जगदीश्वर
(सम्) सं.—परमेश्वर ।

जगत्संज्ञा जगद्गुर (सम्) सं.—विष्णु,
कृष्ण ।
जगत्संज्ञा जगद्गुर (सम्) सं.—दे. जगत्संज्ञा.
जगत्संज्ञा जगद्गुर (सम्) सं.—सूर्य;
चंद्रमा; यमराज; कर्ण; कीर्ति, यश ।
जगत्संज्ञा जगद्गुरु (सम्) सं.—विश्व का गुरु,
जगद्गुरु; कृष्ण ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—सम्राट,
चक्रवर्ती ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्); सं.—सब
लोगों से प्रशंसित होनेवाला; एक वृत्त का
नाम ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (तद्) सं.—जघन (तद्); कूल्हा,
कमर, नितंब; सेना जो बचत में रखी जाय ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज, जगत्संज्ञा जगद्गुराज
(सम्) सं.—विष्णु, कृष्ण ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—दुर्गा;
लक्ष्मी ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—
बहुत ही सुन्दर पुरुष । जगत्संज्ञा जगद्गुराज
हिनि—स्त्री. लिं. ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—वेश्या;
रांड ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—कवच, बख्तर ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—गुंडा, बदमाश,
कपटी; कवच; मदिरा ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज, जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) सं.—दे.
जगत्संज्ञा (१). जगत्संज्ञा जगद्गुराज, जगत्संज्ञा
नर? जगदी हारिदवनु गगन हार्याने?—
वेदिका लॉघनेवाला क्या गगन भी लॉघ
सकता है? (कह.) ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज, जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्)
सं.—जगत् को चलानेवाला, परमेश्वर ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) सं.—झगड़ा, फूट, लड़ाई,
युद्ध । जगत्संज्ञा जगद्गुराज, जगत्संज्ञा जगद्गुराज
बल्लवनिगे जगद्गुराज, जगत्संज्ञा जगद्गुराज, जगत्संज्ञा
मातु बल्लवनिगे जगद्गुराज—जो (ठीक)
भोजन करना जानता है, उसको रोग नहीं
होता, जो (ठीक) बोलना जानता है, उसको

झगड़ा नहीं करना पड़ता (कह.)।—जगत्संज्ञा
(क) क्रि.—झगड़ा मोल ले (मुह.)।—
झगड़ा, हस्त (क) क्रि.—फूट पैदा कर
मुह.) । जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) क्रि.—
झगड़ा कर ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) सं.—झगड़ा,
पुरुष ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज, जगत्संज्ञा जगद्गुराज
(क) सं.—झगड़ा, स्त्री ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) सं.—दे. जगत्संज्ञा (१).
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) सं.—झांझ ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—ब्रह्मा ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) क्रि.—चबा, खा (रोटी, सुपारी
आदि) ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज, जगत्संज्ञा जगद्गुराज (तद्) सं.—
यमुना (तद्) ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) सं.—दे. जगत्संज्ञा (१).
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) क्रि.—फिसल, गिर पड़
दूट; छीन, खींच ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (तद्) सं.—जगद्गुराज, चमक-
दमक ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) अ.—हठात्, झट, तुरंत,
फौरन ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) क्रि.—झुका, धँसा; नीचे
की ओर खींच ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (क) क्रि.—झुक जा, धँस, नीचे
की ओर खिंच जा, दब जा; शक्ति लगाकर
खिंच, वि.—झुका हुआ ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) वि.—खाया हुआ ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—खाना, भोजन ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—दे. जगत्संज्ञा.
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) वि.—सबसे पीछे का,
पिछला, अंतिम, सब से गया बीता, निरूद्ध,
हेय; अकुलीन ।—जगत्संज्ञा (सम्) सं.—छोटा
भाई; शूद्र ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (सम्) सं.—[‘जज’ धातु से]—
योद्धा, लड़ाकू ।
जगत्संज्ञा जगद्गुराज (?) सं.—संगीत का एक
विधान ।

अधु ०ड जजरित

अधु ०ड जजरित (तद्) वि.—जजरित (तद्) ;
 वृद्धा, पुराना, जीर्ण, निर्बल, घिसा हुआ,
 अवश, निकम्मा ।
 अधु ० जजार (तद्) सं.—दे. अधु ० जजु (क) क्रि.—पुड़िया कर, चूर्ण कर
 कृत ; पीस । सं.—चूर्ण किया जाना ।
 (१) अधु जट (क) अ.—अधु जटजट—
 जल्दी, शीघ्र, फौरन ।
 (२) अधु जट, अधु जटा, अधु जटे (सम्) सं—
 दे. अधु ।
 अधु जटकरिसु, अधु जटकायिसु
 (अ. दे.) क्रि.—झटका (हिं.) झटक,
 फटकार ।
 अधु जटायु (सम्) वि.—बड़ी आयुवाला ।
 सं.—एक पक्षी, गिद्धों का राजा जो सीताजी
 के लिए युद्ध कर रावण से मारा गया ।
 अधु जटि (सम्) सं.—शिव ; स्कंद का अनु-
 चर ; गूलर का वृक्ष ; जटाजूट ; जमाव ।
 अधु जटिल (सम्) वि.—जटाजूटधारी ;
 उलझा हुआ, पेचीदा ; अगम्य, सघन,
 बहुत कठिन ।
 अधु जटिलित (सम्) वि.—पेचीदा,
 उलझा हुआ ; सघन ।
 अधु जटिले, अधु जटमांसि (सम्)
 सं.—हिमालय की एक जड़ी-बूटी, जटा-
 मांसी ।
 अधु जटुल (सम् ?) सं.—शरीर पर का
 धब्बा, चिन्ती ।
 अधु जटे (सम्) सं.—जटा, जूड़ा; जटामांसी;
 जड़, मूल, शाखा, डाल ; विचित्रता ; वेद
 का पाठ विशेष ; कौआ ।
 अधु जट्टि (क) सं.—कुश्ती लड़नेवाला, पहल-
 चान, मल्ल ।—अधु जट्टि (क) सं.—
 मल्लयुद्ध, कुश्ती । अधु जट्टि जट्टि
 विट्टेले पट्टण—पहलवान जहाँ भी जावे, डर
 नहीं (कह.) ।
 अधु जट्टिग (क) सं.—पहलवान, कुश्ती
 लड़नेवाला ।
 अधु जठर (सम्) सं.—पेट, कुक्षि । वि.—
 कठोर, दृढ़, मजबूत, घना ।—अधु अग्नि

(सम्) सं.—जठराग्नि, पेट के भीतर की
 अग्नि ।
 अधु जड (सम्) वि.—ठंडा, शीतल ; घीमा,
 गतिहीन ; मूर्ख, विवेकशून्य, अज्ञानी, अच्छे
 बुरे ज्ञान से शून्य ; सुन्न, ठिठुरा हुआ,
 अकड़ा हुआ, वेदाध्ययन करने में असमर्थ ।
 सं.—जड ; जल ; सीसा ; यज्ञ, मख ;
 वस्तु, द्रविण ; शरीर का भारीपन, सुस्ती,
 थकावट ।
 अधु जडकायिसु (अ. दे.) क्रि.—दे.
 अधु जडकायिसु ।
 अधु जडक्रिय (सम्) वि.—सुस्त,
 आलसी, मंदगति से काम करनेवाला ।
 अधु जडज (सम्) सं.—कमल ।—अधु
 (सम्) सं.—ब्रह्मा ।—अधु ज (सम्) सं.—
 ब्रह्मा ।—अधु भव, अधु जात (सम्) सं.
 ब्रह्मा ।—अधु जंतु, अधु जीवि (सम्)
 सं.—मूर्ख प्राणी ।—अधु आस (सम्)
 सं.—सूर्य ।—अधु अरि (सम्) सं.—
 चंद्रमा ।
 अधु जडत, अधु जडित (क) सं.—मारना,
 ठोकना ।
 अधु जडतन, अधु जडते, अधु जडत्व
 (सम्) सं.—सुस्ती, अज्ञानता, मूर्खता ।
 अधु जडधर, अधु जलधर (सम्) सं.—
 बादल, मेघ ।
 अधु जडधि, अधु जलधि (सम्) सं.—
 सागर, समुद्र ।
 अधु जडपु (तद्) सं.—कांति, प्रकाश,
 चमक ।
 अधु जडप्रास (सम्) सं.—मूर्खतापूर्ण
 अनुप्रास अलंकार का प्रयोग ।
 अधु जडभरत (सम्) सं.—एक भगवद्भक्त
 का नाम जिनकी कथा श्रीमद्भागवत में है ।
 अधु जडायिसु (क) क्रि.—बलपूर्वक
 प्रवेश कर, दबा ; ठोंक ; दृढ़ कर, बंद कर ।
 अधु जडाशय, अधु जलाशय
 (सम्) सं.—सरोवर, तालाब, जलाशय ।
 (१) अधु जडि, अधु जडे, अधु जलि (क)
 क्रि.—फटकार बता, डाँट, डपट, डरा,

भयभीत कर ; कोस, गाली दे, झड़की दे,
 आड़े हाथों ले (ना) ; इधर-उधर चल या
 हिल ; लहरा, झनझना, चमक (तलवार
 चमक) ; (हाथ या डंडे से) पीट, मार, चूर्ण
 कर, पुड़िया कर ; दबा, ठूस, दृढ़ कर,
 बाँध । सं.—मारने, पीटने या दबाने की
 क्रिया ; लगातार अल्प वृष्टि होना, बूँदा-
 बूँदी ।
 (१) अधु जडि (अ. दे.) क्रि.—मिल, लग,
 जड़, मिला, लगातार वह (जैसे आँसू)
 बिकार हो ; जगह दे, डूब, धँस ।
 (२) अधु जडि, अधु जडे (तद्) सं.—जटा
 (तद्) वेणी, जूड़ा जटा ।
 अधु जडित (क) सं.—दे. अधु ।
 अधु जडिप (क) सं.—चिड़ियों की चहचहा-
 हट, कोयल की ध्वनि ।
 अधु जडिसु (क) क्रि.—‘अधु’ (१) का
 प्रेरणार्थक रूप ।
 अधु जडिजुत (सम्) वि.—स्तंभीभूत,
 मंद ।
 अधु जडिभाव (सम्) सं.—जड़ता,
 चैतन्यहीनता, मंदता ।
 अधु जडुपु (अ. दे.) सं.—लटकती हुई
 वस्तु, पतंग की पूँछ ।
 अधु जडुल (तद्) वि.—दे. अधु ।
 (१) अधु जडे (क) क्रि.—दे. अधु (१).
 (२) अधु जडे (तद्) सं.—दे. अधु (२).
 अधु जडिज (अ. दे.) सं.—Judge (अंग्रेज़ी);
 जज, न्यायाधीश ।
 अधु जडु, अधु दडु (क) सं.—सामीप्य,
 नैकट्य, मिले रहना ।
 (१) अधु जडु (क) सं.—तेल की स्निग्धता,
 धब्बा, दाग, चिन्ती ; बकरी के दूध की
 अहितकर गंध ।
 (२) अधु जडु (तद्) सं.—जड (तद्) ;
 सुस्ती, आलस्य, बीमारी, रोग ; थकावट ।
 अधु जतण, अधु जतन (तद्) सं.—यत्न
 (तद्) ; उद्योग, प्रयत्न ।
 अधु जति (तद्) सं.—यतिः (तद्) ; संन्यासी,
 ऋषि ; यति या विराम ।

अतिगं जतिगे, अतिगं जोतिगे, अतिगं जोत्तगे, अतिगं जोत्तिगे (तद्) सं.— योक्त्रं (तत्) ; हल के जुए की रस्सी, आबंध ।

अति जतु (सम्) सं.—लाख ।

अतिजं जतुक (सम्) सं.—लाख ; एक प्रकार का गोंद ; हींग ।

अतिजं जतुकृत् (सम्) सं.—लाख बनाना, एक प्रकार का सुगंधित वृक्ष जिसमें लाख के कीड़े रहते हैं ।

अतिजं जतुके (सम्) सं.—लाख ; चमगादड़ ; एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।

अतिजं जतुरस (सम्) सं.—लाख ।

अतिजं जतुके (सम्) सं.—चमगादड़ ; एक सुगंधित वृक्ष ।

अति जते (क) सं.—संयोग, संभोग, मिलन, संगम, स्नेह ; साथी ; जोड़ी ।—गाति गति, गाति (क) सं.—सखी, सहेली, सहचरी ।

अति जत्त (तद्) सं.—यत्नः (तत्) ; यत्न, उद्योग ; धुन, परिश्रम ; कोशिश, प्रयत्न ।

अतिजं जत्तक (क) सं.—धोखा, प्रवंचना, कपट, छल, धोखेवाजी ; धोखेवाज़, कपटी, वंचक ।

अतिजं जत्तकि (क) सं.—धोखेवाज़ स्त्री, कपटी ।

अतिजं जत्तर (क) सं.—कौपीन, लंगोटी ।

अतिजं जत्तव (क) सं.—दे. अतिजं.

अतिजं जत्ताण (क) सं.—दे. अतिजं.

अतिगं जतिगे, अतिगं जोत्तगे, अतिगं जोत्तिगे, (तद्) सं.—योक्त्रं (तत्) ; हल के जुए की रस्सी ।

अतिजं जतु (क) सं.—दे. अतिजं.

अतिजं जतुक (क) सं.—दे. अतिजं.

अतिजं जतुक (क) सं.—फेन, झाग ;

अतिजं जतु (सम्) सं.—हंसली की हड्डी ।

अति जन (सम्) सं.—जीवधारी, प्राणी ; व्यक्ति ; लोग, संसार ।

अतिजं जनक (सम्) वि.—पैदा करनेवाला, उत्पन्न करनेवाला । सं.—पिता, बाप ; विदेह राजा जानक ।—जा, जे (सम्) सं.

—सीता, जानकी ।—जा, जे (सम्) सं.—राम ।—तनये, तनुजे, अत्तजे (सम्) सं.—सीता ।

अतिगं जनंगम (सम्) सं.—चांडाल ।

अतिजं जनता; अतिजं जनते (सम्) सं.—लोग, लोगों का समूह, जनता, मानव-जाति ; उत्पत्ति ।

अतिजं जनन (सम्) सं.—उत्पत्ति, जन्म, सृष्टि; प्रादुर्भाव ; जीवन, अस्तित्व ; वंश, कुल ; वर्ण ।

अतिजं जननाथ (सम्) सं.—राजा, नरेश ।

अतिजं जननि (सम्) सं.—माता, माँ ; एक प्रकार का सुगंधित पौधा ।

अतिजं जनप, अतिजं जनपति (सम्) सं.—राजा ।

अतिजं जनपद (सम्) सं.—जनपद, देश, राज्य ; राष्ट्र, प्रदेश जिसमें लोगों की बस्ती हो ; किसी राज्य का प्रजा-समूह ।

अतिजं जनसेजय (सम्) सं.—चंद्र-वंशी राजा जो परीक्षित के पुत्र थे । इन्होंने सर्पयाग किया था ।

अतिजं जनयितृ (सम्) सं.—पिता, जनक ।

अतिजं जनयित्रि (सम्) सं.—माता, जननी ।

अतिजं जनरमण, अतिजं जनवर (सम्) सं.—राजा, नृपति ।

अतिजं जनवाद, अतिजं जनवाते (सम्) सं.—समाचार, खबर ; अपवाद, अफवाह, कलंक ।

अतिजं जनश्रुति (सम्) सं.—किंवदंती, अफवाह ; बुद्धिमत्ता ।

अतिजं जनस्थान (सम्) सं.—दंडकवन का एक भाग ।

अतिजं जनांग (सम्) सं.—जाति, देश, किसी प्रदेश के निवासी (मै. प्र.) ।

अतिजं जनान, अतिजं जनानि (अ. दे.) सं.—जनाना (फ़ारसी) ; स्त्री ; स्त्रियों के योग्य, नपुंसक, अन्तःपुर से संबंधित, अन्तःपुर ।

अतिजं जनांत (सम्) सं.—प्रदेश ; जिला, देश का भाग ।

अतिजं जनार्दन (सम्) सं.—विष्णु, कृष्ण ।

अतिजं जनापवाद (सम्) सं.—लोक-निंदा, लोगों द्वारा आरोपित अपराध या दोष या अभियोग ।

अतिजं जनाश्रय (सम्) सं.—लोगों के ठहरने का स्थान, अस्थायी निवास स्थान या झोंपड़ा ।

(१) अतिजं जनि (क) क्रि.—बह, प्रवाहित, हो, खचित हो, बूँद-बूँद करके गिर, टपक ।

(२) अतिजं जनि (सम्) सं.—उत्पत्ति सृष्टि ; स्त्री, औरत ; माता ; बहू ; भार्या, पत्नी ; एक प्रकार का पौधा (जननी) ।

अतिजं जनित (सम्) वि.—कारणभूत, उत्पन्न, पैदा हुआ ; उत्पन्न करनेवाला ।

अतिजं जनियिसु (सम्) क्रि.—पैदा हो, उत्पन्न हो, जन्म ले ; संभव हो, हो ।

अतिजं जनियुविके (क) सं.—बहाव, बहना ; टपकाव टपकना ।

अतिजं जनीवार, अतिजं जन्वार, अतिजं जन्निवार, अतिजं जेनिवार (तद्) सं.—यज्ञोपवीत (तत्) ; जनेऊ ।

अतिजं जनिसु (सम्) क्रि.—दे. अतिजं.

अतिजं जनुम (तद्) सं.—जन्म (तत्) ; उत्पत्ति ।

अतिजं जनुस् (सम्) सं.—उत्पत्ति, जन्म ; सृष्टि ; जीवन ; अस्तित्व ।

अतिजं जने, अतिजं जेने, अतिजं जेने (क) सं.—भुइ, अंडे का गूदा ; अंडा ।

अतिजं जनेंद्र, अतिजं जनेश, अतिजं जनेश्वर (सम्) सं.—राजा ।

अतिजं जनोदय (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

अतिजं जनोलोक, अतिजं जनलोक (सम्) सं.—सात लोकों में एक ।

अतिजं जन्न (तद्) सं.—यज्ञः (तत्) ; याग ; किसी अश्व का नाम ; कन्नड के एक

जन्म का दिन ; एक लेखक का नाम ; इन्द्र पुत्री ; दुर्गा का नाम ।

अ०००० जयिसु, अ०००० जयसु, अ०००० जैसु (सम्) क्रि.—जीत, विजय पा, सफल हो । (प्रायः अ०००० ही लिखा जाता है) ।

अ०००० जर (अ. दे.) अ.—जरा (अरबी) ; थोड़ा, कुछ । (तद्) सं.—ज्वर ।

अ०००० जरंत (सम्) सं.—बूढ़ा आदमी ; भैंसा ।

अ०००० जरग (तद्) सं.—दे. अ०००००० ।

अ००००० जरगिसु (क) क्रि.—सरका, चला, थोड़ा दूर कर, जमीन पर रखी किसी वस्तु को थोड़ा हटा ; संपन्न कर ।

अ००००० जरगु (क) क्रि.—हो, (हाथ से) निकल; चल, सरक जा, अपने स्थान से थोड़ा हट ; एक तरफ या आगे जा ; संपन्न हो । सं.—सोने की पुड़िया ; फिसलन । अ०००००० जरगुण्डि (क) सं.—फिसलन का एक खेल जो बच्चे खेलते हैं ।

अ०००००० जरझरि (तद्) सं.—एक बर्तन जिससे पेड़-पौधों को अनेक धाराओं में पानी सींचा जाता है ।

अ००००० जरठ (सम्) वि.—जीर्ण ; कठोर ; शिथिल ; झुका हुआ, जर्जरित; वृद्धा; वृद्ध ।

अ००००० जरड (तद्) वि.—क्रूर, कठोर, कड़ा, सख्त, ठोस ।

अ००००० जरडु (क) सं.—थोथा, निस्सार या निरूपयोगी चीज़ ।

अ००००० जरडे, अ००००० जलडे, अ००००० जलडि, अ००००० जलडे (क) सं.—छलनी, चालनी ।

अ००००० जरण (सम्) वि.—बूढ़ा; जर्जरित, निर्बल । सं.—काला जीरा ; हींग ।

अ०००००० जरतारि, अ०००००० जरतारे (अ. दे.) अ००००००—जरतारी (हिं) ।

अ००००० जनुर्दा, अ००००० जरदि, अ००००० जर्दा, अ००००० जन (सं) (अ. दे.) सं.—जरदा (फ़ारसी) ।

अ००००० जनक (सम्) व्यक्ति ; लोग, (सम्) सं.—बूढ़ा बैल या

अ००००० जनक (सम्) उत्पन्न करनेवाला । अ००००० जरुडु, अ००००० जर्बु राजा जानक ।—अ००००० जं (अरबी) ; भयानक

होना. विस्मयकारी, धमक-धमक, ठाठ-बाट ।

अ०००००० जरायु (सम्) सं.—केंचुली ; गर्भाशय के ऊपर की झिल्ली, गर्भाशय, भग । —अ ज (सम्) सं.—वे प्राणी जो गर्भ से पैदा होते हैं, जैसे—मनुष्य, मृग आदि ।

(१) अ००००० जरि (क) क्रि.—फिसल जा, हाथ से ढरक जा या झूट जा. नीचे गिर ; प्रपात हो ; कम हो, घट, क्षीण हो, दुबला हो ; निंदा कर झिड़की दे ; भला-बुरा कह । सं.—प्रपात, पहाड़ों के बीच का ढलुवा प्रदेश ; झरना ।

(२) अ००००० जरि (अ. दे.) सं.—जरी (फ़ारसी) ।

अ०००००० जरगिसु (क) क्रि.—दे. अ०००००० ।

अ०००००० जरिगु (क) क्रि.—दे. अ०००००० ।

अ०००००० जरीफ, अ०००००० जिराफ़े (अ. दे.) सं.—जिराफ़ा (अरबी) ।

अ०००००० जरीबु (अ. दे.) सं.—जरीब (अरबी) ।

अ०००००० जरगिसु (क) क्रि.—दे. अ०००००० ।

अ०००००० जरुगु (क) क्रि.—दे. अ०००००० ।

अ०००००० जरुरु (अ. दे.) वि. और सं.—ज़रूर, जरूरी ।

अ०००००० जरुकु (क) सं.—चप्पल या जूते की चरचराहट ।

अ०००००० जरह (क) सं.—परिभव, पराभव, अनादर, तिरस्कार ।

अ०००००० जरह (क) क्रि.—तिरस्कार कर, अनादर कर, नीचा दिखा, निंदा कर ; सं.—गोजर, कनखजूरा ('अ' भी लिखा जाता है) ।

अ०००००० जरिचु, अ०००००० जरुचु (क) क्रि.—बड़बड़ा, अधिक बोल, बक, बेकार की बात कर, गप्पे लड़ ।

अ०००००० जरे (क) क्रि.—दे. अ०००००० ।

अ०००००० जरेने (क) अ.—जल्दी, शीघ्रता से ।

अ०००००० जर्कु (क) क्रि.—नख से नोच या खरोच ।

अ०००००० जर्गु (क) सं.—किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न होनेवाला शब्द ।

अ०००००० जर्जर (सम्) वि.—बूढ़ा, जीर्ण,

निर्बल, शिथिल, टूटा हुआ, विभक्त, चीरा हुआ, चोटिल । अ०००००० जर्जड (तद्) । अ०००००० जर्जरिसु—क्रि. रू. ।

अ०००००० जर्तारि (अ. दे.) सं.—दे. अ०००००० ।

अ०००००० जर्बु, अ०००००० जर्बु (क) क्रि.—डरा, धमका ; निंदा कर, गाली दे । सं.—धमकी डोट ; निंदा, कोसना ।

अ०००००० जल (सम्) वि.—सुस्त शीतल, ठंडा ।

सं.—पानी ; कपट, धोखा ; एक प्रकार सुगन्ध द्रव्य ; पूर्वापाठा नक्षत्र । —कं क (सम्) सं.—जल से संबंधित, शैद्रा, कौड़ी । —अ०००००० क्रीडे, अ०००००० खेलन (सम्) सं.—जल में खेल । —अ०००००० गार (सम्) सं.—सोना पाने की आशा से नाल, नदी, आदि के पानी को साफ़ करके देखने-वाला व्यक्ति ।—अ०००००० ग्रह (सम्) सं.—मगर; घड़ियाल, जोक ।—अ०००००० चर (सम्) सं.—पानी में रहनेवाले प्राणी ; मछली ।—अ०००००० ज (सम्) सं.—कमल ; शंख ; सालि-ग्राम ।—अ०००००० जज (सम्) सं.—ब्रह्मा ।—अ०००००० जजांड (सम्) सं.—ब्रह्मांड ।—अ०००००० जलदनयने (सम्) सं.—कमल के दल के सदृश नेत्रवाली स्त्री ।—अ०००००० जनाभ (सम्) सं.—विष्णु ।—अ०००००० संभव (सम्) सं.—ब्रह्मा । अ०००००० जात (सम्) सं.—अ००००००—अ०००००० तरंग (सम्) सं.—लहर, एक वाद्य ।—अ०००००० द (सम्) सं.—बादल ; सुगंधित वृण ।—अ०००००० दनिनद (सम्) सं.—इन्द्र का वज्र ।—अ०००००० द्रोणि (सम्) सं.—बाल्टी ।—अ०००००० धर (सम्) सं.—बादल ।—अ०००००० धरमानं (सम्) सं.—आकाश, गगन ।—अ०००००० धि (सम्) सं.—समुद्र ।—अ०००००० निधि (सम्) सं.—समुद्र ; चार की संख्या ।—अ०००००० पति (सम्) सं.—वहण ; समुद्र ।—अ०००००० जलपुष्प (सम्) सं.—पानी में होनेवाला फूल ; मछली ।—अ०००००० प्रतिबन्धन (सम्) सं.—बांध, सेतु ।—अ०००००० प्रलय (सम्) सं.—जल द्वारा नाश ।—अ०००००० प्राय (सम्) वि.—पानी

अक्षर जहजु

से भरा, जलपूर्ण, गीला, भीगा।— अक्षर
 प्रांत (सम्) सं.—किनारा, तट।— अक्षर
 फणि (सम्) सं.—जल का सौंप।— अक्षर
 भंग (सम्) सं.—लहर।— अक्षर भ्रम
 (सम्) सं.—आवर्त, भँवर।— अक्षर
 मुच् (सम्) सं.—बादल।— अक्षर यन्त्र
 (सम्) सं.—जल खींचने की कल।—
 अक्षर राशि (सम्) सं.—समुद्र। अक्षर रह
 (सम्) सं.—कमल।— अक्षर वायस
 (सम्) सं.—सुर्गावी।— अक्षर वाह (सम्)
 सं.—बादल।— अक्षर विहंग (सम्) सं.—
 जलपक्षी।— अक्षर शयन (सम्) सं.—
 विष्णु।— अक्षर शूक, अक्षर नीलि (सम्)
 सं.—सिवार।
 अक्षर जलकने, अक्षर जलकने, अक्षर
 जलकने, अक्षर जलकने अक्षर तलकने
 (क) अ.—साफ साफ, शुद्ध रूप से, ठीक
 प्रकार से, निर्मल रूप से, जल्दी।
 अक्षर जलड़े (क) सं.—दे. अक्षर।
 अक्षर जलदारि (सम्) सं.—नाली, नाला।
 अक्षर जलमुलि (क) सं.—एक प्रकार का
 तृण का पौधा (The Indian acalypha)।
 अक्षर जलकने (क) अ.—दे. अक्षर।
 अक्षर जलाकर (सम्) सं.—जल का स्थान,
 झरना; फवार, सरोवर।
 अक्षर जलाधार (सम्) सं.—तटाक, सरो-
 वर, तालाव।
 अक्षर जलायि (अ. दे.) क्रि.—
 जला (हिं.)।
 अक्षर जलालि (अ. दे.) सं.—जलाल
 (अरबी), मुहरम के समय किया जानेवाला,
 एक प्रकार का छद्मवेशी नृत्य।
 अक्षर जलावर्त (सम्) सं.—भँवर।
 अक्षर जलाशय (सम्) सं.—समुद्र,
 तालाव, सरोवर, झरना; खस; सिंवाड़ा;
 मछली; मूर्खता, वेवकूफी। अक्षर
 जलाशय (तद्)।
 अक्षर जलाश्रय (सम्) सं.—दे. अक्षर
 अक्षर।
 अक्षर जलाश्रिते (सम्) सं.—यक्षिणी।

अक्षर जलिक (अ. दे. ?) सं. उग धोखे-
 बाज।
 अक्षर जलिके, अक्षर जलके अक्षर जलके
 (सम्) सं.—जोंक। अक्षर जिगुकि,
 अक्षर जिगुके—तद्।
 अक्षर जलुगु (क) सं.—वह स्थान जहाँ से
 पानी टपकता या स्रवित होता है।
 अक्षर जलुम, अक्षर जलम (तद्) सं.—जन्म
 (तद्)।
 अक्षर जलोके (सम्) सं.—जोंक।
 अक्षर जलोदर (सम्) सं.—एक रोग।
 अक्षर जलोद्धते (सम्) सं.—एक
 वृत्त का नाम।
 अक्षर जलौके (सम्) सं.—जोंक।
 अक्षर जलदि, अक्षर जलदु, (अ. दे.) अ.—
 जल्दी (अरबी)।
 अक्षर जलप, अक्षर जलपन (सम्) सं.—वात-
 चीत, वार्तालाप, संवाद, गपशप; वाद-
 विवाद।
 अक्षर जलपाक (सम्) सं.—व्यर्थ की बात
 करनेवाला, गप्पे लड़नेवाला।
 अक्षर जलडि, अक्षर जलड़े (क) सं.—दे.
 अक्षर।
 अक्षर जलने (क) अ.—अचानक, सहसा,
 यकायक।
 अक्षर जल्लि (क) सं.—धान रखने का झावा;
 कंकड़, पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े; झूठ,
 असत्य बात; झब्बा, लटकन।
 अक्षर जल्लिसु (क) क्रि.—चालनी खे झार।
 अक्षर जल्लु (क) सं.—फटे रहने की स्थिति
 (जैसे कपड़ा या केले का पत्ता होता है);
 मल्लाह का डंडा, बाँस।
 अक्षर जल्ले (क) सं.—दे. अक्षर; बाँस का
 डंडा; ईख।
 (१) अक्षर जव (सम्) सं.—तेजी, फुर्ती। वि.
 —तेज, फुर्तीला। (तद्) सं.—अक्षर जम,
 यम: (तद्)।
 अक्षर जवन (सम्) वि.—तेज; फुर्तीला।
 सं.—युद्ध की शिक्षा प्राप्त घोड़ा।

अक्षर जवनिके (सम्) सं.—पर्दा; कतात,
 चिक।
 अक्षर जवरदके (?) सं.—कवच, बखतर।
 अक्षर जवदुर (तद्) सं.—यमपुरं (तद्)।
 अक्षर जवल, अक्षर जवलि (तद्) सं.—यमलं
 और यमली (तद्)=जोड़ा, युग्म।
 अक्षर जवलि (क) सं.—कपड़ा, बख।—
 क, अक्षर कार, [अक्षर कार] (क) सं.—
 कपड़ों का व्यापारी।
 अक्षर जवलि (तद्) क्रि.—जोड़ा हो,
 लग, संयुक्त हो।
 अक्षर जवलि, अक्षर जवुगु (क) सं.—दल-
 दल, घँसान, घँसाऊ भूमि।
 अक्षर जवाजि, अक्षर जवादि, अक्षर
 जवाजि (सम्) सं.—जवादि, एक सुगंधित
 द्रव्य, कस्तूरी।
 अक्षर जवान (अ. दे.) सं.—नौकर, सेवक।
 अक्षर जवावु (अ. दे.) सं.—जवाव
 (अरबी)।— अक्षर दार=उत्तरदायी पुरुष।
 —अक्षर दारि=उत्तरदायित्व।
 अक्षर जवाहीरु (अ. दे.) सं.—जवाहर
 (अरबी); रत्न।
 अक्षर जवि, अक्षर जवे (क) सं.—दे. अक्षर।
 अक्षर जवुगु, अक्षर जवुलु (क) सं.—दे.
 अक्षर।
 अक्षर जवे (क) सं.—दे. अक्षर (तद्) सं.—यव:
 (तद्); जवा, जौ।
 अक्षर जवन (तद्) सं.—यौवनं (तद्);
 जवानी।
 अक्षर जव्व, अक्षर जव्वनिगे, अक्षर
 जव्वने (तद्) सं.—जवान स्त्री, युवती।
 अक्षर जस (तद्) सं.—यशस् (तद्); कीर्ति।
 —अक्षर वंत=कीर्तिमान्।
 अक्षर जहगीरु, अक्षर जागीरु, अक्षर
 जहगीरु जाहागिरि (अ.
 दे.) सं.—जागीर (अरबी)।— अक्षर दार=
 जागीरदार।
 अक्षर जहजु, अक्षर जाजु (अ. दे.) सं—
 जहाज़ (अरबी)।

अङ्गु जहू

अङ्गु जहूतु (सम्) सं.—सुहोत्र राजा का पुत्र जिसने गंगाजी को अपना दत्तक बनाया था ।

अङ्गु तनये (सम्) सं.—गंगाजी ।
अङ्गु जल, अङ्गु झल (तद्) सं.—('ज्वल' से) —गरमी, गरम भाव ; चमक. दमक ।

अङ्गु जलक (तद्) सं.—नहाना, स्नान ।

अङ्गु जलकने (क) अ.—दे. अङ्गु ।

अङ्गु जलं, अङ्गु झलं (क) सं.—

ऊपरी वस्त्र, आच्छादन ।

अङ्गु जलं, अङ्गु झलं (क) सं.—पंखा, व्यंजन ; व्यंजनधारी ।

अङ्गु जलरुह (तद्) सं.—दे. अङ्गु ।

अङ्गु जल्लु (क) सं.—दे. अङ्गु ।

अङ्गु जल्लुग (क) सं.—निर्बल पुरुष, बेकार मनुष्य ।

अङ्गु जल्लु (क) सं.—बॉस का डंडा ; ईख ।

अङ्गु जांगल (सम्) वि.—देहाती ; रम्य, सुन्दर, नयनरंजन ; जंगली, बहशी, बर्बर ; उजाड़ ; सूना ।

अङ्गु जांगलिक, अङ्गु जांगुलिक (सम्) सं.—साँप पकड़नेवाला, विषविद्या जाननेवाला ; जादूगर ।

अङ्गु जांगुल (सम्) सं.—विषविद्या ; जादूगरी ।

अङ्गु जांगिक (सम्) सं.—धावक, हलकार ; ऊँट ।

अङ्गु जांड़े (अ. दे.) सं.—झंडा (हिं.) ; पताका ।

अङ्गु जांब, अङ्गु जांबु (अ. दे.) सं.—

('जाम'—फ़ारसी से) —प्याला, बिना हथिये या इतवड का पानी पीने का प्याला ।

अङ्गु जांबव (सम्) सं.—जंबू वृक्ष से संबंधित, जंबूफल ; = अङ्गु जांबवंत जांबवान्, रीछों के राजा का नाम जिसने श्रीराम की सहायता की थी ।

अङ्गु जांबवति (सम्) सं.—जांबवान् की पुत्री ।—रमण रमण (सम्) सं.—श्रीकृष्ण ।

अङ्गु जांबवद (सम्) सं.—सोना ; सोने का ।

(१) अङ्गु जाग (क) सं.—हरा रंग ।

(२) अङ्गु जाग (तद्) सं.—यागः (तत्) ; यज्ञ

(३) अङ्गु जाग (अ. दे.) सं.—जगह (फ़ारसी) ; स्थान ।

अङ्गु जागटे. अङ्गु जागटे, अङ्गु जेगटे (क) सं.—घड़ियाल, घंटा, गोलाकार वाद्य विशेष ।

अङ्गु जागर (सम्) सं.—जागृति, कवच, बख्तर ।

अङ्गु जागरण, अङ्गु जागरणे (सम्) सं.—जागे रहना, जागृत रहना, रतजगा, अङ्गु जागरणे एकादश

जागरणे द्वादश पारणे—एकादशी के दिन रतजगा और द्वादशी के दिन पारणा (कह.) ।

अङ्गु जागरुक्ते (सम्) सं.—जागृति, सावधानी, सावधान रहना ।

अङ्गु जागिसु (क) क्रि.—(शरीर को पूर्ण रूप से) ऊपर उठा ।

अङ्गु जागु (क) सं.—मौन, चुप्पी ।

अङ्गु जागुड (सम्) सं.—केसर, जाफ़ान ।

अङ्गु जागृत (सम्) वि.—जागते हुए, सावधान ।

अङ्गु जाग्रत् (म्) वि.—सजग, सावधान । अङ्गु जाग्रते (सम्) सं.—सावधानी ।

अङ्गु जाजि (तद्) सं.—जातिः (तत्) ; जायफल ।—अङ्गु पत्रे = अङ्गु जापत्रे—जायपत्र ।

(१) अङ्गु जाजु (क) सं.—लाल रंग ; कापाय वर्ण ।

(२) अङ्गु जाजु (अ. दे.) सं.—जहाज़ । (तद्) सं.—काँच ।

अङ्गु जाड (क) सं.—लिंगायत जाति का जुलाहा ; मकड़ी । अङ्गु जाडगिति—लिंगायत जाति के जुलाहे की स्त्री । अङ्गु जाडति = अङ्गु ।

अङ्गु जाडणे अङ्गु जाडेण (अ. दे.) सं.—झाड़ना (हिं.) फेंकना, कपड़े झाड़ना ।

अठसोडके जाडमालि (अ. दे.) सं.—(संभवत 'झाड़' से)—मेहतर, भंगी ।

अठसोडके जाडि (क) सं.—बैठने का आसन विशेष ; सुराही ; समूह ; बाढधारा ; कंवल । वि.—घना, बहुत, अतिशय ।

अठसोडके जाडिके (क) सं.—जुलाहे का व्यवसाय ; जुलाहों का समूह ।

अठसोडके जाडिसु (अ. दे.) कि—झाड़ ; झाड़ दे झाड कर साफ कर, धूल निकाल ; फेंक, हटा ; फुर्तीला कर, भागे बड़ा ; (भाग जलाते समय) पंखा झल ।

अठसोडके जाडु, अठसोडके जाडे (क) सं.—पद-चिह्न या चरण-चिह्न ; पहिये आदि का चिह्न ; सूक्ष्म-सूचना, सूक्ष्मरूप से पता लगना, संकेत ।

अठसोडके जाड्य (सम्) सं.—ठिठुरन, शीतलता ; सुस्ती, अकर्मण्यता ; मूर्खता, जड़ता ।

अठसोडके जाण (तद्) सं.—ज्ञान (तत्) ।

अठसोडके जाण (तद्) वि.—जाननेवाला, समझदार ; बुद्धिमान, प्रवीण, चतुर ।—अठस तन, (तद्) सं.—बुद्धिमानी, समझदारी, चतुराई ।

अठसोडके जाणायिल, अठसोडके जाणायल (तद्) सं.—दे. अठस ।

अठसोडके जाणमे, अठसोडके जाणवे, अठसोडके जाणमे (तद्) सं.—चतुराई ; बुद्धिमानी, निपुणता, समझदारी ।

अठसोडके जाणे (तद्) सं.—समझदार या चतुर स्त्री ।

अठसोडके जात (सम्) कृ.—उत्पन्न, पैदा हुआ, निकला हुआ, कारणभूत ; द्रवित, दुःखी ।

अठसोडके जातक (सम्) सं.—जातक, जन्म-कुण्डली ।

अठसोडके जातकर्म (सम्) सं.—संतान के जन्म के समय क्रिया जानेवाला संस्कार विशेष ।

अठसोडके जातवेद (सम्) सं.—अग्नि-भाग ; वृत्तविशेष का नाम ।

अठसोडके जातसूत्रक (सम्) सं.—किसी के जन्म के कारण लगनेवाला सूत्रक, जात-शौच ।

झा०-जाताबाकि

झा०-जाताबाकि (अ. दे.) सं. — शेष भाग, घटाने के बाद बचनेवाला अंश ।
 झा० जाति (सम्) सं.—उत्पत्ति, जन्म; जन्म से निश्चित होनेवाली जात; वर्ण, जाति; वंश, कुल; श्रेणी, कक्षा; किसी वस्तु या जीव की पहचान का चिह्न; जायफल; अग्निकुण्ड; सप्त स्वर; छंद विशेष; कुसुम, पुष्प; समूह; अठारह की संख्या; आँवले का पौधा; इलेग्मातक; चमेली ।
 झा०-जाति (अ. दे.) सं.—जायफल, जाति के व्यवहार में भले ही भेद हो, पर नीति में नहीं ।
 झा०-जाति (अ. दे.) सं.—जायफल, जाति के व्यवहार में भले ही भेद हो, पर नीति में नहीं ।
 झा०-जाति (अ. दे.) सं.—जायफल, जाति के व्यवहार में भले ही भेद हो, पर नीति में नहीं ।

(२) झा० जानि (सम्) सं.—पत्नी ।
 झा० जानु (सम्) सं.—घुटना ।
 झा० जापु (क) सं.—लंबे डग की गणना; एक प्रकार का ताल ।
 झा०-जावाल (सम्) सं.—बकरा; एक ऋषि का नाम ।
 झा०-जाविता (अ. दे.) सं.—जावता (अरबी); नियम, कानून, व्यवस्था; सूची, विवरण-पत्र ।
 झा०-जावु (अ. दे.) सं.—जवाब; उत्तर, लिखा-पढ़ी ।
 झा०-जामदग्नि (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम ।
 झा०-जामदग्न्य (सम्) सं.—परशुराम ।
 झा०-जामदार (अ. दे.) सं.—('जमा-दार' — (अरबी, फ़ारसी) — खज़ाने का अफसर ।
 झा०-जामा (सम्) सं.—लडकी; बहू, पुत्रवधू ।
 झा०-जामा (सम्) सं.—लडकी; बहू, पुत्रवधू ।
 झा०-जामीन, झा०-जामिन (अ. दे.) सं.—जामिन (अरबी) — जिम्मा, उत्तरदायित्व ।
 झा०-जामिन (अ. दे.) सं.—जिम्मा लेने-वाला, उत्तरदायी ।
 झा०-जामेय (सम्) सं.—बहन का पुत्र, भानजा ।
 झा०-जायक (क) सं.—पीला चंदन, एक प्रकार की लकड़ी ।
 झा०-जायमान (तद्) सं.—स्वभाव प्रकृति, जीवन ।
 झा०-जायापति (सम्) सं.—पति-पत्नी ।
 झा०-जायिल (क) सं.—कुत्ता ।
 झा०-जायु (सम्) सं.—दवाई; वैद्य; झा०-जाये (सम्) सं.—पत्नी, स्त्री ।
 झा०-जार (सम्) सं.—परस्त्री से प्रेम करने-वाला, जार, उपपति ।
 झा०-जार (सम्) सं.—उपपति से उत्पन्न बेटा ।
 झा०-जार (सम्) सं.—व्यभिचार ।

(सम्) सं.—कृष्ण ।
 झा०-जारि (अ. दे.) सं.—जारी करना, शासन व्यवस्था, शासन पत्र ।
 झा०-जारिगे (क) सं.—जारी करने मर—एक वृक्ष जिसके फल खट्टे होते हैं (The Mysore Gamboge tree) ।
 झा०-जारे (सम्) सं.—जारिणी, छिनाल औरत ।
 झा०-जारे (क) सं.—फिसलतन ।
 झा०-जारे (क) क्रि.—फिसला; गिरा, निकलने दे ।
 झा०-जारे (क) क्रि.—फिसल, सरक; पैर फिसल; दूर हो; संकुचित हो, संकोच कर, वापस ले; अदृश्य हो; जल्दी जा, हट जा, गिर; टपक, स्रवित हो, बह; शिथिल हो, ढीला पड़ ।
 झा०-जारे (क) सं.—वह स्थान जहाँ फिसलने हो ।
 झा०-जाल (सम्) सं.—जाल, फंदा; मकड़ी का जाल; कवच; खिड़की; गर्व, घमंड; संग्रह, समुदाय; संख्या; जादू; माया; भ्रम; आवरण; अनखिला फूल; अलंकार, सिंगार; इंद्रिय; आकाश, गगन; कदंब वृक्ष ।
 झा०-जालक (सम्) सं.—दे. झा० १, २, ४, ८ और ९; घोंसला; चूडामणि, आभूषण विशेष ।
 झा०-जालकरण (सम्) सं.—मछली पकड़ने की क्रिया; संग्रह करने की क्रिया ।
 झा०-जालगाति, झा०-जालगति (सम्) सं.—धोखेबाज़ स्त्री ।
 झा०-जालगार, झा०-जालगार (सम्) सं.—धोखेबाज़ पुरुष ।
 झा०-जालधर (सम्) सं.—एक देश का नाम ।
 झा०-जालरि (सम्) सं.—जाल का काम; झालर ।

(१) झा० जानि (क) सं.—एक छोटा पौधा ।

ज्जलारि (क) सं. — एक प्रकार का लाख का पेड़ ।
 ज्जलि (क) सं. — बबूल का वृक्ष ; चर्चोडे की बेल ; एक प्रकार का कांटेदार पौधा ।
 ज्जलिक (सम्) सं. — मछुआ ; मकड़ी ; बहेलिया, चिड़ीमार ; जादूगर ; सूवेदार ; बदमाश, गुंड ;
 ज्जलिके (सम्) सं. — जाल ; कवच ; मकड़ी ; जौक ; विधवा ; धूघट ; लोहा ; ऊनी वस्त्र ।
 ज्जलिनि (सम्) सं. — फलिनी नामक पौधा ।
 ज्जलिसु (सम्) क्रि. — हिला ; चावल को पानी में डालकर कंकड निकाल, साफ़ कर ।
 ज्जले (क) सं. — दे. ज्जल ।
 ज्जलम (सम्) सं. — बदमाश, गुंडा, नीच ; मूर्ख ।
 ज्जलव (तद्) सं. — यामः (तत्) प्रहर, याम ।
 ज्जलवक (अ. दे.) सं. — महावर ; मुंडन के पहले के बच्चे के बाल ।
 ज्जलवडि (तद्) सं. — एक प्रकार की फूहड़ कविता ।
 ज्जलवळ (तद्) वि. — सामास्य (तत्) ; साधारण, मामूली ।
 ज्जलवु (तद्) सं. — दे. ज्जल ।
 ज्जल्वि (अ. दे.) अ. — ज्यादा, अधिक, बहुत । सं. — ज्यादाती, बलात्कार ।
 ज्जलव्हक (सम्) सं. — जौक ; खाट ।
 ज्जलव्हगि (अ. दे.) सं. — दे. ज्जलव्हगि ।
 ज्जलव्हगि (अ. दे.) वि. — जाहिर (अरबी) ; प्रकट, व्यक्त, प्रकाशित, प्रसिद्ध ।
 ज्जलव्हगि (सम्) सं. — जान्हवी, गंगा ।
 ज्जलव्हक (तद्) सं. — गवाक्ष, खिड़की ;
 ज्जलव्हकणे (तद्) सं. — धोखा, ठगना ।
 ज्जलव्हसु (तद्) क्रि. — दे. ज्जलव्हसु ।

ज्जलु (क) सं. — थोथा या निस्सार पदार्थ ।
 ज्जलुगे (क) सं. — कपड़ा, वस्त्र, पोशाक ।
 ज्जलुके (क) सं. — मृग, कुरंग, हिरन ।
 ज्जलुगे (क) सं. — उन्मत्तता, मद ; मजीठा कालमेशी ।
 ज्जलुगे (क) क्रि. — कचोटनी काट, नोच, नख से आघात कर । सं. — चिपचिपा, गोंद, स्निग्धता ।
 ज्जलुगे (क) सं. दे. — ज्जलुगे (सं.) ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे, ज्जलुगे, ज्जलुगे, ज्जलुगे (तद्) सं. — जौक, रक्तप ; जल्ला (तद्) ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (क) सं. — छोटा नाला ।
 ज्जलुगे (क) क्रि. — उछल, कूद, छल्लांग मार ; चबा । सं. — चिपचिपा, गोंद ; कपास के पौधे को लगनेवाला रोग विशेष, मुरचा ।
 ज्जलुगे (क) वि. — जो चिपचिपा हो, गोंददार, स्निग्ध, लगनेवाला । क्रि. — क्लेश हो दुःख हो ।
 ज्जलुगे (सम्) वि. — विजय पाने का अभिलाषी ।
 ज्जलुगे (सम्) सं. — विजय पाने की अभिलाषा ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे सं. — जुगुप्सा (तत्) ।
 ज्जलुगे (क) सं. — दे. ज्जलुगे ।
 ज्जलुगे (तद्) सं. — दे. ज्जलुगे ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) वि. — भूखा ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) सं. — भूख ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) सं. — दुश्मन, शत्रु, वैरी ।
 ज्जलुगे (क) सं. — टिटिभ, टिटिहरी ; झींगुर, शलभ, पतंग ; सुभर-बाड़ा ; गंदा स्थान ।
 ज्जलुगे (क) सं. — अल्पवृष्टि, वर्षा की मंद गति ।
 ज्जलुगे (क) सं. — तलछट ; वह पदार्थ जो

स्निग्ध हो, स्निग्धता ; चिपचिपा ; धब्बा, चित्ती ; दुर्गंधता ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे, ज्जलुगे (क) सं. — सूक्ष्मता, महीन होना ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) सं. — यति, मुनि ; बुद्ध, अर्हत्, शिव ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) सं. — पतिव्रता स्त्री ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) सं. — वह जिसने शत्रु को जीत लिया हो ; अजितसेन के पुत्र का नाम ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे, ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) सं. — वह जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) वि. — जयशील, विजयी ।
 (१) ज्जलुगे (क) वि. — छोटा, लघु ।
 (२) ज्जलुगे (सम्) सं. — बौद्ध या जैन साधु ; गुरु ; विष्णु ; जैनी अर्हत्तों की उपाधि ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (क) सं. — दे. ज्जलुगे ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे, ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) सं. — अर्हत् ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (सम्) सं. — जैन दर्शन ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (क) सं. — अनाज, धान्य ।
 ज्जलुगे (क) क्रि. — दे. ज्जलुगे (१) ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (क) क्रि. — पिघला, द्रवित होने ; निर्बल कर, अधिकार की गति क्षीण कर ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (क) सं. — दे. ज्जलुगे क्रि. — अल्पवृष्टि हो, धीरे-धीरे वर्षा हो, वर्षा की बूँदे पड़, मर्मर ध्वनि हो ; पिघल, द्रवित हो ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (क) क्रि. — दे. ज्जलुगे क्रि. ।
 ज्जलुगे, ज्जलुगे (तद्) सं. — कृपणः (तत्) ; जूस, लोभी । ज्जलुगे, ज्जलुगे — स्त्री. लिं. ।

अनुसूची जिप्पटे (क) सं.—एक पक्षी विशेष (The small bird Amadavat) ।

अनुसूची जिप्पे (क) सं.—एक पैर या दो पैरों के बल कूदना ।—उध आट=ऐसा एक खेल ।

अनुसूची जिबटिग (क) सं.— एक प्रकार की घास ।

अनुसूची जिबटु (क) क्रि.— नख से आघात कर, नोच, कचोटनी काट, चुटकी काट ।

अनुसूची जिबह (क) सं.—भाँख का मल या कीचड़ ।

अनुसूची जिबल (क) सं.—चिकनी सुपारी ।

अनुसूची जिबु (क) सं.—लस, चिपचिपाहट ।

अनुसूची जिम्मण्डे (क) सं.—झिल्लिका ।

अनुसूची जिम्मि (क) सं.— एक कंदीला वृक्ष (Zanthoxylon rhetsa) ।

अनुसूची जिरले [अनुसूची जिरले] (क) सं.—शत-पदी ; गोजर, कनखजूरा ।

अनुसूची जिरलि, [अनुसूची जिरलि] अनुसूची जिरिले [अनुसूची जिरिले] अनुसूची जिले (क) सं.— गोजर, कनखजूरा ।

अनुसूची जिलिविलि, अनुसूची जिलेवि (अ. दे.) सं.—जलेबी (हिं.) ।

अनुसूची जिलेखु (अ. दे.) सं.—चमक, दमक, प्रकाश ।

अनुसूची जिला, अनुसूची जिले (अ. दे.) सं.— जिला ।—दाएँ दार = जिले का अधिकारी ।

अनुसूची जिल्लु (क) सं.—ठण्डे पानी को छूने से होनेवाला भाव ।

अनुसूची जिणु (सम्) वि.— विजयी, जीतने-वाला । सं.— सूर्य ; विणु ; इन्द्र ; अर्जुन । अनुसूची चाप (सम्) सं.— इन्द्र-धनुष ।

अनुसूची जिहासे (सम्) सं.— त्यागने की इच्छा, अनिच्छा ।

अनुसूची जिह (सम्) सं.— तिरछा, टेढ़ा, बाँका, अनियमित ; बेईमान, दुष्ट ; धुँधला, अधि-यारा ; नैतिक ।—ग (सम्) सं.— सर्प ।

अनुसूची जिह्वा, अनुसूची जिह्वे (सम्) सं.— जीभ ;

आग की लौ ।—उस रव (सम्) सं.—पद, शब्द ।

अनुसूची जीकठि (क) सं.— पिचकारी ।

अनुसूची जीकुकु (क) क्रि.— झूल ; झुला ।

अनुसूची जीग (क) सं.— शीघ्रता, जल्दी ।

अनुसूची जीटु (क) सं.— आधार, अवलंब, सहारा ; आश्रय ।

अनुसूची जीत (तद्) सं.— जीवित् (तत्) जीना, जीवन, मजदूरी, श्रम, वेतन ।

अनुसूची जीतगार [गण्ड गार] (क) सं.— मजदूर, श्रमिक, नौकर, कूली ।

अनुसूची जीन (सम्) वि.— बूढ़ा, पुराना, घिसा हुआ । (अ. दे.) सं.— जीन (फ़ारसी) ।— गार (अ. दे.) सं.— चमड़े का काम करनेवाला ।

अनुसूची जीनगि (क) सं.— एक पौधा विशेष ।

अनुसूची जीनतन (सम्) सं.— कृपणता, कंजूसी ।

अनुसूची जीनि (सम्) सं.— कंजूस स्त्री, कृपण स्त्री ।

अनुसूची जीमूत (सम्) सं.— बादल, मेघ ; पर्वत, गिरि ; हाथी, गज ; कालापन, असित ; एक प्रकार का तृण ।—उत् लते (सम्) सं.— विजली ।— अनुसूची वाहन (सम्) सं.— इन्द्र ।

अनुसूची जीय, अनुसूची जीय्य (क) सं.— स्वामी, प्रभु, जी, सरकार, हुज़ूर ।

अनुसूची जीर (सम्) सं.— तलवार ; जीरा ।

अनुसूची जीरक, अनुसूची जीरण (सम्) सं.— जीरा । अनुसूची जीरगे, अनुसूची जीरिगे (तद्) ।

अनुसूची जीरु, अनुसूची गीरु (क) सं.— चिल्लाहट, चिल्लाना, पुकार, चीख ।

अनुसूची जीर्ण (सम्) वि.— पुराना, प्राचीन, घिसा हुआ, शिथिल, नष्ट ; पचा हुआ ।— अनुसूची कोश (सम्) सं.—पेट ।—उत् तन (तद्) सं.— बुढ़ापा, अस्थिरता, नाश ।

अनुसूची जीर्ण (सम्) सं.— बुढ़ापा ; नाश ।

अनुसूची जीर्णिसु (सम्) क्रि.— नष्ट हो,

जीर्ण हो, पुराना हो, घिस जा ; पच, हज़म हो ।

अनुसूची जीर्ति (सम्) सं.— पाचन शक्ति ।

अनुसूची जीव (सम्) सं.— जीना, अस्तित्व स्थिर रखना ; प्राण ; अंतरात्मा, जीवात्मा ; जीवन ; आजीविका, पेशा ; मरुतों का नाम ; बृहस्पति ; कर्ण का नाम ; धुप्य ; नक्षत्र ; वाणी, बान ; पानी ; घोड़ा ; धनुष की डोरी ।— अनुसूची एत्तु (क) क्रि. जीवन - रक्षा कर ।— अनुसूची कोडु (क) क्रि.— जीवन, प्राण दो ।— अनुसूची तेगे (क) क्रि.— प्राण ले ; मार डाल ; घिसा कर, सता ।

अनुसूची जीवक (सम्) सं.— सेवक, नौकर ; जैन संन्यासी ; एक दवाई का पौधा ; संपेरा ; सूदखोर ।

अनुसूची जीवकले (सम्) सं.— जीवन की चमक-दमक या प्रकाश, जीवित का चिह्न ।

अनुसूची जीवग (तद्) सं.— जीवकः (तत्) ; दे. अनुसूची.

अनुसूची जीवतोके (सम्) सं.— वह स्त्री जिसके बच्चे जीवित हों ।

अनुसूची जीवन, (सम्) सं.— जीवन, जिंदगी ; पानी ; पेशा, व्यवसाय ।— अनुसूची वाह (सम्) सं.— बादल ।

अनुसूची जीवनिधि (सम्) सं.— जलराशि, समुद्र ।

अनुसूची जीवनीय (सम्) सं.— पानी, जल ।

अनुसूची जीवंत (तद्) वि.— जीवत् (तत्) ; जीवित, जीनेवाला, प्राणधारी ।

अनुसूची जीवन्मुक्ति (सम्) सं.— जन्म लेने से मुक्ति ।

अनुसूची जीवमान (सम्) सं.— जीवन की अवधि, जीवन का समय, जीवन ; जीवन-काल का भरण-पोषण-व्यय ।

अनुसूची जीवि (सम्) सं.— प्राणधारी या जीव-धारी ।

अनुसूची जीविके (सम्) सं.— जीवन का आधार, रोजगारी, व्यवसाय ।

झीविड जीवित (सम्) सं.—जीवन, अस्तित्व ; जीने का आधार, पेशा ; मज़दूरी आदि ।
 झीविडेश जीवितेश, झीविडेश्वर जोवितेश्वर (सम्) सं.—जीवन का स्वामी, प्रेमी, पति ।
 झीविसु जीविसु (सम्) क्रि.—जिओ, जीवित रहो. अस्तित्व में रहो ।— ३^३ विके (सम्) सं.—जीना ।
 झीवे जीवे (सम्) सं.—जीना ; धनुष की डोर ; पौधा विशेष ।
 झुंगु जुंगु (क) सं.—नारियल की जटा या बाल ; रोम जो शरीर के गुप्तांग में हो ; दे. झुंगु ।
 झुजु जुजु (क) सं.—मुर्गे की कलगी, लाल रंग ; सूक्ष्मता, महीन या पतला होना ।
 झुजुरु जुजुरु (क) वि.—धुंधराले । — कालु कूदलु = धुंधराले बाल ।
 झुजुरि जुजुरि (अ. दे.) सं.—बड़ा हुक्का ।
 झुजुं जुजुं (क) सं.—पैरों में चैतन्यहीनता (Numbness) ।
 झुकायिसु जुकायिसु (अ. दे.) क्रि.—झुका (हिं.) ।
 झुग जुग (तद्) सं.—युग (तद्), युग ।
 झुगुति जुगुति (तद्) सं.—युक्ति (तद्) ; उपाय ।
 झुगुषे जुगुषे (सम्) सं.—अरुचि, घृणा, तिरस्कार ।
 झुडु जुडु, झुडु जुडु (क) सं.—[‘चूडा’ —तद्?]—शिखा, चूडा, चोटि, केश ।
 झुडुलि जुडुलि (क) सं.—एक प्रकार का कवूतर ।
 झुडुपु जुडुपु (अ. दे.) सं.—झुरमुट ।
 झुगुगिसु जुगुगिसु (क) क्रि.—सिकुड़ा, संकुचित कर ।
 झुगुगु जुगुगु (क) क्रि.—सिकुड़, संकुचित हो ; घट, न्यून हो, कम हो, खो । सं—सिकुड़न, संकुचितता ; शरीर की शिथिलता ।
 झुडु जुडु (तद्) सं.—युद्ध (तद्) ; लड़ाई ।
 झुडुवर जुडुवर, झुडुवर जुडुवर (क) सं.—आम का रेशापन ।

झुम् जुम्, झुनु जुनु, झुम जुम, झुमु जुमु, झुम् जुम्, झुम् जुम्, झुम् जुम् (क) सं.—दे. झुम् ।
 झुमकि जुमकि (अ. दे.) सं.—झुमकी (हिं) ।
 झुम्ने जुम्ने (क) अ.—जल्दी, झट, फौरन ।
 झुमान जुमान, झुलमान जुलमान, झुलमान जुलमान, झुलमान जुलमाने (अ. दे.) सं.—जुमाना (फारसी) ; अर्थदंड ।
 झुलाबु जुलाबु (अ. दे.) सं.—जुलाब (अरबी) ; दस्त लानेवाली दवा ।
 झुलायि जुलायि (अ. दे.) सं.—जुलाहा ।
 झुवु जुवु (क) सं.—चलने के कारण पैरों में होनेवाले दुःख या पीडा को सूचित करने शब्द ।
 झुगुलिसु जुगुलिसु (क) क्रि.—ऊँघ ; झूम ।
 झुगु जुगु (क) क्रि.—झूम, धीरे-धीरे हिल ।
 झुजु जुजु, झुजु जुजु, झुदु जुदु (तद्) सं.—द्यतं (तद्) जुआ ।—गार गार (तद्) सं.—जुआखोर ।
 झुजुट जुजुट (सम्) सं.—शिवजी की जटा । (अ. दे.) सं.—झूठ ; बच्चों का शारीरिक बल ।
 झुजुति जुजुति (सम्) सं.—वेग, रफ्तार । (अ. दे.) सं.—जूता, जूती ।
 झुदुगु जुदुगु, झुदुगु जुदुगु (तद्) सं.—जुआ खेलनेवाला ।
 झुजुपु जुजुपु, झुजुपु जुजुपु (क) सं.—अल्पवृष्टि, तुपार वर्षा ।
 झुजुति जुजुति (सम्) सं.—ज्वर, बुखार ।
 झुजु जुजु (क) सं.—पशुओं (कुत्ते, घोड़े आदि) की गर्दन पर के लंबे बाल ।
 झुजुयु जुजुयु, झुजुयु जुजुयु (क) सं.—तिलक, पुंड़ ।
 झुजु जुजु (क) सं.—बर्तन की सँड ।
 झुजु जुजु, झुजु जुजु, झुजु जुजु (सम्) सं.—जभाई, जम्हाई ।
 झुजु जुजु (क) सं.—दे. झुजु ।
 झुजु जुजु (क) क्रि.—दे. झुजु ।

झुगु जिंगि (अ. दे.)—सं.—युद्ध से संबंधित, जंगी ।
 झुजु जेट्टि (क) सं.—दे. झुजु ।
 झुजु जेट्टे (तद्) सं.—जटा (तद्) ; बेणी ।
 झुजु जैरि. झुजुयुजु जैरियुविके (क) सं.—निंदा, अनादर, अपमान, गाली देना, तिरस्कार । झुजु जैरे—क्रि. रू. ।
 झुजु जे, झुजु जेड (क) सं.—शहद, मधु ।
 झुजु जेकरिसु (क) क्रि.—झंकार कर, प्रशंसा कर, स्तुति कर ।
 झुजु जेकार (क) सं.—झंकार ; प्रशंसा ; भोंकार ।
 झुजु जेड (क) सं.—दे. झुजु (२) ।
 झुजु जेडि (क) सं.—एक प्रकार की मिट्टी ।
 झुजु जेनु, झुजु जेनु (क) सं.—मधु, शहद ; मधुमक्खी ।—झुजु नोण (क) सं.—मधुमक्खी ।—झुजु पुट्टि, झुजु हुट्टि, झुजु हुट्ट, झुजु हुट्ट, गडु गडु (क) सं.—छत्ता ।—झुजु तुप (क) सं.—मधु, शहद ।—झुजु मेण (क) सं.—लाख ।—झुजु हुलु, झुजु हुलु (क) सं.—मधुमक्खी । झुजु कच्छुवाग ब्रेड एंदरे विट्टेते?—जब मधुमक्खी काटने लगे तब मत काटो कहने से वह छोड़ देगी क्या? (कह.) ।
 झुजु जेने (क) सं.—एक वृक्ष का नाम (The tree Adenanthera aculeta) ।
 झुजु जेनु (अ. दे.)—जेब (अरबी) ।
 झुजु जेरु (क) सं.—दीवार ।
 झुजु जेवणिके (क) सं.—माधुर्य, मीठापन, मनोहरता ।
 झुजु जेट्टे (तद्) सं.—जेष्टा (तद्) ।
 झुजु जैत्र (सम्) वि. विजयी, जयदील ।—रथ (सम्) सं.—विजयरथ ।—यज्ञ यात्रे (सम्) सं.—विजययात्रा ।
 झुजु जैन (सम्) सं.—जैनी, जैन मतावलंबी ।—धम्म आगम (सम्) सं.—जैनों का आगम ।

झुंमिनि जैमिनि

झुंमिनि जैमिनि (सम्) सं. — एक ऋषि का नाम। — भारत (सम्) सं. — कन्नड जैमिनि भारत के कवि लक्ष्मीश हैं।

झुंम जैसु (तद्) क्रि. — जीत, विजय पा।
झुंमगुल जोगुलि, झुंमगुल जोगुलि (क)

सं. — मूर्छा, अचेतनता, बेहोशी।
झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — झंझट।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — झींगुर।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — पील-घास, निस्सार

पदार्थ, हल्का पदार्थ; सिर का पिछला भाग।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — गुच्छा, समूह।
झुंमगुल जोगुल (क) क्रि. — कँपा, थर-

थरा; काँप; चल पड़, निकल, उठ;
मदमत्त हो, नशे में आ; चेतनाहीन हो;

मूर्ख बन।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — चैतन्यहीनता, अचेत-

नता, मूर्छा, जड़ता।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दे. झुंमगुल।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दे. झुंमगुल।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दे. झुंमगुल।

(१) झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दे. झुंमगुल; समूह;
कतार, पंक्ति।

(२) झुंमगुल जोगुल (क) सं. — धोखा, प्रवंचना।
झुंमगुल जोगुल (क) क्रि. — धोखा दे प्रवंचना कर।

झुंमगुल जोगुल (तद्) सं. — ज्योत्स्ना (तत्)।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दोना।

झुंमगुल जोगुल (क) अ. — मनभनाता हुआ।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दे. झुंमगुल; पैरों

में (रक्तप्रवाह रुक जाने से) अचेतनता।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — कबरी का अग्रभाग, जूड़े की नोक।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — लार।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दे. झुंमगुल।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — 'जो जो' शब्द।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — बोल, मुसव्वर।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — हिंडोला, झूला।
झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — (शौक भरबी)

— डील-डौल, वच्चादि में ठाट-बाट। —
ठाट गार = शौकीन आदमी, ठाट-बाट से

रहनेवाला। = ठाट गारि — स्त्री. लि.।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — सावधानी, जागरू-

कता, होशियारी; सुंदरता, प्रौढिमा, मनो-
हरता, लालित्य। झुंमगुल जोगुल = सावधान

रहो।
झुंमगुल जोगुल (तद्) सं. — योगः (तत्); योगः;
एक प्रकार की नाव।

झुंमगुल जोगुल (तद्) सं. — योगिनी (तत्);
भिक्षुणी।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — मिल. जुड़ जा; तैयार कर।
झुंमगुल जोगुल (क) क्रि. — बेहोश हो,

टिटुर, सन्न रह जा।
झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल जोगुल (क) सं. —

लोरी।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — झरना, सोता; जल-

प्रपात; पैरों की निश्चिष्टता या सुन्न होना।
झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दे. झुंमगुल।

झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — व्यभिचारी,
लंपट।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — गणना-
गिनती, मिलाना; तैयार करना।

झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — जोड़ी, जोड़ा।
झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — दे. झुंमगुल,

झुंमगुल जोगुल — क्रि. रू.।
झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — मिलन, संगम;

साहचर्य, संगति; जोड़ा, जोड़ी, समानता,
एकरूपता।

झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — वेश्या, रंडी,
व्यभिचारिणी।

झुंमगुल जोगुल (तद्) सं. — ज्योति (तत्);
प्रकाश।

झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल जोगुल
(अ. दे.) सं. — धोती।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — लसदा, होना, गलना
(जैसे गुड़)।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — शूद्रों की एक
उपजाति।

झुंमगुल जोगुल (क?) सं. — सावधान रहना,
रक्षा करने की सावधानी, रक्षा करना।

झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल, झुंमगुल (क) सं.
— सुस्त या बालसी पुरुष।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — लटकनेवाली
माली।

झुंमगुल जोगुल (क) सं. — दे. झुंमगुल ३.
झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल

जोगुल (तद्) सं. — ज्योतिषी (तत्)।
झुंमगुल जोगुल (क) क्रि. — बहा, स्रवित

होने दे।
झुंमगुल जोगुल (क) क्रि. — द्रवित हो, चू, टपक,

बह। सं. — बहना, टपकना, टपकाव;
दीवारों पर अलंकार के लिए खींची जानेवाली

लाल रेखा।
झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — बल, शक्ति,

जलदबाजी, शीघ्रता, हिंसा, बलात्कार, दबाव,
अनिवार्यता, बाध्यता।

झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल जोगुल (क) क्रि. —
लटक, हिल, हिल-डुल, डोलायमान हो,

इधर-उधर जा; झूल; शिथिल हो, ढीला
हो; लटका; ढीला कर। सं. — लटकना,

ढीला करना, ढिलाई।
(१) झुंमगुल जोगुल (तमिल) सं. — काम, व्यव-

हार, संबंध।
(२) झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल जोगुल (अ. दे.)

सं. — लटकना, इधर-उधर हिलना; विलंब,
देर।

झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल जोगुल (अ. दे.)
सं. — जुहार (हिं.); बड़ों द्वारा छोटों का

अभिवादन; व्योहार, उत्सव, विनोद।
झुंमगुल जोगुल (तद्) सं. — यवः (तत्); जौ,

ज्वार।
झुंमगुल जोगुल (अ. दे.) सं. — झोली (हिं.)।

झुंमगुल जोगुल (सम्) सं. — बुद्धिमान; विद्वान;
बुधग्रह; मंगलग्रह; ब्रह्मा।

झुंमगुल जोगुल, झुंमगुल जोगुल (सम्) वि. —
विदित, जाता हुआ।

ॐ श्री ज्ञप्ति (सम्) सं. — जानना, समझना; ज्ञान, बुद्धि; स्मरण, याद ।
 ॐ श्री ज्ञप्ति (सम्) सं. — संबंधी, रिश्तेदार, पंचक संबंध—भाई आदि; दूर का रिश्तेदार ।
 ॐ श्री ज्ञान (सम्) वि. — ज्ञाता, जाननेवाला ।
 ॐ श्री ज्ञान (सम्) सं. — ज्ञान, जानकारी, समझदारी, दक्षता, बुद्धिमत्ता, निपुणता, बोध, चिद्वत्ता विवेक, धार्मिक या पवित्र बोध ।
 ॐ श्री ज्ञानवंत (सम्) सं. — ज्ञानी पुरुष, विद्वान्. बुद्धिमान ।
 ॐ श्री ज्ञानवंते (सम्) सं. — विदुषी, बुद्धिमती ।
 ॐ श्री ज्ञानि (सम्) सं. — प्रतिभावान्, बुद्धिमान, ज्ञानी, जाननेवाला; ज्योतिषी; ऋषि, मुनि ।
 ॐ श्री ज्ञानिके (सम्) सं. — ज्ञान, समझदारी, बुद्धिमत्ता; खोज, विचारशीलता ।
 ॐ श्री ज्ञापक (सम्) सं. — जतलाना, प्रकटन, सूचना; याद, स्मरण, स्मृति; ॐ श्री ज्ञापिसु (सम्) क्रि. — याद दिला (प्रे) ।
 ॐ श्री ज्ञेय (सम्) वि. — जाननेयोग्य ।
 ॐ श्री ज्ञ्यानि (सम्) सं. — बुढ़ापा, जीर्णता, अस्थिरता ।
 ॐ श्री ज्ञ्यामंडल (सम्) सं. — भूमंडल ।
 ॐ श्री ज्येष्ठ (सम्) वि. — जेठा, सब से बड़ा, प्रधान, सर्वोत्तम । सं. — जेठ का महीना ।
 ॐ श्री ज्येष्ठे (सम्) सं. — बड़ी बहन ।
 ॐ श्री ज्योति (सम्) सं. — प्रकाश, चमक, स्पष्टता; जलनेवाला दीपक ।
 ॐ श्री ज्योतिरिंगण (सम्) सं. — पतंग ।
 ॐ श्री ज्योतिर्लते (सम्) सं. — एक लता का नाम ।
 ॐ श्री ज्योतिष (सम्) सं. — ज्योतिषशास्त्र ।
 ॐ श्री ज्योतिषि ज्योतिषिक, ॐ श्री ज्योतिषिक (सम्) सं. — ज्योतिषी, भविष्य बतलानेवाला ।

ॐ श्री ज्योतिष्टोम (सम्) सं. — एक सोमयाग ।
 ॐ श्री ज्योतिष्मति (सम्) सं. — रात; मन की शांति ।
 ॐ श्री ज्योत्स्न, ॐ श्री ज्योत्स्ने (सम्) सं. — जुन्हाई; चाँदनी. प्रकाश । — ॐ श्री प्रिय (सम्) सं. — चकोर ।
 ॐ श्री ज्योत्स्नि ज्योत्स्नि (सम्) सं. — चाँदनी; एक प्रकार का खीरा ।
 ॐ श्री ज्वर (सम्) सं. — बुखार, ताप; मानसिक व्यथा; पीडा, क्लेश ।
 ॐ श्री ज्वलन (सम्) वि. — दहकनेवाला दहनकारी, जलनेवाला । सं. — दहकन, जलन, भमक ।
 ॐ श्री ज्वलितारिके (सम्) सं. — दीवार पर लिखे चित्र ।
 ॐ श्री ज्वलित (सम्) वि. — जलता हुआ, प्रकाशमान ।
 ॐ श्री ज्वलित (सम्) क्रि. — जल, दहक, प्रकाशमान हो ।
 ॐ श्री ज्वालामुखी (सम्) सं. — ज्वालामुखी पर्वत, आतिशी पहाड़, अग्नि-पर्वत ।
 ॐ श्री ज्वाले [ॐ श्री ज्वाला] (सम्) सं. — शोला, प्रकाश; अग्नि; एक स्त्री का नाम ।

ॐ श्री

ॐ श्री — कन्नड वणमाला का तेईसवाँ अक्षर, चवर्ग का चौथा व्यंजन ।
 ॐ श्री (क) वि. — नौ की संख्या ।
 ॐ श्री झंकार. ॐ श्री झंकृति (सम्) सं. झंकार, झंकृति, मंद ध्वनि, आभूषणों के बजने का शब्द विशेष, गुंजार ।
 ॐ श्री झंके (क) सं. — डाँट, धमकी; धवरा-हट ।
 ॐ श्री झंझानिल, ॐ श्री झंझा. वात (सम्) सं. — आंधी पानी, हवा और वर्षा, तूफान ।
 ॐ श्री झंझाल (अ. दे.) सं. — पर्दा, आच्छादन ।

ॐ श्री झगड़े, ॐ श्री झगड़े, ॐ श्री झगड़े (अ. दे.) सं. — झगड़ा ।
 ॐ श्री झगिसु (अ. दे.) क्रि. — जगमगा ।
 ॐ श्री झटि (सम्) सं. — छोट्टा पौधा ।
 ॐ श्री झटिति (सम्) अ. — शीघ्रता से, जल्दी, तुरंत ।
 ॐ श्री झण (सम्) सं. — झन झन शब्द । ॐ श्री ज्युं झणकार = नूपुर, कंकण आदि की ध्वनि ।
 ॐ श्री झणु (क) वि. बो. — शाबाश । अच्छा ।
 ॐ श्री झर, ॐ श्री झरि (सम्) सं. — झरना, चश्मा. सोता ।
 ॐ श्री झरर (सम्) सं. — ढोल विशेष ।
 ॐ श्री झरि (क) सं. — लटकन, झन्डा; चौरी । (सम्) सं. —
 ॐ श्री झष (सम्) सं. — मछली । — ॐ श्री केतन (सम्) सं. — कामदेव । — ॐ श्री केतनध्वंसि (सम्) सं. — शिवजी । — ॐ श्री ध्वज (सम्) सं. — कामदेव ।
 ॐ श्री झळ (क) सं. — उष्णता. गरमी ।
 ॐ श्री झळक (तद्) सं. झळिका (तद्); उबटन लगाने से छूटा हुआ शरीर का मैल; चमक, दमक । ॐ श्री झळपिसु (तद्) क्रि. — चमक. झळक, प्रकाशित हो। ॐ श्री झळपिसु = ॐ श्री झळपिसु । ॐ श्री झळपिसु, ॐ श्री झळपिसु = ॐ श्री झळपिसु ।
 ॐ श्री झंङुं झंङुं (सम्) सं. — पायल, पाय-जेब, झंझन; हवा या पानी गिरने की ध्वनि ।
 ॐ श्री झंङुं (सम्) सं. — वन, उपवन, कुंज, लताच्छादित स्थान ।
 ॐ श्री झंङुं (अ. दे.) सं. — झाड़ू ।
 ॐ श्री झंङुं (अ. दे.) क्रि. — झाड़ू दे, बुहारी कर; फटकार बता, भाडे हाथों ले (लाक्ष.) ।
 ॐ श्री झंङुं (सम्) सं. — एक प्रकार की झाड़ी, कटसरैया ।
 ॐ श्री झंङुं (सम्) सं. — झंङुं, ॐ श्री झंङुं, ॐ श्री झंङुं

छात्रांगु टोंगु झंकरिसु

छात्रांगु टोंगु झंकरिसु (तद्) क्रि.—('झंकार' से) झंकार कर, गुंजार कर ।
 छात्रांगु टोंगु झंकार (तद्) सं.—झंकार, झंकृति, भ्रमर का गुंजार ।
 छात्रांगु टोंगु झौलिक (तद् ?) सं.—सुपारी रखने की छोटी थैली ।

छं ज

छं ज—कन्नड वर्णमाला का चौबीसवाँ अक्षर ; चवर्ग का अंतिम व्यंजन ।
 छां ज: (सम्) सं.—संगीत, गान ; घर्षर ध्वनि ; शुक्र ; बैल ; टेढ़ी चाल ।

छं ट

छं ट—कन्नड वर्णमाला का पच्चीसवाँ अक्षर ; टवर्ग का प्रथम व्यंजन ।
 छां ट टंक (सम्) सं.—कुदाली, कुल्हाड़ी छेनी ; तलवार ; क्रोध ; अहंकार, घमंड ; टांग ; पहाड़ी का ढाल ; सिका । —शाले (सम्) सं.—टकसाल ।
 छां ट टंकक (सम्) सं.—चाँदी का सिका जिस पर टप्पा लगा हो ।
 छां ट टंकण (सम्) सं.—सुहागा ।
 छां ट टंकार (सम्) सं.—टंकारने का शब्द, धनुष की डोरी का शब्द ।
 छां ट टंकाहति (सम्) सं.—लात, पैर से मारना ।
 छां ट टंकुड (सम्) सं.—दे. छां ट टंकुड.
 (१) छां ट टंके (क) सं.—सोंटा. डंडा ।
 (२) छां ट टंके (तद्) सं.—पैर टांग ।
 छां ट टंगु (क) सं.—ज़ीन, ज़ीन की पेटी ।
 छां ट टंगायिसु (अ. दे.) क्रि.—('ठगना' से) —ठग, धोखा दे ; याद दिला, जाता. दृढ़ता से समझा ; थक जा, श्रांत हो ।
 छां ट टक (अ. दे.) सं.—ठग, धोखावाज़ ।
 छां ट टकिसु—क्रि. रु. । छां ट टकतन (अ. दे.) सं.—ठगना ।

छं ट टंके, छं ट टंके, छं ट टंके (क) सं.—ध्वज, पताका ।
 छां ट टगर, छां ट टगर (क) सं.—भेड़ा, मेढा ।
 छां ट टगरिसे (क) सं.—चक्रमर्द नामक पौधा (The plant cassia tora) ।
 छां ट टणकने, छां ट टणने (क) अ.—छलांग मारते हुए, 'टण' ध्वनि के साथ ।
 छां ट टणायिसु (अ. दे.) क्रि.—ठहरा, रोक ।
 छां ट टपाल, छां ट टपाल, छां ट टपालु (अ. दे.) सं.—ढाक ।
 छां ट टपग (अ. दे.) सं.—जगह, ठहरने की जगह ; एक प्रकार का गीत ।
 छां ट टपे (अ. दे.) सं.—दे. छां ट टपे ।
 छां ट टरायिसु (अ. दे.) क्रि.—ठहरा, स्थिर कर, निश्चय कर, निर्णय कर ।
 छां ट टरावणे, छां ट टरावु (अ. दे.) सं.—ठहराव, निश्चय, निर्णय ।
 छां ट टरायिसु (अ. दे.) क्रि.—('टहलना' से) टहल इधर-उधर चल ; ले चल ।
 छां ट टलासु, छां ट टलासु (अ. दे.) सं.—तलाश (तुर्की) ; खोज, शोध ।
 छां ट टवणे (क) सं.—जोड़ना, हिसाब करना ।
 छां ट टवळि, छां ट टवळि (अ. दे.) सं.—धोखा झूठ । —गार गार = धोखावाज़ ।
 छां ट टवळि छां ट टवळि (क) सं.—कवच, चक्र ।
 छां ट टांगा (अ. दे.) सं.—तांग (हिं.) ।
 छां ट टाकु (क) सं.—आधार, सहारा, दीवार, मेहराब । (अ. दे.) सं.—लेखनी, लेखनी की नोक ।
 छां ट टाण (?) वि.—मोटा, तगड़ा ।
 छां ट टावु (तद्) सं.—स्थान (तद्) ; जगह ; कमरा, घर ।
 छां ट टिकाणि, छां ट टिकाणि (अ. दे.) सं.—('ठिकाना' से)—जगह, स्थान ; घर ; आसन ; ज़मीन, अफवाह का आधार ।
 छां ट टिकि (क) सं.—सिगरेट के पॉकेट के आगे और पीछे के भाग—छं ट टाट (क)

सं.—बच्चों का एक खेल जिसमें सिगरेट के पॉकेट के भागों का उपयोग होता है ।
 छां ट टिके. छां ट टिके (अ. दे.) सं.—अँगूठी या मुन्दरी में जडा रत्न ।
 छां ट टिटिभ (सम्) सं.—टिटहरी ।
 छां ट टिपायिसु (अ. दे.) क्रि.—ताश के पत्तों को मिलाकर वाँट ।
 छां ट टिप्पण, छां ट टिप्पणि (सम्) सं.—व्याख्या, टीका ।
 छां ट टिकाकार, (सम्) सं.—टीकाकार, टीका या भाष्य लिखनेवाला ।
 छां ट टिकिसु (सम्) क्रि.—टीका-टिप्पणी कर ; समझा, स्पष्ट कर ।
 छां ट टिकु, छां ट टिके (तद्) सं.—टीका (तद्) । (अ. दे.) सं.—सोने के तारों का हार ; अँगूठी में जडा रत्न ।
 छां ट टिव (क) सं.—एक पक्षी विशेष ।
 छां ट टुमिकि, छां ट टुमुक, छां ट टुमुक (अ. दे.) सं.—नगाड़ा डफला ।
 छां ट टंकलु (क) सं.—दक्षिण दिशा, दक्खिन ।
 छां ट टेंगु (क) सं.—उंगु टेंगु—नारियल ।
 छां ट टेंके (क) सं.—दे. छां ट टेंके ; आलिंगन ; उतनी लकड़ी जितनी की हाथों में पकड़ी जा सके ; संयुक्तता, झुण्ड ।
 छां ट टेंकेय (क) सं.—दे. छां ट टेंके ।
 छां ट टेंगरु (क) सं.—भेड़ा, मेढा ।
 छां ट टेंपर (क) सं.—उछाल, सरपट चाल छां ट टेंपरिसु (क) क्रि.—उछाल, सरपट चल । छां ट टेंपरिसुह = उछलना, सरपट चलना ।
 छां ट टेंवरिसु (क) क्रि.—टिडुर, सन्न हो, कुंठीकृत हो, बेहोश हो, स्तब्ध रह ।
 छां ट टेंक (क) सं.—कमर, कटि । —छं ट टेंक (क) क्रि.—कमर कस ; तैयार हो ।
 छां ट टेंकायिसु (अ. दे.) क्रि.—टोक (हिं.) धीरे से मार, थपथपा ।
 छां ट टेंगि, छां ट टेंगे (क) सं.—पेड़ की डाली ।
 छां ट टेंगु (क) सं.—मूठ, मुष्टि, धूँसा ।

डोकरे टोकलि (क) सं.—केकड़े का बाहरी कड़ा हिस्सा (crust of erab); वेकार शब्द, बकवक, बकवास ।

डोहणे (क) क्रि.—खोद; धोखा दे ।

डोहणे टोप, डोहणे टोपे (क) सं.—आच्छादन; टिलका ।

डोहणे टोपि डोहणे टोपिणे, डोहणे टोपि, डोहणे टोपि (अ. दे.) सं.—टोपी । — ढाळ हाकु (क) क्रि.—धोखा दे, ठगाई कर (सुह.) ।

डोहणे टोळु (क) सं.—खोखलापन, रिक्तता, सारहीनता ।—सजळ मातु = थोथी बात ।

डोहणे टोळु (क) सं.—खोखला; नाडीव्रण नासूर; आँख की बीमारी जिसके कारण आँख की पुतली नष्ट हो जाय ।

डोहणे टोपि (अ. दे.) सं.—दे डोहणे.

ठ ठ

ठ ठ —कन्नड वर्णमाला का छवीसवाँ अक्षर, टवर्ण का दूसरा व्यंजन ।

ठ ठ (क) वि.—दो की संख्या ।

ठठु टक (अ.दे.) सं.—ठग, धूर्त, धोखेबाज़ — ठंन तन = ठगाई, धोखेबाज़ी ।

ठठुठे टक्कि (अ. दे.) सं.—धोखेबाज़ स्त्री ।

ठठुठे टक्कि (अ. दे.) क्रि.—धोखा दे, ठग, शठता कर ।

ठठुठु टकु (अ. दे.) सं.—दे. ठठुठु.

ठठुठुठु टकुगति (अ. दे.) सं.—दे. ठठुठु.

ठठुठु ठके (क) सं.—ध्वज, पताका । दे. ठठुठु. ठठुठुठु ठणकार (सम्) सं.—ठण ठण शब्द. झंकार ।

ठठुठुठु ठमाल, ठठुठुठु ठमाल (क) वि.—सुस्त, आलसी; नटखट ।— ठंन तन (क) सं.—आलस्य, सुस्ती; नटखटपन ।

ठठुठु ठस्से (क) सं.—ठप्पा, सुहर ।

ठठुठुठु ठाकूर (तद्) सं.—ठाकूर: (तत्); देव प्रतिमा ।

ठठुठु ठाण (तद्) सं.—(संगीत में) विराम । ('स्थान'—तत्) ।

ठठुठु ठाणा, ठठुठु ठाणे (अ. दे.) सं.—थाना ।

ठठुठु ठाण्य (अ. दे.) सं.—डैरा, शिविर । ठठुठु ठायि, ठठुठु ठाये (तद्) सं.—स्थायी

गाने की एक विधि ।

ठठुठु ठावु (तद्) सं.—स्थान (तत्); स्थान, जगह ।

ठठुठु ठिकाणि. ठठुठु ठिकाणे (अ. दे.) सं.—ठिकाना ।

ठठुठु ठीव, ठठुठु ठेव (क) सं.—पिस्तूल या बंदूक का घोषा ।

ठठुठु ठीवि (क) सं.—ठाट-बाट, दर्प, ठाठ, शान, आभरण ।

ठठुठु ठेक्के (क) सं.—पताका, ध्वज, झंडा ।

ठठुठु ठेव (क) सं.—दे. ठठुठु.

ठठुठु ठेवणि ठठुठु ठेवु (अ. दे.) सं.—गिरवी, निधि ।

ठठुठु ठौळि (अ. दे.) सं.—धोखा, वंचना । — ठठुठु कार. ठठुठु ठौळिग = धोखेबाज़, वंचक ।

ड ड

ड ड —कन्नड वर्णमाला का सत्ताईसवाँ अक्षर; टवर्ण का तीसरा व्यंजन ।

ड ड (क) वि.—तीन की संख्या ।

डड डंक डड डंके (अ. दे.) सं.—डंका (हिं.) ।

डड डंके (क) सं.—सोंटा, डंडा, काठ का दण्ड ।

डड डंगर, डड डंगुर (क) सं.—डुग-डुगी, मुनादी ;

डड डंगि (क) सं.—सोंटा, डंडा, काठ का दण्ड ।

डड डंगुर (क) सं. दे. डड डंगुर ।

डड डंगुरु [डड डंगुरु] (क) सं.—आंख-मिचौन खेल ।

(१) डड डंगे (क) सं.—दे. डड डंगे.

(२) डड डंगे (अ. दे.) सं.—दंगा, हलचल-उपद्रव करनेवाला ।

(१) डड डव (क) सं.—भारी वस्तुओं के गिरने से निकलनेवाली ध्वनि ।

(२) डड डव, डड डवु (अ. दे.) सं.—एक प्रकार का ढोल या डंका ।

डड डव, डड डव (क) सं.—'डव डव' शब्द, एक अनुकरणमूलक ध्वनि ।

डड डवरि (क) सं.—एक प्रकार का छोटा बर्तन ।

डड डवने (क) अ.—'डव' शब्द के साथ, तुरंत ।

डड डवळ, डड डवण (क) सं.—बड़ी सुई ।

(१) डड डवु (क) सं.—खोखली पेटी की आवाज़, ढोल की ध्वनि । क्रि.—डकेल, फेंक, अगे डाल, (किसी के ऊपर) डाल ।

(२) डड डवु (अ. दे.) सं.—दंभ, आडंबर, दिखावा; एक प्रकार का ढोल ।— डड डार (अ. दे.) सं.—आडंबर या दिखावा करनेवाला ।

डड डवुगळि (क) सं.—एक कटीली झाड़ी ।

डड डवे, डड डवे (क) सं.—बाँस की तीली या डंडा ।

डड डवर डड डवर डड डवरु (सम्) सं.—डवरु. एक प्रकार का बाजा जो शिवजी को प्रिय है । डड डवरु (तद्) ।

डड डव (तद्) सं.—दंभ ।— डड डार (तद्) सं.—दंभी, अहंकारी ।

डड डवर (सम्) सं.—जमाव, समूह; दिखावट; दंभ, अहंकार; साहस्य, ममानता ।

डड डवन (सम्) सं.—उदान. आकाश में उड़ना; पालकी, डौली ।

डड डवकि डड डवकु [डड डवके] का भी प्रयोग होता है (क) सं.—डकार ।— डड डारु (क) क्रि.—डकार से ।

डड डव (क) सं.—दे. डड डव.

डक्के डक्के (क) सं. - पीकदान ।
 डक्के डक्के (क) सं. — औत्सुक्य,
 हलसा ।
 डक्के डक्के (अ. दे.) सं. —
 छोटा होल ।
 डक्के डक्के (तद्) सं. — डमरुक (तत्) ।
 डक्के डक्के (क) सं. — मोटा
 बाँस ; कपाल, खोपड़ी ।
 डक्के डक्के (अ. दे.) सं. - दे. डक्के. (तद्)
 सं.—जयड़ा ।
 डक्के डक्के (अ. दे.) सं. —
 हील-हौल, आकार, रूप ; हंग, विधान ;
 चिह्न, निशान ; अनुमित कर या लगान,
 अनुमित उत्पादन ; आडंबरपूर्ण व्यवहार,
 थोथा व्यवहार ।
 डक्के डक्के (तत्) सं.—दांभि (तत्) ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के
 दाहिनि, डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—राक्षसी
 की तलवार. काली की एक अनुचरी ।
 डक्के डक्के (क) सं.—श्रुगा, निहाई ।
 डक्के डक्के (तद्) सं. — दाडिम,
 (तत्), अनार का पेड़
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं. — लाठी
 दण्ड, सोंटा ।
 डक्के डक्के (तद्) सं.—दामन् (तत्) ; स्त्रियों
 की मेखला, कमरबंद ।
 डक्के डक्के (तद्) सं.—दे. डक्के.
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं. — चमक,
 दमक, प्रकाश. सुंदरता. मनोहरता ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के,
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के (क)
 क्रि. - अच्छा लग, चमक, प्रकाशित हो,
 मनोहर हो ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के,
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के,
 डक्के डक्के (तद्) सं.—दे. डक्के.
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) क्रि.—दे. डक्के ;
 हंधर-उधर हिल (पंखे के जैसे) ।
 डक्के डक्के (सम्) सं. — झगड़ा ; बच्चा ;
 भंडा ; गेंद, गोला ।

डक्के डक्के (सम्) सं. बच्चा ; मूर्ख । डक्के
 डक्के = बच्ची ।
 डक्के डक्के. डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के
 (क) सं.—टकर. सिर की टकर ।
 डक्के डक्के (क) सं.—टकर ; एक प्रकार का
 होल । — डक्के डक्के (क) क्रि. — टकर
 लगा. टकर मार ।
 डक्के डक्के (क) सं.—योनि ।
 डक्के डक्के (सम्) सं.—एक क्रूर राजा का
 नाम जो कृष्ण से मारा गया । — डक्के डक्के
 मर्दन (सम्) सं.—श्रीकृष्ण ।
 डक्के डक्के (क) सं.—मन की व्याकुलता,
 अधैर्य, हिम्मत हारना, भय ; खोखलापन,
 सारहीनता ।
 डक्के डक्के (क) क्रि.—व्यग्र हो, व्याकुल
 हो, हिम्मत हार ।
 डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं.—दे. डक्के.
 डक्के डक्के डक्के डक्के (सम्) सं. — विपहीन एक
 साँप ।
 डक्के डक्के (क) सं. - ऊँट का कूबड़. ऊँट
 का झिझा ; गोलाई, वक्रता ।
 डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — दे.
 डक्के.
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—साँड
 और बैल का डकारना ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) क्रि.—
 डक्के, सिर नवा, नम्रतापूर्वक पाँव पड़ ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं —
 ध्वजस्तंभ, झण्डे का डंडा, किले का बुर्ज ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—
 टाँका लगाना, दड़ता से लगे रहना. निकट
 संबंध ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—
 क्रि.—विकल हो, काँप, छटपटा, धरथरा ।
 (१) डक्के डक्के (क) सं.—दे. डक्के.
 (२) डक्के डक्के (अ. दे. ?) सं.—चोट (मुक्का),
 धक्का ।
 डक्के डक्के (क) क्रि.—डकार ले ।
 डक्के डक्के (क) सं.—एक प्रकार का चाज़ ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (अ. दे.) सं.—डक्के
 (हिं.)
 डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) वि. - डक्के ।
 सं.—डक्केपन डक्के तन (क) सं.—डक्केपन ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के डक्के डक्के (क)
 सं.—भाला, बरछी ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) क्रि. — डक्के हो । सं.—
 डक्केपन, वक्रता ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (अ. दे.) सं.—डक्के, चट्टान,
 टीला. पहाड़ी, डक्के (हिं.) ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—एक पौधे का
 नाम ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के डक्के डक्के,
 डक्के डक्के, डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं. — डक्के
 जाति ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—
 भीड़, कोलाहल ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के डक्के डक्के
 (क) सं.—डक्के जाति की स्त्री ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—दे. डक्के.
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—दीवार, जीमीन या
 पेड़ का खोकला ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) क्रि.—डक्के डक्के डक्के डक्के,
 साँस रोक ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—शरीर, देह ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—दे. डक्के डक्के डक्के डक्के.
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) क्रि.—खोखला बना, छेद
 बना ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—गाढ़ापन, घनत्व ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—चट्टान पर का स्वाभा-
 विक, सरोवर ; खोखला ; छेद ; तरकस ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—लाठी, दण्ड, सोंटा ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—दोना ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) क्रि.—दे. डक्के (१)
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—छेद, विल, खोखला ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के (क) सं.—दलदल या पंक
 चरण रखने से उत्पन्न होनेवाली ध्वनि ।
 डक्के डक्के डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) वि. —
 खोखला, फूला हुआ, बड़ा । — डक्के डक्के
 डक्के डक्के (क) सं.—बड़ी तोंद ।

डो०ध०स डो०कास

डो०ध०स डो०कास (क) सं.—घोखा, कपट, छल, माया ।

डो०ध०स डो०कास (क) सं.—घोखा, कपट, छल, माया ।

डो०ध०स डो०कास (क) सं.—घोखा, कपट, छल, माया ।

डो०ध०स डो०कास (क) सं.—घोखा, कपट, छल, माया ।

डो०ध०स डो०कास (क) सं.—घोखा, कपट, छल, माया ।

डो०ध०स डो०कास (क) सं.—घोखा, कपट, छल, माया ।

डो०ध०स डो०कास (क) सं.—घोखा, कपट, छल, माया ।

डो०ध०स डो०कास (क) सं.—घोखा, कपट, छल, माया ।

ड० ढ

ड० ढ—कन्नड वर्णमाला का अट्ठाईसवाँ अक्षर ; त्वर्ग का चौथा व्यंजन ।

ड० ढ (क) वि.—चार की संख्या ।

ड० ढ डक, ड० ढ डका, ड० ढ डके (सम्) सं.—बड़ा ढोल ।

ड० ढ डक, ड० ढ डका, ड० ढ डके (सम्) सं.—बड़ा ढोल ।

ड० ढ डक, ड० ढ डका, ड० ढ डके (सम्) सं.—बड़ा ढोल ।

ड० ढ डक, ड० ढ डका, ड० ढ डके (सम्) सं.—बड़ा ढोल ।

ड० ढ डक, ड० ढ डका, ड० ढ डके (सम्) सं.—बड़ा ढोल ।

ड० ण

ड० ण—कन्नड वर्णमाला का उनतीसवाँ अक्षर, त्वर्ग का अंतिम व्यंजन ।

ड० ण (क) वि.—पाँच की संख्या ।

ड० ण डक, ड० ण डका, ड० ण डके (सम्) सं.—एक प्रकार का ताल (संगीत में) ।

ड० त

ड० त—कन्नड वर्णमाला का तीसवाँ अक्षर, त्वर्ग का पहला व्यंजन ।

ड० त (क) सं.—नापविशेष ; छे की संख्या ।
ड० त (क) प्र.—शब्दों के अंत में, जैसे— उड आत—वह, ईत—यह (पुरुष का बोधक), उड उड कडित—काटना ।

ड० तं, ड० तं तं (क) वि. (समास में) ठण्डा, शीतल । ड० तं तं तंगदिर् — शीतल रश्मी या किरण । ड० तं तं तं तंगदिर् कल्लु—चन्द्रकांतशिला ।

ड० तं तं क सम्) सं.—छेनी, टंक ; कष्टमय जीवन ; भय, डर ; प्रियजन-वियोग । ड० तं तं तंगल, ड० तं तं तंगलु (क) सं.—वासी, वासीखाने का पदार्थ ।

ड० तं तं तंगि (क) सं.—छोटी वहन । [ड० तं तं तंगे—तमिल, ड० तं तं तंगे—मलयालम् ; ड० तं तं तंगे, ड० तं तं तंगे—तेलुगु] । ड० तं तं तंगु (क) क्रि.—ठहर, अस्थायी रूप से रह ; पडाव डाल । सं.—ठहरना, ठहराव ।

ड० तं तं तंगुड, ड० तं तं तंगुळ (क) सं.—घोडे या हाथी की साज-सज्जा अलंकार, शृंगार ।

ड० तं तं तंगेडि (क) सं.—एक पौधा विशेष । ड० तं तं तंगेडु (क) वि.—अच्छी तरह सींचा हुआ उपजाऊ । ड० तं तं तंगे (अ. दे.) सं.—कलह, उपद्रव, झगडा, सम्बन्ध, टण्टा ।

ड० तं तं तंगे (अ. दे.) वि.—कष्टदायक, पीडा देने वाला, सतानेवाला । ड० तं तं तंड (क) सं.—समूह, समुदाय, भीड़, टोली झुण्ड ; पार्टी ; श्रेणी ; वर्ग ।

ड० तं तं तंडक (सम्) सं.—खज्जन पक्षी ; बाज़ीगर, जादूगर ; पेड़ का धड ; दण्डक । ड० तं तं तंडकार [तंडकार] (क) सं.—वह जिसके पा . अधिक समुदाय या श्रेणी हो ; समूह में रखनेवाला ।

ड० तं तं तंडवाळ, ड० तं तं तंडवाळ (क) सं.—ढला हुआ लोहा, कड़ा लोहा । ड० तं तं तंडस, ड० तं तं तंडस, ड० तं तं तंडस (अ. दे.) सं.—संडसा (हिं.), सण्डसी ; चिमटा ।

ड० तं तं तंडसि, ड० तं तं तंडसु (क) सं.—एक कण्टीला वृक्ष ।

ड० तं तं तंडा, ड० तं तं तण्डि (अ. दे.) सं.—ठण्डी ठण्ड शीतलता-सर्दी, जाड़ा ।

(१) ड० तं तं तंडु (क) सं.—दण्ड, लाठी, सोंटा, लोहे की छड़ी ; सम्भ ।

(२) ड० तं तं तंडु (सम्) सं.—शिवजी के प्रधान अनुचर का नाम, नन्दी, वृषभ ।

ड० तं तं तंडुल (सम्) सं.—चावल ; एक सरसों की तौल ।—ड० तं तं तंडुल चूर्ण (सम्) सं.—चावल के टुकड़े ।

ड० तं तं तंडुलीय, ड० तं तं तंडुलीयक (सम्) सं.—एक पौधा विशेष ।

ड० तं तं तंडे (क) सं.—स्त्रियों के चरणों का एक आभूषण ।

ड० तं तं तंडेल्, ड० तं तं तण्डेल (अ. दे.) सं.—मल्लाह, नौका-स्वामी, जहाज़ का मालिक ।

ड० तं तं तंडेल् तंडोपतंड (क) सं.—भीड़ पर भीड़, झुण्ड पर झुण्ड. बहुत संख्या में । ड० तं तं तंति (तद्) सं.—तन्त्रिः (तत्) ; वीणा का तार, तार, लंबी रस्सी, डोर, डोरी ।

(१) ड० तं तं तंतु (क) क्रि. रू.—‘तंडितु’ का अन्य रूप जिसका अर्थ है लाया, हुआ (न. लि.) ।

(२) ड० तं तं तंतु (सम्) सं.—डोर, सूत, तार, डोरी ; मकड़ी का जाल ; ताँत ; संतान, औलाद ; जलजंतु विशेष ; प्रब्रह्म । (तद्) सं.—तन्त्रम् (तत्) ; कर्मकाण्ड-पद्धति ।

—तण्ड गार (सम्) सं.—चालाक । —तण्ड नाग (सम्) सं.—बड़ा घडियाल ; धूर्त । —तण्ड नाभ (सम्) सं.—मकड़ी ।

तण्ड पट (सम्) सं.—सूत का कपड़ा । —तण्ड भ (सम्) सं.—सरसों । —तण्ड (सम्) सं.—गरमी रोग का एक स्तर । —तण्ड वाद्य (सम्) सं.—बाजा जिसमें तार लगे हों ।

ड० तं तंत्र (सम्)—ड० तं तंतर, ड० तं तंतर, ड० तं तंतु, ड० तं तंतुर (तद्) — डोर, डोरी, सूत, तार ; ताँत ; करघा ; वंश ; परिधान, ओढ़नी ; कर्मकाण्ड-पद्धति ; मुख्य

डं०३ तंत्रि

विषय ; सिद्धांत, नियम; कल्पना, विज्ञान ; परतंत्रता, पराधीनता ; चालाकी ; मन्त्र-तन्त्र; अध्याय, पर्व ; तन्त्र शास्त्र ; दवाई ; शपथ ; पोशाक ; किसी कार्य को करने की ठीक ठीक पद्धति ; राजकीय परिवार, राज-सभा जन ; प्रदेश, प्रांत ; राज्य, शासन, अधिकार ; समूह, डेर ; घर ; सजावट, सजा, अलंकार ; संपत्ति, धन ; आह्लाद ।
— गार गार (सम्) सं.—चालाक आदमी ; कारीगर ।

डं०३ तंत्रि (सम्) सं—दे. डं०३.
डं०३ तंत्रिके (सम्) सं.—एकपौधा विशेष (The plant cocculus cordifolius)
डं०३ तंदनतान, डं०३ तंदनान, डं०३ तन्दानतान, डं०३ तन्दानान (क) सं.— संगीत में एक प्रकार का ताल । — डं०३ पदगलु (क) सं.—एक प्रकार का लोकगीत ।
डं०३ तंदल, डं०३ तंदलु (क) सं— जल-कण, पानी या वर्षा की बूँद ।
डं०३ तंदूरिसु, डं०३ तांदूरिसु, डं०३ तांदूरिसु (क) क्रि.—चिंता कर, विकल हो, शोक कर ।
डं०३ तंदे (क) सं.—पिता, बाप, जनक तात । [डं०३ तंदे—तमिल, डं०३ तण्डु—तेलुगु] ।
डं०३ तंद्र डं०३ तन्द्रे, डं०३ तन्द्रि (सम्) वि.— शिथिलता, आलस्य, सुस्ती, कुान्ति, थकावट ।
डं०३ तंपिसु (क) क्रि.—डं०३ हो । शीतल हो ।
डं०३ तंपु (क) सं.— शीतलता, ठण्डापन, ठण्डक ; शांतता. गीलापन ; मृदुता (मिठी की) ; आनन्दिता या मन को तोष देने का गुण ।
डं०३ तंबगि, डं०३ तम्बगे, डं०३ तम्बुगे (क) सं.— लोटा, गोलाकार जल-पात्र ।
डं०३ तंबट, डं०३ तम्बटे, डं०३ तम्बट्टे (क) सं.—एक चर्मवाद्य, खँजड़ी ।

डं०३ तंबत्ति, डं०३ तंबत्तिजालि (क) सं—बबूल का पेड़ ।
डं०३ तंबल (क) सं.—गन्दे पानी या स्नाना-गार में रहनेवाला एक कीड़ा ।
डं०३ तंबल (क) सं.— तमिल भाषा ।
डं०३ तंबाक, डं०३ तम्बाकु (अ. दे.) सं.— तमाखू ।
डं०३ तंब्रिगे (क) सं.— दे. डं०३।
डं०३ तंबिसु (क ?) क्रि.— रोक, टोक, ठहरा ।
डं०३ तंबु (क) सं.— डं०३ तम्बिट्टु— चावल का आटा जिसमें गुड और पानी (या दूध) मिलाया जाता है और खाया जाता है ।
डं०३ तंबु (अ. दे.) सं.— तम्बू (हिं.), डेरा ।
डं०३ तंबुल (तद्) सं.— तांबूलम् (तत्) ; तांबूल, पान ।
डं०३ तंबुलि (तद्) सं.— तांबूली (तत्) ; पान का पौधा ।
डं०३ तंबुलिग (तद्) सं.— तांबूलिकः (तत्) ; तम्बोली, पान बेचनेवाला ।
डं०३ तंबूर, डं०३ तम्बूरि (अ. दे.) सं.— तम्बूरा (हिं.) ।
डं०३ तंक (क) सं.— डं०३ तंकतक— एक अनु-करणमूलक शब्द. 'थै थै' शब्द ।
डं०३ तंकरारु, डं०३ तंकरीरु (अ. दे.) सं.— तंकरार (अरबी) ।
डं०३ तंकीरु, डं०३ तंकीरु (अ. दे.) सं.— तंकीर (अरबी) ; गलती, त्रुटि, दोष, अपराध, न्यूनता ।
डं०३ तंकावि (अ. दे.) सं.— तंकावी (अरबी) ।
डं०३ तंक (क) वि.— उचित, योग्य. उपयुक्त, टीक, अच्छा, अनुरूप । डं०३ तंकदु— उचित है. अनुरूप है, उपयुक्त है ।
डं०३ तंकडि (क ?) सं.— तराजू । डं०३ तंकडि मने बड-तन ?— तराजू क्या जाने घर की गरीबी ! (रुह.) ।

डं०३ तंकलिसु (क) क्रि — छिटक, छिड़क, जल की बूँदे डाल ।
डं०३ तंकाविकि (अ. दे.) सं.— धोखा, छल, कपट, झूठ ।
डं०३ तंकालि (क) सं.— टमाटर ।
डं०३ तंकि (अ. दे.) सं.— दगा धोखा ।
डं०३ तंकु (क) सं.— स्नेह, प्यार, प्रीति, ममता ; बडपन, महत्ता, महानता, उच्चता।
डं०३ तंकुडु (क) वि.— उचित, योग्य, उपयुक्त ।
डं०३ तंकुमे (क) सं.— योग्यता, उपयुक्तता, औचित्य, ठीक हो, अनुरूपता ; क्षमता ।
डं०३ तंके (क) सं.— दे. डं०३ ; और ; मिलाना, संयोजन, समुदाय, झुण्ड, समूह ; राशि ।
डं०३ तंकेसु (क) क्रि. रू.— आलिंगन कर, गले मिले ।
डं०३ तंकोळु (क) क्रि. रू.— लो, ले लो (ग्रा) ।
डं०३ तंकोल, डं०३ तंकोलक (सम्) सं.— भस्मगंधिनी नाम का वृक्ष।
डं०३ तंका (सम्) सं.— मट्टा, छाछ ।
डं०३ तंका, डं०३ तंकाक (सम्) सं.— बड़ई, लकड़हारा ; पातालवासी एक सर्प का नाम ।
डं०३ तंकाण (तद्) सं.— तंकाणः (तत्) ; तुरंत, फौरन, तभी, तत्काल ।
डं०३ तंग (क) सं.— डेर, विलम्ब, रुकावट, रोक ।
डं०३ तंगचि, डं०३ तंगचे, डं०३ तंगजे (क) सं.— चक्रमर्दक नामक पौधा ; एक वृक्ष विशेष ; शहतूत का वृक्ष ।
डं०३ तंगडु (तद्) सं.— टीन, कनस्तर, धातु-ओं के पत्र (जैसे ताम्रपत्र आदि) ।
डं०३ तंगणे, डं०३ तंगणे, डं०३ तंगुणे, डं०३ तंगणे, डं०३ तंगणे (क) सं.— खटमल ।
डं०३ तंगडु (क) क्रि. रू.— उपयुक्त नहीं है, ठीक नहीं है, अनुचित है, सही नहीं है ।

ढंगठ^० तगर

ढंगठ^० तगर, ढंगठ^० तगर (क) सं. — मेढा, भेडा ।

ढंगठ^० तगर, ढंगठ^० तवर (तद्) सं. — टीन, जस्ता ।

ढंगठ^० तगरे (क) सं.—दे. ढंगठ^० (१)

ढंगठ^० तगलिसु, ढंगठ^० तगलिसु, ढंगठ^० तगुलिसु (क) क्रि.—मिला, लगा, जोड़, छुआ, स्पर्श करा, संयुक्त कर ।

ढंगठ^० तगलु (क) क्रि.—छू, लग, स्पर्श कर, मिल ; रगड ; मैथुन कर ।

ढंगठ^० तगवे (क) सं.—देर, विलंब, विघ्न ।

ढंगठ^० तगहु (क) सं.—विघ्न, रुकावट, बाधा, प्रतिबन्ध ; संबंध, पंक्ति, श्रेणी ।

ढंगठ^० तगिचि (क) सं.—दे. ढंगठ^० (१).

ढंगठ^० तगलिसु (क) क्रि.—दे. ढंगठ^० तगुलिसु (क) क्रि.—दे. ढंगठ^० तगलु (क) क्रि.—दे. ढंगठ^० तगु (क) वि.—उपयुक्त, उचित, योग्य, ठीक ।

ढंगठ^० तगुणे (क) सं. — दे. ढंगठ^० तगुलिसु (क) क्रि.—दे. ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—दे. ढंगठ^० तगुलुविके (क) सं. — लगना, स्पर्श करना, छूना, स्पर्श ।

ढंगठ^० तगुसि (क) सं. — न्यूनता, कमी, अभाव, त्रुटि, दोष ।

ढंगठ^० तगुल, ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिल ; जुड़, लग, छू, स्पर्श कर, पास-पास जा ; पीठ लग, पीछे लग, ढकेल, अनुग-गमन कर ; हटा, पीछे छोड़ । सं. — पास-पास आना, स्पर्श ।

ढंगठ^० तगुलुविके (क) सं. — लगना, स्पर्श करना, छूना, स्पर्श ।

ढंगठ^० तगुसि (क) सं. — न्यूनता, कमी, अभाव, त्रुटि, दोष ।

ढंगठ^० तगुल, ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिल ; जुड़, लग, छू, स्पर्श कर, पास-पास जा ; पीठ लग, पीछे लग, ढकेल, अनुग-गमन कर ; हटा, पीछे छोड़ । सं. — पास-पास आना, स्पर्श ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगुलु (क) क्रि.—मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिल, किसी, के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

ढंगठ^० तगिचि (क) सं.—दे. ढंगठ^० (१).

ढंगठ^० तगि (क) सं.—जयंती वृक्ष, एक और वृक्ष ; एक बड़ी झाड़ी (clorodendron phlomoides) ।

ढंगठ^० तगिसु (क) क्रि.—कम कर, नीचे कर, न्यून कर, उतार, झुका ।

ढंगठ^० तगु (क) सं.—कम हो, नीचे हो, उतर जा, झुक जा, विनयी हो, गिड़गिड़ा ; माँग का गिरना ; दुबला हो । सं — निम्नता, नीचे होना. उतरना ; गड्ढा, निचला प्रदेश या भूमि ; दर्रा, घाट ; बिल. छेद ; महुँगाई, किसी चीज़ का अभाव या कमी ।

ढंगठ^० तज्ञ (सम्) सं.—जाननेवाला, तत्त्वविद् विद्वान् ।

(१) ढँढ तट (क) सं. — एक अनुकरणमूलक शब्द ।

(२) ढँढ तट, ढँढ तटि, ढँढ तटे (सम्) सं—किनारा, कूल, तीर ; क्षेत्र, खेत ; शरीर के कतिपय अवयवों की संज्ञा, जैसे कटितट आदि ; पहाड का ढाल, प्रदेश ; क्षितिज, आकाश ।

ढँढठि तटकि (क) सं.—पेशाब की दुर्गंध ।

ढँढठि तटकु (क) सं.—बूँद, थोड़ा या अल्प परिमाण ।

ढँढठि तटकने (क) अ.—बूँदों में ; तुरंत, पौरन, हठात् ।

ढँढठि तटवाणि (सम्) सं.—बलिया, बलड़ा सुंदरी स्त्री ।

ढँढठि तटसु (क) सं.—एक पौधे का नाम ।

ढँढठि तटस्थ (सम्) वि.—तट या किनारे पर का ; उदासीन ।

ढँढठि तटाक (सम्) सं.—तालाब, ताल ।

ढँढठि तटाय्, (क) क्रि.—से होकर या जरिए जा (जैसे किसी गाँव से होकर नदी जाती है) ; सीधे पहुँच जा ।

ढँढठि तटायिसु (क) क्रि.—पार, लग, तर जा, पार कर ; सीधे पहुँच ।

ढँढठि तटारने (क) अ.—तुरंत, हठात्, सहसा ।

ढँढठि तटित्, ढँढठि तटित्तु (सम्) सं.—विजली ।

ढँढठि तट्ट (क) वि.—समतल, सपाट, चौरस । ढँढठि तट्टने (क) अ.—हठात्, सहसा, अचानक ।

ढँढठि तट्टामाले (क) सं—बच्चों का एक खेल जिसमें उनको तब तक जोर से चक्कर काटने दिया जाता है जब तक वे बेहोश नहीं होते ।

ढँढठि तट्टि (क) सं.—बाँस की चटाई या आड, टट्टी, पटसन के कपड़े की आड ।

ढँढठि तट्टिय (क) सं—समतलता ; सिकुड़न ; सार या जीवन की आवश्यकता ।

ढँढठि तट्टिसु (क) क्रि.—लड़बडा, हकला, रुक रुक कर बोल ; अस्पष्ट बोल ; थपथपाने दे, छोटी छोटी वस्तु से मारने दे (प्रे.) ।

(१) ढँढठि तट्टु (क) क्रि.—थपथपा, छोटी वस्तु से मार, ताडन कर, ताली बजा ; खट-खटा ; ढकेल, लगा, चला, मार दे या मार गिरा ; निकाल । सं. — खटखटाना ; बीमारी का फैलाव. अभाग्य का ताडन ; चेचक. शीतला रोग ; समतलता ; धार ; तलवार की धार ; तरफ, दिशा, ओर ।

(२) ढँढठि तट्टु (क) सं.—सन का कपड़ा ; जैन या बौद्ध साधु का परिधान । (अ. दे) सं.—छोटा घोड़ा. टट्ट ।

ढँढठि तट्टुक (क) सं.—(ताली) बजानेवाला, मारनेवाला, पीटनेवाला ; खटखटानेवाला ।

ढँढठि तट्टे (क) सं.—समतलता ; लोहे या लकड़ी की तस्तरी, थाली ; सूप ; बीजकोश, फली ; बाँस या सुपरी की लकड़ी जो दो भागों में चीरी गयी हो ।

ढँढठि तट्टे (क) सं.—स्त्रियों का जूता या चप्पल ।

(१) ढँढ तड (क) सं.—विघ्न, बाध, रोक, रोक-थाम, टोक ; देरी, विलम्ब ; विभ्रम, व्याकुलता, विकलता, डर, चिंता । ढँढ तडकट्टु = ढँढ तडकट्टु — रोक (पानी की धारा को रोक) । ढँढ तडकट्टु (क) सं.—रोकने के लिए रखा

डंठु तथ्य

पर्यर । डंठुडिसु तडवडिसु (क) क्रि.—
 चलने में झिझक । डंठुडिसु तडमाडु (क)
 क्रि.—बाधा या विघ्न उपस्थित कर । डंठु
 डंठु तडवायु (क) क्रि.—देर हो, विलंब
 हो । डंठुडिसु तडवरिसु (क) क्रि.—हिच-
 क्रिया, झिझक ; लड़खड़ा ।
 (२) डंठु तड (तद्) सं.—तटः (तत्) ; किनारा ।
 डंठुडिसु तडकस, डंठुडिसु (क) सं.— बाधा,
 रोक-थाम ; विकलता ; चोट, आघात ।
 डंठुडिसु तडकिसु (क) क्रि.—टटोलने या
 खोजने दे (प्रे.) ।
 डंठुडिसु तडकु (क) क्रि.—टटोल, खोज. अंधेरे
 में (किसी चीज़ को) खोज । सं.—टट्टी,
 भाड़ ।
 डंठुडिसु तडगणि; डंठुडिसु तडगुणि (क) सं.—
 एक ढाल विशेष (The pulse Vigna) ।
 डंठुडिसु तडत (क) सं.—('डंठु तडे' से) —
 रोकने की क्रिया ; प्रतिरोध ; (वस्त्र) ठीक
 प्रकार से धारण करने की क्रिया ।
 डंठुडिसु तडदु. डंठुडिसु तडेदु (क) कृ.— रोक
 कर, टोक कर ।
 डंठुडिसु तडप (क) सं.—देरी, विलम्ब ।
 डंठुडिसु तडपु (क) सं.— विघ्न, बाधा. रोक-
 थाम ; विरोध ; बाँध ; शरीर के निचले भाग
 में जानेवाला कपड़ा ।
 डंठुडिसु तडवु (क) सं.—देरी, विलम्ब । क्रि.—
 डंठुडिसु तडहु, डंठुडिसु तडगु, डंठुडिसु तडवु
 डंठु तडवु — रोक ; छू, स्पर्श कर, हाथ
 धीरे-धीरे से रगड़, धीरे से थपकी दे ।
 डंठुडिसु तडेवे (क) सं.—बार, दफ़े ।
 डंठुडिसु तडसलु, डंठुडिसु तडसु (क) सं.—पार-
 स्परिक रोकथाम ।
 डंठुडिसु तडसु (क) क्रि.—रोक, अटकाव डाल,
 विघ्न डाल ; ठहर, रुक जा ; रुकने दे (प्रे.) ।
 डंठुडिसु तडहु (क) क्रि.—दे. डंठुडिसु क्रि.— सं.
 रोकथाम, अटकाव. विघ्न ।
 डंठुडिसु तडाक, डंठुडिसु तडाग (सम्) सं.—
 तालाब. पुष्करिणी ।
 डंठु तडि (क) सं.—डंडा, लाठी, सोटा ;

ऊनी कपड़े या सूती कपड़े की ज़ीन ; गद्दा,
 विछावन । क्रि.— देर कर, विलम्ब कर,
 ठहर ।
 डंठुडिसु तडिके (क) सं.—टट्टी, बाँम की भाड़ ।
 डंठुडिसु तडित् (सम्) सं.—विजली ।
 डंठुडिसु तडित्वत् (सम्) सं.—बादल ।
 डंठुडिसु तडिसु (क) क्रि.—रोक, बाधा उपस्थित
 कर, ठहरा ।
 डंठु तडे (क) क्रि.— ठहर, प्रतीक्षा कर ;
 विलम्ब कर ; रोक. ठहरा ; प्रतीक्षा करने दे ;
 बाधा उपस्थित कर ; वश में कर (जैसे क्रोध
 को वशमें करना), सन्न कर सहन कर ।
 सं.—विघ्न, अटकाव, बाधा ; लकड़ी भादि
 का टुकड़ा ; देर, विलम्ब. आकर्षण ।
 डंठु तडे (तद्) सं.—तटः (तत्) ।
 डंठु तडु (क) सं.— अण्डकोश ।
 डंठु तण् (क) वि.—(समास में) — ठण्डा,
 शीतल । डंठु तण् तण्णगे इदे—शीतल
 है, ठण्डा है ।
 डंठु तणलु (क) सं.— चिनगारी ।
 डंठु तणव. डंठु तणारि, डंठु तणवर,
 डंठु तणवार डंठु तण् (तद्) सं.— स्थल-
 वार (तत्) ; पहरेदार ।
 डंठु तणवु. डंठु तणिवु (क) सं.— वृषि,
 संतोष, पर्याप्ति ।
 डंठु तणसु, डंठु तणिसु (क) वि.— गीला,
 भीगा हुआ, ठण्डा, शीतल ।
 डंठु तणि (क) क्रि.—ठण्डा हों, शीतल हो ;
 वृष हो, संतोष पा ; थक जा, श्रांत हो ।
 सं.—लज्जा, शर्म ।
 डंठु तणिगे, डंठु तणिगे (क) सं.—थाली ।
 डंठु तणिगु, डंठु तणिसु (क) क्रि.—वृष
 कर, संतुष्ट कर । सं. वृषि, संतुष्टि ।
 डंठु तणिवु (क) सं.—वृषि, संतुष्टि ।
 डंठु तणिसु (क) वि.—दे. डंठु तणिसु. क्रि.—
 डंठु तणिसु. क्रि.—
 डंठु तणिवु (क) सं.—दे. डंठु तणिवु ; शीत-
 लता, ठण्डापन ।
 डंठु तणणगे, डंठु तणणने (क) वि.—ठंडा,
 शीतल ; अच्छा, मनभाया ।

डंठु तणस (क) वि.—दे. डंठु तणिसु.
 डंठु तणणने, डंठु तणणित्तु, डंठु तणणित्तु
 तणणित्तु (क) वि.—दे. डंठु तणिसु.
 डंठु तणपु (क) सं.—दे. डंठु तणिसु.
 डंठु तणवण (क ?) सं.—वीणा-ध्वनि ।
 डंठु तत् (सम्) सं.—ब्रह्मा ; वायु । सर्व—
 वह ।
 डंठु तत (सम्) वि.—फैला हुआ, बढ़ा हुआ ।
 डंठु ततग (सम्) सं.—वायु, हवा ।
 डंठु ततंग (क) सं.— कठिनाई, उलझन,
 समस्या ।
 डंठु तति (सम्) सं.—संख्या, दल, समूह,
 श्रेणी, स्तोम ; यज्ञकर्म ।
 डंठु तनुव (तद्) सं.—तत्वं (तत्) ; यथार्थ
 सिद्धान्त ।
 डंठु तत्काल (राम्) अ.—तत्काल ; तुरंत,
 उसी समय ।
 डंठु तत्त (तद्) सं.—तथ्यं (तत्), सचाई,
 वास्तविकता ।
 डंठु तत्तर. डंठु तत्तर, डंठु तत्तल (क)
 सं—कंपन, गड़बड़ी, विकलता, विभ्रम ।
 डंठु तत्ति, डंठु तत्ति, (क) सं.—अण्डा ।
 डंठु तत्तु (क) सं.—ठोकर खाना, ठोकर ;
 आफत, दुर्भाग्य ।
 डंठु तत्तुव (तद्) सं.—दे. डंठु तत्तुव.
 डंठु तत्पर (सम्) वि.—तैयार, सज्जद ।—
 डंठु तत्ते (सम्) सं.—तैयारी, तत्परता ।
 डंठु तत्राणि (क) सं.—झंझर, सुगही ;
 डंठु तत्व (सम्) सं.—वास्तविक दशा, परि-
 स्थिति ; वास्तविक मिद्वान्त ; वास्तविक-
 रूप ; सचाई, निष्कर्ष, वस्तु ; परमात्मा ;
 सांख्य के अनुसार पच्चीस पदार्थ ; नृत्य
 विशेष ; मन ।
 डंठु तत्सम (सम्) सं.— उसके समान् ;
 संस्कृत के वे शब्द जो कन्नड में ज्यों के त्यों
 प्रयुक्त होते हैं ।
 डंठु तथगत (सम्) सं.—बुद्ध ; जिन ।
 डंठु तथ्य (सम्) सं.—सचाई, सत्य, वास्त-
 विकता ।

उदकं तदकु

उदकं तदकु (क) क्रि. — मार, पीट, ताडन कर ।

उदगिणं तदगिण (क) सं.—सफेद चना ।
उदलय तदलु (क) सं.—काँटों का ढाँचा जो बाग-बगीचों में दरवाजे के रूपम काम में लाया जाता है ।

उदगिण तदगिण (क) सं.—संगीत में ताल देने का शब्द ।

उदगिणं तदगिणे (तद्) सं.—तृतीया (तत्) ; तीज तिथि ! ।

उदकं तदकु, उदिकं तदिकु (क) सं.—गज-प्रिय नामक वृक्ष (The Gum Olibanum Tree) ।

उदं तदे (क) क्रि.—दे. उदकं

उद्विनं तद्विन (सम्) सं.—वह दिन ; दिन में ; दिन-ब-दिन ; मृत तिथि, श्राद्ध दिन ।

उद्वल तद्वल (सम्) सं.—एक प्रकार का बाण, एक प्रकार का धनुष ।

उद्वलं तद्वल (सम्) सं.—संस्कृत से आये हुए विकृत शब्द ।

उद्वल तद्वल (क) सं.—दे उदल ।

उदं तन (क) प्र.—भाववाचक प्रत्यय ; उदा.—
उदं तनं प्रेणतन = स्त्रीत्व, उदं तनं कलितन = वीरता ।

उदं तनक, उदं तनक (क) अ.—तक, तलक ।

उदं तनकि, उदं तनखि, उदं तनखे (अ दे.) सं.—तनकीह (फ़ारसी) ; परीक्षा, जाँच-पड़ताल ।

उदं तनतु, उदं तनु (क) सर्व.—उसका ।

उदं तनय (सम्) सं.—बेटा, पुत्र ।
उदं तनये—स्त्री. लिं. ।

उदं तनि (क) क्रि.—अधिक हो, बढ़, वृद्ध हो, विकसित हो, संपूर्ण हो, सारयुक्त हो । सं.

सं.—अधिकता, वृद्धि, विकास, सारयुक्तता, संपूर्णता, समृद्धि ; मीठापन । उदं तनिगंगु (क) सं.—सुगंधि की समृद्धि ।

उदं तनिगंगु (क) सं.—सुगंधि की समृद्धि ।
उदं तनिगंगु (क) क्रि.—अधिक या पूर्णरूप से फैल । उदं तनिगंगु (क) सं.—अधिक प्रकाश ।

(१) उदं तनु (क) वि.—ठण्डा, शीतल ।

(२) उदं तनु (सम्) सं.—शरीर, देह ; चम, चमड़ा । वि.—पतला, दुबला ; छोटा ; महीन ; कोमल, मुलायम ; कम, थोड़ा, परिमित । —उ ज, उज जात (सम्) सं.—बेटा, पुत्र । —उ जे, उजे जाते (सम्) सं.—बेटी, पुत्री । —उ त्र (सम्) सं.—कवच । —उ त्राण (सम्) सं.—कवच । —उ त्व (सम्) सं.—पतला होना । —उ भव (सम्) सं.—उभय । —उ मध्ये (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम । —उ विदाह (सम्) सं.—अत्यधिक शरीरिक ताप ।

उदं तनुवु (क) वि.—दे. उदं (१), उदं तनुज, उदं तनुभव (सम्) सं.—पुत्र, बेटा ।

उदं तनुजे (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
उदं तनुजो (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

सुतनंदन (सम्) सं.—कर्ण का पुत्र वृषकेतु ।
उदं तपनीय (सम्) सं.—सोना, हेम ।
उदं तपराखु (क) सं.—तमाचा, थप्पड़ ; लात ।

उदं तपसि, उदं तपसिग (तद्) सं.—
तपस्विम् (तत्) ; तपस्वी ।

उदं तपसु, उदं तपस्ये (तद्) सं.—तपस्
(तत्) ; तपस्या ।

उदं तपस्वि (सम्) सं.—तपस्वी, तापस ।

उदं तपस्विनि (सम्) सं.—तपस्या करने-
वाली स्त्री ।

उदं तपस्सु (तद्) सं.—तपस (तत्) ।

उदं तपस्यय (सम्) सं.—वर्षाकाल ।

उदं तपालु (अ. दे.) सं.—दे. उदं तपालु ।

उदं तपित (सम्) वि.—गरम किया हुआ,
उष्ण । उदं तपिते = खराब या भ्रष्ट स्त्री ।

उदं तपिसु (सम्) क्रि.—गरम हो ; तपस्या
कर ; पीड़ा सह ।

उदं तपेलि, उदं तपले, उदं तपले
(क) सं.—एक गोलाकर बर्तन जिसमें
चावल पकाया जाता है ।

उदं तम (सम्) वि.—तपा हुआ, गरम किया
हुआ, जलाया हुआ, पिघला हुआ संतप्त
पीड़ित ; तपस्या करनेवाला ।

उदं तप्प (क) सं.—दे. उदं (१) ।
उदं तप्पि (क) सं.—गलत कदम ।

उदं तप्पने (क) अ.—अचानक, सहमा,
तुरंत ।

उदं तप्पल्. उदं तप्पलु (क) सं.—पहाड़
की समतल भूमि, प्रस्थ, अधिव्यका ।

उदं तप्पल (क) सं.—दे. उदं तप्पल्.
उदं तप्पले (क) सं.—दे. उदं तप्पल्.

उदं तप्पसि (क) सं.—एक प्रकार का जंगली
भाम का वृक्ष ।

उदं तप्पलिसु (क) क्रि.—ताली बजा ।
उदं तप्पित (क) सं.—गलती, अशुद्धि,
दोष, चूटि ।

उदं तप्पिसु (क) क्रि.—बचा, रक्षा कर ;
प्राप्त होने न दे ; उपयोगी न हो ; पार हो ;

उदं तप्पिसु (क) क्रि.—बचा, रक्षा कर ;
प्राप्त होने न दे ; उपयोगी न हो ; पार हो ;

उदं तप्पिसु (क) क्रि.—बचा, रक्षा कर ;
प्राप्त होने न दे ; उपयोगी न हो ; पार हो ;

उदं तप्पिसु (क) क्रि.—बचा, रक्षा कर ;
प्राप्त होने न दे ; उपयोगी न हो ; पार हो ;

डंरसु तपु

चुक। डंरसु तपु तपिहोगु=हाथ से निकल जा. बच जा।

डंरसु तपु (क) क्रि.—प्राप्त न हो, अप्राप्त हो, न मिल, झूट जा, हाथ से निकल जा ; गलत क्रम रख, पीछे हट, दोष या अपराध कर, झुट्टि कर, खो जा; स्वलित हो; अदृश्य हो; ठोकर खा; छिप। सं.—अपराध, झुट्टि, दोष, गलती, अशुद्धि ; अनुचितता ; पाप। डंरसु तपुविके (क) सं.—दोष या झुट्टि करना ; बचना।

डंरसु तवक, डंरसु तवकु (अ. दे.) सं.—तवक (अरबी) पान-सुपारी रखने की थाली। डंरसु तवट्टे (तद्) सं.—दे. डंरसु।

डंरसु तव्वरिसु, डंरसु तव्वरिसु (क) क्रि.—घबड़ा जा, विकल हो ; चकित हो, पैर फिसल जा, ठोकर खा, गिर पड़।

डंरसु तव्वलि (क) सं.—अनाथ बालक या बालिका।

डंरसु तव्विबु (क) सं.—विभ्रम, भ्रम ; घबराहट, चकित होना।

डंरसु तव्विल (क) सं.—दे. डंरसु ; नीच पुरुष या वस्तु।

डंरसु तव्वु (क) क्रि.—आलिंगन कर, छानी से लगा; (लकड़ी के परिमाण को) बाहुओं में समा। सं.—आलिंगन ; लकड़ी का उतना परिमाण जितना कि बाहुओं में समा सके।

डंरसु तव्वि (क) सं.—दे. डंरसु।

डंरसु तम्, डंरसु तावु (क) सर्व—आप ; स्वयं।

डंरसु तम (तद्) सं.—तमस् (तत्) ; अंधकार, अंधेरा।

डंरसु तमट्टे (तद्) सं.—दे. डंरसु।

डंरसु तमर (तद्) सं.—टीन, जस्ता ;

डंरसु तमरु (सम्) सं.—अंधेरा ; राहु ;

कालापन, तमोगुण ; क्लेश, दुःख ; पाप ;

नरक का अंधकार ; भ्रम।

डंरसु तमस्विनि (सम्) सं.—रात।

डंरसु तमस्सु (तद्) सं.—दे. डंरसु।

डंरसु तमाल (सम्) सं.—तमाल वृक्ष ;

तमालपत्र।

डंरसु तमालि (सम्) सं.—कई पौधों के नाम।

डंरसु तमापे (अ. दे.) सं.—तमाशा (अरबी, फ़ारसी)।

डंरसु तमि (सम्) सं.—रात।

डंरसु तमित्त, डंरसु तमित्ते (सम्) सं.—

अंधेरा ; रात।

डंरसु तमोगुण (सम्) सं.—तमोगुण ;

त्रिगुणों में तीसरा।

डंरसु तम्, डंरसु तम्म (क) सर्व.—अपना

(कर्ता व. व. अन्य पुरुष)।

डंरसु तम्म (क) सं.—छोटा भाई, अनुज।

डंरसु तम्मट, डंरसु तम्मट्टे (तद्) सं.—दे.

डंरसु।

डंरसु तम्मड (क) सं.—देर, विलंब ; दे.

डंरसु।

डंरसु तम्मडि (क) सं.—पुजारी, मंदिर का

अनुचर या सेवक।

डंरसु तम्मनु, डंरसु तम्मनु. डंरसु तम्मदु

(क) सर्व.—अपना (कर्ता व. व.

अन्य पुरुष)।

डंरसु तम्मै (क) सं.—(नाक, कान आदि का

कोमल भाग।

डंरसु तयार, डंरसु तयारु (अ. दे.) वि.—

तैयार (हिं.)।

डंरसु तयारि (अ. दे.) सं.—तैयारी (हिं.)।

डंरसु तयारिसु (अ. दे.) क्रि. तैयार कर,

बना।

डंरसु तरं (क) अ.—सही ठीक, क्रमबद्ध।

डंरसु तरंग (सम्) सं.—लहर, हिलोर।

डंरसु तरंगवति, डंरसु तरंगिणि (सम्)

सं.—नदी।—नद नथ (सम्) सं.—

समुद्र।

डंरसु तर, डंरसु तरह (अ. दे.) सं.—तरह-

क्रम, रीति, तरीका ; मकान का खण्ड।

डंरसु तरकट (क) सं.—कठोरता, निष्ठुरता।

डंरसु तरकलु (क) सं.—सूखा पत्ता, सूखा

शरीर, सूखी भूमि ; चिकनापन न होना

चिपचिपा होना, रवा ; कण ; रूक्षता,

खुरखुरापन।

डंरसु तरकारि (अ. दे.) सं.—तरकारी (हिं.)।

डंरसु तरकु (क) सं.—दे. डंरसु।

डंरसु तरक्षु (सम्) सं.—खेई ; बाघ।

डंरसु तरगडे (क) सं.—कमी, न्यूनता ;

नुकसान, हानि, घाटा ; बेकार हुई वस्तु

(wastage)।

डंरसु तरगवि (क) सं.—दे. डंरसु।

डंरसु तरगार (क) सं.—राज।

डंरसु तरगु (क) सं.—डूबना, कम होना,

घटना ; हानि, बेकार होना ; दलाली, कमीशन ;

सूखा पत्ता।

डंरसु तरट, डंरसु तरट्टु (क) वि.—गंजा,

मोटा, खुरदरा।

डंरसु तरडु (क) सं.—अण्डकोश।

डंरसु तरण (सम्) सं.—पार करना ; विजय,

जीत ; डौंड ; नाव, वेड़ा ; स्वर्ग।—क

(सम्) सं.—पार करानेवाला।

डंरसु तरणि (सम्) सं.—नाव, नौका ; सूर्य,

प्रकाश की किरण ; एक प्रकार का गुलाब।

डंरसु तरण्य (सम्) सं.—भाड़ा, किराया।

डंरसु तरपु (क) सं.—घटिया किसम का रत्न

या हीरा।

डंरसु तरफु (अ. दे.) सं.—तरफ, ओर, दिशा

में।

डंरसु तरवेतु (अ. दे.) सं.—तरवियत

(अरबी) ; शिक्षण, प्रशिक्षण।

डंरसु तरल (सम्) वि.—काँपनेवाला, थर

थरानेवाला ; चंचल, अस्थिर, विनश्वर ;

उत्तम, चमकीला ; पनीला ; सं.—तरल

पदार्थ, बालक, लड़का ; हार की बीच की

मणि ; एक वृत्त का नाम।

डंरसु तरले (सम्) सं.—माँड, उबले हुए

चावल का जल विशेष।

डंरसु तरवार, डंरसु तलवार (अ. दे.)

सं.—कृपाण, खड्ग।

डंरसु तरवारि (अ. दे.) सं.—दे. डंरसु।

डंरसु तरस (सम्) सं.—मांस, गोश्त।

डंरसु तरसु (क) क्रि.—मैगा, किसी चीज़ को

ले आने दे। वि.—सूखा, निरुपयोगी,

बेकार।

ड०ळ तरह (अ. दे.) सं.—तरह (अरवी) ; प्रकार, भाँति. डंग ; स्थिति, बनावट ।

ड०ळ० तरहर, ड०ळ०ळ तरहरिके (क) सं.— सहनशीलता, शांति । ड०ळ०ळ तरहरिसु (क) क्रि.—शांत हो, शांत रह, सहन कर ।

ड०ळ०ळ तरहीन (सम्) वि.—क्रमरहीन, व्यवस्थारहित ।

ड०ळ तरळ (तद्) वि. और सं.—दे. ड०ळ.

ड०ळ तरळु (क) सं.—सूखा फल ; गरी ; मेवा ।

ड०ळ तरळे (तद्) सं.—बालिका, लडकी ।

ड०ळ तरा (अ. दे.) सं.—दे. ड०ळ.

ड०ळ तरासु, ड०ळ तरासु (अ. दे.) सं.— तराजू (फारसी) ।

ड०ळ तरावळि (सम्) सं.—अनेक प्रकार या डंग ।

ड०ळ तरातुरि (तद्) सं.—शीघ्रता, त्वरा (तत्) ; जल्दी ।

(१) ड० तरि (क) सं.—कण, रवा ; रूक्षता, खुरखुरापन ।

(२) ड० तरि (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर ; खरोच, फटकार बता ।

ड०ळ तरिगोट (क) सं.—अग्निशिखा नामक वृक्ष ।

ड०ळ तरिसु, ड०ळ तरिसु (क) क्रि.— दे. ड०ळ ; कटवा ।

ड०ळ तरु (सम्) सं.—पेड़, वृक्ष ।

ड०ळ तरुटि (सम्) सं.—गिलहरी ।

ड०ळ तरुटिगि (क) सं.— एक झाड़ी (Cassiatora) ।

ड०ळ तरुण (सम्) वि.—जवान, युवा ; छोटा ; कोमल, मुलायम ; नवीन, नया, ताज़ा, जिंदादिल । सं.—युवा पुरुष । — ड ते, डू त्व (सम्) सं.—यौवन, जवानी ।

ड०ळ तरुणि (सम्) सं.—युव स्त्री, जवान लडकी ।

ड०ळ तरुपु (क) सं.—दे. ड०ळ.

ड०ळ तरुवलि (क) सं.—बालक, लडका ; बालिका, लडकी । — ड तन (क) सं.—

लडकपन, बालपन ।

ड०ळ तरुवलि (क) सं.—विवाहिता कन्य को घर ले आने की क्रिया ।

ड०ळ तरुविके, ड०ळ तरुह (क) सं.— ले आना, लाने की क्रिया ।

ड०ळ तरुटिगि (क) सं.—दे. ड०ळ.

ड०ळ तरगु (क) सं.—सूखा पदार्थ, सूखा पत्ता, सूखी रोटी या दोसा ।

ड०ळ तरजे (क) सं.—घोड़े को पहनाने का एक गहना ।

ड०ळ तरट (क) वि.—दे. ड०ळ.

ड०ळ तरतिसु (क) क्रि.—घबड़ा जा, विकल या व्याकुल हो ।

ड०ळ तरवु (क) क्रि.—टहर, रुक ।

ड०ळ तरले, ड०ळ तरले, ड०ळ तले (क) सं.—सूखापन, बेकार या व्यर्थ बात । — ड०ळ मनुष्य = व्यर्थ या निरुपयोगी पुरुष ।

ड०ळ तरि (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर, रगड़ा जा, खुरचा जा, छिला जा, छोटे छोटे कण हो । सं.—कण, रवा ; खूँटा, शंकु ; जुड़े रहने या स्थिर रहने की स्थिति ; खदिर या कस्था वृक्ष । — ड०ळ मिंडि (क) सं.—ऋतुमती ।

ड०ळ तरिडु (क) सं.—सूखी रेत ।

ड०ळ तरिय (क) सं.—खदिर या कस्था वृक्ष ।

ड०ळ तरिसु (क) क्रि.—कटवा (मे.) ।

ड०ळ तरु (क) क्रि.—मिल, जुड़ ; पासजा ; प्रवेश कर ; व्यस्त रह । सं.—मिले रहने या जुड़े रहने की स्थिति ।

ड०ळ तरुण (क) सं.—उचित या योग्य समय ।

ड०ळ तरुवु, ड०ळ तरुवु, (क) क्रि.— दे. ड०ळ. सं.—पत्थर उठाने की बड़ी लकड़ी या डंडा ।

ड०ळ तरे (क) क्रि. और सं.—दे. त०ळ.

ड०ळ तरिये (क) सं.—दे. ड०ळ.

ड०ळ तर्क (सम्) सं.—बहस, वादविवाद, युक्ति ; कल्पना, अनुमान ; संदेह ; न्याय-शास्त्र, तर्कशास्त्र, आकांक्षा, कारण, हेतु ।

ड०ळ तर्क (सम्) सं.—तार्किक, प्रश्न करने-वाला ; उभेदवार, जिज्ञासु, प्रार्थी ।

ड०ळ तर्कयिसु, ड०ळ तर्कयिसु, ड०ळ तर्कविसु, ड०ळ तर्किसु (क) कि—आलिंजन कर । सं.—आलिंजन, मृदंग का एक भेद ।

ड०ळ तर्किसु (सम्) क्रि.—तर्क कर, वाद-विवाद कर ।

ड०ळ तर्के (क) सं.—आलिंजन ।

ड०ळ तर्गु (क) क्रि.—दे. ड०ळ.

ड०ळ तर्जन (सम्) सं.—भयभीत करना ; डराना, डँट, भस्मना ।

ड०ळ तर्जनि (सम्) सं.—अँगूठे के पास की अंगुली ।

ड०ळ तर्जिसु (सम्) क्रि.—डरा, धमका, भस्मना, कर ; निवारण कर, हटा ।

ड०ळ तर्जिमे (अ. दे.) सं.—अनुवाद, भाषांतर ।

ड०ळ तर्णक (सम्) खे.—बछड़ा ।

ड०ळ तर्पण (सम्) सं.—पितृयज्ञ विशेष ; प्रसन्न करना, संतुष्ट तर्पण, करना ; प्रसन्नता ; समिधा । ड०ळ तर्पिसु = तर्पण कर ; संतुष्ट हो, प्रसन्न हो ।

ड०ळ तर्पु (क) सं.—आलिंजन ।

ड०ळ तर्म (सम्) सं.—यज्ञस्तम्भ का शिरो-भाग ।

ड०ळ तर्ले (क) सं.—व्यर्थ बात, गपशप, व्यर्थ या निरुपयोगी मनुष्य ।

ड०ळ तर्प (सम्) सं.—प्यास, तृपा ; कामना, इच्छा ; नाव ; सूर्य ; समुद्र ।

ड०ळ तर्पण (सम्) सं.—प्यास, तृपा ।

ड०ळ तर्ळु (क) सं.—दे. ड०ळ.

ड० तल (सम्) सं.—सतह ; हथेली ; निचला भाग, पेंदी, गहराई, रंध्र, छेद, गड्ढा ; ताड का वृक्ष ; बाँह ; थप्पड ; नीचता ; चमड़े का खोल ; तरवार की

मूठ; बाय हाथ से वीणा के तार बजाना; काठ, लकड़ी; सरोवर; सात नरकों में एक।

डलसुसु तलपिसु (क) क्रि.—पहुँचा (प्रे.)।

डलसु तलपु (क) क्रि.—पहुँच; हाथ लग, मिल, प्राप्त हो।

डलसु तलारि (तद्) सं.—स्थसवारः (तद्); पहरेदार।

डलसु तलावु (अ. दे.) सं.—तालाव।

डलसु तलिन (सम्) वि.—पतला, दुबला; कम, थोड़ा; साफ, स्वच्छ; पृथक, नीचे का।

डलसु तलपु (क) क्रि.—दे. डलसु।

डलसु तले (क) सं.—सिर, मस्तक; पीढ़ी;

प्रधान या मुख्य पदार्थ।—कड्डु, कटु

(क) सं.—शीर्ष वेधन; अक्षर पर आड़ी रेखा; खेत का किनारा।—कड्डु कायि

(क) सं.—सिर, मस्तक।—कड्डु कृदलु

(क) सं.—सिर के बाल।—कड्डु केळगे

(क) सं.—औंधा या उल्टा होना; गर्व, घमंड।—कड्डु कड्डु

कड्डु कड्डु कड्डु (क) सं.—शैतान, धूर्त।—कड्डु तलेगडे (क)

क्रि.—पीढ़ी घीत जाना।—कड्डु गायु

कड्डु गायु (क) क्रि.—रक्षा कर; आधार

वन, सहारा दे।—कड्डु गिंदु, कड्डु दिंदु

(क) सं.—तकिया।—कड्डु गोयिक

(क) सं.—हत्यारा कसाई; ठग, धोखेबाज़।

—कड्डु तिरुगु (क) सं.—सिर में चक्कर।

—कड्डु तिरुक (क) सं.—घमंडी, अहं-

कारी, उन्मत्त व्यक्ति।—कड्डु तेरिगे (क)

सं.—जड़िया।—कड्डु दूगु (क) क्रि.—

सिर हिला; स्वीकार कर; संतुष्ट हो।—

कड्डु दोरु (क) सं.—सिर दिखा; प्रकट

हो।—कड्डु नोवु (क) सं.—सिर दर्द।

—कड्डु बागलु (क) सं.—प्रवेशद्वार।

—कड्डु बागु (क) क्रि.—सिर झुका, मस्तक

नवा।—कड्डु बुरुडे (क) सं.—खोपड़ी।

—कड्डु बेसर (क) सं.—मानसिक अशांति,

थकावट।—कड्डु मारि (क) सं.—कसाई,

हत्यारा।—कड्डु कड्डु, कड्डु कड्डु

कड्डु कड्डु कड्डु, कड्डु कड्डु कड्डु

(क) क्रि.—सिर मुँडा; व्यर्थ में अपनी चीज़ गवाँ या हानि पा।—कड्डु मारु

(क) सं.—परंपरा, पीढ़ी-दर-पीढ़ी।—

कड्डु सुत्तु (क) सं.—सिर में चक्कर।—

कड्डु यादव (क) सं.—प्रधान पुरुष,

मुखिया।—कड्डु योडु (क) सं.—

खोपड़ी।—कड्डु वीडु (क) सं.—प्रधान

स्थान।—कड्डु हिडि (क) क्रि.—सिर

पकड़; सिर को लग।—कड्डु हिडिकि

(क) सं.—लंपट स्त्री।—कड्डु होक (क)

सं.—दुराचारी पुरुष; दुष्ट; सुँहजोरी करने-

वाला।

डलसु तलोदरि (सम्) सं.—पत्नी,

भार्या; कृशांगी, सुंदरी।

डलसु तलव (सम्) सं.—चारपाई, पलंग, सेज;

पत्नी, भार्या; मकान के ऊपर की मंज़िल,

अटारी; गाड़ी में बैठने का स्थान।

डलसु तल्ल (सम्?) गरोवर, तालाव।

डलसु तल्लज (सम्) सं.—प्रसन्नता; उत्तमता।

डलसु तल्लण (क) सं.—भय, भीति; विभ्रम,

घबराहट; दुःख।

डलसु तल्लणिसु (क) क्रि.—अमित हो,

घबड़ा जा, भयभीत हो, काँप, थरथरा।

डलसु तल्लर (क) सं.—दे. डल्लर।

डलसु तल्लरु (क) सं.—[‘तम्’

संस्कृत धातु से]—प्रेम; इच्छा; कातरता,

उतावलापन; जलदबाज़ी, शीघ्रता।

डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु (तद्) सं.—

कातर पुरुष, उतावला या जलदबाज़ी करने-

वाला मनुष्य।

डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु (क) क्रि.—

पछोर।

डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु (क) सं.—भूसी,

भूसा, चोकर।

डलसु तल्लरु तल्लरु (तद्) सं.—तपोनिधि

(तद्); अनश्वर भंडार, संपत्ति; पुण्य।

डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु (तद्) सं.—टीन,

जस्ता (त्रपु—तद्)।

डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु (क) सं.—मायका,

पीहर।

डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु तल्लरु (तद्); सं—तांबूल (तद्); पान।

डलसु तल्लरु (तद्) सं.—तपस्विन् (तद्); तपस्वी।

डलसु तल्लरु (क) क्रि.—नाश कर; झड़; झड़ा।

डलसु तल्लरु डलसु तल्लरु (क) सं.—गरीबी, दारिद्र्य, आवश्यकता।

डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु (क) सं.—दे. डलसु।

(१) डलसु तल्लरु (क) क्रि.—कम कर, घटा, क्षीण कर, नाश कर।

(२) डलसु (तद्) क्रि.—दे. डलसु। डलसु तल्लरु (क) क्रि.—कम हो, घट, बेकार हो,

अंत हो, क्षीण हो, नष्ट हो; नाश कर, घटा। सं.—नाश, क्षीणता, क्षय, घटना।

डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु, डलसु तल्लरु (क) सं.—नाश, क्षय, अंत।

डलसु तल्लरु (क) क्रि.—दे. डलसु। डलसु तल्लरु (क) सं.—धरवेरी या करौंदा

वृक्ष। डलसु तल्लरु (क) सं.—अजगंधि नामक

पौधा। डलसु तल्लरु (क) सं.—दे. डलसु।

डलसु तल्लरु (क) सं.—दे. डलसु। डलसु तल्लरु (क) सं.—दे. डलसु। डलसु तल्लरु (क) सं.—मायका,

माता का घर। डलसु तल्लरु (क) सं.—लड़ाई या एक

दौंव-पेंच। (१) डलसु तल्लरु (क) क्रि.—संसे सवे — घिस

जा, घट जा; पर्याप्त न हो; नष्ट ही; असंतुष्ट हो। वि.—अधिक, पूरा, पूर्णतः,

अच्छी तरह। (२) डलसु तल्लरु (अ. दे.) सं.—तवा (हिं)।

डलसु तल्लरु तल्लरु, डलसु तल्लरु (तद्) सं.—[‘तस्कर’ से]—ठगई, धोखा, छल,

कपट। डलसु तल्लरु (क) अ.—‘तसक्’ शब्द

के साथ। डलसु तल्लरु तल्लरु, डलसु तल्लरु (अ. दे.)

सं. — तसद्दुक (अरवी); त्याग, दान, भक्ति, खैरात।
 डंरुं तस्कर (सम्) सं.—चोर, डाकू; चोरी।
 डंरुं तस्करे (सम्) सं.—छी चोर।
 डंरुं तहकीकु (अ. दे.) सं.—तहकीक (अरवी); सत्य का अन्वेषण।
 डंरुं तहसीलु, डंरुं तासीलु (अ. दे.) सं.—तहसील (अरवी); लगान या कर की आमदनी। डंरुं दार = तहसील-दार।
 डंरुं तहतह (क) सं.—उताबलापन, कौतू-हल; व्याकुलता।
 डंरुं तहिकार [डंरुं तहिकार] (क) सं.—साथी।
 डंरुं तळ (क) क्रि.—जुड़, लग, संलग्न हो, संयुक्त हो, मिल जा, अत्यधिक पास आ; प्रकट हो; विघ्न हो, बाधा उपस्थित कर, रुकावट बन; विरोध कर, प्रतिहत हो।
 (१) डंरुं तळ (क) सं.—डर, भ्रम, घबराहट, चकित होना; उबलते समय आनेवाली ध्वनि; विपर्यय, अंतर; चमक, दमक, कांति; सूर्योदय।
 (२) डंरुं तळ (तद्) सं.—स्थल (तत्); स्थान, जगह; तलवा।
 डंरुं तळकु (क) सं.—कांति, छवि, दमक, चमक।
 डंरुं तळप, डंरुं तळपु, डंरुं तळपु (क) सं.—कांति, छवि, चमक; बाल का रंग, कालापन।
 डंरुं तळमळिसु (क) क्रि.—वैचैन हो, घबरा जा; तिलमिला।
 डंरुं तळर (क) क्रि.—हिल; काँप, थर-थरा; चल, निकल। सं.—हिलना, चलना, निकलना; थरथराना, काँपना।
 डंरुं तळरु (क) क्रि.—चल, निकल, प्रस्थान कर।
 डंरुं तळल् (क) क्रि.—खिल (कली का खिलना), विकसित हो।
 डंरुं तळवर (तद्) सं.—दे. डंरुं।
 डंरुं तळवु, डंरुं तळहु (क) सं.—रुका-वट, विघ्न, बाधा; देर, विलंब।

डंरुं तळहदि, डंरुं तळादि (तद्) सं.—नींव, बुनियाद।
 डंरुं तळामळ (तद्) सं.—हथेली पर का आँवला।
 डंरुं तळार (तद्) सं.—दे. डंरुं।
 डंरुं तळि (क) क्रि.—जल, सेचन कर, छिड़क; छिटक; खिल, विकसित हो; पल्लवित हो; किसलय निकल; प्रकट हो, व्यक्त हो। सं.—छिड़कना, जलसेचन; बाड़; मेड़; आश्रय स्थान, मुसाफरखाना; धर्मशाला, ब्राह्मणों को भोजन देने का स्थान; वंश, पीढ़ी; नस्ल; काँपल, पल्लव; लकड़ी का टुकड़ा। वि—स्वच्छ, साफ, निर्मल।
 डंरुं तळिरो (क) सं.—थाली।
 (१) डंरुं तळिर (क) क्रि.—खिल, पल्लवित हो; किसलय निकल।
 (२) डंरुं तळिर, डंरुं तळिरु (क) सं.—पल्लव, किसलय; काँपल।
 डंरुं तळिरु (क) क्रि.—पल्लवित या विक-सित होने दे।
 डंरुं तळिसु (क) क्रि.—चूर्ण कर, पुड़िया कर, कूटकर चावल का चोकर निकाल; छिड़क, छिड़का।
 डंरुं तळु (क) सं.—दे. डंरुं।
 डंरुं तळुकु (क) सं.—स्थिरता, अचलता। क्रि.—आघात कर, प्रहार कर, चोट कर; रोक।
 डंरुं तळुगु (क) क्रि.—हाथ से रगड़; रोक।
 डंरुं तळुपु (क) सं.—दे. डंरुं।
 डंरुं तळुवु (क) सं.—स्थिरता, अचलता; विघ्न, देर, विलंब। क्रि.—रोक; देर कर, विलंब कर; अचल हो; आकुल हो।
 डंरुं तळे (क) क्रि.—आधार हो, सहारा बन, धारण कर, वहन कर; दूसरे के ऊपर डाल (जैसे कपड़े आदि); डो; पा; प्राप्त कर; ले, धर। सं.—बंधन-सूत्र, पगहा; पागल-पन, भ्रंति।
 डंरुं तळुकु (क) क्रि.—शरीर पर। गंधादि का लेपन कर। सं.—लेपन।

डंरुं तळपडि, डंरुं तळपडि (क) सं.—निकासना, हटाना।
 डंरुं तळवु (क) क्रि.—काल-हरण कर, यों ही समय बिता; देर कर; प्रतीक्षा कर। सं.—विलंब, देर; कालहरण।
 डंरुं तळळंक (क) सं.—भय, भीति, घबरा-हट।
 डंरुं तळळि (क) सं.—संबंध, सम्मेलन, संघ; विग्रह, झगड़ा छेड़ना; निंदा, आक्षेप, अभियोग।
 डंरुं तळळु (क) क्रि.—ढकेल, भागे की ओर धक्का दे; चला; फेंक; अस्वीकार कर, अमान्य कर, तज। सं.—ढकेलना; मेवा।
 डंरुं तळळु (क) सं.—मेवा।
 डंरुं तळि (क) सं.—लाठी डंडा, बड़ी लकड़ी का टुकड़ा स्थूलदार।
 डंरुं तळे (क) सं.—छाता, छतरी।
 डंरुं तळिसु, डंरुं तळिसु (क) क्रि.—आलिंगन कर।
 डंरुं तळिके (क) सं.—आलिंगन।
 डंरुं तळुगु (क) क्रि.—दे. डंरुं।
 डंरुं तळुपल् [डंरुं तळुपल्] (क) सं.—डंरुं।
 डंरुं तळुपु, डंरुं तळुवु (क) सं.—दे. डंरुं।
 डंरुं ता (क) सर्व.—मैं, अहं का भाव। क्रि.—ले, आ, ला।
 डंरुं तां (क) सर्व.—आप, स्वयं, खुद।
 डंरुं तांकु (क) सं.—स्पर्श, छूना, जुड़ना; मिलन स्थान; खेत, मैदान; संगीत में मेल।
 डंरुं तांगु (क) क्रि.—मिल, जुड़, लग; टकरा; छू; ले, धर, धारण कर, वहन कर, आधार बन।
 डंरुं तांटु (क) क्रि.—लॉघ, पार कर; उछल नाच।
 डंरुं तांडव (सम्) सं.—नृत्य, नाच, विदोष कर दिवजी का मृत्य।

उ००००० ताम्र

उ००००० ताम्र (क) सं.—दे. उ००००००.
 उ००००० ताम्र (अ. दे.) सं.—उ००००००.
 उ००००० ताम्र (सम्) वि.—श्रांत, थका हुआ,
 शिथिल, संतप्त; सुरझाया हुआ।
 उ००००० ताम्रिक (सम्) वि.—तंत्र संबंधी,
 कला या सिद्धांत में निपुण।
 उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र (तद्) सं. ताम्र
 (तत्); ताम्र।
 उ००००० ताम्रि (क) सं.—एक वृक्ष The tree
 Dolichan drone falcate seem)।
 उ००००० ताम्राण, उ००००० ताम्राळ (क) सं.
 —थाली।
 उ००००० ताम्रू (सम्) सं.—ताम्रू. पान;
 सुपारी।
 उ००००० ताम्रू (सम्)—नागलता, पान
 का पौधा; पान बेचनेवाला।
 उ००००० ताम्रू (सम्) सं.—तंचोली,
 पान बेचनेवाला।
 उ००००० ताम्रू (तद्) सं.—उ००००००००.
 उ००००० ताम्रू (क) सं.—कलुवा।
 उ००००० ताम्रू (क) क्रि.—छुआ, स्पर्श करा।
 उ००००० ताम्रू (क) क्रि.—छुआ, स्पर्श करा।
 उ००००० ताम्रू (अ. दे.) सं.—ताम्रू (अरबी);
 जागृति की भाज्ञा।
 उ००००० ताम्रू (क) क्रि.—स्पर्श कर, छू, जुड़,
 मिल, लग; टकरा। सं.—स्पर्श, छूना,
 मिलन स्थान; खेत, मैदान; संगीत में
 मेल।
 उ००००० ताम्रू उ००००० ताम्रू (क) सं.—
 क्रोध, रोष, रौद्र, भयंकरता।
 उ००००० ताम्रू (क) सं.— मिलन स्थान,
 खेत, मैदान; संगीत में मेल।
 उ००००० (क) क्रि. = उ००००० ताम्रू।
 उ००००० ताम्रू (क) क्रि. = उ००००० ताम्रू—ठहर;
 लॉघ, पार कर, छूद। सं.— झुकना; टेढ़ा
 होना।
 उ००००० ताम्रू (क) सं.—छिपने का स्थान।
 उ००००० ताम्रू (क) सं.—(बच्चों की बोली में)
 स्तन।

उ००००० ताम्र (अ. दे.) सं.— ताम्र, नया,
 नवीन।
 उ००००० ताम्रक (सम्)—राम।
 उ००००० ताम्रक, उ००००० ताम्रक (सम्) सं.—
 ताम्रक नामक राक्षसी जिसको राम ने मारा
 था।—उ००००० ताम्र (सम्) सं.— झगड़
 स्वभाव।
 उ००००० ताम्रगति (तद्) सं.— झगड़ालू
 स्त्री।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.— कानों की वाली।
 उ००००० ताम्र (तद्)।
 उ००००० ताम्र (क) क्रि.—लगा; पीट।
 उ००००० ताम्र (क) क्रि.—लग, रगड़ खा, छू;
 पीट। सं.—लगाना, संघटन, रगड़।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.—एक तृण विशेष;
 धक्का; मारना, पीटना; शब्द, शौर, धड़-
 कन; तालवृक्ष।
 उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र
 (सम्) सं.—ताम्र, मारना, कोड़ा लगाना।
 उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र (तद्)
 सं.— व्यजन. ताम्र के पत्ते का पंखा।
 उ००००० ताम्र (तद्) सं.— ताम्र, तालवृक्ष क
 रस, शराब।
 उ००००० ताम्र (क) सं.—एक प्रकार का
 बतख।
 उ००००० ताम्र (सम्) क्रि.— मार, कोड़े
 लगा, पीट।
 उ००००० ताम्र (तद्) सं.—स्थान (तत्); ताल;
 (तत्)।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.— पिता; पितामह,
 दादा।
 उ००००० ताम्र (क) सं.—बहुत छेद
 या रंध्र, पूरे के पूरे छेद।
 उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र,
 उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र
 (क?) सं.—ताम्र (अरबी)।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.— अभिप्राय,
 आशय, उद्देश्य, सम्रांश; अर्थ, भवार्थ,
 विवरण।

उ००००० ताम्र (सम्) सं.—उपेक्षा, तिर-
 स्कार, घृणा, विंदा।
 उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र (क) सर्व.— भाप,
 खुद, स्वयं।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.— सूत, रेशा;
 संगीत में तान, आलाप।
 उ००००० ताम्र. उ००००० ताम्र (अ. दे.) सं.—कपड़े
 का बंडल या टुकड़ा।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.— गरमी, भयंकर; दुःख,
 पीड़ा, संकट।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.—तीन ताम्र—
 दैहिक, दैविक और भौतिक; अद्भुत।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.—साधु, धर्मनिष्ठ;
 तपस्या संबंधी।
 उ००००० ताम्र (क) सं.—[उ०००००० ताम्र
 —तमिल] कुंडी, अर्गल।
 उ००००० ताम्र (सम्) क्रि.— गरम हो;
 जल; पीड़ा सह; सावधान करना।
 उ००००० ताम्र (क) सं.—नाच घर, विट-गृह।
 उ००००० ताम्र (अ. दे. सं.—एक प्रकार का
 रेशमी कपड़ा।
 उ००००० ताम्र (क) सं.—कलुवा।
 उ००००० ताम्र (क) सर्व.—भाप, स्वयं (अन्य
 पुरुष व. व.)
 उ००००० ताम्र (क) सं.— गर्व, अहंभाव,
 घमंड।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.—सौना; स्वर्ण;
 ताम्र; कमल।
 उ००००० ताम्र, उ००००० ताम्र (क) सं.—
 कमल; एक प्रकार का कुष्ठ रोग।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.—भूम्यामलकी
 वृक्ष।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.—अंधकार; दुष्टजन;
 अधमजन; साँप; घुवू; उल्लू; एक
 मनु का नाम; शिवजी का एक अनुचर।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.— रात, निशा।
 उ००००० ताम्र (सम्) सं.—ताँबा; ताँबे के
 सुदृश्य लाल रंग; एक प्रकार का कुष्ठ
 रोग।

डालवुंड ताम्रक

डालवुंड ताम्रक (सम्) सं.—ताँवा ; ताँवे का लोटा ।
 डालवुंड ताम्रकणि (सम्) सं.—पश्चिम दिशा के हाथी अंजन की हथिनी का नाम ।
 डालवुंड ताम्रकूड (सम्) सं.—मुर्गा, कुकुर ।
 डालवुंड ताम्रकुंड (सम्) सं.—तोता ।
 डालवुंड ताम्रध्वज, डालवुंड ताम्रकेतु (सम्) सं.—एक राजा का नाम जिसकी कथा जैमिनि-भारत में वर्णित है ।
 डालवुंड ताम्रपर्णि (सम्) सं.—दक्षिण भारत की एक नदी ; लंका के एक नगर का नाम ।
 डालवुंड ताम्रमुखि (सम्) सं.—ताँवे के सदृश्य मुखवाला, गोरा आदमी (European) ।
 डालवुंड ताम्राक्ष (सम्) सं.—कौआ ; कोयल ।
 डालवुंड ताम्राधरे (सम्) सं.—लाल होंठ-वाली स्त्री ।
 डालवुंड ताय, डालवुंड तायि, डालवुंड तायि (क) सं.—माता, माँ । डालवुंड तायुतं दे डालवुंड तायितं दे = माँ बाप ।
 डालवुंड तायत, डालवुंड तायति (क) सं.—दे. डालवुंड ।
 डालवुंड तार, डालवुंड तारो (क) क्रि. रू.—ला, लाओ । स्त्री. लिं. में डालवुंड तारे का प्रयोग होता है जिसका अर्थ है—भाओ री ।
 (१) डालवुंड तार (सम्) वि.—उँचा, उच्च ; चमकदार ; उत्तम, श्रेष्ठ, स्वादिष्ट । सं.—नदीतट ; मोती की चमक ; उच्चस्वर ; ग्रह, नक्षत्र ; नदी ; पर्वत ; पहाड़ ; सफेद रंग ; चाँदी ; आँख की पुतली ; एक राक्षस का नाम ; मोती ।
 (२) डालवुंड तार (अ.दे.) सं.—धोखा, छल ।
 डालवुंड तारक (सम्) वि.—ले जानेवाला, रक्षक, उद्धारक । सं.—एक राक्षस का नाम जिसे कार्तिकेय ने मारा था ।— डालवुंड जित (सम्) सं.—कार्तिकेय ।— डालवुंड मथन (सम्)

सं.—कार्तिकेय ।— डालवुंड अरि, डालवुंड रिपु = कार्तिकेय ।
 डालवुंड तारकराज (सम्) सं.—चंद्रमा ।
 डालवुंड तारकि (सम्) सं.—नक्षत्र, तारा ; चित्रा नक्षत्र ; विशाख नक्षत्र ।
 डालवुंड तारके (सम्) सं.—नक्षत्र ; तारा ; आँख की पुतली ।
 डालवुंड तारगे (तद्) सं.—तारक (तद्) ; नक्षत्र ।
 डालवुंड तारण (सम्) सं.—पार होना. बचना ; नौका, वेड़ा ; अठारहवें वर्ष का नाम, तारण संवत् ।
 डालवुंड तारणि (सम्) सं.—नाब, नौका ; वेड़ा ।
 डालवुंड तारतम्य (सम्) सं.—न्यूनाधिक्य, थोड़ा-बहुत, अंतर ।
 डालवुंड तारल् (क) सं.—झाड़ी ।
 डालवुंड तराबल (सम्) सं.—नक्षत्रों का प्रभाव ।
 डालवुंड तारिणि (सम्) सं.—दुर्गा ; बौद्धों की एक देवी ।
 डालवुंड तारीकु, डालवुंड तारीखु (अ.दे.) सं.—तरीख (अरबी) ; तिथि, दिनांक ।
 डालवुंड तारु (क) सं.—अपशकुन ।
 डालवुंड तारुण्य (सम्) सं.—यौवन, युवा-वस्था. जवानी ।— डालवुंड वति (सम्) सं.—युवती. जवान लड़की ।
 डालवुंड तारे (सम्) सं.—तारा, नक्षत्र ; आँख की पुतली ; सुंदर या स्वच्छ मोती ; चाँदी ; हवा, वायु ; बृहस्पति की पत्नी का नाम ; वाली की पत्नी का नाम ।
 डालवुंड तारु (क) क्रि.—सूख. रुखा हो, झड़ जा, शोषित ही । सं.—अशुभ ।
 डालवुंड तारुडि (क) सं.—रूखापन सूखापन ।
 डालवुंड तारि (क) सं.—एक बड़ा वृक्ष, कलि-द्रुम (Terminalia belerica) ।
 डालवुंड तारिग (क) सं.—सूखी वस्तुओं का ढेर ।
 डालवुंड तारु (क) वि.—सूखा, रुखा । क्रि.—

थोड़ा रह, ठहर, व्यस्त होकर हिल ; दौड़ ।
 सं.—सुपारी का गुच्छ ।
 डालवुंड तारु, डालवुंड तारु (अ.दे.) सं.—Tar (अंग्रेजी), तारकोल ।
 डालवुंड तारे (क) सं.—दे. डालवुंड ।
 डालवुंड तारुणे डालवुंड तारुणे (क?) सं.—प्रत्यक्ष निरीक्षण ।
 डालवुंड तारुके (सम्) सं.—न्यायदर्शनवेत्ता, तर्कशास्त्रज्ञ ।
 डालवुंड तारुके (सम्) सं.—गरुड ; घोड़ा ; अरुण ; गाड़ी ; सर्प ; पक्षी ।— डालवुंड ध्वज (सम्) सं.—त्रिणु ।— डालवुंड नायक (सम्) सं.—गरुड ।— डालवुंड शैल (सम्) सं.—एक प्रकार का काजल या अंजन ।
 डालवुंड तारुणे (सम्) सं.— एक प्रकार की घास ।
 डालवुंड तारुणे (सम्) वि.—पार करने योग्य ; जीतने योग्य । सं.— नाव का किराया, भाड़ा ।
 डालवुंड ताल (सम्) सं.—तालवृक्ष, ताड़ का पेड़ ; ताली बजाना ; संगीत में ताल ; फड़फड़ाहट, हाथी के कानों की फड़फड़ाहट ; तलवार की मूँठ ; चटरखनी, ताला ।
 डालवुंड तालक (सम्) सं.— हटताल ; चटरखनी, ताला ।
 डालवुंड तालजंघ (सम्) वि.— ताड़ के वृक्ष के समान जौंघवाला ।
 डालवुंड तालध्वज (सम्) सं.—बलराम ।
 डालवुंड तालनंदन (सम्) सं.—ताड़ के वृक्षों का कुंज ।
 डालवुंड तालपत्र. डालवुंड तालपत्रिके (सम्) सं.—ताड़ का पत्ता ; ताड़ के पत्ते से बनाया गया कर्णाभरण ।
 डालवुंड तालपर्णि (सम्) सं.— एक प्रकार सुगंध द्रव्य, वनसौंफ ।
 डालवुंड तालमधु (सम्) सं.— ताड़ी, शराब ।
 डालवुंड तालवुंत (सम्) सं.— पंखा. व्यजन ।

अणवु तालव्य

अणवु तालव्य (सम्) वि. — ताल से संबंधित ।
 अणवुच तालांक (सम्) सं.—बलराम ।
 (१) अणु तालि (क) सं.—मांगल्य, मंगल-सूत्र का आभरण ।
 (२) अणु तालि (तद्) सं.—स्थाली (तत्); कटोरा, बटलोई ।
 अणुसु तालीसु (अ. दे.) सं.— तालिम (भरवी); शिक्षण; कुस्ती ।
 अणु तालु (सम्) सं.—ताल ।
 अणुच तालुक, अणुच तालुकु (अ. दे.) सं.— तालुक, तहसील, जिले का एक भाग ।
 अणुच तावड (क) सं.—पद्महार, पद्म-मणियों का हार ।
 अणुच तावरे (क) सं.—कमल, पद्म ।
 अणु तावि (क) सं.—घोड़े के पैरों में पहनाने का चाँदी या सोने का बलय ।
 (१) अणु तावु (तद्) सं. = स्थानं (तत्); जगह, स्थान ।
 (२) अणु तावु (क) सर्व. — आप (आदर-सूचक); स्वयं, आप; खुद (अन्यपुरुष व. व. में) ।
 (३) अणु तावु, अणु ताव (अ. दे.) सं.—ताव, कागज़ का पत्रा ।
 अणुसु तालीसु (अ. दे.) सं.—दे. उळसुलु.
 अणुसु तासु (क?) सं.—एक घंटा ।
 अणु ताहि, अणु ताहे (क) सं.—दे. अणु.
 अणु तालु, अणु तालु (क) क्रि. — सहन कर, सत्र कर, थोड़ा रह, थोड़ा ठहर, प्रतीक्षा कर, शांत रह; धारण कर, धर, वहन; पा ले. प्राप्त कर; क्षमा कर, मार्जन कर; हूय. झड़ ।
 अणु ताल (तद्) सं.—संगीत में ताल ।
 अणुच तालुद, अणुच तालिद, अणुच तालुद, अणुच तालु (क) सं.— साग, उबालकर मिच-मसाला मिलाई हुई तरकारी ।
 अणु तालि (क) सं—दे. अणु (१)
 अणुच तालिके अणुच तालिमे अणुच तालुमे

(क) सं. — सहनशीलता, सत्र करना. शांति, सहना ।
 अणुच तालिसु (क) क्रि.—१. खाना परिपक्व कर या बना; तीक्ष्ण या चुकीला बना (जैसे आयुध) ।
 अणुच तालु (क) क्रि.—दे. अणु.
 अणुच तालुमे, अणुच तालुविके (क) सं.—दे. अणुच.
 अणुच ताले (तद्) सं.—ताल: (तत्); ताड़ का पेड़ ।
 अणुच तालुदु (क) क्रि.—धर, धारण कर ।
 (१) अणुच तालु (तद्) सं.— ताल: (तत्); ताड़ का पेड़ ।
 (२) अणुच तालु अणुच तालु (क) सं.— कुण्डी, अर्गला; धान, फूल आदि का तना; तल, निचला भाग, निम्नता ।
 अणुच तालु (क) सं.—स्थ, गाड़ी का निचला भाग ।
 अणुच तालु (क) सं.— तना, डंटल, निचला भाग, तल ।
 अणुच तालु (क) सं.—एक प्रकार का सुगंधित पुष्प (Pandanus flower) ।
 अणुच तालु, अणुच तालु, अणुच तालु (क) सं.—महीना, मास; चंद्र ।
 अणुच तालु (क) सं.—तिलक, टीका ।
 अणुच तालु (क) सं.—संक्रांति का अगला दिन ।
 अणुच तालु (क) सं.— खाना, मिठाई, नाश्ता, अल्पाहार, भक्ष; खुजली ।
 अणुच तालु, अणुच तालु (सम्) सं.—इमली, इमली का पेड़ ।
 अणुच तालु (क) सं.—समूह, समुदाय, भीड़, श्रेणी, गिरोह, भीड़भाड़ ।—अणुच इसु = भीड़ हो ।
 अणुच तालु, अणुच तालु (क) क्रि. रू.— (उसने) खाया—नपुंसक लिंग—अन्यपुरुष एक वचन ।
 अणुच तालु, अणुच तालु (सम्) सं.—तंदू का पेड़ ।

अणुच तालु (क) सं.—अपव्ययी, धन उढ़ानेवाला ।
 अणुच तालु (क) क्रि.—खाना खा, रोटी आदि खा । सं.—पूर्णता, अधिकता ।
 अणुच तालु (क) क्रि.—भर, पूरा कर; खाना खा । अणुच तालु अणुच तालु हसु हुल्लु तालु तदे (या अणुच तालु तिननुत्तदे)—गाय घास खाती है ।
 अणुच तालु तालुविके (क) सं.—खाना (Eating) ।
 अणुच तालु (क) सं.— सनकी स्वभाव, पागलपन; तुतलाहट ।
 अणुच तालु (क) क्रि.— रगड़वा, मर्दन करा ।
 अणुच तालु (क) क्रि.—मर्दन कर, रगड़; कठोर व्यवहार कर, दुःखा ।
 अणुच तालु (सम्) वि.—तीता, कहुआ ।
 अणुच तालु, अणुच तालु, अणुच तालु, अणुच तालु, अणुच तालु, अणुच तालु (क) सं.—छिलका, छाल, बल्कल ।
 अणुच तालु (क) सं.—कपट. छल, वंचना ।
 अणुच तालु (क) सं.— मण्डूकपर्ण नामक वृक्ष ।
 (१) अणुच तालु, अणुच तालु (क) सं.— दे. अणुच.
 (२) अणुच तालु (क) क्रि.—दे. अणुच.
 अणुच तालु (क) सं.—खटमल ।
 अणुच तालु, अणुच तालु (क) सं.—चक्र, कुम्हार का चक्र ।
 अणुच तालु, अणुच तालु (क) सं.—तमिल-वाला, द्रविड ।
 अणुच तालु, अणुच तालु (क) सं.—अणुच तालु का स्त्री. लिं., तमिल-वाली, द्रविड स्त्री ।
 अणुच तालु, अणुच तालु (क) सं.—दे. अणुच.
 अणुच तालु (क) सं.—दे. अणुच.
 (१) अणुच तालु (क) क्रि.— मल, मोज,

ॐरुंरुं तिरुगुरु

मर्दन कर, रगड़, लेपन कर । सं.—सुगंधि. उत्सादन ।

(२) ॐरुंरुं तिरुगुरु (क) सं.—दे. ॐरुं०.

ॐरुंरुं तिरुगुरु (क) सं.—दे. ॐरुं०.

ॐरुंरुं तिरुगुरु (क) सं.—ॐरुं०.

ॐरुं तिरुगुरु (सम्) सं.—गरमी. तीतापन ।—
ॐरुं अंशु, कर कर (सम्) सं.—सूर्य ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—राशि, ढेर ; परिमाण, संख्या ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) अ.—
चक्रर काटते हुए, विभ्रम से ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—उन्नत भूमि, टीला, पहाड़ी । क्रि.— गाली दे, कोस, भर्त्सना कर ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—टीला, पहाड़ी ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—सौंस रोककर दबा, दबा, कष्ट-पूर्ण प्रयत्न कर, कष्ट मह ; अपानवायु छोड़ ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.— मिल, हिल-मिल, भीड़ हो, संकीर्ण हो ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) वि.— मोटा, बड़ा, भारी, वजनदार ; अधिक, ज्यादा, बहुत ।

ॐरुं तिरुगुरु (सम्) सं.—छाता ; चलनी ।

ॐरुं तिरुगुरु (सम्) वि.— सहनशील, धैर्यवान् ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—
वीणा की ध्वनि ।

(१) ॐरुं तिरुगुरु (सम्) सं.—तीतर ।

(२) ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु तुत्तारि, ॐरुं तिरुगुरु तुत्तारि, ॐरुं तिरुगुरु तुत्तारि (क) सं.—सिंगी, तुरही ।

ॐरुं तिरुगुरु (सम्) सं.— [ॐरुं तिरुगुरु—तद्] —दिन, मिति, तारीख, चाँद्रदिवस, पंद्रह की संख्या ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—शुद्धि, सही करना, सुधारना ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—सही करा; ठीक करा, शुद्ध करा, जाँच करा, सुधार करा ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—सही कर, सही कर, ठीक कर, शुद्ध कर, जाँच, सुधार कर, परीक्षा कर । सं.—सुधार, शुद्धि, जाँच, ठीक करना ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—दे. ॐरुं०.

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.— खा, चबा, भोजन कर ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—खाद्य पदार्थ, अन्न, आहार ; खुजली । क्रि.— खिला, खाने दे (प्रे.) ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—
पेटू, खाऊ ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) वि.—खानेवाला ।
ॐरुं तिरुगुरु (क) सं. और क्रि.— दे.

ॐरुं.

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—जूठन, उच्छिष्ट ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—दे. ॐरुं०.

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—खिला (प्रे.) ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.— खा, चबा, भोजन कर ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.— पिप्पली, बड़ी पीपल ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—पक्षी का पर, पंखा, डैना ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—कूड़ा-करकट की राशि, गोबर की राशि, कूड़ा-करकट का गड्ढा ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—समझदारी, बुद्धि-मत्ता, ज्ञान ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.— धनुष की प्रत्यंचा या डोरी ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—
खुजली. खुजलाहट ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.— चुभ, भोंक, मुष्टि प्रहार कर, मुष्टि से मार ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—
त्वचा को मलकर साफ़ कर ; सुरसुरा ।

(१) ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—
भिक्षुक, भिखारी. भिखमंगा ।

(२) ॐरुं तिरुगुरु (तद्) सं.—तिलक ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—
भिक्षुणी, भिखारिन ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—नेमी, चरखी ; चक्र, भ्रमण ; भँवर ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—घुमा, मोड़ ले ।
ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—मुड़, घूम, चक्र काट, घूम फिर ।

ॐरुं तिरुगुरु, ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.— भीख माँगना, भीख ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—घुमा, पीस, भ्रमण करा । सं.—सड़क की मोड़ या घुमाव ।

ॐरुं तिरुगुरु निरस्करण, ॐरुं तिरुगुरु तिरस्कार, (सम्) सं.—अपमान, अनावर, निंदा ।

ॐरुं तिरुगुरु तिरस्क्रिये (सम्) सं.—अपमान, अनादर, निंदा, उपेक्षा ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—सार. पिण्ड, गूदा ; मूल्य, महत्व ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.— घूम, फिर. भटक ; भीख माँगते फिर । सं.— मोड़, तिरछा स्थान ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—भीख माँगते फिरना ।

ॐरुं तिरुगुरु तिरुगुरु (क) क्रि.—दे. ॐरुं०.

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—दे. ॐरुं०.

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—तिरछा कर, घुमा, मरोड़, षँठ ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—घुमा, फेर ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—चारों ओर चक्र कटवा, घुमा ; पीस ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) क्रि.—दे. ॐरुं०.

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.— षँठ, धनुष की डोर ; माँगना, याचना करना, भीख ।

ॐरुं तिरुगुरु (तद्) सं.— श्री (तद्) —
मण्यु = पवित्र मिट्टी ।

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—दे. ॐरुं०.

ॐरुं तिरुगुरु (क) सं.—दे. ॐरुं०.

अरुगणं तिरुगणि, अरुगणं तिरुगणे. (क) सं.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तिरुगणिसु (क) क्रि.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तिरुगु (क) क्रि.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तिरुगुणि (क) सं.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तिरुगुविके (क) सं.—धुमकड़ी, घूमना-फिरना, भ्रमण।

अरुगणं तिरुगुह (क) सं.—निष्कृति, ऋण से छुटकारा।

अरुगणं तिरुप (क) सं.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तिरुपु (क) सं.—घूमनेवाला, सोने या चाँदी के आभरण (कर्णाभरण, नथ आदि) की रूक। क्रि.—चक्र काटने दे, घुमा।

अरुगणं तिरुपे (क) सं.—दे. अरुगणं. — गार = मिथारिणी।

(१) अरुगणं तिरुवु (क) क्रि.—घुमा, फेर, चक्र काटने दे।—कल्लु (क) सं.—(ओखली में) पीसने का पत्थर।

(२) अरुगणं तिरुवु (क) सं.—घूमना, फिरना; धनुष की डोर।

अरुगणं तिरुहु (क) क्रि.—फिरा, घुमा, चक्र काटने दे। सं.—फेर, चक्र।

अरुगणं तिरुल्लु, अरुगणं तिरुल्लु (क) सं.—अरुगणं.

अरुगणं तिरुल्लु (सम्) सं.—अंतर्धान, लोप, अदृश्य होना।—अरुगणं इसु (सम्) क्रि.—अंतर्धान हो, दिखाई न पड़, छिप जा।

अरुगणं तिरु (क) क्रि.—विनिमय कर; प्रदान कर, दे दे।

अरुगणं तिरु (क) सं.—शीघ्रता से किसी चीज़ को फेंकने की क्रिया। अरुगणं तिरु (क) क्रि.—काट, काट डाल; जुटा।

अरुगणं तिरु (क) क्रि.—चुका, पूरा कर; परिहार कर; नाश कर।

अरुगणं तिरु (क) क्रि.—सीधा कर। सं.—सीधापन।

अरुगणं तिरु (क) सं.—धनुष की डोरी।

अरुगणं तिरु (सम्) सं.—

वि.—टेढ़ा, तिरछा; बाँका, झुका हुआ, चक्र, मुड़ा हुआ। सं.—टेढ़ी चाल चलने-वाला पशु या पक्षी।

अरुगणं तिल (सम्) सं.—तिल; तिल का पौधा।

अरुगणं तिलक (सम्) सं.—वृक्ष विशेष (धुरक); शरीर पर का छोटा-सा काला चिह्न विशेष; तिलक; टीका; अलंकरण; दो वृत्तों का नाम; एक प्रकार का घोड़ा; फुफ्फुस; फूली हुई कोई वस्तु।—अरुगणं तरु (सम्) सं.—धुरक वृक्ष।

अरुगणं तिलज (सम्) सं.—तिल का तेल।

अरुगणं तिल्य (सम्) सं.—तिल का खेत।

अरुगणं तिल्लान (क) सं.—एक तरह का गीत।

अरुगणं तिवि (क) क्रि.—चुभ, भोंक; मुष्टि प्रहार कर, मुष्टि से मार; कुत्ते के गले के बंधन को खोल। वि.—चुभनेवाला।

अरुगणं तिवित (क) सं.—चुभना, चुभन, भोंकना। अरुगणं तिव्य (सम्) सं.—पुण्य नक्षत्र; पौष मास।

अरुगणं तिसुल (तद्) सं.—त्रिशूल (तत्), त्रिशूल।

अरुगणं तिल्लियाट (क) सं.—एक प्रकार का खेल जमीन पर लकीरें खींचकर आमने-सामने के दल पार करने का प्रयत्न करते हैं।

अरुगणं तिल्लु (क) सं.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तिल्लिके. अरुगणं तिल्लिके, (क) सं.—समझ, बुद्धि, ज्ञान, जानकारी।

अरुगणं तिल्लि (क) क्रि.—समझ, ज्ञान प्राप्त कर, जानकारी प्राप्त कर; समझ में आ, साफ हो, निर्मल हो; मालूम हो। सं.—निर्मलता, स्वच्छता, समझ, समझदारी, सूझ, मालूम होना, स्पष्टता; चषक, पीने का बर्तन।

अरुगणं तिल्लिपु (क) क्रि.—समझा, मालूम करा, जता; शांत कर, क्रोध का उपशमन कर; शांत रह; तृप्ति पा; स्पष्ट कर, बता।

अरुगणं तिल्लियुविके (क) सं.—जानना, ज्ञान, अनुभव।

अरुगणं तिल्लिवल्लिके (क) सं.—दे. अरुगणं तिल्लिके (क) सं.—दे. अरुगणं तिल्लिके.

अरुगणं तिल्लिवु (क) सं.—शांति, स्नेह, सौहार्द, प्रणय; ज्ञान, जानकारी, बुद्धि।

अरुगणं तिल्लिसु, अरुगणं तिल्लिहु (क) क्रि.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तिल्लु, अरुगणं तिल्लुकु (क) क्रि.—ज्ञान ले, समझ ले; मालूम कर।

अरुगणं तिल्लुपु (क) क्रि.—अरुगणं.

अरुगणं तिल्लुवल्लिके, अरुगणं तिल्लुविके (क) सं.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तिल्लुवु (क) सं.—अरुगणं तिल्लुवु — कृशता, महीन या पतला होना।

अरुगणं तिल्लुहिसु (क) क्रि.—समझा, जता, ज्ञान करा, मालूम करा।

अरुगणं तिल्लुहु (क) सं.—ज्ञान, जानकारी, बुद्धि, मति।

अरुगणं ती (क) क्रि.—जल, दग्ध हो, झुलसा। सं.—आग।

अरुगणं तीट्टे (क) सं.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तीक्ष्ण (सम्) वि.—पैना, तीव्र; गरम; उग्र, प्रचंड; कड़ा, जोरदार, दृढ़; कर्कश; कठोर, टेढ़ा; हानिकर, अशुभ; कुशाग्र; चतुर, बुद्धिमान; डाही; त्यागी, भक्त। सं.—विष; कोई आयुध; तीव्रता, तीक्ष्णता, लोहा; युद्ध, समर।

अरुगणं तीमे (क) सं.—लता, लतिका; तार, वीणा का तार।

अरुगणं तीट (क) सं.—रगड़ना, फूंकना।

अरुगणं तीट्टे (क) सं.—खुजली, खुजलाहट, सुर-सुरी; अत्यधिक कामना; तीव्रच्छा, लालसा; व्यर्थ झगड़ा; सरोकार।

अरुगणं तीडु (क) क्रि.—मल, रगड़, दबा, तेज़ कर, तीक्ष्ण कर; सुधार; हवा बह, झल, छू, स्पर्श कर; रो, रोदन कर; छेंठन डाल।

अरुगणं तीनाळि (क) सं.—खाऊ, पेट।

अरुगणं तीनि (क) सं.—खाना, आहार, भोजन।

अरुगणं तीनिहाळि (क) सं.—दे. अरुगणं.

अरुगणं तीनु (क) सं.—मेड़ का खूँटा।

अरुगणं तीबु (क) सं.—लौंग, लौंग का वृक्ष।

३१०० तीर, ३१०० तीर (क) क्रि.—अंत हो, समाप्त हो, पूरा हो, चुक; मर जा, चल बस; (कर्ज आदि) चुक जा।

(१) ३१०० तीर (क) सं.—समाप्ति, अंत; निर्णय; व्यवस्था; प्रबंध, फैसला; सौंदर्य; ढंग, विधान, विशेष प्रकार का स्वभाव या आदत।

(२) ३१०० तीर (सम्) सं.—किनारा, तट, कूल, छोर।

३१०० तीरमे (क) सं.—समाप्ति, अंत, उपसंहार; पूर्णता।

३१० तीरि (सम् ?) सं.—एक प्रकार का बाण; एक प्रकार का धनुष।

३१० तीरि (क) सं.—समाप्ति, अंत, निर्णय, फैसला; अवकाश, फुरसत।

३१० तीरिसु (क) क्रि.—पूरा कर, समाप्त कर, चुका; निर्णय कर, फैसला कर।

३१० तीरु (क) क्रि.—दे. ३१० सं.—समाप्ति, अंत, अवसान; निर्णय, फैसला; सौंदर्य; विधान, ढंग, विशेष प्रकार की प्रवृत्ति या आदत।

३१० तीरु, ३१० तीर (तद्) सं.—तीर, बाण।

३१० तीरु (क) सं.—समाप्ति, अंत; व्यय, खर्च।

३१० तीरु (क) सं.—अंत, समाप्ति; निर्णय, फैसला।

३१० तीरु (क) सं.—बाकी; लगान, कर; शुल्क।

३१० तीरु, ३१० तीरु (क) क्रि.—खा, भक्षण कर।

३१० तीरु (क) सं.—कीड़े मकोड़े; एक रोग।

३१० तीरु (सम्) सं.—३१० तीरु—(तद्)—रास्ता, मार्ग, घाट, सोपान; पुण्य-क्षेत्र, जलस्थान; नदी, तटाक; हाथ के कई भाग जो देवकार्य और पितृकार्य के लिए पवित्र माने जाते हैं; पवित्र व्यक्ति, आदि दर्शन, पङ्कदर्शन; सद्बंशज, ब्राह्मण; अष्टादश; मंत्री जो राजा के सहायक होते हैं; यति, मुनि; विद्वान; जिन; पतिव्रता

स्त्री; गुरु, आचार्य; भग, योनि; पताका, ध्वज; पवित्र जल। ३१० तीरु (क) सं.—तीर्थक्षित श्रेष्ठविल्ल पार्थगित्त दोरेयिल्ल—तीर्थ से बढ़कर कोई वस्तु नहीं, पार्थ से बढ़कर कोई राजा नहीं, (कह.)।

३१० तीरु (सम्) सं.—आदरणीय व्यक्ति; पिता।

३१० तीरु (सम्) सं.—तीर्थयात्रा, तीर्थ-यान (सम्) सं.—तीर्थयात्रा।

३१० तीरु (सम्) सं.—तीर्थ-स्थानों में किया जानेवाला श्राद्धकर्म।

३१० तीरु (सम्) सं.—दे. ३१० तीरु (क) सं.—निर्णय, फैसला, न्याय।

३१० तीरु (क) क्रि.—भर, पूर्ण हो, छलक, अधिक हो।

३१० तीरु (सम्) वि.—गरम, उष्ण; उग्र, प्रचंड; व्यापक; चमकीला; अनंत; असीम; भयानक, डरावना; तीक्ष्ण।

३१० तीरु (सम्) अ.—किंतु, लेकिन; प्रत्युत् और; सचमुच।

(१) ३१० तीरु (सम्) सं.—ऊचाई, उठान; पर्वत; शिखर, चोटी; गेंडा; बुधग्रह; नारियल का वृक्ष। वि.—ऊँचा, उन्नत, लंबा, प्रधान, दृढ़।

(२) ३१० तीरु (सम्) सं.—एक प्रकार का कंद; पीठर या कुरुविंद। नामक कंद।

३१० तीरु (सम्) सं.—तुंगभद्रा नदी।

३१० तीरु (क) सं.—नटखट, उपद्रव करनेवाला, दुष्ट; नीच पुरुष। — ३१० तीरु (क) सं.—नटखटी, नटखटपन; दुष्टता; नीचता।

३१० तीरु (क) सं.—नटखट लड़की या स्त्री।

३१० तीरु (क) सं.—नटखटी, दुष्टता, नीचता।

३१० तीरु (सम्) सं.—मुख, चेहरा, चोंच, धूयन (सुभर का); हाथी की सूँड;

औजार की नोक। ३१० तीरु (क) सं.—झींगुर, कनखजूरा, चपड़ा।

३१० तीरु (सम्) सं.—चेहरा, मुख; चोंच।

३१० तीरु (सम्) सं.—कपास का पौधा; कुंदरु की वेल।

३१० तीरु (सम्) सं.—कुंदरु की वेल।

३१० तीरु (सम्) वि.—बातूनि, गप्पी, कटुभाषी।

३१० तीरु (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर; टुकड़े हो।

३१० तीरु (क) सं.—टुकड़ा, अंश, भाग, छोटा अंश; नटखटी, दुष्टता।

३१० तीरु (क) सं.—दे. ३०० तीरु (क) सं.—

छोटी वृद्ध, वर्षा की वृद्ध, फुहार, फुहारा, जलकण।

३१० तीरु (क) सं.—३१० तीरु (क) सं.—दे. ३०० तीरु (क) सं.—

३१० तीरु (सम्) सं.—पेट, तोंद। ३१० तीरु (सम्) सं.—सुस्त या आलसी पुरुष।

३१० तीरु (सम्) वि.—बड़े पेटवाला।

३१० तीरु (क) अ.—पूरा, पूर्ण-रूपेण, बहुत।

३१० तीरु (क) सं.—तितिसारक नामक पेड़ (The wild mangosteen tree)।

३१० तीरु (क) सं.—दे. ३०० तीरु (क) सं.—

(१) ३१० तीरु (क) सं.—अमर, बड़ा भौरा, मधकर।

(२) ३१० तीरु (क) सं.—तूथी, तोमड़ी।

३१० तीरु (क) सं.—पूर्णता, भराव।

३१० तीरु (क) क्रि.—भरा, पूर्ण करा; भरवा (प्रे.)।

३१० तीरु (क) क्रि.—भर, पूर्ण हो; संपूर्ण हो; सशक्त हो; भर, पूर्ण कर; भा (उदा-

...देवता अस नमो तुंभुर बन्द देवत भवन
 मै तुंभुर बन्द—भगवान् उसके शरीर पर
 आये) सं.—भराव, पूर्णता ; वृत्त, डंठल,
 नाभि, पिंडिका ।
 (१) तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (सम्)
 सं.—एक गंधर्व का नाम ।
 (२) तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर ; द्रोण, सफेद
 (छोटे-छोटे) फूलों का पौधा ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (अ. दे.) सं.—
 सेना का एक भाग, टुकड़ी, रोटी का
 टुकड़ा ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (क) सं. — जंग,
 मुरचा, धातु का मैल ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे.
 तुंभुर—दार (अ. दे.) सं. — ज़िले
 का अधिकारी ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर क्रि. — भीड़
 हो, घेर, झपट ।
 तुंभुर तुंभुर (सम्) वि. — हल्का, खाली,
 रहित, व्यर्थ ; नीच, कमीना ; छोटा, तिर-
 स्करणीय ; गरीब, अभागा ।
 तुंभुर तुंभुर (क?) सं.—उपेक्षा, तिरस्कार,
 धृणा, निंदा ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—अधर, होंठ, ओष्ठ ।
 तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (क) सं.—विलकुल अंतिम
 (वस्तु) ।
 तुंभुर तुंभुर (तद् ?) सं. तुंभुर (तद् ?) — मँह-
 गाई, अधिक दाम, बहुत दाम ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—शक्ति कम हो या
 घट, निर्बल हो ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—चोर, तस्कर, दगा-
 याज, ठग ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—स्त्री चोर, ठगिनी,
 धोखेबाज़ स्त्री ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—चोरी, डकैती, लूट-
 मार, धोखा, दगा, चोरी गई वस्तु ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—चोरी का माल ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—फल का भंडार ।

तुंभुर तुंभुर (क) सं.—पहनने के वस्त्र, पह-
 चनावा, गहना ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर
 तुंभुर (क) क्रि.—पहना, पहनना, धारण
 करा या करवा ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—पहन, धर, धारण कर ;
 धनुष पर (बाण) चढ़ा । सं. — पहनना,
 धारण ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—ग्रहण कर, पक-
 डवा, झट पकड़वा ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—सत्वर, ग्रहण कर,
 झट पकड़, छीन ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर — तन
 तन=चोरी ; धोखा ; नटखटी ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—दे. तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—नौकादण्ड, नाव का
 डंडा ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—एक प्रकार का डोल ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—टुकड़ा, भाग,
 हिस्सा ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—टुकड़ा, हिस्सा ।
 क्रि.—हिला ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—चल, पग रख ; पैर से
 कुचल ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—हिलवा (प्रे) ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—हिल, हिलकर
 नीचे गिर (जैसे बर्तन से पानी गिरता है) ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर
 तुंभुर (क) सं.—दे. ३३० (२).
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—निपुण, चतुर पुरुष ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—कौर, मुँहभर, ग्रास ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (क) सं.—अंतिम भाग,
 नोक, अग्र भाग, सिरा ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (क) सं.—ऊन,
 कोमल रोम, पश्मीना ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (अ. दे.)
 सं.—तोप (तुकी) ; बंदूक ।

तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (अ. दे.)
 सं.—तुफान (भरबी) ; आँधी ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—घी, घृत ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे.
 तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (क) सं.—
 कोमल रोम ; ऊन ; पशुओं के कोमल
 रोम ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—पंख, फर ; कोमल
 रोम ; खरगोश आदि के कोमल रोम ।
 तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे. तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर (अ. दे.) सं.—दे. तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—चोर को पहचान,
 अमुक चोर है—यह सूचित कर । सं.—
 खोजा जाना ।
 तुंभुर तुंभुर तुंभुर (क) सं.—दे.
 तुंभुर.
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (सम्) वि.
 शोरगुल मचानेवाला, कोलाहल, शोरगुल ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—चेत, होश में
 आ, जाग ; प्रसन्न हो, प्रबोधित हो ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—भीग, गीला हो ।
 तुंभुर तुंभुर (क) क्रि.—खींच, घसीट ; पसार ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (क) सं.
 पायस, खीर ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (अ. दे.) सं.—
 तुर्क, मुसलमान ।
 तुंभुर तुंभुर (अ. दे.) सं.—तुर्क देश का
 घोड़ा ।
 तुंभुर तुंभुर (सम्) सं.—घोड़ा ; सात फी
 संख्या ।—संशय मेघ=अश्वमेघ ।
 तुंभुर तुंभुर (सम्) सं.—घोड़ा ; जेल ;
 अनुयाय का एक भेद ।—संशय वदन=
 किन्नर ; हयग्रीव ।
 तुंभुर तुंभुर तुंभुर (सम्) सं.—घोड़ा ; एक
 वृत्त ।
 तुंभुर तुंभुर, तुंभुर तुंभुर (अ. दे.)
 सं.—तुरा (भरबी) ; पगड़ी के ऊपर रखने
 का एक आभरण ; फूलों का बंधा गुच्छा

जो आदरार्थ आदरणीय व्यक्ति के हाथ में दिया जाता है ।

ढंरुङ्ङुढं तुराषाद्, ढंरुङ्ङुढं तुराषाद् (सम्) सं.—इन्द्र ।

ढंरु तुरि, ढंरुनु तुरुवु (क) क्रि.—खराश, तराश । सं.—खुजली, खुजलाहट ।

ढंरुतुरीय (सम्) वि. — चौथा । — वर्ण=शुद्ध ।

ढंरुतुरुक (अ. दे.) सं. दे. —ढंरुतुरुक ।

ढंरुतुरुकिति (अ. दे.) सं.= मुस्लिम स्त्री ।

ढंरुनु तुरुवु (क) क्रि. और सं.—दे. ढंरुतुरुवु ।

ढंरुनु तुरुवुक (सम्) सं.—दे. ढंरुतुरुवुक ।

ढंरुनु तुरुकु (क) क्रि.—दे. ढंरुनुतुरुकु ।

ढंरुनु तुरुगु (क) क्रि.—दे. ढंरुनुतुरुगु ।

ढंरुनु तुरुनि (क) सं.—एक पौधा विशेष ।

ढंरुनु तुरुसु, ढंरुनु तुरुसु (क) क्रि.—खुरच, नोच ।

ढंरुनु तुरुके (क) सं.—खुजली, खुजलाहट ।

ढंरुनु तुरुचु (क) क्रि.—दे. ढंरुनुतुरुचु ।

ढंरुनु तुरु, [ढंरुनु तुरु] (क) सं.—गाय, गौ ; मीठा नीम ।—ढंरुनु कार, ढंरुनु कार (क) सं.—चरवाहा, ग्वाला ।

ढंरुनु तुरुकु, [ढंरुनु तुरुकु] (क) क्रि.—ढंरुनु, घुसेड़, दवाकर भर ।

ढंरुनु तुरुगं, ढंरुनु तुरुगु (क) सं. — भीड़, जमाव ।

ढंरुनु तुरुगल् (क) सं. — भीड़, जमाव ।

ढंरुनु तुरुगार, [ढंरुनु तुरुगार] (क) सं.—गोपालक, ग्वाला ।

ढंरुनु तुरुगारि (क) सं. — गोपकान्ता, ग्वालिन ।

ढंरुनु तुरुगु (क) क्रि.—भीड़ हो, जमाव हो, घिर आ, एकत्रित हो, इकट्ठा हो, आकीर्ण हो, संकीर्ण हो ।

ढंरुनु तुरुगल् (क) सं.—दे. ढंरुनुतुरुगल् ।

ढंरुनु तुरुबि, ढंरुनु तुरुवे (क) सं.—एक लंबा पौधा (Sida Indica) ।

ढंरुनु तुल, ढंरुनु तुले, ढंरुनु तुल (सम्) सं.—तराजू ; माप, तौल ; समानता, सादृश्य ; लगभग पाँच सेर का एक प्राचीन परिमाण ; एक रुपये का एक तौला ; एक प्रकार का बर्तन ; एक प्रकार की दिव्य परीक्षा (तोला कर की जाती है) ।

ढंरुनु तुलन (सम्) सं.—तोल ; तुलना ।

ढंरुनु तुलसी, ढंरुनु तुलसि (सम्) सं.—तुलसी का पौधा ।

ढंरुनु तुलाभार (सम्) सं. — किसी व्यक्ति के समतोल का सोना, चाँदी आदि जो दूसरों को दान में दिया जाता है ।

ढंरुनु तुल्य (सम्) वि.—एक ही प्रकार का, बराबर, समान, सदृश्य ; उपयुक्त ; अभिन्न ।

ढंरुनु तुवर (सम्) वि.—कसैले स्वाद का ; दाडी रहित ।

ढंरुनु तुवालु, ढंरुनु तुवाल् (अ. दे.) सं.—तौलिया ।

ढंरुनु तुष (सम्) सं.—भूसा, भूखी ; कुटकी, पिसू ।

ढंरुनु तुषार (सम्) सं. — कोहरा, सर्दी, ओस, पाला । वि.—ठण्डा, कुहरे का । — ढंरुनु अद्रि (सम्) सं.—हिमालय ।

ढंरुनु तुष्ट (सम्) वि.—प्रसन्न, संतुष्ट तृप्त ।

ढंरुनु तुष्टि (सम्) सं. — संतोष, प्रसन्नता, आनन्द ।

ढंरुनु तुसु, ढंरुनु तुस, ढंरुनु तुसुकु (क) वि.—थोड़ा, कुछ ।

ढंरुनु तुहिन (सम्) सं.—शीत, हिम, ओस, कोहरा ; चाँदनी ; कर्पूर, कपूर । — ढंरुनु कर (सम्) सं. — चाँद । — ढंरुनु गिरि = हिमालय ।

ढंरुनु तुळ, ढंरुनु तुळव, ढंरुनु तुळवु (क) सं.—तुल बोली बोलनेवाला ; तुल बोली ।

ढंरुनु तुळकणिसु, ढंरुनु तुळकु (क) क्रि. दे. ढंरुनुतुळकु ।

ढंरुनु तुळसि (तद्) सं.—दे. ढंरुनुतुळसि ।

ढंरुनु तुळिकु (क) क्रि.—दे. ढंरुनुतुळिकु ।

ढंरुनु तुळुकु (क) क्रि.—दे. ढंरुनुतुळुकु ;

छिड़का, जलसेचन कर ; मिला, जोड़ ; फेंक—ढंरुनु विके (क) सं. — हिलना, टपकना, प्राघार ।

ढंरुनु तुळुकु (क) क्रि.—हिल, (बर्तन से) बाहर टपक ।

ढंरुनु तुळुकु (क) क्रि.—लुढ़क, जोर से उछल, कूद ।

ढंरुनु तुळत (क) सं.—पैर से कुचलना ।

ढंरुनु तुळि (क) क्रि.—पैर से कुचल, पैर से मर्दन, पदाघात कर ; सता, आघात कर, पीड़ा दे ; झड़ जा, निर्बल हो ; पैर से कुचला जा, दबा जा ; बहिष्कृत हो ; चारों ओर घुमा । सं.—पैर से कुचलना, मर्दन करना, पदाघात ; कुचली गई वस्तु ।

ढंरुनु तुळिकल (क) सं.—सूखे पत्ते, मुरझाये या झड़े पत्ते ।

ढंरुनु तुळित (क) सं.—दे. ढंरुनुतुळित ।

ढंरुनु तुळिल्ल, ढंरुनु तुळिल्लु (क) सं.—नमस्कार, नमस्ते, सिर झुकाना, हाथ जे कर प्रणाम करने की क्रिया ; वीरता, शूरता बहादुरी ; काम, नौकरी, सेवा, गुलामी ।

ढंरुनु तुळिसु, (क) क्रि.—कुचलवा, पैर मर्दन करवा ।

ढंरुनु तुळिह, ढंरुनु तुळत (क) सं. — ढंरुनुतुळत ।

ढंरुनु तू (क) सं.—घृणा सूचक शब्द ; समय आनेवाली ध्वनि ; शहनाई की ध्वनि

ढंरुनु तूकु (क) क्रि.—तोल (तौलना), झूल ; झुला । सं.—तौलने, हिलने झूलने की क्रिया ;

ढंरुनु तूतु (क) क्रि.—प्रवेश करा करवा । सं.—छेद, रंध्र ; धुकते की ध्वनि ।

ढंरुनु तूक (क) सं.—भार, वजन, तौल ; योग्यता, गौरव ।

ढंरुनु तूकिके (क) सं.—ऊँघ, तंद्रा ।

ढंरुनु तूकिके (क) सं.—तोलना ; तोलने क्रिया ।

ढंरुनु तूकिरि, ढंरुनु तूकिरि (क) सं.—नाच, नृत्य ।

अंशु त्रु (क) सं.—भार, वजन; हिलना, झुमना ।

अंशु त्रु (क) सं.—हिलना, आंदोलन ।

अंशु त्रु (क) सं.—दे. अंशु.

अंशु त्रु (क) कि.—तोलना, झूलना, झुंझना-उधर हिलने दे ।

अंशु त्रु (क) कि.— तोल; झूल, झूम, लटक, हिल, लहरा । सं.—तोलना; झूलना, लटकना आदि ।

(१) अंशु त्रु (क) सं.—आवेश, खलबली ।

(२) अंशु त्रु, अंशु त्रु, अंशु त्रु त्रु (सम्) सं.—तरकस ।

अंशु त्रु (क) सं छेद, रंध; विल ।

अंशु त्रु (क) सं.—स्थूणा (तत्); खंभा ।

अंशु त्रु, अंशु त्रु (क) सं.— दे. अंशु.

अंशु त्रु, अंशु त्रु (क) सं.— छोटी, बूंदे, जलकण, फुहार, फुहारा ।

अंशु त्रु (क) सं.—नाभि, पिंडिका; चक्र की नाभि; तालाब का जलमार्ग; आयुधों को पकड़ने की मूठ का रंध; कर्णाभरण की नली ।

अंशु त्रु (क) सं.—फटकन, ओसाना ।

अंशु त्रु (क) सं.—दूर जाना, दूर गया हुआ ।

अंशु त्रु (क) सं.—दे. अंशु.

अंशु त्रु, अंशु त्रु (क) कि.—फटका, पछोरने का कार्य करा; उड़वा, हिलवा; प्रवेश करा; छँस ।

अंशु त्रु, अंशु त्रु अंशु त्रु (क) कि.—चला, फटक, पछोर, ओसा; उड़ा, हिल, गिर पड़; उड़, दूर जा; एकाएक छलांग मार; प्रवेश कर, किसी रंध में प्रवेश कर, घुस; टपक, फुहार हो । सं.—छोटा कण या बूंद; घुसना ।

अंशु त्रु (क) सं.—पछोरना, फटकना ।

अंशु त्रु (सम्) वि.—तेज, वेगवान, शीघ्रगामी, फुर्तीला ।

अंशु त्रु (सम्) सं.—वाद्ययन्त्र विशेष औजारों का समूह ।

अंशु त्रु (सम्) सं.—रुई; आकाश, वायु-मण्डल; शह त्रु ।

अंशु त्रु, अंशु त्रु (सम्) सं.—चित्तरे की कूची, पेंसिल; सूती बत्ती; रुई भरा गद्दा; छेद करने का औजार ।

अंशु त्रु (सम्) सं.—शालमली, सेमल ।

अंशु त्रु (क) सं.—कपास का वृक्ष; बत्ती ।

अंशु त्रु (सम्) अ.—मौन रूप से, चुपचाप ।

अंशु त्रु, अंशु त्रु (क) कि.—दूर, आगे या नीचे जा; पीछा कर, अनुगमन कर; हमला कर; प्रारंभ कर ।

अंशु त्रु (क) सं.—आवेग, आवेश; उत्साह ।

अंशु त्रु (क) कि.—दे. अंशु. सं.—आवेश, आवेग; हमला, आक्रमण ।

अंशु त्रु (क) कि.—चला, हटा, दूर कर; फैला ।

अंशु त्रु (सम्) सं.—घास; नरकुल, सर-पत ।

अंशु त्रु (सम्) सं.—बॉस ।

अंशु त्रु (सम्) वि.—त्रु के बरा-बर देखी गई (वस्तु), तुच्छ ।

अंशु त्रु (सम्) वि.—तीसरा ।

अंशु त्रु, अंशु त्रु (सम्) सं.—तिथि, तीज; करण कारण ।

अंशु त्रु (सम्) वि.—संतुष्ट, अघाया हुआ; प्रसन्न ।

अंशु त्रु (सम्) सं.—संतोष, अघाई, प्रसन्नता ।

अंशु त्रु (सम्) वि.—प्यासा, पिपासु; लोलुप, लोभी ।

अंशु त्रु (सम्) सं.—प्यास, पिपास ।

अंशु त्रु (सम्) वि.—दे. अंशु.

अंशु त्रु (सम्) सं.—प्यास; लालच, लोलुपता; अमिलापा ।

(१) अंशु, अंशु त्रु (क) सं.—दक्षिण दिशा ।

(२) अंशु, अंशु त्रु (क) सं.—नारियल का पेड़ ।

अंशु त्रु, अंशु त्रु (क) सं.—दक्षिण दिशा ।

अंशु त्रु (क) कि.—तैर । सं.—दक्षिण ।

अंशु त्रु (क) सं.—अय्यंगार ब्राह्मणों की एक शाखा ।

(१) अंशु त्रु (क) सं.—नारियल । — अंशु मर=नारियल का पेड़ ।

(२) अंशु त्रु (क) कि.—छिड़क, फेंक, ठहर ।

अंशु त्रु (क) सं.—चिड़ियों का उतरना ।

अंशु त्रु (क) कि.—पछोरने का काम करा (प्र.) ।

अंशु त्रु (क) कि.—पछोर, फटक, ओसा ।

अंशु त्रु (क) सं.—गट्ठा, गठरी, पोदली, बंडल ।

अंशु त्रु (क) सं.—चरागाह ।

अंशु त्रु (क) सं.—दक्षिण की हवा ।

अंशु त्रु (क) अ.—अधिक, बहुत, अन-गिनत ।

अंशु त्रु, अंशु त्रु (क) सं.—आलिंगन करना, आलिंगन; चक्कर; गंडुरी (मै. प्र.); समूह, समुदाय ।

अंशु त्रु (क) कि.—तैरा, तैरवा; अचेत हो, होश उड़; खुजली को चाट; डर, घबरा जा ।

अंशु त्रु (क) अ.—दे. अंशु.

अंशु त्रु (क) कि.—आलिंगन कर, अंक भर, गले मिल ।

अंशु त्रु (क) सं.—निंदा कर, गाली दे । सं.—निंदा ।

अंशु त्रु (क) कि.—निकाल दे, हटा, दूर कर ।

अंशु त्रु, अंशु त्रु (क) सं.—कंधा ।

डिंगु त्तेगसु (क) किं. — उठना निकालने दे, हटवा; दूर करा, स्वीकार करा या करवा ।
 डिंगु त्तेगहु (क) सं.—लेना; मानी हुई, कल्पना ।
 डिंगु त्तेगळ (क) सं.—दे डिंगु ।
 डिंगु त्तेगळि, डिंगु त्तेगळिगे (क) सं. — इन्द्रलुप्तक, सिर के बाल झड़ने का रोग ।
 डिंगु त्तेगळ, डिंगु त्तेगळु, [डिंगु का भी प्रयोग होता है] (क) किं. — निंदा कर, गाली दे, अनादर कर । सं.—निंदा, गाली ।
 डिंगु त्तेगि, डिंगु त्तेगे (क) किं. — उठा, उठा ले, ले; चुरा; खरीद ले; हटा, दूर कर, निकाल; आकर्षित हो, खिंच जा; रगड़, घिस, मर्दन कर, पीस; खींच, बाहर निकाल (जैसे बाण निकालना); आरंभ कर, शुरू कर, खोल (जैसे दरवाजा); (लकीर, चित्र आदि) खींच, कसीदे का काम कर; उपाय सोच, योजना निकाल; ले, वहन कर, भार सह; कम हो, घट; अदृश्य हो; तज, छोड़ । डिंगु त्तेगुडु-कौंडु डोगु—ले जा । डिंगु त्तेगुडु हाकु—निकाल, फेंक, हटा ।
 डिंगु त्तेगु (क) किं.—दे. डिंगु ।
 डिंगु त्तेगे (क) किं.—दे. डिंगु; भाग, चले जा ।
 डिंगु त्तेगेविके (क) सं.—लेना, उठाना, हटाना, निकालना, अपवारण, अदृश्य होना ।
 डिंगु त्तेगिसु, डिंगु त्तेगिसु, डिंगु त्तेगिसु (क) किं.—डिंगु त्तेगे का प्रेरणार्थक रूप ।
 डिंगु त्तेगु (क) सं.—गड्ढा, खड्डा ।
 डिंगु त्तेजिसु (तद्) किं.— [‘त्यज्’ से]— त्याग, छोड़ ।
 डिंगु त्तेट्टु (क) कृ.—खुले रूप से ।
 डिंगु त्तेणरु, डिंगु त्तेणरु (क) किं.— पीढा से कराह ।
 डिंगु त्तेत्ति (क) सं.—अण्डा ।
 डिंगु त्तेत्तिगे (क) सं.— नौकर, सेवक-चाकर, चपरासी; संबंध; साथी, मित्र ।
 डिंगु त्तेत्तिसु (क) किं.— दिलवा, चुकवा; निकट संबंध में ला, घुसेड़, प्रवेश करा,

लगा, रोप, पियो, उँडेल; प्रवेश कर, घुस, गुँथा जा ।
 डिंगु त्तेत्तिसु (अ. दे.) वि.—तैत्तिस; डिंगु त्तेत्तु (क) कृ. देकर, चुकाकर । किं.— ँठ, मरोड़, तिरछा कर; ँठ जा, मरोड़ा जा, तिरछा हो ।
 डिंगु त्तेनसु (क) सं.— खुजली, खुजलाहट, सुरसुरी ।
 डिंगु त्तेने (क) सं.—बाल, अनाज की बाल; मुँडेरा, किले की दीवार का उन्नत भाग ।
 डिंगु त्तेप्प (क) सं.—लट्टों का वेड़ा ।
 डिंगु त्तेप्पगे, डिंगु त्तेप्पने (क) अ.—चुपचाप, मौन रूप से, बिना बोले, आराम से ।
 डिंगु त्तेप्पर, डिंगु त्तेप्परु (क) किं.— होश में आ, चेतना पा, सचेत हो, मूर्च्छा से उठ; चैतन्य दे ।
 डिंगु त्तेप्परिसु (क) किं.—चैतन्य पा, होश में आ, सचेत हो, सावधान हो ।
 डिंगु त्तेवु (क) किं.—उछल, कूद ।
 डिंगु त्तेमर, डिंगु त्तेमरु (क) किं.— रगड़े, घिस; मँज, मल, लेपन कर; नाश कर, मिटा; लूट; भगा ।
 डिंगु त्तेमळु (क) किं.—चयन कर, जमा कर, राशि कर, ढेर कर ।
 डिंगु त्तेमळ (क) सं.—समूह, समुदाय, ढेर, राशि ।
 डिंगु त्तेय्य (क) किं.—रोक, विलंब कर ।
 डिंगु त्तेय्यु (क) किं.—रगड़ घिस ।
 डिंगु त्तेरु, डिंगु त्तेरु (क) सं.— राशि, राशि पर राशि होना, ढेर का ढेर ।
 डिंगु त्तेरुडु (क) सं.—विवाह के समय वर-वधू को दी जानेवाली भेंट, उपहार । किं.— भेंट दे, उपहार दे ।
 डिंगु त्तेरुडु (क) किं.— लपेट खा, चकर काट; मिल, जुड़, संयुक्त हो ।
 डिंगु त्तेरिसु, डिंगु त्तेरिसु (क) किं.— खुला, खुलवा ।
 डिंगु त्तेरु, डिंगु त्तेरु (क) किं.— चल,

जा; कॉप हिल, झूल; चला जा, प्रस्थान कर ।
 डिंगु त्तेरुडुके, डिंगु त्तेरुडुके (क) सं.— जाना, चलना, प्रस्थान ।
 डिंगु त्तेरुडु, डिंगु त्तेरुडु (क) किं.— चला, प्रस्थान करा, जाने दे, हिलवा, कँपा ।
 डिंगु त्तेरु (क) किं.—दे. डिंगु; गोल हो; अधिक हो, असंख्य हो, अनगिनत हो; राशि हो ।
 डिंगु त्तेरुळे (क) सं.— पिण्ड; सार, रस; कोमल अंश ।
 डिंगु त्तेरुळेके (क) सं.— हिलना, कॉपना, संचालन, जाना; राशि, ढेर, समूह, श्रेणी ।
 डिंगु त्तेरुडेडु (क) सं.—एक छोटा पौधा (Linum mysorensis Heyne) ।
 डिंगु त्तेरे (क) सं.—तरंग, वीचि, ऊर्मि, लहर; सिकुडन, झुरी, पशुओं के शरीर के सिकुडन; पर्दा, यवनिका, कांडपट ।—डिंगु त्तेगे =पर्दा उठा ।—डिंगु त्तेरे (क) सं.— पर्दे का कपड़ा ।—डिंगु सुत्तु (क) सं.— पर्दे का आवरण ।
 डिंगु त्तेर (क) सं.— खुले रहना, स्वच्छता-प्रकाश; तरह, ढंग, विधान, रीति, प्रकार; कन्याशुल्क ।
 डिंगु त्तेरगे, डिंगु त्तेरिगे, (क) सं.— लगान, कर, चुगी. मालगुजारी ।
 डिंगु त्तेरु (क) सं.— अवकाश, रिक्तता, रिक्त स्थान, अंतर, स्थान, जगह, विश्रान्ति, छुटी, गुंजाइश ।
 डिंगु त्तेरुवि, डिंगु त्तेरुवे (क) सं.—खुलना, प्रकट, होना ।
 डिंगु त्तेरुवु (क) सं.—खुलना. ढंग, विधान, रीति; रिक्तता ।
 डिंगु त्तेरुडु (क) सं.—दे. डिंगु ।
 डिंगु त्तेरिगे (क) सं.— दे. डिंगु ।
 डिंगु त्तेरिसु (क) किं.— खुला, खुलवा; लगान या कर चुकवा ।
 डिंगु त्तेरु (क) किं.—दे. (कर या लगान) दे ।—डिंगु त्तेरुके=देना ।

डैलू त्रे (क) क्रि.—खुल जा, अनावरण हो; खोल। सं.—कर, लगान, भूमिकर।
 डैलू त्रेगे (क) सं.—कर, लगान।
 डैलू यीसु त्रेयिसु (क) क्रि.—खुलवा।
 डैलू त्रेलग (क) सं.—तेलुगु भाषी पुरुष।
 डैलू त्रेलगिति. डैलू त्रेलगिति (क) सं.—तेलुगु भाषी स्त्री।
 डैलू त्रेलग (क) सं.—दे. डैलू।
 डैलू त्रेलगिति (क) सं.—दे. डैलू।
 डैलू त्रेलटि. डैलू त्रेलटु, डैलू त्रेलट्टु, डैलू त्रेलट्टु, डैलू त्रेलट्टि (क) सं.—उपहार, भेंट, सौगात।
 डैलू त्रेल्लिग (तद्) सं.—तेली। डैलू त्रेल्लिगिति = तेलिन।
 डैलू त्रेल्लिसु, डैलू त्रेल्लिसु, डैलू त्रेल्लिसु (क) क्रि.—मन्द हो; भीमा हो; अधिक हो, बढ़।
 डैलू त्रेवट्टु (क) क्रि.—ओसा, पछोर।
 डैलू त्रेवडे (क) सं.—खेत का बांध, खेत का छोटा मेड़।
 डैलू त्रेवर् (क) क्रि.—दे. डैलू।
 डैलू त्रेवर्, डैलू त्रेवरु (क) क्रि.—रगड़, घिस; सता, तंग कर। सं.—टीला, चढ़ाव, पहाड़ी।
 डैलू त्रेवरु (क) क्रि.—डकैती कर, लूट, चोरी कर।
 डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—खुजली की बीमारी।
 डैलू त्रेवल्लु, डैलू त्रेवल्लु (क) क्रि.—रंग, घुटनों के बल चल।
 डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—दे. डैलू।
 डैलू त्रेवल्लु (क) वि.—पतला, महीन, सूक्ष्म, सुंदर, चारु। डैलू त्रेवल्लुगे इदे—पतला है।
 डैलू त्रेवल्लु, डैलू त्रेवल्लु, डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—पतलापन, महीन होना; सूक्ष्मता, तरलता।
 डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—सुंदरता, चारुता।
 डैलू त्रेवल्लु (क) वि.—पतला, महीन।

डैलू त्रेवल्लु, डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—वह जो पतला हो।
 डैलू त्रेवल्लु (क) क्रि.—डकैल; फेंक।
 डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—समूह, राशि, ढेर।
 डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—डकार। क्रि.—डकार ले।
 डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—सागौन वृक्ष; सादृश्य, समानता।
 डैलू त्रे, डैलू त्रे, डैलू त्रे (क) क्रि.—घिस, रगड़; घिस घिस कर घट, घिस जा।
 डैलू त्रे (क) क्रि.—तैर; हाँप; डकार ले। सं.—दमा, हाँपना; डकार।
 डैलू त्रे, डैलू त्रे (क) सं.—सागौन का पेड़।
 डैलू त्रे (क) क्रि.—डकार ले। सं.—डकार; सागौन का पेड़।
 डैलू त्रे, डैलू त्रे, डैलू त्रे (सम्) सं.—तेजी, तेजदार; आग की शिखा, भभक; चमक; सूक्ष्मता; सौंदर्य; सूर्य; किरण; बल, पराक्रम, पौरुष; अनिल, वायु; तन, देह, शरीर; भवन, घर; स्फूर्ति; चरित्रबल; वीर्य; सार; अग्नि; गुँदा; पित्त; ताजा मक्खन; घोड़े का वेग; सुवर्ण; ब्रह्म; सत्वगुण (सांख्य के अनुसार)।
 डैलू त्रे, डैलू त्रे (सम्) वि.—चमकीला, प्रचण्ड, प्रसिद्ध। सं.—एक पौधे का नाम।
 डैलू त्रे (सम्) सं.—घोड़ा, अरब का घोड़ा।
 डैलू त्रे, डैलू त्रे (क) सं.—निर्मलता, शुद्धता (पानी की)।
 डैलू त्रे (क) अ.—और भी, उस प्रकार।
 डैलू त्रे (क) सं.—शहद, मधु।
 डैलू त्रे; डैलू त्रे (क) सं.—पैवंद, चिप्पड़।
 डैलू त्रे (क) सं.—घिसाई, धातुओं की परीक्षा में होनेवाली हानि; बेकार होना; कामचोरी।

डैलू त्रे, डैलू त्रे (क) क्रि.—रगड़, घिस।
 डैलू त्रे, डैलू त्रे (क) सं.—रथ।
 डैलू त्रेण (क) सं.—मेहन्दी का पौधा।
 डैलू त्रेयिसु, डैलू त्रेयिसु (क) क्रि.—पीछे जा, पीछे हट; किसी प्रयत्न से पीछे हट; पीछे हटा।
 डैलू त्रेयिसु (क) क्रि.—पहुँचा।
 डैलू त्रे (क) सं.—दे. डैलू। क्रि.—(अंत तक) पहुँच; सफल हो, गमन स्थान पहुँच।
 डैलू त्रेगे (क) सं.—सफलता, उत्तीर्णता।
 डैलू त्रे, डैलू त्रे (क) क्रि.—तैर, पानी के उपरी भाग में रह; फिसल; पीछे जा; शिथिल हो, ढीला हो, अचेत हो, बेहोश हो।
 डैलू त्रे (क) क्रि.—तैरा; (सृष्ट्यु के समय) आँखें फाड़ कर गौर से देख; (वचन से) पीछे हट।
 डैलू त्रे (क) क्रि.—तैर; ढीला या शिथिल हो। वि.—तैरनेवाला।
 डैलू त्रे (तद्) सं.—तेम; (तत्); आर्द्रता, गीला होना।
 डैलू त्रेवल्लु, डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—बाल झड़ने का रोग।
 डैलू त्रेवल्लु (क) सं.—सच्चा मित्र।
 डैलू त्रे, डैलू त्रे (क) सं.—विच्छू।
 डैलू त्रे (क) सं.—नाच में 'थै थै'।
 डैलू त्रे (सम्) सं.—तेल।
 डैलू त्रे (सम्) सं.—चालुक्य वंश का एक राजा।
 डैलू त्रे (अ. दे.) सं.—थैली (हिं.)
 डैलू त्रे त्रेलीन (सम्) सं.—तिल का खेत।
 डैलू त्रे त्रेकु (क) क्रि.—शरीर के धारो झुका, नत हो।
 डैलू त्रे त्रेगु (क) सं.—गुच्छा, मज्जरी, ढेर।
 डैलू त्रे त्रेगु (क) सं.—धागा; कटिसूत्र।
 डैलू त्रे त्रेगु (क) क्रि.—लटक, झूल; झुक, नत हो।

१९३० तोचु (क) क्रि.—मन में आ, सूझ; दिख; प्रकट हो।

१९३१ तोजे (क) सं.—रीति, पद्धति, विधान, ढंग, रीति-नीति।

१९३२ तोट (क) सं.—बाग, बगीचा।—
गा० गार, गा० गार, ष० वळ, ष० वळ, (क) सं.—माली।

१९३३ तोटि (क) सं.—हाथ का हाथ से भिड़ना, झगड़ा, लड़ाई, फूट; निम्न श्रेणी का सेवक, मेहतर।—गा० कार, गा० कार = लड़नेवाला, झगड़ा।

१९३४ तोटिग (क) सं.—माली, बागवान।

१९३५ तोट्टे (क) सं.—दे. उ००३५.

१९३६ तोड (क) सं.—दे. उ००३६; एक प्रकार का सफेद चूहा; नीलगिरि की एक जाति के लोग।

१९३७ तोडि (क) सं.—एक राग का नाम।

१९३८ तोडु (क) क्रि.—निकल, निकाल; बड़े बर्तन से छोटे बर्तन में पानी निकाल; तागा लपेट; कान का मल निकाल; खोद, गड्ढा बना, बिल बना। सं.—जोड़ना, लगाना, चढ़ाना (धनुष पर बाण); जोड़ा, समता, सादृश्य; नहर।

१९३९ तोडे (अ. दे.) सं.—सोने का बलय।

१९४० तोदन (सम्) सं.—पीड़ा, कष्ट; अकुश, (गाय बैल को चलाने में उपयोगी) उसकाव।

१९४१ तोदु (क) सं.—उपाय, युक्ति।—गा० गार, गा० गार = समय पर युक्ति निकालने-वाला।

१९४२ तोप, १९४३ तोफ (अ. दे.) सं.—तोप (तुर्की); बंदूक।

१९४४ तोपु (क) सं.—पेड़ों का समूह, वन।

१९४५ तोमर (सम्) सं.—लोहे का डंडा; बछी, साँग।

१९४६ तोय (सम्) सं.—पानी, जल।—अ. ज = कमल।—अ. निधि = समुद्र।

१९४७ तोयिसु (क) क्रि.—गीला कर, भिगो।

१९४८ तोर (क) वि.—बड़ा, मोटा, तगड़ा, स्थूल।

१९४९ तोरण (सम्) सं.—तोरण, शुभ सूचक अलंकार की वस्तुएँ—केले के पौधे और आम के पत्ते जो द्वार, मण्डप आदि में बाँधे जाते हैं।

१९५० तोरिद (क) सं.—बड़ा या मोटा आदमी।

१९५१ तोर्, १९५२ तोरु [१९५३ तोर्, १९५४ तोरु] (क) क्रि.—दिख, दिखाई पड़, दिखाई दे, प्रकट हो, व्यक्त हो, लग, सूझ, संभूत हो, गोचर हो; दिखा, प्रकट कर।

१९५५ तोरुद, १९५६ तोरु (क) सं.—प्रकट होना दिखाना।

१९५७ तोरिक्के, १९५८ तोर्के (क) सं.—प्रकट होना, दिखाई पड़ना; दिखाना, प्रकट करना; देखना, अभिमत।

१९५९ तोरिसु [१९६० तोरिसु] (क) क्रि.—दिखा, दिखला, प्रकट कर, प्रकट करा।

१९६१ तोरुविके (क) सं.—प्रकट होना, दिखाई पड़ना।

१९६२ तोरुपु १९६३ तोरुपु (क) सं.—दे. उ००३७.

१९६४ तोल्, १९६५ तोलु (क) सं.—खाल, चर्म, चमड़ा; रास्ता, मार्ग।

१९६६ तोल (सम्) सं.—भार, वजन; २१२ माशे का तोल; एक तोला।

१९६७ तोले (क) सं.—मोतियाबिन्द नामक आँख का रोग।

१९६८ तोवे (क) सं.—दाल, सूप:।

१९६९ तोषण (सम्) सं.—संतोष, वृत्ति, प्रसन्नता।

१९७० तोषेखाने (अ. दे.) सं.—तोशखाना (तुर्की, फ़ारसी); खज़ाना, धनागार।

१९७१ तोसु (क) क्रि.—दे. उ००३८.

१९७२ तोहु (क) सं.—झुरमुट, झाड़ी, समूह, घेरा, धोखा, कपट; छिपने का स्थान, मेड़; फँसाना।

१९७३ तोल्, १९७४ तोलु (क) सं.—बाहु, बाँह, भुजा; शाखा, डाल।

१९७५ तोळ (क) सं.—भेड़िया।

१९७६ तोळे (क) सं.—बड़ा चमगादड़।

१९७७ तौडु (क) सं.—चावल की भूसी।

१९७८ तौळव (क) वि.—तुलु देश से संबन्धित।

१९७९ त्यक्त (सम्) वि.—छोड़ा हुआ, फेंका हुआ, दिया हुआ।

१९८० त्यजन (सम्) सं.—त्यागना, छोड़ना, देना, अस्वीकार करना।

१९८१ त्यजिसु; १९८२ त्यजिसु (सम्) क्रि.—त्याग दे, छोड़; अस्वीकार कर, जा, जाने दे, विसर्जन कर।

(१) उ००३९ त्याग, (क) सं.—सागौन का पेड़।

(२) उ००४० त्याग (सम्) सं.—[उ००४० चाग—(तद्)]—त्याग, छोड़ना; वियोग, विराग; भेंट, दान, उदारता।

१९८३ त्याज्य (सम्) वि.—त्यागने योग्य, छोड़ने योग्य। सं.—अशुभ समय।

१९८४ त्यापे (क) सं.—पैबंद।

१९८५ त्याव, १९८६ त्यावु, १९८७ त्यावे (तद्) सं.—तेम: (तत्); गीला होना, आर्द्रता।

१९८८ त्रपिष्ट (सम्) वि.—अत्यंत संतुष्ट।

१९८९ त्रपु (सम्) सं.—टीन, जस्ता।

१९९० त्रपे (सम्)—व्याकुलता; शर्म, लाज।

१९९१ त्रय (सम्) सं.—तीन; तिगुना।

१९९२ त्रयि (सम्) सं.—तीनों वेदों का समूह; त्रिगङ्गा, त्रिमूर्ति, त्रिपट्टा; सौभाग्यवती स्त्री जिसके पति और बच्चे हो; प्रतिभा, बुद्धि।

१९९३ त्रयोदशि (सम्) सं.—त्रयोदशी तिथि।

१९९४ त्रस्त (सम्) वि.—भयभीत, डरा हुआ, डरपोक, सीर।

१९९५ त्राण, १९९६ त्राणे (सम्) सं.—रक्षा, बचाव; सहायता, आश्रय।

१९९७ त्रास (सम्) वि.—गतिशील। सं.—भय, डर, शंका; व्याकुलता, पीड़ा; तक-

लीफ़; मारना, हनन करना; रत्न का ऐब; तंत्र।

उठ्ठा त्रासा (सम्) सं.—वाद्ययन्त्र विशेष। उठ्ठसु त्रासु (अ. दे.) सं.—तराजू, तुला।

उ३ त्रि (सम्) वि.—तीन।— ँरु करण (सम्) सं.—मन, वचन और कर्म।— ँरुण कोण (सम्) सं.—तिकोना, त्रिकोण।— ँरुण गुण (सम्) सं.—सत्व, रज और तमोगुण।— ँरुण गेत्र, ँरुण नेत्र (सम्) सं.— शिवजी।— ँरुण दशदीर्घिके, ँरुण दशधुनि (सम्) सं.—गंगा।— ँरुण पाल (सम्) सं.—इन्द्र।— ँरुण दशालय (सम्) सं.— मेरुपर्वत; स्वर्ग।— ँरुण दशावास (सम्) सं.—स्वर्ग।— ँरुण दशाहार (सम्) सं.— अमृत।— ँरुण दिवेश (सम्) सं.— इन्द्र; देवता।— ँरुण पथगामिनि, ँरुण पथगे (सम्) सं.—गंगा।— ँरुण पदि (सम्) सं.—तीन पद; एक छंद का नाम।— ँरुण पुट (सम्) सं.— संगीत में एक ताल का नाम।— ँरुण पुंड्र (सम्) सं.—माथे पर तीन आधी रेखाओं का टीका।— ँरुण पुरुष (सम्) सं.—ब्रह्मा, विष्णु और शिव।— ँरुण भंगि (सम्) सं.— नाटक या नाच में एक भंगिमा।— ँरुण भुवन (सम्) सं.— स्वर्ग, भूमि और पाताल।— ँरुण मूर्ति (सम्) सं.— ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी।— ँरुण लोचन (सम्) सं.— शिव।— ँरुण विक्रम (सम्) सं.—विष्णु।— ँरुण वेणि (सम्) सं.—त्रिवेणी, प्रयाग का वह स्थान जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है।— ँरुण शूलि (सम्) सं.— शिव।— ँरुण शूले (सम्) सं.— शवर स्त्री।— ँरुण संधि (सम्) सं.— देवकुसुम, एक पौधा विशेष।— ँरुण संध्य (सम्) प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल।

उठ्ठि त्रुटि (सम्) सं.— काटना, तोड़ना; फाड़ना; छोटा भाग, अणु; संदेह, संशय; हानि, नाश; एक पौधा विशेष; क्षण; कमी।

उठ्ठि त्रैतायुग (सम्) सं.—चार युगों में से दूसरा।

उठ्ठि त्रैगुण्य (सम्) सं.—तीन गुणों का। उठ्ठि त्रैजग (सम्) सं.—तीन लोक।

उठ्ठि त्रैतनु (सम्) सं.—सूर्य।

उठ्ठि त्रैभुवन (सम्) सं.—तीन लोक; स्वर्ग, भूमि और पाताल।

उठ्ठि त्रैविक्र (सम्) सं.—शिव।— ँरुण सख = कुत्रे।

उठ्ठि त्वच (सम्) सं.—खाल, चमड़ा; दाल-चीनी, दालचीनी का पौधा।

उठ्ठि त्वचिसार (सम्) सं.—बाँस।

उठ्ठि त्वदीय (सम्) वि.—तुम्हारा, तेरा।

उठ्ठि त्वर, उठ्ठि त्वरे (सम्) सं.— शीघ्रता, जल्दी, वेग।

उठ्ठि त्वरित (सम्) वि.— तेज, वेगवान, फुर्तीला, जल्दी, शीघ्रता से।

उठ्ठि त्वरेगार (तद्) सं.—उतावला मनुष्य, जल्दी करनेवाला।

उठ्ठि त्वष्ट्र (सम्) सं.—विश्वकर्मा; बड़ई, कारीगर।

उठ्ठि त्विष्, उठ्ठि त्विषा, उठ्ठि त्विषे (सम्) सं.—क्रांति, चमक, प्रकाश।

द थ

द थ—कजड वर्णमाला का इक्तीसवाँ अक्षर; तवर्ग का दूसरा व्यंजन।

द थ थट्ट (क) सं.—समूह, समुदाय, राशि, भीड़, गिरोह; टोली, सेना; अधिक संख्या।

द थ थापने (तद्) सं.—स्थापन, स्थापना।

द द

द द—कजड-वर्णमाला का बत्तीसवाँ अक्षर; तवर्ग का तीसरा व्यंजन।

द द (क) वि.—आठ की संख्या।

द द (क) प्र.—क्रियाओं के अंत में (केवल बोलचाल में), जैसे— ँरुण हाडिद (ँरुण

दद हाडिदनु' के बदले) — [उसने (पु. लि.)] गाया। ँरुण नोडिद (ँरुण दद नोडिदनु के बदले) — [उसने (पु. लि.)] देखा।

द द (सम्) वि. (समास के पीछे आता है) — देना, उत्पन्न करना, नष्ट करना, अलग करना।

द दंगु (अ. दे.) वि.—दंग (फ़ारसी); चकित, हक्का-बक्का।— दद बडि = दंग रह जा।

द दंगे (अ. दे) सं.—दंगा (हिं.)।

द दंघि (क) सं.— हाथी का तनुत्राण; घोड़े का अधोबंधन, ज़ेरबंद।

द दंघि (क) सं.—रंढी, वैश्या।

द दंघु (क) सं.—नाल, डंठल।

द दंड (सम्) सं.—लकड़ी, डंडा, सोंटा, लाठी, एक प्रकार का आयुध; मथानी-राजदंड; डंठल, नाल; ढोल आदि वजाने का डंडा; संन्यासी द्वारा ग्रहण किया जाने वाला दंड; हाथी का दांत; नाव के डौंड; अर्थदंड, जुर्नामा; शारीरिक दंड, सज़ा, कैद, कारागृह-वास; आक्रमण, ज्यादती; सेना, ब्यूह; संयम; वशवर्तीकरण; चार हाथ का नाप; लिंग; अलंकार, अभिमान; शरीर; यम; शिव; विष्णु; अयोग्य कार्य, अनुपयुक्त काम; सूर्य का एक अनुचर; गुड़ (डौंड के रूप में)।

द दंडक (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम; दक्षिण का एक अक्षर; पंक्ति, डंडा, छड़ी।

द दंडणे, द दंडने (तद्) सं.—दंड-नम् (तत्); सज़ा जुर्नामा, अर्थदंड।

द दंडधर (सम्) सं.—राजा; न्यायाधीश;—संन्यासी; यम; कुम्हार।

द दंडनायक (सम्) सं.—सेना-पति।

द दंडप्रणम, द दंडप्रणम दंड-प्रणाम (सम्) सं.—साष्टांग नमस्कार।

दंडयात्रे (सम्) सं.—विजय-यात्रा ; आक्रमण, हमला ।

दंडहस्त, दंडपाणि (सम्) सं.—यम, द्वारपाल, दंड धारण किया हुआ ; कार्तिकेय का नाम ।

दंडाधिप, दंडाधीश्वर, दंडनाथ (सम्) सं.—सेनापति, सेनानायक ; न्यायाधीश, दारोगा ।

दंडासन (सम्) सं.—एक प्रकार का बाण या धनुष ।

दंडाहत (सम्) सं.—डंडे से पीटा हुआ मट्टा, छाल ।

(१) दंडि (क) सं.—कोप, क्रोध, रोष, क्रूरता ; बड़प्पन, महानता, बल, शक्ति, साहस ; अधिकता, बहुलता ।

(२) दंडि (सम्) सं.—दंडधारी ; द्वारपाल द्वाररक्षक ; कुम्हार ; यम ; राजदूत ; संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम ; किनारा, तट ; तराजू का काँटा ; बसूला, कुल्हाड़ी ।

दंडिके, दंडिगे (सम्) सं.—लाठी, डंडा ; श्रेणी, पंक्ति ; रस्सी ; मोतियों की लड़ी ।

दंडिगे (तद्) सं.—दंडिका (तद्) ; तराजू का काँटा । रीढ़ की हड्डी ; वीणा का दंड ; वीणा ; पालकी का दण्ड ; जड़ी ; मोतियों की लड़ी ; रस्सा ; पंक्ति, अवलि ।

दंडित (सम्) वि.—दंड दिया हुआ, सजायफता, वह जिसपर जुर्माना लगाया गया हो ।

दंडिपाद (सम्) सं.—एक साँप का नाम ।

दंडिसु (सम्) क्रि.—सजा-दे, दंड दे, जुर्माना लगा ; वश में कर ।

दंडु (तद्) सं.—सेना । दंडिल्लु ? दंडिल्लु सोदरमावने ? —सेना में कोई मामा है ? अर्थात् कौन किसका है ? (कह-)

(१) दंडे (क) अ.—पास, समीप ।

(२) दंडे (तद्) सं.—तार ; माला, हार, पुष्पमाला ; व्यायाम का एक प्रकार ; घुटने की टेक ; धनुष पकड़कर चलाने का हाथ ; सेना की पंक्ति ; गहरी पकड़, चंगुल ; किनारा, तट ।

दंडोर, दंडोरे (अ. दे.) सं.—दंडोरा (हिं.)]

दंड (सम्) सं.—दाँत ; हाथी का दाँत ; हाथी ; पर्वतशृंग, चोटी ; पर्वत का प्रकार या भेद ; बत्तीस की संख्या ; कंटक, काँटा ; वृक्ष विशेष ; — चर्वण (सम्) सं.—दाँतों से चबाना । — छद (सम्) सं.—ओष्ठ, होंठ । — धावन (सम्) सं.—दाँत साफ़ करना, कुल्ला ; दातौन । — भाग (सम्) सं.—हाथी का माथा । — वास (सम्) सं.—होंठ ।

दंडावल (सम्) सं.—गज, हाथी ; गजासुर । — अरि (सम्) सं.—शिवजी ।

दंडि (सम्) सं.—हाथी ; क्रोटन (Croton) का पौधा, आठ की संख्या ; काला धतूरा । — कपोल (सम्) सं.—हाथी का गंडस्थल ।

दंडिके (सम्) सं.—क्रोटन का पौधा ।

दंडिपुर (सम्) सं.—हस्तिनापुर ।

दंडिसुख (सम्) सं.—गणेश ।

दंडु (सम्) वि.—बड़े दाँतवाला, खाबड़, बदनुमा, भद्दा ।

दंडे (सम्) सं.—हाथीदाँत ।

दंडु (सम्) सं.—दाँतों के सहारे उच्चरित होनेवाले वर्ण ।

दंडुक (सम्) सं.—साँप ।

दंडुग (क) सं.—व्याकुलता, उपद्रव, कष्ट, तकलीफ़ ; उलझन, क्लेश ।

दंडिपति (सम्) सं.—दंपती, पति-पत्नी ; घर का स्वामी ।

दंड (सम्) सं.—[दंड — (तद्)] पाखंड, छल, वंचना ; अभिमान, अहंकार ; पाप, दुष्टता ; ईर्ष्या ।

दंडक (सम्) सं.—पाखंडी ; पाखंड । दंडु (सम्) सं.—इन्द्र का वजू ।

दंड (सम्) सं.—डसना, काटना, डंक ; मारना ; सर्प का विषदन्त ; काटना, चीरना दाँत ।

दंडक (सम्) सं.—गोमक्खी, मक्खी, डाँस ।

दंडन (सम्) सं.—कवच ; काटने की क्रिया ।

दंड (सम्) सं.—बड़ा दाँत, हाथी का दाँत ।

दंडि (सम्) सं.—वनैला शूकर ; सेई ; साँप ।

दंडितन, दंडितन (क) सं.—बहुदुारी, पराक्रम ।

दंडिसु (क) क्रि.—हथिया, स्वाधीन कर, हड़प ले ।

दंडु (क) क्रि.—मिल, प्राप्त हो, हाथ लग, अधिकार में आ ; सुधर, अच्छा हो, बच । सं.—मिलना, प्राप्ति, स्वाधीनता ; संपत्ति ; लकड़ी का डंडा, शंकु, कीला ।

दंडु (सम्) वि.—निपुण, चतुर, निष्णात, योग्य, बुद्धिमान । सं.—दक्षप्रजापति ; तपस्वी, संन्यासी ; मुर्गा ; योग्यता, निपुणता । — कन्ये (सम्) सं.—सती-दुर्गा । — त्ते (सम्) सं.—निपुणता, चतुराई, योग्यता, सामर्थ्य ।

दंडु (सम्) सं.—वीरभद्र ।

दंडु (सम्) सं.—दायाँ हाथ या बाँह ; दक्षिण दिशा । वि.—योग्य, निपुण ; सीधा, सच्चा, ईमानदार ।

दंडुगति (सम्) सं.—सूर्य की गति विशेष-दक्षिणायन ।

दंडु (सम्) सं.—दक्षिण, ब्राह्मणों को दान में दिया जानेवाला द्रव्य ; दक्षिण दिशा ; दान, भेंट ; शुल्क या दान की संपत्ति ।

दंढि दृगडि (अ. दे.) सं.—कामुक या दुराचारिणी स्त्री ।

दंढि दृगद (क) सं.—काम, कार्य ।

दंढि दृगा, दंढि दृगे (अ. दे.) सं.—दृगा (अरवी) ; धोखा ।—दंढि००००० खोरतन = धोखेवाजी ।

दंढि दृगने (क) अ.—‘ धरा धग् ’ करते हुए (आग का जलना) ।

दंढि दृगध (सम्) वि.—जला हुआ, जलने-वाला, अशुभ ; पीड़ित, सताया हुआ ।—दंढि हस्त (सम्) सं.—अभागा मनुष्य ।

दंढि दृगधके (सम्) सं.—भुने हुए चावल ।
दंढि (क) सं.—इमली के बीजों की दाल ।—दंढि (क) सं.—एक खेल ।

दंढि दृद (क) सं.—वि.—घना, निविड, बहुल, सांद्र, घोर । सं.—रजाई, गद्दा, तोशक ।

दंढि दृदणिसु (क) क्रि.—घना हो, निविड हो, सांद्र हो ।

दंढि दृदणे (क) सं.—घनत्व, निविडता, सांद्रता ; भीड़, कोलाहल, बड़ा जनसमूह ।

दंढि दृदणिसु, दंढि दृदणिसु (क) क्रि.—घना हों, निविड हो, सांद्र हो ।

दंढि दृदिति (क) सं.—कमरबंद, मेखला ; लुगी ।

दंढि दृदिसु (क) क्रि.—दे. दंढि०००० ; रगड़, मिटा ; निंदा कर, गाली दे ।

दंढि दृदु (क) सं.—राशि, ढेर, दल ; ठोकर खा, भीड़, समूह, सेना ।

(१) दंढि दृद (क) सं.—एक अनुकरणात्मक शब्द ।

(२) दंढि दृद (तद्) सं.—तटः (तत्), किनारा, तट ।

दंढि दृदकु (क) सं.—वर्तनों के टकारने की ध्वनि ।

दंढि दृदिके (क) सं.—तीव्रता, प्रचंडता ।

दंढि दृदणि, दंढि दृदालि (क) सं.—मोटी स्त्री ।

दंढि दृदि (क) सं.—लाठी, डंडा, दण्ड ; शिक्षण, लिंग ।

दंढि दृदिगि (क) सं.—दंडधारी ।

दंढि दृदिसु (क) क्रि.—दे. दंढि०००० ।

दंढि दृदुम (क) सं.—मोटा आदमी ।

दंढि दृदे, दंढि दृदेय (अ. दे.) सं.—एक चौथाई मन ।

दंढि दृदु (क) वि.—मूर्ख, वेवकूफ, मूढ़ । सं.—समीपता, मिलन ; द्विस्वाक्षर ।—दंढि—(क) सं.—मूर्खता, वेवकूफी ।

दंढि दृदुस (क) सं.—डोम का ढोल ।

दंढि दृदुि (क) सं.—मूर्ख स्त्री ; पदाँ, टट्टी, यवनिका ; पिंजड़ा ; पशुशाला ; बकरों का समूह ; घर के ऊपर का समतल भाग ।

दंढि दृदुदु (क) सं.—धब्बा, काला निशान, चित्ती ; कलंक ।

दंढि दृदुडे (क) सं.—मूर्ख या वेवकूफ स्त्री ।

दंढि दृदुडे, दंढि दृदुडे, दंढि दृदुडे (क) सं.—व्यभिचारिणी स्त्री ।

दंढि दृदुदु, दंढि दृदुदु (क) सं.—थकावट, श्रान्ति ।

(१) दंढि दृदि (क) क्रि.—थक जा, श्रान्त हो, संतुष्ट हो, अथा ।

(२) दंढि दृदि (तद्) सं.—धनिन् (तत्) ; मालिक. स्वामी ।—दंढि तन (तद्) सं.—स्वामित्व ।

दंढि दृदुणिव, दंढि दृदुणिव, दंढि दृदुणिव (क) सं.—वस्त्र ; साड़ी ।

दंढि दृदुणिवु (क) सं.—दे. दंढि०००० ।

दंढि दृदुणिसु (क) क्रि.—थकावट उत्पन्न कर, श्रान्त कर ; तृप्त हो, संतुष्ट हो ।

दंढि दृदुणु (क) सं.—दे. दंढि०००० ।

दंढि दृदुणु (सम्) वि.—दिया हुआ, भेंट किया हुआ, प्रदान किया हुआ ; सौंपा हुआ ; रखा हुआ ।—दंढि क, दंढि पुत्र (सम्) सं.—गोद लिया हुआ पुत्र ।

दंढि दृदुणु, दंढि दृदुणु (तद्) सं.—धनूरः (तत्) ; धनूरा ।

दंढि दृदुणु (क) क्रि.—अंदर की गरमी

के कारण शरीर पर फोड़ा हो, छाला पड़, फफोला हो, दाद हो ।

दंढि दृदुणु (क) सं.—एक वृक्ष (careya arboreya) ।

दंढि दृदुणु (क) वि.—टूटा फूटा (तद्) सं.—दाद ।

दंढि दृदुणु (सम्) सं.—एक प्रकार का कुष्ठ ।

दंढि दृदुणु (सम्) सं.—दही । दंढि फल (सम्) सं.—कैथा ।—दंढि मंड (सम्) सं.—मट्टा, छाछ ।—दंढि मुख (सम्) सं.—

एक सर्प का नाम ; एक बंदर का नाम ।—दंढि विधात (सम्) सं.—मथानी ।—

दंढि सार (सम्) सं.—ताजा मक्खन ।

दंढि दृदुणु (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम ।

दंढि दृदुणु दंढि दृदुणु (सम्) सं.—दही भात ।

दंढि दृदुणु, दंढि दृदुणु (तद्) सं.—धनम् (तत्) ; गाय ; गाय-चैल ।

दंढि दृदुणु (तद्) सं.—ध्वनिः (तत्) ; नाद, स्वर, आवाज़ ।

दंढि दृदुणु (सम्) सं.—दक्ष की एक पुत्री का नाम जो कश्यप की पत्नी और दानवों की माता थी ।—दंढि ज (सम्) सं.—राक्षस ।

(१) दंढि दृदुणु (क) वि.—बड़ा, मोटा, तगड़ा, गाढ़ा, घना, स्थूल ।

(२) दंढि दृदुणु (तद्) सं.—दर्पः ; (तत्), अशिमान, पराक्रम ।

दंढि दृदुणु, दंढि दृदुणु (क) वि.—मोटा ; गाढ़ा ।

दंढि दृदुणु (अ. दे.) सं.—दफादार (अरवी, फ़ारसी) ; पुलिस की टोली का नायक ।

दंढि दृदुणु (अ. दे.) सं.—दफ़तर (फ़ारसी) ; बही, हिसाब, कागज़ात ।

दंढि दृदुणु (क) सं.—रंग पोतने की कूची ।

दंढि दृदुणु (क) सं.—धड़कन ।

दंढि दृदुणु (अ. दे.) क्रि.—(‘ दवाना ’ से)—दवा, धमका, आड़े हाथों ले (मुह) ।

दब्धुण दब्धण, दब्धुण दब्धण, दब्धुण दब्धण, (क ?) सं.—मोटी और बड़ी सुई ।

दब्धुण दब्धुण (क) क्रि.—दबा, ठकेल ।

दब्धुण दब्धुण (क) सं.—बाँस की शलाका या तीली । (अ. दे.) सं.—चपत, थप्पड़, मार ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) वि.—थोड़ा, छोटा, हल्का । सं.—समुद्र ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—पालना, वश-वर्ती करना; संयम, बाह्य वृत्तियोंको रोकना; सजा; दंड, जुर्माना; घर; मन की दृढ़ता; कीचड़ ।

दब्धुण दब्धुण (अ. दे.) सं.—दमड़ी (हिं.), पैसे का १/४ भाग ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—पालना, वश में लाना, संयम में रखना; दवाना; सजा देना, दण्ड देना; आत्म संयम ।

दब्धुण दब्धुण (तद्) सं.—धर्म; (तत्) धर्म । दब्धुण दब्धुण (अ. दे.) सं.—दम्भ ।

दब्धुण दब्धुण (क) सं.—दुहाई, दोहाई । दब्धुण दब्धुण (अ. दे. ?) सं.—रास्ते की मरम्मत करने का एक उपकरण ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) वि.—दवाने योग्य, वश में करने योग्य ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—करुणा, रहम, सहानभूति ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दयावान्, कृपालु ।

(१) दब्धुण दब्धुण (सम्) वि.—फटा हुआ, चिरा हुआ । सं.—गुफा, रंध्र, बिल; भय, डर; शंख; झरना ।

(२) दब्धुण दब्धुण (अ. दे.) सं.—दर (फ़ारसी); द्वार, दरवाज़ा कीमत, मूल्य ।

दब्धुण दब्धुण (क) वि.—रूक्ष, मोटा, जो चिकना न हो, सूखा, खुरदरा ।

दब्धुण दब्धुण (अ. दे.) सं.—दरखास्त (फ़ारसी); प्रार्थना-पत्र, अर्जी ।

दब्धुण दब्धुण (अ. दे.) सं.—दर्ज़ी (फ़ारसी);

दब्धुण दब्धुण, दब्धुण दब्धुण, दब्धुण दब्धुण, दब्धुण दब्धुण (अ. दे.) सं.—दरबार (फ़ारसी); राजसभा ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—मन्द मुस्कान । दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—गुहा, गुफा; घटी ;

दब्धुण दब्धुण (सम्) वि.—फटा हुआ, विभक्त; डरा हुआ; भीत ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) वि.—निर्धन, गरीब । सं.—निर्धनता, गरीबी ।—उत्तम,—उत्तम, उत्तम (सम्) सं.—दरिद्रता, निर्धनता ।

दब्धुण दब्धुण (तद्) सं.—दर्शनम् (तत्); दर्शन । दब्धुण दब्धुण (सं.—दे. दब्धुण ।

दब्धुण दब्धुण (क) सं.—प्राप्ति, पाना; संपत्ति । दब्धुण दब्धुण (अ. दे.) सं.—दर्ज़ी (अरबी); वर्ग, श्रेणी; पद ।

दब्धुण दब्धुण (अ. दे.) सं.—दे. दब्धुण । दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—मैंढक; बादल; शहनाई; पर्वत, एक पर्वत का नाम ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दाद । दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—अहंकार, अहंभाव; गर्व, घमण्ड; गर्मी ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—कुशा, एक प्रकार की पवित्र घास ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—कलछी, चमचा; साप का फन ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दर्शन; दृश्य, तमाशा; अमावास्या; यज्ञ विशेष ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—देखना, अवलोकन; जाना, समझना, पहचानना; दृश्य; आँख; पर्यवेक्षण; रूप, वर्ण, आकार; उपस्थित होना; भेंट करना; स्वप्न; बुद्धि, समझ, परख; निर्णय; धारणा; धर्म संबंधी ज्ञान; दार्शनिक सिद्धांत, दर्शन, दर्पण; आईना; गुण, नीति; यज्ञ विशेष ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) क्रि.—देख, अवलोकन कर ।

दब्धुण दब्धुण (क) अ.—सचमुच, अवश्य, निश्चित रूप से ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दल, टुकड़ा, भाग अंश; आधा; म्यान; छोटा; अंकुर किसलय, कोंपल; किसी हथियार की नोक सेना की टुकड़ी; डेर, राशि, परिमाण समूह; शरीर का अंग; मिलावट, मिश्रण दब्धुण दब्धुण (अ. दे. दलाल (अरबी) ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) वि.—रौंदा हुआ; हुआ, दबाया हुआ, पदाक्रांत ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—अग्नि; दावागिन जंगल, वन; चित्रमूल नामक पौधा । दब्धुण दब्धुण (तद्) सं.—जबड़ा ।

दब्धुण दब्धुण (तद्) सं.—दमनक; (तत्) अजजटी या तपस्वी नामक पौधा (The Plant Artemisia Indica) ।

दब्धुण दब्धुण (तद्) सं.—यवसं (तत्) अनाज ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दावाग्नि ।

दब्धुण दब्धुण (तद्) सं.—द्वारपाल, पहरेदार ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दस ।—क (सम्) सं.—दस का समूह ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दशकंधर (सम्) सं.—दशकंधर—रावण ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—काटना; दाँत ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—ओष्ठ, होंठ ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—शिवजी ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दशमिक; दशमलव, दसवाँ भाग ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—राम के पिता ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—दशवदन, दश शिर, दशानन (सम्) सं.—रावण; दसवदन (तद्) ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—भाग्यवान् पुरुष ।

दब्धुण दब्धुण (सम्) सं.—विष्णु के दस अवतार ।

दश दश, दश दशा (सम्) सं—(दश दश —तद्) — कपड़े की झालर; बत्ती; जीवन की दशा; अवस्था; काल; अधि; परिस्थिति; मन की दशा; कर्मों का फल; ग्रहों की स्थिति; भाग्य; भूत आदि; वाण; धनुष की प्रत्यंचा; खरगोश।
 दश दश (क) सं.—भूसी, एक प्रकार की भूसी।
 दश दश, दश दश (तद्) सं.— दशहरा, नवरात्रि।
 दश दश (क) सं.— शूल, काँटा, नौकदार छूट।
 दश दश (क) सं.—दे. दश।
 दश दहन (सम्) सं.—जलाना, भाग में भस्म करना; आग, अग्नि।
 दश दश (सम्) क्रि.—दहन कर, जल, भस्म कर।
 दश दश (सम्) वि.—जलाने योग्य, दश।
 दश दश (तद्) सं.—दल, पता।
 दश दश, दश दश, दश दश (क) सं.—संधि, मियन; फाँक।
 दश दश (क) वि.—मोटा, घना, स्थूल, घनत्व।
 दश दश (क) सं.—मोटाई, स्थूलता, घनत्व।
 दश दश (अ. दे.) सं.—दे. दश।
 दश दश, दश दश (क) क्रि.—सीकर मिला, जोड़; पान-पान या मिले रहकर विकसित हो, फैल; दीख।
 दश दश, दश दश (क) सं.—दे. दश।
 दश दश (क) सं.— छियों का वस्त्र, साड़ी।
 दश दश (क) क्रि.—दे. दश।
 दश दश (क) क्रि.—आवृत्त हो, घेर, फैल, अधिक व्याप्त हो, वृद्धि हो।
 दश दश (क) सं.—चतुरंग बल, सेना।
 दश दश (क) सं.—सेना का हलचल, बड़ी छट, छट-मार। —दश (क) क्रि.— हल-चल या शोभ में पड़।

दश दश, [दश दश] (क) सं.—सेनानायक।
 दश दश (क) सं.—शृंखला, जंजीर।
 दश दश (क) सं.—लौ; छोर; बढनेवाली नुकीली लता।
 दश दश (क) क्रि.— पार कर, तर, लाँघ। सं.—वह दूरी जो पैदल पार की जा सके।
 दश दश (क) सं.— मोटा आदमी, तगड़ा आदमी; मूर्ख।
 दश दश (सम्) वि.—पालतू, वशवर्ती; आत्म-संयम।
 दश दश (सम्) सं.—आत्म-संयम, वश में करना।
 दश दश (अ. दे.) सं.— धाँधली (हिं.); भीड़, शोरगुल, कोलाहल, गड़-बड़ी।
 दश दश (सम्) सं.—पति-पत्नी का संबन्ध, विवाह, वैवाहिक संबन्ध।
 दश दश (सम्) सं.— अशिमानी, कपटी, छलिया, हाँगी।
 दश दश (सम्) सं.— दक्ष प्रजा-पति की कन्या का नाम; दुर्गा; दक्ष की पुत्रियाँ और चन्द्र की पत्नियाँ— २७ नक्षत्र। —दश नाथ (सम्) सं.— शिव; चन्द्र।
 दश दश (सम्) वि.— दक्षिण का निवासी।
 दश दश (सम्) सं.—नम्रता, शिष्टता; कृपालुता, दया; शिष्टाचार; ईमानदारी;
 दश दश (अ. दे.) सं.— दखला (अरबी); प्रस्तुत करना; दर्ज करना; प्रमाण।
 दश दश (अ. दे.) सं.—प्रमाण, प्रमाण संबन्धी कागजात।
 दश दश (क) सं.— एक पौधा (Cocculus Villosus)।
 दश दश (क) सं.—पढ़ने-लिखने में गति या शीघ्रता, कला-निपुणता; उतावलापन।

दश दश (क) क्रि.—पार करवा या करा, तार, लघन कर या करा।
 दश दश (क) क्रि.—पार कर, लघन कर, (वचन को) भंगकर, पीछे हट; मृत हो, मर जा, चल बस, (समय) व्यतीत हो, गुजर जा। सं.— पार करना, लघन।
 दश दश (अ. दे.) सं.—दाढ़ी (हिं.)।
 दश दश (सम्) सं.—दाड़िम, अनार।
 दश दश (सम्) सं.—अनार।
 दश दश (तद्) सं.—डम्प्टा (तद्); बड़ा दाँत. हाथी का दाँत, साँप का दाँत, हाथी के दाँत का अन्तिम भाग; दाढ़।
 दश दश, दश दश, दश दश (अ. दे.) सं.— दाना (हिं.) अनाज।
 दश दश (सम्) वि.—विभाजित, कटा हुआ। (तद्)। सं.— दातृ (तद्); देनेवाला, दाता।
 दश दश (तद्) सं.—दातृ (तद्)।
 दश दश (सम्) सं.— दाता, देनेवाला, दानी उदार पुरुष।
 दश दश (सम्) सं.—हसिया, लवित्र।
 दश दश (सम्) सं.—देना, रौपना, दान, भेंट; रिश्वत; चार उपायों में से एक।
 दश दश (सम्) सं.— राक्षस। —७० अरि (सम्) सं.—देवता।
 दश दश (सम्) सं.— जुमाना, बलात्कार-पूवक दिलाना।
 दश दश (सम्) वि.— दिलया हुआ, जुमाना किया हुआ, दिया हुआ; निबटाया हुआ, फैसला किया हुआ।
 दश दश (क) सं.— फैलाव, विस्तार, वृद्धि; कदम के फासले की नाप।
 दश दश, दश दश, दश दश (सम्) सं.—डोरा, सूत, तार, रस्सी; कमरबंद, पटुका; बड़ी पट्टी या बन्धन; किरण; विद्युत् रेखा।
 दश दश (सम्) सं.—गाय-बैल बांधने की रस्सी।

दासोदर दामोदर (सम्) सं.—कृष्ण का नाम ।

दाय दाय (सम्) सं.—भेंट, दान ; दहेज ; भाग, हिस्सा । बाँटना, तकसीस करना ; हानि, नाश ; दुर्भाग्य ; जगह ; संपत्ति ; पाना, प्राप्त करना ; क्रीडा विशेष, उपयुक्त समय या अवसर ।—भाग, विभाग (सम्) सं.—उत्तराधिकारियों में संपत्ति का बँटवारा ।

दायाद दायाम् (सम्) सं.—उत्तराधिकारी ; पुत्र ; रिश्तेदार, भाईवन्धु ; दूर का नातेदार ।

दायादि (तद्) सं.—दायाद्यं (तत्) ; उत्तराधिकारी होने की अवस्था ; पैतृक ; चाचा के बेटे, सौत या सौतेली माँ के बेटे आदि ।

दायि (तद्) सं.—धात्री (तत्) ; दाई । दायित (सम्) वि.—मिला हुआ, जुड़ा हुआ ।

दार दार (सम्) सं.—दरार, संधि, छेद, सुराख ; पत्नी, भार्या ; काटना, चीरना ; जुता हुआ खेत । (तद्) सं.—द्वारं (तत्) ; दरवाजा ; धारः (तत्)—धागा, सूत्र, तार ।

दारणे, दारणे (क ?) सं.— दर, भाव, दाम ।

दारव (सम्) वि.—लकड़ी का, लकड़ी बना ।

दारि (क) सं.—रास्ता, मार्ग, पथ । दारि के फल ? दारि तपिद भेले हारि एतु फल ?— रास्ता भूल जाने के बाद कूदने से क्या प्रयोजन ? (कह.) ।—कार, कार, ग, गार, गार (क) सं.— पथिक, मुसाफिर ।

दारिद्र्य, दारिद्र्य, दारिद्र्य (सम्) सं.—दरिद्रता, गरीबी ।

दारु (सम्) सं.—काठ, काठ का टुकड़ा ; चटकनी ; देवदार वृक्ष ।

दारुण (सम्) वि.—कडा, रूखा,

कठोर, निष्ठुर ; भारी, भयानक, डरावना, क्रूर, सख्त ।

दासुहस्तक (सम्) सं.—काठ का चमचा ।

(१) दासुह (क) सं.—एक वृक्ष (Averrhoa Carambola) ।

(२) दासुह (तद्) सं— धारा (तत्) ; धार, प्रवाह । (तद्) सं.—दासु (तत्) ; पत्नी ।

दासुह (सम्) सं.—सख्ती, दृढ़ता ; विश्वासजनक प्रमाण, समर्थन ।

दाल (सम्) सं.—एक प्रकार का मधु, शहद ।

दालिम (सम्) सं.—इन्द्र का नाम ।

दालिनि, दालिनि, दालिनि, दालिनि (अ. दे.) सं.— दाल-चीनी ।

दालिम (सम्) सं.— दाडिम, अनार ।

दाव (क) सर्व.—क्या, कौन-सा ।

दाव (सम्) सं.—दावाग्नि ; अग्नि ; आग ; वन, जंगल ।—दाव, दाव दाह (सम्) सं.— गरमी, उष्णता ; तप, तपस्या ।

दावणि (क ?) सं.— लड़कियों के पहनने का वस्त्र ; समूह, समुदाय । (तद्) सं.— दामनी (तत्) ; पशुरज्जु ।

दावलि, दावलि (क) सं.— सफेद ऊनी कपड़ा ।

(१) दावे (तद्) सं.— दामम् (तत्) ; रज्जु, रस्सी ।

(२) दावे, दावा (अ. दे.) सं.—दावा (अरवी) ; विवाद, कलह ।

दाशरथि (सम्) सं.— राम ।

दाशरथि (सम्) सं.—विष्णु, कृष्ण ।

दाशिक, दाशिक (क ?) सं.—साहसी मनुष्य ; साहस, दिटाई ।

दास (सम्) सं.—दास, सेवक, गुलाम ; भक्त ; वैष्णव भक्त । दास दासों के अन्दर का सार भाग (फलों के अन्दर का) ; केले के पौधे का भीतरी

दास केट्ट—दो दासों पर भरोसा रखकर अन्धा दास विनष्ट हुआ (कह.) । — दास गित्ति (सम्) सं.—वैष्णव भक्त (दास) की पत्नी ।

दासवण, दासवण दासवण दासवण दासवण (क) सं.—जपा पुष्प, सदा-गुलाब, अड़हुल ।

दासि (सम्) ; सं.—दासी, चाकरनी, स्त्री गुलामः ; दासी, चकरनी, दासी भयविल, वैशिंग दयविल — दासी को भय नहीं, वैश्या को दया नहीं (कह.) ।

दासेय, दासेय (सम्) सं.—नौकर, सेवक, दास ।

दाह (सम्) सं.—जलन, भाग, बहुत जलन, ताप ; प्यास, तृष्णा ; पीडा, दर्द, चाह ।

दाहिसु (सम्) क्रि.—जल, जला ।

दाह (क) सं.—पाँसा ।

दाहिवर, दाहिवर दाहिवर, दाहिवर दाहिवर, दाहिवर दाहिवर, दाहिवर (तद्) सं.—दाहिवः (तत्) ; अनार ।

दाहिवर, दाहिवर (तद्) सं.—घाटी (तत्) ; आक्रमण, हमला ।

दाहिवर (सम्) सं.—जू का अण्डा, लीख । दाहिवर (क) क्रि.—कूद, उछल ; फुदक ।

दाहिवर, दाहिवर (क) सं.— एक वृक्ष का नाम ; गिरिकर्णिका ।

दाहिवर (क) सं.— दीर्घवृन्त, श्यो-नाक ।

दाहिवर, दाहिवर, दाहिवर, दाहिवर (क) सं.—दे, दाहिवर ।

दाहिवर, दाहिवर (क) सं.—रूखा स्वभावः नटखटपन ।

दाहिवर (क) सं.—राशि; देर, गोलाकार देर, या टुकड़ा, काठ या घास का बंडल । (गट्टा) ; मोटा तना ; मूठ या हल केलिए उपयोगी काठ ; काठ, लकड़ी का टुकड़ा हिलके के अन्दर का सार भाग (फलों के अन्दर का) ; केले के पौधे का भीतरी

कोमल भाग ; मोटापन, तगड़ापन ; बल ; गर्व ; नटखटपन ।

दिण्डुच दिङ्कु (क) सं.—मोटा या तगड़ा आदमी ।

दिण्डुग दिङ्गु (क) सं. दे. दिण्डुल.

दिण्डे दिङ्गे, दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—गोलाकार बड़ा पत्थर ।

दिण्डेगिदि दिङ्गिगिति (क) सं.—नटखट स्त्री ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—दे. दिण्डुल.

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—तकिया ।

दिण्डुने दिङ्गने, दिण्डुने दिङ्गने (क) अ.—हठात्, सहसा, तुरन्त ; फौरन ।

दिण्डु दिङ्गरे, दिण्डु दिङ्गज (सम्) सं.—दिशाओं में रहनेवाली हाथी, घे हैं—ऐरावत, पुंडरीक, वामन, कुमुद. अञ्जन पुष्प-दंत, सार्वभौम और सुप्रतीक ; आठ की संख्या ।

दिण्डु दिङ्गु (तद्) सं.—दिक् (तत्) ; दिशा, निर्देश, संकेत ; रक्षण, रक्षा, मदद।—दिण्डु गेडु (तद्) क्रि — असहाय हो, अनाथ हो (सुह.)।—दिण्डु तोरु (तद्) क्रि.—मार्ग दिखा' ; पार कर, मदद कर (सुह.) ।

दिण्डुदि दिङ्कुभि (सम्) सं.—दे. दिण्डुल.

दिण्डुल दिङ्गुपाल, दिण्डुल दिङ्गुपालक, दिण्डुल दिङ्गुपति, दिण्डुल दिङ्गुधिप (सम्) सं.—दिशाओं के अधिपति ।

दिण्डु दिङ्गंत (सम्) सं.—क्षितिज ; दूरवर्ती स्थान ।

दिण्डु दिङ्गंवर (सम्) वि.—निरंग ; नंगा । सं.—एक जैन-संप्रदाय ; भैरव ।

दिण्डु दिङ्गुल, दिण्डु दिङ्गुल, दिण्डु दिङ्गुल (क) सं.—भय, डर, भीति, घबराहट ।

दिण्डु दिङ्गुसु (क) क्रि.—उतार, नीचे उतार (दिण्डु दिङ्गु—तेलुगु) ।

दिण्डु दिङ्गीश, दिण्डु दिङ्गीश्वर (सम्) सं.—दे. दिण्डुल.

दिण्डु दिङ्गु (क) क्रि.—नीचे आ, उतर ।

दिण्डु दिङ्गुमंडल (तद्) सं.—दिङ्गुमण्डल (तद्) ।

दिण्डु दिङ्गुल (क) सं.—दे. दिण्डुल.

दिण्डु दिङ्गज. दिण्डु दिङ्गुगिति (सम्) सं.—दे. दिण्डुल.

दिण्डु दिङ्गु (सम्) वि.—लिखा हुआ, लिपा हुआ, विष में बुझा हुआ । सं.—विषैला बाण ।

दिण्डु दिङ्गुजय (सम्) सं.—सभी दिशाओं के देशों को जीतना ।

दिण्डु दिङ्गु (तद्) सं.—दिष्ट (तत्) ; सत्य, सच, सचमुच ।

दिण्डु दिङ्गु, दिण्डु दिङ्गु (तद्) वि.—घृष्ट (तत्) ; ढीठ, साहसी, हिम्मतवाला. दिलेर, वीर ।—दिण्डु तन (तद्) सं.—वीरता, साहस ।

दिण्डु दिङ्गु (तद्) सं.—दृष्टिः (तत्) ; नज़र, निगाह ।—दिण्डु सु (तद्) क्रि.—देख, अवलोकन कर, विचार कर ।

दिण्डु दिङ्गु (तद्) सं.—दे. दिण्डुल.

दिण्डु दिङ्गु, दिण्डु दिङ्गु (तद्) सं.—दृष्ट (तत्) ; स्थिर, बली; दृढ़ता, बल ; सचाई (मै प्र.)।

दिण्डु दिङ्गु, दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—टीला, पहाड़ी ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—बड़े दरवाजे में छोटा दरवाजा, दीवार में बना हुआ छेद ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—टीला ; पुलिन ; दीप ; राशि, ढेर ।

दिण्डु दिङ्गु (सम्) सं.—दक्ष प्रजापति की पुत्री और कश्यप की पत्नी । यही दैत्यों की माता है ।—दिण्डु सुत—दैत्य, राक्षस ।

दिण्डु दिङ्गु (सम्) सं.—वर ; पति ; दो बार विवाहिता स्त्री ।

दिण्डु दिन (सम्) सं.—दिन, रोज़, दिवस ; तीस की संख्या ।—दिण्डु गट्टे (तद्) वि.—रोज़ाना ; प्रतिदिन ।—दिण्डु कर (सम्) सं.—सूर्य ; वारह की संख्या ।—दिण्डु चरि, दिण्डु चर्ये (सम्) — दैनिक कार्य ।—दिण्डु मणि (सम्) सं.—सूर्य ।—दिण्डु वारु (तद्) रोज़, प्रतिदिन ।

दिण्डु दिनसि (क) सं.—अनाज ।

दिण्डु दिना (तद्) सं.—रोज़, प्रतिदिन ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—दे. दिण्डुल.

दिण्डु दिङ्गु, दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—टीला, छोटी पहाड़ी । (तद्) वि.—दिव्य (तत्) ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—बरात ; बोटल का डट्टा ।

दिण्डु दिङ्गु (क) क्रि.—चक्रर काट । सं.—नाचते समय चरणों की तीव्र गति से उत्पन्न ध्वनि ।

दिण्डु दिङ्गु, दिण्डु दिङ्गु (क) अ.—बलपूर्वक, दृढ़ता से. जोर से ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—टीला, पहाड़ी ; काठ, लकड़ी का बड़ा टुकड़ा ; डण्डल ; घना सबल घेरा ; कुम्पेवाला पदार्थ ।

दिण्डु दिङ्गु (क) वि.—बड़ा, बलवान्, महान् ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—बड़ा आदमी ; महान् पुरुष, ब्राह्मण ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—बड़प्पन, महानता, मुख्यता, प्रधानता, गौरव ।

दिण्डु दिङ्गु (क) सं.—विभ्रम, सिर में चक्र । क्रि.—दवा, ढकेल ।

दिण्डु दिङ्गु (क) अ.—चकराते हुए ।

दिण्डु दिङ्गु (सम्) सं.—दिन. दिवस ; स्वर्ग ; आकाश ; जंगल ।

दिण्डु दिङ्गु (सम्) सं.—दिन, रोज़ ।

दिण्डु दिङ्गु (अ. दे.) सं.—दिवान-प्रधान मन्त्री ; ज़िले का शासनाधिवासी ; दरबार, राजसभा ; सरकार ।

दिण्डु दिङ्गु (तद्) सं.—दीपावलिः (तत्) ; दिवाली । (अ. दे.) सं.—दिवाला (हिं.) ।

दिण्डु दिङ्गु (सम्) सं.—स्वर्ग ; गगन, आकाश ।—दिण्डु ज=देवता ।—दिण्डु जधनु=कामधेनु ।—दिण्डु नायक=अण्ड, इन्द्र ।—दिण्डु भाग=आकाश ।

दिण्डु दिङ्गु (सम्) वि.—दैवी, स्वर्गीय, अलौकिक, अद्भुत, चमकीला, बहुत बढ़िया, श्रेष्ठ, मनोहर, सुन्दर ।—दिण्डु गायन (सम्) सं.—स्वर्गीय संगीत ; गन्धर्व ।

दिण्डु दिङ्गु (सम्) सं.—दे. दिण्डुल.

दिण्डु दिङ्गु (तद्) सं.—दिशा (तत्) ।

दुःशकुन (सम्) सं.—अपशकुन ।
 दुःशुकर (सम्) वि.—कष्टसाध्य, वह
 काम जो कठिन हो; बुरे रूप से व्यवहार
 करनेवाला, दुष्ट; बुरा, कठिन ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—बुरा काम,
 पाप; दोष; कोई कठिन या पीड़ाजनक
 कार्य; बुरा व्यवहार, चाण्डाल ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—बुरा समय,
 अकाल; रोग, बीमारी ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—बुरा आदमी, दुर्जन,
 खल; निकम्मा, दूषित व्यक्ति; कोढ़;
 पाप, अपराध; साँप; घोड़ा; हाथी का
 मद । दुःशुक्ल—छी. लिं. ।
 दुःशुक्ल (सम्) वि.—कठिनाई से पार
 किये जानेवाला, कठिनाई से वश में किये
 जानेवाला, अजेय ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—बुरी संगति,
 बुरा साथ ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—बुरे बच्चे;
 बुरा परिवार ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—बुरा सपना ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—एक पैर के बल चल,
 लंगड़ा, फुदक ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—थूक ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—कुदा, एक पैर के
 बल चलने दे ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—दे. दुःशुक्ल ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—ढकेल, दबा;
 झुका, हिला, तौल; फेंक; बाहर कर,
 बहिष्कार कर ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—दूत, संदेह ले जाने-
 वाला; राजदूत । दुःशुक्ल—स्त्री. लिं. ।
 दुःशुक्ल, दुःशुक्ल (तद्) सं.—दूतः
 (तद्) । दुःशुक्ल, दुःशुक्ल—
 स्त्री. लिं. ।
 दुःशुक्ल (सम्) क्रि.—[दुःशुक्ल—
 पीड़ित, दुःखी]—मानसिक संताप सह,
 चिंतित हो, चिंता कर, पीड़ित हो, व्याकुल
 हो ।

दुःशुक्ल (तद्) सं.—धूपः (तद्); दुःशुक्ल
 काशिकरी काशिकरी? दूषहाकिदरे पाप
 होदीते—धूप डालने से क्या पाप जात
 है? (कह.) ।
 दुःशुक्ल (तद्) क्रि.—दे. दुःशुक्ल ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—दूर, फासला; लम्बा
 मार्ग । दुःशुक्ल मगनिगू हस्तिरविद्व
 ङ्ङतिगू सरिबारदु—पुत्र दूर हो और पत्नी
 पास हो तो पटता नहीं (कह.) ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—धुसेड़, लगा ।
 (तद्) क्रि.—दे. दुःशुक्ल ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—[दुःशुक्ल (क) क्रि.
 —निंदा करा, शिकायत करा (प्रे) ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—निंदा
 कर, शिकायत कर, गाली दे । सं.—
 निंदा, गाली; शिकायत ।
 दुःशुक्ल (तद्) सं.—धूर्तः (तद्) ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—
 देव-पूजन में उपयोगी एक प्रकार की घास ।
 दुःशुक्ल (य) सं.—धरन, बल्ला, बँडेर ।
 दुःशुक्ल, दुःशुक्ल (सम्) सं.—
 नील का पौधा ।
 दुःशुक्ल (क) सं.—खुजलाहट, सुरसुरी;
 मन्मथ-पीड़ा ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—शीघ्रता से
 आगे बढ़, कूद, उछल, उड़ ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—
 निंदा, गाली, कुवाच्य; अपवाद, अपकीर्ति;
 दोष ।
 दुःशुक्ल (सम्) क्रि.—दूषण कर,
 निंदा कर, गाली दे ।
 दुःशुक्ल (सम्) वि.—कलंक लगाने योग्य,
 अष्ट होने योग्य, निंद्य । सं.—वस्त्र, एक
 प्रकार का वस्त्र; डेरा, खेमा ।
 दुःशुक्ल (क) सं.—
 कारण, हेतु, निमित्त, स्वमत; स्वलाभ,
 स्वरुचि ।
 दुःशुक्ल (तद्) सं.—कपड़े का व्यापारी।

दुःशुक्ल (तद्) सं.—दूष्य (तद्)
 कपड़ा ।
 दुःशुक्ल, दुःशुक्ल (तद्) सं.—दुःशुक्ल
 दूळि—धूलिः (तद्) धूल, गर्द ।
 दुःशुक्ल (क) क्रि.—लीप, पोत;
 लीपा जा, पोता जा ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—दुःशुक्ल (तद्)
 —आँख । दुःशुक्ल (तद्) ।
 दुःशुक्ल (सम्) वि.—मज्जवृत, अचल, स्थिर;
 ठोस; स्थापित; कसा हुआ; घना; बड़ा,
 शक्तिशाली; कठोर ताकतवाला; चलाऊ,
 ठहरनेवाला; विश्वस्त, निश्चित, अवश्य ।
 दुःशुक्ल (सम्) वि.—सम्मानित; विदीर्ण;
 डरा हुआ, भीत ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—चर्म, खाल, पानी
 भरने का चमड़े का थैला ।
 दुःशुक्ल (सम्) वि.—डरा हुआ, भीत ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—दिखाई पड़नेवाली
 वस्तु, नज्जारा । वि.—देखने को, दिखाई
 पड़नेवाला; सुंदर, मनोहर ।
 दुःशुक्ल (सम्) वि.—देखा हुआ, जाना
 हुआ, समझा हुआ, दिखाई पड़नेवाला, अनु-
 भव किया हुआ, निर्णीत, निश्चित ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—उदाहरण;
 एक अलंकार; मृत्यु, अंत ।
 दुःशुक्ल (सम्) सं.—निगाह, नज़र;
 ज्ञान, जानकारी; आँख; विचार; देखने
 की शक्ति; चितवन; बुद्धि; तारों का
 रूप; एक मन्त्री का नाम । — दुःशुक्ल
 गोचर (सम्) वि.—समझ में आनेवाला,
 दृष्टिगोचर. दिखाई पड़नेवाला । — दुःशुक्ल
 दोष (सम्) सं.—देखने में त्रुटि, आँख का
 दोष ।
 दुःशुक्ल (सम्) क्रि.—देख, अवलोकन
 कर ।
 दुःशुक्ल, दुःशुक्ल (क) सं.—चपत,
 थप्पड़, मार ।
 दुःशुक्ल, दुःशुक्ल (तद्) सं.—दैन्य
 (तद्); भूत, पिशाच ।

द्वितीय दृष्टि, द्वितीय दृष्टि (क) सं.— सुंदरता, लालित्य, मनोहरता ।
 द्वितीय दृष्टि (क) सं.— दे. द्विचतुष्टय ।
 द्वितीय देगल, द्वितीय देगुल (तद्) सं.— देवकुल (तत्); मंदिर, देवालय । द्वितीय देगुलिग = पूजारी ।
 द्वितीय देदु, द्वितीय देदु (क) सं.— डंडल, वृत्त ।
 द्वितीय देव (सम्) सं.— [द्वितीय धाव — तद्] — देव, देवता; राजा; आदर सूचक शब्द; इंद्र: शिव; दीर्घ वर्ण का संकेत; मूर्ख, मूढ़ ।
 द्वितीय देवकि (सम्) सं.— वसुदेव की पत्नी और श्रीकृष्ण की माता ।— नन्दन = श्रीकृष्ण ।
 द्वितीय देवकुसुम (सम्) सं.— लौंग, लवंग ।
 द्वितीय देवखातक (सम्) सं.— नैसर्गिक, सरोवर ।
 द्वितीय देवगोह (सम्) सं.— मंदिर, शिवालय ।
 द्वितीय देवतरु (सम्) सं.— कल्पवृक्ष । मंदार वृक्ष; अश्वत्थ वृक्ष, संतान वृक्ष; पारिजात वृक्ष ।
 द्वितीय देवतायन (सम्) सं.— मंदिर ।
 द्वितीय देवताचने (सम्) सं.— देव-पूजा, अर्चन ।
 द्वितीय देवते, द्वितीय देवता (सम्) सं.— देवी; देवता ।
 द्वितीय देवदत्त (सम्) सं.— अर्जुन के शंख का नाम: ऊपर-नीचे देखना; जंभाते समय निकलनेवाली हवा; एक व्यक्ति का नाम ।
 द्वितीय देवदासि (सम्) सं.— मंदिर में नाचने के लिए नियुक्त स्त्री ।
 द्वितीय देवन (सम्) सं.— सौंदर्य, चमक, प्रकाश; पाँसे का खेल; जुआ; क्रीडा, आमद-प्रमोद; बाग, वाटिका; कमल; स्पर्धा; व्यापार, धंधा; प्रशंसा ।
 द्वितीय देवनदि (सम्) सं.— नंगा ।

द्वितीय देवनागरि (सम्) सं.— देवना-गरी लिपि ।
 द्वितीय देवभूमि (सम्) सं.— अकाश-गंगा; स्वर्ग, पवित्र भूमि ।— छ ज (सम्) सं.— आर्य ।
 द्वितीय देवयज्ञ (सम्) सं.— होम, हवन ।
 द्वितीय देवयोनि (सम्) सं.— किरर, गंधर्व, अप्सरा आदि ।
 द्वितीय देवर, द्वितीय देवृ (सम्) सं.— पति का बड़ा या छोटा भाई; देवर या जेठ ।
 द्वितीय देवरम्य (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम ।
 द्वितीय देवराज, द्वितीय देवराजेंद्र (सम्) सं.— इन्द्र; एक नाम ।
 द्वितीय देवर्षि (सम्) सं.— नारद, अत्रि आदि ऋषि ।
 द्वितीय देवल, द्वितीय देवलक (सम्) सं.— ब्राह्मण जो देवता की चढ़त पर अपना निर्वाह करता है; एक नाम ।
 द्वितीय देववर्धकि (सम्) सं.— विश्व कर्मा, देवताओं का बढ़ई ।
 द्वितीय देवघ्नी (सम्) सं.— देवी, देवता की पत्नी; अप्सरा ।
 द्वितीय देवस्थान (सम्) सं.— मंदिर, देवालय ।
 द्वितीय देवस्व (सम्) सं.— मंदिर की संपत्ति ।
 द्वितीय देवांग (सम्) सं.— जुलाहा, एक प्रकार का वस्त्र; रेशमी वस्त्र; पुरुष की जननेंद्रिय; एक व्यापारी का नाम ।
 द्वितीय देवांगने (सम्) सं.— दे. द्विचतुष्टय ।
 द्वितीय देवाद्रि (सम्) सं.— मेरु पर्वत ।
 द्वितीय देवानांप्रिय (सम्) सं.— देवताओं का प्रिय; मूर्ख, मूढ़; मूर्खता; बकरा; अशोक की उपाधि ।
 द्वितीय देवार (तद्) सं.— देवांगरं (तत्); स्वर्ग; मंदिर ।
 द्वितीय देवि (सम्) सं.— देवी; दुर्गा; स्त्रियों लिए आदरसूचक शब्द; रानी; राजकुमारी; चैचक; सरस्वती; एक दवाई का पौधा ।

द्विचर्च देविके (सम्) सं.— एक नदी का नाम ।
 द्विच देश (सम्) सं.— स्थान, भाग, कोई स्थान; प्रांत; विभाग; नियम, क़ायदा ।— द्विच भाषे (सम्) सं.— प्रांतीय भाषा ।
 द्विच देशस्थ (सम्) सं.— ब्राह्मणों की एक शाखा जो उत्तर से दक्षिण में आकर बस गयी है ।
 द्विच देशांतर (सम्) सं.— अन्य देश, दूसरा देश, विदेश । द्विच देशांतर (तद्) ।
 द्विच देशाधि, द्विच देशाधि (सम्) सं.— ज़िले या गाँव का मुख्य अधिकारी; ब्राह्मणों के एक वंश का नाम ।
 द्विच देशावार, द्विच देशावर (सम्) सं.— एक देश से दूसरे देश जाकर भीख माँगना; भिक्षा; विदेश; निर्यात ।
 द्विच देशि, द्विच देशि (सम्) सं.— किसी देश से संबंधित; प्रान्त की बोली या भाषा; एक राग का नाम ।
 द्विच देशिक (सम्) सं.— मार्गदर्शक; गुरु, आचार्य; यात्री-मुसाफिर; शिव ।
 द्विच देशीय, द्विच देश्य (सम्) वि.— देश या प्रान्त से संबंधित (पत्र, शब्द आदि) ।
 द्विच देश (तद्) सं.— देश: (तत्); देश ।
 द्विच दृष्टि (क) वि.— उपयुक्त, योग्य ।
 द्विच दृष्टि देसिकार्ति (क) सं.— रूपवती, सुंदरी स्त्री ।
 द्विच देशिगार, [गार गार] (क) सं.— कारिगर, कलाकार ।
 द्विच दोसिंग (तद्) सं.— देवासिंह: (तत्); देवताओं का सिंह; शिव ।
 द्विच देसिमार्ग (सम्) सं.— देश या प्रांत की भाषा-शैली ।
 द्विच देह (सम्) सं.— शरीर, देह ।— द्विच धारण (सम्) सं.— जीवन, अस्तित्व ।
 द्विच देहलि (सम्) सं.— देहरी, डडोही ।
 द्विच देहांत (सम्) सं.— मृत्यु, मौत ।

दोहरे दोरे

दोहरे दोरे (सम्) वि.—देह से संबंधित, शारीरिक ।

दोहरे दोरे (सम्) सं.—राक्षस, दैत्य । —गुरु गुरु = शुक्राचार्य ! —*दुःख* ध्वंसि = विष्णु ।

दोहरे दोरे (सम्) सं.—दीनता, गरीबी, निर्धनता; उदासी, शोक; निर्बलता; कमीनापन ।

दोहरे दोरे (तद्) सं.—दे. *दंष्ट्र* ।

दोहरे दोरे (सम्) सं.—देवता, देव, देवता से संबंधित ;

दोहरे दोरे (सम्) सं.—संयोग सौभाग्य, मौका ।

दोहरे दोरे (सम्) सं.—मृत्यु, मौत ।

दोहरे दोरे (क) सं.—बैल, नदी ;

दोहरे दोरे (क) सं.—सुराख, खोखला ।

दोहरे दोरे (क) सं.—एक पौधे का नाम ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

उन्नत, विशाल, विस्तृत, स्थूल, मजबूत, सशक्त । *दोहरे दोरे* = ताऊ, *दोहरे दोरे*—ताई ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) सं.—बड़प्पन, बड़ाई, महानता, श्रेष्ठता; गौरव ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) सं.—दे. *दोहरे दोरे* ।

दोहरे दोरे (क) सं. = काँजी हाउस; पशुओं को फँसाकर बांधने की शाला ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) क्रि.—दे. *दोहरे दोरे* ।

दोहरे दोरे (क) सं.—नाच, नृत्य ।

दोहरे दोरे (क) सं.—एक पौधा (*Atlantia manophylla*) ।

दोहरे दोरे (क) सं.—तरकस, निपंग; नैसर्गिक सरोवर, चट्टान पर का जलाश्रय ।

दोहरे दोरे (क) सं.—लाठी, दंड, डंडा, सोटा ।

दोहरे दोरे (क) सं.—राशि, समूह; समुदाय; भीड़, समूह; कोलाहल, अस्पष्ट बात ।

दोहरे दोरे (क) सं.—भीड़ या समूह का व्यक्ति ।

दोहरे दोरे (क) सं.—दोना ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) वि.—स्थूल, मोटा; बड़ा, तगड़ा । सं.—स्थूलता; मोटा होना ।

दोहरे दोरे (क) सं.—दोना ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) क्रि.—दबवा, ढंकेलने दे (प्रे.) ।

दोहरे दोरे (क) क्रि.—दबा, ढकेल, भागे या पीछे दबा ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) क्रि.—चकर काट ; संभ्रमित हो, घबड़ा जा ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) क्रि.—प्राप्त करा या करवा ; प्राप्त कर ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) क्रि.—प्राप्त हो ; मिल, उपलब्ध हो, हाथ लग ।

दोहरे दोरे (क) क्रि.—प्राप्त हो ; मिल, उपलब्ध हो, हाथ लग ।

दोहरे दोरे (क) क्रि.—प्राप्त हो ; मिल, उपलब्ध हो, हाथ लग ।

दोहरे दोरे (क) सं.—पकना, पक्व होना

(१) *दोहरे दोरे* (क) क्रि.—प्राप्त हो ; मिल उपलब्ध हो ; प्रकट हो ; सदृश्य या समान हो. योग्य हो ; पास-पास हो । सं.—समता, सादृश्य; समीपता, उपयुक्तता या योग्यता ।

(२) *दोहरे दोरे* (तद्) सं.—धुर्यः (तत्) — राजा, नृपति ; प्रधान, मुखिया ; स्वामी, प्रभु । — *दोहरे दोरे* = राजा होना, प्रभुत्व ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) क्रि — दे. *दोहरे दोरे* ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) सं — स्वामिनी, मालकिन, रानी ।

दोहरे दोरे (क) सं —वेद्या ; कुटिनी ।

दोहरे दोरे (क) सं.—एक प्रकार की दवा या बीज जिसका उपयोग मद्य बनाने में होता है ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) सं.—घोखा, फरेब, कपट ।

दोहरे दोरे (क) वि.—बड़ा, विस्तृत । — *दोहरे दोरे* = बड़ी तोंद ।

दोहरे दोरे (क) सं.—घास खोदने का एक उपकरण ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) क्रि.—लट्ट, झपट कर बटोर ।

दोहरे दोरे (क) सं —लगा ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (तद्) सं.—द्रोणः (तद् ?)—नंगा, नगन ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (तद्) सं.—द्रोणी (तद्)—नाव, नौका ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* *दोहरे दोरे* (क) सं. — *दोहरे दोरे*, *दोहरे दोरे* = बड़ी तोंदवाला, *दोहरे दोरे* = बड़ी तोंदवाली स्त्री ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे*, *दोहरे दोरे* (तद्) सं.— (‘धौत’ से ?)—धोती ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (अ. दे.) सं.—धोबी (हिं) ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) सं.—मच्छर, पिस्सू ।

दोहरे दोरे *दोहरे दोरे* (क) सं.—पकनेवाला फल ।

(१) *दोहरे दोरे* (क) सं.—पकना, पक्व होना

(२) दोहरे दोरे, दोहरे दोर (सम्) सं.—
धागा ।
दोहरे दोरे (सम्), दोहरे दोरे (सम्)
(तद्) सं — भुजबल ।
दोहरे दोरति, दोहरे दोरति (तद्)
सं. — धोती ।
दोहरे दोष (सम्) सं.— दोस (तद्) — चुटि,
अपराध, कसूर, ऐव; कलंक, भर्त्सना;
बुराई, खराबी; हानि; दुष्परिणाम; रोग ।
दोहरे दोषि (सम्) वि. — अपराधी, चुटि
करनेवाला; अपवित्र, भ्रष्ट; बुरा ।
दोहरे दोषे, दोहरे दोषा (सम्) सं.—
सायंकाल; कालिमा, रात्रि ।
दोहरे दोसे (क) सं.— दोसा; उड़द की दाल
और चावल को पीसकर बनाया जानेवाला
खाद्य पदार्थ ।
दोहरे दोस्ति (अ. दे.) सं.— दोस्ती
(फारसी); मित्रता ।
दोहरे दोह (सम्) सं.— दुहना; दूध ।
दोहरे दोहद (सम्) सं.— गर्भवती स्त्री
की रुचि; गर्भ; अमिलाषा, प्रबल अमि-
लाषा. कामना; वृक्षों की अमिलाषा ।
दोहरे दोहन (सम्) सं.— दुहना; दुधैडी ।
दोहरे दोहित्र (तद्) सं.— दौहित्र;
(तत्); पुत्री का पुत्र; नाती ।
दोहरे दोहिल (क) सं.— प्रकटन, प्रका-
शन, किसी बात को फैलाना; शिकायत
करना ।
दोहरे दोल (तद्) सं.— दोहरे दोला (तत्);
झूला, हिंडोला; पालकी ।
दोहरे दोलु (तद्) सं.— डौल; (तत्);
बड़ा डोल ।
दोहरे दोर्जन्य (सम्) सं.— दुर्जनता;
दुष्टता, नीचता; बुराई ।
दोहरे दोर्भाग्य (सम्) सं.— दुर्भाग्य;
बुरी दशा ।
दोहरे दोहित्र (सम्) सं.— दे. दोहरे दोहित्र ।
दोहरे दोर्भाग्यमि द्यावाभूमि (सम्) सं.— स्वर्ग
और पृथ्वी ।
दोहरे द्युति (सम्) सं.— प्रकाश, कांति, छवि,

चमक; सौंदर्य; प्रकाश की किरण ।
दोहरे द्युति (सम्) सं.— गंगा ।
दोहरे द्युम्न (सम्) सं.— प्रकाश, कांति,
आभा; संपत्ति; बल, शक्ति, विक्रम ।
दोहरे द्युत (सम्) सं.— जुआ, क्रीडा, खेल;
जुआ खेलनेवाला ।
दोहरे द्युत (सम्) सं.— चमक, प्रकाश,
आभा; सूर्य की धूम; गरमी ।
दोहरे द्युतन (सम्) सं.— चमकना, प्रका-
शित होना; देखना, दृष्टि ।
दोहरे द्युतिसु (सम्) क्रि.— प्रकाशित
हो, चमक; प्रकट हो ।
दोहरे द्रव (सम्) सं.— गमन, भ्रमण, मति;
टपकना, चूना; खेल, आमोद, विहार;
पनीलापन, तरलता, तरल पदार्थ; वेग ।
वि.— टपकनेवाला, तर, तरल, पनीला ।
दोहरे द्रवति (सम्) सं.— नदी ।
दोहरे द्रविड, दोहरे द्रविड (तमिल) सं.—
तमिलनाडु और उसके निवासी ।
दोहरे द्रविण (सम्) सं.— संपत्ति, ऐश्वर्य;
पैसा, धन; वस्तु; शक्ति, बल; सुवर्ण;
चाँदी ।
दोहरे द्रविसु (सम्) क्रि.— द्रवित हो, गल,
तरल हो; पसीज जा ।
दोहरे द्रव्य (सम्) सं.— वस्तु, चीज़; धन,
पैसा, संपत्ति; जीवद्रव्य; काठ की मूर्ति;
उपयुक्त पदार्थ; औषध, दवा ।
दोहरे द्राक्षा. दोहरे द्राक्षे (सम्) सं.—
अंगूर, अंगूर की लता ।— ञ्च पाक (सम्)
.— संद्राक्षापाक; कविता का प्रसाद गुण ।
दोहरे द्रावे (तत्) सं.— द्रापः (तत्) मूर्ख,
वेचकृत् ।
दोहरे द्रावक (सम्) सं.— द्रव रूप में होने-
वाला पदार्थ; पिघलानेवाला; चोर;
चतुर आदमी; लंपट; मोम ।
दोहरे द्राविके (सम्) सं.— लार ।
दोहरे द्राविड (तत्) सं.— तमिलवाला;
पंच द्राविडों में एक ।
दोहरे द्रुण (सम्) — विच्छू ।
दोहरे द्रुणे (सम्) सं.— धनुष की डोर ।

दोहरे द्रुत (सम्) वि.— तेज़; फुर्तीला, वेग-
वान्; शीघ्र, जल्दी, तुरंत । सं.— बिच्छू;
वृक्ष; परिहास करनेवाला अभिनेता, विदू-
षक ।— ञ्च पद (सम्) सं.— एक वृत्त का
नाम ।
दोहरे द्रुपद (सम्) सं.— द्रौपदी के पिता
का नाम ।
दोहरे द्रुम (सम्) सं.— पेड़, वृक्ष ।
दोहरे द्रुण (सम्) सं.— चार सौ बाँस
लंबी झील; जलपूर्ण मेघ; वनकाक;
बिच्छू; वृक्ष; सफ़ेद फूलों का पेड़; द्रुणा-
चार्य ।
दोहरे द्रुणि (सम्) सं.— काठ की बाल्टी;
जलाधार नौद; घाटी; १२८ सेर की
तौल ।
दोहरे द्रुह (सम्) सं.— उत्पात, उपद्रव;
वैर, द्वेष; विद्रोह; विश्वासघात; अपराध ।
दोहरे द्रुहि (सम्) वि.— अपराधी,
विद्रोही, अपकारी ।
दोहरे द्रु (सम्) वि.— दो ।
दोहरे द्रुद्व (सम्) सं.— जोड़ा, युग्म;
लड़ाई, युद्ध, झगड़ा; संदेह, शक; गुप्त-
भेद; रहस्य; द्वंद्व समास ।— ञ्च प्रास
(सम्) सं.— अनुप्रास अलंकार का एक
भेद ।
दोहरे द्रुय, दोहरे द्रुयि (सम्) सं.—
जोड़ा, जुड़ा; दो प्रकार का स्वभाव ।
दोहरे द्रुदश (सम्) वि.— बारह, बारहवाँ ।
दोहरे द्रुदपर (सम्) सं.— पाँसे का वह
पहल जिसपर दो खुदे हो; संदेह; अनि-
श्रय; तीसरे युग का नाम ।
दोहरे द्रुदर (सम्) सं.— द्वार, दरवाज़ा;
माध्यम, रास्ता, मार्ग, साधन ।
दोहरे द्रुदरालक (सम्) सं.— द्वारपाल,
पहरेदार, दरबान ।
दोहरे द्वि (सम्) वि.— दो, दोनों ।
दोहरे द्वितीय (सम्) वि.— दुगुना; दूसरा;
दो; जोड़ा ।

द्वितीये द्वितीये (सम्) सं.—जोड़ा, युग्म; पत्नी; विभक्ति विशेष; चाँद्रमास की दूसरी तिथि।

द्विद्व द्वित्व (सम्) सं.—द्वित्व; जोड़ा, जुटा; शब्द को दुहराना।

द्विद्व द्विधा (सम्) अ.—दो भागों में, दो प्रकार से।

द्विद्व द्विप (सम्) सं.—हाथी।

द्विद्व द्विरफ (सम्) सं.—भ्रमर, काला मधुकर।

द्विद्व द्वेष (सम्) सं.—घृणा, तिरस्कार; शत्रुता; बदला लेने की प्रवृत्ति।

द्विद्व द्वेषि (सम्) सं.—शत्रु।

द्विद्व द्वैत (सम्)—दो का भाव, दुई; द्वैत-वाद।

द्विद्व द्वैध (सम्) वि.—दोहरा, दूना।

द्विद्व द्वैष (सम्) वि.—द्वीप संबंधी; चीते का; व्याघ्रचर्म से ढका हुआ।

द्विद्व द्वैपायन (सम्) सं.—व्यासजी का नाम।

द्विद्व द्वैमातुर (सम्) सं.—गणेश।

द्विद्व द्वयष्ट (सम्) सं.—ताँवा।

द्विद्व द्वयह (सम्) सं.—दो दिनों की अवधि।

ध

ध—कन्नड-वर्णमाला का तैतीसवाँ अक्षर; तवर्ग का चौथा व्यंजन।

धका मुक्ति (अ. दे.) सं.—धका-मुक्ती (हिं.) लड़ाई, झगड़ा।

धका धक्क (क) सं.—स्थूण, निहाई।

धका धग (सम्) सं.—जलन, ज्वाला, आग; लौ, चमक, गरमी, ताप।

धका धट (सम्) सं.—तराजू, तुला; तराजू द्वारा परीक्षा।

धका धण (क) सं.—धनुष इत्यादि की ध्वनि।

धका धणु (क) अ.—धन्य! धन्य!, अच्छा।

धका धत्तूर (सम्) सं.—धत्तूरा।

धका धन (सम्) सं.—संपत्ति, दौलत, कोई मूल्यवान् वस्तु; पशुधन।

धका धनंजय (सम्) सं.—संपत्ति या धन पर विजय पाना; अग्नि; भाग; अर्जुन; एक लेखक का नाम; सिर की वायु।

धका धनद, धका धनदव, (सम्) सं.—कुवेर।—संज्ञा सख = शिवजी।

धका धनप, धका धनपति, धका धनधि धनाधिप (सम्) सं.—कुवेर।

धका धनाढ्य, धका धनि, धका धनिक (सम्) वि.—धनी, अमीर, संपन्न।

धका धनुः, धका धनुस्; धका धनुस्सु (सम्) सं.—धनुष, कमान।

धका धनुर्धर, धका धनुर्धारि (सम्) सं.—धनुष धारण करनेवाला, तीरंदाज।

धका धनुर्लते (सम्) सं.—चंद्रलता।

धका धनुष्कोटि (सम्) सं.—धनुष का अग्र भाग; एक स्थान का नाम जो रामेश्वरम के पास है।

धका धन्य (सम्) वि.—धन देनेवाला; धनवान्; भाग्यवान् सुकृती, सुखी; सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम। सं.—धन, संपत्ति।

धका धन्यते (सम्) सं.—सुकृत, सौभाग्य, धन्य होना।

धका धन्यवाद (सम्) सं.—शुक्रिया, धन्यवाद।

धका धन्व (सम्) सं.—धनुष; मरुभूमि।

धका धन्वतरि (सम्) सं.—सूर्य; देव-वैद्य।

धका धन्वि (सम्) सं.—धनुर्धारी, तीरंदाज; कई पौधों के नाम।

धका धमन (सम्) सं.—एक प्रकार का नरकुल।

धका धम्मिल्ले (सम्) सं.—अनुसाल्व की पत्नी का नाम।

धका धरणि, धका धरणी (सम्) सं.—भूमि, पृथिवी; जमीन, एक की संख्या।

धका धरणिचक्रेश, धका धरणीन्द्र, धका धरणीपति (सम्)—सं-राजा।

धका धरणीधर (सम्) सं.—पर्वत; शेष; कच्छप; विष्णु; शिव; राजा; दिग्गज।

धका धरधुर (क) अ.—अच्छा; बहुत।

धका धराधर (सम्) सं.—पर्वत; विष्णु।

धका धराधारे (सम्) सं.—भूमि।

धका धरित्री, धका धरित्री (सम्) सं.—भूमि, पृथिवी।

धका धरियिसु, धका धरिसु, धका धरिसु धरयिसु (सम्) क्रि.—धारण कर, धर।

धका धर्म (सम्) वह कर्म जिसके करने से इह में अभ्युदय और पर में मोक्ष की प्राप्ति होती है; दर्पण; प्रचलन, पद्धति; कर्तव्य; न्याय, समानता; सादृश्य; पक्षपात; व्यक्ति की वृत्ति, चरित्र; नेम; ईश्वर-भक्ति; कर्तव्याकर्तव्य अवधारणाएँ; यज्ञ; सत्संग, धर्मात्मा पुरुषों का सांगत्य; भक्ति; विधान; उपनिषद्; उत्पात; चाप, धनुष; शिव; राजा; धर्मदेवता; यम; युधिष्ठिर का नाम।

धका धर्मशास्त्र (सम्) सं.—कर्तव्या-कर्तव्य अवधारण शास्त्र।

धका धर्मसंहिते (सम्) सं.—मनु आदि की स्मृतियाँ।

धका धर्मसंकट (सम्) सं.—दुविधा, धर्मसंकट।

धका धर्मस्थल, धका धर्मस्थल (सम्) सं.—कर्नाटक का एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान।

धका धर्षण (सम्) सं.—अवज्ञा, अपमान; आक्रमण, सतीत्वहरण; रति, संभोग; कुवाच्य, गाली।

धका धर्षणि (सम्) सं.—वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री।

धका धव (सम्) सं.—मनुष्य; पति, स्वामी, प्रभु, एक पौधा।

धका धवल धवळ (सम्) सं.—सफेद रंग; सफेद कागज़; एक प्रकार का कपूर; श्रेष्ठ बैल; बूढ़ा बैल। वि.—सुन्दर, मनोहर।

द्वन्द्वलिपि, द्वन्द्वलिपि, (सम्) सं.—सफेदी ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—सफेद गाय ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—आक्रमण, हमला ।

द्वन्द्वलिपि, द्वन्द्वलिपि (तद्) सं.—धातु (तद्) ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—प्रधान या मूल उपादान, पञ्चतत्व; निसृतर-; (पसीना आदि); वात, पित्त और कफ; खनिज पदार्थ; क्रिया संबंधी धातु; जीवात्मा; परमात्मा; इंद्रिय; इंद्रिय-कर्म; हड्डी ।
द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा; वाहक, समर्थक, रक्षक; विष्णु; जीव; सप्तपिंथों का नाम; विवाहिता स्त्री का प्रेमी, व्यभिचारी ।

द्वन्द्वलिपि, द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—दाईं, धाय; पृथिवी; आँवले का वृक्ष ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—दे. द्वन्द्वलिपि.

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—पर्वत ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—वृक्ष, पेड़ ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—राजा ।

द्वन्द्वलिपि (सम्)—आँवला ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—धनुर्धारी, तीरंदाज ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—धनिया ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—घर, मकान, रहने का स्थान; खाली स्थान, जगह; शरीर; कुल, वंश, कुटुंब; प्रकाश, चमक; महिमा; गौरव; बल, पराक्रम; प्रकाश की किरण ।
द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—धरना; धरनेवाला, समर्थक; बहनेवाला, टपकनेवाला; तुषार, हिम; तरंग, लहर ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—धरनेवाला; पेटी, ट्रंक (Trunk); स्तंभ, खंभा ।

द्वन्द्वलिपि (सम्)—धारण करने की क्रिया या भाव; धारणा, बुद्धि, समझ; दृढ़ निश्चय; मर्यादा; विश्वास ।

द्वन्द्वलिपि (क ?) सं.—द्वन्द्वलिपि.

द्वन्द्वलिपि (क) सं.—उदारता; पूर्ण

स्वातंत्र्य, छुटकारा । द्वन्द्वलिपि धाराकि—उदार पुरुष ।

द्वन्द्वलिपि धारिणि, द्वन्द्वलिपि धारिणी, द्वन्द्वलिपि धारुणि (सम्) सं.—पृथिवी ।

द्वन्द्वलिपि धारे, द्वन्द्वलिपि धारा (सम्) सं.—दे. द्वन्द्वलिपि; सिरा, नौक, धार ।

द्वन्द्वलिपि धार्तराष्ट्र (सम्) सं.—धृतराष्ट्र का पुत्र; एक प्रकार का हंस ।

द्वन्द्वलिपि धार्मिक (सम्) वि.—धर्मात्मा, पुण्यात्मा; सच्चा, सत्यप्रिय; धर्मेनिष्ठ ।

द्वन्द्वलिपि धार्ष्ट्य (सम्) सं.—दे. द्वन्द्वलिपि.

द्वन्द्वलिपि धावन (सम्) सं.—धोना, साफ़ करना, सफाई ।

द्वन्द्वलिपि धिकरिसु (सम्) क्रि.—धिकार कर, फटकार ।

द्वन्द्वलिपि धिकार (सम्) सं.—धिकार, फटकार ।
द्वन्द्वलिपि धिगिल् (क) सं.—भय, भीति, डर ।

द्वन्द्वलिपि धिषण (सम्) सं.—बृहस्पति का नाम ।
द्वन्द्वलिपि धिषणा, द्वन्द्वलिपि धिषणे (सम्) सं.—

वाणी, वक्तृता; बुद्धि; प्रशंसा; कमण्डलु, प्याला ।

द्वन्द्वलिपि धी (सम्) सं.—बुद्धि, समझ ।

द्वन्द्वलिपि धीमति (सम्) सं.—बुद्धिमति स्त्री ।
द्वन्द्वलिपि धीर (सम्) वि.—वीर, साहसी;

दृढ़, दृढ़ मन का; शांत, गंभीर; आत्म-संयमी; बुद्धिमान । सं.—जैन संन्यासी; समुद्र; केसर, कुंकुम । — उलं तन = धीरता ।

द्वन्द्वलिपि धुर (क) सं.—लड़ाई, युद्ध ।

द्वन्द्वलिपि धुरंधर (सम्) वि.—जुआं होनेवाला; जीतने योग्य; प्रधान, नेता, मुखिया; सद्गुणों से संपन्न; आवश्यक कर्तव्य-भार से दबा हुआ;

द्वन्द्वलिपि धुरीण (सम्) वि.—भार होने योग्य; धुरीण, काम-धंधे में लिस पुरुष; प्रधान, मुखिया, नेता; अग्रणी ।

द्वन्द्वलिपि धुरे, द्वन्द्वलिपि धुरा (सम्) सं.—बोझ, भार ।

द्वन्द्वलिपि धुवित्र (तद्) सं.—द्वन्द्वलिपि धुवित्र (तद्); पंखा ।

द्वन्द्वलिपि (सम्) सं.—एक सुगंध द्रव्य जिसको भाग में डालने से धुआँ निकलता है ।

द्वन्द्वलिपि धूम (सम्) सं.—धुआँ; बादल ।—

द्वन्द्वलिपि केतु (सम्) सं.—अग्नि, आग; उल्का; धूमकेतु, पुच्छलतारा । — उल्लं शकट (सम्) सं.—रेल ।

द्वन्द्वलिपि धूम्ये (सम्) सं.—धुएँ की घटा ।

द्वन्द्वलिपि धूम्र (सम्) वि.—धुमैले रंग का, भूरा; लाल और काले का मिश्रण; बैंगनी; अंधकार । — उल्लं क (सम्) सं.—ऊंट । — उल्लं पान (सम्) सं.—बीड़ी, सिगरेट आदि पीना ।

द्वन्द्वलिपि धूर्जटि (सम्) सं.—शिव ।

द्वन्द्वलिपि धूर्त (सम्) वि.—दगाबाज, धोखा देनेवाला; उपद्रवी; चालाक ।

द्वन्द्वलिपि धूलि (क) धूली, धूलि (क) (सम्) सं.—धूल, गर्द ।

द्वन्द्वलिपि धूसर (सम्) वि.—भूरे रंग का । सं.—भूरा रंग ।

द्वन्द्वलिपि धूलिकोट्टे (तद्) सं.—धूल का किला अर्थात् मिट्टी का किला ।

द्वन्द्वलिपि धूलिपट, द्वन्द्वलिपि धूलिपट्ट (तद्) सं.—धूल ही धूल, संपूर्ण नाश ।

द्वन्द्वलिपि धूलिपटल (तद्) सं.—धुएँ की घटा ।

द्वन्द्वलिपि धूले (तद्) सं.—धूल ।

द्वन्द्वलिपि धृत (सम्) वि.—पकड़ा हुआ, धरा हुआ वहन किया हुआ, आया हुआ, समर्थित, रखा हुआ, वजाया हुआ, रक्षित; धिसा हुआ, उपयोग किया हुआ, अभ्यास किया हुआ; तौला हुआ ।

द्वन्द्वलिपि धृतराष्ट्र (सम्) सं.—दुर्योधन के पिता का नाम; एक नाग का नाम; एक पक्षी; अंधा मनुष्य ।

द्वन्द्वलिपि धृति (सम्) सं.—पकड़ना, धरना आदि; दृढ़ता, स्फूर्ति, दृढ़ संकल्प; सन्तोष, आनंद, प्रसन्नता ।

द्वन्द्वलिपि धृष्ट (सम्) सं.—ढीठ, साहसी या अशिष्ट व्यवहार करनेवाला पुरुष; अस्मि-मानी; लंपट, कुकर्मि ।

द्वैत धेनु (सम्) सं.—गाय; भूमि; भेंटे, पुरस्कार ।

द्वैत धेनुके (सम्) सं.—दुधार-गाय; हथिनी; एक अछ विशेष ।

द्वैत धेनुक (सम्) सं.—गायों का समूह ।

द्वैत धैर्य (सम्) सं.—धीरज, धीरता; चित्त की स्थिरता; साहस; गांभीर्य; शांति।—संठ वंत = धैर्यवान् । — ठाँ शालि = धैर्यवान् ।

द्वैत धोरण (सम्) सं.—वाहन, सवारी; तेज़ी या सुंदरता से चलनेवाला; घोड़े की चाल; ध्यान, ढंग, विधान, शैली; उद्देश्य ।

द्वैत धोरणे (सम्) सं.—अच्छी शैली; उपेक्षा, लापरवाही, ध्यानहीनता ।

द्वैत धौत (सम्) वि.—साफ़ किया हुआ; चमकाया हुआ । सं.—चाँदी ।

द्वैत धौम्य (सम्) सं.—श्रेष्ठ बैल; एक ऋषि का नाम ।

द्वैत ध्यान (सम्) सं.—ध्यान, प्रगाढ़ चिंता, मानसिक प्रत्यक्ष ।

द्वैत ध्रुव (सम्) वि.—ध्रुव, अचल, स्थिर, नित्य, निश्चित, दृढ़; पक्का, ठीक । सं.—ध्रुवतार; पृथिवी का अक्ष देश; वटवृक्ष; वृक्ष का तना; खंभा; (संगीत में) टेक; समय, काल, युग; ब्रह्मा; विष्णु; शिव; उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव जो भगवद्भक्त थे ।

द्वैत ध्रुवे (सम्) सं.—यज्ञ का करछुल या चमचा; वृक्ष विशेष ।

द्वैत ध्वंस (सम्) सं.—विनाश, नाश; नष्ट होना; पतन ।

द्वैत ध्वंस (सम्) सं.—नाश करना; पतन, मक, ग ।

द्वैत ध्वज (सम्) सं.—पताका, झंडा; चिह्न, संकेत ।

द्वैत ध्वजि (सम्) सं.—सेना ।

द्वैत ध्वनि (सम्) सं.—ध्वज, नाद, स्वर; शब्द; साहित्य में प्रयुक्त ।

द्वैत ध्वस्त (सम्) वि.—पतित, गिरा हुआ; विनष्ट; अदृश्य ।

द्वैत ध्वान (सम्) सं.—आवाज़, नाद, स्वर; लय ।

द्वैत ध्वांत (सम्) सं.—अंधकार ।

न न

न न—कन्नड-वर्णमाला का चौंतीसवाँ अक्षर, तवर्ग का अंतिम व्यंजन ।

न न (सम्) अ.—नहीं, न ।

न नकु, न नकु (क) सं.—हरिण, हिरन ।

न नकु, न नकु (क) क्रि.—थोड़ा चाट, थोड़ा खा (जैसे अचार) । न नकु (क) सं.—विष, जहर ।

न नंत, न नंत (क) सं.—रिश्तेदार, नातेदार; बंधु, मित्र ।—न नतन = रिश्तेदारी ।—न नतन = रिश्तेदारी ।—न नतन = रिश्तेदारी ।

न नंतिके (क) सं.—रिश्तेदारी, संबंध ।

न नंतिति (क) सं.—स्त्री रिश्तेदार ।

न नंतु, न नंतु (क) सं.—रिश्तेदारी, संबंध; मित्रता ।

न नंद (सम्) सं.—प्रसन्नता, हर्ष; कृष्ण के पिता नंद; एक वृत्त ।

न नंदक (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम; मंडक; कृष्ण की तलवार का नाम; कोई भी तलवार; प्रसन्नता ।

न नंदन (सम्) सं.—प्रसन्नता; पुत्र; इन्द्र की फुलवारी; एक संवरसर का नाम ।

न नंदनंदन (सम्) सं.—श्रीकृष्ण ।

न नंदने (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

न नंदा (क) वि.—अमित, सदा रहनेवाला ।—न नदीप = सदा जलनेवाला दीपक ।

न नंदि (सम्) सं.—प्रसन्नता, हर्ष; पुत्र; शिव के एक अनुचर का नाम—नंदी-श्वर; वृक्ष विशेष (The tree of cedrala toona) ।

न नंदि (सम्) वि.—प्रसन्न, हर्षित, संतुष्ट ।

न नंदिर्ग (सम्) सं.—मैसूर राज्य का एक बड़ा पर्वत ।

न नंदिनि (सम्) सं.—प्रसन्न करने वाली; प्रसन्न स्त्री; पुत्री; नंदिनी धेनु ।

न नंदिवट (तद्) सं.—नंदावर्तः (तद्) ।

न नंदिवर्धन (सम्) सं.—शिव; मित्र; पुत्र; नंदिवृक्ष ।

न नंदिवाह, न नंदिवाहन (सम्) सं.—शिव ।

न नंदिषु (क) क्रि.—बुझा, मिटा ।

न नंदि (क) क्रि.—बुझ, तेजहीन हो, प्रकाशहीन हो; मुरझा जा; नष्ट हो; बरबाद हो, मिटा जा ।

न नंदे (सम्) सं.—प्रसन्नता, हर्ष; संपत्ति, धन; शक्ति, गौरी; प्रथमा, षष्ठी और एकादशी तिथियाँ ।

न नंदे (सम्) सं.—सफेद फूलों का एक पौधा; विचित्र प्रकार का चित्र; पश्चिमी द्वार के बिना चतुःशाला एक बड़ी मछली विशेष ।

न नंदिके (क) सं.—विश्वास, भरोसा, यकीन ।

न नंदिगस्त (क) सं.—विश्वास पात्र मनुष्य ।

न नंदिगस्तिके (क) सं.—विश्वास, सचाई, ईमानदारी ।

न नंदिगे (क) सं.—दे. नंदिके ।

न नंदिसु (क) क्रि.—विश्वास उत्पन्न कर ।

न नंदिसुह (क) सं.—विश्वास उत्पन्न करना ।

न नंदु (क) क्रि.—विश्वास कर, भरोसा कर ।

न नंदुगे (क) सं.—दे. नंदिके ।

न नंदुरि, न नंदुरि (मळया-ळम) सं.—ब्राह्मणों की एक जाति ।

न नंदि (अ. दे.) सं.—नकल (भरबी) ;

लक्ष्मी नकारिसु

विनोद, अपहास, मजाक । — ७३ अक्षर, ७०० कार = मसखरा, विदूषक ।
 लक्ष्मी नकारिसु (सम्) क्रि. — न कह, अस्वीकार कर, इनकार कर ।
 लक्ष्मी नकासि, लक्ष्मी नकासु (अ. दे.) सं. — नकाशी ।
 लक्ष्मी नकुल (सम्) सं. — नेवला; धर्मराज के एक छोटे भाई का नाम । — लक्ष्मी केतु, लक्ष्मी ध्वज (सम्) सं. — एक मंत्री का नाम । — ७० अक्षरि (सम्) सं. — साँप ।
 लक्ष्मी नक्कि (क) सं. — मिज़राव ।
 लक्ष्मी नक्कु, लक्ष्मी नेक्कु (क) क्रि. — चाट, चख । लक्ष्मी नक्कु (क) कृ. — हँसकर ।
 लक्ष्मी नक्के (क) सं. — सियार, लोमड़ी ।
 (१) लक्ष्मी नक्त (क) सं. — कहावत, लोकोक्ति ।
 (२) लक्ष्मी नक्त (सम्) सं. — रात्रि, रात; उपवास जो रात में किया जाता है । — लक्ष्मी चर (सम्) सं. — राक्षस; उल्लू; चोर, विल्ली । — लक्ष्मी मुखे (सम्) सं. — सायं-काल ।
 लक्ष्मी नक्त (सम्) सं. — मगर, मकर ।
 लक्ष्मी नक्ष (अ. दे.) सं. — नक्षत्र (अक्षरी) ।
 लक्ष्मी नक्षत्र (सम्) सं. — तारा; ग्रह; मोती; २७ की संख्या ।
 लक्ष्मी नक्षत्रेश (सम्) सं. — चाँद, चंद्रमा ।
 लक्ष्मी नक्षे (अ. दे.) सं. — दे. लक्ष्मी ।
 लक्ष्मी नख (सम्) सं. — नख, हाथ-पैर के नाखून ।
 लक्ष्मी नखपंजर (सम्) सं. — पंजा ।
 लक्ष्मी नखर (सम्) सं. — हाथ का नख, पंजा ।
 लक्ष्मी नखरायुध, लक्ष्मी नखायुध (सम्) सं. — सिंह, बाघ, मुर्गा । — लक्ष्मी वैरि = हाथी ।
 (१) लक्ष्मी नग (क) सं. — गहना, आभूषण; वस्तु; टुकड़ा; वस्तुओं का बोझा; बैल का बोझा ।
 (२) लक्ष्मी नग (सम्) सं. — पर्वत; साक्ष की संख्या; एक वृक्ष ।
 लक्ष्मी नगकुलिश (सम्) सं. — इन्द्र ।
 लक्ष्मी नगचाप (सम्) सं. — शिव ।

लक्ष्मी नगज (सम्) सं. — पर्वत में उत्पन्न, हाथी ।
 लक्ष्मी नगजे, लक्ष्मी नगजाते (सम्) सं. — पार्वती ।
 लक्ष्मी नगडि, लक्ष्मी नेगडि (क) सं. — जुकाम, सर्दी ।
 लक्ष्मी नगदि, लक्ष्मी नगदु (अ. दे.) सं. — नकद (अक्षरी) ।
 लक्ष्मी नगधरे (सम्) सं. — पृथिवी, भूमि ।
 लक्ष्मी नगप, लक्ष्मी नगपति (सम्) सं. — हिमालय ।
 लक्ष्मी नगनंदन (सम्) सं. — पर्वत के पास की फुलावरी ।
 लक्ष्मी नगर, लक्ष्मी नगरि (सम्) — शहर, नगर ।
 लक्ष्मी नगवैरि (सम्) सं. — इन्द्र ।
 लक्ष्मी नगात्मजे (सम्) सं. — पार्वती ।
 लक्ष्मी नगारि (अ. दे.) सं. — नगाड़ा, नगारा ।
 लक्ष्मी नगिसु (क) क्रि. — हँसा ।
 लक्ष्मी नगु (क) क्रि. — हँस, मुस्करा । सं. — हँसी, मुस्कराहट, प्रसन्नता, हर्ष; विकास ।
 लक्ष्मी नगे (क) क्रि. — हँस, मुस्करा । सं. — हँसी, मुस्कराहट ।
 लक्ष्मी नगेगार, लक्ष्मी नगेवडिकार (सम्) सं. — विनोद करनेवाला, हँसानेवाला, विदूषक ।
 लक्ष्मी नगेवडि, लक्ष्मी नगेवळि (सम्) सं. — हँसने की स्थिति ।
 लक्ष्मी नगिगु (क) सं. — गोकुल या त्रिकंठक पौधा ।
 लक्ष्मी नगु (क) क्रि. — (बर्तन को) चोट लग, आघात लग; कुचला जा । सं. — चोट लगना ।
 लक्ष्मी नग्न (सम्) वि. — नंगा, विवस्त्र; असभ्य । सं. — नंगा भिक्षुक; शिव; नग्नता, नंगा होना ।
 लक्ष्मी नगनाट (सम्) सं. — बौद्ध या जैन नंगा संन्यासी ।
 लक्ष्मी नगने, लक्ष्मी नगनके (सम्) सं. — नंगी स्त्री; निर्लज्ज स्त्री ।

लक्ष्मी नच्चण (सम्) सं. — नर्तन (तत्); नाच ।
 लक्ष्मी नच्चिके, लक्ष्मी नच्चिगे (क) सं. — प्रियता; विश्वास, भरोसा ।
 लक्ष्मी नच्चिसु (क) क्रि. — प्रिय लग, अभिराम लग; विश्वासपात्र बन ।
 लक्ष्मी नच्चु (क) क्रि. — अच्छा लग; विश्वास कर, भरोसा कर । सं. — प्रियता, प्रीति, चाह, आशा; विश्वास; भरोसा; संदेह-शंका ।
 लक्ष्मी नजुगु (क) क्रि. — कुचल, मार, आघात कर; चूर्ण कर; कुचला जाना या चूर्ण किया जाना ।
 लक्ष्मी नज्जु (क) सं. — कुचला जाने या चूर्ण होने की स्थिति ।
 लक्ष्मी नट (सम्) सं. — अभिनेता; निम्न श्रेणी के क्षत्रिय का पुत्र; अशोक वृक्ष; एक प्रकार का नरकुल ।
 लक्ष्मी नटक (सम्) सं. — नट, अभिनेता ।
 लक्ष्मी नटकु, लक्ष्मी नटिके, लक्ष्मी नटिगे, लक्ष्मी नटिके, लक्ष्मी नट्टु, लक्ष्मी नेटिके, लक्ष्मी नेटिगे, लक्ष्मी नेट्टु (क) सं. — अंगुलियों को मरोड़ने से निकलनेवाली ध्वनि; अंगुली चटकाना ।
 लक्ष्मी नटने (सम्) सं. — अभिनय, नाच, स्वाँग, बहाना, दिखावा ।
 लक्ष्मी नटि, लक्ष्मी नटी (सम्) सं. — नाचनेवाली, नटी, अभिनेत्री ।
 लक्ष्मी नटिसु, लक्ष्मी नटिसु (सम्) क्रि. — नाच, नृत्य कर, अभिनय कर; स्वाँग कर ।
 लक्ष्मी नटुव, लक्ष्मी नट्टुव (सम्) सं. — नट, नाचनेवाला ।
 लक्ष्मी नट्ट (क) वि. — बीच का, केंद्र का ।
 लक्ष्मी नट्टविग, लक्ष्मी नट्टुविग (सम्) सं. — दे. लक्ष्मी ।
 लक्ष्मी नट्टुगिति, लक्ष्मी नट्टुगिति, लक्ष्मी नट्टुगिति (सम्) सं. — दे. लक्ष्मी ।
 लक्ष्मी नट्टि (क) वि. — मनोहर; सुन्दर । सं. — रोपना, रोपाई ।

संज्ञा नट्ट (क) सं.—फैलनेवाली घास की जड़ ।

संज्ञा नट्टे (क) वि.—बीच का मध्य का ।
संज्ञा गोंबु (क) सं.— बीच की डाली ।

संज्ञा नड, संज्ञा नडु (क) सं.—कमर, कटि ।
—संज्ञा कट्टु (क) क्रि.—कमर कस ।

संज्ञा नडक (क) सं.—कंपन, थरथराहट, वेपथु ।

संज्ञा नडगु (क) क्रि.—काँप, थरथरा, कंपित हो ।

संज्ञा नडते (क) सं.—चाल, गति ; चाल-चलन, व्यवहार, शील, चरित्र । — संज्ञा वंत = चरित्रवान् ।

संज्ञा नडपु (क) सं.—चलन, चाल, गति ।
क्रि.—चला ; पोषण कर, पाल ।

संज्ञा नडयिसु, संज्ञा नडसु, संज्ञा नडिसु, संज्ञा नडेयिसु (क) क्रि.—चला, गमन करा, चलवा, गमन करने दे, निभा, पूरा कर ।

संज्ञा नडवडिके, संज्ञा नडवडि, संज्ञा नडवडिके, संज्ञा नडवडित (क) सं.—चरित्र, शील, चाल-चलन ; रूढ़ि, पद्धति ।

संज्ञा नडवु, संज्ञा नडवु (क) सं.—बीच, मध्य ; कटि, कमर । — संज्ञा अंतर = मध्यांतर ।

(१) संज्ञा नडवे (क) सं.—घर के प्रवेश द्वार के सामने का स्थान ; पगडंडी, छोटी राह ।

संज्ञा नडवे, संज्ञा नडवे (क) अ.—बीच में, के मध्य ।

संज्ञा नडविके (क) सं.—चलाना, गमन कराना ।

संज्ञा नडह (क) सं.—चलना, चाल ; चाल-चलन ।

संज्ञा नडवडि — (क) सं.— संज्ञा नडवडि दे, संज्ञा नडवडिके ।

संज्ञा नडि (क) क्रि.—चल, जा, गमन कर, हट । वि.—बीच का ।

संज्ञा नडिके, संज्ञा नडिगे (क) सं.— संज्ञा नडगे—चलना, चाल, गति ।

संज्ञा नडिवे (क) अ.—बीच, में ।

संज्ञा नडिसु (क) क्रि.—दे, संज्ञा नडयिसु ।

(१) संज्ञा नडु (क) सं.—कमर, कटि ; केंद्र, मध्य भाग, घोड़े की पीठ । — संज्ञा कट्टु (क) क्रि.—कमर कस, तैयार हो । सं.—मौंजी, कमरबंद, सेखला ।

(२) संज्ञा नडु, संज्ञा नडे (क) क्रि.—रोप, डाल, लगा, स्थिर कर, स्थापित कर, गाढ़, कायम कर ।

संज्ञा नडुक (क) सं.—कंपन, थरथराहट, कंपकंपी ; हिलना ; भय ; वेपथु ।

संज्ञा नडुगिसु (क) क्रि.—कँपा, डरा ; हिला ।

संज्ञा नडुगु (क) सं.—काँप, थरथरा ; हिल ; डर, घबड़ा । सं.—कंपन, कंपकंपी ।

संज्ञा नडवण (क) वि.—बीच का, मध्य का, केंद्र का ।

संज्ञा नडवु (क) सं.—दे, संज्ञा (१) ।
संज्ञा नडवे (क) अ.—दे, संज्ञा ।

(१) संज्ञा नडे (क) क्रि.—दे, संज्ञा सं.—जाना, चलना, चाल, गमन ; व्यवहार, चरित्र, चाल-चलन । — संज्ञा नुडि (क) सं.—आचार-विचार ।

(२) संज्ञा नडे (क) अ.—दृढ़ता से, स्थिरता से ।
संज्ञा नडेयिसु (क) क्रि.—दे, संज्ञा नडयिसु ।

संज्ञा नडेवडि (क) सं.—दे, संज्ञा नडवडिके ।
संज्ञा नडेसु (क) क्रि.—दे, संज्ञा नडयिसु ।

संज्ञा नडिड (क) सं.—कमर का पिछला भाग, जाँघ का जोड़ ; नत होना, झुकना ; वक्रता । — संज्ञा मूगु = चपटी नाक ।

संज्ञा नणु (क) सं.—मित्रता, स्नेह, प्रेम, प्रीति, प्रणय ; सन्निकटता, संबंध ; सुंदरता, मनोहरता, लालित्य, शोभा ; अच्छाई ।

संज्ञा नत (सम्) वि.—नत, झुका हुआ, टेढ़ा वक्र, कुटिल ।

संज्ञा नति (सम्) सं.—झुकाव, प्रणाम ; विनम्रता ; धनुष ।

संज्ञा नत्तु (क) सं.—तुतलाहट, तुतलाना ; तोतली या अस्पष्ट बात ।

संज्ञा नत्तु (अ-दे.) सं.—नथ ।

संज्ञा नद (सम्) सं.—शब्द करना, शोर ; बड़ी नदी ।

संज्ञा नदि, संज्ञा नदी (सम्) सं.—नदी । — संज्ञा तीर = नदी का तट ।

संज्ञा नदिपु (क) क्रि.—बुझा ; शांत कर ।
संज्ञा ननद (सम्) सं.—ननद, पति की बहन ।

(१) संज्ञा ननसु (क) सं.—सचाई, सत्य । अ.—सचमुच । संज्ञा ननसुयित्तु कनसु ननसायित्तु । — स्वप्न सच हुआ ।

(२) संज्ञा ननसु (क) क्रि. = संज्ञा ननेसु — गीला कर, भिगो, आद्र कर ।

संज्ञा नने (क) क्रि.—गीला हो, भीग । सं.—अंकुर, कली ।

संज्ञा ननेसु (क) क्रि.—दे, संज्ञा ननेह (क) सं.—गीला होना, भीगना ।

संज्ञा नन (क) सर्व.—मेरा, मेरी, अपना, अपनी ।

संज्ञा नन्नि (क) सं.—सचाई, सत्य ; ईमान दारी, प्रेम, प्रीति, संबंध ।

संज्ञा ननुंसक (सम्) सं.—हिजड़ा, क्लीब ; ननुंसक लिंग ।

संज्ञा ननुसर, संज्ञा ननु (सम्) सं.—पोता । संज्ञा ननुत्रि = पोती ।

संज्ञा ननु (क) सं.—फल या वृक्ष को लगी चोट ।

संज्ञा नफे (अ-दे.) सं.—नफा (अरबी) ; लाभ ।

संज्ञा नभ, संज्ञा नभसु (सम्) सं.—आकाश, गगन, आसमान । — संज्ञा चर, संज्ञा संगम (सम्) सं.—देवता, किन्नर आदि ; पक्षी ।

संज्ञा नभि (सम्) सं.—चक्र, पहिया ।

संज्ञा नभोवीथि (सम्) सं.—आकाश-मार्ग ।

संज्ञा नम्, संज्ञा नावु (क) सर्व.—हम ।

संज्ञा नमलु (क) क्रि.—चबा ; जुगाली कर, पायुर कर । सं.—जुगाली, पायुर ।

संज्ञा नमस्कारिसु (सम्) क्रि.—नमस्कार कर ; प्रणाम कर ।

संज्ञा नमस्कार (सम्) सं.—प्रणाम, नमस्कार, सिर झुकाना ।

संज्ञा नमस्ये

संज्ञा नमस्ये (सम्) सं.—पूजन, सम्मान, प्रणाम ।

संज्ञा नमाञ्च (अ. दे.) सं.—नमाञ्च (फ़ारसी) ।

संज्ञा नमिसु (सम्) क्रि.—नमन कर, नमस्कार कर, प्रणाम कर ।

संज्ञा नमूदिसु (अ. दे.) क्रि.— ('नमूद' से)—दिखा, प्रकट कर, ध्यान में ला, कह, लिख ।

संज्ञा नमूते (अ. दे.) सं.—नमूना (फ़ारसी); उदाहरण ।

संज्ञा नम्रे (क) क्रि.—धिस, कृश हो, पतला या डूबला हो, कम हो; दुःखी हो, दरिद्र हो ।

संज्ञा नम्र (सम्) वि.—नत, झुका हुआ, विनीत; टेढ़ा; पूजा करनेवाला, भक्त ।
—उं ते—विनय ।

(१) संज्ञा नय (क) वि.—सुंदर, साफ़, अच्छ, चिकना, ललित ।

(२) संज्ञा नय (सम्) सं.—पथ प्रदर्शक; वर्ताव, व्यवहार; विवेक, दूरदर्शिता; नीति, न्याय; समता, आर्जव, सत्यशीलता; कल्पना; व्यवस्था; सिद्धांत, मूलवाक्य; विधि; मार्ग, विधान; मत, अभिप्राय; उपयुक्तता, औचित्य; नाटकीय भावाभिव्यक्ति ।

संज्ञा नयन (सम्) सं.—ले जाना; व्यवस्था करना पास, लाना, खींचना; आंख, नेत्र; शासन करना, अधिकार करना; प्राप्त करना ।—छ्द च्छद (सम्) सं.—पलक ।
ञ्जल (सम्) सं.—अंसू ।—उंय त्रय (सम्) सं.—शिव ।

(१) संज्ञा नर, संज्ञा नरु (क) सं.—नाड़ी, स्नायु ।

(२) संज्ञा नर (सम्) सं.—अर्जुन; मनुष्य, आदमी ।

संज्ञा नरक (सम्) सं.—नरक; एक असुर का नाम; बहुत गंदी जगह ।

संज्ञा नरकु (क) क्रि.—कुचल, रौंद, कूट, चूर्ण कर । सं.—रौंदना, कूटना ।

संज्ञा नरजीवि (सम्) सं.—मनुष्य ।
संज्ञा नरट्ट (क) क्रि.—बढ़ाव रुक । सं.—

बढ़ाव रुकना; विषाद, असंतोष ।—गार (क) सं.—असंतुष्ट पुरुष ।

संज्ञा नरड्ड (क) सं.—रुक्षता, खुरदरापन ।
संज्ञा नरति (क) सं.—सफ़ेद बाल वाली स्त्री ।

संज्ञा नरदेव, संज्ञा नरपति, संज्ञा नरपाल (सम्) सं.—राजा ।

संज्ञा नरल्, संज्ञा नरळ, संज्ञा नरळु (क) क्रि.—कराह, पीड़ा से रो, वेदना से चिछा, दुःखी हो ।

संज्ञा नरलिसु, संज्ञा नरळिसु (क) क्रि.—दुःख दे, पीड़ा दे ।

संज्ञा नराधिप, संज्ञा नरामर (सम्) सं.—राजा ।

संज्ञा नरि (सम्) सं.—सियार, जंबुक, लोमड़ी ।
संज्ञा नरुकु (क) क्रि.—दे, संरुं ।

संज्ञा नरुगु (क) सं.—सफ़ेद रंग ।
संज्ञा नरु (क) क्रि.—सफ़ेद हो (बालों का सफ़ेद होना) ।

संज्ञा नरुंद्र, संज्ञा नरुंश्वर (सम्) सं.—राजा ।

संज्ञा नरुने (क) अ.—शीघ्रता से, जल्द-बाजी में ।

संज्ञा नरुग्गे, संज्ञा नरुग्गे (क) सं.—कोछ ।

संज्ञा नरु (क) सं.—महँक, सुगंध, खुशबू ।
संज्ञा नरुञ्चु (क) सं.—कण, गर्द ।

संज्ञा नरुवल् (क) सं.—त्रिपर्ण या किंशुक वृक्ष ।

संज्ञा नरुकुटक (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

संज्ञा नरुत्क (सम्) सं.—नाचनेवाला, नट ।
संज्ञा नरुत्कि (सम्) सं.—नाचनेवाली, नटी ।

संज्ञा नरुत्तन (सम्) सं.—नाचना ।
संज्ञा नरुत्तिसु (सम्) क्रि.—नाच, नर्तन कर ।

संज्ञा नरुत्तदे, संज्ञा नरुत्तदा (सम्) सं.—

—विनोद करने या मन बहलानेवाली स्त्री; नर्मदा नदी ।

संज्ञा नरुवल् (क) सं.—दे, संज्ञा नरुवल् ।
(१) संज्ञा नरु (क) वि.—(समास में) अच्छा, सुन्दर, मनोहर । उदा.—संज्ञा नरु नरुगुरे = अच्छा घोड़ा, संज्ञा नरुल्ल=अच्छी स्त्री, प्रियतमा ।

(२) संज्ञा नरु, (क) वि.—(समास में) चार संख्या का सूचक; जैसे-संज्ञा नरुवत्तु या संज्ञा नरुवत्तु = चालीस ।

(१) संज्ञा नरु, संज्ञा नरुवु, संज्ञा नरुवु (क) सं.—प्रसन्नता, हर्ष ।

(२) संज्ञा नरु, संज्ञा नरु (सम्) सं.—एक राजा का नाम; एक संवत्सर का नाम ।

संज्ञा नरुक (सम्) सं.—संज्ञा नरुग्गे (तद्) —नली; हड्डी ।

संज्ञा नरुकुवर, संज्ञा नरुकुवर (सम्) सं.—कुबेर के पुत्र का नाम ।

संज्ञा नरुगिसु (क) क्रि.—मुरझने या कुम्हालाने दे; कपड़े के तह को खराब कर ।

संज्ञा नरुगु (क) क्रि.—कपड़े का तह खराब हो, मुरझा जा, कुम्हाला जा, कांतिहीन हो ।

संज्ञा नरुवु (क) सं.—प्रसन्नता; दुर्बलता, अशक्तता ।

संज्ञा नरुलि (क) क्रि.—प्रसन्न हो, आनंदित हो, संतोष से नाच । सं.—संतोष; प्रसन्नता, आनंद ।

संज्ञा नरुलिन, संज्ञा नरुलिन (सम्) सं.—कमल, सरसिज; कुमुद ।

संज्ञा नरुलिति, संज्ञा नरुलिनी (सम्) सं.—कमल, कमलिनी; कमल-समूह; कमलों का सरोवर ।

संज्ञा नरुलिवु (क) सं.—दे संज्ञा (१) ।

संज्ञा नरुल्गे (क) सं.—प्रेम, प्रीति, स्नेह, मैत्री; अच्छाई, हित, शुभ, प्रगति ।—गार्ति=सुंदर या प्रिय स्त्री ।

संज्ञा नरुल्ल (क) सं.—अच्छा मनुष्य; प्रेमी; पति, प्रिय । सं.—अच्छाई, सुंदरता ।

संज्ञा नरुलि (तद्) सं.—पानी का नल ।

नव नव (सम्) वि. — नौ ; नया, ताज़ा ;
आधुनिक ।

नवकोटिनारायण (सम्)
सं.—श्रीकृष्ण जिनके नौ करोड़ बच्चे थे ;
वह व्यक्ति जिसके कई बच्चे हो ; एक बड़े
व्यापारी का नाम (लोक कथा में वर्णित) ।

नवग्रह (सम्) सं.—सूर्य आदि नौ
ग्रह ।

नवगण, नवगण (क) सं. — प्रियंगु,
छोटा अनाज विशेष (The Italian mil-
let) ।

नवनीत (सम्) सं.—मक्खन, नव-
नीत ।—छोटी चोर (सम्) सं.—कृष्ण ।

नवपल्लव (सम्) सं.—प्रवाल,
विद्रुम, मूँगा ।

नवमि (सम्) सं.—नवमी तिथि ।

नवरस (सम्)—शृंगार आदि नवरस ।

नवरात्रि, नवरात्रि (सम्)
सं.—दशहरा, नवरात्रि ।

नवरु, नवरु (क) वि.—मुला-
यम, कोमल, मृदु, मोहक ।

नवल्, नवल्, नवल् (क) सं.—मोर, मयूर ।

नवसिग (क) सं.—दूसरों को सताने-
वाला पुरुष ।

नविरु, नविरु (क) सं.—दे.
नवल् ।

नवीन ; (सम्) वि.—नया, नवीन ;
आधुनिक ; अर्वाचीन ।

नवलु (क) सं.—मयूर, मोर ; नील-
कंठ पक्षी ।

नवे (क) सं.—खुजलाइट, सुरसुरी ; गुद-
गुदी ।

नव्य (क) वि.—नया, नव ।

नववर (सम्) वि.—नष्ट होनेवाला,
मिटनेवाला ।

नष्ट (सम्) वि.—खोया हुआ जो अदृश्य
हो, मिटा हुआ ; विनष्ट । सं.—नुकसान,
हानि, नाश ।

नसरि (क) सं.—श्रेष्ठ मधु या शहद ।

नसि, नसिकु, नसुकु (क)
घिस जा, जीर्ण हो, क्षीण हो ; दुर्बल हो,
मिट. बरबाद हो ; अचेत हो, होश उड़ ।
सं.—घिसना, जीर्णता, क्षीणता ; मिटना ;
दुर्बलता ; चैतन्यहीनता ।

नसु (क) वि.—छोटा । अ.—थोड़ा,
तनिक, कुछ, ज़रा, अणु ।

नसे (क) सं.—दे. नसे ; कामातुरता,
विषयासक्ति ।

नसेनसे (क) वि.—झिझिक करनेवाला ;
मीन-मेख देखनेवाला ।

नसे (सम्) सं.—नसा, नाक । नसि
नसि = नस्य, सुंघनी ।

नसेगार, नसेगार (क) सं.
—मन्मथ ।

नस्त (सम्) सं.—नाक ।

नस्य (सम्) सं.—नस्य, नस्य (तद्)—
सुंघनी ।

नल (क) वि.—दे. नल (१) (तद्) सं.
—एक राजा का नाम ।

नलपाक (क) सं.—बढ़िया खाना,
नल-पाक ।

नलि (क) क्रि.—झुक, नत हो, नवा ।
सं.—कोमलता, नरमी ।

नलिन (तद्) सं.—नलिन (तद्) ;
कमल ।

नलिक (क) सं.—केकड़ा ।

नल (क) वि.—चार का अर्थ सूचक (समास-
में) । सर्व.—मैं ।

नलिके (क) सं.—लज्जा, लाज,
शर्म ।

नलिके (क) क्रि.—शरमा, लज्जित हो ।

नलिके (क) क्रि.—रोप, लगा ; गाड़,
स्थिर कर ।

नलिके (क) सं.—गंध बू, महँक ।

नलिके (सम्) सं.—नांदी, नाटक के
पूर्व आशीर्वादात्मक स्तुति ; प्रारंभ ।

नलिके (क) क्रि.—भिगो, शीतल कर ;
गल ; द्रव हो ।

नलिके (क) सं.—आर्द्र करनेवाली
सुस्त या अलसी ।

नलिके (क) सं.—सस्ती,
उदासीनता ।

नलिके (सम्) सं.—स्वर्ग,
नलिके (क) वि.—चार

नलिके (सम्) सं.—अहि, सर्प,
आठ की संख्या ; हाथी ; जल

कोई भी प्रसिद्ध पुरुष ; शरीर की
वायुओं में से एक, जिससे ढकारें आती

अग्नि ; बादल ; अधकार ; पेड़ ;
दुष्ट मनुष्य ; एक पौधा, नागकेसर ;

नागधातु ; एक प्रकार की समुद्री मछली

नलिके (सम्) सं.—शिव ।

नलिके (सम्) सं.—कन्नड
एक प्रसिद्ध कवि (१२ वीं शति) का नाम

जिनहोंने 'पंच-रामायण' लिखी है ।

नलिके (सम्) सं.—नाग, साँप ;
गहना । वि.—नगर में उत्पन्न, नगर संबंध

शिष्ट, चतुर, चालाक ; बुरा ।

नलिके (क) सं.—नागरिक, नलिके (क) सं.—नागरिक ।

नलिके (क) सं.—पान, पान की लता ।

नलिके (क) सं.—विष्णु ।

नलिके (सम्) सं.—शहनाई
बजनेवाला संगीत स्वर विशेष ।

नलिके (सम्) सं.—एक
आचार्य ; एक वैद्य का नाम ।

नलिके (सम्) सं.—मोर,
गरुड ।

नलिके (सम्) सं.—
बड़ा हाथी ; इन्द्र ।

नलिके (क) सं.—
शरम, लाज, लज्जा ।

नलिके (क) सं.—
होना, निर्लज्जता ।

नलिके (क) क्रि.—लज्जित
शरमा ।

लक्ष्मि नाचु (क) क्रि.—लज्जित हो, शर्मिन्दा हो।

लक्ष्मि नाचुकु, लक्ष्मि नाचुकु (अ. दे.) सं.—नाचुक (फ़ारसी); कोमलता, मृदुता, सुन्दरता, अच्छाई।

लक्ष्मि नाटक (सम्) सं.—नाटक, ड्रामा; नाचना, अभिनय करना।

लक्ष्मि नाटि (क) सं.—छोटे-छोटे पौधे जिनकी रोपाईं होती है; रोपाना, रोपाईं; एक राग का नाम।

लक्ष्मि नाटिके (क) सं.—रोपना, रोपाईं।

लक्ष्मि नाटु (क) क्रि.—दे. लक्ष्मि. सं.—रोपना, रोपाईं; अंदर घुसना, गंभीरता, गहराई।

लक्ष्मि नाट्य (सम्) सं.—नाच, नृत्य।—
लक्ष्मि गाति (सम्) सं.—नाचनेवाली, नर्तकी।—
लक्ष्मि गार (सम्) सं.—नट।
लक्ष्मि रंग (सम्) सं.—नाचने का स्थान, रंगमंच।

लक्ष्मि नाडदु, लक्ष्मि नाडिदु, लक्ष्मि नाडिदु, लक्ष्मि नाडिदु (क) सं.—परसों (आनेवाला दिन)।

लक्ष्मि नाडाडि, लक्ष्मि नाडाडिग (क) सं.—साधारण मनुष्य, ग्रामीण।

लक्ष्मि नाडि (सम्) सं.—किसी पौधे की नली, नाल, डंडुल; रक्तनाल, धमनी, नस, नाड़ी; नाल, नली (Pipe); धीणा, वंशी, भगदर; २४ मिनट के बराबर का काल, अर्ध मुहूर्त।

लक्ष्मि नाडिकेर, लक्ष्मि नाडिकेर, लक्ष्मि नाडिकेर (सम्) सं.—नारियल।

लक्ष्मि नाडिग (क) सं.—ग्राम का अधीक्षक, मठ का धर्माधिकारी।

लक्ष्मि नाडिदु (क) सं.—दे. लक्ष्मि.

लक्ष्मि नाटु (क) सं.—देश, प्रदेश, प्रान्त; ज़िला।

लक्ष्मि नाडे (क) अ.—और, फिर, अधिक, बहुत, खूब, अतिशय रूप से।

लक्ष्मि नाण (क) सं.—लज्जा, लाज, शरम।

लक्ष्मि नाणि (तद्) सं.—नारायण: (तत्)।
लक्ष्मि नाणिय (तद्) सं.—सिक्का।

लक्ष्मि नाणिसु (क) क्रि.—लज्जित कर, शरमा।

लक्ष्मि नाणु (क) क्रि.—लज्जित हो, शर्मिन्दा हो। सं.—लज्जा।

लक्ष्मि नाणुडि (क) सं.—लोकवाता; कहावत।

(१) लक्ष्मि नाण्य (क) सं.—अच्छाई, श्रेष्ठता, उत्तमता।

(२) लक्ष्मि नाण्य, लक्ष्मि नाण्ये (क) सं.—सिक्का; नाण्यकं (तत्)।

लक्ष्मि नाण्यगार (क) सं.—अच्छा, योग्य, ईमानदार आदमी।

लक्ष्मि नात (क) सं.—गंध, दुर्गंध।

लक्ष्मि नाथ (सम्) सं.—मालिक, स्वामी, प्रभु, रक्षक, नेता; पति।

लक्ष्मि नाद (सम्) सं.—नाद, स्वर, ध्वनि, शब्द; , गर्जन।

लक्ष्मि नादनि, लक्ष्मि नादिनि (तद्) सं.—ननाद (तत्); ननद।

लक्ष्मि नादिसु (क) क्रि.—भाटा गूँध, सान। (सम्) क्रि.—नाद कर।

लक्ष्मि नाटु (क) क्रि.—गूँध, सान।

लक्ष्मि नाटुनि (तद्) सं.—ननद।

लक्ष्मि नादेयि (सम्) सं.—जलबेत; नारंगी; वैजयन्ती; भईं जामुन।

लक्ष्मि नानु, लक्ष्मि नाचु (क) क्रि.—गीला हो, आर्द्र हो, भीग। सर्व.—मैं।

लक्ष्मि नानल् (क) सं.—एक प्रकार का नरकुल या मुश्कबेत।

लक्ष्मि नाना (सम्) अ.—भिन्न-भिन्न स्थानों में, भिन्न भिन्न रूपों में; अनेक, बहुत; विविध; अतिरिक्त, सिवा। सं.—अहंकार; धृष्टता।

लक्ष्मि नाचु (क) सर्व.—मैं।

लक्ष्मि नापित (सम्) सं.—नाई, हज्जाम।

लक्ष्मि नापिति, लक्ष्मि नापिते (सम्) सं.—नाई की स्त्री।

लक्ष्मि नाभि (सम्) सं.—नाह, टुड़ी; चक्र-मध्य; प्रधान, नेता, मुखिया; समीप की रिश्तेदारी; क्षत्रिय, राजा।

लक्ष्मि नाम (सम्) सं.—नाम; संज्ञा; वैष्णव लोग ललाट पर जो (तीन या एक) आड़ी लकीरें लगाते हैं वह, त्रिपुण्ड्र; धाक, प्रभाव; इज्जत; यादगार।

लक्ष्मि नामकरण (सम्) सं.—बच्चे के पैदा होने के बाद नाम रखने का संस्कार विशेष।

लक्ष्मि नामि (सम्) सं.—विष्णु।

लक्ष्मि नामित (सम्) वि.—शुकाया हुआ।

लक्ष्मि नाय, लक्ष्मि नायि (क) सं.—कुत्ता।

लक्ष्मि नाय (सम्) सं.—नेता, मुखिया; नेतृत्व; नीति; साधन।

लक्ष्मि नायक (सम्) सं.—नेता; प्रधान; प्रसिद्ध या मुख्य पुरुष; सेनानायक; काव्य का नायक; मुख्य दृष्टांत; हार का मध्य-रत्न।

लक्ष्मि नायकि, लक्ष्मि नायिके (सम्) सं.—नायिका; स्वामिनी; पत्नी।

लक्ष्मि नायिदा (तद्) सं.—नापित: (तत्); नाई।

लक्ष्मि नायि (क) सं.—कुत्ता। — उल तन = कुत्ते-सी प्रवृत्ति, क्षुद्रता, नीचता।

लक्ष्मि नार (सम्) सं.—जल; बछड़ा; नर-समुदाय।

लक्ष्मि नाराच (सम्) सं.—लोह का तीर, बाण।

लक्ष्मि नाराचि (सम्) सं.—सुनार का काँटा।

(१) लक्ष्मि नारि (क) सं.—प्रयंचा, धनुष की डोरी; ताड़ के पेड़ की डाली पर की झिझी; रेशा।

(२) लक्ष्मि नारि (सम्) सं.—नारी, स्त्री, वनिता।

लक्ष्मि नारिकेर, लक्ष्मि नारिकेल, लक्ष्मि नारिकेळ (सम्) सं.—नारियल।

नारु नारु (क) सं.—रेशा, छिलकेके अंदर का रेशा, बल्क ।
 (१) नारु नारु (क) क्रि.—गंध आ, महक । सं.—गंध, बू ।
 (२) नारु नारु (क) क्रि.—गीला कर, भिगो, आर्द्र कर ।
 नारु नारु (क) वि.—(समास में)—चार । नारु नारु, नारु नारु (सम्) सं.—कमलनाल ; नली ।
 नारु नारु (क) सं.—जिह्वा, जीभ । नारु नारु (क) सं.—दे. नारु ।
 नारु नारु (सम्) सं.—दे. नारु । नारु नारु (क) वि.— नारु नारु ।
 नारु नारु (क) सं.—चार लोग । नारु नारु (सम्) सं.—नारु, मल्लाह । नारु नारु (तद्) सं.— दे. नारु ।
 नारु नारु (क) सर्व.—हम । नारु नारु (तद्) सं.—नौ ; (तद्) ; नारु, नौका ।
 नारु नारु (सम्) सं.—बरबादी, नारु, मिटाना; अदृश्यता ; हानि ; मृत्यु । नारु नारु (अ. दे.) सं.— नारु (फारसी) ; कलेवा ।
 नारु नारु (सम्) सं.—सुंघनी । नारु नारु (सम्) सं.—नारु ।
 नारु नारु (सम्) अ.—नहीं । नारु नारु (सम्) सं.—वेद और ईश्वर को न माननेवाला ।
 नारु नारु (क) सं.— दिन, समय, काल ।
 नारु नारु (तद्) सं.—नली ।
 नारु नारु (तद्) सं.—नारु ।
 नारु नारु (क) सं.— नारु ।
 नारु नारु (क) सं.— कल (आनेवाला दिन) ।

नारु नारु (क) सं.—देश, प्रदेश, प्रान्त । नारु नारु (क) सं.—घंटे का लटकन । नारु नारु, नारु नारु (तद्) सं.— २४ मिनट का समय, घटिका ।
 नारु नारु (क) क्रि. रू.—खड़ा रह । नारु नारु (सम्) सं.— निंदा करने-वाला, गाली देनेवाला ।
 नारु नारु (सम्) सं.— निंदा, कुवाच्य, गाली । नारु नारु (क) क्रि. रू.—वह (पु. लिं.) खड़ा हुआ ।
 नारु नारु (सम्) सं.—नीम का पेड़ । नारु नारु, नारु नारु (क) सं.—नींबू, नींबू का पेड़ ।
 नारु नारु (सम्) उ.—यह उपसर्ग है जिसका अर्थ 'नीचापन, नीचे की ओर और नहीं' है ।
 नारु नारु (सम्) अ.—पास, समीप । नारु नारु (तद्) सं.—निकारः (तद्) ढेर, समूह, झुंड, गट्टा ; सार ; उचित पुरस्कार या भेंट ; द्रव्यकोश ।
 नारु नारु (सम्) सं.—अधिकता, आधिक्य ; नीचता । नारु नारु (सम्) सं.—मैदान, खुली जगह ; पडोस ।
 नारु नारु (सम्) सं.—राक्षसों की माता ; रावण की माता । नारु नारु (सम्) सं.—अभिलाषा ।
 नारु नारु (सम्) सं.—दे. नारु ; घर ; आवासस्थान । नारु नारु (सम्) सं.—मारना, वध, हत्या ।
 नारु नारु (सम्) सं.—लतागृह : लता-मंडप ; गुफा । नारु नारु (सम्) सं.—घर, मकान ।
 नारु नारु (क) सं.—सत्य, सचाई । अ.—सचमुच, निश्चय ही । नारु नारु (क) क्रि.— पाँव की उंगली के बल खडा हो और झुक ।

नारु नारु (सम्) सं.— स्वर, ध्वनि, झनकार । नारु नारु (सम्) सं.—फेंकने या डालने की क्रिया ; गिरवी, धरोहर, बंधक ; गुप्त या गड़ा हुआ धन ।
 नारु नारु (सम्) वि.—समस्त, संपूर्ण, सब । नारु नारु (क) वि.—लाल, तप-तपाता हुआ, चमकदार ।
 नारु नारु (सम्) सं.—जंजीर, बेड़ी । नारु नारु (क) सं.—सर्दी, जुकाम । नारु नारु (अ. दे.) सं.— निर्णय, निश्चित करना ।
 नारु नारु (सम्) सं.—वेद, वेदसंहिता ; वेद का कोई अंश ; वेदभाष्य, आस वचन ; धातु ; निश्चय, विश्वास ; न्याय ; हाट, मंडी, बाजार ; बनजार, फेरीवाला सौदा-गर ; रास्ता, मार्ग ; नगर, शहर ; साँप, भुजंग ।
 नारु नारु (क) क्रि.—सीधा कर, उठां तन कर खड़ा होने दे । नारु नारु (क) क्रि.—सीधा हो, तनकर खड़ा हो ।
 नारु नारु (क) सं.—सीधापन, तनाव । नारु नारु (क) क्रि.—जुटा, समूह कर, जमा ।
 नारु नारु (क) क्रि.—दे. नारु । नारु नारु (क) क्रि.—दे. नारु । सं.— सीधापन, तनाव ।
 नारु नारु (अ. दे.) सं.— निगाह (फारसी) ; ध्यान । नारु नारु (क) सं.— हाथी का दांत ।
 नारु नारु (क) सं.— निर्लज्ज या मूर्ख-पुरुष । नारु नारु (सम्) सं.— रोक, अवरोध ; दमन ; संयम ; पराभव, पराजय ; नाश, विनाश ; चिकित्सा ; सजा, दण्ड ; गाली, कुवाच्य, फटकार ; पीडन ; पकड़ना, ग्रहण ;

शब्दकोश निघंटु

- सीमा, हृद्, दस्ता; घृणा, अरुचि ।
 शब्दकोश निघंटु (सम्) सं.—शब्दकोश ।
 शब्दकोश निघण्टु (सम्) सं.—रगड़ना; रगड़, मथन ।
 शब्दकोश निचय (सम्) सं.—राशि करना, जुटाना, राशि, डेर, समूह ।
 शब्द निज (सम्) वि.—स्वाभाविक, प्राकृतिक, जन्म से; अपना, विलक्षण; सदैव बना रहनेवाला । सं.—सत्य, सचाई, वास्तविकता ।
 शब्द निटल, शब्द निटल (सम्) सं.—माथा, ललाट ।
 शब्दोत्पत्ति निट्टसु, शब्दोत्पत्ति निट्टिसु (क) क्रि.—देख, निहार, टकटकी लगाकर देख, निरीक्षण कर ।
 शब्दोत्पत्ति निट्ट (क) वि.—ऊँचा, लंबा, सीधा ।
 (१) शब्दोत्पत्ति निट्टि (क) वि.—लंबा —ऊँचा तोल = लंबी बाहु ।
 (२) शब्दोत्पत्ति निट्टि (क) सं.—कटु गंध (जैसे तमाखू आदि की); फेन, झाग, निःस्त्राव ।
 शब्दोत्पत्ति निट्टिडु (क) वि.—लंबा, फैला हुआ, पसारा हुआ ।
 शब्दोत्पत्ति निट्टुक (क) सं.—लंबी कढ़वाला मनुष्य ।
 शब्दोत्पत्ति नितंब (सम्) सं.—नितंब, चूतन; सातु ।
 शब्दोत्पत्ति नितंबिनि (सम्) सं.—छी ।
 शब्दोत्पत्ति नित्राण (तद्) सं.—निर्वलता; कमजोरी ।
 शब्दोत्पत्ति निरय (सम्) वि.—जो प्रतिदिन रहे, रोज का; शाश्वत, अविनाशी, सदा, हमेशा ।
 शब्दोत्पत्ति नित्राण (तद्) सं.—दे. शब्दोत्पत्ति.
 शब्दोत्पत्ति निदान (सम्) सं.—बांधना, रस्सी, बागडोर; मूलकारण; रोगलक्षण, रोगनिर्णय; अंत, छोर; पवित्रता, शुद्धि । (तद्) अ.—निधानम् (तद्)—धीरे-धीरे, उतावलेपन के विना । सं.—शांति ।
 शब्दोत्पत्ति निदेश (सम्) सं.—शासन, आज्ञा, हुक्म; निर्देश ।

- शब्दोत्पत्ति निद्रे (तद्) सं.—निद्रा (तद्) नींद ।
 शब्दोत्पत्ति निद्राण (सम्) सं.—सोना; सोने-वाला, उँघासा ।
 शब्दोत्पत्ति निद्रे (सम्) सं.—नींद, सोना; उँघाई ।
 शब्दोत्पत्ति निधन (सम्) सं.—अंत, समाप्ति; मृत्यु, नाश, अवसान ।
 शब्दोत्पत्ति निधान (सम्) सं.—नीचे रखना, जमा करना; वह स्थान जहाँ कोई चीज़ रखी जाय; स्थापन, आधार, आश्रय; खजाना; संपत्ति, धन, निधि, सफल या पूर्ण हुआ कार्य; प्रयत्न, कार्य; इच्छा; शांति, स्थिरता ।
 शब्दोत्पत्ति निधि (सम्) सं.—घर, आधार; भंडार, खजाना; संपत्ति; समुद्र; अनेक सद्गुणों से भूषित पुरुष ।
 शब्दोत्पत्ति निधुवन (सम्) सं.—आंदोलन; कंप; मैथुन ।
 शब्दोत्पत्ति निन्, शब्दोत्पत्ति निन्न (क) सर्व.—तुम्हारा, तुम्हारी, तेरा; तेरी ।
 शब्दोत्पत्ति निनाद (सम्) सं.—घोष, ध्वनि ।
 शब्दोत्पत्ति निन्ने (क) सं.—कल (वीता दिन) ।
 शब्दोत्पत्ति निपतन (सम्) सं.—नीचे गिरने की क्रिया, नीचे उतरना ।
 शब्दोत्पत्ति निपात (सम्) सं.—पतन, गिराव; अधःपतन, विनाश; मृत्यु, नाश; (व्याकरण में) वह शब्द जिसके नियम का पता न हो ।
 शब्दोत्पत्ति निपुण (सम्) वि.—चतुर; पढ़, शैशव, अनुभवी, कुशल । = उँ ते, उँ = नपुण्य, चतुरता ।
 शब्दोत्पत्ति निबद्ध (सम्) वि.—बंधन में पड़ा हुआ, रोक़ा हुआ, जड़ा हुआ, न हिलने-वाला, स्थिर या अचल नियम या सत्य ।
 शब्दोत्पत्ति निबंधने (तद्) सं.—बांधने की क्रिया, रोकना; नियम; शर्त ।
 शब्दोत्पत्ति निव्वण (क) सं.—बरात, दूल्हे की सवारी का जुलूस ।
 शब्दोत्पत्ति निव्वणिग (क) सं.—बराती, दूल्हे का साथी ।

- शब्दोत्पत्ति निभायिसु (अ. दे.) क्रि.—निभा (हिं.), नीर्वाह कर ।
 शब्दोत्पत्ति निमग्न (सम्) वि.—डूबा हुआ, सना हुआ, छिपा हुआ, दबा हुआ, अप्रधान ।
 शब्दोत्पत्ति निमज्जन (सम्) सं.—डूबना, स्नान ।
 शब्दोत्पत्ति निमंत्रण (सम्) सं.—बुलाना, आह्वान ।
 शब्दोत्पत्ति निमित्त (सम्) सं.—हेतु, कारण; चिह्न, लक्षण; शकुन; उद्देश्य, लक्ष्य ।
 शब्दोत्पत्ति निमिर्, शब्दोत्पत्ति निमिर् (क) क्रि.—सीधा हों, उठ खड़ा हों; तन, फूँठ, फैल ।
 शब्दोत्पत्ति निमिर्के (क) सं.—सीधापन, तनाव, फूँठ ।
 शब्दोत्पत्ति निमिर्कु (क) क्रि.—सीधा बना, तन जाने दे, उठा, फैला, पसारा ।
 शब्दोत्पत्ति निमिष (सम्) सं.—पलक मारने भर का समय, क्षण, पल; मिनट ।
 शब्दोत्पत्ति निमीलन (सम्) सं.—पलक झपकाना; बंद करना ।
 शब्दोत्पत्ति निमेष (सम्) सं.—क्षण, पल ।
 शब्दोत्पत्ति निन्न (सम्) वि.—नीचा; गहरा, दबा हुआ ।
 शब्दोत्पत्ति निम्म (क) सर्व.—तुम्हारा आपका ।
 शब्दोत्पत्ति नियत (सम्) वि.—निश्चित, बद्ध, स्थिर, परिमित, संयत ।
 शब्दोत्पत्ति नियति (सम्) सं.—ठहराव, स्थिरता; नियम; भाग्य, देव, अदृष्ट; नियत बात; आत्म-संयम ।
 शब्दोत्पत्ति नियम (सम्) सं.—परिमिति, रोक, नियंत्रण; दबाव, शासन; प्रचलित परंपरा, विधान, विधि; शर्त, ठहराव; प्रतिज्ञा ।
 शब्दोत्पत्ति नियामक (सम्) सं.—शासन करनेवाला, शासक; रथ का सारथी, मछाह आदि; नियम ।
 शब्दोत्पत्ति नियुक्ति (सम्) सं.—आज्ञा, आदेश; लगाना, नियुक्ति, मुकर्रर करना ।
 शब्दोत्पत्ति नियोगिसु (सम्) क्रि.—किसी

कैवल्य; मज्जन; डूबना; एक प्रकार का तप; उत्तरक्रिया, क्रिया-कर्म; काम, कार्य; जीव, आज्ञा; हाथी; शरीर. देह; वस्त्र-हीनता, नग्नता।
 निष्ठा निर्वान, निष्ठा निर्वान (सम्) सं.—डालना; देना।
 निष्ठा निर्वान (सम्) सं.—लाचारी, विवशता; प्राप्ति, सिद्धि; करना, चलाना; सहारा देना, समर्थन करना; पर्याप्ति, काफ़ी होना;
 निष्ठा निर्वान (सम्) सं.—पूरा कर, निभा, कर।
 निष्ठा निर्वान (सम्) सं.—वह स्त्री जिसके पति और संतान मर गये हों।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—खड़ा हो, ठहर, रुक, टिक।
 निष्ठा (क) वि.—स्थित, बचा हुआ। सं.—बचत; शेष; ताक।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (क) मिल, लग, मिलने क्रि.—अवस्था तक आ, हाथ लग, पहुँच में आ; प्रारंभ कर, मन लगा।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—छिपने का स्थान, जानवरों का बिल, चिड़ियों का घोंसला; घर, आवासस्थान।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (क) सं.—खड़े रहना; स्थान, स्थिति, हाल; ऊँचाई; दरवाज़े की चौखट; सीधा खड़ा रहने-वाला; शेष; वचत; फुरसत; रुकावट; ठहराव।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—पहुँचा, हाथ लगने दे, मिलने दे (प्रे.)।
 निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—दे. निष्ठा.
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—देवता।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—खड़ा कर, रोक, अटका, ठहरा, गति का अवरोध कर, छोड़, त्याग कर।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—खड़ा रह, रुक जा, ठहर, टिक।

निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—पुंजीकरण कर, जुटा, राशि कर; भीड़ लग, असंख्य हो; लिपट (जैसे साँप करता); उछल, कूद।
 निष्ठा निष्ठा (क) सं.—खड़े रहना, ऊँचाई, कूद।
 निष्ठा निष्ठा (क) सं.—खड़ा करना, रोकना, ठहराना, टिकाना, अटकाना।
 निष्ठा निष्ठा (क) सं.—खड़े रहना, ठहरना, स्थिति, ठहराव।
 निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—थपथपी लगवा (प्रे.)।
 निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—थपथपी लगा, हाथ से कौमलापूर्वक थपकी दे।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) क्रि.—लौटा, वापस जाने दे, हटा, छोड़, निकाल।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—कपड़े पहनना; पहनावा; भीतर पहनने का वस्त्र।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (क?) क्रि.—(किसी चीज़ को) धीरे से हिला, निछावर कर, राई—नोन आदि लगा (दृष्टि-दोष दूर करने के बाद)।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—वापसी, अंतर्धान, अवसान, समाप्ति; कर्मत्याग, विरक्ति, वैराग्य; त्याग; शांति; धाराम, विश्राम; परमानंद; संन्यास।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) क्रि.—कह, बतला, जता; दे, अर्पण कर।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—प्रवेश, द्वार; डेरा, पडाव; घर, गृह।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—रात, रात्रि।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—सत्य, सचाई, ईमानदारी।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—मारना, वध।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—चंद्रमा।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—रात में चलने-वाला; राक्षस; चोर; चंद्रमा; उल्लू; एक पक्षी विशेष; पाठीन, मछली; क्रूर सर्प;

निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—उल्लू।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—चंद्रमा।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—रात, रात्रि।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) क्रि.—निश्चय कर, निर्णय कर।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—छिटकना, उपर डालना; गर्भाधान-संस्कार।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) क्रि.—निषेध कर, रोक, मना कर, अस्वीकार कर।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—निष्ठा निष्ठा (तद्)—कंठ या छाती का स्वर्ण-हार; सोने का सिक्का; सोना।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) क्रि.—निष्कर्ष कर, निश्चय कर।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—बाहर जाना, बाहन निकलना; एक संस्कार जिसके अनुसार चार मास के बच्चे को बाहर लाकर सूर्य का दर्शन कराते हैं।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—मसाला, चटनी; काँजी।
 निष्ठा निष्ठा, निष्ठा निष्ठा (सम्) वि.—कड़ा; कठोर, रूक्ष, क्रूर, दयारहित; तीक्ष्ण; हेय। सं.—निष्ठा निष्ठा।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—निष्ठा; स्थिति, प्रतिष्ठा, ठहराव; भक्ति, श्रद्धा, पूज्य बुद्धि, विश्वास; उत्कृष्टता, निपुणता, योग्यता; समाप्ति; नाटक का दुःखांत; नाश, मृत्यु; निश्चय, निश्चयात्मक ज्ञान; चिंता, संताप।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) वि.—व्यर्थ, बेकार, वृथा, फलरहित।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—निश्चय (तद् ?); निश्चितता, सत्य।
 निष्ठा निष्ठा (सम्) सं.—प्रकृति, स्वभाव; सृष्टि, स्वरूप; देना, दान।
 निष्ठा निष्ठा (क) क्रि.—अंगूठे और तर्जनी से रगड़ या निचोड़।

सुशिसु नुतिसु (तद्) क्रि.—स्तुति कर, प्रशंसा कर ।
 सुशिसु नुरत (क) सं.—धुरतना ; कुचला जाना ।
 सुशिसु नुरि (क) क्रि.—चूर्ण हो, पुड़िया हो, कण-कण हो, पिसा जा; कुचला जा ; प्रवीण हो, अनुभवी हो ।
 सुशिसु नुरुकु (क) क्रि.—चूर्ण या पुड़िया हो ; वृद्धिहीन हो, मुरझा जा. सूख जा ।
 सुशिसु नुरुगु, सुशिसु नुरुगु (क) सं.— फेन, झाग ।
 सुशिसु नुरुगु (क) क्रि.—दे. सुशिसु ।
 सुशिसु नुरुचु (क) सं.—दे. सुशिसु ।
 सुशिसु नुलि (क) क्रि.—हाथ से मरोड़ या ँठ (रस्सी, डोर आदि) ; तह लगा । सं.— मरोड़ना, ँठना ।
 सुशिसु नुसि (क) सं.—बुकनी, चूर्ण ; एक कीड़ा जो कपड़े और कागज़ खा जाता है ; छोटी मक्खी, पिस्सू । क्रि.—धुस, प्रवेश कर ।
 सुशिसु नुसुल (क) क्रि.—धुस, प्रवेश कर ; खिसक, पार हो, कदम चूक, चूक । सं.— झड़ ; घोखा ; छिपाव ।
 सुशिसु नुल्लु (क) क्रि.—बुकनी या चूर्ण हो, छोटे-छोटे टुकड़े हो ।
 सुशिसु नुल्लु, सुशिसु नुल्लु (क) क्रि.—ढकेल, दवा ; आगे बढ़ । सं.— ढकेलना । — सुशिसु नुल्लु = बहुत भीड़ या जनसमूह ।
 सुशिसु नुगु (क) क्रि.—दे. सुशिसु. सं.— चूर्ण. बुकनी ; अनाज की वाल, अनाज की आंख ; एक गहना ।
 सुशिसु नुतन, सुशिसु नुतन (तद्) वि.— नया, नवीन, नूतन, ताज़ा ।
 सुशिसु नुपुर, (सम्) सं.—प्रायल, नेवर ।
 सुशिसु नुरु, सुशिसु नुरु (क) वि.— सौ की संख्या ।
 सुशिसु नुल, सुशिसु नुल (क) क्रि.— सूत कात, कात । सं.—सूत्र, सूत ।
 सुशिसु नुलिग (क) सं.—हरा सौंप ।
 सुशिसु नुल (क) सं.—झूठ, मिथ्य, असत्य ।
 सुशिसु नुल (क) अ.— अधिक, बहुत, श्रेष्ठ, बढ़िया ।

सुशिसु नृत्य (सम्) सं.—नाच, अभिनय ।
 सुशिसु नृप, सुशिसु नृपति (सम्) सं.—राजा ।
 सुशिसु नृपतुंग (सम्) सं.—राष्ट्रकूट राजा नृपतुंग ।
 सुशिसु नृप (क) सं.—रेश्तेदार, नातेदार ।
 सुशिसु नृप, सुशिसु नृपतन, सुशिसु नृप- स्तन, सुशिसु नृप नृपतिके (क) सं.— रिश्ता, संबंध ।
 सुशिसु नृपुगे (क) सं.—भरोसा, विश्वास ।
 सुशिसु नृपुके (क) क्रि.— चाट ; चख ; घँस, डूब ।
 सुशिसु नृपुडि (क) सं.—जुकाम, सर्दी ।
 सुशिसु नृपुत (क) सं.— कूदना, उछलना, उछाल, उछल-कूद ।
 सुशिसु नृपु, सुशिसु नृपु, सुशिसु नृपु, सुशिसु नृपु (क) क्रि.—उठा, ऊपर उठा, उछाल ; उठेल ।
 सुशिसु नृपु, सुशिसु नृपु (क) क्रि.— हाथ में ले, लग, बना, रचना कर, काम कर ; प्रख्यात हो, प्रसिद्ध हो ; प्रकट हो, समाप्त हो । सं.—नक्र, मगर ।
 सुशिसु नृपु, सुशिसु नृपु (क) सं.—नक्र, मगर । क्रि.—दे. सुशिसु ।
 सुशिसु नृपुके, सुशिसु नृपुके (क) सं.—मगर, नक्र ।
 सुशिसु नृपुके, सुशिसु नृपुके (क) क्रि.— कर, करा, काम कर, प्रारंभ कर, रचना कर, उत्पन्न कर ; प्रसिद्ध हो ; प्रसिद्ध कर ; प्रकट हो, प्रकाशित हो, चमक ।
 सुशिसु नृपुके, सुशिसु नृपुके (क) सं.— काम, कार्य, रचना, कृति, अभ्यास, आचार, चलन ; प्रसिद्धि, ख्याति, नाम ।
 सुशिसु नृपुके (क) क्रि.—उछल, द ; साफ़ हो, शुद्ध हो, स्वच्छ हों, प्रकाशित हो । सं.— कूदना, उछल-कूद ।
 सुशिसु नृपुके, सुशिसु नृपुके (क) सं.—उछलना, उछल-कूद, उडान ।
 सुशिसु नृपुके, सुशिसु नृपुके (क) सं.— त्रिकंडक या गोक्षुर पौधा ।

सुशिसु नेगु (क) क्रि.—पिचक, कुचल, घँस, छूट, चूर-चूर कर ; नाश कर ।
 सुशिसु नेचिके, सुशिसु नेचिके (क) सं.— के भरोसा, विश्वास ।
 सुशिसु नेचु (क) क्रि.—भरोसा कर, विश्वास कर ।
 सुशिसु नेचिके, सुशिसु नेचिके, सुशिसु नेचिके (क) अ.—सीधा, लंबा, क्रमबद्ध, तना हुआ, ठीक प्रकार से, खून, स्पष्ट, साफ़ ।
 सुशिसु नेचिके, सुशिसु नेचिके, सुशिसु नेचिके (क) अ.—दे. सुशिसु ।
 सुशिसु नेचिके (क) वि.—मनोहर, सुंदर, चार ।
 सुशिसु नेचिके (क) सं.—दे. सुशिसु ।
 सुशिसु नेचिसु (क) क्रि.—लगवा, रोपाईं करा, स्थिर करा, गढ़वा ।
 सुशिसु नेचु (क) क्रि.— लगा, रोप, लगाने योग्य ।
 सुशिसु नेचु (क) सं.—चरबी, मज्जा ।
 सुशिसु नेचु (क) सं.—प्रेम, प्रणय, प्रीति, मैत्री, निकट संबंध ।
 सुशिसु नेचु (तद्) सं.—नेत्र (तत्) — आंख ; शतरंज आदि का मोहरा ; जुआ ।
 सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु (क) सं.—खून, रक्त ।
 सुशिसु नेचु (क) सं.— ललाट, माथा ; सिर, मस्तक ।
 सुशिसु नेचु (क) सं.—तुतलाहट, तुतलाना ।
 सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु (क) सं.— याद, स्मरण, स्मृति, ध्यान ।
 सुशिसु नेचु, सुशिसु नेचु (क) क्रि.— स्मरण कर, याद कर ; ध्यान लगा ; गील कर, भिगो ।
 सुशिसु नेचु (क) क्रि.—याद कर, स्मरण कर, मन में रख, सोच ; संकल्प कर ; गीला हो, भीग जा ।
 सुशिसु नेचु (क) सं.—बहाना, झूठा कारण ; मिस ।
 सुशिसु नेचु (क) सं.—स्मरण, याद ; परिचय, परिचित होना ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—दे. नमरु.

नैमरु नैमरु (क) सं.—मयूर, मोर, केकी ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—टेक, सहारा ले, अवलंबित हो, किसी वस्तु पर अपना भार छोड़कर सहारा ले । सं. — सहारा, आधार, अवलंबन, टेक ।

नैमरु नैमरु (क) सं. — सहारा, भरोसा, विश्वास ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु; नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) क्रि.—(कपड़ा) बुन ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—घी, घृत ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु नैमरु (क) सं.—जुलाहा ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—बुनना ; बुनाई ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु नैमरु (क) सं. — कुवलय, इन्दीवर, उत्पल ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) वि.—बगल का, पास का, निकट का, पार्श्व का ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—मेंढ, भाड़, टट्टी, चहार-दीवारी (वाँस की), बाड़ ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) क्रि.—इकट्ठा कर, एकत्रित कर, जमा कर ; बुला ; फैला, व्याप्त कर ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—समूह, जमाव, भीड़, गिरोह ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—समूह, पूर्णता ; सहायता ; मदद ; अनुमोदन ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—इकट्ठा हो, जमा हो । सं.—छाया, साया ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—दे. नैमरु.

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—जमा हो, इकट्ठा हो, एकत्रित हो, सम्मिलित ; रजस्वला हो, सयानी हो, संभोग कर ; चक्र काट ; विभ्रम में पड़ ; सफेद हो या पक जा (वालों का पकना) सं.—सफेदी । वि.—दे. नैमरु.

नैमरु नैमरु (क) सं.—मर्म ; रहस्य ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—पूर्णता, परिपूर्ण होना ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—परिपूर्ण कर ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—परिपूर्ण करा ; पूर्ति कर ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—लटक, झूल ; संज्ञा-हीन हो ।

नैमरु नैमरु (क) सं. — परिपूर्णता, पूर्णता, अच्छाई, अच्छा या सुंदर होना ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—दे. नैमरु.

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) सं. — (साड़ी का) कौंच ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—मर्मस्थान ।

(१) नैमरु नैमरु नैमरु (क) क्रि. — झूल, लटक ; परिपूर्ण हो, भर, संपूर्ण हो, तैयार हो ; बढ़, अधिक हो ।

(२) नैमरु नैमरु (क) सं.—पूर्णता, परिपूर्णता । अ.—पूर्णतः, खूब ।

नैमरु नैमरु नैमरु (क) सं. — रजस्वला होना, सयानी होना ।

नैमरु नैमरु नैमरु (क) सं.—दे. नैमरु नैमरु.

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) सं.—धान ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—नैमरु नैमरु—भूमि, जमीन, धरती ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—लोभी, कंजूस आदमी ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—स्थिर रह ; कायम रह ; निवास कर ; खड़ा रह, ठहर ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) सं.—ताक ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—जगह, स्थान, खड़े रहने का स्थान, घर, घर का भाग, मंजिल ; भूमि, जमीन ; नींव, बुनियाद ; दृढ़ता, स्थिरता, स्थिर ज्ञान ; तल ; गुप्त बात, रहस्य ; आश्रय ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—आमलक, आवँला ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—धान, वीहि ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) सं.—यहाना, झूठा कारण, मिस ।

नैमरु नैमरु (क) सं.— पागुर, जुगाली निशाना, लक्ष्य ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—उछल, कूद ; उड़ ; उठ ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—छाया, साया (प्रा.) ।

नैमरु नैमरु, [नैमरु नैमरु] (क) सं. छाया, साया, परछाई, आश्रय ; एक विशेष ।

नैमरु नैमरु, [नैमरु नैमरु] (क) सं. छाया, परछाई, आश्रय ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—डूब, निमग्न हो ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—जुलाहा ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु ; नैमरु नैमरु

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) सं.—लांगलम् (तत्) ; हल ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—बुनना, बुनाई ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—धान्य का सस्य ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—सीधापन ; सत्य, ।

नैमरु नैमरु, नैमरु नैमरु (क) सं.—रस्सी फंदा । — ऋच्छ हाक (क) क्रि. — ।

लगा ।

नैमरु नैमरु (क) सं.—रस्सी बनाने के बचेनेवाला ।

नैमरु नैमरु (सम्) सं.—नेमरु, आपन, प्रभुता ।

नैमरु नैमरु (सम्) सं.—आँख ; अगुआपन, संचालन ; दो की संख्या ; सद्गुण ; वृक्ष-मूल, जड़ ; एक पेड़ की जड़ ; एक पर्वत का नाम ; वस्त्र ; एक प्रकार का वस्त्र ; मयानी को बाँधनेवाली रस्सी ।—ऋच्छ च्छद=पलक ।

नैमरु नैमरु (सम्) सं.—शृंगार, भूषण ; पोशाक ; पर्दे के पीछे का स्थान ; पर्दा ।

नैमरु नैमरु (तत्) सं.—नियमः (तत्) ।

नैमरु नैमरु (तत्) सं.—नियामकः (तत्) ; हुकम, आज्ञा, लगाना ; शासक ।

नैमरु नैमरु (तत्) क्रि.—लगा, नियुक्त कर ।

नैमरु नैमरु (क) क्रि.—(कपड़ा) बुन । सं.—घी, घृत ।

नैय्योर् नैयिगे

नैय्योर् नैयिगे नैय्योर् नैयिगे (क) सं.—
बुनाई ।

नैय्योर् नेर् (क) क्रि.—काट, काट डाल ;
लटक, झूल ; अधीन हो, स्वीकार कर ;
सं.—सीधापन, क्रमिकता, क्रम, उपयुक्तता,
ठीक होना ; मेल ।

नैय्योर् नेर, नैय्योर् नेरु (क) सं.— सीधापन,
क्रमिकता, क्रम, उपयुक्तता ।

नैय्योर् नेरु, नैय्योर् नेरु, नैय्योर् नेरु,
नैय्योर् नेरु, नैय्योर् नेरु नैय्योर् नेरु,
नैय्योर् नेरु, नैय्योर् नेरु, नैय्योर्
नेरु नैय्योर् नेरु, नैय्योर् नेरु (क) सं.—
जामुन, जामुन का पेड़ ।

नैय्योर् नेलिसु (क) क्रि.—लटका ; झुला ।
नैय्योर् नेलु (क) क्रि.—लटक ; झूल ।

नैय्योर् नेवण, नैय्योर् नेवळ (क) सं.— सोने
या चाँदी का कंठहार ; करधनी ।

नैय्योर् नेवर, नैय्योर् नेवर, [नैय्योर् नेवर]
(क) सं.—सूर्य ।

नैय्योर् नेस्त; नैय्योर् नेह (तद्) सं.—स्नेह, प्रेम,
मैत्री ।

नैय्योर् नेळ (क) अ.—प्रियंगु ।
नैय्योर् नेळ, नैय्योर् नेळ (तद्) सं.—
नैर्ऋती (तत्) ; दक्षिण-पश्चिम कोना ।

नैय्योर् नेज (सम्) वि.— निज का, अपना ;
सत्यपूर्ण, सच्चा ।

नैय्योर् नेपुण्य (सम्) सं.— निपुणता,
पटुता, चातुर्य ।

नैय्योर् नेमिक्क (सम्) वि.—अकस्मात्
आया हुआ, आकस्मिक, असाधारण ।

नैय्योर् नेय्यिक (सम्)—न्यायवेत्ता ।
नैय्योर् नेवेद्य (सम्) सं.—देवता को अर्पित
भोज्य पदार्थ ।

नैय्योर् नेग (तद्) सं.— युग (तद्) जुआ,
युग, जोड़ा ।

नैय्योर् नेच्चगे (अ) सं.—मानसिक संतोष
या वृत्ति ।

नैय्योर् नेण, नैय्योर् नेणवु (क) सं.—मक्खी।
नैय्योर् नेणव (क) सं.—गड़रियों की जाति
विशेष ।

नैय्योर् नेणे (क) क्रि.— निगल ; जीभ से
दांत मोज ।

नैय्योर् नेयिसु (क) क्रि.—दर्द या पीड़ा ।
दे ।

नैय्योर् नेरु, नैय्योर् नेरु (क) सं.—
पिस्तू, कुटकी ।

नैय्योर् नेरे (क) सं.—फेन ; झाग ।
नैय्योर् नेसल, नैय्योर् नेसलु (क) सं.—
ललाट, माथा ।

नैय्योर् नेळ, नैय्योर् नेळवु (क) सं.—
मक्खी ।

नैय्योर् नेळले (क) सं.—नलिका, सीप ।
नैय्योर् नेळे, नैय्योर् नेळे (क) क्रि.—घुस,
प्रवेश कर ।

नैय्योर् ने (क) क्रि.— दर्द हो, पीड़ा हो; व्यथा
हो ।

नैय्योर् नेपि, नैय्योर् नेपु (क) सं.—व्रत ।
नैय्योर् नेचु (क) क्रि.— पीड़ा दे, दर्द
कर ;

नैय्योर् नेट (क) सं.—देखना ; दृश्य ; लक्ष्य ;
ध्येय ।

नैय्योर् नेडिसु (क) क्रि.— दिखला, अव-
लोकन करा, जँचवा ।

नैय्योर् नेडु (क) क्रि.— देख, अवलोकन
कर ; परीक्षा कर ।

नैय्योर् नेत (क) सं.—दर्द, पीड़ा ; व्यथा ।
नैय्योर् नेन् (क) क्रि.—व्रताचरण कर ।

नैय्योर् नेनिसु (क) क्रि.— व्रताचरण करा
(प्र.) ।

नैय्योर् नेयिसु (क) क्रि.—दर्द या पीड़ा
उत्पन्न कर ।

नैय्योर् नेयु (क) क्रि.— दर्द हो, पीड़ा
उत्पन्न हो ।

नैय्योर् नेवु (क) सं.—दे. नैय्योर्.
नैय्योर् नेळ (क) क्रि.— आगे चल, आगे
बढ़ ।

नैय्योर् नेळ (क) क्रि.— देख, अवलोकन
कर ; परीक्षा कर ।

नैय्योर् नेका. नैय्योर् नेके (सम्) सं.—नौका,
नाव ।

नैय्योर् नेय्योध (सम्) सं.— वट वृक्ष ;
पलाश ; चंद्रमा ; मार्ग, पथ ; दिशा ;
छल, धोखा ; वन, जंगल ; फैली ;
बाहुएँ ।

नैय्योर् नेय्यस्त (सम्) वि.—फेंका हुआ, छोड़ा
हुआ, त्यागा हुआ ।

नैय्योर् नेय्यस (सम्) सं.—दे देना. रखना,
दूर रखना, त्यागना, छोड़ना ।

नैय्योर् नेय्यते (सम्) सं.—न्यूनता, कमी ;
हीनता, नीचता ।

प ष

ष प—कज्जड-वर्णमाला का पैंतीसवाँ अक्षर,
पवर्ग का प्रथम व्यंजन ।

षं पं (क) (सम्) सं.—हरापन ।
(१) षं पं (क) (सम्) सं.—कीचड़, दलदल ;
पाप ; मलहम ।

(२) षं पं (क), षं पं (अ. दे.) सं —
पंख; (हि.) ।

षं पं (क) (सम्) सं.— कमल ।
षं पं (क) (सम्) सं.—एक वारहमासी पौधा
(Tephrosia purpurea pers) ।

षं पं (क) (सम्) सं.— कतार, रेखा, श्रेणी,
समूह, समुदाय, दल, गिरोह; पांच का समूह
या पांच की संख्या; चार चरणों का छंद जिसके
प्रत्येक चरण में दून्न मात्रा एँहोती हैं ; भोजने
के लिए बैठे हुए आदमी की पंक्ति ; प्रसिद्धि,
कीर्ति ।

षं पं (क) (सम्) सं.—पंक्ति, श्रेणी ।
षं पं (क) (सम्) सं.—एक ही
पंक्ति में बैठे हुए व्यक्तियों को (खाना)
परोसते समय भेद करना (मै. प्र.) ।

षं पं (क) सं.— काँटा (चमच) ; दो
नोंकावाला (V) ; नोंकवाली डाली ।

षं पं (क) सं.—दल, पक्ष, पार्टी,
गिरोह ।

षं पं (क) सं.—माथे पर बड़ी
आड़ी रेखा । — षं पं हाकु=धोखा दे,
छल कर (सुह.) ।

- (१) ढङङ पङ्गु (क) सं. — नैतिक बंधन, अनुग्रह, उपकार ।
- (२) ढङङ पङ्गु (क) वि.—लंगडा, लुला, अपाहिज ।
- ढङङ पंच (सम्) वि. — पांच; अपूर्व, अनुपम ।
- ढङङ पंचक (सम्) वि.—पांच का बना, वह जिसमें पाँच हो । सं.—पांच का समूह; पांच की संख्या ।
- ढङङ पंचकज्जाय (क) सं. — चूड़ा, गुड़, गरी, तिल और चना—इनको मिलाकर बनाई गई एक मिठाई ।
- ढङङ पंचकल्याण (सम्) सं. — जैन साधुओं की पांच अवस्थाएं — गर्भावतरण, जन्माभिषेक, परिनिष्क्रमण, केवलज्ञान और निर्याण ।
- ढङङ पंचगव्य (सम्) — गाय के पांच पदार्थ (दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर) ।
- ढङङ पंचगौड, ढङङ पंडगौड (सम्) सं.—बंगाल और उत्तरीभाग, उसके निवासी ब्राह्मण ।
- ढङङ पंचामर (सम्) सं. — एक वृत्त का नाम ।
- ढङङ पंचतंत्र (सम्)—नीति विषयक पांच अध्यायों का एक संस्कृत-ग्रंथ जो बहुत प्रसिद्ध है ।
- ढङङ पंचेत, ढङङ पंचख (सम्) सं.— पांच होना; मृत्यु ।
- ढङङ पंचदार (तेलुगु) सं.— शकर ।
- ढङङ पंचपरमेष्ठि (सम्) सं.— पांच प्रधान जैन गुरु — सूर्यज्वाल, अर्हन्, आचार्य, उपाध्याय, सर्वकटु ।
- ढङङ पंचपल्लव (सम्) सं. — पांच कोंपल—आम्र, जंबु, कपिलथ, बीजपूरक और बिल्व ।
- ढङङ पंचपात्रे (सम्) सं. — तांबे का जलपात्र जिसे रखकर संध्यावन्दन किया जाता है; पांच बर्तनों का समूह ।
- ढङङ पंचप्राण (सम्) सं. — प्राण, अपान, प्यान, उदान और समान ।
- ढङङ पंचम (सम्) वि.—पांचवां भाग । सं.—शूद्र, संगीत के सप्तस्वरों में पांचवां; कोयल का स्वर, राग विशेष; मैथुन ।
- ढङङ पंचलोभि (सम्) सं.—कदर्य, दीन पुरुष ।
- ढङङ पंचलोह (सम्) सं.—सोना, चांदी, तांबा, लोह और सीसा ।
- ढङङ पंचवाद्य (सम्) सं.—भेरि, शंख, श्रृंग (सींग), घंटा और वीणा ।
- ढङङ पंचशर ढङङ पञ्चबाण (सम्) सं.—कामदेव । पञ्चशर (तद्) ।
- ढङङ पंचांग (सम्) सं. — तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण का विवरण देनेवाली पुस्तक, तिथिपत्र ।
- ढङङ पंचेकरिसु (सम्) क्रि. — पांच गुना कर ।
- ढङङ पंचु (क) क्रि. — भाग कर, बांट, हिस्सा कर (सम्) सं. — भाग, हिस्सा, बांटना ।
- ढङङ पंजर (सम्) सं. — पिंजड़ा; ठठरी, कंकण ।
- ढङङ पंजार (क) सं.—मीठी खाद्य वस्तु ।
- ढङङ पंजि, ढङङ पंजिके (सम्) सं.— पूनी; बही, लेखा; पत्ता; तिथिपत्र ।
- ढङङ पंजु (क) सं.—दीवट, मशाल ।
- ढङङ पंजे (क) सं.—दरिद्र, गरीब, असहाय पुरुष ।—ढं तन (क) सं. — दारिद्र्य, गरीबी, असहायता ।
- ढङङ पंति (क) सं. — कुदान; भोजन ।
- ढङङ पंटिसु (क) क्रि.—सिर नीचे हो, लुढ़क; भीत हो ।
- ढङङ पंड, ढङङ पंडक (तद्) सं.— शंड; (तद्); नपुंसक ।
- ढङङ पंडित (सम्) सं. — पंडित, विद्वान्, विद्वान् ब्राह्मण; वैद्य (मै. प्र.) ।
- ढङङ पंत (तद्) सं.—पणितं (तद्); दौंव, होड़; चुनौती ।
- ढङङ पंति (तद्) सं.—पंक्ति (तद्) ।
- ढङङ पंतुवराळि (क) सं.—एक राग का नाम ।
- ढङङ पंथ (सम्) सं.—रास्ता, माग ।
- ढङङ पंदर, ढङङ पंदरु (क) सं. — पण्डाल, मण्डप ।
- ढङङ पंदर (क) सं.—पण्डाल, मण्डप ।
- ढङङ पंदि (क) सं.—सूकर, सुभर ।
- ढङङ पंदे (क) सं.—डरपोक, भीरु ।
- ढङङ पंघ (तद्) सं.—दे. ढंड.
- ढङङ पंप (क) सं. — समभाग या हिस्सा; कन्नड के एक सुविख्यात कवि का नाम जिन्होंने 'पंप-भारत' और 'आदि पुराण' की रचना की है ।
- ढङङ पंपाक्षेत्र (सम्) सं.—पंपा सरोवर के पास का स्थान, हंपि ।
- ढङङ पंपे (सम्) सं.—पंपासरोवर ।
- ढङङ पंबल् (क) सं.—प्रबल इच्छा, ललचाना, तरसना ।—असु इसु (क) क्रि.— तरस, प्रबल इच्छा कर ।
- ढङङ पकपक (क) अ. — जल्दी, शीघ्र; 'हा हा' करके ।
- ढङङ पकीर, ढङङ फकीर (अ. दे.) सं.— फकीर (अरबी); साधु ।
- ढङङ पक (तद्) सं.—पक्षः (तद्)—पर, पंख; कंधा; बाजू; समीपता, पडोस; पोषण, सहारा; पक्ष (शुक्ल वा कृष्ण पक्ष) ।
- ढङङ पकने, ढङङ फकने (क) अ.—हठान् तुरंत, एकदम ।
- ढङङ पक्रे, ढङङ पकले (क) सं.—एक प्रकार का बर्तन ।
- ढङङ पका (अ. दे.) सं.—चतुर या चालाक पुरुष ।
- ढङङ पकि (तद्) सं.—पक्षिन् (तद्); पक्षी, चिड़िया । (अ. दे.) सं.—ढंग, विधान ।
- ढङङ पक्कु (तद्) सं.—रक्षः (तद्); सहारा, समर्थन, अनुकूल होना ।
- ढङङ पक्के (क) सं.—जगह, घर, शयनागार; बगल, करबट; बिछावन, खाट, पलंग; समीपता, सामीप्य; झाऊ का पेड़ ।
- ढङङ पक्व (सम्) वि.—पका हुआ, पका; भुना हुआ, उबला हुआ; जीर्ण, किया हुआ ।

ढँडू पक्ष

ढँडू पक्ष (सम्) सं. — दे. ढँडू; पक्षी; भित्ति, दीवार; समूह, आधिक्य ।— ङ ज (सम्) सं.— चंद्रमा ।— ङाड पात (सम्) सं.— तरफदारी, पक्षपात ।

ढँडू पक्षि (सम्) सं. — पक्षी, चिड़िया; तरफदार ।— ङाड राज (सम्) सं. — गरुड ।

ढँडू पगडि (अ. दे.) सं.— पगडी (हि.) ।

ढँडू पगडे (क) सं. — एक छोटा वृक्ष; एक बड़ा वृक्ष (Mimsops elengi); चौसरा का खेल; चौसर की गोटी, अक्ष ।

ढँडू पगदि (क) सं.— राजकर, कर; नजराना ।

ढँडू पगल, ढँडू पगलु (क) सं. — दिन का समय, दिन ।

ढँडू पगिन, ढँडू पगिनु (क) सं. — पेड़ों का रस, गोंद ।

ढँडू पगिल् (क) क्रि. — चिपक, मिल, लग; फैल, व्याप्त हो, निराश हो, क्लेश पा ।

ढँडू पगे (क) सं.— द्वेष, विरोध, वैर; बदला ।— ङाड कार (क) सं. — शत्रु, वैरी ।— ङ तन (क) सं. — शत्रुता ।

ढँडू पचडि, ढँडू पचडि (क) सं.— रायता, व्यंजन विशेष ।

ढँडू पचन (सम्) सं. — पकाना, रसोई; भाग; रसोई बनाने के साधन, बर्तन, हँधन ।

ढँडू पचारिसु (क) क्रि.— निंदा कर, झिड़की दे, चुभनेवाली बात कह ।

ढँडू पचे, ढँडू पचे (क) वि.— हरा, तजा । सं.— मरकत, पन्ना ।

ढँडू पच्च (तत्) सं. — प्रसाधन (तत्); सजावट, श्रृंगार, भूषा ।— ङसु डिसु (तद्) क्रि.— सजा, श्रृंगार कर ।

ढँडू पचने (क) वि.— हरा ।— ङ बण्ण=हरा रंग ।

ढँडू पचचारि (क) सं.— वृक्ष विशेष ।

ढँडू पच्चि (क) सं.— भाग, हिस्सा ।

ढँडू पचु (क) वि.— हरा । क्रि.— अव्यक्त ध्वनि कर, फुसफुस कर ।

ढँडू पचुगे (क) सं.— एकांत स्थान, एकांत मंत्रणा ।

ढँडू पचे (क) वि.— हरा । सं.— हरापन, हरा रंग; पीत वर्ण; किसलय, पल्लव; बढ़नेवाले अनाज का रंग; मरकत, पन्ना; घनसार, कपूर; देवकणिश नामक पौधा; बेंत, नरकुल ।

ढँडू पज (तद्) सं.— (पदज + ज) — शूद्र ।

ढँडू पजलिमु (तद्) क्रि.— प्रज्वलित हो, चमक ।

ढँडू पज्जे (तद्) सं.— पद्धति; (तत्) पदचिह्न; चिह्न, निशान ।

(१) ढँडू पट (क) सं.— 'पट पट' ध्वनि ।

(२) ढँडू पट (सम्) सं.— वस्त्र, कपड़ा; महीन कपड़ा; रेशमी कपड़ा; घूँघट; पर्दा; चित्र; लिखने का कपड़ा; छत, छप्पर; चित्र; झण्डा; पाल; पतंग; शतरंज का पट या बोर्ड; पौधों को पानी देने के लिए बनाया गया स्रोत (सै. प्र.); एक वृक्ष (The tree Buchanania latifolia); पटरी या कपड़े का टुकड़ा; कोई भी चीज़ जो अच्छी बनी हो ।— ङ क (सम्) सं.— सूत का कपड़ा; तंबू ।— ङाड कार (सम्) सं.— चितेरा; जुलाहा ।

ढँडू पटकारु (क) सं.— कंखमुख, चिमटा ।

ढँडू पटकुटि (सम्) सं.— डेरा, तंबू ।

ढँडू पटल (सम्) सं.— छजा, छत; पर्दा; घूँघट; समूह, ढेर; आख ढँकने का घूँघट; टोकरी ।

ढँडू पटह (सम्) सं.— ढोल; मृदंग, तबला ।

ढँडू पटाकि— ढँडू पटाके (अ. दे.) सं.— पटाका, पटाखा ।

ढँडू पटारने (क) अ.— 'पट' शब्द के साथ ।

ढँडू पटिक (तद्) सं.— स्फटिक; (तत्); फटिक ।

ढँडू पटिंग (क) सं.— बदमाश, गुंडा, नीच, लफंगा, कामुक ।— ङ तन=बदमाशी, नीचता ।

ढँडू पटीर (सम्) सं.— चन्दन; कामदेव; पेट; खेत; चलनी; बादल; खेलनी की गोली; ऊँचाई; मूली; गठिया; मोतिया बिंदु ।

ढँडू पट्ट (सम्) वि.— पट्ट, चतुर, निपुण, योग्य ।

ढँडू पट्टिके (सम्) सं.— चचींडा; परवल ।

ढँडू पट्ट (तद्) सं.— वस्त्र, कपड़ा; राजाशा की पट्टी; चौराहा; पर्दा, आवरण; नगर; ग्राम; सिंहासन, अधिकार ।— ङ ङा डे आने=शाही हाथी ।— ङ ङा के बा= राजा बन, सिंहासनारूढ हो ।

ढँडू पट्टगे (क) सं.— प्राप्त करना, प्राप्ति, उपलब्धि; पकड़ना, पकड़; धैर्य ।

ढँडू पट्टि, ढँडू पट्टे (क) सं.— स्थूणा, निहाई ।

ढँडू पट्टण (तद्) सं.— पत्तनम् (तत्); नगर, शहर ।

ढँडू पट्टमहिषि (तद्) सं.— पटरानी । ढँडू पट्टशाले, ढँडू पट्टसाले, (तद्) सं.— बैटक, वाचन-भवन ।

ढँडू पट्टाभिके (सम्) सं.— राज तिलक, मुकुटधारण की क्रिया ।

(१) ढँडू पट्टि (क) सं.— नीचे रखने का स्थान; घर; गोष्ठ; अहीरों का अड्डा ।

(२) ढँडू पट्टि (क) सं.— पट्टी, लंबी पट्टी; माथे पर रखने का एक आभूषण; रेखा, धारी; सूत ।

ढँडू पट्टु (क) क्रि.— पकड़, धर, पकड़ ले; लगे रह । सं.— पकड़; कतार; निर्णय, हठ; स्वभाव; लेप, मलहम; संयोग, संदर्भ; कड़ा स्थान ।

ढँडू पट्टे (क) सं.— रेशा, छिलका, पेड़ का छाल, वलकल । (तद्) सं.— रेशम; गंजा सिर ।

ढँडू पट्टे, ढँडू पट्टे, ढँडू पट्टे (क) सं.— खोखला ।

ढँडू पट्टण (तद्) सं.— पत्तनम् (तत्); नगर, शहर ।

संठयिसु पठयिसु, संठिसु पठिसु (सम्) क्रि.

—पठन कर, पढ़ ।

संठ्य पठ्य (सम्) वि.—पढ़ने योग्य, पाठ्य ।

संठग पठग (क) सं.—पानेवाला, इच्छा करनेवाला ।

संठगु पठगु, संठंगु पठंगु (क) सं.— जहाज़ ; बड़ी नाव ।

संठति पठति (क) सं.—स्त्री, औरत ।

संठपाठ पठपाठि, संठपाठि पठपाठि (क) सं.—वेश्या, रंडी, पैसा कमानेवाली स्त्री ।

संठपु पठपु (क) सं.—पाना, कमाई, श्रम ।

संठपु पठपु (क) सं.— नीचे रखना या गिराना ; सतानेवाला ।

संठपु पठपु, संठपु पठपु (क) सं.—पश्चिम दिशा ।

संठपु पठपु (क) सं.—पाना, कमाई, श्रम ।

संठपु पठपु, संठपु पठपु (क) सं.—बरामदा ।

(१) संठि पठि (क) सं.—पाना ; ढंग, रीति, विधान, पद्धति ; एक माप ; द्वारबंध, अर्गल ; रिकाव, पादधारिणी ; रतन का एक तौल ; अनाज के रूप में दी जानेवाली मजदूरी ।

(२) संठि पठि (तद्) सं.—प्रति (तत्) समानता, समता, तुलना ।

संठिल्लु पठिल्लु (क) सं.—पासंग ।

संठि पठि (क) सं.—छोटा कपड़ा ; चीथड़ ।

संठि पठि (क) सं.—प्रयत्न कर, कोशिश कर, प्रयास कर ।

संठियु पठियु (क) सं.—द्वाररक्षिका, नौकरानी ।

संठिसु पठिसु (क) क्रि.—प्राप्त करा, हासिल करा ।

संठिसु पठिसु (क) सं.—प्राप्त कराना ।

संठि पठि (क) सं.—प्रतिहार ; प्रतिहारी ।

संठु पठु (क) क्रि.—पढ़, लग, हो ; (क्रिया जा) ; मर ; डूब ; सो ; भोग ; चोद ; कमा । सं.—पढ़ना ; डूबना ; पश्चिम ; गुफा या पत्थरों के बीच की जगह जहाँ मृग रहते हैं ।

संठु पठु (क) सं.—मिट्टी का बड़ा हण्डा ।

संठु पठु, संठु पठु, संठु पठु (क) सं.—पश्चिम दिशा, प्रतीची ।

संठु पठु (क) सं.—पश्चिम दिशा ।

संठु पठु (क) क्रि.—पा, प्राप्त कर, कमा ; सह, वहन कर । सं.—समूह, बल, सेना ; छेद ; बड़ा पत्थर ।

संठु पठु (क) सं.—दे. संठु ।

संठु पठु (क) सं.—सैनिक, सिपाही ।

संठु पठु, संठु पठु (क) सं.—सेनापति ।

संठु पठु (क) सं.—सयानापन, यौवन प्राप्त होना, यौवन ।

संठु पठु, संठु पठु (क) सं.—फल, पका हुआ फल ।

संठु पठु (सम्) सं.—पाँसे से खेलना या दाँव लगाकर खेलना ; दाँव पर रखी हुई वस्तु ; मजदूरी, भाड़ा ; शर्त, ठहराव ; पुरस्कार, इनाम ; मिका ; मूल्य, दाम ; तौल ; दो तोले ; पैसे, रुपया ; धंधा, व्यापार ; दूकान ; निश्चित परिमाण ।

संठु पठु (सम्) सं.—वेश्या, रंडी ।

संठु पठु (तद्) सं.—प्रणीत (तत्) ; दीप-पात्र, मिट्टी का दीपपात्र ।

संठु पठु (क) सं.—लाठी, बड़ा डंडा ।

संठु पठु (सम्) वि.—स्तुत, सम्मानित ; मोल किया हुआ ; दाँव पर लगाया हुआ ।

संठु पठु (क) सं.—माथा, ललाट ; तना ; वह खान जहाँ पत्थर चीरते हैं, खोह, गुफा ; पहाड़ की बगल ; क्रूर मृगों के बाल ।

संठु पठु (क) अ.—कुछ हद तक ।

संठु पठु (क) सं.—सँवारना, बनाना, तैयार करना, ठीक करना ; क्रम ; माथे पर धारण

करने का एक गहना ।

संठु पठु (क) क्रि.—करा, करवा, बनवा ।

संठु पठु (क) क्रि.—कर, बना, तैयार कर, सजा कर ; सं.—फल ।

संठु पठु (सम्) वि.—बिक्री के लिए, मोल-भाव के लिए ; प्रशंसा के योग्य, सम्मान के योग्य । सं.—मोल की वस्तु ; दूकान ।

संठु पठु (सम्) सं.—उड़ना, उड़ान ।

संठु पठु (सम्) सं.—पक्षी ; पतंग ; सूर्य ; बाण ।

संठु पठु (सम्) सं.—पक्षी ।

संठु पठु (सम्) सं.—गिरना, अस्त होना ; डूबना ; उड़ने की क्रिया ; नीचे आने की क्रिया ; पात, नाश, हास ; मृत्यु ।

संठु पठु (सम्) सं.—पति, शौहर ; स्वामी, प्रभु, शासक, रक्षक ।

संठु पठु (क) क्रि.—लौटा, वापस दे ; सहायता कर, मदद कर ; पसंद कर, प्रियता प्रकट कर, दया से देख ।

संठु पठु (सम्) सं.—वह स्त्री जिसके पति जीवित हो ।

संठु पठु (सम्) सं.—पतिव्रता स्त्री ।

संठु पठु (सम्) सं.—नगर, शहर ; बस्ती ।

संठु पठु (क) सं.—तरकस, तूणीर ।

संठु पठु (अ. दे.) सं.—राजकर का परीक्षक ।

संठु पठु (क) सं.—कपास ; रूई ।

संठु पठु (क) सं.—जोड़, पकड़ ; दीवार पर लटकाने की अलमारी ।

संठु पठु (क) क्रि.—लगा, जोड़ संयुक्त कर, मिला ; चिपका, चढ़वा ।

संठु पठु (क) क्रि.—लग, संयुक्त हो, चिपक जा ; चढ़ । सं.—लगना, पकड़ चिपकना ; झगड़ा, कलह ; मित्रता । वि.—दस की संख्या ।

संज्ञा पत्रो, संज्ञा पत्रो (क) सं.—
जोड़, संबन्ध ।

संज्ञा पत्रो पत्रो (क) सं.—
द्रव्य-बंधना, फरेबी, सरकार को देने योग्य द्रव्य में
धोखा देना ।

संज्ञा पत्रो (अ. दे.) सं.—पता ।—
संज्ञा, हचु = पता लगा ।

संज्ञा पत्रि (सम्) सं.—पत्नी ।

संज्ञा पत्र (सम्) सं.—पर, पंख, डैना ; पत्ता ;
पत्र, चिट्ठी ; कागज़ ; तलवार की धार,
छुरी, चाकू ; कमल की पौखुरी ।

संज्ञा पत्रिके (सम्) सं.—पत्रिका, लिखा
हुआ पत्र ; चिट्ठी ।

संज्ञा पत्रिके (सम्) सं.—गरुड ।

संज्ञा पथ (सम्) सं.—मार्ग, रास्ता पथ ।

संज्ञा पथिक (सम्) सं.—यात्री, पथिक,
राहगीर ।

संज्ञा पथ्य (सम्) सं.—पथ्य, रोगी के लिए
हितकर वस्तु या आहार ।

(१) संज्ञा पद (क) सं.—उपयुक्त स्थिति या
दशा, उपयुक्तता, समीचीनता ; धार,
तीक्ष्णता ।

(२) संज्ञा पद (सम्) सं.—पद, चरण, कदम,
पैर ; दो की संख्या ; घर ; ओहदा, पद ;
वस्तु, पदार्थ ; समय ; हेतु ; बहाना ;
व्यवहार ; आश्रय, सहारा ; शब्द ; पद्य
का चरण ; गेयपद ।

संज्ञा पदक (सम्) सं.—पदक, गले का
आभूषण ।

संज्ञा पदपु, संज्ञा पदपु (क) सं.—
शीघ्रता, उतावलापन ; सौंदर्य, शौक,
विलास ।

संज्ञा पदर, संज्ञा पदरु (क) सं.—तह ;
स्तर ; केंचुल ।

संज्ञा पदरु (क) क्रि.—उतावला हो, घबड़ा ;
बढ़बड़ा ।

संज्ञा पदवि (सम्) सं.—रास्ता, मार्ग ;
स्थान, जगह, संस्थान ; पद, ओहदा ।

संज्ञा पदाजि, संज्ञा पदाति, संज्ञा पदाति
पदातिक (सम्) सं.—पैदल सिपाही ।

संज्ञा पदार्थ (सम्) सं.—पदार्थ, वस्तु,
चीज़ ; शब्द का अर्थ ।

संज्ञा पदिक (सम्) सं.—पदाति, पैदल
सिपाही ।

संज्ञा पदिर् (क) सं.—दो अर्थवाली बात ;
स्वरों के प्रकार ।

संज्ञा पदुगु (क) क्रि.—झुक, नत हो ।

संज्ञा पदुळ (क) सं.—सुख, संतोष, समा-
धान, कुशल-क्षेम (ह. कं.) ।

संज्ञा पदुळिग (क) सं.—सुखी मनुष्य ।

संज्ञा पदुळिर्, संज्ञा पदुळिरु (क)
क्रि.—आनंदित हो, संतुष्ट हो. उत्साहित
हो ।

संज्ञा पदुळिसु (क) क्रि.—आनंदित कर,
प्रसन्न कर, तुष्ट कर ।

संज्ञा पदे (क) क्रि.—इच्छा कर, अभिलाषा
कर, स्पंदित हो, चाह, उत्साहित हो । सं-
—इच्छा, चाह । — संज्ञा पोय् (क)
क्रि.—हर्ष से मार या मार डाल ।

संज्ञा पद्विचि (क) सं.—अबाबील चिड़िया ।

संज्ञा पद्वु (क) सं.—बाज़, गिद्ध (ह. कं.) ।

संज्ञा पद्वति (सम्) सं.—पदचिह्न ; हंग,
विधान, तरह, तरीका ; रास्ता, मार्ग ;
श्रेणी, पंक्ति ।

संज्ञा पद्म (सम्) संज्ञा पद्म (तद्) —
कमल ; कुमुद ; गजबिंदु ; जल, पानी ;
कमलव्यूह ; एक सुगंधित पौधा जो दवाई
में काम आता है ; वक्रता, टेढ़ापन ; एक
सौंप ; चंद्रमा ; सरोवर ; आसन, बैठना ;
मुनि, एक मुनि का नाम ; दस खरब की
संख्या ।

संज्ञा पद्मराग (सम्) सं.—मानिक या
लाल रत्न ।

संज्ञा पद्मि (सम्) सं.—हाथी ; विष्णु । वि.
—कमल रखनेवाला ; ध्वजेदार ।

संज्ञा पद्मिनि (सम्) सं.—कमल ; कमलों
का समूह, सरोवर ; पद्मिनी जाति की स्त्री ।

संज्ञा पद्मे (सम्) सं.—पद्मा, लक्ष्मी ।

संज्ञा पदनु (क) सं.—संकेतस्थल, निर्दिष्ट
स्थान ।

संज्ञा पनस (सम्) सं.—कटहल, कटहल का
वृक्ष ।

संज्ञा पनि, संज्ञा हनि (क) सं.—बूँद, जलकण
(ह. कं.) । क्रि.—बूँद गिर या टपक ।

संज्ञा पनियान, संज्ञा पनियार (क)
सं.—प्रसाद, मिठाई ।

संज्ञा पने (क) सं.—दाँत, नुकीला दाँत ; ताड़
का पेड़ ।

संज्ञा पन्न (क) सं.—गर्व, घमंड ; मद, मस्ती ।

संज्ञा पन्नग (सम्) सं.—सौंप ।

संज्ञा पन्नाडे (क) सं.—रेशे का जाल, ताड़
के पत्तों के नीचे का जालदार रेशा ।

संज्ञा पन्नि (क) सं.—ढींग, गर्व घमंड ।

संज्ञा पन्ने (क) सं.—कपूर, कपुर ।

संज्ञा पप्प (क) सं.—दर्प, गर्व ।

संज्ञा पप्पक, संज्ञा पप्पुक, संज्ञा पप्पुक
(क) सं.—(शिकार खेलते समय) झुरमुट
मारना ।

संज्ञा पप्परिके, संज्ञा पर्परिके (क) सं.
—रुक्षता, अकौमलता, कर्कशता, क्रूरता ।

संज्ञा पप्पल, संज्ञा पप्पलि (तद्) सं.—पर्पट
(तद्)—पापड ।

संज्ञा पप्पाय, संज्ञा पप्पायि (क) सं.
पपीता ।

संज्ञा पप्पु (क) सं.—कोई भी ढाल, दाँतों
हुआ अनाज ।

संज्ञा पय, संज्ञा पयस् (सम्) सं.—दूध,
अमृत ; जल ।

संज्ञा पयण (तद्) सं.—प्रयाणम् (तद्) ;
प्रस्थान, यात्रा ।

संज्ञा पयस्विनि (सम्) सं.—दुधार गाय ;
नदी ; एक नदी का नाम ; रात ।

संज्ञा पयिन् (क) वि.—(समास में) दस
की संख्या ।

संज्ञा पयिर्, संज्ञा पयिरु, संज्ञा पयूरु
(क) सं.—छोटा हरा पौधा ; पैदावार,
फसल ।

संज्ञा पयोज (सम्) सं.—बादल ; कमल ।

संज्ञा पयोद, संज्ञा पयोधर (सम्)
सं.—बादल ; कुच ; ससुद ; आँसू ।

संस्कृत-पर्याय-शब्द-कोश (क) क्रि. — फिसल, खिसक ।
 संस्कृत पर (सम्) वि.—दूसरा; भिन्न, और; दूर, अलग; परे; पीछे का, बाद का; उच्च-तर, सर्वोच्च, प्रधान, प्रख्यात, अपरिचित; गौर; बढ़ती, बचत; छूटा हुआ, बचा हुआ; अंतिम; लीन, तत्पर ।
 संस्कृत परकीय (सम्) वि. — दूसरे का, दूसरा; अपरिचित ।
 (१) संस्कृत परके, (क) सं.—आशीर्वाद, दुआ; प्रार्थना (ह. क.) ।
 (२) संस्कृत परके संस्कृत परिके, संस्कृत परिगे (क) सं.—झाड़ू, बुहारी ।
 (१) संस्कृत परंगि (अ. दे.) सं. — फिरंगी, यूरोपियन ।
 (२) संस्कृत परंगि हण्णु (क) सं.—पपीता ।
 संस्कृत परचु (क) क्रि.—नोच, खरोच ।
 संस्कृत परजु, संस्कृत परंजु (तद्) सं.—तलवार या चाकू की धार ।
 संस्कृत परज्योति (सम्) सं. — परम प्रकाश; परमात्मा ।
 संस्कृत परहु (क) क्रि.—प्रसारण कर, व्याप्त कर, फैला; हाथ या पैर से खोदकर निकाला । सं.—अंगुलीखनन; गुल्फ (ह. क.) ।
 संस्कृत परण (तद्) सं.—प्राणः (तत्) ; प्राण ।
 संस्कृत परतंत्र (सम्) सं. — दूसरों की अधीनता, परावलंबन ।
 (१) संस्कृत परद (क) सं.—व्यापरी, वणिक ।
 (२) संस्कृत परद, संस्कृत परदे, संस्कृत पर्दे (अ. दे.) सं.—परदा (फारसी) ।
 संस्कृत परपु (क) सं.—फैल जा; फैला । सं.—फैलना ।
 संस्कृत परम (सम्) वि. — अति दूरवर्ती, अंतिम; सर्वोच्च; मुख्य, प्रधान । सं.—परमात्मा ।
 संस्कृत परमात्मा (सम्) सं.—भगवान्, सृष्टिकर्ता; जिनेश्वर; सूर्य; योद्धा; सिद्ध ।

संस्कृत परंपरे (सम्) सं. — परंपरा, क्रम, विधि; मारना, हत्या ।
 संस्कृत परयिसु (क) क्रि. — फेला, व्याप्त कर; हटा ।
 संस्कृत परल्, संस्कृत परल्, संस्कृत परलु (क) सं.—मणि, पत्थर ।
 संस्कृत परलोक (सम्) सं. — (दूसरा) लोक; स्वर्ग ।
 संस्कृत परवि (क) सं.—मिट्टी का हंडा या बड़ा घड़ा ।
 संस्कृत परशु (सम्) सं.—परशु, कुल्हाड़ी ।—
 संस्कृत राम = परशुराम जो जमदग्नि के पुत्र थे ।
 (१) संस्कृत परसु (क) क्रि. — आशीर्वाद दे, आशिष दे (ह. क.) ।
 (२) संस्कृत परसु (तद्) सं.—परशुः (तत्) ; कुल्हाड़ी ।
 संस्कृत परस्पर (सम्) वि.—आपस में ।
 संस्कृत परस्व (सम्) सं. — दूसरे की संपत्ति ।
 संस्कृत परलिंग (क) सं.—जार, व्यभिचारी ।
 संस्कृत पराकु (क) सं. — स्तुति, प्रशंसा; सावधानी ।
 संस्कृत पराक्रम (सम्) सं.—वीरता, पराक्रम, बल, शक्ति ।
 संस्कृत पराक्रमि (सम्) सं.—वीर पुरुष, बहादुर ।
 संस्कृत पराग (सम्) सं.—पराग, पुष्पराज; धूल, रेणु; पुष्परस, मधु; अरुण वर्ण; स्नान के समय काम में लाया जानेवाला सुगंध द्रव्य ।
 संस्कृत पराङ्मुखते (सम्) सं. — दूसरी ओर मुंह मोड़ना, अरुचि ।
 संस्कृत पराजय (सम्) सं. — हार, पराजय ।
 संस्कृत पराधीनते (सम्) सं. — पराधीनता, गुलामी ।
 संस्कृत पराभव (सम्) सं.—पराजय, हार; तिरस्कार, अपमान; नाश, अंतर्धान, एक संवत्सर का नाम ।

संस्कृत परामर्शिसु (सम्) सं. = संस्कृत परामर्शिसु — परामर्श कर; जांच कर, परीक्षण कर ।
 संस्कृत परायण (सम्) वि. — गत; गया हुआ; निरत, प्रवृत्त, लीन, लगा हुआ, तत्पर ।
 संस्कृत परार्ध (सम्) सं. — दूसरा भाग, उत्तरार्ध; सर्वोच्च संख्या विशेष; ब्रह्मा के जीवन का आधा भाग ।
 संस्कृत पराशर (सम्) सं. — व्यासजी के पिता का नाम; एक स्मृतिकार का नाम ।
 (१) संस्कृत परि (क) क्रि. बह, प्रवहित हो, चल, रेंग, सरक, जा; अदृश्य हो, दूर हो (जैसे संकट, दुःख आदि) । वि.—बहनेवाला । चलनेवाला सं.—प्रकार, ढंग, विधान, रीति; मकड़े का जाल ।
 (२) संस्कृत परि (क) क्रि. = संस्कृत परे—फैल, व्याप्त हो, प्रसारित हो ।
 संस्कृत परिकर (सम्) सं.—अनुगत; सहचर; समूह, संग्रह, भीड़, जनसमूह; कमर-बंद, पटुका; प्रारंभ, आरंभ; तैयारी; उपकरण (पूजा के) ।
 संस्कृत परिकर्म (सम्) सं.—नौकर; देह में चंदन आदि लगाना, उबटन; पूजा, अर्चन ।
 संस्कृत परिकलिसु (सम्) क्रि. — अधिक हो, समृद्ध हो; फैल जा ।
 संस्कृत परिकाक्षे (सम्) सं.—बड़ी अभिलाषा ।
 संस्कृत परिकार (तद्) सं.—अनुगत सहचर; तैयारी, भोजन का उपस्कर ।
 संस्कृत परिकिसु (तद्) क्रि.—परीक्षा कर, परख ।
 संस्कृत परिक्रम (सम्) सं.—प्रदक्षिणा, फेरी देना ।
 संस्कृत परिगणिसु (सम्) क्रि.—पूरा गिन, ठीक-ठीक कथन कर या वर्णन कर ।
 संस्कृत परिगणित (सम्) वि.—गिरा हुआ, डूबा हुआ, बहता हुआ, गलित, पिघला हुआ ।

संज्ञासूची परिग्रहसु (सम्) क्रि. — परिग्रह कर, ले; पकड़; छिपा।
 संज्ञासूची परिचय, (सम्) सं. — परिचय जान-पहचान, जानकारी।
 संज्ञासूची परिचर्ये (सम्) सं. — परिचर्या, सेवा, उपस्थिति।
 संज्ञासूची परिचार, (सम्) सं. — सेवा, उपस्थिति, — क (सम्) सं. — सेवक, नौकर; सहायक। संज्ञासूची परिचारिके = सेविका, नौकरानी।
 संज्ञासूची परिच्छादने (सम्) सं. — कपड़ा, पद, आच्छादन, पोशाक।
 संज्ञासूची परिच्छेद (सम्) सं. — काटना, दोनों ओर काटना, काट कर टुकड़े करना; सीमा, हद्द; अध्याय, सर्ग, पुस्तक का भाग; ठीक निर्देश, निश्चय।
 संज्ञासूची परिजु (क) सं. — रूप, आकार, विधान, ढंग।
 संज्ञासूची परिणति (सम्) सं. — नवन, झुकाव; पूर्णता; परिणाम; परिपाक, पाचन।
 संज्ञासूची परिणमिसु (सम्) क्रि. — नीचे झुक, नत हो; बदल, परिवर्तित हो; परिपक्व हो; वृद्धावस्था पा।
 संज्ञासूची परिणीत (सम्) वि. — विवाहित।
 संज्ञासूची परिताप (सम्) सं. — बड़ी गरमी, उत्कट उष्णता, ताप; पीड़ा, कष्ट, ज्वर; भय, कम्प।
 संज्ञासूची परित्याग (सम्) सं. — त्याग, त्यागने का भाव, छोड़ना; विराग, वैराग्य।
 संज्ञासूची परित्राण (सम्) सं. — रक्षा, रक्षण, बचाव; छुटकारा, मुक्ति।
 संज्ञासूची परिधान (सम्) सं. — धारण करना; वस्त्र, पोशाक; ओढ़नी।
 संज्ञासूची परिधि (सम्) सं. — दीवार, हात, मेंढ, घेरा; पहिये का घेरा, सूर्यमण्डल या आकाश मंडल का घेरा; अग्निकुण्ड का घेरा; वृत्त।
 संज्ञासूची परिपक्व (सम्) वि. — पूर्णरूप से पका या पकाया हुआ; बिलकुल पका हुआ, ठीक प्रकार से सेंका हुआ; भली भांति पड़ा हुआ, सुसभ्य, अच्छा ज्ञानी।

संज्ञासूची परिपाक (सम्) सं. — भली भांति पका हुआ; पाचन शक्ति; पका, पूर्णवृद्धि, परिपूर्णता; फल, परिणाम; चातुर्य, निपुणता, चालाकी।
 संज्ञासूची परिपाटि (सम्) सं. — रुढ़ि, पद्धति, ढंग, परिपाटी।
 संज्ञासूची परिपालिसु (सम्) क्रि. — पालन कर, रक्षा कर, पोषण कर।
 संज्ञासूची परिपूरिसु (सम्) क्रि. — पूरा पूरा भर, परिपूर्ण कर।
 संज्ञासूची परिप्लव (सम्) वि. — हिलता हुआ, काँपता हुआ; चंचल सं. — प्लावन; अत्याचार, जुलम।
 संज्ञासूची परिवोधिसु (सम्) क्रि. — चेतावनी दे, सावधान कर।
 संज्ञासूची परिभविसु (सम्) क्रि. — तिरस्कार कर, अनादर कर।
 संज्ञासूची परिभाविसु (सम्) क्रि. — तिरस्कार कर, अनादर कर; विचार कर, सोच, ध्यान दे, परिशीलन कर, परीक्षण कर।
 संज्ञासूची परिमाण, संज्ञासूची परिमाण (सम्) सं. — नाप, नापना; तौल; संख्या; मूल्य।
 संज्ञासूची परिमिति (सम्) सं. — परिमाण, नपा-तुला, परिमिति।
 संज्ञासूची परिय (क) सं. — दौड़नेवाला।
 संज्ञासूची परियंकार (क?) सं. — धच्छा योद्धा।
 संज्ञासूची परियण, संज्ञासूची परियाण, संज्ञासूची परिवाण (क) सं. — थाल, बड़ी थाली।
 संज्ञासूची परियिसु (क) क्रि. — दौड़ा, बहा, प्रवाहित कर।
 संज्ञासूची परियुत (सम्) वि. — पूर्ण रूप से बढ़।
 संज्ञासूची परिरंभ, संज्ञासूची परिरंभण (सम्) सं. — आलिंगन, आलिंगन करने की क्रिया।
 संज्ञासूची परिवर्तिसु (सम्) क्रि. — परिवर्तन कर, बदल, हेर-फेर कर।

संज्ञासूची परिवाद (सम्) सं. — निंदा, कुवाच्य; अपवाद, बुराई, कलंक।
 संज्ञासूची परिवादिनि (सम्) सं. — सात तारों की वीणा।
 संज्ञासूची परिवार (सम्) सं. — अनुचर वर्ग, अनुगमन करनेवाले; सेना।
 संज्ञासूची परिवु (क) सं. — बहना, बहाव; छलांग, कुदान।
 संज्ञासूची परिवृढ (सम्) सं. — अधिपति, प्रधान, स्वामी, प्रभु।
 संज्ञासूची परिग्रह्ये (सम्) सं. — परिव्रज्या, संन्यास।
 संज्ञासूची परिवाजक (सम्) सं. — संन्यासी संज्ञासूची परिशोधन, संज्ञासूची परिशोधने (सम्) सं. — सफाई, स्वच्छता; त्यागना; अनुसंधान, शोध; शुद्धता, ठीक करना (मै. प्र.)।
 संज्ञासूची परिवेचन (सम्) सं. — छिड़कना, नम करना, चारों ओर छिड़कना।
 संज्ञासूची परिष्कार (सम्) सं. — परिक्रिया, सजावट, शृंगार, शोधन।
 संज्ञासूची परिसर (सम्) सं. — किनारा, सीमा, सामीप्य; मृत्यु, अंत; नियम, आज्ञा।
 संज्ञासूची परिसु (क) क्रि. — बहा, बहने दे (ह. क)। बोल; बकबक कर।
 संज्ञासूची परिहरिसु (सम्) क्रि. — परिहार कर, तज, त्याग, छोड़; अस्वीकार कर; नाश कर; ले ले, निकाल ले, दूर हटा; छिपा।
 संज्ञासूची परिहास (सम्) सं. — हँसी, मज़ाक, दिहगी; क्रीड़ा, खेल; हँसानेवाला।
 संज्ञासूची परीक्षिसु (सम्) क्रि. — परीक्षण कर, जांच कर। सं. — कसौटी; संज्ञासूची परीक्षे (सम्) सं. — परीक्षा, जांच, पड़ताल।
 संज्ञासूची परव (तद्) सं. — प्रथिमन् (तद्), चौड़ाई, महानता, विस्तार।
 संज्ञासूची परवणे (तद्) सं. — दे. संज्ञासूची परव (तद्) सं. — पर्वन् (तद्); पुण्य-काल या दिन।

संस्कृत परुष (सम्) वि. — कठोर, कड़ा, सख्त, अत्यंत रूखा; निष्ठुर, निर्दय; तीक्ष्ण, उग्र, प्रचण्ड, तीव्र; सुस्त. आलसी।
 संस्कृत परुष (तद्) सं.—हर्ष। (तद्) सं.—स्पर्शः (तत्); हूना।
 संस्कृत परे (क) क्रि.—फैल, व्यास हो; विस्तृत हो; पौ फट। सं.—विस्तार, फैलाव; झीना आवरण; प्याज़ का छिलका; केंचुली; मकड़े का जाल; झिल्ली; खजड़ी: निषेध।
 संस्कृत परेपु (क) क्रि.—फैला, व्यास कर; प्रसारित कर। सं.—फैलाव, विस्तार।
 संस्कृत परेत (सम्) सं.—प्रेत, भूत,।—राज (सम्) सं.—यम।
 संस्कृत परकलु (क) सं.—कृशता, दुबला या पतला होना।
 संस्कृत परकु, संस्कृत परकु; संस्कृत परंकु (क) सं.—चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा (ह. क.)।
 संस्कृत परटे (क) सं.—रुक्षता, खुरखुरापन, कठोरता, उलझे हुए बाल (बाल जो संवारे न गये हो)।
 संस्कृत परमे (क) सं.—भृंग, अमर।
 (१) संस्कृत परि (क) क्रि.—फाड़, तोड़, काट, विच्छिन्न कर। सं.—फाड़ना, तोड़ना आदि; उड़ान, कुदान, छलांग।
 (२) संस्कृत परि (क) क्रि.—अलंकार, कर, सज्जित हो। सं.—सजावट, शृंगार।
 संस्कृत परिवु (क) सं.—फाड़ना, तोड़ना।
 संस्कृत परे (क) सं.—खजड़ी, ढोल; निंदा, कुवाच्य, गाली; कृशता; पतला होना; दुर्बलता; पलक।
 संस्कृत पर्चु (क) क्रि.—फुसफुसाहट कर।
 संस्कृत पर्जन्य (सम्) सं.—जलद, मेघ, बादल, बादल जो पानी बरसावे, वृष्टि; इंद्र।
 संस्कृत पर्ण (सम्) सं.—पर, पंख, पत्ता; पलाश वृक्ष।—शाळे (सम्) सं.—उटज, पर्णशाला।

संस्कृत पर्णे (सम्) सं.—पत्ता।
 संस्कृत पर्दु (क) सं.—गिद्ध, चील (ह. क.)।
 संस्कृत पर्बु (क) क्रि.—फैल, व्यास हो; विस्तृत हो।
 संस्कृत पर्बु, संस्कृत पर्बुगे (क) सं.—फैलाव, विस्तार।
 संस्कृत पर्चक, संस्कृत पर्चक (सम्) सं.—पलंग; पल्का, खाट; पालकी; योगासन विशेष; कमर, पीठ और घुटने में लपेटने का वस्त्र।
 संस्कृत पर्चन (सम्) सं.—घूमना-फिरना, भ्रमण।
 संस्कृत पर्चण, संस्कृत पर्चण (क) सं.—दे. संस्कृत।
 संस्कृत पर्चत (सम्) सं.—परिधि, व्यास, सीमा, किनारा, छोर; समाप्ति, अंतसान।
 संस्कृत पर्चय (सम्) सं.—समानार्थवाची शब्द; क्रम, सिलसिला, परंपरा; प्रकार, ढंग; निर्माण, बनाने का काम; मौका, अवसर।
 संस्कृत पर्चासि (सम्) सं.—काफी होनी; पूर्णता; उपलब्धि।
 संस्कृत पर्च (सम्) सं.—गाँठ, ग्रंथि, जोड़; शरीर का अंग; भाग, अध्याय, सर्ग; अवधि, निर्दिष्ट काल; यज्ञ विशेष; पुण्य-काल, उत्सव; चंद्र या सूर्यग्रहण; पूर्णिमा, अमावास्या; संक्रांति; मौका, अवसर।
 संस्कृत पर्चत (सम्) सं.—पहाड़; सात की संख्या सूचक शब्द।
 संस्कृत पर्बु (क) क्रि.—फैल, व्यास हो; बह।
 संस्कृत पर्चके (सम्) सं.—पर्शुका, पसली।
 संस्कृत पर् (क) सं.—दौत (ह. क.)।
 (१) संस्कृत पल, संस्कृत पलवु (क) अ.—कुछ, अनेक, कई।
 (२) संस्कृत पल (सम्) सं.—चार कर्ष के बराबर की तोल।
 संस्कृत पलगे (तद्) सं.—तख्ता; ढाल; छोटा ढोल। [फलकं (तत्)]।
 संस्कृत पलंवर, संस्कृत पलर् (क) सर्व.—कई (पु. लिं.)।

संस्कृत पलहार, संस्कृत पलार, संस्कृत पल (तद्) सं.—फलाहारः (तत्); थोड़ा खाना।
 संस्कृत पलांडु (सम्) सं.—प्याज़।
 संस्कृत पलायन (सम्) सं.—पलायन।
 संस्कृत पलाल (सम्) सं.—पुआल, भूसी।
 संस्कृत पलाश (सम्) सं.—पत्ता; पलाश या किंशुक वृक्ष; टेसू। वि.—तिक्त, कहुआ।
 संस्कृत पलिंगे (तद्) सं.—दे संस्कृत।
 संस्कृत पलंबि (क) सं.—चिहानेवाला, अमोर; मयूर।
 संस्कृत पलंबु (क) क्रि.—आर्त ध्वनि कर, अकुला, व्याकुल हो।
 संस्कृत पल्य, संस्कृत पल्ये, संस्कृत पल्ये (क) सं.—साग। संस्कृत पल्ये = तरकारी।
 संस्कृत पल (क) सं.—हाथी; भृंग, अमर।
 संस्कृत पलकि, संस्कृत पलकि (तद्) सं.—पल्यकः (तत्); पालकी।
 संस्कृत पलट (तद्) सं.—अदल बदल, परिवर्तन, विभ्रम, स्थान का बदलना, अस्थवस्था। (पर्ययः—तत्)।
 संस्कृत पलण (तद्) सं.—पल्ययनम् (तत्); जीन, काठी; रास, लगाम।
 संस्कृत पलव (सम्) सं.—पलव, किसलय; अंकुर; वीणा; कली, फूल; विस्तार, फैलाव; रत्न; पूँछ; केश; विट; दूरचारी; हाथी का बच्चा; बालक; शब्द-समूह; कंकण, बाजूबंद।
 संस्कृत पलविस (सम्) क्रि.—पलवित हो; विकसित हो; फैल।
 संस्कृत पला, संस्कृत पल (क) सं.—एक सौ सेर या एक सौ बीस सेर अनाज का परिमाण।
 संस्कृत पल्लि (क) सं.—छिपकली; गाँव, संस्कृत पल्लि (क) सं.—दंतहीन; सूर्य।
 संस्कृत पल्ले, संस्कृत पल्ले (क) सं.—दे. संस्कृत।

संज्ञा १०० पल्लव (क) सं.—इक्षुगंधा (The plant *Ruellia longifolia*))
 संज्ञा १०० पल्लव (सम्) सं.—छोटा सरोवर ।
 संज्ञा १०० पल्लविसु. संज्ञा १०० पल्लविसु (क) क्रि.
 — सो, निद्रित हो ।
 संज्ञा १०० पवण संज्ञा १०० पवण (तद्) सं.—
 प्रमाण (तत्) ; नाप ; माप ; प्रमाण ।
 संज्ञा १०० पवणिसु, संज्ञा १०० पवणिसु (क) क्रि.
 —पिरो (धागा पिरोना) ।
 संज्ञा १०० पवन (सम्) सं.—पछोरना, फटकना ;
 हवा, वायु ।
 संज्ञा १०० पवमान (सम्) सं.—हवा, वायु ।
 संज्ञा १०० पवल (तद्) सं.—प्रवालः (तत्) ;
 विद्रुम, मूँगा ।
 संज्ञा १०० पवाड (क ?) सं.—विचित्र कृत्य,
 अलौकिक कार्य, करामत. चमत्कृति ।
 प्रवादः (तत् ?) ।
 संज्ञा १०० पवि (सम्) सं.—वज्र, इंद्र का वज्र ।
 संज्ञा १०० पवुड (तद्) सं.—प्रौढ (तत्) । —
 संज्ञा १०० वति (तद्) सं.—प्रौढा (तत्), प्रौढ-
 वती ।
 संज्ञा १०० पवुसे (क) सं.—एक वृक्ष का नाम ।
 संज्ञा १०० पववने (क) अ.—तुरंत, अकरमात् ।
 (सम्) सं.—संज्ञा १०० पशु, जानवर, मवेशी ।
 संज्ञा १०० पशुपति (सम्) सं.—शिव ; बैल ।
 संज्ञा १०० पश्चात्ताप (सम्) सं.—पछतावा ।
 संज्ञा १०० पश्चिम (सम्) सं.—पश्चिम दिशा ।
 संज्ञा १०० पस (क) सं.—चाह, तीव्र इच्छा,
 उतावलापन ।
 संज्ञा १०० पसरिसु (तद्) क्रि.—प्रसरित कर,
 फैला ।
 संज्ञा १०० पसले (क) सं.—छोटी हरी घास,
 हरियाली ।
 संज्ञा १०० पसि, संज्ञा १०० हसि (क) क्रि.—भूख लग ।
 सं.—भूख [ह. क.] ।
 संज्ञा १०० पसिय वण (क) सं.—हरा रंग ।
 संज्ञा १०० पसिम (क) सं.—हरापन, ताज़गी ।
 संज्ञा १०० पसियिसु (क) क्रि.—हिला, रगड़,
 मथ ।

संज्ञा १०० पसिर (क) वि.—हरा (ह. क.) ।
 संज्ञा १०० पसिवु (क) सं.—भूख (ह. क.) ।
 संज्ञा १०० पसु (क) सं.—हरापन, ताज़गी । क्रि.
 —बाँट, विभाग कर, हिस्सा कर, पृथक
 कर । (तद्) सं.—पशुः (तत्) ।
 संज्ञा १०० पसुगे (क) सं.—बाँटना, विभाजन ;
 विभाग, हिस्सा ; प्रबंध, नियुक्ति ।
 संज्ञा १०० पसुव, संज्ञा १०० पसुव (क) सं.—हरे
 पंखोंवाली एक चिड़िया ।
 संज्ञा १०० पसुवे, संज्ञा १०० पसुवे (क) सं.—
 झोला ; वह थैली जिसका मुँह बीच में हो ।
 संज्ञा १०० पसुवेवळ (क) सं.—वैश्य, व्यापारी ।
 संज्ञा १०० पसुर्, संज्ञा १०० पसुरु (क) क्रि.—हरा
 हो । सं.—हरा रंग ; ताज़गी, ताज़ा होना,
 नवीनता ; हरी घास ।
 संज्ञा १०० पसुर्पु (क) सं.—हरापन, मरकत या
 पत्ते का रंग ।
 संज्ञा १०० पसुळ संज्ञा १०० पसुळे (क) सं.—बच्चा,
 बालक, शिशु ।
 संज्ञा १०० पसुळतन (क) सं.—बचपन,
 शैशव ।
 संज्ञा १०० पसे, संज्ञा १०० हसे (क) सं.—विद्योना. आसन,
 सुंदर आसन : निरर्थक शब्द ।
 संज्ञा १०० पल (क) सं.—बड़ी वृद्ध, फल आदि के
 गिरते समय निकलनेवाली ध्वनि ।
 संज्ञा १०० पलकने (क) अ.—चमकते हुए, आभा
 के साथ ।
 संज्ञा १०० पलंकु, संज्ञा १०० पलंकु (क) क्रि —
 जोर से दबा, ढकेल ।
 संज्ञा १०० पलचु, संज्ञा १०० पलचु (क) क्रि.—
 पटक, अटका, झपट, ढकेल, संघटन कर ।
 सं.—विरोध, बाधा ।
 संज्ञा १०० पलय (तद्) सं.—प्रलयः (तत्) ।
 संज्ञा १०० पलाळ (क) सं.—खोखला, निष्फल ;
 ढगई, धोखा ।
 संज्ञा १०० पलळ (क) सं.—गर्त, गड्ढा ; क्षरना,
 छोटी नदी ।
 संज्ञा १०० पलळि (क) सं.—बच्चों का एक खेल ।
 संज्ञा १०० पलळि (क) सं.—बच्चों का एक खेल ।
 संज्ञा १०० पलळि (क) सं.—पुराना, प्राचीन ; अतीत
 का ; पका हुआ ।

संज्ञा १०० पलळक (क) सं.—उपयोग, अभ्यास ;
 आदत ; पद्धति ।
 संज्ञा १०० पलळिसु (क) क्रि.—अभ्यास कर,
 आदत में डाल, अपने वश में कर, काम
 में ला ।
 संज्ञा १०० पलळग (क) सं.—झड़ा हुआ या सूखा
 पत्ता ।
 संज्ञा १०० पलळिसु (क) क्रि.—दे. संज्ञा १००,
 संज्ञा १०० पलळु (क) वि.—पुराना, प्राचीन ।
 संज्ञा १०० पलळु (क) सं.—सफ़ेद बालों पर
 लगाने का काला रंग ।
 संज्ञा १०० पलळु (क) क्रि.—पुराना वा प्राचीन
 हो ; बासी हो, नष्ट हो ।
 (१) संज्ञा १०० पलळि (क) क्रि.—गाली दे, निंदा
 कर, दूषण कर । सं.—दूषण, निंदा,
 गाली ।
 (२) संज्ञा १०० पलळि (क) क्रि.—कुत्ते को भगा
 या मार । सं.—लोहे की छड़ी या शलाका ;
 कूड़ा-करकट ।
 संज्ञा १०० पलळिवु (क) सं.—निंदा, दूषण,
 गाली ।
 संज्ञा १०० पलळु (क) सं.—जंगल ; कूड़ा-करकट ।
 संज्ञा १०० पलळुव (क) सं.—जंगल, वन । —
 संज्ञा १०० पलळुव = दावाग्नि ।
 संज्ञा १०० पलळु (क) वि.—पुराना, प्राचीन ।
 संज्ञा १०० पलळुके (क) सं.—सोना, शयन ; शयन
 स्थान ।
 संज्ञा १०० पलळित (क) सं.—कपास, रुई ।
 संज्ञा १०० पांगु (क) सं.—रूप, आकार, रंग-ढंग ;
 सौंदर्य, साम्य, समानता. सादृश्य ।
 संज्ञा १०० पांचजन्य (सम्) सं.—श्रीकृष्ण
 के शंख का नाम ; अग्नि, आग ; चंद्रमा ;
 पांच के समूह से संबंधित ।
 संज्ञा १०० पांचालि, संज्ञा १०० पांचाल (सम्)
 सं.—द्रौपदी ।
 संज्ञा १०० पांति (क) सं.—दे. संज्ञा १००.
 संज्ञा १०० पांडर, संज्ञा १०० पांडुर (सम्) सं.
 —धान का रंग, सफ़ेद रंग, पीला रंग ;
 सफ़ेद कोढ़ ।

संस्कृत पांडित्य (सम्) सं. — पण्डिताई, विज्ञता, निपुणता ।
 संस्कृतपांडुरंग (सम्) सं. — श्रीकृष्ण, एक व्यक्ति का नाम ।
 संस्कृत पांड्य (सम्) सं. — दक्षिण के एक राजवंश का नाम, उस राज्य के निवासी ।
 संस्कृत पांथ, संस्कृत पांथस्थ (सम्) सं. — घूमनेवाला, यात्री ।
 संस्कृत पांव (क) सं. — वीर, पराक्रमी या साहसी पुरुष ।
 संस्कृत पांसुल, संस्कृत पांशुल (सम्) सं. — लंपट, नास्तिक मनुष्य ; शिवजी ।
 (१) संस्कृत पाक (सम्) सं. — पशुओं का बच्चा ; एक दैत्य का नाम ।
 (२) संस्कृत पाक (सम्) सं. — भोजन बनाने की क्रिया ; पचन-क्रिया ; हज़म करने की क्रिया ; अलंकार । — शांति शाले (सम्) सं. — रसोई घर ।
 संस्कृत पाकीट (अ. दे.) सं. — Pocket (अंग्रेज़ी), जेब, पाकेट ।
 संस्कृत पाचि (क) सं. — काई ; दांतों पर का मल ; बच्चों की भाषा में — स्तन ।
 संस्कृत पाट (क) सं. — गाना । क्रि. — गीत गाना ।
 संस्कृत पाटल, संस्कृत पाटलि — (सम्) सं. — पाड़र वृक्ष का फूल, पाड़र वृक्ष ।
 संस्कृत पाटि (क) सं. — ढंग, विधान ; रूप, आकार, सादृश्य, साम्य, समता, समानता ; हार, पराजय ; पतन, नाश ।
 संस्कृत पाटु (क) सं. — गिरना, गिराव, पतन ; विनाश ; बहाव की धारा ; अनुभव ; पाना ; ढंग, रीति ; सादृश्य, ठीक होना ; समय का परिमाण ; वश में करना ; नाश करना ; गिरफ्तार करना ।
 संस्कृत पाठ (सम्) सं. — पाठ, सबक ; पढ़ना, अध्ययन ; पुस्तक का पाठ — क = पढ़ने-वाला ; विद्यार्थी ।
 संस्कृत पाठीन (सम्) सं. — पुराणों की कथा-सुनानेवाला ; मछली ।

संस्कृत पाड, संस्कृत पाडु (क) क्रि. — गा, गीत गा, गान कर । (ह. क.) ।
 संस्कृत पाड (क) सं. — जगह, स्थान ।
 संस्कृत पाडग (क) सं. — सागौन का वृक्ष ।
 संस्कृत पाडि (क) सं. — ग्राम, गाँव ; छोटे पौधों का जंगल ।
 संस्कृत पाडिसु (क) क्रि. — गवा, गान करा या करवा (ह. क.) ।
 संस्कृत पाडु (क) क्रि. — गा, गान कर । सं. — गाना, गीत ; विधान, ढंग, उपयुक्तता ; सहना ; कष्ट ; सादृश्य, समता ।
 संस्कृत पाड्य, संस्कृत पाड्यमि (तद्) सं. — प्रथमा तिथि ।
 संस्कृत पाणि (सम्) सं. — हाथ । — संस्कृत ग्रहण (सम्) सं. — विवाह ।
 संस्कृत पाणिनि (सम्) सं. — संस्कृत के प्रसिद्ध व्याकरण विद्वान् ।
 संस्कृत पाण्व (क) सं. — जार, लंपट, व्यभिचारी पुरुष ।
 संस्कृत पाण्वे (क) सं. — जारिणी या कामुक स्त्री, वेश्या ।
 संस्कृत पातक (सम्) सं. — पाप । संस्कृत पातकि = पापी ।
 संस्कृत पातरद्वलु, संस्कृत पातर-गिति (तद्) सं. — ('पात्र' से) — वेश्या, कुलटा ।
 संस्कृत पाताल, संस्कृत पाताळ (सम्) सं. — पाताळ लोक ।
 संस्कृत पाति (क) सं. — भालवाल, खोडुआ, थाला ; क्यारी ।
 संस्कृत पातिव्रत्य (सम्) सं. — पतिव्रता धर्म ।
 संस्कृत पात्र (सम्) सं. — बर्तन ; प्याला ; कोई भी पवित्र जलपात्र ; जलाशय ; दान देने योग्य व्यक्ति ; अभिनेता, नट ; अमात्य ; नदी के दोनों तटों के बीच का स्थान ; योग्य या उपयुक्त व्यक्ति ; योग्यता, औचित्य ; अभिनय करना ; नाचना ।
 संस्कृत पात्रते (सम्) सं. — योग्यता, उपयुक्तता, सामर्थ्य ।

संस्कृत पाथेय (सम्) सं. — पाथेय, सें रास्ते के लिए भोजन ।
 संस्कृत पाद (सम्) सं. — पैर, शरण, प्रकाश किरण, तेजस् ; एक चौथाई पद्य का चरण ; वृक्ष की जड़ ; पहाड़ तलहटी ; अंश, भाग ; अध्याय ।
 संस्कृत पादप (सम्) सं. — वृक्ष, पेड़ ।
 संस्कृत पादर, संस्कृत हादर (क) सं. — जार व्यभिचार । ('पारदार्थ' से)
 संस्कृत पादरक्षे (सम्) सं. — चप्पल, पादुका ।
 संस्कृत पादरस (सम्) सं. — पारा ।
 (१) संस्कृत पादरि (क) सं. — रंडी, चारिणी ।
 (२) संस्कृत पादरि (तद्) सं. — पाटलं (तद्) पाड़र वृक्ष का फूल ।
 संस्कृत पादरिग (क) सं. — व्यभिचारी लंपट ।
 संस्कृत पादाति, संस्कृत पादातिक (सम्) सं. — पैदल सिपाही ।
 संस्कृत पादि, संस्कृत हादि (क) सं. — मार्ग ।
 संस्कृत पादुक, संस्कृत पादुके (सम्) सं. — पादुका, खडाऊ ।
 संस्कृत पाद्य (सम्) सं. — पैर धोने के लिए जल ; पैर धोना ।
 संस्कृत पान (सम्) सं. — पीना, पान करना पीने का बर्तन ; पीने की चीज़ ; शरबत शराब ।
 संस्कृत पानक (सम्) सं. — पानक, शरबत संस्कृत पानीय (सम्) वि. — पीने योग्य सं. — पानक, शरबत ; पानी ।
 (१) संस्कृत पाप (क) सं. — छोटा शिशु ।
 (२) संस्कृत पाप (सम्) सं. — पाप, गुनाह ; बुरा आदमी, दुष्ट, नीच ; बुरी दशा, बुरा हाल, दुर्भाग्य ।
 संस्कृत पापि (सम्) सं. — पापी मनुष्य, दुष्ट, नीच ।

अरु पापे (क) सं.—आँख की पुतली, कनीनिका ; चित्र ।
 अरु पाप्म (सम्) सं.—बुराई, अपराध, पाप ।
 अरु पापर (सम्) सं.—कमीना, पाजी, दुष्ट ; मूर्ख, मूढ़ ; निर्धन, असहाय ; क्षनपद ।
 अरु पाय , अरु पायि (क) क्रि.—लँघन, लँघन कर, पार कर, छलांग मार, भागे बढ़, किसी के जरिण जा; वह । सं.—जाना, लँघन ; हंग, विधान ; उपयुक्तता, समीचीनता ।
 अरु पाय, अरु पाया (क) सं.—नींव, बुनियाद ।
 अरु पायिक (सम्) सं.—पदाति, पैदल सिपाही ।
 अरु पायिसु (क) क्रि.—लँघने दे ; लँघन करा या करवा, पार करा या करवा, बहा या बहवा ।
 अरु पायु (क) सं.—दे. अरु पायु ।
 अरु पार (क) क्रि.—समय की प्रतीक्षा कर, ताक में रह, प्रतीक्षा कर ; चाह, अभिलाषा कर ।
 अरु पारंगत (सम्) सं.—पारंगत, निपुण, पार गया हुआ ।
 अरु पारण, अरु पारणे (सम्) सं.—पारण, उपवास के दूसरे दिन भोजन करना; समाप्ति ।
 अरु पारसु (क) क्रि.—इच्छा कर, चाह कर ।
 अरु पारलौकिक (सम्) वि.—परलोक संबंधी ।
 अरु पारसिक, अरु पारसीक (अ.दे.) सं.—फारस का निवासी ; फारस का घोड़ा ।
 अरु पारायण (सम्) सं.—आद्यंत पढ़ना, पढ़ना, पारायण ।
 अरु पारावत (सम्) सं.—कवृत्तर । अरु पारिवाण, अरु पारिवाल — (तद्) ।

अरु पारावार (सम्) सं.—समुद्र ।
 अरु पाराशर्य (सम्) सं.—व्यासजी ।
 अरु पारि (सम् ?) सं.—प्याला, जलपात्र ।
 अरु पारिजात, अरु पारिजातक (सम्) सं.—पारिजात वृक्ष, देवतरु ।
 अरु पारितोषिक (सम्) सं.—पुरस्कार ।
 अरु पारिपाईवक (सम्) सं.—नौकर, अनुचर ।
 अरु पारिभाषिक (सम्) सं.—सब लोगों से अंगीकृत, मामूली, सामान्य ; पारिभाषिक शब्द ।
 अरु पारिरक्षक (सम्) सं.—संन्यासी, परिवाजक ।
 अरु पारिव (तद्) सं.—पारावतः (तत्) ; कवृत्तर ।
 अरु पारिषद (सम्) सं.—परिषद् में उपस्थित पुरुष, देवता के अनुयायी वर्ग ।
 अरु पारिहार्य (सम्) सं.—कड़ा, कंगन ।
 अरु पारीण (सम्) वि.—पूर्ण परिचित ।
 अरु पारु (क) क्रि.—देख, निरख ; बढ़, हो ; कूद, उछल ।
 अरु पारुग्य (सम्) सं.—परुषता, कठोरता, भाषा में अकोमलता, कुयाच्य ; हिंसा ।
 अरु पारिखु (क) क्रि.—कुदा या कुदवा (ह. क.) ।
 अरु पारु (क) क्रि.—कूद, उछल, लँघन कर, उड़ [गिर] । सं.—कुदान, उछलना, उड़ान ; एक प्रकार की नाव या जहाज़ ; व्यभिचार ; व्यभिचारिणी स्त्री ।
 अरु पार्थि (सम्) सं.—अर्जुन का वेटा, वज्रवाहन ।
 अरु पार्थिव (सम्) सं.—राजा ; शिव ; पैड़ ; गगन, नभ ; एक संवत्सर का नाम ।
 अरु पार्थिवाक (सम्) सं.—जज, न्यायाधीश ।
 अरु पार्थिके, अरु पार्थिके (क) सं.—ब्राह्मणत्व ।

अरु पार्थिके (क) सं.—ब्राह्मण स्त्री ।
 अरु पार्थ्व (सम्) सं.—पार्थ्व, बगल, सामीप्य ।—अर्ध नाथ (सम्) सं.—जैन अर्धत् का नाम ।
 अरु पाळ, अरु पाळ (क) सं.—दूध, क्षीर ; पेड़-पौधों का रस ; भाग, अंश, हिस्सा ।
 अरु पालक (सम्) सं.—पालन करनेवाला, शासक, राजा ; राजकुमार । ।
 अरु पालि (सम्) सं.—अर्ध पाळि (तद्)—श्रेणी, पंक्ति ; समूह ; किनारा, कोर ; दीवार ; दोनों ओर या पूरा बांधना ; कोई स्थान या क्षेत्र ; भाग, हिस्सा ; किसी अक्ष की धार, नोक ; आदि, पूर्व ; शरीर, देह ; कान का छोर ; धब्बा, दाग ; पुल ; अंक, गोदी ; सूत्र, धागा ; लता ; बाण, तीर, भाग ; लज्जा, शर्म ; आर्द्रता ।
 अरु पालिसु (सम्) क्रि.—पालन कर, रक्षा कर ; शासन कर ।
 अरु पालुकार, अरु पालुगार (क) सं.—भागी, हिस्सेदार, साझेदार ।
 अरु पालुगारिके, अरु पालुगारिके (क) सं.—साझेदारी ।
 अरु पाले (क) सं.—नीलकंठ पक्षी ; कान का लटकता हुआ भाग ; एक बड़ा वृक्ष (Mimusops Kauki) सदा हरा रहनेवाला एक वृक्ष (Alstonia Scholaris)
 अरु पालदार (क) सं.—दे. अरु पालुगार ।
 अरु पालुगारिके (क) सं.—दे. अरु पालुगारिके ।
 अरु पावक (सम्) सं.—पावक, अग्नि, भाग ; आचार ।
 अरु पावड, अरु पावडे (तद्) सं.—प्रावृत (तत्) ; वस्त्र ; लहंगा, घाघरा ।
 अरु पावडिग (क) सं.—सपेरा (ह. क.) ।
 अरु पावन (सम्) वि.—पवित्र, शुद्ध, पाप से छुड़ानेवाला । सं.—पवित्रता ; तप ; जल ; धाग ; एक वृत्त का नाम ।
 अरु पावसे (क) सं.—काई ।
 (१) अरु पावु (क) सं.—साँप (ह. क.)

पाठ पाठ

(२) पाठ पाठ (तद्) सं.—पादः (तत्) एक चौथाई भाग ।
 पाठ पाठ (सम्) सं.—रस्सी, जंजीर, बंधन, फंदा ।—संघ पति (सम्) सं.—शिव ।
 पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—पाठ ; पाठडी ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—पत्थर, शिला ; संख्या, विष ।
 पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (तद्) सं.—पाठडी ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—विस्तर, सेज ; कुश्ती का दाँव-पेंच ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—सादृश्य, समानता ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—मिट्टी का बर्तन विशेष ।
 पाठ पाठ (क) सं.—काई ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—दे. पाठपाठ ।
 पाठपाठ पाठ (क) क्रि.—बिछा । (विस्तर चटाई आदि बिछा) सं.—शय्या, विस्तर, बिछावन ।
 पाठ पाठ (क) सं.—तप्त सोने या चाँदी की छड़ी ।
 पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (क) सं.—छोटे प्रदेश या राज्य का नायक ; सेनापति ।
 पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (क) सं.—डेर, छावनी, पड़ाव ; छोटा ग्राम ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—शून्यस्थान, खंडहर, नाश ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—श्रेणी, पंक्ति, क्रम, सिलसिला ।—पाठ कार (क) सं.—क्रम में रखनेवाला, प्रबंधक ।
 पाठ पाठ (क) वि.—(समास में) पीछे, पोछे का ।
 पाठ पाठ (सम्) सं.—पीला या भूरा रंग ; भैंसा ; चूहा ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—पीला या भूरा रंग ; सूर्य का एक गण ; छंदःशास्त्र के अनुसार संस्कृत के एक विद्वान का नाम ; छोटा उबल ;

सर्प विशेष ; एक संवत्सर (५५ वॉ) का नाम ।
 पाठपाठ पाठ (क) क्रि.—सूखने दे, सुखा, जाने दे, निकाल ।
 पाठपाठ पाठ (क) क्रि.—सूख, वापस जा, निकल जा ; दूर हट, पृथक हो ।
 पाठपाठ पाठ (क) क्रि.—पीछे रह, बाद में आ, देर से आ ।
 पाठपाठ पाठ (तद्) सं.—वीचिः (तत्) ; लहर ।
 पाठपाठ पाठ (तद्) सं.—पिच्छ (तत्) ; मयूर की पूँछ, मयूर की पूँछ के पर ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—चाँदी ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) वि.—बहुत परेशान, घबड़ाया हुआ, भयभीत ।
 पाठपाठ पाठ (क) क्रि.—पीज, धुन, ओट, कचरा निकालकर साफ़ कर । सं.—नया निकला फल ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—कान का मल या ट्रेठ ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—पिंड ; समूह, राशि, ढेर ; पिंड जो पितरों का दिया जाता है ; शरीर ; लोहा ; भोजन ; कौर ; टाँगा की पिंडुरी ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—गोला ; गूमड़ा ; भोज्य पदार्थों का गोलाकार कौर ; टाँग की पिंडुरी ।
 पाठपाठ पाठ (तद्) सं.—बंडल, गट्टा ।
 पाठपाठ पाठ (क) क्रि.—निचोड़ ; दुह । (तद्) सं.—झुंड, गिरीह ।
 पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (अ) सं.—वह जो पीछे हो । अ.—पीछे, बाद में ; पहले ।
 पाठपाठ पाठ (क) अ.—पीछे ।
 पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (क) अ. और सं.—दे. पाठपाठ ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—अधिकता, महानता, उन्नति ।
 पाठपाठ पाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (क) सं.—एक पक्षी (Madras Bulbul) ।
 पाठपाठ पाठ (क) क्रि.—अलग कर, वितरण कर ; संवार, कंधी कर ।

पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—पेट, उदर ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—आंख का मैल ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—माप या तोल में न्यूनता ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—मोर का पंख, मोर की पूँछ ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—टोकरी ; पेटी ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—बया पक्षी ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—घड़ा, बटलोई, मथानी ।
 पाठपाठ पाठ (क) क्रि.—पकड़, ग्रहण कर, मुट्टी में भर, मजदूरी आदि देने में न्यूनता कर । सं.—पकड़ ; मुट्टी ; हथिनी ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—इंद्र का वज्र ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—धातु ।
 पाठपाठ पाठ (क) सं.—वेणी, चोटी, जूड़ा ककुद ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—तिल या सरस की खली ।
 पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—पिता ।
 पाठपाठपाठ पाठ (सम्) सं.—दादा ; ब्रह्मा, आत्मज्ञानी ।
 पाठपाठ पाठ (अ. दे.) सं.—फितूर (अरबी विद्रोह ; षड्यन्त्र) ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—पित्त प्रकोप ; पन ; मूर्खता ।
 पाठपाठपाठ पाठ पाठ (सम्) सं.—एक रोग, पित्त पांडु ।
 पाठपाठ पाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (क) सं.—घर के पीछे का खुला स्थान ।
 पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—त्रिशूल ; पाठपाठ का धनुष ।
 पाठपाठपाठ पाठ पाठ, पाठपाठ (सम्) सं.—शिवजी ।
 पाठपाठपाठ पाठ पाठ (सम्) सं.—एक का नाम ।
 पाठपाठ पाठ, पाठपाठ पाठ (सम्) सं.—पिपासा, प्यास ।

ॐ ॐ ॐ विप्लव

ॐ ॐ ॐ विप्लव (सम्) सं.—वट वृक्ष, बरगद का पेड़ ।
 ॐ ॐ ॐ प्रिम् (क) अ. — (समास में) पीछे, बाद में ।
 ॐ ॐ ॐ विरंगि (अ. दे.) सं.—तोप, बंदूक ।
 ॐ ॐ ॐ विरि (क) वि.—बड़ा, गुरु, भारी, महान, श्रेष्ठ ।
 ॐ ॐ ॐ विरि (क) सं.—मांस, गोश्त ।
 ॐ ॐ ॐ विरिक्कि (क) सं.—डरपोक, भीरु ।
 ॐ ॐ ॐ विरे, ॐ ॐ ॐ विरे (क) सं.—पृष्ठ, नितंब ।
 ॐ ॐ ॐ विह (क) वि.—छोटा ।
 ॐ ॐ ॐ विह्णिगे (क) सं.—गदा ।
 ॐ ॐ ॐ विह्नि (क) सं.—पादांगुली की अंगूठी ।
 ॐ ॐ ॐ विशाच (सम्) सं.—विशाच शैतान ; ॐ ॐ ॐ विशाचि—छी. लिं. ।
 ॐ ॐ ॐ विशुन (सम्) सं.— ॐ ॐ ॐ विसुण, ॐ ॐ ॐ विसुणु, ॐ ॐ ॐ विसुण (तद्) — बतलानेवाला, निर्देश करनेवाला ; चुगल-खोर, दुर्जन, खल ; कमीना, नीच, तुच्छ, क्षुद्र, तिरस्करणीय ; मूर्ख ।
 ॐ ॐ ॐ विष्ट (सम्) सं.— ॐ ॐ ॐ विष्टु (तद्) — आटा ; सीसा ।
 ॐ ॐ ॐ विसरु, ॐ ॐ ॐ विसुरु (क) सं.—आंख का मेल ।
 ॐ ॐ ॐ विसुकु, ॐ ॐ ॐ विसुकु (क) क्रि.— दबा, हाथ से कुचल या मिला ; तिरस्कार की दृष्टि से देख ।
 ॐ ॐ ॐ विसुगुट्ट (क) क्रि.—फुसफुसा ।
 ॐ ॐ ॐ विस्तूल (अ. दे.) सं.— Pistol (अंग्रेजी) ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लुगु (क) क्रि.—फट जा, टूट जा ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लि (क) क्रि.— खोल, फेंक, मुक्त, कर ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लुकु, ॐ ॐ ॐ विल्लुकु (क) सं.— बाण का वह भाग जहाँ पंख हो ; धनुष का टेढ़ा भाग ।
 ॐ ॐ ॐ विल्ले (क) सं.—वह जो छोटा हो ; बच्चा ; शावक ; एक जाति विशेष ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लि (क) क्रि.—निचोड़, हाथ से दबा-कर रस निकाल ; सूख जा ; नीरस हो ।

ॐ ॐ ॐ विल्ले (क) सं.—बकरी, हिरन आदि का मल ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) क्रि.—निकाल ; पकड़कर खींच, हटा ; मोड़ दे ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) क्रि.— छिडक ; फूट ; मार । सं.—अपक्व फल ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.— पीड़ा, आसन, गद्दी ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लिके (सम्) सं.—पीठिका ; पीठ, पीड़ा ; ॐ ॐ आधार ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लिसु (सम्) क्रि.—सता, तंग कर, कष्ट दे, व्यथा दे ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.— पीला, पीला रंग ; हलदी ; हरताल ; सोना ; लाल मेहंदी ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) वि.— मोटा, मांसल ; स्थूल ; बड़ा, गाढ़ा ; गोल ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (अ. दे.) सं.—पीपा (Tub) ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—बच्चों का एक वाद्य, सीटी, फुंकनी ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.—दूध ; अमृत ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) क्रि.—चूस (जैसे दूध, पानी आदि) ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) क्रि.— फेंक, विकीर्ण कर । सं.—फेकना; विकीर्ण करना ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—मोरपंख, मोर की पूँछ, मोरपंख की आंस ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (तद्) सं.—पीठिका (तद्) ; पीढ़ी ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.—बाण की वह जगह जहाँ पर लगे होते हैं ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.—बैल ; श्रेष्ठ व्यक्ति ; एक पौधा ।
 (१) ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.— सुर्गा ।
 (२) ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.— समूह, ढेर, राशि, संग्रह ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—सुर्गा ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.— आवारा, धूर्त, दुष्ट ; नटखट ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.—सफ़ेद कमल ;

सफ़ेद रंग ; सफ़ेद छत्र ; वाघ ; चीता ; मेंढक ; दक्षिण पूर्व दिशा का हाथी, दिग्गज ; कल्पवृक्ष ; ध्वज, पताका ब्रह्मा ; यति, मुनि ; घोड़े की ध्वनि ; एक पौधा ; आम्र-वृक्ष ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.— धूर्तता, दुष्टता, नटखटी ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.—लाल जाति की ईख ; माथे का तिलक ; कमल ; एक प्रान्त और उसके निवासी ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.—कुलटा, वेश्या ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (तद्) सं.—पुच्छ, पक्षी की पूँछ ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—भीरता, भय ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) वि.—डरपोक, भीरु ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—भय, डर, भीरुता ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क ?) अ.— सुफ्त, निःशुल्क ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.— कोकिलध्वनि ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—दे. ॐ ॐ ; प्रवेश करना, प्रवेशद्वार ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) क्रि.— प्रवेश करा या करवा ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) क्रि.—प्रवेश कर, अंदर आ । सं.—प्रवेश करना ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—बुदबुदा, फुंसी, सुँह में होनेवाली फुंसी ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—अहंकार, घमण्ड ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—नाश, हानि ; बुराई ।
 ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.—मोरपंख ; घोड़े की पूँछ ; पूँछ ।
 (१) ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.— कुदान, उछलना । ॐ ॐ ॐ विल्लु (क) सं.—त गया सोना । वि.—छोटा ।
 (२) ॐ ॐ ॐ विल्लु (तद्) सं.—पृष्ठ, सफ़ा ।
 (३) ॐ ॐ ॐ विल्लु (सम्) सं.— तह, परत ; अंजुली ; पत्तों का बना दोना ; फली,

ॐपावु (तद्) सं.—पादः (तद्) एक चौथाई भाग ।
 ॐपाश (सम्) सं.—रस्सी, जंजीर, बंधन, कंदा ।—ॐपति (सम्) सं.—शिव ।
 ॐपाण्ड पाण्ड, ॐपाण्ड पाण्ड (सम्) सं.—पाण्ड ; पाण्डवी ।
 ॐपाषाण (सम्) सं.—पत्थर, शिला ; संखिया, विष ।
 ॐपाषाण्डि, ॐपासाण्डि (तद्) सं.—पाण्डवी ।
 ॐपासरो (क) सं.—बिस्तर, सेज ; कुश्ती का दाँव-पेंच ।
 ॐपासटि (क) सं.—सादृश्य, समानता ।
 ॐपासाले (क) सं.—मिट्टी का बर्तन विशेष ।
 ॐपासि (क) सं.—काई ।
 ॐपासिके (क) सं.—दे. ॐपासो.
 ॐपासु (क) क्रि.—बिछा । (बिस्तर चटाई आदि बिछा) सं.—शय्या, बिस्तर, बिछावन ।
 ॐपाळ (क) सं.—तप्त सोने या चाँदी की छड़ी ।
 ॐपाळ्यगार, ॐपाळ्यगार (क) सं.—छोटे प्रदेश या राज्य का नायक ; सेनापति ।
 ॐपाळ्य, ॐपाळ्य पाळ्य, ॐपाळ्ये (क) सं.—डेरा, छावनी, पड़ाव ; छोटा ग्राम ।
 ॐपाळ (क) सं.—शून्यस्थान, खंडहर, नाश ।
 ॐपाळि (क) सं.—श्रेणी, पंक्ति, क्रम, सिलसिला ।—ॐपाळ कार (क) सं.—क्रम में रखनेवाला, प्रबंधक ।
 ॐपिं (क) वि.—(समास में) पीछे, पोछे का ।
 ॐपिंग (सम्) सं.—पीला या भूरा रंग ; भैंसा ; चूहा ।
 ॐपिंगल (सम्) सं.—पीला या भूरा रंग ; सूर्य का एक गण ; छंदःशास्त्र के अनुसार संस्कृत के एक विद्वान का नाम ; छोटा उल्लू ;

सर्व विशेष ; एक संवत्सर (५५ वॉ) का नाम ।
 ॐपिंगिसु (क) क्रि.—सूखने दे, सुखा, जाने दे, निकाल ।
 ॐपिंगु (क) क्रि.—सूख, वापस जा, निकल जा ; दूर हट, पृथक हो ।
 ॐपिंजु (क) क्रि.—पीछे रह, बाद में आ, देर से आ ।
 ॐपिंचे (तद्) सं.—चीचिः (तद्) ; लहर ।
 ॐपिंछ (तद्) सं.—पिच्छं (तद्) ; मयूर की पूँछ, मयूर की पूँछ के पर ।
 ॐपिंजरी (क) सं.—चाँदी ।
 ॐपिंजल (सम्) वि.—बहुत परेशान, घबड़ाया हुआ, भयभीत ।
 ॐपिंजु (क) क्रि.—पींज, धुन, ओट, कचरा निकालकर साफ़ कर । सं.—नया निकला फल ।
 ॐपिंजुष (सम्) सं.—कान का मल या ठेठ ।
 ॐपिंड (सम्) सं.—पिंड ; समूह, राशि, ढेर ; पिंड जो पितरों का दिया जाता है ; शरीर ; लोहा ; भोजन ; कौर ; टाँगा की पिंडुरी ।
 ॐपिंडक (सम्) सं.—गोला ; गूमड़ा ; भोज्य पदार्थों का गोलाकार कौर ; टाँग की पिंडुरी ।
 ॐपिंडि (तद्) सं.—बंडल, गट्टा ।
 ॐपिंडु (क) क्रि.—निचोड़ ; दुह । (तद्) सं.—छुड़, गिरोह ।
 ॐपिंतु, ॐपिंते (अ) सं.—वह जो पीछे हो । अ.—पीछे, बाद में ; पहले ।
 ॐपिंदने (क) अ.—पीछे ।
 ॐपिंदु, ॐपिंदे (क) अ. और सं.—दे. ॐपिंतु.
 ॐपिंपु (क) सं.—अधिकता, महानता, उन्नति ।
 ॐपिकलकि, ॐपिकलारि (क) सं.—एक पक्षी (Madras Bulbul) ।
 ॐपिकु (क) क्रि.—अलग कर, वितरण कर ; संवार, कंधी कर ।

ॐपिंचि, ॐपिंचि (सम्) सं.—पेट, उदर ।
 ॐपिंचु (क) सं.—आंख का मैल ।
 ॐपिंचे (क) सं.—माप या तोल में न्यूनता ।
 ॐपिच्छ (सम्) सं.—मोर का पंख, मोर की पूँछ ।
 ॐपिट, ॐपिटक (सम्) सं.—टोकरी ; पेटी ।
 ॐपिटक (क) सं.—बया पक्षी ।
 ॐपिठर (सम्) सं.—घड़ा, बटलोई, मथानी ।
 ॐपिडि (क) क्रि.—पकड़, ग्रहण कर, मुट्टी में भर, मजदूरी आदि देने में न्यूनता कर । सं.—पकड़ ; मुट्टी ; हथिनी ।
 ॐपिडुगु (क) सं.—इंद्र का वज्र ।
 ॐपिण (क) सं.—घातु ।
 ॐपिणिल् (क) सं.—वेणी, चोटी, जूड़ा ; ककुद ।
 ॐपिण्याक (सम्) सं.—तिल या सरसों की खली ।
 ॐपित, ॐपितृ (सम्) सं.—पिता ।
 ॐपितामह (सम्) सं.—पितामह, दादा ; ब्रह्मा, आत्मज्ञानी ।
 ॐपितूरि (अ. दे.) सं.—फितूर (अरबी) ; चिट्रोह ; षड्यन्त्र ।
 ॐपित्त (सम्) सं.—पित्त प्रकोप ; पागलपन ; मूर्खता ।
 ॐपित्तमाले (सम्) सं.—एक रोग, पित्त पांडु ।
 ॐपित्तल, ॐपित्तल, ॐपित्तल, (क) सं.—घर के पीछे का खुला स्थान ।
 ॐपिनाक (सम्) सं.—त्रिशूल ; शिवजी का धनुष ।
 ॐपिनाकपाणि, ॐपिनाकि (सम्) सं.—शिवजी ।
 ॐपिनाकिनी (सम्) सं.—एक नदी का नाम ।
 ॐपिपास, ॐपिपासे (सम्) सं.—पिपासा, प्यास ।

सिद्ध ७ विप्लव (सम्) सं.—वट वृक्ष, बरगद का पेड़ ।

सिद्ध ७ विम् (क) अ. — (समास में) पीछे, बाद में ।

सिद्ध ७ विरंगि (अ. दे.) सं.—तोप, बंदूक ।

सिद्ध ७ विरि (क) वि.—बड़ा, गुरु, भारी, महान, श्रेष्ठ ।

सिद्ध ७ विरि (क) सं.—मांस, गोश्त ।

सिद्ध ७ विरि (क) सं.—डरपोक, भीरु ।

सिद्ध ७ विरे, सिद्ध ७ विरे (क) सं.—पृष्ठ, नितंब ।

सिद्ध ७ विरि (क) वि.—छोटा ।

सिद्ध ७ विरि (क) सं.—गदा ।

सिद्ध ७ विरि (क) सं.—पादांगुली की अंगूठी ।

सिद्ध ७ विशाच (सम्) सं.—विशाच शैतान ; सिद्ध ७ विशाचि—स्त्री. लिं. ।

सिद्ध ७ विशुन (सम्) सं.—सिद्ध ७ विसुण, सिद्ध ७ विसुणु, सिद्ध ७ विसुण (तद्) — बतलानेवाला, निर्देश करनेवाला ; चुगल-खोर, दुर्जन, खल ; कमीना, नीच, तुच्छ, क्षुद्र, तिरस्करणीय ; मूर्ख ।

सिद्ध ७ विष्ट (सम्) सं.—सिद्ध ७ हिट्ट (तद्)—आटा ; सीसा ।

सिद्ध ७ विसरु, सिद्ध ७ विसुरु (क) सं.—आंख का मैल ।

सिद्ध ७ विसुकु, सिद्ध ७ विसुकु (क) क्रि.—दवा, हाथ से कुचल या मिला ; तिरस्कार की दृष्टि से देख ।

सिद्ध ७ विसुगु, सिद्ध ७ विसुगु (क) क्रि.—फुसफुसा । सिद्ध ७ विसुलु (अ. दे.) सं.—Pistol (अंग्रेजी) ।

सिद्ध ७ विलुगु (क) क्रि.—फट जा, टूट जा ।

सिद्ध ७ विल्लि (क) क्रि.—खोल, फेंक, मुक्त, कर ।

सिद्ध ७ विल्लु, सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—बाण का वह भाग जहाँ पंख हो ; धनुष का देड़ा भाग ।

सिद्ध ७ विल्ले (क) सं.—वह जो छोटा हो ; बच्चा ; शावक ; एक जाति विशेष ।

सिद्ध ७ विल्लि (क) क्रि.—निचोड़, हाथ से दबा-कर रस निकाल ; सूख जा ; नीरस हो ।

सिद्ध ७ विल्ले (क) सं.—बकरी, हिरन आदि का मल ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) क्रि.—निकाल ; पकड़कर खींच, हटा ; मोड़ दे ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) क्रि.—छिडक ; फूट ; मार । सं.—अपक्व फल ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—पीढ़ा, आसन, गद्दी ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—पीठिका ; पीठ, पीढ़ा ; मूल आधार ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) क्रि.—सता, तंग कर, कष्ट दे, व्यथा दे ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—पीला, पीला रंग ; हलदी ; हरताल ; सोना ; लाल मेहंदी ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) वि.—मोटा, मांसल ; स्थूल ; बड़ा, गाढ़ा ; गोल ।

सिद्ध ७ विल्लु (अ. दे.) सं.—पीपा (Tub) ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—बच्चों का एक वाद्य, सीटी, कुंकनी ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—दूध ; अमृत । सिद्ध ७ विल्लु, सिद्ध ७ विल्लु (क) क्रि.—चूस (जैसे दूध, पानी आदि) ।

सिद्ध ७ विल्लु, सिद्ध ७ विल्लु (क) क्रि.—फेंक, विकीर्ण कर । सं.—फेकना, विकीर्ण करना ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—मोरपंख, मोर की पूँछ, मोरपंख की आंस ।

सिद्ध ७ विल्लु (तद्) सं.—पीठिका (तत्) ; पीढ़ी ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—बाण की वह जगह जहाँ पर लगे होते हैं ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—बैल ; श्रेष्ठ व्यक्ति ; एक पौधा ।

(१) सिद्ध ७ विल्लु, सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—सुर्गा ।

(२) सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—समूह, डेर, राशि, संग्रह ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—सुर्गा ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—आवारा, धूर्त, दुष्ट ; नटखट ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—सफेद कमल ;

सफेद रंग ; सफेद छत्र ; वाघ ; चीता ; मेंढक ; दक्षिण पूर्व दिशा का हाथी, दिग्गज ; कल्पवृक्ष ; ध्वज, पताका ब्रह्मा ; यति, मुनि ; घोड़े की ध्वनि ; एक पौधा ; आन्न-वृक्ष ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—धूर्तता, दुष्टता, नटखटी ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—लाल जाति की ईख ; माथे का तिलक ; कमल ; एक प्रान्त और उसके निवासी ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—कुलटा, वेश्या । सिद्ध ७ विल्लु (तद्) सं.—पुच्छ, पक्षी की पूँछ ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—पुच्छतन, सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—भीरुता, भय ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) वि.—डरपोक, भीरु ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—भय, डर, भीरुता ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—सुप्त, निःशुल्क ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—कोकिलध्वनि ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—दे. सिद्ध ७ विल्लु ; प्रवेश करना, प्रवेशद्वार ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) क्रि.—प्रवेश करा या करवा ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) क्रि.—प्रवेश कर, अंदर आ । सं.—प्रवेश करना ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—बुदबुदा, फुंसी, सुँह में होनेवाली फुंसी ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—अहंकार, घमण्ड ।

सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—नाश, हानि ; बुराई ।

सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—मोरपंख ; घोड़े की पूँछ ; पूँछ ।

(१) सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—कुदान, उछलना । सिद्ध ७ विल्लु (क) सं.—तपाया गया सोना । वि.—छोटा ।

(२) सिद्ध ७ विल्लु (तद्) सं.—पृष्ठ, सफा ।

(३) सिद्ध ७ विल्लु (सम्) सं.—तह, परत ; अंजुली ; पत्तों का बना दोना ; फली,

री ; आच्छादन ; पलक ; घोड़े का सुम ;
फल ।
ॐ पुटाणि (क) वि.—छोटा ।
ॐ पुटाणे (क) सं.—मटर, भुना हुआ
।
टि (क) क्रि.—फूट, निकल, छिटक ।
पुट्ट (क) वि.—छोटा, लघु ।
पुट्टि (क) सं.—छोटी टोकरी, टोकरी ;
उदर ।
पुट्टिसु (क) क्रि.—पैदा कर, उत्पन्न-
जन्म दे ।
पुट्ट (क) क्रि.—जन्म ले, पैदा हो ।
—जन्म, उत्पत्ति ; काठ का चमचा ;
खेने का डंडा ।
डि (क) सं.—चूर्ण, पुड़िया, धूल ;
।
पुडुकु, पुडुकुं (क) क्रि.—
न, हँस, तलाश कर ।
पुण (क) सं.—घाव, फोड़ा, व्रण ।
पुणगु, पुणगु, पुणगु, पुणगु
सं.—ऊदविलाव ।
पुणजि (क) सं.—धूल सी एक प्रकार
मिठी ।
पुण्णु, पुण्णु (क) सं.—
, तीर ।
पुणजि (क) सं.— एक प्रकार का
।
पुणिसे, पुणिसे (क) सं.—
ली का पेड़ ।
पुण्णु (क) सं.—दे. पुण्णु.
पुण्य (सम्) सं.—पुण्य, सुकृत, नेकी,
गाई, धार्मिक श्रेष्ठता । वि.— भ्रूच्छा,
इ, पवित्र, शुभ, मंगलप्रद ।
पुण्यक (सम्) सं.—धार्मिक कार्य ।
पुण्यवंत (सम्) सं.— पुण्यात्मा
व, भाग्यवान् । पुण्यवंतं पुण्य-
ल्लु = स्त्री. लिं. ।
पुत्तलिके, पुत्तलिके (सम्)
—गुड़िया, गुड्डा ।
पुत्तलि (तद्) सं.—पुतली, गुड़िया ।

पुत्त, पुत्तु (क) सं.— वल्मीक,
बाँधी, बिल ।
पुत्त पुत्र (सम्) सं.—वेटा ; बच्चा । पुत्त
पुत्रि—स्त्री. लिं. ।
पुत्तके पुत्रिके (सम्) सं.—
पुत्री, बेटी, गुड़िया ।
पुत्ति (क) क्रि.—प्रवेश कर, घुस, अंदर
जा, स्पर्श कर, मिल, एकाकार हो, लग ;
मिलाया जा, लगाया जा ; आच्छादित हो,
ढँक ; आच्छादन कर । सं.—द्वारपार्श्व ।
पुत्तियुत्तु (क) सं.—धार्मिक कार्य
के लिए संग्रह किया जानेवाला धन ।
पुत्तु, पुत्तु (क) सं.—मिलना,
मेल, साझेदारी ।
पुत्तु (क) क्रि.—घुस, प्रवेश कर ;
संकोच कर, सिकुड़ जा, छिप जा ; छिपा,
ढँक ।
पुत्तु (क) सं.— झुरमुट ; आच्छादन ;
ढकन ; छत ; तरकस, तूणीर ; आला ।
पुत्तु पुद्गल (सम्) वि.—सुंदर, मनोहर ।
सं.—आत्मा, जीव शरीर, परमाणु ; वह
जो टुकड़े हुआ हो ।
पुत्तु पुनः (सम्) अ.—पुनः, फिर ।
पुत्तु पुनगु, पुत्तु पुनगु (क) सं.—
कस्तूरी मृग ।
पुत्तु पुत्राग (सम्) सं.—नरश्रेष्ठ ; सफेद
हाथी ; साँड ; सांप ; सदावहार पेड़ ।
पुत्तु पुत्तु (क) क्रि.—मार, ताडन कर ; वध
कर ; फंक ।
पुत्तु पुत्तु (क) क्रि.— चिल्ला, चीख,
कराह, रोदन कर ।
पुत्तु पुत्तु (क) सं.— मारना, मार,
ताडन, रोदन, कोलाहल ।
(१) पुत्तु पुत्तु (क) सं.— झरना, नाला, छोटी
नदी ।
(२) पुत्तु पुत्तु (सम्) सं.—नगर, शहर ; घर ;
गृह ; देह, शरीर ; गणना करना ; तीन
की संख्या का बोधक ; एक राक्षस का
नाम ।

पुत्तु पुत्तु पुत्तु (क) सं.—
—छोटे-छोटे सूखे वृण या लकड़ी के टुकड़ ।
पुत्तु पुत्तु (अ. दे.) सं.— फुरसत
(भरवी) ; अवकाश ।
पुत्तु पुत्तु (सम्) सं.—सामने रखना,
सम्मान ; पुरस्कार ।
पुत्तु पुत्तु (सम्) सं.—पुराना, प्राचीन,
दीर्घकालीन, जीर्ण, सं.—प्राचीन काली
घटना, पुराण ।
पुत्तु पुत्तु (सम्) वि.—प्राचीन, पुराना,
आदिकालीन, जीर्ण, घिसा हुआ ।
पुत्तु पुत्तु (सम्) सं.—शिव ; विष्णु ।
पुत्तु पुत्तु (क) क्रि.—भून । सं.— मुरमुरा ;
रस्सी को दी जानेवाली मरोड़ ; बल, शक्ति,
हिम्मत, गर्व, साहस ; घमंड ;
पुत्तु पुत्तु, पुत्तु पुत्तु (क)
क्रि.—द्वेष कर ; स्पर्धा कर, होड़ ले ।
पुत्तु पुत्तु, पुत्तु पुत्तु (क) सं.—मादा
तोता ।
पुत्तु पुत्तु (क) सं.—स्पर्धालु ; द्वेष-
करनेवाला ।
पुत्तु पुत्तु (क) सं.—स्पर्धा, होड़ ; द्वेष ;
जाताशौच ।
पुत्तु पुत्तु (सम्) सं.—पुरुष, मनुष्य, नर ;
पति ; आत्मा ; विश्वात्मा, विष्णु, ब्रह्मा,
शिव ; पुल्लिंग ; प्रथम मध्यम, उत्तम,
पुरुष ; आंख की पुतली ; एक वृक्ष ।
पुत्तु पुत्तु (सम्) सं.—चार पुरु-
षार्थ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।
पुत्तु पुत्तु पुत्तु (क) सं.—सत्व,
योग्यता, ज्ञान, अर्थ-सार ; शक्ति, शारी-
रिक सामर्थ्य ।
पुत्तु पुत्तु (क) सं.—उन्नत या श्रेष्ठ पद
या स्थान ; मादा तोता ।
पुत्तु पुत्तु (क) सं.—फोड़ा, फफोला ।
पुत्तु पुत्तु पुत्तु (सम्) सं.—आगे-
जाना, प्रगति ।
पुत्तु पुत्तु (क) सं.—दे. पुत्तु.

स्युद्धं पुचुं

स्युद्धं पुचुं (क) सं.—नाश, विनाश; बुराई, हानि ।
 स्युद्धं पुलक (सम्) सं.—रोमांच, शरीर के रोंगटों का खड़ा होना ।
 स्युद्धं पुलि, स्युद्धं हुलि (क) सं.—बाघ, व्याघ्र ।
 स्युद्धं पुलिंद (सम्) सं.—प्राचीन असभ्य जाति विशेष ।
 स्युद्धं पुलोम (सम्) सं.—एक राक्षस का नाम; एक ऋतु ।
 स्युद्धं पुलिंग (सम्) सं.—पुलिंग ।
 स्युद्धं पुल्ले, स्युद्धं हुल्ले (क) सं.—हरिण, हिरन ।
 स्युद्धं पुल्लेग (क) सं.—बातूनी मनुष्य ।
 स्युद्धं पुच्च, स्युद्धं हुच्च, स्युद्धं हुचु, स्युद्धं हूचु (क) सं.—फूल, पुष्प; आंख की एक बीमारी ।
 स्युद्धं पुष्कर (सम्) सं.—कमल, नीलकमल, हाथी की जिह्वा की नोंक; ढोल का चाम; तलवार की धार; आकाश; वायुमंडल; पिंजड़ा; मद, नशा; जल; युद्ध; मेल, सम्मेलन; नल महाराज के भाई का नाम; भेषज, औषध; गुण ।
 स्युद्धं पुष्करिणि (सम्) सं.—कमलों का तालाव ।
 स्युद्धं पुष्कल (सम्) वि.—बहुत अधिक, विपुल, पूर्ण, संपन्न ।
 स्युद्धं पुष्प (सम्) सं.—दे. स्युद्धं ।
 स्युद्धं पुष्पेवु (सम्) सं.—कामदेव ।
 स्युद्धं पुष्पराग (सम्) सं.—पुखराज ।
 स्युद्धं पुष्कले (क) अ.—तुरंत, चुपचाप, फौरन ।
 स्युद्धं पुसलायिसु (अ. दे.) क्रि.—फुसला ।
 स्युद्धं पुसि (क) क्रि.—झूठ या मिथ्या कह या बोल; फलित न हो । सं.—झूठ, मिथ्या ।
 स्युद्धं पुलिग (क) सं.—झूठ बोलनेवाला ।
 स्युद्धं पुस्तक, स्युद्धं पुस्तक, स्युद्धं पुस्तुक, स्युद्धं पोस्तक, स्युद्धं पोस्तग, स्युद्धं पोस्तुग, स्युद्धं पोत्तगे, स्युद्धं पोत्तिगे,

स्युद्धं होत्तगे, स्युद्धं होत्तिगे (सम् —तद्) सं—पुस्तक, किताब, ग्रंथ ।
 स्युद्धं पुलक, स्युद्धं पुलके (तद्) सं—पुलक, रोमांच ।
 स्युद्धं पुलि (क) सं.—खटाई ।
 स्युद्धं पुल, स्युद्धं हुल (क) सं.—कीड़ा, कीट; साँप ।
 स्युद्धं पुलि (क) क्रि.—कीड़ों से खाया जाना ।
 स्युद्धं पुलुकु (क) सं.—कीड़ों से खाये जाने की स्थिति; सड़ना; थोता, बेकार, निस्सार ।
 स्युद्धं पुलुगि, स्युद्धं हुगि (क) सं.—खिचड़ी ।
 स्युद्धं पुलुगु (क) क्रि.—जला, दहन कर; सेंक ।
 स्युद्धं पू (क) क्रि.—पुष्पित हो, विकसित हो, कुसुमित हो । सं.—पुष्प, फूल ।
 स्युद्धं पूरा (सम्) सं.—राशि, ढेर, समूह; सुपारी का पेड़, सुपारी ।
 स्युद्धं पूरारि (सम्) सं.—अर्चक, पूजारी ।
 स्युद्धं पूजिसु (सम्) क्रि.—पूजा कर, अर्चना कर; सम्मान कर ।
 स्युद्धं पूजे (सम्) सं.—पूजा ।
 स्युद्धं पूज्य (सम्) सं.—पूजने योग्य, पूज्य, आदरणीय ।
 स्युद्धं पूज्ये (सम्) सं.—आदरणीय स्त्री ।
 स्युद्धं पूड, स्युद्धं हुड (क) क्रि.—लगा, डाल, बांध; गाड़; मिला, जोड़; तैयार कर ।
 स्युद्धं पूण (क) क्रि.—तीर चढ़ा; प्रारंभ कर; स्वीकार कर, मान; वादा कर, वचन दे, प्रतिज्ञा कर; दावा कर, चुनौती दे । सं.—वादा, प्रतिज्ञा, वचन ।
 स्युद्धं पूणिग (क) सं.—धनुर्धारी, तीर-दाज्ञ ।
 स्युद्धं पूत (सम्) वि.—पवित्र, शुद्ध ।
 स्युद्धं पूतने (सम्) सं.—राक्षसी पूतना ।
 स्युद्धं पूतु (क) अ.—अच्छा!, भला!
 स्युद्धं पून् (क) क्रि.—लगा, प्रयत्न कर ।

स्युद्धं पूरण (सम्) सं.—पूर्ति, समाप्ति, भरना; सृजन, फुलाव ।
 स्युद्धं पूरयिसु, स्युद्धं पूरयसु, स्युद्धं पूरयिसु, स्युद्धं पूरिसु (सम्) क्रि.—पूर्ण कर, समाप्त कर; भर; पूर्ण हो, भरा जा ।
 स्युद्धं पूर्ण (सम्) वि.—पूर्ण, भरा हुआ, पूरा, समूचा, कुल; दृढ़ । सं.—हूर्ण (तद्) सं—गुडापूप में रखने का पकायी गई अरहर की दाल और गुड का मिश्रण ।
 स्युद्धं पूर्णमे, स्युद्धं पूर्णिमे, (सम्) सं.—पूर्णिमा ।
 स्युद्धं पूर्त, स्युद्धं पूर्ते (सम्) वि.—पूरा, भरा हुआ, पूर्ण ।
 स्युद्धं पूर्व (सम्) वि.—पुराना, प्राचीन, पहले का, पूर्वीय । सं.—पूर्वदिशा; पूर्वज; पुरानी परंपरा ।
 स्युद्धं पूर्वि (सम्) सं.—एक राग विशेष ।
 स्युद्धं पूर्विक, स्युद्धं पूर्विक (सम्) सं.—पूर्वज ।
 स्युद्धं पूवडिग, स्युद्धं हुवडिग (क) सं.—फूल बेचनेवाला ।
 स्युद्धं पूवळ (क) सं.—फूल बेचनेवाला ।
 स्युद्धं पूवु (क) सं.—फूल, पुष्प ।
 स्युद्धं पूसु (क) क्रि.—लेपन कर, विलेपन कर, लगा । सं.—लेपन कार्य ।
 स्युद्धं पूल् (क) क्रि.—लगा, गाड़; ढक, आच्छादन कर ।
 स्युद्धं पूच्छे (सम्) सं.—पूछना; प्रश्न, पूछ-ताछ ।
 स्युद्धं पूथक् (सम्) अ.—अलग अलग, भिन्न, एकाकी, अकेला ।
 स्युद्धं पूथिवि, स्युद्धं पूथिवी (सम्) सं.—भूमि ।
 स्युद्धं पूथु (सम्) सं.—कई व्यक्तियों का नाम; एक प्रकार का छोटा वीज; एक दवाई । वि.—चौड़ा, विस्तृत । अधिक, बड़ा ।
 स्युद्धं पूथुवि (तद्) सं.—पृथिवी (तद्); भूमि ।

स्युद्धसङ्ग न पृथुस्थान (सम्) सं. — नगर, शहर ।
 स्युद्धि पृथिव (सम्) सं.—धरा, भूमि; पृथ्वी तत्त्व; बड़ी इलायची; एक छंद का नाम ।
 —साल पाल (सम्) सं.—राजा ।
 स्युद्ध पृष्ट (सम्) वि.—पूछा हुआ ।
 स्युद्ध पृष्ट (सम्) सं.—पृष्ट, पीठ, पिछला भाग, पुस्तक का पन्ना ।
 स्युद्ध पंग (क) सं.—मूर्ख या वेवकूफ मनुष्य ।
 स्युद्धसु पंगुसु (क) सं.—बच्ची ।
 स्युद्धि पेंचे (क) सं.—मयूर, मोर ।
 स्युद्धि पेंटे (क) सं.—(मिट्टी का) ढेला ।
 स्युद्धि पेंड (क) सं.—छी; औरत ।
 स्युद्धि पेंडति, स्युद्धि पेंडिति (क) सं.— पत्नी ।
 स्युद्धि पेंडि, स्युद्धि पिंडि (क) सं.— गट्टा, बंदल ।
 स्युद्धि पुपु (क) सं.— महानता, विशालता, अधिकता, उन्नति ।
 स्युद्धि सु पेंकलिसु (क) क्रि.— अधिक हो, समृद्ध हो; गर्वित हो, घमंड कर ।
 स्युद्धि पेंगल् (क) सं.—कंधा ।
 स्युद्धि पेंचर, स्युद्धि पेंचर (क) सं.— सावधानी ।
 (१) स्युद्धि पेंचु (क) क्रि.— अधिक हो । सं.—अधिकता ।
 (२) स्युद्धि पेंचु (तद्) सं.—पित्त (तत्); मूर्खता; पागलपन ।
 स्युद्धि पेंटारि, स्युद्धि पेंटारिगे (तद्) सं.— बड़ी पेटी ।
 स्युद्धि पेंट (क) सं.—(मिट्टी का) ढेला ।
 स्युद्धि पेंटल्, स्युद्धि पेंटलु (क) सं.— बच्चों की खेलने की बंदूक ।
 स्युद्धि पेंटिगे (तद्) सं.—पेटी ।
 स्युद्धि पेंटु (क) सं.—मार, प्रहार, चोट; गर्व; दर्प; साहस ।
 स्युद्धि पेंट्टे (क) सं.—मिट्टी का ढेला ।
 स्युद्धि पेंड (क) वि.—पीछे का, पिछला, पूर्व का ।
 स्युद्धि पेंडसु (क) सं.— कठोरता, कड़ापन, सख्ती, चिकना न होना; कहुआपन; (वाणी

की) की कठोरता; कष्ट, तकलीफ ।
 स्युद्धि पेंडेय (क) सं.—अन्य मनुष्य, नया आदमी ।
 स्युद्धि पेंण (क) सं.—स्त्री, औरत (ह. क.) ।
 स्युद्धि पेंण (क) सं.—शव, मुर्दा ।
 स्युद्धि पेंणगु, स्युद्धि पेंणसु (क) क्रि.— जूझ, लड़, झगड़ा कर । स्युद्धि पेंणसु (क) सं.—मिलन, आलिंगन ।
 स्युद्धि पेंणे (क) क्रि.—रस्सी आदि को मिलाकर मरोड़, पिरो । सं.—मरोड़; मिलन ।
 स्युद्धि पेंणु (क) सं.—स्त्री । स्युद्धि पेंणतन = स्त्रीत्व ।
 स्युद्धि पेंतु, स्युद्धि हेतु (क) कृ.— जन्म देकर ।
 स्युद्धि पेंदे, स्युद्धि हेदे (क) सं.— धनुष की ढोरी ।
 स्युद्धि पेंह (क) वि.—बड़ा, महान । सं.— मूर्ख, वेवकूफ ।
 स्युद्धि पेंहि (क) सं.—बड़ी या अधिक आयु- वाली स्त्री; मूर्ख स्त्री ।
 स्युद्धि पेंने (क) सं.—एक नदी का नाम ।
 स्युद्धि पेंरे, स्युद्धि हेरे (क) सं.—केंचुली ।
 स्युद्धि पेंर, स्युद्धि पेंरु (क) क्रि.— प्राप्त कर, उपलब्ध कर, पा; जन्म दे, उत्पन्न कर; गाढ़ा हो, जम जा (जैसे दही, घी आदि) (ह. क.) ।
 स्युद्धि पेंर (क) वि.—बाहर का, पराया, पीछे का, बाह्य अन्य ।
 स्युद्धि पेंरगु, स्युद्धि पेंरगे (क) सं.—वह जो पीछे हो ।
 स्युद्धि पेंरे (क) सं.—अर्धचंद्र, चंद्र ।
 स्युद्धि पेंरिसु (क) क्रि.—बढ़ा, अधिक, वृद्धि कर ।
 स्युद्धि पेंरु (क) क्रि.—बढ़ जा, अधिक हो, असंख्य हो, विस्तार हो; फूल जा । सं.— वृद्धि; बढ़ना, आधिक्य, विस्तार ।
 स्युद्धि पेंरुगे (क) सं.—आधिक्य, अधिकता । वृद्धि ।
 स्युद्धि पेंरे (क) सं.— अधिकता, महानता, बढ़पन, गौरव, सम्मान; गर्व, नाज ।

स्युद्धि पेंसर्, स्युद्धि पेंसरु, स्युद्धि हेसरु(क) सं.—नाम; किसी का भी नाम; यश, कीर्ति ।
 स्युद्धि पेंसरु; स्युद्धि पेंसरु (क) सं.— मूँग (Green gram) (ह. क.) ।
 स्युद्धि पेंसु (क) सं.—भय, डर, भीति ।
 स्युद्धि पेंसरु, स्युद्धि पेंसरु (क) क्रि.—कॉप, भयभीत हो ।
 स्युद्धि पेंसरिसु (क) (क्रि)—डरा; कंपा ।
 स्युद्धि पेंसरु (क) सं.—झगड़ा, कलह ।
 स्युद्धि पेंसु (क) सं.—कंधे के हड्डी—लंगड़ा; लला, अपाहिज । स्युद्धि पेंसुवि — स्त्री- लिं. ।
 स्युद्धि पे (क) सं.—कंधे हे—पागलपन; विभ्रम, भ्रान्ति ।
 स्युद्धि पेंकुणि, स्युद्धि पेंकुलि (क) सं.— राक्षस; पागलपन; विभ्रम ।
 स्युद्धि पेंचक (सम्) सं.—उल्लू; हाथी की पूंछ की जड़; लीख ।
 स्युद्धि पेंचाट (अ. दे.) सं.—[‘पेंच’ — (फ़ारसी) से] कष्ट, तकलीफ, उलझन ।
 स्युद्धि पेंचकि (सम्) सं.—हाथी ।
 स्युद्धि पेंट (क) सं.—पगड़ी ।
 स्युद्धि पेंटे (क) सं.—बाज़ार, मंडी । (तद्) सं.—पेठी; टोकरी ।
 स्युद्धि पेंतु (क) सं.—राक्षस; भ्रान्ति, विभ्रम ।
 स्युद्धि पेंरु (क) सं.—लीख ।
 स्युद्धि पेय (सम्) वि.—पीने योग्य; स्वादिष्ट, रुचिकर । सं.—पेय पदार्थ, शरबत ।
 स्युद्धि पेंरु (क) वि.—बड़ा (समास में) ।
 स्युद्धि पेंरणि, स्युद्धि पेंरणे (क) सं.—नाच, नृत्य ।
 स्युद्धि पेंरु, स्युद्धि पेंरु (क) क्रि.— फैला, विकीर्ण कर, मुक्त कर; लाद, एक वस्तु पर दूसरी वस्तु रख । सं.— लादना, बोझ, भार ।
 स्युद्धि पेंरु (क) क्रि.—कॉप; धरथरा । सं.— कंपन ।

सैलव पेलव (सम्) वि.—सुकुमार, सुको-
मल; पतला, दुबला ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (सम्) वि. —
कोमल, मुलायम, महीन, पतला ।
सैलव पेशिके (क) सं.—गंदगी, मैल, जुगुप्सा
(ह. क.) ।
सैलव पेशि, सैलव पेशि (क) सं.—पिटारी ।
सैलव पेश, सैलव पेश, [सैलव पेश] (क)
क्रि.—कह, बोल, बतला; आज्ञा दे ।
सैलव पेशिके सैलव पेशिके (क) सं.—
बोलना, धोल; नाम, यश ।
सैलव पेशिके (क) सं.—कहना, बोलना,
बतलाना ।
सैलव पेश (क) वि.—ऊपर का; बाह्य, दूसरा ।
सैलव पेशल (सम्) सं.—इकावनवें संवत्सर
का नाम ।
सैलव पेशल (अ. दे.) सं.—पैरों में बांधने
की छोटी-छोटी घण्टियां, पायल ।
सैलव पेशल (अ. दे.) सं.—पायजामा ।
सैलव पेशल (सम्) वि.—पिता संबंधी,
परंपरा से प्राप्त ।
सैलव पेशल (सम्) वि.—पित्त संबंधी । सं.—
पित्त; पागलपन; मूर्खता ।
सैलव पेशल पेशलान्, सैलव पेशल पेशलान (अ.
दे.) सं.—पहलवान ।
सैलव पेश, सैलव पेश (क) सं.—सोना,
सुवर्ण, हेम ।
सैलव पेश (क) सं.—आवारा, हीठ ।
सैलव पेश (क) सं.—मूंगा ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) सं.—
खिचड़ी (मूंग की दाल और चावल से
बनाई जाती है) ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—उबाल, उफान
भाने दे ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—उफान आ, उबल;
फूल जा । सं.—उफान ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—ताक में रह । सं.—
ताक ।
सैलव पेशल (क) सं.—दे. सल्ल.

सैलव पेशल (क) सं.—सोने की कांति, सोने
की बेंत ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—पा, प्राप्त कर;
मिला, जोड़ । सं.—मिलन, मेल, समूह;
मरण ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—प्रवेश करके, घुसकर,
अंदर पहुँच कर ।
सैलव पेशल (क) सं.—कोयल, कोकिल ।
सैलव पेशल (क) सं.—कर, राजकर ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) सं.—
चमक, दमक, कांति, छवि ।
सैलव पेशल (क) सं.—विस्तार ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल, सैलव पेशल
पेशल (क) सं.—प्रशंसा, कीर्ति । क्रि.—
—प्रशंसा कर, स्तुति कर ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) सं.—
प्रशंसा करना, प्रशंसा, स्तुति ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—प्रवेश करा, घुसा ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—प्रवेश कर, जा, घुस ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—धुआँ निकल या आ ।
धूम्रपान कर । सं.—धुआँ, धूम्र ।
सैलव पेशल (क) वि.—साफ, शुद्ध; सफेद ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—प्रकट हो, स्फुरित
हो ।
सैलव पेशल (क) सं.—चमक, कांति;
नदी ।
सैलव पेशल (क) सं.—मूक, गूंगा ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल, सैलव पेशल
(तद्) सं.—पुट: (तद्) पोटली ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) सं.—खोखला,
कोटर ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) सं.—
भूसा, भूसी ।
सैलव पेशल (क) सं.—खोखला, कोटर; पेट,
उदर ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) सं.—
चमक, कांति, आभा, सौंदर्य; दर्प, वैभव,
शक्ति ।

सैलव पेशल (क) क्रि.—काँप, थरथरा;
निकल जा, स्फुरित हो, प्रकट हो ।
(१) सैलव पेशल (क) सं.—एक प्रकार की
पालकी ।
(२) सैलव पेशल (तद्) सं.—पृथ्वी
(तद्); भूमि ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क)
क्रि.—पिता, मार (प्रे.) ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—मार, पीट; निकल आ;
काँप, लग । सं.—उदर, पेट; विस्तार;
लंबाई; बाण का भाग जो निकाला गया
हो; कौंछ ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) क्रि.—
लग, जुड़, मिल । सं.—लगना, मिलना;
झगड़ा, कलह ।
सैलव पेशल (क) सं.—लड़ना; झगड़ा,
लड़ाई ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—जोड़, जुड़, लग,
मिल ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—उमड़, निकल,
फूल, फट जा, उत्पन्न हो ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) सं.—
—दिन (Day-time) सवेरा, प्रातःकाल ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) क्रि.—
(दिया) जला :
सैलव पेशल (क) क्रि.—(दिया) जल, जल
उठ; अधिक जल जा । सं.—ज्वाला,
जलना; सूर्य, समय ।
सैलव पेशल (क) सं.—पीड़ा, संकट,
दुःख, दर्द ।
सैलव पेशल (क) सं.—ओढनी; ढकन;
छत, छज्जा ।
सैलव पेशल, सैलव पेशल (क) सं.—
झाड़ी, पौधों का समूह ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—उठ, निकल आ,
फूटकर आ, बाहर आ; प्रसिद्ध हो ।
सैलव पेशल (क) सं.—फूटकर आना,
निकलना; प्रसिद्धि ।
सैलव पेशल (क) क्रि.—कर, संपन्न कर ।

श्रीदिसु पोटिसु (क) क्रि.—ढक, ओढ़ा ।
 श्रीदुं००० पोटुं००० (क) क्रि.—छिपा ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—ढक, ओढ़ा । सं.—
 तरकस, तूणीर ; झुरमट, पौधों का समूह ;
 गट्टा, बंडल ; छप्पर ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—प्राप्त कर, पा, उप-
 लब्ध कर ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—सोना, सुवर्ण, हेम ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—झरना ; नदी ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—कन्नड के एक प्राचीन
 कवि का नाम जो 'रत्नत्रय' में एक है ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—डाल,
 ऊपर से डाल ; मार, पीट, ताडन कर । सं.—
 मारना, पीटना ; डालना ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—मारना, पीटना ;
 ताडन, प्रहार ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—
 लुढ़क, लुंठित हो ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—राशि, ढेर ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—लुढ़का ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—
 झाड़, बुहारी ।
 (१) श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—पालन कर, पोषण
 कर, रक्षा कर, पालित हो । सं.—पालन-
 पोषण ।
 (२) श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—जुड़, मिल, संयुक्त
 हो । सं.—मिलना, पास-पास होना ;
 सामीप्य, पड़ोस ; बाड़ा, परत ।
 श्रीदुं० पोटुं० पोटुं० (क) क्रि.—पालन-पोषण
 करा या करवा ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—सिर
 पर वहन कर या धारण कर, उठा ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क)
 अ.—बाहर ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—सिर पर का बोझा ;
 धंधा, काम ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—सिर पर वहन
 कर, लाद ।

श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—बोझा, भार (गट्टा
 आदि) ।
 श्रीदुं० पोटुं० पोटुं० (क) सं.—लहर, तरंग ।
 श्रीदुं० पोटुं० पोटुं० (क) सं.—मिलन, स्पर्श,
 साहचर्य, सामीप्य ।
 श्रीदुं० पोटुं० पोटुं० (क) सं.—सहचर,
 मित्र ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—लग, सादृश्य या
 समान हो ; सी । सं.—नीचता, तुच्छता,
 कमीनापन ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—क्षेत्र,
 खेत ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—अलूत स्त्री, चमा-
 रिन, हरिजन स्त्री ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—लंपट, व्यभिचारी ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—
 ढंग, विधान, रीति ; परिस्थिति ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—गंदगी, मैल ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—अशुचि, बच्चे के जन्म
 के कारण होनेवाली अशुद्धि ; स्त्रियों का
 रजस्वला होना ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—नीचता, कमीनापन ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—
 निष्ठुरता ; बुराई ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—नीच काम, बुराई ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं०
 वि.—नया, नवीन, नव ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—देहरी ।
 श्रीदुं० पोटुं० पोटुं० (क) क्रि.—श्रीदुं० पोटुं०
 पोटुं०—लगा, मिला, जोड़ा ; मथ,
 हिला ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—हिल, आंदोलित हो,
 मथा जा, रगड़, भोंक ; रस्सी की मरोड़ ।
 सं.—मथानी ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—
 चबा, चर्वित कर ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—चमक, दमक, कांति,
 प्रकाश, झलना, प्रेख ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—प्रकाशित हो, चमक,
 दमक ; लुंठित हो ; इधर-उधर हिल, झल ।

श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—निस्सार पदार्थ,
 थोथा, बेकार ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—आकार, रूप ।
 श्रीदुं० पोटुं०, श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—
 रहने का स्थान, शहर, नगर, बस्ती ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—नदी ; मार्ग, रास्ता ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—सूर्य, प्रातःकाल ;
 समय ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—जा, गमन कर ; प्रस्थान
 कर, चल ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—जानेवाला ; आवारा,
 दुष्ट, बेकार आदमी ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—आवारा, दुष्ट,
 लफंगा ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—चला, गमन
 करा ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—जा, गमन कर, चल ;
 निकल जा ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—भीरु ; कापुर ; आवारा,
 गुण्डा, दुष्ट ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—मिलाना ; सादृश्य,
 समानता ; स्पर्धा, होड़ ; खोखला, कोटर ;
 कदरा ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—जोड़, मिलाप ; विभाग,
 टुकड़े करना ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—गूँथ ; पिरो ।
 श्रीदुं० पोटुं० (सम्) सं.—किसी जानवर का
 बच्चा ; नाव ; जहाज़ ; वस्त्र, पहनावा ।
 श्रीदुं० पोटुं० (सम्) सं.—सुअर या थूथन ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—लड़, मलयुद्ध कर ।
 सं.—मलयुद्ध, झगड़ा, लड़ाई ; विल ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—लड़ा, युद्ध करा
 या करवा ।
 श्रीदुं० पोटुं० पोटुं० (क) सं.—मल, पहलवान ;
 मलयुद्ध, लड़ाई, संघर्ष ; विरोध ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) सं.—लड़ना ; युद्ध, संघर्ष ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) क्रि.—समान हो, सादृश्य
 हो । सं.—सादृश्य ।
 श्रीदुं० पोटुं० (क) वि.—नीच, लफंगा ।

संज्ञासूची (क) क्रि.—समानता दिखाना करना ।

संज्ञासूची (क) क्रि.—दे. संज्ञासूची ।

संज्ञासूची (क) सं.—समानता, सादृश्य ; तुलना ।

संज्ञासूची (सम्) क्रि.—पोषण कर ; रक्षण कर ।

संज्ञासूची (क) क्रि.—चीर, विदीर्ण कर, टुकड़े कर । सं.—टुकड़ा, भाग, खंड, विभक्त पदार्थ ; रचना, कला की रचना ।

संज्ञासूची (क) सं.—खोखला ।

संज्ञासूची (अ. दे.) सं.—फौज़ (शरबी) ; सेना, टुकड़ी ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—पुत्र का पुत्र, पोता । संज्ञासूची=पोती ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—पौरुष, विक्रम, बहादुरी । वि.—पुरुष संबन्धी ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रकटन, सूचना ; घोषणा ।

संज्ञासूची (सम्) क्रि.—प्रकटन कर प्रकाशित कर ; घोषणा कर, बताना ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—संगठन पगरण (तद्)—विषय, प्रसंग ; अध्याय, परिच्छेद ; अवसर, मौका ; मुखबंद, भूमिका ; रूपक का एक भेद ।

संज्ञासूची (सम्) क्रि.—प्रकाशित कर, प्रकट कर, चमका ; प्रसिद्ध कर ।

संज्ञासूची (सम्) वि.—फुटकर, फुटकल ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—स्वभाव ; बनावट, आकार ; परंपरा ; उद्गम स्थल ; सांख्य दर्शन में उक्त प्रकृति ; नमूना ; आदर्श ; स्त्री ; निसर्ग ; कुदरत ; अमात्य, मन्त्री ; गुणत्रय ; तत्व ; राजतंत्र के अंग ; करने योग्य कार्य ; कारण, हेतु विशेष प्रकार का अभ्यास, शील ; बलि ; आदि और अंत ; त्यागना, त्याग ; समूह ; रज, धूल ; प्रधान ; श्रेष्ठ ; जननेन्द्रिय ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रक्रिया, ढंग, तरीका ; संस्कार, कर्म ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—धोना, साफ करना ; माँजना ।

संज्ञासूची (सम्) वि.—गाढा, कठोर, दृढ़, अधिक, बहुत ।

संज्ञासूची (सम्) वि.—अत्यन्त तीव्र, तेज, उग्र, प्रखर, बलवान, भयानक ; क्रोधी ; साहसी ।

संज्ञासूची (सम्) क्रि.—प्रचार कर ।

संज्ञासूची (सम्) वि.—बहुत, अधिक, विपुल ; बड़ा, विस्तृत ; प्रसिद्ध ।

संज्ञासूची (सम्) वि.—ढका हुआ, परिवेष्टित, गोप्य ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—रात को जागने वाला ; रक्षक, असिभावक ; कृष्ण का एक नाम ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—ब्रह्मा ; ब्रह्मा के दस पुत्र ; राजा ; लिंग ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—वह स्त्री जिसके बच्चे हो ; माता ; गर्भवती स्त्री ; भाई की पत्नी ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रजा, लोग ; संतान, औलाद ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रज्ञा, बुद्धि, ज्ञान, प्रतिभा, विवेक, समझ ; बुद्धिमती स्त्री ।

संज्ञासूची (सम्) क्रि.—प्रज्वलित कर, जला ; चमका ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रणाम, नमस्कार ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रेम, प्रीति ; मैत्री, स्नेह ; अनुग्रह, दया ; विनय, याचना ; विवाह ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—अोंकार ; एक छोटा ढोल, मृदंग ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रणाम, संज्ञासूची प्रणिपात (सम्) सं.—नमस्कार ।

संज्ञासूची (सम्) वि.—गरम, उष्ण,

जलनेवाला, पीड़ाकर, संतप्त करनेवाला ; साहसी, वीर, पराक्रमी ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रतिशोध, बदला ; विरोध, विपक्षता, सामना, चिकित्सा ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—विरोध, विपरीत होना ;

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रतिशोध, बदला ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—पीकदान ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—विरोध ; घात, चोट ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रतिज्ञा, वादा, वचन ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रतिदिन, प्रतिनित्य (सम्) सं.—रोज़, हर दिन ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रथमा तिथि ; गौरव, सम्मान, निम्नता ।

संज्ञासूची (सम्) क्रि.—उत्पादन कर, उपयोग कर, समझा ; निरूपित कर, किसी बात को स्थिर कर, निंदा कर, निंदारोपण कर ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—विघ्न उत्पन्न करनेवाला, विघ्नभूत ; प्रेत ।

संज्ञासूची (सम्) क्रि.—विरोध कर, सामना कर, मुकाबला कर ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रतिभा ; बुद्धि, उज्वलता, चमक ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—दृष्टांत, उदाहरण ; प्रतिमा, मूर्ति ; अनुकृति, सादृश्य ; हाथी के दोनों दाँतों के बीच का स्थान ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रतिमा, मूर्ति ; सादृश्य, अनुकृति ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—प्रतिरोधक, प्रतिरोधि (सम्) सं.—चोर, डाकू ।

संज्ञासूची (सम्) सं.—निषेध, मनाई ; अस्वीकृति, अमान्यता ; खंडन ; नकारात्मक शब्द ।

संज्ञासूची (सम्) क्रि.—स्थापना कर

कायम कर; किसी प्रतिमा को प्रतिष्ठित कर; सिद्ध कर ।
 सु० अकार प्रतीहार, सु० अकार प्रतीहार, (सम्) सं. — द्वार; द्वारपाल; जादूगर; इन्द्रजाल ।
 सु० अकार प्रतीक्ष (सम्) सं.—प्रतीक्षा; आशा ।
 सु० अकार प्रतीति (सम्) सं. — निश्चित ज्ञान, विश्वास, भरोसा; धारणा, कीर्ति; सम्मान, प्रतिष्ठा ।
 सु० अकार प्रतीपदर्शनी (सम्) सं.—स्त्री, रमणी ।
 सु० अकार प्रतीर (सम्) सं.—किनारा, तट ।
 सु० अकार प्रतूर्ण (सम्) वि.—तेज, वेगवान ।
 सु० अकार प्रत्यक्ष (सम्) सं.—नयनगोचर होना; दर्शन देना, साक्षात्कार; जो सच्चा, साफ़ या स्पष्ट हो, स्पष्टता; दिशा; तल्प; सभी वस्तुएँ ।
 सु० अकार प्रत्यनीक (सम्) सं.— शत्रु, शत्रु-सेना ।
 सु० अकार प्रत्यय (सम्) सं.—विश्वास, भरोसा; ज्ञान, बुद्धि, धारणा, निश्चयत्व; अनुभव, बोध; कारण, हेतु; प्रसिद्धि, ख्याति; शपथ; धातु या मूल शब्द के साथ जोड़ा जानेवाला अक्षर या शब्द, प्रत्यय; चाल, प्रचलन, रीति; परमुखापेक्षी; प्रजा; विल ।
 सु० अकार प्रत्याख्यान (सम्) सं.—अस्वीकृति; तिरस्कार; खंडन ।
 सु० अकार प्रत्यागत (सम्) वि.—लौटा हुआ, वापस आया हुआ ।
 सु० अकार प्रत्यादेश (सम्) सं.— प्रतिवाद, तिरस्कार, अस्वीकृति ।
 सु० अकार प्रत्युक्ति (सम्) सं.— प्रत्युत्तर, उत्तर ।
 सु० अकार प्रत्येकिसु (सम्) क्रि.—पृथक कर, अलग कर ।
 सु० अकार प्रथम (सम्) सं.— फैलाना; यश, कीर्ति ।
 सु० अकार प्रथम (सम्) वि.— पहला; प्रथम; श्रेष्ठ, प्रधान ।
 सु० अकार प्रदक्षिण, सु० अकार प्रदक्षिण (सम्)

सं.—प्रदक्षिणा, किसी पूज्य को दायीं ओर कर भक्तिपूर्वक उसके चारों ओर घूमना ।
 सु० अकार प्रद्युति (सम्) सं.— जगमगाहट, प्रकाश, आभा ।
 सु० अकार प्रधान (सम्) सं.— मुख्य वस्तु; मुखिया, प्रधान; बुद्धि; परब्रह्म; प्रधान सचिव । वि.—मुख्य, खास, प्रसिद्ध, उत्तम ।
 सु० अकार प्रध्वंस (सम्) सं.— पूर्ण रूप से नाश; विकीर्ण होना; छिड़कना; बंधन; रिपु, शत्रु; दावाभि; कुच; आकाश ।
 सु० अकार प्रध्वान (सम्) सं.—बहुत शोरगुल ।
 सु० अकार प्रपंच (सम्) सं.—संसार, दुनिया; प्रदर्शन; विस्तार, बाहुल्य; भ्रम; धोखा ।
 सु० अकार प्रपात (सम्) सं.—जलप्रपात; ढल-धा चट्टान; पहाड़ का उतार या ढाल; उद्धान; बहाव के ऊपर से अपने को नीचे गिरा देना ।
 सु० अकार प्रबंध (सम्) सं.— बंधन, अविच्छिन्नता; संबद्ध चर्चा या वर्णन; कोई भी रचना; योजना ।
 सु० अकार प्रबोधिसु (सम्) क्रि.—समझा-बुझा, ज्ञान करा ।
 सु० अकार प्रभंजन (सम्) सं.— पवन, वायु; आँधी ।
 सु० अकार प्रभविसु (सम्) क्रि.— उत्पन्न हो, जन्म ले, निकल ।
 सु० अकार प्रभुत्वे. सु० अकार प्रभुत्व (सम्) सं.— स्वामित्व, साहिबी; महत्व, बड़ाई ।
 सु० अकार प्रमत्त (सम्) वि.—मदमत्त, उन्मत्त, पागल; लापरवाह, असावधान ।
 सु० अकार प्रमथ (सम्) सं.— शिव के गण; घोड़ा ।— लोढ़ नाथ, लोढ़ नायक = शिव ।
 सु० अकार प्रमदवन (सम्) सं.— राजा का उपवन जो अंतःपुर से संबद्ध रहता है ।
 सु० अकार प्रमदा, सु० अकार प्रमदे (सम्) सं.— सुंदरी स्त्री, रमणी ।
 सु० अकार प्रमाण (सम्) सं.— नाप, माप; आकार; पैमाना, श्रेणी; सीमा, मात्रा; साक्षी, गवाही; न्यायाधीश; यथार्थ ज्ञान

का साधन; धर्म; कारण; मिलन; सींग; शास्त्र; सामीप्य ।
 सु० अकार प्रमाद (सम्) सं.—गलती, अशुद्धि; नशा, मद, पागलपन; उपेक्षा, असावधानी ।
 सु० अकार प्रमुख (सम्) वि.—मुख्य, प्रधान; सम्मुख, सामने । सं.—प्रतिष्ठित पुरुष; ढेर, समुदाय ।
 सु० अकार प्रमोदिसु (सम्) क्रि.— प्रमोद कर, खुशी मना, प्रसन्न रह, आनंदित रह ।
 सु० अकार प्रयत्न (सम्) सं.—प्रयत्न; कोशिश, प्रयास; कष्ट, कठिनाई ।
 सु० अकार प्रयाण (सम्) सं.—यात्रा; प्रस्थान; आगे जाना; आक्रमण; मृत्यु ।—सूखे माडु—प्रस्थान कर ।
 सु० अकार प्रयाणिक (सम्) सं.—यात्रा करने-वाला; यात्री; मुसाफिर ।
 सु० अकार प्रयुक्ति (सम्) सं.— उपयोग, इस्तेमाल, उपयोग; प्रयोजन, उद्देश्य; उकसाना, उत्तेजना; परिणाम ।
 सु० अकार प्रयोगिसु (सम्) क्रि.— प्रयोग कर, व्यवहार कर, अनुष्ठान कर ।
 सु० अकार प्रयोजक (सम्) सं.— उपयोगी या किसी काम में आनेवाला मनुष्य ।
 सु० अकार प्रलपन (सम्) सं.—वार्तालाप, संभाषण; व्यर्थ की बात, बकवाद, प्रलाप; विलाप ।
 सु० अकार प्रलय (सम्) सं.—नाश, लय होना; जल-प्लावन; मृत्यु, मौत; मूर्छा, बेहोशी; आतप, धूप ।
 सु० अकार प्रवर्तने (सम्) सं.— कार्यारंभ, कार्यसंचालन; प्रेरणा, उत्तेजना; प्रवृत्ति, चालचलन; आचरण, पद्धति, ढंग ।
 सु० अकार प्रवहिसु (सम्) क्रि.—बह, प्रवाहित, हो ।
 सु० अकार प्रवाद (सम्) सं.—वार्तालाप, संवाद; किंवदन्ती, जनश्रुति, अफवाह, जन-उक्ति ।
 सु० अकार प्रवाल (सम्) सं.— मूँगा, विटम; कोंपल, किसलय; हरापन, हरियाली;

केश, विकुर; छ; लाल रंग; वीणा का भाग विशेष ।

संस्कृति प्रवृत्ति (सम्) सं.—झुकाव; चाल-चलन; स्वभाव; बढ़ती, उन्नति ।

संस्कृति प्रश्ने (सम्) सं.—प्रश्न; सवाल । — २३३, एतु = प्रश्न उठा ।

संस्कृत्य प्रश्रय (सम्) सं.—विनय, विनम्रता; प्रेम, स्नेह; सम्मान ।

संस्कृति प्रसक्ति (सम्) सं.—वार्तालाप का विषय; विवादग्रस्त विषय; संबंध, संसर्ग; व्याप्ति; प्रयत्न ।—डैती देतो (सम्) क्रिं. किसी बात को उठा ।

संस्कृत्य प्रसाधन (सम्) सं.—सजावट; श्रृंगार, वेश-भूषा करना; सुव्यवस्था करना ।

संस्कृत्य प्रतिद्व (सम्) वि.—विश्रुत, विख्यात, मशहूर ।

संस्कृत्य प्रसूतिक, संस्कृत्य प्रसूते (सम्) सं.—प्रसूतिका, जच्चा स्त्री ।

संस्कृत्य प्रस्तारिसु, संस्कृत्य प्रस्तारिसु (सम्) क्रि.—फैला, विस्तार कर; जमीन को चौरस कर ।

संस्कृत्य प्रस्तावने (सम्) सं.—प्रशंसा, सराहना; आरंभ; भूमिका, उपोद्घात ।

संस्कृत्य प्रहसन (सम्) सं.—हँसी, मजाक, दिहलगी, अट्टहास; हँसानेवाला नाटक ।

संस्कृत्य प्रहरि (सम्) सं.—चौकीदार, पहरेदार; घंटा बजानेवाला ।

संस्कृत्य प्रांशु (सम्) वि.—ऊँचा, उन्नत, उत्तुंग; लंबा, दीर्घ, विस्तृत, बड़ा ;

संस्कृत्य प्राचीन (सम्) वि.—पुराना; पूर्व का, पूर्वी ।

संस्कृत्य प्राजापत्य (सम्) सं.—विवाह का एक प्रकार; तपस्या का एक ढंग; यज्ञ विशेष; अनधिकार साहस ।

संस्कृत्य प्राण (सम्) सं.—जान, प्राण; जीवन; साँस, प्राणवायु; आत्मा, जीव; इन्द्रिय; परब्रह्म; प्राण के समान कोई वस्तु या व्यक्ति ।

संस्कृत्य प्राप्ति, संस्कृत्य प्राप्ति (सम्)

क्रि.—मिल, प्राप्त हो, उपलब्ध हो; अधीन में आ, वश में आ ।

संस्कृत्य प्राय (सम्) सं.—तारुण्य, यौवन; जीवन की अवस्था; जीवन से प्रस्थान, प्रस्थान, आधिक्य, विपुलता, प्राचुर्य; बहु-मत, सबसे बड़ा अंश; निर्मलता; प्रधान, मुख्य; सादृश्य ।

संस्कृत्य प्रारब्ध (सम्) सं.—बुरी चीज़, दुर्भाग्य. बढ़किस्मत, प्रारब्ध कर्म ।

संस्कृत्य प्रार्थिसु (सम्) क्रि.—प्रार्थना कर, विनय कर, स्तुति कर; किसी वस्तु की अभिलाषा कर ।

संस्कृत्य प्रास, संस्कृत्य प्रासु (सम्) सं.—अनु-प्रास अलंकार ।

संस्कृत्य प्रिये (सम्) वि.—प्यारा, मनोहर; प्रेमी. स्वामी, पति ।

संस्कृत्य प्रिये (सम्) सं.—प्रेमिका, प्रेयसी, पत्नी ।

संस्कृत्य प्रीति (सम्) सं.—हर्ष, आनंद; सुख; प्रेम, स्नेह; अनुराग; अनुकंपा, अनुग्रह; मैत्री ।

संस्कृत्य प्रेकण (तद्) सं.—प्रियंगु ।

संस्कृत्य प्रेख, संस्कृत्य प्रेखे (सम्) सं.—झूलना, हिंडोला ।

संस्कृत्य प्रेत (सम्) सं.—प्रेत; भूत ।

संस्कृत्य प्रेम (सम्) सं.—प्रेम; स्नेह, प्रीति; अनुकंपा; प्रसन्नता; एक छंद का नाम ।

संस्कृत्य प्रेरिसु, संस्कृत्य प्रेरिसु (सम्) क्रि.—प्रेरणा दे, उकसा ।

संस्कृत्य प्रोक्षिसु (सम्) क्रि.—प्रोक्षण कर, छिटका, छिड़का ।

संस्कृत्य प्रोत्साहिसु (सम्) क्रि.—प्रोत्साहित कर, उकसा ।

संस्कृत्य प्रौढ (सम्) वि.—पूर्ण वय को प्राप्त, वयस्क; विवाहित; बूढ़ा; पका हुआ; गाढ़ा, घना; सतेज; बलवान्, साहसी ।

संस्कृत्य प्रौढिमे (सम्) सं.—सुन्दरता, उत्कृष्टता, प्रौढत्व ।

संस्कृत्य प्लवंग (सम्) सं.—मेंढक; बंदर; डेडा; एक संवत्सर का नाम ।

संस्कृत्य प्लवंग (सम्) सं.—मेंढक; बंदर ।

सं फ

सं फ—कन्नड वर्णमाला का छत्तीसवाँ अक्षर, पवर्ग का दूसरा व्यंजन ।

सं फुल्ले फक्ते (क) अ.—तुरंत, फौरन, 'फक् फक्' करके ।

सं फुल्ले फजीतु, सं फुल्ले फजीति (अ. दे.) सं.—फुजीहत (अरबी); गड़बड़ी, व्याकुलता; बुरा हाल ।

सं फुल्ले फड (क) अ.—भला! शाबाश!

सं फुल्ले फणि (सम्) सं.—साँप, नाग । — सं फुल्ले फति (सम्) सं.—नागेंद्र, सर्पराज ।

सं फुल्ले फल (सम्) सं.—फल; फसल, पैदावार; नतीजा, परिणाम; फायदा, लाभ, व्याज; मुक्ति, मोक्ष; ढाल; तलवार की धार; तीर की नोक; जायफल; तखता ।

सं फुल्ले फसलि, सं फुल्ले फसलु (अ. दे.) सं.—फसल (अरबी); उपज, पैदावार ।

सं फुल्ले फाल (सम्) सं.—हल की नोक; माथा, फाल, सीमांत भाग; सूती कपड़ा; गढ़ा ।

सं फुल्ले फालाक्ष (सम्) सं.—शिवजी ।

सं फुल्ले फालाक्षु (अ. दे.) सं.—फुरियाद (फारसी); शिकायत; अभियोग ।

सं फुल्ले फेरिस्तु (अ. दे.) सं.—फेहरिस्त (फारसी); सूची ।

सं फुल्ले फौजु (अ. दे.) सं.—फौज (अरबी); सेना ।

सं व

सं व—कन्नड-वर्णमाला का सैंतीसवाँ अक्षर; पवर्ग का तीसरा व्यंजन ।

सं वंक्र (क) वि.—टेढ़ा, झुका हुआ, वक्र ('वंकः'—तत् ?) ।

सं वंक्रु (क) क्रि.—टेढ़ा हो, वक्र हो, झुक, तिरछा हो ।

१०८ वंके (क) सं.—गोंद ।
 १०९ वंग (तद्) सं.—भंगः (तत्) ; दूटने का भाव ।
 १०९ वंगड़े (क) सं.—मछली विशेष ।
 १०९ वंगड्डु (क) सं.—एक प्रकार की सूखी घास ।
 १०९ वंगरलि (क) सं.—एक पौधे का नाम ।
 १०९ वंगल, १०९ वंगले (अ. दे.) सं.—Bungalow (अंग्रजी); इमारत, भवन, मकान ।
 १०९ वंगार (तद्) सं.—भृंगारः (तत्) ; सोना, हेम ।
 १०९ वंगु (क ?) सं.—एक प्रकार का चर्मरोग ।
 १०९ वंजर, १०९ वंजर (तद् ?) सं.—ऊसर भूमि ।
 १०९ वंजे (तद्) सं.—बंध्या (तत्) ; बाँझ ।
 १०९ वंट (तद्) सं.—वंटः (तत्) ; नौकर, चाकर । (तद्) सं.—भटः (तत्)—योद्धा, सिपाही ।
 १०९ वंटुगे, १०९ वंटुतन (तद्) सं.—नौकरी, वीरता, पराक्रम ।
 (१) १०९ वंड (क) सं.—ऊन ।
 (२) १०९ वंड (तद्) सं.—भौंड, वस्तु ; द्रव्य, मूल्य, भाव ; निर्लेज पुरुष, नीच, दुष्ट ।
 —वं= निर्लेजता ।
 १०९ वंडण (तद्) सं.—भंडनम् (तत्) ; युद्ध, लड़ाई ।
 १०९ वंडलु (क) सं.—दलदल, पंक, कीचड़ ।
 १०९ वंडवल, १०९ वंडवलु, १०९ वंडवाल, १०९ वंडवाल, १०९ वंडवाल, १०९ वंडवाल (तद् ?) सं.—मूलधन, पूँजी ।
 १०९ वंडाय, १०९ वंडायि (म) सं.—कलह, झगड़ा ।
 १०९ वंडि (क) सं.—चक्र, पहिया ; गाड़ी, चैलगाड़ी । —वंड कार = गाड़ीवान ।
 (१) १०९ वंडु (क) सं.—मधु ; मकरंद, पुष्परस ।

(२) १०९ वंडु (क) सं.—निर्लेज या वेशर्म मनुष्य, नीच ।
 १०९ वंडे (क) सं.—ऊन ; चटान, शिला ।
 १०९ वंतु (क) क्रि. रू.—धायी (न लिं., ए. व.—व्या. भा. में.) । उदा.—१०९ वंतु आने वंतु—हाथी धायी, गडि १०९ गाडि वंतु—गाड़ी धायी ।
 १०९ वंडुकि, १०९ वंडुकि (तद्) सं.—एक पौधा विशेष ।
 १०९ वंडु (क) कृ.—आकर, पहुँचकर ।
 १०९ वंडुमाडु (अ. दे.) क्रि.—बंद कर ।
 १०९ वंडुक, १०९ वंडुक (अ. दे.) —वंडुक (हिं.) ।
 १०९ वंडुवस्तु (अ. दे.) सं.—वंडुवस्तु फारसी) ; भूमि-कर की व्यवस्था ; व्यवस्था, प्रबंध ।
 १०९ वंध (सम्) सं.—बंधन, बांधने का फीता, डोरी, पकड़, गिरफ्तारी ; संबंध, मेल ।
 १०९ वंधन (सम्) सं.—बांधने की क्रिया ; रस्सी, जंजीर, वेड़ी ; कारागार ; वध, हिंसा पट्टी ।
 १०९ वंधु (सम्) सं.—नातेदार, रिश्तेदार, संबंधी ।
 १०९ वंधुल, १०९ वंधुल (सम्) सं.—रंडी का पुत्र ।
 १०९ वंधुर, १०९ वंधुर (सम्) वि.—तरंगित, लहराता हुआ, असमान, झुका हुआ, टेढ़ा ; सुंदर, मनोहर ।
 १०९ वंधु (क) सं.—पत्ते या छिलके का रस या गोंद ।
 १०९ वंधुल (क) सं.—समूह, राशि, ढेर, झुंड, गुच्छा ।
 १०९ वंधुल, १०९ वंधुलने (क) अ.—बहुत थकावट से ।
 १०९ वंधु (क) सं.—खोखला, वाँस ।
 १०९ वंधु (सम्) सं.—बगुला ; ढोंगी ; एक राक्षस का नाम ; एक वृक्ष का नाम (The tree sesbana grandiflora) ।

१०९ वकरे, १०९ वकरे (क) सं.—बर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा ।
 १०९ वकट (क) वि.—खाली, रिक्त, शून्य ।
 १०९ वकरे (क) सं.—दे. वकट ; भूतने का तवा ।
 १०९ वकडि (क) क्रि.—चकित हों, गड़बड़ में पड़ । सं.—चकित होना. घबराहट ; भय, डर, दुःख ।
 १०९ वक्रे (क) सं.—मिठास, मीठा होना, अच्छाई ।
 १०९ वगडु (क) क्रि.—पैर फैला, ऊर विस्तार ।
 १०९ वगरे, १०९ वगरिगे, १०९ वगेरे (क) सं.—सूखी नदी में पानी के लिए खोद गया गड्ढा ।
 १०९ वगरु (क) क्रि.—खरोच, नख से खनन कर ।
 १०९ वगसिगे, १०९ वगसु, १०९ वगसे, १०९ वोगसे, १०९ वोगसि, १०९ वोगसे (क) सं.—अंजलि, चुल्हा ।
 १०९ वगलु, १०९ वगलु, (क) क्रि.—भूँक ; बक ।
 १०९ वगि (क) क्रि.—चीर, बॉट पृथक कर, अलगा, छितरा, खरोच, खोद ।
 १०९ वगड (क) सं.—उन्नत नाभिवाला ।
 १०९ वगलु, १०९ वगलु, (क) क्रि.—भूँक, बक । सं.—भूँकना ।
 १०९ वगे (क) क्रि.—विचार कर, परिशीलन कर, मन में ला, ध्यान दे, जान । सं.—विचार परिशीलन, उद्देश्य, लक्ष्य, ध्येय, मन का भाव ; भाग, हिस्सा, अंश ; ढंग, श्रेणी, वर्ग, प्रकार ।
 १०९ वगेरे (क) सं.—कच्चा या अस्थायी कुँआ ।
 १०९ वगड (क) सं.—तलछट ; दलदल ; पानी जिसमें गोबर मिला हो ।
 १०९ वगडिय (क) सं.—बड़बड़ानेवाला, मूर्ख ।
 १०९ वगणे (क) सं.—कूकना, पुकार ।
 १०९ वगने (क) अ.—तुरंत, जल्दी ।

ಬಗ್ಗಿ ಬಗ್ಗಿ (ಕ) ಸಂ.—ಛಾತಿ, ವಕ್ಷ, ಛಾತಿ ಕಾ ಗಡ್ಡಾ ।

ಬಗ್ಗಿ ಬಗ್ಗಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಝುಕಾ, ಡೆಡಾ ಕರ ; ಕೂಕ ; ಪುಕಾರ ।

ಬಗ್ಗಿ ಬಗ್ಗು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಝುಕ ಜಾ, ಡೆಡಾ ಹೊ, ವಶ ಮೆ ಹೊ ।

ಬಗ್ಗಿ ಬಗ್ಗು, ಬಗ್ಗಿ ಬಾಬ್ಬೆ (ಕ) ಖ.—ಕೆ ಬಾರೆ ಮೆ, ಕೆ ಸಂಬಂಧ ಮೆ ।

ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚ (ಕ) ವಿ.—ಬುಗ ; ಹರಾ ; ಛೊಟಾ ।

ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚರ (ಕ) ಸಂ.—ಸ್ವರ್ಗ, ಅಮರಲೋಕ ।

ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚಲ್, ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚಲು (ಕ) ಸಂ.—ಗಂದೆ ಪಾನಿ ಕಾ ನಲ, ಮೋರಿ ।

ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚಲೆ (ಕ) ಸಂ.—ಪೋಡೆ ನಾಮ ಕ್ಕಿ ಲತಾ ।

ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚು, ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ರಖ, ಒಕ ತರಫ್ ರಖ — ಡಿಪಾ, ಡಕ ; ಪತಲಾ ಹೊ, ದುರ್ಬಲ ಹೊ ।

ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚಾರ, ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚಾರು (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.—ಬಾಚಾರ (ಫಾರಸಿ) ।

ಬಟ್ಟು ಬಚ್ಚೆ ಬಚ್ಚರಕ್ಕೆ (ಕ) ಸಂ.—ದೇ. ಬಗ್ಗರಣೆ.

ಬಟ್ಟು ಬಜ್ಜಿ (ಕ) ಸಂ.—('ಭಜ್' ಧಾತು ಸೆ ?) ತರಕಾರಿ ಯಾ ಅನಾಜ ಪಿಸಕರ ಬನಾಡೆ ಗಡೆ ಚತನಿ ;

ಚನೆ ಕೆ ಆಡೆ ಸೆ ಬನಾಯಾ ಜಾನೆವಾಲಾ ಒಕ ನಮ-ಕೊನ ।

ಬಟ್ಟು ಬಜ್ಜಿ (ಅ. ದೇ. ?) ಸಂ.—ಮರ ।

ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು, ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು, ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು (ಕ) ಸಂ.—ಮಣ್ಡಲಾಕಾರ, ಗೊಲ, ವೃತ್ತ ।

ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು (ಕ) ವಿ.—ಖಾಲಿ, ಶೂನ್ಯ ।

ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು (ಕ) ಅ.—ವಕ್ಕರ ಕಾಡತೆ ಹುಣ್ಣು, ಧೂಮತೆ ಹುಣ್ಣು ।

ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಪೆಟ, ತರದ ; ಭೇದ, ಸಂಬಂಧ ವಿಚ್ಛೇದ ।

ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ವಿ.—ದೇ. ಬಟ್ಟು.

(೧) ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಠುಕುತಾ, ಕುರಕುರಾಪನ, ಕಡೂರತಾ ।

(೨) ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡಿ (ತದ್) ಸಂ.—ಕಪ್ಪಾ, ವಸ್ತ್ರ ; ಮಾರ್ಗ, ರಾಸ್ತಾ । ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು, ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು, ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು, ಬಟ್ಟು ಬಡ್ಡು (ಕ) ಸಂ.—

ಪ್ಯಾಲಾ, ಕಡೋರಿ, ಛೊಟಾ ಜಲಪಾತ್ರ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡು (ಕ) ವಿ.—ದುರ್ಬಲ, ಅಶಕ್ತ ; ಪತಲಾ, ದುಬಲಾ, ಕೃಶ । ಸಂ.—ಉತ್ತರ ದಿಶಾ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡು (ಕ) ಸಂ.—ದುಬಲಾ, ಪತಲಾ ಯಾ ದುರ್ಬಲ ಪುರುಷ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡಲು (ಕ) ಸಂ.—ದುಬಲಾ ಹೊನಾ, ದುರ್ಬಲತಾ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡು, ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡು, ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡು (ಕ) ಸಂ.—ಉತ್ತರ ದಿಶಾ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡು (ಕ) ಸಂ.—ಅಶ್ಯಂಗಾರ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೊ ಕ್ಕಿ ಒಕ ಶಾಖಾ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ತದ್) ಸಂ.—ವರ್ಧಕಿ ; (ತದ್) ; ಬಡ್ಡಿ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಮಾರನಾ, ಪಿಟನಾ, ತಾಡನ, ಪಿಟಾಡೆ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಪತಲಾ ಹೊನಾ ; ಗರಿವಿ, ನಿರ್ಧನತಾ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಥಕಾವಟ, ಶ್ರಾಂತಿ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡು, ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡು (ಕ) ಸಂ.—ಪತಲಾ, ದುಬಲಾ ಯಾ ದುರ್ಬಲ ಹೊನಾ, ಕೃಶತಾ ।

ಬಡ್ಡು ಬಡ್ಡಿ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.—ಬಡ್ಡಿಪನ, ಬಡ್ಡಿ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಪಿಟ, ಮಾರ, ತಾಡನ ಕರ ; ಕೂಣ ಕರ ; ಬಡ್ಡಿ, ಚಲಾ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಮಾರನಾ, ಪಿಟನಾ ; ಧಡ್ಡುಕನಾ ; ತಕಲೀಫ, ವೃದ್ಧಾವಸ್ಥಾ ಕೆ ಕಾರಣ ತಕಲೀಫ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಲಾಡಿ, ಡೆಂಡಾ, ಹೈಡಿ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಪಿಟಾ, ತಾಡನ ಕರಾ ; ಪರೊಸ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಮಾರನಾ, ಪಿಟನಾ, ಪಿಟಾಡೆ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಸುಸ್ತ, ಮೂಲ ಪುರುಷ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ತದ್) ಸಂ.—ವೃದ್ಧಿ ; (ತದ್) ಧನ ಕ್ಕಿ ಬಡ್ಡಿ, ಸ್ತದ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ವಿ.—ರಿಕ್ತ, ಖಾಲಿ ; ಮೂಲ, ಸುಸ್ತ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ನಿರೂಪಯೊಗಿ ಯಾ ವೆಕಾರ ಮನುಷ್ಯ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಡೆರ, ರಾಶಿ, ಮೊಟಾ ಹೊನಾ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ದೇ.—ಬಡ್ಡಿ.

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ತದ್) ಸಂ.—ವರ್ಣ ; (ತದ್) ; ರಂಗ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ತದ್) ಸಂ.—ವರ್ಣನ । ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ = ವರ್ಣನ ಕರ । ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ = ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ.

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಧಾನ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಸೂಲಿ ತರಕಾರಿ ; ಮೆವಾ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ವಿ.—ನಂಗಾ, ನಗನ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ತರಕಸ, ತೂಣಿರ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.—ಬತಾಸಾ (ಹಿ.) ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, (ತದ್) ಸಂ.—ವಾರ್ತಿ ; (ತದ್) ; ಬತ್ತಿ ; ದೀಪಕ ಕ್ಕಿ ಬತ್ತಿ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಸೂಲ ಜಾ ಪಾನಿ ಖಾದಿ ಸೂಲನಾ) ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಸೂಲನಾ, ಕೃಷ್ಣತಾ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಜೀವಿತ ರಹ, ಜೀವನ ನಿರ್ವಾಹ ಕರ, ಜಿ । ಸಂ.—ಜೀವನ, ಜಿಂಧಗಿ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ನಿಮ್ನ ಪುರುಷ, ಸೇವಕ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಕಡಿನ ಶ್ರಮ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ತದ್) ಸಂ.—ವಾರ್ತಾ (ತದ್) ವೆಂಗನ ಕಾ ಪೌಠಾ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಅ. ದೇ.) ಕ್ರಿ.—ಬಡ್ಡಿ ಜಾ, ಪರಿವರ್ತಿತ ಹೊ, ಫೇರಫಾರ ಹೊ । ಅ.—ಕೆ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡ್ಡಿ ಮೆ ; ದೂಸರಾ ।

ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.—ಪರಿ-ವತನ ।

ಬಡಿ ಬಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಪಂಕ, ದಲದಲ, ಬಗಲ, ಪಾಶ್ವ ; ಸಾಮೀಪ್ಯ ।

ಬಡಿ ಬಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡಿ ಬಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಜಿಲಾ, ಜೀವಿತ ಕರ ।

ಬಡಿ ಬಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ, ಬಡಿ ಬಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಜಿ, ಜೀವಿತ ರಹ ।

ಬಡಿ ಬಡಿ ಬಡ್ಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಜೀವನ । ಕ್ರಿ.—ಜಿ, ಜೀವಿತ ರಹ ।

ಬಡಿ ಬಡ್ಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಕಲಾ-ನಿಪುಣತಾ, ಕೌಶಲ ।

बद्ध वृक्ष (सम्) वि. — बंधा हुआ ; गिर-
फतार किया हुआ ; पकड़ा हुआ ।

बद्ध वनपु (क) सं. — एक बड़ा वृक्ष (Ter-
minalia tomentosa) ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — आइए, पधारिए । सं.
— शमी वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष, बद्ध बह (क) कृ. —
आनेवाला ।

बद्ध वृ (क) क्रि. — छिपा, निक्षेप कर ;
गाली दे, निंदा कर । सं. — खुला स्थान ।

बद्ध वृ = (सिर की) माँग ।

बद्ध वृके (क) सं. — अभिलाषा, कामना,
इच्छा, लालसा ; आशा, निधि, निक्षेप ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. —
मैदान, खुला स्थान, क्षेत्र ; आकाश ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — पीपल ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — इच्छा कर, अभि-
लाषा कर, कामना कर ; — बिक्रे (क)
सं. — इच्छा, अभिलाषा ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क)
सं. — गालियाँ, निंदा ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे. बद्ध वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — सायंकाल, शामको ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — एक वृक्ष, ताड़ का
वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — गाली दे, निंदा कर ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे. बद्ध वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — निंदा करा या करवा ।

बद्ध वृ (क) क्रि. — आ ; हो, उत्पन्न हो ;
पहुँच ; मिल, संभव हो ।

बद्ध वृक्ष (अ. दे.) वि. — वरखास्त
(फ़ारसी) ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — प्रियंगु ;
ज्वार ; बाजरा ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — खोखला, सारहीनता ;
वांछ ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — सिंदूरी ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — लिखना,
लिखावट, लेख ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — लिखना, लिखा-
वट ; लिपि ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — आना, आगमन ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — बुला, आने दे ;
लिखा, लिखवा ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे. बद्ध वृक्ष
(ग्रा.) ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — दे. बद्ध वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — दे. बद्ध वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — लिख, लेखन-कार्य कर ;

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — सूखापन, शुष्कता ;
अकाल ; सूखी लकड़ी ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — उपला ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे.
बद्ध वृक्ष ; आलस्य, सुस्ती ।

बद्ध वृक्ष (क) वि. — नंगा, नग्न ; मामूली,
साधारण ; वेकार, निरर्थक, व्यर्थ का ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — सूख, सूख जा, नीरस
हो ; पतला ; कृश हो ; अदृश्य हो । सं.
— सूखी भूमि ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — रंग, वर्ण । — बद्ध वृक्ष
इसु (क) क्रि. — रंग लगा ; चित्र बना ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — मर जा, मृत हो ।
सं. — मृत्यु, मरण ; बढ़ती, वृद्धि, महानता,
उन्नति ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — मृत्यु, मरण ।

बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — अनार्थ, जंगली,
पामर, मूर्ख ; एक प्रकार का चंदन वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — कुश, दर्भ ; मोर ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — दृढ़ हो, बलवान हो,
सशक्त हो । सं. — बल, शक्ति ; दृढ़ता ;
आधिक्य ।

(१) बद्ध वृक्ष (क) वि. — दायाँ, दक्षिण भाग
का ।

(२) बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — बल, शक्ति, जोर
प्रचंडता, उग्रता ; सेना ; सहायता ; साधन,
स्थूलता ; रूप, आकार ; इंद्रिय, वायस,
कौशा ; बलराम ; एक राक्षस का नाम,
आकाश ; जल, पानी ; काला रंग ; आहुति ।

बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — बलवान पुरुष ।

बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — बलात्कार,
अनुरोध, जोर देना ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — वृद्धि ; बल, साहस ;
दृढ़ता ; मुख्यत्व ।

(१) बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — बढ़, वृद्धि पा, दृढ़
हो, मोटा हो, कड़ा हो, अकामल हो ;
दृढ़ बना ; ठीक तरह से गाड़, लगा ।

(२) बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — कर, राज कर ;
किसी देवता को आर्पित पदार्थ ; भूतयज्ञ ;
पूजन, अर्चना ; एक राक्षस का नाम ; सेना-
पति ; सुजन, सज्जन ; बल, शक्ति ; कीर्ति,
यश ; उत्सव ; रजक, घोड़ी ; कौशा ;
गंधक ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) क्रि.
— दृढ़ कर या बना ; लगा, बाँध ;
समर्थन कर ; वृद्धि कर ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — शक्ति, दृढ़ता ; आधिक्य ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — शक्ति ; साहस,
बलात्कार ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — बल, शक्ति ; क्षमता
दृक्षता, दृढ़ता, जोर, मुख्यत्व ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — जाल, फंदा । — बद्ध वृक्ष
(क) सं. — मछुमा ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे. बद्ध वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — बलवान्,
बद्ध वृक्ष (क) सं. — शक्तिमान पुरुष ।

बद्ध वृक्ष (क) वि. — जाननेवाला, ज्ञानी ;
चिद्दान । — बद्ध वृक्ष (क) सं. — जानकारी
ज्ञान, बुद्धिमत्ता । — बद्ध वृक्ष = बद्ध वृक्ष ।

बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) वि. —
बलवान्, दृढ़, जाननेवाला ।

बद्ध वृक्ष (क) अ. — और, फिर ।

(१) बद्ध वृक्ष (क) सं. — युद्ध, लड़ाई,
संग्राम ।

(२) बद्ध वृक्ष (तद्) सं. — भ्रमर (तद्)
भौरा, मधुकर ।

बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — तीक्ष्ण करा-
तलवार की धार आदि को ठीक करा ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — पकड़ी वृक्ष (The
waved-leaved fig-tree) ; कपीतन या

सुपाश्वक वृक्ष (The tree Hibiscus-pop-
ulneoides) ।

बसर् बसर्, बसर् बसर्, [बसर् बसर्]

(क) सं.—गर्भ ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) सं.—
गर्भवती स्त्री । (बसर् बसर् या बसर् बसर्
भी लिखा जाता है) ।

बसर् बसर् (तद्) सं.—वृषभः (तत्) ; सांड ।
बसर् बसर् (तद्) सं.—देवदासी ।

बसर् बसर् (क) क्रि.—रस, रसकर बह,
टपक ; चावल को उवालने के बाद उसमें
पानी को निकाल ; धार ठीक कर या तीक्ष्ण
कर । सं.—नोंक ।

बसर् बसर् (क) अ.—वह जो पैना हो ।

बसर् बसर् (तद्) सं.—बहल (तत्) ; बहुत,
अधिक, विपुल, बड़ा ।

बसर् बसर् बहादुर, बसर् बहादुरि (अ.दे.)

सं.—बहादुर(फ़ारसी) ; वीर पुरुष ।

बसर् बसर् (सम्) अ.—बाहर, बाहर की
ओर, बाहरी ।

बसर् बसर् बहिष्कारि (सम्) क्रि.—बहि-
ष्कार कर, दूर रख ।

बसर् बसर् बहिष् (सम्) सं.—रजस्वला स्त्री ।

बसर् बसर् बहुदु (क) क्रि. रू.—हो सकता है,
हो सकेगा, संभव है, संभव होगा ।

बसर् बहुल (सम्) वि.—बहुत, अधिक,
प्रचुर, ज्यादा । बसर् बहुल—(तद्) ।

बसर् बसर् बसर्, बसर् बसर् बसर् (क)
क्रि.—हिला, डगमगा, घुमा, चमका
(तलवार चमकाना) ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) क्रि.—हिल,
हुल, लचक, चमक ।

बसर् बसर् (क) सं.—परिवार के जन, रिश्ते-
दार ; भीड़, समूह ; टोली, सेना, टुकड़ी ।

बसर् बसर् (क) क्रि.—झुक जा, नत हो ।

बसर् बसर् (क) सं.—पाटी का पत्थर, एक
प्रकार का पत्थर जो लिखने में काम आता है ।

बसर् बसर् (क) सं.—टाल, सूखी घास भूसे
का ढेर ।

बसर् बसर् बसर्, बसर् बसर् बसर् बसर्
बसर् (क) क्रि.—बढ़ा, अभिवृद्ध या उन्नत
कर, बढ़ने दे ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) सं.—
वृद्धि, बढ़ना, बढ़ती, उन्नति ।

बसर् बसर् (क) क्रि.—मँडरा, चकर काट,
घेर, चारों ओर घूम, भ्रमण कर ; घिरा जा ।
सं.—भ्रमण, चकर ; एक प्रकार का कवच ;
एक वृत्त या तह ; चारी ।

बसर् बसर् (क) क्रि.—लीप, पोत, गोवर से
लीप ।

बसर् बसर् (क) अ.—बाद में, के बाद, के
पश्चात् या उपरांत ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) क्रि.—
दे, बसर् और बसर् ।

बसर् बसर् (क) सं.—बड़ा ढेर ।

बसर् बसर् बसर् (क) सं.—वृद्धि, बढ़ती ।

बसर् बसर् बसर् = विवाह के समय कन्या
को दी जानेवाली संपत्ति ।

बसर् बसर् (क) सं.—भार, बोझा, वजन ।

बसर् बसर् (क) क्रि.—बसर् बसर्—बढ़, वृद्धि पा ।
(तद्) सं.—बलयः (तत्) चूड़ी । —गर्भ
गार (तद्) सं.—चूड़ियाँ बेचनेवाला ।

बसर् बसर् बसर् (क) क्रि.—झुका या झुकवा ।

बसर् बसर् (क) क्रि.—झुक, टेढ़ा हो ।

बसर् बसर् बसर् (क) सं.—डर, भीति ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् बसर् (क) सं.—
बढ़ती, बढ़ना, वृद्धि ; बढ़ी आभा ।

बसर् बसर् (क) सं.—मापने का साधन,
प्रस्थ ।

बसर् बसर् (तद्) सं.—बसर् (तत्) ; बेल,
लता ।

बसर् बसर् (क) सं.—दियार, लोमड़ी ।

बसर् बसर् (क) क्रि.—जी, जीवित रह, जीवन
चला ।

बसर् बसर् [बसर् बसर्] (क) सं.—रुद्धि,
प्रयोग, उपयोग ।

बसर् बसर् (क) क्रि.—दे, बसर् ।

बसर् बसर्, बसर् बसर्, [बसर् बसर्] ;

(क) क्रि.—थक जा, थकावट का अनुभव
कर, श्रांत हो ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) सं.—
थकावट, श्रांति ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) सं.—
थकावट ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क)
क्रि.—थकावट उत्पन्न कर, निश्चष्ट कर ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) क्रि.—विता,
व्यतीत कर उपयोग में ला ।

(१) बसर् बसर् (क) सं.—मार्ग, रास्ता ;
जगह, स्थान ; सामीप्य ; पास होना ; साह-
चर्य ; ढंग, विधान ; क्रम ; वंश, जाति । अ-
—पाश्चात्, बाद को ; और ।

(२) बसर् बसर् (क) सं.—उपहार, भेंट ;
स्वागत करनेवाला, निमंत्रण देनेवाला ; क्रि.-
दे, बसर् ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) अ.—दे,
बसर् (ह. क.) ।

बसर् बसर् (क) सं.—दे, बसर् ।

बसर् बसर् बसर् (क) क्रि.—नीचे गिरा या
टपका ।

बसर् बसर् बसर् (क) क्रि.—जी, जीवित रह ।

बसर् बागि (अ. दे.) सं.—बसर् (हिं.) ।

बसर् बसर् बागि (क) सं.—आकाश-समुद्र,
आकाशगंगा ।

बसर् बसर् बागि, बसर् बसर् (अ.दे.) सं.—
Bond (अंग्रेजी)—संबंध, सहा ; एक वाद्य
विशेष ।

बसर् बसर् बागि (अ.दे.) सं.—बांध (हिं) ; बड़ा
पुल ; मंड ।

बसर् बसर् बागि (क) सं.—कुम्हार ; गड़रिया ।

बसर् बा, बसर् बायु (क) क्रि.—फूल, सृज
(सृजना) ।

बसर् बाकु (अ. दे.) सं.—छुरी, छुरा ।

बसर् बागल, बसर् बाकल, बसर् बागल (क)
सं.—द्वार, दरवाजा ।

बसर् बागि, बसर् बागि (क) सं.—शिवांगी
नामक वृक्ष, शिरीष वृक्ष ।

बाळु बाळु

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) क्रि. — दे. बाळु ।

बाळु बाळुक, बाळु बाळुक (क) सं.— तरकारी जो सुखायी गई हो और जिसमें मिर्च-मसाला डाला गया हो ।

बाळु बाळु (क) सं.— दे. बाळु; कृषि, जोताई ।

बाळु बाळु (क) सं.—गर्व, घमंड, नाज ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.— व्यजन (तद्); पंखा ।

बाळु बाळु (क) सं.—अभ्रक; भृङ्ग, भौरा ।

बाळु बाळु (क) सं.—एक पौधा विशेष ।

बाळु बाळु (क) सं.—गगरी, छोटा घड़ा ।

बाळु बाळु (सम्) सं.— जलकण, बूंद; विंदी; निशान ।

बाळु बाळु (सम्) सं.—मण्डल; चन्द्रमा या सूर्य का मण्डल; मूर्ति; छाया, परछाई; दर्पण; घड़ा; कुंदरू; इन्द्रचाप; आकाश; वृष्टि, वर्षा; वस्त्र ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (तद्) सं.—व्यूह ।

बाळु बाळु (अ. दे.) सं.— ('भित्तारी' से) — भिक्षुक ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.— हिचकी; तुतलाना; तुतलाहट ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.— हिचकी; वमन ।

बाळु बाळु (तद्) सं.—भिक्षा ।

बाळु बाळु (क) क्रि.—वांध, वश में कर; पकड़कर रख, कस; दढ़ हो, बद्ध हो; घमण्डी हो । सं.— बन्धन, कसाव; लगाम । कमर की पट्टी; गर्व, घमण्ड ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.— दढ़ता, बन्धन, कसाव ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) क्रि.— फैला, विस्तार कर, व्याप्त कर; वर्णन कर ।

बाळु बाळु (क) सं.— विस्तार, फैलाव । वि.—विस्तृत, बढ़ा ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.—विस्तार, फैलाना, फैलाव ।

बाळु बाळु (क) क्रि.— फैला, (गट्टा आदि) खोल, मुक्त कर; शिथिल कर; खुल जा ।

सं.— फैलाना, खोलना, खुलना ।

बाळु बाळु विजयंगेय (तद्) सं.—पधार, आगमन कर ।

बाळु बाळु विज्जणिगे (तद्) सं.— व्यजन, पञ्जा ।

बाळु बाळु (क) सं.—खाऊ चिड़िया; नाश, विनाश ।

(१) बाळु बाळु (क) सं.— बड़प्पन, महानता ।

(२) बाळु बाळु (तद्) सं.—विद्या ।

बाळु बाळु (क) वि.—बड़ा ।

बाळु बाळु (क) अ.—मुफ्त, निशुल्क ।

बाळु बाळु (क) सं.—दे बाळु ।

बाळु बाळु (क) सं.—भाला, बरछी ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.—अन्तर, अवकाश, स्थान, मध्यान्तर; फुरसत; फुटकर ।

बाळु बाळु (क) सं.—यात्रियों के ठहरने का अस्थायी स्थान ।

बाळु बाळु (क) सं.—राशि, ढेर, भीड़; क्रोध, रोष; दया, दाक्षिण्य ।

बाळु बाळु (क) सं.—दे. बाळु ।

बाळु बाळु (क) क्रि. रू.— छोड़िए, त्यागिए, जाने दीजिए ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.— अलग हुआ या टूटा हुआ ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.—फुटकर, फुटकल; अंतर ।

बाळु बाळु (क) क्रि.— शिथिल कर, मुक्त कर, निकाल, छोड़ा, (समस्या आदि को) सुलझा ।

बाळु बाळु (क) क्रि.— छोड़, तज, त्याग, खोल, मुक्त कर, शिथिल कर, अलग कर, दूर हो; कम कर । शिथिलता, ढिलाई, खुलना; अलगाव ।

बाळु बाळु (क) सं.— बहुत श्रमसाध्य कार्य ।

बाळु बाळु (क) सं.— एक पौधे का नाम ।

बाळु बाळु (क) सं.— एक पौधे का नाम ।

बाळु बाळु (क) सं.— शक्ति, पराक्रम, जोर ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.— बोझिल, भारी या बड़ा पदार्थ ।

बाळु बाळु (क) वि.—मोटा, बड़ा, भारी ।

बाळु बाळु (तद्) सं.— विस्तारः (तद्), फैलाव ।

बाळु बाळु (तद्) क्रि.— विस्तार कर, फैला, वर्णन कर ।

बाळु बाळु (क) सं.— बीज ।

बाळु बाळु (तद्) सं.— पुस्तक; दीवार; आधार ।

बाळु बाळु (क) क्रि.— बीज बो । सं.— बीज ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.—बाँस, वंश ।

बाळु बाळु (तद्) सं.—द्वितीया तिथि ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) क्रि.— तितर-बितर हो, चारों ओर फैल, विकीर्ण हो, फेंका जा; ढीला कर, ढीला हो । सं.— बाँस ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) क्रि.— और सं.—दे. बाळु ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) क्रि.— और सं.—दे. बाळु ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.— न्योता, भोजन के लिए निमन्त्रण; व्योहार; भोज ।

बाळु बाळु (क) सं.— नीच, कमीना, पामर या तुच्छ पुरुष ।

बाळु बाळु (क) अ.—अचानक ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (तद्) सं.— विज्ञान (तद्); ज्ञान, जानकारी; कौशल, निपुणता, चातुर्य ।

बाळु बाळु (क) अ.—अचानक ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (तद्) क्रि.— ('विज्ञापन' से)—विनय कर, प्रार्थना कर, निवेदन कर ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (तद्) सं.— विनय, प्रार्थना, निवेदन ।

बाळु बाळु, बाळु बाळु (क) सं.— चिड़ियों की चहचहाहट ।

बीजसु विम्मने बीजसु विम्मने(क) अ.—
 दृढ़तापूर्वक, कसकर, जोर से, बलपूर्वक ।
 बीजसु विम्मनिसि (क) सं.—गर्भवती स्त्री ।
 बीजसु विम्म (क) वि.—बड़ा । सं.—बड़प्पन;
 गर्व ।
 बीजसु विच्यग, बीजसु वीग (क) सं.—
 ताला ।
 बीजसु विरकु, बीजसु विरिकु (क) सं.—टूटा
 हुआ भाग, संधि, जोड़, दरार ।
 बीजसु विरवु, बीजसु विरवु (क) सं.—दरार,
 फटन ।
 बीजसु विरि (क) क्रि.—फट जा, टूट जा; चटक ।
 खिल, प्रस्फुटित हो, खुल; चीर; दरार
 पड़; गाड़ी का वेग रुक । सं — प्रस्फुटन,
 फटन, दरार ।
 बीजसु विरडे, बीजसु विरडे (क) सं.—काग,
 वोतल का डट्टा; घुंटी, वीणा के तार कसने
 की कील ।
 बीजसु विरसु, बीजसु विरसु (क) सं.—कठोर-
 रता, दृढ़ता, रूक्षता; अकोमलता, सुलायम
 न होना, कड़ा होना ।
 बीजसु विरि बीजसु विरु (क) सं.—दृढ़ता;
 कसाव; रूक्षता, रूखापन; निष्ठुरता ।
 बीजसु विरु (क) सं.—दृढ़ता, कठोरता,
 रूक्षता ।
 बीजसु विरसु (क) सं.—दे. बीजसु ।
 बीजसु विरने, बीजसु विरने (क) अ.—
 शीघ्र, तुरंत, तेजी से ।
 १) बीजसु विरु (क) क्रि.—बेच, विक्रय कर;
 खरीद ।
 २) बीजसु विरु, बीजसु विरु, बीजसु विरु
 (क) सं.—धनुष, कमान ।
 बीजसु विल (सम्) सं.—विल, सुराख,
 छेद ।
 बीजसु विलार (क) सं.—विल्व वृक्ष ।
 बीजसु विलि (क) क्रि.—दे. बीजसु सं.—
 एक छोटा वृक्ष जिसके फूल लाल होते हैं ।
 बीजसु विलुगार, बीजसु विलुगार
 [गळ गार] (क) सं.—तीरंदाज़, धन्विन् ।
 बीजसु विलि (क) सं.—भू, भौंहे ।

बीजसु विले (अ. दे.) सं.—बिह्ला ।
 बीजसु विल्व (सम्) सं.—विल्व वृक्ष ।
 बीजसु विसज (तद्) सं.—कमल ।
 बीजसु विसल्, बीजसु विसलु, बीजसु
 विसिल्, बीजसु विसिलु (क) सं.—धूप,
 आतप ।
 बीजसु विसाडु, बीजसु विसाडु (क) क्रि.—
 फेंक; दूर हटा । —बीजसु विक्रे = फेंकना ।
 बीजसु विसि, बीजसु विसु (क) वि.—गरम,
 उष्ण ।
 बीजसु विसुगे (क) सं.—सामीप्य संबंध,
 जुड़ना, दृढ़ता से मिलना; टाँका ।
 बीजसु विसुडिसु (क) क्रि.—फिकवा ।
 बीजसु विसुडु (क) क्रि.—दे. बीजसु ।
 बीजसु विसुपु (क) सं.—उष्णता, गरमी ।
 बीजसु विसुल्, बीजसु विसुलु (क) सं.—
 धूप ।
 बीजसु विळदु, बीजसु विळि, बीजसु विळिदु
 (क) वि. और अ.—सफेद ।
 बीजसु विळपु, बीजसु विळपु, बीजसु विळपु,
 बीजसु विळपु, बीजसु विळपु (क) सं.—
 सफेदी, सफेद रंग ;
 बीजसु विळ, बीजसु वीळ, बीजसु बीळ, बीजसु
 वीळ, बीजसु वीळु, (क) क्रि.—गिर पड़,
 गिर; हाथ से छूट; पतित हो ।
 बीजसु विळलु, बीजसु विळलु (क) सं.—
 पेड़ों की जटाएँ ।
 बीजसु विळिचु (क) क्रि.—गिरा, गिरवा ।
 बीजसु विळचु (क) क्रि.—गिर पड़; गिरा ।
 बीजसु वी (क) क्रि.—समाप्त हो, अंत हो, पतित
 हो, विनष्ट हो, मर ।
 बीजसु वीग (क) सं.—ताला; समधी ।
 बीजसु वीगति, बीजसु वीगति (क) सं.—
 समधिन ।
 बीजसु वीगु (क) क्रि.—पीछे हट; झिझक;
 मोटा हो, स्थूल हो; फूल जा ।
 बीजसु वीज (सम्) सं.—बीज; मूल ।
 बीजसु वीटि, बीजसु वीटि (क) सं.—काली
 लकड़ीवाला एक पेड़; दरार, फटन ।

बीजसु वीडार (क) सं.—पड़ाव, शिबिर;
 घर ।
 बीजसु वीडु (क) सं.—उहरना, शिबिर,
 पड़ाव; स्थान, घर; ढेर, राशि; भीड़;
 बेकार भूमि, व्यर्थता ।
 बीजसु वीदि (तद्) सं.—वीथि: (तद्); मार्ग,
 रास्ता, सड़क ।
 बीजसु वीसिस्स (सम्) वि.—घृणित; निष्ठुर,
 भयानक; बर्बर ।
 बीजसु वीभत्सु (सम्) वि.—दे. बीभत्सु
 सं.—अर्जुन का नाम ।
 बीजसु वीर (तद्) सं.—वीर पुरुष, योद्धा;
 वीरभद्र ।
 बीजसु वीरि (तद्) सं.—गढ़रिये की स्त्री ।
 बीजसु वीरु (अ. दे.) सं.—अलमारी ।
 बीजसु वीरु, (अ. दे.) बीजसु वीरु (क) क्रि.—
 स्वेच्छा से प्रदान कर; सानंद वितरण कर;
 फेंक (जैसे देला, वाण आदि) ।
 बीजसु वीवु (क) सं.—रसोई का बर्तन, उप-
 करण विशेष ।
 बीजसु वीसणिक्क, बीजसु वीसणिगे (क)
 सं.—व्यजन, पंखा ।
 बीजसु वीसर (क) सं.—अंत, विनाश ।
 बीजसु वीसिसु (क) क्रि.—पिसवा; चूर्ण करा
 या करवा, चक्की चलवा ।
 बीजसु वीसु (क) क्रि.—पीस; चूर्ण कर, चक्की
 चला; (जाल) फेंक ।
 बीजसु वीसेकल्लु (क) सं.—(पीसने)
 की चक्की ।
 बीजसु वीळ, बीजसु बीळ, बीजसु बीळ, बीजसु
 बीळु (क) क्रि.—गिर, गिर पड़, पतित
 हो; छूट, खिसक जा । सं — गिरना,
 गिराव; वह जो नीच या घुरा हो; व्यर्थ,
 बेकार; (लिखने में) गलती; बीमारी के
 कारण गिर पड़ना; छोड़ना ।
 बीजसु बीळलु, बीजसु बीळलु (क) सं.—
 दे. बीजसु ।
 बीजसु बीळिसु, बीजसु बीळिसु (क) क्रि.—
 गिरा; पतित कर ।

बिंयु बेट्ट, बिंयु बेट्ट (क) सं.
 —दे. बिंयु.
 बिंयु बुक, बिंयु बुक (क ?) सं.—हृदय,
 कलेजा ।
 बिंयु बुगारि, बिंयु बुगारि (क) सं.—वेर
 का पेड़ ; लट्टू ।
 बिंयु बुगुटि, बिंयु बुगुटि (क) सं.—
 सूजन, फूलना ।
 बिंयु बुगि (क) सं.—गाल, कपोल ।
 बिंयु बुगे (क) सं.—सोता, स्रोत ; फौवारा ।
 बिंयु बुट्टि, बिंयु बुट्टे (क) सं.—टोकरी,
 टोकरा ।
 बिंयु बुड (तद्) सं.—बुधनः (तत्), बर्तन की
 तली, तल ।
 बिंयु बुडकट्ट (तद्) सं.—वंश, कुल,
 कुटुंब, परिवार ।
 बिंयु बुडमे, बिंयु बुडमे (क) सं.—
 एक प्रकार का खीरा ।
 बिंयु बुडिके (क) सं.— छोटा
 डमरु ।
 बिंयु बुडि (क) सं.—(शीशे का) बोतल ;
 कुपी ।
 बिंयु बुडि (क) सं.—सूजन ।
 बिंयु बुत्ति (तत्) सं.—भुक्तिः (तत्) ; आहार,
 भोजन ।
 बिंयु बुदुद (तत्) सं.— बुदुदः
 (तत्) ; बबूला ।
 बिंयु बुदु (सम्) वि.—जाना हुआ, समझा
 हुआ ; बुद्धिमान, पंडित । सं.— गौतम
 बुद्ध ; जैन या बौद्ध धर्म का संन्यासी ।
 बिंयु बुद्धि (सम्) सं.— मति, धीशक्ति,
 समझ, विवेक, ज्ञान । — वंड वन्त
 (सम्) सं.—बुद्धिमान वंडव वन्तलु =
 बुद्धिमती स्त्री ।
 बिंयु बुधन (सम्) सं.— तल, नीचे का
 भाग, बर्तन की तली, तलुवा, औन्नत्य
 बिंयु बुधुके (सम्) सं.—भूख ।
 बिंयु बुरकि, बिंयु बुरकि (अ. दे.) सं.
 —बुरका (अरबी) ।

बिंयु बुरगलु, बिंयु बुरगलु (क) सं.
 —भुना हुआ चावल ।
 बिंयु बुरुगु (क) सं.— फेन ; एक अनु-
 करणमूलक शब्द ।
 बिंयु बुरुडे, बिंयु बुरुडे, [बिंयु बुरुडे,
 बिंयु बुरुडे] (क) सं.—खोपड़ी,
 गोल बर्तन, शीशा, चिमनी (Chimney),
 खोखला ।
 बिंयु बुरुदे (क) सं.—पंक, कीचड़, दल-
 दल ।
 बिंयु बुरुलि, बिंयु बुरुलि, बिंयु बुरुलि
 (क) सं.—लवा, बटेर ।
 बिंयु बुरुडि (क) सं.—दे. बिंयु.
 बिंयु बुव (क) सं.— भात, चावल, खाना
 (बच्चों की भाषा में) ।
 बिंयु बुसुगुट्ट (क) क्रि.—फुफकार ।
 बिंयु बुंदि (अ. दे.) सं.—बुंदी, एक मिठाई ।
 बिंयु बुचि (क) सं.— कीड़ा, कीट ; सूत्र
 (बच्चों की भाषा में) ।
 बिंयु बुजु, बिंयु बुजे, बिंयु बुडे, बिंयु
 बूसि, बिंयु बूसु (क) सं.—सड़ाव, सड़ना,
 फिसी चीज़ के सड़ने पर ऊपर दीखनेवाला
 सफेद अंश ।
 बिंयु बुटक, बिंयु बुटाट (क) सं.—
 दिखावट, फरेब, कपट, बाह्याडंबर ।
 बिंयु बुटाटिके (क) सं.—दे. बिंयु.
 बिंयु बुतु (क) सं.—अश्लील बात ; निर्ल-
 ज्जता । — गं ग (क) सं.— निर्लज्ज
 पुरुष ।
 बिंयु बुदि, [बिंयु बुद] (तद्) सं.—भूनिः
 (तत्) ; भस्म, राख ।
 बिंयु बुदु (तत्) वि.—सफेद । — कंबु
 कुंबल = सद रंग का कुम्हड़ा ।
 बिंयु बुर, बिंयु बुरग, बिंयु बुरुग,
 बिंयु बुरुगे (क) सं.—शालमली वृक्ष
 (The silk.cotton tree) ।
 बिंयु बुव (क) सं.—दे. बिंयु.
 बिंयु बुद (सम्) सं.—बुंद, समूह ।
 बिंयु बुदित (सम्) वि.—उगा हुआ, बढ़ा
 हुआ ; गर्जता हुआ ।

बिंयु बृहत्, बिंयु बृहत्तु (सम्) वि.—
 —बड़ा, बड़ा भारी, विशाल, चौड़ा ।
 बिंयु वे (क) वि.—गरम, उष्ण (समास में)
 सं.—पीठ ।
 बिंयु वेकि, बिंयु वेके (क) सं.—भाग, अग्नि ;
 उष्णता ।
 बिंयु वेगाडु (क) सं.—मरुभूमि, रेगि-
 स्तान ।
 बिंयु वेचे (क) सं.—छोटा सरोवर ।
 बिंयु वेरु, बिंयु वेरु, बिंयु वेरु (क)
 सं.—शिकार, आखेट ।
 बिंयु वेडु (क) सं.—निस्सार वस्तु, हलकी
 लकड़ी, हलकी चीज़ ।
 बिंयु वेडे (क) सं.—भिंडी ।
 बिंयु वेडेकु (क) सं.—एक प्रकार का
 सागौन वृक्ष ।
 बिंयु वेकस (क) सं.—विस्मय, आश्चर्य ।
 बिंयु वेकुकु (क) सं.—बिहरी, मार्जाल ।
 बिंयु वेगडु (क) क्रि.—चकित हो, घबड़ा ।
 सं.—आश्चर्य, भीति, घबराहट ।
 बिंयु वेगर्, बिंयु वेगळ (क) सं.—
 भीति, घबराहट ; आश्चर्य ।
 बिंयु वेचगे, बिंयु वेचने (क) अ.—गरम,
 उष्ण ।
 बिंयु वेचर (क) सं.—वेग, तेजी, अमण,
 विस्मय, भीति ।
 बिंयु वेचिसु (क) क्रि.—अमित हो,
 चकित हो ; घबड़ा जा ।
 बिंयु वेचिगे (क) वि.—दे. बिंयु.
 बिंयु वेचु (क) क्रि.—घबड़ा जा, चकित हो ।
 सं.—चकित होना, घबराहट ; दृढ़ संबन्ध
 या संयोग ।
 बिंयु वेजर (क) सं.—दे. बिंयु.
 बिंयु वेजे (क) सं.—चढ़ाहाहट ।
 बिंयु वेह (क) वि.—मजबूत, दृढ़, कठोर,
 कड़ा । सं.—पहाड़, पर्वत ।
 बिंयु वेहट्ट (क) वि.—कठिन, कर्कश, कठोर,
 दृढ़ । सं.—पहाड़, पर्वत ; चोट ; मुहर लगाने
 का उपकरण । क्रि.—घुसेड़, बलपूर्वक
 प्रवेश करा ; मुहर लगा ; धाक जमा ।

बिंङ्गु ब्रेण्णे [बिंङ्गु ब्रेण्णि] (क) सं.—मक्खन, माखन ।
 बिंङ्गु ब्रेत्तले (क) वि.—नंगा, नगन ।
 बिंङ्गु ब्रेद्द, बिंङ्गु ब्रेद्दे (क) सं.—उष्णता, गरमी ।
 बिंङ्गु ब्रेद्दकु (क) क्रि.—खरोंच, नख से घात कर, चकोटनी काट ; खोज, ढूँढ, अन्वेषण कर ।
 बिंङ्गु ब्रेद्दरु, बिंङ्गु ब्रेद्दरु, बिंङ्गु ब्रेद्दरु (क) क्रि.—दे. बंढलु ।
 बिंङ्गु ब्रेडगि (क) सं.—छवीली, सुंदरी स्त्री ।
 बिंङ्गु ब्रेडगु, बिंङ्गु ब्रेडगु (क) सं.—छवि, सौंदर्य, मनोहरता, शोभा ; ढींग ; दिखावट ।
 बिंङ्गु ब्रेणचि (क) सं.—बिंङ्गु ब्रेणचि-कल्लु—चकमक पत्थर ।
 बिंङ्गु ब्रेणे (क) सं.—काग, बोतल का ढट्टा, खेटी ।
 बिंङ्गु ब्रेद्दरु (क) क्रि.—डर, भीत हो, घबरा । सं.—भीति ; घबराहट ।
 बिंङ्गु ब्रेद्दरणे, बिंङ्गु ब्रेद्दरिके, [बिंङ्गु ब्रेद्दरिके] (क) सं.—डर, भीति, भय ।
 बिंङ्गु ब्रेद्दरिसु, [बिंङ्गु ब्रेद्दरिसु] (क) क्रि.—डरा, भीत करा ।
 बिंङ्गु ब्रेद्दे (क) सं.—गरमी, मस्ती ; कामुकता ; होना, वीज होना ।—गार (क) सं.—कामदेव लंपट, कामुक पुरुष । — गार (क) सं.—(स्त्री. लिं.) ।
 बिंङ्गु ब्रेप्पल, बिंङ्गु ब्रेप्पल, बिंङ्गु ब्रेप्पले (क) सं.—भय, डर, घबराहट ।
 बिंङ्गु ब्रेप्पु (क) सं.—मूर्ख, बेवकूफ ; पागल, अम में पड़ा हुआ व्यक्ति ।
 बिंङ्गु ब्रेप्पने (क) अ.—गर्व से ; मस्ती से ।
 बिंङ्गु ब्रेप्परिसु (क) क्रि.—भीत हो, घबड़ा जा, बहुत डर जा ।
 बिंङ्गु ब्रेप्पल (क) सं.—भय, डर, विभ्रम, विकलता ।
 बिंङ्गु ब्रेप्परु, बिंङ्गु ब्रेप्परु (क) क्रि.—डर जा, घबरा जा ; पसीना निकल । सं.—पसीना ।

बिंङ्गु ब्रेयिसु, बिंङ्गु ब्रेयिसु (क) क्रि.—पका, रसोई बना ।
 बिंङ्गु ब्रेरके (क) सं.—मिश्रण, मिलावट ; मिलन, संधि ।
 बिंङ्गु ब्रेरगु (क) सं.—विस्मय, आश्चर्य, चकित होना ।
 बिंङ्गु ब्रेरंजु (क) क्रि.—इकट्ठा कर, एकलित कर, चयन कर ।
 बिंङ्गु ब्रेरु (क) सं.—दे. बंढलु ।
 बिंङ्गु ब्रेरु, बिंङ्गु ब्रेरु बिंङ्गु ब्रेरु (क) सं.—अंगुली ; छोर ।
 बिंङ्गु ब्रेरु, बिंङ्गु ब्रेरिसु (क) क्रि.—मिला, मिश्रण कर, सम्मिश्रित कर ।—ह = मिश्रण करना ।
 बिंङ्गु ब्रेरे (क) क्रि.—मिल. मिश्रित हो ।
 बिंङ्गु ब्रेरु (क) सं.—दे. बिंङ्गु ।
 बिंङ्गु ब्रेरणि, [बिंङ्गु] (क) सं.—उपला ।
 बिंङ्गु ब्रेरे (क) क्रि.—अहंकार-भाव व्यक्त कर, अहंकारपूर्ण व्यवहार कर ; दड़ या कड़ा हो (सर्दी, हवा आदि के कारण), सिक्कड़ ।
 बिंङ्गु ब्रेरु (क) सं.—बिह्ली ।
 बिंङ्गु ब्रेरु (क) सं.—धरन, बह्ला ।
 बिंङ्गु ब्रेले (क) सं.—मूल्य, कीमत, दाम ।
 बिंङ्गु ब्रेलेगु (क) सं.—चन्द्रकला ।
 बिंङ्गु ब्रेले (क) सं.—गुड ।
 बिंङ्गु ब्रेवरु (क) क्रि.—पसीना निकल आ ; झाड़ू दे, बुहारी कर, लीप । सं.—पसीना ।
 बिंङ्गु ब्रेवि (क) क्रि.—पसीना निकल ।
 बिंङ्गु ब्रेस (तद्) सं.—विषम संख्या ।
 बिंङ्गु ब्रेसकिल् (क) सं.—झाड़ू, बुहारी ।
 बिंङ्गु ब्रेसगे (क) सं.—जोड़ना, मिलाना, टाँका देना ।
 बिंङ्गु ब्रेसद्द, बिंङ्गु ब्रेस्त (क) सं.—मछुआ ।
 बिंङ्गु ब्रेसन, बिंङ्गु ब्रेसल् (क) सं.—जन्म, उत्पत्ति ।
 बिंङ्गु ब्रेसवु (क) सं.—दे. बिंङ्गु ।
 बिंङ्गु ब्रेसल्लिगे (क) सं.—अंगीठी ।
 बिंङ्गु ब्रेसिके, बिंङ्गु ब्रेसिगे (क) सं.—दे. बिंङ्गु ।

बिंङ्गु ब्रेसे (क) क्रि.—जोड़, मिला, टाँका दे ; घमंडी हो । सं.—कोडे की मार ; चोट ; कपास धुने का उपकरण, धुनकी ।
 बिंङ्गु ब्रेस्त (क) सं.—मछुआ ।
 बिंङ्गु ब्रेल् (क) वि.—सफेद, शुभ्र ।
 बिंङ्गु ब्रेल्, बिंङ्गु ब्रेल्कु (क) सं.—प्रकाश, रोशनी ; दीपक ।
 बिंङ्गु ब्रेल्गिसु (क) क्रि.—प्रकाशित कर, चमका ; प्रकाशित करवा ।
 बिंङ्गु ब्रेल्गु (क) क्रि.—चमक, झलक, प्रकाशित हो ; प्रकाशित कर, चमका ; (दिया) जला ; पालिश कर, मँज, मँजकर जगमगा । सं.—प्रकाश ; चमक, झलक ।
 बिंङ्गु ब्रेल्तिगे, बिंङ्गु ब्रेल्तिगे (क) वि.—सफेद, श्वेत, प्रकाशमान ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थिसु, बिंङ्गु ब्रेल्थिसु, बिंङ्गु ब्रेल्थिसु, (क) क्रि.—बढ़ा, बढ़वा, उन्नत कर या करवा, फसल उपजा ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थु, बिंङ्गु ब्रेल्थु (क) सं.—जगमगाहट, चमकनेवाला सफेद रंग ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थु (क) सं.—जंगली कबूतर ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थुगिगे, बिंङ्गु ब्रेल्थुगिगे (क) सं.—बढ़ती, उन्नति, विकास, तरक्की, समृद्धि ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थुवार (क) सं.—जाति से बहिष्कृत या नीच आदमी ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थुगिगे (क) सं.—बढ़ती, उन्नति, वृद्धि ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थु (क) क्रि.—दे. बिंङ्गु । सं.—वृद्धि, उन्नति, फसल या उपज की वृद्धि ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थु (क) सं.—रस भरा दाना ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थुगे, बिंङ्गु ब्रेल्थुगे (क) सं.—प्रातःकाल, सबेरा, प्रभात ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थुगिगे (क) सं.—दे. बिंङ्गु ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थिसु (क) क्रि.—दे. बिंङ्गु ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थु (क) वि.—प्रकाशमान, जगमगाता हुआ ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थु (क) सं.—सफेद रंग ।
 बिंङ्गु ब्रेल्थु (क) सं.—दे. बिंङ्गु ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — दे. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—बढ़, उपज हो, फसल हो। सं.—बढ़ना; फसल, उपज।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—दे. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—डर जा; भीत हो।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—हिलना, काँपना, कंपन, चंचलता।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—प्रकाश, चमक, जग-मगाहट।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—सफेद रंग।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—गोरा भादमी; भोला मनुष्य, साधु मनुष्य।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि.—सफेद।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—जाल, फंदा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—चाँदी।

(२) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—पक जा, बन, तैयार हो।

(२) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—याचना की ध्वनि। क्रि.—याचना कर, माँग।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—कामातुरता, इन्द्रिय-सुख; चाह, अनुराग।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—शिकारी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—शिकार, भाखेट, सृगया।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—शिकार।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—दीन व्यक्ति, याचक।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ.—चाहिण।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—मूर्ख, बेवकूफ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ.—वेग से, शीघ्र, जल्दी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—छेद, रंध, विल; भ्रंशक।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—जासूसी।
—कार=गुप्तचर, जासूस।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—संताप, मनस्ताप, दुःख।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—आग, गरमी, दावाग्नि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—विरह; कामातुरता, इन्द्रिय-सुख।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—शिकार, भाखेट; भाखेट-का प्राणी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—शिकारी, शिकार खेलनेवाला।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—शिकारी, किरात या शबर जाति का व्यक्ति। अ.—नहीं, मत।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—व्याधिन, शबर छी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—वेड़ी (हिं.)।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—माँग, याचना कर। सं.—किरातों का समूह।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—याचना, माँग, प्रार्थना।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—वेताल: (तत्)।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—रोग, बीमारी, दर्द।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—व्यापारी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—पका, खाना बना, रसोई कर।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—पेड़-पौधों की जड़ या मूल।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—कंद-मूल बेचनेवाला।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ.—पृथक, अलग।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—पृथकता, अलगाव।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ.—दे. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—कपिल, कैथा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—वाड़, झाड़ियों की धाड़।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—चिंता, विकलता, व्याकुलता।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—नीम का पेड़।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—ग्रीष्म ऋतु, गरमी का मौसम।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—उदास हो,

थक जा, ऊब जा, मन में आलस्य हो।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—उदाई, उदासी, बेजार होना।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ.—चाहिण। सं.—जासूसी।
—कार=गुप्तचर, जासूस, गुप्तचर।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—हवि (अग्नि में) ल। सं.—गड़बड़ी, भ्रम, घबराहट; पागलपन।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—इच्छा, असिलापा; असंगल वार्ता; आग में मनुष्य का नाश, नरयज्ञ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—दे. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—आहुति; भ्रंति, भ्रम, गड़बड़ी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—दाल; द्विदल।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—दे. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—वैरागी, वीतरागी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—सिनेमा, फिल्म।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि.—झूठ बोल।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—गोंद; वृक्षों का रस।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—शरीर, देह; रस्सी का गट्टा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—दिये का पात्र, पुतली जिराके जुड़े हाथों पर दीपक रखा जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—बाँस, वंश।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—गुड़िया, पतली।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—जेब; मिखारी की झोली, थैली।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—फुसी, छोटा फोड़ा, बुदबुदा; छोटा विल जो चूहे द्वारा बनाया गया हो।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—अंजलि।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—अंजलि।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं.—अंजलि।

बिगलु बोगलु, बिगलु बोगलु (क) क्रि. भूक; बक बक कर ।
 बिगलुसु बोगिसु (क) क्रि. — छुका, टेढ़ा कर ।
 बिगलु बोगु (क) क्रि.—टेढ़ा हो, छुक । सं.—टेढ़ापन, छुकाव ।
 बिगलु बोगु (क) सं.—ऊन, कोमल रोम । वि.—पोपला, दंतहीन ।
 बिगलु बोजु, बिगलु बोजे (क) सं.—तोड़ ।
 बिगलु बोट्ट (अ. दे.) सं. — अंगुली, पैर की अंगुली; अंगुली का परिमाण, छोटा परिमाण; बूंद । (तद्) सं.—वृत्त; तिलक ।
 बिगलु बोट्टि, बिगलु बोट्टे (क) क्रि. — मार, पीट ।
 बिगलु बोट्टे (क) सं.—छिलका, पेड़ों का छाल ।
 बिगलु बोट्टुलि, बिगलु बोट्टुलिके (क) सं.—बुलबुला ।
 बिगलु बोट्टे (क) सं. — फफोला, छाला; कोलाहल, कलकल, चीख पुकार ।
 बिगलु बोगु (तद्) सं.—ब्रह्मा (तद्) ।
 बिगलु बोगि (क) क्रि. — गाली दे, निंदा कर । सं. — गाली, निंदा । बिगलु बोगिलु (क) सं.—गाली, निंदा । बिगलु बोगियु (क) क्रि.—गाली दे, निंदा कर ।—बिच=निंदा ।
 बिगलु बोरलु (क) सं.—झाड़ू, बुहारी । अ.—उल्टा ।
 बिगलु बोरलु (क) अ. — 'बोसक, आवाज' के साथ ।
 बिगलु बोरलु (क) वि.—हल्का, जो भारी न हो ।
 बिगलु बोरलु (क) सं.—लेपन-कार्य, लगाना ।
 बिगलु बोरलु, बिगलु बोरलु (क) सं. — साधारणतया चने के आट से बनायी जाने वाली एक नमकीन खाने की चीज़ ।
 बिगलु बोरलु (क) सं.—बर्तन का टूटा हुआ भाग ।

बिगलु बोगलु (क) सं. — निंदा, गाली (ग्रा.) ।
 बिगलु बोट (क) सं.—दन्तहीन पुरुष, पोपले मुँह का आदमी ।
 बिगलु बोट्टि (क) सं.—दन्तहीन स्त्री; वह स्त्री जिसके सिर के बाल मुँहाये गये हो ।
 बिगलु बोट्टि, बिगलु बोट्टे (क) सं.—कारनीस, खम्भे के ऊपर रखने का पत्थर या लकड़ी ।
 बिगलु बोट्टु (क) सं.— फूलना, पर अंदर या सार न होना, (जैसे फूला बगन, खीर आदि) ।
 बिगलु बोट्टे, बिगलु बोट्टे (क) सं.—जताना, समझाना, ज्ञापन ।
 बिगलु बोन (क) सं.—भात, पकाया गया चावल ।
 बिगलु बोनगारे (क) सं.—एक कण्टीला पौधा ।
 बिगलु बोन, बिगलु बोन (क) सं.—चूहे आदि को फंसाने का फन्दा ।
 बिगलु बोर (क) सं.—दे- बिगलु ।
 बिगलु बोरल, बिगलु बोरलु, बिगलु बोरलु, बिगलु बोरलु (क) अ.—उल्टा ।
 (१) बिगलु बोर (क) सं.—टीला, पहाड़ी ।
 (२) बिगलु बोर (तद्) सं.—बदारी (तद्); बेर का पेड़ ।
 बिगलु बोर, बिगलु बोर (क) सं.—एक जाति, कहार ।
 बिगलु बोरलु (क) सं.— एक प्रकार का धनुष; मृत्यु, मरण ।
 बिगलु बोरलु, बिगलु बोरलु (क) सं.—मुण्डित सिरवाला ।
 बिगलु बोरलु, बिगलु बोरलु (क) सं.—मुण्डित सिरवाली ।
 बिगलु बोरलुसु (क) क्रि.—सिर मुँह ।
 बिगलु बोरलु, बिगलु बोरलु (क) वि.—मुण्डा हुआ ।
 बिगलु बोरलु (क) सं.—एक प्रकार का बाण; मुण्डित होने की स्थिति ।

बिगलु बौद्ध (सम्) वि.—बुद्धि से संबन्धित; बुद्ध से संबन्धित । सं.—बौद्ध धर्म की अनुयायी; विष्णु का एक अवतार ।
 बिगलु ब्रह्म (सम्) सं.—परमात्मा, परब्रह्म; वेद; स्तुति की एक ऋचा; आगम; ज्ञान, सुज्ञान, ब्रह्मविद्या; शुद्धचरित्र; मुक्ति, मोक्ष; तप, तपस्या; ओदन, अन्न; वस्तु; धन, संपत्ति; विप्र, ब्राह्मण; परमार्थ जानने वाला; सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा; विष्णु; शिव; सूर्य; प्रतिभा; प्रधान, मुख्य ।
 बिगलु ब्रह्मचर्य (सम्) सं.—ब्रह्मचारी का व्रत, चार आश्रमों में प्रथम ।
 बिगलु ब्रह्मपुत्र (सम्) सं.—एक नदी का नाम; एक प्रकार का विष ।
 बिगलु ब्रह्मपुरि (सम्) सं.— ब्राह्मणों के रहने का नगर; प्राचीन विद्या-केंद्र ।
 बिगलु ब्रह्मरंध्र (सम्) सं.—ब्रह्मांड द्वार, मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद ।
 बिगलु ब्रह्मविद्ये (सम्) सं.—वेद और वेदांत ।
 बिगलु ब्रह्मवीणे (सम्) सं.—वीणाविशेष ।
 बिगलु ब्रह्मिणी (सम्) सं.—ब्रह्मा की शक्ति; सरस्वती ।
 बिगलु ब्रह्मांड (सम्) सं.—ब्रह्माण्ड ।
 बिगलु ब्रह्मिणी (तद्) सं.—ब्रह्महत्या (तद्) —वह जिसने ब्राह्मण को मार दिया हो; पापी, हत्यारा ।
 बिगलु ब्राह्मण (सम्) सं.—ब्राह्मण; करनेवाला, ब्रह्मवादि; अग्नि ।
 बिगलु ब्राह्मण्य (सम्) सं.—ब्राह्मणत्व ।
 बिगलु ब्राह्मि (सम्) सं.—ब्रह्मा की मूर्ति-मती शक्ति; सरस्वती; वाणी; कहानी, कथा; धर्मानुष्ठान; दुर्गा; रोहिणी नक्षत्र; ब्राह्मण की पत्नी, एक पौधा विशेष ।

३ भ

३ भ—कन्नड-वर्णमाला का अड़तीसवाँ अक्षर; पर्वर का चौथा व्यंजन ।
 ३ भं, ३ भुं (क) सं.—शङ्ख की ध्वनि ।

ध्रुव भंग

ध्रुव भङ्ग (सम्) सं.—टूटने का भाव ; दरार ; पृथकता ; टुक, अंश, हिस्सा, पतन, नाश ; भगदड़ ; पराजय ; असफलता, अस्वीकृति ; रुकावट ; गड़बड़ी ; प्रतिबन्ध, स्थगित करना ; फेर, मोड़ ; सिकुड़न झुकाव ; गमन ; लकवा रोग ; छल, धोखा ; नहर जलमार्ग ।

ध्रुव भंग (तद्) सं.—दे. woman.

ध्रुव भंगि (सम्) सं.—भंग करना ; छल, धोखा ; रूप, आकार ; ढंग, प्रकार ।

ध्रुव भंगिसु (सम्) क्रि.—तोड़, भंग कर ; विनष्ट कर ।

ध्रुव भंड (सम्) सं.—भौंड, हँसोड़ा, विद्रुषक ; वर्णसंकर जाति विशेष ।

ध्रुव भंडन (सम्) सं.—कवच ; लड़ाई, युद्ध ; दुष्टता, उपद्रव ।

ध्रुव भंडार (सम्) सं.—भण्डार, भांडा-गार ।

ध्रुव भंडारि (सम्) सं.—भांडागार की देखरेख करनेवाला, कोशाध्यक्ष ।

ध्रुव भंडिल, ध्रुव भंडीर (सम्) वि.—अच्छा, समृद्ध, शुभ, मंगलकारी, भाग्य-शाली । सं.—सौभाग्य, आनंद ; दूत ; कलाकार, कारीगर ।

ध्रुव भक्ति (तद्) सं.—भक्ति : (तत्) ।

ध्रुव भक्त (सम्) वि.—विभक्त, विभाजित, बाँटा, हुआ, खंड किया हुआ । सं.—भक्त, पूजक, उपासक । ध्रुव भक्ते—स्त्री. लिं. ।

ध्रुव भक्ति (सम्) सं.—पृथकता, भिन्नता ; सेवा, पूजन ; ईश्वरानुराग ।

ध्रुव भक्ष (सम्) सं.—घी या तेल में तला हुआ खाद्य पदार्थ, भोज्य पदार्थ ।

ध्रुव भक्षण (सम्) सं.—ध्रुव भक्षण—खाना ।

ध्रुव भक्षिसु (सम्) क्रि.—खा, भक्षण कर ।

ध्रुव भक्ष्य (सम्) सं.—दे. ध्रुव ; जल, पानी ।

ध्रुव भंगदर (सम्) सं.—एक रोग ; एक ऋषि का नाम ।

ध्रुव भगवति (सम्) सं.—दुर्गा, पार्वती ; लक्ष्मी ।

ध्रुव भगिनीपति (सम्) सं.—बहनोई ।

ध्रुव भग्न (सम्) वि.—टूटा हुआ ; विनष्ट ; निराश किया हुआ ।

ध्रुव भजन, ध्रुव भजने (सम्) सं.—भजन, सेवा, पूजा ; खण्ड ।

ध्रुव भजिसु (सम्) क्रि.—भजन कर, उपासना कर ।

ध्रुव भट (सम्) सं.—योद्धा, सिपाही, वीर ।

ध्रुव भट्ट (सम्) सं.—विद्वान, पंडित, दार्शनिक ; उपाधि विशेष ; परंपरागत नाम ।

ध्रुव भट्टिनि, (सम्) सं.—ऊँचे पद की स्त्री ; सम्राज्ञी, महारानी ।

ध्रुव भद्र (सम्) वि.—शुभ, मंगलकारी, अच्छा, सुन्दर ; आनन्दकारी ; श्रेष्ठ, श्लाघ्य । सं.—प्रसन्नता, सौभाग्य ; साँड, बैल ; सोना ; छेदन ; एक वाद्य विशेष ; जागरूकता, सावधानी । ध्रुव भद्रवागिरु = सावधान रहो ।

ध्रुव भद्रकालि, ध्रुव भद्रकालि (सम्) सं.—शिव की शक्ति, काली, पार्वती, दुर्गा ।

ध्रुव भद्रासन (सम्) सं.—सुन्दर आसन, सिंहासन ।

ध्रुव भप्परे (अ. दे. ?) सं.—बाप रे ! अच्छा ! शाबाश !

ध्रुव भय (सम्) सं.—भय, डर, भीति ।

ध्रुव भयानक (सम्) वि.—डरावना भयावह । सं.—भय, डर ; भयानक रस ।

ध्रुव भरक (क) सं.—घास काटते समय आनेवाली ध्वनि ।

ध्रुव भरणि (सम्) सं.—एक नक्षत्र का नाम ।

ध्रुव भरत (सम्) सं.—नट, अभिनेता ; भरतमुनि ; नाट्यशास्त्र ; राम के भाई भरत ; शकुन्तला और दुष्यन्त के पुत्र का नाम ; अग्नि ; पहाड़ी ; मनुष्य ; ज्वार, समुद्र-प्रवाह ।

ध्रुव भरतखंड, ध्रुव भरतवर्ष (सम्) सं.—भारत, हिन्दुस्तान ।

ध्रुव भरद्वाज (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम ; भरतपक्षी ।

ध्रुव भरवस, ध्रुव भरवसे (अ. दे.) सं.—भरोसा, विश्वास ।

ध्रुव भरित (सम्) वि.—भरा हुआ, पूरा, पूर्ण, परिपूर्ण ।

ध्रुव भरुक (सम्) वि.—भुना हुआ मांस ।

ध्रुव भरु, ध्रुव भरु, ध्रुव भरु, ध्रुव भरु (सम्) सं.—पति, प्रभु, स्वामी, रक्षक ।

ध्रुव भरुन (सम्) सं.—भरुना, फटकार, धमकी, डाँटपट ।

ध्रुव भरु (तद्) सं.—भरु (तत्) ; सोना, सुवर्ण ।

ध्रुव भरु, ध्रुव भरु, ध्रुव भरु, ध्रुव भरु (क) अ.—अच्छा ! खूब ! शाबाश !

ध्रुव भरु भलातक, ध्रुव भरु भलातकि (सम्) सं.—भिलावे का पेड़ ।

ध्रुव भरुक (सम्) सं.—रीछ, भालू ।

ध्रुव भव (सम्) वि.—पैदा हुआ, उत्पन्न । सं.—जन्म, उत्पत्ति ; पुनर्जन्म ; जीवन ; सांसारिक अस्तित्व, संसार ; शिव ; स्वास्थ्य ; श्रेष्ठता, उत्कृष्टता ।

ध्रुव भवदीय (सम्) वि.—आपका ।

ध्रुव भवारि (सम्) सं.—कामदेव ।

ध्रुव भवितव्य (सम्) सं.—होनहार, भाग्य, भावी ।

ध्रुव भविसु (सम्) क्रि.—हो, संभव हो, कारण हो ।

ध्रुव भव्य (सम्) वि.—उचित, योग्य, अच्छा, उत्कृष्ट, सुन्दर, शुभ, भाग्यवान, प्रसन्न । सं.—शुभपरिणाम ; मुक्तजीव ।

ध्रुव भसित (सम्) सं.—राख, भरम ।

ध्रुव भांड (सम्) सं.—बर्तन ; पेटी ; कोई भी औज़ार या यंत्र ; वाजा ; माल, सामान ; माल की गाँठ ; बहुमूल्य सामान ; नदीगर्भ ; भाड़पन, मस्खरापन ।

झण्डागण्ड भांडागार (सम्) सं.—भांडार; धनागार ।
 झण्डा भाग (सम्) सं.—भाग, अंश, हिस्सा; वंशवारा; भाग्य; चतुर्थांश; स्थान, जगह ।
 झण्डागण्ड भागधेय (सम्) सं.—हिस्सा, भाग; भाग्य, सौभाग्य, संपत्ति, आनन्द; कर; अर्थागम ।
 झण्डा भागि (सम्) वि.—भागोंवाला; भाग-लेनेवाला, संबंधी; अधिकारी, मालिक; भाग्यवान् ।
 झण्डागण्ड भागीदार (सम्) सं.—हिस्सेदार; साझेदार ।
 झण्डागण्ड भागीरथि (सम्) सं.—गंगा, भागीरथी ।
 झण्डा भाग्य (सम्) सं.—प्रारब्ध, किस्मत; सौभाग्य, समृद्धि; हर्ष, कुशलता । — षड वंत = भाग्यवान् पुरुष ।
 झण्डा भाग्ये (सम्) सं.—भाग्यवती स्त्री ।
 झण्डा भाट, झण्डा भाटक (सम्) सं.—झण्डा बाडगे झण्डा बाडिगे,—किराया, भाड़ा, मजदूरी ।
 झण्डा भाद्रपद (सम्) सं.—भादों का महीना ।
 झण्डा भातु (सम्) सं.—प्रकाश की किरण; सूर्य; प्रभु, राजा; बारह की संख्या का द्योतक; एक छन्द ।
 झण्डा भाम (सम्) सं.—क्रोध, रोष; आभा, चमक; सूर्य; वहनोई ।
 झण्डा भामा, झण्डा भासे (सम्) सं.—झण्डा भामिनी, क्रोधना स्त्री; सुन्दरी स्त्री; राधा का नाम (मै. प्र.) ।
 झण्डा भार (सम्) सं.—बोझ; भारीपन, अतिशयता; बड़ी मात्रा; तौल विशेष ।
 झण्डा भारत (सम्) सं.—भरतवंशज; भारतवर्ष, हिन्दुस्तान; महाभारत (ग्रंथ) ।
 झण्डा भारति (सम्) सं.—सरस्वती; विद्वान् पुरुष ।
 झण्डा भार्गव (सम्) सं.—शुक्राचार्य; परशुराम ।

झण्डा भाया, झण्डा भाये (सम्) सं.—पत्नी ।
 झण्डा भावक (सम्) सं.—रीछ, भालू ।
 झण्डा भाव (सम्) सं.—अस्तित्व; घटना, होना; दशा, अवस्था; पद, ओहदा; वास्तविकता; स्वभाव, हावभाव, आचरण; भावना; मन, आत्मा, हृदय, परमात्मा; वहनोई ('भामः' का तद्) ।
 झण्डा भावकि (सम्) सं.—सौंदर्यप्रिय स्त्री ।
 झण्डा भावज (सम्) सं.—कामदेव, प्रेम ।
 झण्डा भावने (सम्) सं.—भावना, विचार, कल्पना ।
 झण्डा भावि (सम्) सं.—भावी, भविष्य, होनहार, भाग्य ।
 झण्डा भाषांतर (सम्) सं.—अनुवाद, तर्जुमा ।
 झण्डा भाषे (सम्) सं.—भाषा; वाणी; वचन, वादा ।
 झण्डा भास्कर (सम्) सं.—सूर्य; बारह की संख्या; एक छंद का नाम; कई व्यक्तियों का नाम ।
 झण्डा भास्कर भास्कर (सम्) सं.—शिवजी ।
 झण्डा भास्कर भिक्षात्र (सम्) सं.—भिक्षा-से प्राप्त खाना, भीख ।
 झण्डा भिक्षुक (सम्) सं.—भिक्षुक, भिखारी ।
 झण्डा भिक्षुकि (सम्) सं.—भिखारिन ।
 झण्डा भित्ति (सम्) सं.—दीवार; टुकड़ा; टूटी हुई वस्तु, तोड़ना, चीरना, विभाजित करना ।
 झण्डा भिन्न (सम्) वि.—टूटा हुआ, चीरा हुआ; पृथक, अलग, भिन्न ।
 झण्डा भीकर (सम्) वि.—भयंकर, डरावना ।
 झण्डा भीति (सम्) सं.—भय, डर; खतरा ।
 झण्डा भीम (सम्) वि.—भयंकर, भयावह । सं.—शिव, रुद्र; यम; भीमसेन; वीर-पुरुष, भट; कन्नड-बसवपुराण के कर्ता का नाम ।

झण्डा भीरु, झण्डा भीरुक (सम्) वि.—भयभीत, डरपोक ।
 झण्डा भीषण (सम्) वि.—भयंकर, भयानक रस ।
 झण्डा भीष्म (सम्) वि.—भयंकर । सं.—गांगेय, भीष्म पितामह ।
 झण्डा भीष्मसु (सम्) सं.—गंगाजी ।
 झण्डा भुजिसु (सम्) क्रि.—खा, भोजन कर ।
 झण्डा भुक्त (सम्) वि.—खाया हुआ । सं.—खाना, भोजन ।
 झण्डा भुक्ति (सम्) सं.—भोजन, खाना, आहार; उपभोग ।
 झण्डा भुज (सम्) सं.—भुजा, बाहु; मोड़; घुमाव ।
 झण्डा भुजग, झण्डा भुजंग (सम्) सं.—साँप; जार ।
 झण्डा भुजमध्य (सम्) सं.—छाती ।
 झण्डा भुवन (सम्) सं.—जगत, लोक; चौदह की संख्या ।
 झण्डा भू (सम्) सं.—भूमि, पृथ्वी, जमीन, ज़िला, देश ।—झण्डा जात (सम्) सं.—पेड़ ।—झण्डा जाते (सम्) सं.—सीता ।
 झण्डा भूत (सम्) वि.—विगत, बीता हुआ, भूत; प्राप्त, उपलब्ध, उचित, योग्य, सदृश, समान । सं.—भूत; प्रेत, राक्षस; तत्व; वास्तविक घटना; भूतकाल; संसार, जगत; आर्य, देवभूमिज; नवग्रह; अठारह; जाति-समूह ।
 झण्डा भूति (सम्) सं.—संपत्ति, ऐश्वर्य; वैभव, राज्यश्री, गौरव; राख; भुना हुआ मांस ।
 झण्डा भूदार (सम्) सं.—सुअर ।
 झण्डा भूदेव (सम्) सं.—ब्राह्मण ।
 झण्डा भूपाल (सम्) सं.—नरेश, राजा ।
 झण्डा भूमि (सम्) सं.—भूमि, जमीन; जगह, स्थान ।
 झण्डा भूमिके (सम्) सं.—भूमिका, पीठिका; मंज़िल, खण्ड; नाटक में किसी का चरित्र या अभिनय ।

ಭೂಮಿಜ ಭूमिज

ಭೂಮಿಜ ಭूमिज (सम्) सं.—वृक्ष; नरका-
सुर; मंगलग्रह; मानव; एक प्रकार का
घोड़ा ।

ಭೂಯಿಷ್ಠ ಭूयिष्ठ (सम्) वि.—बहुत ही,
प्रायः, बहुत करके ।

ಭೂಷಣ ಭूषण, ಭೂಷೆ ಭूषे (सम्) सं.—
गहना, आभूषण; शृंगार, सजावट ।

ಭೃಂಗ ಭृंग (सम्) सं.—अमर, भौरा;
चातक, मारंग; बिलनी; अन्नक; मेघ;
कालापन; एक वृक्ष ।

ಭೃಂಗಾರ ಭृंगार (सम्) सं.—सुवर्ण घट या
पात्र ।

ಭೃಂಗಿ ಭृंगि (सम्) सं.—वटवृक्ष; झिंही;
एक शिवगण का नाम ।

ಭೃಕುಟಿ ಭृकुटि, (सम्) सं.—भू, भौंह ।

ಭೃಗುವಾರ ಭृगुवार (सम्) सं.—शुक्रवार ।

ಭೃತ್ಯ भृत्य (सम्) सं.—नौकर, सेवक; राजा
का अनुचर ।

ಭೃತ್ಯೆ भृत्ये (सम्) सं.—मज़दूरी ।

ಭಟ್ಟಿ भट्टि, ಭೆಟಿ भेटि (क) सं.—मुलाकात,
भेंट, संदर्शन ।

ಭೆಕ भेक (सम्) सं.—मेंढक ।

ಭೇದಿಸು भेदिसु (क) क्रि.—भेद कर, छेद,
वेध, चीर, विदीर्ण कर ।

ಭೇರಂಡ भेरुण्ड (सम्?) सं.—दो खिरवाला
पक्षी ।

ಭೇಷಜ भेषज (सम्) सं.—दवाई, औषध,
चिकित्सा; धोखा, छल ।

ಭೈರವಿ भैरवि (सम्) सं.—दुर्गा देवी ।

ಭೋಗ भोग (सम्) सं.—भक्षण, खाना;
उपयोग; लाभ; संभोग; व्यवहार; उप-
भोग, उपभोग के पदार्थ; धन, द्रव्य;
परिपूर्णता; कामिनी स्त्री, वेश्या; सुनाफा,
आय; देवविग्रह के लिए नैवेद्य ।

ಭೋಗ್ಯ भोग्य (सम्) सं.—भूमिवन्धक ।

ಭೋಜನ भोजन (सम्) सं.—भोजन; भोजन
करना, खाना खाना ।

ಭೋರನೆ भोरने (क) अ.—शीघ्रता से,
जल्दी ।

ಭೌತಿಕ भौतिक (सम्) वि.—जीवधारी

संबन्धी; जड़पदार्थ संबन्धी; भूत-प्रेत
संबन्धी ।

ಭೃಂಶ ಭ्रंश (सम्) सं.—पतन, फिसलन ।

ಭ್ರಮ ಭ्रम, ಭ್ರಮೆ (क) सं.—भ्रम,
भ्रांति; भ्रमण, भटकना, चक्कर; भँवर;
कुम्हार का चाक; चक्की का पाट ।

ಭ್ರಮರ ಭ्रमर (सम्) क्रि.—भ्रमण कर, घूम,
चक्कर काट; भ्रांति में पड़, भ्रमित हो; बैव-
कूफी कर ।

ಭ್ರಂತಿ भ्रंति (सम्) सं.—भ्रम; भूल;
चक्कर, भ्रमण ।

ಭ್ರತು ಭ्रातु (सम्) सं.—भाई; सगा भाई ।

ಭ್ರಕುಟಿ ಭृकुटि (सम्) सं.—भ्र, भौंह ।

ಭ್ರೂಗ ಭ्रूग (सम्) सं.—स्त्री का गर्भ; शिशु,
बच्चा; गर्भिणी स्त्री; अग्नि, ज्वाला ।

ಮ ಮ

ಮ ಮ—कन्नड-वर्णमाला का उनचालीसवाँ
अक्षर; पवर्ग का अन्तिम व्यञ्जन ।

ಮಂಡೆ मंड (तद्) सं.—मर्कट; (तत्);
वानर, बन्दर ।

ಮಂಡೆ ಮಂಕಣಿ (म?) सं.—दो मुँहवाला बड़ा
थैला जिसमें सामान रखकर जानवरों की पीठ
पर लादा जाता है ।

ಮಂಡಿ मंदि (क) सं.—टोकरी (ग्रा.) ।

ಮಂಕು मंकु (क) सं.—भ्रम, भ्रांति; कांति-
हीनता; मूर्खता । मंಕ = मूर्ख पुरुष ।

ಮಂಕುಡನೆ ಮಕುತನ (क) सं.—मूर्खता, बेवकूफी ।

ಮಂಕಿ ಮಂಕಿ (क) सं.—दे.—मंಕಿ.

ಮಂಗ ಮंग (तद्) सं.—दे. मंङ्क.—डन
तन, अडि आट (तद्) सं.—बन्दर का-सा
व्यवहार, नटखटी ।

ಮಂಗಲ ಮಂಗಲ, ಮಂಗಲಿ ಮಂಗಲಿ ಮಂಗ-
ಲಿ (क) सं.— एक जड़ी-बूटी (Cis-
sus quadrangularis) ।

ಮಂಗಲ ಮಗಲ— (सम्) सं.— शुभ, शुभद
वस्तु, आनंद, सौभाग्य, शुभ शकुन ।

ಮಂಗಲೆ ಮಂಗಲೆ (सम्) सं.—एक प्रकार का
अगर ।

ಮಂಗಳ ಮंगल (तद्) सं.—दे. मंगल; एक
छंद का नाम ।

ಮಂಗಳಾರತಿ ಮंगलारति (तद्) सं.—देवता-
विग्रह के सामने की जानेवाली आरती ।

ಮಂಗಳೆ ಮಂಗಾರೆ (क) सं.—एक कटीला पौधा
(Vangueria spinosa) ।

ಮಂಗುರ ಮंगुर (क) मं.—दे. मंगुर.

ಮಂಚೆ ಮಂಚ (क) सं.—खाट; मचान, मचिया,
लिंहासन ।

ಮಂಚಿಕೆ ಮಂಚಿಕೆ, ಮಂಚಿಗೆ ಮಂಚಿಗೆ (क) सं.—
मचान, मचिया; एक प्रकार का गहना ।

ಮಂಜರ ಮंजर (सम्) सं.—मोती; फूलों का
झप्पा । (तद्) सं.—बिछी ।

ಮಂಜರಿ ಮಂಜರಿ, ಮಂಜರಿಕೆ ಮಂಜರಿಕೆ (सम्)
सं.—मंजरी. फूलों का गुच्छा, कोंपल;
मोति; लता ।

ಮಂಜಳ ಮंजळ (क) सं.—हल्दी, हरिद्रा ।

ಮಂಜಡಿ ಮंजाಡಿ (क) सं.—एक वृक्ष विशेष
(The red-wood tree) ।

ಮಂಜಿ ಮंजि (क) सं.—पोत, बड़ी नौका,
जहाज़; सन, पटसन ।

ಮಂಜಿಣೆ ಮंजिणे (सम्) सं.—मजीठ ।

ಮಂಜಿರೆ ಮಂಜಿರೆ (सम्) सं.—नूपर, विछिया ।

(१) ಮಂಜು ಮंजु (क) मं.—हिम, तुहिन,
कोहरा; धुंधलापन ।

(२) ಮಂಜು ಮಂಜು, ಮಂಜುಲ ಮಂಜುಲ (सम्)
वि.—सुंदर, चारु, मनोहर ।

ಮಂಜುರು ಮंजुरु (अ. दे.) अ.—मंजूर
(अरबी); स्वीकृत ।

ಮಂಜುಷೆ ಮंजुषे (सम्) सं.—पेटी, बक्स;
टोकरी, पिटारी ।

ಮಂಜಿಟ್ಟಿ ಮंजिट्टि (क) सं.—दे. मंजुडि.

ಮಂಜಿಪೆ ಮಂಜಿಪೆ (सम्) सं.—मंडप, वितान ।

ಮಂಜಿಪೆಕ್ಕು ಮंजिपेकु (क) सं.—वह बिछी
जो खण्डहरों में रहती है ।

ಮಂಜಿ ಮಂಜಿ (क) सं.—टीला, पहाड़ी ।

ಮಂಡೆ ಮंड (सम्) सं.—वह गाढा चिकना
पदार्थ जो तरल पदार्थ के ऊपर छा जाता
है; माँड; दूध की मलाई; फेन, झाग;

खमीरा; पीच; महेरी; गूदा, सार, सिर; आभूषण विशेष ।

०८८ मंडक, ०८८ मण्डगे, ०८८ मण्डगे, (क) सं.—मैदा से बनाया जाने-वाला एक खाद्य (भोज्य) पदार्थ ।

०८८ मंडप (सम्) सं.—दे. ०८८ मंडप.

०८८ मंडल (सम्) सं.—गोला, वृत्ताकार विस्तार, व्यास; सूर्य या चन्द्र का वृत्त; ग्रह के घूमने की कक्षा; समूह, समुदाय, दल; समीप का ज़िला या प्रांत; शिकार खेलने का पैतरा विशेष; तांत्रिक मन्त्र विशेष; ऋग्वेद का खण्ड विशेष; अड़तालीस दिनों की अवधि ।—०८८ अधि-कारि (सम्) सं.—प्रांत या ज़िले का मुख्य अफसर ।

०८८ मंडलि (सम्) सं.—मण्डली, 'समूह, समुदाय ।

०८८ मण्डलिक (सम्) सं.—मण्डलाधि-कारी ।

०८८ मंडि (क) सं.—घुटना ।—सु सु (क) क्रि.—बैठ ।

०८८ मंडूक (सम्) सं.—मंडक ।

०८८ मंडूर (सम्) सं.—लोह कीट ।

०८८ मंडे (तद्) सं.—सिर ।

०८८ मंतण (तद्) सं.—मन्त्रणा (तत्) ।

०८८ मंतन (क) सं.—कुल, वंश (व्या. भा.) ।

०८८ मंतु (तद्) सं.—मथानी; दोष, गलती ।

०८८ मंत्र (सम्) सं.—मन्त्र, वैदिक वाक्य ।

०८८ मंत्रि (सम्) सं.—सचिव, राजा का अमात्य; मन्त्र जागनेवाला ।

०८८ मंत्रिक (तद्) सं.—मांत्रिकः (तत्); ऐंद्रजालिक, जादूगर ।

०८८ मंत्रिसु (सम्) क्रि.—मन्त्र कर; सलाह कर ।

०८८ मंथ (सम्) सं.—मन्थन, हिलाना; मथानी; शराबत जिसमें कई वस्तुएँ मिली हों; धौंस की बीमारी, मोतियाबिंद ।

०८८ मंथन (सम्) सं.—मथना ।

०८८ मंथनि (सम्) सं.—वह घड़ा जिसमें दही रखकर मथा जाता है ।

०८८ मंथि (सम्) सं.—मथानी ।

०८८ मंद (सम्) वि.—धीमा, सुस्त, दीर्घ-सूत्री; उदासीन, तटस्थ; मूर्ख, मन्दबुद्धि वाला, अज्ञानी; नीच, खोखला, पोला; कोमल, मुलायम; छोटा, हल्का; अभागा, दुःखी, मुरझाया हुआ; दुष्ट, बदमाश, पापी । सं.—यम; शनिग्रह; हाथी विशेष; प्रलय ।

०८८ मंदु (सम्) सं.—मूर्ख, वेवकूफ ।

०८८ मंदयिसु, ०८८ मंदैसु (सम्) क्रि.—गाढ़ा हो, जम जा ।

०८८ मंदर (सम्) सं.—मन्दरपर्वत; मंदार का वृक्ष; स्वर्ग । वि.—गाढ़ा, घना ।

०८८ मंदलिगे (क) सं.—चटाई ।

०८८ मंदाकिनि (सम्) सं.—गंगा ।

०८८ मंदाक्रांत (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

०८८ मंदार (सम्) सं.—मूँगे के वृक्ष का फूल ।

०८८ मंदि, ०८८ मंदि (क) सं.—लोग, जन ।

०८८ मंदि (सम्) सं.—मंदिर, घर, भवना ।

०८८ मंदिवाळ, ०८८ मंदिवाळ (क) सं.—अत्यधिक परिचय या प्रेम जो अशांति, क्रोध आदि का कारण बनता है ।

०८८ मंदु (क) सं.—नीलगिरि में तोड़ जाति के लोगों का ग्राम ।

०८८ मंदुर, ०८८ मन्दुरे (सम्) सं.—अश्वसाला, घुड़साल ।

०८८ मंदि (क) सं.—दे. मंदि; पशुओं का समूह; गोशाला ।

०८८ मंदिदरि (सम्) सं.—०८८ मंदिदरि (तद्)—रावण की पटरानी का नाम ।

०८८ मंद्र (सम्) वि.—नीचा, गहरा, गम्भीर, पोला । सं.—मन्द्रस्वर ।

०८८ मकर (सम्) सं.—मकर, मगर; कुवेर की नवनिधियों में से एक ।

०८८ मकुट, ०८८ मगुट (सम्) सं.—किरीट, ताज ।

०८८ मकरि, ०८८ मक्रि (क) सं.—टोकरी ।

०८८ मकळ, ०८८ मकळु (क) सं.—बच्चे; संतान ।

०८८ मखमल्लु (अ. दे.) सं.—मखमल (अरबी); मुलायम वस्त्र ।

०८८ मखे, ०८८ मखे (सम्) सं.—मघा नक्षत्र ।

०८८ मग (क) सं.—पुत्र, बेटा, आमज; गन्ध, सुगन्ध ।

०८८ मगचु (क) क्रि.—उलटा, उलटा दे, औंधा रख; पलट (जैसे पुस्तक का पन्न पलटना); औंधा गिर; रगड़, घिसकर चौंका कर ।

०८८ मगट, ०८८ मगुट, ०८८ मोगट, ०८८ मोगुट (क) सं.—रेशमी वस्त्र; पीतांबर ।

०८८ मगवु, ०८८ मगु, ०८८ मगुवु (क) सं.—बच्चा, शिशु ।

०८८ मगळ, ०८८ मगळु (क) सं.—बेटी, पुत्र ।

०८८ मगळमा (क) सं.—पति की विश्वासपात्र स्त्री, पतिव्रता ।

०८८ मगि, ०८८ मगे (क) सं.—छोटा घड़ा ।

०८८ मगिळ, ०८८ मगळु (क) सं.—छत का जोड़ ।

०८८ मगुचु (क) क्रि.—दे. मगळु.

०८८ मगुळ, ०८८ मगुळु (क) क्रि.—घूम जा, उलट जा, वापस जा, पीछे जा; पुनः होने दे या कर ।

०८८ मगुळुचु (क) क्रि.—दे. मगळु.

०८८ मग (क) सं.—करघा ।

०८८ मगळ, ०८८ मगळु (क) सं.—पार्श्व, बगल । अ.—के पास, बगल में, की ओर ।

०८८ मगिगल, ०८८ मगिगळु (क) सं.—दे. मगुल.

मग्गु

मग्गु (क) क्रि.—गर्जन कर । सं.—
वशीकरण, वशीकृत होना ।

मग्गुल मग्गुल, मग्गुल मग्गुल (क) सं.—
दे, मग्गुल ।

मग्गु मग्गु (सम्) वि.—निमज्जित, डूबा
हुआ ।

मग्गु मग्गु (सम्) सं.—इन्द्र ।

मग्गु मग्गु मग्गु (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु,
मग्गु मग्गु (क) सं.—शरीर पर का काला
निशान, पहचान ।

मग्गु मग्गु (तद्) सं.—मास्वर्य (तत्) ;
डाह, ईर्ष्या ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—प्रियता, पसंद,
मान्यता ।

मग्गु मग्गु (क) क्रि.—पसंद कर ; प्रसन्न
हो, बहुत चाह । सं.—पसंदगी, प्रियता ;
प्रसन्नता, वृत्ति ; मोहित करने की दवा,
मोहित करने की राख ; घर की मजिल ;
हंसिया ; कुल्हाड़ी ; चित्ती ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—दे, मग्गु ।

मग्गु मग्गु (अ. दे.) सं.—मग्गु (फ़ारसी) ;
आनंद ।

मग्गु मग्गु (सम्) सं.—स्नान, नहाना ।

मग्गु मग्गु मग्गु (सम्) सं.—मग्गु,
मांस का गूदा ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—छाछ, मट्टा ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—भ्रम, भ्रान्ति ; धोखा ;
मूर्खता ; भोलापन ।

मग्गु मग्गु मग्गु (क) अ.—नितांत, केवल ;
ठीक-ठीक ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—समतलता ; माप ;
विस्तार, ऊँचाई, हद, सीमा, उचित सीमा ;
छोटा घोड़ा । वि.—छोटा ; मंद ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—समतल करना ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—संकेत, भाव, राय ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—नारियल या खजूर के
वृक्ष की डाली ; नारियल का रेशेदार जाल ;

दीवार पर चूना लगाने के लिए उपयोग में
लाया जानेवाला नारियल का रेशा ।

मग्गु मग्गु (सम्) सं.—मठ ; महन्त के रहने
का स्थान ; स्कूल, विद्यालय ।—सं० पति =
महंत ।

(१) मग्गु मग्गु (क) सं.—एड़ी, गाड़ी का
पिछला भाग ; छोटा बांध, छोटी नहर ।

(२) मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु,
मग्गु मग्गु (क) सं.—
—जल की गहराई ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु (क) सं.—घड़ा ;
तह । मग्गु (क) क्रि.—तह कर ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु (क) क्रि.—
रख ; लिपा रख ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु
मग्गु (क) क्रि.—टेढ़ा कर ; तह करा ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—तह, परत ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—स्त्री ; पत्नी ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु (क) क्रि.—
कैल, व्यास हो, बढ़ । सं.—फलाय, व्याप्ति,
बढ़ना, बढ़ती ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—आंचल, गोद ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—शुद्धि, निर्मलता, शुद्ध
वस्त्र ; एड़ी । क्रि.—तह कर ; मर जा,
मृत हो, चल बस ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु
मग्गु (क) क्रि.—मार डाल ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु (क)
सं.—धोबी, रजक ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु (क) सं.—धोबी ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु
मग्गु (क) सं.—धोबिन ।

मग्गु मग्गु (क) क्रि.—लगा, दृढ़ता से बांध
या जोड़ । सं.—पानी की गहराई ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—तह, परत ; पानी
की गहराई, अगाध जल ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—छोटा बांध ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—मूर्ख मनुष्य । — सं०
तन = मूर्खता ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—तलछट, कीचड़ ; गुग्गुल,
अगरु ; काँजी ; मूर्ख मनुष्य ।

(१) मग्गु मग्गु (क) सं.—तलछट, चिपचपा
होना ।

(२) मग्गु मग्गु (सम्) सं.—होल ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु (क) सं.—मिटी,
मृत्तिका ; जमीन, फ़र्श ।

मग्गु मग्गु (अ. दे.) सं.—मन, तौल विशेष ।
मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु मग्गु मग्गु मग्गु
(क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मग्गु मग्गु मग्गु (क) अ.—तुरंत, शीघ्रता
से ।

मग्गु मग्गु (क) क्रि.—टेढ़ा हो, झुक,
वशीभूत हो ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु (क) सं.—
रेता, चालू, धैकत ।

मग्गु मग्गु (क) क्रि.—झुक, मत हो, नम-
स्कार कर । सं.—झुकना, नमन ; छोटा

आसन, स्टूल (Stool) ; मणि, रत्न ;
गहना, आभूषण ; अज-स्तन ; अपानवायु ;
वैराग्य ; लिंग या योनि का अग्रभाग ;
फलाई, मणिबंध ; नौ की संख्या ; एक

प्रकार का बीज (The seeds of crotolaria)
मग्गु मग्गु मग्गु मग्गु मग्गु मग्गु मग्गु
मग्गु (क) सं.—देवालय, मठ

आदि की देखरेख का कार्य ।

मग्गु मग्गु (सम्) सं.—एक घृत का
नाम ।

मग्गु मग्गु (क) क्रि.—झुका या झुकवा ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—मग्गु मग्गु
मग्गु मग्गु—जटा ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—सदृशता, बैठने का आसन ।

मग्गु मग्गु (क) सं.—दे, मग्गु ।

मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु, मग्गु मग्गु (क)
सं.—रूपनष्ट मृत्यु ।

मग्गु मग्गु (सम्) सं.—अभिप्राय, राय, अग्नि-
मत्त ; विचार, धारणा ; धर्म, सिद्धांत ।

मग्गु मग्गु (सम्) सं.—हाथी ; बादल ;
एक मुनि का नाम ; एक राक्षस का नाम ।

मंडलं मत्तत्रय (सम्) सं. — अद्वैत, द्वैत और विशिष्टाद्वैत मत ।
 मंडल्लिके मत्तल्लिके (सम्) सं.—अपनी जाति की सर्वश्रेष्ठ वस्तु ।
 मंडि मति (सम्) सं.— बुद्धि, समझदारी, ज्ञान; मत, हृदय, विचार; विश्वास, राय; संकल्प ।
 (१) मंडु मत्त, मंडुं मत्त (क) अ.—फिर, पुनः; और, अतिरिक्त ।
 (२) मंडु मत्त (सम्) वि.—मस्त, मतवाला, उन्मत्त. पागल; अहंकारी ।
 मंडुं मत्त (क) सं.—भूमि का एक परिमाण या नाप ।
 मंडु मत्ति (क) सं.—शरीर पर का छोटा धब्बा, चित्ती; अर्जुन वृक्ष; सालवृक्ष ।
 मंडुन मत्तिन (क) वि.—दूसरा, दूसरे का, अन्य, इतर ।
 (१) मंडु मत्तु (तद्) सं.—मदः (तत्); नशा ।
 (२) मंडु मत्तु (क) अ.— और, एवं, तथा; फिर, पुनः; अतिरिक्त ।
 मंडु मत्ते (क) अ.—फिर, पुनः, तत्पश्चात्; उपरांत ।
 मंडुं मत्तेभ (सम्) सं.—मदमत्त हाथी; एक वृत्त ।
 मंडुं मत्तर (सम्) सं.— डाह, ईर्ष्या, जलन ।
 मंडुं मत्स्य (सम्) सं.—मछली; विष्णु का एक अवतार; एक देश और उसके राजा का नाम ।
 मंडुं मथन (सम्) सं.—मथने की क्रिया ।
 मंडु मथि (सम्) सं.—मथानी ।
 (१) मंड मद (क) सं.— मिलना; विवाह; शादी ।
 (२) मंड मद (सम्) सं.—नशा, मस्ती, मद; अहंकार; लंपटता, कामुकता; अनुराग, प्रेम; हर्षातिरेक; शराब, मदिरा; शहद; सुश्क, कस्तूरी; वीर्य; कपास; मधुकर, अमर; लहर ।

मदग मदग, मदगु मदगु (क) सं.—पानी के बहाव का द्वार ।
 मदडु मदडु (क) सं.—मूर्ख, मूठ, बेवकूफ ।
 मदन मदन (सम्) सं.— नशीली; काम-देव; प्रेम, अनुराग; धतूरे का पौधा, मोम, बकुलवृक्ष; मधुमक्खी; अच्छा, तपस्वी; वसंतकाल ।
 मदर मदर (तद्) सं.—मद्रं (तत्); हर्ष, आनन्द ।
 मदरंग मदरंग, मदरंगि मदरंगि (क) सं.—मेहंदी ।
 मदल मदल (क) सं.—विवाह, शादी ।
 मदलिग मदलिग (क) सं.—वर । मदलिगि मद्रलिगिति = वधू ।
 मदवणिगि मद्रवणिगिति, मदवणिगि मद्रवणिगिति (क) सं.—वधू ।
 मदवणिग मद्रवणिग, मदवणिग मद्रवणिग, मदवणिग मद्रवणिग (क) सं.— वर, दूल्हा ।
 मदवन मदवन (क) सं.—पति ।
 मदवलिगे मद्रवलिगे (क) सं.—वर, दूल्हा ।
 मदिरा मदिरा, मदिरे मदिरे (सम्) सं.— मदिरा, शराब ।
 मदिल् मदिल् (क) सं.—दीवार ।
 मदिवे मदिवे, मदिवे मदिवे (क) सं.— शादी, विवाह ।
 मदिळे मदिळे, मदिळे मदिळे, मदिळे मदिळे (तद्) सं.—मर्दलः (तत्)—सृदंग ।
 मदिडु मदिडु (क) सं.— औषध; विषैली पुड़िया, बारूद आदि ।
 मद्य मद्य (सम्) सं.—नशीला पेय पदार्थ, शराब, मदिरा ।
 मद्य मद्यप (सम्) शराबी ।
 मधु मधु (सम्) सं.— शहद, पुष्परस; मदिरा; जल; चीनी; मधुरता; वसंत ऋतु; मधु दैत्य; अशोक वृक्ष; चैत्र-मास; अमृत ।
 मधुर मधुर (सम्) वि.—मीठा; सुन्दर, मनोज्ञ । सं.—मिठास; शरबत; लाल-

गन्ना; शकर, गुड; विप; जस्ता; एक प्रकार का धाम ।
 मधु मधुवत (सम्) सं.— अमर, भौरा ।
 मध्य मध्य (सम्) सं.—बीच, मध्य, मध्य का भाग; कमर, कटि ।
 मध्यम मध्यम (सम्) वि.—बीच का, मध्य का, मध्यवर्ती; निरपेक्ष । सं.—मध्य भाग; कटि, कमर; व्याकरण में मध्यम पुरुष ।
 मध्यस्त मध्यस्त, मध्यस्थ मध्यस्थ (सम्) सं.—मध्यवर्ती; उदासीन, तटस्थ ।
 मध्याह्न मध्याह्न (सम्) सं.— दोपहर, मध्याह्न ।
 मनवरिके मनवरिके (क) सं.—ज्ञान, समझ, जानकारी ।
 मनवार्ते मनवार्ते (क) सं.—घरेलू काम ।
 मन मन (सम्) सं.—मन, चित्त ।
 मनशास्त्र मनशास्त्र (सम्) सं.— मनो-विज्ञान ।
 मनन मनन (सम्) सं.— चिंतन; बुद्धि, समझदारी; तर्क द्वारा निकाला हुआ परिणाम ।
 मनवे मनवे, मनवि मनवि, मनवे मनवे (क) सं.—प्रार्थना, विनय ।
 मनसु मनसु, मनसु मनसु (सम्) सं.— मन; हृदय, चित्त ।
 मनस्ताप मनस्ताप (सम्) सं.—मन का ताप; द्वेष, अनबन ।
 मनीषि मनीषि (सम्) वि.— पंडित, बुद्धि-मान ।
 मनीषे मनीषे, मनीषा मनीषा (सम्) सं.—बुद्धि, समझ; प्रतिभा ।
 मनुज मनुज, मनुष्य मनुष्य (सम्) सं.— मनुष्य, आदमी ।
 मनुस मनुस (तद्) सं.—मनुष्य ।
 मनुसि मनुसि (तद्) सं.—स्त्री ।
 मने मने (क) सं.— घर, मकान, गृह; कमरा ।
 मनेतन मनेतन (क) सं.—कुल, वंश, घराना ।
 मनोज्ञ मनोज्ञ (सम्) सं.— कामदेव, प्रेम ।

मनोऽङ्ग मनोऽङ्ग

मनोऽङ्ग मनोऽङ्ग (सम्) सं.—सुन्दरी स्त्री, राजकुमारी; पंडिता;
 मनोऽङ्ग मनोहर, मनोऽङ्ग मनोहारि (सम्) वि.—मन हरनेवाला, चित्ताकर्षक, सुन्दर, मनभाया।
 मनोऽङ्ग मन्त्रे (तद्) सं.—मानना (तत्); प्रतिष्ठा, सम्मान।
 मनोऽङ्ग मन्त्रिसु (तद्) क्रि.—शोक, अवरोध कर; सह, सहन कर, क्षमा कर, मार्जन कर; सम्मान कर, गौरव दे।
 मनोऽङ्ग मन्त्रय (सम्) सं.—कामदेव।
 मनोऽङ्ग मन्यु (सम्) सं.—क्रोध, रोष; दुःख, संकट, पीडा; विकलता; त्याग-भाव, त्याग।
 मनोऽङ्ग मन्ये (सम्) सं.—गर्दन का पिछला भाग।
 मनोऽङ्ग मन्वन्तर (सम्) सं.—इकहत्तर चतुर्थियों की अवधि, ४,३२,००० मानव-वर्ष।
 मनोऽङ्ग मन्विग (क) सं.—असुर, राक्षस।
 मनोऽङ्ग मन्वु (क) सं.—अन्धकार, अन्धेरा, धुंधलापन, धुंधला प्रकाश, बुद्धिहीनता, मूर्खता।
 मनोऽङ्ग मन्कार, मनोऽङ्ग मन्ते (सम्) सं.—ममत्व, प्रेम; स्वार्थ।
 मनोऽङ्ग मन्मल (क) सं.—मानसिक शांति का अभाव।
 मनोऽङ्ग मन्मु, मनोऽङ्ग मन्मु (क) सं.—खाना, भोजन (बच्चों की भाषा में)।
 मनोऽङ्ग मन्, मनोऽङ्ग मन्, मनोऽङ्ग मेन् (क) सं.—शरीर, देह।
 (१) मनोऽङ्ग मन् (क) सं.—एक पक्षी, नृपखग।
 (२) मनोऽङ्ग मन् (सम्) प्र.—यह तद्धित प्रत्यय है जिसका अर्थ है—युक्त, भरा हुआ।
 (३) मनोऽङ्ग मन् (सम्) सं.—दृश्य जाति के एक शिल्पी का नाम, घोड़ा; खच्चर; ऊट।
 मनोऽङ्ग मन्गण, मनोऽङ्ग मेण (तद्) सं.—मदन (तत्); मोम।
 मनोऽङ्ग मन्मु, मनोऽङ्ग मन्मु (क) सं.—व्याकुलता, बेचैनी।

मनोऽङ्ग मन्दि, मनोऽङ्ग मन्दि (क) सं.—देवर।
 मनोऽङ्ग मन्ख (सम्) सं.—किरण; अंगारा; सौंदर्य; क्रील।
 मनोऽङ्ग मन्यूर, मनोऽङ्ग मन्यूरक (सम्) सं.—मयूर, मोर।
 मनोऽङ्ग मन्डुन (क) सं.—बहन का पति, बहनोई; पत्नी का भाई, साला; पति, का भाई, देवर।
 मनोऽङ्ग मन्मे (क) सं.—दे. मनोऽङ्ग।
 मनोऽङ्ग मन्मल, मनोऽङ्ग मन्मल (तद्) सं.—मोर, मयूर।
 मनोऽङ्ग मन्मिले (क) सं.—अशुचिता, अशुद्धता।
 मनोऽङ्ग मन् (क) सं.—पेड़, वृक्ष।
 मनोऽङ्ग मन्कत (सम्) सं.—पत्ता।
 मनोऽङ्ग मन्गि, मनोऽङ्ग मन्गे (क) सं.—काठ की बर्तन, मुलायम पत्थर का वर्तन।
 मनोऽङ्ग मन्गण (सम्) सं.—मृत्यु, मौत।
 मनोऽङ्ग मन्गल, मनोऽङ्ग मन्गल (क) क्रि.—मुँह मोड़, पराङ्मुख हो, लौट, फिर जा, मुड़ जा; फिर संभव हो; फिर कर। सं.—पुष्प।
 मनोऽङ्ग मन्गलु (क) क्रि.—फिरा, मुड़वा, लौटा।
 मनोऽङ्ग मन्गलि (क) सं.—पेड़ों की वस्तुएँ (फल); फूल आदि।
 मनोऽङ्ग मन्गे, मनोऽङ्ग मन्, मनोऽङ्ग मन्गु (क) सं.—भूलना; पागलपन, मत्तता; बेहोशी; विकलता।
 मनोऽङ्ग मन्सु (क) क्रि.—भुला, छिपा।
 मनोऽङ्ग मन्गल, मनोऽङ्ग मन्गल (क) सं.—सैकत, रेत, बाल।
 मनोऽङ्ग मन्गलि (क) सं.—बुद्ध, वेवकृषी।
 मनोऽङ्ग मन्गलिसु (क) क्रि.—दे. मनोऽङ्ग; उवाल।
 मनोऽङ्ग मन्गलु (क) सं.—दे. मनोऽङ्ग, क्रि.—फिर, घूम, मुड़, लौट; उबल।
 मनोऽङ्ग मन्गल (अ. दे.) सं.—मरम्मत (अरवी)।

मनोऽङ्ग मन्गल, मनोऽङ्ग मन्गल (सम्) सं.—हल; सारस; घोड़ा; काजल, सुर्मा; बादल; बदमाश, कपटी।
 मनोऽङ्ग मन्गलक (सम्) सं.—हल।
 मनोऽङ्ग मन्गले (क) सं.—मुलायम पत्थर का वर्तन।
 मनोऽङ्ग मन्गलि (सम्) सं.—प्रकाश की किरण, किरण; मृगतृष्णा; एक प्रजापति का नाम; कश्यप के पिता का नाम।
 मनोऽङ्ग मन्गलिक, मनोऽङ्ग मन्गलिके (सम्) सं.—मृगतृष्णा।
 मनोऽङ्ग मन्गलि (क) सं.—वेदना. घबरा-हट; भूलना।
 मनोऽङ्ग मन्गल, मनोऽङ्ग मन्गलु (सम्) सं.—हवा, वायु; देवता, सुर; पर्वत; पवन का अधिष्ठाता देवता; एक पौधा; ग्रन्थ-पणि नामक वृक्ष।
 मनोऽङ्ग मन्गलिसु (सम्) सं.—रेगिस्तान, मरुप्रदेश।
 मनोऽङ्ग मन्गल, मनोऽङ्ग मन्गलु (क) क्रि.—बुद्धि अमित हो, पागल सा हो; विकल हो। सं.—विकलता, विभ्रम, पागलपन; मूर्खता, वेवकृषी।
 मनोऽङ्ग मन्गल (क) सं.—मूर्ख, पागल मनुष्य।
 मनोऽङ्ग मन्गे (क) क्रि.—भूल जा, विस्मृत हो। सं.—एक प्रकार का हिरन।
 मनोऽङ्ग मन्, [मनोऽङ्ग मन्] (क) सं.—सूप, पछोरने का सूप। अ.—दुःख से।
 (१) मनोऽङ्ग मन्गु, मनोऽङ्ग मन्गु (क) क्रि.—जल, गरम हो; ताप तप्त हो, संवस हो, निराश हो।
 (२) मनोऽङ्ग मन्गु (क) सं.—रहस्य।
 मनोऽङ्ग मन्गु (क) क्रि.—छिपा; भूल, विस्मृत कर। सं.—भूलना, विस्मृति।
 मनोऽङ्ग मन्गे, मनोऽङ्ग मन्गे, मनोऽङ्ग मन्गे (क) सं.—भूलना, विस्मृति; अचेतनता, बेहोशी।
 मनोऽङ्ग मन्गु (क) क्रि.—भुला; छिपा, गोपनीय रख; धोखा दे।

सुखद्वय मरहू (क) सं. — रहस्य; प्रसाद, गलती, त्रुटि; विस्मृति; अचेतनता, मूर्छा; आति ।

सुख मरि (क) सं. = सु० मरि — जानवरों का बच्चा, शावक ।

सुख मरु, सुख मरु (क) वि. — दूसरा, द्वितीय, और एक ।

सुख मरुक, सुख मरुक (क) सं. — दया, अनुकंपा; दुःख ।

सुख मरु (क) क्रि. — दे. सु० सं. — विस्मृति; रहस्य, पर्दा, छिपाना, छिपाव ।

सुख मरुसु मरिसु (क) क्रि. = सु० मरिसु मरिसु प्रसन्न कर, रिझा ।

सुख मरु (क) क्रि. — रीझ जा, पसंद कर, प्रसन्न हो । सं. — प्रियता, पसंदगी ।

सुख मरु (क) सं. — पहाड़ी, पहाड़ ।

सुख मरु (सम्) सं. — भूमि; मनुष्य ।

सुख मरु (सम्) सं. — कुचलता, पीसना; रगड़ना, दबाना, पालिश करना ।

सुख मरु (क) सं. — दे. सु० ।

सुख मरु (सम्) सं. — शरीर का मर्मस्थान; रहस्य, तत्वभेद ।

सुख मरु (सम्) सं. — मर्यादा, सीमा; गौरव, इज्जत ।

सुख मरु, सुख मरु (क) सं. — दे. सु० ।

(१) सुख मरु (क) अ. — दुःख से । — वि. अन्य, दूसरा । — सु० तायि (क) सं. — सौतेली माँ ।

(२) सुख मरु (सम्) सं. — मैल, कटि, धूल; तलछट; धातुओं का मैल; पाप; शरीर का मल; मांस; नैतिक मलिनता; मज्जा; मूत्र; कान का मल; आँसू; कपूर; समुद्रकेत; अरण्य, वन ।

सुख मरुकु (क) सं. — एक प्रकार का हार; एक गहना; मोड़, तह, परत; फिर ले आना ।

सुख मरुसु मरुसु (क) क्रि. — सुला; ज़मीन पर गिरा ।

सुख मरु, सुख मरु (क) क्रि. — सो, शयन कर; झुक जा (जैसे पके धान के पौधे झुक जाते हैं) । सं. — उपधान, तकिया ।

सुख मरु (क) सं. — मलयपर्वत ।

सुख मरु (क) क्रि. — मुँह मोड़, पराङ्मुख हो । सं. — रेत, बालू; फूल ।

सुख मरु (क) सं. — पुष्प, फूल ।

सुख मरु, सुख मरु (क) सं. — एक जाति का नाम ।

सुख मरु, सुख मरु (अ. दे.) सं. — मलहम; लेप ।

सुख मरु (क) क्रि. — सामना कर, लड़, गर्व कर, मस्ती में आ, औद्धत्य प्रकट कर । सं. — पर्वत; स्तन ;

सुख मरु, सुख मरु (क) सं. — पर्वतीय प्रदेश ।

सुख मरु (क) वि. — बड़ा, मुख्य, प्रधान, महान् ।

सुख मरु (क) सं. — कुश्ती लड़नेवाला, मल; कई व्यक्तियों का नाम । वि. — दे. सु० ।

सुख मरु (क) सं. — भीड़, समूह ।

सुख मरु (क) सं. — भ्रमण, घूमना; व्याकुलता, विकलता, घबराहट, विस्मय; भ्रमर, भौरा ।

सुख मरु (क) क्रि. — वस्तु की प्राप्त के लिए जूझ ।

सुख मरु (क) सं. — संघर्ष, युद्ध ।

सुख मरु (सम्) सं. — मल्लिका, चमेली ।

सुख मरु (क) सं. — उद्रेक, रोष, क्रोध; धुंधला प्रकाश, गंदगी, धूसर वर्ण, अशुद्धि; मिट्टी (मै. प्र.) ।

सुख मरु (क) क्रि. — फैल जा, फैलाया जा, विस्तार हो; प्रकट हो, ऊपर उठ; उल्लासित हो; रगड़, कुचल । सं. — धूसर वर्ण, धुंधला होना ।

सुख मरु. सुख मरु (तद्) सं. — श्मशानं (तत्) ।

सुख मरु, सुख मरु (क) सं. — दही ।

सुख मरु (क) सं. — मसि; कालापन, गंदगी, मैल ।

सुख मरु (क) अ. — धुंधला धूमिल ।

सुख मरु, सुख मरु (क) क्रि. — प्रकाश क्षीण हो, प्रभाहीन हो; अदृश्य, ओझल हो ।

सुख मरु (सम्) वि. — मलायम, कोमल, नरम, स्निग्ध, चिकना ।

सुख मरु (क) क्रि. — रगड़, घिस, पालिश कर, तीक्ष्ण कर, रगड़ कर, चमका ।

सुख मरु (सम्) सं. — मस्तक, सिर ।

सुख मरु (अ. दे.) सं. — महान् (अरबी) घोषणा-पत्र ।

सुख मरु (तद्) अ. — महत्, अधिक ।

सुख मरु (अ. दे.) सं. — महसूल (अरबी); कर, भू-कर ।

सुख महा (सम्) वि. — अत्यंत, बहुत, अधिक, महान् ।

सुख महा (सम्) सं. — माहात्म्य; महि-मानयी स्त्री ।

सुख महि, सुख महि (सम्) वि. — बड़ा, महान । सं. — महानता; भूमि ।

सुख महित (सम्) वि. — प्रतिष्ठाप्राप्त, सम्मानित ।

सुख महि (सम्) सं. — महिमा ।

सुख महि (सम्) सं. — एक पौधा विशेष ।

सुख महि (सम्) सं. — भैंस; पटरानी ।

सुख महि (सम्) सं. — पहाड़, पर्वत ।

सुख महि (सम्) सं. — इन्द्र; एक गन्धर्व नायक का नाम; एक स्थान का नाम; एक पर्वत का नाम ।

सुख महेश, सुख महेश्वर (सम्) सं. — शिवजी ।

सुख महोदय (सम्) सं. — बड़ी प्रसन्नता, बड़ा सौभाग्य ।

महोदर (सम्) सं.—बड़ी तोंद ;

एक रोग ; एक राक्षस का नाम ।

महोदर मळल, महोदर मळलु (क) सं.—

बाल, रेत, सैकत ।

महोदर मळिग (क) सं.—दुकान, कोठी ।

महोदर मळलु (क) सं.— बुद्धूपन, मूर्खता ;

बाल, रेत ।

महोदर मळल (क) सं.—बांखों का प्रकाश

मंद होना ।

महोदर मळे, महोदर मळे (क) सं.— वर्षा, वृष्टि,

बरसात ।

महोदर मळिगसु (क) क्रि.—अदृश्य करा,

ओझल करा ; नाश कर ।

महोदर मळगु (क) क्रि.—ओझल हो, अदृश्य

हो ; नष्ट हो ।

महो मा (क) सं.—आम, आम का पेड़ ।

महो महो मा मा (क) अ.—शाबास !

महो मां (क) सं.—आम (समास में) ।

महोदरसु मांकरिसु (क) क्रि.—अवज्ञा कर,

उपहास कर, उलाहना दे, लज्जित कर ।

महोदरसु मांगल्य (सम्) सं.—मुझल सूत्र ।

महोदरसु मांजिसु (क) क्रि.—मन्द प्रकाश

करा या ओझल करा ।

महोदरसु मांजु (क) क्रि.—छिप, ओझल हो,

वंचित कर ।

महोदरसु मांदहे (क) वि.— न रुकनेवाला,

न ठहरनेवाला ।

महोदरसु मांदिनु (क) क्रि.—रुकवा ।

महोदरसु मांदिनु (क) क्रि.—ठहरा, रोक, प्रति-

षेध कर ।

महोदरसु मांस (सम्) सं.—मांस, गोश्त ।

महोदरसु मांसिक (सम्) सं.—कसाई, मांस

बेचनेवाला ।

महोदरसु माकरिसु (क) क्रि.— दे. महोदरसु

महोदरसु ; रहस्य का उद्घाटन ।

महोदरसु मागणि (अ. दे.) सं.— ज़िले या

तालुका का भाग ।

महोदरसु मागिसु (क) क्रि.—फलों को पकने

दे ।

महोदरसु मागु (क) क्रि.—पक (फलों का पकना) ।

महोदरसु माघ (सम्) सं.—माघ मास ।

महोदरसु माजु (क) क्रि.—मन्द करा ; धूमिल

करा, ओझल करा ; छिपा । सं.—छिपाना,

छिपाव ।

महोदरसु माट (क) सं.—करना, बनाना, काम,

धन्धा ; ढंग, प्रकार ; सौंदर्य, चारुता, मनो-

हरता ; जादू ।—गार गार=जादूगार ।

(१) महोदरसु माड (क) सं.—आला, छज्जा ;

लाश ले जाने की टिखटी ।

(२) महोदरसु माड (?) सं.—मंजिल, अट्टालिका ;

हर्ष्य ।

महोदरसु माडि (क) मं.—मकान की ऊपरी

मंजिल ।

महोदरसु माडिसु (क) क्रि.—करा या करवा,

तैयार करा ।

(१) महोदरसु माडु (क) क्रि.—कर, बना, तैयार

कर, कोई कार्य कर ।—सिक्के (क) सं.—

करना, क्रिया ।

(२) महोदरसु माडु (क) सं.—आला, छज्जा ।

महोदरसु माण, महोदरसु माणु (क) क्रि.—रोक,

निवारित कर, निवारण कर ; मुक्त हो,

अलग ; पहले ही अच्छा हो ।

महोदरसु माणि (तद्) सं.—लड़का, छोकरा ।

महोदरसु माणिक्य (सम्) सं.—लाल पद्मरंग ।

महोदरसु माणिसु (क) क्रि.—रुकवा, निषेध

करा ।

महोदरसु मात, महोदरसु मातु (क) सं.—वात,

वचन, शब्द, उक्ति ।

महोदरसु मातंग (सम्) सं.—हाथी ; श्वपच ।

महोदरसु मातालि, महोदरसु मातुग, महोदरसु

मातुगार (क) सं.—वाचाल, बातूनी ।

महोदरसु मातुगार्ति (क) सं.—बातूनी

स्त्री ।

महोदरसु मातुल (सम्) सं.—मामा ; धतूरे का

पौधा ।

महोदरसु मातुलि (सम्)—सं.—मामा की

पत्नी, मामी ।

महोदरसु मातुश्री, महोदरसु मातु, महोदरसु

मातुके (सम्) सं.—माता ; जगज्जननी ।

महोदरसु मात्र (सम्) अ.—केवल, मात्र,

भर । सं.—नाप, परिमाण ।

महोदरसु मात्रे (सम्) सं.—परिमाण ; ठीक-

ठीक, नाप, अणु ; क्षण, पल ; छोटा माप,

अंश ।

महोदरसु मात्रस्य (सम्) सं.—दे मंडूक ।

महोदरसु मादिग, महोदरसु मादिग (तद्) सं.—

मातंग (तत्) ; मौची ।

महोदरसु माधव (सम्) वि.—मीठा, शहद से

तैयार किया हुआ, वसंतकालीन, मधु दैत्य के

वंश का । सं.—श्रीकृष्ण ; वसंतक्रतु, वशा-

खमास ; कुबेर ; राजा ; कामिनी, स्त्री ;

पुरुषों का नाम ।

महोदरसु माधुर्य (सम्) सं.—मधुरता,

मिठास ; दयाशीलता ; सात्विक नायक क

एक गुण ।

महोदरसु मान (सम्) सं.—नाप, तौल, परि-

माण ; समानता, सादृश्य ; प्रमाण ;

सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, गर्व, घमण्ड,

मद ।—कायु कायु (तद्) क्रि.—इज्जत

की रक्षा कर ।

महोदरसु मानस (सम्) वि.—मन सम्बन्धी,

मानसिक, मानसरोवर पर रहनेवाला ।

सं.—मानसरोवर ।

महोदरसु मानिनि (सम्) सं.—मानिनी स्त्री ;

मान्य स्त्री ।

महोदरसु मानुवे (क) सं.—एक प्रकार की

घास ।

महोदरसु मानुष्य (सम्) सं.—मानव-प्रकृति,

मनुष्यत्व ; मानव-जाति, मानवसमुदाय ।

महोदरसु मान्य (सम्) वि.—मानने योग्य,

आदरणीय, पूज्य । सं.—माननीय व्यक्ति ;

राजा ; मान्यता ; वह भूमि या खेत जिसके

लिए भूमि-कर की छूट मिली हो ।

महोदरसु मापत्य (सम्) सं.—कामदेव ।

महोदरसु मापिळ, महोदरसु मापिळे (तमिळ?)

सं.—मलबार का निवासी मुसलमान या

ईसाई ।

मोय माय, मोय मायु (क) क्रि.—
मन्द प्रकाश हो, मन्द पड़; ओझल हो,
छिप जा, चल जा ।

मोय माय, मोय माये (सम्) सं.—
माया, छल, प्रवचना, अदृश्य होना ।

मोयावि मायावि (सम्) सं.—धोखेबाज़,
छलिया; बाज़ीगर, ऐंद्रजालिक ।

मोय मार, मोय मारु (क) सं.—छः फुट
की नाप ।

मोय मारण (सम्) सं.—मारना, हत्या
करना, नष्ट करना ।

मोय मारि (सम्) सं.—मारी, महामारी,
सांक्रामिक रोग; दुर्गा ।

मोय मारुत (सम्) सं.—मारुत, पवन,
हवा ।

मोय मारुकि (क) सं.—एक प्रकार की
घास ।

मोय मारु, मोय मारु (क) क्रि.—सामने
हो, सामना कर, विरोध कर ।

मोय मारुण (क) सं.—मोयनीय दिवस
मारनेय दिवस—दूसरा दिन, बाद का दिन ।

मोय मारुणे (क) वि.—बाद का, दूसरा ।
मोय मारुणिक (क) सं.—बनिया, वैश्य ।

मोय मारुसु, [मोय मारिसु] (क)
क्रि.—बेचवा, बेचने दे; अदल-बदल करवा ।

मोय मारु (क) क्रि.—बेच, विक्रय कर ।
सं.—दो गज़ की लंबाई, फैले हुए दोनों

हाथों का परिमाण; अदल-बदल ।
मोय मारुकि (क) सं.—दूसरा धन्धा या

काम ।
मोय मार्ग (सम्) सं.—मार्ग, रास्ता,
सड़क; पगडंडी; चिह्न, निशान; खोज,
अनुसंधान; ढंग, विधान, पद्धति; मार्गशीर्ष

मास ।
मोय मार्गण (सम्) सं.—खोज, अनुसं-
धान; माँगना; पूछना; माँगनेवाला, मिखारी;
बाण; वैरी, शत्रु; नरकजीवी; एक वृक्ष ।

मोय मार्जार, मोय मार्जाल (सम्)
सं.—बिल्ली ।

मोय मारुव (सम्) सं.—मृदुता, कौमलता,
नरमी ।

मोय मारुपु (क) सं.—परिवर्तन, बदलना।
मोय मारुम (क) सं.—रिपु, शत्रु ।

मोय मालति (सम्) सं.—मालती की
लता और फूल ।

मोय मालिके (सम्) सं.—माला, हार ।
मोय मालिन्य (सम्) सं.—मलिनता,
अशुद्धि, मैलापन ।

मोय मालिसु (क) क्रि.—तिरछी दृष्टि से
देख, कटाक्ष कर, घूर ।

मोय मालीक (सम्) सं.—मालिक
(अरबी); स्वामी, प्रभु ।

(१) मोय मालु (क) क्रि.—झुक जा। क्रि.—
झुकाव, टेढ़ापन ।

(२) मोय मालु (अ. दे.) सं.—माल
(अरबी), सामान ।

मोय माले, मोय माल्य (सम्) सं.—
दे. मोलिके ।

मोय माव (तत्) सं.—माम (तत्) सं.—
मामा; ससुर ।

मोय मावत, मोय मावतिग (अ. दे.)
सं.—मोय मावतिग—महावत ।

मोय मावि (क) सं.—गर्भाशय ।
मोय मावु (क) सं.—भाम, आम्र ।

मोय मावुलिग (क) सं.—लुब्धक, व्याध,
शिकारी ।

मोय माप (सम्) सं.—उर्द, उडद; तौल
विशेष ।

मोय मास (सम्) सं.—मास, महीना;
बारह की संख्या ।

मोय मासर (क) सं.—सौंदर्य, चारुता;
धूसर वर्ण ।

मोय मासलु (क) वि.—गंदा, मैला ।
मोय मासु (क) क्रि.—गंदा हो, मैला,
मलिन हो । सं.—मलिनता, मैलापन,
गंदगी; गर्भाशय, जरायु ।

मोय माहात्म्य (सम्) सं.—महिमा,
महत्व, गौरव ।

मोय माहिषि (सम्) सं.—भैंस ।

मोय माळ (क) क्रि.—बंद हो, समाप्त हो,
छूट ।

मोय माळुकि (क) सं.—पति का
संग न छोड़नेवाली स्त्री ।

मोय माळु (क) क्रि.—कर, कोई काम कर ।
मोय माळुके (क) सं.—करना, क्रिया;
ढंग, रीति ।

मोय मिंगु (क) क्रि.—निगल ।
मोय मिंगिसु (क) क्रि.—चमका, प्रकाशित
करा ।

मोय मिंगु (क) क्रि.—चमक, दमक,
प्रकाशित हो, दीप्तिमान हो । सं.—चमक,
दमक, आभा ।

मोय मिंगे (क) सं.—एक प्रकार का अन्न,
समूह, राशि ।

मोय मिंग (क) सं.—उपपति, जार; वीर;
उपद्रव मचानेवाला ।

मोय मिंगार (क) सं.—उपपति, जार।
मोय मिंगाति, मोय मिंगि (क) सं.—
जारिणी, व्यभिचारिणी, वैश्या ।

मोय मिंगु (क) सं.—कामातुरता, लंपटता;
उठा होना, उभार ।

मोय मिकु (क) अ.—शेष, अधिक; बचता
मोय मिंगते (क) सं.—बचत ।

मोय मिंगिल्, मोय मिंगिल् (क) सं.—
अधिकता, श्रेष्ठता, समृद्धि, बढ़ती ।

मोय मिंगिसु (क) क्रि.—बचा, किसी चीज़
को कम होने न दे ।

मोय मिंगु (क) क्रि.—बच जा; अधिक हो,
समृद्ध हो ।

मोय मिंगे (क) सं.—समृद्धि, आधिक्य;
पूरक ।

मोय मिंगिसु, मोय मिंगु, मोय
मिंगिसु (क) क्रि.—पलक मार,
आँखें चमका ।

मोय मिंगल, मोय मिंगलि, मोय मिंगले,
मोय मिंगले (क) सं.—एक वृक्षविशेष ।

मोय मिंगल (क) क्रि.—मोय मिंगल नोडु (क) क्रि.—
डुकुर.डुकुर देख; घूर ।

ಮಿಟ್ಟಿ ಮಿಡೆ

ಮಿಟ್ಟಿ ಮಿಡೆ, ಮಿಟ್ಟಿನೆ ಮಿಡೆನೆ (ಕ) ಖ.—ಠು:ಖಿ
 ಹೊಕರ |
 ಮಿಟ್ಟಿ ಮಿಡೆ, ಮಿಟ್ಟಿ ಮಿಡೆ (ಕ) ಸಂ.— ಟಿಲಾ
 ಪಹಾಡಿ ; ಮಮೂಹ |
 ಮಿಡೆ ಮಿಡ (ಕ) ಖ.—ಠು:ಖಿ ಸೆ |
 ಮಿಡೆ ಮಿಡೆ (ಕ) ಸಂ.—ಠು:ಖಿ ; ಪತಗ, ಶಲಭ |
 (೧) ಮಿಡಿ ಮಿಡಿ (ಕ) ಸಂ.— ಛಾಡಿಯೆಂ ಕಾ
 ಮಮೂಹ ; ಛೋಡಿ ಛಾಡಿ |
 (೨) ಮಿಡಿ ಮಿಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಛಂಗುಲಿ ಸೆ ಛಾಲ,
 ಛಂಗುಲಿ ಸೆ ಟಪಟಾ, ಛಂಗುಲಿ ಸೆ ಏಜಾ ; ಠೆಕಾರ
 ಕರ ; ಲಾಘ ; ಪಾರ ಕರನೆ ಡೆ ; (ಖೆಸು)
 ಏಹಾ |
 ಮಿಡಿ ಮಿಡಿ, ಮಿಡಿ ಮಿಡಿ, ಮಿಡುಚು
 ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಪತಗ, ಶಲಭ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಗು ಮಿಡುಗು (ಕ) ಕ್ರಿ.—
 ಠು:ಖಿ ಡೆ. ಶೊಕ ಡೆ, ಪಿಡಾ ಡೆ ; ಛಿತಿತ ಹೊ,
 ಏಕುಲ ಹೊ ; ಕ್ರಿಯಾಶೀಲತಾ ಡಿಖಾ ; ಕೆಂಪ |
 ಸಂ.—ಠು:ಖಿ, ಶೊಕ ; ಹಿಲನಾ, ಛಾಂದೊಲನ ;
 ಪರಾಕ್ರಮ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಠು:ಖಿ ಮಿಡುಕು.
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು
 ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಚಮಕ, ಛಾಞಾ ಪ್ರಕಟ
 ಕರ, ಡಿಮಡಿಮಾ, ಛಿಲಮಿಲಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು
 ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಚಮಕ, ಛಾಞಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಛಮಪಾಶ, ಛಮಡೆ ಕೊ
 ರಸ್ತೆ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—
 ಠರವೂಜಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—
 ಛಮಛಾ, ಕಾಠ ಕಾ ಛಮಛಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ವಿ.—ಛೊಟಾ, ಲಠು |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಸಮ್) ವಿ.—ಪರಿಮಿತ ; ನಪಾ ಹುಞಾ,
 ಞೆಞಾ ಹುಞಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮಾನ. ಪರಿಮಾಣ ;
 ಏಠಾರ್ಥಜ್ಞಾನ ; ಸೆಮಾ, ಹಡ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮಿಡುಕು, ಡೊಸ್ತ ; ಸೂರ್ಯ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಜೊಡಾ, ಞುಡಾ ;
 ಞುಡು ಏಛು ; ಸಂಗಮ, ಸಂಞೊಗ ; ಮಿಡುಕು ರಾಡಿ |

ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಸಮ್) ಸಂ.—
 ಛೂಠ. ಛಸಠ್ಯ |
 ಮಿಡಿ ಮಿಡಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಕೂಡ, ಮರ್ದನ ಕರ ; ರಗಡ,
 ಕುಛಲ ; ಏಠ ಕರ, ಮಾರ ; ಞಾತ ಕರ, ನಾಶ
 ಕರ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.
 —ಕೂಡ, ಮರ್ದನ ಕರಾ ಞಾ ಕರವಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಠರವೂಜೆ ಕೊ ಏಲ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—
 ಡೆ. ಮಿಡುಕು ; ಮಿಡುಕು ಧ್ವನಿ ಸೆಂ ಏಲ, ಏಡುಏಡು |
 ಸಂ.—ಛಮಕ, ಛಾಞಾ, ಕಾಂತಿ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ವಿ.—ಛಮಕನೆಏಲಾ, ಪ್ರಕಾಶ.
 ಮಾನ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಛಮಕ, ಛಕಾಞೆಂಠ
 ಟಪಟ ಕರ | ಸಂ.—ಏಜಲಿ, ಞೆಂಠ. ಕಾಂತಿ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.— ಏಜಲಿ, ಕಾಂತಿ,
 ಞೆಂಠ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಜಲ ಸೆಂ ರಹನೆಏಲಾ ಏಕ
 ಪಕ್ಷಿ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು,
 ಞೆಂಠ. ಸಮಾಗಮ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮಿಡುಕು, ಸಮಿ-
 ಛ್ರಣ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.
 —ಹಿಲ, ಡುಲ, ಛೂಮ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಡೆ. ಮಿಡುಕು ;
 ಹಿಲಾ, ಸಂಠಿತ ಕರ | ಸಂ.—ಹಿಲನಾ, ಸಂಠಿತ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಛಮಕ, ಕಾಂತಿಮಾನ್
 ಹೊ, ಲಸಿತ ಹೊ | ಸಂ.—ಕಾಂತಿ, ಛಮಕ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.— ಛಮಡೆ ಕೊ ರಸ್ತೆ,
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಲುಠಿತ ಹೊ,
 ಲುಠಕ ; ಡುಠ-ಠುಠ ಹಿಲ ; ಸಮೂಹ ಹೊ, ಏಡು,
 ಸಮೂಹ ಹೊ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—
 ಛಮಛಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಡುಠ-ಠುಠ
 ಹಿಲ ; ಛಕರಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಸ್ನಾನ ಕರ, ನಹಾ ; ನಹಲಾ ;
 ಡಾಲ | ಸಂ.—ಸ್ನಾನ |

ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಜಲಕೊಞಾ,
 ಮಠರಂಗ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಠಠಲ ; ಕೂಡ, ಛಲಾಂಗ
 ಮಾರ ; ಜಡ ಸೆ ನಿಕಾಲ ಫೆಂಕ, ನಿಕಾಲ ಏಾಹರ
 ಕರ. ಟಪಟನ ಕರ, ಟಠಾಡ ; ಡಏಾ, ಪಟಕ,
 ಠಂಗಲಿ ಸೆ ಡಏಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—
 ಮಠಲಿ | ಠಾರ. ನಠತ್ರ |—ಠಾರ ಗಾರ (ಕ)
 ಸಂ.—ಮಠುಞಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಠೆ. ಮಿಡುಕು.
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ನಹಲಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಸ್ನಾನ ಕರ, ನಹಾ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು, ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಮಿಡುಕು
 ಮಿಡುಕು —ಸೆಮಾ ಸೆ ಏಾಹರ ಹೊ, ಛತಿಕರಮಣ
 ಕರ, ಪಾರ ಕರ, ಛಠಿಕ ಹೊ |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಸಂ.—
 —ಕಿಸೆ ಠಠಠ್ರಯ ಸೆ ಛಲಗ ರೂಪ ಸೆಂ ರಠಿ ಹುಡೆ
 ಏಸ್ತು ; ಮನೊತಿ ಕೊ ಏಸ್ತು |
 ಮಿಡುಕು ಮಿಡುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಠೆ. ಮಿಡುಕು.
 ಮುಂದು ಮುಡು (ಕ) ಠ.—(ಸಮಾಸ ಸೆಂ) ಪಹಲೆ, ಪೂರ್ವ |
 ಮುಂದುಮುಡು ಮುಂದುಮುಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಞಾಗೊ ಏಡು,
 ಏಡೆ ಛಲ |
 ಮುಂದುಮುಡು ಮುಂದುಮುಡು, ಮುಂದುಮುಡು
 ಮುಂದುಮುಡು, ಮುಂದುಮುಡು ಮುಂದುಮುಡು
 ಮುಂದುಮುಡು ಮುಂದುಮುಡು (ಕ) ಸಂ.— ನೆಏಲಾ,
 ನಕುಲ |
 (೧) ಮುಂದುಮುಡು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮುಡು ಹುಞಾ ಞಾ
 ಗೆಜಾ ಸಿರ ; ಸಿರ, ಮಾಠಾ ; ನಾಡೆ ; ಞುಂಗ
 ಏಷ |
 (೨) ಮುಂದುಮುಡು (ಕ) ಸಂ.—ಞೂಮನಾ, ಞುಠ್ಠನ ;
 ಛೊಟಾ ಕಪಡಾ |—ಠಡು ಛಾಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.—
 ಞೂಮ, ಞುಠನ ಕರ |
 ಮುಂದುಮುಡು (ತಡ್) ಸಂ.— ಏಠಏಾ ಸ್ತ್ರೀ ಜಿಸಕಾ
 ಸಿರ ಮುಡಾ ಹುಞಾ ಹೊ ; ಏಠಏಾ : ಏಠಏಾಠಿಣಿ
 ಸ್ತ್ರೀ, ಏಠಏಾ |
 ಮುಂದುಮುಡು (ಕ) ಖ.—ಞಾಗೊ, ಸಾಮನೆ, ಪಹಲೆ |
 ಮುಂದುಮುಡು (ಕ) ವಿ.—ಞಾಗೊ ಕಾ, ಸಾಮನೆ
 ಕಾ, ಞಾಏ ; ಏಠಠ |
 ಮುಂದುಮುಡು (ಕ) ಖ.— ಞಾಗೊ, ಸಾಮನೆ ; ಪಹಲೆ,
 ಛತ್ರ ; ಪಠ್ರಾಡ್ |

मूढुडुडुडुडु (क) वि.—आगे या पहले दौड़नेवाला।

मूढुडुडुडुडु (क) अ.—दे. मूढुडु. सं. — सुरही जैसा वर्तन।

मूढुडुडुडुडु (म ?) सं.—बंबई।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—आगे बढ़, सामने आ।

मूढुडुडुडुडु (क) अ.—अग्र भाग, सामने का भाग।

मूढुडुडुडुडु (सम्) सं.—नथ; दर्पण; आईना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—मुँह के सामने आ या गिर पड़; मँडरा, भिनभिना।

मूढुडुडुडुडु (सम्) सं.—ताज़, किरिटी; कलंगी।

मूढुडुडुडुडु (सम्) सं.—दर्पण. आईना।

मूढुडुडुडुडु (सम्) सं.—कली, खिलनेवाली, कली; कली जैसी वस्तु; एक वृत्त का नाम।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—कुछा कर।—बिके=कुछा करना।

मूढुडुडुडुडु (सम्) सं.—मोक्ष, निःश्रेयस्।

मूढुडुडुडुडु (सम्) सं.—मुक्ता, मोती।

मूढुडुडुडुडु (सम्) सं.—मुख, चेहरा; अगला भाग, धार, आयुधों का अग्र भाग; दिशा; प्रधान, मुख्य; चोंच; भूमिका।

मूढुडुडुडुडु (सम्) वि.—प्रधान, मुख्य, विशिष्ट।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—समाप्त कर, पूरा कर।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—समाप्त हो, अंत हो। संकुचित हो; हाथ जोड़; बन्द कर, मूँद।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) सं.—मेघ, बादल; गगन, नभ।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—नाक।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—दे. मूढुडुडु।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—वेतन, मज़दूरी आदि का निर्णय।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—झूँद, निमीलित कर। (तद्) सं.—कली, खिलनेवाला फूल।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—कॉटेदार वृक्ष (Acacia Suma)

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—संकुचित कर, बन्द कर।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—ठोकर खाकर गिर; लड़खड़ा।

(१) मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—ठोकर खा, गिर पड़। सं.—गड्ढा।

(२) मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—जीर्णावस्था के कारण बढ़वू निकल। सं.—बढ़वू (किसी चीज़ खराब हो जाने से निकलनेवाली बढ़वू)।

मूढुडुडुडुडु (सम्) सं.—सुन्दरी स्त्री, तरुणी, चतुर स्त्री, मूखे स्त्री; अनजान स्त्री।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) सं.—सन्ध्या, सायंकाल, अन्धेरे का समय।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—शून्य या खाली होना, नाश, बरबादी।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) सं.—दकन।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—ढंक, ढॉक; बन्द कर।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—मूर्छित हो, बेहोश हो।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—दकन।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—बढ़ती, वृद्धि, उन्नति।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—पहुँच, स्पर्श कर।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) सं.—स्पर्श, छूना, संबन्ध, स्त्रियों का मासिक धर्म।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) सं.—दे. मूढुडुडु।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—मूर्ख, बेवकूफ।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—छुआ, लगा, पहुँचा।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—पहुँच, लग, छू, स्पर्श कर। सं.—स्त्री-रज, स्त्रियों का मासिक धर्म; विघ्न, बाधा, रोक; ठहराव; न्यूनता, कमी।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—खर्च, व्यय, खर्च करने की रकम या अनाज।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—उपाय या साधन विहीन व्यक्ति।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—जूड़ा बांध, केश शृंगार कर। सं.—जूड़ा; मुकुट (देव-मुकुट); अनाज का एक परिमाण (४२ शेर); अनाज का गट्ठा; समाप्ति, अंत, नाश।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—समाप्त कर, अंत कर। सं.—मनौती का पैसा या आभरण जो देवता को समर्पित किया जाता है।

मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—किसी दूसरे के केश या जूड़े में फूलों का शृंगार कर।

मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु, मूढुडुडुडुडु (क) क्रि.—झुक जा, सिकुड़ जा, बक्र हो, झुका, तिरछा कर।

मूढुडुडुडुडु (क) सं.—दे. मूढुडुडु; कंधा, कन्धे का ऊपरी भाग।

मूसुसुसु मुसुसु

मूसुसुसु मुसुसु (क) सं.—कन्धा, कन्धे का ऊपरी भाग ।

मूसुसुसुसु मुणिसु (क) क्रि.—डुवा, निमज्जित कर या करा; बरवाद कर ।

मूसुसुसु मुणु (क) क्रि.—डूब, निमज्जित हो; स्नान कर; नष्ट हो । सं.—डुबकी ।

मूसुसुसु सुत्त, मूसुसुसु सुत्तग, मूसुसुसु सुत्तल, मूसुसुसु सुत्तक, मूसुसुसु सुत्तुग, मूसुसुसु सुत्तल, मूसुसुसु सुत्तग, मूसुसुसुसु सुत्तुग (क) सं.—पलाश, किंशुक;

पलाश वृक्ष ।

मूसुसुसु सुत्तिगे (क) सं.—घेरना, आक्रमण । मूसुसुसु सुत्तु (क) क्रि.—घेर. आक्रमण, घेर

हाल । सं.—बुढ़ापा, वृद्धावस्था; चुंबन । (तद्) सं.—सुक्ता, मोती ।

मूसुसुसुसु सुत्तैदे (क) सं.—सुमङ्गली, सुहागिनी स्त्री ।

मूसुसुसु सुत्त (क) सं.—दादा । (तद्) सं.—सुक्ता, मोती ।

मूसुसुसु सुद (सम्) सं.—आनन्द, हर्ष ।

मूसुसुसु सुदक, मूसुसुसु सुदक (क) सं.—बूढ़ा आदमी ।

मूसुसुसु सुदकि, मूसुसुसु सुदकि (क) सं.—बूढ़ी स्त्री, बुढ़िया ।

मूसुसुसु सुदुरु (क) क्रि.—तह कर, मोड़; सिकुड़ जा ।

मूसुसुसु सुदि (क) सं.—बुढ़ापा, वृद्धावस्था ।—उस तन = बुढ़ापा ।

मूसुसुसु सुदु (क) क्रि.—बढ़, वृद्ध हो, उन्नत हो । क्रि.—बूढ़ा ।

मूसुसुसु सुदुडु (क) क्रि.—सिकुड़ जा, संकुचित हो; संकुचित कर, आकुंचित कर; लपेट (चटाई लपेटना) ।

मूसुसुसु सुदुगर (सम्) सं.—सुदुगर ।

मूसुसुसु सुदिसु (क) क्रि.—प्यार दिखा; बोसा दे, चूम ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—सुम्बन; प्यार, प्रेम ।

मूसुसुसु सुदुदे (क) सं.—पिंड, गोलाकार; राशि, रागी का पिंड ।

मूसुसुसुसु सुदुदुदुदुदु (सम्) सं.—प्रेस (Press) ।

मूसुसुसु सुदुदुके (सम्) सं.—सुदुदुका; अंगूठी, सुदुदुह ।

मूसुसुसु सुदुदु (सम्) सं.—सुदुदुह. छाप ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) उ.—पहले, पूर्व (समास में) । मूसुसुसु सुदुदु सुदुदु, मूसुसुसु सुदुदु सुदुदु (अ. दे.) सं.—सुदुदुदु (अरबी) ।

(१) मूसुसु सुदुदु (क) क्रि.—गुस्से में आ, क्रुद्ध हो, रष्ट हो । सं.—क्रोध ।

(२) मूसुसु सुदुदु (सम्) सं.—यति, तपस्वी; संन्यासी ।

मूसुसुसु सुदुदुदु, मूसुसुसु सुदुदुदु (क) सं.—क्रोध, रोष, गुस्सा ।

मूसुसुसु सुदुदु, मूसुसुसु सुदुदु (क) अ.—सामने, आगे; पहले, पूर्व ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) अ.—दे. मूसुसु.

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—बुढ़ापा वृद्धावस्था ।

मूसुसुसु सुदुदुदु, मूसुसुसु सुदुदुदु (क) सं.—गरम रेत ।

मूसुसुसु सुदुदुदु, मूसुसुसु सुदुदुदु (क) सं.—रूपहीन मृत्यु ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—कन्धा, कन्धे का ऊपरी भाग; प्रतीकार, बदला; बर-वधू को दिया जानेवाला-उपहार ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—प्रतिकृति; बदला ।

मूसुसुसु सुदुदुदु, मूसुसुसु सुदुदुदु, मूसुसुसु सुदुदुदु (क) सं.—भुजाग्र, कंधा ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—कान और नाक का आभूषण विशेष ।

मूसुसुसु सुदुदु, मूसुसुसु सुदुदु (क) क्रि.—तिरछा हो, सिकुड़ जा, संकुचित हो ।

मूसुसुसु सुदुदु, मूसुसुसु सुदुदु (सम्) सं.—सुरली, बाँसुरी ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) क्रि.—तोड़, फोड़, मरोड़, घुसाव, पेंच; हाथ में पहनने का एक आभरण, पहुँची; चक्राकार पदार्थ; तैयारी; साँड, बैल ।

मूसुसुसु सुदुदुके, मूसुसुसु सुदुदुके (क) सं.—तिरछापन, टेढ़ापन ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) क्रि.—मरोड़, तिरछा कर ।

मूसुसुसु सुदुदुके (क) सं.—एक पौधा, वर्तकी नामक पौधा ।

मूसुसुसु सुदुदुके (क) सं.—एक छोटी झाड़ी ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—रुक्षता; खुरखुरापन ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) क्रि.—जला, ज्वलित कर ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—दे. मूसुसु.

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—मोड़, षँठ, तिरछापन ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) क्रि.—झंकार कर, झंकार उत्पन्न हो ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) क्रि.—दे. मूसुसु. सं.—टुकड़ा, अंश, खण्ड ।

मूसुसुसु सुदुदुके (क) सं.—एक पौधे का नाम; अशुद्धता, अशुचि, गंदगी, मैलापन ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—नाश, बरवादी; चूर्ण करना ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—खण्ड, टुकड़ा । क्रि.—तिरछा कर; सुखविकार कर ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) सं.—अल्पमति या मूर्ख मनुष्य, नीच पुरुष ।

मूसुसुसु सुदुदु (क) क्रि.—दे. मूसुसुसु.

मूसुसुसु सुदुदु (क) क्रि.—असह्य हो; कराह, हिचकी बाँध ।

मूसुसुसु सुदुदुके (क) सं.—दरिद्र या गरीब आदमी ।

मूसुसुसु सुदुदुके (क) सं.—हठ, हड़ताल, बहिष्कार; छल ।

मूसुसुसु सुदुदुके (सम्) सं.—मूठ । (क) सं.—एक वृक्ष (The Vomit Nut) ।

मूसुसुसु सुदुदुकु, मूसुसुसु सुदुदुकु (क) सं.—पर्दा, आवरण, घूँघट ।

मूसुसुसु सुदुदुकु (क) सं.—दे. मूसुसुसु.

मूसुसुसु सुदुदुके, मूसुसुसु सुदुदुके, मूसुसुसु सुदुदुके (क) सं.—तिरछापन, टेढ़ापन ।

सं. — मुख, चेहरा, सूरत (प्रायः व्यंग्य करते समय इसका प्रयोग होता है) ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं.—मनहूस आदमी ; कर्कश स्वभाव का मनुष्य ; कापुरुष, भीरु ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढे मुसुंढे (क) सं.—दे. मूसुंढु ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) क्रि.—मुख के चारों ओर आ या फैल, घेर, आवृत हो । सं.—पर्दा, वृंघट ; समूह, झुंड ।
 मूसुंढु मुसुंढु (अ. दे.) अ.—तैयार सन्नद्ध ।
 मूसुंढु मुसुंढु; मूसुंढु मुसुंढु (सम्) अ.—पुनः, फिर ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—मुहूर्त, उपयुक्त समय, ४८ मिनट का समय ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—काँटा, कटक ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) क्रि.—रुष्ट हो, गुस्से में आ, क्रुद्ध हो, रूठ जा । सं.—कीड़ा ; कारण ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—क्रोध, रोष, गुस्सा ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—गोताखोर ।
 मूसुंढु मुसुंढु, [मूसुंढु मुसुंढु] (क) क्रि.—डुबा, निमज्जित कर ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु [मूसुंढु मुसुंढु] (क) क्रि.—डूब, निमज्जित हो ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) क्रि.—डूब, निमज्जित हो ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—हानि, नुकसान ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) क्रि.—मूसुंढु मुसुंढु—डूब जा, निमज्जित हो ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) वि.—तीन (समास में) ; पहला, पूर्व का ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—सूक, गूंगा आदमी ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—गाड़ी का मँह, गाड़ी

के जुए का छोर । (सम्) सं.—सूक स्त्री ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—नथ ।
 मूसुंढु मुसुंढु (तद्) सं.—दे. मूसुंढु ।
 मूसुंढु मुसुंढु (तद्) सं.—दे. मूसुंढु (सम्) ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—नाक, नासिका ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—गट्टा, गठरी; बंडल, बोरा ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—पूर्व दिशा, सूखा हुआ गोबर का पिण्ड ; मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—तक्रिया, टेकनी ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—सूर्योदय ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—तूणीर; तरकस ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) क्रि.—उदय हो, उग, उत्पन्न हो ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) वि.—मूर्ख, बेवकूफ ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—मुँह, चेहरा ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) क्रि.—सामना कर, ललकार ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—ललकार ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) वि.—तिगुना ।
 मूसुंढु मुसुंढु, [मूसुंढु मुसुंढु] (क) वि.—तीन संख्या ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—बेवकूफ मनुष्य ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—बेहोशी संगीत में मूर्छना ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—बेहोशी ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—प्रतिमा, रूप, आकार ; शरीर, देह ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—माथा, सिर । — ङ ज=सिर के केश ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—मूल, जड़; किसी वस्तु का निचला भाग, स्रोत ; एक नक्षत्र का नाम, अंत ; नाश ।
 मूसुंढु मुसुंढु (तद्) अ.—के द्वार, के जरिए ।
 मूसुंढु मुसुंढु (तद्) सं.—मूली ।

मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—मूलिका, जड़ी-बूटी ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) क्रि.—कराह, दुःख या पीड़ा के कारण चिल्ला ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—कोना, कोण ।
 मूसुंढु मुसुंढु, (सम्) सं.—मूल्य, कीमत, दाम ; मजदूरी ; मूलधन ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—चूहा ; चोर ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—दे.—मूसुंढु ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—सूँघ, आघ्राण कर ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—हड्डी, अस्थि ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—छोटा, नाटा या नगा होना ; वह मनुष्य जिसके कान कट गये हो ; मूर्ख, बेवकूफ ; एक गाली ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—कर्णहीन स्त्री, वह स्त्री जिसके कान न हों ; वह स्त्री जिसके कान म कोई आभूषण न हों ; विधवा ; सुराही की टोंटी ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—चौपाया ; हिरन ; बारहसिंगा, शिकार ; चन्द्रलालन ; कस्तूरी ; खोज, तलाश ; याचना, माँग ; पशु ; सियार ; मृगशिरस ; नरक ; मार्गशीर्ष मास ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—शिवाजी । मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—पार्वती ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—कमलनाल की जड़ ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—मृत्यु, मरण, मौत ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—एक बाजा, मृदंग ।
 मूसुंढु मुसुंढु (सम्) सं.—मिष्टान्न ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—मेथी ।
 मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—एक बेल ।
 मूसुंढु मुसुंढु, मूसुंढु मुसुंढु (क) सं.—प्रसन्नता, पसदंगी ।

मैल्ल मेळ

मैल्ल मेळ (क) क्रि.—पसंद कर, प्रसन्न हो, मान । सं.—प्रसन्नता, प्रियता, पसदंगी, संतोष, तुष्टि ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—कदम, पग, पद ; सोपान, सीढी ।

मैल्ल मेळ (क) क्रि.—चला, जाने, दो ।

मैल्ल मेळ (क) क्रि.—पग रख, चरणों से दबा, कुचल । सं.—खड़ाऊँ, चप्पल, जूता ; सीढी, सोपान ; पैरों की अंगुली में पहनने की अंगूठी ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गला ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—सोपान, सीढी ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—काली मिर्च ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—लाल मिर्च ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—हरी मिर्च ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—लाल मिर्च ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—हरी मिर्च ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—हरी मिर्च ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—हरी मिर्च ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।

(१) मैल्ल मेळ, 'मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) क्रि.—चबा ।

(२) मैल्ल मेळ (क) सं.—पका हुआ फल ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—पका हुआ फल ।

(क) सं.—पागुर, जुगाली ।— अड्ड (क) क्रि.—पागुर कर, किसी चीज़ को चबा ।

मैल्ल मेळ (क) अ.— धीरे, शनैः, आहिता ।

मैल्ल मेळ (क) सं.— झाड़ियों का समूह, कुंज ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—काना ।

मैल्ल मेळ—स्त्री. लिं. ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—काली मिर्च ।

मैल्ल में (क) वि.— मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ —ऊपरी ।

मैल्ल मे (क) क्रि.—चर, घास खा (पशुओं का चरना) । सं.—बकरी की ' मे-मे ' ध्वनि ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—स्पर्धा, होड़ ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—बकरी ।

मैल्ल मेळ (सम्) सं.—सेखला, करधनी, कमरबन्द, किंकणी ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपरी भाग ।

मैल्ल मेळ (सम्) सं.—बादल, वारिद ।—

—बादल वाहन (सम्) सं.— इन्द्र ; शिव ।

मैल्ल मेळ (सम्) वि.— काला, श्यामल । सं.—अंधकार, कालापन ।

मैल्ल मेळ (अ. दे.) सं.—मेज़ (फ़ारसी) ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—मोजा ।

मैल्ल मेळ (क) सं.— महानता, बड़प्पन ; प्रधान या मुख्य सेवक : खलिहान का खँटा ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—औदुम्बर वृक्ष ; गूलर का पेड़ ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—टीला, ऊपर उठी हुई भूमि ।

मैल्ल मेळ (क) अ.—और फिर, तथा, अति-रिक्त ; या, अथवा ।

मैल्ल मेळ (सम्) सं.—मोम ।

मैल्ल मेळ (क) अ.—दे. मैल्ल. मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ. मैल्ल मेळ मेदार (क) सं.—टोकरी, चटाई आदि बनानेवाला ।

मैल्ल मेळ (सम्) सं.—पृथ्वी, भूमि ।

मैल्ल मेळ (सम्) वि.—स्निग्ध, कोमल, चिकना । सं.—चर्वी ।

मैल्ल मेळ (सम्) सं.—यज्ञ ; यज्ञीय पशु ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.—पालकी । (सम्) सं.— हिमालय की पत्नी का नाम ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) सं.— चारा । —गड्डा गाड्डा—चरागाह ।

मैल्ल मेळ (क) क्रि.—चरवा, चरने दे ।

मैल्ल मेळ (क) क्रि.—चर, घास खा ।

मैल्ल मेळ (सम्) सं.—मेरुपर्यंत, सुरगिरि ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—राशि ; टीला, उन्नत स्थान ।

मैल्ल मेळ (तद्) सं.—मर्या (तत्) ; सीमा, हद, सरहद ।

मैल्ल मेळ, मैल्ल मेळ (क) अ.— ऊपर ; पर ।

मैल्ल मेळ (क) वि. और अ.— ऊपर का, उन्नत, श्रेष्ठ, अच्छा ।

मैल्ल मेळ (क) सं.— ऊपरी वस्त्र, उत्तरीय ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

मैल्ल मेळ (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।

०९६००० मेळविसु (तद्) क्रि.—मिला, जमा कर, संयुक्त कर ।

०९६००० मैत्रि (सम्) सं.—मित्रता; दोस्ती ।

०९६००० मैनाक (सम्) सं.—एक पर्वत का नाम जो हिमालय का पुत्र माना जाता है ।

०९६००० मैलि (अ. दे.) सं.—मील ।

०९६००० मैलिगे (क) सं.—अशुद्धि, अशुचि ।

०९६००० मोंड (तद्) वि.—‘(सुण्ड’ से)—कटा हुआ, छोटा । सं.—हठी पुरुष ।

०९६००० मोंडु मोंडुतन (क) सं.—हठवादिता, जिद्दी स्वाभाव ।

०९६००० मोंकळ, मोंगळ (क) सं.—राशि, डेर, श्रणी; भीडि; अधिकता, विपुलता ।

०९६००० मोंक्ता (तद्) अ.—मुखतः, सामने ।

०९६००० मोंग (तद्) सं.—मुख, चेहरा ।

०९६००० मोंगचु (क) क्रि.—दे. मोंगळु.

०९६००० मोंगसु (क) क्रि.—कटिबद्ध हो, तैयार हो; काम में लग; दूट पड़, घेर, आक्रमण कर । सं.—इच्छा, अभिलाषा ।

०९६००० मोंगळु (क) सं.—छत का जोड़ ।

०९६००० मोंगुवु, मोंगु (क) सं.—शिशु, बच्चा ।

०९६००० मोंगे (क) क्रि.—भर ले, बड़े बर्तन में से छोटे बर्तन में पानी निकाल; घेर, आक्रमण कर; अधिक हो । सं.—मिट्टी का बर्तन विशेष । वि.—उपजाऊ ।

०९६००० मोंगु, मोंगे (क) सं.—कलिका, कली ।

०९६००० मोंकुकु (क) वि.—छोटा, कटा हुआ ।

०९६००० मोंटु (क) क्रि.—किसी के सिर पर मुट्टि-प्रहार कर, धूमसा दे । सं.—मुट्टि-प्रहार ।

०९६००० मोंटुटे (क) सं.—अण्डा; नारियल का रेशा ।

०९६००० मोंडवि (क) सं.—चेहरे पर छोटा मुहासा ।

०९६००० मोंणकालु (क) सं.—घुटना ।

०९६००० मोंणकै (क) सं.—कोहनी ।

०९६००० मोंत्त (क) सं.—राशि; डेर, गिरोह, समूह, निकर ।

०९६००० मोंद, मोंदळ, मोंदळु (क) वि.—पहला, प्रथम, पूर्व, आदि; पहले ।

०९६००० मोंदु (क) सं.—पिण्ड, राशि; बुद्धपन, बुद्ध ।

०९६००० मोंने (क) सं.—नोंक, निशित पदार्थ; युद्ध, लड़ाई ।

०९६००० मोंन्ने (क) सं.—परसों (गया हुआ दिन ।)

०९६००० मोंब्बु (क) सं.—धुंधलापन, अंधेरा, मन्द प्रकाश ।

०९६००० मोंम्म, मोंम्मग (क) सं.—पोता, पुत्र या पुत्री का पुत्र ।

०९६००० मोंरकु (क) क्रि.—चक्र काट, घूम; गर्व कर ।

०९६००० मोंरळि (क) सं.—एक पौधा; टीला, पहाड़ी ।

०९६००० मोंरकु (क) सं.—रुक्षता, खुरखुरापना

०९६००० मोंरडे (क) सं.—दे. मोंरळि.

०९६००० मोंरहु (क) सं.—कलकल ध्वनि; गर्जन ।

०९६००० मोंरे (क) क्रि.—कलकल कर, गर्जन कर, मरमर ध्वनि कर; फरियाद कर, शिकायत कर ।

०९६००० मोंर [मोंर मोंर] (क) सं.—पछोरने का सूप ।

०९६००० मोंरुटे, मोंरुले (क) सं.—प्रियाल नामक वृक्ष (Buchanamiya latifolia);

०९६००० मोंरु (क) क्रि.—गर्जन कर, गरज । सं.—गर्जन; कराहने की ध्वनि, शिकायत, फरियाद; आश्रय, बारी ।

०९६००० मोंल (क) सं.—खरगोश ।

०९६००० मोंले (क) सं.—स्तन, कुच, पयोधर ।

०९६००० मोंल्ले (क) सं.—जुड़ी, कुंद ।

०९६००० मोंल्लेग (क) सं.—गरीब, कंगाल ।

०९६००० मोंसर, मोंसरु (क) सं.—दही, दधि ।

०९६००० मोंसळे (क) सं.—मगर, नक्र ।

०९६००० मोंहरं (अ. दे.) सं.—सुहर्म ।

०९६००० मोंळेके, मोंळिके (क) सं.—अंकुर ।

०९६००० मोंळे (क) क्रि.—अंकुर फूट या विकल । सं.—अंकुर; कीला, लोहे की कील; सुरसुरी ।

०९६००० मोंळु (क) क्रि.—अतिक्रमण कर ।

०९६००० मोंळ, मोंळ (क) सं.—एक हाथ (A cubit) की नाप ।

०९६००० मोंळु (क) क्रि.—बज उठ; गरज, गर्जन कर; बाजा बजा । सं.—वाद्य-ध्वनि; अशनपार्णि नामक पौधा ।

०९६००० मोंळु (क) क्रि.—सिर झुका, नमन कर । सं.—नमस्कार ।

०९६००० मोंकु (क) सं.—ऊपर का भाग, शिखर, चोटी; तना ;

०९६००० मोंक्ष (सम्) सं.—मोक्ष, मुक्ति; मरण; एक वृक्ष ।

०९६००० मोंच (सम्) सं.—मुक्ति, मोक्ष; केले का वृक्ष; शोभाजन वृक्ष ।

०९६००० मोंचक (सम्) सं.—वैराग्य; मोक्ष; मुक्ति; भक्ति; सेमल या शालमली वृक्ष; केले का पेड़ ।

०९६००० मोंचु (क) सं.—वैधव्य ।

०९६००० मोंट (क) वि.—छोटा कटा हुआ; मूर्ख ।

०९६००० मोंटु (क) सं.—टूट ।

०९६००० मोंड (क) सं.—मेव, बादल, वारिद ।

०९६००० मोंडि (क) सं.—अस्पष्ट या टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट ।

०९६००० मोंते (क) सं.—केले के फूल के ऊपर का आवरण; बाहरी छिलका ।

०९६००० मोंदक (सम्) सं.—मोदक, मिठाई विशेष । वि.—प्रसन्नकारक ।

०९६००० मोंदिसु (सम्) क्रि.—प्रसन्न हो; आनंदित हो ।

०९६००० मोंदु (क) क्रि.—मार, पीट, ताडन कर । सं.—बड़ी फुंसी ।

मोह (क) मोपु (क) सं.—गट्टा, बोझ; लकड़ी का बड़ा टुकड़ा; उपयुक्त समय (पुरस्कृत करने या दंड देने का समय)।

मोह (क) मोर, मोह (क) क्रि.— सिर पर धारण कर या उठा।

मोह (क) मोरे (क) सं.—चेहरा, वदन, मुख। ('मोह मोरे' भी लिखा जाता है)।

मोह (क) मोस (क) सं.—धोखा, छल; कपट; गलती; खतरा; हानि।

मोह (क) मोह (सम्) सं.—मोह, व्यामोह, ममत्व, भ्रम, भ्रांति।

मोह (क) मोहर (क) सं.—समूह, समदाय; टुकड़ी, सेना।

मोह (क) मोहल (क) सं.—तलवार या किसी आयुध की मूँठ।

मोह (क) मोहिसु (क) क्रि.—लगवा, टकराने दे। (सम्) क्रि.—मोहित कर, लुभा।

मोह (क) मोहु (क) क्रि.—मार, पीट; बाँध; लगा।

मोह (क) मोले (क) सं.—(धान के खेत या तालाब के पास का) छोटा बिल; राशि, ढेर।

मोह (क) मौजि (सम्) सं.—मूँज का बना ब्राह्मण का कटिसूत्र।

मोह (क) मौक्तिक (सम्) सं.—मोती।

मोह (क) मौख्य (सम्) सं.—वेवकूफी, सूखता।

मोह (क) मौन (सम्) सं.—मौन, चुप्पी, खामोशी।

मोह (क) मौलि (सम्) सं.—सिर; वस्तु का सर्वोच्च भाग; मुकुट, किरीट; अशोक वृक्ष।

मोह (क) मौलि—तद्।

मोह (क) मौल्य (सम्) सं.—मूल्य, दाम, भाव, कीमत।

मोह (क) म्लान (सम्) वि.—मुरझाया हुआ, उदास, थका हुआ, दुःखी।

यु य

यु य—कनक-वर्णमाला का चालीसवाँ अक्षर।

यु (क) यंत्र (सम्) सं.—स्तंभ, धूनी, बेड़ी,

बंधन, रस्सी, चमड़े का तस्मा; कल; झौंजार, यन्त्र; दमन; संयम; कवच; तावीज।

यु (क) यंत्रण (सम्) सं.—नियन्त्रण, दमन, बन्धन, नियम।

यु (क) यक्कु (क) क्रि.—धीरे से मार।

यु (क) यक्ष (सम्) सं.—देवयोनि विशेष, कुबेर के अनुचर; प्रेत, पिशाच; कुबेर। —राज = कुबेर।

यु (क) यक्षगान (सम्) सं.—कर्नाटक का एक प्रसिद्ध लोक-गीत-नाट्य।

यु (क) यक्षि, यु (क) यक्षिणि (सम्) सं.— यक्ष स्त्री, यक्षिणी; कुबेर की पत्नी।

यु (क) यक्षिणीगार (सम्) सं.—मायावी, जादूगर।

यु (क) यजन (सम्) सं.—यज्ञ, यज्ञक्रिया।

यु (क) यजमान (सम्) सं.—यज्ञ का कर्त्ता; स्वामी, मालिक।

यु (क) यज्ञ (सम्) सं.—यज्ञ, यजन, याग।

यु (क) यज्ञोपवीत (सम्) सं.— जनेऊ।

यु (क) यतन (तद्) सं.—यत्न।

यु (क) यति (सम्) सं.—मुनि, संन्यासी; विराम, छंद में यति, नियन्त्रण, संयम, रोक-थाम।

यु (क) यत्न (सम्) सं.—प्रयत्न, प्रयास, उद्योग, कोशिश।

यु (क) यथा (सम्) अ.—जिस प्रकार, जैसे।

यु (क) यथार्थ (सम्) सं.—सचाई, सत्य।

यु (क) यदु (सम्) सं.—ययाति का पुत्र, यादवों का मूलपुरुष; एक देश और उसके निवासी।

यु (क) यद्वा (सम्) अ.—अक्रम रूप से, क्रमरहित।

यु (क) यभन (सम्) सं.—संभोग, रतिक्रीड़ा।

यु (क) यम (सम्) सं.—दमन, निग्रह; यम-राज।

यु (क) यव (सम्) सं.—जवा, जौ।

यु (क) यवन (सम्) सं.—यूनानी; कोई विदेशी; सुसलमान।

यु (क) यवनिके (सम्) सं.—यवनिका, पर्दा।

यु (क) ये (सम्) से.—दे. युव.

यु (क) यज्ञ, यु (क) यज्ञस्, यु (क) यज्ञस्, यु (क) यज्ञस्सु (क) सं.—कीर्ति, प्रसिद्धि, बड़ाई।

यु (क) यष्टि (सम्) सं.—लाठी, छड़ी, डंडा; गदा; स्तम्भ, तार; मोतियों को पिरोने का तार।

यु (क) यांत्रिक (सम्) वि.—यंत्र से संबन्धित, यंत्र जैसा।

यु (क) याके (क) अ.—क्यों; किसलिए।

यु (क) याग (सम्) सं.—यज्ञ।

यु (क) याचक (सम्) सं.—माँगनेवाला, भिक्षुक; भिकारी; प्रार्थी।

यु (क) यात (क) सं.—कुएँ से पानी निकालने का साधन। (सम्) सं.—अंकुश से हाथी को चलाना; पदाति, पैदल, सिपाही।

यु (क) यातके, यु (क) यातके (क) अ.— क्यों, किसलिए, क्योंकर।

यु (क) यातने (सम्) सं.—यातना, पीड़ा; यम द्वारा पापियों को दिया जानेवाला दंड।

यु (क) यातरदु (क) क्रि. रू.—कौन-सा है?, किसका है?

यु (क) यात्रे (सम्) सं.—यात्रा, सफ़र; जाना, प्रस्थान, तीर्थटन; महोत्सव; जीविका; उपाय; साधन।

यु (क) यान (सम्) सं.—गमन, पादचारण, सवारी; यात्रा, समुद्रयात्रा; आक्रमण, हमला; वाहन, रथ, गाड़ी।

यु (क) यानु (क) सर्व.—में (ह. क.)।

यु (क) यापन (सम्) सं.—चलाना, हाँकना, निकाल देना, दूर करना।

यु (क) याम (सम्) सं.—प्रहर, तीन घंटे का समय; दमन, संयम, सहनशीलता।

यु (क) यार, यु (क) यारु (क) सर्व.—कौन (ब. व.)।

यु (क) याव (क) वि. और सर्व.—कौन-सा, किस प्रकार का; किसका, जो, जिसका।

यु (क) यावत्तु (सम्) वि.—सब, समस्त। यु (क) युक्त (सम्) वि.—जुड़ा हुआ, मिला

हुआ; बंधा हुआ; जुए में जुता हुआ, सहित, संयुक्त; निपुण, चतुर।
 ०१०१ युक्ति (सम्) सं.—मेल, मिलाप, संगम; प्रयोग, उपयोग, व्यवहार; उपाय, ढंग; चलन, रस्म; उपयुक्तता; हेतु; परिणाम; आधार; रचना, संभावना; धातु की मिलावट; अलंकार विशेष।
 ०१०१ युग (सम्) सं.—जुआ, जुआठ; जोड़ा, जुट्ट; पति-पत्नी; युग, समय या काल विशेष; चार की संख्या; चार हाथ की नाप; एक दवाई; पुरुष, पुस्त, पीढ़ी; एक वर्ष का समय।—७८ आदि (सम्) सं.—वर्षारंभ, युगादि श्योहार।
 ०१०१ युग (सम्) सं.—जोड़ा, जुट्ट, संयम, समागम।
 ०१०१ युद्ध (सम्) सं.—संग्राम, लड़ाई, रण।—०१०१ रंग (सम्) सं.—युद्धभूमि।
 ०१०१ युधिष्ठिर (सम्) सं.—धर्मराज।
 ०१०१ युव, ०१०१ युवक (सम्) सं.—जवान, वयस्क, तरुण।
 ०१०१ युवति (सम्) सं.—जवान स्त्री, युवती।
 ०१०१ युक, ०१०१ यूके (सम्) सं.—जुआँ, चीलर।
 ०१०१ यूथ (सम्) सं.—गिरोह, गल्ला, समूह, दल, टोली।
 ०१०१ यूप (सम्) सं.—यज्ञस्तंभ, कीर्ति-स्तंभ, जयस्तंभ।
 ०१०१ यूगि हाकु (तद्) क्रि.—धोखा दे।
 ०१०१ यूक्त (सम्) सं.—हल के जुए की रस्सी, चमड़े का तस्मा।
 ०१०१ योग (सम्) सं.—मिलान, मेल, मिलाप; संसर्ग, स्पर्श, संबध; प्रयोग; ढंग, रीति, तरीका; परिणाम; नतीजा; जुआ; उपयुक्तता; पेशा, धंधा; दगाबाजी, धोखा; उपाय; उत्साह, उद्योग; चिकित्सा; जादू, टोना; प्राप्ति, उपलब्धि; धन-संपत्ति; नियम, आदेश; निर्भरता; शब्द-

विन्यास, शब्दव्युत्पत्ति, पतंजलि का योग दर्शन; ज्योतिष संबन्धी योग विशेष; भक्ति; जासूस, भेदिया, गणित में जोड़; सद्गुण; काया, देह; एक प्रकार की नाव।
 ०१०१ यूगक्षेम (सम्) सं.—कुशल-क्षेम, खैरियत।
 ०१०१ योगि (सम्) सं.—योगी।
 ०१०१ योग्य (सम्) वि.—उपयुक्त, योग्य, ठीक, उपयोगी।
 ०१०१ योग्यते (सम्) सं.—क्षमता, योग्यता लियाकत।
 ०१०१ योचिसु (सम्) क्रि.—सोच, विचार कर, चिंतन कर।
 ०१०१ योजने (सम्) सं.—योजना, संयोग; मेल, मिलाप, उपाय।
 ०१०१ योध (सम्) सं.—योद्धा, सिपाही; युद्ध, लड़ाई।
 ०१०१ योषे (सम्) सं.—स्त्री; पत्नी।
 ०१०१ यौवन (सम्) सं.—तारुण्य, जवानी।
 ०१०१ यौवराज्य (सम्) सं.—युवराज का पद।

० र

० र—कन्नड-वर्णमाला का इकतालीसवाँ अक्षर।
 ० रंके (क) सं.—बैल का डकारना।
 ० रंगनाथ (सम्) सं.—नाम; विष्णु।
 ० रंगभूमि (सम्) सं.—(नाटक का नेपथ्य) रंगमंच।
 ० रंगवलि, ० रंगवलि (सम्) सं.—रंग भरने का काम, रंगपूर, ज़मीन पर सपेद पत्थर के चूर्ण से चित्र बनाना।
 ० रंगाजीव (सम्) सं.—चित्रकार।
 ० रंगोलि (सम्) सं.—दे० ० रंगवलि।
 ० रंजक (सम्) सं.—उत्तेजक; चितेरा; लाल चन्दन; इंगुर।
 ० रंजिसु (सम्) क्रि.—रंजन कर, प्रसन्न कर; प्रकट हो, शोभित हो, ललित हो।

० रंटे (क) सं.—छोटा हल; मार-पीट, झगड़ा।
 ० रंटे (सम्) सं.—विधवा स्त्री; वैश्या, स्त्री के लिए एक गाली।—७८ तन= वैधव्य।
 ० रंध्र (सम्) सं.—छेद, सूराख, बिल; न्यूनता, कमी, दुर्बल ढंग।
 ० रंघ (क) सं.—कोलाहल; गड़बड़ी।
 ० रंघिणे (क) सं.—मोचीका छुरा।
 ० रंवे (क) सं.—डाली; छोटी शाखा।
 ० रंभे (सम्) सं.—केले का पौधा; एक अप्सरा का नाम—रंभा; वैश्या; उदक, पानी।
 ० रंभे रंभे (सम्) सं.—रफ्तार, वेग, शीघ्रता।
 ० रंभे रक्त (तद्) सं.—रक्त, खून।
 ० रंभे रक्तस (तद्) सं.—राक्षस।
 ० रंभे रक्तसि (तद्) सं.—राक्षसी।
 ० रंभे रक्के (तद्) सं.—रक्षा, रक्षण।
 ० रंभे रक्त (सम्) सं.—खून, लहू; लाल रंग; जाफ़ान; राग, अनुराग, प्रेम; ताम्र। वि.—प्यारा, प्रेमी, प्रिय; सुन्दर, मनोहर।
 ० रंभे रक्तप (सम्) सं.—रक्त पीनेवाला, राक्षस।
 ० रंभे रक्तफले (सम्) सं.—कुन्दरू की बेल।
 ० रंभे रक्तभेदि (सम्) सं.—अतिसार का रोग।
 ० रंभे रक्ताक्षि (सम्) सं.—मैसा; एक संवत्सर का नाम।
 ० रंभे रक्ष (सम्) सं.—रक्षक, देखभाल करने-वाला।
 ० रंभे रक्षणे (सम्) सं.—रखवाली, रक्षा; बचाव, चौकसी।
 ० रंभे रक्षिसु (सम्) क्रि.—रक्षा कर, रख-वाली कर, बचा।
 ० रंभे रक्षे (सम्) सं.—रक्षा, बचाव, रक्षण; विभूति, भस्म; होम करने के बाद अग्नि से निकाली जानेवाली काली राख।
 ० रंभे रंगले (क) सं.—कन्नड के एक छन्द का नाम; व्यर्थ की बात, गप्पे; बखेड़ा।

०३३ रचने (सम्) सं.—रचना, निर्माण, बनावट, बनाने का ढंग; ग्रन्थ; व्यूह-रचना; मानसिक कल्पना।

०३३०० रचयिसु, ०३३०० रचिसु (सम्) क्रि.—रचना कर, ग्रन्थ की रचना कर, निर्माण कर।

०३३ रच्चे (क) सं.—बच्चों की चिछाहट; हो-हल्ला; किसी रहस्य को सब लोगों के सामने प्रकट करना।

०३३ रज, ०३३ रजस् (सम्) सं.—रज, धूल, मैल; पुष्परज।

०३३ रजक (सम्) सं.—धोबी।

०३३ रजत (सम्) सं.—चाँदी, चाँदी जसा धवल; सोना; निर्मलता, स्वच्छता; मोती का हार या आभूषण; पर्वत विशेष।

०३३ रजनि, ०३३ रजनी (सम्) सं.—रात; दुर्गा; एक पौधा; हरिद्रा, हल्दी।—
०३३ रं कर (सम्) सं.—चंद्रमा।—
०३३ चर (सम्) सं.—चंद्रमा; राक्षस।

०३३ रजपुत्र (सम्) सं.—राजपूत।

०३३ रजस्, ०३३ रजस्सु (सम्) सं.—धूल, रज; पुष्परज; त्रिगुणों में दूसरा; स्त्रियों का मासिक धम।

०३३ रजस्वले (सम्) सं.—रजस्वला या मासिक धर्मवती स्त्री, सयानी लड़की।

०३३ रजायि (अ. दे.) सं.—रजाई।

०३३ रज्जु (सम्) सं.—रस्सी, डोर; स्त्रियों के सिर की चोटी; शरीरस्थ रंग विशेष।

०३३ रटन (सम्) सं.—प्रसन्नता सूचक चिछाहट; रटना, चिछाने की क्रिया।

०३३ रटल रटलितन (क) सं.—शोरगुल, गली देने की ध्वनि।

०३३ रट्ट (क) सं.—दे. रच्चे; दफती, गत्ता, पुस्तक का आवरण।

०३३ रट्टि (तद्) सं.—राट् (तत्) — राजा, शालम; रेड्डी (एक जाति के लोग)।

०३३ रण (सम्) सं.—शोरगुल, कोलाहल; संग्राम, युद्ध; आनन्द।

०३३ रणाजिर (सम्) सं.—युद्धभूमि।

०३३ रणे (क) सं.—डोर; रस्सी।

०३३ रत (सम्) वि.—अनुरक्त, लगाहुआ; प्रसन्न, हर्षित। सं.—हर्ष, आनन्द; मैथुन।

०३३ रति (सम्) सं.—आनन्द, हर्ष, संतुष्टि; अनुराग, प्रेम, प्रीति; कामक्रीडा, सम्भोग; कामदेव की पत्नी का नाम।

०३३ रत्न (सम्) सं.—रत्न, जवाहर, बहुमूल्य पत्थर या कोई पदार्थ।

०३३ रत्नकर (सम्) सं.—कन्नड के प्रसिद्ध कवि का नाम; समुद्र।

०३३ रथ (सम्) सं.—रथ, एक सवारी; योद्धा; शरीर; चरण, पैर; अवयव, अंग; आनन्द, हर्ष; अभिलाषा; नरकुल, सरपत।

०३३ रथिक (सम्) सं.—सूत, सारथी; गाड़ी पर सवार, रथ का मालिक।

०३३ रदि (सम्) सं.—हाथी।

०३३ रत्न (तद्) सं.—रत्न (तत्); कन्नड के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जिन्होंने 'गदा-युद्ध' काव्य की रचना की है।

०३३ रन्ने (तद्) सं.—बहुत सुन्दरी या रूपवती स्त्री।

०३३ रफ्तु (अ. दे.) सं.—रफ्त (फ़ारसी)—भोजना।

०३३ रब्बु (क) क्रि.—धंस जा, घट जा।

०३३ रभस (सम्) सं.—उत्साह, धुन; ताकत, जोर; क्रोध; उग्रता, ज़बरदस्ती; आनन्द, हर्ष; जोर की ध्वनि।

०३३ रमण (सम्) सं.—आनन्दकारक; प्रिय, पति, आनन्द।

०३३ रमणि (सम्) सं.—रमणी, सुन्दरी युवती; पत्नी।

०३३ रम्मे (सम्) सं.—पत्नी, गृहिणी; स्त्री; लक्ष्मी; सौभाग्य, किस्मत; सम्भोग।

०३३ रम्य (सम्) वि.—सुन्दर, रमणीय, मनोहर।

०३३ रय्य (तद्) सं.—संपत्ति; रमणीयता, सौंदर्य।

०३३ रल्लक (सम्) सं.—कंबल, ऊनी वस्त्र; पलक।

०३३ रव (सम्) सं.—शब्द, नाद, ध्वनि, शोर।

०३३ रवदि (क) सं.—ज्वार का पत्ता।

०३३ रवळि (क) सं.—चीख-पुकार, कोलाहल।

०३३ रवळिणे (क) सं.—बाँस की छोटी टोकरी।

०३३ रवळिसु (क) क्रि.—चिछा, चीख, पुकार।

०३३ रवानिसु (अ. दे.) क्रि.—रवाना कर; भेज।

०३३ रवि (सम्) सं.—सूर्य; बारह की संख्या; पर्वत; धन, संपत्ति; एक वृत्त का नाम।

०३३ रवे (तद्) सं.—लवः (तत्); रवा, सूजी, अनाज का छोटा टुकड़ा।

०३३ रश्मि (सम्) सं.—प्रकाश की किरण; पलक; रस्सी, डोरी; रास, लगाम; अंकुश।

०३३ रस (सम्) सं.—फल आदि का रस, वृक्षों का रस, सत्व; तरल पदार्थ; जल; शृंगारादि रस; मदिरा, आसव; स्वादिष्ट पदार्थ; चटनी, मसाला; त्रिष; पारा; गोंद; मनोज्ञता, सौंदर्य; शरीरस्थ पदार्थ विशेष; वीर्य; कोई भी खनिज पदार्थ; पहरस; रुचि; उत्साह।

०३३ रसवति (सम्) सं.—रसोई घर।

०३३ रसायण (सम्) सं.—रसायन।

०३३ रसारुह (सम्) सं.—पेड़, वृक्ष।

०३३ रसाल (सम्) सं.—आम का वृक्ष। ईख, ईख विशेष।

०३३ रसिक (सम्) सं.—रसिया मनुष्य, सहृदय मनुष्य, भावुक नर।

०३३ रसिके (सम्) सं.—गन्ने का रस, शीरा; जिह्वा; कमरबन्द; घाव से निकलनेवाला तरल पदार्थ; पीव।

०३३ रसुम्मे (तद्) सं.—दे. ०३३।

०३३ रस्ते (अ. दे.) सं.—रास्त, सड़क।

०३३ रहस्य (सम्) सं.—गुसाबात, मर्म, रहस्य, राज।

०७७ राका, ०७७ राके (सम्) सं.—पूर्णिमा, पूर्णिमा की रात।

००५५ राक्षस (सम्) सं.—निशाचर; कुबेर के एक अनुचर का नाम; एक संवत्सर का नाम।

००५५ राक्षसि (सम्) सं.—राक्षसी, राक्षस की स्त्री।

००५५ राग (सम्) सं.—रंग; लाल रंग; अनु-राग, प्रीति; भाव, भावना; हर्ष, आनन्द; क्रोध, रोष; संगीत में राग, सौंदर्य; मनोज्ञता।

००५५ रागि (क) सं.—एक अनाज, रागी।

००५५ राच (तद्) सं.—राजन् (तत्); क्षत्रियों की एक उपजाति।

००५५ राज (सम्) सं.—राजा, नरेश; प्रधान, नेता, क्षत्रिय; चन्द्रमा; मंन्यासी, घर, मकान; सफेद रंग; काला रंग।

००५५ राजधानि (सम्) सं.—राजधानी, राज्य या देश का मुख्य नगर।

००५५ राजसभे (सम्) सं.—राजसभा, दरवार, आस्थान।

००५५ राजिसु (सम्) क्रि.—प्रकाशित हो, चमक, लसित हो, विराजमान हो।

००५५ राजीनामे (अ. दे.) सं.—राजी-नामा (फारसी)—इस्तीफा, त्यागपत्र।

००५५ राजीव (सम्) सं.—एक प्रकार की मछली; हिरन विशेष; नील कमल; सिर के केश; पानी, जल; समूह, समुदाय।

००५५ राज्य (सम्) सं.—राज्य (सम्) सं.—शासन, राज्याधिकार।

००५५ राज्यभार (सम्) सं.—शासन, राज्य करना।

००५५ राटण, ००५५ राटणे, ००५५ राटणे, ००५५ राट्णे (क) सं.—चर्खी, रईट; रईटा।

००५५ राणि (तद्) सं.—रानी।

००५५ रात्र, ००५५ रात्रि (सम्) सं.—रात, निशा।

००५५ राट्वांत (सम्) सं.—सिद्धांत, उसूल; तर्क में अति, विभ्रम।

००५५ राम (सम्) वि.—प्रसन्नकार, सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ; कृष्णवर्ण; सफेद। सं.

—रामचंद्र, दाशरथी; परशुराम; बलराम; प्रेमी; हिरन विशेष; घोड़ा।

००५५ राय (तद्) सं.—राजन् (तत्)—राजा; राव (आदर-सूचक शब्द)।

००५५ रायि (क) सं.—पत्थर, ककड़; इजेहर Rubber)।

००५५ रावि (क) सं.—बोधि वृक्ष, अश्वत्थवृक्ष, पीपल का पेड़।

००५५ रावुत, ००५५ राहुत, ००५५ राव्त (क ?) सं.—घुडसवार; सिपाही।

००५५ राशि (सम्) सं.—ढेर, समूह; ज्योतिष-में राशि जिनकी संख्या बारह है।

००५५ राष्ट्र (सम्) सं.—राज्य, साम्राज्य; देश, मुल्क; प्रजा, जाति।

००५५ रास (सम्) सं.—गोपों की प्राचीनकाल की एक क्रीड़ा; कोलाहल, शोरगुल।

००५५ रिंगण, ००५५ रिंगण (सम्) सं.—रेंगना, घुटनों चलना; विचलित होना।

००५५ रिक्कट (क) सं.—मौन, चुप्पी, खामोशी।

००५५ रिक्त (सम्) वि.—खाली, रीता; दुर्बल, कंगाल।

००५५ रिक्थ (सम्) सं.—उत्तराधिकार या विरासत में मिली हुई संपत्ति।

००५५ रिपु (सम्) सं.—शत्रु, अरि।

००५५ रिसालु, ००५५ रिसाले (अ. दे.) सं.—रिसाला (अरबी), घोड़े की सेना।

००५५ रीडे (सम्) सं.—अपमान, तिरस्कार।

००५५ रीति (सम्) सं.—रीति, पद्धति, ढंग, तरह।

००५५ रंजे (क) सं.—पीतल का डोल।

००५५ रंड (सम्) सं.—सिर रहित शरीर; सिर जो शरीर से अलग हुआ हो।

००५५ रंडिके (सम्) सं.—युद्धभूमि; देहली; अलौकिक शक्ति।

००५५ रंद्र (क) वि.—विशाल, मनोहर।

००५५ रुक्म (सम्) वि.—चमकीला, प्रकाश-मान। सं.—सोना।

००५५ रुक्ष (तद्) वि.—रुक्ष (तत्)।

००५५ रुचाळिसु (क ?) क्रि.—तुलन

कर, समता दिवा।

००५५ रुचि (सम्) सं.—स्वाद, जायका; अभि-लाषा, इच्छा, आनन्द; भूख; आभा, दीप्ति, प्रकाश, चमक; किरण; सौंदर्य।

००५५ रुजु (अ. दे.) सं.—हस्ताक्षर, दस्तखत; प्रमाण, दलील।

००५५ रुद्दु, ००५५ रुब्बु (क) क्रि.—पीस ओखली में ढाक कर पीसना।

००५५ रुद्र (सम्) वि.—भयानक, भयंकर। सं.—शिवजी; ग्यारह की संख्या।

००५५ रुद्राक्षि, ००५५ रुद्राक्षे (सम्) सं.—रुद्राक्ष का पेड़।

००५५ रुधिर (सम्) सं.—रक्त, खून।

००५५ रूपायि (अ. दे.) सं.—रूपया।

००५५ रुमालु (क) सं.—पगड़ी।

००५५ रुक्ष (सम्) सं.—रुक्ष, खुरखुरा, कड़ा, कठोर।

००५५ रुढि (सम्) सं.—प्रचलन, पद्धति, परि-पाटी; जन्म, उत्पत्ति; बढ़ती, फैलाव, वृद्धि, प्रथा; प्रसिद्धि, ख्याति।

००५५ रूप (सम्) सं.—आकार, सूरत, शक्त; स्वभाव, प्रकृति; रीति, ढंग; पहचान; लक्षण; मूत, प्रतिमा।

००५५ रूपक (सम्) सं.—अलंकार विशेष; आकार, सूरत, रूप; मूर्ति, प्रतिकृति; लक्षण; किस्म, जाति; मान या तौल विशेष।

००५५ रूपवति (सम्) सं.—सुन्दरी स्त्री।

००५५ रूपायि (अ. दे.) सं.—रूपया।

००५५ रूपु (तद्) सं.—रूप, आकार; सौंदर्य, चारुता।

००५५ रुहिसु (तद्) क्रि.—रूपित हो, प्रकट हो।

००५५ रेंके (क) सं.—दे. ००५५

००५५ रेंजे (क) सं.—एक वृक्ष (The tree Mimusops elengi)।

००५५ रेंवे, ००५५ रेंवे (क) सं.—डाली, छोटी शाखा।

००५५ रेव्णु (क) सं.—लिखने के लिए उपयोगी सरकण्डा।

०१८० रेकु

०१८० रेकु (क) सं.—पतला पतरा; सोना, सुवर्ण; फूल या दल या पँखुड़ी।

०१८० रेखे (सम्) सं.—रेखा, पंक्ति, लाइन।

०१८० रेगिसु (क) क्रि.—चिड़ा, क्रद्ध करा या करवा।

०१८० रेगु (क) क्रि.—रुष्ट हो, क्रुद्ध हो, विगड़ पड़।

०१८० रेणु (सम्) सं.—धूल, रज; पुष्परज; हथिनी।

०१८० रेणुका, ०१८० रेणुके (सम्) सं. जमदग्नि की पत्नी और परशुराम की माता; एक दवाई।

०१८० रेवति (सम्) सं.—बलराम की पत्नी का नाम; एक नक्षत्र का नाम।

०१८० रेवु (क) सं.—स्थान, उहरने का स्थान बन्दरगाह;

०१८० रेडिम, ०१८० रेडमे (अ. दे.) सं.—रेशम, रेशमी वस्त्र।

०१८० रेप्मे (अ. दे.) सं. दे.—०१८० रेडू।

०१८० रेवत (सम्) सं.—धनी पुरुष; पाँचवें मनु का नाम; एक पर्वत का नाम; एक राजा का नाम।

०१८० रेके (सम्) सं.—दे. ००८.

०१८० रेडे (क) सं.—दलदल, पंक।

०१८० रोक्क (अ. दे.) सं.—नकद रुपया; रोकड़।

०१८० रोच्चु, ०१८० रोचे, रोजु रोज्जु, ०१८० रोज्जे (क) सं.—दे. ०१०८.

०१८० रोट्टि (अ. दे.) सं.—रोटी।

०१८० रोगकु (क) सं.—छलांग, कुदान, छलांग मारना।

०१८० रोक (सम्) सं.—कम्प, प्रकम्प; छिद्र; नाव, जहाज़।

०१८० रोग (सम्) सं.—रोग, बीमारी।

०१८० रोगि (सम्) वि.—रोगी, बीमार।

०१८० रोचक (सम्) सं.—भूख; वह दवा जिससे भूख बढ़े। वि.—रुचिकारक, स्वादिष्ट; अनानन्ददायक।

०१८० रोजा (अ. दे.) सं.—गुलाब।

०१८० रोते (क) सं.—गन्दगी, कोई भी गंदा पदार्थ।

०१८० रोदन (सम्) सं.—रोना, रुदन, विलाप।

०१८० रोध (सम्) सं.—रोक, प्रतिबन्ध।

०१८० रोम (सम्) सं.—रोंगटा, रोम।

०१८० रोमंछन रोमांचन (सम्) सं.—पुलकित होना।

०१८० रोष (सम्) सं.—०१८० रोस (तद्) —रोष, क्रोध।

०१८० रोसु (क) क्रि.—जुगुप्सा प्रकट कर, नाक सिकोड़। सं.—दलदल, पंक।

०१८० रोहिणि (सम्) सं.—चौथे नक्षत्र का नाम।

०१८० रौद्र (सम्) वि.—भयंकर, उग्र, प्रचण्ड, क्रोधाविष्ट। सं.—क्रोध; भयंकरता; उत्ताप, गरमी।

०१८० रौप्य (सम्) वि.—चाँदी का। सं.—चाँदी।

०१८० रौरव (सम्) सं.—इक्कीस नरकों में एक।

७ र

७ र—कन्नड-वर्णमाला का बयालीसवां अक्षर। ७०० रंचि, ७०० रंचे (क) सं.—हाथी और घोड़े का झूल।

७०० रंचिके, ७०० रंजिके, (क) सं.—हौदा।

७०० रक्के, ७०० रेक्के (क) सं.—पर, पंख, डेना।

७०० रट्टे, ७०० रेट्टे (क) सं.—पर, बाहू, भुजा।

७०० रुप्पे, ७०० रेप्पे (क) सं.—पलक। ७०० र्वके, ७०० र्विके (क) सं.—चोली, कुर्ती।

७०० रिक्कट (क) सं.—दे. ०८००। ७०० रोप्प (क) सं.—मेषशाला, बकरों की बांधने की जगह।

७०० रोप्पु (क) क्रि.—गर्जन कर, गुरा।

७ ल

७ ल—कन्नड-वर्णमाला का तैंतालीसवां अक्षर। ७०० लंका, ७०० लंके (सम्) सं.—श्रीलंका, राक्षसराज रावण की राजधानी का नाम।

७०० लंग (अ. दे.) सं.—लहंगा, घाघरा। ७०० लंगोटी (अ. दे.) सं.—कौपीन लंगोटी।

७०० लंगिसु (सम्) क्रि.—लॉव, लंघन कर, पार कर, उलंघन कर।

७०० लंच (क) सं.—धूस, रिश्वत। ७०० लंपटतन, ७०० लंपटते (सम्) सं.—लंपटता, काम-वासना; व्यभिचार।

(१) ७०० लंपटे (क) सं.—थकावट, श्रान्ति। (२) ७०० लंपटे (सम्) सं.—लंपट स्त्री, व्यभिचारिणी।

७०० लंपु (क) सं.—सौंदर्य, चारुता; सुख, शक्ति, ऊँचाई।

७०० लंब (सम्) वि.—लम्बा, प्रशस्त, बड़ा। ७०० लंबल, ७०० लम्बल (तद्) सं.—लम्बनम् (तद्)—बड़ा हार, गले का हार जो नाभि तक लटकता हो।

७०० लंबाडि, ७०० लम्बाणि, ७०० लमाणि (अ. दे.) सं.—एक बनजारा जाति। ७०० लंबोदर (सम्) सं.—विनायक गणेश।

७०० लकुट, ७०० लगुड (सम्) सं.—लाठी, डंडा।

७०० लकुमण (तद्) सं.—लक्ष्मणः (तत्)।

७०० लकोट्ट, ७०० लकोटे, ७०० लकोटे (अ. दे.) सं.—लिफाफा।

७०० लक्षण (तद्) सं.—लक्षणम् (तत्)। ७०० लक्कि, ७०० लक्किलि (क) सं.—

इन्द्राणि या शेफालिका वृक्ष। ७०० लकक (सम्) सं.—चिथड़ा, फटा हुआ कपड़ा; लाख।

- २३ लक्ष (सम्) सं.—चिह्न, पहचान, निशाना ; दिखावट, बहाना ; एक लाख (संख्या) ।
- २३ लक्षण (सम्) सं.—चिह्न, पहचान ; किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचानी जाय ; परिभाषा ; शुभ या अशुभ चिह्न, विशिष्टता, उत्तमता ।
- २३ लक्ष्मि (सम्) सं.—सौभाग्य, समृद्धि ; संपत्ति ; लक्ष्मी ; धनी या सुन्दरी स्त्री ; स्त्रियों का नाम ; एक पौधे का नाम ; धाम्रवृक्ष ; हल्दी ।
- २३ लक्ष्य (सम्) सं.—निशाना, चिह्न ; लक्ष्य, उद्देश्य ; ध्यान, विचार ; बहाना, बनावट, कपट ।—२३ लक्ष्य (सम्) क्रि. ध्यान दे (मुह.) ।
- २३ लगा, २३ लगाम, २३ लगाम (अ. दे.) सं.—लगाम (फ़ारसी), रास ।
- २३ लगने (तद्) सं.—संगीत के स्वरों का मेल ।
- २३ लग्न (सम्) सं.—लग्न, शुभ कार्य करने का शुभ मुहूर्त ; विवाह, शादी ; वह समय जब सूर्य किसी राशि में जाता है ; भाट, प्रातःकाल राजा को उठानेवाला ; मदगज, मस्त हाथी ; दिन या रात का १/१२ भाग । वि.—लगा हुआ ; चिपटा हुआ ।
- २३ लक्ष्मि (सम्) सं.—विवाह (या उपनयन) का निमंत्रण-पत्र ।
- २३ लघु (सम्) वि.—हल्का ; छोटा ; संक्षिप्त ; शीघ्र, जल्दी ; निर्बल ; नीच, निस्सार ; कोमल, मृदुल ; मनोज्ञ, अच्छा ; अभागी ; चंचल । सं.—काला अंगर ।
- २३ लजा, २३ लज्जे (सम्) सं.—लज्जा, शर्म, लाज ।
- २३ लज्जे (तद्) सं.—लज्जा, लाज ।
- २३ लक्ष्मि (अ. दे.) क्रि.—[‘लक्ष्मि’ से ?]—आतुर हो, घबरा. अविश्रांत हो ।
- २३ लक्ष्मि (क) सं.—बेलन ।
- २३ लडाये (अ. दे.) सं.—लड़ाई ; झगड़ा, कलह ।
- (१) २३ लड्डु (क) वि.—निस्सार, निर्बल, कमज़ोर ।
- (२) २३ लड्डु (अ. दे.) सं.—लड्डु, मिठाई विशेष ।
- २३ लतिके, २३ लते (सम्) सं.—लता, बेल ।
- २३ लव, २३ लवा ; २३ लवो (क) अ.—चोम मारने की ध्वनि ।
- २३ लवध (सम्) वि.—प्राप्त हो, उपलब्ध, पाया हुआ, लिया हुआ ।
- २३ लभिसु (सम्) क्रि.—प्राप्त हो, उपलब्ध हो ।
- २३ लय (सम्) सं.—लीनता, मग्नता, लीन होना ; एकाग्रता ; नाश ; संगीत का ताल ; विश्राम स्थान ; आलय ; मानसिक अकर्षण्यता ; आलिंगन ।
- २३ ललन (सम्) सं.—क्रीड़ा, खेल, आमोद
- २३ ललने (सम्) सं.—स्त्री, रमणी ; कामिनी स्त्री ।
- २३ ललाट (सम्) सं.—माथा, भाल ।
- २३ ललाम (सम्) सं.—तिलक, विंदी ; चिह्न, निशान ; अच्छा लक्षण ; ध्वज, पताका ; प्राधान्य, गौरव, महानता ; आभूषण ; सींग, श्रृंग ; सॉड, बैल ; घोड़ा ; सूर्य ; चंद्रमा ; अग्र, नौक ; अंश, किरण ; लाल रंग ; धवल वर्ण ; लाख ; क्रीडा-कैली ; नाद, स्वर ।
- २३ ललित (सम्) वि.—मनोहर, सुन्दर ; क्रीडासक्त ; प्रिय, उत्तम ; कोमल ; सीधा सं.—क्रीडा, खेल ; आमोद-प्रमोद ।
- २३ ललिते (सम्) सं.—स्त्री ; स्वेच्छाचारिणी स्त्री ।
- २३ लल्ले (तद्) सं.—प्रेम, स्नेह, प्रीति ; सुवन ।
- २३ लव (सम्) अ.—थोड़ा, अत्यल्प परिमाण । सं.—लौंग ; जायफल ।
- २३ लवंग (सम्) सं.—लवंग का पौधा, लौंग ।
- २३ लवण (सम्) सं.—नमक, समुद्री नमक ।
- २३ लवणि (तद्) सं.—लवण (तद्) सं.—चमक, सौंदर्य, दीप्ति ; अंगविन्यास, आगे पीछे झुकना ।
- २३ लविके (क) सं.—औत्सुक्य, तत्परता ; लालसा ।
- २३ लवुन (सम्) सं.—लहसुन ;
- २३ लसित (सम्) वि.—मनोहर, सुन्दर ; प्रादुर्भूत, प्रकट हुआ ।
- २३ लस्तक (सम्) सं.—धनुष का मध्य-भाग ।
- २३ लहरि (सम्) सं.—लहर, तरंग ।
- २३ लळि (क) सं.—कैकड़ा ।
- २३ लांगल (सम्) सं.—हल ; ताड़ का वृक्ष ।
- २३ लांगूल (सम्) सं.—पूँछ ।
- २३ लांछन (सम्) सं.—चिह्न, निशान ; नाम, संज्ञा ; धब्बा, दाग, लांछन ; भूसीमा ।
- २३ लांत्र, २३ लांद्र (अ. दे.) सं.—(Lantern) (अंग्रेज़ी) ; लालटेन !
- २३ लांवि (तद्) सं.—लकड़ी का बड़ा टुकड़ा ।
- २३ लाक्षणिक (सम्) सं.—लाक्षणिक. वह जो लक्षणों को जानता हो ।
- २३ लाक्षा, २३ लाक्षे (सम्) सं.—लाख ; लाख का कीड़ा ।
- २३ लागायितु, २३ लागायु (अ. दे.) अ.—से, लेकर, प्रारम्भ से ।
- २३ लागा हाकु, २३ लागा हाकु (क) क्रि.—कलैया मार, कलैया खा, हार जा ।
- २३ लाघव (सम्) सं.—लघुता ; अल्पता, हल्कापन ; असम्मान, तिरस्कार ; तत्परता फुर्ती ।
- २३ लाज, २३ लाज (सम्) सं.—लावा, खील ।
- २३ लाटिसु (क) क्रि.—मार, ताड़न कर ।
- (१) २३ लाडि, २३ लाळि (क) सं.—चिमटा ।
- (२) २३ लाडि (अ. दे.) सं.—नाड़ा ।
- २३ लाहु (अ. दे.) सं.—लड्डु ।

भाषासङ्घ लाभनष्ट (सम्) — लाभ और हानि ।

भाषासङ्घ लाभच, भाषासङ्घ लाभञ्च, भाषासङ्घ लाभञ्च (तद्) सं. — लाभञ्चः (तद्) ; एक सुगन्धित नृण विशेष जिससे पंखा बनाया जाता है, वीरणमूल ।

भाषासङ्घ लाय (तद्) सं. — अश्वशाला ।

भाषासङ्घ लालन, भाषासङ्घ लालने (सम्) सं. — लालन, लाड़, प्यार ।

भाषासङ्घ लालस, भाषासङ्घ लालसे (सम्) सं. — तीव्र अभिलाषा ।

भाषासङ्घ लालि (क) सं. — लोरी ।

भाषासङ्घ लालित्य (सम्) सं. — मनोहरता, सौंदर्य ।

भाषासङ्घ लावण्य (सम्) सं. — नमकीनपन; सलोनापन; सौंदर्य ।

भाषासङ्घ लास्य (सम्) सं. — नृत्य, नाच; नचैया, नट ।

भाषासङ्घ लाळ (तद्) सं. — नाल, नली, डंठल; सलाई ।

भाषासङ्घ लिंग (सम्) सं. — निशान, चिह्न; शिव-लिंग; लिंग, शिदन; प्रतिमा, मूर्ति; व्याकरण में लिंग ।

भाषासङ्घ लिंगवन्त, भाषासङ्घ लिंगायत्त, भाषासङ्घ लिंगायित, भाषासङ्घ लिंगायत्त (सम्) सं. — लिंगायत्त, वीरशैव-संप्रदाय का अनुयायी ।

भाषासङ्घ लिखिसु (सम्) क्रि. — लिख, लेखन-कार्य कर ।

भाषासङ्घ लिपि (सम्) सं. — लिपि, अक्षर; लेख, हस्तलेख ।

भाषासङ्घ लिपिकार (तद्) सं. — लिपिकरः (तद्); लिखनेवाला, लेखक ।

भाषासङ्घ लिप्त (सम्) वि. — लिपा हुआ; ढका हुआ; संयुक्त, जुड़ा हुआ ।

भाषासङ्घ लिप्से (सम्) सं. — लिप्सा, इच्छा; अभिलाषा ।

भाषासङ्घ लीनते (सम्) सं. — लीन होना; लिप्तता ।

भाषासङ्घ लीले (सम्) सं. — लीला; क्रीड़ा, खेल ।

भाषासङ्घ लुक्सानु (अ. दे.) सं. — नुकसान, हानि ।

भाषासङ्घ लुचा (अ. दे.) वि. — लुचा ।

भाषासङ्घ लुप्त (सम्) वि. — खोया हुआ, भङ्ग, नष्ट; वञ्चित ।

भाषासङ्घ लुब्धक (सम्) सं. — शिकारी, बहे-लिया; आर्दा नक्षत्र; लौभी या लालची आदमी ।

भाषासङ्घ लुलाय (सम्) सं. — भैंसा ।

भाषासङ्घ लूटि (अ. दे.) सं. — लूट-मार; लूटना; दुर्यता ।

भाषासङ्घ लूंक (क?) सं. — नौकर, दास । लूंक लूंकिति — स्त्री. लिं. ।

भाषासङ्घ लूंक (तद्) सं. — हिसाब, गिनती, गणना; संख्या, अंक ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — अक्ष, जुआ ।

भाषासङ्घ लूंक (सम्) सं. — लेख, लिपि, लिखावट, दस्तावेज ।

भाषासङ्घ लूंक (सम्) सं. — लेखक, रचयिता ।

भाषासङ्घ लूंक (सम्) सं. — लेखन, लेख ।

भाषासङ्घ लूंक (सम्) सं. — लेखनी, कलम ।

भाषासङ्घ लूंक (सम्) सं. — लेपन, लेपना, पोतना; लेप ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — परिहास, मज़ाक ।

भाषासङ्घ लूंक (सम्) सं. — अणु, रंच, अत्यल्प परिमाण ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — अच्छाई, उत्तमता, श्रेष्ठता, महानता; भलाई ।

भाषासङ्घ लूंक (सम्) सं. — लेह, चाटने योग्य पदार्थ ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — छिपकली की आवाज़ ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — एक अनुकरणात्मक शब्द । लूंक, गुट्ट (क) क्रि. — बड़बड़ा ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

भाषासङ्घ लूंक (क) सं. — दरार, बड़ी सुराख ।

ॐ ई ई लौकिक (सम्) वि. — सांसारिक, साधारण, मामूली ।

व

व — कन्नड-वर्णमाला का ४४ वां अक्षर ।

व (क) प्र. — 'वाला' अर्थसूचक (क्रिया के साथ) उदा. — बंधु व विदुव — छोड़नेवाला (या छूटनेवाला), बंधु व बरुव — जानेवाला, बंधु व होगुव — जानेवाला ।

व वं (तद्) वि — वक्र, टेढ़ा ; तिरछा ।

व वंकि (क) सं. — एक आभरण ; एक प्रकार का चाकू या तलवार ; एक प्रकार का अंकुड़ा ।

व वंकि (क) सं. — एक प्रकार का आयुध ; छुरा ।

व वंग (सम्) सं. — बंगाल ; सीसा ; टीन ।

व वंगड (क) सं. — समूह, समुदाय, भीड़ ।

व वंगार (क) सं. — सोना, सुवर्ण ।

व वंक्क (सम्) सं. — धोखा देनेवाला, धोखेबाज़, छलिया । वंक्कि — स्त्री. लिं. ।

व वंक्क (सम्) सं. — धोखा देनेवाला, छल, कपट, धोखा, प्रवृत्तना ।

व वंक्क (सम्) सं. — नरकुल या वंत् ।

व वंक्क (सम्) सं. — बँटवारा ; बाँटनेवाला ; हिस्सा ; अंश ।

व वंठ (सम्) सं. — नौकर, चाकर ; अविवाहित पुरुष ; बर्छा, शूल ।

व वंत् (सम्) प्र. — 'वान्' के अर्थ में, जैसे — वंत् गुणवन्त् — गुणवान्, वंत् वंत् वुद्धिवन्त् — वुद्धिमान् ।

व वंद्द (सम्) सं. — अभिवादन, नमस्कार ; पूजा, अर्चना ; सम्मान ; प्रशंसा ।

व वंद्द (क) सं. — छलनी ।

व वंदि (सम्) सं. — मागध, सूत, भाट ।

व वंद्य (सम्) वि. — वन्दन करने योग्य, वन्दनीय, पूज्य, प्रणम्य ।

व वंद्दि (क) सं. — दे. वंद्द ।

व वंद्दि (सम्) सं. — बौद्ध ।

व वंश (सम्) सं. — वंश, कुल, घराना ; बांस ; रीढ़ की हड्डी ; समूह ; तपस्या ; शहतीर, बल्ली, लट्ठा ; गन्ना, ईख ; जल, पानी ; साल वृक्ष ।

व वंशि (सम्) सं. — मुरली, बांसुरी ।

व वंशु (अ. दे.) सं. — वकालत ।

व वंकील (सम्) सं. — वकील, प्लीडर ।

व वंक्क (सम्) सं. — कथन, वक्तृता ; विषय ; नियम ।

व वक्त्र (सम्) सं. — मुख, चेहरा ।

व वक्क (सम्) वि. — वक्र, टेढ़ा, बांका ; घुंघुराला ; निष्ठुर, कठोर ; अकरुण ; धोखेबाज़ ।

व वक्क (सम्) सं. — एक अलंकार का नाम ।

व वक्क (सम्) सं. — छाती ; कुच, चूची ।

व वक्क (सम्) सं. — बोलने की क्रिया, वाणी, बात, कथन, पाठ, पुनरावृत्ति ; उक्ति, वानी ; परामर्श, सलाह ; वर्णन, बयान ; शब्दार्थ ; व्याकरण में वचन (एकवचन, बहुवचन) ।

व वक्क (अ. दे.) सं. — वजन (अरबी) ; भार, बोझा ।

व वक्क (अ. दे.) सं. — निकालना, रद्द करना, हटाना । — वक्क माडु = रद्द कर, हटा ।

व वक्क (सम्) सं. — हीरा ; इन्द्र का वज्र ; इस्पात, अबरक ; एक पौधा विशेष । वि. — कड़ा, कठोर ।

व वक्क (सम्) सं. — बरगद का पेड़ ; रस्ती, डोरी, बन्धन ; गोली, छोटी गोलाकार वस्तु ; चपाती ; कौड़ी ; कामदेव ; हाथी का मद ; जूठन ; वृत्त, गोल आकार ।

व वक्क (क ?) सं. — जगह, स्थान ; घरों का समूह, वह स्थान जहाँ चार-पांच घर एक अहाते में हों ।

व वक्क (क) कि. — मेंढक का 'टर टर' आवाज़ करना ।

व वक्क (सम्) सं. — बडवानल, दावाग्नि ।

व वक्क (क) सं. — गरमी, उष्णता ।

व वक्क (तद्) सं. — बडा, उडद की दाल से बना बडा ।

व वक्क (सम्) सं. — व्यापार, सौदागरी ।

व वक्क (सम्) सं. — बछडा ; बेटा, संतान ; संवत्सर ; छाती ; कुच ; निर्मलता ; निशान ; वरुण ।

व वक्क (सम्) सं. — छोटा बछडा ; दवाई का एक पौधा ।

व वक्क (सम्) सं. — वर्ष, संवत्सर ।

व वक्क (वि.) — कह, बोल । वि. — बोलनेवाला ।

व वक्क (सम्) सं. — मुख, मुँह ; बोलने की क्रिया ।

व वक्क (सम्) वि. — तेज़ बोलनेवाला, सुभाषी ; उदार ।

व वक्क (सम्) सं. — मारना, हरया ।

व वक्क (सम्) सं. — पुत्रवधु पत्नी स्त्री, औरत ; दुलहिन ।

व वक्क (सम्) सं. — वन, जंगल, अरण्य ; बगीचा ; घर, आवास ; सोता, जल ; चमक, कांति ।

व वक्क (सम्) सं. — समुद्र ।

व वक्क (सम्) सं. — विष्णु ; श्रीकृष्ण ।

व वक्क (सम्) सं. — कमल ।

व वक्क (सम्) सं. — वनिता, स्त्री ; पत्नी, प्रेमपात्री]

व वक्क (सम्) सं. — सूर्य ।

व वक्क (वि.) — वनसंबन्धी, जंगली । सं. — वन की पैदावार ।

संस्कृत

- संस्कृत (सम्) सं.—शरीर, देह; व्यक्ति, पुरुष, रूप, आकार।
- संस्कृत (सम्) सं.—वपा, चर्बी, बसा; मन्त्र, गुफा, चींटियों द्वारा बनाया गया मिट्टी का टीला।
- संस्कृत वमथु (सम्) सं.—कै; वह जल जिसे हाथी अपनी सूंड में भरकर फेंकता है।
- संस्कृत वमन (सम्) सं.—कै, उल्टी, थूक; अग्नि में आहुति देना।
- संस्कृत वेत्रि (सम्) सं.—चींटी।
- संस्कृत वय, संस्कृत वय्यु (क) क्रि.—ले जा, उठा ले जा, ढो।
- संस्कृत वयसु, संस्कृत वयस्सु (सम्) सं.—वय, उम्र, आयु।
- संस्कृत वयस्य (सम्) सं.—समवयस्क, सहयोगी, मित्र।
- संस्कृत वय्यार (तद्) सं.—वय्यार ओयार—नाज़, नखरा, सुंदर चाल या वेश-भूषा।
- संस्कृत वर (सम्) सं.—चुनाव, पसंदगी; व दान, आशीर्वाद, भेंट; पुरस्कार; याचना, विनय; दूल्हा, वर; दामाद; गौरव्या पक्षी; लंपट आदमी, केसर। वि.—श्रेष्ठ, उत्तम, सर्वोत्तम, बेहतर।
- संस्कृत वरकु (अ. दे.) सं.—वरक।
- संस्कृत वरदक्षिणे (सम्) सं.—दक्षिण।
- संस्कृत वरदि (तद्) सं.—वार्ता (तत्); समाचार, रिपोर्ट।
- संस्कृत वरयित, संस्कृत वरयितृ (सम्) सं.—वर, दूल्हा; प्रेमी, पति।
- संस्कृत वरसाम्य (सम्) सं.—वर और वधू का ठीक जोड़ा।
- (१) संस्कृत वरसे, संस्कृत वरसे (क) सं.—पंक्ति, कतार, श्रेणी, जाति; नस्ल।
- (२) संस्कृत वरसे (तद्) सं.—बारी, दफा।
- संस्कृत वराटक (सम्) सं.—कौड़ी; रस्सी, धोरी; कमलगट्टा।
- संस्कृत वराह (सम्) सं.—सुअर, शूकर; विष्णु का वराह अवतार।
- संस्कृत वराहिक (क?) सं.—एक राग का नाम।
- संस्कृत वरि, संस्कृत वरिवु (क) सं.—सीमा, हद्द।
- संस्कृत वरिष्ठ (सम्) वि.—सर्वोत्तम, सब से बड़ा, सब से विस्तृत, सब से भारी।
- संस्कृत वरुण (सम्) सं.—जलदेवता वरुण।
- संस्कृत वरुष, संस्कृत वरुस (तद्) सं.—वर्ष, साल।
- संस्कृत वरुथ (सम्) सं.—लोहे की चद्दर या आवरण; बख्तर, कवच; ढाल; समूह, समुदाय।
- संस्कृत वरुथिनि (सम्) सं.—समूह; सेना।
- संस्कृत वरेण्य (सम्) वि.—सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, मुख्य।
- संस्कृत वरकर (सम्) सं.—भैरव; पालतू जानवरों का वच्चा।
- संस्कृत वर्ग (सम्) सं.—श्रेणी, विभाग, कक्षा, जमात, जाति, समुदाय; दल, टोली, पक्ष; ग्रन्थविभाग, प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद; दो समान अंकों या राशियों का गुणनफल; शक्ति, ताकत।
- संस्कृत वर्चस्व, संस्कृत वर्चसु (सम्) सं.—तेज, कांति, दीप्ति, प्रभाव।
- संस्कृत वर्जन (सम्) सं.—त्याग, मनाई; वैराग्य; हिंसा, मारण।
- संस्कृत वर्ण (सम्) सं.—रंग; रूपरंग; सौंदर्य; श्रेणी, जाति, किस्म; अक्षर, स्वर; कीर्ति, महिमा; प्रशंसा, स्तुति। चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र; सोना; केसर; तप, तपस्या; पुष्पहार; इन्द्रिय; मोक्ष, कैवल्य; कलिका, कली।
- संस्कृत वर्णने (सम्) सं.—वर्णना, वर्णन, बखान।
- संस्कृत वर्तिक (सम्) सं.—व्यापारी, सौदागर; घोड़े का खुर; फूल, काँसा।
- संस्कृत वर्तने (सम्) सं.—प्रवृत्ति, वृत्ति, प्रवर्तन, स्वभाव, रंग-ढंग।
- संस्कृत वर्तमान (सम्) सं.—वर्तमान काल। वि.—विद्यमान, मौजूद।
- संस्कृत वर्ति (सम्) सं.—दीपक की बत्ती; जाड़ू का दीपक; बर्तन के चारों ओर बाहर निकला हुआ किनारा; धारी, रेख; एक लेपन।
- संस्कृत वर्तिके (सम्) सं.—बत्ती; चित्तरे की कूची; रंग, रोगन; तीतर, बटेर।
- संस्कृत वर्तिसु (सम्) क्रि.—लग, लागू हो; हो, संभव हो, घूम, आचरण कर; चिपक, लिपट।
- संस्कृत वर्तुल (सम्) सं.—गोलाकार, गोल।
- संस्कृत वर्धति (सम्) सं.—जन्म-दिनोत्सव, सालगिरह, वर्षगांठ।
- संस्कृत वर्धिष्णु (सम्) वि.—बढ़नेवाला, अभिवृद्ध होनेवाला।
- संस्कृत वर्म (सम्) सं.—कवच, बख्तर; छाल; गुद्दा; मर्म।
- संस्कृत वर्ष (सम्) सं.—वर्ष, साल; वर्षा, वृष्टि; दिन; सात द्वीपों का एक विभाग।
- संस्कृत वर्षा वर्षा क्रतु, संस्कृत वर्षा-काल (सम्) सं.—बरसात का मौसम, पावस।
- संस्कृत वल, संस्कृत वलं (सम्) अ.—सच-सुच, अवश्य, जरूर।
- संस्कृत वलक्ष (सम्) सं.—सफेद रंग।
- संस्कृत वलभि (सम्) सं.—डलुवा छत, छत।
- संस्कृत वलय, संस्कृत वलय (सम्) सं.—चूड़ी, कंगन, कंकण, छह्ना; घेरा।
- संस्कृत वलसे (क) सं.—स्तानांतरीकरण।
- संस्कृत वलिय (क) सं.—भरतपक्षी, भरद्वाज पक्षी।
- संस्कृत वलिये (क) सं.—दे. संस्कृत।
- संस्कृत वल्क (सम्) सं.—पेड़ की छाल; मछली के शरीर का आवरण या पपड़ी।
- संस्कृत वल्कल (सम्) सं.—पेड़ की छाल का वच्छ।
- संस्कृत वल्गु (सम्) वि.—प्यारा, मनोहर, सुंदर।
- संस्कृत वल्गुल (सम्) सं.—सियार, गीदड़।
- संस्कृत वल्गे (सम्) सं.—लगाम, रास।
- संस्कृत वल्मीक (सम्) सं.—विमौट, दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का ढेर।

संस्कृत वल्लकि (सम्) सं.—वीणा ।
 संस्कृत वल्लभ (सम्) सं.—प्रेमी, पति, प्रेम-
 पात्र ; अध्यक्ष, पर्यवेक्षक ; प्रधान ग्वाला
 या गोप ।
 संस्कृत वल्लभे (सम्) सं.—प्रेमिका, प्यारी,
 पत्नी ।
 संस्कृत वल्लयिसु (क) क्रि.—पीछे हट, चले
 जा ।
 संस्कृत वल्लरि (सम्) सं.—लता, बेल ; मंजरी ।
 संस्कृत वल्लव (सम्) सं.—रसोइया ।
 संस्कृत वल्लि (सम्) सं.—लता, बेल ।
 संस्कृत वल्लूर (सम्) सं.—सूखी मछली ;
 लतामंडप ; मंजरी ; रेगिस्तान, वीरान ;
 जंगल ।
 संस्कृत वश (सम्) वि.—अधीन, काबू में किया
 हुआ । सं.—शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण,
 प्रभुत्व ; इच्छा, कामना, अभिलाषा ।
 संस्कृत वशे (सम्) सं.—स्त्री ; पत्नी ; गाय ;
 बाँझ गाय ; ननद ; हथिनी ।
 संस्कृत वसडि, संस्कृत वसडु (क) सं.—जबड़ा ।
 संस्कृत वसति (सम्) सं.—निवास स्थान,
 ठहरने का स्थान, घर ; रात ; सुविधा,
 आराम ।
 संस्कृत वसन (सम्) सं.—वास, रहना ; घर ;
 वस्त्र, परिधान ।
 संस्कृत वसंत (सम्) सं.—वसंत ऋतु, चैत्र-
 वैशाख मास ।
 संस्कृत वसुले (क) सं.—वरुण या तिक्तशाक
 वृक्ष (The tree crataeva roxburghii) ।
 संस्कृत वसारे (क) सं.—बरामदा, बैठकखाना ।
 संस्कृत वसु (सम्) सं.—धन-दौलत ; रत्न,
 जवाहर सवर्ण ; जल ; पदार्थ, वस्तु ; लवण
 विशेष ; एक जड़ी विशेष ; अग्नि ; एक
 श्रेणी के देवता ; अष्ट वसु (ऐश्वर्य) ; आठ
 की संख्या ; वस्त्र ; कानन ; अरण्य ;
 सामीप्य ; लगाम, रास ; बागडोर ; किरण ;
 सूर्य ; एक वृक्ष (The tree Sesbana
 gandiflora) ।
 संस्कृत वसुलु (अ. दे.) सं.—वसूल (अरबी) ;
 प्राप्ति, उपलब्धि ; लगान, भूमि-कर ।

संस्कृत वस्ति (क) सं.—गीलापन, आद्रता
 (वर्षा के बाद) ।
 संस्कृत वस्तु (सम्) सं.—पदार्थ, चीज सारवान ;
 वस्तु-वास्तविक संपत्ति, धन-दौलत ; किसी
 नाटक या उपन्यास का कथानक ; खाका,
 ढाँचा ।
 संस्कृत वस्त्र (सम्) सं.—कपड़ा ; रूमाल ।
 संस्कृत वस्न (सम्) सं.—भाड़ा, मजदूरी ।
 (तद्) सं.—वसन, कपड़ा ।
 संस्कृत वहन (सम्) सं.—ले जाना, पहुँचना ;
 बहाव ; सवारी ; नाव, वेड़ा ।
 संस्कृत वहने (सम्) सं.—नदी, झरना ।
 संस्कृत वहिसु (सम्) क्रि.—उठा, वहन कर,
 ढो, ले जा, स्वीकार कर ; जिम्मेदारी ले ;
 उपयोग कर ।
 संस्कृत वह्नि (सम्) सं.—भाग, अग्नि ।
 संस्कृत वल्लय, संस्कृत वल्लेय (तद्) सं.—
 दे. संलया ।
 संस्कृत वांछल्यं (तद्) सं.—वात्सल्यं
 (तत्) ; स्नेह, प्रीति ।
 संस्कृत वांछित (सम्) वि.—चाहा हुआ,
 अभिलषित, इच्छित ।
 संस्कृत वांछे (सम्) सं.—वांछा, अभिलाषा,
 चाह ।
 संस्कृत वांति (क) सं.—वसन, कै ।
 संस्कृत वांशिक (सम्) सं.—बाँस काटनेवाला ;
 बंसी बजानेवाला ।
 संस्कृत वांश्य (सम्) वि.—बाँस का बना
 हुआ ।
 संस्कृत वाकरिके (क) सं.—कै, वसन
 संस्कृत वाक्कु (तद्) सं.—वाक्, वाणी, बात ।
 संस्कृत वाक्य (सम्) सं.—भाषण, शब्द,
 वाक्य, कथन ; आदेश, आज्ञा ।
 संस्कृत वागीश (सम्) सं.—वृहस्पति ; ब्रह्मा ;
 एक व्यक्ति का नाम ; घह जिसका भाषा
 पर अधिकार हो ।
 संस्कृत वाग्देवि, संस्कृत वाग्देवते (सम्)
 सं.—सरस्वती ।
 संस्कृत वाग्मि (सम्) सं.—वाक्पटुता,
 वाग्मिता, वक्ता, वाग्मी ।

संस्कृत वाङ्मय (सम्) सं.—भाषा, बाणी,
 वाक्पटुता ; अलंकार शास्त्र ।
 संस्कृत वाच्यम (सम्) सं.—मौन
 रहनेवाला, मुनि ।
 संस्कृत वाचक (सम्) सं.—बतानेवाला, कहने-
 वाला, व्याख्याता ।
 संस्कृत वाचने (सम्) सं.—वाचन, पढ़ना,
 पाठ ; कथन, घोषणा ।
 संस्कृत वाचस्पति (सम्) सं.—वृहस्पति ।
 संस्कृत वाचिसु (सम्) क्रि.—पढ़, वाचन
 कर ; बोल, कह ।
 संस्कृत वाच्य (सम्) वि.—कहने योग्य ;
 अभिधेय ; तिरस्करणीय । सं.—व्याकरण
 में वाच्य ।
 संस्कृत वाजि (सम्) सं.—घोड़ा, अश्व ; बाण,
 तीर ; पक्षी ।
 संस्कृत वाट (क) सं.—भूमि, छत्त आदि का
 ढलुवा होना ।
 संस्कृत वाट्टे (क) सं.—गुठली, आम की गुठली ।
 संस्कृत वाडव (सम्) सं.—बड़बानल ।
 संस्कृत वाडिके (क) सं.—रूढि, पद्धति,
 रिवाज ।
 संस्कृत वाणि (सम्) सं.—बात, वचन, भाषा ;
 सरस्वती ।
 संस्कृत वाणिग (क) सं.—भूत, शठ, दुष्ट ।
 संस्कृत वाणिज (सम्) सं.—व्यापारी, बनिया ।
 संस्कृत वाणिज्य (सम्) सं.—व्यपार, सौदा-
 गरी ।
 संस्कृत वात (सम्) सं.—पवन, हवा, वायु
 देवता ; शरीरस्थ वात ; गठिया ।
 संस्कृत वात्सल्य (सम्) सं.—वात्सल्य,
 छोटों के प्रति प्रेम-भाव ।
 (१) संस्कृत वाद (क) सं.—गड़बा, हाथी को
 पकड़ने के लिए बनाया गया गड़बा ।
 (२) संस्कृत वाद (सम्) सं.—बातचीत, कथन ;
 वादन, बजाना ; शास्त्रार्थ, वादविवाद, बहस ;
 टीका, व्याख्या भाष्य ।
 संस्कृत वादि (सम्) सं.—बोलनेवाला, झगड़ने-

वाद्य वाद्य

वाला; वक्ता; वादी, मुद्दई; भाष्यकार, शिक्षक ।

वाद्य वाद्य (सम्) सं.—बजाने की ध्वनि ।

वाद्यस्थान वानप्रस्थ (सम्) सं.—चार आश्रमों में तीसरा; महुण का पेड़; पलाश वृक्ष ।

वाद्यस्थान वानर (सम्) सं.—बंदर ।

वाद्यस्थान वानेय (सम्) सं.—कैवर्त मुस्तक ।

वाद्यस्थान वापन (सम्) सं.—बुवाई; मुडन ।

वाद्यस्थान वाम (सम्) वि.—बायाँ; उल्टा; बुरा, दुष्ट; सुन्दर, मनोहर ।

वाद्यस्थान वामन (सम्) सं.—बौना या नाटा आदनी; विष्णु का एक अवतार; दक्षिण दिग्गज का नाम; अंकोट वृक्ष; एक आचार्य का नाम ।

वाद्यस्थान वाग्ने (क) सं.—तृणसंहति, घाल का ढेर ।

वाद्यस्थान वायन (सम्) सं.—देवता के लिए मिष्टान्न का नैवेद्य; ब्राह्मण को व्रतादि के समय दिया जानेवाला उपहार (नारियल, चावल आदि) । वाग्नि—तद् ।

वाद्यस्थान वायिदे (अ. दे) सं.—प्रतिज्ञा, प्रण; निश्चित समय, अवधि; किशन ।

वाद्यस्थान वायु (सम्) सं.—हवा, पवन; पवन-देव; शरीरस्थ पांच प्रकार की वायु (प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान); आकाश, अंतरिक्ष ।

(१) वाद्यस्थान वार (क) वि.—ढलुवा; ढालू । सं.—हिस्सा, भाग, किसानों से भू स्वामी को मिलनेवाला अनाज का हिस्सा ।

(२) वाद्यस्थान वार (सम्) सं.—दिन; ढकना; बड़ी संख्या; समुदाय, ढेर; बारी, दफा; अवसर; नदी के सामने का तट; द्वार, फाटक; ढूँछा ।

वाद्यस्थान वारगिति (क) सं.—वाद्य और गिति—जेठानी या देवरानी ।

वाद्यस्थान वारण (सम्) सं.—हाथी; कवच; रोक, रुकावट, संयम; अडचन; बचाव, रक्षा ।

वाद्यस्थान वारसुदार (अ. दे.) सं.—वारिस (अरबी); उत्तराधिकारी ।

वाद्यस्थान वारांगने, वाद्यस्थान वारस्त्री (सम्) सं.—वेश्या ।

वाद्यस्थान वारि (सम्) सं.—जल, पानी; हाथी को बांधने की रस्सी या जंजीर; हाथी को पकड़ने के लिए बनाया जानेवाला गद्दा; कैदी, बन्दी, एक औषध ।

वाद्यस्थान वारिस (सम्) क्रि.—दूर कर, हटा; रोक, अवरोध कर ।

वाद्यस्थान वारुणि (सम्) सं.—पश्चिम दिशा; मदिरा, शराब; दूर्वा ।

वाद्यस्थान वारे (क) सं.—दे. वाद्यस्थान (१) ।

वाद्यस्थान वार्ता, वाद्यस्थान वार्ते (सम्) सं.—समाचार, खबर, संवाद; बैंगन का पौधा; आजीविका, धंधा ।

वाद्यस्थान वार्धक्य, वाद्यस्थान वार्धक्य (सम्) सं.—बुढ़ापा ।

वाद्यस्थान वालग (क) सं.—राजसभा, दरबार ।

वाद्यस्थान वालधि (सम्) सं.—लांगूल ।

वाद्यस्थान वालु (क) क्रि.—ढालू हो, झुक ।

वाद्यस्थान वाविलि (क) सं.—सिंधुवार वृक्ष ।

वाद्यस्थान वास (सम्) सं.—निवास, रहना, घर, जगह, स्थान; परिधान, पोशाक ।

वाद्यस्थान वासने (सम्) सं.—वास; गंध, बू; सुगंध ।

वाद्यस्थान वासव (सम्) सं.—इन्द्र ।

वाद्यस्थान वासि (तद्) सं.—('वाचा' से) प्रण, प्रतिज्ञा, शपथ, वचन; अच्छी स्थिति; श्रेष्ठता, उत्तमता ।

वाद्यस्थान वासिसु (सम्) क्रि.—रह, निवास कर; सूँघ, गन्ध ले ।

वाद्यस्थान वास्तव (सम्) वि.—सच, निश्चित, निर्दिष्ट ।

वाद्यस्थान वाहन (सम्) सं.—वाहन, सवारी; रथ, गाड़ी ।

वाद्यस्थान वाहिनि, वाद्यस्थान वाहिनी (सम्) सं.—नदी; सेना; सेना का भाग — ८१

हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और, ४०५ पदाति ।

वाद्यस्थान विंगड (तद्) सं.—('विघटन' से) भाग, विभाग, टुकड़ा, खड़ा ।

वाद्यस्थान विंजु (क) सं.—वंजन पक्षी ।

वाद्यस्थान विंध्याचल (सम्) सं.—विंध्य पर्वत ।

वाद्यस्थान विकच (सम्) वि.—केशहीन; बिखरा हुआ; गंजा ।

वाद्यस्थान विकट (सम्) वि.—बड़ा, भयंकर; कुरूप, उग्र, जंगली ।

वाद्यस्थान विकलते, वाद्यस्थान विकलत्व (सम्) सं.—विकलता, व्याकुलता, चिंता; दुःख ।

वाद्यस्थान विकलांग (सम्) सं.—खण्डित अंगवाला, न्यूनांग, अंगहीन ।

वाद्यस्थान विकल्प (सम्) सं.—त्रैकल्पिक विषय या बात; संदेह, संकोच, अनिश्चय; हिचकिचाहट; ग़लती; भ्रम; भोलापन; अविश्वास; बुरा विचार ।

वाद्यस्थान विकार (सम्) सं.—विकृति, कुरूप, भद्दा रूप; परिवर्तन; बीमारी, रोग; मनपरिवर्तन ।

वाद्यस्थान विक्रीर्ण (सम्) वि.—फैला हुआ, व्याप्त ।

वाद्यस्थान विकृत (सम्) वि.—परिवर्तित, बदला; हुआ; बीमार; भय, कुरूप, खंडित ।

वाद्यस्थान विक्रम (सम्) सं.—वीरता, पराक्रम; पग; चलना; एक संवत्सर का नाम ।

वाद्यस्थान विक्रमार्जुनविजय (सम्) सं.—महाकवि पंप के महाकाव्य का नाम । इसको 'पंप भारत' भी कहते हैं ।

वाद्यस्थान विक्षेप (सम्) सं.—घबराहट, बेचैनी, विकलता; भय, डर; इधर-उधर हिलना-डुलना; कटाक्ष ।

वाद्यस्थान विख्यात (सम्) वि.—प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त; मान्य ।

वाद्यस्थान विगर्हण (सम्) सं.—धिक्कार; भर्त्सना, फटकार ।

विगुणै विगुणै (क) सं. — भयंकर या आश्चर्यजनक वस्तु ।
 विगुणै विग्रह (सम्) सं.—फैलाव ; आकार, मूर्ति ; देह, शरीर ; शब्द को अलग करना ; झगड़ा, कलह ; समर ; अंश, भाग ।
 विगुणै विघात (सम्) सं.—मारना ; वध ; नाश, रोक, बचाव ; अड़चन, अटकाव ; प्रहार, चोट ।
 विगुणै विघ्न (सम्) सं. — अड़चन, बाधा, व्याघात ; विरोध ; संकट ।—००७ राज = विनायक, गणेशजी ।
 विगुणै विचार (सम्) सं.—विचार, भावना, ख्याल ; संदेह, शक, हिचकिचाहट ; जाँच, परीक्षा, अनुसंधान ; निर्णय, फैसला ; निश्चय, संकल्प ; सतर्कता, सावधानी ।
 विगुणै विचित्र (सम्) वि.—सुंदर, मनोहर ; आश्चर्यकर । सं.—कन्नड के एक छंद का नाम ।
 विगुणै विजय (सम्) सं. — जय, जीत ; अर्जुन का नाम ; विष्णु के द्वारपाल का नाम ; एक संवत्सर का नाम ।
 विगुणै विजाति (सम्) सं.—भिन्न या दूसरी जाति ; जातिहीन ; नीच जाति का आदमी ।
 विगुणै विजाते (सम्) सं.—संतानवती स्त्री, माता ।
 विगुणै विजगीपु (सम्) वि.—विजयाभि-
 लाषी ।
 विगुणै विजृम्भिसु (सम्) क्रि.—जंभाई ले ; प्रस्फुटित हो, खिल ; फैल ; आमोद-
 प्रमोद कर ।
 विगुणै विज्ञप्ति, विगुणै विज्ञापन, विगुणै विज्ञापने (सम्) सं.—विनय, प्रार्थना, विनती ।
 विगुणै विट (सम्) सं.—जार ; कामुक, लंपट ; विट पुरुष ; धूर्त ।
 विगुणै विटप (सम्) सं.—वृक्ष या लता की शाखा, डाल ; झाड़ी ; छतनार वृक्ष ; अंकुर, कोंपल ; सघन वृक्षों का झुरमुट ।
 विगुणै विटपि (सम्) सं.—पेड़, वृक्ष ; वट-
 वृक्ष ।

विगुणै विडक (तद्) सं.—टोकरी ।
 विगुणै विडंब, विगुणै विडंबन, विगुणै विडंबर (सम्) सं. — नकल, अनुकरण, अनुकरण करके चिढ़ाना या अपमान करना ; कपट, वंचना ; चिढ़ाना ; मज़ाक, उपाहास ; पीड़न ।
 विगुणै विडाय, विगुणै विडायि (अ. दे.) सं.—बड़प्पन, महानता ।
 विगुणै विडूर, विगुणै विडूर (क) सं.—
 विकलता, उपद्रव, कष्ट ।
 विगुणै विडंबाद (सम्) सं.—व्यर्थ का वाद या चर्चा ।
 विगुणै विडंतु (सम्) सं.—विधवा ; अच्छा घोड़ा ।
 विगुणै विडरण (सम्) सं.—वितरण, बाँटना ; अर्पण ; उदारता ।
 विगुणै विडर्क (सम्) सं.—अनुमान, कल्पना ; विचार, विवाद ; संदेह ।
 विगुणै विडान (सम्) सं.—फैलाव, अधिक्य, वृद्धि ; राशि, ढेर ; मख, यज्ञ ; चंदोवा, गामियाना ; यज्ञीय कुंड या वेदी ; अवसर, मौका ; फुरसत ; शीघ्रता । वि. — शून्य, खाली ; मूर्ख, मूढ़ ।
 विगुणै विड (सम्) सं.—धन, पैसा, संपत्ति ; वस्तु ।
 विगुणै विडग्ध (सम्) वि. — जला हुआ ; पकाया हुआ ; हजम किया हुआ, जीर्ण ; नष्ट किया हुआ, सड़ा हुआ ; चतुर, चालाक ।
 विगुणै विद्या, विगुणै विद्ये (सम्) सं.—विद्या, शिक्षा, ज्ञान, विद्वत्ता ।
 विगुणै विद्युल्लेते (सम्) सं.—विजली ।
 विगुणै विद्रव (सम्) सं.—पलायन, झगड़ा ; भय, डर ; बहाव ; पिघलन ।
 विगुणै विद्रव्तु (सम्) सं. — विद्वत्ता, पाण्डित्य ।
 विगुणै विद्रांस (सम्) सं.—विद्वान्, पंडित ।
 विगुणै विधवे नैधवे विधवे (तद्) सं. —
 विधवा स्त्री ।
 विगुणै विधात, विगुणै विधातृ (सम्) सं.—
 सृष्टिकर्ता ; ब्रह्मा ।

विगुणै विधान (सम्) सं. — ढंग, तरीका ; पद्धति ; विन्यास ; अनुष्ठान ; तंत्र, उपाय ।
 विगुणै विधि (सम्) सं.—विधि, भाग्य, किस्मत ; प्रणाली, ढंग नियम ; आज्ञा ; विष्णु ; श्रेष्ठ व्यक्ति, विद्वान् : वैद्य ; समय, काल ; विध्यर्थ (Imperative) ; कवि ; ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता ।
 विगुणै विधिसु (सम्) क्रि. — आज्ञा दे ; निश्चय कर, निर्णय कर, लगा ।
 विगुणै विधेयते, विगुणै विधेयत्व (सम्) सं.—आज्ञाकारिता, विनयशीलता, विनम्रता । विधेय = विनम्र ।
 विगुणै विध्वंस (सम्) सं.—नाश, बरबादी ; मरण ; वैर, शत्रुता ; तिरस्कार, अनादर ।
 विगुणै विनत विनतु, विनम्र (सम्) वि. —
 झुका हुआ, नवा हुआ ; टेढ़ा ।
 विगुणै विनय (सम्) सं. — नम्रता, भद्रता, भद्र आचरण ; आज्ञाकारिता ।
 विगुणै विनहा (तद्) — विना (सम्) अ.—
 अतिरिक्त, सिवा, बगैर, अभाव में ।
 विगुणै विनाश (सम्) सं.—नाश, बरबादी ।
 विगुणै विनिंदित (सम्) सं.—निंदित, गाली पाया हुआ ; निंदारहित ।
 विगुणै विनिमय (सम्) सं.—अदलबदल ; गिरवी, बंधक ।
 विगुणै विनियोगिसु (सम्) क्रि.—
 लगा ; किसी कार्य के लिए नियुक्त कर, त्याग कर ।
 विगुणै विनीत (सम्) वि.—विनम्र, भद्र, सदाचारी ।
 विगुणै विनोद (सम्) सं. — मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, खेल, क्रीड़ा ; हटाना, दूर करना ; उत्सुकता, उत्कंठा ।
 विगुणै विन्यास (सम्) सं.—स्थापन ; सजावट, धरोहर ; संग्रह, समूह ।
 विगुणै विपक्षि (सम्) सं.—प्रतिपक्षी ; शत्रु ।
 विगुणै विपणि (सम्) सं.—बाजार, हाट, दूकान ।
 विगुणै विपन्न (सम्) वि.—मृत, नष्ट, खोया हुआ ; अभागा, बदकिस्मत ।

२१७

२१७ विपरीत (सम्) वि.—बहुत, अधिक, असंख्य, असामान्य ।
 २१७ विपाक (सम्) सं.—परिपक्व होना ; पचन ; फल, परिणाम ; कर्म का फल ।
 २१७ विपस्तु ((तद्) सं.—विपदा, विपत्ति, संकट, कष्ट, दुःख ।
 २१७ विप्र (सम्) सं.—ब्राह्मण ; कवि ; ऋषि ; किरण ; कुश, दर्भा ।
 २१७ विप्रलम्भ (सम्) सं.—वियोग, विछोह ; प्रेमियों का वियोग ; शृंगार रस का भेद ; झगड़ा, विवाद ।
 २१७ विप्लव (सम्) सं.—उपद्रव, हंगामा, नाश, बरबादी ; विपत्ति ।
 २१७ विभक्ति (सम्) सं.—खण्ड, अंश ; व्याकरण में विभक्ति प्रत्यय ।
 २१७ विभजिसु (सम्) क्रि.—खण्ड कर, टुकड़े कर, विभाग कर ।
 २१७ विभाकर (सम्) सं.—सूर्य ।
 २१७ विभाग (सम्) सं.—विभाग, अंश, हिस्सा, खण्ड ।
 २१७ विभाषे (सम्) सं.—दूसरी भाषा ; विकल्प ।
 २१७ विभु (सम्) सं.—स्वामी, प्रभु, ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।
 २१७ विभूति (सम्) सं.—धन, संपत्ति, ऐश्वर्य ; राख, भस्म ।
 २१७ विमर्शक (सम्) सं.—आलोचक, समीक्षक ।
 २१७ विमलत्व (सम्) सं.—निर्मलता, शुद्धता ।
 २१७ विमुक्त (सम्) वि.—मुक्त, छटा हुआ, त्याग हुआ, त्यक्त ।
 २१७ विमुख (सम्) वि.—जिसने अपना मुख फेर लिया हो, अमनस्क ; विरुद्ध ।
 २१७ विमोचिसु (सम्) सं.—विमोचन, कर, बंधन से मुक्त कर, छुटकारा दे ।
 २१७ विचर (सम्) सं.—पक्षी ; बंदर ; गंधर्व ।
 २१७ वियुक्त, वियुत (सम्) वि.—अलग, पृथक, छोड़ा हुआ, रहित, हीना ।

२१७ वियोग (सम्) सं.—वियोग, विछोह, विरह ।
 २१७ विरक्ति (सम्) सं.—वैराग्य, उदासीनता, विमुखता ; अप्रसन्नता ।
 २१७ विरल, विरल (सम्) वि.—विरल, दुर्लभ ; थोड़ा, कम ।
 २१७ विरहि (सम्) सं.—वियोग सहनेवाला । पुरुष । २१७ विरहिणि—स्त्री. लिं. ।
 २१७ विराग (सम्) सं.—वैराग्य, उदासीनता, आकांक्षाहीनता ।
 २१७ विराम (सम्) सं.—रोकना, थामना ; अंत, समाप्ति ; ठहराव ; छंद में यति ; फुरसत ; अवकाश ।
 २१७ विरोचन (सम्) सं.—सूर्य ; चंद्रमा ; अनल, अग्नि ; बलि के पिता का नाम, एक राक्षस ; बालक ।
 २१७ विरोध (सम्) सं.—विपरीतभाव, शत्रुता, वै, झगड़ा, विवाद ।
 २१७ विलक्षण (सम्) वि.—अद्भुत, अनोखा ; लक्षणहीन ; भिन्न ।
 २१७ विलंबि (सम्) सं.—एक संवत्सर का नाम ।
 २१७ विलसित (सम्) वि.—चमकदार, प्रकाशमान, सुन्दर, मनोज्ञ ; प्रकट, प्रादुर्भूत ।
 २१७ विलाप (सम्) सं.—विलाप, रुदन, क्रंदन ।
 २१७ विलायति (अ. दे.) वि.—विलायती, विलयत से संबंधित ; विलायत ।
 २१७ विलास (सम्) सं.—क्रीड़ा ; खेल, अमोद-प्रमोद, आह्लाद, सुखभोग ; मनोरंजन ; हाव-भाव, नाज़-नखरा ; सौंदर्य ।
 २१७ विलीन (सम्) वि.—लगा हुआ, सटा हुआ, बैठा हुआ, ढूबा हुआ ; छिपा हुआ ।
 २१७ विलेपन (सम्) सं.—अंगराग, लेप, शरीर पर लगाने का सुगंध द्रव्य ।
 २१७ विलोकन (सम्) सं.—देखना, अवलोकन, चितवन ।
 २१७ विलोचन (सम्) सं.—आँख, नयन, नेत्र ; सूर्य ।

२१७ विलोम (सम्) सं.—विपरीत क्रम, उल्टी रीति ।
 २१७ विलोल (सम्) वि.—हिलने-डुलने-वाला, काँपनेवाला, चंचल ।
 २१७ विवक्षितु (सम्) क्रि.—कहने या बोलने की इच्छा रख ; इच्छा कर ।
 २१७ विवध (सम्) सं.—जुआठा ।
 २१७ विवरणे (सम्) सं.—विवरण, व्यौरा, प्रकटन, प्रकाशन ।
 २१७ विवर्णिसु (सम्) क्रि.—वर्णन कर, बखान कर ।
 २१७ विवाक (सम्) सं.—जज, न्यायाधीश ।
 २१७ विवाद (सम्) सं.—झगड़ा, कलह, प्रतिवाद ; मुकद्दमा ।
 २१७ विवाह (सम्) सं.—शादी, परिणय ।
 २१७ विविक्त (सम्) वि.—पृथक किया हुआ ; निर्जन, एकांत ; विवेकी ; पापरहित ; विशुद्ध ।
 २१७ विवेक (सम्) सं.—सत् असत् का ज्ञान, समझ, बुद्धि, सत्यज्ञान ।
 २१७ विवेचने (सम्) सं.—विवेक ; निर्णय, फैसला ।
 २१७ विशदीकरिसु (सम्) क्रि.—स्पष्ट कर, वर्णन कर, विस्तार कर ।
 २१७ विशाखे (सम्) सं.—विशाख नक्षत्र ।
 २१७ विशारद (सम्) वि.—बुद्धिमान, चतुर ; कुशल, निपुण, पंडित ।
 २१७ विशाल (सम्) वि.—बड़ा, महान्, लंबा-चौड़ा ; प्रशस्त ।
 २१७ विशीर्ण (सम्) वि.—टूटा-फूटा ; सड़ा हुआ ; मुरझाया हुआ ; गिरा हुआ, पतित ; झुर्रियाँ पड़ा हुआ ।
 २१७ विशुद्ध (सम्) वि.—साफ़, शुद्ध, पवित्र, पापरहित, ईमानदार ।
 २१७ विशेष (सम्) सं.—विशिष्टता, विलक्षणता ; वैचित्र्य ;
 २१७ विशेषण (सम्) सं.—व्याकरण में प्रयुक्त विशेषण ; अंतर, भेद ; किस्म, जाति ।
 २१७ विशेषते, विशेषत्व (सम्) सं.—दे. २१७.

विश्रमिसु विश्रमिसु (सम्) क्रि — आराम कर, विश्राम ले ।
 विश्रुत (सम्) वि.—प्रसिद्ध, प्रख्यात ।
 विश्लेष (सम्) सं. — अनैक्य, पार्थक्य ; वियोग. शोक ।
 विश्व (सम्) सं. — संसार, समस्त ब्रह्मांड ; विष्णु, शिव, परमात्मा ; गोपुर ; सोंठ ; तेरह की संख्या ; संस्कृत के एक कोश का नाम ।
 विश्वकर्म (सम्) सं. — विश्वकर्मा, देवताओं का शिल्प ; सूर्य ; ब्रह्मा ; शिव ; मंत्री ; नक्षत्र ; वायुत्रय ।
 विश्वसनीय (सम्) वि.—विश्वासपात्र ।
 विश्वस्ते (सम्) सं.—विधवा स्त्री ।
 विश्वास (सम्) सं.— प्रेम, प्रीति, स्नेह; विश्वास, उम्मीद ।
 विश्व (सम्) सं.—जहर, विष ; कडुवा पदार्थ ; जल, पानी ; मद, पागलपन ।
 विश्वम (सम्) वि.—असम, असमान, अनियमित, अव्यवस्थित ; बहुत कठिन ; रहस्यमय ; अप्रवेश्य ; उग्र, प्रचंड, भीषण ; बुरा, प्रतिकूल ; अजीब ; चालाक ।
 विश्वय (सम्) सं.—विषय ; वस्तु, पदार्थ ; लौकिक आनन्द, भोग ; इंद्रिय-गोचर वस्तु ; प्रियतम, पति ; वीर्य ; धार्मिक कृत्य ; स्थान, जगह ; देश, राज्य ।
 विश्वविषाण (सम्) सं.—शृंग, सींग ; जानवरों का नोंकदार दाँत ।
 विश्वर (सम्) सं. — आसन ; बैठक ; सिंहासन ; कुश ; वृक्ष ।
 विश्वविष्णु (सम्) सं.—परब्रह्म, भगवान्, नारायण ।—क्रांति (सम्) सं.—एक लता जिसके फूल नीले होते हैं ।
 विश्वसेन (सम्) सं.— विष्णु, कृष्ण ; एक राजा का नाम ।
 विश्ववाद (सम्) सं.—प्रतिज्ञाभङ्ग ; धोखा ; छल ।
 विश्ववर्जित, विश्ववर्जित (सम्)

सं.—परित्याग, त्याग, छोड़ना ; दान, भेंट ।
 विश्वर विस्तर. विश्वर विस्तर (सम्) सं.—
 विश्वर विस्तर (तद्) — विस्तर, फैलाव, व्याप्ति; बढ़ावा, वृद्धि ; विवरण, व्यौरा ।
 विश्वरिसु, विश्वरिसु (सम्) क्रि.—विस्तर कर, बढ़ा, विवरण दे. व्याख्या कर ।
 विश्वरिसु (सम्) क्रि. — चमक, प्रकाशित हो, कंपित हो ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—आश्चर्य ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — भूलना, विस्मरण ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—
 पक्षी, चिड़िया ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — प्रहार, चोट ; मारना ।
 विश्वरिसु (सम्) क्रि.—विहार कर, घूम । हटा, ले जा ; चहलकदमी कर ।
 विश्वरिसु (सम्) वि.—उचित, उपयुक्त, योग्य ; किया हुआ, बनाया हुआ ; अनु-
 स्मृत ।
 विश्वरिसु (सम्) वि. — रहित, हीन, बगैर, त्यक्त. त्यागा हुआ ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — विह्वलता, चिंता ।
 विश्वरिसु, विश्वरिसु (तद्) सं.—
 वीटि: (तद्) ; पान की बेल, पान ।
 विश्वरिसु (क) क्रि.—फेंक, दूर हटा ।
 विश्वरिसु (सम्) क्रि.—देख, अवलोकन कर, निहार ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. —
 दे. विश्वरिसु ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—वीणा ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — जितेन्द्रिय साधु ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — अग्नि, भाग ।

विश्वरिसु (सम्) सं.—
 श्रेणी, पंक्ति ; रास्ता, मार्ग ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—वीर, बहादुर, पराक्रमी पुरुष ।—गल्लु गल्लु=वीरों की यादगार में स्थापित शिला ।—ते, त्व (सम्) सं.—वीरता, पराक्रम ।
 विश्वरिसु (क) सं.—एक प्रकार का ढोल ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — लिंगायत, लिंगायत संप्रदाय ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—वीरता; पराक्रम ; शक्ति, सामर्थ्य ; साहस, स्फूर्ति ; पुंसत्व, जनन विशेष ।
 विश्वरिसु (क) वि.—१/८ मन, १/१६ भाग, परिमाण विशेष ।
 विश्वरिसु, विश्वरिसु, विश्वरिसु, विश्वरिसु (तद्) सं.—पान ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—फल या पत्र का डंडुल, वृंत ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—गण, समूह, समुदाय, ढेर ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — वृंदावन ; भूमि पर बनाया गया वह चौकोर स्थान जहाँ तुलसी का पौधा लगाया जाता है और रोज उसकी पूजा की जाती है ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—तुलसी का पौधा ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — भेड़िया ; सियार ; काक, कौआ ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—पेड़, पादप ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—वृत्त, वृत्त का व्यास, गोलाकार ; छंद ; चलन, पद्धति ; कर्तव्य ; अमृत ; शत्रु ; एक राक्षस का नाम ; अध-
 कार, तिमिर । वि.—चिरा हुआ, ढका हुआ ; गया हुआ, विगत ; दृढ़ ।
 विश्वरिसु (सम्) सं. — समाचार, खबर, रिपोर्ट ; किस्सा, कहानी, आख्यान ; ढंग, विधान, स्थिति ।
 विश्वरिसु (सम्) सं.—वृत्त या पहिये का घेरा ; धन्धा, पेशा, व्यवसाय ; जीविका,

रोज़ी, मज़दूरी; चालचलन, आचरण; वाक्य-रचना की शैली।
 सुत्रक वृत्रह सुत्रक वृत्रारि (सम्) सं.—इन्द्र।
 सुत्रक वृद्ध (सम्) वि.—बूढ़ा; बड़ा हुआ; बड़ा, लंबा।
 सुत्रक वृद्धि (सम्) सं.—बढ़ती, उन्नति; समृद्धि, आधिक्य; जाताशौच।
 सुत्रक वृश्चिक (सम्) सं.—बिच्छू; वृश्चिक राशि; मकर; केकड़ा।
 सुत्रक वृष (सम्) सं.—बैल, साँड; वृष राशि; किसी जाति या समुदाय में सर्वश्रेष्ठ; सत्कर्म, पुण्यकर्म; इन्द्र; जिन; मूसा; एक औषध विशेष।
 सुत्रक वृषांक (सम्) सं.—शिव।
 सुत्रक वृष्टि (सम्) सं.—वर्षा, बरसात।
 सुत्रक वृष्टिसु (म?) क्रि.—घिर जा; व्याप्त हो, टक जा।
 सुत्रक वेकस (क) सं.—रुक्षता, सुरसुरापन; कर्कशता, कठोरता, करुणाराहित्य, अप्रसन्न कारक।
 सुत्रक वेगल (क) अ.—अधिक, बहुत।
 सुत्रक वेगलिके (क) सं.—अधिक्य, समृद्धि।
 सुत्रक वेच (तद्) सं.—व्यय, खर्च।
 सुत्रक वेष्टे (क) अ.—गरम, उष्ण।
 सुत्रक वेग (सम्) सं.—गति, तेज़ी, रफ़तार; प्रवाह, बहाव; जल्दबाज़ी, शीघ्रता; प्रेम, अनुराग; शरीर में से मल, मूत्रादि के निकालने की प्रवृत्ति।
 सुत्रक वेणि, सुत्रक वेणी (सम्) सं.—वेणी, गुथी हुई चोटी; जलप्रवाह; एक नदी का नाम।
 सुत्रक वेणु (सम्) सं.—बाँस; नरकुल; सुरली, बाँसुरी।
 सुत्रक वेद (सम्) सं.—वेद, चारों वेद; ज्ञान; वेदांग; ब्रह्मा; सूर्य।
 सुत्रक वेदने (सम्) सं.—वेदना, पीड़ा, दुःख।

सुत्रक वेदिके (सम्) सं.—वेदिका, चबूतरा, बैठकी।
 सुत्रक वेम (सम्) सं.—करघा।
 सुत्रक वेश (सम्) सं.—घर, निवास; वेश, पोशाक; वेष्टालय।
 सुत्रक वेश्म (सम्) सं.—घर, भवन।
 सुत्रक वेष्ट्री, सुत्रक वेष्ट्री (सम्) सं.—रंडी, चारांगना।
 सुत्रक वेष (सम्) सं.—वेश, पोशाक; अलंकार, सजावट; कपट, छल, धोखा।
 सुत्रक वेष्टित (सम्) वि.—चारों ओर से घिरा हुआ, अवरुद्ध।
 सुत्रक वेळे (तद्) सं.—वेला, समय।
 सुत्रक वैकल्य (सम्) सं.—बिकलता, घबड़ाहट; त्रुटि, न्यूनता, दोष।
 सुत्रक वैकुण्ठ (सम्) सं.—विष्णु का नाम; विष्णुलोक; इन्द्र।—यात्रे यात्रे (सम्) सं.—मृत्यु, मरण।
 सुत्रक वैखरि (सम्) सं.—वाक्शक्ति, ढंग, विधान, शैली।
 सुत्रक वैचित्र्य (सम्) सं.—विचित्रता, विलक्षणता, अनोखापन।
 सुत्रक वैजयंति (सम्) सं.—शंढा, पताका; मोतियों का हार।
 सुत्रक वैज्ञानिक (सम्) वि.—चतुर, निपुण।
 सुत्रक वैदूर्य (सम्) सं.—एक रत्न विशेष।
 सुत्रक वैतरणि (सम्) सं.—नरक की एक नदी का नाम।
 सुत्रक वैदर्भि (सम्) सं.—दमयंती; रुक्मिणी; काव्य की एक शैली।
 सुत्रक वैदिक (सम्) वि.—वेद संबंधी, वेद से निकला हुआ, वेदोक्त।
 सुत्रक वैदिक (सम्) सं.—श्राद्ध, श्राद्ध दिन।
 सुत्रक वैद्य (सम्) सं.—वैद्य, चिकित्सक, डाक्टर।
 सुत्रक वैनेतेय (सम्) सं.—गरुड।
 सुत्रक वैभव (सम्) सं.—संपत्ति, विभव, ऐश्वर्य; महिमा, महारव, बड़प्पन।

सुत्रक वैमनस्य (सम्) सं.—अनबन; उदासीनता; शोक, व्याकुलता।
 सुत्रक वैर (सम्) सं.—बीरता; शत्रुता, वैर; वैरी, शत्रु।
 सुत्रक वैरागि (सम्) सं.—वैरागी, वीतरागी।
 सुत्रक वैरि (सम्) सं.—अरि, शत्रु।
 सुत्रक वैवर्ण्य (सम्) सं.—विवर्णता, एक सात्विक अनुभाव, पीलापन।
 सुत्रक वैशाख (सम्) सं.—वैशाख मास।
 सुत्रक वैश्य (सम्) सं.—तृतीय वर्ण का मनुष्य।
 सुत्रक वैष्णव (सम्) वि.—विष्णु से संबंधित। सं.—विष्णुभक्त।
 सुत्रक वैष्णव (क) अ.—की तरह, की भाँति, के समान, के जैसे।
 सुत्रक वैष्णव (क) अ.—दे. वैष्णव।
 सुत्रक वैश्या (सम्) सं.—परिहास, मज़ाक, ताना, उलाहना, चुटकी।
 सुत्रक वैजक (सम्) वि.—प्रकट करने वाला।
 सुत्रक वैजन (सम्) सं.—व्यंजन वर्ण; हाव-भाव; संकेत, चिह्न, निशान; पायस; मूँछ, दाढ़ी; मासाला; चटनी आदि।
 सुत्रक वैक्त (सम्) वि.—प्रकटित, स्पष्ट, प्रादुर्भूत, साफ़, वर्णित।
 सुत्रक वैक्ति (सम्) सं.—मनुष्य, आदमी; व्यष्टि।
 सुत्रक वैग्रते (सम्) सं.—व्यग्रता, व्याकुलता, परेशानी।
 सुत्रक वैतिक्रम (सम्) सं.—क्रमानुसार उलट-फेर या विपर्यय; दुर्भाग्य, बदकिस्मत।
 सुत्रक वैतिरेक (सम्) सं.—भेद, भिन्नता, अंतर; एक अलंकार विशेष।
 सुत्रक वैतीत (सम्) वि.—गया हुआ, विगत, वीता हुआ।
 सुत्रक वैत्यास (सम्) सं.—अंतर, भेद, फ़रक; विरोध, वैपरीत्य।

व्यंघ्रि व्यथे (सम्) सं.—व्यथा, दुःख; चिंता, विकलता ।
 व्यंघ्रिष्ठा व्यभिचार (सम्) सं.—व्यभिचार, बदचलनी ।
 व्यंघ्रिय व्यय (सम्) सं.—व्यय, खर्च; एक संवरसर का नाम ।
 व्यंघ्रि व्यर्थ (सम्) वि.—निरर्थक, बेकार, अर्थरहित ।
 व्यंघ्रि व्यथलन व्यवकलन (सम्) सं.—विच्छेद, अंकगणित में घटने की क्रिया ।
 व्यंघ्रि व्यथान व्यवधान (सम्) सं.—बीच में पड़नेवाली वस्तु, पर्दा, आवरण; दीवाल; रुकावट; अवकाश, स्थान ।
 व्यंघ्रि व्यथा व्यवसाय (सम्) सं.—कृषि, किसानी; उद्योग, धंधा, उद्यम । — गार = किसान, कृषक ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यवस्थे (सम्) सं.—व्यवस्था, प्रबंध इतजाम ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यवहरिसु (सम्) क्रि.—व्यवहार कर; उपयोग कर ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यवहार (सम्) सं.—व्यवहार, व्योहार; आचरण, चालचलन ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यसन (सम्) सं.—दुःख, पीड़ा; प्रक्षेप; वियोग; विच्छेद ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यस्त (सम्) वि.—पृथक क्रिया हुआ; विकीर्ण, बिखरा हुआ; विकल, गड़बड़, अस्तव्यस्त, विपरीत, उलटा-पलटा ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याकरण (सम्) सं.—व्याकरण ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याकुलते (सम्) सं.—व्याकुलता, विकलता, दुःख, चिंता ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याख्यान (सम्) सं.—निरूपण, भाषण, व्याख्या ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याख्ये (सम्) सं.—निरूपण, व्याख्या, टीका ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याघ्र (सम्) सं.—बाघ; एक असुर का नाम ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याज (सम्) सं.—कपट, छल, फरेब; बहाना, भिस; कारण ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याज्य (सम्) सं.—कलह, झगड़ा, मुकद्दमा ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याधि (सम्) सं.—रोग, बीमारी ।

व्यंघ्रि व्यथे व्यापक (सम्) वि.—व्याप्त, फैला हुआ ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यापार (सम्) सं.—व्यापार, सौदागरी । — गार = व्यापारी, सौदागर ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यास (सम्) वि.—फैला हुआ, भरा हुआ, परिपूर्ण ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यायाम (सम्) सं.—कसरत; थकावट, श्रान्ति ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्याल (सम्) सं.—सर्प, साँप; हिंस्र जन्तु; क्रूर, कपटी, धोखेबाज़ ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यालोल (सम्) वि.—काँपने वाला, थरथरानेवाला; अस्तव्यस्त ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यास (सम्) सं.—वाँट, वितरण, विभाग, विश्लेषण; विस्तार; अंतर, भेद; चौड़ाई; वृत्त का व्यास या घेरा; महर्षि व्यास ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्युत्पत्ति (सम्) सं.—निकास, उत्पत्ति, शब्दसाधन-विधा ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्यूह (सम्) सं.—समुदाय, समूह, भीड़, सेना ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्योम (सम्) सं.—आकाश, गगन; वातावरण; शून्य ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्रज (सम्) सं.—समूह, समुदाय; पशुशाला ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्रण (सम्) सं.—घाव, क्षत, चोट ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्रत (सम्) सं.—व्रत, उपवासादि नियम; आराधना, भक्ति; प्रतिज्ञा; कर्म, अनुष्ठान, कार्य ।
 व्यंघ्रि व्यथे व्रीडे (सम्) सं.—व्रीड़ा, लज्जा, शर्म ।

४ श

४ श—कन्नड-वर्णमाला का पैंतालिसवाँ अक्षर ।
 ४००० शंकर (सम्) सं.—शिवजी । — ७७००००
 ४००००० आचार्य (सम्) सं.—प्रसिद्ध दार्शनिक शंकराचार्य ।
 ४०००००० शंकिस् (सम्) क्रि.—सन्देह कर, शंका कर; अविश्वास कर; भय-भीत हो ।
 ४००००००० शंकु (सम्) सं.—तीर, बाण; भाला;

बरछा; मेख, कील; खूटा; खंभा; कटे हुए वृक्ष का तना; वड़ी की सुई; बारह अंगुल का माप; छिद्र, छेद; नाश, लय; संकीर्णता; एक प्रकार की मछली; साल वृक्ष; पत्तों की नसें; बाँबी ।
 ४००००००० शंकुस्थापने (सम्) सं.—शिला-न्याम, नींव डालना ।
 ४०००००००० शंके (सम्) सं.—शंका, संदेह, आशंका, डर ।
 ४००००००००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, दुस खर्व की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।
 ४०००००००००० शंढ, शंढ (सम्) सं.—नपुंसक पुरुष, हिजड़ा; कापुर; भीरु ।
 ४००००००००००० शंसे (सम्) सं.—प्रशंसा; इच्छा, अभिलाषा; पुनरावृत्ति, वर्णन ।
 ४०००००००००००० शक (सम्) सं.—एक प्राचीन राजा का नाम; एक देश और उसके निवासी, शाली-वाहन का चलाया शक ।
 ४००००००००००००० शकट (सम्) सं.—गाड़ी, छकड़ी ।
 ४०००००००००००००० शकुन (सम्) सं.—सगुन, शकुन; एक पक्षी ।
 ४०००००००००००००० शक्ति (सम्) सं.—बल, पराक्रम, ताकत, सामर्थ्य ।
 ४००००००००००००००० शक्र (सम्) सं.—इन्द्र; विष्णु; यम; कुटजवृक्ष; अर्जुन वृक्ष; पर्णशाला; एक प्रकार की जुही ।
 ४००००००००००००००० शचि (सम्) सं.—इन्द्र की पत्नी का नाम ।
 ४०००००००००००००००० शट (सम्) सं.—दुष्ट, गुंडा, बदमाश; धूर्त; मूर्खता, बेवकूफी ।
 ४०००००००००००००००००० शत (सम्) सं.—एक सौ; — ४००० पत्र (सम्) सं.—कमल; सेवतिका पुष्प; कठफोडवा पक्षी; सारस; मोर; तोता; मैना ।
 ४०००००००००००००००००००० शतमान (सम्) सं.—एक सौ वर्ष की परिमिति, शताब्दी ।
 ४०००००००००००००००००००००० शतानंद (सम्) सं.—ब्रह्मा, गौतम के पुत्र और जनक के पुरोहित का नाम ।

४३७) शत्रु (सम्) सं.— शत्रु और दुश्मन ।
 ४३८) शनि (सम्) सं.— शनिग्रह ; दुष्ट मनुष्य ।
 ४३९) शपथ (सम्) सं.— शपथ, कसम ।
 ४४०) शबर (सम्) सं.— एक पहाड़ी जाति, किरात; लुब्धक ; एक प्रकार का हिरन, शिवजी ; जीव ; एक राक्षस ; जल, पानी ; हिम ; मेघ ।
 ४४१) शब्द (सम्) सं.— शब्द, पद ; ध्वनि, आवाज़ ।
 ४४२) शम, ४४३) शमे (सम्) सं.— शम, शांति, मानसिक शांति, इंद्रिय शमन ।
 ४४४) शय (सम्) सं.— निद्रा, नींद ; सेज ; खाट ; हाथ ।
 ४४५) शयन (सम्) सं.— निद्रा, नींद ; सेज, शय्या ; खाट ; स्त्री-संभोग ।
 ४४६) शयु (सम्) सं.— अजगर, बड़ा सर्प ।
 ४४७) शय्ये (सम्) सं.— शय्या, सेज ।
 ४४८) शर (सम्) सं.— बाण, तीर ; एक प्रकार का नरकुल या सरपत ; मलाई ; पाँच की संख्या ; सरोवर, तालाब ; जल, पानी ; ध्वनि, आवाज़ ।
 ४४९) शरण (सम्) सं.— रक्षा, आश्रयस्थान ; आश्रयदाता, शरण देनेवाला ; घर ; कमरा, कोठरी ; शिव-भक्त ; लिंगायत ।
 ४५०) शरणु (तद्) सं.— दे. ४४९.
 ४५१) शरत्काल, ४५२) शरदु (सम्) सं.— आश्विन और कार्तिक मास, शरद ऋतु ।
 ४५३) शरधर (सम्) सं.— मेघ, बादल ।
 ४५४) शरधि (सम्) सं.— समुद्र ; चार की संख्या ; नदी ; कानन, अरण्य ; तरकस ।
 ४५५) शरभ (सम्) सं.— शरभ, आठ पैरों-वाला एक जंतु विशेष ; हाथी का बच्चा ; शिवजी का एक अवतार ; चीरभद्र ।
 ४५६) शरीर (सम्) सं.— देह, काया, गात्र, तनु ।
 ४५७) शरे (क) सं.— पुंज, समूह, राशि ।
 ४५८) शर्करे (सम्) सं.— मिश्री ; चीनी,

शकर ; बालू का कण, बालू, रेत ; खण्ड, टुकड़ा ; पथरी का रोग ।
 ४५९) शर्मा (सम्) सं.— यह शब्द ब्रह्मणों के नामों के साथ लगाता है, शर्मा ; आनंद, हर्ष ; आशीर्वाद ; घर ; आधार ।
 ४६०) शर्वरि (सम्) सं.— रात, रात्रि, निशा ।
 ४६१) शर्वाणि (सम्) सं.— पार्वती ।
 ४६२) शलाके (सम्) सं.— शलाका, लोहे की सलाई ; तीर ; बछीं ।
 ४६३) शल्य (सम्) सं.— शलाका ; कंटीली झाड़ी ; नोंकदार अन्न, बाण ; टुकड़ा, खण्ड ; कृशांग ; बाढ़, सीमा ; पानी, जल ; मद्र-देश के राजा का नाम ; कष्ट ; तकलीफ ; कठिनाई ।
 ४६४) शव (सम्) सं.— मुद्रा, लाश ।
 ४६५) शश, ४६६) शशक (सम्) सं.— खरगोश ।
 ४६७) शशि (सम्) सं.— चंद्रमा ; एक की संख्या ; कपूर ।— ४६७) शेखर, (सम्) सं.— चन्द्रशेखर, शिवजी ।
 ४६८) शस्त्र (सम्) सं.— इथियार, औजार, तलवार, चाकू आदि ।
 ४६९) शस्य, ४७०) सस्य (सम्) सं.— अनाज ; किसी वृक्ष की उपज या फल ।
 ४७१) शांलिल्य (सम्) सं.— एक मुनि का नाम ; विल्व वृक्ष ।
 ४७२) शांत, (सम्) वि.— शमयुक्त, शांत, शांतिवाला ; शिथिल, ढीला ।
 ४७३) शांति (सम्) सं.— शांति, स्थिरता, वेगादि का अभाव, नीरवता ; चैन, आराम ; समाप्ति, अवसान ; विरक्ति ; शांत करना ; सौभाग्य, शुभत्व ; बचाव ।
 ४७४) शांभवि (सम्) सं.— पार्वती ।
 ४७५) शाक (सम्) सं.— तरकारी, भाजी, पत्ती, फूल आदि, शाकाहार ।
 ४७६) शाक्त, ४७७) शाक्त्य (सम्) सं.— शक्तिपूजक, वामाचारी ।
 ४७८) शाखामृग (सम्) सं.— बंदर ।
 ४७९) शाखे (सम्) सं.— शाखा, डाली ; विभाग ; किसी पुस्तक, संप्रदाय आदि का

भेद ; बाजू ; बाईं ; वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रमभेद ।
 ४७९) शाण (सम्) सं.— कसौटी का पत्थर, सान रखनेवाला पत्थर ; आरा ।
 ४८०) शाद्वल (सम्) सं.— नव तृण संकुल, हरियाली ।
 ४८१) शानभोग, ४८२) शानुभोग (सम्) सं.— गाँव का पटवारी !
 ४८३) शाने (क) अ.— बहुत, अधिक ।
 ४८४) शाप (सम्) सं.— श्राप, शाप ; अकौसा ; शपथ ; गाली, भर्त्सना ।
 ४८५) शबासु, ४८६) शाबासु (अ. दे.) अ.— शाभाश ।
 ४८७) शाब्दिक (सम्) सं.— वैयाकरण ; शब्दशास्त्र ।
 ४८८) शायि (अ. दे.) सं.— स्याही, मसी (Ink) ।
 ४८९) शारदे (सम्) सं.— सरस्वती ; बुद्धि, सुबुद्धि ; सार, निचोड़ ; ऋतु ; मौसम ।
 ४९०) शार्दूल (सम्) सं.— बाघ, व्याघ्र ; (समास के अंत में) उत्तम, सर्वश्रेष्ठ ; एक छंद का नाम ; एक राक्षस का नाम ।
 ४९१) शार्वरि (सम्) सं.— निशा, रात ।
 ४९२) शाल (सम्) सं.— साल वृक्ष ; कोई भी वृक्ष ; घेरा, हाता, प्राकार ; शक्ति, सामर्थ्य ; मछली विशेष । वि.— बड़ा, विशाल ।
 ४९३) शालग्राम (सम्) सं.— गंडकी नदी में मिलनेवाला गोलाकार पत्थर जिसकी विष्णु के रूप में पूजा की जाती है ।
 ४९४) शालभंजिके (सम्) सं.— गुडिया, पुतली ; रंडी वेद्या ; एक खेल ।
 ४९५) शालु (अ. दे.) सं.— शाल ; ऊनी शाल ।
 ४९६) शाले (सम्) सं.— शाला ; कमरा, बड़ा कमरा ; पाठशाला, स्कूल ; वृक्ष की ऊपर की डाली या वृक्ष का तना (तद्) सं.— साड़ी ।

शब्दों का विवेक (तद्) सं.—सर्वई ।
 शब्दों का शासन (सम्) सं.—आज्ञा ; आदेश ;
 पट्टा, टीप ; शास्त्र ; शिलालेख ; राजा की
 दान की हुई भूमि ।
 शब्दों का शास्त्र (सम्) सं.— आदेश, आज्ञा,
 धर्माज्ञा, धर्मशास्त्र, धर्मग्रंथ ; पुस्तक ; किसी
 विशिष्टविषय का समस्त, क्रमिक ज्ञान ।
 शब्दों का शिञ्जिनि (सम्) सं.—पायजेब ; धनुष
 का रोदा ।
 शब्दों का शिरोप, शब्दों का शिशुपे (सम्) सं.—
 शीशम का पेड़ ; अशोकवृक्ष ।
 शब्दों का शिखिसु (सम्) क्रि.—दंड दे, सजा
 दे ; नियन्त्रण में रख ।
 शब्दों का शिक्षे (सम्) सं.—शिक्षा, ज्ञान, विद्या ;
 शिक्षण ; वेदांगों में से एक ; सजा, दंड ।
 शब्दों का शिखंडि (सम्) सं.— मोर, मयूर ;
 एक प्रकार का सर्प ; द्रुपद के एक पुत्र का
 नाम ; बलीब, नपुंसक ।
 शब्दों का शिखि (सम्) सं.—मोर, मयूर ; अग्नि ;
 तीन की संख्या ; केतु उपग्रह ; वृक्ष का
 अग्र भाग ; सिर ; चोटी ; विप्र, ब्राह्मण ;
 कृष्णसर्प ; वृक्ष ; ताम्र, ताँबा ; चित्रक का
 वृक्ष ।
 शब्दों का शिखे (सम्) सं.—शिखा, सिर की चोटी ;
 शिखर, शृंग ; लौ, किरण ; कामज्वर ;
 शाखा, टहनी, डाली ।
 शब्दों का शिथिल (सम्) वि.—शिथिल, ढीला ;
 निर्बल, कमजोर ।
 शब्दों का शिर (सम्) सं.—सिर ; वृक्ष की फुनगी ;
 सर्वोच्च स्थान ; बड़ा सर्प ।
 शब्दों का शिरत्तेदार, शब्दों का शिरस्दार (अ.
 दे.) सं.—जिलाधिकारी या न्यायाधीश के
 नीचे रहनेवाला एक अफसर ।
 शब्दों का शिरख, शब्दों का शिरखाण (सम्) सं.—
 कूँडा, लोहे की टोपी ।
 शब्दों का शिलाशासन (सम्) सं.—शिला-
 लेख ।
 शब्दों का शिलासार (सम्) सं.—लोहा ।

शब्दों का शिलीध्र (सम्) सं.— कुकरमुत्ता ;
 एक वृक्ष ; बाण ।
 शब्दों का शिलीमुख (सम्) सं.— बाण,
 तीर ।
 शब्दों का शिले (सम्) सं.—शिला, पत्थर, चट्टान ।
 शब्दों का शिल्प (सम्) सं.—शिल्प, कला, दस्त-
 कारी, कारीगरी ।
 शब्दों का शिवशरण (सम्) सं.—शिवभक्त—
 जंगम या लिंगायत ।
 शब्दों का शिवाचार (सम्) सं.—शैवों का
 आचार (वीरशैवों का आचार) । — ढंड
 द्वय = लिंगायत ।
 शब्दों का शिवे (सम्) सं.—दुर्गा, पार्वती ; गीदड़ी ;
 शमीवृक्ष ; हल्दी ; दूर्वा ; गौरौचन ।
 शब्दों का शिशिर (सम्) वि.—ठंडा, शीतल । सं.—
 शिशिर ऋतु ।
 शब्दों का शिशु (सम्) सं.—बच्चा, बालक । —
 शिशु विहार (सम्) सं.—छोटे बच्चों
 का स्कूल (Nursery School) ।
 शब्दों का शिश्रूषे (तद्) सं.—सेवा-शुश्रूषा ।
 शब्दों का शिष्ट (सम्) वि.— शिक्षित, शालीन ;
 बुद्धिमान, विद्यार्थी ।
 शब्दों का शिष्य (सम्) सं.—शिष्य, अन्तर्वासी,
 विद्यार्थी ।
 शब्दों का शिस्तु (अ. दे. ?) सं.—कर, लगान ;
 क्रमिकता, सजावट ; अनुशासन ।
 शब्दों का शीघ्र (सम्) अ.— जल्दी, वेग से,
 तुरंत ।
 शब्दों का शीत (सम्) सं.—ठण्डक, सर्दी । वि.—
 ठण्डा, (शीतल) ।
 शब्दों का शीतल (सम्) वि.— ठंडा, सर्द ।
 शब्दों का शीतले (सम्) सं.— शीतला रोग ;
 चेचक ।
 शब्दों का शीर्ष (सम्) सं.—सिर ।
 शब्दों का शील (सम्) सं.—चालचलन, आचरण,
 सच्चा स्वभाव ; सदाचार । — ढंड वन्त
 (सम्) सं.—चरित्रवान् पुरुष ।
 शब्दों का शुंठ, शब्दों का शुककाय (सम्) सं.—
 मूख, बेवकूफ ।

शब्दों का शुंठि (सम्) सं.—सोंठ ।
 शब्दों का शुंड (सम्) सं.—हाथी की सूँड ; मेंढक ।
 शब्दों का शुभ (सम्) सं.—एक राक्षस का नाम,
 मूर्ख मनुष्य ।
 शब्दों का शुक्र (सम्) सं.—तोता ; आम का पेड़ ;
 शालमली वृक्ष ; सिरिस का पेड़ ; एक
 प्रकार सुगंध द्रव्य ; वस्त्र ; आंचल ; शुक्र
 देव ; शिवजी ।
 शब्दों का शुक्त (सम्) सं.—मांस ; काँजी ; एक
 प्रकार का खट्टा पेय ।
 शब्दों का शुक्ति (सम्) सं.—सीप ; शंख ; घोड़ा ;
 सुगन्ध द्रव्य विशेष ; घोड़े की गर्दन या
 छाती की भौरी ।
 शब्दों का शुक्र (सम्) सं.—शुक्रग्रह ; शुक्राचार्य ;
 ज्येष्ठ मास ; वीर्य ।
 शब्दों का शुक्ल (सम्) वि.—सफ़ेद, स्वच्छ । सं.—
 शुक्लपक्ष ; एक संवत्सर का नाम ; रेतस् ;
 आँख ; नेत्ररोग विशेष ।
 शब्दों का शुचि (सम्) वि.—साफ़, शुद्ध, स्वच्छ,
 पवित्र ; निष्कपट, सच्चा ; ठीक । सं.—
 विशुद्धता, निर्दोषता ; ईमानदार मन्त्री या
 मित्र ; ब्राह्मण ; योगी, यति ; अग्नि ; अमृत ;
 काष्ठ ; आपाढमास ; प्रमुख, प्रधान ।
 शब्दों का शुद्धते (सम्) सं.—शुद्धता, सफ़ाई ;
 निर्मलता, पवित्रता ।
 शब्दों का शुनक (सम्) सं.—कुत्ता ।
 शब्दों का शुनासीर (सम्) सं.—इन्द्र ।
 शब्दों का शुभ (सम्) वि.—शुभ, मंगलकर ; चम-
 कीला, सुंदर ; सुखी, भाग्यवान् । सं.—
 कल्याण, मंगल, सौभाग्य, प्रसन्नता ; समृद्धि ;
 पराक्रम ; राजतिलक ; काँटेदार वृक्ष ; आभू-
 षण ।
 शब्दों का शुभ्रते (सम्) सं.—सफ़ेदी, स्वच्छता ।
 शब्दों का शुल्क (सम्) सं.—कर ; चुंगी ; मूल्य ;
 कन्याशुल्क ; विवाह के समय की भेंट ;
 लाभ, मुनाफ़ा ।
 शब्दों का शुल्के (सम्) सं.—रस्सी ।
 शब्दों का शुश्रूषे (सम्) सं.—शुश्रूषा, सेवा,
 कर्तव्य-परायणता ।

शुष्क (सम्) वि.—रूखा, सूखा; कट्ट; बुरा; निकम्मा कृश, दुबला ।

शुष्क (सम्) सं.—जवा की वाल, भुट्टा ।

शुष्कर (सम्) सं.—सुखर ।

शुष्क (सम्) सं.—चतुर्थ वर्णवाला ।

शून्य (सम्) वि.—रीता, खाली; नग्न, सुना । सं.—खाली स्थान; शून्य; आकाश; विंदी; अभाव ।

शूर (सम्) सं.—वीर, योद्धा, वहादुर पुरुष ।

शूर्प (सम्) सं.—सूप; दो द्रोण की एक तौल ।—कर्म (सम्) सं.—हाथी; गणेश ।—कारि (सम्) सं.—मन्मथ ।

शूल (सम्) सं.—शूल; सूली; मरण, मृत्यु ।

शूल (सम्) सं.—शूल, वेड़ी, जंजीर ।

शृंग (सम्) सं.—सींग; शिखर, चोटी; सींग बाजा; ऊँचाई, महानता; प्रभु, प्रधान; वृक्ष; एक ऋषि का नाम ।

शृंगार (सम्) सं.—चतुष्पथ, चौराहा ।

शृंगार (सम्) सं.—शृंगार रस, प्रेम, रसिकता; स्त्रीसंभोग; सजावट, अलंकार ।

शृंगाल (सम्) सं.—सियार, लोमड़ी ।

शोकदार (स. दे.) सं.—कर वसूल करनेवाला एक अफसर ।

शोमुपि (सम्) सं.—बुद्धि, समझ-दारी ।

शोप (सम्) सं.—शोप, बचा हुआ बंस या पदार्थ ।

शैत्य (सम्) सं.—ठंडक, सर्दी, शीतलता ।

शैल (सम्) सं.—पर्वत, पहाड़ ।

शैवाल (सम्) सं.—सिवार, काई ।

शोबेरि (क) सं.—सुस्त या आलसी मनुष्य ।

शोक (सम्) सं.—शोक, सन्ताप; दुःख ।

शोण (सम्) सं.—लाल रंग; लाल गन्ना; भाग; एक नदी ।

शोणित (सम्) सं.—रक्त, खून; केसर ।

शोधने (सम्) सं.—शोध, खोज, ढूँढना; छान-बीन, जाँच; शुद्ध करना, ठीक करना; सुधार ।

शोभन (सम्) सं.—संगलकार्य; विवाह के बाद प्रथम समागम; सौंदर्य, आभा; चमक ।

शोभे (सम्) सं.—शोभा, कांति; सौंदर्य, मनोज्ञता ।

शोषण (सम्) सं.—सोखना; चूसना; निघोटना; सुरझाना, कुहलाना ।

शौच (सम्) वि.—शराबी, मद्यप. नशे में चूर ।

शौचि (सम्) सं.—पीपल ।

शौच (सम्) सं.—शुचिता, सफाई; मलत्याग ।

शौर्य (सम्) सं.—शूरता, पराक्रम, बल, ताकत ।

शमन (सम्) सं.—मसान, स्मशान ।

श्यामुष्ण (सम्) सं.—दे-घान्शुष्क ।

श्यामल (सम्) वि.—काला, साँवला ।

श्यामे (सम्) सं.—रात, रात्रि ।

श्येन (सम्) सं.—वाजपक्षी; सफेद रंग ।

श्रद्धे (सम्) सं.—श्रद्धा, पूज्यभाव; विश्वास ।

श्रम (सम्) सं.—तकलीफ, कष्ट; संताप; श्रान्ति, थकावट । मेहनत, उद्योग; कसरत, अभ्यास ।

श्रमण (सम्) सं.—बौद्ध या जैन संन्यासी ।

श्रवण (सम्) सं.—सुनना; कान; कर्ण; नक्षत्र विशेष ।

श्रान्त (सम्) वि.—थका-मौंदा; शान्त ।

श्रान्ति (सम्) सं.—थकावट ।

श्राद्ध (सम्) सं.—श्रद्धा से किया जाने-वाला कार्य, श्राद्धकर्म ।

श्रावक (सम्) सं.—सुननेवाला, श्रोता; शिष्य; जैनियों का एक वर्ग विशेष ।

श्रितलेखे (सम्) सं.—पुस्तक ।

श्री (सम्) सं.—धन, सम्पत्ति, समृद्धि; राजसी सम्पत्ति; गौरव; सौंदर्य; लक्ष्मी-धनलक्ष्मी; कोई गुण या सत्कर्म; अलौकिक शक्ति; अलंकार, भूषण; बुद्धि, प्रतिभा; बेल का पेड़; सरल वृक्ष; लवंग; एक प्रकार की चींटी; एक राग का नाम; छन्दविशेष का नाम ।

श्रीगंध (सम्) सं.—चन्दन वृक्ष ।

श्रीगिरि, श्रीपर्वत (सम्) सं.—तिरुपति के पहाड़ ।

श्रीमंत (सम्) सं.—धनी, धनवान ।

श्रीवत्स (सम्) सं.—विष्णु के वक्षस्थल का चिह्न विशेष ।—श्रीलंछन = विष्णु ।

श्रीवैष्णव (सम्) सं.—श्रीरामानुज-सम्प्रदाय के अनुनाथी लोग ।

श्रुतकीर्ति (सम्) सं.—एक जैन मुनि का नाम । वि.—प्रसिद्ध ।

श्रुति (सम्) सं.—सुनने की क्रिया; कान; अफवाह; वेद; ध्वनि, आवाज़ ।

श्रुति (सम्) सं.—संगीत में श्रुति ।

श्रेणि (सम्) सं.—पंक्ति, रेखा, श्रेणी; समूह, समुदाय ।

श्रेयस्सु (तद्) सं.—श्रेय, सौभाग्य, वृद्धि, भलाई ।

श्रेष्ठ (सम्) सं.—श्रेष्ठता, उत्कृष्टता, उत्तमता ।

श्रीगणेश (सम्) सं.—कटि, कमर; जघन, नितम्ब ।

ॐ श्रौत्र (सम्) सं.—कान; हाथी की सूँड का अग्रभाग ।

ॐ श्रुथ (सम्) वि.—शिथिल, ढीला ।

ॐ श्लाघ (सम्) सं.—श्लाघा, प्रशंसा, सराहना ।

ॐ श्लेष्म (सम्) सं.—कफ, बलगम् ।

ॐ श्लोक (सम्) सं.—प्रशंसा, सराहना, स्तुति; कीर्ति, यश, श्लोक, पद्य, कोई छंद ।

ॐ श्वपच (सम्) सं.—चाण्डाल, निम्न जाति का भादमी ।

ॐ श्वश्रु (सम्) सं.—सास ।

ॐ श्वान (सम्) सं.—कुत्ता ।

ॐ श्वास (सम्) सं.—साँस; आह; इवा, दमा ।

ॐ श्वेत (सम्) वि.—सफेद। सं.—सफेद रंग; चाँदी; शंख; कौड़ी; शुक्रग्रह; सफेद जीरा सफेद बादल; एक पर्वतमाला का नाम; ब्रह्माण्ड का एक भाग ।

ष

ॐ ष-कन्नड-वर्णमाला का छियालीसवाँ अक्षर ।
ॐ षंड (सम्) सं.—समूह, समुदाय; ढेर; नपुंसक; हिंजडा ।

ॐ षंड (सम्) सं.—हिंजडा, नपुंसक, कापुरुष ।

ॐ षट् (सम्) वि.—छः की संख्या ।

ॐ षट्पदि (सम्) सं.—भौरी, भ्रमरी; कन्नड का एक छन्द ।

ॐ षट्स्थल (सम्) सं.—वीरशैव संप्रदाय के अनुसार छे स्थल; वे हैं—भक्ति, महेश्वर, प्रसाद, प्राणलिंग, शरण और ऐक्य ।

ॐ षट्स (सम्) सं.—छे प्रकार के रस या स्वाद (मीठा, नमकीन कड़ुआ, तीता, कसैला और खट्टा) ।

ॐ षण्मुख (सम्) सं.—कार्तिकेय ।

ॐ षरबत् (अ. दे.) सं.—शरबत ।

ॐ षरायि (अ. दे.) सं.—पायजामा ।

ॐ षष्ठी (सम्) सं.—षष्ठी तिथि ।

ॐ षोकि (अ. दे.) सं.—(शौक—अरबी) विलासिता ।

स

ॐ स-कन्नड-वर्णमाला का सैंतालिसवाँ अक्षर ।

ॐ स (सम्) अ.—सम, तुल्य, सदृश्य, सह, साथ ।

ॐ संक (क) सं.—सेतु, पुल ।

ॐ संकट (सम्) सं.—तकलीफ, कष्ट, आपदा, संकट ।

ॐ संकर (सम्) सं.—वर्णों की गड़बड़ी, वर्णों की असमानता; मिश्रण, मिलावट; संयोग ।

ॐ संकलन (सम्) सं.—संकलन, एकत्रीकरण ।

ॐ संकले (सम्) सं.—श्रृंखला (तत्); जंजीर, बेड़ी ।

ॐ संकल्प (सम्) सं.—संकल्प, कार्य करने की इच्छा, इरादा, विचार ।

ॐ संकीर्ण (सम्) वि.—तंग, सँकरा, संकुचित; मिला हुआ, मिश्रित; बिखरा हुआ, अस्पष्ट; मदमस्त ।

ॐ संकीर्तने (सम्) सं.—प्रशंसा, स्तव, स्तुति ।

ॐ संकुल (सम्) सं.—भीड़भाड़, जनसमुदाय, झुंड ।

ॐ संकेत (सम्) सं.—संकेत, चिह्न, निशान; निर्देश, इशारा ।

ॐ संकोच (सम्) सं.—संकोच, सिकुड़ना; डर, भय, मछली विशेष ।

ॐ संकोले (तद्) सं.—दे. संकलं.

ॐ संक्षिप्त (सम्) वि.—संक्षिप्त; संक्षेप किया हुआ ।

ॐ संक्षेप (सम्) सं.—संकोचन, घटाना; सार, संग्रह; निक्षेप, प्रक्षेप ।

ॐ संख्ये (सम्) सं.—संख्या, अंक; गणना, गिनती ।

ॐ संग (सम्) सं.—संसर्ग, साथ; मेल, ऐक्य, संगम; संयोग ।

ॐ संगड (तद्) अ.—के साथ, के संग । सं.—साथ, संसर्ग; संयोग; संगम ।

ॐ संगडिग (तद्) सं.—साथी, दोस्त, मित्र, प्रेमी ।

ॐ संगति (सम्) सं.—मेल; संग, साथ संगत; संबंध; विषय, बात, समाचार ।

ॐ संगम (सम्) सं.—मेल, मिलन, ऐक्य ।

ॐ संगर (सम्) सं.—प्रतिज्ञा, वादा; युद्ध, लड़ाई; मांस; दुःख, व्यथा, दुर्भाग्य; मूर्ख पुरुष; शमीफल ।

ॐ संगति (तद्) सं.—साथिन, सखी ।

ॐ संगीत (सम्) सं.—संगीत, नाचगान ।

ॐ संगोष्टि (सम्) सं.—गोष्ठी, संघ ।

ॐ संग्रहिसु (सम्) क्रि.—संग्रह कर, एकत्रित कर, संक्षिप्त कर ।

ॐ संग्राम (सम्) सं.—युद्ध, लड़ाई ।

ॐ संगठने (सम्) सं.—रगड़, रगड़न; मेल, मिलाप, ऐक्य; भिंडत, लड़ाई मुठभेड़ ।

ॐ संवर्ष (सम्) सं.—संवर्ष; रगड़न, रगड़; भिंडत, स्पर्धा ।

ॐ संच, संचु (क) सं.—युक्ति, तंत्र, उपाय; पडयंत्र, मन्त्रणा, बुद्धिमत्ता, चतुराई; चिह्न, पहचान ।

ॐ संचय (सम्) सं.—एकत्रीकरण, पुंजीकरण, ढेर, राशि ।

ॐ संचरिसु (सम्) क्रि.—गमन कर, चल, यात्रा कर; उपयोग में आ, संभव हो ।

ॐ संचलते (सम्) सं.—कंपन, काँपना; थरथराना ।

ॐ संचारः (सम्) सं.—गमन, चलन,

चलना-फिरना, यात्रा ; कठिन मार्ग, कठिन यात्रा ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) क्रि.—संचय कर, जमा कर ; संग्रह कर, व्यवस्थित रख ।

संज्ञा संज्ञा (क) सं.—दे. संज्ञा.

संज्ञा संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—एक औषध जो जीवित करता है ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—संध्या, सायंकाल ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—संज्ञा, निशान; चिह्न, संकेत, इशारा; चेतन, होश; नाम, आह्वय ।

संज्ञा संज्ञा (क) सं.—बरी, बड़ी; मसाला ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—संत, साधु ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—औलाद, संतान, वंश, कुल ।

संज्ञा संज्ञा संज्ञा (अ. दे.) क्रि.—सांत्वना दे; वृत्त कर ।

संज्ञा संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—भोज, दावत ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—हर्ष, प्रसन्नता ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—औलाद, संतति ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—अधिक ताप, उष्णता; दुःख, व्यथा, कष्ट; मनोव्यथा, पश्चात्ताप ।

संज्ञा संज्ञा (क) सं.—संताल जाति के लोग ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) वि.—वृत्त, प्रसन्न, सुख ।

संज्ञा संज्ञा (क) सं.—भीड़, जमाव ।

संज्ञा संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—आह्लाद, आनंद, प्रसन्नता ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—संधान (तद्); प्रपूर्णता, व्याप्ति, संकीर्णता, भीड़ जन-समूह ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—संदर्भ, प्रसंग ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—रस्ता, रस्सी ।

संज्ञा संज्ञा (क) सं.—कर्जा चुकाना, भदा करना ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) वि.—संदेहयुक्त; अस्पष्ट, गड़बड़ ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) क्रि.—मिल, मुलाकात कर, भेंट कर; लग ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—मेल, मिलाप; जोड़; अवकाश, थोड़ा स्थान, गली ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—संदेह, शक ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—दोहन, दुहना; समूह, ढेर, राशि ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—जोड़ना, मिलाना सम्मिश्रण, संयोग; धनुष पर तीर चढ़ाना ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—संधि, मेल, संयोग; सुलह, मैत्री; जोड़, गाँठ ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—प्रातः या सायंकाल, भोर; मेल, संधि; संध्यावंदन ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—चंपक पुष्प, चंपक वृक्ष ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—संपदा, ऐश्वर्य, धन-दौलत ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—कमाई, प्राप्ति, उपलब्धि ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—दे. संज्ञा.

संज्ञा संज्ञा (क) सं.—चारुता, सौंदर्य ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—डिबिया ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) वि.—पूरा, सब, समूचा ।

संज्ञा संज्ञा (क) सं.—दे. संज्ञा.

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—पद्धति, परंपरा, रीति-नीति, संप्रदाय ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—दान, भेंट, पुरस्कार; शीघ्रता ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—प्राप्ति, उपलब्धि ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—रिश्तेदार, नाते-दार ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) क्रि.—संहार कर, वध कर ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—संबल (तद्); वेतन, तनखाह ।

संज्ञा संज्ञा (तद्) सं.—(संभारः—तद्), मसाले की वस्तुएँ ।

संज्ञा संज्ञा (क) सं.—एक बेल (Canavalia-ensiformis) ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—संबोधन कारक ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) क्रि.—संभव हो, उत्पन्न हो, कारण हो ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—प्रतिष्ठा, सम्मान, धादर; भेंट, उपहार, पुरस्कार, पारिश्रमिक ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) क्रि.—धादर कर, सम्मान कर ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—संभाषण, वार्तालाप ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—भुक्ति, उपभोग, अच्छी क्रीडा; मैथुन ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—उत्साह, उमंग, वैभव, शान; समारोह; अस्थानंद, अधिक प्रसन्नता; होंठ; घूमना, चकर खाना; हर का पेड़ ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—संयम, नियंत्रण, निग्रह, रोक ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) वि.—लगा हुआ, मिला हुआ ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—समागम, मेल, मिलाप, संबंध ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—रक्षण, वचाव देखरेख, निगरानी ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—साल, वर्ष ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) क्रि.—जोड़, लगा; ठीक कर, सँवार, तैयार कर, योग्य बना; पोषण कर ।

संज्ञा संज्ञा (सम्) सं.—कल्पांत, प्रलय, जलप्लावन ।

संज्ञा सचिबगो संज्ञा सचिबगो (क) सं.—पेड़ की सीधी डाल ।

संज्ञासद सभासद (सम्) सं.—सदस्य ।
संज्ञा सभे (सम्) सं.—सभा ; परिषद, गोष्ठी, समिति ।

संज्ञा सभ्य (सम्) वि.—सभ्य, कुलीन, विनम्र ; सभासद ।

संज्ञा सम (सम्) वि.—एक-सा, समान, बराबर ; तुल्य ; सदृश्य ।

संज्ञासंज्ञा समंजस (सम्) सं.—उपयुक्तता, ठीक होना ; यश, कीर्ति ।

संज्ञा समते (सम्) सं.—समता ।

संज्ञासं समनिसु (क) क्रि.—प्राप्त हो, उपलब्ध हो, मिल, बन, तैयार हो, उत्पन्न हो ।

संज्ञासं समंतु (क) सं.—सौंदर्य, मनोहरता, शोभा ।

संज्ञासं समन्वय (सम्) सं.—समन्वय, मिलन ; कुल, वंश ।

संज्ञासं समय (सम्) सं.—वक्त, काल ; अवसर, उचित समय ; पद्धति, रीति ; कानून, कायदा, नियम ; आदेश, निर्देश, आज्ञा ; सिद्धांत, सूत्र ; समाप्ति, अंत ; साफल्य ; समृद्धि ; संकेत : कवि-समय, कवियों द्वारा निश्चित सिद्धांत ।

संज्ञासं समयिसु, संज्ञासं समसु (क) क्रि.—घिसा ; मार, वध कर ।

संज्ञासं समर (सम्) सं.—युद्ध, लड़ाई ।

संज्ञासं समरु (क) क्रि.—ठीक या उपयुक्त कर, सुंदर बना, सजा ।

संज्ञासं समर्थते, संज्ञासं समर्थत्वं (सम्) सं.—सामर्थ्य ।

संज्ञासं समर्पिसु (सम्) क्रि.—समर्पण कर, अर्पण कर ।

संज्ञासं समवाय (सम्) सं.—समुदाय, समूह ; ढेर, राशि ; घनिष्ठ संबंध, अटूट संबंध ।

संज्ञासं समष्टि (सम्) सं.—सब का समूह, कुल, एक साथ, समष्टि ।

संज्ञासं समस्ये (सम्) सं.—समस्या ; उलझन ।

संज्ञासं समागम (सम्) सं.—मेल, मिलन, भेंट ; हेल-मेल ।

संज्ञासं समाचार (सम्) सं.—समाचार, खबर, सूचना ; आचरण, चालचलन, उचित व्यवहार ।

संज्ञासं समाधान (सम्) सं.—चित्त की शांति, संतोष, संतुष्टि ; समाधि, ध्यान ; एकाग्रता ।

संज्ञासं समाधि (सम्) सं.—एकाग्रता, ध्यान विशेष, तप ।

संज्ञासं समानते (सम्) सं.—समानता, तुल्यता ।

संज्ञासं समाप्ति (सम्) सं.—पूर्णता ; अंत, अवसान ।

संज्ञासं समाप्नाय (सम्) सं.—परंपरागत पाठ ; परंपरा ; पाठ, गणना ; योग, जोड़, जमा ; समूह ।

संज्ञासं समारंभ (सम्) सं.—समारोह, सभा, उत्सव ।

संज्ञासं समाराधने (सम्) सं.—संतुष्ट करने का साधन, परिचर्या, सेवा ; ब्राह्मणों को भोज देना, दावत ।

संज्ञासं समावेश (सम्) सं.—समावेश, मिलन ; प्रवेश, घुसाव ।

संज्ञासं समास (सम्) सं.—समाहार, एकत्रीकरण ; समास ।

संज्ञासं समालिसु (अ. दे.) क्रि.—संभाल, सम्हाल ।

संज्ञासं समिति (सम्) सं.—सभा, समाज, संघ ; समूह, झुंड ; लड़ाई, समर, युद्ध, समता, समानता ।

संज्ञासं समित्तु (तद्) सं.—समिधा ।

संज्ञासं समिसु (क) क्रि.—दे. संज्ञासं

संज्ञासं समीकरण (सम्) सं.—असम को सम करना ; बीजगणित की प्रक्रिया-विशेष ; सांख्य दर्शन ।

संज्ञासं समीप (सम्) अ.—पास, निकट ।

संज्ञासं समीर, संज्ञासं समीरण (सम्) सं.—हवा, वायु, पवन ।

संज्ञासं समुचय (सम्) सं.—समूह, समुचय ; एक अलंकार विशेष ।

संज्ञासं समुदाय (सम्) सं.—संग्रह, समुदाय ; कलह, युद्ध ।

संज्ञासं समुद्रोष (सम्) सं.—बहुत बड़ी ध्वनि या घोष ।

संज्ञासं समुद्धरण (सम्) सं.—ऊपर उठाना, ऊपर खींचना ; मूलोच्छेदन ; मुक्ति, छुटकारा ; वमन, कै ।

संज्ञासं समुद्र (सम्) सं.—समुद्र, जलनिधि, सागर ।

संज्ञासं समुद्रवह्नि (सम्) स.—बडबानल ।

संज्ञासं समुन्नति (सम्) सं.—उठान, ऊंचाई ; उच्च पद ; समृद्धि, अभ्युदय ; अहंकार, अभिमान ।

संज्ञासं समूह (सम्) सं.—समुदाय, संग्रह, गिरोह ; झुंड ।

संज्ञासं समे (क) क्रि.—घिस, घट, नष्ट हो ; तैयार हो, बन ; बना ।

संज्ञासं समेत (सम्) अ.—साथ, सहित, युक्त ।

संज्ञासं सम्मत (सम्) सं.—स्वीकृति, मान्यता ; मत, विचार, अभिप्राय, राय ।

संज्ञासं सम्मति (सम्) सं.—स्वीकृति ; अभिलाषा, इच्छा ; मान, प्रतिष्ठा ; प्यार, स्नेह ; आज्ञा, आदेश (सै. प्र.) ।

संज्ञासं सम्मद (सम्) सं.—आनंद, आह्लाद, बहुत प्रसन्नता ।

संज्ञासं सम्मान (सम्) सं.—सम्मान, आदर, गौरव ।

संज्ञासं सम्मार्जने (सम्) सं.—झाड़ना, बुहराना, सफाई ।

संज्ञासं सम्मेलन, संज्ञासं सम्मेलन (सम्) सं.—मेल, मिलान, ऐक्य, जमा होना ।

संज्ञासं सय, संज्ञासं सेय, संज्ञासं सै (क) अ.—

सीधे, ठीक, सही. जोर से, वेग से ।
 क्रि.—शांत कर, रोक; शांत हो. रुक ।
 संस्कृत सयत (क) सं.—ईमानदार आदमी ।
 संस्कृत सयतु, संस्कृत सैतु (क) सं.—सीधापन,
 सही होना; समाधान, लघु (मात्रा),
 लघु सूचक छोटी रेखा. विश्राम, आराम ।
 संस्कृत सयद (क) सं.—सीधा-सादा आदमी,
 ईमानदार आदमी ।
 संस्कृत सयपु (क) सं.—नीति, न्याय, पुण्य,
 सुकृत; नैपुण्य ।
 (१) सं सं सर (सम्) सं.—हार, माला;
 सरोवर, तालाब; तीर, बाण; लड़ी;
 नमक, लवण; मलाई ।
 (२) सं सं सर (क) सं.—एक अनुकरणमूलक
 शब्द; = सं सं सरसु—शिकार, आखेट ।
 सं सं सरक (सम्) सं.—शराव, मदिरा;
 पानपात्र: लोटा; स्वर्ग, गगन; वह सड़क
 जिसका सिलसिला बराबर जाय ।
 सं सं सरकार, सं सं सरकार (अ. दे.)
 सं.—(Government) ।
 सं सं सरकु (क) सं.—माल, सामान; साव-
 धानी. ध्यान देना ।
 सं सं सरकुने (क) अ.—तुरंत. फौरन ।
 सं सं सरघे (सम्) सं.—भौरा, मधुकर ।
 सं सं सरहु (क) सं.—शिकार, आखेट ।
 सं सं सरणि (सम्) सं.—मार्ग, रास्ता, सड़क;
 पदति, ढंग; सरल या सीधी रेखा ।
 सं सं सरदार (अ. दे.) सं.—सरदार
 (फ़ारसी); नायक, प्रधान ।
 सं सं सरपणि, सं सं सरपलि, सं सं सरप
 सर्पलि (क) सं.—शृंखला, जंजीर ।
 सं सं सरफराखु (अ. दे.) सं.—पदवृद्धि,
 अफसर की कृपा दृष्टि ।
 सं सं सरबरायि (अ. दे.) सं.—सरबराही
 (फ़ारसी); व्यवस्था ।
 सं सं सरल, सं सं सरल (सम्) वि.—सरल,
 सुगम, आसान ।
 सं सं सरवि (क) सं.—दे. सं सं.

सं सं सरस (सम्) सं.—विनोद, तमाशा,
 हास-परिहास । वि.—स्वादिय, रसीला,
 रसदार; मनोहर, सुंदर; नया ।
 सं सं सरसि (सम्) सं.—सरोवर, तालाब ।
 सं सं सरसिज (सम्) सं.—कमल ।
 सं सं सरस्वति (सम्) सं.—सरस्वती नदी;
 वाणी, सरस्वती ।
 सं सं सरहदु (अ. दे.) सं.—हद, सीमा ।
 सं सं सरल, सं सं सरल (क) सं.—बाण,
 तीर ।
 सं सं सरलिसु (क) क्रि.—उछल, लॉघ ।
 सं सं सरलु (क) सं.—बाण, तीर; लोहे की
 लड़ी या शलाका ।
 सं सं सराफ (अ. दे.) सं.—सराफ (बरवी) ।
 सं सं सरासरि (क) सं.—औसत ।
 सं सं सरि (क) क्रि.—जा, चल, सरक, एक
 ओर हट; फिसल जा, गिर, (वृष्टि हो);
 घट जा, कम हो, पलायन कर, दौड़ जा;
 एक तरफ ले । सं.—सरकना, एक ओर
 हटना, पलायन । अ.—ठीक, सही ।
 सं सं सरिकतन, सं सं सरिकतन (क)
 सं.—समानता, बराबरी ।
 सं सं सरिग (क) सं.—समान श्रेणी या पद
 का व्यक्ति ।
 सं सं सरिगे (क) सं.—स्त्रियों के पहनने का
 गले का हार ।
 सं सं सरित्पति (सम्) सं.—समुद्र, सागर ।
 सं सं सरिस (क) सं.—समता, समानता,
 बराबरी; सीधापन ।
 सं सं सरिसु (क) क्रि.—एक ओर रख या
 हटा, सरका ।
 सं सं सरिक (क) सं.—बराबरवाला, समान
 श्रेणी का व्यक्ति ।
 सं सं सरु (क) सं.—जंगली जानवरों का मार्ग ।
 सं सं सरोज (सम्) सं.—कमल ।
 सं सं सरोधि (सम्) सं.—समुद्र ।
 सं सं सरोरुह, सं सं सरोरुहिली सरोरुहिणि
 (सम्) सं.—कमल ।

सं सं सरगु (क) सं—आँचल ।—सं सं
 कोडु—आँचल पसार; याचना कर ।
 सं सं सरि (क) सं.—गोद; करारा, पर्वत या
 चट्टान की खड़ी दीवार ।
 सं सं सरि. सं सं सरि (क) सं.—गिरफ्तारी,
 बंधन ।
 सं सं सरि (सम्) सं.—त्याग, विराग; सृष्टि;
 प्रकृति, स्वभाव; स्वीकृति; परिच्छेद,
 अध्याय; प्रयत्न, दृढ निश्चय ।
 सं सं सरिके (सम्) सं.—सज्जी; खार या
 क्षार विशेष ।
 सं सं सरि (सम्) सं.—साँप; घुमाव; बहाव
 सं सं सरि (तद्) वि.—सब, सर्व ।
 सं सं सरि (क) सं.—जल कुकुट ।
 सं सं सरि (सम्) वि.—सब, समस्त, पूर्ण,
 पूरा ।
 सं सं सरि सर्वथा (सम्) अ.—हर प्रकार से,
 सब प्रकार से, सर्वथा ।
 सं सं सरि सर्वदा (सम्) सं.—हमेशा, सदैव ।
 सं सं सरि सर्वमंगले (सम्) सं.—दुर्गा,
 पार्वती ।
 सं सं सरि सर्वे (सम्) सं.—तोमर, एक अस्त्र ।
 सं सं सरि, सं सं सरि, सं सं सरि (क) क्रि.—
 प्रवेश कर, घुस; हो, संभव हो; अधीन
 में हो, वशीभूत हो; चला जा, गुजर जा; चुक
 जा; ठीक हो; प्रसिद्ध हो, ख्यात हो ।
 सं सं सरि (क) सं.—प्रवेश; घुसना; दफा,
 बार ।
 सं सं सरि सलग (क) सं.—हाथी; साँड; झुंड
 में आगे जाने वाला जानवर ।
 सं सं सरि सलपु, सं सं सरि सलवु, सं सं सरि सलहु (क)
 क्रि.—पालन कर, पोषण कर, रक्षा कर ।
 सं सं सरि सलवु (क) क्रि.—दे. सं सं सं—
 प्रवेश; बल, बकात्कार; हेतु, उपयुक्त
 कारण ।
 सं सं सरि सलवे (क) सं.—नये सूती कपड़े की
 धुलाई ।
 सं सं सरि सलहे (अ. दे.) सं.—सलाह; सुझाव ।

संशुद्धं सलामु (अ. दे.) सं. — सलाम (अरबी) नमस्कार ।
 संशुद्धं सलिके, संशुद्धं सलिके (क) सं.—
 चुकाना, चुकता ।
 संशुद्धं सलिके (क) सं.—अति परिचय ;
 स्वातंत्र्य ।
 संशुद्धं सलिल (सम्) सं.—जल, पानी ।
 संशुद्धं सलु (क) क्रि.—दे. संशुद्धं ।
 संशुद्धं सलुगे (क) सं.—दे. संशुद्धं ।
 संशुद्धं सलुवलि (क) सं.—रूढि, व्यावहार ;
 उपयुक्तता, योग्यता ।
 संशुद्धं सलुवागि (क) अ.—के कारण, की
 वजह से ।
 संशुद्धं सले (क) अ.—ठीक, अच्छी तरह ; पूर्णतः
 सं.—पैसा चुकाना ; गुना, गुणन ।
 संशुद्धं सलुलित (सम्) वि.—बहुत सुंदर या
 मनोहर ।
 संशुद्धं सलिसु (क) क्रि.—दे, प्रदान कर,
 समर्पित कर ; निवेदन कर ; पूरा कर, चुका ।
 संशुद्धं सलु (क) क्रि.—योग्य हो, पसंद हो ;
 लगा, पहुँच ; समर्पित हो ।
 संशुद्धं सले (क) सं.—दे. संशुद्धं ।
 संशुद्धं सव (तद्) अ.—सम, बराबर, ठीक ।
 संशुद्धं सवग (तद् ?) सं.—कवच ।
 संशुद्धं सवटु (क) सं.—कलछुल, बड़ा चमचा ।
 क्रि.—गंदा हो, मैला हो ।
 संशुद्धं सवडि (क) सं.—जोड़ा, जोड़ी ; जुड़वा ।
 संशुद्धं सवण (तद्) सं.—श्रमण ; जैन साधु ।
 संशुद्धं सवति (तद्) सं.—सौत, सपत्नी ।
 संशुद्धं सवतीकायि, संशुद्धं सवते-
 कायि (क) सं.—ककड़ी ; खीरा ।
 संशुद्धं सवतिसु (क) क्रि.—हो, संभव हो,
 उत्पन्न हो, तैयार हो ; प्राप्त हो ।
 संशुद्धं सवयिसु (क) क्रि.—घिसने दे ;
 नाश कर ।
 संशुद्धं सवरिसु (क) क्रि.—कटवा, पेड़ की
 शाखाएँ कटवा ; लगवा ।

संशुद्धं सवरु (क) क्रि.—पेड़ की शाखाएँ काट,
 पेड़ काट, काटकर गिरा ; लगा, लेपन कर ;
 चिकना बना ; घिस ; सिरपर हाथ फेर ;
 पीठ ठोक ; तैयार कर ।
 संशुद्धं सवसु (क) क्रि.—घिसा, नाश कर ;
 तैयार कर, बना ।
 संशुद्धं सवळदे (क) सं.—उदय, प्रातःकाल ।
 संशुद्धं सवळतदे (क) सं.—प्रातःकाल, सवेरा ;
 दूसरा दिन ।
 संशुद्धं सवार (अ. दे.) सं.—सवार, घुड़सवार ।
 संशुद्धं सवारि (अ. दे.) सं.—सवारी करना,
 वाहन पर बैठना ।
 संशुद्धं सवि (क) क्रि.—स्वाद ले, चख ; बीत
 जा, व्यतीत हो । सं.—वह जो मधुर हो ;
 असृत ।
 संशुद्धं सवुटु, संशुद्धं सौटु (क) सं.—कल-
 छुल, बड़ा चमचा ।
 संशुद्धं सवुते, संशुद्धं सौते (क) सं.—दे.
 संशुद्धं सवसव, संशुद्धं सौसव (क) सं.—
 सुगंध, परिमल, मकरंद ।
 संशुद्धं सुयुळु, संशुद्धं सौळु (क) सं.—क्षार,
 खारा, फीका ।
 संशुद्धं सवे (क) क्रि.—चख, खा ; घिस जा ;
 बन, तैयार हो ; बना ।
 संशुद्धं ससने (क) अ.—चुप चाप, धव भी,
 फिर भी ।
 (१) संशुद्धं ससि (क) क्रि.—कपास धुन ; उखाड़,
 निकाल ।
 (२) संशुद्धं ससि (तद्) सं.—सस्य, छोटा पौधा ।
 संशुद्धं सुसिन (क) सं.—सीधापन ।
 संशुद्धं ससिल् (क) सं.—एक प्रकार की
 मछली ।
 संशुद्धं सस्य (सम्) सं.—शस्य, छोटा पौधा ।
 संशुद्धं सहकार (सम्) सं.—सहकार, सह-
 योग ।
 संशुद्धं सहगमन (सम्) सं.—सती होना,
 पति के शव के साथ भस्म होना ।

संशुद्धं सहचरि (सम्) सं.—सहेली, सखी ।
 संशुद्धं सहज (सम्) सं.—स्वाभाविक, सहज,
 प्राकृतिक ।
 संशुद्धं सहने (सम्) सं.—सहनशीलता,
 शांति ।
 संशुद्धं सहभावे (सम्) सं.—भगिनी, बहन ।
 संशुद्धं सहयोग (सम्) सं.—सहयोग ।
 संशुद्धं सहवास (सम्) सं.—संगत, संगति
 मित्रता ; संभोग ।
 संशुद्धं सहस्र (सम्) वि.—हजार की संख्या ।
 संशुद्धं सहाध्यायि (सम्) सं.—सह-
 पाठी, गुरुभाई ।
 संशुद्धं सहाय (सम्) सं.—मदद, सहायता ।
 संशुद्धं सहायि (सम्) सं.—मित्र, सहायक ।
 संशुद्धं सहित (सम्) अ.—साथ ; समेत ।
 संशुद्धं सहिसु (सम्) क्रि.—सहन कर, सह ;
 सत्र कर ।
 संशुद्धं सहोदर (सम्) सं.—सहोदर,
 भाई ।
 संशुद्धं सहोदर, संशुद्धं सहोदरे (सम्)
 सं.—भगिनी, बहन ।
 संशुद्धं सह्य (सम्) वि.—सहन करने योग्य ;
 दृढ़, मजबूत, ताकतवर । सं.—सह्यादि
 नामक पर्वत ।
 संशुद्धं सलि (क) सं.—ठंडक, सर्दी ।
 संशुद्धं सले (क) क्रि.—खींच ; आकर्षित कर ।
 संशुद्धं सांक्रामिक (सम्) वि.—सांक्रा-
 मिक रोग ।
 संशुद्धं सांख्य (सम्) सं.—सांख्य ; दर्शन
 सांख्य दर्शन का अनुगामी ; एक व्यक्ति का
 नाम ।
 संशुद्धं सांग (सम्) वि.—सब प्रकार से परि-
 पूर्ण, सब अंगों वाला ।
 संशुद्धं सांगत्य (सम्) सं.—सहवास ;
 संगति ; एक छंद का नाम ।
 संशुद्धं सांत (तद्) सं.—शिवजी ।
 संशुद्धं सांतपन (सम्) सं.—एक प्रकार
 की कठोर तपस्या ।

संस्कृत संस्कृत

संस्कृत संस्कृत (सम्) सं. — डॉक्टर, आश्वासन, संस्कृत ।

संस्कृत मांद्र (सम्) वि.—घना, गहरा, घोर, मजबूत; विपुल, अधिक; उग्र; प्रचण्ड; स्निग्ध, चिकना; कोमल, नरम; सुंदर, मनोहर ।

संस्कृत सांपराय (सम्) सं.—लड़ाई, मुठभेड़; भविष्य, भविष्य जीवन; अनुसंधान, जिज्ञासा ।

संस्कृत सांप्रत (सम्) वि.—योग्य, उचित, ठीक, वर्तमान समय संबंधी ।

संस्कृत सांप्रदाय (सम्) सं.—संप्रदाय, परंपरा ।

संस्कृत सांव (सम्) सं.—शिवजी ।

संस्कृत सांवाणि (तद्) सं.—साम्राजि; लोहबान ।

संस्कृत सांवात्रिक (सम्) सं.—पोत-वणिक ।

संस्कृत सांवस्वर (सम्) वि.—वार्षिक, सालाना । सं.—ज्योतिषी, दैवज्ञ, गणितज्ञ ।

संस्कृत साकिसु (क) क्रि.—पालन-पोषण करा या करवा ।

(१) संस्कृत साकु (क) क्रि.—पालन कर, पोषण कर, रक्षा कर । सं.—पोषण, पालन-पोषण । अ.—पर्याप्त, काफ़ी ।

(२) संस्कृत साकु (क) क्रि.—फेंक । सं.—बहाना, स्वांग ।

संस्कृत साक्षात् (सम्) अ.—खुलमखुला, प्रत्यक्ष । सं.—रूप, आकार रोग, बीमारी; शास्त्र, आयुध; वार्ता विशेष ।

संस्कृत साक्षि (सम्) सं.—गवाह साक्षी ।

संस्कृत सागड़े (क) सं.—एक वृक्ष (Sleichera Trijuga) ।

संस्कृत सागर (सम्) सं.—समुद्र, जलनिधि ।

संस्कृत सागवलि, संस्कृत सागुवलि (क) सं.—खेती, कृषि ।

संस्कृत सागिसु (क) क्रि.—ले जाने दे, भिजवा; चलवा; कृषि करा या करवा ।

संस्कृत सागु (क) क्रि.—बढ़, आगे जा, चल; फ़ैल । सं.—आगे बढ़ना, उन्नति; कृषि ।

संस्कृत साचा (अ.दे.) वि.—सच्चा ।

संस्कृत साटि (क) सं.—समानता, बराबरी, सानी ।

संस्कृत साणे (तद्) सं.—सान, कसौटी ।

संस्कृत सातानि (क) सं.—ब्राह्मणेतर वैष्णव जाति के लोग ।

संस्कृत सात्विक (सम्) वि.—असली, यथार्थ; सच्चा, सत्य; स्वाभाविक; ईमानदार; गुणवान, साहसी; सात्विक गुणयुक्त ।

संस्कृत सादा (अ. दे.) वि.—सादा, साधारण, मामूली ।

संस्कृत सादु (क) सं.—एक सुगंध द्रव्य; काला तिलक ।

संस्कृत सादृश्य (सम्) सं.—समानता, एक रूपता; प्रतिकृति ।

संस्कृत साधक (सम्) सं.—साधना करनेवाला, निपुण, पटु; अभ्यास, साधना ।

संस्कृत साधने (सम्) सं.—साधन, सामग्री, उपकरण; उपाय, मुक्ति; अनुसरण; प्रणाम सबूत; शोधन ।

संस्कृत साधारण (सम्) वि.—मामूली, सामान्य ।

संस्कृत साधु (सम्) सं.—पुण्यात्मा जन; महात्मा, ऋषि, संत । वि.—योग्य, उचित; उत्तम; पुण्यात्मा, प्रतिष्ठित; शुद्ध, मनोहर ।

संस्कृत साध्य; (सम्) वि.—साध्य, साधनीय, होने योग्य ।

संस्कृत सानि (क) सं.—संगिनी; वैश्या ।

संस्कृत सानुमत्, संस्कृत सानुमंत (सम्) सं.—पर्वत, पहाड़ ।

संस्कृत सान्निध्य (सम्) सं.—समीपता, नैक्य; उपस्थिति, विद्यमानता ।

संस्कृत सापे (क) सं.—चटाई (ग्रा.)

संस्कृत सापेक्ष (सम्) वि.—अपेक्षा सहित, अपेक्षित ।

संस्कृत सामग्रि (सम्) सं.—सामग्री, उपकरण ।

संस्कृत सामंत (सम्) सं.—सामंत राजा, पडोसी राजा ।

संस्कृत सामर्थ्य (सम्) सं.—सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता, पराक्रम ।

संस्कृत सामान्य (सम्) वि.—साधारण, मामूली ।

संस्कृत सामीप्य (सम्) सं.—निकटता, समीपता ।

संस्कृत सामुद्रिके (सम्) सं.—सामुद्रिक शास्त्र, हस्त-रेखाओं से शुभाशुभ कहने की विद्या ।

संस्कृत साम्यते (सम्) सं.—समता, समानता, साम्य, सादृश्य ।

संस्कृत साम्राज्य (सम्) सं.—साम्राज्य । संस्कृत साम्राट (सम्) सं.—सम्राट, चक्रवर्ती ।

संस्कृत साय्, संस्कृत सायु (क) क्रि.—मर जा, मृत हो ।

संस्कृत सायक (सम्) सं.—बाण, तीर; तलवार ।

संस्कृत सायंकाल (सम्) सं.—शाम, संध्या ।

संस्कृत सार, संस्कृत सारु, (क) क्रि.—समीप जा, पास जा; घोषणा कर, दिंडोरा पीट । सं.—निचोड़, रस, शोरवा, रसम ।

संस्कृत सार (सम्) सं.—रस, निचोड़; तत्व; गूदा; असली पदार्थ ।

संस्कृत सारंग, संस्कृत सारंग (सम्) सं.—चित्तल हिरन, बारहसिंगा ।

संस्कृत सारण (क) सं.—समीपता, निकटता ।

संस्कृत सारणिके (क) सं.—चलनी, चालनी ।

संस्कृत सारणे (क) सं.—लीपना, लिपाई, पुताई ।

संस्कृत सारथ्य (सम्) सं.—रथवानी, कौच-वानी ।

संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—कुत्ता ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—सारस पक्षी ; कमल ; स्त्री की कमर की करधनी, मेखला ; मृत्यु । यम ; पर्वत, पहाड़ ; समीपता, निकटता ; धूर्त, चतुर ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—मदिरा, शराव ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—वार, दफ्ता ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—लीप, गोवर से ज़मीन को लीप ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा = समीपता ; मेल अ.—बड़ा, विशाल ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—घोषणा कर, हिंदोरा पिटवा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—हिंदोरा पीट, घोषणा कर । सं.—दाल का 'रसम्' ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) वि.—अर्थवाला, उपयोगी, काम का ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) वि.—सब का, सब से संबंधित ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—पंक्ति, लाइन, श्रेणी । क्रि.—पर्याप्त हो, काफी हो बस हो ; चुक ; योग्य हो ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—ऋण, कर्जा, उधार ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—ऋणदाता, कर्जदार ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—पुतली, गुड़िया ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—मिलान, उपयुक्तता ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—कर्जदार ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं. और क्रि.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—पाँच प्रकार की मुक्तियों में एक ; दूसरे के साथ एक ही लोक में निवास ।

संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—अवकाश, फुरसत ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—साफ-सुथरा कर. ठीक कर ; चुप हो ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—ध्यान, अवधान, सावधानी ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) सं.—संगत, संगति ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—गायत्री मंत्र ; उमा का नामांतर, पार्वती ; ब्रह्मणी ; सत्यवान् की पत्नी का नाम ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) वि.—हजार की संख्या ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—मौत, मृत्यु ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (अ.दे.) सं.—साहुकार ; धनवान, धनी ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—अष्टांग प्रणाम ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) वि.—सहस्र, हजार ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—सरसों ('संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा' भी लिखा जाता है) ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) —साहस, पराक्रम ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—साहित्य, वाङ्मय ; एकत्र होना, मिलन, समुदाय ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (अ.दे.) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (अ.दे.) सं.—साहव ; प्रभु, स्वामी ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—पक्षी विशेष, बाज़ ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) सं.—सिंह, शेर ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) सं.—शृंगार, अलंकरण ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) क्रि.—अलंकार कर, सजा, सिंगार कर ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—काला बंदर ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—नाक ।

संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) सं.—शिंजिनी, प्रसंचा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—नाक-भौंह सिकोड़, मुँह फुला ; नाराज़ हो ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—घिस, रगड़ ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—संदुर, ईगुर ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—समुद्र, सागर ; नदी ; सिंध प्रान्त ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—हाथी, गज ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—छिड़क, छिड़का सींच ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—दर्जी ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—छिड़क ; छिड़का ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—सीप ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) सं.—सिंधवण (तद्) नाक का मेल, रेंट ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—गेंडुरी, बिड़ई ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—शेर ; वीर पुरुष ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—सिंहासन, राजगद्दी ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (तद्) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—राहु की माता का नाम ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) सं.—रेत, बालू ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (अ.दे.) सं.—सिका, मुहर ; मुद्रिका, मोहर ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) सं.—कंधी ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—उलझन में डाल ; पकड़वा ; हँस ; लगा ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (क) क्रि.—मिल, पकड़ा जा ; हाथ लग । सं.—उलझन, गुत्थी ।
 संस्कृत-संज्ञा-संज्ञा (सम्) वि.—तर, नम, पानी से सींचा हुआ ।

सिद्धि सिद्धक (सम्) सं.—भात, भात का पिंड ।

सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—(लकड़ी को) चीर या चूर चूर कर ।

सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—प्राप्त हो, मिल, उपलब्ध हो, पाया जा ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि, (सिद्धि सिद्धि) (क) सं.—लकड़ी का टुकड़ा, चीरा हुआ टुकड़ा ।

सिद्धि सिद्धि, (क) सं.—लजीला या शर्मानेवाला पुरुष ।

सिद्धि सिद्धिग (क) सं.—दैत्य, राक्षस ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—लजा, शर्म, लाज ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—क्रोध, गुस्सा ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—फटना (सिर में दर्द); गर्व से उछलना ।

सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—तितर-बितर हो, फैल, फट (दर्द हो) । सं.—सूक्ष्म होना, पतला होना; लोहे का बाँस या अंकुड़ा; विकीर्णता, फैलाव; दाह या प्यास बुझाना, नापसंदगी; व्याकुलता, भय; गजमद ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—विकीर्ण हो, चारों ओर फैल । सं.—वज्र, बिजली ।

सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—चिढ़, क्रुद्ध हो । सं.—चिढ़चिड़ा स्वभाव ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—चेचक ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि (क) सं.—एक कंठीली झाड़ी ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—दे. सिद्धि; भाँख का मल ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) वि.—सफ़ेद । सं.—सफ़ेद रंग; चाँदी ।

सिद्धि सिद्धि (सम् ?) सं.—व्यभिचारी, लंपट । सिद्धि सिद्धि—खी. लिं. ।

सिद्धि सिद्धि (तद्) सं.—अरथी, टिकठी ।

सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—(हाथ से) ढूँढ ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) वि.—जिसका सधन सिद्ध हो चुका हो, सिद्ध; सफल; प्राप्त, उपलब्ध; निपुण, पटु; प्रसिद्ध; चमकीला, प्रकाशमान । सं.—सिद्ध पुरुष मुक्ति, मोक्ष; तैयारी ।—सिद्धि माडु = तैयार कर ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) सं.—उसूल, सिद्धि, मत ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) सं.—गौतम बुद्ध; सफ़ेद सरसों; शिवजी ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) सं.—सफलता, कृतकार्यता संस्थापना, प्रतिष्ठा, निश्चय, निर्णय, फैसला; पूर्णज्ञान; तैयारी; अणिमा आदि सिद्धियाँ; मोक्ष ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) सं.—छींटा रोग, कोढ़ ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि (अ.दे.) सं.—सिपाही (फ़ारसी) ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—खंजन पक्षी ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—सीप ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—छिलका, फल आदि का बाहरी ढाँचा ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—नौकर या चाकरों का समूह ।

सिद्धि सिद्धि (क) अ.—मधुरता से ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि (तद्) सं.—श्री, लक्ष्मी, ऐश्वर्य ।

(१) सिद्धि सिद्धि (क) सं.—साहस, वीरता, पराक्रम; गर्व ।

(२) सिद्धि सिद्धि (तद्) सं.—द्विरीष ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—फँस, (उलझन में) पड़े ।

सिद्धि सिद्धि (क) वि.—पतला; महीन ।

(१) सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—दे. सिद्धि सं.—उलझन ।

(२) सिद्धि सिद्धि (अ. दे.) सं.—रेशमी कपड़ा, Silk.

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—लकड़वर्गा ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि (क) सं.—गेंडुरी, पूला; घास का गट्टा ।

सिद्धि सिद्धि, (क) सं.—दे. सिद्धि.

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—एक मछली विशेष ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—मधुरता, मीठापन; मीठा पदार्थ, मिठाई ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—सीटी; शाखा, डाली; रेंट, भाँख का मैल ।

सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—जल जा, जलकर काला हो । वि.—मधुर, मीठा । सं.—माधुर्य, मिठास ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—जल जाने की स्थिति ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि (क) सं.—छोटी सूखी मछली ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—एक तरह का चामर ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—शीकाई पौधा (Acacia concinna) ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—क्रोध, गुस्सा, रोप ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) सं.—सीताफल, फल विशेष ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) सं.—हल के फाल से बनी रेखा; सीता, जानकी; एक प्रकार की घास ।

सिद्धि सिद्धि, सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—छींक । सं.—छींक, छींकना ।

सिद्धि सिद्धि (क) क्रि.—चूस (जैसे आम के फल को चूसना) ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—ब्राँस की तीली ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) सं.—एक संस्कार जो प्रथम गर्भस्थिति के चौथे, छठे या आठवें मास में किया जाता है; सिर के केशों की माँग; सीमा की चिह्न या रेखा ।

सिद्धि सिद्धि (सम्) सं.—सीमा, हद; समुद्र-तट, तट; विदेश ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—नरम नारियल का पानी ।

सिद्धि सिद्धि (क) सं.—मिठास; मिठाई ।

सिद्धि सीर, सिद्धि सीर (क) सं.—लीख, जूँ का अंडा । क्रि.—लीख निकाल ।

२९० सीरे तद्) सं.—साड़ी ।

२९१ सीरे (क) सं.—पंक्ति, श्रेणी, रेखा ; रेखाएँ ।

२९२ सीरे (क) क्रि.—छिड़क, फैल ; क्रुद्ध हो झगड़ने को तैयार हो ; चीख, कराह ।

२९३ सीरे (क) सं.—चीरिका, झींगुर ।

२९४ सीरे (क) क्रि.—नफरत कर, जुगुप्सा प्रकट कर ; फूँक ।

२९५ सीरे (क) क्रि.—सजा, सिंगार कर ।

(१) २९६ सीस (क) सं.—एक छेद का नाम ।

(२) २९६ सीस २९६ सीसक (सम्) सं.—सीसा नामक धातु (Lead) ।

२९७ सीरे, २९८ सीरे (क) क्रि.—चीर, फाड़ ; टुकड़े कर ।

२९९ सुक (तद्) सं.—शुल्क (तद्) ; कर, महमूल ; चुंगी ।

३०० सुक (क) सं.—झुरी ; तह ।

३०१ सुक सुंदरगाळि (क) सं.—आंधी ; बवंडर ।

३०२ सुक (तद्) सं.—बुढ़िया, छोटा चूहा ।

३०३ सुक सुडिसु (क) क्रि.—भाफ बना, भाफ बनकर घटा ।

३०४ सुक (क) क्रि.—भाफ हो ।

३०५ सुक सुंदर (सम्) वि.—चारु, मनोहर, प्रिय, खूबसूरत ।

३०६ सुक सुंदरि (सम्) सं.—सुंदरी स्त्री ।

३०७ सुक (क) सं.—रति, संभोग ।

३०८ सु (सम्) उ.—अच्छा, भला, सुंदर, मनोहर, सर्वोत्तम ।

३०९ सुकर (सम्) वि.—जो सहज में किया जा सके ।

३१० सुकर सुकुमार (सम्) वि.—बहुत कोमल, सुलायम या नाजुक ।

३११ सुकु (सम्) सं.—सिकुड़न ; झुरी ।

३१२ सुख (सम्) सं.—सुख, आनंद, हर्ष, प्रसन्नता ; समृद्धि ।

३१३ सुगति (सम्) सं.—खुशबू, सुवास, सुरभि ।

३१४ सुगंध (सम्) सं.—सुंदर दशा ; सुक्ति ।

३१५ सुगम (सम्) वि.—आसान ।

३१६ सुगि (क) क्रि.—लूट, लूट-मार कर ; डर जा, भीत हो ।

३१७ सुगुडतन (क) सं.—लालसा, तीव्र इच्छा ।

३१८ सुगि (क) सं.—वसंत, चैत्रमास, फसल का काल ; बहार, आनंद ।

३१९ सुजन (सम्) सं.—सज्जन ।

३२० सुटि (क) वि.—फुर्तीला, उत्साही, चतुर, होशियार ।

३२१ सुट्टु (क) क्रि.—अंगुली से संकेत कर ।

३२२ सुडु (क) क्रि.—जल, दाह उत्पन्न हो, आँच लग । वि.—जलनेवाला ।

३२३ सुण (तद्) सं.—चूना ।

३२४ सुतरां (सम्) अ.—विलकुल, सुतरां ।

३२५ सुति (तद्) सं.—श्रुति, वेद ।

३२६ सुत्तु सुत्तु सुत्तु सुत्तु सुत्तु सुत्तु (क) अ.—चारों ओर ; आसपास ।

३२७ सुत्तु सुत्तु (क) सं.—मन्दिर का हाता या प्राकार ।

३२८ सुत्तिगे (क) सं.—हथौड़ा ।

३२९ सुत्तिसु (क) क्रि.—घुमा, मँडराने दे ।

३३० सुत्तु (क) क्रि.—घूम, चारों ओर घूम ; मँडरा । सं.—घुमाव ; मंडल ; विशालता ; परिणाम ।

३३१ सुत्तु (क) अ.—चारों ओर ।

३३२ सुदाम (सम्) सं.—एक गरीब ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण के मित्र थे । मेघ, बादल ; समुद्र ; पर्वत ।

३३३ सुदि (तद्) सं.—खबर, समाचार ; वार्ता ।

३३४ सुधांशु (सम्) सं.—चन्द्रमा । कपूर ; अग्नि की एक जिह्वा ।

३३५ सुधाकर (सम्) सं.—चंद्रमा, इंदु ।

३३६ सुधारणे (सम्) सं.—सुधार, ठीक करना ।

३३७ सुधि, सुधी सुधी (सम्) सं.—बुद्धिमान या विद्वान पुरुष ।

३३८ सुधे (सम्) सं.—सुधा, अमृत ; पुष्पों का रस, शहद, रस ; गारा ।

३३९ सुनासीर (सम्) सं.—इंद्र ।

३४० सुपर्ण (सम्) सं.—गरुड ।—केशव केतु = विष्णु ।

३४१ सुपर्णि (सम्) सं.—गरुड की माता ।

३४२ सुप्त (सम्) वि.—सोया हुआ ।

३४३ सुप्ति (सम्) सं.—नींद, निद्रा, सुस्ती ।

३४४ सुप्तिगे सुप्तिगे, सुप्तिगे सुप्तिगे (तद्) सं.—शय्या, सेज, बिस्तर ।

३४५ सुप्रतीक (सम्) वि.—सुंदर, सुंदर आकार का । सं.—पूर्वोत्तर दिशा का हाथी ।

३४६ सुप्रास (सम्) सं.—अनुप्रास अलंकार का एक भेद ।

३४७ सुवेदार (अ.दे.) सं.—सूवेदार (अरवी, फारसी) ।

३४८ सुव्वलु (क) सं.—खुरखुरापन (कपड़े पर या जानवरों के शरीर पर के रोम में) ।

३४९ सुभग (सम्) वि.—सुंदर, मनोहर, प्रिय ; मान्य । सं.—सुंदरता ।

३५० सुभद्रे (सम्) सं.—कृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी सुभद्रा ।

३५१ सुभापित (सम्) सं.—उत्तम वाणी, अच्छी तरह की बोली ।

३५२ सुमने (सम्) सं.—चमेली ; जाती पुष्प ।

३५३ सुमान, सुमान सुमान (सम्) सं.—बड़ी प्रसन्नता या आह्लाद ।

३५४ सुमार, सुमार सुमार (क?) अ.—लगभग, करीब ।

३५५ सुसुख (सम्) सं.—सुंदर सुख ; पंडितजन ; गरुड ; गणेश ; स्मिति ; राजमार्ग ।

३५६ सुम्न, सुम्नी सुम्ने, सुम्नी सुम्ने (क) अ.—चुपचाप, यों ही, अकारण ।

संयुक्तं सुय, संयुक्तं सुयि (क) क्रि.—उच्छ्वास
छोड़ । सं.—उच्छ्वास, उसाँस ।

संयुक्तं सुयिल, संयुक्तं सुयिलु, संयुक्तं
सुयलु (क) सं.—उच्छ्वास ;

संयुक्तं सुर (सम्) सं.—देवता ; तैतीस की
संख्या ; सूर्य ; एक की संख्या ।

संयुक्तं सुरगि, संयुक्तं सुरगि (क) सं.—एक
पेड़ जिसके फूल सुगंधित होते हैं ।

संयुक्तं सुरगिरि (सम्) सं.—मेरु पर्वत ।

(१) संयुक्तं सुरंग (अ.दे.) सं.—सुरंग ; छेद ।

(२) संयुक्तं सुरंग (सम्) सं.—अच्छा रंग या
वर्ण ; अधिक प्रेम ।

संयुक्तं सुरत (सम्) सं.—अत्यंत हर्ष, बड़ी
प्रसन्नता ; संभोग, रति ।

संयुक्तं सुरधनु (सम्) सं.—इंद्रधनुष ।

संयुक्तं सुरपादप (सम्) सं.—कल्पवृक्ष ।

संयुक्तं सुरपुरि (सम्) सं.—देवलोक,
अमरावती ।

संयुक्तं सुरभि (सम्) सं.—सुगंध, महक ;
कामधेनु ; सरस्वती, भारती ; गाय, काम-
देव ; वन, अरण्य ; चंपक वृक्ष ; कदंब
वृक्ष ; शमी वृक्ष ; एक प्रकार की सुगंधित
घास ; वसंत ऋतु ।

संयुक्तं सुरराज (सम्) सं.—इंद्र, देवराज ।

संयुक्तं सुरवर्त्म (सम्) सं.—आकाश ;
वातावरण ।

संयुक्तं सुरले (सम्) सं.—तुलसी का पौधा ;
और एक पौधा ।

संयुक्तं सुरलि (क) सं.—लपेटी हुई वस्तु, गोल
क्रिया हुआ (कागज़ आदि) ।

(१) संयुक्तं सुरि (क) क्रि.—(पानी आदि) डाल ;
बरस ; चू ; पिरो ।

(२) संयुक्तं सुरि संयुक्तं सुरिगे (तद्) सं.—
छुरी ।

संयुक्तं सुरिवु, संयुक्तं सुरिवु (क) क्रि.—
(पानी आदि) डाल ।

संयुक्तं सुरिसु (क) क्रि.—बहा, बरसा ।

संयुक्तं सुरसु (क) सं.—केले के सूखे पत्ते ।

संयुक्तं सुरंगे (अ. दे) सं.—सुरंग ; दीवार
आदि बना छेद ।

संयुक्तं सुरुदु, संयुक्तं सुरुदु (क) क्रि.—
लपेट, गोल कर ; कुम्हाला सिकुड़ जा ।

संयुक्तं सुरुळ (क) क्रि.—सिकुड़ जा ; लपेट
जा ; कुम्हाला ।

संयुक्तं सुरुळि, संयुक्तं सुरुळे (क) सं.—
लपेटी हुई वस्तु ।

संयुक्तं सुरे (सम्) सं.—सुरा, मदिरा, शराब ।
संयुक्तं सुरि (क) क्रि.—‘सुर’ शब्द के साथ
पी ।

संयुक्तं सुरुं (क) क्रि.—सिकुड़ जा, संकुचित
हो । सं.—सिकुड़न ; छुरी ।

संयुक्तं सुरुं (क) सं.—प्रचुरता, आधिक्य,
समृद्धि ।

संयुक्तं सुलदु, संयुक्तं सुलिदु (क) कु —
छिलका । निकाल कर ।

संयुक्तं सुलि (क) क्रि —छिलका निकाल (जैसे
केले का छिलका निकालना) ; लट, दबोच ।
सं.—गाय, गौ ।

संयुक्तं सुलिये (क) सं.—लट, डाका ।

संयुक्तं सुलोचन (सम्) सं.—ऐनक,
चश्मा ।

संयुक्तं सुवर्ण (सम्) सं.—अच्छा रंग ;
सोना, हेम ; सोने का सिक्का, अशफ़ी,
मोहर ।

संयुक्तं सुव्वले, संयुक्तं सुव्वाले, संयुक्तं
सुव्वि (क) सं.—सुहागिन के गीत ।

संयुक्तं सुशीलते (सम्) सं.—अच्छा
स्वभाव या आचरण ।

संयुक्तं सुश्राव्य (सम्) वि.—कानों को
सुनने के लिए अच्छा लगनेवाला ।

संयुक्तं सुपुति (सम्) सं.—गहरी नींद ;
अज्ञान ।

संयुक्तं सुष्टु (सम्) वि.—अच्छा ; उत्तम,
सुंदर । अ.—अधिक, ठीक, सचमुच ।

संयुक्तं सुष्म (सम्) सं.—रस्सा, रस्सी ।

संयुक्तं सुसिर (तद्) सं.—सुषिरं (तद्) ;
छेद, सुराख ।

संयुक्तं सुसिल् (क) सं.—प्रातःकाल, उदय,
प्रभात ; रति. संभोग ।

संयुक्तं सुस्ति (अ.दे.) सं.—सुस्ती ; विलंब
देर, आलस्य ।

संयुक्तं सुस्तु (अ.दे.) सं.—आलस्य, शैथिल्य,
ढिलाई, कमज़ोरी ।

संयुक्तं सुहृद्, संयुक्तं सुहृद (सम्) सं.—
मित्र, दोस्त ।

संयुक्तं सुल्लुवु (क) सं.—शब्द, ध्वनि, आहट ;
पता, निशाना ।

संयुक्तं सुल्लु (क) सं.—झूठ, असत्य, मिथ्या ।

संयुक्तं सुलि (क) क्रि.—चारों ओर घूम,
मँडरा, भ्रमण कर, चकरा । सं.—भ्रमण ;
भँवर, जलावतं ; केले, नारियल आदि का
कोमल पत्ता ; कामचोर मनुष्य ; कपट,
धोखा ।

संयुक्तं सूकर (सम्) सं.—सुधर ।

संयुक्तं सूकळ (तद्) सं.—अड़ियल घोड़ा,
नटखट, पाजी ।

संयुक्तं सूक (क) वि.—उचित, योग्य ; सुंदर
ढंग से कहा हुआ ।

संयुक्तं सूक्ष्म (सम्) वि.—बहुत छोटा,
बारीक, अल्प, पतला, सुकुमार ; विलक्षण ;
उत्तम ; तीक्ष्ण ; चालक । सं.—अणु,
परमाणु ; परमात्मा ; महीन डोरा ; फरेब,
धोखा ।

संयुक्तं सुगरिसु, संयुक्तं सुगरिसु (क)
क्रि.—अकुला, घबड़ा जा, व्याकुल हो ;
अमित हो ।

संयुक्तं सूचक (सम्) वि.—सूचित करनेवाला
सं.—सुई ; भेदिया, जासूस ; अध्यापक,
शिक्षक ; तोरण ; वन, जंगल ; वित्त, धन ;
कुत्ता, बिल्ली ; वानर, बंदर ; शिवजी ।

संयुक्तं सूचने (सम्) सं.—सूचना, बतलाना ।

संयुक्तं सूचि (सम्) सं.—सुई छेदन ; तालिका,
सूची ; सैन्यव्यूह ; सूच्यग्र वनक्षेत्र ;
नृत्यविशेष ; नाटकीय हावभाव ।

संयुक्तं सूचिसु (सम्) क्रि.—सूचित कर,
बतला ।

सोष् सूजि (तद्) सं.—सुई ; सूच्यग्र ।
 सोष् सूटि (क) सं.—फुर्ती, तेजी, चपलता ।
 सोष् सूडग, सोष् सूडिग, सोष् सूडाय (क) सं.—कंगन, कडा ।
 सोष् सूडु (क) क्रि.—जूड़े में खोंस ले ।
 सं.—(घास आदि आ) गट्टा, बोझ ।
 सोष् सूत (सम्) सं.—सारथी, रथ हाँकनेवाला ;
 बंदी, मागध, भाट ; सूर्य ; वढ़ई ; पौरा-
 णिक ; पारा, पारद ।
 सोष् सूतक (सम्) सं.—जनन-मरण का
 आशौच, सूतक ।
 सोष् सूतिके (सम्) सं.—जच्चा स्त्री ।
 सोष् सूत्र (सम्) सं.—धागा, डोरी, सूत ;
 तार ; कठपुतली का तार या डोरी ; संक्षिप्त
 सारगर्भित पद या वचन ।
 सोष् सूत्रधार (सम्) सं.—सूत्रधार,
 नाट्यशाला का व्यवस्थापक, प्रधान नट ;
 धागा, डोरी ।
 सोष् सूदकर्म (सम्) सं.—रसोइये का
 काम ।
 सोष् सूनु (सम्) सं.—बच्चा ; बेटी या
 बेटा ; छोटा भाई ; सूर्य ।
 सोष् सूप (सम्) सं.—सूप, शोरवा, पकी
 हुई दाल ।
 सोष् सूर, सोष् सूरु (क) सं.—ओरी,
 झोलती ।
 सोष् सूरि (सम्) सं.—विद्वान्, पंडित ।
 सोष् सूरुक्, सोष् सूरुक् (क) क्रि.—
 शपथ कर । सं.—शपथ ।
 सोष् सूरे, सोष् सूरे (क) सं.—लट, डाका ।
 सोष् सूर्य (सम्) सं.—सूर्य, सूरज ; अर्क
 का पौधा ; बारह की संख्या ।—०००
 कांति (सम्) सं.—एक पुष्प ।
 सोष् सूल्, सोष् सूल् (क) सं.—गर्भ-
 स्थिति (विशेषतः जाववरो की)
 सोष् सूल्गाति, सोष् सूल्गिति सूल्गिति
 (तद्) सं.—प्रसवकारिणी दाई ।
 सोष् सूल् (क) सं.—दे. सोष्. साँस, श्वास ।

सोष् सूसक (क) सं.—रत्नगुच्छा, झालर,
 एक मस्तकाभरण ।
 सोष् सूसिके (क) सं.—प्रदर्शन, दिखाना ।
 सोष् सूसु (क) क्रि.—टपक, वूँद वूँद गिर ;
 चू ; छलक, उछल पड़, दीख, दिखाई,
 पड़ ; छलका ; छिड़का ।
 सोष् सूल्, सोष् सूल् (क) सं.—जोर की
 आवाज़, शोर-गुल ।
 सोष् सूल्यिसु, सोष् सूल्यिसु (क)
 क्रि.—सोष् सूल्यिसु—शोर-गुल कर ।
 सोष् सूले (तद्) सं.—रंडी, वेश्या ।
 सोष् सूल्, सोष् सूल् (क) सं.—बार,
 दुफ़ा ; बारी ।
 सोष् सूलायत, सोष् सूलायत
 (क) सं.—दूत का काम, राजदूत, संदेश-
 वाहक ।
 सोष् सूग (सम्) सं.—भिदिपाल, एक प्रकार
 की गदा ।
 सोष् सूमर (सम्) सं.—मृग विशेष, चमरी
 मृग ।
 सोष् सूष्टि (सम्) सं.—संसार की रचना ;
 रचना ; प्रकृति ।—००० कर्त (सम्) सं.—
 सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।
 सोष् सूंडु (क) सं.—कंदुक, गेंद ।
 सोष् सूंडु (क) क्रि.—घिस, रौंद, मल ;
 नाश कर । सं.—रौंदना आदि ।
 सोष् सूके (तद्) सं.—ताप, उष्णता, उमस ।
 सोष् सूक्कु (क) क्रि.—घुसेड़, धँसा ।
 सोष् सूक्के (क) सं.—००० चक्के—लकड़ी के
 छोटे-छोटे टुकड़े ।
 सोष् सूखे सोष् सूगे (तद्) सं.—दे. सूं.
 (१) सोष् सूजे (क) सं.—बाजरा ।
 (२) सोष् सूजे (तद्) सं.—सेज, शय्या ;
 विस्तर ।
 सोष् सूटे (क) क्रि.—झुक, षुँट ।
 सोष् सूट्टि (तद्) सं.—श्रेष्ठिन (तत्) ; बनिया ।
 सोष् सूडकु (क) सं.—अकड़पन, षुँट,
 घमंड ; गर्व ।

सोष् सूडवु (क) सं.—गर्व. घमंड ; वक्रता ।
 सोष् सूडु (क) क्रि.—सी (सीना) ।
 सोष् सूडे (क) क्रि.—मोटा हो, फूल जा ;
 घमंडी बन ; (रोगटे) खट हो (सर्दी के
 कारण) ; झुक ; सिकुड़ ; डर जा । सं.—
 वक्रता ; डर, भय, घबराहट ; एक पौधा ;
 वर्तन विशेष ।
 सोष् सूणसु (क) क्रि.—ईर्ष्या कर, डह कर ।
 सं.—क्रोध, रोष ; बदला ।
 सोष् सूणे (क) क्रि.—क्रुद्ध हो ; धो, साफ कर ।
 सोष् सूदगे (क) सं.—कूडा-करकट । (तद्)
 सं.—अरथी, टिकठी ।
 सोष् सूरगु (क) सं.—डुराई, हानि ; पाप,
 अपराध ; आँचल ।
 सोष् सूरे (क) सं.—अंजलि, चुल्हू ; मुट्टी भर,
 कारागार, जेल ।
 सोष् सूरगु, सोष् सूरगु (क) सं.—
 आँचल, अंचल ।
 सोष् सूरे (क) क्रि.—पीडा दे, दिक कर ;
 सिकोड़ । सं.—बंधन, कारागार ।
 सोष् सूेलदि, सोष् सूेलदि (क) सं.—
 मकड़ी ।
 सोष् सूेलवु (क) सं.—छुट्टी ; अनुमति ।
 सोष् सूेले (क) सं.—शोर-गुल ; प्रतिध्वनि,
 गूँज ; सोता, चश्मा ।
 सोष् सूेलत, सोष् सूेलवु (क) सं.—खिंचाव ;
 पानी का धार में खिंचाव ।
 सोष् सूेलसु (क) क्रि.—द्वेष कर, ईर्ष्या कर ;
 पिटवा ।
 सोष् सूेले (क) सं.—खींचना, खिंचाव ; छड़ी,
 दंड, बेंत । क्रि.—खींच, कर्षित कर ; उठा
 ले ; चढ़ा ; उखाड़ ; जल्दी बह ।
 सोष् सूेले (क) सं.—खरोचने से बना घाव ।
 सोष् सूेकडा (तद्) सं.—प्रतिशत ।
 सोष् सूेगुडसि, सोष् सूेगुडि, सोष् सूेगुडि
 सेगुडिते, सोष् सूेगुडि सेगुडि (क) सं.—
 मधुरक नामक पौधा ।
 सोष् सूेचन (सम्) सं.—सिंचन, छिड़काव,
 सिंचना, छिड़कना ; बाल्टी, डोलची ।

सोम सोम (सम्) सं.— एक लता, सोम-
वल्ली ; अमृत ; चंद्रमा ; किरण ; कपूर ;
कुवेर ; शिव ; यम ; मुनि, यति ; जल ;
पवन, वायु ; मन ।

सोमवलि सोमवल्लि (सम्) सं.—सोम
लता ।

सोमो सोमारि (क) सं.—आलसी या
सुस्त मनुष्य ।

सोमो सोर, सोमो सोरु (क) क्रि.—
चू, टपक, स्रवित हो ; गिर ; ढीला हो ;
गर्वहीन हों ।

सोमो सोरे (क) सं.—लौकी ; एक पक्षी ।

सोमो सोल्, सोमो सोलु (क) क्रि.—
हार जा । सं.—हार, पराजय ।

सोमो सोल (क) सं.—हार, पराजय ; हानि ।

सोमो सोलिसु (क) क्रि.—हरा, पराजित
कर ।

सोमो सोलुवे, सोमो सोलुमे (क) सं.—
हार, पराजय ।

सोमो सोले (क) सं.—केंचुली ; प्याज़ का
छिलका ।

सोमो सोवु (क) क्रि.—भगा, खदेड़ । सं.—
निशाना, चिह्न, पता ।

सोमो सोसु (तद्) सं.—छान (ग्रा.) ।

सोमो सोडे (क) सं.—निशाना, चिह्न, पता ।

सोमो सोदर्य (सम्) सं.—सुंदरता,
मनोहरता ।

सोमो सोकर्य (सम्) सं.—सुविधा ;
आसानी ।

सोमो सोगंधि (सम्) सं.—चंदन वृक्ष ।

सोमो सोजन्य (सम्) सं.—भलाई, भद्रता,
नेकी ; उदारता ; दया ।

सोमो सोटु (क) सं.—कलछुल, बड़ा चमचा ।

सोमो सोदामिनि (सम्) सं.—बिजली ;
एक अप्सरा का नाम ।

सोमो सोध (सम्) सं.—प्रासाद, महल, सफेदी
से पुता हुआ भवन ; चाँदी ; अमृत, पीयूष
सत्य ; तृण, घास ।

सोमो सोभग्य (सम्) सं.—अच्छा भाग्य ;
शुभत्व, कल्याणत्व ; सुहागिन होना, सुहागा ;
मनोहरता, सौंदर्य ।—सोमो वति (सम्)
सं.—सुहागिन स्त्री ।

सोमो सोम्य (सम्) वि.—चंद्रमा संबंधी,
सोम संबंधी, सुंदर, मनोहर ; मुलायम,
कोमल ; शुभ । सं.—सौंदर्य ; बुधग्रह ;
एक संवत्सर का नाम ।

सोमो सोरभ्य, सोमो सोरुभ्य (सम्)
सं.—सुगंध, महक, खुशबू ।

सोमो सोशील्य (सम्) सं.—सुशीलता,
अच्छा स्वभाव ।

सोमो स्कंद (सम्) सं.—कार्तिकेय ; शिव ;
शरीर ; राजा ; नदीतट ।

सोमो स्कंध (सम्) सं.—कंधा ; पेड़ की
ढाली या गुदा ।

सोमो स्कन्न (सम्) वि.—नीचे गिरा हुआ,
बाहर निकला हुआ ; टपका हुआ ; छिड़का
हुआ, सूखा हुआ ।

सोमो स्कलित (सम्) सं.—फिसला हुआ,
गिरा हुआ, ठोकर खाया हुआ ।

सोमो स्कंभ (सम्) सं.—खंभा ; पेड़ का
तना, धड़ ; दृढ़ता, कठोरता ; शील,
प्रकृति ; पर्वत ; मनुष्य ; एक सात्विक
भाव ।

सोमो स्कंभने (सम्) सं.—स्तंभन, रोक-
थाम, सुगंध होना, स्तब्ध रहना ।

सोमो स्तन (सम्) सं.—स्तन, कुच, स्त्री की
छाती ।

सोमो स्तवक (सम्) सं.—गुच्छा, गलदस्ता ।

सोमो स्तब्ध (सम्) वि.—रौंका हुआ, सुन्न,
गतिहीन, अचल ; दृढ़, कठोर, सख्त ।

सोमो स्तव (सम्) सं.—स्तोत्र, स्तुति, प्रशंसा ।

सोमो स्तिमित (सम्) वि.—शांत, निश्चल,
स्तब्ध ; कोमल, नरम ; गीला, तर, नम ।

सोमो स्थिति (सम्) सं.—शांति, मानसिक
स्थिरता ।

सोमो स्तुति (सम्) सं.—स्तव, प्रशंसा ।

सोमो स्तूप (सम्) सं.—राशि, ढेर ; टीला
बौद्धों के स्तूप या स्तंभ ।

सोमो स्तेन (सम्) सं.—चोर, डाकू ।

सोमो स्तोक् (सम्) अ.—स्वल्प, थोड़ा-सा,
कुछ ।

सोमो स्तोत्र (सम्) सं.—प्रशंसा, स्तव ।

सोमो स्तोम (सम्) सं.—प्रशंसा ; संग्रह,
समुदाय, राशि, समूह ।

सोमो स्त्री (सम्) सं.—स्त्री, औरत, नारी ;
जानवर की मादा ।

सोमो स्त्रीण (सम्) सं.—स्त्री स्वभाव,
स्त्रीत्व ; स्त्रीलिंग ।

सोमो स्थगित (सम्) सं.—वि.—ढका हुआ,
छिपा हुआ ।

सोमो स्थल, सोमो स्थल (सम्) सं.—जगह,
स्थान ; सूखी भूमि ; खेत, भूभाग ;
समुद्र या नदी का तट ; विषय, विवादग्रस्त
विषय ; भाग ।

सोमो स्थानु (सम्) सं.—शिवजी ; खंभा,
खूँटा, खूँटी ; घूपघड़ी का काँटा ; पेड़
का धड़ ; भाला, बरछा ।

सोमो स्थान (सम्) सं.—खड़े होने की क्रिया ।
अचलता, अटलता ; स्थल, जगह ; दशा,
स्थिति ; संबंध ; गाँव, कस्बा, जिला ;
पद, ओहदा ; पदार्थ, वस्तु ; वेदी ;
तीर्थस्थान ; अंतर ; विराम ; सादृश्य,
समानता ; रहने का स्थान, घर ; उचित
स्थान ।

सोमो स्थाने (सम्) सं.—स्थापना, क़ायम
करना, प्रतिष्ठा ।

सोमो स्थायि (सम्) वि.—खड़ा रहनेवाला,
स्थायी, टिकाऊ, दृढ़ । सं.—स्थायी भाव ।

सोमो स्थालि (सम्) सं.—बटलोई, बर्तन
विशेष ।

सोमो स्थायर (सम्) वि.—अटल, अचल,
स्थिर ; स्थापित ।

सोमो स्थिति (सम्) सं.—हालत, दशा,
परिस्थिति ; स्थिरता ।

४० स्थिर (सम्) वि.—अटल, अचल, दृढ, मजबूत; स्थायी. अनादि ।

४० स्थूल (सम्) वि.—मोटा; बड़ा; मजबूत दृढ; गाढ़ा; मूर्ख ।

४० स्थैर्य (सम्) सं.—स्थिरता, अचलता, दृढता, धैर्य ।

४० स्नान (सम्) सं.—स्नान, नहाना ।

४० स्निग्ध (सम्) वि.—चिकना, नेल से तर; चिपचिपा; प्यारा, प्रिय, मनोहर; कोमल, मुलायम; चमकीला ।

४० स्नेह (सम्) सं.—स्नेह, प्रेम, प्रीति; तेल; नमी; तरी; चिकनाहट ।

४० स्नेहित (सम्) सं.—मित्र, दोस्त ।

४० स्पन्दन (सम्) सं.—सिसकन, धड़कन; कंपन आंदोलन ।

४० स्पर्धे (सम्) सं.—स्पर्धा, होड़. प्रति-योगिता ।

४० स्पर्श (सम्) सं.—छूना, स्पर्श, लगाव; स्पर्शा का विषय; रोग, बीमारी; मुठ-भेड़; भेंट, दान; पवन, हवा; आकाश; संभोग, रति ।

४० स्पष्ट (सम्) वि.—स्पष्ट, साफ ।

४० कामना, अभिलाषा, उत्सुकता ।

४० स्फटिक (सम्) सं.—फटिक, विल्लौर ।

४० स्फुरण (सम्) सं.—अंगों में फड़कन; कंपकपी. थरथराहट; चमक, दमक; मन में आना ।

४० स्फुरिसु (सम्) क्रि.—मन को गोचर हो, मन में आ; प्रकाशित हो ।

४० स्फूर्ति (सम्) सं.—स्फूर्ति, स्फुरण; प्रकटन; प्राकट्य; धड़कन, थरथराहट ।

४० स्फोटन (सम्) सं.—फटना, तड़कन, अनाज फटकना; अंगुली फोडना या चटकाना ।

४० स्मर (सम्) सं.—कामदेव ।

४० स्मरणे (सम्) सं.—याद, स्मरण ।

४० स्मरिसु (सम्) क्रि.—स्मरण कर ।

४० स्मृति शास्त्र में दक्ष ब्राह्मण; एक संप्रदाय ।

४० स्मृति (सम्) सं.—याददाश्त, स्मरण करना, स्मरण; स्मृतिशास्त्र ।

४० स्मेर (सम्) सं.—मुस्कराहट । वि.—मुस्कानेवाला ।

४० स्पन्दन (सम्) सं.—रथ; जल. पानी; पवन, हवा; नदी; तिमिश का पैड़ ।

४० स्वामीक (सम्) सं.—मेघ. बादल; दीमक का मिट्टी का टीला; वृक्ष विशेष; समय, काल ।

४० स्यूत (सम्) वि.—सिला हुआ, छिदा हुआ । सं.—बोरा ।

४० स्वधरे (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

४० स्विसु (सम्) क्रि.—स्ववित हो, बह; टपक ।

४० स्वस्त (सम्) वि.—गिरा हुआ, टपका हुआ ।

४० स्रोत, स्रोतस् (सम्) सं.—जल प्रवाह, धार ।

४० स्वच्छ (सम्) सं.—साफ, विशुद्ध; सफेद; सुंदर; स्वस्थ ।

४० स्वतंत्रते (सम्) सं.—स्वतंत्रता, स्वातंत्र्य, आजादी ।

४० स्वधे (सम्) सं.—स्वधा, स्वतः प्रवृत्ति, स्वयंसिद्धता, स्वाभाविक चंचलता ।

४० स्वप्न (सम्) सं.—स्वप्न, सपना ।

४० स्वभाव (सम्) सं.—स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रकृति ।

४० स्वर (सम्) सं.—ध्वनि, आवाज, सरगम ।

४० स्वरूप (सम्) सं.—रूप, आकार प्रकृति । वि.—समान, सदृश; सुंदर ।

४० स्वर्ग (सम्) सं.—स्वर्ग, नाक, देवलोक ।

४० स्वर्ण (सम्) सं.—सोना, हेम, अशर्फी । — १० गिरि = मेरु पर्वत ।

४० स्वर्णदि, स्वर्णस्वर्णदि, स्वर्णस्वर्णदि (सम्) सं.—देवगंगा, आकाश-गंगा ।

४० स्वल्प (सम्) वि.—थोड़ा, कम; तुच्छ ।

४० स्वसृ (सम्) सं.—बहन ।

४० स्वस्ति (सम्) अ.—कुशल-क्षेम, भलाई, कल्याण आदि का सूचक अव्यय ।

४० स्वस्त्रीय (सम्) सं.—बहन का पुत्र, भौजा; साला, बहनोई ।

४० स्वागत (सम्) सं.—सुखागमन, अगवानी, स्वागत ।

४० स्वातंत्र्य (सम्) सं.—स्वतंत्रता, आजादी ।

४० स्वाद (सम्) सं.—जायका, स्वाद, रुचि, चखना ।

४० स्वादु (सम्) वि.—मीठा, मधुर; प्रिय, मनोहर ।

४० स्वाधीनते (सम्) सं.—स्वाधीन रहना, स्वतंत्रता ।

४० स्वाभाविक (सम्) वि.—सहज, स्वभाव संबंधी ।

४० स्वामि (सम्) सं.—प्रभु, मालिक; पति ।

४० स्वार्थ (सम्) सं.—स्वार्थ, खुदगर्जी ।

४० स्वीकरिसु (क) क्रि.—स्वीकार कर, अंगीकार कर ।

४० स्वेच्छे (सम्) सं.—स्वेच्छा, अपनी इच्छा; स्वतंत्रता ।

४० स्वेद (सम्) सं.—पसीना ।

४० स्वैर (सम्) वि.—स्वेच्छाचारी, मन-मौजी; मंद, धीमा; सुस्त ।

४० स्वैरते, स्वैरिते (सम्) सं.—स्वेच्छाचारिता ।

८६

८६ ह—कन्नड-वर्णमाला का अड़तालीसवाँ अक्षर ।

८६ ह (क) प्र.—क्रियार्थक संज्ञा के अंत में, जैसे — अ०सुअ इरिसुह—रखना, नै०सु नैरोह—कूदना, उछलना, अ०सुअ परीक्षि-सुह—परीक्षा करना आदि ।

ढंढुढु हंकार (तद्) सं.—अहंकार ।
 ढंढु हंग (क) सं.—नीलकंठ पक्षी ; भृंग
 (The fork-tailed strike) ।
 ढंढु हंगणे, ढंढु हंगिणे, ढंढु हंगु
 (क) सं.—उपकार, कृतज्ञता, एहसान,
 दाक्षिण्य ।
 ढंढु हंगरलु, ढंढु हंगरु (क) सं.—
 एक सदा हरा रहनेवाला वृक्ष ।
 ढंढु हंगामि (अ. दे.) सं.—हंगाम
 (फारसी) ; कुर्को की अस्थायी नियुक्ति ।
 ढंढु हंगामु (अ. दे.) सं.—हंगामा
 (फारसी) ।
 ढंढु हंगिसु (क) क्रि.—उलाहना दे ।
 ढंढु हंगु (क) सं.—दे. ढंढु हंगु ।
 ढंढु हंगुळिणे (क) सं.—स्टूल, तिपाई ।
 ढंढु हंगे (क) अ.—जैसे, तरह, भाँति ।
 ढंढु हंगिणे (क) सं.—बाँटना, बाँटवारा
 साधन, उपाय युक्ति ।
 ढंढु हंगिग (क) सं.—महावत ।
 ढंढु हंगु (क) क्रि.—बाँट, विभक्त कर ।
 सं.—खपरैल ।
 (१) ढंढु हंगर (क) सं.—छाजन, पंडाल,
 मंडप ।
 (२) ढंढु हंगर (तद्) सं.—पिंजड़ा ।
 ढंढु हंगर (क) सं.—बाँस की तीली ।
 ढंढु हंगि (तद्) सं.—पूनी, वर्तिका ।
 ढंढु हंगिणे (क) सं.—घर ।
 ढंढु हंगे (अ. दे.) सं.—हंडा ।
 (१) ढंढु हंग (सम्) अ.—हर्ष, आश्चर्य,
 दुःख, शोक आदि का सूचक अव्यय ।
 (२) ढंढु हंग (तद्) सं.—सोपान, सीढ़ी ;
 घाटी ।
 ढंढु हंगव्य (सम्) वि.—मारने योग्य,
 वध करने योग्य ।
 ढंढु हंगि (तद्) सं.—पंक्ति, कतार, श्रेणी ।
 ढंढु हंगु (सम्) वि.—मारनेवाला, हत्यारा ।
 ढंढु हंगर, ढंढु हंगर (क) सं.—
 दे. ढंढु हंगर ।

ढंढु हंगि (क) सं.—सुअर, शूकर, वराह ।
 ढंढु हंगु (क) सं.—चल, हिल, डुल ।
 ढंढु हंगे (क) सं.—भीरु, डरपोक ।
 ढंढु हंगु (क) सं.—गर्व, जादू ।
 ढंढु हंगे, ढंढु हंगि (क) सं.—एक स्थान
 का नाम ।
 ढंढु हंगल (क) सं.—आतुरता, उत्कट
 इच्छा ; चिंता ; तरसना ।
 ढंढु हंगलिसु (क) क्रि.—व्याकुल हो,
 चिंतित हो, तरस ; आशा कर, ध्यान दे ।
 ढंढु हंगलु (क) सं.—दे. ढंढु हंगलु ।
 ढंढु हंगु (क) सं.—बेल, लता ; रज्जु,
 रस्सी ।
 ढंढु हंग (सम्) सं.—हंस पक्षी ; आत्मा,
 जीवात्मा ; परमात्मा ; शिव ; विष्णु ;
 कामदेव ; चंद्रमा ; एक राक्षस का नाम ;
 मुनि ; महान् व्यक्ति ; कल्मष रहित पुरुष ;
 प्रकाश की किरण ; नेत्र, आँख ; घोड़ा ;
 अमलता, निर्मलता ; कमल ।
 ढंढु हंगल (सम्) सं.—हंस के
 कोमल पर ।
 ढंढु हंगले (सम्) सं.—हंसों की
 उडान विशेष ; एक वृत्त का नाम ।
 ढंढु हंगि (सम्) सं.—हंसी, मादा हंस ;
 एक वृत्त का नाम ।
 (१) ढंढु हंगे (क) सं.—काई ; दाँत का
 मैल ।
 (२) ढंढु हंगे (सम्) सं.—हंस, मराल ।
 ढंढु हंगीम (अ. दे.) सं.—हकीम (अरबी) ;
 वैद्य ।
 ढंढु हंगिणे, ढंढु हंगिणे (क) सं.—
 केशिनी नामक पौधा । (The plant
 Chrysopogon) ।
 ढंढु हंगल, ढंढु हंगल, ढंढु हंगलु
 (क) सं.—(धान्य) बटोरना, उछ ।
 ढंढु हंगलु, ढंढु हंगलु (क) सं.—
 बच्चे, लड़के ।
 ढंढु हंगले (क) सं.—परत का जमाव, बाहरी
 कड़ा हिस्सा, छिलका या परत ।
 ढंढु हंगि (तद्) सं.—पक्षी, पंछी, चिड़िया ।

(१) ढंढु हंगु (अ. दे.) सं.—हक अरबी) ;
 अधिकार ।
 (२) ढंढु हंगु (क) सं.—पपड़ी, खुटी ।
 ढंढु हंगे (क) सं.—गोशाला, गोठ ; आश्रय,
 सेज ।
 ढंढु हंग (क) सं.—(धान्य रखने के लिए)
 ज़मीन में बनाया गया गड्ढा, धान्यागार ।
 ढंढु हंगर (क) अ. और वि.—हल्का ;
 आसान ।
 ढंढु हंगरण (क) सं.—गपशप, बकबास ।
 ढंढु हंगरणिसु (क) क्रि.—गपशप कर,
 बकबास कर ।
 ढंढु हंगरणे (क) सं.—दे. ढंढु हंगरणे ।
 ढंढु हंगरु (क) सं.—हल्कापन, लाघवत्व
 बालों में की रुसी ।
 ढंढु हंगरु, ढंढु हंगरु (क) सं.—बाँस
 की तीली ।
 ढंढु हंगरे (क) सं.—ढंढु हंगरे ।
 ढंढु हंगल, ढंढु हंगलु (क) सं.—दिन,
 दिवस-काल, अह्न ।
 ढंढु हंगिनु (क) सं.—गोंद, निर्यास, वृक्षों
 का चिपचिपा रस ।
 ढंढु हंगुर (क) सं.—दे. ढंढु हंगुर ।
 ढंढु हंगे (क) सं.—शत्रु, दुश्मन ; शत्रुता,
 बैर । अ.—भाँति, तरह, जैसे ।
 ढंढु हंगे (क) सं.—शत्रुता, बैर ।
 ढंढु हंगे, ढंढु हंगे (क) सं.—गड्ढा,
 गर्त, ज़मीन में छेद ।
 ढंढु हंग (तद्) सं.—प्रग्रहः (तत्) ; रस्सी,
 रस्सा ।
 ढंढु हंगु (क) सं.—नीची ज़मीन ।
 ढंढु हंगे, ढंढु हंगे (क) वि. और
 अ.—हरा, हरा-भरा ; सरसब्ज ।
 ढंढु हंग (क) सं.—ओढ़नी ; चादर ;
 आवरण ।
 ढंढु हंगिसु (क) क्रि.—(बत्ती) जला ;
 लगावा ; कटवा ।
 ढंढु हंगु (क) क्रि.—लगा, चिपका ; नियुक्त
 कर, उपयोग में ला ; सुलगा, जला ; रोप ;
 लेपन कर ; छोटे-छोटे टुकड़े कर ।

हृत् हृत् (क) सं.—बेत, चीरा हुआ बाँस ।
हृत् हृत् (अ.दे.) सं.—हजाम, नाई ।
हृत् हृत् (क) सं.—बैठकखाना, बड़ा
हॉल ।

हृत् हृत् (तद्), हृत् हृत् (सम्) सं.—हृत्,
हृत्; जबरदस्ती ।

हृत् हृत्, हृत् हृत्, हृत् हृत्
(क) सं.—घर ।

हृत् हृत् (क) सं.—गोशाला; घर ।—हृत्
कार (क) सं.—गवाला, गोपालक ।

हृत् हृत्, हृत् हृत् (क) सं.—जहाज,
पोत ।

हृत् हृत् (क) सं.—सामने लाने की क्रिया ।
हृत् हृत् (क) सं.—धोबी, नाई आदि को
वर्ष में एक बार दिया जानेवाला अनाज ।

हृत् हृत् (क) सं.—तांबूल रखने की छोटी
थैली; नाई की थैली ।—हृत्=नाई,
हजाम ।

हृत् हृत् हृत् हृत् हृत् हृत् (क) सं.—
तबोली; नाई ।

हृत् हृत् (क) क्रि.—पा, प्राप्त कर. जन, जन्म
दे; सं.—दरवाजा ।

हृत् हृत्, हृत् हृत् (क) सं.—
दुग्ध, बदवू ।

हृत् हृत् (क) क्रि.—जन, जन्म दे; पा, प्राप्त
कर ।

हृत् हृत् हृत् हृत् (क) सं.—जन्म दे,
प्रसूति ।

हृत् हृत् (क) सं.—दलदल, पंक ।

(१) हृत् हृत् (क) सं.—पेड़ का स्कंध ।

(२) हृत् हृत् (क) सं.—पण: (तद्); पैसा,
धन ।

हृत् हृत् हृत् हृत् (क) सं.—पौधा,
नागमल्लिका ।

हृत् हृत् हृत् हृत् (क) सं.—धनवान ।

(१) हृत् हृत् (क) सं.—पेड़ का स्कंध ।
क्रि.—बुन; (वेणी का) शृंगार कर ।

(२) हृत् हृत् (क) सं.—ललाट, माथा ।
क्रि.—पीट; मार; काट दे, पीटा जा ।

हृत् हृत्, हृत् हृत् (क) क्रि.—
घात में रह; छिप रह, ताक में रह ।

हृत् हृत् (क) सं.—कंधी; घौद, हत्था ।

हृत् हृत्, हृत् हृत् (क) क्रि.—
दे हृत् हृत्

हृत् हृत् (क) सं.—पेड़ का स्कंध या तना;
ललाट, माथा; माँद, बाड़ा ।

हृत् हृत् (क) सं.—सूर्यकान्त पुष्प ।

हृत् हृत् (क) सं.—फल, पका फल ।
क्रि.—तैयार कर, साध ।

हृत् हृत् (क) सं.—दे. हृत् हृत्.
हृत् हृत् (सम्) वि.—चोटिल किया हुआ,
ताडित; नष्ट हुआ; हताश ।

(१) हृत् हृत् (क) अ.—पूरा-पूरा, सब ।
(२) हृत् हृत् (तद्) सं.—हस्त: (तद्);
हाथ, कर ।

हृत् हृत्, हृत् हृत्, हृत् हृत् (क)
सं.—बढ़ाई का रंदा ।

हृत् हृत् (क) सं.—दे. हृत् हृत्.
हृत् हृत्, हृत् हृत्, हृत् हृत्, हृत् हृत्
(क) अ.—पास, समीप, निकट ।

हृत् हृत् (क) सं.—कपास, रूई ।
हृत् हृत् (क) क्रि.—लगा, जोड़, चिपका
चढ़वा; बत्ती जला ।

हृत् हृत् (क) क्रि.—चढ़, ऊपर जा; लग;
चिपक जा; जल उठ, जलकर काला हो;
ऊपर उठ; लागू हो । वि.—दस की
संख्या ।

हृत् हृत् (क) सं.—सामीप्य; प्रियता;
स्नेह, मैत्री ।

हृत् हृत् (सम्) सं.—हत्या, वध ।

हृत् हृत् (क) सं.—उचित या योग्य स्थिति,
हथियार आदि की धार ठीक होने की
स्थिति ।

हृत् हृत् (क) सं.—कलाई, मणिबंध ।

हृत् हृत्, हृत् हृत् (क) सं.—उचित
या योग्य स्थिति, उचित ढंग या पद्धति,
सच्ची स्थिति; तीक्ष्णता, धार ।

हृत् हृत् (क) क्रि.—खोद, बिछा; खोदकर
बिल बना । सं.—नींव, बुनियाद ।

हृत् हृत्, हृत् हृत् (क)
क्रि.—पुड़िया या चूर्ण करा; दबाकर
मुलायम कर ।

हृत् हृत्, हृत् हृत् (क) सं.—
कच्चा ताज़ा फल; ढंग, रीति; कलाई ।

हृत् हृत् (क) सं.—कुशल-क्षेम, मंगल,
शुभ ।

हृत् हृत् (क) सं.—सुखी मनुष्य ।

हृत् हृत् (क) सं.—बाज़; गिद्ध; चील ।
(अ. दे.) सं.—सीमा, हद ।

हृत् हृत् (क) सं.—वेद का भाग या
छंद ।

हृत् हृत् (क) क्रि.—टपक, बूँद-बूँद गिर;
पक, परिणत हो, तैयार हो । सं.—बूँद,
जलकण ।

हृत् हृत् (क) क्रि.—बूँद बूँद गिर;
टपक ।

हृत् हृत् (क) सं.—हनुमान जी ।

हृत् हृत्, हृत् हृत् (क) सं.—
पापड़ ।

हृत् हृत् (क) सं.—मांस का टुकड़ा ।

हृत् हृत् (क) सं.—प्रभा (तद्); कांति ।
हृत् हृत् (क) सं.—त्योहार; उत्सव,
पर्व ।

हृत् हृत् (क) क्रि.—फैला, विस्तार
कर, (चढ़वा) ।

हृत् हृत् (क) क्रि.—फैल, ऊपर चढ़ (जैसे
फैलती या चढ़ती हैं) ।

हृत् हृत् (क) सं.—फैलाव, विस्तार ।

हृत् हृत् (क) सं.—दे. हृत् हृत्.
हृत् हृत् (क) सं.—बेत ।

हृत् हृत् (क) सं.—मूर्छा, बेहोशी ।
हृत् हृत् (क) क्रि.—रस्ती बट । सं.—
गर्व, घमंड ।

ಹೆಮ್ಮುಗೆ ಹಮ್ಮುಗೆ (ಕ) ಸಂ. — ರಸ್ತೆ, ಡೋರಾ, ಬೆಂಚು.

ಹೆಯು ಹಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಘೋಡಾ ; ಸಾತ ಕೆ ಸಂಖ್ಯಾ ಕಾ ಧೌತಕ ।

ಹೆಯನು ಹಯನು, ಹೆಯನು ಹೆಯನು (ಕ?) ಸಂ. — ದೂಧ ಸೇ ಬನೇ ಪದಾರ್ಥ ; ದುಧಾರ ಗಾಯ ; ಜಲ, ಪಾನಿ ।

ಹೆಯಲು ಹಯಲು, ಹೆಯಲು ಹಯಲು (ಕ) ಸಂ. — ವಿಭ್ರಮ, ಗಡಬಡಿ, ಧವರಾಹಡ ।

ಹೆಯಲು ಹಯಲು (ಕ) ಸಂ. — ಬಚ್ಚೆ, ಲಡಕೆ ಔರ ಲಡಕಿಯಾ ।

ಹೆಯು ಹಯ (ಕ) ಸಂ. — ಲಡಕಾ ।

(೧) ಹೆ ಹರ (ಕ) ವಿ. — ಚೌಡಾ, ವಿಸ್ತುತ ; ದೌಡನೇವಾಲಾ, ಬಹನೇವಾಲಾ ।

(೨) ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಶಿವ ; ಗ್ಯಾರಹ ಕೆ ಸಂಖ್ಯಾ । ವಿ. — ಹರನೇವಾಲಾ, ದೂರ ಕರನೇವಾಲಾ ; ಹರನೇವಾಲಾ ।

ಹೆಹೆ ಹರಹೆ (ಕ) ಸಂ. — ಮನೌತಿ, ವಿನತಿ ; ಆಶೀರ್ವಾದ, ಸ್ವಸ್ತಿ ।

ಹೆಗು ಹರಗು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಜೌತಕರ ಬೋನೇ ಯೌಗ್ಯ ಬನಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಗಪ್ಪೆ ಲಡ ; ಬಕವಾದ ಕರ, ಬಕಬಕ ಕರ ।

ಹೆಹೆ ಹರಹೆ (ಕ) ಸಂ. — ಬಕವಾದ, ಗಪ ; ವ್ಯಂಗ್ಯ ಲೆಖ ।

ಹೆಹೆ ಹರಹೆ (ಕ) ಸಂ. — ಕಲಾಡೆ, ನಲಿ ; ಸೋನೇ ಔರ ರಣೆ ಸೇ ಬನಾ ಕಲಾಡೆ ಕಾ ಕಂಗನ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫೆಲಾ, ಪ್ರಸಾರ ಕರ, ವ್ಯಾಸ ಕರ, ವಿಡಾ ; ಖರೊಚ । ಸಂ. — ದೇ. ಹರಹೆ.

ಹೆಹು ಹರಹು (ತದ್) ಸಂ. — ಪ್ರಾಣ, ಜಾನ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಬನಿಯಾ, ವ್ಯಾಪಾರಿ, ವಣಿಕ ।

ಹೆಹೆ ಹರಹೆ, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ವ್ಯಾಪಾರ, ವಾಣಿಜ್ಯ ।

ಹೆಹೆ ಹರಹೆ (ಕ) ಸಂ. — ಪ್ರಕಟನ, ಪ್ರಕಾಶನ, ದಿಖಾವಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಮಿಡೆ ಕಾ ಹೆಡಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫೆಲ ; ಫೆಲಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಆಶಿಷ ದೇ, ದುಡಾ ದೇ ; ಸಂಕಲ್ಪ ಕರ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫೆಲಾ, ವ್ಯಾಸ ಕರ, ವಿಡಾ । ಸಂ. — ಫೆಲಾವ-ವಿಡಾನಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಜಾರ, ವ್ಯಭಿಚಾರಿ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಕಂಕಡ, ರತ, ಬಿಲೌರ ; ಉಂಡೆ ಕಾ ಪೌಡಾ ।

(೧) ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಬಹ, ಪ್ರವಾಹಿತ ಡೋ ; ಫಾಡ ; ದೌಡ, ಭಾಗ, ಹಡ ; ಅಂತ ತಕ ಪಹುಚ ; ಫೆಲ ।

(೨) ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ವಿಷ್ಣು, ಕೃಷ್ಣ ; ಸೂರ್ಯ ; ಚಂದ್ರಮಾ ; ಜಲ, ಪಾನಿ ; ವಾನರ ; ಘೋಡಾ ; ಸಿಂಹ ; ಶುಕ, ತೊತಾ ; ಮೊರ, ಮಯೂರ ; ಮೆಂಡಕ ; ಸಮುದ್ರ ; ದಿಶಾ ; ಸೌಪ ; ತೀರ, ಬಾಣ ; ಕೊಶ, ಬೆಂಡಾರ ; ಗಾಡಿ, ಶಕಟ ; ಇಂದ್ರ ; ಬ್ರಹ್ಮಾ ; ಯಮ ; ವಾಯು ; ಆಠ ಕೆ ಸಂಖ್ಯಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಸಂदेशವಾಹಕ ; ಜಾಸೂಸ, ಭೇದಿಯಾ ।

ಹೆಹೆ ಹರಹೆ (ಕ) ಸಂ. — ವ್ರತ, ಮನೌತಿ ; ಉಕ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ ಹೆಗು ।

ಹೆಗು ಹರಗು (ಕ) ಸಂ. — ಕಿನಾರಾ ; ಉಪಾಂತ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಸಮ್) ಸಂ. — ಹಿರನ, ಬಾರಹಸಿಂಗಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಸಮ್) ವಿ. — ಹರಾ ; ಪಿಲಾ । ಸಂ. — ಹರಾ ರಂಗ ; ತಲವಾರ ಆದಿ ಕೆ ಧಾರ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಸಮ್) ಸಂ. — ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಸಮ್) ಸಂ. — ಹರಿದ್ರಾ ; ಹಲ್ದಿ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸಿಂಹಾಸನ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಸಮ್) ಸಂ. — ಲಕ್ಷ್ಮಿ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಸಮೂಹ, ಸಮುದಾಯ ; ಕಾರ್ಯ, ವ್ಯವಹಾರ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹರಹೆ.

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಥಾಲಿ (ಮಿಡೆ ಯಾ ಲಕಡಿ ಕೆ) ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹೆಹು ಹರಹು.

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ದೇ. ಹರಹು. ಬಹವಾ, ಬಹನೇ ದೇ ; ಹಡಾ, ದೂರ ಕರ, ನಾಶ ಕರ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಧಾರ, ಧಾರಾ, ಪ್ರವಾಹ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹರಹೆ.

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಪ್ರಕಾರ, ಡೆಗ, ಸಾಧನ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ತದ್) ಸಂ. — ಹರಹೆ, ಆನಂದ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫೆಲ. ವ್ಯಾಸ ಡೋ, ಬಿಡ ; ಚಮಕ, ಪ್ರಕಾಶಿತ ಡೋ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಡೋ । ಸಂ. — ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ವಿ. — ಫಡಾ ಡುಡಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫಾಡ ; ಫಡ ಜಾ ; ಫಾಡಾ ಜಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಆಯುಧೆ ಕೆ ಧಾರ ಯಾ ತೀಕ್ಷಣತಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಡೋಲ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸೌಧ, ಪ್ರಾಸಾದ, ಮಹಲ, ಭವನ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಸಮ್) ಸಂ. — ಆನಂದ, ಖುಷಿ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ದೌತ, ದಶನ, ದಂತ ।

(೧) ಹೆ ಹರ (ಕ) ಅ. — ಕಡೆ, ಅನೇಕ ; ಕುಡ ।

(೨) ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಹಲ, ಲಾಂಗಲ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ವೃಕ್ಷ ಪರ ಚಡನಾ । ಸಂ. — ಶರೀರ ಕಾ ಅಂಗ, ಗಾಲ ಕಾ ನಿಚಲಾ ಭಾಗ ।

ಹೆಹು ಹರಹು, ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ಉಕ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ ಹೆಗು ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ತದ್) ಸಂ. — ಫಲಕ (ತದ್) ; ತಖ್ತಾ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ನಿಂದಾ ಕರ, ನಾಶ ಕರ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹೆಹು ಹರಹು.

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹೆಹು ಹರಹು. ಅ. — ಕಡೆ ।

ಹೆಹು ಹರಹು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಬಿಲಖ, ರೋ ; ಕರಾಹ ।

हल्का

हल्का (अ. दे.) सं.—नीचता, नीच पुरुष ।

हलण (क?) सं.—जीन ।

हलर (क) सं.—कुछ लोग ; कई लोग ।

हल्लि (क) सं.—छिपकली ।

हल्लु (क) सं.—दे. हल्ल.

हल्ले (क) सं.—कान का कोमल भाग ; दोते आदि उलटाने के लिए उपयोगी कलहल का एक उपकरण ।

हल्लिसु (क) क्रि.—तैयारी कर, प्रबंध कर, व्यवस्था कर ।

हल्लन (सम्) सं.—हवन, होम ।

हल्ल (तद्) सं.—प्रवाल, विद्रुम, मूंगा ।

हल्ला (अ. दे.) सं.—हवा, पवन । समीर ।

हल्लदार, हल्लार (अ. दे.) सं.—हवालदार ।

हल्लस्सु (तद्) सं.—हवन करते समय अग्नि में डाली जानेवाली वस्तु ; धी ।

हल्लु, हल्लु (क) अ.—हाँ ।

हल्ल (सम्) वि.—होम करने योग्य । सं.—धी, देवताओं के लिए चढ़ावा ।

हल्लने (क) अ.—अकस्मात्, हठात् ।

हल्लन, हल्लन, हल्लन, हल्लन (क) वि.—अच्छा, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ ; सुंदर ।

हल्लर, हल्लर (क) सं.—हरा, हरा रंग ।

हल्लु, हल्लु (क) सं.—भूख, क्षुधा ।

हल्लि (क) वि.—हरा, ताज़ा, कच्चा, गीला, नम । क्रि.—भूख लग ।

हल्लिके (क) सं.—संन्यासी का वस्त्र विशेष ।

हल्लिगे (क) सं.—किसान और भूस्वामी का हिस्सा या भाग ।

हल्लित (सम्) वि.—हँसता हुआ, हँसा हुआ ।

हल्लिर (क) सं.—दे. हल्लर.

हल्लिवि, हल्लिवु, हल्लिवे (क) सं.—भूख, क्षुधा ।

हल्लुकु (क) सं.—गंध, दुर्गंध ।

हल्लुब, हल्लुब (क) सं.—हारीत पक्षी ।

हल्लुबे, हल्लुबे (क) सं.—झोली ।

हल्लुबु, हल्लुबु, हल्लुबु (तद्) सं.—गाय ।

हल्लुबु, हल्लुबु (क) सं.—बच्चा, शिशु, बालक ।

हल्लुबे (क) सं.—मंगल आसन ; विद्युत् ।

हल्लुबु (सम्) सं.—हाथ ; सूँड ; एक हाथ का माप ; परिमाण ।

हल्लुबु (सम्) सं.—हाथी ; एक राजा का नाम ।

हल्लुबु (सम्) सं.—हस्तिनापुर ।

हल्लुबु (सम्) सं.—हस्तिनी, चार प्रकार की स्त्रियों में से एक ; हथिनी ।

हल्लुबु (क) वि.—पुराना, प्राचीन ।

हल्लुबु (क) सं.—चमक, दमक, कांति ।

हल्लुबु (क) क्रि.—पीट, मार ; निरोध कर ।

हल्लुबु (तद्) सं.—पीला रंग ।

हल्लुबु (क) सं.—छोटा टुकड़ा, चूर ।

हल्लुबु (क) सं.—गड्ढा, गर्त ।

हल्लुबु (क) सं.—गाँव, ग्राम ।

हल्लुबु (क) वि.—पुराना, प्राचीन । सं.—वेकार पौधे ।

हल्लुबु (क) सं.—नाश ; वह जो नष्ट हो गया हो ।

हल्लुबु (क) क्रि.—हल्लुबु हल्लुबु (क) क्रि.—बासी हो ।

हल्लुबु (क) वि.—पुराना, प्राचीन, जीर्ण (हल्लुबु भी लिखा जाता है) ।

हल्लुबु (क) सं.—प्राचीनता ; प्राचीन परंपरा, रूढ़ि या उक्ति ।

हल्लुबु (क) क्रि.—निंदा कर, गाली दे । सं.—गाली, निंदा ।

हल्लुबु (क) सं.—गाली निंदा ।

हल्लुबु (क) सं.—वन, जंगल ।

हल्लुबु (क) वि.—पुराना, प्राचीन ।

हल्लुबु (क) सं.—फलों का धुँएँ में रखने की क्रिया ।

हल्लुबु (क) अ.—जैसे, वैसे, उस भाँति ।

हल्लुबु (क) सं.—सर्प, साँप ।

हल्लुबु (क) सं.—दे. हल्लुबु.

हल्लुबु (क) क्रि.—डाल, रख ; लगा, रोप ; बो, उँडेल ; भर ; फेंक ; दे, छोड़ ; गिरा ; परोस, मत्थे मढ़ ।

हल्लुबु (क) सं.—करेला, करैला ।

हल्लुबु (क) अ.—दे. हल्लुबु.

हल्लुबु (क) सं.—कई, शैवल ।

हल्लुबु (सम्) सं.—सोना ।

हल्लुबु (क) सं.—गीत, गाना ।

हल्लुबु (क) क्रि.—गीत गवा ।

हल्लुबु (क) क्रि.—गीत गा । सं.—गाना, गीत ; ढंग, रीति ; कष्ट, तकलीफ ।

हल्लुबु (क) सं.—व्यभिचार । गति (क) सं.—व्यभिचारिणी स्त्री ।

हल्लुबु (क) सं.—मार्ग, रास्ता, पथ ।

हल्लुबु (क) कृ.—पार कर, से होते हुए ।

हल्लुबु (क) क्रि.—जा, पार कर जा, कूद, उड़, फाँद, से होकर जा ; चहा ; ढकेल ; सींग से मार (जैसे-गाय करती है) । वि.—सुंदर, अच्छा । सं.—पाल ।

का०००० हायिसु (क) क्रि.—लगा, बहा, फैला ।
 का०००० हायु (क) क्रि.—दे. का०००० ।
 का०००० हार, का०००० हारु (क) क्रि.—उछल, कूद, फुदक ; उड़ ; चाह, अभिलाषा कर ।
 का०००० हार (सम्) सं.—हार, मोतियों का हार ।
 का०००० हारक, का०००० हारकु (क) सं.—कोद्रव, कोदों अनाज ।
 का०००० हारके, का०००० हारैके (क) सं.—कामना, शुभकामना ।
 का०००० हार्यसु (क) क्रि.—शुभ कामना प्रकट कर ; अभिलाषा कर ।
 का०००० हारव, का०००० हारव (क) सं.—ब्राह्मण ।—०३ गिति—छी. लिं. ।
 का०००० हारविसु (क) क्रि.—दे. का०००० ।
 का०००० हारिद्र (सम्) सं.—पीला रंग ; कंदव वृक्ष ।
 का०००० हारीत (सम्) सं.—कवूतर विशेष ।
 का०००० हारु (क) क्रि.—दे. का०००० ।
 का०००० हारे (तद्) सं.—सबल ।
 का०००० हारिसु, का०००० हारिसु (क) क्रि.—उड़ा ; कुदा ; दूर कर, हटा ; निकाल ।
 का०००० हारु (क) क्रि.—दे. का०००० ।
 का०००० हाल, का०००० हालु (क) सं.—दूध, क्षीर ; वृक्षों का सफ़ेद रस ।
 का०००० हालुकु, का०००० हालेहकि(क) सं.—सगुन की चिड़िया ।
 का०००० हाले (क) सं.—कान का कोमल भाग ; सप्तपणी वृक्ष ; एक लता ।
 का०००० हावडिग का०००० हावाडिग (क) सं.—संपेरा ।
 का०००० हावळि (क) सं.—उपद्रव, पीडा, संकट ।
 का०००० हाविगे, का०००० हाबुगे (तद्) सं.—पादुका ।
 का०००० हावु (क) सं.—साँप ।
 का०००० हासिके, का०००० हासिगे (क) सं.—विस्तर, बिछौना, शय्या ।

का०००० हासु (क) क्रि.—फैला, बिछा, व्याप्त कर, रख । सं.—वह जो बिछा हुआ हो, तल्प, शय्या ; ताना ; रंग-बिरंगा कपड़ा ।
 का०००० हासुगल्लु (क) सं.—(जमीन पर फैलाने का) पत्थर ।
 का०००० हासे (क) सं.—सुंदर आसन ।
 का०००० हास्य (सम्) सं.—हँसी ; हर्ष, उल्लास, आमोद, प्रमोद ।
 का०००० हाहाकार, का०००० हाहारव (सम्) सं.—चीत्कार ।
 का०००० हाहे (क) सं.—पुतली ; आँख की पुतली ; पाल, पट ।
 का०००० हालि, का०००० हाले (क) सं.—पत्तर, कागज का तख्ता ।
 का०००० हाल [का०००० हाल] (क) वि.—विनष्ट, बरबाद, भग्न ।
 का०००० हालत, का०००० हालित [का०००० हालत] (क) वि.—योग्य, उचित, प्रामाणिक ।
 का०००० हालि (क) सं.—क्रम, रीति, बारी ।
 का०००० हालु (क) वि.—दे. का०००० ।
 का०००० हिं (क) वि.—पीछे, पीछे का ।
 का०००० हिंगडिसु (तद्) क्रि.—विभक्त कर, बाँट ।
 का०००० हिंगिसु (क) क्रि.—बुझा, शांत कर, दूर कर, सोचने दे ।
 का०००० हिंगु (क) क्रि.—बुझ, शांत, पीछे हट, दूर हो, सूख ।
 का०००० हिंगु (सम्) सं.—हींग, हींग-का पौधा ।
 का०००० हिंवे (क) अ.—उसके बाद ।
 का०००० हिंजरे (क) सं.—चाँदी ।
 का०००० हिंजु (क) क्रि.—पींज, धुन ।
 का०००० हिंटे (क) सं.—मिट्टी का ढोंका, लोँदा ।
 का०००० हिंडे (क) सं.—खली, पिण्याक ।
 का०००० हिंडु (क) क्रि.—निचोड़, हाथ से दबा ; चकोटी काट । सं.—समूह, झुंड, गल्ला ।
 का०००० हिंदल, का०००० हिंदल, का०००० हिंदण का०००० हिंदु, का०००० हिंदिन (क) वि.—पीछे का, पिछला ; पुराना ; बाद का ।

का०००० हिंटे (क) अ.—पीछे ; पश्चात्, बाद में ।
 का०००० हिंपु (क) सं.—बड़प्पन, महानता, बड़पाई, उन्नति ।
 का०००० हिंकलु (क) सं.—खेत का छोटा नाला ।
 का०००० हिंकु (क) क्रि.—छोट, कंघी कर ।
 का०००० हिंके (क) सं.—बीट ।
 का०००० हिंगलिसु (क) क्रि.—अलगा, छोट, अनाज में कंकड निकाल ; थैली का मुँह खोल ।
 का०००० हिंगिसु (क) क्रि.—अलगा छोट ; मंद कर, कम कर ; विस्तृत कर ।
 का०००० हिंगु (क) क्रि.—फैल, विस्तृत हो ; फूल, फूले न समा ; अलग हो, छंट जा ।
 का०००० हिचिकु, का०००० हिचुकु, (क) क्रि.—दवा, घोट ।
 का०००० हिट्टु (क) सं.—आटा ।
 का०००० हिडक (क) सं.—पकड़नेवाला ।
 का०००० हिडत (क) सं.—पकड़ना, पकड़ ; मितव्यय ।
 का०००० हिडलु, का०००० हिडलु (क) सं.—बुहारी, झाड़ी ।
 का०००० हिडि (क) क्रि.—पकड़ ; धर ; घेर, हाथ में ले ; छीन, रोक ; लग । सं.—मूठ ; मुष्टि ।
 का०००० हिडिके (क) सं.—मुट्टी, मुठिया ; पकड़ ।
 का०००० हिडिकु (क) सं.—अंडकोश ।
 का०००० हिडिके (क) सं.—मुट्टी ; मूठ ।
 का०००० हिडिगलु (क) सं.—बुहारी, झाड़ ।
 का०००० हिडित (क) सं.—दे. हिडत ।
 का०००० हिडिसु (क) क्रि.—पकड़ा, पकड़वा ; समा, धरा ।
 का०००० हिडुवळिदार (क) सं.—प्रभु, मालिक ।
 का०००० हिणि (क) सं.—ककुद, बैल का कव्व ।
 का०००० हिणिल, का०००० हिणिलु (क) सं.—प्रत्यंचा, धनुष की डोरी ; चोटी, जूड़ा, कबरी ; मोरपंख ।

ॐ हित (सम्) वि.—उपयुक्त, उचित, ठीक, अच्छा, उपयोगी। सं.—हित; लाभ, फायदा।

ॐ हित्, ॐ हित्त, ॐ हित्तल, ॐ हित्तल (क) सं.—घर का पिछवाड़ा।

ॐ हित्तिक, ॐ हित्तिके, ॐ हित्तिके (क) सं.—घर का पीतल।

ॐ हित्तिक (क) क्रि.—भिगोये दाने का छिलका दबाकर निकाल।

ॐ हित्तिक (क) सं.—पुंख।

ॐ हित्तिलि ॐ हित्तिलि (तद्) सं.—पिपिली, बड़ा पीपल।

ॐ हित्तिले (क) सं.—खली; निस्सार वस्तु, छिलका, चूसने के बाद बचा हुआ अंश।

ॐ हित्तिले (सम्) वि.—ठंडा, शीतल। सं.—कोहरा, हिम, तुषार; चंद्रमा; नृप, राजा; अमृत; जल; पानी; घनसार, कपूर; कीर्ति; सफेद; लाल; प्रधान।

ॐ हित्तिलेसु, ॐ हित्तिलेसु हीया-ल्लिसु (क) क्रि.—नीचा दिखा, घृणित कर; निंदा कर।

ॐ हित्तिलेसु (सम्) सं.—सोना, संपत्ति, धन।—ॐ हित्तिलेसु (सम्) सं.—ब्रह्मा।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—नारंगी।

ॐ हित्तिले (क) वि.—बड़ा। क्रि.—तोड़, टुकड़े कर; नाश कर; बाहर खींच, म्यान से निकाल।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—बढ़पन, महानता।

ॐ हित्तिले (क) वि.—बड़ा।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—हाथ से (फल आदि) दबा।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—दे. ॐ हित्तिलेके.

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—दरार।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—ककुद्, बैल का कुम्भ। ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—जड़, अंकुर।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—रस निकाल, दवाकर रस निकाल।

ॐ हित्तिलेके (क) अ.—दे. ॐ हित्तिलेके.

ॐ हित्तिलेके (क) अ.—इस प्रकार, इस ढंग से, इस तरह।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—वतिया।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—तैर; बह; घसीट; तान।

ॐ हित्तिलेके (सम्) वि.—स्यक्त, छोड़ा हुआ, वर्जित; अल्पतर; नीच।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—चूस, रस पी। सं.—एक अभूषण।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—तुरई।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—मोरपंख, मोरपंख की आँख।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—मुर्गा।

(१) ॐ हित्तिलेके (अ. दे.) सं.—हुंडी।

(२) ॐ हित्तिलेके (क) सं.—छोटा गाँव।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—सुँह में फफोला या फुंसी।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—गाड़; दफन कर।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—गड़वा।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—घुस, प्रवेश कर।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—खिचड़ी।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—गर्वीला या घमंडी मनुष्य।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—पागल आदमी। ॐ हित्तिलेके—पागल स्त्री।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—पागलपन।—ॐ हित्तिलेके तन=पागलपन।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—छत्ता।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—पहनावा, वस्त्र; नाड़ी।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—उत्पन्न कर, जन्म

दे, जन, पदा कर।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—पैदा हो, जन्म ले, उत्पन्न हो; निकल। सं.—जन्म, उत्पत्ति; दर्धी, लाठ का चमचा।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—उत्पत्ति, उपलब्धि, बगीचे या खेत से प्राप्त होनेवाली वस्तु।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—हूँ, तलाश कर, खोज, जाँच-पड़ताल कर।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—लड़का, बालक—ॐ हित्तिलेके (क) सं.—लड़कपन, (बचपन); लड़के का-सा स्वभाव।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—लड़की, बालिका।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—पुड़ीया, चूर्ण, बुकनी, धूल।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—दे. ॐ हित्तिलेके.

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—लड़कपन। क्रि.—झाड़ दे।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—इमली।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—घाव, फुंसी, फोड़ा।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—पूर्णमा, पूनम।

ॐ हित्तिलेके (सम्) वि.—हवन किया हुआ, होम किया हुआ।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—बल्मीक, बौली।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—घुस, गड़ जा, समा।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—धँसा, भरा।

ॐ हित्तिलेके (क) सं.—जरायु।

ॐ हित्तिलेके (क) क्रि.—समा; छिप, गुप्त रह; छिपाया जा। सं.—साक्षा; रक्षण, रक्षा।

ॐ हित्तिलेके, ॐ हित्तिलेके (क) सं.—स्नेह, रिश्ता, नाता।

हृद्दे (अ. दे.) सं.—ओहदा (अरबी) ; स्थान, पद ।

हृद् (क) सं.—फूल, पुष्प ।

हृद्बु (तद्) सं.—भू, भौह. भृकुटी ।

हृद्मस् (अ. दे.) सं.—उत्साह ; जोश, गर्व ; उत्तेजना ।

हृद्, हृद्दिय (क) क्रि.—बरस, डाल ; मार, पीट । हृद्दिय (क) सं.—भूसा, भूसी ।

हृद्दिय (क) सं.—शोर-गुल ; चीत्कार, चिल्लाहट ।

हृद्दिय (क) क्रि.—डलवा, पिटवा ।

हृद्दिय (क) सं.—दे. हृद्दिय ।

हृद्, हृद्दिय (क) वि.—रुक्ष, कड़ा, खुरखुरा ।

हृद्कल (क) सं.—चबेना, भूजा चटपटा ।

हृद्कल (क) सं.—कुलित्य, कुलथी ।

हृद्कल (क) क्रि.—भून, भूज । सं.—तिरछा किया हुआ, डोरी, रस्सी, धागा ; रीठ की हड्डी ।

हृद्कल (क) सं.—ईश्यालु व्यक्ति ।

हृद्कल (क) सं.—एक चर्म रोग, खुजली, चर्म की रूक्षता ; जुल-पित्ती नामक रोग ।

हृद्कल (क) सं.—दे. हृद्कल ।

हृद्कल (क) सं.—सार, सत्व ।

हृद्कल (क) सं.—दे. हृद्कल ।

हृद्कल (क) सं.—तृण, घास, पुआल ।

हृद्कल (क) क्रि.—पता लग, प्रकाश में आ ।

हृद्कल (क) सं.—समृद्धि ; ऐश्वर्य ।

हृद्कल (क) सं.—बाध, व्याघ्र ।

हृद्कल (क) सं.—बाध, व्याघ्र ।

हृद्कल (क) सं.—स्यंदग या तिनिष का पेड़ ।

हृद्कल (क) क्रि.—समृद्ध हो, समुन्नत हो ।

हृद्कल (क) सं.—दे. हृद्कल ।

हृद्कल (क) सं.—दे. हृद्कल ।

हृद्कल (क) सं.—हिरन, हरिणी ।

हृद्कल (क) सं.—हिरन, हरिणी ।

हृद्कल (क) सं.—होशियार, बुद्धिमान, उत्साही, सजग ।

हृद्कल (क) सं.—झूठ, असत्य । क्रि.—झूठ बोल या कह ।

हृद्कल (क) सं.—झूठ बोलनेवाला ।

हृद्कल (क) सं.—खटाई, खटास । क्रि.—खटा हो । वि.—खटा ।

हृद्कल (क) सं.—दे. हृद्कल (ग्रा.) ।

हृद्कल (क) सं.—कीड़ा, कीट ।

हृद्कल (क) सं.—(‘हृ’ का भी प्रयोग होता है)—घुन

हृद्कल (क) सं.—कीड़ों से खाया जा, घुन लग, नष्ट हो ।

हृद्कल (क) सं.—कीड़ों से खाया जा, घुन लग, नष्ट हो ।

हृद्कल (क) सं.—पुष्प, फूल । क्रि.—फूल कुसुमित हो, विकसित हो । अ.—हाँ, ठीक स्वीकृत-सूचक शब्द ।

हृद्कल (क) सं.—हुंकार कर, गर्जन कर ।

हृद्कल (क) सं.—सुराही ।

हृद्कल (क) सं.—ईर्ष्या, डाह, द्वेष ।

हृद्कल (क) सं.—हल जोतना ; प्रबंध ; उपाय, साधन ।

हृद्कल (क) क्रि.—जुतवा ; लगवा, जुडवा ।

हृद्कल (क) क्रि.—जोत, हल चला ;

हृद्कल (क) सं.—प्रबंध कर, ठीक कर, व्यवस्था कर ।

हृद्कल (क) सं.—बुरुज, बुर्ज ।

हृद्कल (क) क्रि.—धनुष पर बाण चढ़ा, प्रतिज्ञा कर ; जबरदस्ती से प्रवेश कर ।

हृद्कल (क) सं.—प्रतिज्ञा, शपथ ।

हृद्कल (क) सं.—पराक्रम, साहस ।

हृद्कल (क) क्रि.—लगवा, गड़वा, धनुष पर बाण चढ़वा ; बलात् प्रवेश करा । सं.—प्रतिज्ञा, शपथ ।

हृद्कल (क) सं.—पूरण (तत्) ; भरी हुई वस्तु, सार, दाल (अथवा नारियल) और गड से बनाया पदार्थ ।

हृद्कल (क) सं.—फूल बेचनेवाला । हृद्कल (क) सं.—खी. लिं. ।

(१) हृद्कल (क) क्रि.—अपान वायु छोड़ । सं.—अपान वायु ।

(२) हृद्कल (क) क्रि.—लेपन कर, लगा । हृद्कल (क) सं.—बच्चा, शिशु ; गुड़िया । हृद्कल (क) क्रि.—गाड़ ; जमीन में लगा ।

हृद्कल (सम्) सं.—हृदय, दिल, मन ; छाती ।

हृद्कल (सम्) सं.—प्रसन्नता, आनंद ।

हृद्कल (क) सं.—खियाँ (ब. व.) ।

हृद्कल (क) सं.—स्त्री । हृद्कल (क) सं.—कैसे, किस प्रकार (व्या. भा.) ।

हृद्कल (क) सं.—खपरैल ।

हृद्कल (क) सं.—लोँदा, मिट्टी का ढेला ; झुरमुट ; लट्टों का बेड़ा ; कच्ची ईंट ।

हृद्कल (क) सं.—शराब, मद्य, ताड़ी ।

हृद्कल (क) सं.—पत्नी, भार्या ।

हृद्कल (क) सं.—गोबर ।

वै०००० हेय

वै०००० हेय (क) वि.—बड़ा, घना, गुरु ।
 वै०००० हेय (क) क्रि.—चला, हिला, पीछे हटा ।
 वै०००० हेय (क) सं.—बढ़प्पन, महानता ; वैभव, विलास ; उमंग ।
 वै०००० हेय (क) सं.—अतिशय, आधिक्य, वृद्धि, समृद्धि ; उन्नति ; गर्व, घमंड ।
 वै०००० हेय (क) क्रि.—चुन, वीन ; कंधी कर ।
 वै०००० हेय (क) वि.—बड़ा (रामास में) ।
 वै०००० हेयल, वै०००० हेयल (क) सं.—कंधा, स्कंध ।
 वै०००० हेयगण (क) सं.—घूस ।
 वै०००० हेयगळ (क) सं.—आधिक्य, समृद्धि ।
 वै०००० हेयगळे, वै०००० हेयगळे (क) सं.—सावधानी, जागृति ।
 वै०००० हेयळ (क) सं.—बढ़ती, समृद्धि, गर्व, घमंड ।
 वै०००० हेयळिसु (क) क्रि.—घमंड कर ; फूले न समा ।
 वै०००० हेयळिके, वै०००० हेयळिके (क) सं.—बढ़प्पन, बड़ाई, महानता, महत्त्व । अ.—अधिक, बहुत ।
 वै०००० हेयचु (क) क्रि.—अधिक हो, प्रवृद्ध हो ; (तरकारी) काट, छोटे-छोटे टुकड़े कर । अ.—अधिक ।
 वै०००० हेयचुगे (क) सं.—दे. वै०००० हेयचुगे ।
 वै०००० हेयचे (क) सं.—बाँस की तीली ; गोदना, सैनिकों को डेरे पर बुलाने के लिए नगाड़ा बजाना ।
 वै०००० हेयजे (क) सं.—पद, पग, कदम, चरण ।
 वै०००० हेयडे (क) सं.—मिट्टी का ढेला, लोंदा, कच्ची ईंट ; छुरमुट ।
 वै०००० हेयट्ट (क) सं.—आघात, चोट ।
 वै०००० हेयट्टगे (क) सं.—साधिन, प्रेमिका, पत्नी ।
 वै०००० हेयट्टे (क) सं.—लोंदा, मिट्टी का ढेला ।
 वै०००० हेयडकु (क) सं.—गर्दन का पिछला भाग ।

वै०००० हेयगे (क) सं.—टोकरी ।
 वै०००० हेयसु (क) सं.—बालों के झड़ने का रोग ।
 वै०००० हेयडे (क) सं.—फन ।
 वै०००० हेयडे (क) सं.—मूर्ख मनुष्य । वै०००० हेयडेति—स्त्री. लिं. ।
 वै०००० हेयडेडु (क) सं. = वै०००० हेयडेडुतन—मूर्खता ।
 वै०००० हेयडेडे (क) सं.—मूर्ख स्त्री ।
 वै०००० हेयण, वै०००० हेयणु (क) सं.—स्त्री, लड़की, औरत ; मादा ।
 वै०००० हेयण (क) सं.—लाश, शव ।
 वै०००० हेयणु (क) क्रि.—उलझ पड़, जूझ, झगड़, संघर्ष कर ।
 वै०००० हेयणिके, वै०००० हेयणिके (क) सं.—बटाई, बुनाई ।
 वै०००० हेयणिलु (क) सं.—वेणी, चोटी ।
 वै०००० हेयणे (क) क्रि.—वेणी बांध या केश-शृंगार कर । गूथ ; बट ।
 वै०००० हेयणिके, वै०००० हेयणिके (क) सं.—डर, भय, भीति ।
 वै०००० हेयणु, वै०००० हेयणु (क) क्रि.—डर जा, भीत हो ; घबरा ।
 वै०००० हेयडे (क) सं.—प्रत्यंचा, धनुष की डोरी ।
 वै०००० हेयडे, वै०००० हेयडेन (क) सं.—रथ के पहिये की गति को रोकने के लिए उपयोग में लायी जानेवाली बड़ी रंभा या टेक ।
 वै०००० हेयणु (क) क्रि.—जम जा (दही का जमना) । सं.—जमना ; नृणमयी भूमि, नृण-संकुल ।
 वै०००० हेयणुडे (क) सं.—अंगूठा ।
 वै०००० हेयणुडे, वै०००० हेयणुडे (क) सं.—अंगूठा ।
 वै०००० हेयणु (क) वि.—बड़ा (समास में) ; जैसे—वै०००० हेयणु—बड़ा वृक्ष ।
 वै०००० हेयणु (क) सं.—गर्व, अभिमान, गौरव, बढ़प्पन ।
 वै०००० हेयणु, वै०००० हेयणु, वै०००० हेयणु,

वै०००० हेयणु (क) सं.—जूड़ा ; वेणी ।
 वै०००० हेयणु (क) सं.—नारंगी ।
 वै०००० हेयणु (क) क्रि.—खरोंच, खुरच, छील । सं.—साँप की केंचुली ; तेल पोतना, तेल देना ।
 वै०००० हेयणु, वै०००० हेयणु (क) क्रि.—जन, जन्म दे ; पा ; दही का जमना ।
 वै०००० हेयणु [वै०००० हेयणु] (क) वि.—दूसरा, अन्य ।
 वै०००० हेयणुगे, वै०००० हेयणुगे (क) सं.—प्रसव, प्रसूति ।
 वै०००० हेयणु (क) सं.—पीछे होना ; अर्धचंद्र ।
 वै०००० हेयणुणे (क) सं.—बुराई, हानि ; निष्ठुरता ।
 वै०००० हेयणु, वै०००० हेयणु (क) सं.—नाम ; मूँग ।—वै०००० हेयणु (क) सं.—मूँग की दाल ।
 वै०००० हेयणु (क) सं.—बालों का जूड़ा ।
 वै०००० हेयणु, वै०००० हेयणु (क) सं.—लूला, विकलांग ।
 वै०००० हेयणु (सम्) अ.—संबोधनात्मक अव्यय ।
 वै०००० हेयणु (क) अ.—कैसे ।
 वै०००० हेयणु (क) सं.—पागलपन ।
 वै०००० हेयणु (क) सं.—पागल आदमी ।
 वै०००० हेयणु (क) अ.—कैसे ।
 वै०००० हेयणु (क) सं.—भीरु, डरपोक ।—वै०००० हेयणु तन=भीरुता ।
 वै०००० हेयणु (सम्) सं.—कारण ; उद्देश्य ; जरिया, साधन ।
 वै०००० हेयणु (क) सं.—भूत, प्रेत ।
 वै०००० हेयणु, वै०००० हेयणु (क) सं.—धूल ।
 वै०००० हेयणु (सम्) सं.—सोना, सुवर्ण ; काले या भूरे रंग का घोड़ा ।
 वै०००० हेयणु हेयणु (सम्) सं.—हेमंत ऋतु, अगहन और पूस मास ।
 वै०००० हेयणु (सम्) वि.—त्यागने योग्य, छोड़ने योग्य, तुच्छ । सं.—संकल्प ; क्रोध ; बहुत दूरी ; दुःख ; दुःख का विषय ; जगुप्सा ।

ढैरु हेरु (क) वि.—बडा, महान् (समास में) ।

ढैरुं हेरल (क) अ.—अधिक, बहुत ।

ढैरुं हेरले (क) सं.—नारंगी ।

ढैरुं हेरल (क) ध.—दे, ढैरुं ।

ढैरुं हेरले (क) सं.—नारंगी ।

ढैरुं हेरु, ढैरुं हेरु, [ढैरुं हेरु] (क) क्रि.

—लाद, बोझा, डाल ; फैला, व्यक्त कर । सं.—बोझा, भार ।

ढैरुं हेरु (क) सं.—मल, विष्टा, पाखाना ।

ढैरुं हेव (क) सं.—लजा, शर्म ।

ढैरुं हेवरिसु (क) क्रि.—जुगुप्सा व्यक्त कर ; संकोच कर ।

ढैरुं हेसिके, ढैरुं हेसिके (क) सं.—

गंदगी, जुगुप्सा, धिनौनी वस्तु ; घृणा ।

ढैरुं हेळिके, ढैरुं हेळिके (क) सं.—

कथन, कहना ; बात ; आज्ञा, आदेश ।

ढैरुं हेळिवु, ढैरुं हेळिवु (क) सं.—

उडती खबर ।

ढैरुं हेळिसु, ढैरुं हेळिसु (क) क्रि.—

कहला, कथन करा या करवा ।

ढैरुं हेळु, ढैरुं हेळु (क) क्रि.—कह, बोल,

वतला ; आज्ञा दे ।

ढैरुं हेग (सम्) सं.—खाते ब्राह्मणों की एक

शाखा ।

ढैरुं हेमत (सम्) सं.—हिंमत ऋतु से

संबंधित ; जाड़े का मौसम ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—सोना, सुवण (समास में) ।

ढैरुं हेरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं हेरुं (क) सं.—

एक वृक्ष (The Indian Coral tree) ।

ढैरुं हेरुं हेरुं (क) सं.—सुवर्ण मृग ;

तेन्दुए—सा एक मृग ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—फूल, फूल जा,

सृजन हो ; फूले न समा, अधिक आनंदित

हो ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—स्यंदन या तिनिश वृक्ष,

तमाल वृक्ष (The Indian beech

tree) ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—ताक में रह, घात में रह ; प्रतीक्षा कर ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—गढ़वा, गर्त ; कृत्रिम तालाब ।

ढैरुं हेरुं (तद्) सं.—पंथ, पथ, रास्ता ।

ढैरुं हेरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं हेरुं (क)

क्रि.—मिला, ठीक कर, जोड़ ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—ठीक लग, मिल,

जुड़, उपयुक्त हो, योग्य हो ; मिल, प्राप्त

हो, पा ; मर जा, मृत हो ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—कै. थूक ।

ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं (क) सं.—

नामि ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—बाना ।

ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं (क)

सं.—नामि ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—कांति, चमक ।

ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं (क) सं.—

प्रशंसा, स्तुति, सराहना ।

ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—

प्रशंसा कर, सराहना कर ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—जा, गमन कर, घुस,

प्रवेश कर ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—धुंसा, धूम । क्रि.—

धुंसा उठ ; धुंसा उत्पन्न कर ; क्रोध

उत्पन्न कर ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—ढाँक, ओढ़ा, डाल,

रख ; छिपकर रह ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—बहरा आदमी ।

ढैरुं हेरुं (क) भूसा, छिलका ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—ढक्कन, आवरण ; पेड़

का खोखला ; पेट ; तौड़ ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—पेड़ का खोखला ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—तृण विशेष जिसे

हाथी खाता है ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—बिल, छेद, सुराख ।

ढैरुं हेरुं (क) सं — मारना, थपेड़ा ।

ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं (क) क्रि — मार, पीट, चोट कर ।

ढैरुं हेरुं (क) सं — अनाज की बाल ; धान

का मुख्य धरन या बल्ला ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—संघर्ष, युद्ध ;

कलह ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—उत्तरदायित्व, जिम्मे-

दारी, जिम्मा ; जामिन ।

ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं

हेरुं, ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं (क) सं.—

प्रातःकाल, सवेरा ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—(दिया) जला,

सुलगा ; ओढ़ा ; बर्तन के निचले भाग में

(अंदर) खाने की चीज़ को जलने दे ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—(दिया) जल, सुलगा ;

बर्तन के निचले भाग में (अंदर) खाने की

चीज़ जल जा । सं.—समय, काल ; दग्धिका,

जला हुआ भात या खाने की चीज़ ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—प्रातःकाल,

सवेरा ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—संताप, दुःख,

परेशानी ।

ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं (क) सं.—

ओढ़नी, अच्छादन, आवरण ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—बिल ; पेड़ का

खोखला ।

ढैरुं हेरुं, ढैरुं हेरुं (क) सं.—

झुरमुट, झाड़ी ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—ढाँक, ओढ़ा,

अच्छादित कर ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—ओढ़, पहन ।

ढैरुं हेरुं (क) सं.—ओढ़नी, अच्छादन ;

छत ।

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—दे. ढैरुं हेरुं

ढैरुं हेरुं (क) क्रि.—दे. ढैरुं हेरुं सं.—

तरकस, तूणीर ; झुरमुट, कुंज ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—ओढ़नी, आवरण, स्नेह, मिलाप ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—जुड़, लग, मिल, पास जा ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—सामीप्य, संयोग मिलाप ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—शोना, सुवर्ण, हेम ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—झरना; धारा, प्रवाह ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—शोभा, कांति, सुंदरता ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—दे. होर्दि के.

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—पीतसाल नामक वृक्ष (The tree Terminalia tomentosa) ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—फफोला, सृजन ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—सोना, सुवर्ण (समास, में) ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—उठ, निकल, हो, उत्पन्न हो ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—डाल ; उडेल ; मार, पीट ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—दे. होर्दि के.

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—बालू, रेत ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—मारना, मार, चोट, प्रहार ।

होर्दि के होर्दि के (क) अ.—बाहर ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—मोटी रस्सी, रस्सा ।

होर्दि के होर्दि के (क) कृ.—निकलकर, जाकर । सं.—काकुद्, कूबड ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—जा, निकल, गमन कर, चल ; लोट । सं.—कूबड ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—खाट, पलंग ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—डेर, राशि, समूह, समुदाय ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—लोट-पोट हो ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—नधुना ; धन या पैसे का परिवर्तन ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—महीन आवरण या छिलका ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—लाद, आरोप कर, लगा ; पोषण करा या करवा ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—मिल. जुड़ ; लग, लड़ जा ; पोषण कर । सं.—बोझा, गट्टा ; जुड़ना, सामीप्य, पड़ोस ; कंचुली ; पेड़ का छाल ।

होर्दि के होर्दि के (क) वि.—बाहर का, बाहरी; पराया ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) अ.—बाहर ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—दे. होर्दि के, होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) अ.—अतिरिक्त, अलावा, सिवाय ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—हारीत पक्षी, एक प्रकार का कव्तर ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—धंधा, काम । —वाध वाळ (क) सं.—नौकर, सेवक ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—लाद, लगा, आरोपण कर ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—बोझा उठा. डो; पहन, भोड़ ; जिम्मेदारी ले ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—बोझा, भारी पदार्थ, गट्टा ।

होर्दि के होर्दि के (क) अ.—दे. होर्दि के.

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—खेत, क्षेत्र ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—सिलाई ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—नीच जाति की स्त्री, हरिजन स्त्री ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—चतुर मनुष्य ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—ढंग, रीति; परिस्थिति; उचित रीति ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—नंदगी. धिनौनी वस्तु ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—सी, सिलाई (का काम) कर ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—दे. होर्दि के.

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—रज; अशुद्धि, सूतक ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—चाण्डाल; हरिजन ।

होर्दि के होर्दि के (क) वि.—बुरा, अनुपयुक्त ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—बुराई, अनुपयुक्तता, निंदा, गाली, मिथ्या अभियोग ।

होर्दि के होर्दि के (क) वि.—नया, नवीन, ताजा ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—नया आदमी; भांगतुक ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—विचित्र मनुष्य ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—सुहागरात ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—होर्दि के होर्दि के होर्दि के — देहली, देहरी ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—मथ, मल, रगड़, ऐंठ, मरोड़ ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—देहरी, देहली ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—प्रकट हो, हो । सं.—कांति, चमक ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—कतर, छँट ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—चमक, कांति प्रकाश, शोभा, सुषमा ।

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—चमका, का कर; इधर-उधर हिला ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—चमक, सुषमा झलन-खटिया; प्रँख ; वीणा का भाग

होर्दि के होर्दि के (क) क्रि.—चमक, प्रकाशित हो

होर्दि के होर्दि के (क) वि.—व्यर्थ, धोथा । — लोट (प्रा.) ।

होर्दि के होर्दि के, होर्दि के होर्दि के (क) सं.—दुर्बल या कामजोर आदमी ।

होर्दि के होर्दि के (क) सं.—नधुना ।

ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.—
 नगर, शहर ।
 ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— नदी ।
 हो (क) अ.— आश्चर्यसूचक अन्वय ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— साधन, मार्ग, रास्ता ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) क्रि.— जा, गमन कर
 ल, पाल जा; संभोग कर ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— सादृश्य, समानता ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— पेड़ का खोखला;
 खोखलापन ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— बकरा ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (सम्) सं.— यज्ञ; भस्म;
 आकलय ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— तालूका का एक
 भाग ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (सम्) सं.— होम, हवन ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— बैल; भैंसा; बधिया
 किया हुआ बैल ।
 ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (क) क्रि.— युद्ध
 कर, संवर्ष कर, लड़ । सं.— छेद, रंध्र, विल ।
 ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.—
 काम, धंधा ।

ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— सेवक, नौकर ।
 ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (क) क्रि.—
 समान हो, सदृश्य हो, तुल्य हो ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— साम्य, समानता ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) क्रि.— तुलना कर,
 सादृश्य दिखा ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) क्रि.— दे. ॐ ह्रीं क्लीं.
 ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (क)
 सं.— दे. ॐ ह्रीं क्लीं.
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) क्रि.— जाने की चाह कर,
 जाने में उरसाह दिखा ।
 ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (तद्)
 सं.— पोलिका (तद्); गेहूँ के भाटे या
 सूजी से बनायी जानेवाली मिठाई विशेष ।
 ॐ ह्रीं क्लीं, [ॐ ह्रीं क्लीं] (क) सं.—
 फाँक, टुकड़ा ।
 ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं (क)
 सं.— कोटर, पेड़ का खोखला; विल ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) सं.— दे. ॐ ह्रीं क्लीं.
 ॐ ह्रीं क्लीं (अ. दे.) सं.— हौदा ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (क) अ.— हाँ. ठीक, सही ।

ॐ ह्रीं क्लीं, ॐ ह्रीं क्लीं; (क) अ.—
 कैसे. किस प्रकार (व्या. भा.) ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (सम्) सं.— गहरी झील; बड़ा
 सरोवर ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (सम्) सं.— विजली; नदी,
 सरिता ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (सम्) वि.— छोटा; कम. थोड़ा ।
 सं.— ह्रस्व स्वर ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (सम्) सं.— शब्द. शोर-गुल.
 क्षीणता, नाश, छोटापन ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (सम्) सं.— आह्लाद, प्रसन्नता,
 हर्ष, आनंद ।
 ॐ ह्रीं क्लीं (सम्) सं.— इंद्र का वज्र;
 विजली; शलकी वृक्ष ।

ॐ क्लीं

ॐ क्लीं—कन्नड = वर्णमाला का ४९ वाँ अक्षर ।
 ॐ क्लीं (क) सं.— नारियल को हिलाने से
 उसके अंदर के पानी से निकलनेवाली ध्वनि ।

ॐ क्लीं

ॐ क्लीं—कन्नड = वर्णमाला का ५० वाँ अक्षर ।

समाप्त

कतिपय मुहावरें

अच्छरिबहुबुद्ध, अच्छरिबहुबुद्ध
 अच्छरिबहुबुद्ध, अच्छरिबहुबुद्ध
 अच्छरिबहुबुद्ध—आश्चर्य चकित होना, ताज्जुब
 करना ।
 अच्छरिसुबुद्ध, अच्छरिसुबुद्ध
 अच्छरिसुबुद्ध—नाश करना, बरबाद करना ।
 अच्छरिसुबुद्ध, अच्छरिसुबुद्ध—प्रकाशित
 होना, चमकना, सुंदर लगना ।

अदविपालागुबुद्ध—अनाथ
 होना, असहाय होना; दिशाभ्रष्ट होना;
 विनष्ट होना ।
 अदवि वीळुबुद्ध—बरबाद
 होना, बेकार होना, व्यर्थ होना ।
 अदवि वीळुबुद्ध—बीच में पड़ना,
 विघ्न होना, रुकावट बनना; नमस्कार
 करना, प्रणाम करना ।

अद्वैतुबुद्ध—असंतोष प्रकट करना, मुँह मोड़ना ।
 अद्वैतुबुद्ध—ब्राधा उपस्थित
 करना; विरोध करना ।
 अद्वैतुबुद्ध—सामने रखना;
 क्षमा माँगना, माफी माँगना ।
 अद्वैतुबुद्ध—पार करना,
 दूसरी ओर चले जाना ।

ಅಡ್ಡಾಡುವುದು ಅಡ್ಡಾಡುವುದು

ಅಡ್ಡಾಡುವುದು ಅಡ್ಡಾಡುವುದು—ತಹಲನಾ, ಇಧರ-ತಧರ
ಚಲನಾ |

ಅಡ್ಡಿಸುವುದು ಅಡ್ಡಿಸುವುದು — ವಿರುದ್ಧ ಪ್ರಯತ್ನ
ಕರನಾ, ಶತ್ರುತಾ ಕರನಾ |

ಅಡ್ಡೊಡುವುದು ಅಡ್ಡೊಡುವುದು — ಡೆಹಿ ಚಾಲ ಯಾ
ವಕ್ರಗತಿ ಸೇ ಭಾಗನಾ |

ಅಡ್ಡಿ ತಕ್ಕೊಳ್ಳುವುದು ಅಡ್ಡಿ ತಕ್ಕೊಳ್ಳುವುದು—ಹಿಚಕಿ-
ಚಾನಾ |

ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡುವುದು ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡುವುದು — ವಿಘ್ನ ಉಪಶಮ
ಕರನಾ, ಬಾಧಾ ಡಾಲನಾ |

ಅಡ್ಡಿಯಾಗುವುದು ಅಡ್ಡಿಯಾಗುವುದು—ಬಾಧಾ ಬನನಾ,
ವಿಘ್ನ ಉಪಶಮ ಹೊನಾ |

ಅಣಗಿಸುವುದು ಅಣಗಿಸುವುದು — ಪರಿಹಾಸ ಕರನಾ,
ಮಜಾಕ ತಡಾನಾ; ಉಪಹಾಸ ಕರನಾ, ತಾನಾ ಮಾರನಾ |

ಅಣಿಗೊಳಿಸುವುದು ಅಣಿಗೊಳಿಸುವುದು — ತೈಯಾರ
ಕರನಾ, ಉಪಹಾಸ ಕರನಾ, ಮಡಕಾನಾ |

ಅಣಿಯಾಗುವುದು ಅಣಿಯಾಗುವುದು—ತೈಯಾರಿ ಕರನಾ,
ವ್ಯವಸ್ಥಾ ಯಾ ಪ್ರಬಂಧ ಕರನಾ |

ಅಣಿಯಾಗುವುದು ಅಣಿಯಾಗುವುದು—ತೈಯಾರ ಹೊನಾ,
ಕಡಿಬಡ್ಡ ಹೊನಾ |

ಅನುಕರಿಸುವುದು ಅನುಕರಿಸುವುದು — ಅನುಕರಣ
ಕರನಾ, ನಕಲ ಕರನಾ; ಮಾನನಾ, ಸ್ವೀಕಾರ ಕರನಾ |

ಅನುವಾಗುವುದು ಅನುವಾಗುವುದು — ತೈಯಾರ ಹೊನಾ,
ಕಡಿಬಡ್ಡ ಹೊನಾ |

ಅವಡುಕಟ್ಟುವುದು ಅವಡುಕಟ್ಟುವುದು — ನಾರಾಜ
ಹೊನಾ, ಕ್ರುದ್ಧ ಹೊನಾ, ಹೊತ ಕಾಡನಾ |

ಅಸುಕುಡಿಯುವುದು ಅಸುಕುಡಿಯುವುದು, ಅಸುಗೊಳ್ಳು-
ವುದು ಅಸುಗೊಳ್ಳುವುದು ಅಸುಗೊಳ್ಳುವುದು

ಅಸುಗೊಳ್ಳುವುದು ಅಸುಗೊಳ್ಳುವುದು — ಪ್ರಾಣ ಲೇನಾ, ವಧ ಕರನಾ,
ಜಾಣ ಲೇನಾ ; ತಂಗ ಕರನಾ |

ಅಸುಲಾಭವಾಗುವುದು ಅಸುಲಾಭವಾಗುವುದು —
ಬಾಲ-ಬಾಲ ಬಚನಾ |

ಅಳ್ಳಿವಿಳ್ಳಿಯಾಗುವುದು ಅಳ್ಳಿವಿಳ್ಳಿಯಾಗುವುದು —
ಯಕ ಜಾನಾ, ಶ್ರಾಂತ ಹೊನಾ |

ಇಂಗು ಹೆಚ್ಚುವುದು ಇಂಗು ಹೆಚ್ಚುವುದು—ಛೋಟಾ ಡೇನಾ,
ಖೌಲೆ ಮೆ ಧೂಲಿ ಖೌಲೆನಾ |

ಇದಿರೆಯುವುದು ಇದಿರೆಯುವುದು — ಸ್ವಾಗತ ಕರನಾ,
ಮಿಲನೆ ಕೇ ಲೀಫ್ ಸಾಮನೆ ಜಾನಾ |

ಇದಿರಾಗುವುದು ಇದಿರಾಗುವುದು — ಸಾಮನಾ ಕರನಾ ;
ಸಾಮನೆ ಜಾನಾ (ಮೆತ್ರಿ ಭಾವ ಸೇ, ಶತ್ರುತಾ ಸೇ) |

ಇದಿರಿಕಟ್ಟುವುದು ಇದಿರಿಕಟ್ಟುವುದು, ಇದಿರಿಡುವುದು
ಇದಿರಿಡುವುದು — ವಿರೋಧ ಕರನಾ, ಅಸ್ವೀಕಾರ
ಕರನಾ |

ಇದಿರು ನೋಡುವುದು ಇದಿರು ನೋಡುವುದು—ಪ್ರತೀಕ್ಷಾ
ಕರನಾ, ಇತಜಾರ ಕರನಾ |

ಇದಿರು ನಾಡಿಸುವುದು ಇದಿರು ನಾಡಿಸುವುದು —
ಮುಹಜೋರಿ ಕರನಾ, ಅಖಿನಯ ಪ್ರಕಟ ಕರನಾ |

ಉತ್ತರ ಕೊಡುವುದು ಉತ್ತರ ಕೊಡುವುದು —ಜವಾಬ
ಡೇನಾ, ಉತ್ತರ ಡೇನಾ, ಬಡೆಂ ಕೇ ಸಾಮನೆ ಮುಹಜೋರಿ
ಕರ ಅಖಿನಯ ಪ್ರಕಟ ಕರನಾ |

ಉಪ್ಪಿಡುವುದು ಉಪ್ಪಿಡುವುದು — (ನಮಕ ಡೇನಾ),
ಖಾನಾ ಖಿಲಾನಾ ; ಪೋಷಣ ಕರನಾ |

ಉಪ್ಪುಕಾರ ಹೆಚ್ಚುವುದು ಉಪ್ಪುಕಾರ ಹೆಚ್ಚುವುದು —
ನಮಕ-ಮಿರ್ಚಿ ಮಿಲಾನಾ (ಕಿಸಿ ಯಾ ಬಾತ ಕಾ ನಮಕ-
ಮಿರ್ಚಿ ಮಿಲಾಕರ ವರ್ಣನ ಕರನಾ) |

ಉಪ್ಪುಣ್ಣುವುದು ಉಪ್ಪುಣ್ಣುವುದು—ಕಿಸಿ ಯಾ ಅಖಿನ
ಮೆ ರಹಕರ ಕಾಮ ಕರನಾ ಯಾ ಸೇವಾ ಕರನಾ |

ಉಪ್ಪುತಂದವರ ಮನೆಗೆ ಎರಡು ಬಗೆಯುವುದು
ಉಪ್ಪುತಂದವರ ಮನೆಗೆ ಎರಡು ಬಗೆಯುವುದು — ಉಪಕಾರ
ಕಾ ವಿಸ್ಮರಣ ಕರನಾ, ಕೃತಜ್ಞ ಹೊನಾ |

ಉಪ್ಪುಡುವುದು ಉಪ್ಪುಡುವುದು—ಹಿಮ್ಮತ ಹಾರನಾ,
ಸಾಹಸ ಖೊನಾ |

ಊಟಿ ಹೊಡಿಯುವುದು ಊಟಿ ಹೊಡಿಯುವುದು—ಖೂಬ
ಖಾನಾ ಖಾನಾ |

ಎಣ್ಣೆ ಹಾಕುವುದು ಎಣ್ಣೆ ಹಾಕುವುದು—(ತೆಲ ಡಾಲನಾ),
ಕಿಸಿ ಯಾ ಕಾಮ ಕಾ ಖರಾಬ ಕರನಾ, ಹಾನಿ
ಪಡುಚಾನಾ |

ಎದುರಿಸುವುದು ಎದುರಿಸುವುದು—ಸಾಮನಾ ಕರನಾ |
ಎದುರಿಸುವುದು ಎದುರಿಸುವುದು—ವಿರೋಧ ಕರನಾ,
ವಿರೋಧ ಮೆ ಕಾಮ ಕರನಾ |

ಎದುರು ನೋಡುವುದು ಎದುರು ನೋಡುವುದು = ಇದಿರು
ನೋಡುವುದು, ಎದುರುನಾಡಿಸುವುದು ಎದುರುನಾ-
ಡಿಸುವುದು. ಎದುರುತ್ತರ ಕೊಡುವುದು ಎದುರುತ್ತರ
ಕೊಡುವುದು = ಉತ್ತರ ಕೊಡುವುದು

ಎದೆ ಅದರುವುದು ಎದೆ ಅದರುವುದು — ದಿಲ ಮೆ
ಘಡಕನ ಹೊನಾ |

ಎದೆ ಈವುದು ಎದೆ ಈವುದು—ಹಿಮ್ಮತ ಡಿಖಾನಾ,
ಸಾಹಸ ಕರನಾ |

ಎದೆ ಒಡುವುದು ಎದೆ ಒಡುವುದು—ದಿಲ ಡೂಟನಾ,
ಹೃದಯ ಡುಕಡೆ-ಡುಕಡೆ ಹೊ ಜಾನಾ, ಹಿಮ್ಮತ ಹಾರನಾ,
ಅನುಪಾಹಿತ ಹೊನಾ |

ಎದೆ ಕವಡುವುದು ಎದೆ ಕವಡುವುದು—ದಿಲ ಮೆ ಘಡಕನ
ಹೊನಾ |

ಎದೆ ಕಂದುವುದು ಎದೆ ಕಂದುವುದು—ಹಿಮ್ಮತ ಹಾರನಾ |
ಎದೆ ಕರಗುವುದು ಎದೆ ಕರಗುವುದು — ದಿಲ ಪಸೀಜ
ಜಾನಾ, ಹೃದಯ ಪಿಘಲ ಜಾನಾ |

ಎದೆ ಕೊಡುವುದು ಎದೆ ಕೊಡುವುದು = ಎದೆ ಈವುದು.
ಎದೆಗೆಡಿಸುವುದು ಎದೆಗೆಡಿಸುವುದು—ದಿಲ ಡುಖಾನಾ,
ತಂಗ ಕರನಾ |

ಎದೆ ಮುರಿವುದು ಎದೆ ಮುರಿವುದು—ಅತ್ಯಧಿಕ ಪರಿಶ್ರಮ
ಕರನಾ |

ಎದೆ ಹೆಣ್ಣಾಗುವುದು ಎದೆ ಹೆಣ್ಣಾಗುವುದು—ಹೃದಯ ಮೆ
ಭಾವಶೂನ್ಯ ಹೊನಾ |

ಎದೆ ಹಾರುವುದು ಎದೆ ಹಾರುವುದು—(ಫರ ಕೇ ಕಾರಣ)
ದಿಲ ಕಾ ಘಡಕನಾ |

ಎರಿ ಹೋಗುವುದು ಎರಿ ಹೋಗುವುದು—ಫೂಟ ಪಡನಾ |
ಎರಿಕಟ್ಟುವುದು ಎರಿಕಟ್ಟುವುದು, ಎರಿಗಟ್ಟುವುದು
ಎರಿಗಟ್ಟುವುದು — ಉಪರ ಬಾಂಧಕರ ಲಡಕಾ ಡೇನಾ ;
ದಂಡ ಡೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಫೂಲ ಜಾನಾ |
ಎರಿಗೆಡುವುದು ಎರಿಗೆಡುವುದು, ಎರಿಗೆಡುವುದು
ಎರಿಗೆಡುವುದು—ಕರನಾ ; ರಖನಾ ; ಅಂದರ ಲೇನಾ |

कडेहायिसुवुदु—पार करना,
 वचना, रक्षा करना ।
 कडेमाडुवुदु — (किसी को)
 खराब करना या हानि पहुँचाना ।
 कलु हाकुवुदु — दूसरे के काम को
 खराब करना या उसमें अड़चन डालना ।
 कालाडुवुदु—घूमना; सैर करना ।
 कालीगे बिलुवुदु, कालु
 बिलुवुदु कालु बिलुवुदु—पैरों में पड़ना ;
 गिड़गिड़ाना, याचना करना ।
 कालु कडुवुदु—दूसरे के पैरों
 में पड़ना ; शादी या विवाह करना ।
 कालु मूडुवुदु — आरंभ
 करना, श्रीगणेश करना ।
 कालुमेडुवुदु—झगड़ने के लिए
 तयार होना, कलह करना ।
 कालुतेगेवुदु, कालु तंगेवुदु
 कालु तेगेवुदु—भाग जाना ; चंपत होना,
 नौ-दो ग्यारह होना ।
 कालुगणुवुदु — आँखें लाल
 करना, क्रुद्ध होना ।
 कालुपडिसुवुदु—नीचा दिखाना ।
 कालुसे गरजना) — (जोर से गरजना),
 लाल पीला होना ।
 कालु कडुवुदु — गरीब
 होना । विनीत होना ।
 कालु कडुवुदु—दीनता से याचना करना,
 गिड़गिड़ाना ।
 कालु कडेवुदु—
 किंकर्तव्यविमूढ होना ।
 कालु बिलुवुदु—
 पैरों में पड़ना, दीनता से याचना करना ।
 कालु कडेवुदु—
 जान में जान आना ; धीरज होना ।
 कालु कडेवुदु—
 प्रारंभ करना,
 हाथ में लेना ।
 कालु कडेवुदु — अपने अधिकार
 को खोना ; हार जाना ।
 कालु कडेवुदु—हाथ

जोड़, प्रार्थना कर ।
 कालु कडेवुदु — (बीच में)
 सहायता न देना, मदद न करना ।
 कालु कडेवुदु — हाथ फैलाना,
 मांगना ।
 कालु कडेवुदु—किसी काम,
 में हाथ लगाना ।
 कालु कडेवुदु—उलझन होना,
 उलझ जाना ; पीछे पड़ना ।
 कालु कडेवुदु—
 विस्तर गोल करना, जाने के लिए तैयार
 होना ।
 कालु कडेवुदु = कालु
 कडेवुदु—नीचा दिखाना,
 अपमान करना ।
 कालु कडेवुदु—
 नींव डालना ।
 कालु कडेवुदु—गोली
 मारना ।
 कालु कडेवुदु — चल
 बसना, मर जाना ।
 कालु कडेवुदु—
 बुदु— बदला लेना ।
 कालु कडेवुदु—छलपूर्वक
 बात करना, धोखा देना ।
 कालु कडेवुदु—
 डींग हांकना, घमंड करना ।
 कालु कडेवुदु—झगड़ा,
 मोल लेना ।
 कालु कडेवुदु—फूट पैदा
 करना ।
 कालु कडेवुदु—जान देना ।
 कालु कडेवुदु—जान की रक्षा
 करना ।
 कालु कडेवुदु—जान देना ।
 कालु कडेवुदु—जीवत
 रहना, किसी के जीवन की रक्षा करना ।
 कालु कडेवुदु—कमर कसना ।
 कालु कडेवुदु—धोखा
 देना; आँखों में धूल झोंकना ।

कालु कडेवुदु—
 डींग हांकना ।
 कालु कडेवुदु—सिर देना,
 प्राणों को त्यागना ।
 कालु कडेवुदु — सिर
 हिलाना, स्वीकार करना ।
 कालु कडेवुदु — युद्ध में
 सहायता देना ; सिर मुड़ाना ; हज़ामत
 करना ।
 कालु कडेवुदु — सिर
 नवाना, नमस्कार करना ।
 कालु कडेवुदु—
 सिर धुनना ।
 कालु कडेवुदु - दंगा करना,
 विद्रोह करना ।
 कालु कडेवुदु — आडे हा
 लेना ।
 कालु कडेवुदु — राक
 अटकाना ।
 कालु कडेवुदु—
 होना ।
 कालु कडेवुदु—हृदय पिघल जाना ।
 कालु कडेवुदु — कमर कसना ।
 कालु कडेवुदु
 धोखा देना ।
 कालु कडेवुदु—पता लगाना
 बीने तंगलुवुदु—बीमार
 मूलगे बिलुवुदु—
 योगी होना ।
 कालु कडेवुदु—
 योगी होने के कारण फेंकना ।
 कालु कडेवुदु—
 सौंपु हाकुवुदु —
 करना, ध्यान देना ।
 कालु कडेवुदु
 खिलावाड करना, लड़कों की-सी
 रखना ।
 कालु कडेवुदु
 दूसरों की आजीविका या कमाई में
 डालना ।